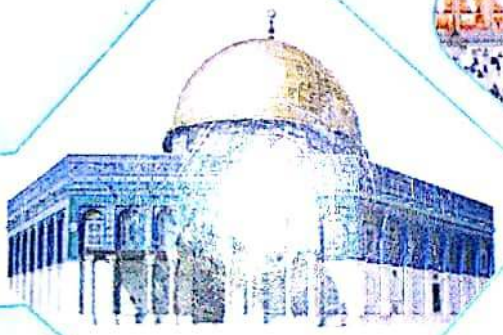
सच्ची हिकायात

हज़रत मौलाना अबुन्नूर मौहम्मद बशीर साहब









अदबी दुनिया

Scanned by CamScanner

इल्तिज़ा है कि इस किताब को अपनी मोबाईल की मैमोरी में सेव करके ना रखे वल्कि आप से गुजारिश है कि इस किताब का मुताला की जिये ये किताब बहुत शानदार है।

दुआ की गुजारिश
डॉ ज़ाहूर रज़वी
अल अश्हर अकडमी

दुआ की ग़ुज़ारिश
मोहम्मद अहतिराम क़ुरैशी

आप हज़रात से गुजारिश है कि इस किताब को आप अपना निम्ती वक़्त दे और इस किता ब का मुताला करे और हम ना चीज़ को अपनी अपनी दुआओं में याद रखे

Scanned by CamScanner

जुमला हक़ूक़ बहक़ नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताब	:	सच्ची हिकायात मुकम्मल
तालीफ़	:	मौलाना अबु अलनूर बशीर
सन इशाअत	:	2013
सफ़हात	:	936
मतबअ	:	नाहिद प्रेस, देहली
हदिया	:	
नाशिर	:	अदबी दुनिया, देहली

इस किताब में

कुतब अहादीस और दीगर मुसतनिद इस्लामी किताबों से दिलचस्प, मुफ़ीद और सबक़ आमोज़ हिकायात जमा कर दी गई हैं और हर हिकायत के बाद इससे जो सबक़ हासिल होता हैए लिख दिया गया है और हर हिकायत को असल किताब से देखकर दर्ज किया गया है और किताब का नाम, सफ़हा और जिल्द सब कुछ दिया गया है।

Publisher

ADABI DUNIYA

399, Matia mahal, jama masjid,
Delhi - 110006
Phone : 23250122

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहली नज़र

इस ज़माने में अफ़्साने, ड्रामे, किस्से और कहानियाँ बड़े शौक़ से पढ़ी जाती हैं और ये शौक़ बिलअमूम हर छोटे बड़े मर्द और औरत में पाया जाता है, आज कल हर वो तहरीर जिसमें अफ़्सानवी तर्ज़ और हिकायती रंग मौजूद हो, पसंदीदगी की नज़र से देखी जाती है, क़ौम का यही रूहजान तबअे इस अम्र का बाइस है के मुल्क के अक्सर रसायल व जरायद अपने अपने "कहानी नम्बर" और "अफ़्साना नम्बर" शाय करते हैं और अफ़्साना पसंद अफ़्राद इन्हें हाथों हाथ लेते हैं।

ये अफ़्साने, ड्रामे और आज कल की हिकायात व कहानियाँ ज़्यादा तर दरोग़ व कज़िब और ग़ैर वाक़ेई बिना पर मुबनी होती हैं, उनकी कोई हक़ीक़त और असल नहीं होती और ऐसे अफ़्साना लिखने वाले उन वज़अई हिकायात को "तबै ज़ाद" और अपनी तख़्लीक़ क़रार देकर अपने वज़अे व कज़िब को अपना एक शाहकार साबित करते हैं और अफ़्साना पसंद तबीअतें उन्हें उस कारनामे पर दादे तहसीन देती हैं और उसे तरक्क़ी पसंद अदब के नाम से मोसूम करने लगती हैं।

क़िस्से और हिकायात ज़रूरी नहीं के झूट ही हों, इस आलम में क़िस्सों और सच्ची हिकायात का वजूद भी है, खुद क़ुरआने पाक और अहादीसे शरीफ़ा में भी हिकायात व क़सस मौजूद हैं और वो हिकायात व क़सस ऐसे हैं जिनमें सौ फ़ीसदी सदाक़त है और जो अपनी सदाक़त के बाइस मख़्लूक़ के लिए मौजिबे रूश्दो हिदायत और वजह दर्से इब्रत हैं। खुदा तआला ने अपनी सच्ची किताब मजीद में अम्बियाइक्राम अलेहिमअस्सलाम के ईमान अफ़रोज़ क़िस्से और उमम साबिक़ा की सबक़ आमोज़ हिकायात बयान फ़रमाई हैं और रसूले खुदा सल-लल्लाहो-तआला-अलेह व सल्लम ने भी अपने इर्शादाते आलिया में पहली उम्मतों के इब्रत आमोज़ वाक़ेयात और सबक़ आमोज़ हिकायात सुनाई हैं और इसी तरह बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात और उनकी तालीफ़ात में भी इस क़िस्म की सच्ची हिकायत का वजूद पाया जाता है मगर मुश्किल ये है के ये सब पुरानी बातें हैं और इस नए दौर में उन परानी बातों की तरफ़ तवज्जह नहीं की जाती ऐ काश! मुसलमान आज

Scanned by CamScanner

कल के लायानी अफ़्सानों और वज़अई और झूटी हिकायात की बजाए अपने हक़ीक़ी अफ़्सानों और सच्ची हिकायात को पढ़ते पढ़ाते तो दिलचस्पी के अलावा उन्हें दीनी और दुनयवी फ़वायद भी हासिल होते।

मुद्दत से मेर दिल में ये ख़याल था के क़ुरआन व हदीस और दीगर इस्लामी लिटरेचर से हक़ीक़ी क़िस्सों और सच्ची हिकायात को जमा करूं और उन्हें सादा और आम फ़हेमो तर्ज़ में क़लमबंद कर के मुसलमानों के लिए एक ऐसी किताब लिखूं जिसका मुतअल्ला उनके लिए दिलचस्पी भी पैदा करे और साथ साथ ही उनके लिए सबक़ व इब्रत पेश करके उनके दीन व दुनिया की इसलाह भी करे चुनाँचे इसी अपने इरादे के तहेत मैंने सच्ची हिकायात को जमा करना शुरू कर दिया और क़ुरआन व हदीस के अलावा और बहुत सी इस्लामी क़ुतुब का मुतअल्ला करने के बाद इस सबक़ आमोज़ सिसिले की इब्तिदा कर दी।

मेरे ज़हेन में ये सिलसिला बड़ा तवील है और इरादा है के मुबारक सिलसिला को दूर तक ले जाऊँ, मैंने इस तालीफ़ के लिए जो बाब तजवीज़ किए हैं वो हस्बे ज़ेल हैं:-

पहला बाब	तौहीदे बारी
दूसरा बाब	सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा सल-लल्लाहो-अलेह व सल्लम
तीसरा बाब	अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल-सलाम
चौथा बाब	ख़ुलफ़ाए राशिदीन रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
पाँचवा बाब	सहाबाइक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
छटा बाब	अहले बैत अेज़ाम रिज़वान-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन
सातवाँ बाब	आयम्माइक्राम रहमत-उल्लाही अलेहिम अजमईन
आठवाँ बाब	औलियाइक्राम रहमत-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
नवाँ बाब	सलातीने इस्लाम
दसवाँ बाब	मुख़्तलिफ़ हिकायात

Scanned by CamScanner

चूँके ये सिलसिला बहुत तवील है इसलिए इस किताब को तीन हिस्सों पर तक़सीम कर दिया है इसका ये पहला हिस्सा जो आपके हाथ में है पहले चार अबवाब पर मुशतमिल है, इसमें पहला, दूसरा, तीसरा, और चौथा बाब है और बाक़ी दूसरे अबवाब इंशाअल्लाह दूसरे हिस्सों में आएँगे इस किताब के पहले बाब में ऐसी हिकायात का इन्तिख़ाब है जिनका ताल्लुक़ "तौहीदे बारी" से है और दूसरे बाब में उन रिवायात व हिकायात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ातेग्रामी से है, उन सच्ची हिकायात व रिवायात से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मरातिब व मदारिज, आपके इख़्तियारात व कमालात और आपके उलूम का पता चलता है और ये बात साबित होती है के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार हैं और दानाऐ ग़यूब हैं और हर गिज़ हर गिज़ हमारी मिस्ल नहीं हैं, तीसरे बाब में अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल सलाम के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे पता चलता है के अम्बियाऐक्राम की बहुत बड़ी शानें हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात अता फ़रमाए हैं, चौथे बाब में ख़ुल्फ़ाऐ राशिदीन यानी हज़रत सिद्दिके अक्बर, हज़रते उमर फ़ारूक़ आज़म हज़रत उस्मान ज़ूलनोरैन और हज़रते मौला अली रिज़वानउल्लाही अलेहिम अजमईन के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे इन चार यारानें नबी के मरातिब व मदारिज ज़ाहिर होते हैं और पता चलता है के ये चारों ही अल्लाह के महबूब के महबूब हैं और उनकी मोहब्बत ऐन ईमान है और उनकी अदावत से ईमान जाता रहता है। इस हिस्से में ये चारों बाब हैं बाक़ी के छः अबवाब दूसरे और तीसरे हिस्से में हैं।

ज़रूरत है के आज वो मुसलमान जो क़िस्सों के शौक़ीन हैं वो झूटी हिकायात को छोड़ कर उन सच्ची हिकायात को पढ़ें ताके उन के लिए दीनी तरक़्क़ी का सबब हो और वो मुसलमान औरतें जो रातों में बच्चों को झूटी कहानियाँ सुनाया करती हैं इन सच्ची हिकायात को पढ़ें, याद करें और अपने बच्चों को ये सच्ची हिकायात सुनाएँ ताके बच्चों के दिल में भी दीन की रग़बत पैदा हो।

(अबु अलनूर मोहम्मद बशीर)

Scanned by CamScanner

फेहरिस्त हिकायात

नं०	उनवान	स०
पहला बाब		
	वजूदे बारी और तौहीद	
1	हज़रत इमाम आज़म(र०अ०) का एक दहरिया से मुनाज़रह	23
2	हज़रत इमाम जअफर सादिक(र०अ०) और एक दहरिया मल्लाह	24
3	एक अक़्लमंद बुढ़िया	25
दूसरा बाब		
	सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा(स०अ०स०)	
4	जिब्राईले अमीन और एक नूरानी तारा	27
5	यमन का बादशाह	28
6	हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह का ख़्वाब	30
7	इबलीस का पोता	31
8	मुक़द्दस क़ातिल	32
9	एक जन्तर मन्तर से इलाज करने वाला	33
11	रकाना पहलवान	34
12	ख़ालिद की टोपी	36
13	बाल का कमाल	37
14	बकरी ज़िन्दा हो गई	37
15	साँप का अण्डा	38
16	हज़रत जाबिर का मकान और एक हज़ार मेहमान	39
17	कोज़े में दरया	40
18	एक सहराई क़ाफ़्ला	40
19	बादलों पर हकूमत	42
20	चाँद पर हकूमत	43
21	सूरज पर हकूमत	43
22	ज़मीन पर हकूमत	44
23	दरख़्तों पर हकूमत	45
24	दीवाना ऊँट	45
25	बैत-उल्लाह की कुंजी	46
26	गुमशुदा ऊँटनी	47
27	क़ैदी चचा	47
28	कबूतर के बच्चे	48
29	जन्नत की ऊँटनी	48
30	जंगल की हिरनी	49
31	एक काफिरा का मकान	50
32	शीरख़्वार बच्चे का एलाने हक़	51
34	रात का चोर	52
35	भेड़िये की गवाही	53
36	खुश अक़ीदा यअफ़ूर	54
37	हुज़ूर(स०अ०स०) और मलक-उल-मौत	55
38	शाही इसतक़्बाल	55
39	हुज़ूर(स०अ०स०) का ग़ुस्ल मुबारक	56
41	क़ब्र अनवर से आवाज़	57
42	क़ब्र अनवर से अज़ान की आवाज़	57
43	आसमान का गिरया	57
44	बिलाल का ख़्वाब	58

Scanned by CamScanner

45	उम्मे फ़ातिमा	59
46	एक हाशमी औरत	59
47	रसूल अल्लाह(स०अ०स०) का पैग़ाम एक मजूसी के नाम	60
48	ख़्वाब का दूध	61
49	ख़्वाब की रोटी	61
50	शाहे रोम का क़ैदी	62
51	क़ातिल की रिहाई	63
52	जज़ीरे का क़ैदी	64
53	फंसा हुआ जहाज़	65
54	एक सय्यदज़ादी और मजूसी	66
55	अब्दुल्लाह बिन मुबारक और सय्यदज़ादा	67
57	अबु अलहसन ख़ुरक़ानी और हदीस का दर्स	68
58	एक वली और मोहद्दिस एक मुशायरा	68

तीसरा बाब
अम्बियाइक्राम (अलेहिस्सलाम)

59	हज़रत आदम अलेहिस्सलाम और शैतान	69
60	शैतान की थूक	70
61	हज़रत आदम अलेहिस्सलाम और जंगली हिरन	71
62	नूह अलेहिस्सलाम की कश्ती	71
63	तूफाने नूह और एक बूढ़िया	72
64	हज़रत उज़ैर अलेहिस्सलाम और ख़ुदा की क़ुदरत के करिश्मे	73
65	हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम और चार परिन्दे	75
66	तीशाऐ ख़लील	77
67	ख़लील व नमरूद का मुनाज़रह	78
68	आतिश कदाऐ नमरूद	79
69	ख़लील व जिब्राईल	79
70	जिब्राईल की मुशक़्क़त	80
71	बेटे की क़ुर्बानी	81
72	फिरऔन का ख़्वाब	82
73	फिरऔन की बेटी	84
74	मूसा अलेहिस्सलाम का मुक्का	85
75	मूसा अलेहिस्सलाम का तमाचा	85
76	मदयन का कुँआ	86
77	दरख़्त से आवाज़	87
78	ख़ौफनाक साँप	88
79	अज़्दहा का हमला	89
80	जादूगरों की शिकस्त	89
81	पानी का अज़ाब	90
82	टिड्डी दल	91
83	जुएँ और मेण्ढक	92
84	खून ही खून	93
85	फिरऔन की हलाकत	94
86	नमक हराम ग़ुलाम	95
87	हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम और एक बूढ़िया	96
88	बनी इस्राईल की गुमराही	97
89	सामरी सुनार	97
90	क़ातिल का सुराग़	98
91	हज़रत मूसा व हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम	101
92	जानवरों की बोलियाँ	103
93	तूफाने बाद	104
94	पत्थर की ऊँटनी	105
95	ठंडा चश्मा	106
96	एक अज़ीमुश्शान हकूमत	107
97	सुलेमान अलेहिस्सलाम का फैसला	113

Scanned by CamScanner

98	माँ की मामता	114
99	सुलेमान अलेहिस्सलाम और मलक-उल-मौत	115
100	सौतेली बेटी	115
101	तेरह सौ साल(1300)की उम्र का बादशाह	116
102	बेसिबाती दुनिया	117
103	यूसुफ अलेहिस्सलाम और आईना	119
104	बिरादराने यूसुफ	119
105	रोशन क़मीस	121
106	जअल साज़ी	121
107	खूश नसीब क़ाफ़्ला	122
108	शमा और उसके परवाने	123
109	मिस्र की रईसज़ादी	124
110	अज़ीज़ मिस्र	125
111	ज़लेखा	125
112	तासीर हुस्न	128
113	साक़ी व बावर्ची	129
114	बादशाह का ख़्वाब	130
115	ताजपोशी	131
116	यूसुफ व ज़लेखा	132
117	कहतसाली	135
118	प्याले की गुमशुदगी	137
119	अफ़्शाऐ राज़	139
120	क़मीस यूसुफ	139
121	बिछड़ों का मिलाप	140
122	बे मौसम का फल	141
123	खुदा की निशानी	143
124	शागिंद या उस्ताद	146
125	दस्ते मसीहा	146
126	अन्धा और लंगड़ा चोर	147
127	दुनिया परस्त का अंजाम	147
128	नाकाम क़ातिल	149

चौथा बाब

खुलफा-ए-राशिदीन

129	सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह का ख़्वाब	150
130	यार-ए-ग़ार	152
131	आसमान के तारे	155
132	पाँच चीज़ें	156
133	पुल सिरात की राहदारी	157
134	अंगूठी का नक़्श	157
135	खुदा की तसदीक़	158
136	बिलाल की आज़ादी	159
137	ग़ज़वा-ए-तबूक	159
138	दिलैर व बहादुर	161
139	खुत्बा-ए-खिलाफत	161
140	पुर असरार ख़ादिम	162
141	फिराक़े महबूब	163
142	दीदारे महबूब	163
143	वसीयत	164
144	अबु उबैदा का ख़्वाब	164
145	जनाज़ा	165
146	उमर बिन अलख़त्ताब	166
147	एलाने हक़	168
148	क़फ़्ले जहन्नुम	169
149	दबदबा-ए-फारूक़	169
150	ग़ैरते फारूक़	170
151	अद्ले फारूक़	171
152	ग़ैबी आवाज़	171
153	नज़रे ईमान	172
154	फैसला	173

Scanned by CamScanner

155	पानी पर हुकूमत	174
156	फक़ीर सिफ़्त बादशाह	176
157	मुक़द्दस नक़ाब पोश	176
158	फारूक़े आज़म और एक बद्दू	180
159	फारूक़े आज़म और एक बूढ़िया	181
160	नफीस हलवा	183
161	इसकंद्रिया की फतह	183
162	रूअय्यत और क़यामत	184
163	रोम का एलची	184
164	फारूक़े आज़म और एक चोर	185
165	फारूक़े आज़म की शहादत	186
166	हज़रत उस्मान ज़ुलनूरैन	189
167	हया उस्मान	190
168	उस्मान ग़नी सख़ावत का धनी	190
169	जन्नत का चश्मा	191
170	मुबारक हाथ	192
171	बेनज़ीर ज़ियाफत	193
172	मोहर की गुमशद्गी	194
173	एक फितने बाज़ यहूदी	195
174	हाकिम की तबदीली	196
175	जअली ख़त	197
176	हज़रत उस्मान की शहादत	198
177	अली मुर्तज़ा करमल्लाहो वजहू	202
178	अबु त्राब	203
179	हैदर कर्रार	203
180	ज़िरह की चोरी	205
181	अजीब फैसला	206
182	आठ रोटियाँ	208
183	जंगली दरिंदा	209
184	जिब्राईल की तलाश	209
185	लड़के की माँ	210
186	मुश्किल सवालात	210
187	यहूदी की दाढ़ी	211
188	हज़रत अली और इख़्लास	212
189	अली अलमुर्तज़ा की शहादत	213
190	नबी के चार यार	215
191	पंजतन पाक	216
192	रसूल अल्लाह(स०अ०स०) का एलाने हक़	216
193	जज़ीरे का जिन्न	217
194	सिद्दीक़ व फारूक़ का दुश्मन	218
195	एक बे दीन कुम्हार	219
196	ख़तरनाक दरिंदा	219

हिस्सा दोम
पाँचवाँ बाब
सहाबा इक्राम रिज़्वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

197	महबूब के क़दमों में	223
198	जन्नत की खुशबू	224
199	एक औरत	224
200	शहद की मक्खियाँ	225
201	फाँसी	226
202	हज़रत कअब की दर्दनाक कहानी	227
203	समुंद्री ग़ाज़ी	233
204	इसतक़लाल बिलाल	235
205	ग़मे हिज्र	236
206	इस्लाम का झंडा	238
207	अल्लाह की तलवार	239
208	मक़ूक़स के दरबार में	241
209	ज़हर की पुड़िया	243
210	मिट्टी का टोकरा	244
211	सफर तबूक	247
212	इस्लामी फौज	251

Scanned by CamScanner

213	नसरानी पहलवान	253
214	जंगल का शेर	254
215	शौहर या बेटा	254
216	सुहैब व अम्मार	255
217	क़िला ज़मीन में धंस गया	256
218	फसतात का क़िला	257
219	एक सरफ़रोश मुजाहिद	258
220	मुजाहिदा माँ	261
221	हुज़ूर(स०अ०स०) की फूफी	262
222	सिद्दीक़े अक्बर(रअ०) की बेटियाँ	263
223	हज़रत मआविज़ की बेटी	264
224	ग़ाज़ी व नमाज़ी	265
225	नोजवान दूलहा	266
226	शौक़े शहादत	267
227	हबीब बिन ज़ैद रज़ी	268
228	मुजस्समा-ए-ईसार	270
229	तमाँचे की हिकमत	272
230	सोने की गेंद	274
231	रसूल की तलवार	276
232	ज़ात-उल-उयून	277
233	जर्जा पहलवान	278
234	उमरो बिन जमूह (र०अ०)	279
235	जन्नत का साथी	281
236	यक़ीन	282
237	रात का पहरा	282
238	ईसार	283
239	पानी की मश्क़	284
240	सत घिरा मोहल्ला	285
241	वफा-ए-अहेद	286
242	हरक़ल के दरबार में	289
243	बैश क़ीमत मोती	292
244	मुजाहेदाना जवाब	293
245	मोहम्मद की दुहाई	294
246	दो नन्हे मुजाहिद	294
247	आराबी का घोड़ा	296
248	निराली सज़ा	297
249	सोने की अंगूठी	299
250	सरदार हवाज़न	300
251	कमाले अद्ल	301
252	खुदा की अमानत	302
253	खून मुबारक	303
254	नाबीना सहाबी	304
255	एक हाजतमंद	305
256	असीर रोम	306
257	नअत ख़्वानी	307
258	मेहबूब का अदब	308
259	रसूल अल्लाह की दुहाई	309
260	अहमद मुख़्तार	310
261	मुक़द्दस शायर	311
262	मुक़द्दस पानी	312
263	तबुर्रूकाते आलिया	313
264	इब्रत आमोज़ ख़्वाब	314
265	भिड़ों का हमला	315
266	गश्ती फरमान	315
267	मशवरा	316

छटा बाब

अहले बैत अेज़ाम रिज़वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

268	उम्म-उल-मोमिनीन ख़दीजात-उल-कुबरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा	317
269	उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अन्हा	322

Scanned by CamScanner

270	बोहताने अज़ीम	322
271	गवाहियाँ	324
272	शौहर की मोहब्बत	325
273	सख़ावत	326
274	ख़ाला जान	326
275	रोज़ा-ए-मेहबूब	328
276	उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ी अल्लाहो अन्हा	328
277	उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिनते हबश रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा	329
278	लम्बा हाथ	330
279	यसरब का बादशाह	330
280	नबी की बेटी, भतीजी और बीवी!	332
281	ख़ातूने जन्नत	333
282	रसमे निकाह	333
283	जलवा-ए-बराअत	334
284	जहैज़	336
285	शाहज़ादी की ज़िन्दगी	336
286	जन्नत का जोड़ा	338
287	शाही दावत	338
288	राज़ की बात	339
289	विसाल फ़ातिमा	341
290	हज़रत अली और कूफ़े का लश्कर	341
291	क़िवाला नवैसी	343
292	अमल का संदूक़	343
293	खुश तबई	344
294	इम्तिहान	345
295	मसले का जवाब	345
296	हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह	346
297	डेढ़ लाख	347
298	अच्छा सवार	348
299	ख़ताकार को इनाम	349
300	सख़ी घराना	350
301	क़ीमती शर्बत	350
302	खून आलूद छुरी	352
303	जन्नत का सेब	352
304	फरिश्ते की ड्यूटी	353
305	प्यास का इलाज	354
306	हैबत व शुजाअत	355
307	एक अजीब ख़्वाब	356
308	पर्दापोशी	356
309	हज़रत इमाम हसन(र०अ०)	357
310	इमाम हुसैन और एक बदवी	357
311	बूऐ कर्बला	358
312	दिलैराना जवाब	359
313	मज़ारे अनवर पर	360
314	कूफ़ियों के ख़तूत	361
315	बारह हज़ार	362
316	जल्लाद इब्ने ज़ियाद	363
317	इमाम मुस्लिम की शहादत	363
318	मज़लूम बच्चे	365
319	ज़ालिम का अंजाम	367
320	कूफ़े का सफर	370
321	हुरा इब्ने रबाही	371
322	दश्त कर्बला	372
323	तलक़ीन सब्र	374
324	इब्ने ज़ियाद का ख़त	375
325	नहर फिरात	375
326	कुआँ	377
327	बरीर हमदानी और इब्ने साद	377
328	मज़लूम सय्यद	378
329	सरवरे अंबिया(स०अस०) की आमद	378
330	करामात	379

Scanned by CamScanner

सातवाँ बाब

आइम्मा इक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

331	इतमामे हुज्जत	379
332	हज़रत हुर(र०अ०)	380
333	हज़रत हुर(र०अ०) की शहादत	381
334	दो शेर	382
335	अज़रक़ पहलवान	384
336	अलमबरदार की शहादत	385
337	अली अक्बर(र०अ०)	386
338	अली अक्बर की शहादत	388
339	यतीम	389
340	नन्हा शहीद	391
341	हज़रत शहर बानो का ख़्वाब	392
342	अलविदा	393
343	शेर का हमला	393
344	आख़री दीदार	395
345	क़यामत	395
346	उम्मुल मोमिनीन का ख़्वाब	397
347	फ़रैवी	400
348	ज़िन्दा हुसैन	401
349	उज़ैर बिन हारून	401
350	गिरजे का पादरी	402
351	ढोल बाजे	403
352	गुसताख़	404
353	फरैव का रोना	405
354	नक़्क़ारा-ए-खुदा	406
355	दमिश्क़ की जामअे मस्जिद में	406
356	मदीने को वापसी	407
357	ज़ैनुल आबेदीन	408
358	बुर्दबारी	409
359	ख़तरनाक असदहा	410
360	क़ीमती लिबास	410
361	दीनारों की थेली	411
362	हारून अलरशीद और एक आराबी	411
363	इमाम-उल-मुस्लिमीन अबु हनीफा(र०अ०)	412
364	मुक़द्दस बूढ़ा	416
365	पैश्वा	416
366	शब बैदार इमाम	417
367	नाख़ुन भर मिट्टी	417
368	ओहदा-ए-क़ज़ा	418
369	कमाल तक़्वा	418
370	तासीर क़ुरआन	419
371	ख़ौफे क़यामत	419
372	हमसाया-ए-मोची	420
373	एहसान व करम	420
374	फिरासत इमाम	422
375	मसकत जवाब	422
376	ज़बरदस्त फरैब	422
377	इमाम मालिक व इमाम आज़म का मुकालमा	423
378	दुल्हनों की तबदीली	425
379	रोशन दान	426
380	तदबीर व हिकमत	427
381	गुमशुदा ख़ज़ाना	427
382	दामाद	428
383	मियाँ बीवी	429
384	चोरों का सुराग़	430
385	चाह किनारा चाह दुरवैश	430
386	तूसा का जवाब	431
387	मोर का चोर	432
388	आटा	432

Scanned by CamScanner

389	पियाले का पानी	433
390	मुर्ग़ी का अंडा	434
391	अंगूठी का नक़्श	434
392	ग़लत परोपागंडा	435
393	दीनारों भरी थेली	435
394	एक आराबी और सत्तू	436
395	खारिजी को जवाब	437
396	सेब का राज़	437
397	मैदाने हश्र	438
398	हज़रत इमाम शाफई का ख़्वाब	439
399	ज़हीन बच्चा	440
400	हारून रशीद के तख़्त पर	440
401	रहबानी	441
402	फिरासत	442
403	विरासत अंबिया	443
404	इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल(र०अ०)	443
405	ताज़ीम और सिला	444
406	ख़मीरी रोटी	445
407	इल्म व अमल	445
408	सोने का पहाड़	446
409	इब्ने ख़ज़ीमा का ख़्वाब	446
410	इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम मालिक (र०अ०)	447
411	एहत्रामे इल्म	447
412	क़मीस में बिछू	448
413	विसाल	448
414	हज़रत उवैस क़रनी(र०अ०)	449
415	मातियों का सौदागर	450
416	जिनों में वाज़	453
417	मस्जिद ख़ीफ का बा कमाल बूढ़ा	455
418	आतिश परस्त शमऊन	456
419	दजले के किनारे	458
420	ग़ीबत का बदला	459
421	दहरिये से मुनाज़रा	460
422	यहूदी का परनाला	461
423	हबीब अजमी रहमत-उल्लाह अलेह	461
424	राबिया बसरी	462
425	चोर	464
426	शाहे बलख़	465
427	खट्टे अनार	466
428	पराई खजूर	468
429	रूमान-उल-आबेदीन	469
430	पैग़ामे हक़	470
431	चौपायों का अदब	470
432	ज़ुलनून	472
433	सर्राफ	472
434	सारंगी	473
435	इंसान और कुत्ता	474
436	बायज़ीद और एक कुत्ता	474
437	रोशनी	475
438	बराऐ नाम मुसलमान	476
439	मुनकर नकीर को जवाब	477
440	दौलतमंद और दुरवैश	478
441	पुर असरार बुढ़िया	478
442	बीमार या तबीब	479
443	हर दिल अज़ीज़	481
444	हारून रशीद को नसीहत	481
445	बदशाह फक़ीर के घर	482

हिस्सा सोम
आठवाँ बाब
औलिया इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन

Scanned by CamScanner

446	हाकिम नीशापूर	483
447	आतिश परस्त बेहराम	486
448	कफन चोर	487
449	एक मुलहिद का जवाब	489
450	शैतान की मायूसी	489
451	वली की बीवी	490
452	ज़ादे राह	490
453	मुर्दों का माल	491
454	बुज़र्गों की नमाज़	491
455	बुज़र्गों का इल्म	492
456	बुज़र्गों की दुआ	492
457	निराली दुआ	493
458	रूनी हाकिम	494
459	इन्तिक़ाल मकानी	495
460	चिराग़ाँ	495
461	भाई को नसीहत	496
462	ख़्वाब की ताबीर	497
463	शमै ईमान	498
464	चार दुआयें	499
465	फिरासत मोमिन	499
466	ग़ीबत	501
467	मुंह की सियाही	502
468	दो तलवारें	502
469	तवाज़ौ	503
470	शैतान का जाल	504
471	गंवार	504
472	ज़माना नबुव्वत से बाद	505
473	दो सूफी	505
474	सफेद बाज़	506
475	तेल और पानी	507
476	दाना मुरीद	508
477	आँसू	509
478	इसतम्दाद	509
479	सुलतान मेहमूद दर खरक़नी पर	510
480	सोमनात	511
481	सरवरे आलम(स०अ०स०) और ग़ौसे आज़म(र०अ०)	512
482	बारिश	513
483	दजला की तुग़यानी	515
484	ग़ौसे आज़म(र०अ०) का इल्म	516
485	डाकूओं का सरदार	516
486	रमज़ान का चाँद	516
487	ग़ौसे आज़म की फूफी	518
488	कुम बिइज़निल्लाही	518
489	चील का सर	519
490	बायज़ीद बसतामी और सम्आन का बुत खाना	520
491	चुड़िया और अंधा सांप	520
492	शेर पर हकूमत	526
493	या लतीफ	528
494	मेहमान या मेज़बान	528
495	दाना दीवाना	530
496	गठरी	530
497	गोदड़ी में लअल	531
498	सायल हरम	532
499	पुर असरार जवान	533
500	बग़दाद का ताजिर	534
501	शेर ने हुक्म माना	535
502	शेर ने क़दम चूमे	537
503	सालेह नोजवान	537
504	दवाऐ ज़नूब	538
505	आफियत	539
506	हसीन लोंडी की क़ीमत	540
507	गुनाह करने का तरीक़ा	540

Scanned by CamScanner

508	रफ़ीक़ा जन्नत	541
509	जमाले हक़	542
510	एक बाक़ी	542
511	वली का तसर्रूफ	543
512	तवंगर व मुफलिस	543
513	ईफा अहद	544
514	दुश्मन की नुक्ता चीनी	544
515	बादशाह को नसीहत	545
516	शराबी का मुंह	545
517	रास्त गोई	546
518	जेलखाने से बाग़ में	547
519	शाही महल	548
520	इम्तिहान	548
521	गोश्त और हलवा	549
522	नूरानी औरत	550
523	कमसिन लड़का	551
524	हरगिज़ नमीरद आँके दिलिश ज़िंदा शद बअश्क़	552
525	कुआँ	553
526	जानवर भी ग़ुलाम	553
527	रेत की चीनी	554
528	भेड़ियों और बकरियों में सुलह	554
529	शराबी	555
530	अल्लाह के इनाम	555
531	तुम्हारे मुंह से जो निकली वो बात हो के रही	556
532	आंजोरा	556
533	निसबत का लिहाज़	557
534	बूढ़ा ग़ुलाम	557
535	जिन्दा पीर	558
536	तीन क़लंदर	558
537	ख़्वाजा तौरे बलिहारी जाऊँ	559
538	दिल की बात	559
539	रूबाई का जवाब	561
540	खयानत	562
541	गिरफ़्तारी	562
542	एक सय्यद बुज़ुर्ग	563
543	अब्दाल	563
544	अगर दारिद बराए दोस्त दारिद	564
545	जनाज़ा	565
546	ग़ौसे आज़म	565

नवाँ बाब
खुलफा-ए-सलातीन

548	सवारी का घोड़ा	566
549	बैश क़ीमत मोती	566
550	भेड़िये और बकरियाँ	567
551	बारे हकूमत	567
552	अपना काम आप	568
553	क़िस्सा	568
554	ताऊन	570
555	मर्दे खुदा	570
556	ज़नदीक़	570
557	तअज़ीमे इल्म	571
558	बादशाह रोम	571
559	पैंतीस हज़ार दीनार	572
560	सौदागरों का काम	573
561	निराली तदबीर	573
562	क़ातिल	575
563	मोतियों का हार	576
564	ज़ेहर आलूद हलवा	578
565	तरबूज़	579
566	जौ का दलिया	580
567	उल्लू की कहानी	581

Scanned by CamScanner

568	हश्शाम और हज़रत ताऊस	581
569	ग़रीब परवरी	583
570	दो मलऊन	583
571	जंडियाला का क़िला	586
572	बेवा की गाय	589
573	आलमगीरी अद्ल	589
574	सुलतान आलमगीर और एक बहरूपिया	592
575	अशर्फ़ियों की थेली	592
576	वाली-ए-खरासान	595
577	सिकंदर और चीन की शहज़ादी	597
578	सिकंदरे आज़म और एक क़ज़्ज़ाक़	597
579	सुलतान मेहमूद और एक हासिद	599
580	अमीर काबुल का एक फैसला	601
581	अदालते इस्लाम	603

दसवाँ बाब
मुख़्तलिफ़ हिकायात

583	मौलूद शरीफ	605
584	शहीद ज़िन्दा हैं	605
585	गाय की बछेरी	606
586	इंसाफ	607
587	बदला	608
588	नहूसते ज़ुल्म	609
589	नीयत का फल	609
590	सदक़े की बर्कत	610
591	संगदिल हाकिम	610
592	जज़े व फज़े	611
593	तोती का पैग़ाम	611
594	दाना की ख़ामोशी	612
595	नादान की ख़ामोशी	613
596	दुश्मन की नेकी	613
597	दुश्मन का वअज़	614
598	सलतनत व ग़र्बत	614
599	ईसार का बदला	615
600	अता बुज़र्गान	616
601	वली की क़ब्र पर	616
602	बरसाती नाला	617
603	कफ़नी लिखने का फायदा	617
604	ताज़ीम व तकरीम	618
605	अंगूर का हदया	619
606	ख़िज़्र अलेहिस्सलाम	620
607	जिन्न का क़त्ल	620
608	सलतनत की क़ीमत	621
609	शराबी का अंजाम	622
610	पत्थर और फूल	622
611	मेहनत व मज़दूरी	623
612	छूहारे का दरख़्त	623
613	अब्दुल करीम	623
614	हिकमत	624
615	पाखाने का कीड़ा	625
616	अंधा परिंदा	626
617	चोर पकड़े गए	626
618	शऊवाना	627
619	ईंट की कहानी	627
620	बे सिबाती दुनिया	628
621	पुर असरार फक़ीर	629
622	दुनिया परस्त का अंजाम	630
623	मोहलिक दुनिया	633
624	माले दुनिया	634
625	गधा और शाही घोड़े	635
626	शेर की खाल में गधा	635
627	हलवा	636

Scanned by CamScanner

628	रुपों की थेली	636
629	उक़्दत-उल-ममसूख़	638
630	हारून रशीद और उसकी लोंडी	639
631	बनान तुफ़ैली	640
632	युज़िल्ला बिही कसीरन	641
633	मुर्ग़ी की तक़्सीम	642
634	चार ज़हीन भाई	643
635	क़ुरआन से जवाब देने वाली औरत	645
636	हसीन लोंडी	649
637	तीन लोंडियाँ	650
638	दो लोंडियाँ	650
639	छः ज़हीन औरतें	651
640	औरत का फ़रेब	653
641	फैशन ऐबल धोका	654
642	ज़न मुरीद	655
643	लकड़ी की औरत	656
644	हीरे की तलाश	657
645	जामअे जवाब	659
646	हथैली के बाल	660
647	सफ़ेद साँप	662
648	उमरो बिन जाबिर (रज़ि०)	663
649	सर्क रज़ी अल्लाहो अन्ह	664
650	ख़ौफनाक वादी	664
651	मुबल्लिग़ जिन्न	666
652	बिछड़ों का मिलाप	667
653	आरिफ़ा	670
654	ना अहल	670
655	गवाह	671
656	मेहनत का फल	671
657	दुश्मने रसूल	672
658	मरने से डरना	673
659	हिसाब	673
660	आबादी	674
661	चार बुज़ुर्ग	674
662	एक बूढ़ा शेर	676
663	आईना-ए-हक़ नुमा	677
664	तवक्कल	678
665	क़ीमती पियाला	679
666	पुल सिरात	679
667	अद्ल व इंसाफ	680
668	रस्ता	681
669	नामे अक़्दस	681
670	दुनयवी मेहबूब	682
671	चालाक औरत	683
672	हज़रत अबु सईद रहमत-उल्लाह अलेह	685
673	मर्दे ज़ाकिर	686
674	तीन तीर	687
675	हल्ला फरोश	688
676	चालाक लोमड़ी	689
677	इत्तिफ़ाक़	690
678	दिल की बात	691
679	दूरदराज़ से	692
680	हक़ हक़ हक़	693
681	फिरऔन की हलाकत	693
682	गाय	695
683	एक राहिब का ख़्वाब	695
684	राहिब के सवालात	696
685	नफ़्स की मुख़ालफत	698

हिस्सा चहरम
दसवाँ बाब
मुख़्तलिफ हिकायात

Scanned by CamScanner

686	बातिनी क़िला	699
687	नमाज़ की बर्कत	700
688	माँ	701
689	शाही फ़रमान	701
690	सबसे ज़्यादा अहमक़	702
691	मलिक सालेह और एक दुरवैश	702
692	एक लड़के की दानाई	703
693	नोशेरवाँ और एक बूढ़ी औरत	704
694	एक आबिद	705
695	इल्म की बर्कत	706
696	दिल की बात	707
697	खोशा-ए-जन्नत	708
698	जन्नत की रफ़ाक़त	709
699	ग़ज़वा-ए-तबूक में	710
700	दूध का पियाला	710
701	घी का मशकीज़ह	711
702	खजूरें	712
703	नायब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम	712
704	चुड़िया की मौत	713
705	एक सौदागर का क़िस्सा	714
706	जिन्न	715
707	ख़ौफनाक सांप	716
708	अमीर व हाकिम	716
709	आग	717
710	चीस्त दुनिया	718
711	क़ैद	719
712	सच्ची बात	720
713	तीन रूकै	720
714	एत्राफ	721
715	अशर्फियों की थेली	722
716	नेक नाम	723
717	फ़ुसाहत व हाज़िर जवाबी	723
718	नंगा शैतान	724
719	इम्तिहान	725
720	तक़्वा	725
721	फिज़ूल खर्ची	726
722	इसतक़्लाल	727
723	सिद्दीक़े अक्बर (र०अ०)	727
724	जमा क़रआन	728
725	माफी-उल-अरहाम का इल्म	730
726	चोरी	730
727	दुनिया की तमसील	731
728	आईनूनी या इबादल्लाही	732
729	सबके हाजत रवा सलामुन अलेक	732
730	हलवान का पहाड़	733
731	अमीन भिकारी	735
732	ज़हरीला सांप	735
733	अबु अलमआली की हिकायत	736
734	क़ज़ीब की हिकायत	737
735	अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद क़रशी रहमत-उल्लाह अलेह	738
736	सच्चा मुसलमान	739
737	पनाह	739
738	लुत्फ व नर्मी	740
739	सब्कत्गीन बाशाह	741
740	सख़ावत	742
741	काला सांप	742
742	दुरूद शरीफ	743
743	पाकबाज़ माँ	744
744	जलाल फक़ीर	745
745	कलामे हक़	746
746	शायरी	747
747	बुज़र्गों का तसर्रूफ	747

Scanned by CamScanner

748	नर्मी व सख़्ती	748
749	शराब	749
750	शेर शाह सूरी	749
751	नूर मोहम्मदी (स०अ०स०)	753
752	पैश्वाऐ कुल	755
753	दुर्रे यतीम (स०अ०स०)	756
754	आग की खाई	757
755	रसूले बरहक़	758
756	दानाऐ ग़ैब	758
757	हर गिज़ नमीरद आँके दिलश ज़िन्दा शुद बअश्क़	759
758	बुज़र्गों की दुआ	759
759	खुदा की बन्दगी	760
760	नासहाना कलमात	760
761	दिलजोई	762
762	हज़ारों साल की उम्र	762
763	अज़ाबे क़ब्र	762
764	सुलतान को नसीहत सअदी	763
765	हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा की नसीहत	764
766	बादशाह और फक़ीर	765
767	ज़ेहरी नज़र	766
768	निशाने मर्दमी	766
769	चुग़ल खौर पर लानत	767
770	क़ब्रिस्तान	767
771	शैतान का अफसोस	768
772	अल्लाह की एक मक़्बूल बंदी	768
773	आग में	769
774	सब से बड़ी दौलत	770
775	रोज़ा	770
776	यहूदी से मुनाज़रा	771
777	हक़ बहक़ दार रसीद	773
778	कुत्ते की दुम	775
779	दूरअंदेशी	776
780	ज़ोज-उल-क़हबा	777
781	ज़मीन का बोझ	777
782	एक लाख दीनार	778
783	लज़ीज़ खाना	779
784	हवा	780
785	एक ताजिर	781
786	एक जिन्न	782
787	माँ का हक़	783

अदब-उल-अरब

788	अरब का एक मेहमान और एक लड़की	784
789	हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़	806
790	लाखों सलाम	816

पाँचवाँ हिस्सा
ग्यारहवाँ बाब

791	तशरीफ आवरी	818
792	रज़ाअत शरीफा	820
793	दीन व दुनिया	821
794	दाफअे-उल-बला	823
795	अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह	823
796	गोह की गवाही	824
797	मौजज़ा	825
798	मुनाफ़िक़	826
799	ऐलाने हज	826
800	हज़रत दानियाल अलेहिस्साम	827
801	आक़्बत अंदेशी	828
802	मौत के बाद कलाम	829
803	अबु जहल	829

Scanned by CamScanner

804	चार यार (रज़ी अल्लाहो अन्हुम)	830
805	अमीर तग़रूल	831
806	तीन सख़्ती	832
807	हसन व हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा	833
808	सिद्दीक़े अक्बर (र०अ०)	834
809	नेक ख़सलतें तीन सौ साठ हैं	835
810	सुनहरी महल	835
811	सत्तर हज़ार	836
812	चार मेहबूब	836
813	अहसनतुन्ना	837
814	खारजी को जवाब	837
815	अज़ान	838
816	अजीब सवाल	839
817	तक़्वा	840
818	सलामती व आफ़ियत	840
819	अद्ल की बर्कत	841
820	करामत	841
821	ग़ुलाम ख़लील	842
822	बेटा	843
823	नसीहत	843
824	हज़रत शिबली अलेह अर्रहमा	844
825	खुदा की ज़मानत	845
826	बेनियाज़ी	847
827	क़सतात	848
828	तवाज़ौ	848
829	रोना	849
830	असतग़फार	850
831	सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम	850
832	मोहब्बत औलिया	850
833	ईसाले सवाब	851
834	अदाऐ क़र्ज़	851
835	सलाम	852
836	चार बातें	852
837	ख़्वाहिशे नफ़्स	853
838	दोनों जहाँ	853
839	"से" और "को"	854
840	बदला	854
841	मुसाफिर मदीना	855
842	अल्लाह के शेर	855
843	इल्म की बर्कत	856
844	दुआ में एक हाथ	857
845	बुज़र्गों का फैज़	858
846	भेड़ और शेर	858
847	एक नेक बीबी	858
848	एक बुज़र्ग	859
849	हक़ गो	859
850	कुश्ती	860
851	जेल खाना	860
852	तलबे सादिक़	861
853	नूरानी ख़्वाब	861
854	खुदा का मेहमान	863
855	तारीफ़	863
856	लाइलाहा इल-लल्लाह	864
857	बन्दगी	865
858	मोहताज	866
859	अल्लाह की मर्ज़ी	866
860	गधे	867
861	खुदा का ख़ौफ	868
862	फिक्र इख़्तियारी	868
863	चार सवारियाँ	869
864	बन्द को खोल	869
865	ग़ीबत	870
866	अजज़ो बेचारगी	870

Scanned by CamScanner

867	अनानियत	870
868	पंदो निसाऐह	871
869	दुआ	872
870	पत्थर में आदमी	873
871	नेक नीयती	874
872	बुज़र्गों का हसद	874
873	सद्क़ा	875
874	साँप	876
875	बुज़र्गों की शर्म	876
876	बुज़र्गों का तक़वा	877
877	क़ब्र	877
878	पेट में	878
879	खुदा पर नज़र	878
880	बहुत जल्द	879
881	नंगे सर	879
882	रिहाई	880
883	तासीर कलाम	880
884	इस्मे आज़म	881
885	अब्दाल	881
886	हज़रत सईद बिन जबीर व हज्जाज बिन युसूफ	883
887	मोतियों का हार	885
888	अद्लो इंसाफ	889
889	नसीहत	892
890	रहम दिली	893
891	नमाज़ और बालों की आराईश	893
892	मच्छर का खून	894
893	मसावात	894
894	माज़रत	895
895	ज़हरीला फौड़ा	895
896	बुराई का बदला	896
897	दुनिया की हैसियत	896
898	ग़ाफिल इंसान की हक़ीक़त	897
899	सहाबा इक्राम	897
900	नेक काम में खर्च	898
901	दुनिया का घर	898
902	बुज़र्गों की नज़र	898
903	क़ब्रिस्तान	899
904	माहान अरमनी	899
905	गवाही	900
906	मसमरीज़म	901
907	एक बुज़र्ग	902
908	एक शहीद	902
909	ज़िन्दा ज़िन्दा ही हैं	903
910	दायाँ हाथ	904
911	कल की बात	904
912	हज़रत उमैर की कहानी	905
913	नसीहत	906
914	बे नमाज़	906
915	गुदड़ी में लअल	907
916	बूढ़ा यहूदी	908
917	दुआ क़बूल क्यों नहीं होती	909
918	अबु अल्फा	910
919	तीन दुआएँ	911
920	खुश्बू वाला	912
921	मक़्बूल लकड़हारा	913
922	कमाल तक़वा	914
923	बड़ा दरवाज़ा	914
924	दिल और ज़बान	915
925	फैसला	915
926	सबसे ज़्यादा मौअज़्ज़िज़	916
927	फक़ीर	917
928	शराब	918
929	आटे में मिलावट करने वाले का अंजाम	918

Scanned by CamScanner

930	ज़हीन लड़का	919
931	खुशहाल मस्त	919
932	हिम्मत व मेहनत	920
933	इत्तिफ़ाक़	921
934	भैंगा	921
935	अगर मगर	923
936	सुलतान मेहमूद और अयाज़	924
937	तवक्कल	926
938	आदमी की तलाश	927
939	गुमराह राहबर	928
940	फारूक़े आज़म(र०अ०) और एक चोर	929
941	सांप का चोर	930
942	चार जाहिल	931
943	जानवरों की बोलियाँ	932
944	चालाक औरत	934
945	हसद व रश्क	935

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहला बाब

वजूदे बारी और तौहीद

हिस्सा अव्वल

लो काना फ़ीहिमअ आलिहातन इल्ललाहू लफ़सादता

हिकायत नम्बर (1) हज़रत इमाम आज़म(र०अ०) का एक दहरिया से मुनाज़रह

हमारे इमाम हज़रत इमामे आज़म रज़ीअल्लाहो अन्ह का एक दहरिया, खुदा की हस्ती के मुनकिर से मुनाज़रा मुक़र्रर हुआ और मोज़ूअे मुनाज़रा यही मसला था के आलम का कोई ख़ालिक़ है या नहीं? इस अहम मसले पर मुनाज़रा और फिर इतने बड़े इमाम से चुनाँचे मैदाने मुनाज़रा में दोस्त दुश्मन सभी जमा हो गए मगर हज़रते इमाम आज़म वक़्ते मुक़र्ररह से बहुत देर के बाद मजलिस में तशरीफ़ लाए, दहरिया ने पूछा के आपने इतनी देर क्यों लगाई? आपने फ़रमाया के अगर मैं इसका जवाब ये दूं के मैं एक जंगल की तरफ़ निकल गया था वहाँ एक अजीब वाक़ेया नज़रा आया जिसको देखकर मैं हैरत में आकर वहीं खड़ा हो गया और वो वाक़ेया ये था के दरया के किनारे एक दरख़्त था, देखते ही देखते वो दरख़्त खुद ब खुद कट कर ज़मीन पर गिर पड़ा फिर खुद उसके तख़्ते तैयार हुए फिर उन तख़्तों की खुद ब खुद एक कश्ती तैयार हुई और खुद ब खुद ही दरया में चली गई और फिर खुद ब खुद ही वो दरया के इस तरफ़ के मुसाफ़िरों को उस तरफ़ और उस तरफ़ के मुसाफ़िरों को इस तरफ़ लाने और ले जाने लगी, फिर हर एक सवारी से खुद ही किराया भी वसूल करती थीं,

तो बताओ तुम मेरी इस बात पर यक़ीन कर लोगे?

दहरिया ने ये सुन कर एक क़हेक़हा लगाया और कहा, आप जैसा बुज़ुर्ग और इमाम ऐसा झूट बोले तो तआज्जुब है, भला ये काम क़हीं खुद ब खुद हो सकते हैं? जब तक कोई करने वाला ना हो किसी तरह नहीं हो सकते।

हज़रते इमाम आज़म ने फ़रमाया के ये तो कुछ भी काम नहीं हैं तुम्हारे नजदीक तो उससे भी ज़्यादा बड़े बड़े आलीशान काम खुद ब खुद बग़ैर

Scanned by CamScanner

किसी करने वाले के तैयार होते हैं, ये ज़मीन, ये आसमान, ये चाँद, ये सूरज, ये सितारे, ये बाग़ात, ये सदहा क़िस्म के रंगीन फूल और शीरीं फल ये पहाड़, ये चौपाए, ये इंसान, और ये सारी खुदाई बग़ैर बनाने वाले के तैयार हो गई, अगर एक कश्ती का बग़ैर किसी बनाने वाले के खुद ब खुद बन जाना झूट है तो सारे जहान का बग़ैर बनाने वाले के बन जाना इससे भी ज़्यादा झूट है।

दहरिया आपकी तक़रीर सुन कर दम ब खुद हैरत में आ गया और फ़ौरन अपने अक़ीदे से तायब होकर मुसलमान हो गया। (तफ़्सीर कबीर सफ़ा 221 जिल्द 1)

सबक़:- इस कायनात का यक़ीनन एक ख़ालिक़ है जिसका नाम अल्लाह है और वजूदे बारी का इंकार अक्ल के भी ख़िलाफ़ है।

हिकायात नम्बर (2) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक(र०अ०) और एक दहरिया मल्लाह

खुदा की हस्ती के एक मुनकिर की जो मल्लाह था हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ीअल्लाहो अन्ह से गुफ़्तगू हुई, वो मल्लाह कहता था के खुदा कोई नहीं(मआज़ अल्लाह!) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ीअल्लाहो अन्ह ने उससे फ़रमया तुम जहाज़ रान हो, ये तो बताओ कभी समुंद्री तूफ़ान से भी तुम्हें साबिक़ा पड़ा? वो बोला हाँ! मुझे अच्छी तरह याद है के एक मर्तबा समुंद्र के सख़्त तूफ़ान में मेरा जहाज़ फंस गया था, हज़रत इमाम ने फ़रमाया फिर क्या हुआ? वो बोला, मेरा जहाज़ ग़र्क़ हो गया और सब लोग जो उस पर सवार थे डूब कर हलाक हो गए, आपने पूछा और तुम कैसे बच गए? वो बोला मेरे हाथ जहाज़ का एक तख़्ता आ गया, मैं उसके सहारे तेरता हुआ साहिल के कुछ क़रीब पहुँच गया मगर अभी साहिल दूर ही था के वो तख़्ता भी हाथ से छूट गया, फिर मैंने खुद ही कोशिश शुरू कर दी और हाथ पैर मार कर किसी ना किसी तरह किनारे आ लगा, हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाने लगे, लो अब सुनो!

जब तुम अपने जहाज़ पर सवार थे तो तुम्हें अपने जहाज़ प्रर ऐतमाद व भरोसा था के ये जहाज़ पार लगा देगा और जब वो डूब गया तो फिर तुम्हारा ऐतमाद व भरोसा उस तख़्ते पर रहा जो इत्तेफ़ाक़न तुम्हारे हाथ लग गया था मगर जब वो भी तुम्हारे हाथ से छूट गया तो अब सोच कर बताओ के इस बेसहारा वक़्त और बेचारगी के आलम में भी क्या तुम्हें ये उम्मीद थी

Scanned by CamScanner

के अब भी कोई बचाना चाहे तो मैं बच सकता हूँ? वो बोला हाँ! ये उम्मीद तो थी, हज़रत ने फ़रमाया मगर वो उम्मीद थी किससे के कौन बचा सकता है? अब वो दहरिया ख़ामोश हो गया और आपने फ़रमया खूब याद रखो उस बेचारगी के आलम में तुम्हें जिस ज़ात पर उम्मीद थी वही खुदा है और उसी ने तुम्हें बचा लिया था, मल्लाह ये सुन कर होश में आ गया और इस्लाम ले आया। (तफ़्सीर कबीर सफ़ा 221 जिल्द 1)

सबक़: खुदा है और यक़ीनन है और मुसीबत के वक़्त ग़ैर इख़्तियारी तौर पर भी खुदा की तरफ़ ख़याल जाता है गोया खुदा की हस्ती का इक़्रार फ़ित्री चीज़ है।

हिकायात नम्बर (3) एक अक़्लमंद बुढ़िया

एक आलिम ने एक बुढ़िया को चर्खा कातते देख कर फ़रमाया के बुढ़िया! सारी उम्र चर्खा ही काता या कुछ अपने खुदा की भी पहचान की? बुढ़िया ने जवाब दिया के बेटा सब कुछ इसी चर्खे में देख लिया, फ़रमाया! बड़ी बी! ये तो बताओ के खुदा मौजूद है या नहीं? बुढ़िया ने जवाब दिया के हाँ हर घड़ी और रात दिन हर वक़्त खुदा मौजूद है, आलिम ने फ़रमाया मगर इसकी दलील? बुढ़िया बोली, दलील ये मेरा चर्खा, आलिम ने पूछा ये कैसे? वो बोली वो ऐसे के जब तक मैं इस चर्खे को चलाती रहती हूँ ये बराबर चलता रहता है और जब मैं इसे छोड़ देती हूँ तब ये ठहर जाता है तो जब इस छोटे से चर्खे को हर वक़्त चलाने वाले की ज़रूरत है तो ज़मीन व आसमान, चाँद सूरज के इतने बड़े चर्खों को किस तरह चलाने वाले की ज़रूरत ना होगी? पस जिस तरह ज़मीन व आसमान के चर्खे को एक चलाने वाला चाहिए जब तक वो चलाता रहेगा ये सब चर्खे चलते रहेंगे और जब वो छोड़ देगा तो ये ठहर जाऐंगे मगर हम ने कभी ज़मीन व आसमान, चाँद सूरज को ठहरे नहीं देखा तो जान लिया के उनका चलाने वाला हर घड़ी मौजूद है। मौलवी साहब ने सवाल किया, अच्छा ये बताओ के आसमान व ज़मीन का चर्खा चलाने वाला एक है या दो? बुढ़िया ने जवाब दिया के एक है और इस दावे की दलील भी यही मेरा चर्खा है क्यों के जब इस चर्खे को मैं अपनी मर्ज़ी से एक तरफ़ को चलाती हूँ ये चर्खा मेरी मर्ज़ी से एक ही तरफ़ को चलता है अगर कोई दूसरी चलाने वाली भी होती फिर या तो वो मेरी मददगार होकर मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ चर्खा चलाती तब तो चर्खा की रफ़्तार तेज़ हो जाती और इस चर्खे की रफ़्तार में फ़र्क़ आकर नतीजा

Scanned by CamScanner

हासिल ना होता और अगर वो मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ और मेरे चलाने की मुख़ालिफ़ जहेत पर चलाती तो ये चर्खा चलने से ठहर जाता या टूट जाता मगर ऐसा नहीं होता इस वजह से के कोई दूसरी चलाने वाली नहीं है इसी तरह आसमान व ज़मीन का चलाने वाला अगर कोई दूसरा होता तो ज़रूर आसमानी चर्खा की रफ़्तार तेज़ होकर दिन रात के निज़ाम में फ़र्क़ आ जाता या चलने से ठहर जाता या टूट जाता जब ऐसा नहीं है तो ज़रूर आसमान व ज़मीन के चर्खे को चलाने वाला एक ही है। (सीरत-उल-सालेहीन स०:3)

सबक़:- दुनिया की हर चीज़ अपने ख़ालिक़ के वजूद और उसकी यक्ताई पर शाहिद है मगर अक़्ले सलीम दरकार है।

दूसरा बाब

सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा(स०अ०स०)

वमा अरसल्नाका इल्ला रहमतल-लिलआलमीन

हिकायत नम्बर (4) जिब्राईले अमीन और एक नूरानी तारा

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने हज़रत जिब्राईले अमीन अलेहिस्सलाम से दरयाफ़्त फ़रमाया के ऐ जिब्राईल तुम्हारी उम्र कितनी है? तो जिब्राईल ने अर्ज़ किया हुज़ूर मुझे कुछ ख़बर नहीं हाँ इतना जानता हूँ के चौथे हिजाब में एक नूरानी तारा सत्तर हज़ार बरस के बाद चमकता था, मैंने उसे बहत्तर हज़ार मर्तबा चमकते देखा है, हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने ये सुनकर फ़रमाया *व इज़्ज़ती रब्बी अना ज़ालिकल कोकब* मेरे रब की इज़्ज़त की क़सम! मैं ही वो नूरानी तारा हूँ। (रूह-उल-बयान सफ़ा 974 जिल्द 1)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम कायनात की हर चीज़ से पहले पैदा फ़रमाए गए हैं और आपका नूरे पाक उस वक़्त भी था जब के ना कोई फ़रिश्ता था ना कोई बशर ना ज़मीन थी ना आसमान और ना कोई और शै। फ़सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर (5) यमन का बादशाह

किताब-उल-मुसतज़रफ़ और हज्जतुल्लाह अली अलआलमीन और तारीख़े इब्ने असाकर में है के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से एक हज़ार साल पैश्तर यमन का बादशा तुब्बअे अव्वल हमेरी था एक मर्तबा वो अपनी सल्तनत के दौरे को निकला, बारह हज़ार आलिम और हकीम और एक लाख बत्तीस हज़ार सवार और एक लाख तेरह हज़ार पियादे अपने हमराह लिए और इस शान से निकला के जहाँ भी पहुँचता उसकी शान व शौकते शाही देखकर मख्लूक़े खुदा चारों तरफ़ से नज़ारे को जमा हो जाती थी, ये बादशाह जब दौरा करता हुआ मक्का पहुँचा तो अहले मक्का से कोई उसे देखने ना आया, बादशा हैरान हुआ और अपने वज़ीरे आज़म से इसकी वजह पूछी तो उसने बताया के इस शहर में एक घर है जिसे बैत-उल्लाह कहते हैं, उसकी और उसके ख़ादिमों की जो यहाँ के बाशिन्दे हैं तमाम लोग बेहद तअज़ीम करते हैं और जितना आपका लश्कर है उससे कहीं ज़्यादा दूर और नज़दीक के लोग उस घर की ज़ियारत को आते हैं और यहाँ के बाशिन्दों की ख़िदमत करके चले जाते हैं, फिर आपका लश्कर उनके ख़याल में क्यों आए, ये सुन कर बादशाह को ग़ुस्सा आया और क़सम खा कर कहने लगा के मैं उस घर को खुदवा दूंगा और यहाँ के बाशिन्दों को क़त्ल करवाऊँगा, ये कहना था के बादशा के नाक, मुंह और आँखों से खून बहना शुरू हो गया और ऐसा बदबूदार माद्दा बहने लगा के उसके पास बैठने की भी किसी को ताक़त ना रही, इस मर्ज़ का इलाज किया गया मगर अफ़ाक़ा ना हुआ शाम के वक़्त बादशा के हमराही उलमा में से एक आलिम रब्बानी तशरीफ़ लाए और नब्ज़ देख कर फ़रमाया, मर्ज़ आसमानी है और इलाज ज़मीन का हो रहा है, ऐ बादशाह! आपने अगर कोई बुरी नीयत की है तो फ़ौरन उससे तौबा कीजिए, बादशाह ने दिल ही दिल में बैत-उल्लाह शरीफ़ और ख़ुद्दामे कअबा के मुतअल्लिक़ अपने इरादे से तौबा की, तौबा करते ही उसका वो खून और माद्दा बहना बन्द हो गया और फिर सेहत की खुशी में उसने बैत-उल्लाह शरीफ़ को रेशमीं ग़िलाफ़ चढ़ाया और शहर के हर बशिन्दे को सात सात अशर्फ़ी और सात सात रेशमी जोड़े नज़्र किए।

फिर यहाँ से चल कर जब मदीना मुनव्वरह पहुँचा तो हमराही उल्मा ने जो कुतुब समाविया के आलिम थे वहाँ की मिट्टी को सूंघा और कंकरियों को देखा और नबी आख़िर-उज़्ज़माँ की हिज्रतगाह की जो अलामतें उन्होंने पढी

Scanned by CamScanner

थीं, उनके मुताबिक़ उस सरज़मीन को पाया तो बाहम अहेद कर लिया के हम यहाँ ही मर जाऐंगे मगर इस सर ज़मीन को ना छोड़ेंगे, अगर हमारी क़िस्मत ने यावरी की तो कभी ना कभी जब नबी आख़िर-उज़्ज़माँ सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम यहाँ तशरीफ़ लायेंगे हमें भी ज़ियारत का शर्फ़ हासिल हो जाएगा, वरना हमारी क़ब्रों पर तो ज़रूर ही कभी ना कभी उनकी जूतियों की मुक़द्दस खाक उड़कर पड़ जाएगी जो हमारी निजात के लिए काफ़ी है।

ये सुनकर बादशाह ने उन आलिमों के वास्ते चार सौ मकान बनवाए और इस बड़े आलिमे रब्बानी के मकान पास हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़ातिर एक दो मंज़िला उम्दा मकान तैयार कराया और वसीयत कर दी के जब आप तशरीफ़ लायें तो ये मकान आपकी अरामगाह होगी और उन चार सौ उल्मा की काफ़ी माली इम्दाद भी की और कहा, तुम हमेशा यहीं रहो और फिर इस बड़े आलिमे रब्बानी को एक ख़त लिख दिया और कहा के मेरा ये ख़त इस नबी आख़िर-उज़्ज़माँ सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में पेश कर देना और अगर ज़िन्दगी भर तुम्हें सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़्यारत का मौक़ा ना मिले तो अपनी औलाद को वसीयत कर देना के नस्लन बाद नस्ल मेरा ये ख़त महेफ़ूज़ रखें हत्ता के सरकारे अब्दक़रार सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में पेश किया जाए, ये कहकर बादशाह वहाँ से चल दिया।

वो ख़त नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में एक हज़ार साल बाद पेश हुआ कैसे हुआ और ख़त में क्या लिखा था? सुनिए और अज़मते मुसतफ़ा सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का एत्राफ़ फ़रमाईए, ख़त का मज़मून ये था:

(तर्जुमह)"कमतरीन मख़्लूक़ तबअे अव्वल हमेरी की तरफ़ से, शफ़ीअ-उलमुज़नबीन सय्यद-उलमुर्सलीन मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो व सल्लम अम्मा बाद: ऐ अल्लाह के हबीब मैं आप पर ईमान लाता हूँ और जो किताब आप पर नाज़िल होगी उस पर ईमान लाता हूँ और आपके दीन पर हूँ, पस अगर मुझे आपकी ज़्यारत का मौक़ा मिल गया तो बहुत अच्छा व ग़नीमत और अगर मैं आपकी ज़्यारत ना कर सका तो मेरी शफ़ाअत फ़रमाना और क़यामत के रोज़ मुझे फ़रामोश ना करना, मैं आपकी पहली उम्मत में से हूँ और आपके साथ आपकी आमद से पहले ही बैत करता हूँ, मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह एक है और आप उसके सच्चे रसूल हैं।"

शाहे यमन का ये ख़त नस्लन बाद नस्ल उन चार सौ उल्मा के अन्दर

Scanned by CamScanner

हर्ज़ेजान की हैसियत से महेफूज़ चला आया यहाँ तक के एक हज़ार साल का अर्सा गुज़र गया, उन उल्मा की औलाद इस कसरत से बढ़ी के मदीने की आबादी में कई गुना इज़ाफ़ा हो गया और ये ख़त दस्त ब दस्त मअे वसीयत के उस बड़े आलिमे रब्बानी की औलाद में से हज़रत अबु अय्युब अनसारी रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास पहुँचा और आपने वो ख़त अपने ग़ुलामे ख़ास अबु लैला की तहवील में रखा और जब हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मक्का-ए-मोअज़्ज़मा से हिज्रत फ़रमा कर मदीना मुनव्वरह पहुँचे और मदीना मुनव्वरह की अलविदाई घाटी सनियात की घाटियों से आपकी ऊँटनी नमूदार हुई और मदीने के खुश नसीब लोग महेबूबे खुदा का इस्तक़बाल करने को जूक़ दर जूक़ आ रहे थे और कोई अपने मकानों का सजा रहा था तो कोई गलियों और सड़कों को साफ़ कर रहा था कोई दावत का इन्तेज़ाम कर रहा था और सब यही इसरार कर रहे थे के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मेरे घर तशरीफ़ फ़रमा हों। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के मेरी ऊँटनी की नकेल छोड़ दो जिस घर में ये ठहरेगी और बैठ जाएगी वही मेरी क़यामगाह होगी, चुनाँचे जो दो मंज़िला मकान शाहे यमन तबअे ने हुज़ूर की ख़ातिर बनवाया था वो उस वक़्त हज़रत अबु अय्युब अनसारी रज़ी अल्लाहो अन्ह की तहवील में था, उसी में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ऊँटनी जाकर ठहर गई। लोगों ने अबु लैला को भेजा के जाओ हुज़ूर को शाहे यमन तबअे का ख़त दे आओ जब अबु लैला हाज़िर हुआ तो हुज़ूर ने उसे देखते ही फ़रमाया तू अबु लैला है? ये सुनकर अबु लैला हैरान हो गया हुज़ूर ने फिर फ़रमाया, मैं मोहम्मद रसूल अल्लाह हूँ, शाहे यमन का जो मेरा ख़त तुम्हारे पास है लाओ वो मुझे दो चुनाँचे अबु लैला ने वो ख़त दिया और और हुज़ूर ने पढ़ कर फ़रमाया, सालेह भाई तबअे को आफ़रीं व शाबास है। (मेज़ान-उल-दयान सफ़ा 171)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का हर ज़माने में चर्चा रहा और खुश क़िस्मत अफ़्राद ने हर दौर में हुज़ूर से फ़ेज़ पाया और मोहम्मद सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अगली पिछली तमाम बातें जानते हैं और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की आमद आमद की खुशी में कमानात और बाज़ारों को सजाना और मुज़य्यन करना सहाबाइक्राम की सुन्नत है, फिर आज अगर हुज़ूर की आमद की खुशी में बाज़ारों को सजाया जाए घरों को मुज़य्यन किया जाए और जलूस निकाला जाए तो उसे बिदअत कहने वाला ख़ुद क्यों बिदअती ना होगा।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर (6) हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह का ख़्वाब

हज़रत सिद्दीक़े अक्कर रज़ी अल्लाहो अन्ह क़ब्ले अज़ इस्लाम एक बहुत बड़े ताजिर थे, आप तिजारत के सिलसिले में मुल्के शाम में तशरीफ़ फ़रमा थे के एक रात ख़्वाब में देखा के चाँद और सूरज आसमान से उतर कर उनकी गोद में आ पड़े हैं, हज़रते सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपने हाथ से चाँद और सूरज को पकड़ कर अपने सीने से लगाया और उन्हें अपनी चादर के अन्दर कर लिया सुबह उठे तो एक इसाई राहिब के पास पहुँचे और उससे इस ख़्वाब की ताबीर पूछी, राहिब ने पूछा आप कौन हैं? आपने फ़रमाया में अबु बक्र हूँ और मक्का का रहने वाला हूँ राहिब ने पूछा कौन से क़बीले से हैं आप? फ़रमाया, बनू हाशिम से, और ज़रियाऐ मआश क्या है? फ़रमाया तिजारत! राहिब ने कहा तो फिर ग़ौर से सुन लो नबी आख़िर-उज़्ज़माँ हज़रते मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ ले आए हैं वो भी इसी कबीले बनी हाशिम से हैं और वो आख़री नबी हैं और अगर वो ना होते तो खुदाऐ तआला ज़मीन व आसमान को पैदा ना फ़रमाता, वो अव्वलीन व आख़रीन के सरदार हैं और ऐ अबु बक्र! तुम उसके दीन में शामिल होगे और उसके वज़ीर और उसके बाद उसके ख़लीफ़ा बनोगे ये है तुम्हारे ख़्वाब की ताबीर और ये भी सुन लो मैंने उस पाक नबी की तारीफ़ व नाअत तौरात व इंजील में पढ़ी है और मैं उस पर ईमान ला चुका हूँ और मुसलमान हूँ लेकिन इसाईयों के ख़ौफ़ से अपने ईमान का इज़हार नहीं किया। हज़रते सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जब अपने ख़्वाब की ये ताबीर सुनी तो इश्क़े रसूल का जज़्बा बैदार हुआ और आप फ़ौरन मक्का मोअज़्ज़मा में वापस आए और हुज़ूर की तलाश करके बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और दीदारे पुर अनवार से अपनी आँखों को ठंडा किया। हुज़ूर ने फ़रमाया, अबु बक्र! तुम आ गए, लो अब जल्दी करो और दीने हक़ में दाख़िल हो जाओ। सिद्दीक़े अक्बर ने अर्ज़ किया बहुत अच्छा हुज़ूर! मगर कोई मौजज़ा तो दिखाईये। हुज़ूर ने फ़रमाया, वो ख़्वाब जो शाम में देख कर आए हो और उसकी ताबीर जो उस राहिब से सुनकर आए हो मेरा ही तो मौजज़ा है, सिद्दीक़े अक्बर ने ये सुन कर अर्ज़ किया : *सदक्ता या रसूलअल्लाही! अना अशहदअन्नाका रसूलअल्लाह* सच फ़रमाया ऐ अल्लाह के रसूल आपने और मैं गवाही देता हूँ के आप वाक़ई अल्लाह के

Scanned by CamScanner

सच्चे रसूल हैं (जामअे अलमोजज़ात सफ़ा 4)

सबक़:- हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला व सल्लम के वज़ीर और ख़लीफ़ा बरहक़ हैं और हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से कोई बात छुपी नहीं रहती आप दानाऐ ग़यूब हैं और ये भी मालूम हुआ के तमाम मख़्लूक़ हमारे हुज़ूर के ही सदक़े में पैदा की गई है अगर हुज़ूर ना होते तो कुछ ना होता!

वो जो ना थे तो कुछ ना था, वो जो ना हों तो कुछ ना हो!
जान हैं वो जहान की, जान है तो जहान है

हिकायत नम्बर(7) इबलीस का पोता

बेहेकी में अमीर-उल-मोमिनीन हज़रते उमर फ़ारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह से रिवायत है के एक रोज़ हम हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के हमराह तहामा की पहाड़ी पर बैठे थे के अचानक एक बूढ़ा हाथ में असा लिए हुए हुज़ूर रसूल-उल-सकलेन सय्यद-उल-अम्बिया सल-लल्लाहो तअला अलेह व सल्लम के सामने हाज़िर हुआ और सलाम अर्ज़ किया, हुज़ूर ने जवाब दिया और फ़रमाया, उसकी आवाज़ जिनों की सी है, फिर आपने उससे दरयाफ़्त किया तू कौन है? उसने अर्ज़ किया मैं जिन्न हूँ मेरा नाम हामा है, बेटा हेम का और हेम बेटा लाक़ीस का और लाक़ीस बेटा इबलीस का है, हुज़ूर ने फ़रमाया तो गोया तेरे और इबलीस के दरमियान सिर्फ़ दो पुश्तें हैं, फिर फ़रमाया अच्छा ये बताओ तुम्हारी उम्र कितनी है? उसने कहा या रसूल अल्लाह! जितनी उम्र दुनिया की है उतनी ही मेरी है कुछ थोड़ी सी कम है, हुज़ूर जिन दिनों क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया था उस वक़्त मैं कई बरस का बच्चा ही था मगर बात समझता था, पहाड़ों में दौड़ता फिरता था और लोगों का खाना व ग़ल्ला चोरी कर लिया करता था और लोगों के दिलों में वसवसे भी डाल लेता था के वो अपने ख़वीश व अक़रबअ से बदसलूकी करें।

हुज़ूर ने फ़रमाया: तब तो तुम बहुत बुरे हो, उसने अर्ज़ की हुज़ूर मुझे मलामत ना फ़रमाईये इसलिए के अब मैं हुज़ूर की ख़िदमत में तौबा करने हाज़िर हुआ हूँ, या रसूल अल्लाह! मैंने हज़रते नूह अलेहिस्सलाम से मुलाक़ात की है और एक साल तक उनके साथ उनकी मस्जिद में रहा हूँ, उससे पहले मैं उनकी बारगाह में भी तौबा कर चुका हूँ, हज़रते हूद, हज़रते याक़ूब और हज़रते यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की सोहबतों में भी रह चुका हूँ और उन से तौरात सीखी है और उनका सलाम हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम को

Scanned by CamScanner

पहुँचाया था और ऐ नबियों के सरदार ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया था के अगर तू मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मुलाक़ात करे तो मेरा सलाम उनको पहुँचाना, सो हुज़ूर! अब मैं इस अमानत से सबुकदोश होने को हाज़िर हुआ हूँ और ये भी आरज़ू है के आप अपनी ज़बाने हक़ तर्जुमान से मुझे कुछ कलाम अल्लाह तलीम फ़रमाईये, हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने उसे सूरह मुरसलात, सूरह अम्मायतासअलून, अख़्लास और मऊज़तीन और इज़ा अश्शम्स तालीम फ़रमायीं और ये भी फ़रमाया के ऐ हामा! जिस वक़्त तुम्हें कोई अहेतियाज हो फिर मेरे पास आ जाना और हम से मुलाक़ात ना छोड़ना।

हज़रते उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने तो विसाल फ़रमाया लेकिन हामा की बाबत फिर कुछ ना फ़रमाया, खुदा जाने हामा अब भी ज़िन्दा है या मर गया है (खुलासत-उल-तफ़ासीर सफ़ा 170)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम रसूल-उल-सक़लेन और रसूल अलकुल हैं और आपकी बारगाहे आलिया जिन्नो इन्स की मरजअे है।

हिकायत नम्बर (8) मुक़द्दस क़ातिल

मक्का मोअज़्ज़मा में एक काफ़िर वलीद नामी रहता था, उसका एक सोने का बुत था जिसे वो पूजा करता था एक दिन उस बुत में हर्कत पैदा हुई और वो बोलने लगा, उस बुत ने कहा। "लोगो! मोहम्मद अल्लाह का रसूल नहीं है, उसकी हर गिज़ तसदीक़ ना करना।" (मआज़ अल्लाह) वलीद बड़ा खुश हुआ और बाहर निकल कर अपने दोस्तों से कहा, मुबारकबाद! आज मेरा मअबूद बोला है और साफ़ साफ़ उसने कहा है के मोहम्मद अल्लाह का रसूल नहीं है, ये सुनकर लोग उसके घर आए तो देखा के वाक़ई उसका बुत ये जुमले दोहरा रहा है, वो लोग भी बहुत खुश हुए और दूसरे दिन एक आम एलान के ज़रिये वलीद के घर में एक बहुत बड़ा इजतमअ हो गया ताके उस दिन भी वो लोग बुत के मुंह से वही जुमला सुनें, जब बड़ा इजतमअ हो गया तो उन लोगों ने हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को भी दअवत दी ताके हुज़ूर खुद भी तशरीफ़ लाकर बुत के मुंह से वही बकवास सुन जाएँ चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम भी तशरीफ़ ले आए, जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो बुत बोल उठा:

"ऐ मक्का वालो! खूब जान लो के मोहम्मद अल्लाह के सच्चे रसूल हैं

Scanned by CamScanner

उनका हर इर्शाद सच्चा है और उनका दीन बरहक़ है तुम और तुम्हारे बुत झूटे, गुमराह और गुमराह करने वाले हैं अगर तुम इस सच्चे रसूल पर ईमान ना लाओगे तो जहन्नम में जाओगे पस अक़्लमंदी से काम लो और इस सच्चे रसूल की ग़ुलामी इख़्तियार कर लो।"

बुत का ये वाज़ सुन कर वलीद बड़ा घबराया और अपने मअबूद को पकड़ कर ज़मीन पर दे मारा और उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम फ़ातेहाना तौर पर वापस हुए तो रास्ते में एक घोड़े का सवार जो सब्ज़ पोश था हुज़ूर से मिला उसके हाथ में तलवार थी जिससे खून बह रहा था, हुज़ूर ने फ़रमाया तुम कौन हो? वो बोला हुज़ूर! मैं जिन हूँ और आपका ग़ुलाम और मुसलमान हूँ, जबले तूर पर रहता हूँ, मेरा नाम महीन बिन अलअेबर है, मैं कुछ दिनों के लिए कहीं बाहर गया हुआ था आज घर वापस आया तो मेरे घर वाले रो रहे थे, मैंने वजह दरयाफ़्त की तो मालूम हुआ के एक काफ़िर जिन्न जिसका नाम मुसफ़्फ़र था वो मक्का में आकर वलीद के बुत में घुस कर हुज़ूर के ख़िलाफ़ बकवास कर गया है और आज फिर गया है ताके फिर बुत में घुसकर आपके मुतअल्लिक़ बकवास करे या रसूल अल्लाह! मुझे सख़्त ग़ुस्सा आया, मैं तलवार लेकर उसके पीछे दौड़ा और उसे रास्ते ही में क़त्ल कर दिया और फिर मैं खुद वलीद के बुत के अन्दर घुस गया और आज जिस क़द्र तक़रीर की है मैंने ही की है या रसूल अल्लाह!

हुज़ूर ने ये क़िस्सा सुना तो आपने बड़ी मुसर्रत का इज़हार किया और उस अपने ग़ुलाम जिन्न के लिए दुआ फ़रमाई। (जाम: ।-अलमौजज़ात सफ़ा 7)

सबक़:- हमारे हुज़ूर जिनों के भी रसूल ; और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की शाने पाक के ख़िलाफ़ सुनने सुनाने के लिए कोई जल्सा करना ये वलीद जैसे काफ़िर की सुन्नत है।

हिकायत नम्बर (9) एक जन्तर मन्तर से इलाज करने वाला

क़बीलाऐ अज़्दशनवत में एक शख़्स था जिसका नाम ज़माद था वो अपने जन्तर मन्तर से लोगों के जिन्न भूत वग़ैरा के साए उतारा करता था एक मर्तबा वो मक्का मोअज़्ज़मा में आया तो बाज़ लोगों को ये कहते सुना के मोहम्मद को जिन्न का साया है या जुनून है (मआज़अल्लाह) ज़माद ने कहा मैं ऐसे बीमारों का इलाज अपने जन्तर मन्तर से कर लेता हूँ मुझे दिखाओ,

Scanned by CamScanner

वो कहाँ है? वो उसे हुज़ूर के पास ले आए। ज़माद जब हुज़ूर के पास बैठा तो हुज़ूर ने फ़रमाया, ज़माद! अपना जन्तर मन्तर फिर सुनाना पहले मेरा कलाम सुनो चुनाँचे आपने अपनी ज़बाने हक़ से ये ख़ुत्बा पढ़ना शुरू किया:

अल्हम्दुल्लाही नहमदहू व नसतईनुहू व नसतग़फ़िरहू व नोअमिनू बिहि व नतावक्कलू अलेहि व नऊज़ूबिल्लाही मिन शुरूरी अनफ़ुसिना व मिन सय्यीआती अआमालिना मंयहदीहील्लाह फ़ला मुज़िल्ल-ललाहू वमंय-युज़लिलहु फ़ला हादीयलाहू व अशहद अन्ला-ईलाहा इल-लल्लाहू वहदाहू लाशरीकलाहू व अशहदु अन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

ज़माद ने ये ख़ुत्बाऐ मुबारका सुना तो मबहूत रह गया और अर्ज़ करने लगा हुज़ूर! एक बार फिर पढ़िए। हुज़ूर ने फिर यही ख़ुत्बा पढ़ा, अब ज़माद (वो ज़माद जो साया उतारने आया था उसका अपना सायाऐ कुफ्र उतरता है देखिये) ना रह सका और बोला:

"खुदा की क़सम! मैंने कई काहिनों, साहिरों और शायरों की बातें सुनी लेकिन जो आपसे मैंने सुना है ये तो मअनन एक बहेरे ज़ख़ार है अपना हाथ बढ़ाईए, मैं आपकी बैअत करता हूँ, ये कहकर मुसलमन हो गया और जो लोग उसे इलाज करने के लिए लाए थे हैरान व पशेमान वापस फिरे" (मुस्लिम सफ़ा 320 जिल्द:1)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़बाने हक़ तर्जुमान में वो तासीर पाक थी के बड़े बड़े संग दिल मोम हो जाते थे और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर को जो लोग साहिर व मजनूँ कहते थे दरअसल वो खुद ही मजनून थे इसी तरह आज भी जो शख़्स हुज़ूर के इल्म व इख़्तियार और आपके नूरे जमाल का इंकार करता है वो दरअसल खुद ही जाहिल, सियाह दिल और सियाह रू है।

हिकायत नम्बर (10) रकाना पहलवान

बनी हाशिम में एक मुश्रिक शख़्स रकाना नामी बड़ा ज़बरदस्त और दिलैर पहलवान था उसका रिकार्ड था के उसे किसी ने ना गिराया था। वो एक जंगल में जिसे इज़्म कहते थे रहा करता था बकरियाँ चराता था। और बड़ा मालदार था, एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अकेले उस तरफ़ जा निकले, रकाना ने आपको देखा तो आप के पास आकर कहने लगा: ऐ मोहम्मद! तू ही वो है जो हमारे लात व उज्जा की तोहीन व तहक़ीर

Scanned by CamScanner

करता है और अपने एक खुदा की बड़ाई बयान करता ह? अगर मेरा तुझ से ताल्लुक़ रहमी ना होता तो आज मैं तुझे मार डालता, आ मेरे साथ कुश्ति कर, तू अपने खुदा को पुकार! मैं अपने लात व उज्ज़ा को पुकारता हूँ देखें तो तुम्हारे खुदा में कितनी ताक़त है? हुज़ूर ने फ़रमाया रकाना! अगर कुश्ति ही करना है तो चल मैं तैयार हूँ, रकाना ये जवाब सुनकर अव्वल तो हैरान हुआ और फिर बड़े ग़रूर के साथ मुक़ाबले में खड़ा हो गया।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने पहली ही झपट में उसे गिरा लिया और उसके सीने पर बैठ गए, रकाना उम्र में पहली मर्तबा गिर कर बड़ा शर्मिंदा भी हुआ और हैरान भी, और बोला ऐ मोहम्मद! मेरे सीने से उठ खड़ा हो मेरे लात व उज्ज़ा ने मेरी तरफ़ ध्यान नहीं किया एक बार और मौक़ा दो और दूसरी मर्तबा कुश्ति लड़ें, हुज़ूर सीने से उठ खड़े हुए और दोबारा कुश्ति के लिए रकाना भी उठा, हुज़ूर ने दूसरी मर्तबा भी रकाना को पल भर में गिरा लिया, रकाना ने कहा ऐ मोहम्मद! मालूम होता है आज मेरा लात व उज्ज़ा मुझ पर नाराज़ है और तुम्हारा खुदा तेरी मदद कर रहा है, ख़ैर एक मर्तबा और आओ, अब की दफ़ा लात व उज्ज़ा ज़रूर मेरी मदद करेंगे, हुज़ूर ने तीसरी मर्तबा की कुश्ति भी मंज़ूर फ़रमाई और तीसरी मर्तबा भी हुज़ूर ने उसे पिछाड़ दिया, अब तो रकाना बड़ा ही शर्मिंदा हुआ और बोला ऐ मोहम्मद! मेरी इन बकरियों में जितनी चाहो बकरियाँ ले लो हुज़ूर ने फ़रमाया रकाना मुझे तुम्हारे माल की ज़रूरत नहीं, हाँ मुसलमान हो जाओ ताके जहन्नम से बच जाओ। वो बोला या मोहम्मद! मुसलमान तो हो जाऊँ मगर नफ़्स झिझकता है के मदीना और नवाह की औरतें और बच्चे क्या कहेंगे के इतने बड़े पहलवान ने शिकस्त खाई और मुसलमान हो गया।

हुज़ूर ने फ़रमाया तो तेरा माल तुझी को मुबारक! ये कहकर आप वापस तशरीफ़ ले आए, इधर हज़रत अबु बक्र व उमर रज़ी अल्लाहो अन्हुमा आपकी तलाश में थे और ये मालूम करके के हुज़ूर वादीऐ इज़्म की तरफ़ तशरीफ़ ले गए हैं। मुताफ़क्किर थे के इस तरफ़ रकाना पहलवान रहता है मुबादा हुज़ूर को ईज़ा दे, हुज़ूर को वापस तशरीफ़ लाते देखकर दोनों हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! आप इधर अकेले क्यों तशरीफ़ ले गए थे जब के उस तरफ़ रकाना पहलवान जो बड़ा ज़ोरआवर और दुश्मने इस्लाम है, रहता है? हुज़ूर ये सुनकर मुसकुराए और फ़रमाया जब मेरा अल्लाह हर वक़्त मेरे साथ है फिर किसी रकाना वकाना की क्या परवाह। लो इस रकाना की पहलवानी का किस्सा सुनो, चुनाँचे

Scanned by CamScanner

हुज़ूर ने सारा किस्सा सुनाया, सिद्दीक़ व फ़ारूक़ सुन सुन कर खुश होने लगे और अर्ज़ किया हुज़ूर वो तो ऐसा पहलवान था के आज तक उसे किसी ने गिराया ही ना था, उसे गिराना गिराना अल्लाह के रसूल ही का काम है:(अबु दाऊद सफ़ा 209 जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हर फ़ज़्लो कमाल के मुनब्बअे व मख़्ज़न हैं और दुनिया की कोई ताक़त हुज़ूर के मुक़ाबले में नहीं ठहर सकती और मुख़ालफ़ीन के दिल भी हुज़ूर के फ़ज़्लो कमाल को जानते हैं लेकिन दुनिया की आर से उसका इक़्रार नहीं करते।

हिकायत नम्बर (11) ख़ालिद की टोपी

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह ज़ो अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार थे, आप जिस मैदाने जंग में तशरीफ़ ले जाते अपनी टोपी को ज़रूर सर पर रख कर जाते और हमेशा फ़तेह ही पाकर लौटते, कभी शिकस्त का मुंह ना देखते, एक मर्तबा जंगे यरमूक में जब के मैदाने जंग गर्म हो रहा था हज़रत ख़ालिद की टोपी गुम हो गई, आपने लड़ना छोड़ कर टोपी की तलाश शुरू कर दी, लोगों ने जब देखा के तीर और पत्थर बरस रहे हैं, तलवार और नेज़ेह अपना काम कर रहे हैं, मौत सामने है और उस आलम में ख़ालिद को अपनी टोपी की पड़ी हुई है और वो उसी को ढूंडने में मसरूफ़ हो गए हैं तो उन्होंने हज़रत ख़ालिद से कहा, जनाब टोपी का ख़याल छोड़िये और लड़ना शुरू किजिए, हज़रत ख़ालिद ने उनकी उस बात की परवाह ना की और टोपी की बदस्तूर तलाश शुरू रखी, आख़िर टोपी उनको मिल गई तो उन्होंने खुश होकर कहा भाईयो! जानते हो मुझे ये टोपी क्यों इतनी अज़ीज़ है? जान लो के मैंने आज तक जो जंग भी जीती इसी टोपी के तुफ़ैल, मेरा क्या है सब इसी की बर्कतें हैं, मैं इसके बग़ैर कुछ भी नहीं और अगर ये मेरे सर पर हो तो फिर दुश्मन मेरे सामने कुछ भी नहीं, लोगों ने कहा आख़िर इस टोपी की क्या खूबी है? तो फ़रमाया, ये देखो इसमें क्या है, ये हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सर अनवर के बाल मुबारक हैं जो मैंने इसी में सी रखे हैं। हुज़ूर एक मर्तबा उमरह बजा लाने को बैअत-उल्लाह शरीफ़ तशरीफ़ ले गए और सर मुबारक के बाल उतरवाए तो उस वक़्त हम में से हर एक शख़्स बाल मुबारक लेने की कोशिश कर रहा था और हर एक दूसरे पर गिरता था तो मैंने भी इसी कोशिश में आगे बढ़ कर चन्द बाल मुबारक हासिल कर लिए थे और फिर

Scanned by CamScanner

इस टोपी में सी लिए, ये टोपी अब मेरे लिए जुमला बर्कात व फ़तूहात का ज़रिया है, मैं इसी के सदक़े में हर मैदान का फ़ातहे बनकर लौटता हूँ फिर बताओ! ये टोपी अगर ना मिलती तो मुझे चैन कैसे आता? (हुज्जत-उल्लाह अललआलमीन सफ़ा 282)

सबक:- हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ही जुमला बर्कात व इनामात का ज़रिया हैं और आपका बाल बाल शरीफ़ बर्कत व रहमत है और ये भी मालूम हुआ के सहाबाऐ इक्राम अलेहिम अर्रिज़वान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मुतअल्लिक़ अशिया को बतौर तबर्रूक अपने पास रखते थे और जिसके पास आपका बाल मुबारक भी होता अल्लाह तआला उसे कामयाबियों से सरफ़राज़ फ़रमाता था।

हिकायत नम्बर (12) बाल का कमाल

हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की रेश मुबारक के दो बाल मुबारक हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को मिल गए, आप उन दो बालों को बतौर तबर्रूक घर ले आए और बड़ी तअज़ीम के साथ अन्दर एक जगह रख दिए, थोड़ी देर के बाद अन्दर से क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ें आने लगीं, सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह अन्दर गए तो मुलाक़ात की आवाज़ें तो आ रही थीं मगर पढ़ने वाले नज़र ना आते थे, हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर सारा क़िस्सा अर्ज़ किया तो हुज़ूर ने मुसकुरा कर फ़रमाया:

इन्नल मलाएकता यजतमीऊना अला शअरी व यक़राऊनल क़ुरआन

"ये फ़रिश्ते हैं जो मेरे बाल के पास जमा होकर क़ुरआन पढ़ते हैं"(जामअे-अल-मौजज़ात सफ़ा 62)

सबक़:- हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का हर बाल मुनब्बअे अलकमाल है और आपका बाल बाल शरीफ़ ज़ियारतगाहे ख़लायक़ है, फिर जिन लोगों के बाल मूंड कर नाई नालियों में फैंक देता है वो अगर हुज़ूर की मिस्ल होने का दावा करने लगें तो किस क़द्र ज़ुल्म है।

हिकायत नम्बर (13) बकरी ज़िन्दा हो गई

जंगे अहज़ाब में हज़रत जाबिर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दअवत की और एक बकरी

Scanned by CamScanner

ज़ब्ह की, हुज़ूर जब सहाबाऐ इक्राम की मईयत में जाबिर के घर पहुँचे तो जाबिर ने खाना लाकर आगे रखा, खाना थोड़ा था और खाने वाले ज़्यादा थे, हुज़ूर ने फ़रमाया थोड़े थोड़े आदमी आते जाओ और बारी बारी खाना खाते जाओ, चुनाँचे ऐसा ही हुआ के जितने आदमी खाना खा लेते वो निकल जाते, उसी तरह सब ने खाना खा लिया, जाबिर फ़रमाते हैं के हुज़ूर ने पहले ही फ़रमा दिया था के कोई शख़्स गोश्त की हड्डी ना तोड़े, ना फैंके, सब एक जगह रखते जाएँ जब सब खा चुके तो आपने हुक्म दिया के छोटी मोटी सब हड्डियाँ जमा कर दो, जमा हो गईं तो आपने अपना दस्त मुबारक उन पर रख कर कुछ पढ़ा आपका दस्ते मुबारक अभी हड्डियों के ऊपर ही था और ज़बाने मुबारक से आप कुछ पढ़ ही रहे थे के वो हड्डियाँ कुछ का कुछ बनने लगीं, यहाँ तक के गोश्त पोस्त तैयार होकर कान झाड़ती हुई वो बकरी उठ खड़ी हुई, हुज़ूर ने फ़रमाया: "जाबिर! ले ये अपनी बकरी ले जा।" (दलायल-उल-नबुव्वत सफ़ा 224 जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुनब्बअे अल-हयात और हयात बख़्श हैं, आपने मुर्दा दिलों और मुर्दा जिस्मों को भी ज़िन्दा फ़रमा दिया फिर जो लोग (मआज़ अल्लाह) हुज़ूर को "मर कर मिट्टी में मिलने वाला" कहते हैं किस क़द्र जाहिल और बेदीन हैं।

हिकायत नम्बर (14) साँप का अण्डा

एक सहाबी हज़रत हबीब अल्लाह बिन फ़िदयक रज़ी अल्लाहो अन्ह कहीं जा रहे थे के उनका पाँऊ इत्तेफ़ाक़न एक ज़हरीले साँप के अण्डे पर पड़ गया और वो पिस गिया और उसके ज़हर के असर से हज़रत हबीब बिन फ़िदयक रज़ी अल्लाहो अन्ह की आँखें बिलकुल सफ़ेद हो गईं और नज़र जाती रही, ये हाल देखकर उनके वालिद बहुत परेशान हुए और उन्हें लेकर हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में पहुँचे, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सारा किस्सा सुनकर अपना थूक मुबारक उनकी आँखों में डाला तो हज़रत हबीब बिन फ़िदयक की अंधी आँखें फ़ौरन रोशन हो गईं और उन्हें नज़र आने लगा। रावी का बयान है के मैंने खुद हज़रत फ़िदयक को देखा उस वक़्त उनकी उम्र अस्सी(80) साल की थी और आँखें तो उनकी बिलकुल सफ़ेद थीं मगर हुज़ूर की थूक मुबारक के असर से नज़र इतनी तेज़ थी के सूई में धागा डाल लेते थे। (दलायल-उल-नबव्वत सफा 167)

Scanned by CamScanner

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मिस्ल बनने वालों के लिए मुक़ाम ग़ौर है के हुज़ूर वो हैं जिनकी थूक मुबारक से अंधी आँखों में बीनाई और नूर पैदा हो जाए और वो वो हैं के उनकी थूक के मुतअल्लिक़ रेल गाड़ियों में ये लिखा होता है के "थूको मत। इससे बीमारी फैलती है।" फिर मर्ज़ व शिफ़ा दोनों बराबर कैसे हो सकती हैं?

हिकायत नम्बर (15) हज़रत जाबिर का मकान और एक हज़ार मेहमान

हज़रत जाबिर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जंगे ख़न्दक़ के दिनों हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम शिकम अनवर पर पत्थर बंधा देखा तो घर आकर अपनी बीवी से कहा के क्या घर में कुछ है ताके हम हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए कुछ पकाएँ और हुज़ूर को खिलाएँ? बीवी ने कहा, थोड़े से जौ हैं और ये एक बकरी का छोटा बच्चा है इसे ज़ब्ह कर लेते हैं आप हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को बुला लाईये मगर चूंके वहाँ लश्कर बहुत ज़्यादा है इसलिए हुज़ूर से पौशीदगी में कहियेगा के वो अपने हमराह दस आदमियों से कुछ कम ही लाएँ। जाबिर ने कहा, अच्छा तो लो मैं इस बकरी के बच्चे को ज़ब्ह करता हूँ तुम इसे पकाओ और मैं हुज़ूर को बुला लात हूँ, चुनाँचे जाबिर हुज़ूर की ख़िदमत में पहुँचे और कान में अर्ज़ किया हुज़ूर मेरे हाँ तशरीफ़ ले चलिये और अपने साथ दस आदमियों से कुछ कम आदमी ले चलिये। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने सारे लश्कर को मुख़ातिब फ़रमा कर फ़रमाया चलो मेरे साथ चलो जाबिर ने खाना पकाया है और फिर जाबिर के घर आकर हुज़ूर ने उस थोड़े से आटे में अपना थूक मुबारक डाल दिया और इसी तरह हंडिया में भी अपना थूक मुबारक डाल दिया और फिर हुक्म दिया के अब रोटियाँ और हंडिया पकाओ, चुनाँचे उस थोड़े से आटे और गोश्त में थूक मुबारक की बर्कत से इतनी बर्कत पैदा हुई के एक हज़ार आदमी खाना खा गया मगर ना कोई रोटी कम हुई और ना कोई बोटी। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 524)

सबक़:- ये हुज़ूर के थूक मुबारक की बर्कत थी के थोड़े से खाने में इतनी बर्कत पैदा हो गई के हज़ार आदमी सेर शिकम होकर खा गया लेकिन खाना बदस्तूर वैसे का वैसा ही रहा और कम ना हुआ और ये हुज़ूर की थूक मुबारक है और जो उनकी मिस्ल बशर बनने वाले हैं वो अगर कभी अपने

Scanned by CamScanner

घर की हंडिया में भी थूकें तो उनकी बीवी ही वो हंडिया बाहर फैंक देगी और कोई खाने को तैयार ना होगा, गोया उनके थूकने से थोड़े बहुत खाने से भी जवाब।

हिकायत नम्बर (16) कोज़े में दरया

हुदैबिया के रोज़ सारे लश्कर सहाबा में पानी ख़त्म हो गया हत्ता के वज़ और पीने के लिए भी पानी का क़तरा तक बाक़ी ना रहा। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के पास एक कोज़ह पानी का था हुज़ूर जब उस कोज़ेह से वज़ू फ़रमाने लगे तो सब लोग हुज़ूर की तरफ़ लपके और फ़रयाद की के या रसूल अल्लाह! हमारे पास तो एक क़तरा भी पानी का बाक़ी नहीं रहा हम ना तो वज़ कर सकते हैं और ना ही अपनी प्यास बुझा सकते हैं हुज़ूर! ये आप ही के कोंज़े में पानी बाक़ी है हम सब के पास पानी ख़त्म हो गया और हम प्यास की शिद्दत से बेचैन हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ये बात सुनकर अपना हाथ मुबारक उस कोज़े में डाल दिया लोगों ने देखा के हुज़ूर के हाथ मुबारक की पाँचों उंगलियों से पानी के पाँच चश्मे ज़ारी हो गए और सब लोग उन चश्मों से सैराब होने लगे और हर शख़्स ने जी भर के पानी पिया और प्यास बुझाई सब ने वज़ू भी कर लिया हज़रत जाबिर से पूछा गया के लश्कर की तअदाद कितनी थी? तो फ़रमाया उस वक़्त अगर एक लाख आदमी भी होते तो वो पानी सब के लिए काफ़ी था मगर हम उस वक़्त पन्द्रह सौ की तअदाद में थे।(मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 524)

सबक़:- हमारे हुज़ूर को अल्लाह ने ये इख़्तियार व तसर्रूफ़ फ़रमाया है के आप थोड़ीं चीज़ को ज़्यादा कर देते हैं "ना" से हाँ और मअदूम से मौजूद करना अल्लाह का काम है और थोड़े से ज़्यादा कर देना मुसतफ़ा का काम है और ये अल्लाह ही की अता है।

हिकायत नम्बर (17) एक सहराई क़ाफ़्ला

अरब के एक सहरा में एक बहुत बड़ा क़ाफ़्ला राह पैमा था के अचानक उस क़ाफ़्ला का पानी ख़त्म हो गया उस क़ाफ़्ला में छोटे बड़े बूढ़े जवान और मर्द औरतें सभी थे प्यास के मारे सब का बुरा हाल था और दूर तक पानी का निशान तक ना था और पानी उनके पास एक क़तरा तक बाक़ी ना रहा था ये आलम देखकर मौत उनके सामने रक़्स करने लगी मगर उन पर ये ख़ास करम हुआ के

Scanned by CamScanner

नागहानी आँ मग़ीस हर दोकौन
मुसतफ़ा पैदा शुदह अज़ बहरे औन

यानी अचानक दो जहाँ के फ़रयादरस मोहम्मद मुसतफ़ा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उनकी मदद फ़रमाने वहाँ पहुँच गए हुज़ूर को देख कर सबकी जान में जान आ गई और सब हुज़ूर के गिर्द जमा हो गए। हुज़ूर ने उन्हें तसल्ली दी और फ़रमाया के वो सामने जो टीला है उसके पीछे एक सियाह रंग हबशी ग़ुलाम ऊंटनी पर सवार हुए जा रहा है उसके पास पानी का एक मशकीज़ह है उसको ऊंटनी समेत मेरे पास ले आओ चुनाँचे कुछ आदमी टीले के उस पार गए तो देखा के वाक़ई एक ऊंटनी पर सवार हबशी जा रहा है वो उस हबशी को हुज़ूर के पास ले आए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उस हबशी से मशकीज़ह ले लिया और अपना दस्ते रहमत उस मशकीज़हे पर फैर कर उसका मुंह खोल दिया और फ़रमाया, आओ अब जिस क़द्र भी प्यासे हो आते जाओ और पानी पी पी कर अपनी प्यास बुझाते जाओ चुनाँचे सारे क़ाफ़्ले ने उस एक मशकीज़हे से जारी चश्माऐ रहमत से पानी पीना शुरू किया और फिर सब ने अपने अपने बर्तन भी भर लिए, सब के सब सैराब हो गए और सब बर्तन भी पुर आब हो गए, हुज़ूर का ये मौजज़ा देखकर वो हबशी बड़ा हैरान हुआ और हुज़ूर के दस्ते अनवर चूमने लगा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपना दस्ते अनवर उसके मुंह पर फैरा तो

शुद सपैदाँ रंगी ज़ादहऐ हबश
हमचू बदरूरोज़े रोशन शुद शबश

उस हबशी का सियाह रंग काफ़ूर हो गया और वो सफ़ेद पुरनूर हो गया फिर उस हबशी ने कलमा पढ़ कर अपना दिल भी मुनव्वर कर लिया और मुसलमान होकर जब वो अपने मालिक के पास पहुँचा तो मालिक ने पूछा तुम कौन हो? वो बोला तुम्हारा ग़ुलाम हूँ, मालिक ने कहा तुम ग़लत कहते हो, वो तो बड़ा सियाह रंग का था वो बोला ये ठीक है मगर मैं उस मुनब्बअे नूर ज़ाते बाबर्कात से मिल कर और उस पर ईमान लाकर आया हूँ जिसने सारी कायनात को मुनव्वर फ़रमा दिया है मालिक ने सारा क़िस्सा सुना तो वो भी ईमान ले आया। (मसनवी शरीफ़)

सबक़:- हमारे हुज़ूर बइज़्न अल्लाह दो जहान के फ़रयादरस हैं और मुसीबत के वक़्त मदद फ़रमाने वाले हैं फिर अगर कोई शख़्स यूं कहे के हुज़ूर किसी की मदद नहीं फ़रमा सकते और किसी की फ़रयाद नहीं सुनते तो

Scanned by CamScanner

वो किस क़द्र जाहिल व बेख़बर है पस अपना अक़ीदह ये रखना चाहिए के

फ़रयादअम्ती जो करे हाले ज़ार में
मुमकिन नहीं के ख़ैर बशर को ख़बर ना हो

हिकायत नम्बर(18) बादलों पर हकूमत

मदीना मुनव्वरह में एक मर्तबा बारिश नहीं हुई थी क़हेत का सा आला था और लोग बड़े परेशान थे एक जुमअे के रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआल अलेह व सल्लम जब के वाज़ फ़रमा रहे थे एक आराबी उठा और अ करने लगा या रसूल अल्लाह! माल हलाक हो गया और औलाद फ़ाक़ करने लगी दुआ फ़रमाईये बारिश हो। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह सल्लम ने उसी वक़्त अपने प्यारे प्यारे नूरानी हाथ उठाए रावी का बयान है आसमान बिलकुल साफ़ था अब्र का नाम व निशान तक ना था मगर मदन सरकार के हाथ मुबारक उठे ही थे के पहाड़ों की मानिंद अब्र छा गए औ छाते ही मिनह बरसने लगा, हुज़ूर मिंबर पर ही तशरीफ़ फ़रमा थे के मिन शुरू हो गया, इतना बरसा के छत टपकने लगी और हुज़ूर की रैश अनव से पानी के क़तरे गिरते हमने देखे फिर ये मिनह बन्द नहीं हुआ बल्के हफ़्त को बरसता रहा फिर अगले दिन भी और फिर उससे अगले दिन भी हत्त के लगातार अगले जुमअे तक बरसता ही रहा और हुज़ूर जब दूसरे जुमअ का वाज़ फ़रमाने उठे तो वही आराबी जिसने पहले जुमअे में बारिश ना होन की तकलीफ़ अर्ज़ की थी उठा और अर्ज़ करने लगा या रसूल अल्लाह! अब तो माल ग़र्क़ होने लगा और मकान गिरने लगे अब फिर हाथ उठाईये के ये बारिश बन्द भी हो। चुनाँचे हुज़ूर ने फिर उसी वक़्त अपने प्यारे प्यारे नूरानी हाथ उठाए और अपनी उंगली मुबारक से इशारा फ़रमा कर दुआ फ़रमाई के ऐ अल्लाह! हमारे इर्दगिर्द बारिश हो, हम पर ना हो, हुज़ूर का ये इशारा करना ही था के जिस जिस तरफ़ हुज़ूर की उंगली गई उस तरफ़ से बादल फटता गया और मदीना मुनव्वरह के ऊपर ऊपर सब आसमान साफ़ हो गया। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 528)

सबक़:- सहाबाइक्राम मुश्किल के वक़्त हुज़ूर ही की बारगाह में फ़रयाद लेकर आते थे और उनका यक़ीन था के हर मुश्किल यहीं हल होती है और वाक़ई वहीं हल होती रही है इसी तरह आज भी हम हुज़ूर ही के मोहताज हैं और बग़ैर हुज़ूर के वसीले के हम अल्लाह से कुछ भी नहीं पा सकते और सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की हकूमत बादलों पर भी जारी है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर (19) चाँद पर हकूमत

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दुश्मनों ने बिलख़सूस अबु जहल ने एक मर्तबा हुज़ूर से कहा के अगर तुम खुदा के रसूल हो तो आसमान पर जो चाँद है उसके दो टुकड़े करके दिखाओ। हुज़ूर ने फ़रमाया लो ये भी करके दिखा देता हूँ चुनाँचे आपने चाँद की तरफ़ अपनी उंगली मुबारक से इशारा फ़रमाया तो चाँद के दो टुकड़े हो गए, ये देख कर अबु जहल हैरान हो गया मगर बे ईमान माना भी नहीं और हुज़ूर को जादूगर ही कहता रहा। (हुज्जतु-उल्लाह सफ़ा 396 और बुखारी शरीफ़ सफ़ा 271 जुज़ 2)

सबक:- हमारे हुज़ूर की हकूमत चाँद पर भी जारी है और बावजूद इतने बड़े इख़्तियार के बे ईमान अफ़राद हुज़ूर के इख़्तियार व तसर्रूफ़ को फिर भी नहीं मानते।

हिकायत नम्बर (20) सूरज पर हकूमत

एक रोज़ मुक़ामे सेहबा में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नमाज़ ज़ौहर अदा की और फिर हज़रते अली रज़ी अल्लाहो अन्ह को किसी काम के लिए रवाना फ़रमाया हज़रते अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के वापस आने तक हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नमाज़ अस्र भी अदा फ़रमा ली और जब हज़रते अली वापस आए तो उनकी आग़ोश में अपना सर रख कर हुज़ूर सो गए हज़रते अली ने अभी तक नमाज़ अस्र अदा ना की थी इधर सूरज को देखा तो ग़ुरूब होने वाला था। हज़रत अली सोचने लगे के इधर रसूले खुदा आराम फ़रमा हैं और इधर नमाज़े खुदा का वक़्त हो रहा है, रसूले खुदा की इसतराहत का ख़याल रखूं तो नमाज़ जाती है और नमाज़ का ख़याल करूं तो रसूले खुदा की इसतराहत में ख़लल वाक़अे होता है। करूं तो क्या करूं? आख़िर मौला अली शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़ैसला किया के नमाज़ को क़ज़ा होने दो मगर हुज़ूर की नींद मुबारक में ख़लल ना आए चुनाँचे सूरज डूब गया और अस्र का वक़्त जाता रहा, हुज़ूर उठे तो हज़रत अली को मग़मूम देखकर वजह दरयाफ़्त की तो हज़रत अली ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मैंने आपकी इसतराहत के पेशे नज़र अभी तक नमाज़ अस्र नहीं पढ़ी और सूरज ग़ुरूब हो गया है हुज़ूर ने फ़रमाया तो ग़म किस बात का, लो अभी सूरज वापस आता है और फिर उसी मुक़ाम पर आकर रूकता है जहाँ वक़्ते अस्र होता है चुनाँचे हुज़ूर ने दुआ फ़रमाई

Scanned by CamScanner

तो ग़ुरूब शुदा सूरज फिर निकला और उल्टे क़दम उसी जगह आकर ठहर गया जहाँ अस्र के वक़्त होता है हज़रते अली ने उठकर अस्र की नमाज़ पढ़ी तो सूरज ग़ुरूब हो गया। (हुज्जत-उलअली-अलआलमीन सफ़ा 398)

सबक़: हमारे हुज़ूर की हकूमत सूरज पर भी जारी है और आप कायनात के हर ज़र्रे के हाकिम व मुख़्तार हैं आप जैसा ना कोई हुआ ना होगा ना हो सकता है।

हिकायत नम्बर (21) ज़मीन पर हकूमत

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत सिद्दीक़ अक़्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह की मईयत में जब मक्का से हिज्रत फ़रमाई तो क़ुरैशे मक्का ने एलान किया के जो कोई मोहम्मद (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) और उसके साथी (सिद्दीक़े अक्बर रज़ीअल्लाहो अन्ह) को गिरफ़्तार करके लाएगा उसे सौ ऊँट इनाम में दिए जाएँगे, सर्राक़ा बिन जअशिम ने ये एलान सुना तो अपना तेज़ रफ़्तार घोड़ा निकाला और उस पर बैठ क़र कहने लगा के मेरा ये तेज़ रफ़्तार घोड़ा मोहम्मद और अबु बक्र का पीछा कर लेगा और मैं अभी उन दोनों को पकड़ कर लाता हूँ चुनाँचे उनसे अपने घोड़े को दौड़ाया और थोड़ी देर में हुज़ूर के क़रीब पहुँच गया। सिद्दीक़े अक्बर ने जब देखा के सर्राक़ा घोड़े पर सवार हमारे पीछे आ रहा है और हम तक पहुँचने ही वाला है तो अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! सर्राक़ा ने हमें देख लिया है और वो देखिए हमारे पीछे आ रहा है। हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ सिद्दीक़ कोई फ़िक्र ना करो अल्लाह हमारे साथ है, इतने में सर्राक़ा बिलकुल क़रीब आ पहुँचा तो हुज़ूर ने दुआ फ़रमाई तो ज़मीन ने फ़ौरन सर्राक़ा के घोड़े को पकड़ लिया और उसके चारों पैर पेट तक ज़मीन में धंस गए, सर्राक़ा ये मंज़र देख कर घबराया और अर्ज़ करने लगा।

"या मोहम्मद! मुझे और मेरे घोड़े को इस मुसीबत से निजात दिलाईये मैं आप से वादा करता हूँ के मैं पीछे मुड़ जाऊँगा और जो कोई आपका पीछा करता हुआ आपकी तलाश में इधर आ रहा होगा उसे भी वापस ले जाऊँगा और आप तक ना आने दूंगा चुनाँचे हुज़ूर के हुक्म से ज़मीन ने उसे छोड़ दिया।"

सबक़: हमारे हुज़ूर का हुक्मो फ़रमान ज़मीन पर भी जारी है और कायनात की हर चीज़ अल्लाह ने हुज़ूर के ताबअे कर दी है फिर जिस शख़्स की अपनी बीवी भी उसकी ताबअे ना हो वो अगर हुज़ूर की मिस्ल बनने लगे तो वो किस क़द्र अहमक़ व बेवक़ूफ़ है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(22) दरख़्तों पर हकूमत

एक मर्तबा एक आराबी ने हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से कहा ऐ मोहम्मद! अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो कोई निशानी दिखलाईये हुज़ूर ने फ़रमाया अच्छा लो देखा! वो जो सामने दरख़्त खड़ा है उसे जाकर इतना कह दो के तुम्हें अल्लाह का रसूल बुलाता है चुनाँचे वो आराबी उस दरख़्त के पास गया और उससे कहा, तुम्हें अल्लाह का रसूल बुलाता है वो दरख़्त ये बात सुन कर अपने आगे पीछे और दायें बायें गिरा और अपनी जड़ें ज़मीन से उखाड़ कर ज़मीन पर चलने लगा और चलते हुए हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो गया और अर्ज़ करने लगा, "अस्सलाम अलेकुम या रसूल अल्लाह! आराबी हुज़ूर से कहने लगा अब इसे हुक्म दीजिए के ये फिर अपनी जगह पर चला जाए चुनाँचे हुज़ूर ने उसे फ़रमाया के जाओ वापस चले जाओ, वो दरख़्त ये सुनकर पीछे मुड़ गया और अपनी जगह जाकर फिर क़ायम हो गया।

आराबी ये मौजज़ा देख कर मुसलमान हो गया और हुज़ूर को सज्दा करने की इजाज़त चाही हुज़ूर ने फ़रमाया सज्दा करना जायज़ नहीं फिर उसने हुज़ूर के हाथ पैर मुबारक चूमने की इजाज़त चाही तो हुज़ूर ने फ़रमाया हाँ ये बात जायज़ है और उसने हुज़ूर के हाथ और पैर मुबारक चूम लिए। (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 441)

सबक़:- हमारे हुज़ूर का हुक्म दरख़्तों पर भी जारी है और ये भी मालूम हुआ के बुज़ुर्गों के हाथ पैर चूमने जायज़ हैं हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उससे मना नहीं फ़रमाया।

हिकायत नम्बर (23) दीवाना ऊँट

बनी निजार के एक बाग़ में एक दीवाना ऊँट घुस आया जो शख़्स भी उस बाग़ में जाता वो ऊँट उसे काटने दौड़ता था लोग बड़े परेशान थे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सारा क़िस्सा अर्ज़ किया हुज़ूर ने फ़रमाया, चलो मैं चलता हुँ चुनाँचे हुज़ूर उस बाग़ में तशरीफ़ ले गए और उस ऊँट से फ़रमाया, इधर आओ उस ऊँट ने जब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का हुक्म सुना तो दौड़ता हुआ हाज़िर हुआ और अपना सर हुज़ूर के क़दमों में डाल दिया हुज़ूर ने फ़रमाया इसकी नकेल लाओ, नकेल लाई गई और हुज़ूर ने

Scanned by CamScanner

उसे नकेल डाल कर उसके मालिक के हवाले कर दिया और वो आराम से चला गया, हुज़ूर ने फिर सहाबा से फ़रमाया, काफ़िरों के सिवा मुझे ज़मीन व आसमान वाले सब जानते हैं मैं अल्लाह का रसूल हूँ। (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 458)

सबक़:- हमारे हुज़ूर का हुक्म जानवरों पर भी जारी है और कायनात की हर शै बजुज़ काफ़िरों के हमारे हुज़ूर की रिसालत व सदाक़त को जानती है।

हिकायत नम्बर (24) बैत-उल्लाह की कुंजी

हिज्रत से पहले बैत-उल्लाह की कुंजी क़ुरैशे मक्का के क़ब्ज़े में थी और ये कुंजी उस्मान बिन तलहा के पास रहा करती थी, ये लोग बैत-उल्लाह को पीर और जुमअेरात के रोज़ खोला करते थे, एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए और उस्मान बिन तलहा से दरवाज़ा खोलने को फ़रमाया तो उस्मान ने दरवाज़ा खोलने से इंकार कर दिया, हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ उस्मान! आज तो तू ये दरवाज़ा खोलने से इंकार कर रहा है और एक दिन ऐसा भी आएगा के बैत-उल्लाह की ये कुंजी मेरे क़ब्ज़े में होगी और मैं जिसे चाहूंगा ये कुंजी दूंगा, उस्मान ने कहा तो क्या उस दिन क़ौमे क़ुरैश हलाक हो चुकी होगी? देखा जाएगा, फिर हिज्रत के बाद जब मक्का फ़तह हुआ और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सहाबा के क़ुदसी लश्कर समेत मक्का में फ़ातेहाना दाख़िल हुए तो सबसे पहले कअबा शरीफ़ में तशरीफ़ लाए और उसी कलीद बरदार उस्मान से कहा, लाओ वो कुंजी मेरे हवाले कर दो, नाचार उस्मान को वो कुंजी देनी पड़ी, हुज़ूर ने वो कुंजी लेकर उस्मान को मुख़ातिब फ़रमा कर फ़रमाया, उस्मान! लो, कलीद बरदार मैं भी तुझी को मुक़र्रर करता हूँ तुम से कोई ज़ालिम ही ये कुंजी लेगा।

उस्मान ने दोबारा कुंजी ली तो हुज़ूर ने फ़रमाया उस्मान! वो दिन याद है जब मैंने तुम से कुंजी तलब की थी और तुम ने दरवाज़ा खोलने से इंकार कर दिया था और मैं ने कहा था के एक दिन ऐसा भी आएगा के ये कुंजी मेरे क़ब्ज़े में होगी और मैं जिसे चाहूंगा दूंगा, उस्मान ने कहा हाँ हुज़ूर! मुझे याद है और मैं गवाही देता हूँ के आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। (हुज्जत-उल्लाह अलआलमीन 499)

सबक़:- हमारे हुज़ूर अगली पिछली सब बातों के आलिम हैं और क़यामत तक जो कुछ भी होने वाला है सब आप पर रोशन है ख़ुदा ने आपको इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है और आप दानाऐ ग़यूब व आलमे माकान

Scanned by CamScanner

व मा-यकून हैं फिर अगर कोई शख़्स यूं कहे के हुज़ूर को कल की बात का इल्म ना था तो वो किस क़द्र जाहिल है।

हिकायत नम्बर (25) गुमशुदा ऊँटनी

जंगे तबूक में हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ऊँटनी गुम हो गई तो एक मुनाफ़िक़ ने मुसलमानों से कहा के तुम्हारा मोहम्मद (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) तो नबी होने का मुद्दई है और तुम्हें आसमान की बातें सुनाता है फिर उसे अपनी ऊँटनी का पता क्यों नहीं चलता के वो कहाँ है? हुज़ूर ने जब मुनाफ़िक़ की ये बात सुनी तो फ़रमाया बेशक मैं नबी हूँ और मेरा इल्म अल्लाह ही का अता फ़रमूदा है लो सुनो! मेरी ऊँटनी फ़लाँ जगह खड़ी है एक दरख़्त ने उसकी नकेल को रोक रखा है जाओ वहाँ से उस ऊँटनी को ले आओ, चुनाँचे सहाबाइक्राम गए तो वाक़ई ऊँटनी उसी जगह खड़ी थी और उसकी नकेल दरख़्त से अटकी हुई थी। (ज़ाद-उल-मआद सफ़ा 3 जिल्द 3 हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 510)

सबक:- हमारे हुज़ूर को अल्लाह ने इस क़द्र इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है के कोई बात आप से छुपी हुई नहीं मगर मुनाफ़िक़ इस इल्मे ग़ैब के मोअतरिफ़ नहीं।

हिकायत नम्बर (26) क़ैदी चचा

जंगे बद्र में जब अल्लाह ने मुसलमानों को फ़तह और कुफ़्फ़ार को शिकस्त दी तो मुसलमानों के हाथ जो क़ैदी आए उनमें हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के चचा हज़रते अब्बास भी थे क़ैदियों से जब तावान तलब किया गया तो हज़रत अब्बास कहने लगे ऐ मोहम्मद! मैं तो एक ग़रीब आदमी हूँ मेरे पास क्या है मक्का में जब आपने मुझे छोड़ा था तो मैं तमाम क़बीले के अफ़्राद से ग़रीब था हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया और अब जब के आपने अपने घर से फ़ौज कुफ़्फ़ार के साथ जंगे बद्र में आना चाहा तो आप अपनी बीवी उम्मे फ़ज़्ल को पौशीदगी में चन्द सोने की ईंटें देकर आए थे चचा जान! ये राज़ आप क्यों छुपा रहे हैं, हज़रते अब्बास ये ग़ैब की बात सुन कर हैरान रह गए और बक़ौले शायर

जनाबे हज़रत अब्बास पह रअेशा हुआ तारी
के पैग़म्बर तो रखता है दिलों की भी ख़बरदारी

Scanned by CamScanner

ख़याल आया मुसलमाँ नेक व बद पहचान जाते हैं
मोहम्मद आदमी के दिल की बातें जान जाते हैं

हुज़ूर की ये इत्तिला अली अलग़ैब का मौजज़ा देखकर हज़रत अब्बास ईमान ले आए।

(दलायल-उल-नबुव्वत सफ़ा 171 जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कोई बात मख़्फ़ी नहीं अल्लाह ने हर चीज़ का हुज़ूर को इल्म दे दिया है और ये इल्मे ग़ैब भी हुज़ूर का एक मौजज़ा है जिस पर हर मुसलमान का ईमान है।

हिकायत नम्बर (27) कबूतर के बच्चे

एक आराबी अपनी आसतीन में कुछ छुपाए हुए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा ऐ मोहम्मद! (मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) अगर तू बता दे के मेरी आसतीन के अन्दर क्या है तो मान लूंगा के वाक़ई तू सच्चा नबी है। हुज़ूर ने फ़रमाया वाक़ई ईमान ले आओगे? उसने कहा हाँ वाक़ई ईमान ले आऊँगा, फ़रमाया तो सुनो! तुम एक जंगल से गुज़र रहे थे तो तुम न एक दरख़्त देखा जिस पर कबूतर का एक घोंसला था उस घोंसले में कबूतर के दो बच्चे थे तुम ने उन दोनों बच्चों को पकड़ लिया उन बच्चों की माँ ने जब देखा तो वो माँ अपने बच्चों पर गिरी तो तुम ने उसे भी पकड़ लिया और वो दोनों बच्चे और उनकी माँ इस वक़्त भी तुम्हारे पास हैं और इस आसतीन के अन्दर हैं।

आराबी ये सुनकर हैरान रह गया और झट पुकार उठा: *अशहद-अन-ला इलाहा इल-लल्लाह व अशहद अन्नका रसूल अल्लाह* (जामअे अलमौजज़ात सफ़ा 21)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कोई चीज़ पनेहाँ ना थी और एक आराबी भी उस हक़ीक़त जानता था के जो नबी हो वो ग़ैब जान लेता है फिर बराए नाम पढ़ा लिखा होकर हुज़ूर के इल्म को तसलीम ना करे वो उजड और गंवार से भी ज़्यादा उजद और गंवार हुआ या नहीं?

हिकायत नम्बर (28) जन्नत की ऊँटनी

हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह एक बार घर तशरीफ़ लाए तो

Scanned by CamScanner

हज़रत फ़ातिमा रज़ी अल्लाहो अन्हा ने कहा मैंने ये सूत काता है आप इसे बाज़ार ले जाईए और बेच कर आटा ले आईये ताके हसन व हुसैन (रज़ी अल्लाह अन्हुमा) को रोटी खिलाऊँ, हज़रत अली वो सूत बाज़ार ले गए और उसे छः रुपये पर बेच दिया, फिर उन रुपयों का कुछ ख़रीदना चाहते थे के एक सायल ने सदा की *मंयुक़रिज़-उल्लाहा क़रज़न हसाना*, हज़रत अली ने वो रुपये उस सायल को दे दिए थोड़ी देर के बाद एक आराबी आया जिसके पास बड़ी फ़रबा एक ऊँटनी थी वो बोला ऐ अली! ये ऊँटनी ख़रीदोगे? फ़रमाया पैसे पास नहीं, आराबी ने फ़रमाया उधार देता हूँ ये कह कर ऊँटनी की मिहार हज़रत अली के हाथ में दे दी और खुद चला गया, इतने में एक दूसरा आराबी नमूदार हुआ और कहा अली! ऊँटनी देते हो? फ़रमाया ले लो आराबी ने कहा तीन सौ नक़द देता हूँ ये कहा और तीन सौ नक़द हज़रत अली को दे दिए और ऊँटनी लेकर चला गया उसके बाद हज़रत अली ने पहले आराबी को तलाश किया मगर वो ना मिला आप घर आए और देखा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत फ़ातिमा के पास तशरीफ़ फ़रमा हैं हुज़ूर ने मुसकुरा कर फ़रमाया, अली! ऊँटनी का किस्सा तुम खुद सुनाते हो या मैं सुनाऊँ?

हज़रत अली ने अर्ज़ किया हुज़ूर आप ही सुनाएँ फ़रमाया पहला आराबी जिब्राईल था और दूसरा आराबी इसराफ़ील था और ऊँटनी जन्नत की वो ऊटनी थी जिस पर जन्नत में फ़ातिमा सवार होगी खुदा को तुम्हारा ईसार जो तुम ने छः रुपये सायल मो दिए पसंद आया और उसके सिले में दुनिया में भी उसने तुम्हें उसका अज्र ऊँटनी की ख़रीद व फ़रोख़्त के बहाने दिया। (जामअे अलमोजज़ात सफ़ा 4)

सबक़:- अल्लाह वाले खुद भूके रहकर भी मोहताजों को खाना खिलाते हैं ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम दानाऐ ग़यूब हैं आपसे कोई बात मख़फ़ी नहीं।

हिकायत नम्बर (29) जंगल की हिरनी

एक जंगल मैं एक हिरनी रहती थी उसके दो बच्चे थे एक बार वो बाहर निकली तो किसी शिकारी ने राह में जाल बिछा रखा था बेख़बर हिरनी उस जाल में फंस गई जब उसने देखा के मैं तो फंस गई हूँ तो बड़ी परेशान हुई उसकी खुश क़िस्मती देखिए के उसी जंगल में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाते हुए उसे नज़र आए जब उसने हुज़ूर रहमते

Scanned by CamScanner

आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा तो पुकारी या रसूल अल्लाह! मुझ पर रहम फ़रमाईए हुज़ूर ने उसकी पुकार सुनी और उसके पास तशरीफ़ लाकर फ़रमाया क्या हाजत है? वो बोली हुज़ूर! मैं उस आराबी के जाल में फंस गई हूँ मेरे दो छोटे छोटे बच्चे हैं जो उस क़रीब के पहाड़ों में हैं थोड़ी देर के लिए आप मेरी ज़मानत देकर इस जाल से मुझे आज़ाद करा दीजिए ताके मैं आख़िरी बार एक मर्तबा बच्चों को दूध पिला आऊँ, हुज़ूर मैं दूध पिलाकर फिर यहीं वापस आजाऊँगी, हुज़ूर ने फ़रमाया अच्छा जा मैं तुम्हारी ज़मानत देता हूँ और तुम्हारी जगह यहीं ठहरता हूँ, तो बच्चों को दूध पिलाकर जल्दी वापस आ जाओ चुनाँचे हिरनी को आपने रिहा कर दिया और वहाँ खुद क़याम फ़रमा हो गए आराबी जो मुसलमान ना था कहने लगा, अगर मेरा शिकार वापस ना आया तो अच्छा ना होगा हुज़ूर ने फ़रमाया तुम देखो तो सही के हिरनी वापस आती है या नहीं। चुनाँचे हिरनी बच्चों के पास पहुँची और बच्चों को दूध पिला कर फ़ौरन वापस लौटी और आते ही हुज़ूर के क़दमों पर सर डाल दिया ये अेजाज़ देखकर वो आराबी भी क़दमों पर गिर गया

झुक गए सर हिरनी व काफ़िर के दोनों साथ साथ
मुसतफ़ा ने उनके सर पर रख दिया रहमत का हाथ
फिर बशारत उसको और उसको मिली सरकार से
जाल से आज़ाद तू, और तू अज़ाबे नार से!

(शिफ़ा शरीफ़ सफ़ा 76 जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जानवरों तक के लिए रहमत हैं और जानवर भी हुज़ूर के हुक्म की तामील करते हैं फिर जो इंसान होकर हुज़ूर का हुक्म ना माने वो जानवरों से भी गया गुज़रा है या नहीं?

हिकायत नम्बर (30) एक काफ़िरा का मकान

हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम फ़तह मक्का के बाद एक दिन मक्का मोअज़्ज़मा की एक काफ़िरा औरत के मकान की दीवार से तकिया लगाकर किसी अपने ग़ुलाम से गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे उस माकन वाली काफ़िरा को जब पता चला के मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मेरे मकान की दीवार से तकिया लगाए खड़े हैं तो बुग़्ज़ व अदावत से उसने अपने मकाल की सब खिड़कियाँ बन्द कर डालीं

Scanned by CamScanner

ताके हुज़ूर की आवाज़ ना सुन पाए उसी वक़्त जिब्राईले अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया:

या रसूल अल्लाह! खुदा फ़रमाता है के अगरचे ये औरत काफ़िरा है मगर आपकी शान बड़ी अरफ़अ व बुलंद है चूंके उस काफ़िरा के मकान की दीवार के साथ आपकी पुश्ते अनवर लग गई है इस लिए मैं नहीं चाहता के ये मकान वाली अब जहन्नम में जले। उस औरत ने अपने मकान की खिड़कियों को बन्द किया है मगर मैंने उसके दिल की खिड़की खोल दी है और ये सिर्फ़ उसकी दीवार से आपके तकिया लगा कर खड़े होने की बर्कत से है, इतने में वो औरत बेचैन होरक घर से निकली और हुज़ूर के क़दमों पर गिर गई और सच्चे दिल से पुकार उठी। *अशहद-अन-ला इलाहा इल-लल्लाह व अशहद अन्नका रसूल अल्लाह* (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 78 जिल्द 2)

सबक़:- जिस औरत के मकान की दीवार से हुज़ूर की पुश्ते अनवर लग गई वो औरत आग से बच गई तो जिस खुश क़िस्मत और मुक़द्दस ख़ातून हज़रते आमना रज़ी अल्लाहो अन्हा के शिकम अनवर में हुज़ूर ने क़याम फ़रमया हो वो मुक़द्दस ख़ातून क्यों जन्नत की मालिक ना होगी फिर किस क़द्र बदबख़्त हैं वो लोग जो हुज़ूर के वालदैन मोअज़्मीन के मुतअल्लिक़ कुछ का कुछ बकते हैं।

"रज़ी अल्लाहो तआला अन व अलदीयह सल-लल्लाहो अलेह व आलिही व सल्लम"

हिकायत नम्बर (31) शीरख़्वार बच्चे का एलाने हक़

हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक मर्तबा सहाबाइक्राम अलेहिम अर्रिज़्वान में तशरीफ़ फ़रमा थे के एक मुशरिका औरत जिसकी गोद में दो माह का शीरख़्वार बच्चा था उस तरफ़ से गुज़री उस बच्चे ने हुज़ूर की तरफ़ नज़र की तो यकदम बज़बाने फ़सीह पुकार उठा:

अस्सलाम अलेका या रसूल व या अकरमा ख़ल्क़ीअल्लाह

माँ ने जब देखा के मेरा दो माह बच्चा कलाम करने लगा है तो हैरान रह गई और बोली बेटा! ये कलाम करना तुझे किस ने सिखा दिया? और ये अल्लाह के रसूल हैं, ये तुझे किस ने बता दिया? बच्चा अब अपनी माँ से मुख़ातिब होकर कहने लगा ऐ माँ! ये कलाम करना मुझे उसी अल्लाह ने

Scanned by CamScanner

सिखाया है जिसने सब इंसानों को ये ताक़त दी है और ये देख मेरे सर पर जिब्राईले अमीन खड़े हैं जो मुझे बता रहे हैं के ये अल्लाह के रसूल हैं माँ ने ये अेजाज़ देखा तो झट कलमा पढ़ कर मुसलमान हो गई, मौलाना रूमी अलेह अर्रहमत मसनवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं के फिर हुज़ूर ने उस बच्चे को मुख़ातिब फ़रमाया और दरयाफ़्त फ़रमाया के तुम्हारा नाम क्या है? तो वो बोला

अब्द ईज़्ज़ा पेश एँ यकमश्त चीज़
लेक नामम पेशे हक़ अब्दुल अज़ीज़

यानी या रसूल अल्लाह! इस मुश्ते खाक माँ के नज़दीक तो मेरा नाम अब्दे ईज़्ज़ा है लेकिन अल्लाह के नज़दीक मेरा नाम अब्दुल अज़ीज़ है। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 78 जिल्द 2)

सबक़:- एक दो माह का बच्चा तो हुज़ूर को जान और मान ले और अपनी माँ को भी जन्नत में ले जाए मगर अफ़्सोस उन उम्र रसीदा बदबख़्तों पर जिन्होंने हुज़ूर को ना जाना ना माना और अपनी जहालत व गुस्ताख़ियों से खुद भी डूबे और दूसरों को भी ले डूबे।

हिकायत नम्बर (32) रात का चोर

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह को सदक़ाए फ़ित्र की हिफ़ाज़त के लिए मुक़र्रर फ़रमाया, हज़रत अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह रात भर उस माल की हिफ़ाज़त फ़रमाते रहे, एक रात एक चोर आया और माल चुराने लगा, हज़रते अबु हुरेरा ने उसे देख लिया और उसे पकड़ लिया और फ़रमाया मैं तुझे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में पेश करूंगा उस चोर ने मिन्नत समाजत करना शुरू की और कहा खुदारा मुझे छोड़ दो मैं साहिबे अयाल हूँ और मोहताज हूँ, अबु हुरेरह को रहम आ गया और उसे छोड़ दिया। सुबह अबु हुरेरह जब बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो हुज़ूर ने मुसकुरा कर फ़रमाया अबु हुरेरह! वो रात वाले तुमहारे क़ैदी (चोर) ने क्या किया? अबु हुरेरह ने अर्ज़ किया, हुज़ूर! उसने अपनी अयाल दारी और मोहताजी बयान की तो मुझे रहम आ गया और मैंने छोड़ दिया हुज़ूर ने फ़रमाया उसने तुम से झूट बोला, ख़बरदार रहना आज रात वो फिर आएगा। अबु हुरेरह कहते हैं के मैं दूसरी रात भी उसके इन्तिज़ार में रहा क्या देंखता हूँ के वो वाक़ई फिर आ पहुँचा और माल चुराने लगा मैंने फिर

Scanned by CamScanner

उसे पकड़ लिया उसने फिर मिन्नत खुशामद की और मुझे फिर रहम आ गया और मैंने फिर छोड़ दिया सुबह जब हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर हुआ तो हुज़ूर ने फिर फ़रमाया, अबु हुरेरह! वो रात वाले कैदी (चोर) ने क्या किया? मैंने फिर अर्ज़ किया के हुज़ूर! वो अपनी हाजत बयान करने लगा तो मुझे रहम आ गया और मैंने फिर छोड़ दिया, हुज़ूर ने फ़रमाया उसने तुम से झूट कहा ख़बरदार! आज वो फिर आएगा अबु हुरेरह कहते हैं के तीसरी रात वो फिर आया और मैंने उसे पकड़ कर कहा कमबख़्त आज ना छोड़ूंगा और हुज़ूर के पास ज़रूर ले जाऊँगा। वो बोला, अबु हुरेरह! मैं तुझे चन्द ऐसे कलमात सिखा जाता हूँ जिनको पढ़ने से तू नफ़ा में रहेगा, सुनो! जब सोने लगो तो आयत-अलकुर्सी पढ़ कर सोया करो, इससे अल्लाह तआला तुम्हारी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा और शैतान तुम्हारे नज़दीक नहीं आ सकेगा, अबु हुरेरह कहते हैं वो मुझे ये कलमात सिखा कर फिर मुझ से रिहाई पा गया और मैंने जब सुबह हुज़ूर की बारगाह में ये सारा क़िस्सा बयान किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया उसने ये बात सच्ची कही है हालाँके खुद वो बड़ा झूटा है क्या तू जानता है ऐ, अबु हुरेरह! के वो तीन रात आने वाला कौन था? मैंने अर्ज़ किया नहीं या रसूल अल्लाह! मैं नहीं जानता, फ़रमाया वो शैतान था। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 177)

सबक:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम गुज़रे हुए और होने वाले सब वाक़ेयात को जानते हैं अबु हुरेरह के पास रात को चोर आया तो हुज़ूर ने खुद ही फ़रमाया के अबु हुरेरह रात के कैदी ने क्या किया और फिर ये भी फ़रमाया के आज फिर आएगा चुनाँचे वही कुछ हुआ जो हुज़ूर ने फ़रमाया। मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम आलिम माकाना वमा यकुन हैं।

हिकायत नम्बर (33) भेड़िये की गवाही

मदीना मुनव्वरा के किसी मुक़ाम पर एक चरवाहा अपनी बकरियाँ चरा रहा था के अचानक एक भेड़िया आया। और बकरियों के रेवड़ में घुस कर एक बकरी का शिकार ले भागा चरवाहे ने देखा तो उस भेड़िये का तआक़ुब किया और उससे बकरी छुड़ा ली भेड़िये ने जब देखा के मेरा शिकार मुझ से छील लिया गया है तो एक टीले पर चढ़ कर बज़बान फ़सीह कहने लगा, मियाँ चरवाहे! अल्लाह ने मुझे रिज़्क़ दिया था मगर अफ़्सोस! के तुम ने मुझ से छीन लिया, चरवाहे ने जब एक भेड़िये को कलाम करते

Scanned by CamScanner

हुए देखा तो हैरान होकर बोला तआज्जुब है के एक भेड़िया भी कलाम करता है, भेड़िये ने फिर कलाम किया और कहा और उससे से भी ज़्यादा तआज्जुब वाली बात तो ये है के मदीना शरीफ़ में एक ऐसा वजूद मौजूद है जो तुम्हें जो कुछ हो चुका है और जो कुछ आईंदा होने वाला है उन सब अगली पिछली बातों की ख़बर देता है मगर तुम उस पर ईमान नहीं लाते चरवाहा जो यहूदी था भेड़िये की उस गवाही को सुन कर बड़ा मुतास्सिर हुआ और बारगाहे रिसालत में हाज़िर होकर मुसलमान हो गया। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 533)

सबक़:- एक जानवर भी जानता और मानता है के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हर गुज़री हुई और होने वाली बात को जानते हैं मगर एक बराए नाम इंसान भी हैं जो (मआज़ अल्लाह) हुज़ूर के लिए दीवार के पीछे का इल्म भी तसलीम नहीं करते।

हिकायत नम्बर (34) खुश अक़ीदा यअफ़ूर

फ़तह ख़ैबर के बाद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम वापस आ रहे थे के रास्ते में आपकी ख़िदमत में एक गधा हाज़िर हुआ और अर्ज़ करने लगा।

हुज़ूर! मेरी अर्ज़ भी सुनते जाईये। हुज़ूर रहमते आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उस मिसकीन जानवर की अर्ज़ सुनने को ठहर गए और फ़रमाया बताओ क्या कहना चाहते हो, वो बोला, हुज़ूर मेरा नाम यज़ीद बिन शहाब है और मेरे दादा की नस्ल से खुदा ने साठ ख़ुर पैदा किए हैं उन सब पर अल्लाह के नबी सवार होते रहे और हुज़ूर! मेरे दिल की ये तमन्ना है के मुझ मिसकीन पर हुज़ूर सवारी फ़रमाएँ और या रसूल अल्लाह! मैं उस बात का मुसतहिक़ हूँ और वो इस तरह के मेरे दादा की औलाद में से सिवा मेरे कोई बाक़ी नहीं रहा और अल्लाह के रसूलों में से सिवा आपके कोई बाक़ी नहीं रहा।

हुज़ूर ने उसकी ये ख़्वाहिश सुन कर फ़रमाया अच्छा हम तुम्हें अपनी सवारी के लिए मंज़ूर फ़रमाते हैं और तुम्हारा नाम बदल कर हम यअफ़ूर रखते हैं (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 460)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़त्म नबुव्वत का इक़्रार एक गधा भी कर रहा है फिर जो ख़त्म नबुव्वत का इंकार करे वो क्यों ना गधे से भी बदत्तर हो।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर (35) हुज़ूर(स०अ०स०) और मलक-उल-मौत

हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के विसाल शरीफ़ का जब वक़्त आया तो मलक-उल-मौत जिब्राईल की मईयत में हाज़िर हुआ जिब्राईले अमीन ने अर्ज़ किया:

या रसूल अल्लाह! ये मलक-उल-मौत आया है और आप से इजाज़त तलब करता है, हुज़ूर! उसने आज तक कभी ना किसी से इजाज़त ली है और ना आपके बाद किसी से इजाज़त लेगा हुज़ूर अगर इजाज़त दें तो अपना काम करे हुज़ूर ने फ़रमाया! मलक-उल-मौत को आगे आने दो चुनाँचे मलक-उल-मौत आगे बढ़ा और अर्ज़ करने लगा, या रसूल अल्लाह! अल्लाह तआला ने मुझे आपकी तरफ़ भेजा है और मुझे ये हुक्म दिया है के मैं आपका हर हुक्म मानूं और जो आप फ़रमाएँ वही करूं, लिहाज़ा आप अगर फ़रमाएँ तो मैं रूह मुबारक क़ब्ज़ करूं वरना वापस चला जाऊँ जिब्राईल ने अर्ज़ किया, हुज़ूर! ख़ुदा वंद करीम आपके लक़ाऐ विसाल को चाहता है हुज़ूर ने फ़रमया तो ऐ मलक-उल-मौत तुम्हें जान लेने की इजाज़ है, जिब्राईल बोले हुज़ूर! अब जब के आप तशरीफ़ लिए जा रहे हैं तो फिर ज़मीन पर मेरा ये आख़िरी फैरा है इसलिए के मेरा मक़्सूद तो आप ही थे, इसके बाद मलक-उल-मौत क़ब्ज़ रूहे अनवर के शरफ़ से मुशर्रफ़ हुआ।

(मवाहिब-उल-लुदनिया सफ़ा 571, जिल्द: 4, मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 541)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इतनी बड़ी शान है के वो मलक-उल-मौत जिसने कभी किसी बड़े से बड़े बादशाह से भी इजाज़त नहीं ली हमारे हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर पहले इजाज़त तलब करता है और यूं कहता है के अगर आप फ़रमाएँ तो जाँ लूं वरना वापस चला जाऊँ और खुदा उसे ये हुक्म देकर भेजता है के मेरे महबूब की इताअत करना, जो वो फ़रमाएँ वही करना बावजूद उसके जो गुसताख़ हुज़ूर को अपनी मिस्ल कहते हैं किस क़द्र गुमराह हैं क्या कभी उनसे भी मलक-उल-मौत ने इजाज़त ली है।

हिकायत नम्बर (36) शाही इसतक़्बाल

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के विसाल शरीफ़ के वक़्त जिब्राईल अमीन हाज़िर हुआ और अर्ज़ करने लगा या रसूल अल्लाह! आज

Scanned by CamScanner

आसमानों पर हुज़ूर के इसतक़्बाल की तैयारियाँ हो रही हैं, खुदा तआला ने जहन्नम के दारोग़ा मालिक को हुक्म दिया है के मालिक! मेरे हबीब की रूह मुतहेरा आसमानों पर तशरीफ़ ला रही है, इस अेज़ाज़ में दोज़ख़ की आग बुझा दे और हूराने जन्नत से फ़रमाया के तुम सब अपनी तज़ईन व आरास्तगी करो और सब फ़रिश्तों को हुक्म दिया है के तअज़ीमे रूह मुसतफ़ा के लिए सब सफ़ बसफ़ खड़े हो जाओ और मुझे हुक्म फ़रमाया है के मैं जनाब की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपको बशारत दूं के तमाम अम्बिया और उनकी उम्मतों पर जन्नत हराम है जब तक के आप और आपकी उम्मत जन्नत में दाख़िल ना हो जाए और कल क़यामत को अल्लाह तआला आपकी उम्मत पर आपके तुफ़ैल इस क़द्र बख़्शिश व मग़फ़िरत की बारिश फ़रमाएगा के आप राज़ी हो जाएँगे। (मदारिज-उन्नबुव्वत सफ़ा 254 जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का अेज़ाज़ व इक्राम दोनों आलम में है और जिन्न व बशर हूरो मलायक सभी हुज़ूर के खुद्दाम व लश्करी हैं और आप दोनों आलम के बादशाह हैं।

हिकायत नम्बर (37) हुज़ूर(स०अ०स०) का ग़ुस्ल मुबारक

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के ग़ुस्ल मुबारक के वक़्त सहाबाइक्राम अलेहिम-उर्रिज़वान सोचने लगे और आपस में कहने लगे के जिस तरह दूसरे लोगों के कपड़े उतार कर उनको ग़ुस्ल दिया जाता है क्या इसी तरह हुज़ूर के कपड़े मुबारक भी उतार कर हुज़ूर को ग़ुस्ल दिया जाएगा या हुज़ूर को कपड़ों समेत ग़ुस्ल दिया जाए? इस बात पर गुफ़्तगू कर रहे थे के अचानक सब पर नींद तारी हो गई और सब के सर उनके सीनों पर ढलक आए फिर सब को एक आवाज़ आई, कोई कहने वाला कह रहा था के तुम जानते नहीं ये कौन हैं? ख़बरदार! ये "रसूल अल्लाह" हैं इनके कपड़े ना उतारना इन्हें "कपड़ों समेत ही ग़ुस्ल दो" फिर सब की आँखें खुल गईं और हुज़ूर को कपड़ों समेत ही ग़ुस्ल दिया गया। (मवाहिब लदनिया सफ़ा 378 जिल्द 2 मिश्कात सफ़ा 537)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की शान सब से मुमताज़ और बरगज़ीदा है और कोई शख़्स ऐसा नहीं जो उनकी मिस्ल हो आपकी ये ज़िन्दगी आपका विसाल शरीफ़, आपका ग़ुस्ल शरीफ़ और आपका क़ब्र अनवार में रोनक़ अफ़रोज़ होना हर बात आपकी मुमताज़ है और कोई शख़्स किसी बात में आपकी मिस्ल नहीं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर (38) क़ब्र अनवर से आवाज़

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं जब हम हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दफ़्ने मुबारक से फ़ारिग़ हुए तो तीन रोज़ के बाद एक आराबी क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुआ और क़ब्र अनवर के सामने गिर कर क़ब्र अनवर की खाक अपने सर डालने लगा और फिर कहने लगा। या रसूल अल्लाह! जो कुछ आपने फ़रमाया हम ने सुना और आपकी ज़बानी हम ने क़ुरआन की ये आयत भी सुनी *वलो अन्नाहुम इज़ज़लामू अनफ़ुसाहुम जाऊका* "यानी जो लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठें वो आपके पास हाज़िर हों" पस ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपनी जान पर ज़ुल्म कर बैठा हूँ और अब गुनाहों की माफ़ी के लिए आपके पास आ पहुँचा हूँ।

आराबी ने ये कहा तो क़ब्र अनवर से आवाज़ आई, "जाओ अल्लाह ने तुम्हें बख़्श दिया।" (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 777)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का दरबारे रहमत, विसाल शरीफ़ के बाद भी बदस्तूर लगा हुआ है और हुज़ूर अपने विसाल शरीफ़ के बाद भी गुनहगारों के लिए ज़रियाऐ निज़ात और मुनब्बअे फ़यूज़ व बर्कात हैं और आज भी हम हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बदस्तू मोहताज हैं।

हिकायत नम्बर (39) क़ब्र अनवर से अज़ान की आवाज़

जिन दिनों लश्करे यज़ीद ने मदीना मुनव्वरह पर चढ़ाई की उन दिनों तीन दिन मस्जिद नबव्वी में अज़ान ना हो सकी हज़रत सईद बिन अलमसीब रज़ी अल्लाह अन्ह ने ये तीन दिन मस्जिद नबव्वी में रह कर गुज़ारे, आप फ़रमाते हैं के नमाज़ के वक़्त हो जाने का मुझे कुछ पता नहीं चलता था मगर इस तरह जब नमाज़ का वक़्त आता क़ब्र अनवर से एक हल्की सी अज़ान की आवाज़ आने लगती। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 537)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम क़ब्र अनवर में भी ज़िन्दा हैं और जो शख़्स (मआज़ अल्लाह) हुज़ूर को मर कर मिट्टी में मिल जाने वाला लिखता है वो बड़ा बे अदब और गुस्ताख़े रसूल है।

हिकायत नम्बर (40) आसमान का गिरया

मदीना मुनव्वरह में एक बार क़हेत पड़ गया, बारिश होती ही ना थी लोग उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अन्हा की ख़िदमत

Scanned by CamScanner

में फ़रयाद लेकर हाज़िर हुए हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ी अल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की क़ब्र अनवर पर से छत में एक सूराख़ कर दो ताके आसमान और क़ब्र में कोई हिजाब ना रहे चुनाँचे लोगों ने ऐसा ही किया तो इस क़द्र बारिश हुई के खेतियाँ हरी भरी हो गईं और जानवर मोटे हो गए मोहद्दिसीन लिखते हैं के आसमान ने जब क़ब्र अनवर को देखा तो रो पड़ा था। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 527)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का फ़यूज़ पाक विसाल शरीफ़ के बाद भी बदस्तूर जारी है और हुज़ूर की क़ब्र अनवर की ज़ियारत से हर आँख आँसूओं के फूल बरसाने लगती है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह से कुछ पाने के लिए हुज़ूर का वसीला ज़रूरी है।

हिकायत नम्बर (41) बिलाल का ख़्वाब

हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह के अहेदे ख़िलाफ़त में एक मर्तबा क़हेत पड़ गया तो हज़रत बिलाल बिन हारिस मुज़नी रज़ी अल्लाहो अन्ह रोज़ाऐ अनवर पर हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! आपकी उम्मत हलाक हो रही है बारिश नहीं होती, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उन्हें ख़्वाब में मिले और फ़रमाया ऐ बिलाल! उमर के पास जाओ उसे मेरा सलाम कहो और कह दो के बारिश हो जाएगी और उमर से ये भी कहना के कुछ नर्मी इख़्तियार करे (ये हुज़ूर ने इस लिए फ़रमाया के हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह दीन के मामले में बड़े सख़्त थे) हज़रत बिलाल हज़रत उमर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हुज़ूर का सलाम व पैग़ाम पहुँचा दिया, हज़रत उमर ये सलाम व पैग़ामे महबूब पा कर रोए और फिर बारिश भी खूब हुई। (शवाहिद-उल-हक़-लिलनबहानी सफ़ा 67)

सबक़:- मालूम हुआ के विसाल शरीफ़ के बाद भी सहाबाइक्राम मुश्किल के वक़्त हुज़ूर ही की ख़िदमत में हाज़िर होते थे और हर मुश्किल यहीं से हल होती थी और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह की बड़ी शान है और आप ख़लीफ़ा बरहक़ हैं और इस क़द्र खुशक़िस्मत हैं के विसाल शरीफ़ के बाद भी हुज़ूर के सलाम व पैग़ाम से मुशर्रफ़ होते हैं फिर जिसे फ़ारूक़े आज़म से अदावत होगी वो हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम को क्यों ना बुरा लगेगा।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(42) उम्मे फातिमा

असकन्द्रिया की एक औरत उम्मे फ़ातिमा मदीना मुनव्वरह में हाज़िर हुई तो उसका एक पैर ज़ख़्मी और मुतावर्रिम हो गया हत्ता के वो चलने से रह गई लोग मक्का मोअज़्ज़मा जाने लगे मगर वो वहीं रह गई, एक दिन वो किसी तरह रोज़ाऐ अनवर पर हाज़िर हुई और रोज़ाऐ अनवर का तवाफ़ करने लगी तवाफ़ करती जाती और ये कहती जाती, या हबीबी या रसूल अल्लाह लोग चले गए और मैं रह गई, हुज़ूर! या तो मुझे भी वापस भेजिये या फिर अपने पास बुला लीजिए ये कह रही थी के तीन अरबी नोजवान मस्जिद में दाख़िल हुए और कहने लगे के कौन मक्का मोअज़्ज़मा जाना चाहता है उम्मे फ़ातिमा ने जल्दी से कहा मैं जाना चाहती हूँ उनमें से एक बोला तो उठो, उम्मे फ़ातिमा बोली मैं उठ नहीं सकती उसने कहा अपना पैर फैलाओ तो उम्मे फ़ातिमा ने मतावर्रिम पैर फैला दिया उसका जो अब मुतावर्रिम पैर देखा तो तीनों बोले हाँ यही वो है और फिर तीनों आगे बढ़े और उम्मे फ़ातिमा को उठा कर सवारी पर बैठा दिया और मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचा दिया और दरयाफ़्त करने पर उनमें से एक नोजवान ने बताया के मुझे हुज़ूर ने ख़्वाब में हुक्म फ़रमाया था के उस औरत को मक्का पहुँचा दो उम्मे फ़ातिमा कहती है के मैं बड़े आराम से मक्का पहुँच गई। (शवाहिद-उल-हक़ सफ़ा 164)

सबक:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम आज भी हर फ़रयादी की फ़रयाद सुनते हैं और हर मुश्किल हल फ़रमा देते हैं बशर्ते ये के फ़रयादी दिल और सच्ची अक़ीदत से या हबीबी या रसूल अल्लाह कहने का भी आदी हो।

हिकायत नम्बर (43) एक हाशमी औरत

मदीना मुनव्वरह में एक हाशमी औरत रहती थी उसे बअज़ लोग ईज़ा दिया करते थे एक दिन वो हुज़ूर के रोज़े पर हाज़िर हुई और अर्ज़ करने लगी, या रसूल अल्लाह! ये लोग मुझे ईज़ा देते हैं, रोज़ाऐ अनवर से आवाज़ आई। क्या मेरा असवाऐ हस्ना तुम्हारे सामने नहीं, दुश्मनों ने मुझे ईज़ाएँ दीं और मैंने सब्र किया मेरी तरह तुम भी सब्र करो, वो औरत फ़रमाती है के मुझे बड़ी तसकीन हुई और चन्द दिन के बाद मुझे ईज़ा देने वाले भी मर गए। (शवाहिद-उल-हक़ सफ़ा 165)

सबक:- हमारे हजर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सबकी

Scanned by CamScanner

सुनते है। और हर मज़लूम के लिए आप ही का दर, जाऐ पनाह है और या रसूल अल्लाह कहने से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की जानिब से रहमत व तसकीन, हासिल होती है।

हिकायत नम्बर (44) रसूल अल्लाह(स०अ०स०) का पैग़ाम एक मजूसी के नाम

शीराज़ के एक बुज़ुर्ग हज़रत फ़ाश फ़रमाते हैं मेरे हाँ एक बच्चा पैदा हुआ और मेरे पास ख़र्च करने के लिए कुछ भी ना था और वो मोसम इन्तिहाई सर्दी का था मैं उसी फ़िक्र में सो गया तो ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत नसीब हुई आपने फ़रमाया क्या बात है? मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर ख़र्च के लिए मेरे पास कुछ नहीं बस इसी फ़िक्र में था, हुज़ूर ने फ़रमाया, दिन चढ़े तो फ़लाँ मजूसी के घर जाना और उससे कहना के रसूल अल्लाह ने तुझे कहा है के बीस दीनार तुझे दे दे, हज़रते फ़ाश सुबह उठे तो हैरान हुए के एक मजूसी के घर कैसे जाऊँ और रसूल अल्लाह का हुक्म वहाँ कैसे सुनाऊँ और फिर ये बात भी दुरस्त है के ख़्वाब में हुज़ूर नज़र आएँ तो वो हुज़ूर ही होते हैं इसी शश व पंज में वो दिन गुज़र गया और दूसरी रात फिर हुज़ूर की ज़ियारत हुई और हुज़ूर ने फ़रमया तुम इस ख़याल को छोड़ो और उस मजूसी के पास जाकर मेरा पैग़ाम दो चुनाँचे हज़रत फ़ाश सुबह उठे और उस मजूसी के घर चल पड़े, क्या देखते हैं के वो मजूसी अपने हाथ में कुछ लिए हुए दरवाज़े पर खड़ा है जब उसके पास पहुँचे तो चूंके वो उनको जानता ना था और ये पहली मर्तबा उसके पास आए थे इसलिए शर्मा गए और वो मजूसी खुद ही बोल पड़ा, बड़े मियाँ! क्या कुछ हाजत है? हज़रत फ़ाश बोले हाँ मुझे रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने तुम्हारे पास ये कह कर भेजा है के तुम मुझे बीस दीनार दे दो, उस मजूसी ने अपना हाथा खोला और कहा तो लीजिए ये बीस दीनार मैंने आप ही के लिए निकाल रखे थे और आपकी राह देख रहा था। हज़रत फ़ाश ने वो दीनार ले लिए और उस मजूसी से पूछा, भई मैं तो भला रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ख़्वाब में देख कर यहाँ आया हूँ मगर तुझे मेरे आने का कैसे इल्म हो गया तो वो बोला, मैंने रात को उस शक्ल व सूरत के एक नूरानी बुज़ुर्ग को ख़्वाब में देखा है जिसने मुझ से फ़रमाया के एक शख़्स साहिबे हाजत है वो कल तुम्हारे पास पहुँचेगा उसे बीस दीनार दे देना चुनाँचे मैं ये बीस दीनार लेकर तुम्हारे ही इन्तिज़ार में था।

Scanned by CamScanner

हज़रत फ़ाश ने जब उसकी ज़बानी रात को मिलने वाले नूरानी बुज़ुर्ग का हुलिया सुना तो वो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का था चुनाँचे फ़ाश ने उससे कहा, यही रसूल सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम हैं उस मजूसी ने ये वाक़ेया सुन कर थोड़ी देर तोक़िफ़ किया और फिर कहा मुझे अपने घर ले चलो चुनाँचे वो हज़रत फ़ाश के घर आया और कलमा पढ़ कर मुसलमान हो गया फिर उसकी बीवी, बहन और उसकी औलाद भी मुसलमान हो गई। (शवाहिद-उल-हक़, सफ़ा 169)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की नज़रे रहमत जिस पर भी पड़ जाए उसका बेड़ा पार हो जाता है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपने मोहताज ग़ुलामों की फ़रयाद सुनते हैं और विसाल शरीफ़ के बाद भी मोहताजों की मदद फ़रमाते हैं।

हिकायत नम्बर (45) ख़्वाब का दूध

हज़रत शेख़ अबु अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं एक मर्तबा हम मदीना मुनव्वरह हाज़िरत हुए तो मस्जिद नबव्वी में महेराब के पास एक बुज़ुर्ग आदमी को सोए हुए देखा थोड़ी देर में वो जागे और जागते ही रोज़ाऐ अनवर के पास जाकर हुज़ूर अनवर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम पर सलाम अर्ज़ किया और फिर मुसकुराते हुए लौटे एक ख़ादिम ने उन से इस मुसकुराहट की वजह पूछी तो बोले मैं सख़्त भूका था इसी आलम में मैंने रोज़ाऐ अनवर पर हाज़िर होकर भूक की शिकायत की तो ख़्वाब में मैंने हुज़ूर को देखा आपने मुझे एक पियाला दूध का अता फ़रमाया और मैंने खूब पेट भर कर दूध पिया और फिर उस बुज़ुर्ग ने अपनी हथेली पर मुंह से थूक कर दिखाया तो हम ने देखा के हथेली पर वाक़ई दूध ही था। (हुज्जत-उल्लाह अलआलमीन, सफ़ा 804)

सबक़:- हुज़ूर(स०अ०स०) को ख़्वाब में देखने वाला हुज़ूर ही को देखता है और हुज़ूर की ख़्वाब में भी जो अता हो वो वाक़ई अता होती है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर भी वैसे ही ज़िन्दा हैं जैसे पहले थे।

हिकायत नम्बर (46) ख़्वाब की रोटी

हज़रत अबुअलख़ैर फ़रमाते हैं एक मर्तबा मैं मदीना मुनव्वरह में हाज़िर हुआ तो मुझे पाँच दिन का फ़ाक़ह आ गया, मैं रोज़ाऐ अनवर पर हाज़िर हुआ और हुज़ूर पर सलाम अर्ज़ करके फिर हज़रत अबु बक्र और हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्हुमा पर सलाम अर्ज़ किया और फिर अर्ज़ किय

Scanned by CamScanner

या रसूल अल्लाह! मैं तो आप का मेहमान हूँ और पाँच रोज़ से भूका हूँ, अबुअलख़ैर कहते हैं के मैं फिर मिंबर के पास सो गया तो ख़्वाब में देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए हैं आपके दायें तरफ़ हज़रत सिद्दीक़ और बायें तरफ़ हज़रत उमर और आगे हज़रत अली (रज़ी अल्लाहो अन्हुम) थे। हज़रत अली ने मुझे आगे बढ़ कर ख़बरदार किया और फ़रमाया उठो वो देखो! रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ ला रहे हैं और तुम्हारे लिए खाना लाए हैं, मैं उठा और देखा के हुज़ूर के हाथ में रोटी है वो रोटी हुज़ूर ने मुझे अता फ़रमाई मैंने हुज़ूर की पैशानी अनवर को बोसा देकर वो रोटी ले ली और खाने लगा आधी खाली तो मेरी आँख खुल गई क्या देखता हूँ के बाक़ी आधी रोटी मेरे हाथ में है। (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन, सफ़ा 805)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम विसाल शरीफ़ के बाद भी क़ासिम रिज़्क़ उल्लाह हैं और मोहताजों के लिए दाता हैं और ये भी मालूम हुआ के बुज़ुर्गाने दीन अपनी तकालीफ़ व मुश्किलात बारगाहे नबव्वी में पेश किया करते थे और हुज़ूर विसाल के बाद भी अपने ग़ुलामों की फ़रयाद रसी फ़रमाते हैं।

हिकायत नम्बर (47) शाहे रोम का क़ैदी

उन्दलिस के एक मर्द सालेह के लड़के को शाहे रोम ने क़ैद कर लिया था वो मर्द सालेह फ़रयाद लेकर मदीना मुनव्वरह को चल पड़ा रास्ते में एक दोस्त मिला, और उसने पूछा कहाँ जा रहे हो? तो उसने बताया के मेरे लड़के को शाहे रोम ने क़ैद कर लिया है और तीन सौ रूपये उस पर जुर्माना कर दिया है। मेरे पास इतना रूपया नहीं जो देकर मैं उसे छुड़ा सकूं इसलिए मैं हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के पास फ़रयाद लेकर जा रहा हूँ उस दोस्त ने कहा मगर मदीना मुनव्वरह ही पहुँचने की क्या ज़रूरत है हुज़ूर से तो हर मकान पर शफ़ाअत कराई जा सकती है उसने कहा ठीक है मगर मैं तो वहीं हाज़िर होऊँगा। चुनाँचे वो मदीना मुनव्वरह हाज़िर हुआ और रोज़ाए अनवर की हाज़री के बाद अपनी हाजत अर्ज़ की फिर ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ियारत हुई तो हुज़ूर ने उससे फ़रमाया "जाओ अपने शहर पहुँचो" चुनाँचे वो वापस आ गया और घर आकर देखा के लड़का घर आ गया है, लड़के से रिहाई का क़िस्सा पूछा तो उसने बताया के फ़लानी रात मुझे और मेरे सब साथी क़ैदियों को बादशाह ने खुद ही

Scanned by CamScanner

रिहा कर दिया है इस मर्द सालेह ने हिसाब लगाया तो ये वही रात थी जिस रात हुज़ूर की ज़ियारत हुई थी और आपने फ़रमाया था "जाओ अपने शहर पहुँचो" (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन, सफ़ा 780)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम हर मुसीबत ज़दा की मदद फ़रमाते हैं और क़ब्र अनवर में तशरीफ़ फ़रमा होकर भी अपने ग़ुलामों की एआनत फ़रमाते हैं और उनके ग़ुलाम किसी मकान से भी उनकी तरफ़ तवज्जह करें हुज़ूर की रहमत उनका काम कर देती है।

और ये भी मालूम हुआ के पहले बुज़ुर्ग की बारगाह में फ़रयादें किया करते थे और उसे किसी ने भी शिर्क नहीं कहा।

हिकायत नम्बर (48) क़ातिल की रिहाई

बग़दाद के हाकिम इब्राहीम बिन इसहाक़ ने एक रात ख़्वाब में हुज़ूरे अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को देखा और हुज़ूर ने उससे फ़रमाया "क़ातिल को रिहा कर दो" ये हुक्म सुन कर हाकिम बग़दाद कांपता हुआ उठा और मातहेत अम्ले से पूछा के क्या कोई ऐसा मुज्रिम भी है जो क़ातिल हो? उन्होंने बताया के हाँ एक ऐसा शख़्स भी है जिस पर इल्ज़ाम क़त्ल है हाकिम बग़दाद ने कहा उसे मेरे सामने लाओ, चुनाँचे उसे लाया गया, हाकिमे बग़दाद ने पूछा के सच सच बताओ वाक़ेया क्या है? उसने कहा सच कहूँगा झूट हरगिज़ ना बोलूंगा, बात ये हुई के हम चन्द आदमी मिलकर अय्याशी व बदमाशी किया करते थे एक बूढ़ी औरत को हम ने मुक़र्रर कर रखा था जो हर रात किसी बहाने से कोई ना कोई औरत ले आती थी एक रात वो एक ऐसी औरत को लाई जिसने मेरी दुनिया में इंक़िलाब बर्पा कर दिया बात ये हुई के वो नोवारिद औरत जब हमारे सामने आई तो चीख़ मार कर और बेहोश होकर गिर गई मैंने उसे उठा कर एक दूसरे कमरे में लाकर उसे होश में लाने की कोशिश की और जब वो होश में आ गई तो उससे चीख़ने और बेहोश होने की वजह पूछी, वो बोली ऐ नोजवान! मेरे हक़ में अल्लाह से डर। फिर कहती हूँ के अल्लाह से डर! ये बुढ़िया तो मुझे बहाने ही बहाने से इस जगह ले आई है देख:-

"मैं एक शरीफ़ औरत हूँ और सय्यदा हूँ, मेरे नाना रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और मेरी माँ फ़ातिमा-त-उज़्ज़ोहरा है ख़बरदार इस निस्बत का लिहाज़ रखना और मेरी तरफ़ बद निगाही से ना देखना।"

Scanned by CamScanner

मैंने जब उस पाक औरत से जो सय्यदा थी ये बात सुनी तो लरज़ गया और अपने दोस्तों के पास आकर उन्हें हक़ीक़त हाल से आगाह किया और कहा के अगर आक़बत की ख़ैर चाहते हो तो इस मुकर्रमा व मोअज़्ज़मा ख़ातून की बे अदबी ना होने पाए। मेरे दोस्तों ने मेरे इस वाज़ से ये समझा के शायद मैं उनको हटा कर खुद तनहा ही इरतिक़ाबे गुनाह करना चाहता हूँ और उनसे धोका कर रहा हूँ इस ख़याल से मुझ से लड़ने पर आमादा हो गए, मैंने कहा मैं तुम लोगों को किसी सूरत में इस अम्रे शीनअ की इजाज़त ना दूंगा लड़ूंगा, मर जाऊंगा मगर उस सय्यदा की तरफ़ बद निगाही मंज़ूर ना करूंगा चुनाँचे वो मुझ पर झपट पड़े और मुझे उनके हमले से एक ज़ख़्म भी आ गया और इसी असना में एक शख़्स जो उस सय्यदा के कमरे की तरफ़ जाना चाहता था मेरे रोकने पर मुझ पर जो हमला आवर हुआ तो मैंने उस पर छुरी से हमला कर दिया और उसे मार डाला फिर उस सय्यदा को अपनी हिफ़ाज़त में लेकर बाहर निकाला तो शोर मच गया छुरी मेरे हाथ में थी मैं पकड़ा गया और आज ये बयान दे रहा हूँ।

हाकिमे बग़दाद ने कहा, जाओ तुम्हें रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हुक्म से रिहा किया जाता है। (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 813)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के हर नेक व बद आदमी और हर नेक व बद अमल को जानते और देखते हैं और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर की निस्बत के लिहाज़ व अदब से आदमी का अंजाम अच्छा हो जाता है लिहाज़ा हर उस चीज़ का दिल में अदब व एहत्राम रखना चाहिए जिसका हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से ताल्लुक़ हो।

हिकायत नम्बर (49) जज़ीरे का क़ैदी

इब्ने मरज़ूक बयान करते हैं के जज़ीराऐ शिक्र के एक मुसलमान को दुश्मनों ने क़ैद कर लिया और उसके हाथ पाँऊ लोहे की ज़ंजीरों से बाँध कर क़ैदख़ाने में डाल दिया और उस मुसलमान ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नाम लेकर फ़रयाद की और ज़ोर से कहने लगा "या रसूल अल्लाह" ये नअरा सुन कर काफ़िर बोले अपने रसूल से कहो तुम्हें इस क़ैद से छुड़ाने आए फिर जब रात हुई और आधी रात का वक़्त हुआ तो क़ैदख़ाने में कोई शख़्स आया और उसने क़ैदी से कहा, उठो! "अज़ान कहो"

Scanned by CamScanner

कैदी ने अज़ान देना शुरू की और जब वो इस जुमले पर पहुँचा *अशहदन्ना मोहम्मदुर्रसूल अल्लाह* तो उसकी सब जंजीरें टूट गईं और वो आज़ाद हो गया फिर उसके सामने एक बाग़ ज़ाहिर हो गया और वो उस बाग़ से होता हुआ बाहर आ गया, सुबह उसकी रिहाई का सारे जज़ीरे में चर्चा होने लगा। (शवाहिद-उल-हक़ सफ़ा 162)

सबक़:- मुसलमान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नअराऐ रिसालत हमेशा लगाते रहे और इस नअरा का मज़ाक़ उड़ाना दुश्मनाने रिसालत का काम है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नाम मुश्किल कुशा है के ये नाम लेते ही मुसीबत की कड़ियाँ टूट जाती हैं।

हिकायत नम्बर (50) फंसा हुआ जहाज़

एक मर्दे सालेह को एक काफ़िर बादशाह ने गिरफ़्तार कर लिया वो फ़रमाते हैं उस बादशाह का एक बहुत बड़ा जहाज़ दरया में फंस गया था जो बड़ी कोशिश के बावजूद दरया से निकल ना सका आख़िर एक दिन जिस क़द्र क़ैदी थे उनको बुलाया गया ताके वो सब मिलकर उस जहाज़ को निकालें चुनाँने उन क़ैदियों ने जिनकी तअदाद तीन हज़ार थी मिलकर कोशिश की मगर फिर भी वो जहाज़ निकल ना सका फिर उन क़ैदियों ने बादशाह से कहा के जिस क़द्र मुसलमान क़ैदी हैं उनको कहिये वो ये जहाज़ निकाल सकेंगे लेकिन शर्त ये है के वो जो नअरा लगाएँ उन्हें रोका ना जाए, बादशाह ने ये बात तसलीम कर ली और सब मुसलमान क़ैदियों को रिहा कर के कहा के तुम अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जो नअरा लगाना चाहो लगाओ और उस जहाज़ को निकालो। वो मर्दे सालेह फ़रमाते हैं के हम सब मुसलमान क़ैदियों की तअदाद चार सौ थी हम ने मिल कर नअराऐ रिसालत लगाया और एक आवाज़ से "या रसूल अल्लाह" कहा और जहाज़ को एक धक्का लगाया तो वो जहाज़ अपनी जगह से हिल गया फिर हम ने ये नअरा लगाते हुए उसे रूकने नहीं दिया हत्ता के उसे बाहर निकाल दिया। (शवाहिद-उल-हक़-लिलनबहानी सफ़ा 163)

सबक़:- नअराऐ रिसालत मुसलमानों का मेहबूब नअरा है और मुसलमानों ने उसे हमेशा अपनाए रखा और उस नामे पाक से बड़े बड़े मुश्किल काम हल हो जाते हैं फिर जो शख़्स उस नअरा की मुख़ालफ़त करे किस क़द्र बेख़बर है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर (51) एक सय्यदज़ादी और मजूसी

मुल्के समरकन्द में एक बेवा सय्यदज़ादी रहती थी उसके चन्द बच्चे भी थे, एक दिन वो अपने भूके बच्चों को लेकर एक रईस आदमी के पास पहुँची और कहा मैं सय्यदज़ादी हूँ मेरे बच्चे भूके हैं उन्हें खाना खिलाओ, वो रईस आदमी जो दौलत के नशे में मख़्मूर और बराए नाम मुसलमान था कहने लगा तुम अगर वाक़ई सय्यदज़ादी हो तो कोई दलील पेश करो, सय्यदज़ादी बोली मैं एक ग़रीब बेवा हूँ ज़बान पर एतबार करो के सय्यदज़ादी हूँ और दलील क्या पेश करूँ? वो बोला मैं ज़बानी जमा ख़र्च का मोअतक़िद नहीं अगर कोई दलील है तो पेश करो वरना जाओ, वो सय्यदज़ादी अपने बच्चों को लेकर वापस चली आई और एक मजूसी रईस के पास पहुँची और अपना क़िस्सा बयान किया वो मजूसी बोला, मोहत्रमा! अगरचे मैं मुसलमान नहीं हूँ मगर तुम्हारी सियादत की तअज़ीम व क़द्र करता हूँ आओ और मेरे हाँ ही क़याम फ़रमाओ मैं तुम्हारी रोटी और कपड़े का ज़ामिन हूँ, ये कहा और उसे अपने हाँ ठहरा कर उसे और उसके बच्चों को खाना खिलाया और उनकी बड़ी ख़िदमत की, रात हुई तो वो बराए नाम मुसलमन रईस सोया तो उसने ख़्वाब में हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा जो एक बहुत बड़े नूरानी महल के पास तशरीफ़ फ़रमा थे, इस रईस ने पूछा या रसूल! ये नूरानी महल किस लिए है? हुज़ूर ने फ़रमाया, मुसलमान के लिए, वो बोला तो हुज़ूर मैं भी मुसलमान हूँ ये मुझे अता फ़रमा दीजिए, हुज़ूर ने फ़रमाया अगर तू मुसलमान है तो अपने इस्लाम की कोई दलील पेश कर! वो रईस ये सुनकर बड़ा घबराया, हुज़ूर ने फिर उसे फ़रमाया मेरी बेटी तुम्हारे पास आए तो उससे सियादत की दलील तलब करे और खुद बग़ैर दलील पेश किए इस महल में चला जाए ना मुमकिन है, ये सुन कर उसकी आँख खुल गई और बड़ा रोया फिर उस सय्यदज़ादी की तलाश में निकला तो उसे पता चला के वो फ़लाँ मजूसी के घर क़याम पज़ीर है चुनाँचे उस मजूसी के पास पहुँचा और कहा के हज़ार रूपये ले लो और वो सय्यदज़ादी मेरे सपुर्द कर दो, मजूसी बोला क्या मैं वो नूरानी महल एक हज़ार रूपये पर बेच दूं? ना मुमकिन है, सुन लो! हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जो तुम्हें ख़्वाब में मिलकर उस महल से दूर कर गए हैं वो मुझे भी ख़्वाब में मिलकर और कलमा पढ़ा कर उस महल में दाख़िल फ़रमा गए अब मैं भी बीवी बच्चों समेत मुसलमान हूँ और मुझे हज़र बशारत दे गए हैं के तू

Scanned by CamScanner

अहलो अयाल समेत जन्नती है। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 194 जिल्द 2)

सबक़:- दलील तलब करने वाला बराए नाम मुसलमान भी जन्नत से महरूम रह गया और निस्बते रसूल का लिहाज़ करके बग़ैर दलील के भी तअज़ीम व अदब करने वाला एक मजूसी भी दौलते ईमान से मुशर्रफ़ होकर जन्नत पा गया मालूम हुआ के अदब व तअज़ीम रसूल के बाब में बात बात पर दलील तलब करने वाले बराए नाम मुसलमान बदबख़्त और महरूम रह जाने वाले हैं।

हिकायत नम्बर (52) अब्दुल्लाह बिन मुबारक और सय्यदज़ादा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह एक बड़े मजमअे के साथ मस्जिद से निकले तो एक सय्यदज़ादे ने उनसे कहा।

ऐ अब्दुल्लाह! ये कैसा मजमअ है? देख मैं फ़रज़न्द रसूल हूँ और तेरा बाप तो ऐसा ना था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने जवाब दिया, मैं वो काम करता हूँ जो तुम्हारे नाना जान ने किया था और तुम नहीं करते और ये भी कहा के बेशक तुम सय्यद हो और तुम्हारे वालिद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं और मेरा वालिद ऐसा ना था मगर तुम्हारे वालिद से इल्म की मीरास बाक़ी रही, मैंने तुम्हारे वालिद की मीरास ली मैं अज़ीज़ और बुज़ुर्ग हो गया तुम ने मेरे वालिद की मीरास ली तुम इज़्ज़त ना पा सके।

उसी रात ख़्वाब में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा के चेहराऐ मुबारक आपका मुतग़य्यर है, अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! ये रंजिश क्यों? फ़रमाया! तुम ने मेरे एक बेटे पर नुक्ता चीनी की है अब्दुल्लाह बिन मुबारक जागे और उस सय्यदज़ादे की तलाश में निकले ताके उससे माफ़ी तलब करें, इधर इस सय्यद ज़ादे ने भी उसी रात को ख़्वाब में हुज़ूरे अक्रम को देखा और हुज़ूर ने उससे ये फ़रमाया के बेटा अगर अच्छा होता तो वो तुम्हें क्यों ऐसा कलमा कहता वो सय्यद ज़ादा भी जागा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक की तलाश में निकला चुनाँचे दोनों की मुलाक़ात हो गई और दोनों ने अपने अपने ख़्वाब सुना कर एक दूसरे से मआज़रत तलब कर ली। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 173)

सबक़:- हमारे सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उम्मत की

Scanned by CamScanner

हर बात पर शाहिद और हर बात से बाख़बर हैं और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से निस्बत रखने वाली किसी चीज़ पर नुक्ता चीनी करना हुज़ूर की ख़फ़गी का मौजिब है।

हिकायत नम्बर (53) अबु अलहसन ख़ुरक़ानी और हदीस का दर्स

हज़रत अबु अलहसन ख़ुरक़ानी अलेह अर्रहमा के पास एक शख़्स इल्मे हदीस पढ़ने के लिए आया और दरयाफ़्त किया के आपने हदीस कहाँ से पढ़ी? हज़रत ने फ़रमाया, बराहे रास्त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से, उस शख़्स को यक़ीन ना आया, रात को सोया तो हुज़ूर ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया अबु अलहसल सच कहता है मैंने ही उसे पढ़ाया है, सुबह को हज़रत अबु अलहसन की ख़िदमत में वो हाज़िर हुआ और हदीस पढ़ने लगा, बअज़ मुक़ामात पर हज़रत अबु अलहसन ने फ़रमाया हदीस आँ हज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मरवी नहीं उस शख़्स ने पूछा के आपको कैसे मालूम हुआ, फ़रमया तुम ने हदीस पढ़ना शुरू की तो मैंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के अब्रूऐ मुबारक को देखना शुरू किया मेरी आँखें हुज़ूर के अब्रूऐ मुबारक पर हैं जब हुज़ूर के अब्रूऐ मुबारक पर शिकन पड़ती है तो मैं समझ जाता हूँ के हुज़ूर इस हदीस से इंकार फ़रमा रहे हैं। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 496)

सबक़:- हमारे हुज़ूर(स०अ०स०) ज़िन्दा हैं और हाज़िर व नाज़िर और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले हुज़ूर के दीदारे पुर अनवार से अब भी मुशर्रफ़ होते हैं फिर जो हुज़ूर को ज़िन्दा ना माने वो खुद ही मुर्दा है।

हिकायत नम्बर (54) एक वली और मोहद्दिस

एक वली एक मोहद्दिस के दर्से हदीस में हाज़िर हुए तो एक मोहद्दिस ने एक हदीस पढ़ी और कहा क़ाला रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम यानी रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने यूं फ़रमाया तो वो वली बोले, ये हदीस बातिल है रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हर गिज़ यूं नहीं फ़रमाया, वो मोहद्दिस बोले के तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? और तुम्हें कैसे पता चला के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ऐसा नहीं फ़रमाया? तो वली ने जवाब दिया:-

Scanned by CamScanner

हाज़ा अन्नबिय्यू सल-लल्लाहो अलेही व सल्लम वाक़िफ़ू अला रासिका यकूलू इन्नी लम अकुल हाज़ल हदीस। "ये देखो नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तुम्हारे सर पर खड़े हैं और फ़रमा रहे हैं मैंने हर गिज़ ये हदीस नहीं कही।"

वो मोहद्दिस हैरान रह गए और वली बोले, क्या तुम भी हुज़ूरे अक्रम को देखना चाहते हो तो देख लो, चुनाँचे जब उन मोहद्दिस ने ऊपर देखा तो हुज़ूर को तशरीफ़ फ़रमा देख लिया। (फ़तावा हदीस सफ़ा 212)

सबक़:- हमारे हुज़ूर हाज़िर व नाज़िर हैं मगर देखने के लिए किसी वली की नज़र दरकार है और किसी कामिल वली की नज़रे करम हो जाए तो आज भी सरकारे अबद क़रार के दीदार पुर अनवार का शरफ़ हासिल हो सकता है।

एक मुशायरा

एक मजलिस मुशायरे में एक इसाई शायर ने हस्बे ज़ेल शैर कहे :-

मोहम्मद तो ज़मीं में बेगुमाँ है!
फ़लक पर इब्ने मरयम का मकाँ है
जो ऊँचा है वही अफ़्ज़ल रहेगा
जो नीचे है भला अफ़्ज़ल कहाँ है?

एक मुसलमान शायर ने उसके जवाब में ये शैर कहा :-

तराज़ू को उठा कर देख नादाँ!
वही झुकता है जो पल्ला गिराँ है

तीसरा बाब

अम्बियाइक्राम (अलेहिस्सलाम)

तिल्कर्रसूलु फ़ज़्ज़ल्ना बअज़ाहुम अला बअज़िन
मिन्हुम्म मन कल्लामल्लाहो व रफ़आ बअज़ाहुम दराजातिन

हिकायत नम्बर (55) हज़रत आदम अलेहिस्सलाम और शैतान

ख़ुदावन्द करीम ने फ़रिश्तों में जब एलान फ़रमाया के मैं ज़ीमन में अपना एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ। तो शैतान लईन ने उस बात का बहुत

Scanned by CamScanner

बुरा मनाया और अपने जी ही जी में हसद की आग में जलने लगा।

चुनाँचे जब खुदा ने हज़रत आदम अलेहिस्सलाम को पैदा फ़रमा कर फ़रिश्तों को हुक्म दिया के मेरे ख़लीफ़ा के आगे सज्दे में झुक जाओ। तो सब सज्दे में झुक गए। मगर शैतान लईन अकड़ रहा। और ना झुका। खुदावन्द करीम को उसका ये तजुर्बा पसंद ना आया। और उससे दरयाफ़्त फ़रमाया। के ऐ इबलीस! मैंने जब अपने ये क़ुद्रत से बनाए हुए ख़लीफ़ा के आगे सज्दा करने का हुक्म दिया। तो तुम ने क्यों ना सज्दा किया शैतान ने जवाब दिया।

मैं आदम से अच्छा हूँ। इसलिए के मैं आग से बना हुआ हूँ और वो मिट्टी से बना है। फिर मैं एक बशर को सज्दा क्यों करता?

ख़ुदा तआला ने उसका ये रऊनत भरा जवाब सुना। तो फ़रमाया:

मर्दूद निकल जा मेरी बारगाहे रहमत से। जा तू क़यामत तक के लिए मर्दूद व मलऊन है। (क़ुरआने करीम सूरह बक़र)

सबक़:- ख़ुदा के रसूल और उसके मक़्बूलों की इज़्ज़त व तअज़ीम करने से ख़ुदा खुश होता है। और उनको अपनी मिस्ल बशर समझ कर उनकी तअज़ीम से इंकार कर देना फ़ैल शैतान है। और एक पैग़म्बरे ख़ुदा को सबसे पहले तहक़ीरन बशर कहने वाला शैतान है।

हिकायत नम्बर (56) शैतान की थूक

ख़ुदा ने जब हज़रत आदम अलेहिस्सलाम का पुतला मुबारक तैयार फ़रमाया तो फ़रिश्ते हज़रत आदम अलेहिस्सलाम के उस पुतले मुबारक की ज़ियारत करते थे। मगर शैतान लईन हसद की आग में जल भुन गया। और एक मर्तबा उस मर्दूद ने बुग्ज़ व कीने में आकर हज़रत आदम अलेहिस्सलाम के पुतले मुबारक पर थूक दिया ये थूक हज़रत आदम अलेहिस्सलाम की नाफ़ मुबारक के मुक़ाम पर पड़ी, ख़ुदा तआला ने हज़रत जिब्राईल अलेहिस्सलाम को हुक्म दिया। के उस जगह से इतनी मिट्टी निकाल कर उस मिट्टी का कुत्ता बना दो।

चुनाँचे उस शैतानी थूक से मिली हुई मिट्टी का कुत्ता बना दिया गया। ये कुत्ता आदमी से मानूस इसलिए है। के मिट्टी हज़रत आदम अलेहिस्सलाम की है। और पलीद इसलिए है। के थूक शैतान की है। और रात को जागता इसलिए है के हाथ इसे जिब्राईल के लगे हैं। (रूह-उल-बयान सफ़ा 68 जिल्द 1)

सबक़:- शैतान के थूकने से हज़रत आदम अलेहिस्सलाम का कुछ नहीं बिगड़ा। बल्के मुक़ामे नाफ़ शिकम के लिए वजह ज़ीनत बन गया। इसी

Scanned by CamScanner

तरह अल्लाह वालों की बारगाह में गुस्ताख़ी करने से उन अल्लाह वालों का कुछ नहीं बिगड़ता। बल्के उनकी शान और भी चमकती है। और ये भी मालूम हुआ। के अल्लाह वालों को हसद व नुसरत की निगाह से देखना शैतानी काम है।

हिकायत नम्बर (57) हज़रत आदम अलेहिस्सलाम और जंगली हिरन

हज़रत आदम अलेहिस्सलाम जब जन्नत से ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो ज़मीन के जानवर आपकी ज़ियारत को हाज़िर होने लगे। हज़रत आदम अलेहिस्सलाम हर जानवर के लिए उसके लायक़ दुआ फ़रमाते। उसी तरह जंगल के कुछ हिरन भी सलाम करने और ज़ियारत की नीयत से हाज़िर हुए। आपने अपना हाथ मुबारक उनकी पुश्तों पर फेरा। और उनके लिए दुआ फ़रमाई। तो उनमें नाफ़ाऐ मुश्क पैदा हो गई। वो हिरन जब ये खूश्बू का तोहफ़ा लेकर अपनी क़ौम में वापस आए। तो हिरनों के दूसरे गिरोह ने पूछा। के ये खूश्बू तुम कहाँ से ले आए? वो बोले अल्लाह का पैग़म्बर आदम अलेहिस्सलाम जन्नत से ज़मीन पर तशरीफ़ लाया है। हम उनकी ज़ियारत के लिए हाज़िर हुए थे। तो उन्होंने रहमत भरा अपना हाथ हमारी पुश्तों पर फेरा। तो ये खूश्बू पैदा हो गई। हिरनों का वो दूसरा गिरोह बोला। तो फिर हम भी जाते हैं। चुनाँचे वो भी गए हज़रत आदम अलेहिस्सलाम ने उनकी पुश्तों पर भी हाथ फेरा। मगर उनमें वो खूश्बू पैदा ना हुई। और वो जैसे गए थे। वैसे के वैसे ही वापस आ गए। वापस आकर वो मुतअज्जिब होकर बोले। के ये क्या बात है? तुम गए तो खूश्बू मिल गई। और हम गए तो कुछ ना मिला। पहले गिरोह ने जवाब दिया। इसकी वजह ये है के हम गए थे। सिर्फ़ ज़ियारत की नीयत से। तुम्हारी नीयत दुरस्त ना थी। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 4 जिल्द 1)

सबक:- अल्लाह वालों के पास नेक नीयती से हाज़िर होने में बहुत कुछ मिलता है। और अगर किसी बदबख़्त को कुछ ना मिले। तो उसकी अपनी नीयत का क़ुसूर होता है। अल्लाह वालों की दैन व अता का कोई क़ुसूर नहीं होता।

हिकायत नम्बर (58) नूह अलेहिस्सलाम की कश्ती

हज़रत नूह अलेहिस्सलाम की कौम बडी बदबख़्त और नाआक़बत

Scanned by CamScanner

अन्देश थी। हज़रत नूह अलेहिस्सलाम ने साढ़े नो सौ साल के अर्से में दिन रात तबलीग़े हक़ फ़रमाई। मगर वो ना माने। आख़िर नूह अलेहिस्सलाम ने उनकी हलाकत की दुआ माँगी। और ख़ुदा से अर्ज़ की। के मौला! इन काफ़िरों को बेख़ व बिन से उखाड़ दे। चुनाँचे आपकी दुआ क़बूल हो गई। और ख़ुदा ने हुक्म दिया के, ऐ नूह! मैं पानी का एक तूफ़ाने अज़ीम लाऊँगा। और उन सब काफ़िरों को हलाक कर दूंगा। तू अपने और चन्द मानने वालों के लिए एक कश्ती बना ले।

चुनाँचे हज़रत नूह अलेहिस्सलाम ने एक जंगल में कश्ती बनाना शुरू फ़रमाई काफ़िर आपको देखते और कहते। ऐ नूह! क्या करते हो आप फ़रमाते ऐसा मकान बनाता हूँ। जो पानी चले। काफ़िर ये सुन कर हंसते और तमसख़ुर करते थे हज़रत नूह अलेहिस्सलाम फ़रमाते। के आज तुम हंसते हो और एक दिन हम तुम पर हंसेंगे। हज़रत नूह अलेहिस्सलाम ने ये कश्ती दो साल में तैयार की। उसकी लम्बाई तीन सौ गज़, चौड़ाई पचास गज़। और ऊँचाई तीस गज़ थी। इस कश्ती में तीन दर्जे बनाए गए थे। नीचे के दर्जे में व-हवश और दरिन्दे, दरमियानी दर्जे में चौपाए वग़ैरा। और ऊपर के दर्जे में खुद हज़रत नूह अलेहिस्सलाम और आपके साथी और खाने पीने का सामान, परिंदे भी ऊपर के दर्जे में थे, फिर जब बहुक्म इलाही तूफ़ाने अज़ीम आया। तो उस कश्ती पर सवार होने वालों के सिवा रूऐ ज़मीन पर जो कोई था। पानी में ग़र्क हो गया। हत्ता के नूह अलेहिस्सलाम का बेटा कनआन भी जो काफ़िर था। उसी तूफान में ग़र्क हो गया। (क़ुरआने करीम सूरते हूद। ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 33)

सबक़:- ख़ुदा की नाफ़रमानी से इस दुनिया में भी तबाही व हलाकत कासामना करना पड़ता है। और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान, और उनकी इताअत से ही दोनों जहान में निजात व फ़लाह मिल सकती है।

हिकायत नम्बर (59) तूफ़ाने नूह और एक बूढ़िया

हज़रत नूह अलेहिस्सलाम ने बहुक्मे इलाही जब कश्ती बनाना शुरू की तो एक मोमिना बूढ़िया ने हज़रत नूह से पूछा। के आप ये कश्ती क्यों बना रहे हैं। आपने फ़रमाया। बड़ी बी! एक बहुत बड़ा पानी का तूफ़ान आने वाला है जिसमें सब काफ़िर हलाक हो जाऐंगे। और मोमिन इस कश्ती के ज़रिये बच जाऐंगे। बूढ़िया ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! जब तूफ़ान आने वाला हो। तो मुझे ख़बर कर दीजिएगा। ताके मैं भी कश्ती पर सवार हो जाऊँ। बूढ़िया

Scanned by CamScanner

की झोंपड़ी शहर से बाहर कुछ फ़ासले पर थी। फिर जब तूफ़ान का वक़्त आया। तो हज़रत नूह अलेहिस्सलाम दूसरे लोगों को तो कश्ती पर चढ़ाने में मशग़ूल हो गए। मगर उस बूढ़िया का ख़याल ना रहा हत्ता के ख़ुदा का होलनाक अज़ाब पानी के तूफ़ान की शकल में आया। और रूऐ ज़मीन के सब काफ़िर हलाक हो गए। और जब ये अज़ाब थम गया। और पानी उतर गया। और कश्ती वाले कश्ती से उतरे तो वो बूढ़िया हज़रत नूह अलेहिस्सलाम के पास हाज़िर हुई। और कहने लगी।

हज़रत! वो पानी का तूफ़ान कब आएगा? हर रोज़ इस इन्तिज़ार में हूँ के आप कब कश्ती में सवार होने के लिए फ़रमाते हैं। हज़रत ने फ़रमाया बड़ी बी! तूफ़ान तो आ भी चुका। और काफ़िर सब हलाक भी हो चुके। और कश्ती के ज़रिये ख़ुदा ने अपने मोमिन बन्दों को बचा लिया। मगर तअज्जुब है के तुम ज़िन्दा कैसे बच गईं। अर्ज़ किया। अच्छा ये बात है। तो फिर उसी ख़ुदा ने जिसने आपको कश्ती के ज़रिये बचा लिया। मुझे मेरी टूटी फूटी झोंपड़ी ही के ज़रिये बचा लिया। (रूह-उल-बयान सफ़ा 85 जिल्द 2)

सबक़:- जो ख़ुदा का हो जाए। ख़ुदा हर हाल में उसकी मदद फ़रमाता है और बग़ैर किसी सबब ज़ाहिरी के भी उसके काम हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर (60) हज़रत उज़ैर अलेहिस्सलाम और ख़ुदा की क़ुदरत के करिश्मे

बनी इस्राईल जब ख़ुदा की नाफ़रमानी में हद से ज़्यादा बढ़ गए। तो ख़ुदा ने उन पर एक ज़ालिम बादशाह बख़्त नस्र को मुसल्लत कर दिया। जिसने बनी इस्राईल को क़त्ल किया। गिरफ़्तार किया। और तबाह किया। और बैत-उल-मुक़द्दस को बर्बाद व वीरान कर डाला। हज़रत उज़ैर अलेहिस्सलाम एक दिन शहर में तशरीफ़ लाए तो आपने शहर की वीरानी व बर्बादी को देखा। तमाम शहर में फिरे। किसी शख़्स को वहाँ ना पाया। शहर की तमाम इमारतों को मुनहदिम देखा। ये मंज़र देख कर आपने बराह तआज्जुब फ़रमाया। *अन्नीया यूहियी हाज़ीहिल्लाहू बअदा मौतिहा यअन ये।* अल्लाह इस शहर की मौत के बाद उसे फिर कैसे ज़िन्दा फ़रमाएगा?

आप एक दराज़ गोश पर सवार थे। और आपके पास एक बर्तन ख़जूर और एक पियाला अंगूर के रस का था। आपने अपने दराज़गोश को एक दरख़्त से बाँधा और उस दरख़्त के नीचे आप सो गए। जब सो गए। तो ख़ुदा

Scanned by CamScanner

ने उसी हालत में आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली। और गधा भी मर गया। इस वाक़ेये के सत्तर साल बाद अल्लाह तआला ने शाहाने फ़ारस में से एक बादशाह को मुसल्लत किया। और वो अपनी फ़ौजें लेकर बैत-उल-मुक़द्दस पहुँचा। और उसको पहले से भी बेहतर तरीक़े पर आबाद किया और बनी इस्राईल में से जो लोग बाक़ी रहे थे। ख़ुदा तआला उन्हें फिर यहाँ लाया। और वो बैत-उल-मुक़द्दस और उसके नवाह में आबाद हुए। और उनकी तअदाद बढ़ती रही। उस ज़माना में अल्लाह तआला ने हज़रत उ़ज़ैर अलेहिस्सलाम को दुनिया की आँखों से पौशीदा रखा। और कोई आपको देख ना सका जब आपकी वफ़ात को सौ साल गुज़र गए। तो अल्लाह ने दोबारह आपको ज़िन्दा किया। पहले आँखों में जान आई। अभी तमाम जिस्म मुर्दा था। वो आपके देखते देखते ज़िन्दा किया गया। जिस वक़्त आप सोए थे। वो सुबह का वक़्त था। और सौ साल के बाद जब आप दोबारह ज़िन्दा किए गए तो ये शाम का वक़्त था। ख़ुदा ने पूछा। ऐ उ़ज़ैर! तुम यहाँ कितने ठहरे? आपने अंदाज़े से अर्ज़ किया। के एक दिन या कुछ कम। आपका ख़याल ये हुआ के ये उसी दिन की शाम है जिसकी सुबह को सोए थे। ख़ुदा ने फ़रमाया। बल्के तुम तो सौ बरस ठहरे हो। अपने खाने और पानी यानी खजूर और अंगूर के रस को देखिये के वैसा ही है इसमें बू तक नहीं आई और अपने गधे को भी ज़रा देखिए। आपने देखा। तो वो मरा हुआ और गल चुका था। आज़ा उसके बिख़रे हुए और हड्डियाँ सफ़ेद चमक रही थीं। आपकी निगाह के सामने अल्लाह ने उस गधे को भी ज़िन्दा फ़रमाया। पहले उसके अज्ज़ा जमा हुए और अपने अपने मौक़े पर आए। हड्डियों पर गोश्त चढ़ा। गोश्त पर खाल आई। बाल निकले फिर उसमें रूह आई। और आपके देखते देखते ही वो उठकर खड़ा हुआ। और आवाज़ करने लगा। आपने अल्लाह की क़ुद्रत का मुशाहेदा किया। और फ़रमाया मैं जानता हूँ के अल्लाह तआला हर शै पर क़ादिर है। फिर आप अपनी सवारी पर सवार होकर अपने मोहल्ले में तशरीफ़ लाए। आपको कोई पहचानता ना था। अंदाज़े से आप अपने मकान पर पहुँचे उम्र आपकी वही चालीस साल की थी। एक ज़ईफ़ बूढ़िया मिली। जिसके पाऊँ रह गए थे और नाबीना थी। वो आपके घर की बांदी थी और उसने आपको देखा था आपने उससे पूछा। के ये उ़ज़ैर का मकान है। उसने कहा। हाँ। मगर उ़ज़ैर को गुम हुए सौ बरस गुज़र गए। ये कह कर खूब रोई। आपने फ़रमाया। अल्लाह तआला ने मुझे सौ बरस मुर्दा रखा फिर ज़िन्दा किया। बूढ़िया बोली। उ़ज़ैर अलेहिस्सलाम मुसतजाब-उल-दावात थे। जो दुआ करते क़बूल हो जाय

Scanned by CamScanner

करती थी। आप अगर उ़ज़ैर हैं। तो दुआ कीजिए। के मैं बीना हो जाऊँ ताके मैं अपनी आँखों से आपको देखूं।

आपने दुआ की तो वो बीना हो गई। फिर आपने उसका हाथ पकड़ कर फ़रमाया ख़ुदा के हुक्म से उठ। ये फ़रमाते ही उसके मरे हुए पाऊँ भी दुरूस्त हो गए उसने आपको देख कर पहचाना और कहा। मैं गवाही देती हूँ। के आप बेशक उ़ज़ैर ही हैं। फिर वो आपको मोहल्ले में ले गई। वहाँ एक मजलिस में आपके फ़रज़न्द थे। जिनकी उम्र एक सौ अठ्ठारह साल की हो चुकी थी। और आपके पोते भी थे। जो बूढे हो चुके थे। बूढ़िया ने मजलिस में पुकारा। ये हज़रत उ़ज़ैर तशरीफ़ लाए हैं, अहले मजलिस ने उस बात को झुटलाया। उसने कहा मुझे देखो। मैं आपकी दुआ से बिलकुल तनदुरूस्त और बीना हो गई हूँ। लोग उठे और आपके पास आए। आपके फ़रज़न्द ने कहा। मेरे वालिद साहब के शानों के दरमियान सियाह बालों का एक ह्लाल था। जिस्म मुबारक खोल कर देखा गया। तो वो मौजूद था। (क़ुरआन करीम प॰ 3 रूकू 3 और ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 65)

सबक़:- ख़ुदा की नाफ़रमानी का एक नतीजा ये भी है। ज़ालिम हाकिम मुसल्लत कर दिए जाते हैं। और मुल्क बर्बाद व वीरान हो जाते हैं। और अल्लाह तआला बड़ी क़ुद्रतों का मालिक है। वो जो चाहे कर सकता है और एक दिन उसने सब को दोबारह ज़िन्दा करके अपने हुज़ूर बुलाना है और हिसाब लेना है और ये भी मालूम हुआ के नबी का जिस्म मौत वारिद होने के बाद भी सही सालिम रहता है। हाँ जो गधे हैं वही मर कर मिट्टी में मिल जाते और मिट्टी हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर (61) हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम और चार परिन्दे

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने एक रोज़ समुंद्र के किनारे एक आदमी मरा हुआ देखा। आपने देखा के समुंद्र की मछलियाँ उसकी लाश को खा रही हैं। और थोड़ी देर के बाद फिर परिन्दे आकर उसकी लाश को खाने लगे। फिर आपने देखा के जंगल के कुछ दरिन्दे आए। और वो भी उसकी लाश को खाने लगे। आपने ये मंज़र देखा। तो आपको शौक़ हुआ के आप मुलाहेज़ा फ़रमाएँ। के मुर्दे किस तरह ज़िन्दा किए जाएँगे चुनाँचे आपने ख़ुदा से अर्ज़ किया। इलाही! मुझे यक़ीन है के तू मुर्दों को जिन्दा फ़रमाएगा। और उनके

Scanned by CamScanner

अज्ज़ाऐ दरयाई जानवरों। परिन्दों और दरिन्दों के पेटों से जमा फ़रमाएगा। लेकिन मैं ये अजीब मंज़र देखने की आरज़ू रखता हूँ। ख़ुदा ने फ़रमाया अच्छा ऐ ख़लील! तुम चार परिन्दे लेकर उन्हें अपने साथ हिला लो। ताके अच्छी तरह उनकी शनाख़्त हो जाए। फिर उन्हें ज़िबह करके उनके अज्ज़ाऐ बाहम मिला जुला कर उनका एक एक हिस्सा। एक एक पहाड़ पर रख दो। और फिर उनको बुलाओ। और देखो वो किस तरह ज़िन्दा होकर तुम्हारे पास दौड़ते हुए आते हैं।

चुनाँचे हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने मोर, कबूतर, मुर्ग़ और कव्वा। ये चार परिन्दे लिए और उन्हें ज़िबह किया। और उनके पर उखाड़े, और उन सब का क़ीमा करके और आपस में मिला जुला कर उस मजमूअे के कई हिस्से किए। और एक एक हिस्सा एक एक पहाड़ पर रख दिया। और सर सब के अपने पास महफ़ूज़ रखे। और फिर आपने उनसे फ़रमाया। "चले आओ।" आपके फ़रमाते ही वो अज्ज़ा उड़े और हर हर जानवर के अज्ज़ा अलेहदा अलेहदा होकर अपनी तरतीब से जमा हुए। और परिन्दों की शक्लें बनकर अपने पाँऊ से दौड़ते हुए हाज़िर हुए। और अपने अपने सरों से मिलकर बईनही पहले की तरह मुकम्मल होकर उड़ गए। (क़ुरआन करीम प॰ 3 रूकू 3 ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 66)

सबक़:- ख़ुदा तआला बड़ी क़ुद्रत व ताक़त का मालिक है। कोई डूब कर मर जाए और उसे मछलियाँ खा जाएँ या जल कर मरे और राख हो जाए। या किसी को दरिन्दे परिन्दे और दरयाई जानवर थोड़ा थोड़ा खा जाएँ। और उसके अज्ज़ा मुनतशिर हो जाएँ ख़ुदाऐ बरतर व तवाना फिर भी उसे जमा फ़रमा कर ज़रूर ज़िन्दा फ़रमाएगा। और बारगाह ऐज़्दी की हाज़री से उसे मुफ़िर नहीं। और ये भी मालूम हुआ के मुर्दे सुनते हैं। वरना ख़ुदा अपने ख़लील से ये ना फ़रमाता के उन मुर्दा और क़ीमा शुदा परिन्दों को बुला। हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने बहुक्म इलाही उन मुर्दा परिन्दों को बुलाया। और वो मुर्दा परिन्दे आपकी आवाज़ को सुन कर दौड़ पड़े। ये परिन्दों की समाअत है। और जो अल्लाह वाले हैं। उनकी समाअत का आलम क्या हुआ। और ये भी मालूम हुआ के। उन परिन्दों को ज़िन्दा तो ख़ुदा ने किया। लेकिन ये ज़िन्दगी उन्हें मिली इब्राहीम अलेहिस्सलाम के बुलाने और उनके लब हिलने से, गोया किसी अल्लाह वाले के लब हिल जाएँ। तो ख़ुदा काम कर देता है। इसी लिए मुसलमान अल्लाह वालों के पास जाते हैं ताके उनकी मुबारक और मुसतजाब दुआओं से अल्लाह हमारा काम कर दे।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर (62) तीशाऐ ख़लील

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम जब पैदा हुए तो नमरूद का दौर था। और बुत परस्ती का बड़ा ज़ोर था। हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम एक दिन उन बुत परस्तों से फ़रमाने लगे। के ये तुम्हारी क्या हरकत है के उन मूर्तियों के आगे झुके रहते हो। ये तो परसतिश के लायक़ नहीं। परसतिश के लायक़ तो सिर्फ़ एक अल्लाह है।

वो लोग बोले। हमारे तो बाप दादा भी इन्हीं मूर्तियों की पूजा करते चले आए हैं मगर आज तुम एक ऐसे आदमी पैदा हो गए हो। जो उनकी पूजा से रोकने लगे हो।

आपने फ़रमाया! तुम और तुम्हारे बाप दादा सब गुमराह हैं। हक़ बात यही है। जो मैं कहता हूँ। के तुम्हारा और ज़मीन व आसमान सबका रब वो है जिसने उन सब को पैदा फ़रमाया। और सुन लो! मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ। के तुम्हारे इन बुतों को मैं समझ लूंगा।

चुनाँचे एक दिन जब के बुत परस्त अपने सालाना मेले पर बाहर जंगल में गए हुए थे। हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम उनके बुतख़ाने में तशरीफ़ ले गए। और अपने तीशे से सारे बुत तोड़ फोड़ डाले और जो बड़ा बुत था। उसे ना तोड़ा और अपना तीशा उसके कंधे पर रख दिया। उस ख़याल से के बुत परस्त जब यहाँ आएँ। तो अपने बुतों का ये हाल देख कर शायद उस बड़े बुत से पूछें। के उन छोटे बुतों को ये कौन तोड़ गया है? और ये तीशा तेरे कंधे पर क्यों रखा है? और उन्हें उनका अज्ज़ ज़ाहिर हो और होश में आएँ के ऐसे आजिज़ ख़ुदा नहीं हो सकते।

चुनाँचे जब वो लोग मे मेले से वापस आए और अपने बुतख़ाने में पहुँचे तो अपने मअबूदों का ये हाल देखकर के कोई इधर टूटा हुआ पड़ा है, किसी का हाथ नहीं तो किसी की नाक सलामत नहीं। किसी की गर्दन नहीं तो किसी की टाँगें ही ग़ायब हैं। बड़े हैरान हुए। और बोले। के किस ज़ालिम ने हमारे उन मअबूदों का ये हश्र किया है?

फिर ये ख़बर नमरूद और उसके अमरआ को पहुँची। और सरकारी तौर पर उसकी तहक़ीक़ होने लगी। तो लोगों ने बताया। के इब्राहीम उन बुतों के ख़िलाफ़ बहुत कुछ कहते रहते हैं। ये उन्हीं का काम मालूम होता है। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम को बुलाया गया। और आपसे पूछा गया। के ऐ इब्राहीम! क्या तुम ने हमारे ख़ुदाओं के साथ ये काम किया? आपने फ़रमाया। वो बड़ा बुत,

Scanned by CamScanner

जिसके कंधे पर तीशा है। उस सूरत में तो ये क़यास किया जा सकता है। के ये उसी का काम है। तो फिर मुझ से क्या पूछते हो। उसी से पूछ लो ना। के ये काम किस ने किया। वो बोले मगर वो तो बोल नहीं सकते। उस मौक़े पर हज़रत इब्राहीम जलाल में आ गए और फ़रमाया जब तुम खुद मानते हो। के वो बोल नहीं सकते। तो फिर तुफ़ है तुम बे अक़्लों पर। और उन बुतों पर जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो। (क़ुरआन प० 17 रूकू 5)

सबक़:- खुदा को छोड़ कर बुतों को पूजना शिर्क है। और क़ुरआन में जहाँ *मिन दूनिल्लाही* यानी "अल्लाह के सिवा" का लफ़्ज़ आया है। वहाँ यही बुत मुराद हैं ना के अम्बिया व औलिया। इसलिए के हज़रत अलेहिस्सलाम उन पर "तुफ़" फ़रमा रहे हैं तो अगर उनसे मुराद अम्बिया व औलिया हों तो हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ऐसा क्यों फ़रमाते।

हिकायत नम्बर (63) ख़लील व नमरूद का मुनाज़रह

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने जब नमरूद को खुदा परस्ती की दअवत दी तो नमरूद और हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम में हस्बे ज़ेल मुनाज़रह हुआ।

नमरूद: तुम्हारा रब कौन है। जिसकी पर परसतिश की तुम मुझे दअवत देते हो? हज़रत ख़लील अलेहिस्सलाम: मेरा रब वो है। जो ज़िन्दा भी कर देता है। और मार भी डालता है।

नमरूद: ये बात तो मेरे अन्दर भी मौजूद है। लो अभी देखो मैं तुझे ज़िन्दा भी करके दिखाता हूँ और मार कर भी। ये कहकर नमरूद ने दो शख़्सों को बुलाया। उनमें से एक शख़्स को क़त्ल कर दिया। और एक को छोड़ दिया और कहने लगा। देख लो। एक को मैंने मार डाला। और एक को गिरफ़्तार करके छोड़ दिया। गोया उसे ज़िन्दा कर दिया। नमरूद की ये अहमक़ाना बात देख कर हज़रत ख़लील अलेहिस्सलाम ने एक दूसरी मुनाज़राना गुफ़्तगू फ़रमाई और फ़रमाया।

ख़लील अलेहिस्सलाम: मेरा रब सूरज को मशरिक़ की तरफ़ से लाता है तुझ में अगर ताक़त है। तो तू मग़रिब की तरफ़ से लाकर दिखा। ये बात सुन कर नमरूद के होश उड़ गए और ला जवाब हो गया। (क़ुरआन प० 3 रूकू 31)

सबक़:- झूटे दअवे का अंजाम ज़िल्लत व रूसवाई, और काफ़ी इन्तिहाई अहमक़ होता है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर (64) आतिश कदाऐ नमरूद

नमरूद मलऊन ने हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम से जब मुनाज़रह में शिकस्त खाई। तो और तो कुछ ना कर सका। हज़रत का जानी दुश्मन बन गया। और आपको क़ैद कर लिया। और फिर एक बहुत बड़ी चार दीवारी तैयार की, और उसमें महीने भर तक बकोशिश क़िस्म क़िस्म की लकड़ियाँ जमा कीं। और एक अज़ीम आग जलाई। जिसकी तपिश से हवा में उड़ने वाले परिन्दे जल जाते थे। और एक मुनजनीक़ (गोफ़न) तैयार करके खड़ी की और हज़रत इब्राहीम को बाँध कर उसमें रखकर आग में फैंका। हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम की ज़बान पर उस वक़्त ये कलमा जारी था। *हसबीयल्लाहू व नीअेमल वकील* इधर नमरूद ने आपको आग में फैंका और इधर अल्लाह ने आग को हुक्म फ़रमाया। के ऐ आग! ख़बरदार! हमारे ख़लील को मत जलाना। तू हमारे इब्राहीम पर ठंडी हो जा। और सलामती का घर बन जा। चुनाँचे वो आग हज़रत इब्राहीम के लिए बाग़ व बहार बन गई। और नमरूद की सारी कोशिश बेकार चली गई। (क़ुरआन करीम प॰ 17 रूकू 5 और ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 463)

सबक़:- अल्लाह वालों को दुश्मन हमेशा तंग करते रहे। लेकिन अल्लाह वालों का कुछ ना बिगाड़ सके और खुद ही ज़लील होते रहे।

हिकायत नम्बर (65) ख़लील व जिब्राईल

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम को नमरूद ने जब आग में फैंकना चाहा तो जिब्राईल हाज़िर हुए। और अर्ज़ किया। हुज़ूर! अल्लाह से कहिये वो आपको इस आतिशकदा से बचा ले। आपने फ़रमाया। अपने जिस्म के लिए इतनी बुलंद व बाला पाक हस्ती से ये मामूली सा सवाल करूं? जिब्राईल ने अर्ज़ किया। तो अपने दिल के बचाने के लिए उससे कहिये फ़रमाया ये दिल उसी के लिए है। वो अपनी चीज़ से जो चाहे सलूक करे। जिब्राईल ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! इतनी बड़ी तेज़ आग से आप क्यों नहीं डरते?

फ़रमाया। ऐ जिब्राईल! ये आग किस ने जलाई?

जिब्राईल ने जवाब दिया। नमरूद ने!

फ़रमाया। और नमरूद के दिल में ये बात किस ने डाली?

जिब्राईल ने जवाब दिया। रब्बे जलील ने!

ख़लील ने फरमाया। तो फिर इधर हुक्मे जलील है। तो इधर रज़ाऐ

Scanned by CamScanner

ख़लील है। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 204 जिल्द 2)

सबक़:- अल्लाह वाले हमेशा अल्लाह की रज़ा में राज़ी रहते हैं।

(नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 204 जिल्द 2)

सबक़:- अल्लाह वाले हमेशा अल्लाह की रज़ा में राज़ी रहते हैं।

हिकायत नम्बर (66) जिब्राईल की मुशक़्क़त

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला ने एक मर्तबा जिब्राईल से पूछा। ऐ जिब्राईल कभी तुझे आसमान से मुशक़्क़त के साथ बड़ी जल्दी और फ़ौरन भी ज़मीन पर उतरना पड़ा है? जिब्राईल ने जवाब दिया। हाँ या रसूल अल्लाह! चार मर्तबा ऐसा हुआ है के मुझे फ़ीअलफ़ोर बड़ी सरअत के साथ ज़मीन पर उतरना पड़ा।

हुज़ूर ने फ़रमाया। वो चार मर्तबा किस किस मौक़े पर?

जिब्राईल ने अर्ज़ किया।

(1) एक तो जब इब्राहीम अलेहिस्सलाम को आग में डाला गया। तो मैं उस वक़्त अर्शे इलाही के नीचे था। मुझे हुक्म इलाही हुआ के जिब्राईल! ख़लील के आग में पहुँचने से पहले पहले फ़ौरन मेरे ख़लील के पास पहुंचो। चुनाँचे मैं बड़ी सरअत के साथ फ़ौरन ही हज़रत ख़लील के पास पहुँचा।

(2) दूसरी बार जब हज़रत इसमाईल अलेहिस्सलाम की गर्दने अतहर पर छुरी रख दी गई तो मुझे हुक्म हुआ के छुरी चलने से पहले ही ज़मीन पर पहुँचूं। और छुरी को उल्टा दूं। चुनाँचे मैं छुरी के चलने से पहले ही ज़मीन पर पहुँच गया। और छुरी को चलने ना दिया।

(3) तीसरी मर्तबा जब हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को भाईयों ने कुँए में गिराया तो मुझे हुक्म हुआ के मैं यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के कुँए की तह तक पहुँचने से पहले पहले ज़मीन पर पहुँचूं। और कुँए से एक पत्थर निकाल कर हज़रत यूसुफ़ को उस पत्थर पर बाआराम बैठा दूं। चुनाँचे मैंने ऐसा ही किया।

(4) और चौथी मर्तबा या रसूल अल्लाह जबके काफ़िरों ने हुज़ूर का दनदाने मुबारक शहीद किया। तो मुझे हुक्म इलाही हुआ के मैं फ़ौरन ज़मीन पहुँचूं और हुज़ूर के दनदाने मुबारक का खून मुबारक ज़मीन पर ना गिरने दूं और ज़मीन पर गिरने से पहले ही मैं वो खून मुबारक अपने हाथों पर ले लूं। या रसूल अल्लाह! ख़ुदा ने मुझे फ़रमाया था। जिब्राईल! अगर मेरे मेहबूब का ये खून ज़मीन पर गिर गया। तो क़यामत तक ज़मीन में से ना कोई सब्ज़ी उगेगी। और ना कोई दरख़्त। चुनाँचे मैं बड़ी सरअत के साथ ज़मीन पर पहुँचा।

Scanned by CamScanner

और हुज़ूर के खून मुबारक को अपने हाथ पर ले लिया। (रूह-उल-बयान सफ़ा 411 जिल्द 3)

सबक़:- अम्बिया इक्राम अलेहिमुस्सलाम की बहुत बड़ी बुलंद शान है। के जिब्राईल अमीन भी उनका ख़ादिम है। और ये भी मालूम हुआ के करोड़ों, पद्मों मील का तवील सफ़र अल्लाह वाले पल भर में तय कर लेते हैं।

हिकायत नम्बर (67) बेटे की क़ुर्बानी

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने एक रात ख़्वाब में देखा। के कोई शख़्स ग़ैब से आवाज़ देता है। और कहता है। ऐ इब्राहीम! तुम्हें ख़ुदा का हुक्म है के अपने बेटे को ख़ुदा की राह में ज़िबह कर दो। चूंके नबियों का ख़्वाब सच्चा और अज़ क़बूल वही होता है। इसलिए आप अपने मेहबूब बेटे हज़रत इसमाईल अलेहिस्सलाम को अल्लाह की राह में क़ुर्बान करने को तैयार हो गए।

चूंके हज़रत इसमाईल अभी कम उम्र थे। इसलिए आपने उनसे सिर्फ़ इतना कहा। के बेटा रस्सी और एक छुरी लेकर मेरे साथ चलो। चुनाँचे अपने बेटे को लेकर आप एक जंगल में पहुँचे। हज़रत इसमाईल ने पूछा। अब्बा जान! आप ये छुरी और रस्सी लेकर क्यों चलते हैं। फ़रमाया आगे चलकर एक क़ुर्बानी ज़िबह करेंगे।

फिर आगे चल कर हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने साफ़ साफ़ बयान फ़रमा दिया। और कहा! बेटा मैं तो अल्लाह की राह में तुझे ही ज़िबह करने यहाँ आया हूँ। मैंने ख़्वाब में देखा है के तुझे ज़िबह कर रहा हूँ। बेटा ये अल्लाह की मर्ज़ी है। बता तेरी मर्ज़ी क्या है? हज़रत इसमाईल ने जवाब दिया।

अब्बा जान! जब अल्लाह की यही मर्ज़ी है। तो फिर मेरी मर्ज़ी का क्या सवाल? आपको जिस बात का हुक्म हुआ है। आप वो कीजिए। इंशाअल्लाह मैं सब्र करके दिखा दूंगा। बेटे का ये जुराअत आमेज़ जवाब सुनकर हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम बड़े खुश हुए और अपने बेटे को अल्लाह की राह में ज़िबह करने पर तैयार हो गए। और जब बाप ने अपने बेटे को माथे के बल लिटाया और गर्दन पर छुरी रखी और उस चलाया तो छुरी ने गर्दने इसमाईल को बिलकुल ना काटा। आपने और ज़ोर से छुरी चलाई। तो आवाज़ आई बस ऐ इब्राहीम! तुम हुक्मे इलाही की तअमील कर चुके। और इस सख़्त इम्तिहान में पूरे उतरे। आपने मुड़ कर देखा। तो एक दुंबा पास ही खड़ा था।

Scanned by CamScanner

और आप से कह रहा था। हज़रत! इसमाईल की जगह मुझे ज़िबह कीजिए। और उन्हें हटा दीजिए। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने उस दुंबे को ज़िबह फ़रमा दिया। और हज़रत इसमाईल उठ बैठे और इस इम्तिहान में दोनों बाप बेटे, अलेहिमा अस्सलाम, कामयाब हो गए। (कुरआन करीम प० 23 कतुब तफ़ासीर)

सबक़:- अल्लाह वाले अल्लाह की राह में सब कुछ कुर्बान करने पर तैयार हो जाते हैं। हत्ता के औलाद भी। फिर आज जो लोग अल्लाह की राह में एक बकरा भी देने में हज़ार हीलो हुज्जत करते हैं। उनका खुदा से क्या तअल्लुक़?

हिकायत नम्बर (68) फ़िरऔन का ख़्वाब

फ़िरऔन ने एक बार ख़्वाब में देखा। के उसका तख़्त औंधा होकर गिर गया है। फ़िरऔन ने काहिनों से उसकी तअबीर पूछी। तो उन्होंने बताया के एक ऐसा बच्चा पैदा होगा। जो तेरी हकूमत के ज़वाल का बाइस होगा। फ़िरऔन को उस बात की फ़िक्र हुई और उसने बच्चों को मरवाना शुरू कर दिया। जो बच्चा किसी के हाँ पैदा होता। वो उसे मरवा देता था। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम जब पैदा हुए तो अल्लाह ने मूसा अलेहिस्सलाम की माँ के दिल में ये बात डाली। के उसे दूध पिलाओ और जब कोई ख़तरा देखो, तो उसे दरया में डाल दो। चुनाँचे चन्द रोज़ हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की माँ ने हज़रत को दूध पिलाया। इस अर्से में हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ना रोते थे ना उनकी गोद में हरकत करते थे। और ना आपकी बहन के सिवा किसी को आपकी विलादत का इल्म था। फिर जब तीन माह का अर्सा गुज़र गया। तो मूसा अलेहिस्सलाम की माँ को कुछ ख़तरा महसूस हुआ। तो खुदा ने दिल में ये बात डाल दी। के अब तो मूसा को एक संदूक़ में बन्द करके दरया में डाल दे। और कोई फ़िक्र ना कर। हम उसे फिर तुम्हारी गोद में ले आएँगे। चुनाँचे उम्मे मूसा ने एक संदूक़ तैयार किया। और उसमें रूई बिछाई और मूसा अलेहिस्सलाम को उसमें रख कर संदूक़ बन्द कर दिया। और ये संदूक़ दरयाऐ नील में डाल दिया। उस दरया से एक बड़ी नहर निकल कर फ़िरऔन के महल में गुज़रती थी। फ़िरऔन मअे अपनी बीबी आसिया के नहर के किनारे बैठा था। जब एक संदूक़ नहर में आते देखा। तो उसने कनीज़ों और गुलामों को संदूक़ निकालने का हुक्म दिया वो संदूक़ निकाल कर सामने लाया गया। खोला। तो उसमें एक नरानी शक्ल फरजन्द जिसकी

Scanned by CamScanner

पैशानी से वजाहत व इक़्बाल के आसार नमूदार थे। नज़र आया। देखते ही फ़िरऔन के दिल में ऐसी मोहब्बत पैदा हुई। के वो वारिफ़्ता हो गया। लेकिन क़ौम के लोगों ने उसे वरग़लाया। और कहा के मुमकिन है। यही वो बच्चा हो। जिसने आपकी हकूमत को बर्बाद करना है। चुनाँचे फ़िरऔन आपके क़त्ल पर आमादा हुआ। तो फ़िरऔन की बीबी आसिया जो बड़ी नेक ख़ातून थी। कहने लगी के ये बच्चा मेरी और तेरी आँख की ठंडक है। इसे क़त्ल ना कर। क्या मालूम ये किस सरज़मीन से बहता हुआ आया है। और तुझे जिस बच्चे से अन्देशा है वो तो इसी मुल्क के बनी इस्राईल से बताया गया है। आसिया की ये बात फ़िरऔन ने मान ली और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम फ़िरऔन के महल में ही रहने लगे। और फ़िरऔन ने आपको दूध पिलाने के लिए दाईयाँ बुलाईं। मगर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम किसी दाई का दूध ना पीते थे। अब फ़िरऔन को फ़िक्र हुई। के इस बच्चे के लिए कोई ऐसी दाई मिले। जिसका ये दूध पीने लगे। इधर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की माँ अपने बच्चे की जुदाई में बेक़रार थी। और मूसा अलेहिस्सलाम की बहन जिसका नाम मरयम था। वो आपके तजस्सुस करने और मालूम करने के संदूक़ कहाँ पहुँचा और आप किस के हाथ आए आपकी तलाश में थी हत्ता के पता चलाते चलाते वो फ़िरऔन के महल में पहुँच गई और जब मालूम हुआ के मेरा भाई इसी महल में है। और किसी दाई का दूध नहीं पी रहा। तो फ़िरऔन से कहने लगी। क्या मैं एक ऐसी दाई की ख़बर दूं? जिसका दूध ये बच्चा ज़रूर पियेगा। फ़िरऔन ने कहा। हाँ ज़रूर ऐसी दाई को लाओ। चुनाँचे वो उसकी ख़्वाहिश पर अपनी वालिदा को बुला लाईं। और जब वो आईं तो मूसा अलेहिस्सलाम फ़िरऔन की गोद में थे। और दूध के लिए रो रहे थे। फ़िरऔन आपको बहला रहा था। जब आपकी वालिदा आईं। और आपने उनकी खूश्बू पाई। तो आप चुप हो गए। और अपनी वालिदा का दूध पीने लगे फ़िरऔन ने पूछा। तू इस बच्चे की कौन है? जो उसने किसी दाई का दूध नहीं पिया और तेरा झट पी लिया है। उन्होंने कहा मैं एक पाक साफ़ औरत हूँ मेरा दूध खुशगवार है। जिस्म खुश्बूदार है। इसलिए जिन बच्चों के मिज़ाज में नफ़ासत होती है। वो और औरतों का दूध नहीं पीते हैं। मेरा दूध पी लेते हैं। फ़िरऔन ने बच्चा उन्हें दिया। और दूध पिलाने पर उन्हें मुक़र्रर करके फ़रज़न्द को अपने घर ले जाने की इजाज़त दे दी। चुनाँचे आप मूसा अलेहिस्सलाम को घर ले आईं। और अल्लाह तआला का ये वादा पूरा हो गया के हम उसे फिर तुम्हारी गोल में लाएँगे। इस तरह मसा अलेहिस्सलाम

Scanned by CamScanner

की परवरिश खुद फ़िरऔन ही के ज़रिये होने लगी। आप दूध पीने के ज़माने तक अपनी वालिदा के पास रहे। उस ज़माने में फ़िरऔन उन्हें एक अशर्फ़ी रोज़ाना देता रहा। दूध छोड़ने के बाद आप मूसा अलेहिस्सलाम को फ़िरऔन के पास ले आईं और आप वहाँ परवरिश पाते रहे। (कुरआन करीम प० 16 रूकू 11 प० 20 रूकू 4 ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 444, सफ़ा 544)

सबक़:- अल्लाह तआला बड़ी क़ुद्रत और बेनियाज़ी का मालिक है। के मूसा अलेहिस्सलाम को खुद फ़िरऔन ही के महल में रख कर उनकी परवरिश फ़रमाई और मूसा अलेहिस्सलाम ने अपने बचपन में किसी दाई का दूध ना पी कर, और अपनी माँ को पहचान कर उन्हीं का दूध पी कर ये बता दिया के नबी बचपन में भी ऐसा इल्मो इर्फ़ान रखता है। जिससे अवाम महरूम होते हैं। अम्बिया को अपनी मिस्ल बशर कहने वालों में से अगर किसी को बचपन में कुतिया के दूध पर भी डाला जाए। तो वो उस कुतिया का भी दूध पीना शुरू कर देगा। मगर नबी की शान इल्म ये है। के वो बचपन में अपनी माँ के सिवा किसी दूसरी औरत का भी दूध नहीं पीता फिर अम्बिया की मिस्ल होने का दावा करना किस क़द्र जहालत की बात है?

हिकायत नम्बर (69) फ़िरऔन की बेटी

फ़िरऔन की एक बेटी थी। फलबहरी का मर्ज़ था। फ़िरऔन ने उसका बड़े बड़े अत्तिबआ से इलाज कराया। मगर वो अच्छी ना हुई। आख़िर फ़िरऔन ने काहिनों से उसके मुतअल्लिक़ पूछा। तो उन्होंने बताया के उसको शिफ़ा दरया से मिलेगी। चुनाँचे एक दिन फ़िरऔन और उसकी बीबी आसिया और फ़िरऔन की बेटी, दरया के किनारे बैठे थे के हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम का संदूक़ बहता हुआ आया। जब ये संदूक़ फ़िरऔन के सामने लाया गया और खोला। तो मूसा अलेहिस्सलाम नज़र आए जो अपने अंगूठे को चूस रहे थे। फ़िरऔन की बीबी आसिया को, मूसा अलेहिस्सलाम बड़े प्यारे लगे और उसने उन्हें उठा लिया। और फ़िरऔन की बेटी ने मूसा अलेहिस्सलाम को देखा तो उसे भी ये नूरानी बच्चा बड़ा प्यारा लगा। और उसने आपके दहन मुबारक की थूक मुबारक लेकर अपने बदन पर मल ली। इस थूक मुबारक के असर से फ़िरऔन की बेटी का फलबहरी का मर्ज़ फ़ौरन जाता रहा। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 208 जिल्द 2)

सबक़:- अम्बियाक्राम की थूक मुबारक भी दाफ़ेअ-उल-बलाअ होती है। फिर जिन लोगों की थूक बीमारी के ख़तरनाक जरासीम का घर हो

Scanned by CamScanner

वो उन नफूस कुदसिया की मिस्ल कैसे हो सकते हैं?

हिकायत नम्बर (70) मूसा अलेहिस्सलाम का मुक्का

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम जब तीस बरस के हो गए। तो एक दिन फ़िरऔन के महल से निकल कर शहर में दाख़िल हुए तो आपने दो आदमी आपस में लड़ते झगड़ते देखा। एक तो फ़िरऔन का बावर्ची था और दूसरा हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की क़ौम यानी बनी इस्राईल में से था। फ़िरऔन का बावर्ची लकड़ियों का गट्ठा उस दूसरे आदमी पर लाद कर उसे हुक्म दे रहा था। के वो फ़िरऔन के बावर्ची ख़ाने तक वो लकड़ियाँ ले चले हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने, ये बात देखी तो फ़िरऔन के बावर्ची से फ़रमाया। उस ग़रीब आदमी पर ज़ुल्म ना कर लेकिन वो बाज़ ना आया। और बद ज़बानी पर उतर आया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसे एक मुक्का मारा। तो उस एक ही मुक्के से उस फ़िरऔनी का दम निकल गया। और वो वहीं ढैर हो गया।

(क़ुरआन करीम पारा 20 रूकू 5 रूह-उल-बयान सफ़ा 925 जिल्द 2)

सबक़:- अम्बियाक्राम अलेहिमुस्सलाम मज़लूमों के हामी बनकर तशरीफ़ लाए हैं और ये भी मालूम हुआ के नबी सीरत व सूरत और ज़ोर व ताक़त में भी सबसे बुलंद व बाला होता है और नबी का मुक्का एक इम्तियाज़ी मुक्का था। के एक ही मुक्के से ज़ालिम का काम तमाम हो गया।

हिकायत नम्बर (71) मूसा अलेहिस्सलाम का तमाचा

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के पास जब मलक-उल-मौत हाज़िर हुआ। तो हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने मलक-उल-मौत को एक ऐसा तमाँचा मारा। के मलक-उल-मौत की आँख निकल आई। मलक-उल-मौत फ़ौरन वापस पलटा और अल्लाह के हुज़ूर अर्ज़ करने लगा। इलाही आज तो तूने मुझे एक ऐसे अपने बन्दे की तरफ़ भेजा है। जो मरना ही नहीं चाहता। ये देख के उसने मुझे तमाँचा मार कर मेरी आँख निकाल दी है। ख़ुदा ने मलक-उल-मौत की वो आँख दुरस्त फ़रमा दी। और फ़रमाया मेरे बन्दे मूसा के पास फिर जाओ और बैल साथ लेते जाओ। और मूसा से कहना के अगर तुम चलना चाहते हो तो उस बैल की पुश्त पर हाथ फैरो। जितने बाल तुम्हारे हाथ के नीचे आ जाएँगे। उतने ही साल और ज़िन्दा रह लेना। चुनाँचे मलक-उल-मौत बैल लेकर फिर हाज़िर हुआ। और अर्ज़ करने लगा। हुज़ूर! उसकी पुश्त पर हाथ फेरिये। जितने बाल आपके हाथ के नीचे आजाएँगे इतने साल आप

Scanned by CamScanner

और ज़िन्दा रह लें। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया और उसके बाद फिर तुम आ जाओगे? अर्ज़ किया। हाँ! तो फ़रमाया। फिर अभी ले चलो। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 499)

सबक़:- अल्लाह के नबियों की ये शान है के चाहें तो मलक-उल-मौत को भी तमाँचा मार दें। और उसकी आँख निकाल दें। और नबी वो होता है जो मरना चाहे तो मलक-उल-मौत क़रीब आता है और अगर ना मरना चाहे तो मलक-उल-मौत वापस चला जाता है। हालाँके ३ वाम की मौत उस शैर के मिसदाक़ होती है के

लाई हयात आए क़ज़ा ले चली चले
अपनी खुशी ना आए ना अपनी खुशी चले

हिकायत नम्बर (72) मदयन का कुँआ

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने बड़े होकर जब हक़ का बयान और फ़िरऔन और फ़िरऔनियों की गुमराही का बयान शुरू किया। तो बनी इस्राईल के लोग आपकी बात सुनते और आपका इत्तिबा करते। आप फ़िरऔनियों के दीन की मुख़ालफ़त फ़रमाते रफ़्ता रफ़्ता इस बात का चर्चा हुआ। और फ़िरऔनी जुस्तजू में हुए। फिर फ़िरऔन के बावर्ची का मूसा अलेहिस्सलाम के मुक्के से मारा जाना भी जब उन लोगों को मालूम हुआ। तो फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के क़त्ल का हुक्म दिया। और लोग हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की तलाश में निकले। फ़िरऔनियों में से एक मर्द नेक मूसा अलेहिस्सलाम का ख़ैरख़्वाह भी था। वो दौड़ा हुआ आया। और मूसा अलेहिस्सलाम को ख़बर दी और कहा। आप यहाँ से कहीं और तशरीफ़ ले जाईये। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम उसी हालत में निकल पड़े और मदयन की तरफ़ रूख़ किया। मदयन वो मुक़ाम है। जहाँ हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम तशरीफ़ रखते थे। ये शहर फ़िरऔन के हदूद सलतनत से बाहर था। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसका रास्ता भी ना देखा था। ना कोई सवारी साथ थी ना कोई हमराही चुनाँचे अल्लाह ने एक फ़रिश्ता भेजा। जो आपको मदयन तक ले गया। हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम उसी शहर में रहते थे। आपकी दो लड़कियाँ थीं। और बकरियाँ आपका ज़रिया मआश था। मदयन में एक कुआँ था हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम पहले उसी कुएँ पर पहुँचे और आपने देखा के बहुत से लोग उस कुएँ से पानी खींचते हैं। और अपने जानवरों को पिला लेते हैं। और हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम की दोनों लड़कियाँ भी अपने

Scanned by CamScanner

बकरियों को अलग रोक कर वहीं खड़ी हैं। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उन लड़कियों से पूछा के तुम अपनी बकरियों को पानी क्यों नहीं पिलातीं? उन्होंने कहा। के हम से डोल खींचा नहीं जाता। ये लोग चले जाऐंगे। तो जो पानी होज़ में बच रहेगा। वो हम अपनी बकरियों को पिला लेंगीं। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम को रहम आ गया। और पास ही जो एक दूसरा कुआँ था। जिस पर एक बहुत बड़ा पत्थर ढका हुआ था। और जिसको बहुत आदमी मिलकर हटा सकते थे। आपने तनहा उसको हटा दिया। और उसमें से डोल खींच कर उनकी बकरियों को पानी पिला दिया घर जाकर उन दोनों लड़कियों ने हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम से कहा। अब्बा जान! एक बड़ा नेक और क़वी नोवारिद मुसाफ़िर आया है। जिसने आज हम पर रहम खा के हमारी बकरियों को सैराब कर दिया है। हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम ने एक साहबज़ादी से फ़रमाया। के जाओ और उस मर्द सालेह को मेरे पास बुला लाओ चुनाँचे बड़ी साहबज़ादी चहरे को आसतीन से ढके हुए और जिस्म को छुपाए हुए बड़ी शर्म व हया से चलती हुई हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के पास आई और कहा के मेरे बाप आपको बुलाते हैं। ताके आपको उजरत दें हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम उजरत लेने पर तो राज़ी ना हुए। हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम की ज़ियारत और उनकी मुलाक़ात के लिए चल पड़े और उनकी साहबज़ादी से फ़रमाया के आप मेरे पीछे रहकर रस्ता बताती जाईये ये आपने पर्दे के एहतिमाम से फ़रमाया। और इसी तरह तशरीफ़ लाए। जब हज़रत शुऐब के पास पहुँचे। तो हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम से आपने फ़िरऔन का हाल और अपनी विलादत से लेकर फ़िरऔन के बावर्ची के मारे जाने तक का सब किस्सा सुनाया। हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। अब कोई फ़िक्र ना करो तुम ज़ालिमों से बच कर चले आए। अब यहीं मेरे पास रहो। (क़ुरआन करीम प॰20 रूकू 6ख़ज़ायन उल-इर्फ़ान सफ़ा 548)

सबक:- ज़ालिम और मग़रूर हाकिम अल्लाह वालों के दरपये अज़ाद हो जाते हैं। और अल्लाह वाले मसायब व अलाम की बर्दाश्त फ़रमा लेते हैं मगर इशाअते हक़ से नहीं रूकते और अल्लाह तआला अपने उन हक़ गौ बन्दों की हिफ़ाज़त फ़रमाता है।

हिकायत नम्बर (73) दरख़्त से आवाज़

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम के पास दस बरस तक रहे और फिर हजरत शुऐब अलेहिस्सलाम ने अपनी साहबज़ादी

Scanned by CamScanner

का निकाह हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के साथ कर दिया। इतने अर्से के बाद आप हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम से इजाज़त लेकर अपनी वालिदा से मिलने के लिए। मिस्र की तरफ़ रवाना हुए। आपकी बीवी भी साथ थी। रास्ते में जब के आप रात के वक़्त एक जंगल में पहुँचे तो रास्ता गुम हो गया। अंधेरी रात और सर्दी का मौसम था। उस वक़्त आपने जंगल में दूर एक चमकती हुई आग देखी। और बीवी से फ़रमाया तुम यहाँ ठहरो मैंने वो दूर आग देखी है मैं वहाँ जाता हूँ। शायद वहाँ से कुछ ख़बर मिले। और तुम्हारे तांपने के लिए कुछ आग भी ला सकूं। चुनाँचे आप अपनी बीवी को वहीं बैठा कर उस आग की तरफ़ चले। और जब उसके पास पहुँचे तो वहाँ एक सरसब्ज़ शादाब दरख़्त देखा जो ऊपर से नीचे तक निहायत रोशन था। और जितना उसके क़रीब जाते हैं। वो दूर हो जाता है। और ठहर जाते हैं। तो वो क़रीब हो जाता है। आप उस नूरानी दरख़्त के अजीब हाल को देख रहे थे के उस दरख़्त से आवाज़ आई ऐ मूसा! "मैं सारे जहानों का रब अल्लाह हूँ। तुम बड़े पाकीज़ा मुक़ाम में आ गए हो। अपने जूते उतार डालो। और जो तुझे वही होती है। कान लगाकर सुनो। मैंने तुझे पसंद कर लिया।" (क़ुरआन करीम प०16 रूकू 10, प०20 रूकू 7ख़ज़ायन उल-इर्फ़ान स०442, स०549)

सबक़:- नबुव्वत अल्लाह की अता महेज़ है उसमें मेहनत और कसब को दख़्ल नहीं यानी नबुव्वत किसी कोर्स पूरा करने और मेहनत करने से नहीं मिलती। बल्के अल्लाह जिसे चाहता था। इस शरफ़ से मुशर्रफ़ फ़रमा देता था जैसे मूसा अलेहिस्सलाम! के गए आग लेने को और आए नबुव्वत लेकर और ये सिलसिला हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तक जारी रहा, फिर जो शख़्स ये कहे इहदीनस सिरातल मुसतक़ीम पढ़ने से आदमी नबी बन सकता है वो किस क़द्र जाहिल है!

हिकायत नम्बर (74) ख़ौफ़नाक साँप

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के हाथ में एक असा था। ऐ मूसा ज़रा इस असा को ज़मीन पर तो डालो। हज़रत ने उसे ज़मीन पर डाला। तो वो एक ख़ौफ़नाक साँप बनकर लहराने लगा। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने ये मंज़र देखकर पीठ मोड़ ली। और पीछे मुड़कर ना देखा। ख़ुदा ने फ़रमाया। ऐ मूसा! डरो नहीं। इसे पकड़ लो। ये फिर वही असा बन जाएगा। चुनाँचे आपने उस साँप को पकड़ा। तो वो फिर असा बन गया। अल्लाह तआला ने ये भी एक मओजज़ा अता फ़रमा कर मूसा अलेहिस्सलाम से फ़रमाया। के अब फिरऔन

Scanned by CamScanner

की तरफ़ जाओ। और उसे डराओ। और उसको समझाओ। के वो कुफ़्र व तुग़यानी को छोड़ दे। और अगर वो मओजज़ा तलब करे तो ये असा डाल कर उसे दिखाओ (क़ुरआन करीम प०16 रूकू 10प०20 रूकू 7)

सबक:- अंबिया अलेहिमुस्सलाम को अल्लाह तआला ने बड़े बड़े मओजज़ात अता फ़रमाए हैं। और वो ऐसे ऐसे काम कर दिखाते हैं जो दूसरे हर गिज़ नहीं कर सकते।

हिकायत नम्बर (75) अज़्दहा का हमला

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम शरफ़ नबुव्वत से मुशर्रफ़ होकर जब फ़िरऔन के पास पहुँचे। तो उससे फ़रमाया के ऐ फ़िरऔन! मैं अल्लाह का रसूल हूँ। और हक़ व सदाक़त का अलम्बरदार हूँ। दअवऐ ख़ुदाई को छोड़। और एक अल्लाह का परस्तार बन! फ़िरऔन ने कहा। अगर तुम अल्लाह के रसूल हो तो कोई निशानी दिखाओ। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया तो लो देखो आपने असा मुबारक ज़मीन पर डाल दिया। जब आपने वो असा ज़मीन पर डाला। तो वो एक बड़ा अज़्दहा बन गया। ज़र्द रंग मुंह खोले हुए ज़मीन से एक मील ऊँचा अपनी दुम पर खड़ा हो गया। और एक जबड़ा उसने ज़मीन पर रखा। और क़स्र शाही की दीवार पर। फिर उसने फ़िरऔन की तरफ़ रूख़ किया तो ऐसी भाग पड़ी के हज़ारों आदमी कुचल कर मर गए फ़िरऔन घर में जाकर चींख़ने लगा। और कहने लगा। ऐ मूसा! तुम्हें उसकी क़सम जिसने तुझे रसूल बनाया। उसको पकड़ लो। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसको उठा लिया। तो वो मिस्ल साबिक़ असा था। और फ़िरऔन की जान में जान आई।

(क़ुरआन करीम प०9 रूकू 3ख़ज़ायन उल-इर्फ़ान स०236)

सबक:- पैग़म्बर बड़ी शान व शौकत और अज़ीम ताक़त का मालिक होता है और बड़े से बड़ा बादशाह भी उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता।

हिकायत नम्बर (76) जादूगरों की शिकस्त

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के असा का साँप बन जाना फ़िरऔन के लिए बड़ी मुश्किल का बाइस हुआ। और वो बड़ा घबरा गया। फ़िरऔन के दरबारी फ़िरऔन से कहने लगे के मूसा कहीं से जादू सीख आया है। अब तुम भी अपनी सारी ममलिकत से जादूगरों को जमा करो। और उनको मूसा के मुक़ाबले में लाओ। चुनाँचे फ़िरऔन ने अपने आदमी सारी ममलिकत में भेज दिए। और वो हर मुक़ाम से जादूगरों को जमा करके लिए आए।

Scanned by CamScanner

जब हज़ारों की तादाद में जादूगर जमा हो गए। तो फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम को उन जादूगरों से मुक़ाबला करने का चेलंज दे दिया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने वो चेलंज क़बूल कर लिया। फ़िरऔन ने पूछा। दिन कौन सा होगा? आपने फ़रमाया। तुम्हारे मेले का दिन मुक़र्रर करता हूँ ये फ़िरऔनियों का एक ऐसा दिन था। जिस दिन वो ज़ीनतें कर कर के दूर दूर से जमा होते थे। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने ये दिन इस लिए मुक़र्रर फ़रमाया। के ये रोज़ उनकी ग़ायत शौकत का दिन था। उस दिन को मुक़र्रर करना सब लोगों पर हक़ वाज़ह कर देने के लिए था। चुनाँचे जब वो दिन आया तो हज़ारों जादूगर मुक़ामे मुक़र्रर पर पहुँच गए। और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम भी तशरीफ़ ले आए। हज़ारहा के इस इजतमअे में उन जादूगरों ने अपनी अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डाल दीं। जब डालीं तो वो सब की सब साँप बन गईं और दौड़ने लगीं। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने देखा के ज़मीन साँपों से भर गई है और मीलों के मैदान में साँप ही साँप दौड़ रहे हैं। ये हैबतनाक मंज़र देख कर लोग हैरान रह गए। इतने में हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने भी अपना असा डाल दिया। तो वो एक अज़ीमुश्शान अज़्दहा बन गया। और जादूगरों की तमाम सहरकारियों को एक एक करके निगलने लगा। तमाम रस्सियाँ और लाठियाँ जो उन्होंने जमा की थीं। और जो साँप वनकर फिर रही थीं। और जो तीन सौ ऊंट का बौझ थीं। सबका ख़ात्मा कर दिया। और जब हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसे दस्ते मुबारक में लिया। तो पहले की तरह वो फिर असा बन गया। और उसका हजम और वज़न अपने हाल पर रहा। ये देखकर जादूगरों ने पहचान लिया। के असाऐ मूसा सहर नहीं है। और क़ुद्रत बशरी ऐसा करिश्मा नहीं दिखा सकती। ज़रूर ये अम्र आसमानी है। ये बात समझ कर वो सब के सब आमन्ना बिरब्बिल आलमीन कहते हुए सज्दे में गिर गए और ईमान ले आए। (क़ुरआन करीम प०9 रूकू 4 ख़ज़ायन उल-ईफ़ान स०237)

सबक:- सारी ख़ुदाई इक तरफ़, फ़ज़्ल इलाही इक तरफ़ के मिसदाक़ सारी दुनिया मुक़ाबलेँ को आ जाए। मगर फ़तह व नुसरत उसी तरफ़ होगी जिस तरफ़ ताईद हक़ होगी। और बातिल को कभी फ़रोग़ ना होगा।

हिकायत नम्बर (77) पानी का अज़ाब

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के असा मुबारक का अज़्दहा बन जाना देख कर फ़िरऔन के ख़ुश नसीब जादूगर हज़रत मसा अलेहिस्सलाम पर ईमान

Scanned by CamScanner

ले आए। लेकिन फ़िरऔन और उसकी सरकश क़ौम अपने कुफ़्र से बाज़ ना आई। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने ये सरकशी देख कर उनके हक़ में बद दुआ फ़रमा दी। और अर्ज़ किया के:

"इलाही! फ़िरऔन बहुत सरकश हो गया है। और उसकी क़ौम भी अहेद शिकन और मग़रूर हो गई। उन्हें ऐसे अज़ाब में गिरफ़्तार कर जो उन के लिए सज़ा हो। और मेरी क़ौम और बाद वालों के लिए इब्रत।"

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की ये दुआ क़बूल हो गई। और अल्लाह ने फ़िरऔनियों पर एक तूफ़ान भेजा। अब्र आया। अंधेरा छा गया और कसरत से बारिश होने लगी। फ़िरऔनियों के घर में पानी उनकी गर्दनों तक आ गया। उनमें जो बैठा डूब गया। ना हिल सकते थे। ना कुछ काम कर सकते थे। सनीचर से सनीचर तक सात रोज़ तक ऐसी मुसीबत में मुबतला रहे और क़ुद्रत ख़ुदावंदी का करिश्मा देखिये। के बावजूद ये के बनी इस्राईल के घर उन फ़िरऔनियों के घरों से मुत्तसिल थे। मगर बनी इस्राईल के घरों में पानी ना आया। जब ये लोग आजिज़ हुए तो हज़रत मुसा अलेहिस्सलाम से अर्ज़ किया। के हमारे लिए इस मुसीबत के टल जाने की अपने रब से दुआ फ़रमाईये। ये मुसीबत टल गई तो हम ईमान ले आएंगे। चुनाँचे हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई। तो तूफ़ान की मुसीबत रफ़ुअे हो गई।

(क़ुरआन करीम पारा 9 रूकू 6 ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 239, रूह-उल-बयान सफ़ा 768 जिल्द 1)

सबक़:- ये पानी जो हमारे लिए मौजिब हयात है। जब अज़ाब इलाही बनकर आ जाए। तो हमारी जानों और मालों के लिए तबाही का मौजिब बन जाता है और पानी का इस तरह का सैलाब हमारे अपने आमाल बद का नतीजा होता है। और ये भी मालूम हुआ के मक़्बूल और प्यारों की दुआ से बड़े बड़े अज़ाब टल जाते हैं।

हिकायत नम्बर (78) टिड्डी दल

फ़िरऔन की क़ौम ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम को सताया। तो मूसा अलेहिस्सलाम की बद दुआ से उन पर पानी का अज़ाब आ गया। जिस में वो बुरी तरह घिर गए। और फिर हज़रत मूसा ही से इलतिजा करने लगे। के इस अज़ाब के टल जाने की दुआ कीजिए। हम आप पर ईमान ले आएंगे। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई। तो पानी का अज़ाब टल गया और वही पानी रहमत की शक्ल में तब्दील होकर ज़मीन की सरसब्ज़ी व

Scanned by CamScanner

शादाबी का मौजिब बन गया। खेतियाँ खूब हुईं। दरख़्त खूब फले इस तरह की सरसब्ज़ी पहले कभी ना देखी थी फ़िरऔनी कहने लगे। के पानी तो नअेमत था। हमें मूसा पर ईमान लाने की क्या हाजत है चुनाँचे वो मग़रूर अपने अहेद से फिर गए। तो मूसा अलेहिस्सलाम ने फिर उनके लिए बद दुआ की। और एक महीना आफ़ियत से गुज़र जाने के बाद अल्लाह ने फिर उन पर टिड्डियाँ भेज दीं। जो खेतियाँ, और दरख़्तों के फल। हत्ता के फ़िरऔनियों के दरवाज़े और छतें भी खा गईं। और क़ुद्रते हक़ का करिश्मा देखिये। के टिड्डियाँ फ़िरऔनियों के घरों में घुस आईं। मगर बनी इस्राईल के घरों में मतलक़ ना गईं। तंग आकर उन मग़रूरों ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से फिर इस अज़ाब के भी टल जाने की इलतिजा की। और वादा किया। के ये बला टल जाए तो हम ज़रूर ईमान ले आएंगे। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई। तो टिड्डी दल का अज़ाब भी दूर हो गया। मगर काफ़िरों का कुफ्र बदस्तूर रहा। और फिर अहेद से फिर गए। (क़ुरआन करीम पारा 9 रूकू 6 ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 229, रूह-उल-बयान सफ़ा760 जिल्द1)

सबक:- इंसान की हद से ज़्यादा सरकशी पर अल्लाह तआला किसी कमज़ोर मख़लूक़ से उसे तबाह कर देता है। और ग़ाफ़िल इंसान मुसीबत के वक़्त तो अल्लाह की तरफ़ रूजूअ का अहेद कर लेता है। मगर मुश्किल रफ़अे हो जाने के बाद फिर वही चाल बेढंगी इख़्तियार कर लेता है। और ये बात बड़ी ख़तरनाक है।

हिकायत नम्बर (79) जुएँ और मेण्ढक

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की बद दुआ से फ़िरऔनियों पर टिड्डी दल का अज़ाब आ गया और वो फ़िरऔनियों की सब खेतियाँ, दरख़्त फल, और उनके घरों के दरवाज़े और छत तक खा गईं। फ़िरऔनियों ने आजिज़ आकर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से ये अज़ाब टल जाने की इलतिजा की और हज़रत मूसा पर ईमान लाने का वादा किया। हज़रत मूसा ने दुआ की और आपकी दुआ से ये अज़ाब टल गया। मगर फ़िरऔनी अपने अहेद पर क़ायम ना रहे और ईमान ना लाए। उस पर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फिर बददुआ फ़रमाई। और फ़िरऔनियों पर जुओं का अज़ाब नाज़िल हो गया। ये जूएँ फ़िरऔनियों के कपड़ों में घुस कर उनके जिस्मों को काटतीं और उनके खाने में भर जाती थीं। और घुन की शक्ल में उनके गेहूं की बोरियों में फैल कर उनके गेहूं को तबाह करने लगीं। अगर कोई दस बोरी गंदम की चक्की

Scanned by CamScanner

पर ले जाता तो तीन सेर वापस लाता। और फ़िरऔनियों के जिस्मों पर उस कसरत से चलने लगीं के उनके बाल भवें, पलकें चाट के जिस्म पर चेचक की तरह दाग़ कर दिए और उन्हें सोना दुशवार कर दिया। ये मुसीबत देख कर उन्होंने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से ये बला टल जाने की इलतिजा की। और ईमान लाने का वादा किया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने दुआ की और ये भी बला टल गई। मगर वो काफ़िर अपने अहेद पर क़ायम ना रहे और कुफ्र से बाज़ आए। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फिर उनके लिए बददुआ की। तो अल्लाह तआला ने अब उन पर मेण्ढकों का अज़ाब नाज़िल किया। ओर हाल ये हुआ के आदमी बैठता था। तो उसकी गोद में मेण्ढक भर जाते थे। बात करने के लिए मुंह खोलता तो मेण्ढक कूद कर मुंह में पहुँचता था। हांडियों में मेण्ढक। खानों में मेण्ढक और चूलहों में मेण्ढक भर जाते थे और आग बुझ जाती थी। लेटते तो मेण्ढक ऊपर सवार होते थे। इस मुसीबत से फ़िरऔनी रो पड़े। और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से अर्ज़ किया के अब की बार हम अपने अहेद पर क़ायम रहेंगे और पक्की तौबा करते हैं। हम पर से मुसीबत टालिये। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फिर दुआ फ़रमाई। और ये अज़ाब भी रफ़्अे हुआ। मगर तमाशा देखिये के वो काफ़िर फिर भी अपने अहेद पर क़ायम ना रहे। और अपने कुफ्र पर बदसतूर डटे रहे। (क़ुरआन करीम पारा 9 रूकू 6 ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 240 रूह-उल-बयान सफ़ा 760, जिल्द 1)

सबक़: काफ़िरों के वादे का कोई एतबार नहीं और बार बार अहेद शिकनी करना काफिरों का काम है।

हिकायत नम्बर(80) खून ही खून

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की बददुआ से फ़िरऔनियों पर जूओं और मेण्ढकों का अज़ाब नाज़िल हुआ। और फिर आपकी दुआ से वो अज़ाब दफ़्अे हो गया। मगर फ़िरऔनी फिर भी ईमान ना लाए और कुफ्र पर क़ायम रहे। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फिर बददुआ फ़रमाई। तो तमाम कुओं का पानी, नहरों का और चश्मों का पानी, दरयाए नील का पानी, ग़र्ज़ हर पानी उनके लिए ताज़ा खून बन गया। और वो इसी नई मुसीबत से बहुत ही परेशान हुए। जो पानी भी उठाते। उनके लिए खून जाता। और क़ुद्रते खुदा का करिश्मा देखिये। के बनी इस्राईल के लिए पानी, पानी ही था। मगर फ़िरऔनियों के लिए हर पानी खून बन गया था। आख़िर तंग आकर फ़िरऔनियों ने बनी

Scanned by CamScanner

इस्राईल के साथ मिल कर एक ही बर्तन से पानी लेने का इरादा किया। तो जब बनी इस्राईल निकालते। तो पानी निकलता। और फ़िरऔनी निकालते। तो उसी बर्तन से ख़ून निकलता। यहाँ तक के फ़िरऔनी औरतें प्यास से तंग आकर बनी इस्राईल की औरतों के पास आईं। और उनसे पानी माँगा। तो वो पानी उनके बर्तन में आते ही ख़ून हो गया। तो फ़िरऔनी औरत कहने लगी के पानी अपने मुंह पानी अपने मुंह में लेकर मेरे मुंह में कुल्ली कर दे जब तक वो पानी बनी इस्राईल की औरत के मुंह में रहा। पानी था। और फ़िरऔनी औरत के मुंह में पहुँचा तो ख़ून हो गया।

फिरऔन ख़ूद प्यास से लाचार हुआ। तो उसने तर दरख़्तों की रतूबत चूसी। वो रतूबत मुंह में पहुँचते ही ख़ून बन गई। इस क़हरे इलाही से आजिज़ आकर फ़िरऔनियों ने फिर हज़रत मूसा से इलतिजा की। के एक मर्तबा और दुआ कीजिए। और इस अज़ाब को भी टालिये। फिर हम यक़ीनन ईमान ले आएंगे। चुनाँचे हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई और उन पर से ये अज़ाब भी रफ़अे हो गया। मगर वो बेईमान फिर भी अपने अहेद पर क़ायम ना रहे। (क़ुरआन करीम पारा 9 रूकू 6 ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 240 रूह-उल-बयान सफ़ा 460 जिल्द 1)

सबक़: ख़ुदा तआला अपने नाफ़रमान बन्दों को बार बार मोहलत देता है। ताके वो संभल जाएँ। मगर कुफ्र आशना बन्दे उस मोहलत से फ़ायदा नहीं उठाते। और बदस्तूर अपने कुफ्र पर क़ायम रहते हैं और नुक़सान उठाते हैं।

हिकायत नम्बर(81) फ़िरऔन की हलाकत

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के ईमान लाने से मायूस हो गए। तो आपने उनकी हलाकत की दुआ की। और कहा:

"ऐ रब हमारे! उनके माल बर्बाद कर दे और उनके दिल सख़्त कर दे के ईमान ना लायें। जब तक दर्दनाक अज़ाब ना देख लें।"

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की ये दुआ क़बूल हुई। और ख़ुदा ने उन्हें हुक्म दिया के वो बनी इस्राईल को लेकर रातों रात शहर से निकल जाएँ। चुनाँचे मूसा अलेहिस्सलाम ने अपने क़ौम को निकल चलने का हुक्म सुनाया और बनी इस्राईल की औरतें फ़िरऔनी औरतों के पास गईं। और उनसे कहने लगीं। के हमें एक मेले में शरीक होना है। वहाँ पहन कर जाने के लिए हमें मुसतआर तौर पर अपने ज़ेवरात दे दो। चुनाँचे फ़िरऔनी औरतों ने अपने अपने ज़ेवरात उन बनी इस्राईल की औरतों को दे दिए। और फिर सब बनी

Scanned by CamScanner

इस्राईल औरतों और बच्चों समेत हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के साथ रातों रात ही निकल गए। उन सब मर्दों, औरतों, छोटों, बड़ों की तअदाद छः लाख थी। फ़िरऔन को जब उस बात की ख़बर पहुँची। तो वो भी रातों रात ही पीछा करने के लिए तैयार हो गया। और अपनी सारी क़ौम को लेकर बनी इस्राईल के पीछे निकल पड़ा। फ़िरऔनियों की तअदाद बनी इस्राईल की तअदाद से दोगूनी थी। सुबह होते ही फ़िरऔन के लश्कर ने बनी इस्राईल का पा लिया बनी इस्राईल ने देखा। के पीछे फ़िरऔन मअे लश्कर के आ रहा है। और आगे दरया भी आ गया हैं। तो उन्होंने मूसा अलेहिस्सलाम से अर्ज़ किया। तो मूसा अलेहिस्सलाम ने अपना असा मुबारक दरया पर मारा। तो दरया फट गया। और उस में बारा रास्ते ज़ाहिर हो गए और बनी इस्राईल उन रास्तों से दरया के पार हो गए। और जब फ़िरऔनी लश्कर दरया के किनाने पहुँचा। तो वो भी दरया उबूर करने के लिए, उन रास्तों पर चल पड़े जब फ़िरऔन और उसका सारा लश्कर उन बारह रास्तों में दाखिल हो गया। तो खुदा ने दरया को हुक्म दिया। के वो मिल जाए और उन सब को ग़र्क कर दे। चुनाँचे दरया फ़ौरन मिल गया। और फ़िरऔन अपने लश्कर समेत दरया में ग़र्क़ होकर हलाक हो गया। (क़ुरआन करीम पारा 11 रूकू 14 रूह-उल-बयान सफ़ा 761 जिल्द 1)

सबक़: हद से ज्यादा कुफ्र व सरकशी का अंजाम बेहद होलनाक होता है। और इस दुनिया में भी हलाकत व बर्बादी का सामना करना पड़ता है।

हिकायत नम्बर(82) नमक हराम ग़ुलाम

एक मर्तबा जिब्राईल अलेहिस्सलाम फ़िरऔन के पास एक इसतफ़्तआ लाए जिसका मज़मून ये था। के बादशाह का क्या हुक्म है ऐसे ग़ुलाम के हक़ में जिसने एक शख़्स के माल व नअेमत में परवरिश पाई, फिर उसकी नाशुक्री की। और उसके हक़ में मुनकिर हो गया। और अपने आप मौला होने का मुद्दई बन गया? इस पर फ़िरऔन ने ये जवाब लिखा। के जो नमक हराम ग़ुलाम अपने आक़ा की नअेमतों का इंकार करे। और उसके मुक़ाबिल आए। उसकी सज़ा ये है के उसको दरया में डूबो दिया जाए।

चुनाँचे फ़िरऔन जब खुद दरया में डूबने लगा। तो हज़रत जिब्राईल ने उसका वही फ़तवा उसके सामने कर दिया। और उसको उसने पहचान लिया। (ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 311)

सबक़: इंसान अगर अपने ग़लाम की नाफ़रमानी पर गुस्से में आ

Scanned by CamScanner

जाता है और उसे सज़ा देता है। तो फिर वो खुद भी अगर मालिके हक़ीक़ी का नाफ़रमान होगा। तो सज़ा भुगतने के लिए तैयार रहे।

हिकायत नम्बर(83) हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम और एक बूढ़िया

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम दरया पार करने के लिए जब किनारे दरया तक पहुँचे तो सवारी के जानवरों के मुंह अल्लाह ने फैर दिए। के खुदबखुद वापस पलट आए मूसा अलेहिस्सलाम ने अर्ज़ की। इलाही ये क्या हाल है? इर्शाद हुआ तुम क़ब्र यूसुफ़ के पास हो। उनका ज़िस्म मुबारक अपने साथ ले लो। मूसा अलेहिस्सलाम को क़ब्र का पता मालूम ना था। फ़रमाया! क्या तुम में कोई जानता है? शायद बनी इस्राईल की बूढ़िया को मालूम हो। उसके पास आदमी भेजा। के तुझे यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की क़ब्र मालूम है? उसने कहा। हाँ मालूम है। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। तू मुझे बता दे। वो बोली खुदा की क़सम में ना बताऊंगी। जब तक के जो कुछ मैं आप से माँगूं। आप मुझे अता ना फ़रमाएँ। मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। तेरी अर्ज़ क़बूल है माँग क्या माँगती है। वो बूढ़िया बोली। तो हुज़ूर से मैं ये माँगती हूँ के जन्नत में मैं आपके साथ हूँ। उस दर्जे में जिसमें आप होंगे। मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। जन्नत माँग ले यानी तुझे यही काफ़ी है। इतना बड़ा सवाल ना कर। बूढ़िया बोली। खुदा की क़सम में ना मानूंगी। मगर यही के आपके साथ हूँ। मूसा अलेहिस्सलाम उससे यही रद्दोबदल करते रहे अल्लाह ने वही भेजी। मूसा वो जो माँग रही है' तुम उसे वही अता कर दो। के उसमें तुम्हारा कुछ नुक़सान नहीं। चुनाँचे मूसा अलेहिस्सलाम ने जन्नत में अपनी रफ़ाक़त उसे अता फ़रमा दी। उसने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की क़ब्र बता दी। मूसा अलेहिस्सलाम नअश मुबारक को साथ लेकर दरया से उबूर फ़रमा गए। (तिब्रानी शरीफ़ अलअमन व अलअला सफ़ा 229)

सबक़: हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उस बूढ़िया को ना सिर्फ़ जन्नत ही बल्के जन्नत में अपनी रफ़ाक़त भी दे दी।

मालूम हुआ के खुदा के मक़्बूलों को जन्नत पर इख़्तियार हासिल है फिर जो मक़्बूलों और रसूलों के सरदार हज़ूर अहमद मुख़्तार सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बेइख़्तियार कहे। बड़ा ही बे ख़बर और जाहिल है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(84) बनी इस्राईल की गुमराही

बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा अलेहिस्लाम की मईयत में फ़िरऔन से निजात पा ली। और दरया को उबूर कर के जब पार हो गए। तो उनका गुज़र एक बुत परस्त क़ौम पर हुआ। जब बुतों के आगे आसन मारे बैठे थे। और उन बुतों को पूज रहे थे। ये बुत गाय की शक्ल के थे। बनी इस्राईल हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से कहने लगे के ऐ मूसा! जिस तरह उन लोगों के लिए इतने खुदा हैं। इसी तरह हमें भी आप एक खुदा बना दें। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया जाहिलों! ये क्या बकने लगे हो। ये बुत परस्त तो बर्बादी व हलाकत के हाल में हैं। और जो कुछ कर रहे हैं। बिलकुल बातिल है। क्या मैं एक अल्लाह के सिवा कोई दूसरा खुदा तुम्हारा लिए तलाश करूं? (क़ुरआन करीम 9 रूकू 7)

सबक़: खुदा तआला की इतनी मेहरबानियों के बावजूद जो उसे भूल जाए और बुतों के आगे झुकने पर आमादा हो जाएँ। उनकी गुमराही व जहालत में क्या कलाम है?

हिकायत नम्बर(85) सामरी सुनार

बनी इस्राईल में सामरी नाम का एक सुनार था। ये क़बीला सामरा की तरफ़ मनसूब था। और ये क़बीला गाय की शक्ल के बुत का पूजारी था। सामरी जब बनी इस्राईल की क़ौम में आया। तो उनके साथ बज़ाहिर ये भी मुसलमान हो गया। मगर दिल में "गाए की पूजा" की मोहब्बत रखता था। चुनाँचे जब बनी इस्राईल दरया से पार हुए। और बनी इस्राईल ने एक बुत परस्त क़ौम को देखकर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से अपने लिए भी एक बुत की तरह का खुदा बनाने की दरख़्वास्त की और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम उस बात पर नाराज़ हुए। तो सामरी मौक़े की तलाश में रहने लगा। चुनाँचे हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम तौरात लाने के लिए कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए। तो मौक़ा पाकर सामरी ने बहुत सा ज़ेवर पिघला कर सोना जमा किया। और उससे एक गाए का बुत तैयार किया। और फिर उसने कुछ खाक उस गाए के बुत में डाली। तो वो गाए के बछड़े की तरह बोलने लगा और उसमें जान पैदा हो गई। सामरी ने बनी इस्राईल में उस बछड़े की परसतिश शुरू करा दी। और बनी इस्राईल उस बछड़े के पुजारी बन गए। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम जब कोहे तूर से वापस तशरीफ़ लाए। तो क़ौम

Scanned by CamScanner

का ये हाल देख कर बड़े ग़ुस्से में आए और सामरी से दरयाफ़्त फ़रमाया। के ऐ सामरी! ये तूने क्या किया? सामरी ने बताया। के मैंने दरया से पार होते वक़्त जिब्राईल को घोड़े पर सवार देखा था। और मैंने देखा के जिब्राईल के घोड़े के क़दम जिस जगह पर पड़ते हैं वहाँ सब्ज़ा उग आता है। मैंने उस घोड़े के क़दम की जगह से कुछ खाक़ उठा ली। और वो खाक मैंने बछड़े के बुत में डाल दी। तो ये ज़िन्दा हो गया है और मुझे यही बात अच्छी लगी है। मैंने जो कुछ किया है। अच्छा किया है हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमया। अच्छा तो जा, दूर हो जा। अब इस दुनिया में तेरी सज़ा ये है। के तू हर एक से ये कहेगा। के मुझे छू ना जाना। यानी तेरा ये हाल हो जाएगा। के तू किसी शख़्स को अपने क़रीब ना आने देगा। चुनाँचे वाक़ई उसका ये हाल हो गया। के जो कोई उससे छू जाता। तो उस छूने वाले को और सामरी को भी बड़ी शिद्दत का बुखार हो जाता। और उन्हें बड़ी तकलीफ़ होती। इसलिए सामरी खुद ही चीख़ चीख़ कर लोगों से कहता फिरता के मेरे साथ कोई ना लगे। और लोग भी उससे इजतनाब करे। ताके उससे लगकर बुखार में मुबतला ना हो जाएँ। इस अज़ाब दुनिया में गिरफ़्तार होकर सामरी बिलकुल तनहा रह गया और जंगल को चला गया। और बड़ा ज़लील होकर मरा। (कुरआन करीम पारा 16 रूकू 14 रूह-उल-बयान सफ़ा 599 जिल्द 2)

सबक़: आज भी गव के पुजारी छूत छात के इल्म बरदार हैं। और जिस तरह वो मुसलमानों से अलग रहना चाहते हैं। उसी तरह मुसलमानों को भी उनसे इजतनाब रखना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के जिब्राईल के घोड़े के क़दम की खाक से अगर ज़िन्दगी मिल सकती है तो जिब्राईल के भी आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं। और हुज़ूर के उम्मती जो ओलिया अल्लाह हैं। उनके दमक़दम से हज़ारों लाखों फ़यूज़ व बर्कात क्यों हासिल नहीं हो सकते, होते हैं और यक़ीनन होते हैं लेकिन जो दिल के अंधे हैं और सामरी से भी ज़्यादा शक़ी हैं। वो उंन अल्लाह वालों के फ़यूज़ व बर्कात के मुनकिर हैं।

हिकायत नम्बर(86) क़ातिल का सुराग़

बनी इस्राईल में एक मालदार शख़्स था। उसके चचा ज़ाद भाई ने बत्मअे वारिस उसको क़त्ल करके शहर से बाहर फैंक दिया। और सुबह को उसके खून का मुद्दई बन कर वावेला करने लगा। लोगों ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से अर्ज़ किया। के आप दुआ फ़रमाएँ के अल्लाह तआला

Scanned by CamScanner

असल बात को ज़ाहिर फ़रमाए। उस पर खुदा का हुक्म ये हुआ के एक गाय ज़िबह करो और उस गाय का एक टुकड़ा उस मक़्तूल पर मारो। तो मक़्तूल ज़िन्दा होकर खुद ही बता देगा के उसका क़ातिल कौन है? लोगों ने ये बात सुन कर हैरान होकर पूछा। के क्या मज़ाक़ तो नहीं? हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मआज़ अल्लाह! क्या मैं कोई ऐसी फ़िज़ूल बात करूँगा। मैं बिलकुल सही कह रहा हूँ लोगों ने पूछा। तो फिर फ़रमाईये गाय कैसी हो? हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। खुदा फ़रमाता है। के ना बहुत बूढ़ी और ना बिलकुल नो उम्र, बल्के उन दोनों के बीच में हो। लोगों ने कहा। खुदा से ये भी पूछ दीजिए। के उसका रंग क्या हो? फ़रमाया! खुदा फ़रमाता है। के ऐसी पीली गाय हो। जिसकी रंगत डबडबाती और देखने वालों को खूश कर देने वाली हो। लोगों ने फिर कहा के गाए की हर हैसियत के मुतअल्लिक ज़रा तफ़सील से पूछ दीजिए। ऐसा ना हो के हम से कोई ग़लती हो जाए। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। खुदा फ़रमाता है के ऐसी गाय हो, जिस से कोई ख़िदमत ना ली गई हो। ना हल जोती गई हो ना उससे खेती को पानी दिया गया हो और बेऐब हो। जिसमें कोई दाग़ ना हो।

अब वो लोग इस क़िस्म की गाय की तलाश करने लगे। मगर ऐसी गाय का मिलना मुश्किल था। हाँ एक गाय के मुतअल्लिक़ उन्हें पता चला के वो गाए उन सिफ़ात से मोसूफ़ है। वो गाय एक यतीम बच्चे की गाय थी। और उस का क़िस्सा ये था के बनी इस्राईल में एक सालेह आदमी था। जिसका एक छोटी उम्र का बच्चा था। और उसके पास सिवाए एक गाय के बच्चे के कुछ ना रहा था। उसने उस बछिया की गर्दन पर मोहर लगा कर उसे छोड़ दिया। और बारगाह हक़ में अर्ज़ किया के ऐ अल्लाह! मैं उस बछिया को अपने बेटे के लिए तेरे पास अमानत रखता हूँ। मेरा बेटा जब बड़ा हो जाए। तो ये उसके काम आए। उस मर्द सालेह का तो इन्तिक़ाल हो गया और बछिया जंगल में परवरिश पाती रही।

ये लड़का जब बड़ा हुआ। तो बाप की तरह सालेह और नेक निकला। अपनी माँ का बड़ा फ़रमाँबरदार था। एक रोज़ उसकी माँ ने कहा। बेटा! तेरे बाप ने फ़लाँ जंगल में तेरे लिए एक बछिया छोड़ दी है। वो अब जवान हो गई होगी। उसको जंगल से ले आ। और अल्लाह से दुआ कर के वो तुझे तेरी अमानत अता फ़रमा दे। चुनाँचे वो लड़का जंगल पहुँचा। और अपनी गाय को देख कर माँ की बताई हुई निशानियाँ उसमें पाकर उसे पहचान लिया। और खुदा की क़सम देकर उसे बुलाया। तो गाय फ़ौरन हाज़िर हो गई वो

Scanned by CamScanner

उसे लेकर माँ के पास पहुँचा। माँ ने हुक्म दिया। के जाओ उसे बाज़ार में ले जाकर तीन दीनार पर बेच आओ। और शर्त ये की के जब सौदा हो जाए, तो एक बार फिर मुझ से पूछ लिया जाए। उस ज़माने में गाय की क़ीमत तीन दीनार तक ही होती थी वो लड़का गाय लेकर बाज़ार पहुँचा। तो एक फ़रिश्ता ख़रीदार की शक्ल में आया। और उस गाय की क़ीमत छः दीनार लगा दी। मगर उस शर्त से के लड़का अपनी माँ से इजाज़त लेने ना जाए यहीं खड़े खड़े खुद ही बेच डाले। लड़के ने मंज़ूर ना किया और कहा के माँ से इजाज़त लिए बग़ैर मैं हर गिज़ कोई सौदा ना करूँगा। फिर घर आकर माँ को सारा क़िस्सा सुनाया। माँ ने छः दीनार पर गाय बेच दने की इजाज़त तो दे दी। मगर दोबारा बीअे हो जाने के बाद फिर अपनी मर्ज़ी दरयाफ़्त कर लने की पाबंदी लगा दी। वो लड़का फिर बाज़ार में आया। और वही फ़रिश्ता खरीदार बन कर आया। और बारह दीनार क़ीमत लगा दी। मगर शर्त पर के लड़का माँ से इजाज़त लेने ना जाए। लड़के ने ये बात फिर ना मंज़ूर कर दी। और माँ से आकर सारा हाल कह दिया। माँ समझ गई के ये खरीदार कोई फ़रिश्ता है। जो आज़माईश के लिए आता है। लड़के से कहा के अब जो वो खरीदार आए। तो उससे कहना के आप हमें ये गाय बेचने की इजाज़त देते हैं या नहीं? लड़के ने यही बात उस खरीदार से कह दी। तो फ़रिश्ते ने कहा। के अभी इस गाय को रोके रखो। जब बनी इस्राईल खरीदने आएँ तो उसकी क़ीमत ये मुक़र्रर करना। के उसकी खाल को सोने से भर दिया जाए। लड़का गाय को घर वापस ले आया ये गाय ही एक ऐसी गाय थी। जिसमें खुदा की बताई हुई सारी सिफ़ात पाई जाती थीं और जिसकी बनी इस्राईल को तलाश थी। चुनाँचे बनी इस्राईल को उस गाय का पता चला तो मकान पर पहुँचे। तो उस गाय की यही क़ीमत मुक़र्रर हुई के उसकी खाल को साने से भर दिया जाए। और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की ज़मानत पर वो गाय बनी इस्राईल के सपुर्द कर दी गई। और बनी इस्राईल ने उसे ज़िबह कर के उस गोश्त का एक टुकड़ा। उस मक़्तूल की लाश पर मारा। तो वो ज़िन्दा होकर कहने लगा। के मुझे मेरे चचा ज़ाद भाई ने क़त्ल किया है। चुनाँचे क़ातिल को भी इक़्रार करना पड़ गया। और वो पकड़ा गया। (क़ुरआन करीम पारा 1 रूकू 9-8 रूह-उल-बयान सफ़ा 109 जिल्द 1)

सबक़: खुदा की बताई हुई गाय के टुकड़े में अगर इतनी बर्कत है के मुर्दे से लग जाए तो वो ज़िन्दा हो जाए। तो जो खुदा के मक़्बूल बन्दे हैं। उनके वजूद बाजूद में क्यों ना लाखों बर्कतें और करामतें होंगी और क्यों ना

Scanned by CamScanner

उनके इशारे ही से मुर्दों को ज़िन्दगी मिलती होती?

ये भी मालूम हुआ के ज़ालिम लाख छुपा कर जुल्म करे। मगर उसका पोल खुल कर ही रहेगा और जिस तरह हिकमत रब्बानी से बनी इस्राईल के मक़्तूल के क़ातिल का पता चल गया। इसी तरह कल कयामत के दिन हिकमते रब्बी से हर ज़ालिम का पता चल जाएगा। और ये भी मालूम हुआ के माँ का वजूद बड़ी नअेमत है और उसकी रज़ाई जोई से दीन व दुनिया की बहेतरी हासिल होती है और ये भी मालूम हुआ। के ये गाय मअबूद नहीं है। मअबूद सिर्फ़ अल्लाह ही है बनी इस्राईल ने चूँके सामरी के बनाए हुए गाय के बुत ही की पूजा की थी। इसलिए अल्लाह ने उन्हीं के हाथों एक गाय ही को ज़िबह कराया। ताके उन्हें पता चल जाए के असल मअबूद तो वो है। जो उस गाय को ज़िबह करने का हुक्म दे रहा है।

हिकायत नम्बर(87) हज़रत मूसा व हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने एक मर्तबा बनी इस्राईल में बड़ा फ़सीह व बलीग़ वाज़ फ़रमाया। और ये भी फ़रमाया। के इस वक़्त मैं बहुत बड़ा आलिम हूँ। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम का ये फ़रमाना खुदा को ना भाया और हज़रत मूसा से फ़रमाया। ऐ मूसा! तुम से ज़्यादा आलिम मेरा बन्दा ख़िज़्र है। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़्र से मुलाक़ात का शौक़ ज़ाहिर किया और खुदा से इजाज़त लेकर हज़रत ख़िज़्र को मिलने के लिए रवाना हो गए खुदा ने मदद फ़रमाई। और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने ख़िज़्र अलेहिस्सलाम को पा लिया। और उनसे कहा के मैं आपके साथ रहना चाहता हूँ ताके आपके इल्म से मैं भी कुछ मुसतफ़ीद हूँ। हज़रत ख़िज़्र ने जवाब दिया के आप मेरे साथ रहकर कई ऐसी बातें देखेंगे के आप उन पर सब्र ना कर सकेंगे। हज़रत मूसा ने फ़रमाया। नहीं मैं सब्र करूँगा आप मुझे अपने साथ रहने दीजिए। ख़िज़्र अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। तो फिर मैं चाहे कुछ करूँ आप मेरी किसी बात में दखल ना दें। फ़रमाया! मंज़ूर है और आप साथ रहने लगे एक रोज़ दोनों चले और कश्ती पर सवार हुए। कश्ती वाले ने हज़रत ख़िज़्र को पहचान कर मुफ़्त बैठा लिया मगर हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम ने उसकी कश्ती को एक जानिब से तोड़ दिया और ऐबदार कर दिया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ये बात देखकर बोल उठे के जनाब ये आपने क्या किया? के एक ग़रीब शख़्स की जिसने बैठाया भी हमें मुफ़्त है। आपने कश्ती तोड़ दी।

Scanned by CamScanner

हज़रत ख़िज़्र बोले। मूसा! मैं ना कहता था। के आप से सब्र ना हो सकेगा। और मेरी बातों में आप दखल दिए बग़ैर ना रह सकेंगे। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया ये मुझ से भूल हो गई है। आईंदा मोहतात रहूंगा। फिर चले तो रस्ते में एक लड़का मिला। हज़रत ख़िज़्र ने उस लड़के को क़त्ल कर डाला। हज़रत मूसा फिर बोल उठे। के ऐ ख़िज़्र! तुमने क्या किया? एक बच्चे को मार डाला। ख़िज़्र बोले। मूसा! आप फिर बोले जाईये! मेरा और आपका साथ मुश्किल है। हज़रत मूसा फ़रमाने लगे। एक बार और मौक़ा दीजिए अब अगर बोला। तो मुझे अलग कर देना। चुनाँचे फिर चले। तो एक ऐसे गाँव में पहुँचे। जिस गाँव के बाशिन्दों ने मूसा व ख़िज़्र अलेहिमाअस्सलाम को खाना तक ना पूछा। बल्के उन्होंने खाना तलब फ़रमाया तो उन्होंने इंकार कर दिया। उस गाँव में एक शिकस्ता मकान की दीवार गिरने वाली थी। हज़रत ख़िज़्र ने उस दीवार को अपने हाथ से सीधा कर के मज़बूती से क़ायम कर दिया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम नें देखा के ये गाँव वाले तो इतने बखील हैं के खाना तक देने को तैयार नहीं। और ये ख़िज़्र इस क़द्र शफ़्क़त पर उतर आए हैं के उनकी गिरने वाली दीवारें क़ायम करने लगे हैं। ये देखकर फिर बोल उठे के ऐ ख़िज़्र! अगर आप चाहते। तो इस दीवार के खड़ी कर देने की आप उनसे उजरत भी ले सकते थे। मगर आपने तो मुफ़्त काम कर दिया। हज़रत ख़िज़्र बोले मूसा बस अब मेरी और आपकी जुदाई है। लेकिन जुदा होने से पहले इन बातों की हिकमत भी सुनते जाईये। वो जो मैंने कश्ती को थोड़ा सा तोड़ दिया था उसकी हिकमत ये थी के दरया के दूसरे किनारे एक ज़ालिम बादशाह था जो हर साबत कश्ती ज़बरदस्ती छीन लेता था। मगर जिस कश्ती में कोई ऐब होता उसे नहीं छीनता था। कश्ती वाले को उस बात का इल्म ना था। मैं अगर कश्ती का कुछ हिस्सा ना तोड़ता। तो उस ग़रीब की सारी कश्ती छिन जाती और वो जो लड़का मैंने मार डाला। उसकी हिकमत ये थी के उसके माँ बाप मुसलमान थे और ये लड़का, मैं डरा के बड़ा होकर काफ़िर निकलेगा। और उसके माँ बाप भी उसकी मोहब्बत में दीन से फिर जाएँगे। तो मैंने इरादा कर लिया के उसके माँ बाप को अल्लाह उससे बेहतर लड़का दे। और उसे मैंने मार डाला। ताके उसके माँ बाप इस फ़ितने से महफ़ूज़ रहें। और मैंने गाँव में गिरने वाली दीवार को सीधा कर दिया। उसकी हिकमत ये थी के वो दीवार शहर के दो यतीम लड़कों की थी। और उसके नीचे उनका ख़ज़ाना था। और बाप उनका बड़ा सालेह था तो रब की ये मर्ज़ी थी के दोनों बच्चे जवान हो जाएँ और अपना ख़ज़ाना आप निकाल लें ये थी उनकी हिकमत जो आपने

Scanned by CamScanner

देखीं। (क़ुरआन करीम पारा 16 रूकू 1, रूह-उल-बयान सफ़ा 494 जिल्द 1)

सबक़: दीन की बातों में ज़रूर कोई ना कोई हिकमत होती है और आदमी को इल्म की तलाश जारी रखनी चाहिए। चाहे वो कितना बड़ा आलिम क्यों ना हो। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दों को ये इल्म होता है। के फ़लाँ बच्चा बड़ा होकर मोमिन या काफ़िर होगा।

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दे जिस बात का इरादा कर लें। खुदा वैसे ही कर देता है क्योंके हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम ने उस लड़के को क़त्ल कर के यूं फ़रमाया था। *"फ़आरदना अंयुब्दी लहमा रब्बुहुमा खेरम्म मिनहू"* पस हमने इरादा कर लिया। के उन दोनों का रब उन्हें उससे बेहतर अता फ़रमाए। चुनाँचे खुदा ने हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम के इरादे के मुताबिक़ उन दोनों को उससे बेहतर बच्चा अता फ़रमा दिया।

हिकायत नम्बर(88) जानवरों की बोलियाँ

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के पास एक शख़्स हाज़िर हुआ और कहने लगा हुज़ूर! मुझे जानवरों की बोलियाँ सिखा दीजिए, मुझे इस बात का बड़ा शौक़ है। आपने फ़रमाया के तुम्हारा ये शौक़ अच्छा नहीं तुम इस बात को रहने दो उसने कहा। आपका इसमें क्या नुक़्सान है हुज़ूर मेरा एक शौक़ है उसे पूरा कर ही दीजिए। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ की के मौला ये बन्दा मुझ से इस बात का इसरार कर रहा है। इर्शाद फ़रमा के मैं क्या करूँ। हुक्म इलाही हुआ के जब ये शख़्स बाज़ नहीं आता तो तुम उसे जानवरों की बोलियाँ सिखा दो। चुनाँचे हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसे जानवरों की बोलियाँ सिखा दीं।

उस शख़्स ने एक मुर्ग़ और एक कुत्ता पाल रखा था एक दिन खाना खाने के बाद उसकी खादिमा ने दसतरख़्वान जो झाड़ा तो रोटी का एक टुकड़ा गिरा। उसका कुत्ता और मुर्ग़ दोनों उसकी तरफ़ लपके और वो रोटी का टुकड़ा उस मुर्ग़ ने उठा लिया। कुत्ते ने उस मुर्ग से कहा। अरे ज़ालिम मैं भूका था ये टुकड़ा मुझे खा लेने देता। तेरी खूराक तो दाना दुनका है मगर तूने ये टुकड़ा भी ना छोड़ा। मुर्ग़ बोला, घबराओ नहीं कल हमारे मालिक का ये बैल मर जाएगा तुम कल जितना चाहोगे उसका गोश्त खा लेना। उस शख़्स ने उनकी ये गुफ़्तगू सुन कर बैल को फ़ौरन बेच डाला वो बैल दूसरे दिन मर तो गया लेकिन नुक़्सान खरीदार का हुआ और ये शख़्स नुक़्सान से बच गया। दूसरे दिन कुत्ते ने मुर्ग़ से कहा बड़े झूटे हो तुम ख़्वाह-म-ख़्वाह

Scanned by CamScanner

मुझे आज की उम्मीद में रखा बताओ कहाँ है वो बैल जिसे मैं खा सकूं मुर्ग़ ने कहा मैं झूटा नहीं हूँ हमारे मालिक ने नुक़सान से बचने के लिए वो बैल बैच डाला है और अपनी बला दूसरे के सर डाल दी है मगर लो सुनो कल हमारे मालिक का घोड़ा मरेगा, कल घोड़े का गोश्त जी भर कर खाना उस शख़्स ने ये बात सुनी और घोड़ा भी बेच डाला दूसरे दिन कुत्ते ने फिर शिकायत की तो मुर्ग़ बोला। भई क्या बताऊँ हमारा मालिक बड़ा बेवक़ूफ़ है जो अपनी आई ग़ैरों के सर डाल रहा है उसने घोड़ा भी बेच डाला और वो घोड़ा खरीदार के घर जाकर मर गया बैल और घोड़ा इसी घर में मरते तो हमारे मालिक की जान का फ़िदया बन जाते। मगर उसने उनको बेच कर अपनी जान पर आफ़त मोल ले ली। लो सुनो और यक़ीन करो के कल हमारा मालिक खुद ही मर जाएगा और उसके मरने पर जो खाने पकेंगे उसमें से बहुत कुछ खाना तुम्हें मिल जाएगा।

उस शख़्स ने जब ये बात सुनी तो होश उड़ गए के अब मैं क्या करूँ कुछ समझ में ना आया और दौड़ा दौड़ा हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के पास आया और बोला। हुज़ूर मेरी ग़लती माफ़ फ़रमाईये और मौत से मुझे बचा लीजिए हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, नादान अब ये बात मुश्किल है आई क़ज़ा टल ना सकेगी, तुम्हें अब जो बात सामने आई है मुझे उसी दिन नज़र आ रही थी। जब तुम जानवरों की बोलियाँ सीखने पर इसरार कर रहे थे। चुनाँचे अब मरने के लिए तैयार हो जाओ चुनाँचे दूसरे दिन वो शख़्स मर गया। (मसनवी शरीफ़)

सबक़: मालो दौलत पर अगर कोई आफ़त नाज़िल हो और किसी क़िस्म का कोई नुक़्सान हो जाए तो इंसान को ग़म और शिकवा ना करना चाहिए बल्के अपनी जान का फ़िदया समझ कर अल्लाह का शुक्र ही अदा करना चाहिए। और ये समझना चाहिए के जो हुआ बेहतर हुआ अगर माल पर ये आफ़त नाज़िल ना होती तो मुमकिन है जान हलाकत मे पड़ जाती।

हिकयत नम्बर(89) तूफ़ान बाद

क़ौमे आद एक बड़ी ज़बरदस्त क़ौन थी जो इलाक़ा यमन के एक रेगिस्तान अहक़ाफ़ में रहती थी उन लोगों ने ज़मीन को फ़िस्क़ो फ़ुजूर से भर दिया था। और अपने ज़ोर व क़ुव्वत के ज़ोम में दुनिया की दूसरी क़ोमों को अपनी जफ़ा कारियों से पामाल कर डाला था ये लोग बुत परस्त थे। अल्लाह तआला ने उनकी हिदायत के लिए हज़रत हूद अलेहिस्सलाम को मबऊस

Scanned by CamScanner

फ़रमाया आपने उनको दर्स तौहीद दिया और जोर व सितम से रोका तो वो लोग आपके मुनकिर और मुख़ालिफ़ हो गए और कहने लगे आज हम से ज़्यादा ज़ोर आवर कौन है? कुछ लोग हज़रत हूद अलेहिस्सलाम पर ईमान लाए मगर वो बहुत थोड़े थे क़ौम ने जब हद से ज़्यादा बग़ावत व शिक़ावत का मुज़ाहेरह किया और अल्लाह के पैग़म्बर की मुख़ालफ़त की तो एक सियाह रंग का अब्र आया जो क़ौमे आद पर छा गया। वो लोग देखकर खूश हुए के पानी की ज़रूरत है उससे पानी खूब बरसेगा। मगर उसमें से एक हवा चली वो इस शिद्दत से चली के ऊँटों और आदमियों को उड़ा उड़ा कर कहीं से कहीं ले जाती थी। ये देखकर वो लोग घरों में दाखिल हुए और दरवाज़े बन्द कर लिए। मगर हवा की तेज़ी से ना बच सके। उसने दरवाज़े भी उखेड़ दिए और उन लोगों को हलाक भी कर दिया। फिर क़ुद्रते इलाही से कुछ सियाह परिन्दे नमूदार हुए। जिन्होंने उनकी लाशों को उठा कर समुंद्र में फैंक दिया। हज़रत हूद अलेहिस्सलाम अपने चन्द मोमिनों को लेकर क़ौम से जुदा हो गए थे इसलिए वो सलामत रहे। (क़ुरआन करीम पारा 8, रूकू 18) (ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान, 231, रूह-उल-बयान, सफ़ा 237)

सबक: खुदा से बग़ावत और उसके रसूल की नाफ़रमानी का एक नतीजा ये भी है के ये अनासिर अरबआ मिट्टी, पानी आग और हवा भी हमारे लिए अज़ाब बन जाते हैं।

हिकायत नम्बर(90) पत्थर की ऊँटनी

क़ौम आद की हलाकत के बाद क़ौम समूद पैदा हुई। ये लोग हिजाज़ व शाम के दरमियान इक़्ताअ में आबाद थे। उनकी उम्रें बहुत बड़ी होतीं। पत्थर के मज़बूत मकान बनाते। वो टूट फूट जाते। मगर मकीन बस्तूर बाक़ी रहते जब उस क़ौम ने भी अल्लाह की नाफ़रमानी शुरू की। तो अल्लाह ने उनकी हिदायत के लिए हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम को मबऊस फ़रमाया। क़ौम ने इंकार करना शुरू किया। बअज़ ग़रीब ग़रीब लोग आप पर ईमान ले आए उन लोगों का साल के बाद एक ऐसा दिन आता था। जिसमें ये मेले के तौर पर ईद मनाया करते थे। उसमें दूर दूर से आकर लोग शरीक होते। ये मेले का दिन आया तो लोगों ने हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम को भी इस मेले में बुलाया। हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम एक बहुत बड़े मजमअे में तबलीग़े हक़ की ख़ातिर तशरीफ़ ले गए। क़ौमे समूद के बड़े बड़े लोगों ने वहाँ हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम से ये कहा। के अगर आपका खुदा सच्चा है। और आप

Scanned by CamScanner

उसके रसूल हैं तो हमें कोई मौजज़ा दिखलाईये आपने फ़रमाया। बोलो! क्या देखना चाहते हो। उनका सबसे बड़ा सरदार बोला। वो सामने जो पहाड़ी नज़र आ रही है। अपने रब से कहिये के उसमें से वो एक बहुत बड़ी ऊँटनी निकाल दे। जो दस महीने की हामला हो। हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम ने उस पहाड़ी के क़रीब आकर दो रकअत नमाज़ अदा की। और दुआ की। तो वो पहाड़ी लरज़ने लगी। और थोड़ी देर के बाद वो पहाड़ी शक़ हुई। और उसमें से सबके सामने एक ऊँटनी निकली। जो हामला थी। और फिर उसने उसी वक़्त बच्चा भी जना। इस वाक़ये से क़ौम में एक हैरत पैदा हुई। कुछ लोग मुसलमान हुए और बहतु से अपने कुफ्र पर ही क़ायम रहे। (कुरआन करीम पारा 8 रूकू 17 रूह-उल-बयान सफ़ा 728 जिल्द 1)

सबक़: अम्बियाक्राम अलेहिमअस्सलाम के मोजज़ात बरहक़ हैं। और अल्लाह तआला हर बात पर क़ादिर है। अम्बिया अलेहिमअस्सलाम के मोजज़ात का इंकार काफ़िरों का ही काम है।

हिकायत(91) ठंडा चश्मा

हज़रत अय्युब अलेहिस्सलाम को अल्लाह ने हर तरह की नअेमतें अता फ़रमाई थीं हुस्ने सूरत भी। कसरत औलाद भी और कसरत अमवाल भी। अल्लाह तआला ने आपको इब्तला में डाला। और आपके फ़रज़ंद व औलाद मकान के गिरने से दबकर मर गए। तमाम जानवर जिनमें हज़ारहा ऊँट और हज़ारहा बकरियाँ थीं सब मर गए। तमाम खेतियाँ और बाग़ात बर्बाद हो गए। कुछ बाक़ी ना रहा। और जब आपको उन चीज़ों के हलाक होने और ज़ाए हो जाने की ख़बर मिलती। तो आप हम्द इलाही बजा लाते और फ़रमाते थे मेरा क्या है। जिसका था उसने ले लिया। जब तक मुझे दिया। मेरे पास रहा उसका शुक्र अदा नहीं हो सकता। मैं उसकी मर्ज़ी पर राज़ी हूँ। फिर आप बीमार हो गए बदन मुबारक पर आबले पड़ गए। जिस्म शरीफ़ सब ज़ख़्मों से भर गया। सब लोगों ने छोड़ दिया। बजुज़ आपकी बीबी साहिबा के के वो आपकी ख़िदमत करती रही और ये हालत कितनी मुद्दत तक रही। आख़िर एक रोज़ हज़रत अय्युब अलेहिस्सलाम ने अल्लाह से दुआ की। तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया। ऐ अय्युब! तू अपना पाँऊ ज़मीन पर मार। तेरे पेर मारने से एक ठंडा चश्मा निकल आएगा। उसका पानी पीना। और उससे नहाना। चुनाँचे हज़रत अय्युब अलेहिस्लाम ने अपना पाँऊ ज़मीन पर मारा तो एक ठंडा चश्मा निकल आया। जिससे आप नहाए और पानी पिया। तो आपका

Scanned by CamScanner

तमाम मर्ज़ जाता रहा। (कुरआन करीम पारा 23 रूकू 12 ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 464)

सबक: अल्लाह वाले मसायब व आलाम और बीमारियों में घिर कर भी अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं। और उसका शिकवा नहीं करते और अल्लाह के मक़्बूलों के पाँऊ में भी ये बर्कत है। के वो पाँऊ मारें तो ऐसा चश्मा निकल आए जिसका पानी दाफ़अे अलबला हो फिर जो उन मक़्बूलाने हक़ के फ़यूज़ व बरकात का इंकार करता है। किस क़द्र जाहिल व बदबख़्त है।

हिकायत नम्बर(92) एक अज़ीमुश्शान हकूमत

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम को अल्लाह ने एक अज़ीमुश्शान हकूमत अता फ़रमाई थी और आपके बस में हवा कर दी थी। आप हवा को जहाँ हुक्म फ़रमाते थे। वो आप के तख़्त को उड़ा कर वहाँ पहुँचा देती थी (1, कुरआन करीम पारा 17 रूकू 6) और जिन्न व इंसान और परिन्दे सब आपके ताबअे और लश्करी थे (2, पारा 19 रूकू 17) आप हैवानात की बोलियाँ भी जानते थे (3, पारा 19 रूकू 17) हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम जब बैत-उल-मुक़द्दस की तामीर से फ़ारिग़ हुए तो आपने हरम शरीफ़ (मक्का मोअज़्ज़मा) पहुँचने का अज़्म फ़रमाया। चुनाँचे तैयारी शुरू हुई और आपने जिनों, इंसानों परिन्दों और दीगर जानवरों को साथ चलने का हुक्म दिया। हत्ता के एक बहुत बड़ा लश्कर तैयार हो गया। ये अज़ीम लश्कर तक़रीबन तीस मील में पूरा आया। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने हुक्म दिया तो हवा ने तख़्त सुलेमान को मअे उस लश्कर अज़ीम के उठाया। और फ़ौरन हरम शरीफ़ में पहुँचा दिया। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम हरम शरीफ में कुछ अर्सा ठहरे उस अर्से में आप मक्का मोअज़्ज़मा में हर रोज़ पाँच हज़ार ऊँट। पाँच हज़ार गाय और बीस हज़ार बकरियाँ ज़िबह फ़रमाते थे। और अपने लश्कर में हमारे हुज़ूर सय्यद-उल-अम्बिया सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की बशारत सुनाते रहे और यहीं से एक नबी अर्बी पैदा होंगे जिनके बाद फिर कोई और नबी पैदा ना होगा। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम कुछ अर्से के बाद मक्का मोअज़्ज़मा में मनासिक अदा फ़रमाने के बाद एक सुबह को वहाँ से चल कर सनआ मुल्क यमन में पहुँचे। मक्का मोअज़्ज़मा से सनआ का एक महीने का सफ़र है। और आप मक्का से सुबह को रवाना हुए। और सनआ ज़वाल के वक़्त पहुँच गए। आपने यहाँ भी कुछ अर्सा ठहरने का इरादा फ़रमाया। यहाँ पहुँच कर परिन्दा हुद हुद एक रोज ऊपर उड़ा और बहुत ऊपर

Scanned by CamScanner

जा पहुँचा और सारी दुनिया के तूल व अर्ज़ को देखा। उसको एक सरसब्ज़ बाग़ नज़र आया ये बाग़ मल्का बिलक़िस का था। उसने देखा के उस बाग़ में एक हुद हुद बैठा है हज़रत सुलमेान अलेहिस्सलाम के हुद हुद का नाम यअफ़ूर था। यअफ़ूर और यमनी हुद हुद की हस्बे ज़ेल गुफ़्तगू हुई।

यमनी हुद हुदः भई तुम कहाँ से आए और कहाँ जाओगे?

यअफ़ूरः मैं मुल्क शाम से, अपने बादशाह सुलेमान के साथ आया हूँ।

यमनी हुद हुदः सुलेमान कौन है?

यअफ़ूरः वो जिनों, इंसानों, शयातीन, परिन्दों, जानवरों और हवा का एक अज़ीमुश्शान फ़रमानरवा और सुलतान है उसमें बड़ी ताक़त है हवा उसकी सवारी है। और हर चीज़ उसकी ताबअे है। अच्छा तुम बताओ के तुम किस मुल्क के हो।

यमनी हुद हुदः मैं इसी मुल्क का रहने वाला हूँ। हमारे इस मुल्क की बादशाह एक औरत है। जिसका नाम बिलक़िस है। उसके मातहत बारह हज़ार सिपह सालार हैं। और हर सिपह सालार के मातहत एक एक लाख सिपाही है फिर उसने यअफ़ूर से कहा। तुम मेरे साथ एक अज़ीम एक अज़ीम मुल्क और लश्कर देखने चलोगे?

यअफ़ूरः भई मेरे बादशाह सुलेमान अलेहिस्सलाम की नमाज़े अस्र का वक़्त हो रहा है। और उन्हें वज़ू लिए पानी दरकार होगा। और पानी की जगह बताने पर मैं मामूर हूँ। अगर देर हो गई तो वो नाराज़ होंगे।

यमनी हुद हुदः नहीं बल्के यहाँ के मुल्क और फ़रमानरवा बिलक़िस की मुफ़स्सिल ख़बर सुन कर खूश होंगे।

यअफ़ूरः अच्छा तो चलो।

(दोनों उड़ गए। और यअफ़ूर मुल्क यमन को देखने लगा)

और इधर हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलमा ने नमाज़ अस्र के वक़्त हुद हुद को तलब फ़रमाया। तो वो ग़ैर हाज़िर निकला। आप बड़े जलाल में आ गए। और फ़रमाया। क्या हुआ। के मैं हुद हुद को नहीं देखता। या वो वाक़ई हाज़िर नहीं ज़रूर मैं उसे सख़्त अज़ाब करूंगा। या ज़िबह करूंगा। या कोई रोशन सनद मेरे पास लाए। (क़ुरआन करीम पारा 19 रूकू 71)

और फिर अक़ाब को हुक्म दिया। के वो उड़ कर देखे। के हुद हुद कहाँ है? चुनाँचे अक़ाब उड़ा। और बहुत ऊपर पहुँच कर सारी दुनिया को इस तरह देखने लगा। जिस तरह आदमी अपने हाथ के पियाले को देखता है। अचानक उसे हुद हुद यमन की तरफ़ से आता हुआ दिखाई दिया। अक़ाब फ़ौरन उसके

Scanned by CamScanner

पास पहुँचा और कहा ग़ज़ब हो गया। अपनी फ़िक्र कर ले अल्लाह के नबी सुलेमान ने तुम्हारे लिए क़सम खा ली है। के मैं हुद हुद को सख़्त सज़ा दूंगा। या ज़िबह कर दूंगा"

हुद हुद ने डरते हुए पूछा। और अल्लाह के नबी ने उस हलफ़ में किसी बात का इसतसना भी फ़रमाया है या नहीं? अक़ाब ने कहा। हाँ ये फ़रमाया है के "या कोई रोशन सनद मेरे पास लाए।"

हुद हुद ने कहा तो फिर मैं बच गया। मैं उनके लिए एक बहुत बड़ी ख़बर लेकर आया हूँ। फिर अक़ाब और हुद हुद दोनों बारगाहे सुलेमानी में हाज़िर हुए हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने रौब व जलाल में फ़रमाया। "हुद हुद को हाज़िर करो"

हुद हुद बेचारा दमबखुद, अपनी दुम नीचे किए हुए पर ज़मीन से मलता हुआ और कांपता हुआ हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के क़रीब आया। तो हज़रत सुलेमान ने उसको सर से पकड़ कर अपनी तरफ़ घसीटा। उस वक़्त हुद हुद ने कहा: *उज़्कुरू कूफ़ाका बेना यदायिल्लाही* "हुज़ूर! अल्लाह के सामने अपनी हाज़री को याद कर लीजिए"

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने ये बात सुनकर उसे छोड़ दिया और उसे माफ़ फ़रमा दिया। फिर हुद हुद ने अपनी ग़ैर हाज़री की वजह बयान की। और बताया के मैं एक बहुत बड़ी मल्का को देखकर आया हूँ। खुदा ने उसे हर क़िस्म का सामान ऐश व इशरत दे रखा है और वो सूरज की पुजारिन है: *वलाहा अरशुन अज़ीम* और उसका एक बहुत बड़ा तख़्त है।

रिवायत है के ये तख़्त सोने और चाँदी का बना हुआ था और बड़े बड़े जवाहरात से मरसअे था। बिलक़िस ने एक मज़बूत घर बनवाया था। जिस घर में दूसरा घर था। फिर उस घर के अन्दर तीसरा घर था। और फिर तीसरे घर के अन्दर चौथा घर था। उसी तरह फिर उसमें पाँचवाँ और पाँचवें में छटा और छटे में सातवाँ घर था। उस सातवें घर में वो तख़्त मुक़फ़्फ़ल था और सात ही ग़िलाफ़ उस तख़्त में चढ़ा रखे थे और उस तख़्त के चार अदद पाए थे। एक पाया सुर्ख़ याक़ूत का। दूसरा ज़र्द याक़ूत का। तीसरा सब्ज़ ज़रमुर्द का और चौथा सफ़ेद मोती का था। ये तख़्त अस्सी (80)गज़ लम्बा। चालीस (40) गज़ चौड़ा और तीस (30) गज़ ऊँचा था बिलक़िस सातवें घर के अन्दर रखे हुए उस तख़्त अज़ीम पर बैठा करती थी। हर घर के बाहर सख़्त पहरा था। और बिलक़िस तक पहुँचना एक दुश्वार अम्र था।

हुद हुद ने जब सुलेमान अलेहिस्सलाम को बिलक़िस की बात सनाई

Scanned by CamScanner

तो सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मेरा एक ख़त ले जाओ और बिलक़िस को पहुँचा आओ। चुनाँचे आपने एक ख़त लिखा। जिस पर *बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम* लिख कर लिखा: *अन्ला तअलू अलय्या व आतूनी मुस्लिमीन* "मेरे मामले में बड़ाई ज़ाहिर ना करो। और मुसलमान बन कर मेरे हुज़ूर हाज़िर हो जाओ।" और उस ख़त पर शाही मोहर सब्त करके हुद हुद को दे दिया। हुद हुद गया और सातों क़िलों के पहरों से बेनियाज़ होकर नबी का ये चिट्ठी रसाँ रोशन दानों में से गुज़रता हुआ बिलक़िस तक जा पहुँचा बिलक़िस उस वक़्त सो रही थी। हुद हुद वो ख़त बिलक़िस के सीने पर रख कर बाहर निकल आया।

बिलक़िस जब उठी तो ये ख़त पाकर घबराई। और अयाने सल्तनत से मशवरह तलब किया। के क्या किया जाए? वो बोले के आप डरती क्यों हैं? हम ज़ोर वाले और लड़ने में माहिर हैं। सुलेमान अगर लड़ना चाहता है तो लड़े। हम शिकस्त तसलीम नहीं करते। आईंदा जो आपकी मर्ज़ी बिलक़िस ने कहा। के जंग अच्छी चीज़ नहीं बादशाह जब किसी शहर में अपने ज़ोर क़ुव्वत से दाख़िल होते हैं तो उसे तबाह कर देते हैं मेरा ख़याल है के मैं सुलेमान की तरफ़ एक तोहफ़ा भेजूं और फिर देखूं के सुलेमान उसे क़बूल करते हैं या नहीं? अगर वो बादशाह हैं तो तोहफ़ा क़बूल कर लेंगे। और अगर नबी हैं तो मेरा ये तोहफ़ा क़बूल ना करेंगे बजुज़ इसके के उनके दीन का इत्तिबा किया जाए।

चुनाँचे बिलक़िस ने पाँच सौ ग़ुलाम और पाँच सौ बांदियाँ बेहतरीन रेशमी लिबास और ज़ेवरात के साथ आरास्ता करके उन्हें एसे घोड़ों पर बैठाया जिनकी काठियाँ सोने की और लगामें जवाहरात से मरसअे थीं। और एक हज़ार सोने और चाँदी की ईंटें और एक ताज जो बड़े बड़े क़ीमती मातियों से मुज़य्यन था। वग़ैरा वग़ैरा मअ एक ख़त के अपने क़ासिद के साथ रवाना किए।

हुद हुद देख कर चल दिया। और सुलेमान अलेहिस्सलाम को सारा क़िस्सा सुना दिया। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने अपने जिनी लश्कर को हुक्म दिया। के सोने चाँदी की ईंटें बना कर छः मील तक इनहीं ईंटों की सड़क बना दी जाए और सड़क के इधर उधर सोने और चाँदी की बुलंद दीवारें खड़ी कर दी जाएँ और समुंद्र के जो खूबसूरत जानवर हैं। इसी तरह ख़ुश्की के भी जो खूबसूरत जानवर हैं वो सब हाज़िर किए जाएँ। चुनाँचे आपके हुक्म की तअमील फ़ौरन की गई। छः मील सोने चाँदी की सड़क बन गई

Scanned by CamScanner

उस सड़क के दोनों तरफ़ सोने चाँदी की दीवारें भी बन गईं और खुश्की व तरी के खूबसूरत जानवर भी हाज़िर कर दिए गए। और फिर हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने अपने तख़्त की दायें जानिब चार हज़ार सोने की कुर्सियाँ और बायें जानिब भी चार हज़ार सोने की कुर्सियाँ रखवाईं और उन पर अपने मुक़र्रबीन व ख़्वास को बिठाया। और अपने जिनी लश्कर और इंसानी लश्कर को दूर दूर तक सफ़ ब सफ़ खड़ा कर दिया। और वहशी जानवरों, और दरिन्दों और चोपायों को भी सफ़ ब सफ़ खड़ा कर दिया। इस क़िस्म का शाही दबदबा और जलाल और इस शान व शौकत की हकूमत चश्मे फलक ने कभी देखी ही ना थी।

बिलक़िस का क़ासिद अपने ज़ओम में बड़ा क़ीमती तोहफ़ा ला रहा था। जब उसने सोने चाँदी की बनी हुई सड़क पर क़दम रखा। और इर्दगिर्द सोने चाँदी की दीवारें देखीं और फिर सुलेमान अलेहिस्सलाम की जाह व इज़्ज़त और शान व शौकत के नज़ारे देखे तो उसका दिल धक धक करने लगा। और शर्म के मारे पानी पानी हो गया और सोचने लगा के मैं ये बिलक़िस का तोहफ़ा किस मुंह से सुलेमान की ख़िदमत में पेश करूंगा। बहरहाल जब वो बारगाहे सुलेमानी में पहुँचा। तो हज़रत ने फ़रमाया। क्या तुम लोग माल दुनिया से मेरी मदद कना चाहते हो तुम लोग अहले मफ़ाख़्रत हो। दुनिया पर फ़ख़्र करते हो। एक दूसरे के तोहफ़े व हदिये पर खूश होते हो। मुझे ना दुनिया से खूशी होती है। ना उसकी हाजत है। अल्लाह तआला ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है और इतना कुछ दिया है। लिहाज़ा ऐ बिलक़िस के क़ासिद पलट जा। और ये अपना तोहफ़ा ले जाओ अपने साथ ही और जाकर कह दो। के अगर वो मुसलमान होकर हमारे हुज़ूर हाज़िर नहीं होती। तो हम उस पर लश्कर लायेंगे। के उसके मुक़ाबले की उसे ताक़त ना होगी। और हम उसे ज़लील करके शहर से निकाल देंगे।

बिलक़िस का क़ासिद पैग़ाम ले कर वापस पलटा। और बिलक़िस से सारा क़िस्सा तफ़्सील से कहा। बिलक़िस ने ग़ौर से सुना। और बोली। बेशक वो नबी है और उससे मुक़ाबला करना हमारे बस का काम नहीं। फिर उसने अयाने सलतनत से मशवरह तलब करने के बाद हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम की ख़िदमत में खुद हाज़िर होने का इरादा कर लिया। हुद हुद ने ये सारी रिपोर्ट हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम तक पहुँचा दी। और हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने भरे दरबार में ये एलान फ़रमाया:

अय्युकुम यातिनी बिअरशिहा क़ब्ला अंयातूनी मुसलिमीन "कौन

Scanned by CamScanner

है जो बिलक़िस के यहाँ पहुँचने से पहले पहले उसका तख़्त यहाँ ले आए।"

अफ़रीयत नामी एक जिन्न उठा। और बोलाः *अना आतिका बिही क़ब्ला अन तक़ूमा मिन्मक़ामिक़ा* "आपके इजलास बर्खास्त होने से पहले पहले मैं ले आऊँगा।"

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। हम उससे भी ज़्यादा जल्दी मंगवाना चाहते हैं।

तो फिर एक आलिमे किताब उठा। और बोला।

अना आतिका बिही क़ब्ला अंयरतद्दा इलेका तरफ़ूका

"मैं एक पल मारने से भी पहले ले आऊँगा।"

ये कहा और पल की पल में वो तख़्त ले भी आया। और सुलेमान ने देखा तो तख़्त सामने रखा था। फिर बिलक़िस ने हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम की बारगाह में हाज़िर हुई और हज़रत की शान व शौकत और सदाक़त व नबूव्वत का नज़ारा करके मुसलमान हो गई। (हैवा अलहैवान सफ़ा 305जिल्द 2 रूह-उल-बयान सफ़ा 896 जिल्द 2)

सबक़: हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के दरबार, और बिलक़िस के तख़्त के मुक़ाम का दरमियानी फ़ासला दो महीना का राह का था। और तूल व अर्ज़ उसका आप पढ़ चुके। के तीस गज़ के तीस गज़ ऊँचा। चालीस गज़ चौड़ा और अस्सी गज़ लम्बा था। इतनी तवील मुसाफ़ और इतने वज़नदार होने और इतने महफ़ूज़ मुक़ाम में होने के बावजूद सुलेमान अलेहिस्सलाम का एक सिपाही उसे पल भर में ले आया। तो फिर जो सुलेमान अलेहिस्सलाम के आक़ा व मौला हुज़ूर सय्यद-उल-अम्बिया सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के औलिया उम्मत हैं वो क्यों दूर दराज़ की मुसाफ़त से किसी मज़लूम की एआनत व हिमायत को नहीं पहुँच सकते?

2- वो आलिमे किताब वो तख़्त लाने के लिए भरे दरबार से बिलक़िस के महल में गया। और वहाँ से तख़्त उठा कर वापस आया। मगर इस अर्से में वो हज़रत सुलेमान के दरबार से ग़ायब भी नहीं हुआ। और मुक़ाम तख़्त तक भी पहुँच गया। मालूम हुआ के अल्लाह वालों में ये ताक़त है के वो एक ही वक़्त में मुतअद्दिद जगह हाज़िर हो सकते हैं और ये ताक़त हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के एक सिपाही की है। फिर जो हज़रत सुलेमान के भी आक़ा व मौला सल-लल्लाहो अलेह सल्लम हैं उनका एक वक़्त में मुतअद्दिद जगह तशरीफ़ फ़रमा होना क्यों मुमकिन नहीं?

3- हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के उस सिपाही ने दो महीने की राह

Scanned by CamScanner

को पल भर में तय कर लिया। और पल भर में चला भी गया। और आ भी गया। फिर हुज़ूर सय्यद-उल-अम्बिया सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का शबे मैराज पल भर में अर्श पर तशरीफ़ ले जाना। और वापस तशरीफ़ ले आना क्यों मुमकिन नहीं?

4- तख़्त सुलेमान अलेहिस्सलाम को मअे एक लश्कर अज़ीम के हवा उठा लेती थी ये "नबी" का तसर्रूफ़ व इख़्तियार है। और जो अम्बिया को अपनी मिस्ल बशर कहते हैं उनमें से कोई साहब ज़रा अपनी बीवी समेत ही किसी छत से हवा में छिलांग लगाकर दिखाएँ। ताके दूसरे को इब्रत हासिल हो।

5- हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम हरम शरीफ़ में पहुँच कर हर रोज़ पाँच हज़ार ऊँट पाँच हज़ार गाय और बीस हज़ार बकरियाँ ज़िबह फ़रमाते रहे। मगर एक फ़िर्क़ा आज कल ऐसा भी है। जो अय्यामे हज में एक बकरी तक की क़ुर्बानी को भी फ़िज़ूल कहता है और मुसलमानों को इस शरई अम्र से रोकता है।

6- जिन्नो इन्स, वहीश व तियूर, खुश्की और तरी के हैवानात और दीगर अल्लाह की ज़बरदस्त मख़्लूक़ भी सुलेमान अलेहिस्सलाम की ताबअे थी। और आज जो लोग अम्बिया को अपनी मिस्ल बशर कहते हैं। उनके घर की तरफ़ नज़र दौड़ाईये। तो उनकी बीवी भी उनके ताबअे नहीं। फ़यालुलअजब!

हिकायत नम्बर(93) सुलेमान अलेहिस्सलाम का फ़ैसला

हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम की अदालत में दो शख़्स हाज़िर हुए, एक ने ये दावा किया। के उस दूसरे शख़्स की बकरियाँ रात को मेरे खेत में घुस गईं और उन्होंने मेरा सारा खेत खा लिया है। हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम ने ये फ़ैसला दिया के सब बकरियाँ खेत वाले को दे दी जाएँ उन बकरियों की क़ीमत खेत के नुक़्सान के बराबर थी। जब वो दोनों शख़्स वापस हुए। तो हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम से रास्ते में मुलाक़ात हो गई। उन दोनों ने सुलेमान अलेहिस्सलाम को हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम का फ़ैसला सुनाया। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। इस फ़ैसले से बेहतर एक और फ़ैसला भी है। उस वक़्त हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ ग्यारह बरस की थी। हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम ने जो सलेमान अलेहिस्सलाम के वालिद थे। जब

Scanned by CamScanner

अपने साहबज़ादे की ये बात सुनी तो सुलेमान अलेहिस्सलाम को बुला कर दरयाफ़्त फ़रमाया। के बेटा! वो कौन सा फ़ैसला है जो बेहतर है? सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। वो ये है के बकरियों वाला उस खेत की काश्त करे और जब तक खेती इस हालत को पहुँचे। जिस हालत में बकरियों ने खाई है उस वक़्त तक खेती वाला बकरियों के दूध वग़ैरा से फ़ायदा उठाए और खेती उस हालत में पहुँच जाने के बाद खेती वाले को खेती वापस कर दी जाए। बकरियों वाले को उसकी बकरियाँ वापस कर दी जाएँ। ये फ़ैसला हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम ने भी पसंद फ़रमाया। (क़ुरआन करीम पारा 17 रूकू 6 रूह-उल-बयान सफ़ा 652 जिल्द 2)

सबक़: हज़रत दाऊद हज़रत सुलेमान अलेहिम अस्सलाम के ये दोनों फ़ैसले अज़रूऐ इजतहाद थे। मालूम हुआ। के! इजतहाद करना अम्बियाक्राम अलेहिम अस्सलाम की सुन्नत है।

हिकायत नम्बर(94) माँ की मामता

हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम के ज़माने में दो औरतें थीं। दोनों की गोद में दो बेटे थे। वो दोनों कहीं जा रही थीं के रास्ते में एक भेड़िया आया। और एक का बच्चा उठा कर ले गया। वो औरत जिसका बच्चा भेड़िया उठा कर ले गया था। दूसरी औरत के बच्चे को छीन कर बोली के ये बच्चा मेरा है। भेड़िया तेरे बच्चे को उठा कर ले गया है। बच्चे की माँ ने कहा। बहन अल्लाह से डर। ये बच्चा तो मेरा है। भेड़िये ने तेरे बच्चे को उठाया है। उन दोनों में जब झगड़ा बढ़ गया। तो दोनों हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम की अदालत में हाज़िर हुईं। हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम ने वो बच्चा बड़ी औरत को दिला दिया, हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम को इस बात की ख़बर हुई। तो आपने फ़रमाया। अब्बा जान! एक फ़ैसला मेरा भी है और वो ये है के छुरी मंगवाई जाए मैं उस बच्चे के दो टुकड़े करता हूँ। और आधा बड़ी को और आधा छोटी को दे देता हूँ। ये फ़ैसला सुनकर बड़ी तो ख़ामोश रही। और छोटी बोली। के हुज़ूर! आप बच्चा बड़ी को ही दे दें लेकिन खुदारा बच्चे के टुकड़े ना कीजिए। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। बच्चा इसी छोटी का है। जिसके दिल में शफ़्क़त मादरी पैदा हो गई चुनाँचे वो बच्चा छोटी को दे दिया गया। (फ़तह-अल-बारी सफ़ा 268 जुज़ 12 मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 500)

सबक़: इजतिहाद के साथ बड़े बड़े मुश्किल मसायल हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(95) सुलेमान अलेहिस्सलाम और मलक-उल-मौत

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के दरबार आली में एक आदमी घबराया हुआ हाज़िर हुआ और अर्ज़ करने लगा। हुज़ूर हवा को हुक्म दीजिए। के मुझे सरज़मीन हिन्द में पहुँचा दे। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। बात क्या हुई। यहाँ से क्यों जाना चाहते हो वो कहने लगा। हुज़ूर! अभी अभी मैंने मलक-उल-मौत को देखा है जो मुझे घूर घूर कर देख रहा था। वो देखिये वो मुझे घूर रहा है। हुज़ूर! मेरी ख़ैर नहीं मुझे अभी हिन्द पहुँचा दीजिए। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने हवा को हुक्म दिया। तो हवा फ़ौरन उसको हिन्द छोड़ आई। थोड़ी देर के बाद मलक-उल-मौत हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के पास आया और अर्ज़ करने लगा। हुज़ूर! सुना आपने उस आदमी का क़िस्सा? खुदा का मुझे हुक्म था। के उस शख़्स की जान सर ज़मीन हिन्द में क़ब्ज़ करो। मैं हैरान था। के उसकी जान हिन्द में क़ब्ज़ करने को फ़रमाया गया है। और ये यहाँ आपके पास खड़ा है। मैं इसी हैरानी में उसे देख रहा था। के खुद ही उसने हिन्द जाने की तमन्ना ज़ाहिर कर दी। चुनाँचे इधर आपने हवा को हुक्म दिया और वो उड़ा कर हिन्द ले गई और उधर मैं उसके पीछे गया। और जिस वक़्त वो सर ज़मीन हिन्द पर उतरा है। उसका वक़्त आ चुका था। उसी वक़्त मैंने वहाँ उसकी जान क़ब्ज़ कर ली। (मसनवी शरीफ़)

सबक़: मौत से भागना मुश्किल है जहाँ पहुँचो ये आ जाएगी।

हिकायत(96) सौतेली बेटी

हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने ज़माना में एक बादशाह था। जिसकी बीवी किसी क़द्र बूढ़िया थी। उस बूढ़िया की पहले ख़ाविंद से एक नौजवान लड़की थी। बूढ़िया को ये ख़ौफ़ हुआ के मैं तो बूढ़िया हो गई हूँ। ऐसा ना हो। के ये बादशाह किसी ग़ैर औरत से शादी कर ले। और मेरी सल्तनत जाती रहे इसलिए ये बेहतर है के अपनी जवान लड़की से उसका उक़्द कर दूं। इस ख़याल से एक दिन शादी का इन्तिज़ाम करके हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम को बुला कर पूछा के मेरा ये इरादा है। हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने फ़रमया के ये निकाह हराम है। जायज़ नहीं। ये फ़रमा कर आप वहाँ से तशरीफ़ ले आए। इस बद ख़याल दुनियादार बूढ़िया को बहुत ग़ुस्सा आया। और आपकी दुश्मन हो गई। रात दिन आपके क़त्ल करने का फ़िक्र करती

Scanned by CamScanner

थी। एक दिन मौक़ा पाकर बादशाह को शराब पिला कर अपनी बेटी को बना कर संवार कर बादशाह के पास ख़लवत में भेज दिया। जब बादशाह अपनी सौतेली बेटी की तरफ़ राग़िब हुआ। तो बूढ़िया ने कहा के मैं इस काम को खूशी से मंज़ूर करती हूँ। मगर याहिया इजाज़त नहीं देते। बादशाह ने हज़रत याहिया अलेहिस्स्लाम को बुला कर पूछा। हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया के ये तुम्हारी हक़ीक़ी बेटी की तरह तुम पर हराम है। बादशाह ने जल्लाद को हुक्म दिया के याहिया को ज़िबह कर दो। फ़ौरन जल्लादों ने हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम को शहीद कर दिया। शहीद होने के बाद भी हज़रत याहिया के सर अनवर से आवाज़ आई। के ऐ बादशाह ये औरत तुझ पर हराम है। ऐ बादशाह ये औरत तुझ पर हराम है। ऐ बादशाह ये औरत तुझ पर हमेशा के लिए हराम है। (सीरत-उल-सालेहीन स80)

सबक़: फ़ासिक़ व फ़ाजिर हाकिम अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तकमील के लिए बड़े बड़े मज़ालिम ढहाते हैं और फ़ासिक़ा व फ़ाजिरा औरतों के खूश करने की ख़ातिर अल्लाह के प्यारों के दरपैय आज़ार हो जाते हैं। और अल्लाह वाले पैग़ामे हक़ पहुँचाने में जान तक की भी परवाह नहीं करते।

हिकायत नम्बर(97) तेरह सौ साल(1300) की उम्र का बादशाह

हज़रत दानयाल अलेहिस्सलाम एक दिन जंगल में चले जाते थे। आपको एक गुंबद नज़र आया। आवाज़ आई। के ऐ दानयाल! इधर आ। दानयाल अलेहिस्सलाम उस गुंबद के पास गए। मालूम हुआ के किसी मक़्बरे का गुंबद है जब आप मक़्बरे के अन्दर तशरीफ़ ले गए तो देखा। बड़ी उम्दा इमारत है और इमारत के बीच एक आलीशान तख़्त बिछा हुआ है। उस पर एक बड़ी लाश पड़ी है फिर आवाज़ आई। के दानयाल तख़्त के ऊपर आओ। आप ऊपर तशरीफ़ ले गए। तो एक लम्बी चौड़ी। तलवार मुर्दे के पहलू में रखी हुई नज़र आई। उस पर ये इबारत लखी हुई नज़र आई। के मैं क़ौमे आद से एक बादशाह हूँ। खुदा ने तेरा सौ साल की मुझे उम्र अता फ़रमाई। बारह हज़ार मैंने शादियाँ कीं। आठ हज़ार बेटे हुए ला तअदाद ख़ज़ाने मेरे पास थे इस क़द्र नअेमतें लेकर भी मेरे नफ़्स ने खुदा का शुक्र ना किया। बल्के उल्टा कुफ़्र करना शुरू किया। और खुदाई दअवे करने लगा। खुदा ने मेरी हिदायत के

Scanned by CamScanner

लिए एक पैग़म्बर को भेजा। हर चन्द उन्होंने मुझे समझाया। मगर मैंने कुछ ना सुना। अंजाम कार वो पैग़म्बर मुझे बददुआ दे कर चले गए। हक़ तआला ने मुझ पर और मेरे मुल्क पर क़हेत मुसल्लत कर दिया। जब मेरे मुल्क में कुछ पैदा ना हुआ। तब मैंने दूसरे मुल्कों में हुक्म भेजा। के हर एक किस्म का ग़ल्लह और मेवा मेरे मुल्क में भेजा जाए। बमौजिब मेरे हुक्म के हर क़िस्म का ग़ल्लह और मेवा मेरे मुल्क में आने लगा जिस वक़्त वो ग़ल्लह या मेवा मेरे शहर की सरहद में दाख़िल होता है। फ़ौरन मिट्टी बन जाता और वो सारी मेहनत बेकार जाती। और कोई दाना मुझे नसीब ना होता। इसी तरह सात दिन गुज़र गए। मेरे क़िले से सारे अहाली मवाली बीवियाँ बच्चे सब भाग गए। मैं तनहा क़िले में रह गया। सिवाए फ़ाक़ह के मेरी कोई ग़िज़ा ना थी। एक दिन मैं निहायत मजबूर होकर फ़ाक़ह की तकलीफ़ में किले के दरवाज़े पर आया। वहाँ मुझे एक शख़्स नज़र आया। जिसके हाथ में कुछ ग़ल्लह के दाने थे जिनको वो खाता चला जाता था। मैंने उस जाने वाले से कहा के एक बड़ा बर्तन भरा हुआ मोतियों का मुझ से ले ले और ये अनाज के दाने मुझे दे दे मगर उसने ना सुना। और जल्दी से उन दानों को खा कर मेरे सामने से चला गया अंजाम ये हुआ। के इस फ़ाक़ह की तकलीफ़ से मैं मर गया। ये मेरी सरगुज़िश्त है जो शख़्स मेरा हाल सुने। वो कभी दुनिया के क़रीब ना आए। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 79)

सबक़: खुदा से हर क़िस्म की नअेमत पाकर फिर उसकी नाशुक्री करना। इन्तेहाई नाआक़्बत अनदेशी है। और अल्लाह की नाशुक्री से भूक, फ़ाक़ह, क़हेत और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बलायें नाज़िल होती हैं। और ये भी मालूम हुआ के इंसान चाहे कितनी बड़ी उम्र पाए; एक दिन उसने मरना ज़रूर है।

हिकायत नम्बर (98) बेसिबाती दुनिया

बनी इस्राईल के एक नोजवान आबिद के पास हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम तशरीफ़ लाया करते थे। ये बात उस वक़्त के बादशाह ने सुनी तो उस नोजवान आबिद को बुलाया और पूछा के क्या बात सच है के तुम्हारे पास हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम आया करते हैं? उसने जवाब दिया के हाँ, बादशाह ने कहा। अब जब वो आयें तो उन्हें मेरे पास लेकर आना। अगर ना लाओगे। तो मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा। चुनाँने एक दिन हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम उस आबिद के पास तशरीफ़ लाए। तो आबिद ने उनसे सारा वाक़ेया अर्ज़ कर

Scanned by CamScanner

दिया। आपने फ़रमाया चलो उस बादशाह के पास चलते हैं। चुनाँचे आप उस बादशाह के पास तशरीफ़ ले गए। बादशाह ने पूछा। क्या आप ही ख़िज़्र हैं? फ़रमाया हाँ! बादशाह ने कहा। तो हमें कोई बड़ी अजीब बात सुनाईये। फ़रमाया मैंने दुनिया की बड़ी बड़ी अजीब बातें देखी हैं। मगर उनमें से एक सुनाता हूँ। लो सुनो!

मैं एक दफ़ा एक बहुत बड़े खूबसूरत और आबाद शहर से गुज़रा मैंने उस शहर के एक बाशिन्दे से पूछा। ये शहर कब से बना है? तो उसने कहा। ये शहर बहुत पुराना शहर है। इसकी इब्तिदा का ना मुझे इल्म है। और ना हमारे आबाओ अज्दाद को। खुदा जाने कब से ये शहर यूं ही आबाद चला आ रहा है। फ़िर मैं पाँस सौ साल के बाद इसी जगह से गुज़रा तो वहाँ शहर का नाम व निशान तक ना था। एक जंगल था और वहाँ एक आदमी लकड़ियाँ चुन रहा था। मैंने उससे पूछा ये। शहर कब से बर्बाद हो गया है? वो मुझे देखकर हंसा और कहा। यहाँ शहर था ही कब? ये जगह तो मुद्दतों से जंगल चली आ रही है। हमारे आबाओ अज्दाद ने भी यहाँ जंगल ही देखा है पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा तो वहाँ एक अज़ीम-मुश्शान दरया बह रहा था। और किनारे पर चन्द शिकारी बैठे थे। मैंने उनसे पूछा ये जंगल दरया कब से बन गया है? तो वो लोग मुझे देख कर कहने लगे आप जैसा आदमी ऐसा सवार करे? यहाँ तो हमेशा ही से दरया बहता चला आ रहा है मैंने पूछा। क्या इससे पहले ये जगह जंगल ना थी? वो कहने लगे हर गिज़ नहीं ना हम ने देखी। और ना ही अपने आबाओ अज्दाद से सुनी। फ़िर मैं पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा। तो वो जगह एक बहुत बड़ा चटयल मैदान देखा। जहाँ एक आदमी को फिरते देखा। मैंने उससे पूछा। ये जगह खुश्क कब से हो गई? वो बोला के ये जगह तो हमेशा से यूंही चली आती है मैंने पूछा। यहाँ क़भी दरया नहीं बहता था? उसने कहा। ऐसा ना कभी देखा ना अपने आबाओ अज्दाद से सुना। फिर मैं पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा तो वहाँ एक अज़ीम-मुश्शान शहर आबाद देखा। जो पहले शहर से भी ज़्यादा खूबसूरत और आबाद था। मैंने एक बाशिन्दे से पूछा ये शहर कब से है? वो बोला ये शहर पुराना है। इसकी इब्तिदा का ना हमें इल्म है ना हमारे आबाओ अज्दाद को। (अजायब-उल-मख़लूक़ात-उल-क़ज़्वीनी सफ़ा 129 जिल्द 1)

सबक़: इस दुनिया को सिबात नहीं है। ये हज़ारों रंग बदती है। कभी आबादी, कभी बर्बादी, कभी मातम, कभी शादी।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(99) यूसुफ़ अलेहिस्सलाम और आईना

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम का एक दोस्त आपसे मुलाक़ात करने आया। तो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने उससे फ़रमाया। भई दोस्त दोस्त के पास आता है। तो उसके लिए कोई तोहफ़ा लाता है। बताओ तुम मेरे लिए क्या लाए हो? दोस्त ने जवाब दिया। इस वक़्त दुनिया में आपसे बढ़कर कोई और हसीन व जमील चीज़ है ही नहीं। जो मैं आपके लिए लाता। इसलिए मैं आपकी ख़िदमत में आप ही को लाया हूँ। और यूसुफ़ के लिए तोहफ़ा भी यूसुफ़ लाया हूँ ये कहकर एक आईना यूसुफ़ अलेहिस्स्लाम के सामने रख दिया। और कहा लीजिए इसमें अपने हुस्न व जमाल का नज़ारा कीजिए। इससे बढ़कर और क्या तोहफ़ा होगा। (मसनवी शरीफ़)

सबक़: इंसान को चाहिए। के वो अपना दिल मिस्ल आईना के साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ बना ले। और कल जब खुदा पूछे के मेरे लिए क्या लाए हो तो यही दिल हाज़िर कर दे और अर्ज़ करे के इलाही ये दिल लाया हूँ। जिसमें तेरे ही जलवे हैं।

हिकायत नम्बर(100) बिरादराने यूसुफ़

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम बड़े हसीन व जमील थे। आपकी उम्र शरीफ़ ग्यारह साल की हुई आपने एक ख़्वाब देखा। के आसमान से ग्यारह सितारे उतरे हैं। और उनके साथ सूरज और चाँद भी उन सब ने आपको सज्दा किया है। आपने अपना ये ख़्वाब अपने वालिद माजिद हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम से बयान किया। तो याक़ूब अलेहिस्सलाम इस ख़्वाब की ताबीर समझ गए। के मेरा यूसुफ़ शरफ़ नबुव्वत से सरफ़राज़ किया जाएगा। और उसके ग्यारह भाई उसके मती होंगे। हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ से बड़ी मोहब्बत थी। इस मोहब्बत के बाइस बिरादराने यूसुफ़ के दिलों में हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्स्लाम के खिलाफ़ जज़्बात थे। हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम को उस सारी हालत का इल्म था। इसलिए हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से फ़रमाया। बेटा! ये ख़्वाब अपने भाईयों से मत बयान करना ताके वो तेरे साथ कोई चाल ना चलें। उस दिन से हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से और भी ज़्यादा मोहब्बत करने लगे।

बिरादराने यूसुफ़ पर ये बात बड़ी नागवार गजरी। और उन्होंने बाहम

Scanned by CamScanner

मिलकर ये मशवरह किया। के कोई ऐसी तरकीब करें के वालिद साहब को हमारी तरफ़ ज़्यादा इलतिफ़ात हो जाए। उस मजलिस मशवरे में शैतान भी शरीक हुआ। और उसने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के क़त्ल का मशवरा दिया और तय ये पाया के यूसुफ़ को किसी बहाने जंगल में ले जाकर किसी गहरे कुएँ में फैंक दिया जाए। चुनाँचे बिरादराने यूसुफ़ इकट्ठे होकर हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम के पास हाज़िर हुए। और कहा। अब्बा जान! ये क्या बात है के आप यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को हमारे साथ नहीं रहने देते। और हमारा एतबार नहीं करते हम तो उसके ख़ैरख़्वाह हैं कल उसे हमारे साथ तफ़रीह के लिए। भेज दीजिए। फिर फिरा कर हम वापस आ जाऐंगे। और आप कोई फ़िक्र ना कीजिए। वो हमारी हिफ़ाज़त में रहेगा। हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मुझे एतबार नहीं है। अगर तुम उसे ले गए। तो डरता हूँ के तुम्हारी ग़फ़्लत से कोई भेड़िया उसे खा ले। वो बोले! अब्बा जान! हमारे होते हुए अगर कोई भेड़िया उसे खाले तो फिर हम किसी मुसर्रफ़ के नहीं। आप घबराईये नहीं और उसे ज़रूर हमारे साथ भेज दीजिए। चुनाँचे उनके मजबूर करने पर याक़ूब अलेहिस्सलाम ने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को उनके साथ भेज दिया। और हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम की क़मीस मुबारक जो जन्नत की बनी हुई थी। जिस वक़्त के इब्राहीम अलेहिस्सलाम के कपड़े उतार कर आपको आग में डाला गया था। जिब्राईल अलेहिस्सलाम ने वो क़मीस आपको पहनाई थी। वो क़मीस हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम से हज़रत इसहाक़ अलेहिस्सलाम और उनसे उनके फ़रज़न्द याक़ूब अलेहिस्सलाम को पहुँची थी। वो क़मीस हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने तअवीज़ बना कर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के गले में डाल दी।

बिरादराने यूसुफ़ ने याक़ूब अलेहिस्सलाम के सामने तो बड़ी मोहब्बत से यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को कंधे पर उठा लिया। और फिर जब दूर एक जंगल में पहुँच गए। तो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को ज़मीन पर दे पटका और दिलों में जो अदावत थी वो ज़ाहिर हुई। जिसकी तरफ़ जाते थे। वो मारता था। और वो ख़्वाब जो उन्होंने किसी तरह सुन पाया था। बयान कर कर के ताने देते थे और कहते थे के ये तअबीर है तुम्हारे ख़्वाब की। फिर उन्होंने एक बहुत बड़े गहरे और तारीक कुएँ में बड़ी बेदर्दी के साथ आपको फैंक दिया। और अपने गुमान में यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को मार डाला। (क़ुरआन करीम पारा 12, रूकू 12) (ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 336)

सबक़: किसी भाई की इज़्ज़त व वक़ार और उसका उरूज देखकर

Scanned by CamScanner

जलना अच्छी बात नहीं है। इस क़िस्म के जज़्बात का अंजाम अच्छा नहीं होता। और ये भी मालूम हुआ। के हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम को इस बात का इल्म था के मेरा यूसुफ़ नबी बनने वाला है। और ये भी इल्म था के उसके भाई उसके साथ अच्छा सलूक नहीं करेंगे। और भाईयो ने जो वापस आकर उज़्र पेश करना था। के यूसुफ़ को भेड़िया खा गया है। उसका भी याक़ूब अलेहिस्सलाम को इल्म था। इसी लिए आपने फ़रमाया था के यूसुफ़ को तुम्हारे साथ भेज देने में ये डर है के उसे भेड़िया ना खा जाए। और ये भी मालूम हुआ। के अल्लाह वालों के कपड़े भी मुश्किलात के वक़्त ज़रिया निजात हैं। और तअवीज़ बनाना और गले में डालना पैगम्बरों की सुन्नत है।

हिकायत नम्बर(101) रोशन क़मीस

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को जब उनके भाईयों ने एक बहुत बड़े गहरे कुएँ में फैंका। तो जिब्राईले अमीन को हुक्मे इलाही हुआ के ऐ जिब्राईल! *सिदरत-उल-मुनतहा* से इसी वक़्त परवाज़ करो। और यूसुफ़ वक़्त परवाज़ करो। और यूसुफ़ को कुएँ की तह तक पहुँचने से पहले पहले अपने परों पर उसे बिठा लो। और बड़े आराम से उस पत्थर पर जो कुएँ में एक तरफ़ रखा है। बिठा दो। चुनाँचे। जिब्राईले अमीन लम्हा भर में वहाँ पहुँचे। और हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को अपने परों पर लेकर आराम के साथ उस पत्थर पर बिठा दिया। और फिर वो क़मीस इब्राहीम बतौर तअवीज़ जो यअक़ूब अलेहिस्सलाम ने गले में डाल दी थी वो तअवीज़ खोल कर आपको पहना दिया। उससे अंधेरे कुएँ में रोशनी पैदा हो गई। (रूह-उल-बयान सफा 147 जिल्द 2, ख़ज़ायन-उल-इर्फान सफ़ा 336)

सबक़:- हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलमा की क़मीस मुबारक से अंधेरे कुएँ में रोशनी पैदा हो गई और एक पैग़म्बर की क़मीस भी नूर है तो सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम क्यों नूर अला नूर नहीं और आप के वजूद नूर से क्यों तारीक दुनिया रोशन ना हो।

हिकायत(102) जअल साज़ी

बरादरान यूसुफ़ ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को एक अमीक़ कुएँ में फैंक दिया। और अपने ज़ौम में उन्हें मार डाला। फिर आपकी क़मीस मुबारक जो कुएँ मुबारक जो कुएँ में फैंकने के वक़्त उनके बदन से उन्होंने उतारी थी उसको एक बकरी के खून में रंग कर साथ ले लिया। और वापस आए

Scanned by CamScanner

और जब मकान के क़रीब पहुँचे। तो रोना शुरू कर दिया। हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने उनको इस हाल में देखा। तो पूछा। मेरे फर्ज़दों क्या हुआ। और ये तो बताओ के यूसुफ़ कहाँ है? वो रोते हुए बोले। अब्बा जान! हम आपस में एक दूसरे से दौड़ करते थे। के कौन आगे निकल जाता है इस दौड़ में हम सब बहुत दूर निकल गए और यूसुफ़ को हम अपने असबाब के पास छोड़ गए थे। वो अकेला रह गया। और एक भेड़िया मौक़ा पाकर उसे खा गया है ये उसकी खून आलूद क़मीस है। अब्बा ज़ान! आप हमारा यक़ीन तो ना करेंगे मगर बात दरअसल यही है। हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया बेटो! तुम्हारे दिलों ने ये एक बात घड़ी है अच्छा मैं तो अब सब्र करूंगा और अल्लाह ही से इस बात में फैसला चाहूंगा। (क़ुरआन करीम पारा 12 रूकू 12, ख़ज़ायन-उल-इर्फान सफ़ा 336)

सबक़:- ज़ालिम अपना ज़ुल्म छुपाने के लिए बड़ी बड़ी जअल साज़ियों से काम लेते हैं। और अपनी मज़लूमियत साबित करने के लिए रोकर भी दिखा देते हैं। मालूम हुआ। के हर रोने वाला ज़रूरी नहीं के सच्चा हो ये भी मालूम हुआ के क़मीस को मसनुई खून से रंग कर उसे असल खून बताना ये भी जअल साज़ी ही है। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम को इस बात का सब इल्म था के मेरे यूसुफ़ को भेड़िये ने हर गिज़ नहीं खाया। बल्के उनके दिल की ये बनाई हुई बात है और ये भी मालूम हुआ। के जहाँ बिरादराने यूसुफ़ ने जअल साज़ी से रोना चिल्लाना शुरू कर दिया। वहाँ अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने सब्र का मुज़ाहेरह फ़रमाया। गोया सब्र का मुज़ाहेरह, यही हक़ है ना के चीखना चिल्लाना।

हिकायत नम्बर(103) खूश नसीब क़ाफ़्ला

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को उनके भाईयों ने जंगल के एक तारीक कुएँ में फैंक दिया। और ये समझ कर के हम ने यूसुफ़ को मार डाला है वापस चले आए। मगर अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को कुएँ में महफ़ूज़ रखा। तीन दिन तक आप उस कुएँ में रहे ये कुआँ जंगल मं आबादी से बहुत दूर था। और उसका पानी बेहद खारी था मगर यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की बर्कत से उसका पानी मीठा हो गया। एक रोज़ वहाँ से एक क़ाफ़्ला गुज़रा। ये क़ाफ़्ला मदयन से मिस्र की तरफ़ जा रहा था। ये काफ़्ले वाले उस कुएँ के क़रीब उतरे तो उन्होंने उस कुएँ पर एक आदमी भेजा ताके

Scanned by CamScanner

वो उससे पानी खींच कर लाए। उसने कुएँ में अपना डोल डाला तो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने वो डोल पकड़ लिया और उसमें लटक गए डोल वाले ने डोल खींचा तो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम बाहर तशरीफ़ ले आए। उसने जो आपका हुस्न व जमाल देखा तो निहायत खूशी में आकर अपने साथियों को मिसदह सुनाया के ये देखो कुएँ से एक खूबसूरत लड़का निकला है हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के भाई जो जंगल में अपनी बकरियाँ चराते थे वो देखभाल रखते थे आज जो उन्होंने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को कुएँ में ना देखा तो उन्हें तलाश हुई और क़ाफ़्ला में पहुँचे। वहाँ उन्होंने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को देखा तो सालारे क़ाफ़्ला से कहा के ये ग़ुलाम है। हमारे पास से भाग आया है किसी काम का नहीं। नाफ़रमान है अगर खरीदो तो हम उसे सस्ता बेच देंगे। फिर उसे कहीं इतनी दूर ले जाना के इसकी खबर भी हमारे सुनने में ना आए। यूसुफ़ अलेहिस्सलाम उनके ख़ौफ से ख़ामोश रहे और फिर आप के भाईयों ने आपको क़ाफ़्ले वालों के हाथ चन्द खोटे दामों पर बेच दिया और क़ाफ़्ले वाले आपको खरीद कर अपने साथ मिस्र ले गए। (कुरआन करीम पारा 12 रूकू 12, ख़ज़ायन-उल-इर्फान स337)

सबक़: जिसे अल्लाह रखे उसे कौन चखे। ज़माना लाख बुरा चाहे मगर वही होता है जो मंज़ूरे खुदा होता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की बर्कत से खारी पानी भी मीठे हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(104) शमा और उसके परवाने

बिरादराने यूसुफ़ ने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को जंगल में एक तारीक कुएँ में फैंक दिया। अल्लाह ने आपको बचा लिया। और एक खूश नसीब क़ाफ़्ले ने उस तरफ़ से गुज़रते हुए कुएँ से पानी निकालना चाहा। तो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम उस डोल के साथ बाहर आ गए और क़ाफ़्ले वालों का सितारा क़िस्मत चमक उठा। ये खूश नसीब क़ाफ़्ला हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को मिस्र ले आया और जब यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के मिस्र तशरीफ़ लाने की ख़बर मश्हूर हुई तो सदहा आदमी सुबह ही सुबह सालारे क़ाफ़्ला मक़ाल की छत पर चढ़ कर बोला। लोगो! तुम यहाँ क्यों आए हो? वो बोले आपके साथ जो कनआनी ग़ुलाम है। हम उसकी ज़ियारत के लिए आए हैं। सालार क़ाफ़्ला ने कहा। अच्छा जो शख़्स उसकी ज़ियारत करना चाहे वो एक अशर्फी मुंह दिखाई दे। सब ने इस शर्त को मंज़ूर कर लिया। और दरवाज़ा खोलने की दरख़्वास्त की। सालारे क़ाफ़्ला ने दरवाज़ा खोला और मकान के सहन में

Scanned by CamScanner

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को एक कुर्सी पर बिठाया। हर शख़्स एक एक अशर्फी हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के पैरों में डाल कर आपकी ज़ियारत करता था। इसी तरह दो दिन में सालारे क़ाफ़्ला के पास हज़ारों अशर्फियाँ जमा हो गईं। फिर तीसरे दिन उसने मनादी करा दी के जो शख़्स कनआनी ग़ुलाम के ख़रीदने का इरादा रखता हो। वो आज मिस्र के बाज़ार में चला आए ये मनादी सुनकर हर एक शख़्स आपकी खरीदारी पर आमादा हो गया। और सारा मिस्र आपको देखने आया। यहाँ तक के पर्दा वाली औरतें और इबादत गुज़ार बुड्ढे और सारे गोशा नशीन भी आपकी ज़ियारत के मुश्ताक़ होकर मिस्र के बाज़ार में आ गए और खुद अज़ीज़े मिस्र भी शाही ख़ज़ाने साथ लेकर खरीदार यूसुफ़ बन कर आ गया। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 146)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल और इनाम याफ़्ता हज़रात मरजअे खलायक़ होते हैं। और ये दुनिया उनके क़दमों पर गिरती है और उनके तुफैल दूसरे लोग खाते हैं। फिर अगर कोई ऐसा शख़्स जो शोमई क़िसमत से सुबह ही सुबह नज़र आ जाए तो देखने वाले को सारा दिन रोटी ना मिले वो अगर उन अल्लाह वालों की मिस्ल बनने लगे तो किस क़द्र जाहिल व बेख़बर है।

हिकायत नम्बर(105) मिस्र की रईसज़ादी

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जब मिस्र के बाज़ार में बिकने के लिए लाए गए। और ऐसे जाह व जलाल के वक़्त जब के यूसुफ़ के हुस्न का बाज़ार निहायत गर्म था। जब के हज़ारहा मर्द व औरत बेखुद और बेदम होकर मर रहे थे। एक औरत जिसका नाम फारिग़ा था और मिस्र की एक रईसज़ादी थी वो मुतअद्दिद ख़च्चर माल व दौलत के, सांथ लेकर हज़रत यूसुफ़ को खरीदने के लिए आई। जब उसकी नज़र यक बयक हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम पर पड़ी। आँखें उसकी चुंधिया गईं और बेखुद होकर बोली के ऐ यूसुफ़! आप कौन हैं? आपका हुस्न व जमाल देखकर मेरी तो अक़्ल क़ायम नहीं रही। मैं जितना माल व दौलत आपको खरीदने के लिए लाई हूँ। अब आपको देखकर मुझे मालूम हुआ। के ये सारी दौलत तो आपके एक पैर की भी क़ीमत नहीं। लेकिन ये तो बताईये के आपको बनाया किस ने है? हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मैं अपने खुदा का बन्दा हूँ। उसी ने मुझे बनाया है। और उसी ने मेरी सूरत ऐसी हसीन बनाई है के तुम देख कर हैरान रह गई हो। ये बात सुन कर वो औरत बोली के ऐ यूसुफ़! मैं ईमान लाई उस ज़ात पर, जिसने तेरे जैसे हसीन को पैदा फ़रमाया। जब आप

Scanned by CamScanner

उसकी मख़लूक़ होकर इस क़द्र हसीन हैं तो ख़ालिक़ के हुस्न व जमाल की क्या शान होगी? ये कहकर कर उस औरत ने सारा माल अल्लाह की राह में ग़रीबों, मिसकीनों को दे दिया। और सब कुछ छोड़ कर महबूबे हक़ीक़ी की तलाश में लग गई। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 248)

सबक़:- अल्लाह वालों के ज़रिये से खुदा मिल जाता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों का हुस्न व जमाल देखकर खुदा याद आ जाता है। फिर जिन लोगों को देख कर गाँधी याद आने लगे। वो अगर उन पाक लोगों की मिस्ल बनने लगें तो किस क़द्र ज़ुल्म है।

हिकायत नम्बर(106) अज़ीज़ मिस्र

यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जब मिस्र के बाज़ार में लाए गए। इस ज़माने में मिस्र का बादशाह निरवान इब्ने वलीद अमलीक़ी था। और उसने अपनी अन्नान सल्तनत क़तफीर मिस्री के इख़्तिदार में दे रखी थी। तमाम ख़ज़ायन उसी के तहत और तसर्रूफ में थे। उसको अज़ीज़ मिस्र कहते थे। और वो बादशाह का वज़ीरे आज़म था। जब हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम मिस्र के बाज़ार में बेचने के लिए लाए गए तो हर शख़्स के दिल में आपकी तलब पैदा हुई और ख़रीदारों ने क़ीमत बढ़ाना शुरू की ताआँके आपके वज़न के बराबर सोना और इतनी ही चाँदी इतना ही मुश्क और इतनी ही हरीर क़ीमत मुक़र्रर हुई और आपका वज़न चार सौ रतल था। और उम्र शरीफ उस वक़्त तेरह साल की थी। अज़ीज़ मिस्र ने इस क़ीमत पर आपको खरीद लिया। और अपने घर ले आया। और दूसरे खरीदार उसके मुक़ाबले में ख़ामोश हो गए। (ख़ज़ायन-उल-इर्फान सफ़ा 337)

सबक़:- ख़ुदा तआला के मुक़र्रबीन और मक़्बूल बन्दों के बड़े बड़े बादशाह और वज़ीर भी तालिब व मोहताज होते हैं। फिर जिसकी परवाह उसकी बीवी भी ना करे। वो उन अल्लाह वालों की मिस्ल कैसे हो सकता है।

हिकायत नम्बर(107) ज़ुलेखा

ज़ुलेखा बड़ी हसीन औरत थी। और शाहे मग़रिब तेमूस की बेटी थी उसने एक रात ख़्वाब में एक पेकर हुस्नो जमाल शख़्स को देखा। और उससे पूछा। के तुम कौन हो? तो उसने बताया के मैं अज़ीज़े मिस्र हूँ। ज़ुलेखा के दिल में उस ख़्वाब का नक़्शा जम गया और हर वक़्त वो ख़्वाब पेश नज़र रहने लगा।

Scanned by CamScanner

बड़े बड़े बादशाहों के पैग़ाम उक़्द आए लेकिन उसने इंक़ार कर दिया। और अपना इरादा ज़ाहिर कर दिया के मैं तो अज़ीज़ मिस्र ही से निकाह करूंगी। चुनाँचे शाहे तेमूस अपनी बेटी ज़ुलेखा का निकाह अज़ीज़े मिस्र से कर दिया।

ज़ुलेखा ने जब अज़ीज़े मिस्र को देखा। तो ये देखकर कर हैरान रह गई के ये वो नहीं है जिसे ख़्वाब में देखा था। हत्ता के अज़ीज़ मिस्र ने मिस्र के बाज़ार में बिकते हुए हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को खरीदा। और उन्हें घर लाया ज़ुलेखा ने जब हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को देखा। तो ख़्वाब के नक़्शे मुताबिक़ पाया। और वो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की मोहब्बत में वारिफ़्ता हो गई और फिर उसने एक महल बनवाया। जिसके अन्दर सात कमरे थे और उस महल को खूब मुज़य्यन किया। और खुद भी आरास्ता होकर किसी बहाने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को उस महल में ले गई। और पहले कमरे में दाखिल होते ही उस कमरे का दरवाज़ा बन्द कर लिया। फिर दूसरे कमरे में ले गई और उसका दरवाज़ा भी बन्द कर दिया। फिर तीसरे में फिर चौथे में। हत्ता के सब कमरों के दरवाज़े बन्द करते हुए सातवें कमरे में हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को ले गई। और वहाँ जाकर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से क़बाहत की तलबगार हुई हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ये सूरतेहाल देखकर हैरान रह गए उस वक़्त उस कमरे की छत फटी और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने देखा। के हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम अपनी उंगली मुबारक दांतों में दबाए। इर्शाद फ़रमा रहे हैं। के बेटा! ख़बरदार! कोई बुरा ख़याल तक ना आने पाए।

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने ज़ुलेखा से फ़रमाया। अल्लाह से डर और इस महल सरवर को महल हज़न ना बना और मेरे दरपए ना हो। ज़ुलेखा ने ना माना और वो बेहद दरपए आज़ार हो गई। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने जब ये सूरते हाल देखी। तो आप वहाँ से भागे। ज़ुलेखा भी पीछे भागी। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने भागते हुए जिस कमरे का भी रूख किया उस क़मरे के दरवाज़े का क़ुफ़्ल खुद ब खुद खुलता गया।

ज़ुलेखा ने पीछा करते हुए आपका कुर्ता मुबारक पीछे से पकड़ कर खींचा के आप निकलने ना पाएँ मगर आप ग़ालिब आए और बाहर निकल आए। इस कशमकश के वक़्त बाहर के दरवाज़े पर अज़ीज़ मिस्र खड़ा था। उसने दोनों को दौड़ते देख लिया तो ज़ुलेखा ने अपनी बुराअत ज़ाहिर करने और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को ख़ायफ करने के लिए हीला

Scanned by CamScanner

तराशा और अपने खाविंद से कहने लगी के जो तेरी बीवी से बुराई के साथ पेश आए। उसकी क्या सज़ा है। मैं सो रही थी के उसने आकर मेरा कपड़ा हटा कर मुझे फुसलाया है। उसे क़ैद कर दो। या कोई और तकलीफ दह सज़ा दो। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। ये ग़लत कहती है। वाक़ेया इसके बरअक्स है फिसलाना तो ये खुद चाहती थी। और मेरा नाम लगाती है। अज़ीज़ मिस्र ने कहा। इस बात का सबूत? उस कमरे में ज़ुलेखा के मामूं का एक शीरख़्वार बच्चा जिसकी तीन माह की उम्र थी। पंघोड़े में लेटा हुआ था। यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया इस बच्चे से पूछ लो। अज़ीज़ मिस्र ने कहा। इस तीन महीने के बच्चे से क्या पूछुं। और ये क्या बताएगा। यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। खुदा तआला उसे बोलने की ताक़त देने और मेरी सच्चाई ज़ाहिर करने पर क़ादिर है। अज़ीज़ मिस्र ने बच्चे से दरयाफ़्त किया। तो वो बच्चा बोला और कहने के यूसुफ़ अलेहिस्सलाम का कुर्ता देख लो। अगर उनका कुर्ता आगे से फटा है तो ज़ुलेखा सच्ची और अगर पीछे से फटा है तो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम सच्चे। चुनाँचे कुर्ता देखा गया। तो वो पीछे से फटा था और ये हाल साफ ये बता रहा था। के यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ज़ुलेखा से भागे थे और ज़ुलेखा पीछे पड़ी थी। इसलिए कुर्ता से पीछे से फटा। अज़ीज़ मिस्र ने ये हक़ीक़त देखकर जान लिया। के यूसुफ़ अलेहिस्सलाम सच्चे हैं। फिर उसने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से मअज़रत तलब की। (क़ुरआन करीम पारा 12 रूकू 13, रूह-उल-बयान सफ़ा 157, सफ़ा 158)

सबक़: अम्बियाक्राम अलेहिमअस्सलाम मासूम होते हैं और हर क़िस्म के छोटे बड़े गुनाह से पाक। और ये भी मालूम हुआ। के इंसान जब अल्लाह से डरकर अल्लाह की तरफ़ रूजूअ कर ले तो रास्ते की सारी रूकावटें खुद ब खुद दूर हो जाती हैं। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम अपने प्यारे यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के हालात से बाख़बर थे। और आपको इल्म था के इस वक़्त यूसुफ़ अलेहिस्स्लाम कहाँ हैं और उस वक़्त उनसे ये मामला दरपेश है। और ये भी मालूम हुआ। के अल्लाह वाले बज़ाहिर चाहे कोसो दूर भी हों लेकिन मुश्किल के वक़्त इम्दाद के लिए पहुँच जाते हैं। और ये भी मालूम हुआ। के अल्लाह तआला अपने मुक़र्रबीन की बराअत के लिए तीन महीने बच्चे को भी क़ुव्वते गोयाई दे देता है। और अपने पाक बन्दों के दामन अस्मत पर शक व शुबह की मैल का धब्बा तक नहीं आने देता।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(108) तासीर हुस्न

ज़ुलेखा हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की मोहब्बत में कुछ ऐसी दारिफ़्ता हुई के उसे अपना होश ना रहा और उसकी इस मोहब्बत के चर्चे सारे मिस्र में होने लगे और शरीफ घराने की औरतें कहने लगीं के ज़ुलेखा को तो अपने नंग व नामूस और पर्दे व उफ़्फत का लिहाज़ भी ना रहा और वो एक नोजवान का दिल लुभाने लगी है। ज़ुलेखा ने जब अपने मुतअल्लिक़ ये बातें सुनीं तो उसने एक दअवत का इन्तेज़ाम किया जिस में मिस्र के शरीफ घरानों की चालीस औरतें बुलाईं। इन औरतों में वो औरतें भी थीं जो ज़ुलेखा के मुतअल्लिक़ बातें करती थीं और उसे मलामत करती थीं। ज़ुलेखा ने उनके लिए मसनदें तैयार कीं और उन्हें बड़ी इज़्ज़त व एहत्राम के साथ बिठाया और सामने दसतरख़्वान बिछाए जिन पर क़िस्म क़िस्म के खाने और मेवा चुने और फिर हर औरत को एक एक छुरी भी दी ताके वो उससे गोश्त काटें और मेवे चीरें और फिर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को उम्दा लिबास पहना कर उनसे कहा के आप ज़रा इन औरतों के सामने आकर उनको अपना हुस्नो जमाल दिखा दें। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने पहले तो इंकार फ़रमाया। लेकिन फिर ज़ुलेखा की मुख़ालफत के अंदेशे से आप उन औरतों के सामने तशरीफ़ ले आए। उन औरतों ने जब यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की तरफ़ नज़र की। और उस जमाल आलिम अफरोज़ के साथ नबुव्वत व रिसालत के अनवार और तवाज़ै व इनकिसार के आसार और शाहाना हैबत व इक़्तिदार देखा। तो तअज्जुब में आ गईं। और आपकी अज़मत व हैबत दिलों में बैठ गई और हुस्नो जमाल ने ऐसा वारिफ़्ता किया के उन औरतों को खुद फ़रामोशी हो गई और बजाए लीमू के उन्होंने उन छुरियों से अपने हाथ काट लिए और तासीर हुस्न के बाइस उन्हें तकलीफ का कुछ अहसास ना हुआ। और फिर आलमे हैरत में बोल उठीं के *हाशा लिल्लाह!* ये बशर तो नहीं है ये तो कोई फरिश्ता है।

ज़ुलेखा ने कहा। देख लिया उसके हुस्नो जमाल को? यही है वो हुस्नो जमाल का पेकर जिसका तुम मुझे ताना देती थीं। (कुरआन करीम पारा 12, रूकू 14, ख़ज़ायन-उल-इर्फान 339)

सबक:- हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के हुस्नो जमाल की तासीर का ये आलम था के देखने वाली औरतें पुकार उठीं के ये तो कोई फरिश्ता है बशर हर गिज़ नहीं फिर जो शख़्स हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के भी सरदार हुज़ूर अहमद मुख़्तार सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हुस्नो जमाल

Scanned by CamScanner

का कुछ भी ख़याल ना करे और यूं कहे के वो हमारी मिस्ल एक बशर हैं तो वो शख़्स किस क़द्र जाहिल, बे अदब और औरतों से भी गया गुज़रा है।

हिकायत नम्बर(109) साक़ी व बावर्ची

ज़ुलेखा ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को तंग करने के लिए। और अपनी बात मनवाने के लिए किसी बहाने उनको जेल भेज दिया। उसी दिन जिस दिन हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जेल भेजे गए। दो नोजवान और भी जेल में दाखिल किए गए। ये दोनों बादशाहे मिस्र अमलीक़ी के ख़ास मुलाज़िम थे एक उसका साक़ी था। और एक बावर्ची। उन दोनों पर बादशाह को ज़हर देने का इल्ज़ाम था।

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने जेल में अपने इल्मो फज़्ल का इज़हार शुरू फ़रमा दिया। और तौहीद की तबलीग़ शुरू फ़रमा दी और आपने ये भी ज़ाहिर फ़रमाया के मैं ख़्वाबों की तअबीर भी खूब समझता हूँ। चुनाँचे वो दो नोजवान जो आपके साथ ही जेल में दाखिल किए गए थे। कहने लगे हम ने आज रात को ख़्वाब देखे हैं। उनकी तअबीर बताईये।

साक़ी ने कहा। मैंने देखा है। मैं एक बाग़ में हूँ और अंगूर के खोशे मेरे हाथ में हैं और मैं उन खोशों से शराब निचोड़ता हूँ।

बावर्ची ने कहा। और मैंने देखा है। के मेरे सर पर कुछ रोटियाँ हैं जिनमें से परिन्दे खा रहे हैं। फ़रमाईये इनकी क्या तअबीर है?

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। ऐ साक़ी! तू तो अपने ओहदे पर बहाल किया जाएगा। और हस्बे साबिक़ अपने बादशाह को शराब पिलाएगा। और ऐ बावर्ची! तू सूली दिया जाएगा। और परिन्दे तेरा सर खाऐंगे। ये तअबीर सुनकर वो दोनों कहने लगे। ख़्वाब तो हम ने कुछ भी नहीं देखा हम तो महज़ मज़ाक़ कर रहे थे। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया अब जो कुछ भी हो। ख़्वाब तुम ने देखा हो या ना देखा हो मगर मैंने जो कुछ कह दिया। वो होकर रहेगा। और अब मेरा ये कहना किसी सूरत टल नहीं सकता।

चुनाँचे वही हुआ। जो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया था। साक़ी पर इल्ज़ाम साबित ना हो सका। और वो अपने ओहदे पर बहाल हो गया और बावर्ची मुज्रिम साबित हुआ। और वो सूली दे दिया गया।

(क़ुरआन करीम पारा 13, रूकू 15, रूह-उल-बयान सफ़ा 171 सफ़ा जिल्द 2)

सबक़:- पैग़म्बर की ये शान होती है। के वो जो बात फ़रमा दे वो

Scanned by CamScanner

होकर रहती है। फिर जो ये बात कहे के रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता। और रसूल नफअे ज़रर का मालिक नहीं। किस क़द्र जाहिल और गुमराह है।

हिकायत नम्बर(110) बादशाह का ख़्वाब

मिस्र के बादशाह निरवान बिन वलीद अमलीक़ी ने एक रात ख़्वाब देखा के सात फ़रबा गाँयें हैं। जिन्हें सात दुबली गाँयें खा रही हैं। और सात हरी बालें हैं। जिन्हें सात सूखी बालें खा रही हैं। बादशाह को इस ख़्वाब से बड़ी परेशानी हुई और बड़े बड़े साहिरों और काहिनों से इस ख़्वाब की तअबीर पूछी। मगर कोई भी उसकी तअबीर बयान ना कर सका।

बादशाह का साक़ी जो जेल में रह चुका था और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के फ़रमाने के मुताबिक़ अपने ओहदे पर बहाल हो चुका था। बादशाह से कहने लगा के जेल में एक आलिम है। जो ख़्वाब की तअबीर बताने में यक्ता है। बादशाह ने कहा। तो तुम उसके पास जाकर मेरा ख़्वाब बयान करो। और उससे तअबीर पूछकर आओ। चुनाँचे वो साक़ी जेल में हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के पास आया। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से अर्ज़ करने लगा। ऐ यूसुफ़ हमारे बादशाह ने ये ख़्वाब देखा है। इसकी तअबीर क्या है? आपने फ़रमाया। इसकी तअबीर ये है। के तुम सात बरस लगातार खेती करोगे और ग़ल्लह खूब होगा। सात मोटी गाँयें और सात हरी बालों का उसी तरफ़ इशारा है। और फिर उसके बाद सात बरस बड़े सख़्त और क़हेत के आएँगे। उन सालों में तुम पहले सात सालों का जमा कर्दा ग़ल्लह खा जाओगे। सात दुबली गाँयें और खुश्क बालों का इशारा इसी तरफ़ है। फिर उसके बाद एक बरस ऐसा आएगा। जिसमें खूशहाली का दौर होगा और ज़मीन सर सब्ज़ होगी। और दरख़्त खूब फलेंगे।

साक़ी ने ये तअबीर जब बादशाह को सुनाई। तो बादशाह इस तअबीर को सुनकर मुतमईन हो गया। और जान गया। के तअबीर यही हो सकती है और उसको शौक़ पैदा हुआ के ये तअबीर यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की अपनी ज़बानी सुने। इसलिए उसने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को बुला भेजा। चुनाँचे हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के पास बादशाह का क़ासिद पहुँचा। और उसने कहा। के बादशाह आपको बुलाता है तो आपने उस क़ासिद से फ़रमाया। पहले तुम बादशाह को जाकर मेरा पैयाम दो के मेरे मामले की तहक़ीक़ करे। और देख ले के मुझे बिला वजह जेल में भेज दिया गया था। क़ासिद ये पैयाम लेकर बादशाह के पास पहुँचा तो बादशाह ने सारा क़िस्सा

Scanned by CamScanner

मालूम कर के औरतों को जमा किया। और ज़ुलेखा को भी बुलाया। और उन सबसे यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ पूछा। तो सब ने मुत्तफिक़ा तौर पर कहा के हाशा लिल्लह! हम ने यूसुफ़ में कोई बुराई नहीं पाई। और ज़ुलेखा को भी ये कहना पड़ा के असली बात खुल गई और वाक़ई मेरा ही क़सूर था। और वो बिलकुल सच्चा है। उसके बाद बादशाह के हुक्म से बड़ी इज़्ज़त व एहत्राम के साथ हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जेल से रिहा कर दिए गए। (क़ुरआन करीम पारा 12 रूकू 16ख़ज़ायन-उल-इर्फान सफ़ा 342)

सबक़:- अम्बियाक्राम के उलूम हक़ हैं और अंजाम कार हक़ व सदाक़त ही की फतह होती है।

हिकायत नम्बर(111) ताजपोशी

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जब जेल से बड़ी इज़्ज़त व एहत्राम के साथ रिहा किए गए। तो बादशाह मिस्र निरवान इब्ने वलीद ने आपको बड़े अदब व एहत्राम के साथ अपने साथ तख़्त पर बिठाया। और फिर अपना ख़्वाब जो उसने देखा था। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से खुद बयान किया। और उसकी तअबीर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की ज़बाने हक़ तर्जुमान से उसने सुनी। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने पहले तो बादशाह का देखा हुआ ख़्वाब मुफस्सिल बयान फ़रमाया। और फिर तफसील से उसकी तअबीर बयान फ़रमाई। बादशाह ये देखकर के बावजूद ये के आपसे ये ख़्वाब पहले मजमलन बयान किया गया था। मगर आपने तफसील से वो सारा ख़्वाब सुना दिया, बड़ा हैरान हुआ और कहा के ख़्वाब तो अजीब थी ही मगर उससे भी अजीब तर आपका बयान कर देना है, फिर तअबीर सुनकर बादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से मशवरह तलब किया तो आपने फ़रमाया के अब लाज़िम है के ग़ल्लह जमा किया जाए और उन फ़राखी के सालों में कसरत से काश्त की जाए। और गल्लह मअ बालों के महफूज़ रखा जाए और रिआया की पैदावार में से ख़म्स लिया जाए उससे जो जमा होगा वो मिस्र व हवाली मिस्र के बाशिन्दों के लिए काफी होगा और फिर ख़ल्क़े खुदा हर तरफ़ से तेरे पास ग़ल्लह ख़रीदने आएगी और तेरे यहाँ अपने ख़ज़ायन व अमवाल जमा होंगे जो तुझ से पहलों के लिए जमा ना हुए। बादशाह ने कहा, मगर ये इन्तिज़ाम कौन करे, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुम अपनी क़लमुरू के तमाम ख़ज़ाने मेरे सपुर्द कर दो, बादशाह ने कहा बहुत अच्छा आपसे ज़्यादा मुसतहिक़ और कौन हो सकता है और उसको मंज़र कर

Scanned by CamScanner

लिया और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के ज़ेरे तसर्रूफ मुल्क के सारे ख़ज़ाने कर दिए और फिर एक साल के बाद बादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को बुला कर आपकी ताजपोशी की और तलवार व मोहर आपके सामने पेश की और आपको तिलाई तख़्त पर बिठा कर अपना मुल्क आपके सपुर्द कर दिया और अज़ीज़ मिस्र को मअज़ूल कर दिया और खुद भी मिस्ल रिआया के हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के ताबअे हो गया। (कुरआन करीम पारा 13, रूकू , ख़ज़ायन-उल-इर्फान स, 343)

सबक:- अल्लाह तआला बड़ा बेनियाज़, क़ादिर व तवाना और हकीम है और उसने अपने पैग़म्बरों को बड़े बड़े तसर्रूफ व इख़्तियार और ख़ज़ायन अर्ज़ पर तसल्लुत अता फ़रमाया है और ये भी मालूम हुआ के अक़ामत अदल और हिफाज़त दीन की ख़ातिर किसी ज़ालिम बादशाह से ओहदा तलब करना और क़बूल कर लेना जायज़ है।

हिकायत नम्बर(112) यूसुफ़ व ज़ुलेखा

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम मिस्र के बादशाह बन गए और सारा मिस्र आपके ज़ेरे इख़्तिताम आ गया, ज़ुलेखा के ख़ाविंद अज़ीज़ का इन्तिक़ाल हो गया और ज़ुलेखा मायूस व परेशान ख़ातिर होकर अपने इक़्तिदार के दौर के कुछ ज़र व जवाहरात साथ लकर एक जंगल में चली गई और जंगल में ही एक कुटिया बना ली जिसमें रहने लगी अब उसका वो हुस्नो जमाल और आलम शबाब भी बाक़ी ना रहा, यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के ऊरूज व इक़्तिदार के तो डंके बजने लगे और ज़ुलेखा गोशाऐ गुमनामी में जा पड़ी हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम एक दिन अपने लश्कर समेत बड़ी शान व शौकत और शहाना जाह व जलाल के साथ उस जंगल से गुज़रे ज़ुलेखा को पता चला तो अपनी कुटिया से निकली और हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को शहाना अंदाज़ से गुज़रते हुए देखकर बेसाख़्ता बोली:

सुबहाना मन जआलल मुलूका अबीदन बिलमअसियति व जआलल अबीदा मुलूका बित्ताआति

"पाक है वो ज़ात जिसने नाफरमानी के बाइस बादशाहों को ग़ुलाम बना दिया और फ़रमाँबर्दारी के सदके में ग़ुलामों को बादशाह बना दिया।"

ज़ुलेखा की ये आवाज़ यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने सुनी तो रो पड़े और अपने एक ग़ुलाम से फ़रमाया, उस बूढ़िया की हाजत पूरी करो, वो ग़ुलाम ज़ुलेखा के पास पहुँचा और कहा के ऐ बूढ़िया! तुम्हारी क्या हाजत है? वो

Scanned by CamScanner

बोली, मेर हाजत यूसुफ़ ही पूरी कर सकेंगे।

चुनाँचे वो ग़ुलाम ज़ुलेखा को शाही महल में साथ ले आया, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जब महल में पहुँचे और आपने अपना शाही लिबास उतारा और अल्लाह की इबादत के लिए अपने मुसल्ले पर बैठे तो उस वक़्त आपको फिर वही जुमला याद आया *सुबहाना मन जआलल मुलूका अबीदन बिलमअसियति व जआलल अबीदा मुलूका* और आप रोने लगे, फिर ग़ुलाम को बुला कर पूछा के उस बूढ़िया की हाजत पूरी की या नहीं, उसने अर्ज़ किया, हुज़ूर! वो बूढ़िया यहीं आ गई है और कहती है के मेरी हाजत तो यूसुफ़ खुद ही पूरी करेंगे, फ़रमाया अच्छा! उसे यहाँ ले आओ, चुनाँचे ज़ुलेखा खिदमत में हाज़िर की गई और उसने हाज़िर होते ही सलाम अर्ज़ किया, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने सर झुकाए हुए ही सलाम का जवाब दिया और फिर फ़रमाया, ऐ औरत! तुम्हारी जो हाजत हो बयान कर, वो बोली हुज़ूर! क्या आप मुझे भूल गए? फ़रमाया, कौन हो तुम? वो बोली....

बगुफ़्त आनम के चू रूऐ तू देदम
तराज़ जुमलह आलम बरगज़ीदम!
फाशानदम गंज व गोहर दरबहायत
दिल व जाँ वक़्फ करदम दरहवायत
जवानी दरग़मत बर्बाद दारम
दरीं पैरी के मी बीनी फतादम
गिरफ़्ती शाहिद मुल्क अन्दर आग़ोश
मरा यकबार तू करदी फ़रामोश

ऐ यूसुफ़! मैं ज़ुलेखा हूँ। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ये सुन कर पुकार उठे:

लाइलाहा इल्ललाहू अल्लज़ी यूहयी वहुवा हय्युला यमूतु

फिर आपने ज़ुलेखा से पूछा के तुम्हारा वो आलमे शबाब और हुस्नो जमाल और माल कहाँ गया? ज़ुलेखा ने जवाब दिया, वो ले गया जिसने आप को जेल से निकाला और मिस्र की हकूमत आपको अता फ़रमाई, यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया अच्छा तो बताओ! अब तुम्हारी क्या हाजत है? वो बोली, क्या आप पूरी फ़रमा देंगे? पहले वादा कीजिए, फ़रमाया हाँ! ज़रूर पूरी करूंगा, वो बोली तो सुनिए! तीन हाजतें हैं:

पहली ये के मैं आप के ग़म फिराक़ में रो रो कर अंधी हो चुकी हूँ खुदा

Scanned by CamScanner

तआला से दुआ कीजिए के वो मेरी नज़र मुझे वापस दे दे।

दूसरी ये के मेरा हुस्न व शबाब मुझे वापस मिल जाए।

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई और मिस्ल साबिक़ वो जवान और हसीन भी हो गई।

यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, बता अब तीसरी हाजत क्या है?

वो बोली ऐ यूसुफ़! तीसरी हाजत ये है के आप मुझ से निकाह फ़रमा लें।

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ख़ामोश हो गए और सर अनवर झुका लिया थोड़ी देर के बाद जिब्राईल हाज़िर हुए और कहा ऐ यूसुफ़! आपका रब आपको सलाम फ़रमाता है और फ़रमाता है ज़ुलेखा जो हाजत पेश कर रही है उसको पूरा करने में बुख़्ल से काम ना लो उसकी दो हाजतें तेरी दुआ से हम ने पूरी कर दीं, ये तीसरी हाजत उसकी तुम पूरी कर दो...

के मा अजज़ ज़ुलेखा राचू दीदयम!!
बतू अर्ज़ वनियाज़िश राशनीदयम!!
दलिश अज़तीग़ नोमीदी नहसतीम
बतू बालाऐ अर्शिश उक़द बसतीम

"ऐ यूसुफ़! हमने तुम्हारे साथ उसका निकाह अर्श पर कर दिया है पस आप उससे निकाह कर लीजिए के दुनिया व आख़िरत में आपकी बीवी है।"

चुनाँचे हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने बहुक्मे इलाही हज़रत ज़ुलेखा से निकाह कर लिया और आसमानों से फरिश्तों ने आकर मुबारकबादें दीं और खुदा ने भी मुबारक बादी फ़रमाई, फिर ज़ुलेखा ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्लाम से ये बात भी ज़ाहिर कर दी के अज़ीज़ मिस्र औरत के नाक़ाबिल था और अल्लाह ने मुझे आपके महफ़ूज़ व मामून रखा है।

चुनाँचे हज़रत ज़ुलेखा के हाँ फिर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के दो साहबज़ादे पैदा हुए एक का नाम अफ्राईम और दूसरे का मीशा था और दोनों ही हुस्न व जमाल के पेकर थे। (रूह-उल-बयान, सफा 182 ता 184 जिल्द 2)

सबक़: ज़ुलेखा को अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्लाम की ख़ातिर अज़ीज़ मिस्र से जो उसका जायज़ शौहर था महफ़ूज़ रखा, फिर सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की महबूबा बीवी उम्म-उल-मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ीअल्लाहो अनहा पर आज जो लोग मआज़ अल्लाह किसी क़िस्म का इल्ज़ाम लगाएँ किस क़द्र गुमराह, जाहिल और बे दीन हैं और ये भी मालूम हुआ के हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से हज़रत ज़ुलेखा का निकाह अल्लाह के हक्म से अर्श पर

Scanned by CamScanner

फिर फर्श पर भी हुआ और आपके बतन से हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के दो फ़रज़ंद हुए।

हिकायत नम्बर (113) कहतसाली

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम मिस्र के बादशाह बन गए और आपने मुल्क में अदल व इंसाफ और अमनो अमान क़ायम फ़रमा दिया और आने वाली क़हतसाली के पेशेनज़र ग़ल्ले के बड़े बड़े ज़ख़ीरे जमा फ़रमाए फिर जब क़हत का दौर आया तो सारे मुल्क में ये बलाऐ अज़ीम आम हो गई और तमाम बिलादो इमसार उस मुसीबत में मुबतला हो गए और हर जानिब से लोग ग़ल्लह ख़रीदने मिस्र आने लगे, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम हर किसी को एक ऊँट से ज़्यादा ग़ल्लह नहीं देते थे ताके सबकी इमदाद हो सके और जिस तरह ये क़हत की मुसीबत तमाम शहरों में नाज़िल हुई उसी तरह कनआन भी क़हत की लपेट में आ गया हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने बिनयामिन के सिवा दसों बेटों को ग़ल्लह ख़रीदने मिस्र भेजा, जब ये दसों भाई मिस्र हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचे तो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने उन्हें पहचान लिया मगर वो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को ना पहचान सके इसलिए के उनका ख़याल था के यूसुफ़ अलेहिस्सलाम इतने तवील अर्से में कहीं इन्तिक़ाल फ़रमा चुके होंगे और इसलिए भी के हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम उस वक़्त शाही लिबास में मलबूस तशरीफ़ फ़रमा थे, उन दसों भाईयों ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम इब्रानी ज़बान में गुफ़्तगू की और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने भी इब्रानी में जवाब दिया, आपने फ़रमाया तुम कौन लोग हो, वो बोले, हम शाम के रहने वाले हैं और हम भी क़हत के बाइस परेशान हैं और आपसे ग़ल्लह खरीदने आए हैं, आपने फ़रमाया, तुम जासूस तो नहीं, वो बोले, हम अल्लाह की क़सम खाते हैं के हम जासूस नहीं हैं हम सब भाई हैं और एक बाप की औलाद हैं हमारे बाप बहुत मोअम्मर बुज़ुर्ग हैं और उनका नाम नामी हज़रत याक़ूब (अलेहिस्सलाम) है। वो अल्लाह के नबी हैं, आपने फ़रमाया, तुम कितने भाई हो, वो बोले थे तो हम बारह मगर एक भाई हमारे साथ जंगल में गया था वहाँ हलाक हो गया और वालिद साहब को हम सबसे प्यारा था, फ़रमाया, अब तुम कितने भाई हो? वो बोले दस! फ़रमाया ग्यारहवाँ कहाँ है? कहा वो वालिद साहब के पास है क्यों के जो हलाक हो गया था वो माँ की तरफ़ से भी उसका हक़ीक़ी भाई है इसलिए अब वालिद साहब को उसी से कुछ तसल्ली हो जाती है। हज़रत

Scanned by CamScanner

यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने उन भाईयों की बड़ी इज़्ज़त की और उनकी मेज़बानी फ़रमाई और फिर हर भाई का ऊँट ग़ल्लेह से भर दिया और ज़ादे सफर भी दिया और रूख़्सत फ़रमाते हुए फ़रमाया के अब जो आओ तो अपने ग्यारहवें भाई को भी साथ लाना मैं उसके हिस्से का एक ऊँट भर ग़ल्लह और ज़्यादा दूंगा देख लो मैं कितना महमान नवाज़ हूँ और अगर तुम उसे साथ ना लाए तो फिर मेरे पास ना आना, तुम्हें मुझ से कुछ ना मिलेगा, फिर आपने ग़ुलामों से फ़रमाया के उस दसों भाईयों ने ग़ल्लेह की जो क़ीमत दी है ये सारी पूंजी भी उनके ग़ल्लेह में रख दो।

चुनाँचे वो दसों वापस कुनआन पहुँचे और हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम से बादशाह मिस्र की और उसके हुस्न सलूक की बड़ी तारीफ की और फिर जब ग़ल्लेह को खोला तो अपनी अदा कर्दा क़ीमत भी उसमें निकल आई, ये देख कर वो बड़े मुतास्सिर हुए और कहा अब्बा जान! ये बादशाह तो बड़ा ही दरया दिल और सखी है, देखिये ग़ल्लह भी दे दिया है और क़ीमत भी लौटा दी, अब्बा जान! उसने हमें ये भी कहा है के तुम अगर अपने भाई बिनयामिन को भी साथ ले आओ तो मैं उसके हिस्से का ग़ल्लह भी दे दूंगा तो अब्बा जान! आप बिनयामिन को भी हमारे साथ भेज दीजिए ताके उसके हिस्से का भी ग़ल्लह मिल जाए। याक़ूब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, इससे पहले मैं बिनयामिन के भाई यूसुफ़ को तुम्हारे साथ भेज कर देख चुका हूँ अब इसे भी तुम्हारे साथ भेज कर तुम्हारा फिर एतबार कैसे कर लूं? वो बोले अब्बा जान! हम उसकी ज़रूर हिफाज़त करेंगे और इस बात पर हम अल्लाह का ज़िम्मह देते हैं और इसे ज़रूर हमारे साथ भेजिए, याक़ूब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया अच्छा ख़ुदा निगहबान है जाओ बिनयामिन को ले जाओ, चुनाँचे ये लोग बिनयामिन को लेकर फिर मिस्र आए और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के पास हाज़िर हुए और कहा, जनाब हम अपने ग्यारहवें भाई को भी साथ ले आए हैं, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम बहुत खुश हुए और उनकी बड़ी ख़ातिर मदारात की और फिर एक दअवत का इन्तेज़ाम फ़रमा कर एक वसीअ दसतरख़्वान बिछाया और दो, दो साहबो को बिठाया, वो दसों भाई तो दो दो होकर बैठ गए मगर बिनयामिन अकेले रह गए वो रो पड़े और कहने लगे अगर आज मेरे भाई यूसुफ़ ज़िन्दा होते तो मेरे साथ वो बैठते, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुम्हारा एक भाई अकेला रह गया है लिहाज़ा उसे मैं अपने साथ बिठाता हूँ चुनाँचे बिनयामिन के साथ आप खुद बैठ गए और उससे फ़रमाया के अगर तुम्हारे गुमशुदा भाई यूसुफ़ की जगह मैं तुम्हारा

Scanned by CamScanner

भाई हो जाऊँ तो क्या तुम पसंद करोगे?

बिनयामिन ने कहा, सुबहान अल्लाह! आप जैसा भाई अगर मयस्सर आए तो ज़हे नसीब! लेकिन याक़ूब का फ़रज़ंद और राहील (यूसुफ़ अलेहिस्सलाम और बिनयामिन की माँ का नाम) का नूर नज़र होना तो आपको हासिल नहीं हो सकता, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम रो पड़े और बिनयामिन को गले लगा लिया और फ़रमाया मैं ही तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ तुम पर जो कुछ ये लोग कर रहे हैं इसका कोई ग़म ना करो अल्लाह का एहसान है के उसने हमको फिर जमा फ़रमा दिया और देखो इस राज़ की इत्तिला अपने भाईयों को ना देना, बिनयामिन ये सुन कर खुशी से बेखुद हो गए। (क़ुरआन करीम पारा 13 रूकू 3, ख़ज़ायन-उल-इर्फान सफ़ा 344)

सबक़: अल्लाह वाले बुरा सलूक करने वालों से खन्दा पैशानी से पेश आते हैं और बजाए बुराई के बुराई का बदला भी नेकी से देते हैं।

हिकायत नम्बर(114) प्याले की गुमशुदगी

बिनयामिन अपने दसों भाईयों के साथ ग़ल्लह लेने के लिए मिस्र पहुँचे तो बादशाह मिस्र ने उनकी खूब ख़ातिर मदारात की और एक दअवत का भी इन्तेज़ाम किया, इस दअवत में शाहे मिस्र बिनयामिन के साथ बैठे और ये राज़ ज़ाहिर कर दिया के मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ, बिनयामिन ये सुनकर बड़े खुश हुए, कहने लगे भाई जान! अब आप मुझे किसी तरकीब से अपने पास ही रख लीजिए और जुदा ना कीजिए, यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया बहुत अच्छा।

यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फिर सब भाईयों को एक एक बार ऊँट ग़ल्लह दिया और बिनयामिन के हिस्से का भी एक बार ऊँट ग़ल्लह तैयार किया उस वक़्त बादशाह के पानी पीने का जवाहरात से मरस्सअे जो पियाला था, ग़ल्लह नापने का काम इस पियाला से लिया जा रहा था, ये पियाला यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने बिनयामिन के कजावे में रखवा दिया और ये क़ाफ़्ला क़ुनआन के इरादे से रवाना हो गया, जब शहर से बाहर जा चुका तो अंबार ख़ाने के कारकुनों को मालूम हो गया के पियाला नहीं है उनके ख़याल में यही आया के ये क़ाफ़्ले वालों का काम है चुनाँचे उन्होंने जुस्तजू के लिए कुछ आदमी क़ाफ़्ले के पीछे भेजे और क़ाफ़्ले को रोक लिया और कहा के शाही पियाला नहीं मिलता और हमें आप लोगों पर शुबह है, वो बोले ख़ुदा की क़सम हम ऐसे लोग नहीं हैं, उन्होंने कहा, अच्छा तलाशी दो और

Scanned by CamScanner

अगर वो पियाला तुम्हारे कजावों में से किसी कजावे से निकल आए उसके बदले में उस कजावे वाले ही को अपने पास रख लेना, चुनाँचे सामान की तलाशी ली गई तो पियाला बिनयामिन के कजावे से निकल आया और वो दसों भाई बहुत शर्मिंदा हुए और हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के सामने पेश किए गए तो वो दसों भाई बोले जनाब! इस बिनयामिन ने अगर चोरी की है तो तअज्जुब की बात नहीं, इसका भाई यूसुफ़ भी चोरी कर चुका है हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने ये बात सुनकर सब्र फ़रमाया और राज़ फाश नहीं फ़रमाया।

फिर वो दसों भाई कहने लगे, हमारे वालिद साहब बहुत बूढ़े हैं और उन्हें बिनयामिन से बड़ी मोहब्बत है इसलिए आप इसकी जगह हम में से किसी को ले लें और उसे छोड़ दें, यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, हम उसको लेने के मुसतहिक़ हैं जिसके कजावे में हमारा माल निकला इसके बदले दूसरे को लेना तो ज़ुल्म होगा।

ये सूरत हाल देखकर वो दसों भाई आपस में सरगोशियाँ करने लगे के अब क्या किया जाए, उनमें से बड़ा बोला के हम वालिद साहब से बिनयामिन के बारे में अल्लाह का ज़िम्मह देकर आए हैं, अब बिनयामिन को ना पाकर वो हमें क्या कहेंगे, मैं तो यहीं रहता हूँ और तुम जाओ और वालिद साहब से सारा वाक़ेया कह दो चुनाँचे बड़ा भाई वहीं रहा और बाक़ी वापस कुनआन पहुँचे और हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम से सारा वाक़ेया बयान कर दिया, हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने सारा क़िस्सा सुनकर फिर फ़रमाया के अच्छा मैं तो अब भी सब्र ही करूंगा और अनक़रीब मुझे अल्लाह तआला उन तीनों से मिला देगा, फिर याक़ूब अलेहिस्सलाम अलग होकर यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को याद फ़रमाने लगे बेटे बोले अब्बा जान! क्या आप हमेशा यूसुफ़ ही की याद करते रहेंगे? आपने फ़रमाया, मैं अपने ग़म की फ़रयाद अपने अल्लाह ही से तो करता हूँ और सुन लो जो कुछ अपने अल्लाह से मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते, मेरे बेटो! जाओ, यूसुफ़ और उसके भाई का सुराग़ लगाओ और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद ना हो। (क़ुरआन करीम पारा 13, रूकू 4, ख़ज़ायन-उल-इर्फान सफ़ा 348)

सबक़: अल्लाह वाले हर हाल में सब्र व शुक्र ही से काम लेते हैं और ये भी मालूम हुआ के याक़ूब अलेहिस्सलाम को इस बात का इल्म था के यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ज़िन्दा हैं इसी लिए फ़रमाया के अनक़रीब अल्लाह मुझे उन तीनों से मिला देगा, तीनों कौन? बिनयामिन और वो बड़ा भाई

Scanned by CamScanner

जो मिस्र रह गया था और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम और इसी लिए फ़रमाया के जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते फिर जो शख़्स ये कहे के याक़ूब अलेहिस्सलाम को यूसुफ़ अलेहिस्सलाम का इल्म ना था वो किस क़द्र ख़ुद ही बेख़बर और बेइल्म है।

हिकायत नम्बर(115) अफ़्शाऐ राज़

हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने अपने बेटों से फ़रमाया के अल्लाह की रहमत से मायूस ना हो और यूसुफ़ की तलाश करो चुनाँचे वो फिर मिस्र पहुँचे और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगे के ऐ शाहे मिस्र! हम बड़ी मुसीबत में हैं हमारी हक़ीर सी पूंजी क़बूल कर के हमें और ग़ल्लह दे और हम पर ख़ैरात भी कर, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम अपने भाईयों का ये अज्ज़ो इन्किसार और उनकी परेशानी देखकर फ़रमाने लगे क्या तुम्हें कुछ ख़बर है के तुम ने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या सलूक किया? यानी यूसुफ़ को मारना, कुएँ में फैंकना, बेचना और उनके बाद उनके भाई को तंग रखना, परेशान करना क्या क्या कुछ याद है? और ये फ़रमाते हुए यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को हंसी भी आ गई और भाईयों ने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के गोहर ददाँ का हुस्न देखकर पहचान लिया के ये तो जमाल यूसुफ़ी की शान मालूम होती है और फिर कहने लगे के आप ही तो यूसुफ़ नहीं हैं? फ़रमाया हाँ! मैं ही यूसुफ़ हूँ और ये मेरा भाई बिनयामिन, अल्लाह ने हम पर बड़ा एहसान फ़रमाया है और अल्लाह परहेज़गारों और साबिर बन्दों का अज्र ज़ाए नहीं करता।

वो सब बस्द नदामत बोले, ख़ुदा की क़सम! बेशक अल्लाह ने आपको हम पर फज़ीलत दी और हम वाक़ई ख़ताकार थे हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया मगर ऐ भाईयो! तुम पर मेरी तरफ़ से कोई मलामत नहीं अल्लाह तुम्हें माफ करे और वो बड़ा मेहरबान है। (क़ुरआन करीम पारा 13 रूकू 4, ख़ज़ायन-उल-इर्फान सफ़ा 349)

सबक़: ख़ुदा के मक़्बूल बन्दों का ये शैवा है के वो अपनी ज़ात का जायज़ बदला लेने की ताक़त रखकर भी माफ फ़रमा देते हैं और कोई मलामत नहीं करते।

हिकायत नम्बर(116) क़मीस यूसुफ़

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने अपने भाईयों के सामने अफ़्शाऐ राज़ फ़रमा दिया और बता दिया के मैं ही यूसुफ़ हूँ और फिर अपने भाईयों से

Scanned by CamScanner

हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम का हाल दरयाफ़्त फ़रमाया, वो कहने लगे के आपके फ़िराक़ में रोते रोते उनकी नज़र बहाल नहीं रही, यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया तो ये लो मेरी क़मीस ले जाओ, इसे वालिदे माजिद के मुंह पर डाल दो उनकी बीनाई वापस आ जाएगी, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की इस क़मीस मुबारक की ये शान थी के किसी बीमार पर भी डाली जाती तो वो अच्छा हो जाता, चुनाँचे वो लोग क़मीस लेकर वापस लौटे और वो भाई जिसने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को कुएँ में फैंकने के बाद आपकी क़मीस खून आलूद कर के याक़ूब अलेहिस्सलाम को दिखाई थी कहने लगा के उस दिन भी मैंने क़मीस यूसुफ़ उठाई थी और वालिद साहब को रंज पहुँचाया था और आज भी मैं ही क़मीस यूसुफ़ उठाता हूँ और वालिद साहब को खूश करूंगा चुनाँचे क़मीस यूसुफ़ उसी ने उठाई और कुनआन की तरफ़ रवाना हुए इधर ये लोग मिस्र से निकले और उधर कुनआन में याक़ूब अलेहिस्सलाम अपने और अहबाब से फ़रमाने लगे के आज मुझे यूसुफ़ की खुश्बू आ रही है वो कहने लगे आप तो उसी पुरानी वारफ़्तगी में हैं भला अब यूसुफ़ कहाँ?

इतने में बिरादराने यूसुफ़ आ पहुँचे और वो क़मीस हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम के मुंह पर डाली गई तो फौरन आपकी बीनाई फिर आई आपने अल्लाह का शुक्र अदा किया और फ़रमाया मैं ना कहता था के जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। (क़ुरआन करीम पारा 13, रूकू 5, रूह-उल-बयान सफा 205 जिल्द 2)

सबक़: अल्लाह वालों के बदन अनवर से जो चीज़ लग जाए वो दाफअे-उल-बला और बीमारियों के लिए शिफा बन जाती है फिर अल्लाह वाले खुद क्यों ना दाफअे-उल-बला होंगे और उन्हें दाफअे-उल-बला कहना शिर्क कैसे हो सकता है?

हिकायत नम्बर(117) बिछड़ों का मिलाप

याक़ूब अलेहिस्सलाम की मुबारक आँखें क़मीस यूसुफ़ की बर्कत से अच्छी हो गईं और याक़ूब अलेहिस्सलाम ने वक़्त सहर बाद नमाज़ हाथ उठा कर अल्लाह तआला के दरबार में अपने साहबज़ादों के लिए दुआ की वो क़बूल हुई और याक़ूब अलेहिस्सलाम को वही फ़रमाई गई के साहबज़ादों की ख़ता बख़्श दी गई इधर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने अपने वालिद माजिद को मअे उनके अहलो अयाल के बुलाने के लिए दो सौ सवारियाँ और बहुत सा सामान भेजा और याक़ूब अलेहिस्सलाम ने मिस्र का इरादा फ़रमाया

Scanned by CamScanner

और अपने अहल को जमा किया, कुल मर्दों ज़न बहत्तर तन थे और जब याक़ूब अलेहिस्सलाम मिस्र के क़रीब पहुँचे तो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम और हज़ारहा लश्करी और कसीर तअदाद मिस्री सवारों को हमराह लेकर इस्तक़बाल के लिए रेशमीं फ़रीरे उड़ाते क़तारें बाँधे रवाना हुए, याक़ूब अलेहिस्सलाम ने देखा तो बेटे यहूदा, से फ़रमाया, बेटा! क्या ये फिरऔन मिस्र का लश्कर है जो इस शानो शिकोह के साथ आ रहा है? अर्ज़ किया नहीं ये हुज़ूर के फ़रज़ंद यूसुफ़ हैं फिर जिब्राईल ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया हुज़ूर! ऊपर देखिए आपके जश्न मुसर्रत में शिर्कत के लिए फरिश्ते भी हाज़िर हैं जो आपके ग़म में रोया करते थे मलायका की तसबीह, घोड़ों का हिनहिनाना, तिब्ल व बूक़ की आवाज़ें अजीब कैफियत पैदा कर रही थीं, ये मोहर्रम की दसवीं तारीख़ थी जब दोनों बाप बेटा क़रीब हुए तो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने सलाम करना चाहा, जिब्राईल ने कहा आप तवक़्क़ुफ कीजिए, वालिद को मौक़ा दीजिए, याक़ूब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ ग़म दूर करने वाले! अस्सलाम अलेक! फिर दोनों ने मुआनक़ह किया और खूब रोए और मुज़य्यन व नफीस फ़रोदगाह में जो ख़ेमों वग़ैरासे आरास्ता थे दाख़िल हुए और फिर जब मिस्र में दाखिल हुए और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम अपने तख़्त पर बैठे तो आपने अपने माँ बाप को भी तख़्त पर बिठाया हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की ये शानो शौक़त और रफ़अत व अज़मत देखी तो आपके वालदैन और आपके सब भाई आपके लिए सज्दा में गिर गए और उस ख़्वाब की जो आपने देखा था के ग्यारह सितारे और चाँद सूरज उन्हें सज्दा कर रहे हैं तअबीर पूरी हो गई। (क़ुरआन करीम पारा 13, रूकू 5, ख़ज़ायन-उल-इर्फान सफ़ा 350,)

सबक़: वालदैन का इक्राम व अदब हर एक पर लाज़िम है और सज्दा तअज़ीम व तहियत जो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को किया गया उस शरीयत में जायज़ था और हमारी शरीअत में ये सज्दा जायज़ नहीं, हाँ! हमारी शरीअत में मुसाफेहा व मआनक़ह तअज़ीमन दस्त बोसी ये जायज़ है।

हिकायत नम्बर(118) बे मौसम का फल

हज़रत मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* की वालिदा ने हालते हमल में ये नज़्र मानी थी के ऐ रब मेरे! मैं तेरे लिए मन्नत मानती हूँ के जो मेरे पेट में है वो ख़ालिस तेरी ख़िदमत के लिए रहेगा चुनाँचे आपके हाँ एक बच्ची पैदा हुई जिसका नाम मरयम रखा गया और वालिदा मरयम अपनी इस बच्ची को बैत-उल-मुक़द्दस में ले गईं और मस्जिद की ख़िदमत के लिए

Scanned by CamScanner

वहाँ दाखिल कर दिया बैत-उल-मुक़द्दस के मुतावल्लियों में हज़रत ज़क्रया अलेहिस्सलाम भी थे और आप मरयम के अज़ीज़ भी थे आपकी अहलिया मरयम की ख़ाला थीं इसलिए मरयम को आपने अपनी निगहबानी में रखा, ज़क्रया अलेहिस्सलाम ने मरयम के लिए मस्जिद में एक कमरा बनवाया और मरयम को अपनी ज़ेरे निगरानी उसमें रखा, आपके सिवा इस कमरे में कोई ना जा सकता था आप जब बाहर जाते तो कमरे के दरवाज़े बन्द कर के जाते और तशरीफ़ लाते तो खुद ही खोलते, हज़रत मरयम *अला इन्निहा अस्सलाम* की करामत देखिए के ज़क्रया अलेहिस्सलाम जब भी उस कमरे में दाखिल होते तो उस बन्द कमरे में मरयम के पास मुख़्तलिफ क़िस्म के ताज़ा फल मौजूद पाते, गर्मियों के फल सर्दियों में और सर्दियों के फल गर्मियों में वहाँ रखे होते, हज़रत ज़क्रया अलेहिस्सलाम ने ये सूरत देखी तो फ़रमाया ऐ मरयम! ये फल तुम्हें इस बन्द कमरे में कौन दे जाता है? और ये फल कहाँ से आते हैं मरयम *अला इन्निहा अस्सलाम* ने फ़रमाया, "वो अल्लाह के पास से आते हैं वो जिसे चाहे बे हिसाब दे।"

हज़रत ज़क्रया अलेहिस्सलाम की उम्र शरीफ पिछत्तर साल से भी ज़्यादा थी सर अनवर सफेद हो चुका था और आवाज़ मुबारक में भी ज़ौफ आ चुका था और आपके हाँ औलाद ना थी, आपने ख़याल फ़रमाया के खुदा तआला मरयम को बे मौसम के फल अता फ़रमाता है तू मुझे भी इस बूढ़ापे में जब के मेरी बीवी भी बाँझ है यक़ीनन औलाद देने पर क़ादिर है इस ख़याल से आपने उसी जगह जहाँ आप मरयम के पास बैठे थे दुआ की के "ऐ अल्लाह मुझे अपने पास से साफ सुथरी औलाद दे बेशक तू दुआ सुनने वाला है।"

आपकी इस दुआ के बाद जिब्राईल हाज़िर हुए और अर्ज़ किया के अल्लाह तआला ने आपको बशारत दी है के आप के हाँ लड़का पैदा होगा जिसका नाम याहिया होगा।

(क़ुरआन करीम पारा 3, रूकू 12, रूह-उल-बयान सफ़ा 324, जिल्द: 1)

सबक़: औलिया की करामात बरहक़ है, मरयम *अला इन्निहा अस्सलाम* के पास बे मौसम के फल मौजूद होना, ये उनकी करामत थी और ये भी मालूम हुआ के जिस जगह अल्लाह वालों के क़दम आ जायें उस जगह को एक ख़ास ख़सूसियत हासिल हो जाती है और उस जगह जो दुआ माँगी जाए वो खुदा जल्दी सुनता है इसलिए हज़रत ज़क्रया अलेहिस्सलाम ने उस जगह जहाँ मरयम थी दुआ माँगी और वो क़बूल हो गई और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के बताने से अंबियाक्राम को माफी-उल-अरहाम का

Scanned by CamScanner

भी इल्म हो जाता है क्योंके जब अल्लाह ने बशारत दी के तुम्हारे हाँ याहिया पैदा होगा तो ज़क्रया अलेहिस्सलाम को इल्म हो गया के मेरी अहलिया के पेट में लड़का है।

हिकायत नम्बर(119) खुदा की निशानी

हज़रत मरयम अलेहा अस्सलाम एक रोज़ अपने मकान में अलग बैठी थीं के आपके पास जिब्राईले अमीन एक तनदरूस्त आदमी की शक्ल में आए, मरयम अलेहा अस्सलाम ने जो एक ग़ैर आदमी को अपने पास मौजूद देखा तो आपने फ़रमाया तुम कौन हो? और यहाँ क्यों आए हो, देखो खुदा से डरना मैं तुझ से अल्लाह की पनाह माँगती हूँ, जिब्राईले अमीन ने कहा, डरो मत मैं अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ और इसलिए आया हूँ के मैं तूझे एक सुथरा बेटा दूं, मरयम बोलीं, बेटा मेरे कहाँ से होगा जबके मैं अभी बियाही ही नहीं गई और किसी आदमी ने मुझे हाथ भी नहीं लगाया और कोई बदकार औरत भी नहीं हूँ, जिब्राईल बोले, ये ठीक है मगर रब ने फ़रमाया है के बाप के बग़ैर भी बेटा देना मेरे लिए कुछ मुश्किल नहीं और ये बात भी मुझे आसान है और हम चाहते हैं के तुम्हारे यहाँ बग़ैर बाप के बेटा पैदा कर के अपनी रहमत का और लोगों के लिए एक निशानी का मुज़ाहरह करें और ये काम होकर ही रहेगा, हज़रत मरयम ये बात सुनकर मुतमईन हो गईं फिर जिब्राईले अमीन ने उनके गिरेबाँ में एक फूंक मारी तो मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* उसी वक़्त हामला हो गईं आपका बग़ैर शौहर के हामला हो जाना लोगों के लिए बाइसे तअज्जुब हुआ, सबसे पहले आपके हमल का इल्म आपके चचा ज़ाद भाई यूसुफ़ नजार को हुआ जो बैत-उल-मुक़द्दस का ख़ादिम था, वो हज़रत मरयम का ज़ेहदो अतक़ा और आपकी इबादत और मस्जिद से ग़ैर हाज़री याद करता और फिर आपका हामला हो जाना देखता तो बड़ा हैरान होता के ये क्या बात है? आख़िर एक दिन उसने जुराअत करके *अला इब्निहा अस्सलाम* से पूछ लिया और बात इस तरह शुरू की के ऐ मरयम! मुझे बताओ क्या खेती बग़ैर तुख़्म और दरख़्त बग़ैर बारिश के और बच्चा बग़ैर बाप के पैदा हो सकता है, मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* ने जवाब दिया क्या तूझे मालूम नहीं के अल्लाह तआला ने जो सबसे पहले खेती पैदा की वो बग़ैर तुख़्म के ही पैदा की और दरख़्त बग़ैर बारिश के अपनी कुद्रत से लगाए और क्या तूझे मालूम नहीं के अल्लाह तआला ने आदम और हव्वा को बग़ैर माँ बाप के पैदा किया, यूसुफ़ ने कहा बेशक अल्लाह तआला उन

Scanned by CamScanner

सब उमूर पर क़ादिर है और मेरा शुबह रफ़अे हो गया।

उसके बाद अल्लाह तआला ने मरयम को इलहाम किया के वो अपनी क़ौम से अलेहदा चली आयें इसलिए वो एक दूर जगह चली गईं और जब बच्चा जनने का दर्द शुरू हुआ तो आप एक खुश्क दरख़्त से तकिया लगा कर बैठ गईं और फज़ीहत व नदामत के अंदेशे से बोलीं, हाय! किसी तरह मैं इससे पहले ही मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती, मरयम ने जब ये बात कही तो उन्हें एक आवाज़ आई के ऐ मरयम! अपनी तनहाई का, लोगों की चहमेगोई का और खाने पीने का कोई ग़म ना कर, तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर जारी कर दी है और उस खजूर के दरख़्त की जड़ पकड़ कर उसे हिला, चुनाँचे मरयम ने उस दरख़्त को हिलाया तो वो फौरन सर सब्ज़ व शादाब हो गया और उसे ताज़ा फल भी लग गया और पकी खजूरें गिरने लगीं, फिर जब आपके पेट से हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम पैदा हुए तो आवाज़ आई के ले फल भी खा पानी भी खा और अपने नूरऐन बच्चे से आँखें भी ठण्डी रख और जब कोई शख़्स तुझ से इस मामले में पूछे तो तुम खुद कुछ मत कहना बल्के इसी अपने बच्चे की तरफ़ इशारा कर देना।

हज़रत मरयम फिर अपने बच्चे को गोद में लेकर अपनी क़ौम के पास आईं तो लोगों ने ये अजीब बात देख कर कुंवारी मरयम की गोद में बच्चा है कहा के ऐ मरयम! तुम ने ये अच्छा काम नहीं किया, तेरे माँ बाप तो ऐसे ना थे, अफ़्सोस! तुम ने ये बहुत बुरी बात की, मरयम *अला इन्हिहा अस्सलाम* ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया के मुझ से कुछ ना कहो, अगर कुछ कहना है तो उससे कहो लोग ये बात सुन कर और भी गुस्से में आ गए और बोले के हम उस दूध पीते पनघोड़े के बच्चे से कैसे बात करें?

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने दूध पीना छोड़ दिया और अपने बायें हाथ पर टेक लगा कर क़ौम की तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाने लगे, सुनो! मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, अल्लाह ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है और मुबारक किया है चाहे मैं कहीं भी रहूँ और अल्लाह ने मुझे नमाज़ ज़कात की ताकीद फ़रमाई है और मुझे माँ के साथ नेक सलूक करने वाला बनाया और बदबख़्त नहीं बनाया।

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम की इस शहादत से वो लोग हैरान और ख़ामोश हो गए। (कुरआन करीम पारा 16, रूकू 5, ख़ज़ायन-उल-कुरआन सफ़ा 434)

सबक़:- अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, वो किसी ज़रिये का

Scanned by CamScanner

मोहताज नहीं है जो चाहे कर सकता है असबाब को फअइल जानना या बग़ैर उनके खुदा को आजिज़ मानना सरासर जहालत, कुफ्र और हिमाक़त है और ये भी मालूम हुआ के नूरानी मख़लूक़ बशरीयत का लिबादा ओढ़ कर आ जाए तो वो हमारी मिस्ल बशर नहीं हो जाती और उसकी हक़ीक़त नूर बदल नहीं जाती जैसे के जिब्राईले अमीन जो नूरानी थे एक तंदरूस्त आदमी की शक्ल में आए मगर वो हमारी तरह बशर ना थे और ना हैं बल्के नूर ही थे और नूर ही हैं इसी तरह हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम भी जो सब नूरों के मुनब्बअे नूर हैं हमारे पास लिबास बशरीयत में तशरीफ़ लाए तो इस लिबादा बशरीयत के ओढ़ लेने से आप हमारी मिस्ल बशर हर गिज़ ना थे और ना हैं बल्के आप नूर ही थे और नूर ही हैं और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह की कोई नअेमत जिस ज़रिये से मिले उस नअेमत का मिलना इस ज़रिये की तरफ़ मनसूब कर देना जायज़ है जैसे के बेटा देना अल्लाह का काम है मगर जिब्राईल ने यूं कहा के "मैं इस लिए आया हूँ ताके तुझे एक सुथरा बेटा दूं।"

चूंके मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* को बेटा मिला जिब्राईल की वसातत से था इसलिए क़ुरआन ने ये बेटा देने की निसबत जिब्राईल की तरफ़ कर दी और इस बात का एलान फ़रमा दिया के मरयम को बेटा जिब्राईल ने दिया है गोया मुताबिक़ आयत क़ुरआनी के ईसा अलेहिस्सलाम का दूसरा नाम जिब्राईल बख़्श है, बिना बरीं किसी अल्लाह वाले की दुआ की वसातत से कोई काम हो जाए तो हम कह सकते हैं के ये काम फलाँ बुज़ुर्ग ने किया है या पीर व मुर्शिद की दुआ से अल्लाह बेटा दे तो हम कह सकते हैं के ये बच्चा पीर ने दिया है और उसका नाम पीर बख़्श रख सकते हैं।

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के नबियों को आने वाली बातों का पहले ही का इल्म होता है इसी लिए हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने शीर ख़्वारगी के आलम ही में सबसे पहले जो बात की वो ये की के मैं अल्लाह का बन्दा हूँ यानी आप को इस बात का इल्म था के मुझे अल्लाह और अल्लाह का बेटा कहेंगे इसलिए आपने सब से अव्वल अपनी अबूदियत ही का एलान फ़रमाया और ये भी मालूम हुआ के विलादत ईसा अलेहिस्सलाम के बाद ख़ुश्क खजूर से अल्लाह तआला ने ताज़ा खजूरें निछावर कीं तो अगर महफ़िल मीलाद शरीफ में सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह सल्लम के ज़िक्र मीलाद के बाद हम मिठाई तक़सीम करें तो मना क्यों कहा जाए?

Scanned by CamScanner

हिकयत नम्बर(120) शार्गिद या उस्ताद

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम जब चलने फिरने लगे तो मरयम अला इब्निहा अस्सलाम आपको उस्ताद के पास लेकर आईं और कहा के इस बच्चे को पढ़ाओ, उस्ताद ने हज़रत ईसा अला इब्निहा अस्सलाम से कहा ऐ ईसा! पढ़! ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, उस्ताद ने फिर कहा कहो रे बे जीम दाल, ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया क्या तुम जानते हो के इन हरूफ का मअनी क्या हैं? उस्ताद ने कहा इन हरूफ का मअनी तो मैं नहीं जानता फ़रमाया तो मुझ से सुनो अलिफ से मुराद अल्लाह, बे से मुराद अल्लाह की बहुज्जत, जीम से मुराद अल्लाह का जलाल और दाल से मुराद है अल्लाह का दीन, उस्ताद ने हज़रत मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* से कहा के आप इस बच्चे को वापस ले जायें, ये किसी उस्ताद का मोहताज नहीं भला मैं इसे क्या पढ़ा सकता हूँ जब के ये खुद मुझे पढ़ा रहा है। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 432 जिल्द 2)

सबक:- नबी किसी दुनयवी उस्ताद के मोहताज नहीं होते और उसका उस्ताद व मोअल्लिम खुदा होता और नबी ऐसे ऐसे उलूम का मुनब्बअ होता है जिन से दूसरे लोग बेख़बर होते हैं।

हिकायत नम्बर (121) दस्ते मसीहा

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम अभी कमसिन बच्चे ही थे के आप का गुज़र अपनी वालिदा के साथ एक शहर में हुआ जहाँ के लोग अपने बादशाह के दरवाज़े पर जमा थे, ईसा अलेहिस्सलाम ने इस अज़्दहाम की वजह पूछी तो पता चला के बादशाह की बीवी बच्चा जनने के क़रीब है और बच्चा पैदा नहीं होता ये लोग अपने बुतों से इस तकलीफ से निजात के लिए गिड़गिड़ा कर दुआयें माँग रहे हैं ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया अगर मेरा हाथ बादशाह की बैगम के पेट पर रख दिया जाए तो फौरन बच्चा पैदा हो जाएगा, लोगों ने ये गुफ़्तगू सुनी तो आपको बादशाह के पास ले गए, ईसा अलेहिस्सलाम ने बादशाह से फ़रमाया ऐ बादशाह! मैं अगर ये भी बता दूं के इस औरत के पेट में लड़का है या लड़की और फिर पेट पर हाथ रख दूं और बच्चा पैदा हो जाए तो क्या तू एक अल्लाह पर ईमान ले आएगा? बादशाह ने कहा बेशक! हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया तो सुन! इसके पेट में लड़का है जिसके रूख़सार पर सियाह तिल और पीठ पर सफेद तिल

Scanned by CamScanner

है, इसके बाद आपने फ़रमाया ऐ बच्चे मैं तुझे इस ज़ात की क़सम देता हूँ जिसने सब मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया तो जल्दी पेट से बाहर आ जा, आपके ये कहते हुए ही बच्चा पैदा हो गया और सबने देखा के उसके रूख़सार पर सियाह तिल और पीठ पर सफेद तिल था आपका अेजाज़ देख कर बादशाह मुसलमान होने को तैयार हुआ मगर क़ौम ने ये कहकर ये जादू है बादशाह को मुसलमान होने से रोक दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 433 जिल्द 2)

सबक़:- अल्लाह का नबी बड़े बड़े उलूम व इख़्तियार लेकर आता है और उनकी नज़र माफी-उल-अरहाम तक भी पहुँच जाती है और उनके हाथ भी दाफअे-उल-बला होते हैं।

हिकायत नम्बर (122) अन्धा और लंगड़ा चोर

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम अभी नो उम्र ही थे के आप अपनी वालिदा के साथ मिस्र के एक अमीर कबीर के हाँ महमान हुए इस अमीर आदमी के हाँ बहुत से मुफ़्लिस और मोहताज आदमी महमान रहा करते थे, इत्तेफाक़ से एक दिन उसके हाँ चोरी हो गई और कुछ माल जाता रहा, उस अमीर आदमी को उन्हीं मुफ़्लिस और मोहताज लोगों पर जो उसके पास रहते थे शुबह था, हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने अपनी वालिदा से कहा के उस अमीर आदमी को कहिये के उन सब मुफ़्लिसों को एक जगह इकठ्ठा करे जब उस शख़्स ने उन मुफ़्लिसों को एक जगह जमा कर लिया तो आप उनमें तशरीफ़ ले गए और उनमें से एक लंगड़ा आदमी को उठा कर एक अन्धे शख़्स की गर्दन पर बैठा दिया और कहा ऐ अन्धे! इस लंगड़े को उठा कर खड़ा हो जा, वो अन्धा बोला मैं निहायत ज़ईफ और कमज़ोर आदमी हूँ इसे क्योंकर उठा सकता हूँ, हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया गुज़िश्ता शब को तुम में इसके उठाने की ताक़त कहाँ से आ गई थी? ये सुनकर वो अन्धा कांपने लगा, दरअसल उसी अन्धे ने इस लंगड़े को उठाया था और उसके ज़रिये ये चोरी की थी चुनाँचे वो दोनों चोर पकड़े गए। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 433 जिल्द 2)

सबक़:- अल्लाह के नबी छुपी हुई बातों को जो हो चुकीं या होने वाली हों, सबको जान लेते हैं, नबी को बेख़बर जानना बेख़बरों का काम है।

हिकायत नम्बर(123) दुनिया परस्त का अंजाम

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम एक सफर में निकले तो उनके साथ एक यहूदी हो लिया, इस यहूदी के पास दो रोटियाँ थीं और हज़रत ईसा

Scanned by CamScanner

अलेहिस्सलाम के पास एक रोटी थी, ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया आओ दोनों मिलकर रोटी खायें, यहूदी ने मान लिया मगर जब उसने देखा के ईसा अलेहिस्सलाम के पास एक रोटी और मेरे पास दो रोटियाँ है तो पछताया के मैंने शिर्कत का वादा क्यों कर लिया चुनाँचे जब खाने का वक़्त हुआ तो यहूदी ने एक ही रोटी निकाली, ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुम्हारे पास दो रोटियाँ थीं एक कहाँ गई? यहूदी बोला मेरे पास तो एक ही रोटी थी, दो कब थीं? खाना खाने के बाद जब आगे बढ़े तो रास्ते में एक अन्धा मिला, ईसा अलेहिस्सलाम ने इसके लिए दुआ की तो वो बीना हो गया ये मोजज़ा दिखा कर ईसा अलेहिस्सलाम ने यहूदी से फ़रमाया, तुझे उस अल्लाह की क़सम! जिसने मेरी दुआ से इस अन्धे को आँखें दे दीं सच सच बता दूसरी रोटी कहाँ गई, वो बोला मुझे उसी अल्लाह की क़सम! मेरे पास तो एक ही रोटी थी, फिर जब और आगे बढ़े तो एक हिरन दिखाई दिया, ईसा अलेहिस्सलाम ने उसे बुलाया, वो आ गया आपने उसे ज़िबह किया, भूना और खाया और फिर उसकी हड्डियों से फ़रमाया, कुम बिइज़निल्लाह! वो हिरन फिर ज़िन्दा हो गया, ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया तुझे उस अल्लाह की क़सम जिसने हमें ये हिरन खिलाया और उसे फिर ज़िन्दा कर दिया, सच मुच बताओ के दूसरी रोटी कहाँ गई, वो यहूदी बोला मुझे उसी अल्लाह की क़सम! मेरे पास तो दूसरी रोटी थी ही नहीं, आगे बढ़े तो एक क़स्बा आ गया, ईसा अलेहिस्सलाम ने वहाँ क़याम किया यहूदी ने मौक़ा पाकर हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम का असा चुरा लिया और खुश हुआ के मैं इस सोंटे से मुर्दे ज़िन्दा कर लिया करूंगा चुनाँचे उस क़स्बे में उसने एलान किया के मुर्दे ज़िन्दा कराने हों तो मुझ से करा लो, लोग उसे हाकिम शहर के पास ले गए जो बड़ा सख़्त बीमार था और कहा ये बीमार है उसे अच्छा कर दो, यहूदी ने पहले तो उस हाकिम के सर पर ज़ोर से वो डंडा मारा और कहा, कुम बिइज़निल्लाह! मगर वो ज़िन्दा ना हो सका, अब तो ये घबराया लोगों ने पकड़ लिया और फाँसी पर लटकाने लगे, इतने में ईसा अलेहिस्सलाम पहुँच गए और फ़रमाया तुम्हारा हाकिम मैं ज़िन्दा कर देता हूँ उसे छोड़ दो चुनाँचे आपने कुम बिइज़निल्लाह फ़रमाया तो वो हाकिम ज़िन्दा हो गया और लोगों ने यहूदी को छोड़ दिया, ईसा अलेहिस्सलाम ने उससे कहा तुझे उसी खुदा की क़सम जिसने तुम्हारी जान बचाई सच सच बताओ, वो दूसरी रोटी कहाँ गई? वो बोला उसी खुदा की क़सम! जिसने मेरी जान बचाई दूसरी रोटी मेरे पास थी ही नहीं, आगे बढ़े तो सोने की तीन ईंटें मिलीं ईसा अलेहिस्सलाम ने फरमाया इनमें से एक

Scanned by CamScanner

ईंट मेरी दूसरी तेरी और तीसरी उसकी जिसने तीसरी रोटी खाई वो बोला, ऐ ईसा! खुदा की क़सम तीसरी रोटी मैंने ही खाई थी, आपने वो तीनों ईंटें उसे दे दीं और फ़रमाया अब तुम मेरा साथ छोड़ दो चुनाँचे वो इन ईंटों को लेकर खुशी खुशी वापस हुआ लेकिन रास्ते मैं अल्लाह ने उसे ईंटों समेत ज़मीन में धंसा दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 207 जिल्द 2)

सबक़: दुनिया परस्त बेहद झूटा होता है और दुनिया की मोहब्बत में खुदा और उसके रसूल की कुछ परवाह नहीं करता और ऐसे ना आक़बत अंदेश का अंजाम बड़ा होलनाक होता है।

हिकायत नम्बर(124) नाकाम क़ातिल

यहूदी हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम के बहुत दुश्मन थे एक रोज़ यहूदियों के एक गिरोह ने हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम को गालियाँ दीं और यूं कहा के तुम जादूगर हो और तुम्हारी माँ भी जादूगरनी है और तुम बदकार हो और तुम्हारी माँ भी बदकार है (मआज़ अल्लाह) हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम को इस बात से बड़ा रंज हुआ और खुदा से दुआ माँगी के ऐ अल्लाह मैं तेरा पैग़म्बर हूँ और ये लोग मुझे और मेरी माँ को बुरा भला कह रहे हैं इलाही! उनको अपने अज़ाब का मज़ा चखा दे चुनाँचे आपकी दुआ क़बूल हुई और वो यहूदी अज़ाब मस्ख़ में मुब्तला होकर बन्दर और सूअर बन गए, यहूदियों के अमीर ने जब ये क़िस्सा सुना तो वो दौड़ा के कहीं ईसा हम सब को ऐसा ना बना डाले इस डर से उसने सारे यहूदियों को इकट्ठा किया और कहा के किसी सूरत ईसा को क़त्ल कर डालो उधर जिब्राईल ने ईसा अलेहिस्सलाम को मतलअ कर दिया यहूदी आपको क़त्ल करने आयेंगे और आपको ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया जाएगा चुनाँचे एक रोज़ सब यहूदियों ने इकट्ठे होकर ईसा अलेहिस्सलाम के घर का मुहासरा कर लिया और सबसे पहले एक आदमी को अन्दर भेजा ताके वो पता ले के ईसा घर में है या नहीं वो आदमी जब अन्दर गया तो उसकी शक्ल हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम की सी हो गई और ईसा अलेहिस्सलाम को अल्लाह ने ऊपर आसमान पर उठा लिया थोड़ी देर बाद जब यहूदी अन्दर घुसे तो उन्होंने अपने आदमी को ही ईसा समझ कर क़त्ल कर डाला और समझा ये के हमने ईसा को मार डाला है, उसके बाद वो खुद ही सोचने लगे के हमारा आदमी जो अन्दर आया था, वो कहाँ गया? अगर ये मक़्तूल ईसा है तो वो कहाँ? और अगर यही है तो फिर ईसा कहाँ?

अपने गुमान में तो उन्होंने ईसा अलेहिस्सलाम को क़त्ल कर डाला मगर

Scanned by CamScanner

ऐसा हुआ नहीं बल्के उन्होंने अपने ही आदमी को क़त्ल कर डाला और ईसा अलेहिस्सलाम आसमानों पर ज़िन्दा उठा लिए गए। (कुरआन करीम पारा 6, रूकू 2, रूह-उल-बयान सफ़ा 513, जिल्द 1)

सबक:- हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम आसमान पर ज़िन्दा उठा लिए गए हैं और जो लोग उनके क़त्ल हो जाने या मर जाने के क़ायल हैं वो महज़ धोके में हैं।

चौथा बाब

खुलफा-ए-राशिदीन रिज़वानल्लाही अलेहिम अज़मईन

मोहम्मद माह व गर्दिश चार अख़्तर
अबुबक्र व उमर, उस्मान व हेदर

हिकायत नम्बर(125) सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह का ख़्वाब

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह क़ब्ल अज़ इस्लाम बहुत बड़े व्राजिर थे आप एक मर्तबा मुल्क शाम में गए तो वहाँ आपने एक ख़्वाब देखा आपने देखा के चाँद और सूरज आसमान से नीचे उतर आए हैं और दोनों हज़रत अबुबक्र रज़ी अल्लाहो अन्ह की गोद में दाखिल हो गए हैं हज़रत अबुबक्र रज़ी अल्लाहो अन्ह ने दोनों को पकड़ कर अपने सीने से लगा लिया और अपनी चादर मुबारक ऊपर डाल दी, सुबह आप बैदार हुए तो उस अजीबो ग़रीब ख़्वाब की तअबीर पूछने के लिए एक राहिब के पास पहुँचे उस राहिब ने सारा ख़्वाब सुनकर पूछा, आपका नाम क्या है और आप कहाँ के रहने वाले हैं और कौन से क़बीले में? हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया मेरा नाम अबुबक्र है मक्का का रहने वाला हूँ और बनी हाशिम से हूँ, राहिब ने पूछा और काम क्या करते हैं? आपने फ़रमाया तिजारत करता हूँ, राहिब ने कहा तो मुबारक हो मक्के से और क़बीला-ए- बी हाशिम से नबी आख़िर-उज़-ज़माँ का ज़हूर होने वाला है अगर ये नबी पाक ना होते तो अल्लाह तआला ज़मीन व आसमान को पैदा ना फ़रमाता और

Scanned by CamScanner

सारी कायनात भी कभी ज़ाहिर ना होती और जुमला अंबिया-ए-क्राम भी कभी पैदा ना होते वो नबी पाक रसूलों के सरदार होंगे और सब उन्हें "मोहम्मद अलअमीन" के नाम से याद करेंगे और ऐ अबुबक्र! इस ख़्वाब की तअबीर ये है के तुम उसके दीन में दाख़िल होगे और उसके अव्वलीं वज़ीर बनोगे और उसका ख़लीफा होगे।

ऐ अबुबक्र! मैंने उस नबी पाक की तौरेत में तारीफ पढ़ी है इंजील व ज़बूर में उसका ज़िक्र पढ़ा है और मैं उस पर ईमान ला चुका हूँ और उसके दीन में दाख़िल हो चुका हूँ और ईसाइयों के ख़ौफ से अपना ईमान छुपा रहा हूँ आज तुम से सारी हक़ीक़त बयान कर दी।

हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह ये सुनकर बड़े मुतास्सिर हुए और दिल पर रक़्त तारी हुई और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से मुलाक़ात के शौक़ का ग़ल्बा हुआ और फौरन मक्का वापस आए और हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए हुज़ूर को देख कर दिल, बाग़ बाग़ हो गया हुज़ूर भी अबुबक्र को देखकर मुसकुराए और फ़रमाया अबुबक्र! जल्दी कलमा पढ़ो और मेरे दीन में आ जाओ, सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह ने अर्ज़ किया हुज़ूर! क्या कोई मओज्ज़ा देख सकता हूँ? हुज़ूर ने मुसकुरा कर फ़रमाया:-

मुल्क शाम में जो ख़्वाब देखकर आए हो और राहिब ने जो तअबीर सुनाई थी वो मेरा मओज्ज़ा ही तो है।

सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह फौरन पुकार उठे

अशहद अन लाइलाहा इल्लल्लाहू व अशहद अन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

(जामअे अलमओज्ज़ात सफ़ा 4, नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 302 जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वज़ीर अव्वल और ख़लीफा-ए-बिला फस्ल हैं और ये बात पहले ही से मुक़र्रर हो चुकी थी और इंजील व तोरेत के आलिम भी इस हक़ीक़त से बाख़बर थे फिर जो आपकी विज़ारत व ख़िलाफत का इंकार करे वो किस क़द्र ना वाक़िफ व बेख़बर है!

और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अगली पिछली दिन और रात की सब बातें जानते थे और आपसे कोई बात ग़ायब ना थी।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(126) यार-ए-ग़ार

मक्का मोअज़्ज़मा में जब मुसलमानों को कुफ़्फार की तरफ़ से बहुत ईज़ा दी जाने लगी तो अल्लाह ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को मक्का मोअज़्ज़मा से हिजरत फ़रमा जाने का अज़्न दे दिया, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस बात का ज़िक्र सिद्दीक़े अक्बर से फ़रमाया और फ़रमाया के मैं अनक़रीब यहाँ से हिजरत कर जाऊँगा।

सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान, मैं भी हुज़ूर के साथ ही चलूंगा।

चुनाँचे शब हिजरत जब कुफ़्फारे मक्का ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को शहीद कर देने की नीयत से हुज़ूर के घर का मुहासरा कर लिया और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सूरह यासीन तिलावत फ़रमाते हुए उस मुहासरे से सबके सामने घर से बाहर तशरीफ़ ले आए और हुज़ूर का बाहर निकलना किसी को भी नज़र ना आ सका तो हुज़ूर घर से निकल कर सीधे सिद्दीक़े अक्बर के घर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया ऐ अबुबक्र! मुझे अभी इसी वक़्त हिजरत फ़रमाने का अज़्न मिल चुका है और मैं मक्का छोड़ कर जा रहा हूँ, सिद्दीक़ अक्बर ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़र्बान हों, मैं भी साथ चलूंगा? फ़रमाया चलो, सिद्दीक़े अक्बर से हुज़ूर की मईयत की इजामत पाकर फर्ते मुसर्रत से रोने लगे और हुज़ूर के साथ हो लिए और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सिद्दीक़ अक्बर को हमराह लेकर मक्का मओज़्ज़मा से चल दिए, सिद्दीक़े अक्बर कभी हुज़ूर से आगे और कभी पीछे रह कर चलते। हुज़ूर ने इसकी वजह दरयाफ़्त की तो अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मैं चाहता हूँ के दुश्मन तआक़्क़ुब करता हुआ आगे या पीछे से आ जाए तो उसका वार मुझी पर हो और हुज़ूर पर मैं ही क़ुर्बान हों और हुज़ूर को कोई गज़िंद ना पहुँचे। चलते चलते सौर पहाड़ पर पहुँचे इस पहाड़ में एक ग़ार था जिसका नाम ग़ारे हव्वाम था, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उस ग़ार में तशरीफ़ फ़रमा होने का क़सद फ़रमाया तो सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! ठहर जाईये पहले मुझे अन्दर जाने दीजिए, पुराना ग़ार है पहले मैं अन्दर जाता हूँ और उसे साफ करता हूँ, साफ कर लूं तो आप अन्दर आ जाईयेगा।

चुनाँचे पहले उस ग़ार में सिद्दीक़े अक्बर गए और उसे साफ करने लगे

Scanned by CamScanner

उस ग़ार में कई बिल थे सिद्दीक़े अक्बर उन बिलों को अपने कपड़े फाड़ फाड़ कर बन्द करने लगे सिफ इसलिए के कोई मूज़ी जानवर हुज़ूर को तकलीफ ना पहुँचाए इस ग़ार में एक बहुत बड़ा सांप रहता था सिद्दीक़े अक्बर ने उसका बिल जो देखा तो कपड़ा ख़त्म होने के बाइस कपड़े से तो उसे बन्द ना कर सके और अपनी ऐड़ी उसमें रख दी अपनी जान की परवाह ना की और यही सोचा के मुझे जो चाहे तकलीफ पहुँचे मगर हुज़ूर को कोई तकलीफ ना पहुँचे इस बिल पर ऐड़ी रखने के बाद सिद्दीक़े अक्बर ने फिर हुज़ूर को अन्दर बुला लिया और हुज़ूर अन्दर तशरीफ़ ले आए और अपना सरे अनवर सिद्दीक़ अक्बर की गोद में रख कर सो गए, वो बिल जिस पर सिद्दीक़े अक्बर की ऐड़ी थी उसमें से ज़हरीले सांप ने सिद्दीक़े अक्बर को डस लिया, सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को तकलीफ तो हुई मगर आप अपनी जगह से हिले तक नहीं ताके हुज़ूर की नींद मुबारक में खलल ना आए, सांप के ज़हर की तकलीफ से सिद्दीक़े अक्बर के आंसू निकल आए और चन्द आंसू हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर गिरे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमया अबुबक्र क्यों रो रहे हो? सिद्दीक़े अक्बर ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों मुझे सांप ने डस लिया है, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उसी वक़्त अपना लआब दहन शरीफ लगा दिया तो सिद्दीक़े अक्बर की सारी तकलीफ दूर हो गई।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और सिद्दीक़े अक्बर जब उस ग़ार में दाख़िल हुए तो ग़ार से दूर एक दरख़्त था हुज़ूर ने उस दरख़्त को हुक्म दिया तो वो दरख़्त अपनी जगह से चल कर ग़ार के मुंह पर आकर खड़ा हो गया यूं मालूम होने लगा के ये दरख़्त यहीं उगा हुआ है और ग़ार का मुंह उस दरख़्त की शाखों से बन्द हो गया और अल्लाह ने उसी वक़्त एक मकड़ी को भेजा जिसने इस दरख़्त की शाखों के अन्दर जाला बुन दिया, ये सब सामान इसलिए किया गया ताके काफिर अगर हुज़ूर का तआक़ुब करते हुए वहाँ तक आएँ तो वो ग़ार के मुंह के आगे दरख़्त और उसकी शाखों में जाला बुना हुआ देखें तो उन्हें हुज़ूर के अन्दर चले जाने का शुबह भी ना गुज़रे चुनाँचे इधर जब काफिरों को पता चला के मोहम्मद(सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) तो अबुबक्र की मईयत में मक्का से चले गए तो बहुत हैरान हुए और हुज़ूर की तलाश करने लगे और कुछ खोजी हुज़ूर का खोज निकालने के लिए मुक़र्रर कर दिए उन खोज निकालने वालों में से एक शख़्स

Scanned by CamScanner

खोज निकालता हुआ ग़ार तक आ पहुँचा और फिर कहने लगा के यहाँ तक मोहम्मद और अबुबक्र आए हैं लेकिन उसके बाद पता नहीं चल रहा के दायें गए या बायें, काफिर वहाँ जमा हो गए लेकिन वहीं हैरान के हैरान खड़े रहे कुछ पता ना चला के यहाँ से आगे किधर गए हैं, सिद्दीक़े अक्बर ने जब काफिरों के क़दम ग़ार से बाहर देखे तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लाम की फिक्र में आप परेशान से हुए तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया, कोई फिक्र ना करो, अल्लाह हमारे साथ है।

इतने में उन काफिरों में से एक काफिर बोला, ज़रा इस ग़ार के अन्दर तो जाकर देखें, ये सुनकर दूसरों ने जवाब दिया बेवक़ूफ हो ग़ार के मुंह के आगे दरख़्त उगा हुआ है और उसपर मकड़ी का जाला भी बना हुआ है अगर अन्दर कोई गया होता तो ये शाखें और उनका जाला ज़रूर टूटा फूटा नज़र आता मगर ये बात तो नज़र नहीं आती फिर किसी के अन्दर जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

चुनाँचे वो मायूस होकर वहाँ से लौट गए और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और उनके साथी सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह अपने अल्लाह की हिफाज़त में बिलकुल खेरियत से रहे, "क़ुरआन करीम पारा 10 रूकू 12" (मिश्कात शरीफ सफ़ा 548, रूह-उल-बयान सफ़ा 902 जिल्द 1)

सबक़:- 1- क़ुरआन पाक में इस वाक़ये के ज़िम्न में *इज़ यक़ूलू लिसाहिबीहीं* फ़रमाया कर अल्लाह तआला ने सिद्दीक़े अक्बर को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का सहाबी फ़रमाया है लिहाज़ा जो शख़्स सिद्दीक़े अक्बर की सहाबियत का मुनकिर है वो काफिर है।

2- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने *ला तहज़न इन्नल्लाहा मआना* फ़रमा कर यानी "ग़म ना कर अल्लाह हमारे यानी हम दोनों के साथ है" ये ज़ाहिर फ़रमाया दिया के अल्लाह तआला सिद्दीक़े अक्बर के साथ है, मालूम हुआ के सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बाद जो तख़्ते खिलाफत पर मुतमकिन हुए ये आप ही का हक़ था और आप ग़ासिब व ज़ालिम ना थे इसलिए अल्लाह ग़ासिब व ज़ालिम के साथ नहीं होता फिर अगर कोई ज़ालिम आपको ज़ालिम कहे तो उसने गोया आयत *ला तहज़न इन्नल्लाहा मआना* का इंकार कर दिया।

3- शबे हिजरत हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का

Scanned by CamScanner

सिद्दीक़े अक्बर के घर तशरीफ़ ले जाकर उन्हें अपने साथ ले चलना और सिद्दीक़े अक्बर का सब कुछ छोड़ कर हुज़ूर के साथ चल पड़ना बताता है के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को सिद्दीक़े अक्बर से और सिद्दीक़े अक्बर को हुज़ूर से इन्तिहाई मोहब्बत थी।

4- ग़ार के अन्दर हुज़ूर को बाहर ठहरा कर सिद्दीक़े अक्बर का पहले खुदा अन्दर जाना और बिलों को अपने कपड़े फाड़ फाड़ कर बन्द करना और फिर एक बिल पर अपनी ऐड़ी रख देना बताता है के सिद्दीक़े अक्बर को माल व जान से भी ज़्यादा प्यारे थे और यही कमाले ईमान की निशानी है जो सब से ज़्यादा सिद्दीक़े अक्बर में नज़र आती है।

5- मुक़ाम डंक पर हुज़ूर का अपना लुआब दहन शरीफ लगा कर शिफा बख़्श देना साबित करता है के हुज़ूर का लआब दहन शरीफ भी दाफ़ओ अलबला है।

6- इर्शाद मुसतफा की तअमील करते हुए दरख़्त का अपने मुक़ाम से चल कर ग़ार के मुंह पर आ जाना बताता है के हमारे हुज़ूर का हुक्म व तसर्रूफ कायनात के हर ज़र्रे पर जारी है।

7- काफिरों का ग़ार के मुंह तक आ पहुँचना और फिर वहाँ से मायूस व ना मुराद लौटना बताता है के हक़ के मुक़ाबले में सारी इसकीमें और तदबीरें खाक में मिल जाती हैं।

हिकायत नम्बर(127) आसमान के तारे

एक रात जब के आसमान साफ था और सितारे चमक रहे थे, हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उम्म-उल-मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अन्हा के पास तशरीफ़ फ़रमा थे हज़रत आयशा ने आसमान की तरफ़ देख कर हुज़ूर से दरयाफ़्त फ़रमाया या रसूल अल्लाह! जितने आसमान के तारे हैं उतनी किसी शख़्स की नेकियाँ भी हैं? हुज़ूर ने फ़रमाया हाँ! सिद्दीक़ा ने अर्ज़ किया, हुज़ूर वो किस की? हुज़ूर ने फ़रमाया उमर की।

उम्म-उल-मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा का ख़याल था के हुज़ूर सिद्दीक़े अक्बर का नाम लेंगे मगर हज़रत उमर का नाम सुनकर सिद्दीक़ा ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह और मेरे वालिद की नेकियाँ किधर गईं, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया आयशा! उमर की सब नेकियाँ अबुबक्र की नेकियों में से एक नेकी के बराबर हैं। (मिश्कात शरीफ सफ़ा 552)

Scanned by CamScanner

सबक:- सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह की बहुत बड़ी शान है नबियों के बाद सबसे बड़ा मर्तबा आप ही का है और आप जो शब हिजरत हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मईयत में रहे उस एक ही नेकी का इतना बड़ा दर्जा है के आसमान के तारों के बराबर नेकियाँ भी उस एक नेकी के बराबर नहीं सकतीं।

और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से उम्मत के नेक व बद आमाल ग़ायब नहीं बल्के हुज़ूर सब के आमाल को जानते हैं बाज़ नेकियाँ अलल एलान होती हैं मगर कई नेकियाँ पौशीदा भी होती हैं और हज़रत उमर की जुमला नेकिनयाँ जिनमें एलानिया नेकियाँ भी थीं और पौशीदा नेकियाँ भी उन सब नेकियों का इल्म हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को था, जभी तो फ़रमाया के उमर की नेकियाँ आसमान के तारों के बराबर हैं।

हिकायत नम्बर(128) पाँच चीज़ें

एक दिन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह से पूछा जनाब! ये तो फ़रमाईये आप इतने बड़े मर्तबे को किन बातों से पहुँच गए?

सिद्दीक़े अक्बर ने फ़रमाया, पाँच बातों से:

1- मैंने लोगों को दो तरह का पाया, एक वो जो दुनिया की तलब में सरगरदाँ हैं दूसरे वो के जो आख़िरत की तलब में कोशाँ हैं, मैंने मौला की तलब में कोशिश की है।

2- मैं जब से इस्लाम में आया हूँ कभी दुनिया का खाना पेट भर कर नहीं खाया क्योंके इर्फ़ाने हक़ की लज़्ज़त ने मुझे इस दुनिया के खाने से बे नियाज़ कर दिया है।

3- जब से इस्लाम लाया हूँ कभी सेर होकर पानी नहीं पिया, क्योंके मोहब्बत इलाही के पानी से सैराब हो चुका हूँ।

4- जब भी मुझे दुनिया व आख़िरत के दो काम पेश आए तो मैंने अख़रवी काम को मुक़द्दम किया और दुनयवी काम की कुछ परवाह किए बग़ैर अख़रवी काम ही को इख़्तियार किया।

5- मैं हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की सोहबत में रहा और मेरी ये सोहबत हुज़ूर के साथ बड़ी अच्छी रही। (नज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 304 जिल्द 2)

Scanned by CamScanner

सबक:- हज़रत सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह उम्मत में से सबसे बड़े तालिब मौला आरिफ़ कामिल, मुहिब्ब हक़, मुत्तक़ी और सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सहाबी हैं।

हिकायत नम्बर(129) पुल सिरात की राहदारी

एक दिन सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह हज़रते मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की तरफ़ देख कर मुसकुराए, मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने दरयाफ़्त किया जनाब मुझे देख कर आप मुसकुराए क्यों? सिद्दीक़े अक्बर ने फ़रमाया ऐ अली! मुबारक हो, मुझ से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के जब तक अली किसी को पुल सिरात से गुज़रने की चिट्ठी ना देगा तब तक वो पुल सिरात से गुज़रने ना सकेगा, इस पर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह भी मुसकुरा पड़े और फ़रमाया ऐ ख़लीफात-उल-मुसलिमीन! आपको भी मुबारक हो, मुझ से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के ऐ अली! तुम उस शख़्स को पुल सिरात की राहदारी हर गिज़ ना देना जिसके दिल में अबुबक्र की अदावत हो बल्के उसी देना जो अबुबक्र का मुहिब्ब हो। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 306 जिल्द 2)

सबक:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की मोहब्बत व ग़ुलामी से कुछ फ़ायदा जभी हासिल हो सकता है जब के सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह की मोहब्बत भी दिल में हो वरना बराए नाम मोहब्बते अली किसी काम की नहीं।

हिकायत नम्बर(130) अंगूठी का नक़्श

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को अपनी अंगूठी मुबारक दी और फ़रमाया के इस पर *ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर रसूल अल्लाह* लिखवा लाए जब अंगूठी हुज़ूर की ख़िदमत में पेश की तो उस पर लिखा था: *ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर रसूल अल्लाह* और उसके साथ ही सिद्दीक़े अक्बर का अपना नाम भी लिखा था, हुज़ूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया अबुबक्र! हम ने तो *ला इलाहा इल्लल्लाहू* लिखवाने को कहा था मगर तुम हमारा नाम भी और अपना नाम भी लिखवा लाए, अर्ज़ किया हुज़ूर! मेरा दिन ना मानता था के खुदा के नाम के साथ आपका नाम ना हो ये आपका नाम तो मैंने ही

Scanned by CamScanner

लिखवाया है मगर मेरा नाम? ये तो यहाँ तक आते आते ही लिखा गया वरना मैंने हर गिज़ नहीं लिखवाया इतने में जिब्राईल अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! खुदा फ़रमाता है, सिद्दीक़ इस अम्र पर राज़ी न हुए के आपका नाम हमारे नाम से जुदा करें और हम इस अम्र पर राज़ी न हुए के सिद्दीक़ का नाम आपके नाम से जुदा करें, सिद्दीक़ ने आपका नाम हमारे नाम के साथ लिखवा दिया और हम ने सिद्दीक़ का नाम आपके नाम के साथ लिख दिया। (तफ़्सीर कबीर सफ़ा 91 जिल्द 1)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सच्चे रफ़ीक़ हैं और हर जगह हुज़ूर के साथ हैं और खुद अल्लाह तआला इस रफ़ाक़त का मोईद व शाहिद है।

हिकायत नम्बर(131) खुदा की तसदीक़

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह एक दिन यहूदियों के एक मदर्से में तशरीफ़ ले गए उस दिन यहूदियों का एक बहुत बड़ा आलिम जिसका नाम फिखास था आया हुआ था और उसकी वजह से वहाँ बहुत से यहूदी जमा थे, सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने वहाँ पहुँच कर फिखास से फ़रमाया ऐ फिख़ास! अल्लाह से डर और मुसलमान हो जा, खुदा की क़सम मोहम्मद के सच्चे रसूल हैं जो हक़ लेकर आए हैं और तुम लोग उनकी तारीफ तौरेत व इंजील में पढ़ते हो लिहाज़ा तुम मुसलमान हो जाओ और सच्चे रसूल की तसदीक़ करो, नमाज़ें पढ़ो ज़कात दो और अल्लाह को क़र्ज़ हुस्न दो ताके तुम जन्नत में जाओ, फिखास बोला ऐ अबुबक्र! क्या हमारा खुदा हम से क़र्ज़ मांगता है? इससे तो ये साबित हुआ के हम ग़नी हैं और खुदा फक़ीर है। हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को ये सुन का बड़ा गुस्सा आया और फिखास के मुंह पर एक थप्पड़ मारा और फ़रमाया क़सम बखुदा! अगर हम में और तुम में ये मुआहेदा ना होता तो इसी वक़्त तेरी गर्दन अलग कर देता, फिखास थप्पड़ खा कर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के पास आया और सिद्दीक़े अक्बर की शिकायत की, हुज़ूर ने सिद्दीक़ अक्बर से पूछा तो सिद्दीक़े अक्बर ने अर्ज़ किया, हुज़ूर उसने यूं कहा था के हम ग़नी हैं और अल्लाह फक़ीर है मुझे इस बात पर गुस्सा आया था फिखास इस बात से फिर गया और कहने लगा मैंने हरगिज़ ऐसा नहीं कहा उसी वक़्त सिद्दीक़े अक्बर की तसदीक़ में अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़रमाई:-

Scanned by CamScanner

लक़द समी अल्लाहू क़ोलल्लज़ीना क़ालू इन्नल्लाहा फक़ीरं व नहनू अग़निया

"यानी अल्लाह ने उन लोगों का ये क़ौल सुना के अल्लाह फक़ीर है और हम ग़नी हैं।"

खुदा तआला की इस तसदीक़ व शहादत से सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह की सदाक़त वाज़ेह हो गई। (क़ुरआन करीम पारा 4 रूकू 10, रूह-उल-बयान, सफ़ा 393, जिल्द 1)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह दीन के मामले में बड़े ग़यूर थे और आपके जज़्बा-ए-सादिक़ा की ये शान है के खुदा तआला भी आपके जज़्बा-ए-सादिक़ा का मद्दाह और आपका मोईद है फिर जो शख़्स सिद्दीक़े अक्बर का मद्दाह नहीं वो दरअसल खुदा ही से ख़फा है।

हिकायत नम्बर(132) बिलाल की आज़ादी

हज़रत बिलाल रज़ी अल्लाहो अन्ह एक हबशी ग़ुलाम थे ये मुसलमान हो गए तो उनके मालिक उमय्या ने जो बड़ा दुश्मने रसूल काफिर था हज़रत बिलाल को बड़ी सख़्त ईज़ायें देना शुरू कीं, सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को पता चला तो आपने बहुत बड़ी क़ीमत का सोना देकर हज़रत बिलाल को आज़ाद कर दिया सिद्दीक़े अक्बर का ये ईसार अल्लाह को बड़ा पसंद आया और क़ुरआन मकें इर्शाद फ़रमाया के वो (सिद्दीक़) महेज़ अल्लाह की रज़ा के लिए खर्च करता है और अनक़रीब वो राज़ी होगा। (क़ुरआन करीम पारा 30 रूकू 18, रूह-उल-बयान सफ़ा 661 जिल्द 4)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपना माल व ज़र सब कुछ इस्लम पर क़ुर्बान कर डाला और खुद अल्लाह तआला ने भी क़ुरआन में सिद्दीक़े अक्बर की तारीफ फ़रमाई है और फ़रमाया है के हम उसे राज़ी करेंगे फिर जो सिद्दीक़ पर राज़ी नहीं तो खुदा उस पर राज़ी नहीं।

हिकायत नम्बर(133) ग़ज़वा-ए-तबूक

ग़ज़वा-ए-तबूक के मौक़े पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सहाबा-ए-इक्रमा से फ़रमाया के अल्लाह की राह में जिहाद करने के लिए तैयार हो जाओ ये ज़माना निहायत तंगी और क़हतसाली का था यहाँ तक के दो, दो आदमी एक खजूर पर बसर करते थे सफर दूर का था और दुश्मन कसीर और कवी थे. हजरत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उस ग़ज़वे

Scanned by CamScanner

में बड़ी आली हिम्मती से खर्च किया दस हज़ार मुजाहिदीन को सामान दिया और दस हज़ार दीनार इस ग़ज़वे पर खर्च किया उनमें सबसे पहले हज़रते अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह हैं जिन्होंने अपना कुल माल हाज़िर कर दिया, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह रावी हैं के इस दिन इत्तेफाकन मेरे पास कुछ माल था मैंने सोचा के मैं आज इस क़द्र ईसार करूंगा के अबुबक्र से भी बढ़ जाऊँ चुनाँचे हज़रत उमर ने अपने कुल माल के दो हिस्से किए और एक हिस्सा घर रख कर आधा माल हुज़ूर की खिदमत में ले आए और फिर इस ख़याल से बहुत खुश हुए के मैंने आप बहुत ईसार किया है आज अबुबक्र आगे ना बढ़ सकेंगे मगर क्या देखते हैं के परवाना-ए-शमा मुसतफा सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह अपने घर का कुल माल लिए हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो गए और अपनी सारी पूंजी बारगाहे महबूब में पेश कर दी हज़रत उमर ये देखकर हैरान रह गए और सोचने लगे के इनसे बढ़ना मुश्किल है, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत सिद्दीक़े अक्बर का ईसार देखकर बहुत खुश हुए और फ़रमाया ऐ सिद्दीक़ सब कुछ यहाँ ले आए हो ये तो बताओ के घर के लिए क्या छोड़ आए हो? सिद्दीक़ अक्बर का जवाब ये था के.....

परवाने को चिराग़ तो बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिए है खुदा का रसूल बस

थोड़ी देर के बाद जिब्राईल अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! अल्लाह तआला सिद्दीक़े अक्बर पर सलाम फ़रमाता है या रसूल अल्लाह! आप सिद्दीक़े अक्बर से पूछिये के वो इस आलमे फक़ीर में मुझ(अल्लाह) से राज़ी है या नाराज़? हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ये पैग़ामे खुदा सिद्दीक़े अक्बर को सुनाया तो सिद्दीक़े अक्बर इस पैग़ाम की लज़्ज़त से आलमे वजद में आकर कहने लगे:-

असख़त अन रब्बी? अना अन रब्बी राज़ी, अना अन रब्बी राज़ी, अना अन रब्बी राज़ी "क्या मैं अपने रब से राज़ी हूँ, मैं अपने रब से राज़ी हूँ" (कंज़-उल-ईमान सफ़ा 275, तारीख-उल-खुलफा सफ़ा 31)

सबक़: सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह ने सारे सहाबा-ए-इक्राम रज़ी अल्लाह अन्हम से ज़्यादा क़ुर्बानियाँ फ़रमाई हैं और आप ने राहे हक़ में सब कुछ निछावर कर दिया था और आपका ये मर्तबा है के खुद खुदा, वो खुदा जिसकी रज़ा की सारी खुदाई तालिब है हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सदक़े में सिद्दीक़े अक्बर की रज़ा चाहता है सिद्दीक़ के

Scanned by CamScanner

लिए ख़ास अपना सलाम भेजता है फिर जो खुद बदबख़्त सिद्दीक़े अक्बर का दुश्मन है वो खुदा का दुश्मन ना हुआ तो और क्या हुआ?

हिकायत नम्बर(134), दिलैर व बहादुर

एक दिन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने लोगों से खड़े होकर फ़रमाया भला तुम जानते हो तमाम लोगों में ज़्यादा बहादुर और शुजअ कौन है? हाज़रीन ने जवाब दिया जनाब आप! फ़रमाया नहीं, बल्के सबसे ज़्यादा दिलैर व बहादुर अबुबक्र सिद्दीक़ थे उसका इम्तिहान यूं हुआ के जब बद्र का मआरका पेश आया तो हमने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए एक छप्पर तैयार किया और हुज़ूर को वहाँ बिठा कर कहा के हुज़ूर की पासबानी और हिफाज़त के लिए कौन शख़्स खड़ा होगा? ताके बुत परस्तों में से कोई शख़्स आपके पास ना पहुँच सके, मैं क़सम खा कर कहता हूँ के उस वक़्त सिर्फ अबुबक्र ही आगे बढ़े और इस बात के मुताकफ़्फ़िल होकर आपके सर मुबारक पर नंगी तलवार लिए खड़े रहे। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 310 जिल्द 2)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह सबसे ज़्यादा सखी भी और सबसे ज़्यादा जरी भी थे और इस बात के गवाह खुद हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह हैं।

हिकायत नम्बर(135) खुत्बा-ए-खिलाफत

हज़रत सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह जब तख़्त खिलाफत पर मुतमकिन हुए तो आपने एक मजमअे आम में यह तक़रीर फ़रमाई।

फरमाया- भाईयो और अज़ीज़ो! क़ुरआ इन्तिखाब मेरे नाम पड़ा और मैं तुम्हारा ख़लीफा मुक़र्रर हो गया। गो मैं तुम से बहेतर व अफ़्ज़ल ना था मगर मैं तुम्हारा सरदार मुक़र्रर कर दिया गया हूँ लेकिन मेरी सरदारी क़ैसर व किसरा जैसी सरदारी नहीं के किसी को मेरे काम में मजाल दम ज़द्न न हो, खूब समझ लो के तुम्हारे अन्दर जो क़वी है मेरे नज़दीक उस वक़्त तक कमज़ोर व ज़ईफ है जब तक के मैं ज़ईफ को उससे हक़ न दिलवा दूं और जो तुम में ज़ईफ है वो मेरे नज़दी क़वी है ता वक़्त ये के मेरी एआनत से उसे उसका हक़ ना मिल जाए देखो एक बात और है जिहाद से कभी तसाहिल ना बरतना इस तरीक़े को हर गिज़ तर्क ना करना, याद रखो जो क़ौम जिहाद को छोड़ देती है वो दुनिया में ख्वारियों और रूसवायों की नज़र हो जाती है,

Scanned by CamScanner

रास्ती और रसज़त रवी अमानत है, कजरवी और कज़िब बयानी ख़ियानत है। जब तक अल्लाह और अल्लाह के रसूल का फ़रमाँबरदार हूँ उसी वक़्त तक तुम पर मेरी इताअत वाजिब है, और जब मुझे ऐसा करते ना देखो बिला तकल्लुफ मेरी इताअत से इंकार कर दो उस वक़्त मेरी इताअत तुम पर वाजिब नहीं तुम्हारा फर्ज़ है के तुम मुझे सीधे रास्ते पर चलाओ। (तारीख़ इस्लाम सफ़ा 130)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह बइत्तिफाक़ मुसलिमीन ख़लीफात-उल-मुसलिमीन मुक़र्रर हुए और आपका मक़्सद महज़ आलाए कलमत-उल-हक़ अल्लाह और अल्लाह के रसूल के अहकाम का निफाज़ था कोई दुनयवी ग़र्ज़ ना थी और वो अपने आप को अल्लाह, रसूल का ग़ुलाम समझते थे और रिआया को आज़ादी दे दी थी के वो खिलाफे शरीअत हर्कत अपने ख़लीफा में देखें तो उसकी इताअत ना करें।

हिकयत नम्बर(136) पुर असरार ख़ादिम

इत्राफे मदीना मुनव्वरह में एक अंधी बूढ़िया औरत रहती थी जिसका कोई अज़ीज़ ना था, हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाह अन्ह हर रोज़ रात को उसके घर आते और उसका पानी भर देते और भी जो कुछ उसका काम होता कर देते एक रोज़ रात को उस बूढ़िया के घर आए तो क्या देखते हैं के उसका सारा काम कोई दूसरा शख़्स कर गया है, दूसरे रोज़ आए तो उस रोज़ भी आपसे पहले ही कोई शख़्स उसका सारा काम कर गया था, इसी तरह हज़रत उमर हर रोज़ उसकी ख़िदमत के लिए आते तो आप देखते के उस बूढ़िया का काम कोई दूसरा शख़्स कर गया है आप हैरान रह गए के ये कौन है जो मुझ से पहले ही यहाँ पहुँच कर इस बूढ़िया का पानी भी भर जाता है और उसका सारा काम भी कर जाता है चुनाँचे आप एक रोज़ बहुत जल्दी आए और इस इन्तिज़ार में रहे के देखें ये पुर असरार ख़ादिम कौन है? थोड़ी देर के बाद आने वाला आया और उस बूढ़िया का काम करने लगा, फारूक़े आज़म ये देख कर हैरान रह गए के ये पुर असरार ख़ादिम ख़लीफात-उल-मुसलिमीन हज़रते अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह हैं। (तारीख़-उल-ख़ुलफा सफ़ा 59)

सबक़:- इतना बुलंद मरतबत ख़लीफा और ये तवाज़ै व इज्ज़ा-ए-ख़िदमत के एक अंधी बूढ़िया की ख़िदमत अपने ज़िम्मे ले ली, ये बात की निशानी है के सिद्दीक़े अक्बर रजी अल्लाह अन्ह सच्चे

Scanned by CamScanner

ख़लीफा-ए-रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं और आप ही खिलाफत के हक़दार थे वरना दुनिया परस्त और जाह तलब बादशाहों में ऐसी बातें कब नज़र आती हैं? और मालूम हुआ के इंसानों का अमीर असल में मुसलमानों का ख़ादिम होता है और उसका फर्ज़ होता है के वो अपनी अमीर ग़रीब सारी रिआया की ख़बर रखे और सबके काम आए।

हिकायत नम्बर(137) फिराक़े महबूब

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से इस क़द्र मोहब्बत थी के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के विसाल शरीफ के बाद आप फिराक़े महबूब के सदमे से बेचैन रहने लगे और थोड़ी मुद्दत के बाद ही आप बीमार पड़ गए आपके इलाज के लिए एक तबीब को बुलाया गया, तबीब ने बड़े ग़ौर से देखा और कहा के ये मरीज़ किसी की मोहब्बत में बीमार है और उनका महबूब उनसे जुदा है इसी फिराक़ महबूब के ग़म में ये बीमार हुए उनका इलाज बजुज़ दीदारे यार के और कुछ नहीं जहाँ तक हो सके उनके महबूब को उन्हें दिखाओ। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 90)

सबक़:- सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह सच्चे महबूब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सच्चे मुहिब्ब व तालिब थे।

हिकायत नम्बर(138) दीदारे महबूब

हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह ने एक रात ख़्वाब देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए और आपके बदन मुबारक पर दो सफेद कपड़े थे थोड़ी देर मे वो दोनों सफेद कपड़े सब्ज़ रंग के हो गए और इस क़द्र चमकने लगे के निगाह उन पर ना ठहर सकती थी फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सामने तशरीफ़ लाकर हज़रत अबुबक्र से अस्सलाम अलेकुम फ़रमाया और मुसाफह किया और अपना नूरानी हाथ हज़रत अबुबक्र के सीने पर रखा जिसके सबब सारी क़ल्ब और सीने की तकलीफ दूर हुई फिर फ़रमाया के ऐ अबुबक्र! क्या अभी हम से मिलने का वक़्त नहीं आया? हज़रत अबुबक्र ये बात हुज़ूर से सुनकर इस क़द्र रोए के सारे घर वालों को ख़बर हो गई, फिर अर्ज़ किया *व शरफ़ा इलेका या रसूल अल्लाह* "या रसूल अल्लाह! देखिये आपकी मुलाक़ात का

Scanned by CamScanner

शरफ़ कब मुझे हासिल होता है।" हज़रत अबुबक्र का फिराक़ में रोना सुनकर हुज़ूर ने फ़रमाया, घबरओ नहीं अब हमारी तुम्हारी मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है, इस ख़्वाब को देखकर हज़रत अबुबक्र बहुत खुश हुए। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 92)

सबक़: सिद्दीक़े अक्बर को हुज़ूर से और हुज़ूर को सिद्दीक़ से बड़ी मोहब्बत थी।

हिकायत नम्बर(239) वसीयत

सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपने आख़री मर्ज़ में हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह को बुलाया और वसीयत फ़रमाई के ऐ अली! जब मेरी वफात हो जाए तो मुझे तुम अपने हाथों से ग़ुस्ल देना क्योंके तुमने उन हाथों से रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ग़ुस्ल दिया है फिर मुझे मेरे पुराने कपड़ों में कफन देकर उस हुजरह शरीफ के सामने रख देना जिसमें हुज़ूर का मज़ार है फिर अगर बग़ैर कुंजियों के क़ुफ़्ल खुद खुल जाए तो अन्दर दफ़्न कर देना वरना आम मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में ले जाकर दफ़्न करना। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 91)

सबक़: सिद्दीक़े अक्बर जिनके विसाल में जान दे रहे हैं चाहते हैं के विसाल के बाद मुझे उसी महबूब की आग़ोशे रहमत में जगह मिले। मालूम हुआ के सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दिलो जान से चाहने वाले सच्चे मुहिब्ब थे।

हिकायत नम्बर(140) अबु उबैदा का ख़्वाब

जिस वक़्त सहाबा-ए-क्राम का लश्कर मुल्क शाम के फतह करने में मश्ग़ूल था और दमिश्क़ फतह करने का मनसूबा दरपेश था मगर दमिश्क़ के फतह करने में किसी क़द्र दिक्कतें पेश आ रही थीं और सहाबा-ए-क्राम को एक क़िसम का तरद्दुद लाहक़ था ऐसी हैरानी के वक़्त हज़रत अबु उबैदा रज़ी अल्लाह अन्ह ने ख़्वाब में देखा के मेरे खेमे में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए और अबु उबैदा को बशारत दी के ऐ अबु उबैदा! मुसलमानों से कह दो के आज ये मुक़ाम फतह हो जाएगा, इतमिनान रखो ये फ़रमा कर हुज़ूर ने बहुत जल्द वापसी का अज़्म फ़रमाया हज़रत अबु उबैदा ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! इस वक़्त हुज़ूर को जल्दी इतनी क्यों है? फ़रमाया ऐ

Scanned by CamScanner

अबु उबैदा! आज अबुबक्र की वफात हो गई है मैं उनका जनाज़ा तैयार छोड़ कर आया हूँ मुझे अभी अबुबक्र के जनाज़े पर वापस जाना है ये फ़रमा कर हुज़ूर फौरन वापस तशरीफ़ ले गए। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 39)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह से एक ख़ास तअल्लुक़ था और हुज़ूर की यहाँ भी वहाँ भी सिद्दीक़े अक्बर पर एक ख़ास नज़र रही है।

हिकायत नम्बर(141) जनाज़ा

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपने विसाल मुबारक से पहले हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह को फ़रमाया था के मेरे जनाज़े को तैयार करके हुजरह शरीफ जिसमें हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का मज़ार अनवर है के सामने रख कर अर्ज़ करना अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह, ये अबुबक्र आपके दरवाज़े पर हाज़िर है फिर जैसा हुक्म हो करना, चुनाँचे आपकी वसीयत के मुताबिक़ आपके जनाज़े को हुजरह के सामने रख कर अर्ज़ किया गया या रसूल अल्लाह! ये आपके यारे ग़ार अबुबक्र आपके दरवाज़े पर हाज़िर हैं और उनकी तमन्ना आपके हुजरे में दफ़्न होने की है अगर इजाज़त हो तो हुजरह शरीफ में दफ़्न किया जाए, ये सुनकर हुजरह शरीफ का दरवाज़ा जो पहले बन्द था खुद ब खुद खुल गया और आवाज़ आई।

अदखिलू अलहबीबा इलल हबीबी फइन्नल हबीबा इलल हबीबी मुश्ताकुन

"हबीब को हबीब से मिला दो क्योंके हबीब को हबीब से मिलने का इश्तियाक़ है"

जब हुजरह शरीफ से हज़रत अबुबक्र रज़ी अल्लाहो अन्ह के दफ़्न करने की इजाज़त हुई तो जनाज़ह मुबारक को अन्दर ले गए और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के कंधे मुबारक के क़रीब आपको दफ़्न कर दिया गया। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 92)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह की बुलंद बाला शान इसी बात से ज़ाहिर है के आप ही सानी असनेन फी-अलग़ार हैं और आप ही सानी असनेन फी-अलमज़ार भी हुए, मालूम हुआ के नबियों के बाद सिद्दीक़े अक्बर का कोई सानी नहीं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(142) उमर बिन अलख़त्ताब रज़ी अल्लाहो अन्ह

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक दिन अल्लाह से ये दुआ की ऐ अल्लाह! उमर बिन ख़त्ताब के वजूद से इस्लाम को इज़्ज़त दे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दुआ हो और फिर क़बूल ना हो चुनाँचे इधर तो ये दुआ हुई और उधर हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को क़त्ल कर देने के इरादे से घर से निकले, रास्ते में आपको एक शख़्स ने मिल कर पूछा के उमर! तुम कहाँ जाते हो? कहा मोहम्मद(सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) को क़त्ल करने, उसने कहा, भला अगर तुम ने ऐसा किया तो बनी हाशिम से किस तरह अमन में रह सकते हो? और पहले अपने घर की तो ख़बर लो, उमर! तुम्हारी बहन फातिमा और तुम्हारे बहनोई सईद बिन ज़ैद दोनों के दोनों मुसलमान हो चुके हैं, हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह उस शख़्स की ये गुफ़्तगू सुनकर ग़ुस्से में थर थर कांपने लगे और बोले अच्छा तो मैं उन ही दोनों का काम तमाम करता हूँ, ये कहकर आप अपनी बहन के घर आए और थोड़ी देर डेवढ़ी में खड़े होकर अपनी बहन की आवाज़ को सुना और दफअतन घर के अन्दर चले गए और बहन से कहने लगे के ये आवाज़ कैसी थी जो उस वक़्त मैंने तुम दोनों से सुनी? उस वक़्त हज़रत उमर की बहन के घर में एक शख़्स बैठे उनकी बहन और बहनोई को सूरते ताॅहा पढ़ा रहे थे उन्होंने जूंही हज़रत उमर की आहट पाई फौरन मकान के एक गोशे में छुप गए जब हज़रत उमर ने ग़ज़ब के लहजे में ये अलफाज़ कहे तो आपके बहनोई सईद कहने लगे, उमर! भला अगर हम हक़ पर हो तो भी आप हमें बुरा समझेंगे? इस पर हज़रत उमर को और ज़्यादा ग़ुस्सा आया और आपने अपने बहनोई को बड़े ज़ोर से धक्का दिया और दो चार ज़ोर से घूंसे भी मार दिए, आपकी बहन फातिमा अपने शौहर की ये कैफियत देखकर बड़ी बेताबी से उठीं और भाई को ख़ाविंद से अलेहदा किया मगर हज़रत उमर ने उन्हें भी मार कर अपने दिल का खूब ग़ुबार निकाला यहाँ तक के उनका चेहरा लहू लुहान हो गया, जब हज़रत उमर उन दोनों से अलेहदा हुए तो बहन से कहा लाओ मुझे वो सहीफा तो दिखाओ जिसे तुम पढ़ रही थीं, फातिमा ने कहा भाई इसे पाक लोग छू सकते हैं पहले आप पाक हो लें, हज़रत उमर उठे और बहन की हिदायत के मुताबिक़ वज़ू किया और वज़ू

Scanned by CamScanner

करके इस सहीफे को हाथ में लिया, इसमें लिखा था *ताॅहा मा अनज़लना अलेकल क़ुरआना लितशक़ा इल्ला तज़किरातन लिमंयख़शा* आप इन आयतों को पढ़ते पढ़ते *इन्नी अन्नल्लाहा लाइलाहा इल्ला अना फआबूदूनी अक़ीमिस्सलाता लिज़िक्री* तक पहुँचे थे के कलामे इलाही आप पर अपना असर डाल गया और आपने उसी वक़्त बचश्म तर फ़रमाया मुझे फौरन मोहम्मद (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) के पास ले चलो, हज़रत उमर की गुफ़्तगू सुनकर उन सहाबी को जो आपके बहन बहनोई को तालीम दे रहे थे इतमिनान हुआ और अन्दर से निकल कर कहा, उमर! तुम्हें बशारत हो के मैंने जनाब रसूले करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को फ़रमाते सुना है के आप जनाब इलाही में यूं दुआ करते हैं:

"इलाही उमर बिन अलख़त्ताब के वजूद से इस्लाम को इज़्ज़त दे।"

उसके बाद हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हुज़ूर हाज़िर होने को चले दरवाज़े पर देखते हैं के हज़रत हम्ज़ा और चन्द आदमी खड़े हैं उन लोगों ने हज़रत उमर को देखा तो डर गए और हज़रत उमर की दहशत उन पर तारी हो गई, हज़रत हम्ज़ा ने कहा खुदा तआला अगर हज़रत उमर के साथ भलाई करना चाहता है तो उसे इस्लाम की हिदायत करेगा और अगर खुदा ने उसके अलावा कोई दूसरी बात चाही है तो उमर को क़त्ल कर डालना हम पर कोई मुश्किल नहीं है, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को हज़रत उमर के आने की ख़बर पहुँची तो आप बाहर तशरीफ़ लाए और उनके कपड़ों को पकड़ कर फ़रमाया, उमर! क्या तुम अभी भी बाज़ ना आओगे फिर आपने वही दुआ माँगी और फ़रमाया इलाही उमर बिन ख़त्ताब के वजूद से इस्लाम को इज़्ज़त दे।" जूंही हज़रत की ज़बान से ये कलमात निकले, हज़रत उमर बेसाख़्ता पुकार उठे:-

अशहद अन लाइलाहा इल्लल्लाहू व अशहद अन्नका रसूल अल्लाह

हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह का एलाने हक़ सुनते ही मौजूदा मुसलमानों ने ऐसे ज़ोर से अल्लाह अक्बर का नअरा बुलंद किया के तमाम मस्जिद वालों ने सुन लिया। (तारीख-उल-खुलफा सफ़ा 79, नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 313, जिल्द 2)

सबक़:- सारे सहाबा-ए-इक्राम अलेहिमुर्रिज़वान बहुत बड़ी शान, और बड़े रूत्बे के मालिक हैं मगर हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह की ये एक इम्तियाज़ी शान है के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने

Scanned by CamScanner

हज़रत उमर को अल्लाह से माँग कर लिया है और ज़ाहिर है के जो चीज़ ख़्वाहिश व तमन्ना से हासिल की जाए वो बड़ी अज़ीज़ और महबूब होती है फिर जो लोग हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह के खिलाफ हो वो गोया मरज़ी-ए-मुसतफा के खिलाफ हैं।

हिकायत नम्बर(143) एलाने हक़

हुज़ूर अलेहिस्सलाम पर जब हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह ईमान ले आए और मुसलमान हो गए तो इस्लाम की शौक़त को चार चाँद लग गए और कुफ्र के घर सफे मातम बिछ गई, मुसलमानों की तअदाद भी बहुत थोड़ी थी और मुसलमान अपने फ़रायज़ की अदायगी अलल ऐलान ना कर सकते थे मगर हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह के दाख़िले इस्लाम होते ही मुसलमानों में एक ख़ास जज़्बा पैदा हो गया और हज़रत उमर ने एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह हम दीने हक़ पर हैं और कुफ़्फार बातिल पर तो हम अपने दीन को क्यों छुपाएँ? या रसूल अल्लाह! मुझे उस ज़ात की क़सम जिसने आपको दीने बरहक़ के साथ भेजा है मुझ से वो मजलिस कभी बाक़ी नहीं रह सकती जिसमें कुफ्र की मद के लिए ना बैठा था मगर अब इस्लाम के इज़हार व इम्दाद के लिए ज़रूर बैठूंगा, इसके बाद हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह मजलिस नबव्वी से बाहर निकले और खाना कअबा का तवाफ किया, आप कअबे के इर्दगिर्द घूम रहे थे और कलमा शरीफ ज़ोर ज़ोर से पढ़ रहे थे, मुशरिकीने मक्का ये सुनकर आप झपट पड़े और सब ने मिल कर हमला किया हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने तन तनहा सबका मुक़ाबला किया और उनमें से एक मुशरिक को गिरा कर उसके सीने पर चढ़ कर अपनी दोनों उंगलियाँ उसकी दोनों आँखों में डाल दीं जूंही वो शख़्स चीखा तमाम मुशरिकीन हज़रत उमर के ख़ौफ से भाग लिए और फिर हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह ने अलल ऐलान हर मजलिस में आवाज़ हक़ बुलंद की और कुफ़्फार को चेलेंज दिया के जो शख़्स नबी बरहक़ और दीन हक़ की मुख़ालफत करेगा मेरी तलवार उसका फैसला करेगी और फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! कोई मजलिस बाक़ी नहीं रही जिसमें मैंने एलान हक़ ना कर दिया हो, ये सुनकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम बहुत खूश हुए और कअबा की तरफ़ ले आपके आगे आगे तो हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह चले जाते थे और पीछे पीछे हज़रत हम्ज़ा रज़ी अल्लाहो अन्ह, हत्ता के

Scanned by CamScanner

आपने ख़ाना कअबा का ऐलानिया तवाफ किया और मुसलमानों ने खुल्लम खुल्ला नमाज़ पढ़ी। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 314 जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह की ज़ात ग्रामी से इस्लाम को ग़ल्बा हुआ और ये सारी बरकतें हुज़ूर ही की थीं मगर उनका ज़हूर हज़रत उमर के वजूद से हुआ फिर जिसे हज़रत उमर से कोई शिकायत है तो उसे गोया ग़ल्बा-ए-इस्लाम ही की शिकायत है।

हिकायत नम्बर(144) कुफ़्ले जहन्नुम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने एक दफा हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से कहा, ऐ कुफ़्ल जहन्नुम के बेटे! हज़रत अब्दुल्लाह अपने वालिद माजिद के मुतअल्लिक़ ये जुमला सुनकर बड़े परेशान हुए और घर जाकर हज़रत उमर रज़ी अल्लाह तआला अन्ह से कहा अब्बा जान! अब्दुल्लाह बिन सलाम ने आपको कुफ़्ल जहन्नुम कहा है। हज़रत उमर ने ये बात सुनी तो अब्दुल्लाह बिन सलाम के पास पहुँचे और दरयाफ़्त फ़रमाया के आपने मेरे हक़ में ये अलफाज़ क्यों इस्तेमाल फ़रमाया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम कहने लगे इसकी वजह ये है के मुझे मेरे बाप ने और उन्हें उनके आबाओ अजदाद ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से ख़बर दी है के हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया मुझे जिब्राईल ने ख़बर दी है के पैग़म्बर आख़िर-उज़-ज़माँ हज़रत मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उम्मत में एक शख़्स पैदा होगा जिसे उमर बिन ख़त्ताब कहा जाएगा मुबारक नफ़्स जब तक उम्मते मोहमदिया में रहेगा तब तक जहन्नुम का दरवाज़ा बन्द रहेगा गोया वो जहन्नुम का कुफ़्ल होगा लेकिन जब उसका इन्तिक़ाल हो जाएगा तो जहन्नुम का दरवाज़ा खुल जाएगा और लोग अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों में मुबतला होकर इधर उधर परेशान होकर मुतफर्रिक़ हो जाऐंगे। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 318, जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाह तआला अन्ह की ज़ाते ग्रामी पर गुस्ताख़ाना हमले करने वाला अपने लिए जहन्नुम का कुफ़्ल खोलता है।

हिकायत नम्बर(145) दबदबा-ए-फ़ारूक़

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक जंग से वापस तशरीफ़ लाए तो एक लड़की ने आकर अर्ज़ की या रसूल अल्लाह!

Scanned by CamScanner

मैंने नज़्र मानी थी के अल्लाह तआला मैदान जंग से आपको बखैरियत वापस लाए तो मैं आपके सामने दफ बजाऊंगी और गाऊंगी, हुज़ूर ने फ़रमाया, अच्छा अगर तुम ने यही नज़्र मानी है तो अपनी नज़्र पूरी कर लो चुनाँचे वो लड़की दफ बजाने लगी। इतने में हज़रत अबुबक्र रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तशरीफ़ लाए और वो लड़की दफ बदस्तूर बजाती रही फिर हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी तशरीफ़ ले आए तो उस लड़की ने फौरन दफ को रानों के नीचे छुपा लिया और खुद उस दफ के ऊपर बैठ गई। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ये बात देख फ़रमाने लगे, उमर शैतान तुझ से बहुत डरता है। ये लड़की मेरे सामने दफ बजाती रही मगर तुझे देखकर उसने दफ को छुपा लिया (मिशकात शरीफ, सफ़ा 550)

सबक़:- ये हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का दबदबा है के शैतान आपके वजूद से डरता है बल्के वो आपके नाम भी सुन ले तो कांप उठता है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुख़्तार हैं के जिसको चाहें और जिस बात की चाहें इजाज़त दे दें।

हिकायत नम्बर(146) ग़ैरते फारूक़

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जब मैराज से वापस तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया, मैंने जन्नत में एक बहुत बड़ा महल देखा है जिसके सहन में एक औरत बैठी वज़ू कर रही थी, मैंने पूछा ये महल किस का है? तो मुझे बताया गया के ये महल उमर का है।

ऐ उमर! मैं महल के अन्दर जाता मगर तुम्हारी ग़ैरत को याद कर के मैं अन्दर नहीं गया और वापस चला आया, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह क्या मैं आप पर ग़ैरत करता? मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों या रसूल अल्लाह! ऐसा कब हो सकता है फिर हज़रत उमर रोने लगे। (मिशकात शरीफ, सफ़ा 549, तारीख-उल-खुलफा सफ़ा 83)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह इतने ग़यूर थे के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जो सबके आक़ाए मौला हैं आपकी ग़ैरत की गवाही दे रहे हैं फिर जो हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ज़ाते ग्रामी पर गुस्ताख़ाना हमले करे वो किस क़दर बेग़ैरत है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(147) अद्ले फारूक़

एक दफा का ज़िक्र है के हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मदायन किसरा में एक लश्कर भेजा, जब लश्कर दजला के किनारे पर पहुँचा तो वहाँ कोई जहाज़ और कश्ती ना थी जिसके ज़रिये पार होते, सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जो इस लश्कर के जरनैल थे और ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने लश्कर से आगे बढ़कर फ़रमाया के ऐ दरया! अगर तू हुक्म इलाही से चलता है तो हम तुझे हुरमत नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और अद्ले उमर का वास्ता देते हैं तो हमें रास्ता दे दे ताके हम बाआसानी पार हो जाएँ ये कहकर उन दोनों बाहिम्मत जरनैलों ने अपने घोड़े दरया में डाल दिए और जब जान निसार और वफादार लश्कर ने अपने सरदारों के घोड़े दरया में देखे तो सब ने दफअतन घोड़ों की बागें छोड़ दीं और दरया में कूद पड़े, दरया ने उन पाक लोगों को रास्ता दे दिया और उनके घोड़ों के खुर तक पानी से तर ना हुए और सही सालिम पार हो गए। (नज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 319, सफ़ा 2)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के अद्ल की बरकत थी जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के तुफैल ज़हूर पज़ीर हुई और बग़ैर किसी जहाज़ व कश्ती के सारा लश्कर दरया से पार हो गया और ये भी मालूम हुआ के सच्चे मुसलमान अपने नबी की हुरमत और अपने अमीर की अदालत पर एतमाद रखते हैं और बड़ी से बड़ी रूकावट को भी ख़ातिर में नहीं लाते।

हिकायत नम्बर(148) ग़ैबी आवाज़

हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने एक मुल्क में अपना लश्कर जिहाद के लिए भेजा और उस लश्कर का अफ़्सर हज़रत सारिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को मुक़र्रर फ़रमाया, हज़रत सारिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने लश्कर को लेकर उस मुल्क में गए और काफिरों से जिहाद करने लगे। इधर मदीना मुनव्वरह में एक रोज़ खुत्बा देते हुए हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आवाज़ दी "ऐ सारिया पहाड़ के साथ हो और पहाड़ को अपने पीछे रखो।" लोग हैरान हुए के खुत्बे के अन्दर ये बे जोड़ बात कैसी? सारिया तो यहाँ से दूर किसी मुल्क में लड़ रहा है फिर यहाँ उसे आवाज़ देने का क्या मअनी? थोड़े दिनों के बाद मैदाने जिहाद से

Scanned by CamScanner

एक क़ासिद आया और उसने बताया के हमारा मुक़ाबला काफिरों से हो रहा था और काफिर हम पर ग़ालिब आ रहे थे के हमें एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी "ऐ सारिया पहाड़ के साथ रहो और पहाड़ को अपने पीछे रखो।" चुनाँचे हम ने इस हिदायत पर अमल किया और पहाड़ को पीछे रखकर हम ने अपनी पुश्त को महफूज़ कर लिया और फिर दुश्मन से डट कर मुक़ाबला किया तो दुश्मन शिकस्त खा गया और अल्लाह तआला ने हमें फतह दी।

सबक़:- फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के ज़माने में फारूक़े आज़म की बरक़त से मुसलमानों को बड़ी फतूहात हासिल हुई और ये भी मालूम हुआ के खुदा के मक़्बूलों की नज़र के सामने कोई चीज़ हिजाब नहीं बनती और वो दूर की चीज़ें भी देख लेते हैं और अपने बेकसों की मदद फ़रमाते हैं और उनकी इम्दाद से बिगड़े हुए काम संवर जाते हैं और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले दूर की आवाज़ भी सुन लेते हैं जैसे के हज़रत सारिया ने हज़रत की आवाज़ सुन ली।

हिकायत नम्बर(149) नज़रे ईमान

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दोरे खिलाफ में एक ख़्वाब देखा के मस्जिद नबवी में खुद हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम फज्र की नमाज़ पढ़ा रहे हैं और हज़रत अली भी हुज़ूर की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ रहे हैं, सलाम फैरने के बाद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मस्जिद की दीवार से पुश्त अनवर लगा कर बैठ गए इतने में एक औरत खजूरों का एक तबाक़ लेकर हाज़िर हुई और हुज़ूर के सामने वो तबाक़ रख दिया, हुज़ूरे अकरम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उसमें से एक खजूर उठाई और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को अता फ़रमाई और बाक़ी खजूरें दूसरे नमाज़ियों में तक़सीम फ़रमा दीं। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की आँख खुल गई और आपने देखा के ज़बान पर वही खजूर का ज़ायक़ा और शीरनी मौजूद है, ठीक सुबह के वक़्त आपकी आँख खुली आप फौरन मस्जिद में पहुँचे। आपने देखा के हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह नमाज़ पढ़ा रहे हैं, आप जमाअत में शामिल हो गए, सलाम फैरने के बाद हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह उसी तरह मस्जिद की दीवार से तकिया लगा कर बैठ गए जिस तरह हज़रत अली ने रात को ख़्वाब में हुज़ूर को देखा था। थोड़ी देर के बाद एक औरत भी खजूरों का

Scanned by CamScanner

एक तबाक़ लेकर आ गई और फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में पेश कर दिया। हज़रत उमर ने भी इस तबाक़ से एक खजूर उठाई और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को दे दी और बाक़ी सब खजूरें दूसरे नमाज़ियों में बाँट दीं, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह से कहा ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! एक खजूर मुझे भी दे देते तो क्या बात थी हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया: ऐ अली अल-मुर्तज़ा! अगर रात रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम आपको दूसरी खजूर इनायत फ़रमाते तो उस वक़्त मैं भी आपको दूसरी खजूर दे देता जब सरकार ने ना दी तो मैं कैसे दूं?

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बोले ऐ उमर! ये ख़्वाब का वाक़ेया आपको कैसे मालूम हो गया? हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया ऐ अली! बन्दा-ए-मोमिन नूरे ईमान से सब कुछ देख लेता है। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 157, जिल्द 2)

सबक़:- जिस मुसल्ले पर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ख़्वाब में नमाज़ पढ़ाते देखा उसी मुसल्ले पर हज़रत फारूक़े आज़म को जागते में नमाज़ पढ़ाते देख लिया, गोया फारूक़े आज़म हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सच्चे जानशीन हैं और ये भी मालूम हुआ के मोमिन की नज़र से कोई बात छुपी नहीं रहती फिर जो बारगाहे ईमान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ यूं कहे के उनको दीवार के पीछे की भी ख़बर ना थी किस क़द्र बेख़बर और बे इल्म है।

हिकायत नम्बर(150) फैसला

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ज़माने में एक यहूदी और एक मुनाफिक़ में किसी बात पर झगड़ा पैदा हो गया, यहूदी चाहता था के जिस तरह भी हो मैं उसे हज़रत मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में ले चलूं चुनाँचे वो कोशिश करके उसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बारगाह अदालतत में ले आया और हुज़ूर ने वाक़ेयात सुनकर फैसला यहूदी के हक़ में दे दिया। वो मुनाफिक़ यहूदी से कहने लगा के मैं तो उमर के पास चलूंगा और उनका फैसला मंज़ूर करूंगा, यहूदी बोला, अजब उल्टे आदमी हो, कोई बड़ी अदालत से होकर छोटी अदालत में भी जाता है? जब तुम्हारे पैग़म्बर मोहम्मद (सल-लल्लाहो

Scanned by CamScanner

अलेह व सल्लम) फैसला दे चुके तो अब उमर के पास जाने की क्या जरूरत है? मगर वो मुनाफिक़ ना माना और इस यहूदी को लेकर हज़रत उमर के पास आया और हज़रत उमर से फैसला तलब करने लगा, यहूदी बोला जनाब! पहले ये बात सुन लीजिए के हम इससे क़ब्ल मोहम्मद (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) से फैसला ले आए हैं और उन्होंने फैसला मेरे हक़ में दिया है मगर ये शख़्स इस फैसले पर मुतमईन नहीं और अब यहाँ आपके पास आ पहुँचा है, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ये बात सुनी तो आपने फ़रमाया, अच्छा ठहरो मैं अभी आया और अभी तुम्हारा फैसला करता हूँ, ये कहकर आप अन्दर तशरीफ़ ले गए और फिर एक तलवार लेकर निकले और उस मुनाफिक़ की गर्दन पर ये कहते हुए मारी के, "जो हुज़ूर का फैसला ना माने उसका फैसला ये है।"

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तक ये बात पहुँची तो आपने फ़रमाया वाक़ई उमर की तलवार किसी मोमिन पर नहीं उठती उसके बाद फिर अल्लाह तआला ने भी ये आयत नाज़िल फ़रमा दी।

फला व रब्बिका ला योमिननूना हत्ता यूहक्कीमूनाका फीमा शजरा बेनाहुम

"तेरे रब की क़सम! ये लोग कभी मोमिन नहीं हो सकते जब तक तुझे या रसूल अल्लाह अपना हाकिम ना मानें और तेरा फैसला तसलीम ना करें।" (तारीख-उल-खुलफा सफ़ा 88)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह का इस बात पर यक़ीन था के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम हाकिमे आला हैं और उनका फैसला ही मोमिन के लिए वाजिब-उल-अमल है और जो उनका फैसला तसलीम ना करे वो मुजरिम है और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह के अमल की रसूल खुदा सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम भी ताईद फ़रमाते हैं और खुद खुदा भी ताईद फ़रमाता है।

हिकायत नम्बर(151) पानी पर हकूमत

मिस्र का दरयाए नील हर साल खुश्क हो जाता था और ता वक़्त ये के कुंवारी खूबसूरत लड़की की भेंट ना ले लेता, इसी तरह खुश्क रहता और जारी ना होता था हत्ता के हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह के अहेदे खिलाफ़ में मिस्र फतह हुआ और हज़रत उमरो व बिन अलआस रज़ी अल्लाहो अन्ह वहाँ के गवरनर मुक़र्रर हुए, कुछ अर्से के बाद हज़रत उमरो बिन अलआस ने

Scanned by CamScanner

सुना के दरया खुश्क हो गया है आपने लोगों से दरयाफ़्त किया के क्या हर साल ये दरया इसी तरह खुश्क हो जाता है। लोगों ने बताया के हाँ जनाब! इसी तरह खुश्क हो जाता है और जब तक हम एक कुंवारी खूबसूरत लड़की इसकी भेंट ना चढ़ायें ये जारी नहीं होता, गवरनर साहब ने फ़रमाया के ये साल ब साल एक बे गुनाह लड़की का ना हक़ क़त्ल व खून इस्लाम को मंज़ूर नहीं, सब्र करो और देखो खुदा को क्या मंज़ूर है और फिर आपने उसी वक़्त एक चिट्ठी मदीना मुनव्वरह में हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह की तरफ़ लिखी जिस में दरया के खुश्क हो जाने और हर साल एक कुंवारी लड़की के खून का मुफस्सिल वाक़ेया लिखा। उनका ये खत जब हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की ख़िदमत में पहुँचा और आपने कैफियत मालूम की तो उसी वक़्त आपने एक ख़त दरया के नाम और एक गवरनर साहब के नाम तहरीर फ़रमाया, जो ख़त दरया के नाम था उसका मज़मून ये था:

मिन अब्दिल्लाही उमरा बिन अलख़त्ताब इला नीली मिस्र अम्मा बअदा इन कुनता तजरी बिअमरिल्लाही फइन्ना नसअलू इज़्ज़ाअका मिनल्लाही वइन कुन्ता तजरी मिन इंदिका फला हाजता लना बिका।

"ये ख़त अल्लाह के बन्दे उमर बिन ख़त्ताब की तरफ़ से दरयाए नील के नाम है, ऐ दरया! अगर तू खुदा के हुक्म से बहता था तो हम अब भी खुदा ही से तेरी जारी होना माँगते हैं और अगर तू खुद अपनी मर्ज़ी से बहता है और अपनी ही मर्ज़ी से रूक जाता है तो हमें तेरी कोई परवाह और ज़रूरत नहीं है।"

फिर हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने गवरनर मिस्र के नाम ये हुक्म नामा लिखा के बजाए किसी लड़की के मेरा ये ख़त दरया के अन्दर खुश्क रेत में जाकर डाल देना,

अीमर-उल-मोमिनीन का ये अनोखा इर्शाद सुनकर सारे मिस्र में धूम मच गई, लाखों आदमी ये मंज़र देखने को दरया पर जमा हो गए, मजमअे कसीर के साथ गवरनर मिस्र भी हज़रत फारूक़ का ख़त लेकर दरया प पहुँचे और फिर दरया के अन्दर जाकर फारूके आज़म का हुक्म नामा दरया को पहुँचा कर वहाँ से बाहर चले आए, चन्द लम्हों के बाद दरयाए नील खुद ब खुद इस ज़ोर व शोर से जारी हुआ के कभी भेंट लेकर भी ऐसा जारी ना हुआ था और हर साल से इस साल छः गज़ पानी ज्यादा ऊँचा आया फिर इस दिन से ऐसा जारी हुआ के आज तक बन्द होने का नाम ना लिया। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 90)

Scanned by CamScanner

सबक़:- फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह खुदा व मुसतफा के सच्चे ताबअेदार थे और कमाल इत्तिबा का ये नतीजा था के दरया तक आपके फ़रमाँबरदार थे और आपकी हकूमत पानी पर भी जारी थी और एक आज हम भी हैं के खुदा और रसूल से मुंह मोड़ लिया जिसकी पादाश में पानी सैलाब की शक्ल में हमें हलाक कर रहा है।

हिकायत नम्बर(152) फक़ीर सिफ़्त बादशाह

बज़्चमहर ने हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह की ख़िदमत में अपना एक क़ासिद भेजा ताके वो देखकर आए के मुसलमानों के इतने बड़े जलील-उल-क़द्र बादशाह की सूरत व सीरत कैसी है? चुनाँचे वो क़ासिद मदीना मुनव्वरह में पहुँचा तो मुसलमानों से पूछने लगा के *ऐन-उल-मुल्क* यानी तुम्हारा बादशाह कहाँ है? मुसलमानों ने जवाब दिया वो हमारा बादशाह नहीं बल्के हमारा अमीर है अभी अभी घर से बाहर तशरीफ़ ले गया है, वो क़ासिद भी पीछे गया और क्या देखता है के हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह एक जगह धूप में सो रहे हैं दुर्रह सर के नीचे रखा है और पैशानी नूरानी से ऐसा पसीना बहा है के ज़मीन तर हो गई है, क़ासिद ने जब ये हाल देखा तो उसके दिल पर बड़ा असर हुआ और सोचने लगा के तमाम दुनिया के बड़े बड़े बादशाह जिसकी हैबत से लरज़ह बरइंदाम हैं तअज्जुब है के वो इस फक़ीराना सिफ़्त पर है फिर अर्ज़ करने लगा, ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! आपने अद्ल किया उस वजह से बे खटके सोए, और हमारा बादशाह ज़ुल्म करता है इसलिए ख़्वाह-म-ख़्वाह हरासाँ रहता है, मैं गवाही देता हूँ के तुम्हारा दीन सच्चा है अगर मैं क़ासिद बन कर ना आया होता तो अभी मुसलमान हो जाता मगर अब मैं फिर हाज़िर होकर मुसलमान होंगा। (कीमियाए सआदत, सफ़ा 267)

सबक़:- फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह बावजूद इतनी बड़ी बुलंद शान के अपना मिज़ाज ज़ाहिदाना और फक़ीराना रखते थे और अल्लाह वालों की यही सीरत होती है।

हिकायत नम्बर(153) मुक़द्दस नक़ाब पोश

मदीना मुनव्वरह का मुक़द्दस व मुतहर शहर रहमत है और फारूक़े आज़म उमर बिन अलख़त्ताब रज़ी अल्लाह अन्ह मसनद नशीन ख़िलाफत हैं सरे अनवर पर ख़िलाफत नबव्वी का ताज सज रहा है और हर तरफ़ अद्ल

Scanned by CamScanner

इंसाफ का डंका बज रहा है, आधी रात का वक़्त है, दरया हबीब के खूश नसीब बाशिन्दे अपने अपने घरों में इसत्राहत फ़रमा हैं इस आधी रात के वक़्त इस पाक शहर में एक नक़ाब पोश अपने एक साथी के हमराह शहर का चक्कर लगा रहा है और हर गली कूचे और एक एक मकान को बग़ौर देखता हुआ जा रहा है अचानक उसने एक मकान से धुंदली सी रोशनी निकलती देखी, नक़ाब पोश वहाँ रूक गया और साथी से मुख़ातिब होकर कहने लगा:-

नक़ाब पोश: तुम ने देखा इस मकान से रोशनी आश्कार है और मेरे ख़याल में साहबे ख़ाना भी बैदार है।

साथी: हाँ हुज़र ऐसा ही है और सुनिए तो बच्चों के रोने की भी आवाज़े आ रही है और देखिये ये ग़ालिबन बच्चों की माँ है जो उन्हें समझा रही है और चुप करा रही है।

नक़ाब पोश: ख़ामोश रह कर सुनो और ग़ौर करो, ये क़िस्सा क्या है? चुनाँचे वो नक़ाब पोश और उसका साथी हमातन गोश होकर मकान की आवाज़ सुनने लगे और उन्होने सुना के मकान के अन्दर बच्चों और उनकी माँ में ये गुफ़्तगू हो रही है।

एक बच्चा: अम्मी जान! कितना वक़्त गुज़र गया है? आधी रात होने को आई और अभी तक ना हंडिया पकी और ना हम ने कुछ खाया।

दूसरा बच्चा: अम्मी! ये देख तेरा बच्चा भूक से मर रहा है, खुदारा कुछ खाने को दो, अम्मी जान! कुछ खाने को दो!

तीसरा बच्चा: (रोते हुए) या अल्लाह! रहम फ़रमा और हमारी इस हंडिया को खूब पका ताके हम कुछ खा सकें और अपनी जान बचा सकें।

माँ! मेरे बच्चो! घबराओ नहीं सब्र करो और खुदा पर भरोसा रखो, ये देखो तुम्हारे सामने ही हंडिया चढ़ा रखी है खुदा को मंज़ूर हो तो अभी इस सब्र का फल पाओगे और सब मिल कर खाना खाओगे।

ये गुफ़्तगू सुनकर वो नक़ाब पोश मकान के अन्दर पहुँच गया बच्चे और उनकी माँ एक अजनबी नक़ाब पोश और उसके साथी को देखकर घबरा गए और वो औरत बोली।

औरत: तुम कौन हो और मेरे मकान के अन्दर क्यों आए?

नक़ाब पोश: बहन! मैं इस वक़्त अपने एक मक़्सद अज़ीज़ की ख़ातिर तुम्हारे मकान के पास से गुज़र रहा था के मैंने तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की दर्दनाक गुफ़्तगू सुनी मेरा दिल तुम्हारी इस गुफ़्तगू से तड़प कर रह गया माफ

Scanned by CamScanner

करना मैं असल क़िस्सा मालूम करने अन्दर आ गया हूँ।

औरत: भई! तुम अपनी राह लो, ना जान ना पहचान मुझ बदनसीब का क़िस्सा सुनकर क्या कर लोगे? अगर सुन लोगे तो मेरा क्या फायदा और अगर ना सुनोगे तो तुम्हारा क्या नुक़सान?

नक़ाब पोश: बहन तुम मुझे अपना दुश्मन ना समझो और ना यहाँ मेरा पहुँचना बेकार जानो तुम अपना क़िस्सा सुनाओ और मुझे अपना हमदर्द यक़ीन करो।

औरत: मैं ग़रीब हूँ, ग़मज़दा हूँ और हैरान हूँ और इन बच्चों के लिए बड़ी परेशान हूँ, छोड़ो इस क़िस्से को और मेरे ज़ख़्मों, दिल के टाँकों को ना उधेड़ो।

नक़ाब पोश: बहन मेरी इल्तिजा तुम्हें कान धरना ही होगा और असल वाक़ेया ज़ाहिर करना ही होगा।

औरत: अच्छा तो लो सुनो! मुझे अमीर-उल-मोमिनीन उमर से शिकायत है वो हमारा अमीर है खुदा ने उसे हमारी हिफाज़त व ख़िदमत के लिए मसनदे खिलाफत पर बिठाया है मगर उसने मुझ ग़रीब बेवा औरत की ख़बर ना रखी दो रोज़ से मैं और मेरे यतीम बच्चे फाक़ह से हैं आज ये भूक से निढाल हो गए तो मैंने महेज़ उनका दिल बहलाने की ख़ातिर अव्वल शब से इस हंडिया को चूलहे पर चढ़ा रखा है और हंडिया में बजुज़ पानी के और कुछ भी नहीं उनको यूंही तसल्लियाँ देते देते सुबह हो जाएगी और सुबह फिर जो खुदा को मंज़ूर हुआ वो होगा, अफ़्सोस! के अमीर-उल-मोमिनीन को मेरे इन यतीम और भूके बच्चों का कुछ पता नहीं।

नक़ाब पोश: (ग़मज़दा आवाज़ में) बहन! लेकिन उमर को क्या ख़बर के तुम इस हाल में हो? तुम ने क्यों उस तक पहुँच कर उसे अपने हालात से आगाह नहीं किया?

औरत: वाह साहब वाह! ख़लीफा-ए-वक़्त को जब खुदा ने रिआया की हिफाज़त व ख़याल के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है तो ये ख़लीफा का अपना फर्ज़ है के वो अपनी सारी रिआया के हालात से बाख़बर हो, अगर वो अपनी रिआया के हालात से यूंही बेख़बर है तो फिर उसे मसनदे खिलाफत पर बैठने का कोई हक़ नहीं, आज उसने मेरे इन यतीम बच्चों की ख़बरगीरी नहीं की तो कल मैं इंशाअल्लाह कमली वाले आक़ा के सामने उमर की शिक़ायत करूंगी।

नक़ाब पोश ये बात सुन कर रोने लगा और फौरन मकान से निकला

Scanned by CamScanner

और थोड़ी देर के बाद अपनी पीठ पर आटे की एक बोरी उठाए हुए अन्दर दाख़िल हुआ और बोरी को पीठ से उतारा और कपड़े झाड़े और अपने साथी से मुख़ातिब हुआ।

नक़ाब पोशः अलहम्दूलिल्लाह! आटे की बोरी मैं खुद उठा कर ले आया।

साथीः हुज़ूर मैंने अर्ज़ की थी के मैं बोरी उठाता हूँ मगर आपने मेरी अर्ज़ को क़बूल नहीं फ़रमाया।

नक़ाब पोशः इफ़्लाह! (नक़ाब पोश के साथी के नाम) क्या क़यामत के दिन भी मेरा बोझ उठा लोगे? अगर नहीं तो फिर यहाँ भी ये बोझ मुझी हो उठाना मुनासिब था।

औरतः (ये मंज़र देखकर) भई! खुदा तुम पर हज़ार हज़ार बरकतें नाज़िल फ़रमाए तुम तो कोई फरिश्ता ख़सलत इंसान हो, मैं तो अब बहुत शर्मिंदा हू के अपना क़िस्सा तुम्हें सुनाकर तुम्हें नाहक़ कोफ़्त में डाला।

नक़ाब पोशः इन बातों को रहने दीजिए और मुझे अपना फर्ज़ अदा करने दीजिए।

नक़ाब पोश ने फिर बोरी से आटा निकाला, खुद ही गूंद्धा और खुद ही आग सुलगाई, साथी का बयान है के चूलहे में फूंक मारते हुए मैंने नक़ाब पोश की दाढ़ी से धुआँ निकलते देखा रोटियाँ भी खुद ही इस फरिश्ता ख़सलत इंसान ने पकाईं और फिर उन बच्चों को खिलाईं और फिर उन रोते हुए यतीम बच्चों को खाना खिला कर खूश तबई की बातें करके हंसाया और कहा मैं चाहता हूँ के जिन आँखों से मैंने न बच्चों को रोते हुए देखा है उन्हीं आँखों से इन्हें हंसते हुए भी देखूं।

नक़ाब पोश का ये सलूक रहमत देखकर वो औरत बड़ी मुतास्सिर हुई और बोली।

औरतः ऐ नेक दिल इंसान! तुमने तो कमाल कर दिया और हम ग़रीबों को खुशहाल कर दिया।

नक़ाब पोशः क्या वाक़ई तुम मुझ पर खुश हो बहन!

औरतः खुदा गवाह है के मैं तुम पर बड़ी खुश हूँ।

नक़ाब पोशः तो फिर मेरी ख़ातिर उमर का क़सूर माफ कर दे बहन! कल क़यामत के दिन उसकी शिकायत क़मली वाले आक़ा से ना करना।

औरतः मगर तुम्हें अमीर-उल-मोमिनीन की इतनी पासदारी क्यों है?

नक़ाब पोशः तुम पहले उसे माफ कर दो फिर मैं इस पासदारी की

Scanned by CamScanner

वजह बताऊंगा।

औरतः अच्छा तो मैंने उसे तुम्हारी ख़ातिर माफ कर दिया मगर ये तुम्हा ज़रूर करूंगी के खुदा उसे मसनदे खिलाफत से हटाए और तुम्हें उसे पर बिठाए।

नक़ाब पोशः तो बहन सुनो! तुम्हारी ये दुआ भी रायगाँ नहीं गई।

औरतः वो कैसे?

नक़ाब पोशः (नक़ाब को मुंह से हटाते हुए) इधर देखो।

औरतः (हैरान व शशिद्र रह कर) ऐ अमीर-उल-मोमिनीन खुद! (मुंतख़ित कंज़-उल-अमाल हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 35)

सबक़: हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की ख़िलाफत अल्लाह की एक रहमत थी जिससे सब ने फायदा उठाया और हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह अल्लाह के सच्चे बन्दे और अल्लाह के बन्दों के बेहतरीन निगहबान थे। फिर जो हज़रत उमर से राज़ी नहीं वो गोया अल्लाह की रहमत पर राज़ी नहीं।

हिकायत नम्बर(154) फारूक़े आज़म और एक बद्

हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह अपने ज़मानाए ख़िलाफत में बसा अवक़ात रात को चौकीदार के तौर पर शहर की हिफाज़त भी फ़रमाते थे एक मर्तबा इसी हालत में एक मैदान में गुज़र हुआ तो देखा के एक खेमा बालूं का लगा हुआ है जो पहले वहाँ नहीं था उसके क़रीब पहुँचे तो देखा के एक साहब वहाँ बैठे हैं और खेमे से कुछ कराहने की आवाज़ आ रही है, सलाम करके उन साहब के पास बैठ गए और दरयाफ़्त किया के तुम कौन हो? उन्होंने कहा एक मुसाफिर हूँ जंगल का रहने वाला हूँ, अमीर-उल-मोमिनीन के सामने कुछ अपनी ज़रूरत पेश करके मदद चाहने के वास्ते आया हूँ, दरयाफ़्त फ़रमाया के ये खेमे से आवाज़ कैसे आ रही है? उन साहब ने कहा मियाँ जाओ अपना काम करो, आपने इसरार फ़रमाया के नहीं बता दो कुछ तकलीफ की आवाज़ है, उन साहब ने कहा के मेरी बीवी है और विलादत का वक़्त क़रीब है, दर्दे ज़ेह हो रहा है, आपने दरयाफ़्त फ़रमाया के कोई दूसरी औरत भी पास है? उन्होंने कहा कोई नहीं, आप वहाँ से उठे और अपने मकान में तशरीफ़ ले गए और अपनी बीवी हज़रत उम्मे कुलसुम से फ़रमाया के एक बड़े सवाब की चीज़ मुक़द्दर से तुम्हारे लिए आई है, उन्होंने पूछा क्या है, फ़रमाया एक गाँव की रहने वाली बेचारी तनहा है उसको दर्दे ज़ेह हो

Scanned by CamScanner

उन्होंने कहा हाँ हाँ! आपकी सलाह है तो मैं तैयार हूँ, हज़रत उमर ने फ़रमाया के विलादत के वक़्त जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती हो तेल गुड़ वग़ैरा ले लो और एक हांडी और कुछ घी और दाने वग़ैरह भी साथ ले लो, वो लेकर चलीं, हज़रत उमर खुद पीछे पीछे हो लिए वहाँ पहुँच कर हज़रत उम्मे कुलसुम तो खेमे में चली गईं और आपने आग जलाकर उस हांडी में दाने उबाले, घी डाला, इतने में विलादत से फ़राग़त हो गई, अन्दर से हज़रत उम्मे कुलसुम ने आवाज़ देकर अर्ज़ किया, अमीर-उल-मोमिनीन! अपने दोस्त को लड़का पैदा होने की बशारत दीजिए, अमीर-उल-मोमिनीन का लफ़्ज़ जब उन साहब के काम में पड़ा तो वो घबराए, आपने फ़रमाया घबराने की बात नहीं, वो हांडी खेमे के पास रख दी के उस औरत को भी कुछ खिला दें, हज़रत उम्मे कुलसुम ने उसको खिलाया उसके बाद हांडी बाहर दे दी। हज़रत उमर ने उस बद्दू से कहा के लो तुम भी खाओ, रात भर तुम्हारी जागने में गुज़र गई उसके बाद अहलिया को साथ लेकर तशरीफ़ लाए और उन साहब से फ़रमा दिया के कल आना तुम्हारे लिए इन्तिज़ाम कर दिया जाएगा। (अशहर-उल-मशाहीर, हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 62)

सबक़:- क़ौम का सरदार क़ौम का ख़ादिम होता है और इस हक़ीक़त का इज़हार ख़ुलफा-ए-राशिदीन के अहेद में खूब हुआ। हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह इतनी बड़ी बुलंद शान के बावजूद एक ग़रीब बद्दू की रात भी ख़िदमत करते हैं भला इस ज़माना में कोई बादशाह या रईस नहीं कोई मामूली हैसियत का मालदार भी ऐसा है जो ग़रीबी की ज़रूरत में मुसाफिर की मदद के वास्ते इस तरह बीवी को जंगल में ले जाए और खुद चूलहा धूंक कर पकाए। मुसलमानों को अपने इन बुज़ूर्गों की सीरत को अपने सामने रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर(155) फारूक़े आज़म और एक बूढ़िया

हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह एक मर्तबा अपनी रूअय्यत के हालात का मुतालेआ फ़रमाने गश्त लगा रहे थे के एक बूढ़िया औरत को अपने खेमे में बैठे देखा। आप उसके पास पहुँचे और उससे पूछा ऐ ज़ईफा! उमर के मुतअल्लिक़ तुम्हारा क्या ख़याल है? वो बोली खुदा उमर का भला ना करे, हज़रत उमर बोले ये तुम ने बद दुआ क्यों की, उमर से क्या क़सूर सरज़द हुआ है? वो बोली, उमर ने आज तक मुझ ग़रीब बूढ़िया की ख़बर नहीं ली और मुझे कभी कुछ नहीं दिया, हज़रत उमर बोले मगर उमर को क्या

Scanned by CamScanner

ख़बर के उस खेमे में इम्दाद की मुसतहिक़ एक ज़ईफा रहती है। वो बोली सुबहान अल्लाह! एक शख़्स लोगों पर अमीर मुक़र्रर हो और फिर वो अपनी ममलिकत के मशरिक़ व मग़रिब से नावाक़िफ हो? तअज्जुब की बात है, ये बात सुनकर हज़रत उमर रो पड़े और अपने आपको मुख़ातिब फ़रमा कर बोले, ऐ उमर! तुझ से तो ये बूढ़िया ही दाना निकली फिर आपने इस बूढ़िया से फ़रमाया ऐ अल्लाह की बंदी! ये तकलीफ जो तुम्हें उमर से पहुँची है तुम मेरे हाथों कितने दामों पर बेचोगी मैं चाहता हूँ के उमर की ये लग़ज़िश तुम से क़ीमतन ख़रीद लूं और उमर को बचा लूं, बूढ़िया बोली भई मुझ से मज़ाक़ क्यों करते हो, फ़रमाया, नहीं मैं मज़ाक़ हरगिज़ नहीं करता सच कह रहा हूँ के तुम ये उमर से पहुँची हुई अपनी तकलीफ बेच दो मैं जो माँगोगी उसकी क़ीमत दे दूंगा, बूढ़िया बोली, तो पच्चीस दीनार दे दो, ये बातें हो रही थीं के इतने में हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह और हज़रत इब्ने मसऊद रज़ी अल्लाहो अन्ह तशरीफ़ ले आए और आकर कहा "अस्सलाम अलेका या अमीर-उल-मोमिनीन!" बूढ़िया ने जब "अमीर-उल-मोमिनीन" का लफ़्ज़ सुना तो बड़ी परेशान हुई और अपना हाथ पैशानी पर रख कर बोली ग़ज़ब हो गया ये तो खुद ही अमीर-उल-मोमिनीन उमर है और मैंने उन्हें मुंह पर ही क्या कुछ कह दिया। हज़रत उमर ने बुढ़िया की ये परेशानी देखी तो फ़रमाया, ज़ईफा! घबराओ मत, खुदा रहम फ़रमाए तुम बिलकुल सच्ची हो, फिर आपने एक तहरीर लिखी जिसकी इबारत बिस्मिल्लाह के बाद ये थी के

"ये तहरीर इस अम्र के मुतअल्लिक़ है के उमर बिन ख़त्ताब ने इस ज़ईफा से अपनी लग़ज़िश और इस ज़ईफा की परेशानी जो उमर के अहेदे खिलाफत से लेकर आज तक वाक़अे हुई पच्चीस दीनार पर ख़रीद ली, अब ये बुढ़िया क़यामत के दिन अल्लाह के सामने उमर की कोई शिकायत ना करेगी अब उमर इस लग़ज़िश से बरी है इस बीअ पर अली इब्ने अबी तालिब और अबी इब्ने मसऊद गवाह हैं।"

ये तहरीर लिख कर बुढ़िया को पच्चीस दीनार दे दिए और इस क़तआ-ए-तहरीर को हज़रत उमर ने अपने साहबज़ादे को दे दिया और फ़रमाया, जब मैं मरूं तो मेरे कफ़न में इस तहरीर को रख देना। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 43, जिल्द 1)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह जो क़तई जन्नती हैं उनका मुबारक हाल देख कर हमें अपनी फिक्र करनी चाहिए और सोचना चाहिए के कल क़यामत के दिन जब हमारा आमाल नामा ज़ाहिर हुआ तो हम क्या

Scanned by CamScanner

जवाब देंगे? और आज कल दुनिया के सरबराहों को भी ग़ौर करना चाहिए के वो अपनी रिआया का कहाँ तक ख़याल रखते हैं।

हिकायत नम्बर(156) नफीस हलवा

हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के दौर में जब आज़रबाईजान फतह हुआ और मुसलमानों को मुख़तलिफ चीज़ें मिलीं एक शख़्स उत्बा नामी को निहायत नफीस हलवा दसतियाब हुआ जो उसने हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाह अन्ह की ख़िदमत में तोहफातन भेज दिया। हज़रत फारूक़े आज़म ने इस हलवे को देखकर और चख कर फ़रमाया, क्या ये हलवा सबने खाया है या मेरे ही लिए आया है? लाने वाले ने कहा हुज़ूर! सिर्फ आप ही के लिए आया है, आपने उसी वक़्त भेजने वाले के नाम हस्बे ज़ेल ख़त लिखा:-

"अल्लाह के बन्दे अमीर-उल-मोमिनीन उमर की जानिब से उत्बा बिन मरक़द के नाम, अम्मा बअद! याद रखो के ये हलवा ना तो तुमहारी कोशिश से हासिल हुआ और ना ही तुम्हारे माल या तुम्हारे बाप की कोशिश से हासिल हुआ है, हम तो सिर्फ वही चीज़ें खायेंगे जिसे तमाम मुसलमान अपने अपने घरों में पेट भर कर खायें।" (फतूह-उल-बलदान, मुग़नी-उल-आज़ीन, सफ़ा 473)

सबक:- ये थे हमारे इसलाफ जिन्हें रिआया के हर फर्द का ख़याल था और वो कोई ऐसी चीज़ ना खाते जो रिआया को मयस्सर ना आ सके और वो रिआया को औलाद से भी अज़ीज़ समझते थे।

हिकायत नम्बर(157) इसकंद्रिया की फतह

इसकंद्रिया की फतह में ताख़ीर हुई तो फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाह अन्ह ने उमरो बिन आस रज़ी अल्लाह अन्ह को लिखा के तुम वहाँ जाकर शायद ऐशो इशरत में मशग़ूल हो गए हो तुम्हें चाहिए के शहर पर सबके सब एक दम हमला कर दो और फतह करके ही दम लो, चुनाँचे आपके इर्शाद के मुताबिक़ किया गया तो इसकंद्रिया फतह हो गया, इसकंद्रिया की फतह की बशारत लेकर क़ासिद दोपहर के वक़्त मदीना मुनव्वरह पहुँचा और ये सोच कर के फारूक़े आज़म इस वक़्त आराम फ़रमाते होंगे सीधा मस्जिद नबव्वी की तरफ़ चल दिया एक औरत के दरयाफ़्त करने पर बोला के इसकंद्रिया फतह हो गया है और मैं ये मसदह पहुँचाने इसकंद्रिया से आ

Scanned by CamScanner

रहा हूँ, औरत ने झट ये ख़बर फारूक़े आज़म को पहुँचा दी हज़रत फारूक़े आज़म क़ासिद से मिलने बाहर तशरीफ़ लाने लगे के इतने में क़ासिद भी पहुँच गया, हज़रत फारूक़े आज़म ने फ़रमाया तुम सीधे मेरे पास क्यों ना चले आए? अर्ज़ की इस ख़याल से के आपके आराम में ख़लल ना हो, फ़रमाया तुम ने मेरी निसबत ऐसा ख़याल क्यों किया अगर में दिन में आराम की ख़ातिर सो जाया करूं तो खिलाफत का काम कौन सर अंजाम देगा? फिर इसके बाद इसकंद्रिया की फतह का मसदह सुनकर आप सज्दे में गिर पड़े। (फतूह-उल-बलदान मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 474)

सबक़:- मालूम हुआ के क़ौम की इमारत ऐशो इशरत और ख़्वाब ग़फ़लत के लिए नहीं होती बल्के उसमें बैदारो होशयार रहना पड़ता है।

हिकायत नम्बर(158) रूअय्यत और क़यामत

हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह के ज़माना-ए-ख़िलाफत में लोगों ने अर्ज़ किया के आप इस क़द्र मेहनत शाक़ा क्यों उठाते हैं के ना दिन को चैन ना रात को आराम फ़रमाते हैं, फ़रमाया के अगर दिन को आराम करूं तो रूअय्यत बे आराम हो और अगर रात को चैन करूं और खुदा का ज़िक्र ना करूं तो क़यामत में क्या मुंह दिखाऊंगा। (किताब मज़कूर)

सबक़:- मुसलमान हाकिम रिआया की हमदर्दी और खुदा की बन्दगी में मशग़ूल रहते हैं।

हिकायत नम्बर(159) रोम का एलची

(मंज़ूम हिकायत)

ख़िदमत फारूक़ में इक एलची
रोम से लाया प्यामे कैसरी
वो मदीने में फिरा ये पूछता
दो ख़लीफा के महल का कुछ पता
लोग जब सुनते थे उसका ये कलाम
हंस के कहते थे के ऐ फ़रखंदा नाम
सब्रो शुक्र उसके हैं दो हसन हुसैन
क़स्र की इस शीर को हाजत नहीं
है अमीर-उल-मोमिनीन गरचै उमर
पर नहीं रखता ग़रीबों सा भी घर

Scanned by CamScanner

सुन के लोगों से अजब ये माजरा
शौक़े क़ासिद दम ब दम बढ़ने लगा
हर तरफ़ करता रहा वो जुस्तजू!
कर रहा था अपने दिल से गुफ़्तगू
है तअज्जुब फातह मुल्क शहाँ
जाने रोशन की तरह हो यूं नहाँ
आख़िर इक बुढ़िया ये बोली देखकर
नख़्ल खुरमा के तले है वो उमर
ज़िल हक़ साया में है सोया हुआ
ये उमर है जिसका तू जोया हुआ!!
डील में था एलची गोपील तन
लेकिन उसका कांप उठा तन बदन
दिल में कहता था इलाही क्या हुआ
क़ैसर व किसरा को देखा बारहा
मैंने मारे बीसियों शेर व पलंग
पर कभी बदला ना उस चेहरे का रंग
कांपता है अब तो मेरा जोड़ जोड़
आके याँ निकली है अब सारे मरोड़
आसमानी रौब है उस शख़्स का

है खुदाई भेद गदड़ी में छुपा (मोतियों का हार तर्जुमा मसनवी शरीफ, सफ़ा 44)

सबक़: जो डरे हक़ से हर इक उससे डरे
इससे सब देव व परी भागें परे

हिकायत नम्बर(160) फारूक़े आज़म और एक चोर

(मंज़ूम हिकायत)

चोरी करते एक दुज़्दे बे हया
अहेद में फारूक़ के पकड़ा गया
लाए जब उसको हुज़ूर दीं पनाह
और साबित हो गया उसका गुनाह
उस मुजस्सिम अद्ल ने फत्वा दिया
हाथ काटो है यही इसकी सज़ा

Scanned by CamScanner

सुन के ये चिल्ला उठा वो बे शऊर
रहम कीजिए है मिरा पहला क़सूर
पास वालों ने सिफारिश की बहुत
अफ़्व व रहमत की सताईश की बहुत
इक ना मानी और कहा फारूक़ ने
हद करो जारी हमारे सामने
झूट बकता है ये मुझ को है यक़ीन
पहली इसकी ये ख़ता हरगिज़ नहीं!
है मिरे रब की ये सत्तारी से दूर
इस ग़नी की है ये ग़फ़्फारी से दूर
यूं फज़ीहत अपने बन्दे को करे
और तौबा की ना दे मोहलत इसे
(मोतियों का हार, सफ़ा 100)

सबक़:- ये समझ बन्दा के टल जाएगा अब
चश्म पोशी बारहा करता है रब!
बाज़ आता ही नहीं जब बे हया
रूसवा करता है उसे फिर बरमला!

हिकायत नम्बर(161) फारूक़े आज़म की शहादत

हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह ने एक रात ख़्वाब में देखा के एक सुर्ख रंग के मुर्ग ने आपके बदन में दो तीन ठोंगें मारी हैं, आपने ये ख़्वाब-ए-जुमअे में बयान फ़रमया, इस ख़्वाब की ये तअबीर बयान की गई के कोई काफिर उमर को शहीद कर देगा, चुनाँचे जुमअे के रोज़ ये ख़्वाब बयान किया गया और बुध के दिन सुबह की नमाज़ में आप ज़ख़्मी किए गए, आपकी ये आदत थी के नमाज़ शुरू करने से पहले सफों को सीधा किया करते थे जब सफें सीधी हो जातीं तब अल्लाह अक्बर कह कर नीयत बाँधते थे, बुध के दिन जब आपने सफें सीधी करने के बाद नीयत बाँधी तब फिरोज़ नामी एक आतिश परस्त मशरिक ग़ुलाम ने आपको दो धारी छुरी से ज़ख़्मी कर दिया, फारूक़े आज़म के शिकम पर ज़ख़्म आया, आपको गिरा कर वो काफिर फिरोज़ भागा, रस्ते में जमाअत के अन्दर और भी सहाबा के शदीद ज़ख़्म लगाए आख़िर एक अनसारी ने उस पर अपने कम्बल को डाल कर उसे पकड़ लिया जब उस ज़ालिम ने जान लिया के अब मैं पकड़ा

Scanned by CamScanner

गया हूँ और मेरा हश्र बुरा होगा तो वो काफिर अपने हाथ से छुरी मार कर गया। हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अब्दुर्रहमान बिन ओफ को अपनी जगह नमाज़ पढ़ाने के लिए हुक्म दिया और खुद वहीं बैठ कर नमाज़ पढ़ते रहे और ज़ख़्मी होकर भी वहीं हाज़िर रहे जब लोग नमाज़ से फारिग़ हुए तो हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया, ऐ इब्ने अब्बास! देखो तो मुझे किसने क़त्ल किया है? इब्ने अब्बास ने अर्ज़ किया के एक आतिश परस्त मुशरिक ग़ुलाम ने जिसका नाम फिरोज़ है, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ये सुनकर फ़रमाया, इलाही तेरा शुक्र है मेरी मौत किसी कलमा गो शख़्स के हाथों नहीं हुई, आपको शदीद ज़ख़्म आया था हत्ता के आपको जो शर्बत पिलाया गया वो ज़ख़्म के रास्ते से बाहर निकल आया, लोग आपके पूछने के लिए आते थे, एक नोजवान आया और हाल पूछ कर लोटा तो हज़रत उमर ने देखा के उसका तहबंद ज़मीन से लगता है, फ़रमाया इस नोजवान को मेरे पास वापस लाओ, जब वो दोबारा हाज़िर हुआ तो फ़रमाया, मियाँ! अपने तहबंद को ऊँचा कर लो ये अमल अल्लाह के नज़दीक अच्छा है और तुम्हारा कपड़ा भी ज़मीन पर ख़राब होने से महफ़ूज़ रहेगा। जब आपकी हालत ज़्यादा ख़राब हो गई तब आपने अपने साहज़ादे अब्दुल्लाह से फ़रमाया बेटा! तुम उम्म-उल-मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अनहा के पास जाओ और उनसे मेरा सलाम कह कर अर्ज़ करना के उमर ने आपसे अज़ चाहा है के आप अपने हुजरह में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के पैरों में दफ़्न होने की इजाज़त फ़रमायें चुनाँचे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाहो अन्ह हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अनहा के पास आए, क्या देखते हैं के उम्म-उल-मोमिनीन भी हज़रत उमर के ग़म में रो रही हैं, हज़रत अब्दुल्लाह ने हज़रत उमर का सलाम व पैग़ाम अर्ज़ किया तो उम्म-उल-मोमिनीन ने फ़रमाया के ये जगह ख़ास मैं अपने लिए रखी थी मगर मैं अपनी जान से उमर की जान को ज़्यादा पसंद करती हूँ और इजाज़त देती हूँ के शौक़ से इस मुबारक जगह में दफ़्न किए जाएँ जब हज़रत अब्दुल्लाह यहाँ से इजाज़त लेकर वापस आए और हज़रत उमर को उनका इजाज़ दे देना सुनाया तो हज़रत उमर ने फ़रमाया अलहम्दूलिल्लाह इजाज़त मिल गई मगर ऐ अब्दुल्लाह! तुम एक काम करना जिस वक़्त मैं मर जाऊँ मेरे जनाज़े को तैयार करके फिर हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अनहा के सामने ले जाकर रखना और ये कहना के इस वक़्त उमर का जनाज़ा हाज़िर है और आपसे इजाज़त चाहता है अगर उस वक़्त भी इजाज़त फ़रमायें तो अन्दर दफ़्न कर

Scanned by CamScanner

देना मुझे अंदेशा है के शायद कुछ मेरे लिहाज़ से इजाज़त दी हो इसलिए बाद वफात फिर इजाज़त ले लेना और फिर फ़रमाया बेटा! मेरा सर तकिये से हटा कर ज़मीन पर डाल दे ताके मैं अपना सर खुदा के सामने ज़मीन पर डाल कर रगड़ूं ताके मेरा रब मुझ पर रहम फ़रमाए, ऐ बेटा मैं मर जाऊँ तो मेरी आँखें बन्द कर देना और मेरे कफन में मियाना रवी करना, इसराफ ना करना क्योंके मैं अगर खुदा के नज़दीक कुछ अच्छा ठहरूंगा तो मुझे दुनिया के कफ़न से बहुत बेहतर कफन मिल जाएगा और अगर मैं बुरा क़रार दिया गया तो ये भी मेरे पास ना रहेगा, बेटा! अगर सारे जहान की दौलत और सामान उस वक़्त मेरे पास होता तो मैं उसे क़यामत के दिन की घबराहट से निजात पाने के लिए ख़ैरात कर देता, ये सुनकर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया के क़सम अल्लाह की मैं तो आपके मुतअल्लिक़ ये यक़ीन रखता हूँ के आप तो बराए नाम ही क़यामत की होलनाक चीज़ें देखेंगे क्योंके आप अमीर-उल-मोमिनीन हैं, अमीन-उल-मोमिनीन हैं, सय्यद-उल-मोमिनीन हैं, आप किताब उल्लाह से और निहायत इंसाफ से फैसला करने वाले हैं, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह को हज़रत इब्ने अब्बास की ये तक़रीर बहुत पसंद आई और सख़्त तकलीफ के बावजूद जोश व शौक़ में उठ कर बैठ गए और फ़रमाया ऐ इब्ने अब्बास! क्या तू इन बातों की शहादत क़यामत के दिन अल्लाह के सामने देगा? हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया, हाँ दूंगा, ये सुनकर हज़रत उमर को इतमिनान हुआ, उसके बाद बहुत सी नसीहतें और वसीयतें फ़रमाईं और इन्तिक़ाल फ़रमाया। *इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन।* फिर आपके जनाज़े को तैयार करके हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अनहा के हुजरह शरीफ के सामने लाकर रखा गया और ब आवाज़ बुलंद अर्ज़ किया के ऐ उम्म-उल-मोमिनीन! ये जनाज़ा उमर का हाज़िर है और अब फिर आपसे इजाज़त माँगता है के अगर हुक्म हो तो हुजरह शरीफ में दफ़्न किया जाए। हज़रत उम्म-उल-मोमिनीन रोती थीं और फ़रमाती थीं के मैं खुशी से आज फिर हज़रत उमर को इजाज़त देती हूँ, चुनाँचे आपको हुजरह शरीफ में हुज़ूर के क़दमों में दफ़्न किया गया।

जिस दिन हज़रत उमर का इन्तिक़ाल हुआ उस दिन सूरज को गहन लगा सारे मदीना में अंधेरा हुआ, इस तरफ़ लोगों का रोना, इधर सूरज का सियाह होना एक मअरका क़यामत का नज़र आता था। मदीने के बच्चे अपनी माँओं से पूछते थे ऐ माँ क्या आज क़यामत है? माँयें कहती थीं के नहीं आज अमीर-उल-मोमिनीन उमर का इन्तिक़ाल हुआ है।

Scanned by CamScanner

बाद अज़ वफात हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाहो अन्ह ने आपको ख़्वाब में देखा और पूछा के ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! क्या मामला हुआ? फ़रमाया। बजहतू रब्बी रहीमन "मैंने अपने रब को बड़ा रहम वाला पाया" (सीरत-उल-सालेहीन) सफ़ा 94)

सबक:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह का क़तई जन्नती होने के बावजूद ख़ौफ़ इलाही देखिये के किस तरह अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर होने से ख़शियत का इज़हार फ़रमाते थे और नज़्अे का आलम है मगर खिलाफ शरअ बात नहीं देख सकते और नोजवान को तहबंद ऊँचा बांधने की नसीहत फ़रमाते हैं।

मालूम हुआ के मुसलमान को बहर हाल शरीअत का पाबंद और शरीअत के खिलाफ हर बात से बेज़ार रहना चाहिए और अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर होने से डरते रहना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के सिद्दीक़े अक्बर की तरह फारूक़े आज़म भी बड़े ही खुश क़िसमत थे के उन्हें भी हुज़ूर के साथ ही दफ़्न होने को जगह मिली।

हिकायत नम्बर(162) हज़रत उस्मान ज़ुलनूरैन रज़ी अल्लाहो अन्ह

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की चार साहबज़ादियाँ थीं, ज़ैनब, रुकय्या, उम्मे कुलसुम, और फातिमा (रज़ी अल्लाहो अनहन) हज़रत रुकय्या की शादी हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह से हुई, हज़रत रूक़य्या का इन्तिक़ाल हो गया और हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को इस बात का रंज पहुँचा तो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने अपनी दूसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसुम रज़ी अल्लाहो अनहा का भी निकाह हज़रत उस्मान से कर दिया और फ़रमाया ऐ उस्मान! अगर मेरी सौ लड़की भी हो और उनका यके बाद दीगरे इन्तिक़ाल होता जाए तो मैं यके बाद दीगरे तुम्हारे निकाह में देता जाऊँ। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 196, जिल्द 1)

सबक: ये खसूसियत सिर्फ उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को हासिल है के नबी की दो बेटियाँ आपके निकाह में आईं जब से दुनिया शुरू हुई उस वक़्त से लेकर क़यामत तक बजुज़ हज़रत उस्मान के ना कोई हुआ ना होगा जिसके निकाह में नबी की दो बेटियाँ आई हों इसलिए आपका लक़ब "ज़ुलनूरैन" है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(163) हया उस्मान

एक दफा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपने दौलत कदा में लेटे हुए थे और आपकी रान मुबारक या पिंडली मुबारक से कपड़ा हटा हुआ था इतने में हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह तशरीफ़ ले आए और अन्दर आने की इजाज़त माँगी, हुज़ूर ने इजाज़त दे दी, आप अन्दर आए और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम उसी तरह बदस्तूर लेटे रहे और रान मुबारक या पिंडली मुबारक से कपड़ा बदस्तूर हटा रहा और आप गुफ़्तगू फ़रमाते रहे फिर हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह भी आ गए और अन्दर आने की इजाज़त माँगी, हुज़ूर ने उन्हें भी इजाज़त दे दी और वो भी अन्दर आ गए और हुज़ूर फिर भी बदस्तूर लेटे रहे और रान या पिंडली मुबारक से कपड़ा मुबारक बदस्तूर हटा रहा और आप गुफ़्तगू फ़रमाते रहे, फिर हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह भी आ गए और आपने अन्दर आने की इजाज़त माँगी तो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम फौरन उठ बैठे और अपना कपड़ा बराबर फ़रमाते हुए, रान पिंडली मुबारक को ढांप लिया और फिर हज़रत उस्मान को अन्दर आने की इजाज़त दी, हज़रत सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अनहा फ़रमाती हैं जब वो लोग चले गए तो मैंने हुज़ूर से दरयाफ़्त किया, या रसूल अल्लाह! ये क्या बात के सिद्दीक़े अक्बर आए तो आप बदस्तूर लेटे रहे, फारूक़े आज़म आए तो भी बदस्तूर लेटे रहे मगर जब उस्मान आए तो आप फौरन उठ बैठे और कपड़ा बराबर फ़रमा लिया।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया ऐ आयशा! मैं इस शख़्स से हया क्यों ना करूं जिससे फरिश्ते भी हया करते हैं। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 553)

सबक़:- हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह की ये शान है के फरिश्ते और खुदा का रसूल भी उनसे हया फ़रमाता है फिर जो शख़्स हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह की ज़ात वाला में बेअदबी और गुस्ताख़ी करे किस क़द्र बेहया है।

हिकायत नम्बर(164) उस्मान ग़नी सख़ावत का धनी

जंगे तबूक के मौक़े पर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मुसलमानों को अल्लाह की राह में ख़र्च करने की तरग़ीब दे रहे थे के हज़रत उस्मान

Scanned by CamScanner

रज़ी अल्लाहो अन्ह उठे और अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! साज़ो सामान समेत एक सौ ऊँट मैं देता हूँ हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने फिर तरग़ीब दी तो हज़रत उस्मान ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! साज़ो सामान समेत दो सौ ऊँट मैं देता हूँ, हुज़ूर ने फिर तरग़ीब दी तो हज़रत उस्मान ने फिर अर्ज़ किया, हुज़ूर साज़ो सामान समेत तीन सौ ऊँट मैं देता हूँ और फिर उन तीन सौ ऊँटों के अलावा हज़रत उस्मान ने एक हज़ार दीनार (एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत उस्मान ने एक हज़ार ऊँट, सत्तर घोड़े और दस हज़ार रुपये इस जंग में ख़र्च किए। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 172, जिल्द 1) भी हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के सामने पेश कर दिए, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने हज़रत उस्मान की ये सख़ावत देखी तो हज़रत उस्मान के पेश कर्दा दीनारों में अपना हाथ मुबारक डाल कर फ़रमाया, उस्मान के इस नेक अमल के बाद अब इसे कोई बात ज़रर ना देगी। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 553)

सबक़:- हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह बहुत बड़े ग़नी थे और फिर सख़ावत के धनी भी थे और रसूल के इर्शाद पर अपना सब कुछ लुटा देने वाले थे।

हिकायत नम्बर(165) जन्नत का चश्मा

जब मुहाज़ीन मक्का मओज़्ज़मा से हिजरत करके मदीना मुनव्वरह में आए तो यहाँ का पानी पसंद ना आया जो खारी था, मदीना मुनव्वरह में एक शख़्स की मिलक में चश्मा था जिसका नाम रोमा था वो शख़्स अपने चश्मे का पानी क़ीमतन देता था, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने उससे फ़रमाया के तुम अपना ये चश्मा मेरे हाथ जन्नत के चश्मे के अवज़ बेच दो और जन्नत का चश्मा मुझ से ले लो, उसने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मेरी और मेरे बाल बच्चों की मआश इसी से है, मुझ में ताक़त नहीं, ये ख़बर हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाह अन्ह को पहुँची तो आपने 35 हज़ार रुपये नक़द देकर उस शख़्स से वो चश्मा ख़रीद लिया और फिर हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! जिस तरह आप उस शख़्स को जन्नत का चश्मा अता फ़रमाते थे अगर मैं ये चश्मा उससे ख़रीद लूं तो क्या हुज़ूर वो जन्नत का चश्मा मुझे दे देंगे? आपने फ़रमाया हाँ दे दूंगा, अर्ज़ की तो मैंने वो चश्मा ख़रीद लिया है और मुसलमानों पर मैं उसे वक़्फ करता हूँ। (तिबरानी शरीफ, अलअमन व अला, स262)

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(166) मुबारक हाथ

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम बैत-उल्लाह शरीफ की ज़ियारत के लिए बक़्दे उमरा मक्का मओज़्ज़मा को रवाना हुए सहाबा-ए-इक्राम भी साथ थे, रास्तें में एक मुक़ामे हुदैबिया पर ठहरे और हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को क़ुरैश मक्का के पास मक्का मओज़्ज़मा भेजा और फ़रमाया, जाकर उनसे कहना के हमारा इरादा किसी जंग का नहीं है, हम सिर्फ ज़ियारत बैत-उल्लाह के लिए आए हैं और जो मुसलमान मक्का मओज़्ज़मा में हैं उनसे कहना के घबराओ मत, मक्का मओज़्ज़मा अनक़रीब फतह हो जाएगा चुनाँचे हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह पैग़म्बरे खुदा सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के पयामबर बनकर मक्का मओज़्ज़मा पहुँचे और क़ुरैश मक्का को इर्शादे नबव्वी सुनाया, क़ुरैश मक्का ने जवाब दिया के इस साल तो हम मोहम्मद (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) को मक्का में ना आने देंगे और हज़रत उस्मान से कहा के अगर आप कअबा का तवाफ करना चाहें तो शौक़ से कर लें, हज़रत उस्मान ने जवाब दिया, ऐसा नहीं हो सकता के मैं बग़ैर रसूले करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के तवाफ करूं और फिर वहाँ से उठकर मक्का के ज़ईफ मुसलमानों के पास पहुँचे और उनको मक्का की फतह की बशारत सुनाई। इधर मुक़ाम हुदैबिया में सहाबा इक्राम ने हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के मुतअल्लिक़ कहा के उस्मान बड़े खुशक़िसमत हैं जो कअबा मओज़्ज़मा पहुँच गए हैं और बैत-उल्लाह के तवाफ से मुर्शफ हो गए हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के उस्मान बग़ैर मेरे कभी तवाफ ना करेंगे।

फिर जो हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को वापस आने में कुछ देर हुई तो आपके मुतअल्लिक़ ये बात मश्हूर हो गई के क़ुरैश मक्का ने हज़रत उस्मान को शहीद कर दिया है, इस बात से मुसलमानों में जोश पैदा हो गया और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने सहाबा-ए-इक्राम से काफिरों के मुक़ाबले में जिहाद में साबित क़दम रहने की बैत ली। इस बैत में चूंके हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह मौजूद ना थे इसलिए हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने खुद अपना बायाँ हाथ अपने ही दायें हाथ में लेकर फ़रमाया के ये हाथ उस्मान का है और मैं उस्मान से भी बैत लेता हूँ। (तफ़्सीर ख़ज़ायन-उल-इर्फान, सफ़ा 722, तारीख़-उल-खुलफा सफ़ा 107)

सबक़: हुज़ूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम ने अपने मुबारक हाथ

Scanned by CamScanner

को हज़रत उस्मान के हाथ क़रार दिया गोया हज़रत उस्मान को हुज़ूर से एक ख़ास निसबत हासिल है फिर जो लोग हज़रत उस्मान के मुख़ालिफ हैं वो लोग गोया इस निसबत के पेशे नज़र हुज़ूर ही के मुख़ालिफ हैं और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को हुज़ूर इतने प्यारे थे और आपके दिल में हुज़ूर का इस क़द्र एहत्राम व वक़ार था के बग़ैर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के बैत-उल्लाह शरीफ के तवाफ को भी नज़र अंदाज़ कर दिया और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम को इस बात का इल्म था के उस्मान शहीद नहीं हुए और वो बख़ैरियत हैं जभी तो आपने अपने हाथ को उनका हाथ क़रार देकर उनकी बैत ली।

और ये भी मालूम हुआ के क़ुरआन जो हज़रत उस्मान के हाथों जमा हुआ इस निसबत से अल्लाह ही के हाथ से जमा हुआ क्योंके हज़रत उस्मान का हाथ, हुज़ूर का हाथ और हुज़ूर का हाथ और हुज़ूर का हाथ अल्लाह का हाथ है तो हज़रत उस्मान का हाथ वसीला मुसतफा से अल्लाह का हाथ हुआ तो उस्मान के हाथ से जमा शुदा क़ुरआन अल्लाह के हाथ से ही जमा शुदा है।

हिकायत नम्बर(127) बेनज़ीर ज़ियाफत

एक मर्तबा हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ियाफत की और अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! मेरे ग़रीब ख़ाने पर अपने दोस्तों समेत तशरीफ़ लाएँ और माहज़ तनावुल फ़रमाएँ, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने ये दअवत क़बूल फ़रमा ली और वक़्त पर मअे सहाबा इक्राम के हज़रत उस्मान के घर तशरीफ़ ले चले, हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर के पीछे पीछे चलने लगे और हुज़ूर का एक एक क़दम मुबारक जो उनके घर की तरफ़ चलते हुए ज़मीन पर पड़ रहा था गिनने लगे, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया ऐ उस्मान! ये मेरे क़दम क्यों गिन रहे हो? हज़रत उस्मान ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों मैं चाहता हूँ के हुज़ूर के एक एक क़दम के अवज़ में आपकी तअज़ीम व तोक़ीर की ख़ातिर एक एक ग़ुलाम आज़ाद करूं, चुनाँचे हज़रत उस्मान के घर तक हुज़ूर के जिस क़द्र क़दम पड़े उसी क़द्र ग़ुलाम हज़रत उस्मान ने आज़ाद किए। (जामअे-उल-मोजज़ात, सफ़ा 65)

सबक़:- हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह बड़े ग़नी और बड़े

Scanned by CamScanner

ही सख़ी और हुज़ूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम के सच्चे मुहिब्ब और तालिब थे।

हिकायत नम्बर(168) मोहर की गुमशद्गी

हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास हुज़ूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम की मोहर मुबारक थी जिस पर "मोहम्मद रसूल अल्लाह" कूंदह था। एक दिन हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो,अन्ह एक कुएँ पर बैठे थे के इत्तेफाक़न मोहर मुबारक आपके हाथ से कुएँ में गिर गई, इस कुएँ में इंसान की कद तक पानी था हज़रत उस्मान ने हुक्म दिया के जो शख़्स इस मोहर को कुएँ से निकाल देगा, एक लाख रुपया उसे इनाम दूंगा, लोगों ने हर चंद कोशिश की और इस कुएँ की मिट्टी तक निकाल डाली मगर मोहर ना मिली, इस मोहर की वर्कत से हज़रत उस्मान के सब मतीअ थे, मगर जब वो मोहर गुम हो गई तो लोगों का ख़याल कुछ दीगरगूँ हो गया और तरह तरह की बेबुनियाद शिकायतें हज़रत उस्मान की करने लगे और मामूली मामूली बातों पर आपकी गिरफ़्त करने लगे, एक शख़्स ने मदीना मुनव्वरह में कबूतर उड़ाने शुरू कर दिए, हज़रत उस्मान ने उन कबूतरों के पर काट डाले अब वो कबूतर बाज़ हज़रत के दुश्मन हो गए फिर किसी ने गुलेल बनाई और गुल्लह उड़ाने लगे आपने फ़रमाया के इससे किसी को तकलीफ होगी वो गुलेल तुड़वा दी, गुलेल बाज़ भी आपके दुश्मन हो गए, मोहर गुमशुद्गी से इसी तरह लोग बिला वजह आपके ख़िलाफ होने लगे। (सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 99)

सबक:- चूंके शर्फे शहादत से आपको मुशर्रफ होना था, और इसकी ख़बर हुज़ूर ने पहले ही से दे दी थी, चुनाँचे एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मअ अबुबक्र व उमर और उसमान के एक पहाड़ पर तशरीफ़ ले गए और वो पहाड़ हिला तो हुज़ूर ने अपना पैर मुबारक इस पहाड़ पर मार कर फ़रमाया, ठहर जा ऐ पहाड़! के तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद खड़े हैं। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 554)

ये दो शहीद कौन थे? एक हज़रत उमर और दूसरे हज़रत उस्मान, हज़रत उमर तो शहीद हो गए थे और अब हज़रत उस्मान की बारी थी, और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने एक मर्तबा उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के कान में भी आपके शहीद होने का सारा क़िस्सा बयान फ़रमा दिया था (नुज़्हत-उल-मजालिस, सफ़ा 341, जिल्द 2) इसलिए हज़रत उस्मान की इस मुक़द्दर शहादत की इब्तिदा इस मोहर की गुमशुद्गी से हो गई।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(169) एक फितने बाज़ यहूदी

अब्दुल्लाह बिन सबा एक शरीर और मुफत्तन यहूदी था जो हज़रत उस्मान के वक़्त में मुनाफिक़ बनकर मुसलमान हो गया था, कुछ दिन मक्का व मदीना में रहा मगर यहाँ उसका दाव ना चला तो फिर ये मुसाफिर शहर बसरा में गया, कुछ वहाँ नुक़्स फैलाया, फिर कूफे में गया मगर कहीं पूरे तौर से उसको मौक़ा ना मिला, जब मिस्र में आया तो अहले मिस्र को ये बात तालीम दी के बताओ मोहम्मद (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) का मर्तबा ज़्यादा है या ईसा (अलेहिस्सलाम) का? सबने कहा हमारे हज़रत का मर्तबा ज़्यादा है, कहा, तो बड़ा अफ़्सोस है के ईसा तो क़यामत से पहले दुनिया में आवें और काफिरों को हलाक करें और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम न आवें और आपके दुश्मन जो चाहें किया करें, ये बात कब हो सकती है? ग़रज़ अहले मिस्र ने ये रजअत का मसला मान लिया, जब इस यहूदी का ये दाव चल गया तो फिर वो एक क़दम और आगे बढ़ा और कहने लगा के हर नबी का एक वसी होता है और जनाब नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के वसी हज़रत अली करमल्लाहो वजह हैं, ख़िलाफत का हक़ वसी का होता है, उस्मान ने ख़िलाफत का ग़सब कर लिया है, तुम किसी तरह उस्मान को ख़िलाफत से अलग करो और अली को बिठाओ ये बे दीन यहूदी हज़रत अली का भी ख़ैरख़्वाह ना था वो तो महेज़ मुसलमानों में इफ़्त्राक़ पैदा करना चाहता था, चुनाँचे कई लोग उसके इस दाव में भी आ गए और कहने लगे के हम उस्मान को किस तरह ख़िलाफत से अलग करें। वो बोला के तुम पहले जो हाकिम हज़रत उस्मान की तरफ़ से मिस्र पर मुक़र्रर हैं उनकी शान में एत्राज़ करो और लोगों को अपनी तरफ़ राग़िब करो और जगह जगह मिस्र में और बसरा में ख़त रवाना करो चुनाँचे जगह जगह से ख़त हाकिमों के मुतअल्लिक़ शिकायतों के लिखे जाने लगे और राय आम्मा को इस तरफ़ किया जाने लगा के उस्मान के हाकिम ज़ुल्म करते हैं बहुत से कूफा और बसरा के लोग भी इस साज़िश में शरीक हो गए यहाँ तक के अहले मिस्र के अहले कूफा व बसरा ने हज़रत उस्मान की तरफ़ लिखा के और तो हम हर तरह चैन से हैं मगर आपके हाकिम हम पर बड़ा ज़ुल्म करते हैं, आप उन्हें मौक़ूफ कर दें। हज़रत उस्मान ने जवाब में लिखा के जिस जिस पर मेरे आमिलों ने ज़ुल्म किया है वो इस मर्तबा ज़रूर हज करने आए, मेरे आमिल भी आएंगे इस वक़्त सबके ज़ुल्म का बदला दिलवाऊँगा, हज़रत उस्मान ने

Scanned by CamScanner

इधर अपने सब आमिलों को तलब कर लिया चुनाँचे हुक्काम तो सब आ गए मगर शिकायत करने वालो में से कोई ना आया, हज़रत उस्मान ने उन हाकिमों से पूछा के तुम ज़ुल्म क्यों करते हो? तो उन सब ने अर्ज़ किया के ये बात बिलकुल ग़लत और बनावटी है हम ने कभी कोई ज़ुल्म नहीं किया चुनाँचे हज़रत उस्मान ने भी मालूम कर लिया के ये महेज़ शरारत और झूट है। (सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 100)

सबक:- हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के ख़िलाफ ये साज़िश यहूदियों की थी और यहूदियों की ये दिली ख़्वाहिश थी के मुसलमानों की आपस में फूट पड़े और हमारा दिल ठंडा हो।

हिकायत नम्बर(170) हाकिम की तबदीली

इब्ने सबा यहूदी की साज़िश से अहले मिस्र कूफा और बसरा वाले हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के खिलाफ हो गए और बसरा वालों ने एक मर्तबा बे बुनियाद शिकायात के ख़त लिखे जिनका जवाब हज़रत उस्मान ने दिया मगर उन्होंने जब दूसरी मर्तबा बेबुनियाद शिकायतों के ख़त लिखे तो हज़रत उस्मान ने फिर कोई जवाब ना दिया उसके बाद फिर इब्ने सबा यहूदी के उक्साने पर एक हज़ार मिस्री और उसी क़द्र कूफी और पाँच सौ बसरा के लोग हज के नाम से मदीना मुनव्वरह की तरफ़ रवाना हुए और मदीना मुनव्वरह को घेर लिया, जब हज़रत उस्मान ने देखा के लोग मेरे क़त्ल के दरपे हैं तो आप हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास आए और ये कहा के मेरी और तुम्हारी क़ुराबत है लोग तुम्हारी बात मान लेंगे उन लोगों को मना करो के मेरे खून में हाथ रंगीं ना करें और जो कुछ उनका मतलब है बयान करें, मैं पूरा करूंगा, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह उन लोगों के पास गए और सख़्ती से उनको रोका और दरयाफ़्त फ़रमाया के तुम्हारा मतलब क्या है? उन्होंने कहा के मिस्र से पहले हाकिम को माक़ूफ किया जाए और मोहम्मद बिन अबी बक्र को मिस्र का हाकिम बनाया जाए हज़रत उस्मान ने उनकी इस बात को तसलीम करके पहले हाकिम को मोक़ूफ कर दिया और मोहम्मद बिन अबी बक्र को हाकिम बना दिया अहले मिस्र उस वक़्त वापस चले गए। (तारीख-उल-खुलफा, सफ़ा 111, सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 101)

सबक:- ये बाग़ी बराए नाम तरफ़े दाराने हज़रत अली थे और दरअसल इब्ने सबा यहूदी की साज़िश का शिकार थे और खुद हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह ही के तरफ़दार थे चुनाँचे

Scanned by CamScanner

आपने उन बाग़ियों को सख़्ती से रोका और एक दूसरी रिवायत में है के आपने हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह से फ़रमाया के ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! आप मुझे इजाज़त दीजिए मैं आपकी तरफ़ से उन बाग़ियों के साथ जंग करूं मगर हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमया के ऐ अली! मैं नहीं चाहता के मेरी वजह से लोगों का खून बहे। (हयात-उल-जीवान, सफ़ा 46, जिल्द 1)

हिकायत नम्बर(171) जअली ख़त

हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह का एक रिश्तादार था जिसका नाम मरवान था, ये शख़्स बड़ा निकम्मा और फितने बाज़ था, हज़रत उस्मान ने जब मिस्र के हाकिम को मअज़ूल करके मोहम्मद बिन अबी बक्र को मुक़र्रर किया तो चूंके मिस्र का साबिक़ हाकिम मरवान का रिश्तेदार था इसलिए उसे ये बात बुरी मालूम हुई और उसने एक जअली ख़त मिस्र के हाकिम के नाम लिखा के ये ख़त उस्मान अमीर-उल-मोमिनीन की तरफ़ से है जिस वक़्त मोहम्मद बिन अबी बक्र तुम्हारे पास आए तो उसे क़त्ल कर देना, और फलाँ फलाँ सात आदमियों को भी क़त्ल कर देना, ख़ुफिया तौर पर हज़रत उस्मान की मोहर लगाकर हज़रत उस्मान के ग़ुलाम को ऊँट पर सवार करके मिस्र को रवाना किया, रास्ते में वो लोग और ये ग़ुलाम बाहम मिल गए, इस ग़ुलाम से पूछा के तुम कहाँ जाते हो, कहा के मैं मिस्र जाता हूँ, पूछा क्यों जाते हो? कहा के अमीर-उल-मोमिनीन का एक पैग़ाम बनाम हाकिम मिस्र लेकर जाता हूँ, लोगों ने कहा हाकिम मिस्र तो हमारे साथ है जो पैग़ाम है उन से कहो, कहा ये नहीं वो हाकिम जो मिस्र में है, कहा तुम्हारे पास कोई ख़त है? ग़ुलाम ने कहा के नहीं कोई ख़त नहीं, लोगों को शुबह हुआ उस ग़ुलाम की तलाशी ली तो देखा के हज़रत उस्मान की तरफ़ से पहले हाकिम मिस्र के नाम ख़त है उसमें लिखा है के मोहम्मद बिन अबी बक्र को लोगों ने ज़बरदस्ती हाकिम मुक़र्रर करवाया है जिस वक़्त ये लोग मिस्र में आवें तो मोहम्मद बिन अबी बक्र के हाथ पेर काट देना और उन सबको दायम-उल-हब्स करना, ये ख़त देखकर सब ग़ुस्से में आग हो गए और फिर वापस मदीना मुनव्वरह में आए और मदीना में तमाम लोगों को जमा किया और वो ख़त सुनाया, मदीने लोग वो ख़त लेकर हज़रत उस्मान की ख़िदमत में हाज़िर हुए और ख़त दिखाया और पूछा के ये ख़त आपने लिखवाया है? हज़रत उस्मान वो ख़त देखकर हैरान रह गए और फ़रमाया, मैंने ये खत हरगिज़ नहीं लिखवाया, लोगों ने

Scanned by CamScanner

कहा के सवारी का ऊँट आप ही का है? आपने फ़रमाया हाँ! ऊँट तो मेरा ही है और जो उस पर ग़ुलाम बैठ कर ख़त लिए जा रहा था वो ग़ुलाम भी आप ही का है? फ़रमाया हाँ वो ग़ुलाम मेरा ही है, ये मोहर आपकी है जो ख़त के ऊपर लगी हुई है? फ़रमाया हाँ! मोहर भी मेरी है, फिर ख़त आपका क्यों कर नहीं? फ़रमाया वल्लाह! ना मैंने ख़त लिखा ना लिखवाया, मेरी मोहर किसी ने चुराई है और मेरी तरफ़ से लगाई है अब तो सबने कहा के ये ऐसे बूढ़े हो गए हैं के उनको मोहर और ख़त की भी ख़बर नहीं रही तो उनको बहरहाल ख़िलाफत से मअज़ूल करना ही पड़ेगा वरना उन्हें हम क़त्ल कर देंगे। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 111, सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 102)

हिकायत नम्बर(172) हज़रत उस्मान की शहादत

इब्ने सबा यहूदी की साज़िश और मरवान की शरारत से अहले बसरा को कूफे और मिस्र वाले हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के बेगुनाह खून से हाथ रंगे बग़ैर ना रह सके चुनाँचे वो लोग हज़ारों की तअदाद में बलवा करके आ गए उस वक़्त सहाबा-ए-इक्राम ने अर्ज़ किया, या अमीर-उल-मोमिनीन! आप हम को लड़ाई का हुक्म दीजिए ताके हम उनको मार भगायें, आपने फ़रमाया के तुमको क़सम है अल्लाह की! मेरे लिए किसी मुसलमान का एक क़तरा खून ना गिराना, मैं क़यामत के दिन खुदा को क्या जवाव दूंगा? सहाबाइक्राम ने कहा आप मक्का मोअज़्ज़मा चले जाईये, या मुल्क शाम चले जाईये वहाँ हज़रत मुआविया रज़ी अल्लाहो अन्ह हैं और उनका लश्कर है आपने फ़रमाया दोस्तो! मैं आख़री वक़्त में अपने नबी के मज़ार को किस तरह छोड़ कर चला जाऊँ? हाँ! मस्जिदे नबव्वी में चलता हूँ और उन लोगों से पूछता हूँ के तुम बिला वजह मुझे क्यों क़त्ल करना चाहते हो।

चुनाँचे आप तशरीफ़ ले गए और उन बलवाईयों से खिताब फ़रमाया के ऐ मिस्री लोगो! तुम मुझ को क्यों क़त्ल करते हो, मेरी उम्र थोड़ी सी रह गई है मैं खुद ब खुद ही इन्तिक़ाल कर जाऊँगा क़सम है खुदा की जब कभी लोगों ने किसी नबी को नाहक़ क़त्ल किया है तो हज़ारहा आदमी इस नबी के बदले में क़तल हुए और मैं ख़ली[illegible]य्यद-उल-मुरसलीन हूँ मेरे बदले में अस्सी हज़ार क़तल होंगे अगर मुसल[illegible] मेरे क़ातिलों से बदला ना लेंगे तो आसमान से अल्लाह तआला पत्थर बरसा कर मेरे क़ातिलों को हलाक कर देगा, देखो ऐसा ना करना, खुदा की क़सम इस वक़्त तो तुम मेरी मौत चाहते हो और मेरे क़त्ल होने के बाद यूं तमन्ना करोगे के काश उस्मान का एक

Scanned by CamScanner

एक सांस एक एक बरस की बराबर उम्र का होता, उस वक़्त एक बलवाई ने आपके हाथ का असा जो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का तबर्रूक था, हज़रत के उस्मान के हाथ से छीन कर अपने घुटने पर रख कर तोड़ दिया, फौरन उसके घुटने में एक फोड़ा पैदा हुआ और शाम तक उसका सारा बदन गल कर मर गया, अब बलवाई सेंकड़ों की तअदाद में हज़रत उस्मान के गिर्द आकर जमा हो गए और मकान को घेर लिया और ये कहा के अब हम आपको क़त्ल किए बग़ैर ना छोड़ेंगे, सबका आना जाना अन्दर का बन्द किया, हज़रत उस्मान को नमाज़ के वास्ते भी घर से ना निकलने दिया कोई चीज़ खाने की भी अन्दर ना जाने दी यहाँ तक के आपका पानी भी बन्द किया जो कुछ घर में था वो सब ख़त्म हुआ फिर सारा घर प्यासा मरने लगा जब सात दिन बराबर इसी तरह गुज़रे और किसी को एक क़तरा भी पानी का ना मिला तब हज़रत उस्मान ने अपने मकान की खिड़की से सर बाहर निकाला और आवाज़ दी के यहाँ अली हैं? किसी ने जवाब ना दिया, फ़रमाया सअद हैं? फिर किसी ने जवाब ना दिया, हज़रत उस्मान ने फ़रमाया के ऐ उम्मते मोहम्मदिया! रोम फारस के बादशाह भी अगर किसी को क़ैद करते हैं ज़रूर क़ैदी को दाना पानी देते हैं, ऐ लोगो! मैं तुम्हारा ऐसा गुनेहगार क़ैदी हूँ के मुझ को पानी भी नहीं देते। है कोई जो अल्लाह के वास्ते उस्मान को एक पियाला पानी का दे उसका बदला मैं पहला पियाला जो मुझ को मेरे नबी से होज़े कोसर पर मिलेगा उसको दूंगा। वहाँ होज़े कोसर की किस को परवाह थी मगर जब हज़रत अली को ख़बर हुई, तीन मशकें आपने भरकर कमर से तलवार बाँधी और सर पर आँहज़रत सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का अमामा बाँध कर पानी लेकर चले और लोगों से कहा के ये काम तो काफिर भी नहीं करते जो काम तुम ने किया है पानी बन्द ना करो, देखो ग़ज़बे इलाही नाज़िल हो जाएगा। मगर उन ज़ालिमों ने मश्कों में बरछे मारकर पानी किल दिया इतने में जनाब उम्मे हबीबा उम्म-उल-मोमिनीन एक ख़च्चर पर सवार होकर और एक पानी की मश्क साथ लेकर आईं और ये ख़याल किया के कमबख़्त मेरा तो अदब करेंगे और लोगों से कहा के मेरी उमय्या की कुछ अमानतें उस्मान के पास हैं ज़रा मैं उनको पास जाना चाहती हूँ ताके वो अमानत ले आऊँ, ये सुनकर बलवाई बोले के ओ झूटी! ये कहकर ख़च्चर के मुंह पर लकड़ी मारी और चार जामे का बन्द काट दिया ख़च्चर आपको ले भागा, हज़रत उम्म-उल-मोमिनीन गिरते गिरते बचीं। ये माजरा देखकर लोग घबराए और ये कहा, ख़ुदा तुम्हारा नास करे अज़वाजे

Scanned by CamScanner

नबी के साथ भी ऐसी बुरी तरह पेश आने लगे, अहले मदीना को बहुत गुस्सा आया और तलवारें लेकर हज़रत उस्मान से अर्ज़ किया के अब तो अज़वाजे नबी की भी बेहुर्मती होने लगी ऐ उस्मान! अब तो लड़ने की इजाज़त दीजिए, हज़रत उस्मान ने फ़रमाया, तुम मेरे लिए अपनी जानें ज़ाए ना करो मुझे अगर लड़ना मंज़ूर होता तो अब तक हज़रहा फौज शाम और इराक़ से मंगवाता, मैं लड़ना हरगिज़ नहीं चाहता, सब को क़समें देकर वापस कर दिया फिर जब कुछ दिन गुज़रे और हज़रत उस्मान को प्यास की बहुत सख़्त तकलीफ हुई तो आपने फिर अपना मुंह खिड़की से बाहर निकाला और फ़रमाया तुम जानते हो जब हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मदीना मुनव्वरह में आए थे तो यहाँ पानी मुसलमानों को मोल मिलता था और कुँआ यहूद के क़ब्ज़े में था। हुज़ूर ने फ़रमाया कौन है जो इस कुएँ को ख़रीद दे और इसके बदले में जन्नत का चश्मा ले ले, मैंने वो कुँआ 35 हज़ार में ख़रीदकर तुम्हारे ऊपर वक़्फ कर दिया वही आज मैं हूँ के चालीस दिन से पानी के लिए उस्मान के बच्चे रोते हैं और उन्हें पानी नहीं मिलता, लोगो! तुम को मालूम है के मस्जिद नबव्वी इब्तिदा में निहायत तंग थी मैंने पच्चीस हज़ार रुपया देकर मकान और ज़मीन देकर मस्जिदे नबव्वी में शामिल की, आज मैं ऐसा हो गया के तुम मुझ को इसी मस्जिद में दो रकातें पढ़ने से रोकते हो, लोगो! क़यामत के रोज़ क्या उज़्र करोगे?

पचास दिन तक हज़रत उस्मान उसी मकान में क़ैद रहे, इस अर्से में बराबर रोज़े रखते रहे एक रात आपने ख़्वाब में देखा के जनाब रिसालत मआब सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपने मज़ार शरीफ से बाहर तशरीफ़ लाए और अबुबक्र और उमर रज़ी अल्लाहो अन्हुमा आपके साथ हैं, हज़रत उस्मान के पास आए और फ़रमाया, ऐ उस्मान! क्या तुम्हें प्यास बहुत लगी है? तुमने चालीस दिन तक रोज़ा रखा, ऐ उस्मान! कल रोज़ा तुम हमारे पास आकर खोलोगे, हम होज़े कोसर से तुम्हारा रोज़ा खुलवाऐंगे, ऐ उस्मान! कल तुम शहीद किए जाओगे, और तुम्हारा खून का पहला क़तरा आयत *फसायकफीकाहुमुल्लाहू वहुवस्समी-उल-अलीम* पर पड़ेगा।

ये ख़्वाब देखकर हज़रत उस्मान ने अपने मकान का दरवाज़ा खोल दिया और फ़रमाया, आने दो आज तो मेरी दअवत हुज़ूर होज़े कोसर पर कर गए हैं, दरवाज़ा खोलते ही बलवाई अन्दर घुस आए और इस ख़याल से के कोई दरवाज़ा फिर बन्द ना कर दे किवाड़ों में आग लगा दी, दरवाज़े के ऊपर छप्पर पड़ा था उसको भी आग लग गई, घर वाले घबरा गए मगर

Scanned by CamScanner

हज़रत उस्मान उस वक़्त नमाज़ पढ़ते थे और सूरत तॉहा शुरू थी घर में आग लग रही थी मगर जनाब की नमाज़ या क़िराअत पढ़ने में ज़रा भ फर्क़ या तुकनत ना थी यहाँ तक के नमाज़ से आप फारिग़ हुए, क़ुरआन मंगाया, खोला, सामने रखा वही आयत निकली, एक आदमी आपके क़त्ल के इरादे से आपके पास आया, आपने फ़रमाया, तू मुझको क़त्ल ना कर क्योंके नबी अलेहिस्सलाम ने तेरे लिए दुआ की थी के अल्लाह तुझ को उस्मान के खून में हाथ रंगने से बचाए क्या तू मेरे नबी की दुआ के ख़िलाफ करेगा? इस शख़्स को तो ये बात सुनते ही पसीना आया और शर्मिंदा होकर घर से निकल गया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ी अल्लाहो अन्ह इस मौक़े पर आए और फ़रमाया, ज़ालिमो! ख़बरदार! उस्मान का खून ना करो, देखो अल्लाह तआला एक उस्मान के बदले अस्सी हज़ार को क़त्ल करेगा, उस वक़्त तक मदीना मुनव्वरह की हिफाज़त फरिश्ते करते हैं जिस वक़्त तुम उस्मान को क़त्ल करोगे फरिश्ते चले जाऐंगे, एक ज़ालिम बोला, ओ यहूदी बच्चे! तू क्या जाने, जा अपना काम कर, हज़रत उस्मान ने फ़रमाया के तुम सब्र करो।

इतने में सोदान बिन हमरान एक शख़्स आया और कहने लगा, ओ उस्मान तू किस दीन पर है? आपने फ़रमाया मैं दीने मोहम्मदी पर हूँ, उसने बड़े ज़ोर से आपका गला घोंटा, फिर एक और ज़ालिम आपके पास आया और आपके चहरे पर तमाचा मारा और तलवार आपकी जानिब उठाई आपने हाथ से तलवार को रोका, हाथ कट गया, फ़रमाया ये वो हाथ था जो वही लिखा करता था आज ये राहे मौला में कटे हैं, ये वो हाथ है जिसने सय्यद-उल-मुरसलीन के हाथ पर बैत की जिस दिन से ये हाथ नबी के हाथ से मिला था किसी गंदी चीज़ को इस हाथ ने छुआ था, लोगो! ज़रा इस हाथ को अच्छी तरह दफ़्न करना, उस ज़ालिम ने कहा लो बुलाओ अपने मददगारों को, फ़रमाया मेरा जो मददगार है मेरें पास है, फिर एक और ज़ालिम आया उसने तीन ज़ख़्म आपके माथे पर और तीन छाती पर बरछी की नोक से किए उस वक़्त जो क़ुरआन शरीफ सामने रखा था और उसे आप पढ़ रहे थे उस पर पहला क़तरा आपके खून का जो पड़ा वो इस आयात पर पड़ा वो इस आयत पर पड़ा फसायकफीकाहुमुल्लाहू "ऐ उस्मान! तेरा बदला लेने को तेरा अल्लाह काफी है" आप अशहदअंल्लाइलाहा इल्ललल्लाहू व अशहदअन्ना मौहम्मदन रसूल अल्लाह कहते हुए ज़मीन पर गिरे, उस ज़ालिम ने आपकी पसलियों पर कूदना शुरू किया, आपकी तीन पसलियाँ टूट गईं ज़ालिमों ने आपके अज़वाज का ज़ेवर उतारा और घर का सब असबाब लूट लिया।

Scanned by CamScanner

(तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 112, सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 101)

सबक़: अब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी की साज़िश रंग लाई और अहले मिस्र उसके मंसूबे का शिकार होकर मुसलमानों में एक अज़ीम फितने के ज़हूर का मौजिब बन गए, ये फितना फिर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के दौर में और भी ज़्यादा फैला और यहूदियत मुख़्तलिफ रूपों में ज़ाहिर हुई और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को अपने नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से अपनी शहादत का सारा किस्सा मालूम हो चुका था और आप राज़ी बरज़ाऐ इलाही थे इसी वास्ते आपने सहाबाइक्राम को उनसे लड़ने की इजाज़त ना दी और ना ही शाम व इराक़ से कोई फौज मंगवाई और ये भी मालूम हुआ के इब्ने सबा यहूदी की तालीम से बलवाईयों के दिल में ना सहाबा की इज़्ज़त रही और ना अज़वाज-उन्नबी की हुर्मत और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह की शहादत शरीफा से हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह की शहादत भी कुछ कम नहीं बल्के उससे भी ज़्यादा दर्दनाक है करबला में ज़ालिमों ने चन्द दिन पानी बन्द किया था मगर यहाँ चालीस रोज़ से ज़्यादा पानी बन्द रहा, अगर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह मज़लूम हैं तो हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह उनसे भी बढ़कर मज़लूम हैं। रज़ी अल्लाहो अन्हुमा

हिकायत नम्बर(173) हज़रत अली मुर्तज़ा करमल्लाहो वजहू

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के एक चचा थे जिनका नाम इमरान कुनियत अबु तालिब थी, अबु तालिब की बहुत सी औलाद थी जिनमें से एक हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह भी थे, एक मर्तबा मक्का मोअज़्ज़मा में क़ेहत पड़ गया और लोग इस मुसीबत में बुरी तरह घिर गए, अबु तालिब जो कसीर-उल-अयाल थे अपनी महदूद आमदनी और कसीर-उल-औलाद की वजह से इस क़ेहत से बहुत मुतास्सिर हुए, उस वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने अपने दूसरे चचा हज़रत अब्बास से फ़रमाया के चलिये मेरे साथ अबु तालिब के घर चलें और उनके अयाल का बार कुछ हल्का करें चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम और हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाहो अन्ह अबु तालिब के पास पहुँचे और हज़रत अब्बास ने अपनी कफालत में जअफर को ले लिया और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने अपनी निगरानी में हज़रत अली को ले लिया और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह अभी सात या आठ साल ही के थे के आने इस्लाम क़बूल

Scanned by CamScanner

फ़रमाया लिया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 343, जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर की तरबीयत में रहे और थोड़ी उम्र के लोगों में से सबसे पहले आप ही हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम पर ईमान लाए।

हिकायत नम्बर(174) अबु त्राब

एक दिन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह मस्जिद की दीवार के पास ज़मीन पर आराम फ़रमा थे और आपकी पुश्ते अनवर मिट्टी से लग रही थी इतने में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए और हज़रत अली को ज़मीन पर लेटे हुए देख कर आपको उठाया और आपकी पुश्त अनवर से अपने दस्ते अनवर से मिट्टी झाड़ते हुए फ़रमाया *अजलस अबा त्राब* मिट्टी वाले उठ बैठ। हज़रत अली को हुज़ूर के मुंह से "अबु त्राब" का लफ़्ज़ कुछ ऐसा पसंद आया के आपको अपने असली नाम से ज़्यादा यही नाम पसंद आने लगा और अली कहने से आप इतना खुश ना होते जितना अबु त्राब कहने से खुश होते। (तारीख-उल-खुलफा सफ़ा 118)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह का कुनयती नाम "अबु त्राब" हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का रखा हुआ था और इस नाम में एक ख़ास मोहब्बत जलवा फ़रमा है, इसीलिए हज़रत अली को ये नाम बड़ा प्यारा था के ये नाम प्यारे का रखा हुआ प्यार का नाम है।

हिकायत नम्बर(175) हैदर करार

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम सहाबा इक्राम अलेहिम-उर्र-रिज़वान के मुक़द्दस लश्कर को लेकर ख़ैबर के यहूदियों की सरकोबी के लिए निकले और ख़ैबर पहुँच कर यहूदियों के सब क़िलों को महसूर किया, यहूदियों ने जब अपने आपको क़िलों में महसूर पाया तो मजबूर होकर क़िलों के अन्दर बैठ कर ही मदाफअत करने लगे। यहूदियों को अपने इन क़िलों पर बड़ा नाज़ था लेकिन इस्लामी शेरों ने उनके तीरों और पत्थरों की ज़द में रहते हुए आगे बढ़कर क़िले नाअम के साथ और भी दो एक क़िले फतह कर लिए फिर क़िला क़मूस पर धावा किया चुनाँचे ये क़िला भी दो तीन दिन में फतह हो गया और इसी तरह मसअब, तलीह और सलायम नाम के क़िले भी फतह हो गए अब क़िले ख़ैबर की बारी थी ये क़िला सबसे ज़्यादा मज़बूत था उसकी फतह के लिए बड़ी कोशिश की गई मगर ये क़िला फतह होने में ना

Scanned by CamScanner

आया। जब कई रोज़ गुज़र गए तो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया खुदा की क़सम! कल मैं झंडा ऐसे शख़्स को दूंगा जो अपनी खुदा दाद क़ुव्वत से क़िले को फतह करेगा चुनाँचे दूसरे दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह को झंडा दिया और फ़रमाया जाओ तुम इस क़िले को फतह करो, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह झंडा और लश्कर लेकर क़िले ख़ैबर की तरफ़ बढ़े तो क़िले ख़ैबर का मालिक मरहब हज़रत अली के मुक़ाबले में आया और ये शैर पढ़ने लगा:-

क़द अलिमत ख़ैबरू अन्नी मरहबन
शाकी-इस-सिलाही बतलन मुजर्रिब

मतलब इन शैरों का ये है के तमाम ख़ैबर को मालूम है के मैं मरहब हूँ वो मुसल्लह और तजुर्बेकार बहादुर है।

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जब मरहब का ये शैर सुना तो आपने जवाब में ये शैर पढ़ा।

अनाअल्लज़ी सम्मतनी उम्मी हेदराहू
कलीसी ग़ाबतिन करीहिल मंज़राहू

यानी सुन ओ मरहब! "मैं वो हूँ जिसका नाम मेरी माँ ने शेर रखा है जो जंगल के शेरों की तरह मुहीब है"

इसके बाद मरहब और हज़रत अली का मुक़ाबला शुरू हो गया, आख़िर हज़रत शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो अन्ह की तलवार मरहब की सप्र को काटते हुए उसके सर पर पहुँची और सर के दो टुकड़े करके उसके बदन के भी दो टुकड़े कर दिए।

सरे खुद सर को काटा चेहरा काटा हलक़ से निकली
निदाऐ अलहज़ हर सू ज़बान ख़ल्क़ से निकली

मरहब खाक पर लौटने लगा, मरहब को इस हालत में देखकर उसके दूसरे साथियों ने क़िले से निकल कर मुसलमानों पर हमला कर दिया लेकिन बहादुराने इस्लाम ने जान पर खेल कर ऐसा धावा किया के यहूदी हिम्मत हार के भागे और मुसलमानों ने उनका तआक़्क़ुब किया, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह क़िले के फाटक पर पहुँच गए और क़िले के दरवाज़े को पकड़ कर इस ज़ोर से खींचा के पल भर में उसे उखाड़ के अलग फेंक दिया और सब मुसलमान क़िले के अन्दर दाख़िल हो गए मुसलमानों की इस यलग़ार से यहूदियों के छक्के छूट गए और क़िला फतह हो गया। (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 230, जिल्द 1)

Scanned by CamScanner

सबक:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह बहुत बड़े बहादुर थे और शेरे खुदा थे और ये सब कुछ हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की अता और आपका सदक़ा था और ये भी मालूम हुआ के मग़रूर काफिरों के मुक़ाबले में उनका तकब्बुर व ग़ुरूर तोड़ने के लिए अपने ओसाफ को फख़्रिया के तौर पर बयान करना जायज़ है और ये भी मालूम हुआ के उन अल्लाह वालों में बहुत बड़ी ताक़त होती है जो वज़नी दरवाज़ा कई आदमी मिलकर खोलते थे हज़रत अली ने इतना बड़ा दरवाज़ा अपने एक हाथ से उखाड़ कर परे फैंक दिया।

हिकायत नम्बर(176) ज़िरह की चोरी

एक मर्तबा हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की ज़िरह चोरी हो गई ओर एक यहूदी से बरआमद हुई हज़रत अली ने उससे फ़रमाया के ये तो मेरी ज़िरह है, यहूदी ने कहा अगर आपकी है तो दावा कीजिए और कोई गवाह पेश कीजिए।

चुनाँचे हज़रत अली शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत क़ाज़ी शरीह रज़ी अल्लाहो अन्ह की अदालत में दावा दायर कर दिया और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह और वो यहूदी मुद्दई और मुद्दा अलिया की सूरत में अदालत में पेश हुए। क़ाज़ी ने बग़ैर किसी रिआयत के दोनों के बयान लिए और हज़रत अली से गवाह तलब किए हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपने साहबज़ादे इमाम हसन रज़ी अल्लाहो अन्ह और अपने ग़ुलाम क़ंबर को गवाही के लिए पेश किया, बेटे और ग़ुलाम की गवाही हज़रत अली के नज़दीक जायज़ थी मगर काज़ी साहब के नज़दीक जायज़ ना थी, ये मसला अमीर-उल-मोमिनीन और क़ाज़ी साहब के माबेन मुख़्तलिफ फीह था इसी लिए क़ाज़ी साहब ने अपने इजतिहाद पर अमल करके हज़रत अली का दावा ख़ारिज कर दिया।

कमरा-ए-अदालत से बाहर निकलने पर यहूदी ने हज़रत अली के चहरे पर बग़ौर देखा तो उसे कोई रंज व मलाल नज़र ना आया। यहूदी दिल में सोचने लगा के हज़रत अली ने ख़लीफा-ए-वक़्त और असद-उल्लाह होने के बावजूद अपना दावा ख़ारिज हाते हुए देखकर कोई ग़ुस्सा नहीं मनाया और आप मतलक़ बरहम नहीं हुए आख़िर किस चीज़ ने उन्हें इस बात से रोका है? उस सवाल का जवाब यहूदी के दिल ही ने दिया के इस्लाम ने, चुनाँचे यहूदी फ़ौरन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह

Scanned by CamScanner

के क़दमों में गिर गया और अर्ज़ की:

हुज़ूर मैंने आपकी ज़िरह ली, आपने मेरा दिल ले लिया। अशहद-अन-लाइलाहा इल्ललाहू व अशहदअन्ना मोहम्मदुर रसूल अल्लाह। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 576)

सबक़:- इस्लाम ने अद्ल व इंसाफ का दर्स दिया है और हमारे इसलाफ ने हर हाल में अद्ल व इंसाफ का साथ दिया है, इस्लाम की नज़र में क़ानून छोटे बड़े, राई रिआया और अमीर ग़रीब सबके लिए बराबर है, हमारे बुज़ुर्गों ने इसी अद्ल व इंसाफ और इस्लामी अख़लाक़ की तलवार से दुनिया को फतह किया।

हिकायत नम्बर(177) अजीब फैसला

अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह का अहेदे ख़िलाफत है एक नोजवान घबराया हुआ और ये कहता हुआ के ऐ अहकम-उल-हाकमीन मुझ में और मेरी माँ में फैसला फ़रमा, हाज़िर हुआ और आकर अर्ज़ की ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! मेरी माँ ने नो माह तक मुझे शिकम में रखा फिर वज़्अे के बाद दो साल तक मुझे दूध पिलाया जब मैं जवान हो गया तो उसने मुझे घर से निकाल दिया और मेरी फ़रज़ंदी का इंकार कर बैठी और अब कहती है के वो पहचानती भी नहीं।

अमीर-उल-मोमिनीन! तेरी वालिदा कहाँ है?

नोजवान: फलाँ क़बीले के फलाँ मकान में रहती है।

अमीर-उल-मोमिनीन: इस नोजवान की माँ को मेरे पास लाया जाए।

आपके हुक्म की तामील की गई और फौरन इस औरत को उसके चार भाईयों और चालीस मसनुई गवाहों समेत लाया गया जो इस बात की क़सम खाते थे के ये औरत इस नोजवान को जानती भी नहीं बल्के ये नोजवान झूटा और ज़ालिमाना दावा कर रहा है। इसका मतलब इस बात से ये है के वो इस औरत को उसके क़बीले में ज़लील करे हालाँके इस औरत का अभी निकाह ही नहीं हुआ, फिर बच्चा कहाँ से जनती, ये तो इस वक़्त तक पाक दामन है।

अमीर-उल-मोमिनीन: ऐ नोजवान! तू क्या कहता है?

नोजवान: ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! खुदा की क़सम, ये मेरी माँ है। उसने मुझे जना और दूध पिलाया और फिर घर से निकाल दिया।

अमीर-उल-मोमिनीन: ऐ औरत ये लड़का क्या कहता है?

औरत: ऐ मोमिनों के सरदार! मुझे खुदा की क़सम! ना मैं उसे पहचानती

Scanned by CamScanner

हूँ और ना ये जानती हूँ के ये किन लोगों में से है, ये मुझे ख़्वाह-म-ख़्वाह ज़लील करना चाहता है, मैं एक क़ुरैशी लड़की हूँ और अभी तक कुंवारी हूँ।

अमीर-उल-मोमिनीनः तो इस मामले का तेरे पास गवाह हैं?

औरतः हाँ! ये हैं, उसके बाद फौरन चालीस गवाह क़सम खाने वाले आगे बढ़े जिन्होंने क़समें खाकर औरत के हक़ में गवाही दी और नोजवान को झूटा बतलाया।

अमीर-उल-मोमिनीनः अच्छा तो आज मैं तुम्हारे दरमियान ऐसा फैसला नाफिज़ करूंगा जिसको मालिक अर्श बालाऐ अर्श पसंद फ़रमाएगा, क्यों ऐ औरत तेरा कोई वली है?

औरतः क्यों नहीं, ये मेरे भाई हैं।

अमीर-उल-मोमिनीनः (उसके भाईयों से मुख़ातिब होकर) क्या मेरा हुक्म तुम्हारे लिए और तुम्हारी बहन के लिए क़ाबिले क़बूल होगा?

चारों भाईः हाँ हाँ! क्यों नहीं! अमीर-उल-मोमिनीन जो फ़रमायें हमें मंज़ूर है।

अमीर-उल-मोमिनीनः मैं खुदा को और हाज़रीन को गवाह करता हूँ के मैंने बिला शक इस औरत को इस नोजवान के साथ बयाह दिया, चार सौ नक़द दरहमों के मेहर पर अपने माल से, ऐ कंबर! मेरे पास चार सौ दरहम लाओ, कंबर ने फौरन तामील की और उन दरहमों को नोजवान के हाथ में रख दिया।

अमीर-उल-मोमिनीनः ऐ नोजवान! इन दरहमों को अपनी औरत की गोद में डाल दे और जाओ अब मेरे पास इस हालत में आना के तुझ में नहाने का असर हो (यानी बाद मुबाशरत व ग़स्ल के हाज़िर होना) नोजवान ये इर्शाद सुनकर उठा और दरहम औरत की गोद में डाल दिए।

औरतः (चिल्ला कर) ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! जहन्नम जहन्नम! क्या आप ये चाहते हैं के आप मुझे मेरे फ़रज़ंद से बयाह दें, बखुदा ये मेरा फ़रज़ंद है, मेरे भाईयों ने एक कमीने आदमी से मेरा उक़द कर दिया था जिससे मैंने ये फ़रज़ंद जना। फिर जब ये बालिग़ हुआ तो भाईयों ने मुझे ये हुक्म दिया के मैं इसकी फ़रज़ंदी से इंकार कर दूं और उसे घर से निकाल दूं, बखुदा ये मेरा लख़्ते जिगर है।

अमीर-उल-मोमिनीनः अच्छा जाओ, अपने फ़रज़ंद को घर ले जाओ। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 577)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह बाब *मदीनत-उल-इल्म*

Scanned by CamScanner

थे और ये इस पाक इल्म का नतीजा था के ऐसे ऐसे मुश्किल मसायल बड़ी आसानी से हल फ़रमा लेते थे और इस क़िस्म की मुश्किलात इल्म दीन ही से हल होती हैं।

हिकायत नम्बर(178) आठ रोटियाँ

दो आदमी हम सफर थे एक के पास पाँच रोटियाँ थीं और दूसरे के पास तीन, खाने का वक़्त आया तो रास्ते में एक जगह दोनों ठहरे और वो रोटियाँ इक्ठ्ठी करके दोनों मिलकर खाने को बैठे इतने में एक तीसरा शख़्स भी आ गया, उन्होंने उससे कहा आओ भई! खाना हाज़िर है इस शख़्स ने ये दअवत क़बूल कर ली और वो भी उनके साथ खाने में शरीक हो गया और फिर तीनों ने मिलकर वो रोटियाँ खाईं, खाना खा लेने के बाद तीसरा शख़्स आठ रुपये उनको दे गया और कह गया के आपस में बाँट लेना चुनाँचे जब वो दोनों उन आठ रुपयों को बाँटने लगे तो पाँच रोटी वाले ने कहा के मेरी पाँच रोटियाँ थीं मैं पाँच रुपये लेता हूँ और तेरी तीन थीं, तो तीन ले तीन रोटी वाला कहने लगा, ऐसा हर गिज़ ना होगा बल्के आधे रुपये तेरे और आधे मेरे, हम दोनों ने मिलकर रोटी खाई है इसलिए दोनों का हिस्सा भी बराबर होगा, दोनों में तकरार बढ़ गई और फिर दोनों अपने इस झगड़े का फैसला कराने हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की अदालत में पहुँचे, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने सारा क़िस्सा सुनकर तीन रोटी वाले से फ़रमाया के तुम्हें अगर तीन रुपये मिलते हैं तो तीन ही ले लो, तुम्हारा फायद इसी में है वरना अगर हिसाब करके लोगे तो तुम्हारे हिस्से में सिर्फ एक रुपया आता है, वो हैरान होकर बोला, एक रुपया? भला ये किस तरह हो सकता है? मुझे ये हिसाब समझा दीजिए तो मैं एक ही ले लूंगा।

हज़रत अली ने फ़रमाया, अच्छा तो सुनो! तुम्हारी तीन रोटियाँ थीं और इस तुम्हारे साथी की पाँच, कुल आठ रोटियाँ थीं और तुम खाने वाले तीन तो उन आठ रोटियों के तीन तीन टुकड़े टुकड़े करो तो चौबीस टुकड़े बनते हैं अब इन चोबीस टुकड़ों को तीन खाने वालों पर तक़सीम करो तो आठ आठ टुकड़े सबके हिस्से में आए यानी तीनों ने आठ आठ टुकड़े खाए। आठ तुम ने, आठ तुम्हारे साथी और आठ तुम्हारे महमान ने, अब सुनो के तुम्हारी तीन रोटियाँ थीं, इन तीन रोटियों के तीन तीन टुकड़े करें तो नो टुकड़े बनते हैं और तुम्हारे साथी की पाँच रोटियाँ थीं, इन पाँच रोटियों के तीन तीन टुकड़े करें तो पंद्रह टुकड़े बनते हैं तो तुमने अपने नो टुकड़ों में आठ खुद

Scanned by CamScanner

खाए और तुम्हारा सिर्फ एक टुकड़ा बचा जो महमान ने खाया लिहाज़ा तुम्हारा एक रुपया, तुम्हारे साथी ने अपने पंद्रह टुकड़ों में से आठ खुद खाए और उसके सात टुकड़े बचे जो महमान ने खाए, लिहाज़ा सात रुपये उसके, ये फैसला सुनकर वो शख़्स हैरान रह गया और मजबूरन उसे एक ही रुपया लेना पड़ा और दिल में कहने लगा के तीन ही ले लेता तो अच्छा था। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 126)

सबक़:- हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जो बाब मदीनत-उल-इल्म हैं बड़े बड़े मुश्किल मसायल को हल फ़रमाया और वाक़ई आप मुश्किल कुशा हैं।

हिकायत नम्बर(179) जंगली दरिंदा

एक शख़्स ने हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह से अर्ज़ किया के जनाब! मेरा इरादा सफर का है मगर मैं जंगली दरिंदों से डरता हूँ आपने उसे एक अंगूठी देकर फ़रमाया, जब तेरे नज़दीक खौफनाक जानवर आए तो फौरन कह देना के ये अली बिन अबी तालिब की अंगूठी है, अज़ाँ बाद इस शख़्स ने सफर किया और इत्तेफाक़ से राह में एक जंगली दरिंदा उस पर हमला करने दौड़ा, उसने पुकार कर कहा ऐ दरिंदे! ये देख मेरे पास अली इब्ने अबी तालिब की अंगूठी है, दरिंदे ने जब हज़रत अली की अंगूठी देखी तो अपना सर आसमान की तरफ़ उठाया और फिर वहाँ से दौड़ता हुआ कहीं चला गया, ये मुसाफिर जब सफर से वापस आया तो उसने ये सारा क़िस्सा हज़रत अली को सुनाया तो आपने फ़रमाया, उस दरिंदे ने आसमान की तरफ़ मुंह करके ये क़सम खाई थी और कहा था के मुझे रब्बे समा की क़सम! मैं इस इलाक़े में बिलकुल हरगिज़ ना रहूंगा जिसमें लोग अली इब्ने अबी तालिब के सामने मेरी शिकायत करें। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 351, जिल्द 2)

सबक़: शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो अन्ह का रौब व दबदबा जंगली शेरों और दरिंदों पर भी था।

हिकायत नम्बर(180) जिब्राईल की तलाश

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास एक मर्तबा जिब्राईल एक आदमी की शक्ल में हाज़िर हुआ और आकर कहने लगा ऐ अली! आप बाब मदीनत-उल-इल्म हैं ज़रा जिब्राईल की तलाश तो कीजिए और बताईये इस वक़्त जिब्राईल कहाँ है? हज़रत अली रज़ी अल्लाहो

Scanned by CamScanner

अन्ह ने पहले तो दायें बायें देखा फिर ज़मीन की तरफ़ देखा फिर ऊपर देखा और फ़रमाया, इस वक़्त जिब्राईल ना तो आसमानों में नज़र आया है और ना ज़मीन में कहीं लिहाज़ा मेरे ख़याल में जिब्राईल तू ही है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 352)

सबक़:- ये नज़र है हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की जो मदीनत-उल-इल्म के दरवाज़े हैं फिर जो मदीनत-उल-इल्म हैं और मौला अली के भी मौला हैं यानी हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के इल्म व नज़र की वुसअत का जो इंकार करे और यूं कहे के हुज़ूर को दीवार के पीछे की भी ख़बर ना थी किस क़द्र जाहिल व बेख़बर है।

हिकायत नम्बर(181) लड़के की माँ

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के ज़माने में दो औरतों ने बच्चे जने रात अंधेरी थी, एक के हाँ लड़का पैदा हुआ और एक के हाँ लड़की, दोनों में झगड़ा इस बात का पैदा हुआ के हर एक कहती थी के लड़का मैंने जना है, आख़िर कार दोनों हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास लाई गईं हर एक उनमें से ये कहती थी के लड़के की माँ मैं हूँ, हज़रत अली ने फ़रमाया के तुम दोनों थोड़ा थोड़ा दूध छातियों से निकाल कर दो बर्तनों में रखो, चुनाँचे ऐसी ही किया गया आपने दोनों दूधों को तोला एक वज़नी उतरा फ़रमाया जिसका दूध वज़नी है लड़का उसी का है, ये फैसला सुनकर लोगों ने दरयाफ़्त किया के आपने ये मसला कहाँ से निकाला, फ़रमाया आयत *लिज़्ज़करी मिस्लू हज़्ज़ल उनसीयीन* से, इस आयत से साफ मालूम होता है के खुदा ने मर्द को हर चीज़ में फज़ीलत दी है हत्ता के ग़िज़ा में भी, पस मैंने इसी हक़ीक़त के पेशे नज़र सोचा था के लड़के की माँ का दूध ज़रूर वज़नी होगा। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 355, जिल्द 2)

सबक़: इस क़िस्म की उक़्दा कुशाई इल्मे दीन ही की बदौलत हो सकती है और क़ुरआने पाक का सही इल्म रखने वाला क़ुरआने पाक से हर मुश्किल का हल पा लेता है।

हिकायत नम्बर(182) मुश्किल सवालात

तौरात के एक आलिम ने जिसका नाम मुज़िर था एक मर्तबा हज़रत अली से पूछा के मेरे चन्द सवालों का जवाब दीजिए। हज़रत अली ने फ़रमाया पूछो क्या पूछते हो? उसने पूछा।

Scanned by CamScanner

बताईये वो कौन सा मर्द है जिसका ना बाप है ना माँ और वो कौन सी औरत है जिसका ना बाप है ना माँ? और वो कौन सा मर्द है जिसकी माँ तो है लेकिन बाप नहीं और वो कौन सा पत्थर है जिसने जानवर जना है और वो कौन सी औरत है जिसने एक ही दिन में सिर्फ तीन घड़ियों में बच्चा जन दिया और वो कौन से दो दोस्त हैं जा आपस में कभी दुश्मन ना बनेंगे और वो कौन से दो दुश्मन हैं जो आपस में कभी दोस्त ना बनेंगे?

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया, जवाब सुनो! मर्द जिसका ना बाप है ना माँ आदम अलेहिस्सलाम हैं और वो और जिसका ना बाप है, ना माँ हव्वा अलेहिस्सलाम हैं और वो मर्द जिसकी माँ है लेकिन बाप नहीं। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम हैं और वो पत्थर जिसने जानवर जना है वो वो पत्थर है जिससे हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम की ऊंटनी पैदा हुई और वो औरत जिसने एक ही दिन में तीन घड़ियों में बच्चा जना, मरयम अलेहाअस्सलाम हैं जिनको एक घड़ी में हमल ठहर गया और दूसरी घड़ी में दर्देज़ेह पैदा हुई और तीसरी घड़ी में हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम पैदा हो गए और वो दोस्त जो कभी आपस में दुश्मन ना बनेंगे जिस्म और रूह हैं और वो दुश्मन जो कभी आपस में दोस्त ना बनेंगे मौत और हयात हैं। मुज़िर ने सुनकर कहा वाक़ई ऐ अली! तुम ने सही जवाब दिए और वाक़ई तुम बाब *मदीनत-उल-इल्म* हो। (जामअे-उल-मोजज़ात, सफ़ा 23)

सबक़:- *मदीनत-उल-इल्म* के, बाब के इल्म से पता चलता है के *मदीनत-उल-इल्म* सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम में कोई ऐसी शै नहीं जो ना हो।

हिकायत नम्बर(183) यहूदी की दाढ़ी

एक यहूदी की दाढ़ी बहुत मुख़्तसिर थी, ठोड़ी पर चन्द एक गिनती के बाल थे और हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की दाढ़ी मुबारक बड़ी घनी और भरी हुई थी, एक दिन वो यहूदी हज़रत अली से कहने लगा, ऐ अली! तुम्हारा ये दावा है के क़ुरआन में जमीअ उलूम हैं और तुम बाब मदीनत-उल-इल्म हो तो बताओ के क़ुरआन में क्या तुम्हारी घनी दाढ़ी और मेरी मुख़्तसिर दाढ़ी का भी ज़िक्र है? हज़रत अली ने फ़रमाया? हाँ है लो सुनो!

क़ुरआन में आता है:

वलबलादूत्तय्यबू यख़रूजू नबातहू बिइज़नी रब्बीही वल्लज़ी ख़बूसा ला यख़रूज इल्ला नकीदा

Scanned by CamScanner

"यानी जो अच्छी ज़मीन है उसका अल्लाह के हुक्म से खूब निकलता है और जो खराब है उसमें नहीं निकलता मगर थोड़ा मुश्किल।"

तो ऐ यहूदी! वो अच्छी ज़मीन मेरी ठोड़ी है और ख़राब ज़मीन तेरी ठोड़ी।

सबक़:- क़ुरआने पाक में जमीअ उलूम मौजूद हैं मगर कोई समझने वाला होना चाहिए।

हिकायत नम्बर(184) हज़रत अली और इख़्लास

(मंज़ूम हिकायत)

कहते हैं शेरे खुदा ने एक बार
एक दुश्मन पर किया खंजर का वार
भागा ऐसा ज़ख़्म खा के पुश्त पर
की ना मारे ख़ौफ के पीछे नज़र
कब भला मुमकिन था कर के कोई छल
शेर के पंजे से यूं जाए निकल
कर तआक़्कुब जा गिराया खाक पर!
थे जुदा करने को सर से उसका तन
नागहाँ उस मुशरिक बेअक़्ल ने
चाँद से चहरे पर थूका जहल से
मुर्तज़ा ने हाथ से खंजर को छोड़
मुंह लिया उस काफिर बे दीं से मोड़
छोड़ कर उसको हुए यक्सू खड़े
ये कहा बख़्शा तुझे हट जा परे
दरगुज़र थी ये ख़िलाफ दाबे जंग
रह गया काफिर खड़ा हैरान व दंग
दस्त बस्ता अर्ज़ की ऐ बा कमाल
गर इजाज़त हो करूं मैं इक सवाल
मौत थी मेरी शरारत की सज़ा
अफ़्व में मुझ को बता हिकमत है क्या
मुसकुरा कर वो वली उन्स व जाँ
यूं हुए अपनी ज़बाँ से दरफिशाँ
मुझ को तुझ से थी ना ज़ाती दुश्मनी
जो अदावत तुझ से थी लिल्लाह थी

Scanned by CamScanner

मारता उस वक़्त मैं तुझ को अगर
नफ़्स कहता दिल में अपने फूल कर
इन्तेक़ाम उससे लिया अच्छा किया
थूकने का उसने कुछ पाया मज़ा
मारता तुझ को अगर मैं इस तरह
मुंह दिखाता फिर खुदा को किस तरह
शेरे हक़ हूँ हक़ पे है मेरा यक़ीं
नफ़्स के कहने पे मैं चलता नहीं
देखकर इख़्लास शाहे दीन का
मुशरिक बे दीं मुसलमान हो गया
मुर्तज़ा का देखकर इख़्लासे ताम
क़ौम भी उसकी हुई मोमिन तमाम
शेरे हक़ से ले सबक़ इख़्लास का
यूं अदा करते हैं हक़ इख़्लास का

(मसनवी शरीफ का तर्जुमा, मोतियों का हार, सफ़ा 78)

सबक़:- हिल्म की तलवार करती है वो काम
छोड़ती हर गिज़ नहीं दुश्मन का नाम

हिकायत नम्बर(185) अली अलमुर्तज़ा की शहादत

जिस तरह इब्ने सबा के गिरोह को संहाबा इक्राम से अदावत थी इसी तरह ख़ारज़ी गिरोह को अहले बैत से अदावत थी और ये दोनों गिरोह ही इस्लाम और मुसलमानों के लिए बेहद ख़तरनाक साबित हुए। चुनाँचे हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो अन्ह से उन ख़ारजियों को सख़्त अदावत थी और एक ख़ारजी मलऊन ने जिसका नाम इब्ने मलजिम था हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह को शहीद कर देने का प्रोग्राम बनाया और एक एक तलवार को ख़ास इसी नापाक़ मक़्सद के लिए ज़हर में बुझाया और मौक़े का मुंतज़िर रहा, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो का दार-उल-खिलाफा कूफा था और आप एक रोज़ सुबह की नमाज़ पढ़ने मस्जिद को जा रहे थे के इब्ने मलजिम ख़ारजी ने जो रास्ते में छुपकर बैठा हुआ था, हज़रत पर हमला कर दिया और आपके माथे पर तलवार मारी, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने तलवार का ज़ख़्म खा कर एक नअरा मारा फ़ुरूतू बिरब्बिल कअबती "खुदा की क़सम! मैं अपनी मुराद को पहुँचा" और फिर आप ज़मीन पर गिर गए

Scanned by CamScanner

और हुक्म फ़रमाया के मरे क़ातिल को पकड़ कर मेरे पास ले आओ ये हुक्म सुनकर लोग इब्ने मलजिम ख़ारजी को पकड़ कर ले आए। हज़रत अली ने फ़रमाया इस मेरे मेहमान के लिए नर्म बिस्तर बिछाओ, अच्छा खुश ज़ायक़ा खाना पका कर उसे खिलाओ और उसे ठंडा पानी भी पिलाओ। ज़ख़्म से खून ज़्यादा निकल जाने से फिर आपको बहुत ज़्यादा ज़ौफ लाहक़ हुआ और आपको शिद्दत से प्यास लगी, घर वाले आपके लिए शर्बत बना कर लाए, हज़रत ने फ़रमाया के पहले मेरे क़ातिल को ये शर्बत पिलाओ, घर वाले जब शर्बत इब्ने मलजिम के पास लाए तो वो बदबख़्त बोला, मैं जानता हूँ के तुमने इसमें मेरे लिए ज़हर घोल रखा है ये कह कर पीने से इंकार कर दिया, हज़रत अली करमल्लाहो वजह ये बात सुनकर रोए और फ़रमाया ऐ बद नसीब! अगर तू इस वक़्त ये मेरा शर्बत पी लेता तो मैं क़यामत के दिन जामे कोसर हर गिज़ ना पीता जब तक पहले तुझे ना पिलाता मगर मैं क्या करूं के तूने मेरे साथ रहना पसंद नहीं किया। इसके बाद आपकी हालत बहुत नाज़ुक हो गई और फ़रमाया, मैं देख रहा हूँ के बहुत बड़ी जमात फरिश्तों की है उनके साथ बहुत बड़े क़ाफले नबियों के हैं सबसे आगे सालार क़ाफला हुज़ूर सय्यद-उल-मुरसलीन मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम हैं और मुझ से फ़रमाते हैं के ऐ अली! खुश हो जाओ के अब तुम बड़े बेचैन और राहत में बुलाए जाते हो, उसके बाद आपने कुछ वसीयतें फ़रमाईं फिर कुछ मुश्क बतौर तबुर्रूक निकाला और रोए, पूछा गया के ये मुश्क कैसा है? फ़रमाया हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मुबारक जनाज़ह को इस मुश्क में बसाया गया था उस वक़्त थोड़ा सा मुश्क बतौर तबर्रूक मैंने आज के दिन के लिए रख लिया था जब मुझे गुस्ल देकर कफन पहनाओ तो ये मुश्क मेरे बदन पर लगा देना फिर अस्सलाम अलेकुम कहा, उसके बाद कलमा शरीफ का विर्द फ़रमाया और अपनी जान राहे हक़ में कुर्बान कर दी, *इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन।* (सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 111)

सबक़:- उन अल्लाह वालों की ये सीरत है के अल्लाह की राह में ज़ख़्म खाते हैं और क़सम खा कर फ़रमाते हैं के हम अपनी मुराद को पहुँचे और अपने क़ातिल की ख़ातिर व मदारात करते हैं और उन पर बड़े बड़े मसायब व आलाम नाज़िल होते हैं और वो हर हाल में खुदा की मर्ज़ी पर राज़ी रहते हैं और ये भी मालूम हुआ के उन पाक लोगों की मौत महेज़ एक इन्तिक़ाल मकानी होती है और वो बड़े इतमिनान के साथ अस्सलाम अलेकुम

Scanned by CamScanner

फ़रमा कर और कलमा शरीफ का विर्द फ़रमाते हुए अपने महबूब हक़ीक़ी के पास पहुँच जाते हैं।

हिकायत नम्बर(186) नबी के चार यार

एक दिन हज़रत जिब्राईल एक तबाक़ लेकर आए, जो जन्नत के सेबों से लबरेज़ था, तबाक़ हुज़ूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम के सामने रखकर अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! आप इसमें से उस शख़्स को इनायत कीजिए जो आपको प्यारा हो, ये तबाक़ एक नूरानी खुवानपोश से ढका हुआ था हुज़ूर ने अपना दस्ते अनवर उसमें दाख़िल करके एक सेब निकाला देखते क्या है के उसकी एक जानिब लिखा हुआ है *हाज़िही हदयातुंम मिनल्लाही लिअबी बक्रनिसिद्दीक़* "यानी ये खुदा का तोहफा है अबुबक्र के लिए" और उसकी दूसरी जानिब ये इबारत लिखी हुई है *मन अबग़ज़ास सिद्दीक़ा फहुवा ज़िंदीक़ुन* "यानी सिद्दीक़ से बुग्ज़ रखने वाले बेदीन है" फिर आपने दूसरा सेब उठाया, उसके एक तरफ़ तो ये लिखा था *हदयातुन मिनलवहाबी लिउमरिबनिल ख़त्ताबी* "यानी ये खुदाऐ वहाब का तोहफा है उमर बिन ख़त्ताब के लिए" और दूसरी जानिब ये लिखा है *मन अबग़ज़ा उमरा फहुवा फी सक़रा* "यानी उमर के दुश्मन का ठिकाना जहन्नम में है" ज़ाँ बाद एक और सेब उठाया जिसके एक जानिब ये लिखा था *हाज़िही हदयातुन मिनलहन्नानिल मन्नानिल उसमानिबनी अफ़्फान* "यानी ये खुदाए मन्नान व हन्नान का तोहफा है उस्मान बिन अफ़्फान के लिए"। और दूसरी तरफ़ ये लिखा था *मन अबग़ज़ा उस्माना फख़सामाहू अर्रहमानू* "यानी उस्मान के दुश्मन का रहमान दुश्मन है"। फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने तबाक़ में से एक और सेब उठाया जिसके एक जानिब तो ये लिखा था *हाज़िही हदयातुन मिनल्लाहिल ग़ालिबी लिअलिय्यिब्नी अबी तालिबी* "यानी ये खुदाऐ ग़ालिब का तोहफा है अली इब्ने अबी तालिब के लिए"। और दूसरी जानिब ये लिखा है *मन अबग़ज़ा अलिय्यन लम यकुन लिल्लाही वलिय्यन* "यानी अली का दुश्मन खुदा का दोस्त नहीं"। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने इन इबारात को पढ़ कर अल्लाह की बेहद हम्दो सना की। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 361, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के ये चार यार जिनकी बाज़ हिकायात आपने पढ़ीं बड़े मर्तबों और दर्जों के मालिक हैं और चार यारानें नबी का दुश्मन अल्लाह का दुश्मन है लिहाज़ा हर मुसलमान को उन

Scanned by CamScanner

"चार यार" से मोहब्बत रखना लाज़िम है और उनकी अदावत से बचना वाजिब वरना ईमान की ख़बर नहीं।

हिकायत नम्बर(187) पंजतन पाक

एक दिन नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मदीना मुनव्वरह के एक दरवाज़े से इस तरह बरआमद हुए के आपके दायें तरफ़ हज़रत अबुबक्र, बायें तरफ़ हज़रत उमर, आगे हज़रत अली और पीछे हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अनहुम थे। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया सुन लो के हम जन्नत में भी यूं ही दाख़िल होंगे तो जो कोई हम में ज़रा भी तफरीक़ डाले उस पर खुदा का मार। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 362, जिल्द 2)

सबक:- हुज़ूर के चार यार हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के यहाँ भी साथी थे और जन्नत में भी साथी होंगे।

हिकायत नम्बर (188) रसूल अल्लाह(स०अ०स०) का एलाने हक़

एक दिन नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने मिंबर पर चढ़कर अव्वल तो खुदा की हम्दो सना की फिर फ़रमाया, अबु बक्र हुज़ूर के पास आए हुज़ूर ने उन्हें सीने से लगा लिया और दोनों आँखों के दरमियान बोसा दिया और फिर बुलंद आवाज़ से फ़रमाया, ऐ मुसलमानों के गिरोह! ये अबु बक्र सिद्दीक़ हैं, मुहाज़ीन व अनसार के बुज़ुर्ग व शेख़ हैं ये मेरे सच्चे दोस्त और हमदर्द हैं, जिस वक़्त लोगों ने मुझे झुटलाया उन्होंने मेरी तसदीक़ की, उन्होंने जान व माल से मेरी ख़ैर ख़्वाही की, मेरी ख़ातिर बिलाल को ख़रीदा और उसे आज़ाद किया तो सुन लो के उनके दुश्मन पर खुदा की फटकार हो, खुदा ऐसे शख़्स से बेज़ार है और मैं भी बेज़ार हूँ, तुम लोगों को चाहिए के मेरा ये एलान सब को सुना दो।

फिर फ़रमाया, उमर कहाँ हैं? हज़रत उमर बोले मैं हाज़िर हूँ, फ़रमाया मेरे पास आओ, आप हुज़ूर के पास पहुँचे तो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने उन्हें भी सीने से लगा कर पैशानी पर बोसा दिया और फिर बुलंद आवाज़ से फ़रमाया ऐ मुसलमानों की जमात! ये उमर बिन ख़त्ताब मुहाज़ीन व अनसार के शेख़ व बुज़ुर्ग हैं, यही वो हैं जिनके दिल और ज़बान पर खुदा ने हक़ नाज़िल फ़रमाया और जो सच्ची बात कहने से नहीं रूकते तो सुन लो के जो उनका दुश्मन है खुदा और उसका रसूल उससे भी बेज़ार हैं और

Scanned by CamScanner

उस पर खुदा की मार हो, ज़ाँ बाद फ़रमाया, उस्मान कहाँ हैं? हज़रत उस्मान बोले हुज़ूर! मैं हाज़िर हूँ, फ़रमाया, मेरे पास आओ, हज़रत उस्मान हुज़ूर के पास गए तो हुज़ूर ने उन्हें भी छाती से लगाया और पैशानी को चूम कर बुलंद आवाज़ से फ़रमाया, ये उस्मान मुहाज़ीन व अनसार के शेख़ व बुज़ुर्ग हैं यही वो शख़्स हैं जिन से आसमान के फरिश्ते भी हया करते हैं, यही वो हैं जिनके निकाह में मैंने खुदा के हुक्म से दो बेटियाँ दीं और उनको अपना दामाद बनाया, तो सुन लो के उनके दुश्मन पर भी खुदा की लानत!

इसके बाद फ़रमाया अली कहाँ हैं? हज़रत अली बोले या रसूल अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ, फ़रमाया, मेरे पास आओ, हज़रत अली हुज़ूर के पास गए तो हुज़ूर ने उन्हें भी सीने से लगाया, पैशानी को चूमा और फिर बुलंद आवाज़ से फ़रमया ऐ मुसलमानों के गिरोह! ये अली इब्ने अबी तालिब हैं, मुहाज़ीन व अनसार के शेख़ व बरगज़ीदा हैं ये मेरे भाई और मेरे चचा के बेटे और मेरे दामाद भी हैं, ये मेरे भाई गोश्त और खून हैं ये अल्लाह के दुश्मनों के लिए तलवार हैं, यही शेर खुदा हैं, सो सुन लो के उनके दुश्मन पर खुदा की लानत इससे मैं भी बुरी हूँ, और खुदा भी बरी है जो शख़्स खुदा और रसूल से बेज़ारी चाहे वो अली से बेज़ार हो। (नुज़हत-उल-मजाजिलस, सफ़ा 365, जिल्द 2)

सबक़:- रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने अलल एलान अपने चार यारों के मदारिज बयान फ़रमा दिए और मुसलमानों को ख़बरदार कर दिया के उनसे मोहब्बत रखना ज़रूरी है और उनसे अदावत व बेज़ारी मौजिब लानत है लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिए के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के चार यारों से मोहब्बत रखे।

हिकायत नम्बर(189) जज़ीरे का जिन्न

हज़रत इमाम शफअई अलेह अर्रहमत ने एक शख़्स को मक्का में देखा जो पहले इसाई था और अब मुसलमान हो चुका था, इमाम शफअई ने उससे पूछा के तेरे मुसलमान होने का सबब क्या है? वो बोला, मैं एक बहरी सफर में था के हमारी कश्ती टूट गई और पानी की मोजों ने उसे एक ऐसे जज़ीरे में ले जा कर डाल दिया जिसमें फल फूल और साफ सुथरे पानी की नहरें जारी हैं। मैंने उस जज़ीरे पर सारा दिन गुज़ारा, रात हुई तो क्या देखता हूँ के एक चौपाया जिसका सर शुतर मुर्ग के सर जैसा था और चेहरा आदमी का सा, उसके हाथ पाँऊ ऊँट के से थे और दुम मछली की सी, वो बुलंद आवाज़ से

Scanned by CamScanner

कह रहा था के खुदा के सिवा कोई परसतिश के लायक़ नहीं और मोहम्मद उसके बरगज़ीदा रसूल हैं और अबु बक्र उनके यारे ग़ार, उमर फतूहात के मालिक, उस्मान शहीद और अली काफिरों पर खुदा की तलवार हैं। उनके दुश्मनों पर खुदा की मार हो। मैं ये मंज़र देख कर डर कर भागने लगा तो उसने कहा, ठहर जा और एक क़दम भी आगे मत रखना वरना अभी हलाक हो जाएगा, फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगा, तेरा दीन क्या है? मैंने कहा, इसाई, उसने बड़ी नर्मी से कहा तो मुसलमान हो जा, तमाम आफतों से महफूज़ रहेगा, चुनाँचे मैं मुसलमान हो गया, फिर उसने कहा खूब याद रख के तेरा इस्लाम अबु बक्र, उमर, उस्मान और अली की मोहब्बत रखने की वजह से तकमील को पहुँचेगा, मैंने उससे पूछा के ये बातें तुम्हें कैसे मालमू हुईं? वो बोला, मैं जिन्न हूँ और हमारी एक जमात है जो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम पर ईमान ला चुकी है, ये सब बातें हमारी इस जमात ने हुज़ूर की ज़बानी सुनी हैं। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 367, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के चार यारों की मोहब्बत व उल्फत इंसानों और जिनों के दिल में भी है लेकिन शर्त ये है के इस्लाम मौजूद हो।

हिकायत नम्बर(190) सिद्दीक़ व फारूक़ का दुश्मन

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम सहाबा इक्राम की मईयत में अपनी मस्जिद में रौनक अफरोज़ थे के एक मुनाफिक़ जो बज़ाहिर मुसमलमान था आया और उसकी पिंडलियों से खून बह रहा था, हुज़ूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया ये क्या हुआ? उसने बताया के फलाँ मुहल्ले की फलाँ गली से गुज़र रहा था के वहाँ एक कुतिया ने मुझे काट लिया है, थोड़ी देर के बाद एक और मुनाफिक़ आया उसकी पिंडलियों से भी खून बह रहा था, उसने भी यही बताया के उस कुतिया ने मुझे काट खाया है, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने सहाबा इक्राम से फ़रमाया, चलो तो उस कुतिया को देखें, मुमकिन है वो दीवानी हो गई हो, चुनाँचे हुज़ूर सहाबा इक्राम की मईयत में वहाँ पहुँचे तो उस कुतिया ने हुज़ूर को देखते ही आपके क़दमों पर लौटना शुरू कर दिया और जब हुज़ूर ने उससे पूछा के तूने उन दोनों को क्यों काटा? तो वो बज़बाने फसीह बोली, या रसूल अल्लाह! ये दोनों मुनाफिक़ हैं और ये दोनों आपके यारे ग़ार सिद्दीक़े अक्बर और फारूक़े आज़म को गालियाँ दे रहे थे मुझे गुस्सा आया तो मैंने उन्हें काट खाया, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह

Scanned by CamScanner

व सल्लम ने फिर उन दोनों आदमियों से पूछा तो उन्होंने इक़रार किया और तौबा की। (जामअे अलमोजज़ात लरहादी मतबूआ मिस्र, सफ़ा 19)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर और फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अनहुमा को जो गालियाँ देता है उससे तो जानवर भी अच्छे हैं और ये भी मालूम हुआ के सहाबा-ए-इक्राम को गालियाँ देने वाले से कुत्ते भी अदावत रखते हैं फिर जो दुश्मुनाने सहाबा से दोस्ती रखे सोचिए के वो कौन है?

हिकायत नम्बर(191) एक बे दीन कुम्हार

हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह अलेह के पड़ोसी में एक बे दीन कुम्हार रहता था जिसने अपने एक गधे का नाम अबु बक्र और एक का उमर रखकर अपनी दिली ख़बासत का इज़हार कर रखा था, एक दिन उन दोनों गधों में से एक ने इस कुम्हार को ऐसी लात मारी के वो मलऊन वहीं ढेर हो गया, ये ख़बर जब हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह अलेह को पहुँची तो आपने फ़रमाया, जाकर देख लो, जिस गधे का नाम मलऊन ने उमर रखा था ये उसी से मारा गया होगा, चुनाँचे तहक़ीक़ की गई तो वो वाक़ई उसी गधे की ज़र्ब से मारा गया था जिसका नाम उसने उमर रखा था। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 859, जिल्द 1)

सबक़:- सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की बे अदबी व गुस्ताख़ी बहुत ख़तरनाक है और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह *अशिद्दाऊ अलल कुफ़्फारी* के कुछ ऐसे मज़हर थे के आपका नाम पाक भी जहाँ आया कुफ्र पर हमला आवर हो गया।

हिकायत नम्बर(192) ख़तरनाक दरिंदा

जाफर ख़िदरी फ़रमाते हैं के मैं एक ऐसे क़ाफले के साथ सफर कर रहा था जिसके सब अफ़्राद सहाबा इक्राम के दुश्मन थे वो सबके सब हज़रत सिद्दीक़ व हज़रत फारूक़ के मुतअल्लिक़ मुझ से मुनाज़रह करते हुए चल रहे थे मैं हत्ता उलइम्कान उनके हर एत्राज़ का जवाब दे रहा था, इतने में एक ख़तरनाक जंगल आ गया जिस से एक ख़तरनाक दरिंदा निकला, इत्तेफाक़ देखिए के वो दरिंदा सीधा मेरी ही तरफ़ आया और मुझ पर हमला कर के मुझे उठा कर चल दिया, ये देखकर वो क़ाफले वाले बड़े खुश हुए और मुझे इस ख़याल से बड़ी कोफ़्त हुई के वो कहते होंगे के मोहब्बत शेखेन का मज़ा चख लिया, इस दरिंदे ने मुझे अपने भूके बच्चों के आगे लाकर डाल दिया

Scanned by CamScanner

ताके वो बच्चे खा जाएँ, उस वक़्त मेरे मुंह से बे साख़्ता निकला *या रसूल अल्लाह बिहुरमतिश शेखेनी* अब जो इस दरिंदे के मूंके मेरे क़रीब आए तो मुझे सूंघ कर सब के सब पीछे हट गए, ये देखका दरिंदा ख़ौफनाक आवाज़ में बोला मेरी समझ में वो कह रहा था के क्यों नहीं? पीछे क्यों हट गए? इसके बच्चों ने बज़बान फसीह जवाब दि *लक़द जव्वातना सलसता अय्यामिन सुम्मा जिअतना बिमन युहि असहाबन नबिय्यी सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम*

"तूने हमें तीन दिन का भूका रखा और आज इस शख़्स को ले आ हो जो नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के असहाब से मोहब्ब रखता है" (भला हम इसे कैसे खायें)।

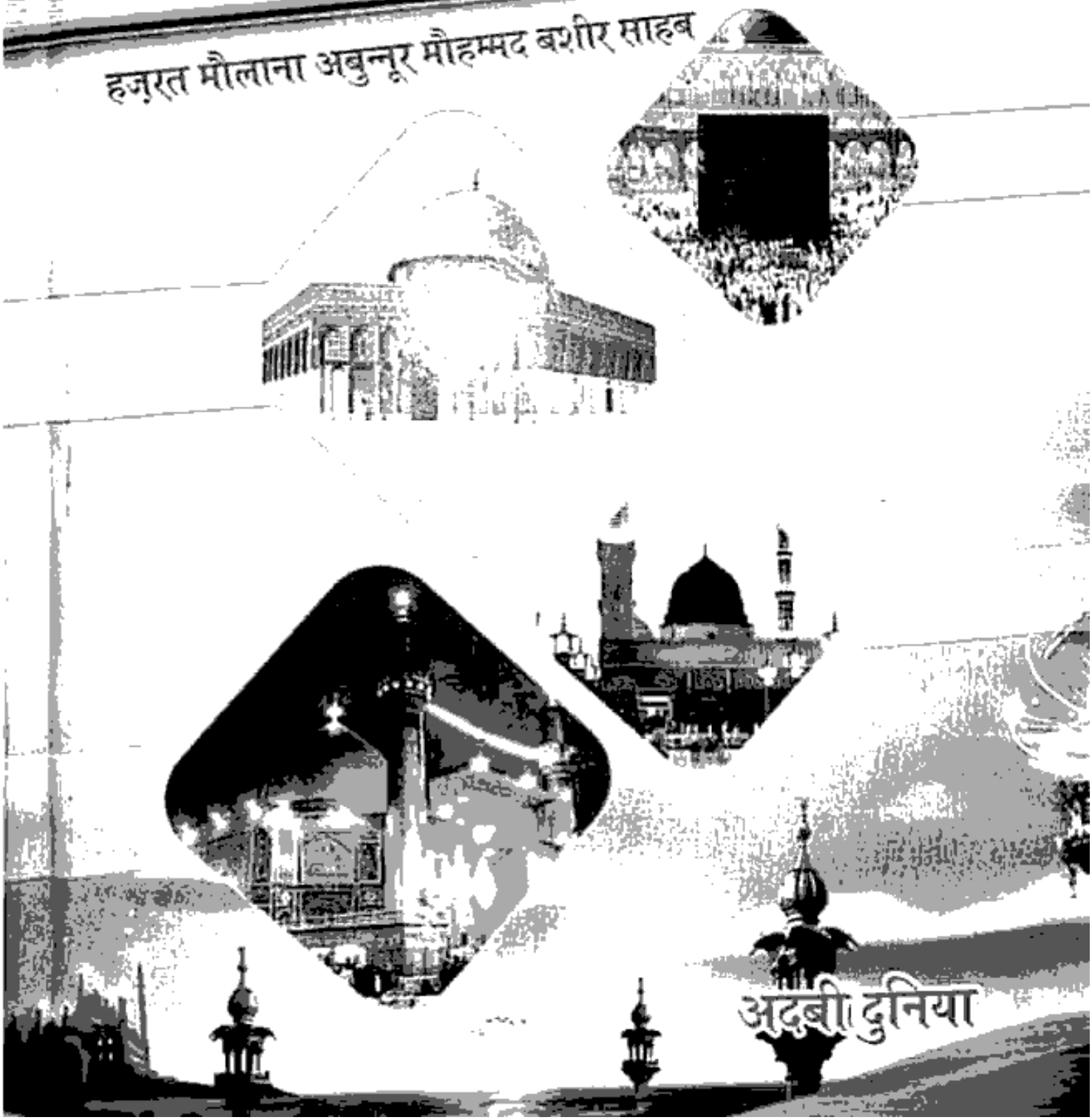
मैंने खुद उनका ये जवाब सुना और मुसर्रत में उठा और चल दि खुदा की क़सम! मुझे उन्होंने कुछ भी ईज़ा ना दी। (जामअे अल मोजज़ा सफ़ा 12)

सबक़:- याराने नबी की मोहब्बत का जंगली दरिंदों को भी पास और इस मोहब्बत से जैसे जाफर की जान बच गई इसी तरह इस मोहब्बत ईमान भी बचता है और ये भी मालूम हुआ के पहले मुसलमान भी मुसी के वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को याद किया करते थे अ या रसूल अल्लाह का नारा लगा कर हुज़ूर से मदद माँगा करते थे।

Scanned by CamScanner

सच्ची हिकायात

हज़रत मौलाना अबुन्नूर मौहम्मद बशीर साहब



अदबी दुनिया

Scanned by CamScanner

इल्तिज़ा है कि इस किताब को अपनी मोबाईल की मैमोरी में सेव करके ना रखे वल्कि आप से गुजारिश है कि इस किताब का मुताला की जिये ये किताब बहुत शानदार है।

दुआ की गुजारिश
डॉ ज़ाहूर रज़वी
अल अश्हर अकडमी

दुआ की ग़ुज़ारिश
मोहम्मद अहतिराम क़ुरैशी

हिस्सा दोम

आप हज़रात से गुजारिश है कि इस किताब को आप अपना निम्ती वक़्त दे और इस किता ब का मुताला करे और हम ना चीज़ को अपनी अपनी दुआओं में याद रखे

Scanned by CamSc
Scanned by CamScanner

जुमला हक़ूक़ बहक़ नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताब	:	सच्ची हिकायात मुकम्मल
तालीफ़	:	मौलाना अबु अलनूर बशीर
सन इशाअत	:	2013
सफ़हात	:	936
मतबअ	:	नाहिद प्रेस, देहली
हदिया	:	
नाशिर	:	अदबी दुनिया, देहली

इस किताब में

कुतब अहादीस और दीगर मुसतनिद इस्लामी किताबों से दिलचस्प, मुफ़ीद और सबक़ आमोज़ हिकायात जमा कर दी गई हैं और हर हिकायत के बाद इससे जो सबक़ हासिल होता हैए लिख दिया गया है और हर हिकायत को असल किताब से देखकर दर्ज किया गया है और किताब का नाम, सफ़हा और जिल्द सब कुछ दिया गया है।

Publisher

ADABI DUNIYA

399, Matia mahal, jama masjid,
Delhi - 110006
Phone : 23250122

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहली नज़र

इस ज़माने में अफ़साने, ड्रामे, किस्से और कहानियाँ बड़े शौक़ से पढ़ी जाती हैं और ये शौक़ बिलअमूम हर छोटे बड़े मर्द और औरत में पाया जाता है, आज कल हर वो तहरीर जिसमें अफ़सानवी तर्ज़ और हिकायती रंग मौजूद हो, पसंदीदगी की नज़र से देखी जाती है, क़ौम का यही रूहजान तबअे इस अम्र का बाइस है के मुल्क के अक्सर रसायल व जरायद अपने अपने "कहानी नम्बर" और "अफ़साना नम्बर" शाय करते हैं और अफ़साना पसंद अफ़राद इन्हें हाथों हाथ लेते हैं।

ये अफ़साने, ड्रामे और आज कल की हिकायात व कहानियाँ ज्यादा तर दरोग़ व कज़िब और ग़ैर वाक़ेई बिना पर मुबनी होती हैं, उनकी कोई हक़ीक़त और असल नहीं होती और ऐसे अफ़साना लिखने वाले उन वज़अई हिकायात को "तबै ज़ाद" और अपनी तख़लीक़ क़रार देकर अपने वज़अे व कज़िब को अपना एक शाहकार साबित करते हैं और अफ़साना पसंद तबीअतें उन्हें उस कारनामे पर दादे तहसीन देती हैं और उसे तरक्क़ी पसंद अदब के नाम से मोसूम करने लगती हैं।

क़िस्से और हिकायात ज़रूरी नहीं के झूट ही हों, इस आलम में क़िस्सों और सच्ची हिकायात का वजूद भी है, खुद क़ुरआने पाक और अहादीसे शरीफ़ा में भी हिकायात व क़सस मौजूद हैं और वो हिकायात व क़सस ऐसे हैं जिनमें सौ फ़ीसदी सदाक़त है और जो अपनी सदाक़त के बाइस मख़्लूक़ के लिए मौजिबे रूश्दो हिदायत और वजह दर्से इब्रत हैं। खुदा तआला ने अपनी सच्ची किताब मजीद में अम्बियाइक्राम अलेहिमअस्सलाम के ईमान अफ़रोज़ क़िस्से और उमम साबिक़ा की सबक़ आमोज़ हिकायात बयान फ़रमाई हैं और रसूले खुदा सल-लल्लाहो-तआला-अलेह व सल्लम ने भी अपने इर्शादाते आलिया में पहली उम्मतों के इब्रत आमोज़ वाक़ेयात और सबक़ आमोज़ हिकायात सुनाई हैं और इसी तरह बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात और उनकी तालीफ़ात में भी इस क़िस्म की सच्ची हिकायत का वजूद पाया जाता है मगर मुश्किल ये है के ये सब पुरानी बातें हैं और इस नए दौर में उन पुरानी बातों की तरफ़ तवज्जह नहीं की जाती ऐ काश! मुसलमान आज

Scanned by CamScanner

कल के लायानी अफ़्सानों और वज़अई और झूटी हिकायात की बजाए अपने हक़ीक़ी अफ़्सानों और सच्ची हिकायात को पढ़ते पढ़ाते तो दिलचस्पी के अलावा उन्हें दीनी और दुनयवी फ़वायद भी हासिल होते।

मुद्दत से मेर दिल में ये ख़याल था के क़ुरआन व हदीस और दीगर इस्लामी लिटरेचर से हक़ीक़ी क़िस्सों और सच्ची हिकायात को जमा करूं और उन्हें सादा और आम फ़हेमो तर्ज़ में क़लमबंद कर के मुसलमानों के लिए एक ऐसी किताब लिखूं जिसका मुतअल्ला उनके लिए दिलचस्पी भी पैदा करे और साथ साथ ही उनके लिए सबक़ व इब्रत पेश करके उनके दीन व दुनिया की इसलाह भी करे चुनाँचे इसी अपने इरादे के तहेत मैंने सच्ची हिकायात को जमा करना शुरू कर दिया और क़ुरआन व हदीस के अलावा और बहुत सी इस्लामी कुतुब का मुतअल्ला करने के बाद इस सबक़ आमोज़ सिसिले की इब्तिदा कर दी।

मेरे ज़हेन में ये सिलसिला बड़ा तवील है और इरादा है के मुबारक सिलसिला को दूर तक ले जाऊँ, मैंने इस तालीफ़ के लिए जो बाब तजवीज़ किए हैं वो हस्बे ज़ेल हैं:-

पहला बाब	तौहीदे बारी
दूसरा बाब	सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा सल-लल्लाहो-अलेह व सल्लम
तीसरा बाब	अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल-सलाम
चौथा बाब	ख़ुलफ़ाए राशिदीन रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
पाँचवा बाब	सहाबाइक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
छटा बाब	अहले बैत अेज़ाम रिज़वान-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन
सातवाँ बाब	आयम्माइक्राम रहमत-उल्लाही अलेहिम अजमईन
आठवाँ बाब	औलियाइक्राम रहमत-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
नवाँ बाब	सलातीने इस्लाम
दसवाँ बाब	मुख़्तलिफ़ हिकायात

Scanned by CamScanr
Scanned by CamScanner

चूँके ये सिलसिला बहुत तवील है इसलिए इस किताब को तीन हिस्सों पर तक़सीम कर दिया है इसका ये पहला हिस्सा जो आपके हाथ में है पहले चार अबवाब पर मुशतमिल है, इसमें पहला, दूसरा, तीसरा, और चौथा बाब है और बाक़ी दूसरे अबवाब इंशाअल्लाह दूसरे हिस्सों में आएँगे इस किताब के पहले बाब में ऐसी हिकायात का इन्तिख़ाब है जिनका ताल्लुक़ "तौहीदे बारी" से है और दूस.. बाब में उन रिवायात व हिकायात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ातेग्रामी से है, उन सच्ची हिकायात व रिवायात से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मरातिब व मदारिज, आपके इख़्तियारात व कमालात और आपके उलूम का पता चलता है और ये बात साबित होती है के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार हैं और दानाऐ ग़यूब हैं और हर गिज़ हर गिज़ हमारी मिस्ल नहीं हैं, तीसरे बाब में अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल सलाम के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे पता चलता है के अम्बियाऐक्राम की बहुत बड़ी शानें हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात अता फ़रमाए हैं, चौथे बाब में ख़ुल्फ़ाऐ राशिदीन यानी हज़रत सिद्दिके अक्बर, हज़रते उमर फ़ारूक़ आज़म हज़रत उस्मान ज़ूलनोरैन और हज़रते मौला अली रिज़वानउल्लाही अलेहिम अजमईन के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे इन चार याराने नबी के मरातिब व मदारिज ज़ाहिर होते हैं और पता चलता है के ये चारों ही अल्लाह के महबूब के महबूब हैं और उनकी मोहब्बत ऐन ईमान है और उनकी अदावत से ईमान जाता रहता है। इस हिस्से में ये चारों बाब हैं बाक़ी के छः अबवाब दूसरे और तीसरे हिस्से में हैं।

ज़रूरत है के आज वो मुसलमान जो क़िस्सों के शौक़ीन हैं वो झूटी हिकायात को छोड़ कर उन सच्ची हिकायात को पढ़ें ताके उन के लिए दीनी तरक्क़ी का सबब हो और वो मुसलमान औरतें जो रातों में बच्चों को झूटी कहानियाँ सुनाया करती हैं इन सच्ची हिकायात को पढ़ें, याद करें और अपने बच्चों को ये सच्ची हिकायात सुनाएँ ताके बच्चों के दिल में भी दीन की रग़बत पैदा हो।

(अबु अलनूर मोहम्मद बशीर)

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

155	पानी पर हुकूमत	174
156	फक़ीर सिफ़त बादशाह	176
157	मुक़द्दस नक़ाब पोश	176
158	फारूक़े आज़म और एक बद्दू	180
159	फारूक़े आज़म और एक बुढ़िया	181
160	नफीस हलवा	183
161	इसकंद्रिया की फतह	183
162	रूअय्यत और क़यामत	184
163	रोम का एलची	184
164	फारूक़े आज़म और एक चोर	185
165	फारूक़े आज़म की शहादत	186
166	हज़रत उस्मान ज़ुलनूरैन	189
167	हया उस्मान	190
168	उस्मान ग़नी सख़ावत का धनी	190
169	जन्नत का चश्मा	191
170	मुबारक हाथ	192
171	बेनज़ीर ज़ियाफ़त	193
172	मोहर की गुमशुदगी	194
173	एक फितने बाज़ यहूदी	195
174	हाकिम की तबदीली	196
175	जअली ख़त	197
176	हज़रत उस्मान की शहादत	198
177	अली मुर्तज़ा करमल्लाहो वजूह	202
178	अबू त्राब	203
179	हैदर कर्रार	203
180	ज़िरह की चोरी	205
181	अजीब फैसला	206
182	आठ रोटियाँ	208
183	जंगली दरिंदा	209
184	जिब्राईल की तलाश	209
185	लड़के की माँ	210
186	मुश्किल सवालात	210
187	यहूदी की दाढ़ी	211
188	हज़रत अली और इख़्लास	212
189	अली अलमुर्तज़ा की शहादत	213
190	नबी के चार यार	215
191	पंजतन पाक	216
192	रसूल अल्लाह(स०अ०स०) का एलाने हक़	216
193	जज़ीरे का जिन्न	217
194	सिद्दीक़ व फारूक़ का दुश्मन	218
195	एक बे दीन कुम्हार	219
196	ख़तरनाक दरिंदा	219

हिस्सा दोम
पाँचवाँ बाब
सहाबा इक्राम रिज़्वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

197	महबूब के क़दमों में	223
198	जन्नत की खुशबू	224
199	एक औरत	224
200	शहद की मक्खियाँ	225
201	फाँसी	226
202	हज़रत कअब की दर्दनाक कहानी	227
203	समुंद्री ग़ाज़ी	233
204	इसतक़लाल बिलाल	235
205	ग़मे हिज्र	236
206	इस्लाम का झंडा	238
207	अल्लाह की तलवार	239
208	मक़ूक़स के दरबार में	241
209	ज़हर की पुड़िया	243
210	मिट्टी का टोकरा	244
211	सफ़र तबूक	247
212	इस्लामी फौज	251

Scanned by CamScanner

213	नसरानी पहलवान	253
214	जंगल का शेर	254
215	शौहर या बेटा	254
216	सुहैब व अम्मार	255
217	क़िला ज़मीन में धंस गया	256
218	फ़सतात का क़िला	257
219	एक सरफ़रोश मुजाहिद	258
220	मुजाहिदा माँ	261
221	हुज़ूर(स०अ०स०) की फूफी	262
222	सिद्दीक़े अक्बर(रअ०) की बेटियाँ	263
223	हज़रत मआविज़ की बेटी	264
224	ग़ाज़ी व नमाज़ी	265
225	नौजवान दूलहा	266
226	शौक़े शहादत	267
227	हबीब बिन ज़ैद रज़ी	268
228	मुजस्समा-ए-ईसार	270
229	तमांचे की हिकमत	272
230	सोने की गेंद	274
231	रसूल की तलवार	276
232	ज़ात-उल-उयून	277
233	जर्जा पहलवान	278
234	उमरो बिन जमूह (रअ०)	279
235	जन्नत का साथी	281
236	यक़ीन	282
237	रात का पहरा	282
238	ईसार	283
239	पानी की मश्क़	284
240	सत घिरा मोहल्ला	285
241	वफ़ा-ए-अहेद	286
242	हरक़ल के दरबार में	289
243	बेश क़ीमत मोती	292
244	मुजाहेदाना जवाब	293
245	मोहम्मद की दुहाई	294
246	दो नन्हे मुजाहिद	294
247	आरबी का घोड़ा	296
248	निराली सज़ा	297
249	सोने की अंगूठी	299
250	सरदार हवाज़न	300
251	कमाले अद्ल	301
252	खुदा की अमानत	302
253	खून मुबारक	303
254	नाबीना सहाबी	304
255	एक हाजतमंद	305
256	असीर रोम	306
257	नअत ख़्वानी	307
258	मेहबूब का अदब	308
259	रसूल अल्लाह की दुहाई	309
260	अहमद मुख़्तार	310
261	मुक़द्दस शायर	311
262	मुक़द्दस पानी	312
263	तवुर्रुकाते आलिया	313
264	इज़्ज़त आमोज़ ख़्वाब	314
265	भिड़ों का हमला	315
266	गश्ती फरमान	315
267	मशवरा	316

छटा बाब

अहले बैत अेज़ाम रिज़वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

268	उम्म-उल-मोमिनीन ख़दीजात-उल-कुबरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा	317
269	उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अन्हा	322

Scanned by CamScanner

270	बोहताने अज़ीम	322
271	गवाहियां	324
272	शौहर की मोहब्बत	325
273	सख़ावत	326
274	ख़ाला जान	326
275	रोज़ा-ए-मेहबूब	328
276	उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ी अल्लाहो अन्हा	328
277	उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिनते हबश रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा	329
278	लम्बा हाथ	330
279	यसरब का बादशाह	330
280	नबी की बेटी, भतीजी और बीवी!	332
281	ख़ातूने जन्नत	333
282	रसमे निकाह	333
283	जलवा-ए-बराअत	334
284	जहैज़	336
285	शाहज़ादो की ज़िन्दगी	336
286	जन्नत का जोड़ा	338
287	शाही दावत	338
288	राज़ की बात	339
289	विसाल फ़ातिमा	341
290	हज़रत अली और कूफ़े का लश्कर	341
291	क़िवाला नवैसी	343
292	अमल का संदूक़	343
293	खुश तबई	344
294	इम्तिहान	345
295	मसले का जवाब	345
296	हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु	346
297	ढेढ़ लाख	347
298	अच्छा सवार	348
299	ख़ताकार को इनाम	349
300	सख़ी घराना	350
301	क़ीमती शर्बत	350
302	खून आलूद छुरी	352
303	जन्नत का सेब	352
304	फरिश्ते की ड्यूटी	353
305	प्यास का इलाज	354
306	हैबत व शुजाअत	355
307	एक अजीब ख़्वाब	356
308	पर्दापोशी	356
309	हज़रत इमाम हसन(र०अ०)	357
310	इमाम हुसैन और एक बदवी	357
311	थूऐ कर्बला	358
312	दिलैराना जवाब	359
313	मज़ारे अनवर पर	360
314	कूफ़ियों के ख़तूत	361
315	बारह हज़ार	362
316	जल्लाद इब्ने ज़ियाद	363
317	इमाम मुस्लिम की शहादत	363
318	मज़लूम बच्चे	365
319	ज़ालिम का अंजाम	367
320	कूफ़े का सफर	370
321	हुरा इब्ने रबाही	371
322	दश्त कर्बला	372
323	तलक़ीन सब्र	374
324	इब्ने ज़ियाद का ख़त	375
325	नहर फिरात	375
326	कुआँ	377
327	बरीर हमदानी और इब्ने साद	377
328	मज़लूम सय्यद	378
329	सरदे अबिद(स०अस०) की आमद	378
330	करामात	379

Scanned by CamScanner

331	इतमामे हुज्जत	379
332	हज़रत हुर(र०अ०)	380
333	हज़रत हुर(र०अ०) की शहादत	381
334	दो शेर	382
335	अज़रक़ पहलवान	384
336	अलमबरदार की शहादत	385
337	अली अक्बर(र०अ०)	386
338	अली अक्बर की शहादत	388
339	यतीम	389
340	नन्हा शहीद	391
341	हज़रत शहर बानो का ख़्वाब	392
342	अलविदा	393
343	शेर का हमला	393
344	आख़री दीदार	395
345	क़यामत	395
346	उम्मुल मोमिनीन का ख़्वाब	397
347	फ़र्वी	400
348	ज़िन्दा हुसैन	401
349	उज़ैर बिन हारून	401
350	गिरजे का पादरी	402
351	ढोल बाजे	403
352	गुस्ताख़	404
353	फ़र्रुख़ का रोना	405
354	नक़्क़ारा-ए-ख़ुदा	406
355	दमिश्क़ की जामअ मस्जिद में	406
356	मदीने को वापसी	407
357	ज़ैनुल आबेदीन	408
358	बुर्दबारी	409
359	ख़तरनाक असदहा	410
360	क़ीमती लिबास	410
361	दीनारों की थैली	411
362	हारून अलरशीद और एक आबिद	411

सातवाँ बाब

आइम्मा इक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

363	इमाम-उल-मुस्लिमीन अबु हनीफा(र०अ०)	412
364	मुक़द्दस बूढ़ा	416
365	पैशवा	416
366	शब बेदार इमाम	417
367	नाख़ुन भर मिट्टी	417
368	ओहदा-ए-क़ज़ा	418
369	कमाल तक़वा	418
370	तासीर क़ुरआन	419
371	ख़ौफ़े क़यामत	419
372	हमसाया-ए-मोची	420
373	एहसान व करम	420
374	फिरासत इमाम	422
375	मसकत जवाब	422
376	ज़बरदस्त फ़र्रुख़	422
377	इमाम मालिक व इमाम आज़म का मुकालमा	423
378	दुल्हनों की तबदीली	425
379	रोशन दान	426
380	तदबीर व हिकमत	427
381	गुमशुदा ख़ज़ाना	427
382	दामाद	428
383	मियाँ बीवी	429
384	चोरों का सुराग़	430
385	चाह किनारा चाह दुर्वेश	430
386	तूसा का जवाब	431
387	मोर का चोर	432
388	आटा	432

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

389	पियाले का पानी	433
390	मुर्ग़ी का अंडा	434
391	अंगूठी का नक़्श	434
392	ग़लत परोपागंडा	435
393	दीनारों भरी थैली	435
394	एक आराबी और सत्तू	436
395	खारिजी को जवाब	437
396	सेब का राज़	437
397	मैदाने हश्र	438
398	हज़रत इमाम शाफ़ई का ख़्वाब	439
399	ज़हीन बच्चा	440
400	हारून रशीद के तख़्त पर	440
401	रहवानी	441
402	फिरासत	442
403	विरासत अंविया	443
404	इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल(रअ)	443
405	ताज़ीम और सिला	444
406	ख़मीरी रोटी	445
407	इल्म व अमल	445
408	सोने का पहाड़	446
409	इब्ने ख़ज़ीमा का ख़्वाब	446
410	इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम मालिक (रअ)	447
411	एहत्रामे इल्म	447
412	क़र्मास में बिछू	448
413	विसाल	448
414	हज़रत उवैस करनी(रअ)	449
415	मातियों का सौदागर	450
416	जिनों में वाज़	453
417	मस्जिद ख़ैफ का वा कमाल बूआ	455
418	आतिश परस्त शमऊन	456
419	दजले के किनारे	458
420	ग़ीबत का बदला	459
421	दहरिये से मुनाज़रा	460
422	यहूदी का परनाला	461
423	हबीब अजमी रहमत-उल्लाह अलेह	461
424	राबिया बसरी	462
425	चोर	464
426	शाहे बलख़	465
427	खट्टे अनार	466
428	पराई खजूर	468
429	रूमान-उल-आबेदीन	469
430	पैग़ामे हक़	470
431	चौपायों का अदब	470
432	ज़ुलनून	472
433	सर्राफ	472
434	सारंगी	473
435	इंसान और कुत्ता	474
436	बायज़ीद और एक कुत्ता	474
437	रोशनी	475
438	बराऐ नाम मुसलमान	476
439	मुनकर नकीर को जवाब	477
440	दौलतमंद और दुरवैश	478
441	पुर असरार बुढ़िया	478
442	बीमार या तबीब	479
443	हर दिल अज़ीज़	481
444	हारून रशीद को नसीहत	481
445	बदशाह फक़ीर के घर	482

हिस्सा सोम
आठवाँ बाब
औलिया इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन

Scanned by CamSca
Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

सच्ची हिकायत का दूसरा हिस्सा

पाँचवाँ बाब

सहाबा इक्राम

रिज़वानल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

मोहम्मदुर्रसूलअल्लाह वल्लज़ीना मआहू अशिद्दाऊ अललकुफ़्फारी रूहूमाहू बेनाहुम (प: 26, रूकू : 12)

मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उनके साथ वाले काफिरों पर सख़्त हैं, और आपस में नर्म दिल (कुंज़-उल-ईमान)

हिकायत नम्बर(193) महबूब के क़दमों में

मैदाने ओहद में हज़रत अम्मार बिन ज़ियाद रज़ी अल्लाहो अन्ह के दिल में एक काफिर का तीर आ लगा। हज़रत अम्मार लड़ख़ड़ा कर गिर गए, और दिल पर हाथ रख कर अल्लाह से अर्ज़ की। के इलाही! मुझे अपने महबूब (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) की ज़ियारत कर लेने दे फिर मेरी जान निकले। चुनाँचे ज़मीन पर गिरते ही आपने अपनी नज़रों से हुज़ूर की तलाश शुरू की और आपने देखा के हुज़ूर थोड़ी दूर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं। चुनाँचे आप ज़मीन पर घिसटते हुए आहिस्ता आहिस्ता हुज़ूर तक पहुँच गए और फिर अपना मुंह हुज़ूर के क़दमों पर रख दिया और अपने रूख़्सारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के तलवों पर मलते जाते और कहते जाते थे।

फ़ुरूतू बिरब्बिल काबती फ़ुरूतू बिरब्बिल काबती

रब्बे कअबा की क़सम मैं अपनी मुराद को पहुँच गया। रब्बे कअबा की क़सम मैं अपनी मुराद को पहुँच गया।

और फिर हुज़ूर(स०अ०स०) के क़दमों ही में जामे शहादत नोश फ़रमा लिया। (तारीख़-उल-इस्लाम, सफ़ा 172)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान की सब से बड़ी

Scanned by CamScanner

मुराद ये थी के महबूबे किब्रिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के क़दमों पर जान निकले। बक़ौल शायर

निकल जाए दम तेरे क़दमों के नीचे
यही दिल की हसरत यही आरज़ू है

मालूम हुआ उन पाक लोगों की बहुत बड़ी शान है और उनसे मोहब्बत रखना महबूब किब्रिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से ही मोहब्बत रखना है।

हिकायत नम्बर(194) जन्नत की खुशबू

मैदाने ओहद में मुसलमानों की एक लग़ज़िश से वक़्ती तौर पर मुसलमान मग़लूब हो गए और दोनों तरफ़ से काफिरों के बीच में आ गए। जिसकी वजह से इधर उधर परेशान दौड़ रहे थे। हज़रत अनस बिन नज़र रज़ी अल्लाहो अन्ह ने देखा के सामने एक दसरे सहाबी हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ी अल्लाहो अन्ह आ रहे हैं। उनसे कहा। ऐ सअद! कहाँ जा रहे हो? खुदा की क़सम जन्नत की खूश्बू ओहद के पहाड़ से आ रही है। ये कह कर तलवार तो हाथ में थी ही, काफिरों के हुजूम में घुस गए और काफिरों से मुक़ाबला करते हुए शहीद हो गए। शहादत के बाद उनके जिस्म को देखा गया तो छलनी हो गया था। अस्सी (80) से ज़्यादा ज़ख़्म तीर और तलवार के बदन पर थे। (हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 9)

सबक़:- जो लोग सच्ची तलब और इख़्लास के साथ अल्लाह के काम में लग जायें उनको दुनिया में जन्नत का मज़ा और जन्नत की खुश्बू आने लगती है।

हिकायत नम्बर(195) एक औरत

अनसार मदीना की एक औरत का बाप और शौहर और भाई तीनों जंगे ओहद में शहीद हो गए। वो औरत लड़ाई के हालात मालूम करते हुए जब मैदाने जंग में पहुँची और उसे मालूम हुआ के उसका बाप, शौहर और भाई तीनों शहीद हो गए हैं तो

उस अफीफा ने ये सब सुन के कहा तो ये कहा
ये तो बतलाओ के कैसे हैं शहनशाहे उमम

यानी वो कहने लगी के मुझे हुजूर का हाल बताओ के वो तो ख़ैरियत

Scanned by CamScanner

से हैं ना? लोगों ने बताया के हुज़ूर बखैरियत हैं तो वो खुश होकर हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर हुई और

बढ़ के उसने रूख़े रोशन को जो देखा तो कहा
तू सलामत है तो सब हैच हैं ये रंजो अलम
मैं भी और बाप भी शौहर भी बिरादर भी फिदा
ऐ शहे दीं तेरे होते हुए क्या चीज़ हैं हम

यानी या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप, शौहर भाई वग़ैरा सब तेरे नाम पर क़ुर्बान! आप सलामत हैं तो मुझे किसी की जुदाई का ग़म नहीं। (तारीख़ इस्लाम 172)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के दिलों में हुज़ूर की कुछ ऐसी मोहब्बत थी के उन पाक लोगों की पाक औरतें भी मोहब्बत रसूल के सामने दुनिया भर के रिश्तों को हैच समझती थीं। फिर आज जो मर्द भी मोहब्बत रसूल को नज़रअंदाज़ करके रिश्तेदारियों को मलहूज़ रखें और शरीअते मुसतफविया की परवा ना करें। किस क़द्र बद नसीब और ना आक़बत अंदेश हैं।

हिकायत नम्बर(196) शहद की मक्खियाँ

अज़्ल और क़ारह के चन्द मुनाफिक़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे के हमारे साथ चन्द मुबल्लिग़ रवाना कर दीजिए जो हम लोगों को दीन की बातें सिखाया करें और हम लोग शरीअत के अहकाम सीख़ लें हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपने दस-असहाब जिनके सरदार हज़रत आसिम बिन साबित रज़ी अल्लाहो अन्ह थे, उनके हमराह रवाना कर दिए। ये लोग जब मुक़ाम रजीअ पर पहुँचे तो मुनाफिक़ीन ने बदअहदी करके क़बीला बनू लेहयान के दो सौ आदमियों को साथ मिलाकर उन दस सहाबा पर हमला कर दिया। हज़रत आसिम रज़ी अल्लाहो अन्ह मअे अपने सात साथियों के शहीद हो गए और हज़रत आसिम ने शहादत से क़ब्ल ये दुआ पढ़ी:

अल्लाहो इन्नी हमीतू दीनाका सदरन्नहारी फाहमी लहमी या - "ऐ अल्लाह! मैंने तेरे दीन की हिमायत में जान दी अब तू इन काफ़िरों के हाथ से मेरे बदन को बचा"

यानी मेरी लाश उनके हाथ ना लगे। चुनाँचे मुनाफिक़ीन हज़रत आसिम का सर काटने के इरादे से आगे बढ़ने लगे तो अल्लाह तआला ने फ़ौरन

Scanned by CamScanner

शहद की मक्खियों का एक लश्कर भेज दिया जिन्होंने हज़रत आसिम रज़ी अल्लाहो अन्ह की लाश मुबारक पर पर्दा डाल दिया और किसी काफिर को पास फटकने ना दिया। जब रात हुई तो खुदा तआला ने एक सेलाब ऐसा भेजा के हज़रत के बदन मुबारक को बहा कर ले गया और काफिर ख़ायब व ख़ासिर फिरे। (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 181 व मिसला फी हुज्जत-उल्लाह अललआलमीन, सफ़ा 869)

सबक:- सहाबा इक्राम अलेहिम दीन की ख़ातिर ज़िन्दा रहे और दीन ही की हिमायत में वो जान भी देते रहे और ये भी मालूम हुआ के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के यारों से दुश्मनी व अदावत मुनाफिक़ीन का काम है।

हिकायत नम्बर(197) फाँसी

अज़्ल और क़ारह के चन्द मुनाफिक़ीन हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर दस सहाबा इक्राम को बग़र्ज़ तबलीग़ अपने हमराह ले गए और रास्ते में मुक़ामे रजीअ पर धोका करके उन दस सहाबा में से आठ को शहीद कर दिया। और दो को जिनका नाम हज़रत ख़बीब और हज़रत ज़ैद रज़ी अल्लाहो अन्हुमा था, गिरफ़्तार करके मक्का ले आए और क़ुरैश के पास फ़रोख़्त कर दिया। हज़रत ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जंगे ओहद में हारिस बिन आमिर को क़त्ल किया था। इसलिए उनको हारिस के लड़कों ने ख़रीदा ताके बाप के बदले में क़त्ल करें। चन्द रोज़ भूका प्यासा अपने घर में क़ैद रखा। एक दिन हारिस का बच्चा तेज़ छुरी से खेलता हुआ ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास पहुँच गया। उन्होंने बच्चे को ज़ानो पर बिठाया। छुरी लेकर रख दी और बच्चे को खिलाने लगे। जब बच्चे की माँ ने देखा के उसका बच्चा छुरी लेकर उस क़ैदी के पास है जिसे चन्द रोज़ से उन्होंने बे आब व दाना रखा था तो वो कांप उठी और बेइख़्तियार चीख उठी। ख़बीब ने कहा क्या तू ये समझती है के मैं इसे क़त्ल कर दूंगा क्या तू नहीं जानती के मुसलमानों का काम ग़दर करना नहीं।

ख़ानदाने हारिस ने चन्द रोज़ के बाद ख़बीब और ज़ैद रज़ी अल्लाहो अन्हुमा दोनों बुज़ुर्गों को हरम की हद से बाहर ले जाकर बइरादा-ए-क़त्ल फाँसी के नीचे खड़ा कर दिया और कहा के इस्लाम छोड़ दो तो जान बख़्शी हो सकती है, दोनों बुज़ुर्गों ने जवाब दिया के जब इस्लाम ही ना रहा तो जान रख कर क्या करेंगे।

Scanned by CamScanner

कुरैश ने पूछा के कोई तमन्ना हो तो बयान करो। ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने दो रकअत नमाज़ पढ़ने की इजाज़त माँगी। क़ातिलों ने मोहलत दे दी। हज़रत ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने नमाज़ अदा की और नमाज़ पढ़ कर फ़रमाया के देर तक नमाज़ पढ़ने को जी चाहता था, लेकिन सोचा के दुश्मन ये ना कहें के मौत से डर गया है। उसके बाद क़ातिलों ने हज़रत ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह को शहीद कर दिया। हज़रत ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फाँसी पाने से क़ब्ल ये शैर पढ़े।

व लस्तू आबाली हीना उक्तलू मुसलीमन
अला अय्यी शिकिन काना फी अल्लाह मसरअई

"यानी इस्लाम की हालत में मुझे किसी तरह भी मारा जाए मुझे कोई परवा नहीं"

उसके बाद हज़रत ज़ैर रज़ी अल्लाहो अन्ह की बारी आई, आपके क़त्ल के वक़्त कुरैश के बड़े बड़े सरदार तमाशा देखने आए थे एक सरदार ने बढ़ कर कहा के सच कहना अगर इस वक़्त तुम्हारे मोहम्मद (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) तुम्हारी जगह क़त्ल किए जाते और तुम बच जाते तो क्या तुम इस बात को अपनी खुश क़िसमती ना समझते? हज़रत ज़ैद रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जवाब दिया

मुझे हो नाज़ क़िसमत पर, अगर नाम मोहम्मद पर!
ये सर कट जाए और तेरा सरे पा उसको ठुकराए
ये सब कुछ है गवारा पर ये देखा जा नहीं सकता
के उनके पाँऊ के तलवे में एक काँटा भी चुभ जाए

फिर उसके बाद हज़रत ज़ैद को भी शहीद कर दिया गया (रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा) (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 182)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान को इस्लाम जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ था, और उन्होंने अपनी जानें इस्लाम पर क़ुर्बान करके हमें सबक़ दिया है के मुसलमान को मुश्किल से मुश्किल वक़्त में भी इस्लाम से मुंह नहीं मोड़ना चाहिए।

हिकायत नम्बर(198) हज़रत कअब की दर्दनाक कहानी

उनकी अपनी ज़बानी: तीन सहाबी हज़रत कअब बिन मालिक, बिलाल उमय्या और मिरारत इब्ने रबी रज़ी अल्लाहो अन्हुम बग़ैर किसी क़वी उज़्र के सुस्ती के बाइस जंगे तबूक में शरीक ना हो सके। हज़रत कअब बिन मालिब

Scanned by CamScanner

रज़ी अल्लाहो अन्ह अपनी सरगज़िश्त बड़ी तफसील के साथ खुद ही बयान फ़रमाते हैं। फ़रमाते हैं के मैं जंगे तबूक से पहले किसी लड़ाई में भी इतना मालदार नहीं था। जितना के तबूक के वक़्त था। उस वक़्त मेरे पास खुद अपनी ज़ाती दो ऊँटनियाँ थीं। इससे पहले कभी मेरे पास दो ऊँटनियाँ ना हुई थीं। जंगे तबूक के मौक़े पर चूंके सफर दूर का था और गर्मी शदीद थी। इसलिए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने साफ एलान फ़रमा दिया ताके लोग तैयारी कर सकें चुनाँचे मुसलमानों की इतनी बड़ी जमात हुज़ूर के साथ हो गई के रजिस्टर में उनका नाम भी लिखना दुश्वार था और मजमअे की कसरत की वजह से कोई शख़्स अगर छुपना चाहता के मैं ना जाऊँ और पता ना चले तो हो सकता था। उसके साथ ही फल बिलकुल पक रहे थे। मैं भी सामान सफर की तैयारी का इरादा सुबह ही से करता। मगर शाम हो जाती और किसी क़िस्म की तैयारी की नोबत ना आती। लेकिन मैं अपने दिल में ख़याल करता के मुझे वुसअत हासिल है। जब पुख़्ता इरादा करूंगा। तैयारी फौरन हो जाएगी। इसी तरह कई दिन गुज़रते गए हत्ता के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम रवाना भी हो गए और मुसलमान आपके साथ साथ मगर मेरा सामाने सफर तैयार ना हुआ। फिर भी मुझे ये ख़याल रहा के एक दो रोज़ में तैयार होकर लश्कर से जा मिलूंगा। इसी तरह आज कल पर टालता रहा। हत्ता के हुज़ूर के तबूक पहुँचने का ज़माना आ गया। उस वक़्त मैंने कोशिश भी की। मगर सामान ना हो सका। अब मैं जब मदीना मुनव्वरह में इधर उधर देखता हूँ तो फिर वही लोग मिलते हैं जिनके ऊपर निफाक़ का बदनुमा दाग़ लगा हुआ था वो मअज़ूर थे। इधर हुज़ूर ने तबूक पहुँच कर दरयाफ़्त फ़रमाया के कअब नज़र नहीं आते, क्या बात हुई? एक साहब ने कहा: या रसूल अल्लाह! उसको माल व जमाल के फख़्र ने रोका। हज़रत मआज़ ने फ़रमाया के ग़लत कहा हम जहाँ तक समझते हैं, वो भले आदमी हैं, मगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने बिलकुल सकूत फ़रमाया और कुछ इर्शाद ना फ़रमाया। हत्ता के चन्द रोज़ में हुज़ूर की वापसी की ख़बर सुनी तो मुझे रंजो ग़म हुआ और फिक्र पैदा हुई। दिल में झूटे झूटे उज़्र आते थे के इस वक़्त किसी फर्ज़ी उज़्र से जान बचा लूं, फिर किसी वक़्त माफी की दरख़्वास्त कर लूंगा, और इस बारे में अपने घराने के हर समझदार से मशवरह करता रहा मगर जब मुझे मालूम हुआ के हुज़ूर तशरीफ़ ले ही आए हैं तो मेरे दिल ने फैसला किया के बग़ैर सच के कोई चीज़ निजात ना देगी और मैंने सच सच अर्ज़ करने की ठान

Scanned by CamScanner

ली। हुज़ूर की आदत शरीफा थी के जब सफर से वापस तशरीफ़ लाते तो अव्वल मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और दो रकअत तहिय्यत-उल-मस्जिद पढ़ते और वहाँ थोड़ी देर तशरीफ़ रखते के लोगों से मुलाक़ात फ़रमाएँ। चुनाँचे हस्बे मामूल हुज़ूर तशरीफ़ लाए और मस्जिद में तशरीफ़ ले गए और वहाँ तशरीफ़ फ़रमा रहे और मुनाफिक़ लोग आकर झूटे झूटे उज़्र करते और क़समें खाते रहे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उनके ज़ाहिर हाल को क़बूल फ़रमाते रहे और बातिन से एराज़ फ़रमाते रहे के इतने में मैं भी हाज़िर हुआ और सलाम किया। हुज़ूर ने नाराज़गी के अंदाज़ में तबस्सुम फ़रमाया और एराज़ फ़रमाया। मैंने अर्ज़ किया: या नबी अल्लाह! आपने एराज़ क्यों फ़रमा लिया? खुदा की क़सम! मैं ना मुनाफिक़ हूँ, ना मुझे ईमान में कुछ तरद्दुद है। इरशाद फ़रमाया के यहाँ आ, मैं क़रीब होकर बैठ गया। हुज़ूर ने फ़रमाया: तुझे किस चीज़ ने रोका? मैंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! अगर मैं किसी दुनिया दार के पास उस वक़्त होता तो मुझे बात करने का सलीक़ा अल्लाह ने इनायत फ़रमाया। लेकिन या रसूल अल्लाह! आपके मुतअल्लिक़ मुझे इल्म है के आपके सामने झूट नहीं चल सकता। या रसूल अल्लाह! बेशक आपको ग़ुस्सा आ रहा है। लेकिन क़रीब है के खुदा की ज़ात पाक आपके अताब को ज़ायल कर देगी। हुज़ूर! मैं सच ही अर्ज़ करता हूँ के वल्लाह! मुझे कोई उज़्र ना था और जैसा फ़ारिग़ और वुसअत वाला मैं इस ज़माने में था। किसी ज़माने में भी इससे पहले ना हुआ था। हुज़ूर ने फ़रमाया। इसने सच कहा। फिर फ़रमाया के अच्छा उठ जाओ, तुम्हारा फैसला हक़ तआला खुद फ़रमाएगा। मैं वहाँ से उठा तो मेरी क़ौम के बहुत से लोगों ने मुझे मलामत की के तूने उससे पहले कभी कोई गुनाह ना किया था अगर तू कोई उज़्र करके हुज़ूर से असतग़फार की दरख़्वास्त करता तो हुज़ूर का असग़फार तेरे लिए काफी था। मैंने उनसे पूछा के कोई और भी ऐसा शख़्स है। जिसके साथ ये मामला हुआ हो। लोगों ने बताया के दो शख़्सों के साथ और भी यही मामला हुआ के उन्होंने भी यही गुफ़्तगू की। जो तूने की और यही जवाब उनको भी मिला है जो तुझ को मिला। एक हिलाल बिन उमय्या। दूसरे मिरारत बिन रबीअ। मैंने देखा के दो सालेह शख़्स जो दोनों बद्री (बद्री वो लोग कहलाते हैं जो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए। उनकी बुज़ुर्गी और बड़ाई मुस्लिम है। अहादीस में भी उनकी बड़ी फज़लियत आई है और कितनी ही हदीसों में उनकी मग़फिरत और अल्लाह तआला के उनसे खुश होने की बशारतें आई हैं।) वो भी मेरे शरीक हाल हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो

Scanned by CamScanner

तआला अलेह व सल्लम ने हम तीनों से बालेने की मुमानत भी फ़रमा दी के कोई शख़्स हम से कलाम ना करे। अब इस इर्शाद की सहाबा इक्राम रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन ने तअमील इस तरह कर के दिखाई के कअब फ़रमाते हैं के हुज़ूर की मुमानत पर लोगों ने हम से बोलना छोड़ दिया और हम से इजतिनाब किया। गोया दुनिया ही बदल गई। हत्ता के ज़मीन बावजूद अपनी वुसअत के हमें तंग मालूम होने लगी। सारे लोग अजनबी मालूम होने लगे। दरो दीवार बेगाने हो गए मुझे सब से ज़्यादा फिक्र इस बात की थी के मैं इस हाल में मर गया तो हुज़ूर जनाज़े की नामज़ भी ना पढ़ेंगे और खुदा न ख़्वास्ता हुज़ूर का विसाल शरीफ हो गया और मैं हमेशा हमेशा के लिए ऐसा ही रहूंगा और मुझ से कोई कलाम करेगा। ना मेरी नमाज़ जनाज़ा पढ़ेगा के हुज़ूर के इर्शाद के ख़िलाफ कौन कर सकता है? ग़र्ज़ हम तीनों ने पचास दिन इसी हाल में गुज़ारे। मेरे दोनों साथी तो शुरू ही से घरों में छुप कर बैठ गए थे। मैं सब में क़वी था। चलता फिरता बाज़ार में जाता। नमाज़ में शरीक होता। मगर मुझ से बात कोई ना करता। हुज़ूर की मजलिस में हाज़िर होकर सलाम करता और बहुत ग़ौर से ख़याल करता के हुज़ूर के लब मुबारक जवाब के लिए हिले या नहीं। नमाज़ के बाद हुज़ूर के क़रीब ही खड़े होकर नमाज़ पूरी करता और आँख चुरा कर देखता के हुज़ूर मुझे देखते भी हैं या नहीं। जब मैं नमाज़ में मशग़ूल होता, तो हुज़ूर मुझे देखते और जब मैं उधर मुतवज्जह होता तो हुज़ूर मुंह फैर लेते और मेरी जानिब से एराज़ फ़रमा लेते। ग़र्ज़ यही हालात गुज़रते रहे और मुसलमानों का बात चीत बन्द कर देना मुझ पर बहुत ही भारी हो गया तो मैं अबु क़तादा की दीवार पर चढ़ा। वो मेरे रिश्ते के चचाज़ाद भाई थे और मुझ से तअल्लुक़ात भी ही ज़्यादा थे, मैंने ऊपर चढ़कर सलाम किया तो उन्होंने भी सलाम का जवाब ना दिया। मैंने उनको क़सम देकर पूछा के क्या तुम्हें मालूम नहीं के मुझे अल्लाह और उसके रसूल से मोहब्बत है उन्होंने उसका जवाब ना दिया। मैंने दोबारा क़सम दी और दरयाफ़्त किया वो फिर भी चुप ही रहे मैंने तीसरी मर्तबा फिर क़सम देकर पूछा, उन्होंने सिर्फ इतना कहा "अल्लाह जाने और उसका रसूल" ये कलमा सुनकर मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े और वहाँ से लौट आया। उसी दौरान में एक मर्तबा मदीना के बाज़ार में जा रहा था के एक क़ुत्बी को जो नसरानी था और शाम से मदीना मुनव्वरह अपना ग़ल्ला फरूख़्त करने आया था। ये कहते हुए सुना के कोई कअब बिन मालिक का पता बता दो। लोगों ने उसको मेरी तरफ़ इशारा करके बताया। उसमें लिखा हुआ था "हमें मालूम

Scanned by CamScanner

हुआ है के तुम्हारे आक़ा ने तुझ पर ज़ुल्म कर रखा है। तुझे अल्लाह ज़िल्लत की जगह ना रखे, और ना ज़ाए करे तुम हमारे पास आ जाओ हम तुम्हारी मदद करेंगे।" हज़रत कअब बिन मालिक फ़रमाते हैं के मैंने ये ख़त पढ़कर इन्नल्लाह पढ़ी के मेरी हालत यहाँ तक पहुँच गई है के काफिर भी मुझ में तमअे करने लगे हैं और मुझे इस्लाम तक से हटाने की तदबीर होने लगी हैं। ये एक मुसीबत और आई और इस ख़त को मैंने तनव्वुर में फूंक दिया और हुज़ूर से जाकर अज़ किया के या रसूल अल्लाह! अब तो आपके एराज़ की वजह से काफिर भी मुझ में तमअे करने लगे। उसी हालत में हम पर चालीस रोज़ गुज़रे थे के हुज़ूर का क़ासिद मेरे पास हुज़ूर का ये इर्शाद लेकर आया के अपनी बीवी को भी छोड़ दो। मैंने दरयाफ़्त किया के क्या मनशा है? उसको तलाक़ दे दूं? कहा नहीं बल्के उससे अलेहदगी इख़्तियार कर लो और मेरे दोनों साथियों के पास भी इन ही क़ासिद की मअरफ़त यही हुक्म पहुँचा। मैंने अपनी बीवी से कह दिया के तू अपने मेके में चली जा। जब तक अल्लाह तआला इस अमर का फैसला ना फ़रमाए वहीं रहना। हिलाल बिन उमय्या की बीवी हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! हिलाल बिलकुल बूढ़े शख़्स हैं। कोई ख़बर गीरी करने वाला ना होगा तो हलाक हो जाऐंगे। अगर आप इजाज़त दें तो मैं कुछ काम काज उनका कर दिया करूं। हुज़ूर ने फ़रमाया अच्छा इस बात की तुझे इजाज़त है मगर क़ुरबत ना हो। उन्होंने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! इस बात की तरफ़ तो उनको मैलान भी नहीं, जिस रोज़ से ये वाक़ेया पेश आया है आज तक उनका वक़्त रोते ही गुज़र रहा है। हज़रत कअब फ़रमाते हैं के इस हाल में दस रोज़ और गुज़रे के हम से बात चीत मेल जोल छुटे हुए पूरे पचास दिन हो गए। पचासवें दिन सुबह की नमाज़ अपने घर की छत पर पढ़ कर में निहायत ग़मगीन बैठा हुआ था। ज़मीन मुझ पर बिलकुल तंग थी और ज़िन्दगी दूभर हो रही थी के सलअे पहाड़ की चोटी पर एक ज़ोर से चिल्लाने वाले ने आवाज़ दी के "कअब खुशख़बरी हो तुम को" मैं इतना ही सुनकर सज्दे में गिर गया और खुशी के मारे रोने लगा और समझा के तंगी दूर हो गई और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सुबह की नमाज़ के बाद हमारी माफी का एलान फ़रमाया। (खुदा तआला ने खुद फैसला फ़रमाया और तीनों हज़रात की तौबा क़बूल फ़रमाई और अपने रसूल पर ये आयत नाज़िल फ़रमाई। *वअला अस्सलातिल्लज़ीना खुल्लीफू हत्ता इज़ा ज़ाक़त अलेहिमु अरज़ू बिमा रहूबत व ज़ाक़त अलेहिम अनफ़ुसुहुम व ज़न्नो*

Scanned by CamScanner

अनला मलजाअ मिनल्लाही इला इलेही सुम्मा ताबा अलेहिम यतूबू। इन्नल्लाहा हुवत्तव्वाबुर्रहीम पाराः 11, रूकू : 3) जिस पर एक शख़्स ने पहाड़ पर चढ़ कर ज़ोर से आवाज़ दी, जो सबसे पहले पहुँच गई। उसके बाद एक साहब घोड़े पर सवार भागे हुए आए, मैंने अपने पहनने के कपड़े इस बशारत देने वाले की नज़र किए और फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। इसी तरह मेरे दोनों साथियों के पास भी खुशख़बरी लेकर लोग गए। मैं जब मस्जिदे नबव्वः में गया तो वो लोग जो ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर थे मुझे मुबारकबाद देने के लिए दौड़े और सबसे पहले अबु तलहा ने बढ़कर मुबारकबाद दी और मुसाफहा किया जो हमेशा ही याद रहेगा। मैंने हुज़ूर की बारगाह में जाकर सलाम किया। तो चेहरा अनवर खिल रहा था और खुशी के अनवार चेहरे मुबारक से ज़ाहिर हो रहे थे। हुज़ूर का चेहरा मुबारक खुशी के वक़्त चाँद की तरह चमकने लगता था। मैंने अर्ज़ किया: या रसूल अल्लाह! मेरी तौबा की तकमील ये है के मेरी जितनी जायदाद है। वो सब अल्लाह के रास्ते में सदक़ा है, इसलिए के ये इमारत व सरवत ही इस मुसीबत का सबब बनी थी। हुज़ूर ने फ़रमाया के इसमें तंगी होगी। कुछ हिस्सा अपने पास भी रहने दो। मैंने अर्ज़ किया। बेहतर है कुछ हिस्सा मेरे पास भी रहने दिया जाए मुझे सच ही ने निजात दी। इसलिए मैंने अहेद किया हमेशा सच ही बोलूंगा। (बुखारी शरीफ सफ़ा 675, जिल्द 3) (दरमंशूर, फतह अलबारी और रूह-उल-बयान जिल्द:1, सफ़ा 965)

सबक:- सहाबा इक्राम अलेहिम अर्रिज़वान की इताअत दीनदारी अल्लाह के ख़ौफ का एक नमूना है। उन पाक लोगों की पाकीज़ा ज़िन्दगियों की मिसाल किसी उम्मत में नहीं मिलती और ये लोग वाक़ई ख़ैर-उल-उमम के सही मिसदाक़ हैं। देखिए, सच्चे व पक्के मोमिन हैं। जंग में हमेशा शरीक रहे हैं। मगर एक मर्तबा ग़ैर हाज़री पर क्या क्या अताब हुआ और उसको किस फ़रमाँबरदारी से बर्दाश्त किया के पचास दिन रो रो कर गुज़ार दिए और माल जिसकी बदौलत ये वाक़ेया पेश आया। वो भी सदक़ा कर दिया और दूसरे मुसलमान हत्ता के उन तीनों की बीबियाँ भी फ़रमान रसूल पर उन तीनों से हर क़िस्म का तअल्लुक़ मुनक़तअे कर लेती हैं और हज़रत कअब की तरफ़ एक काफिर बादशाह का ख़त भी आता है। जिसमें लालच दिया गया है। मगर हज़रत कअब बजाए किसी इश्तिआल के नादिम होते हैं और पहले से भी ज़्यादा पशेमान होकर बारगाहे नबव्वी में हाज़िर होते हैं और ख़तरा भी लाहक़ है के कहीं खुदा और रसूल की ख़फ़्गी से दोनों जहाँ बर्बाद

Scanned by CamScanner

ना हो जाएँ। एक हम भी हैं। अल्लाह और उसके रसूल के अहकाम भी सामने हैं, बड़े से बड़ा हुक्म नमाज़ ही का ले लीजिए और फिर देखिए हम उसकी तामील कहाँ करते हैं और जो करते हैं। वो भी कैसी करते हैं। उसके बाद ज़कात और हज का तो पूछना ही क्या है के उसमें माल भी खर्च होता है।

इस दर्दनाक कहानी से ये भी मालूम हुआ के सहाबा रज़ी अल्लाहो अन्हुम दीन व मज़हब के सच्चे और पक्के फिदाई और शेदाई थे और वो किसी क़ीमत पर भी दीन को छोड़ना नहीं चाहते थे और जो लोग मआज़ अल्लाह हुज़ूर के सहाबा के दीन पर एत्राज़ करते हैं, वो बड़े नाआक़्बत अंदेश हैं।

हिकायत नम्बर(199) समुंद्री ग़ाज़ी

6 हि॰ में हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उमरा के इरादे से मक्का मोअज़्ज़मा तशरीफ़ ले जा रहे थे। कुफ़्फारे मक्का को ख़बर हुई तो वो इस बात को अपनी ज़ात समझे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मुज़ाहेमत के लिए निकल आए और मुक़ाम हुदैबिया में पहुँच कर हुज़ूर को आगे बढ़ने से रोक दिया अगरचै हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ जाँ निसार सहाबा इक्राम मौजूद थे। मगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह सल्लम ने लड़ाई का इरादा ना फ़रमाया और मुसालेहत की तजवीज़ फ़रमाई। कुफ़्फारे मक्का ने भी मुसालेहत को बेहतर समझा और उसी मुक़ाम पर सुलह का मुआएहेदा हो गया। सहाबा इक्राम रिज़वान-उल्लाही अलेहिम अजमईन की लड़ाई पर मुसतअेदी और उनकी बहादुरी के बावजूद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने कुफ़्फार की इस क़द्र रिआयत फ़रमाई के उनकी हर शर्त को क़बूल फ़रमा ली। सुलह में जो शर्तें रखी गईं। उनमें से एक शर्त ये भी रखी गई के "जो काफिर मुसलमान होकर मक्का से हिजरत करके मुसलमानों के पास पहुँचे मुसलमान उसे वापस कर दें और मुसलमानों में से खुदा न ख़्वास्ता अगर कोई शख़्स मुरतिद होकर मक्के पहुँच जाए तो उसे वापस ना किया जाएगा।"

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ये शर्त भी क़बूल फ़रमा ली। सहाबा इक्राम देखकर हैरान तो हुए मगर उन्हें इल्म था के जहाँ तक नज़र नबुव्वत पहुँचती है। उनकी नहीं पहुँचती। चुनाँचे ये मुआएहेदा अभी हो ही रहा था के हज़रत अबु जिनदल रज़ी अल्लाहो अन्ह जो एक सहाबी

Scanned by CamScanner

थे और जो मुसलमान हो जाने की वजह से काफिरों की क़ैद में ज़ंजीरों में बंधे हुए थे और तरह तरह की तकलीफें बर्दाश्त कर रहे थे, किसी तरह रिहा होकर गिरते पड़ते मुसलमानों के लश्कर में इस उम्मीद पर पहुँच गए के मुसलमानों में मिल कर मदीना मुनव्वरह पहुँच जाऊँगा। उनके बाप सुहैल जो उस वक़्त कुफ़्फार की तरफ़ से वकील थे और अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे (और फतह मक्का में मुसलमान हुए) उन्होंने जो अपने बेटे को भाग कर आते हुए देखा तो उन्हें तमाचे मारे और वापस मक्के ले जाने के लिए इसरार किया हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के अभी सुलह नामा मुरत्तब नहीं हुआ, इसलिए अभी पाबंदी किस बात की, मगर उन्होंने इसरार किया तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ये भी मान लिया। अबु जिनदल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मुसलमानों से फ़रमाया के मैं मुसलमान होकर आया और कितनी मुसीबतें उठा चुका अब वापस किया जा रहा हूँ। उस वक़्त मुसलमानों के दिल पर जो गुज़री होगी अल्लाह ही को मालूम है। मगर हुज़ूर का इर्शाद था। इसलिए कोई बोल ना सका। और अबु जिनदल वापस भेज दिए गए और वापस करते करते हुज़ूर ने उनसे फ़रमाया के सब्र करो। अनक़रीब अल्लाह तआला तुम्हारे लिए कोई रास्ता निकाल देगा।

सुलह नामा मुकम्मल हो जाने के बाद एक दूसरे सहाबी अबु बसीर रज़ी अल्लाहो अन्ह मक्के से हिजरत करके मदीना मुनव्वरह पहुँच गए। काफिरों ने उनको भी वापस बुलाने के लिए दो आदमी पीछे भेज दीजिए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हस्बे मुआएहेदा उनको भी वापस कर दिया। अबु बसीर ने भी अर्ज़ की या रसूल अल्लाह मैं मुसलमान होकर आया हूँ, आप कुफ़्फार के पंजे में फिर मुझे भेजते हैं। आपने उनसे भी सब्र करने को फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया के इंशा अल्लाह अनक़रीब तुम्हारे वास्ते रास्ता खुल जाएगा। चुनाँचे अबु बसीर उन दोनों काफिरों के साथ वापस हुए। रास्ते में आप उन दोनों काफिरों में से एक को कहने लगे के यार ये तेरी तलवार तो बड़ी नफीस मालूम होती है। शेख़ी बाज़ आदमी ज़रा सी बात में फूल ही जाता है। चुनाँचे वो काफिर नियाम से अपनी तलवार निकाल कर कहने लगा। हाँ मैंने बहुत से लोगों पर इसका तजुर्बा किया है। ये कहकर तलवार हज़रत अबु बसीर को पकड़ा दी। हज़रत अबु बसीर ने इस तलवार से उस काफिर को फीन्नार कर दिया। दूसरे ने देखा तो वो भागा हुआ मदीना मुनव्वरह आया, और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम

Scanned by CamScanner

की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा के मेरा साथी मार डाला गया है और मेरा नम्बर है। उसके बाद हज़रत अबु बसीर पहुँचे और अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह! आप तो अपना मुआएहेदा पूरा कर ही चुके हैं के मुझे वापस कर दिया और मुझ से कोई अहद उन लोगों का नहीं है जिसकी ज़िम्मेदारी हो। वो मुझे मेरे दीन से हटाते थे, इसलिए मैंने ये काम किया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया, तुम लड़ाई भड़काने वाले हो। वो इस इर्शाद से समझ गए के हुज़ूर मुझे फिर वापस ही कर देंगे चुनाँचे अबु बसीर वहाँ से चल कर समुंद्र के एक किनारे पर आ गए और वहीं डेरा लगा लिया। हज़रत अबु जिनदल को मक्का में जब इस वाक़ेया का इल्म हुआ तो वो भी किसी तरह मक्का से निकल कर वहीं समुंद्र के किनारे अबु बसीर के पास पहुँच गए। उसके बाद फिर जो शख़्स मुसलमान होता वो वहीं समुंद्र के किनारे अबु बसीर और जिनदल के पास पहुँच जाता। हत्ता के वहीं एक छोटी सी मुख़्तसिर की जमात हो गई। जंगल में जहाँ ना खाने का इन्तिज़ाम और ना कोई और सहूलत, इसलिए उनकी मुश्किलात तो ज़ाहिर हैं। मगर जिन ज़ालिमों के ज़ुल्म से परेशान होकर भागते थे। इस मुख़्तसिर सी जमात ने उनका नातक़ा बन्द कर दिया काफिरों का जो क़ाफला इधर से गुज़रता। उससे मुक़ाबला करते और लड़ते। हत्ता के कुफ़्फारे मक्का ने परेशान होकर खुद ही हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में आजज़ी और मिन्नत से अल्लाह और रिश्तेदारी का वास्ता देकर, आदमी भेजा के इस अपनी जमात को समुंद्र के किनारे से अपने पास बुला लें। हम अपने इस मुआएहेदे से खुद ही तंग आ चुके हैं। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस जमात के पास अपना इजाज़त नामा भेजकर उन्हें अपने पास बुलवा लिया। (हिकायत अलसहाबा सफ़ा : 11)

सबक़: नबी की नज़र अंजाम तक पहुँच जाती है, और मुसलमान अपने अहदो पैमाँ का बड़ा पक्का होता है। और सहाबा-ए-इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान अपने दीन व ईमान पर बड़े पक्के थे। उन्हें अपने ईमान से दुनिया की कोई ताक़त और मुसीबत नहीं हआ सकी।

हिकायत नम्बर(200) इसतक़लाल बिलाल

हज़रत बिलाल हबशी रज़ी अल्लाहो अन्ह जब इस्लाम ले आए तो आपको तरह तरह की तकलीफें दी जाने लगीं। उमय्या बिन ख़ल्फ जो मुसलमानों का बदतरीन दुश्मन था और जिसके आप गुलाम थे, आपको

Scanned by CamScanner

सख़्त गर्मी में दोपहर के वक़्त तपती हुई रेत पर सीधा लिटा कर उनके सीने पर पत्थर की बड़ी चट्टान रख देता था ताके वो हिल ना सकें और कहता था! या इसी हाल में मर जाओ या ज़िन्दगी चाहते हो तो इस्लाम छोड़ दो। मगर हज़रत बिला बक़ौल शायर

तू हो के तुर्श रू मुझे गाली हज़ार दे
ये वो नशा नहीं जिसे तुर्शी उतार दे

नशा-ए-इस्लाम में ऐसे सर मस्त थे के उनके मसायब व आलाम की बिलकुल परवा ना फ़रमाते। ज़ालिम आपको रात के वक़्त ज़ंजीरों में बाँध देते और कोड़े मारते और अगले दिन उन ज़ख़्मों को गर्म ज़मीन पर डाल कर और ज़्यादा ज़ख़्मी करते। ताके बे क़रार होकर इस्लाम से फिर जाएँ या तड़प तड़प कर मर जाएँ। मगर अल्लाह रे! इसतक़लाल बिलाल के आप इश्क़े हक़ में ऐसे सरशार थे के अहद अहद के नारे लगाते और यादे हक़ में गोया यही फ़रमाते थे

हलक़ पर तीग़ रहे सीने पे जल्लाद रहे
लब पे तेरा नाम रहे दिल में तेरी याद रहे

एक दिन हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने आपको इस हाल में देखा तो उनको ख़रीदकर आज़ाद कर दिया और आपको उस इश्क़ व इसतक़लाल का ये सिला मिला के आप बारगाहे मुसतफवी के मोअज़्ज़न बने और सफर व हज़र में हमेशा अज़ान की ख़िदमत उन्हीं के सपुर्द होती। (असद-उल-ग़ाबा व हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 12)

सबक़:- दुश्मनाने दीन ने अल्लाह वालों पर हमेशा सख़्तियाँ कीं और अल्लाह वालों ने हज़ारहा मसायब व आलाम के बावजूद अमन व इसतक़लाल को कभी ना छोड़ा। और हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह बड़े ही सख़ी और मुसलमानों के ख़ैर ख़्वाह थे और जो शख़्स सहाबा इक्राम बिलख़सूस सिद्दीक़े अक्बर का दुश्मन है वो बड़ा ही शक़ी और बख़ील है।

हिकायत नम्बर(201) ग़मे हिज्र

हज़रत बिलाल रज़ी अल्लाहो अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बड़ी मोहब्बत थी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का जब विसाल हो गया तो आप मदीना की गलियों में ये कहते फिरते थे के लोगो! तुम ने कहीं रसूल अल्लाह को देखा है? देखा है तो मुझे भी दिखा

Scanned by CamScanner

दो या मुझे आपका पता बता दो। फिर आप इसी ग़मे हिज्र में मदीने को छोड़ कर मुल्क शाम के शहर हलब में चले गए। एक साल के बाद आपने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर ने आपसे फ़रमाया। के ऐ बिलाल! तूने हम से मिलना क्यों छोड़ दिया। क्या तुम्हारा दिल हमसे मिलने को नहीं चाहता। हज़रत बिलाल ये ख़्वाब देखकर लब्बेक या सय्यदी ऐ आक़ा ग़ुलाम हाज़िर है कहते हुए उठे और इसी वक़्त रात ही को ऊँटनी पर सवार होकर मदीने को चल पड़े। रात दिन बराबर चल कर मदीने मुनव्वरह में दाख़िल हुए हज़रत बिलाल पहले सीधे मस्जिदे नबव्वी में पहुँचे और हुज़ूर को ढूंढा मगर हुज़ूर को ना देखा। फिर हुजरों में तलाश किया। जब वहाँ भी ना मिले। तब मज़ार अनवर पर हाज़िर हुए और रोकर अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! हलब से ग़ुलाम को ये फ़रमा कर बुलाया के हम से मिल जाओ और जब बिलाल ज़ियारत के लिए हाज़िर हुआ। तब हुज़ूर पर्दे में छुप गए ये कहकर आप बेहोश होकर क़ब्र अनवर के पास गिर गए। बहुत देर में जब आपको होश आया तो लोग क़ब्र अनवर से उठा कर बाहर लाए। इस अर्से में बिलाल के आने का सारे मदीने में ग़ुल हुआ के आज रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मोअज़्ज़न बिलाल आए हैं। सबने मिलकर बिलाल से दरख़्वास्त की के अल्लाह के लिए एक दफा वो अज़ान सुना दो जो रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को सुनाते थे। बिलाल फ़रमाने लगे। दोस्तो! ये बात मेरी ताक़त से बाहर है। क्योंके मैं जब हुज़ूर की उस दुनयवी ज़िन्दगी में अज़ान कहा करता था तो जिस वक़्त अशहद अन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह कहता था। रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को सामने आँखों से देख लेता था। अब बताओ के कैसे देखूंगा? मुझे इस ख़िदमत से माफ रखो! हर चन्द लोगों ने इसरार किया। मगर हज़रत बिलाल ने इंकार ही किया। बाज़ सहाबा की ये राय हुई के बिलाल किसी का कहना ना मानेंगे तुम किसी को भेजकर हज़रत हसन व हुसैन (रज़ी अल्लाहो अन्हुमा) को बुला लो। अगर वो आकर बिलाल से अज़ान की फ़रमाईश करेंगे, तो बिलाल ज़रूर मान जाऐंगे। क्योंके हुज़ूर के अहले बैत से बिलाल को इश्क़ है। ये सुनकर एक साहब जाकर हज़रत हसन व हुसैन को बुला लाए। हज़रत हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह ने आकर बिलाल का हाथ पकड़कर फ़रमाया के ऐ बिलाल! आज हमें भी वही अज़ान सुना दो जो हमारे नाना जान को सुनाया करते थे। हज़रत बिलाल ने इमाम हुसैन को गोद में उठाकर कहा, तुम मेरे महबूब के

Scanned by CamScanner

कलेजे के टुकड़े हो। नबी के बाग़ के फूल हो जो कुछ तुम कहोगे, मंज़ूर करूंगा, तुम्हें रंजीदा ना करूंगा के इस रह हुज़ूर को मज़ार में रंज पहुँचेगा। और फिर फ़रमाया। हुसैन मुझे ले चलो जहाँ कहोगे अज़ान कह दूंगा। हज़रत हुसैन ने हज़रत बिलाल का हाथ पकड़ कर आपको मस्जिद की छत पर खड़ा कर दिया। बिलाल ने अज़ान कहना शुरू की। अल्लाहो अक्बर! मदीना मुनव्वरह में ये वक़्त अजब ग़म और सदमे का वक़्त था। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को विसाल फ़रमाए हुए एक ज़माना हुआ था आज महीनों के बाद अज़ाने बिलाल की आवाज़ सुनकर हुज़ूर की दुनयवी हयात मुबारका का समाँ बंध गया। बिलाल की आवाज़ सुनकर मदीना मुनव्वरह के बाज़ार गली कूचों से लोग आकर मस्जिद में जमा हुए। हर एक शख़्स घर से निकल आया। पर्दा वाली औरतें पर्दे से बाहर आ गईं। अपने बच्चों को साथ लाईं जिस वक़्त बिलाल ने *अशहद अन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह* मुंह से निकाला। हज़ारहा चीखें एक दम निकलीं। उस वक़्त रोने का कोई ठिकाना ना था औरतें रोती हैं, नन्हे मुन्हे बच्चे अपनी माँओं से पूछते थे के तुम बताओ के बिलाल मोअज़्ज़न रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तो आ गए। मगर रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मदीने कब तशरीफ़ लाएँगे? हज़रत बिलाल ने जब *अशहद अन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह* मुंह से निकाला और हुज़ूर को आँखों से ना देखा तो हुज़ूर के ग़मे हिज्र में बेहोश होकर गिर गए और बहुत देर के बाद होश में आकर उठे और रोते हुए मुल्क शाम वापस चले गए। (मदारिज-उन-नबुव्वत, सफ़ा 236, जिल्द 2)

सबक़: हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम विसाल शरीफ के बाद ज़िन्दा हैं और अपने चाहने वालों को शर्फे ज़ियारत से मुशर्रफ फ़रमाते हैं और सहाबा इक्राम रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन के हर छोटे बड़े मर्द व औरत को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बेहद मोहब्बत थी और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का ज़िक्रे ख़ैर सुनने के बाद सब बेचैन रहते थे और सहाबा के दिल में अहले बैत की बड़ी मोहब्बत थी।

हिकायत नम्बर(202) इस्लाम का झंडा

जंगे ओहद में हज़रत मसअब बिन उमैर रज़ी अल्लाहो अन्ह के हाँथ में इस्लाम का झंडा था। काफिरों ने इस इस्लामी झंडे को सरनिगूँ करने के

Scanned by CamScanner

लिए हज़रत मसअब बिन उमैर पर हमला कर दिया। हज़रत झंडे को उठाए हुए उनसे लड़ने लगे। इब्ने क़ीमा एक मुशरिक ने यकायक आपके हाथ पर तलवार का एक ऐसा वार किया के आपका दाहिना हाथ कटकर अलग जा पड़ा। मगर वाह रे बहादुर व शीदा-ए-हक़! के दूसरे हाथ में झंडा ले लिया और उसे सरनिगूँ ना होने दिया। मुशरिकीन ने उस झंडे को सरनिगूँ करने के लिए और भी शिद्दत से हमले शुरू कर दिए और क़रीब पहुँच कर झंडा हाथ से छीन लेने की कोशिश करते रहे मगर आप उन्हें अपने नज़दीक तक ना आते देते और ये सब कुछ एक ही हाथ से करते रहे लेकिन ताबा के! आख़िर आपका दूसरा हाथ भी कट कर गिर पड़ा और सदाक़त के इस यरवाने ने दूसरा हाथ भी कटते ही कटे हुए हाथों से झंडे को सीने से चिमटा लिया और झंडे को सरनिगूँ ना होने दिया। मुशरिकीन ने जब देखा के दोनों हाथ कट जाने पर भी झंडा नहीं गिरा तो इब्ने क़ीमा ने तैश में आकर तलवार फैंक दी और ज़रा फासले से एक ऐसा तीर मारा के सीने में पेवस्त हो गया और हज़रत मसअब बिन उमैर रज़ी अल्लाहो अन्ह इस्लाम की इज़्ज़त को सीने से चिमटाए हुए जन्नत को सिधारे।

लड़ाई के ख़ात्मे पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत मसअब की लाश के क़रीब आए और उनके नूरानी चेहरे को देखकर ये आयत तिलावत फ़रमाई।

मिनल मोमिनीना रिजालुन सदाकू मा आहादूल्लाह अलेही मोमिनों मैं ऐसे भी हैं जिन्होंने इस अहद को पूरा किया। जो उन्होंने अपने खुदा से बाँधा था।"

फिर शहीदे हक़ की लाश को मुख़ातिब फ़रमा कर फ़रमाया:

"मैंने तुमको मक्का में देखा है, जहाँ तुम से ज़्यादा खूबसूरत और खुश लिबास कोई ना था ये आज क्या हुआ के तुम्हारे चेहरे पर गर्द पड़ी है बाल उल्झे हुए हैं, बेशक अल्लाह का रसूल गवाही देता है के तुम शोहदा! क़यामत के रोज़ अल्लाह के हुज़ूर में रहोगे।" (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 68)

सबक़:- सहाबा इक्राम ने आख़िर तक इस्लाम की मदद की है और उन्हें पाक लोगों की जुरात व शुजाअत से इस्लाम के डंके बजने लगे और उन पाक लोगों को अल्लाह के हुज़ूर एक ख़ास मुक़ाम हासिल है।

हिकायत नम्बर(203) अल्लाह की तलवार

जंग मोता में शाहे रोम हरकुल की फौज एक लाख थी और मुसलमानों

Scanned by CamScanner

की तादाद सिर्फ तीन हज़ार थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ये सूरते हाल देखकर मुजाहेदीन में हस्बे ज़ेल तक़रीर फ़रमाई:-

मुसलमानो! शहादत ही के ज़ोक़ में हम घर से निकले हैं, अगरचै हमारे मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा फौज है, लेकिन हम जमअीयत के लिहाज़ से दुश्मन के साथ नहीं लड़ते, बल्के हमारा लश्कर और हमारी कुव्वत इस्लाम है अल्लाह तआला ने इसी इस्लाम की बदौलत ही हमें आज तक फतह मंद किया है।

ग़ाज़ियो! उठो और अल्लाह का नाम लेकर कुफ्र का मुक़ाबला करने को तैयार हो जाओ।

अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी अल्लाहो अन्ह की ये हिम्मत अफ़्ज़ा तक़रीर सुनकर सब जाँनिसाराने इस्लाम ने यक ज़बान होकर कहा। बेशक आप सच कहते हैं और सब मुक़ाबले के लिए तैयार हो गए और लड़ाई शुरू हो गई। हज़रत ज़ैद बिन हारिस के हाथ में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का झंडा था। आप बड़े जोश व ख़रोश और शुजाअत के साथ लड़ रहे थे। यहाँ तक के मुख़ालफीन के लश्कर में जा घुसे और शहीद हो गए। आपके शहीद होते ही झंडा हज़रत जाफर बिन अबी तालिब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने थाम लिया और रिज्ज़ ख़्वानी करते हुए दुश्मनों की सफों का सफाया करने लगे। जब उनका घोड़ा ज़ख़्मी हो गया तो फिर भी पा पियादा लड़ने लगे और दुश्मनों ने जब हर तरफ़ से वार करना शुरू कर दिया तो पहले उनका एक बाज़ू कट गया, लेकिन आपने दूसरे बाज़ू से झंडा थाम लिया। और इसी तरह लड़ते रहे और जब दुश्मनों ने दूसरा बाज़ू भी जुदा कर दिया तब आपने दोनों कटे हुए बाज़ुओं को जोड़कर अलमे इस्लाम को अपने सीने से लगा लिया। लेकिन अलम को गिरने ना दिया। आख़िर इसी हालत में आपने शहादत पाई।

उनके बाद अलमे इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने उठाया और घोड़े से उतर कर पा पियादा जंग में शरीक हुए और खूब लड़े यहाँ तक के वो भी शहीद हो गए।

हज़रत अब्दुल्लाह की शहादत के बाद मुसलमान परेशान होने लगे। मगर साबित बिन अरक़म अनसारी रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अलमे इस्लाम हाथ में लेकर कहा! मुसलमानो! अब तुम हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को अपना सरदार मुक़र्रर करके जिहाद शुरू रखो। चुनाँचे सब ने इस बात पर इत्तेफाक़ किया और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह आगे

Scanned by CamScanner

बढ़े और मुसलमानों को ललकार कर बड़े जोश व ख़रोश के साथ दुश्मनों पर हमला कर दिया। हज़रत ख़ालिद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की सियादत में मुसलमानों का कुछ ऐसे ज़ोर से हमला हुआ के कुफ़्फार के होसले पस्त होने लगे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह सब से पेश पेश थे और जिस काफिर पर भी आपकी तलवार का वार पड़ता। वो एक ही वार में ठंडा हो जाता और यहाँ तक आप लड़े के आपकी नो तलवारें लड़ते लड़ते टूट गईं। हर तलवार के टूटते ही वो दूसरी तलवार लेकर दुश्मनों पर शेर की झपटते थे। हज़रत ख़ालिद की इस शुजाअत का दुश्मनों पर ऐसा रौब छाया के उनके पाँऊ डगमगाने लगे। चूंके रात हो चुकी थी। इसलिए दोनों लश्करों में लड़ाई बन्द हो गई। सुबह को जब मुक़ाबले के लिए फिर दोनों लश्कर सफ आरा हुए तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उन मुसलमानों को जो गुज़िश्ता दिन पीछे थे आगे कर दिया और अगली सफों को पीछे कर दिया इस सफ आराई से दुश्मन को ये यक़ीन हो गया के मुसलमानों को नई कुमक आ गई है। साथ ही उसके हज़रत ख़ालिद ने जोशो ख़रोश से हमला कर दिया। उनके साथ अगली सफों के मुसलमानों ने भी ताज़ा जोश दिखाया तो दुश्मनों ने मुंह फैर लिया और सर पर पाँऊ रख कर भागे। लेकिन हज़रत ख़ालिद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मसलेहत वक़्त से उनका तआक्कुब ना किया और जो माले ग़नीमत हाथ आया, लेकर बाक़ी मुसलमानों को साथ लेकर मदीना शरीफ को लौट आए। (तारीख इस्लाम, सफ़ा 230)

सबक़:- हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह बड़े जरी और बहादुर सहाबी थे, और बारगाहे नबुव्वत से आपको अल्लाह की तलवारों में एक तलवार का लक़ब मिल चुका था। और मुसलमान अपने इस्लाम के बल बूते पर अपनी क़िल्त की परवाह किए बग़ैर लाखों की तादाद में दुश्मन का मुक़ाबला करने से नहीं घबराता और अल्लाह तआला उसकी मदद फ़रमाता है।

हिकायत नम्बर(204) मक़ूक़स के दरबार में

शाह मिस्र मक़ूक़स की ख़्वाहिश पर हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने मक़ूक़स के पास दस आदमियों का एक वफ़्द भेजा। जिसके रईस हज़रत इबादा बिन सामत रज़ी अल्लाहो अन्ह थे। आपका रंग काला था मक़ूक़स ने उनको देखा तो सहम गया और कहने लगा के क्या मुसलमान

Scanned by CamScanner

ऐसे ही होते हैं। ये क्या जंग करेंगे? मक़ूक़स की बातें सुनकर हज़रत इबादा ने यूं तक़रीर शुरू फ़रमाई:

"मैंने तुम्हारी बातें सुनीं, अब उनका जवाब सुनो। जिन आदमियों के पास से मैं आया हूँ। उनमें एक हज़ार काले आदमी और भी मौजूद हैं। जिनका रंग मुझ से भी काला है और सूरत मुझ से ज़्यादा मुहीब और जलाली अगर तुम उनको देखो तो तुम्हारा क्या हाल हो? सुनो! मैं अगरचै बूढ़ा हूँ और मेरा शबाब रूख़्सत हो चुका है। लेकिन अलहम्दूल्लिाह! के सौ आदमियों से तनहा भी नहीं डरता। यही हाल मेरे और साथियों का है और उनका बाइस ये है के हमारा असली मक़्सूद खुदा की राह में जिहाद करना और उसकी रज़ा जोई है हम मुल्क गीरी या किसी दुनयवी लालच के लिए जंग नहीं करते। खुदा ने हमारे लिए माले ग़नीमत हलाल किया है। हमें दुनयवी तमव्वुल की कोई परवाह नहीं। हमारे पास लाखों दरहम हों या सिर्फ एक, दोनों हालतें हमारे लिए बराबर हैं। हमारे लिए दुनयवी नअेमतें वक़अत नहीं रखतीं। हमारी असली नअेमत अख़रवी राहत हैं हमारे बरगज़ीदा रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हम से अहद लिया है के हम माल दुनिया से सिफ इसी क़द्र लें। जिससे भूक रूक सके और सत्र छुप सके।"

मक़ूक़स ने ये तक़रीर सुनी तो कहा जो कुछ तुम ने अपने और अपने साथियों के मुतअल्लिक़ कहा। मैंने सुन लिया बेशक तुम अपनी खूबियों के बाइस हम लोगों पर ग़ालिब आते रहोगे और दुनिया की कोई ताक़त तुम्हारा मुक़ाबला ना कर सकी लेकिन इस वक़्त तुम्हारा मुक़ाबला मुझ से है और याद रखो, मुझ से तुम हर गिज़ मुक़ाबला ना कर सकोगे के मैंने इस क़द्र फौज जमा कर ली है के तुम्हारा फतहयाब होना मुश्किल है पस तुम्हारे लिए यही बेहतर है के मैं तुम से हर एक शख़्स को दो! दो! दीनार और तुम्हारे ख़लीफा को एक हज़ार दीनार देता हूँ। तुम ये रक़म लो। और वापस जाओ।

हज़रत इबादा उसकी ये बातें सुनते रहे, और फ़रमाया।

"तुम और तुम्हारे साथी धोके में ना रहे तुम हमें रोमियों के टिड्डी दल लश्कर से डराते हो, मुझे क़सम है खुदा की! के हमें उसकी रत्ती भर परवाह नहीं। बल्के तुम्हारी इस गुफ़्तगू ने हमारे जज़्बा-ए-जिहाद को और भी उभार दिया है। अब हम उन दो बर्कतों में से एक बर्कत ज़रूर हासिल करके रहेंगे। हम फतहयाब हुए तो माले ग़नीमत कसरत के साथ हाथ आएगा और अगर तुम ग़ालिब हो गए तो हम शहीद होंगे और हमारे हाथ दौलत आख़िरत आएगी। हम में से कोई शख़्स ऐसा नहीं जो सुबह व शाम खुदा से शहादत

Scanned by CamScanner

की दुआ ना माँगता हो।"

आख़िर जंग शुरू हो गई और वही कुछ हुआ जो कुछ हज़रत इबादा ने फ़रमाया था यानी खुदा की चुनी हुई क़ौम मिस्र पर क़ाबिज़ हो गई और मुजाहेदीन ने जो कुछ कहा। वो करके दिखा दिया। (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 53)

सबक़:- मुसलामन की जंग सिर्फ आला कलमत-उल-हक़ के लिए होती है, और वो किसी दुनयवी लालच के लिए नहीं लड़ता। जिस लड़ाई में खुदा की रज़ा मक़्सूद हो, वो जिहाद है और इसी जज़्बे की बदौलत मुसलमानों को फतह व नुसरत हासिल होती रही।

हिकायत नम्बर(206) ज़हर की पुड़िया

सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह के दौरे ख़िलाफत में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह की ज़ेरे कमान मुसलमानों का लश्कर मुख़्तलिफ मुमालिक में फतूहात इस्लामी के डंके बजा रहा था और अल्लाह तआला की फतह व नुसरत के परचम उड़ा रहा था। इसी सिलसिले में शहर हीरा के बाग़ी व ताग़ी काफिरों की शरारत व अहद शिकनी की ख़बर पाकर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हीरा का रूख किया। बहादुराने इस्लाम की आमद की ख़बर सुनते ही अहले हीरा अपने क़िलों में घुस कर क़िले में बन्द हो गए। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह ने सब क़िलों को चारों तरफ़ से महसूर कर लिया और कई एक शब व रोज़ तक क़िलों को घेरे रखा और लड़ाई इसलिए ना छेड़ी के शायद ये लोग राहे रास्त पर आ जाएँ। लेकिन जब उनकी तरफ़ से कोई ऐसी तहरीक ना देखी। तो हज़रत ख़ालिद ने हमला करके शहर की आबादी और उसके अन्दर के दीरों और कनीसों पर क़ब्ज़ा कर लिया।

क़ब्ज़ा कर लेने के बाद उमरो बिन अब्दुल मसीह जो के निहायत बूढ़ा पीर फानी था अपने क़िले से निकल आया। मुसलमानों ने उसे हज़रत ख़ालिद के सामने पेश किया हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उमरो बिन अब्दुल मसीह की तरफ़ तवज्जह फ़रमाई और दरयाफ़्त किया, तुम्हारी उमर कितनी है? उमरो ने कहा "सेंकड़ों बरस" बूढ़े के हमराही ख़ादिम के पास एक ज़हर की पुड़िया निकली। इस पर हज़रत ख़ालिद ने पूछा इसे साथ क्यों लाए हो। उसने कहा, इस ख़याल से के अगर तुम ने मेरी क़ौम के साथ अच्छा सलूक ना किया, तो मैं इसे खा कर मर जाऊँ और अपनी क़ौम की

Scanned by CamScanner

ज़िल्लत व तबाही ना देखूं।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह ने इस पुड़िया से ज़हर निकाल कर अपनी हथेली पर रखा और उससे कहा "बे मौत कोई नहीं मरता" अगर मौत का वक़्त ना आया हो तो ज़हर भी अपना कुछ असर नहीं कर सकता। ये कहकर हज़रत ख़ालिद रज़ी अल्लाहो अन्ह ने *बिस्मिल्लाही ख़ैरी अस्समाई रब्बिलअर्ज़ी वस्समाईल्लज़ी ला युज़ुर्रू मआ इसमिही राउन-उर-रहमानिर्रहमीम।*

ये कलमात अदा करके वो ज़हर फाँक लिया। उस बूढ़े काफिर ने ये ऐतक़ाद और खुदा पर ऐतमाद का मंज़र देखा, तो शशिद्र रह गया, और तमाम लोग भी हैरान रह गए, जो क़िलों से निकल आए थे और उमरो बिन अब्दुल मसीह की ज़बान से तो ये कलमा बेइख़्तियार निकल गया के :

"जब तक तुम्हारी शान का एक शख़्स भी तुम में मौजूद है, तुम अपने मक़्सद में नाकाम नहीं रह सकते" (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 376, जिल्द 2) व मिसला फी हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 867)

सबक़:- हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह इस्लाम के बहुत बड़े बुलंद रूत्बा जरनैल थे। मुसलमनों को हमेशा उन पर नाज़ रहेगा और सहाबा इक्राम रज़ी अल्लाहो अन्हुम अपने अज़्म व ऐतक़ाद की बदौलत मौत से मतलक़ हरासाँ ना थे और इसी जज़्बे की बदौलत वो हयाते जावदानी पा गए।

हिकायत नम्बर(206) मिट्टी का टोकरा

जंगे क़ादसिया के दौरान शाहे ईरान यज़्दगर्द की तरफ़ से इस्लामी लश्कर के सिपह सालार हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी अल्लाहो की ख़िदमत में अर्ज़ की गई के आप अपने आदमियों से एक वफ़्द हमारे पास भेजें ताके हम उनमें से इतमिनान के साथ गुफ़्तगू कर सकें। चुनाँचे यज़्दगर्द के दरबार में जाने के लिए हज़रत रबअी बिन आमिर नौमान बिन मक़रन और मग़ैरह बिन ज़रारह और आसिम बिन उमर वग़ैरा रज़ी अल्लाहो अन्हुम तैयार हुए। इधर ईरानियों ने अपना रौब व अदब दिखाने के लिए दरबार यज़्दगर्द को खूब आरास्ता किया। क़ीमती फर्श क़ालीन और ज़रकार मसददें बिछाई गईं। ज़रकार तकिए लगाए गए और सोने के तख़्त पर यज़्दगर्द खुद बैठा। जब इस्लामी वफ़्द आया तो अज़ब शान बे नियाज़ी से आया। हज़रत रबअी इस शान से घोड़े पर सवार दरबार में दाख़िल हए के सादा सी एक तलवार और

Scanned by CamScanner

रस्सी से बाँधा हुआ एक नेज़ह लटक रहा है। क़ीमती फर्श के क़रीब घोड़ा पहुँचा तो दरबारियों ने ने कहा। घोड़े से उतर पड़ो। मगर आपने कुछ परवाह ना की और दरबार के क़ीमती फर्श पर घोड़े को ले गए, फिर घोड़े से उतरे और दो भारी ज़रकार तकियों को नेज़े से फाड़कर उनमें रस्सी डाली और घोड़े को बाँध दिया। ईरानियों ने ये सब कुछ देखा, लेकिन वो बुलाए हुए आए थे, इसलिए चुप रहे। फिर आप नेज़ह फर्श पर गाड़ते आगे बढ़े और आहिस्ता आहिस्ता क़दम रखते चले गए उनकी इस आहिस्ता ख़रामी और फिर नेज़ह ने तमाम क़ीमती असबाब और फर्श को ख़राब कर दिया और जगह जगह नेज़ह से फर्श पर सूराख़ कर दिए और फिर यज़्दगर्द के क़रीब पहुँच कर आपने नेज़ह ज़मीन पर गाढ़ दिया और खुद ज़मीन पर बैठ गए। लोगों ने कहा ज़मीन पर क्यों बैठ गए, फ़रमाया, हम ज़ैब व ज़ीनत को पसंद नहीं करते और ना इन तकल्लुफात से हमें कुछ रग़बत है इसी तरह हज़रत नौमान और मग़ैरह व आसिम भी आगे बढ़े और यज़्दगर्द ने दरयाफ़्त किया के तुम लोग क्या चाहते हो? नौमान बिन मक़रन ने फ़रमाया।

"खुदा तआला ने हम पर रहम फ़रमाया, और हमारी रहनुमाई के लिए एक रसूल भेजा जिसने हमें नेक कामों का हुक्म दिया और बुरे कामों से रोका और हम से इस बात का वादा किया है के अगर हम उसके अहकाम को मानेंगे, तो दीन व दुनिया की भलाई हम को नसीब होगी और हमारे रसूल ने हमें ये भी हुक्म दिया है के हम हर क़ौम को अद्ल व इंसाफ की दावत दें और इस्लाम की तरफ़ बुलायें। चुनाँचे हम आपको भी अद्ल व इंसाफ और इस्लाम की दावत देते हैं हमारा दीन बेहतरीन दीन है अगर तुम हमारा दीन क़बूल कर लो तो बेहतर। वरना फिर दो बातों में से एक बात मंज़ूर करो। या जिज़या दो। और अगर ये भी मंज़ूर ना हो तो फिर जंग करो अगर तुम हमारा दीन क़बूल कर लोगे। तो हम तुम्हारे पास खुदा की किताब को छोड़ जाएँगे। तुम किताबे इलाही पर क़ायम रहना और उसके अहकाम के मवाफिक़ हकूमत करना और उसके बाद हम चले जाएँगे और तुम्हारे मुल्क से कोई तआर्रूज़ ना करेंगे। तुम जानो और तुम्हारा मुल्क। जिज़या मंज़ूर करो। तो ये भी हमें मंज़ूर है। इस सूरत में हम दुश्मनों से तुम्हें बचाएँगे और कोई नुक़्सान तुम को ना पहुँचाएँगे। और ये तमाम बातें अगर तुम्हें मंज़ूर ना हो तो फिर हम तुम से जंग करेंगे।"

यज़्दगर्द ने इसके जवाब में कहा। "मैं जानता हूँ, तुम्हारी क़ौम इन्तिहाई दर्जे की ज़लील और बदबख़्त थी। तुम अपनी हद से ना बढ़ो और फारस पर

Scanned by CamScanner

क़ब्ज़े की तमअे दिलो दिमाग़ से निकाल दो। हमारे मुक़ाबले में तुम्हें सख़्त नुक़्सान उठाना पड़ेगा। अगर अपने इफ़्लास से मजबूर होकर तुम ने हमारे मुल्क पर हमला किया है तो मैं तुम्हारी मदद के लिए तैयार हूँ। तुम लोगों को हम ज़मीनें देंगे तुम्हारे सरदारों की इज़्ज़त करेंगे। तुम्हारे कपड़े बना देंगे और माँगोगे देंगे।"

यज़्दगर्द की ये तक़रीर सुनकर हज़रत मग़ैरा रज़ी अल्लाहो अन्ह बोले:-

"बादशाह! ये लोग अरब के सरदार और शरफ़ा में से हैं और शरफ़ा की इज़्ज़त को जानते हैं, उन हज़रात को जिस ख़िदमत पर मामूर किया गया उसको उन्होंने पूरे तौर पर अभी तुम्हारे सामने पेश नहीं किया और आपने जो बातें जवाब में कही हैं। वो बातें उनका जवाब नहीं हो सकतीं। आप मुझ से गुफ़्तगू कीजिए। मैं आपका पयाम सरदार सिपाह को पहुँचा दूंगा। आपने हमारी सक़ीम हालत की निसबत जो कुछ फ़रमाया, बिलकुल दुरूस्त है। वाक़ेया ये है के हमारी हालत इससे भी ज़्यादा बदतर थी। लेकिन नौमान बिन मक़रन के क़ौल के मुताबिक़ खुदा ने हम पर रहम फ़रमाया और हमारी इसलाह के लिए अपना नबी हम में भेजा। जिसने हमको इंसान बना दिया और इज़्ज़त व शराफत के बुलंद तरीन मुक़ाम पर बिठा दिया लिहाज़ा ऐ बादशाह! नौमान बिन मक़रन की बातों को हिक़ारत से ना देखा और बेहतर यही है के इस्लाम ले आओ और अपने आपको बचा लो।"

यज़्दगर्द ने जवाब दिया के अगर क़ासिदों का क़त्ल ना रवा ना होता। तो मैं तुम सबको क़त्ल करा देता। तुम लोग फौरन वापस चले जाओ। तुम्हारी बातों का जवाब मेरे पास नहीं है। उसके बाद मग़रूर यज़्दगर्द ने मिट्टी का एक टोकरा मंगवाया और हुक्म दिया के उन लोगों में से जो सबसे ज़्यादा शरीफ हो ये मिट्टी से भरा हुआ टोकरा उसके सर पर रख दो और उसको मदायन से बाहर निकाल दो। चुनाँचे वो मिट्टी का टोकरा बढ़कर हज़रत आसिम बिन उमर रज़ी अल्लाहो ने अपने सर पर उठा लिया और बड़ी मुसर्रत का इज़हार किया। इस मुसर्रत को देखकर यज़्दगर्द हैरान हुआ तो हज़रत आसिम का जवाब ये था, जिसे मैं (बशीर) ने इन शैरों में बयान किया है। हज़रत आसिम ने फ़रमाया।

तेरी नज़रों में तो ये तहक़ीर की इक चाल है
पर मुसलमानों के हक़ में ये मुबारक फाल है
जानता हूँ मैं ही उस अल्लाह के इनाम को
तूने खुद अपनी ज़मीन दे डाली है इस्लाम को

Scanned by CamScanner

ये कहा। और मुजाहेदीन उस दरबार से निकल आए।

इस्लामी वफ़्द की वापसी के बाद यज़्दगर्द और उसके हम नशीनों को मुसलमानों की जुरात व बेबाकी का अहसास हुआ और यज़्दगर्द बोला के मेरा दिल गवाही देता है के वो ज़रूर कामयाबी हासिल करेंगे लेकिन आसिम बड़ा बेवक़ूफ है के मिट्टी का टोकरा पाकर खुश हो गया। ईरानी सरदार, रूसतम बोला: बादशाह! जिसको आप बेवक़ूफ कह रहे हैं, वो सब से ज़्यादा अक़लमंद और समझदार है। उसने मिट्टी के इस टोकरे से नेक फाल ली है और अब ख़ैर नहीं है। यज़्दगर्द ये सुनकर ग़ज़बनाक हुआ और परेशानी के आलम में बाहर आया और इस्लामी वफ़्द के पीछे सवारों की एक जमात रवाना की और कहा के अगर तुम मुसलमानों के वफ़्द को रास्ते में पकड़ लोगे तो हम मुल्क को बचा सकेंगे और अगर वफ़्द को तुम ना पा सके तो तुम्हारा मुल्क समझो हाथों से गया। क्योंके वो वफ़्द हमारे मुल्क की कुंजी सर पर उठाए लिए जा रहा है। चुनाँचे सवारों की एक जमात ने मुजाहेदीन का पीछा किया। लेकिन नाकाम वापस आई और रूसतम ने कहा के मुसलमान हमारी ज़मीन को हैरत अंगेज़ तरीक़े पर ले गए और हम को ख़बर भी ना हुई। रूसतम चूंके मंजम और काहिन था इसलिए उसने नजूम के तरीक़े से मालूम कर लिया के मिट्टी का टोकरा ले जाना ये मानी रखता है के अरब ने सर ज़मीन फारस पर क़ब्ज़ा कर लिया।"

सबक़:- मुसलमान अपने अल्लाह और उसके रसूल का सच्चा मतीअ और फ़रमाँबरदार होता है और दुनयवी जाह व हशमत का उसकी नज़रों में कुछ वक़ार नहीं होता। और वो अपनी सदाक़त व शुजाअत के बल बूते पर बड़ी से बड़ी ताक़त को नज़रों में नहीं लाता और तबलीग़े हक़ के लिए हर वक़्त तैयार रहता है और अल्लाह तआला सच्चे मुसलमानों की बहरे नूअ मदद फ़रमाता है और दुश्मन बावजूद दुनयवी जाह व हशमत और अपनी कसरत के सच्चे मुसलमनों का मुक़ाबला नहीं कर सकता। सहाबा इक्राम अलेहिम-अर्रिज़वान ने इस हक़ीक़त को आशकारा करके दिखा दिया।

हिकायत नम्बर(207) सफर तबूक

एक क़ाफला जो शाम से आया, हुज़ूर सरवर आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कहने लगा। हुज़ूर! क़ैसरे रोम मुसलमानों से जंगे मोता में शिकस्त का बदला लेने को अपनी फौजों को तैयार कर रहा है। ताके वो मदीना मुनव्वरह पर हमला कर दे।

Scanned by CamScanner

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया, परवा नहीं!

क़ाफ़ला:- या रसूल अल्लाह! क़ैसरे रोम को नाज़ है के वो तक़रीबन निस्फ़ दुनिया पर हुकमुरान है और उसका ये ख़याल है के ये मुट्ठी भर मुसलमान उसके सामने कुछ भी नहीं और वो दो लाख की फौजी जमीअत से मदीना पर हमला करने का इरादा रखता है।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सहाबा इक्राम की तरफ़ तवज्जह फ़रमाते हुए क्या राय है तुम लोगों की?"

सहाबा इक्राम का जवाब ये था: के

है जिसका खुदा हाफिज़ क्या उसको ख़त्र कोई
इंसान की क्या ताक़त पहुँचाए ज़रर कोई!

हम अपने आक़ा के साथ हैं, आप मुख़्तार हैं जो चाहें फ़रमायें हम हर तरह तैयार हैं।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम: अच्छा तो सुनो! मेरा इरादा है के हमला आवर अफ़्वाज की मदाफत अरब की सर ज़मीन में दाख़िल होने से पहले पहले मुनासिब है ताके अनदुरूने मुल्क कोई ख़लल वाक़अे ना हो।

सहाबा इक्राम : सर तसलीमे ख़म है जो मिज़ाज यार में आए।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम: खूब सोच लो। ये सफर में मेवे पक गए हैं और ये दिन मेवे खाने, साया में बैठने और आराम करने के हैं।

सहाबा इक्राम: या रसूल अल्लाह! आपकी मर्ज़ी पर ये तो क्या दुनिया की हर नअेमत क़ुर्बान है और हर राहत निछावर के यही अपना ईमान है।

है सुन्नत अरबाबे वफा सब्र व तवक्कल
छोड़ेंगे ना हम हाथ से दामाने रज़ा को

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम! अच्छा तो मैं तैयारी सामान के लिए अल्लाह की राह में कुछ ख़र्च करने का एलान करता हूँ। रज़ा-ए-इलाही के तालिब बोलें वो क्या देते हैं?

हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह: मेरे आक़ा! ये आपका ग़ुलाम नो सौ ऊँट, एक सौ घोड़े और एक हज़ार दीनार हुज़ूर के हुक्म पर क़ुर्बान करता है के

दौलत से ना जन्नत से ना कुछ हूर से मतलब
इन आँखों को है बस रूखे पुरनूर से मतलब

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ी अल्लाहो अन्ह: और हुज़ूर! ये ग़ुलाम आपका चालीस हज़ार दरहम हाज़िर करता है के

Scanned by CamScanner

ना ऐश और इशरत ना ज़र चाहिए
हमें आपकी इक नज़र चाहिए

हज़रत अबु अक़ील रज़ी अल्लाहो अन्ह (एक ग़रीब सहाबी) मेरी ये नज़र हक़ीर दो सेर छुहारे क़बूल फ़रमाईए। हुज़ूर! रात भर पानी निकाल निकाल कर एक खेत को सैराब करके चार सेर छुहारे मज़दूरी के लाया था। दो सेर बीवी बच्चों के लिए छोड़ कर बाक़ी दो सेर ले आया हूँ।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम: जज़ा कल्लाह! हम तुम्हारे इस जज़्बा-ए-ईसार की क़द्र करते हैं। जाओ इन छूहारों को जुमला क़ीमती सामान के ढेर के ऊपर बखैर दो।

फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह (दिल ही दिल में): देख ऐ दिल! मेहबूब ने आज ईसार का हुक्म फ़रमा कर अपने ग़ुलामों को इस कारे ख़ैर में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने का मौक़ा मरहमत फ़रमाया है, और देख ग़ुलामाने हुज़ूर किस तरह बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते रहे हैं और तू जानता है कँ मैदाने इश्क़ रसूल में अबु बक्र सिद्दीक़ इन सबसे हमेशा पेश पेश है। उसके दिल में जज़्बा-ए-रसूल सबसे बैश है। जब भी कोई मौक़ा आया, सिद्दीक़ को आगे ही पाया। ले आज मौक़ा आया है। अभी तक सिद्दीक़ नहीं आए और ता हाल इस कारे ख़ैर में अपना कोई हिस्सा नहीं लाए तो हिम्मत कर और आज इस मैदान में इतना दौड़ के सिद्दीक़ को भी पीछे छोड़! (दिल से इस ख़िताब के बाद) हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्ला.ा अन्ह घर पहुँचे और अपने सारे असास-उल-बैत नक़्द व जिन्स का निस्फ जो कई हज़ार रुपये का था, बारगाहे रसूल में ले आए। ईसारे फारूक़ की ये शान के अपने घर की सारी पूंजी नक़द व जिंस का निस्फ दरे यार पर ले आए। देखकर हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम रूख़े पुरनूर पर मुसर्रत के आसार नज़र आने लगे और फारूक़ अपने मेहबूब की इस मुसर्रत पर फूले ना समाते थे के

इतने मैं वो रफ़ीक़े नबुव्वत भी आ गया
शाहिद है जिसकी मोहरो वफा पर हिरा का ग़ार

चमन रिसालत का बुलबुल ज़ार मुहिब्ब व मेहबूब अहमद मुख़्तार, यारे ग़ार व जाँनिसार सिद्दीक़े अक्बर भी आ गया और इस शान से आया के सारा असास-उल-बैत नक़्द व जिन्स, जिस क़द्र भी था। सौ फीसदी घर का सारे का सारा सामान और अपनी कुल पूंजी दरबारे रिसालत में न्यूछावर करने को साथ ले आया और आते ही सब कुछ यार के क़दमों में डाल दिया।

Scanned by CamScanner

ये मंज़र देखकर फारूक़ भी हैरान रह गए और दिल से कहा: लो आज भी मैदान सिद्दीक़ के ही हाथ रहा। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने बकमाल उल्फत व प्यार अपने यारे ग़ार से फ़रमाया के ऐ मदें दीं! तुम सभी कुछ यहाँ ले आए घर भी कुछ छोड़ कर आए या नहीं यारे ग़ार ने जवाब दिया

परवाने को चिराग़ तो बुलबुल को फूल बस!
सिद्दीक़ के लिए है खुदा का रसूल बस!

इसी तरह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इर्शाद पर हर सहाबी ने फिराख़ दिली व ईसार से काम लिया और अल्लाह का नबी उन अल्लाह वालों की तीन हज़ार की जमीअत से तबूक को रवाना हुआ।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम: हमारे पास सवारियों और रसद की कमी है। उसका कुछ ख़याल ना करना।

सहाबा इक्राम: हुज़ूर! हमें इसका कुछ ख़याल नहीं। हमें तो रज़ाऐ हक़ मतलूब है।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम: मैं हर अठ्ठारह शख़्सों के लिए एक ऊँट मुक़र्रर करता हूँ और खाने पीने के लिए।

सहाबा इक्राम: हुज़ूर! आप इसकी फिक्र ना फ़रमाएँ, हम खुदा की राह में दरख़्तों के पत्ते भी खाकर इस राह से मुंह ना मोड़ेंगे, प्यास लगी तो ऊँटों को (अगरचै सवारी के लिए पहले ही कम हैं) ज़िबह करके उनकी अम्आ का पानी पी लेंगे और या फिर रोज़ा रखेंगे या रसूल अल्लाह

तू सलामत है तो सब हैच हैं ये रंजो अलम

फिर इस सफर में सहाबा इक्राम को वाक़ई दरख़्तों के पत्ते खाने पड़े जिससे होंट सूज गए चलते चलते पाऊँ में छाले पड़ गए और ज़ख़्म भी हो गए मगर क्या मजाल के क़दम आगे बढ़ने से रूक जाए। बिल आख़िर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम इस आलम में अपने तीस हज़ार जाँनिसारों समेत सरहदे शाम के एक मुक़ाम में पहुँच गए और एक माह वहीं क़याम फ़रमाया।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इस दिलैराना इक़्दाम का असर क़ैसरे रोम पर ये हुआ के वो हुज़ूर के तीस हज़ार मुजाहेदीन समेत तबूक में पहुँच जाने का सुनकर हैरान रह गया और अपने मसाहिबों से यूं गोया हुआ के:

क़ैसरे रोम:- ये मुसलमान भी अजब दिल गुर्दे के आदमी हैं के मेरे इरादे

Scanned by CamScanner

की ख़बर पाते ही मदाफत के लिए तबूक पहुँच गए।

मसाहिबः बात ये है के उनके पैग़म्बर ने उनमें कुछ अजीब जज़्बा भर दिया है और उन्हें कुछ ऐसा मज़बूत कर दिया है के ये अल्लाह की राह में लड़ने को जिहाद तसव्वुर करते हैं और इसी जज़्बे के मा तहत खूब लड़ते मारते और मरते हैं। उनके ख़याल में काफिर को मारने वाला ग़ाज़ी और काफिर से मर जाने वाला शहीद है उन्हें खाने पीने को ना मिले तो रोज़ा रख लेते हैं, मिल जाए तो कहते हैं ईद है और फिर उनका पैग़म्बरा उनके साथ साथ हो तो ये और भी ज़्यादा जज़्बे और हिम्मत से लड़ते हैं और अपने पैग़म्बर के क़दमों में मर जाने को सआदत ख़याल करते हैं।

क़ैसरे रोमः- तो फिर ये बेहतर है के फिलहाल मदीने पर चढ़ाई का इरादा मुलतवी कर दिया जाए। मुसलमानों का पैग़म्बर जब वफात पा जाए तो फिर हमला किया जाए। एलान कर दो के मदीने पर हमला हम मुलतवी करते हैं।

चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने भी ये मालूम करके के क़ैसर रोम अपने इरादे से बाज़ आ गया है वापसी का हुक्म फ़रमाया, और ये अल्लाह वालों का मुक़द्दस लश्कर अपने आक़ा समेत एक माह के बाद मदीना मुनव्वरह वापस पहुँच गया। (तारीख़-उल-ख़ुलफा सफ़ा 31, व रूह-उल-बयान, जिल्द 1, सफ़ा 927, तबसरफ़ मुरत्तिब)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वानल्लाही अलेहिम अजमईन ने अपनी हर दुनयवी राहत को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इर्शादात पर क़ुर्बान कर दिया था और वो अख़रवी राहत ही के जोयाँ रहे और अल्लाह की राह में उन्होंने हर मुसीबत को बर्दाश्त फ़रमा कर बता दिया के सच्चे मुसलमान अल्लाह की राह में क़ुर्बान हो जाने ही को सआदत समझते हैं और उनके मज़बूत इरादों के सामने दुनिया का कोई रिश्ता हायल नहीं हो सकता और सहाबा इक्राम की इसी नेक नीयती और सच्चे जज़्बे की बदौलत दुश्मन उनसे हमेशा मरऊब रहे और वो अपनी क़िल्लत के बावजूद कसरतों पर ग़ालिब आते रहे। आज भी हमारी तरक़्क़ी व कामयाबी का यही ज़रिया है के हमारे सामने उन अल्लाह वालों का तौर तरीक़ा रहे।

हिकायत नम्बर(208) इस्लामी फौज

फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के दौरे ख़िलाफत में मुसलमानों का लश्कर फतह बैत-उल-मुक़द्दस के लिए कोशाँ व साअई था के वहाँ

Scanned by CamScanner

के उल्मा व अहबार की ख़्वाहिश के मुताबिक़ हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह खुद बनफ़्स नफीस मदीना मुनव्वरह से मुहाज़ जंग पर तशरीफ़ लाए। बैत-उल-मुक़द्दस के उलमा व अहबार ने जो खुद तो अगरचै हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह पर नूरे इलाही और हक़ीक़त के आसार नुमायाँ देखकर दिल से उनके क़ायल हो चुके थे। मगर अपनी क़ौम को मुसलमान के बुलंद अख़्लाक़ का क़ायल कराने के लिए ये बात पेश की के हम बैत-उल-मुक़द्दस का बड़ा बाज़ार निहायत आरास्ता व पैरास्ता करते हैं। इस बाज़ार से इस्लामी फौज एक मर्तबा गुज़र जाए। इस तरफ़ से दाख़िल होकर उस तरफ़ निकल जाए। चुनाँचे ये बात तय हो गई और उन लोगों ने शहर का बाज़ार खूब आरास्ता किया, और उसमें हर क़िस्म की अशिया मोहय्या कीं और हर एक मकान पर एक एक खूबसूरत हसीना व जमीला औरत को बिठा दिया और बाज़ार को मर्दों से बिलकुल खाली कर दिया और औरतों को हुक्म दिया के इस्लामी फौज बाज़ार में दाख़िल हो तो वो जिस चीज़ की ख़्वाहिश करें, उनको बिला क़ीमत बे ताम्मुल दे दें और बे हिजाबाना मुलात्फत व नाज़ व अदा से पेश आएँ और उनको अपनी तरफ़ मायल करें और ये सब इन्तिज़ाम मुकम्मल हो जाने के बाद फिर मुसलमानों से कहा गया के इस्लामी फौज को इस बाज़ार से गुज़रने का हुक्म दिया जाए।

इधर इस्लामी फौज बाज़ार से गुज़रने के लिए तैयार हुई तो सिपह सालार ने क़ुरआने पाक की ये आयत पढ़ी *क़ुल लिलमोमिनीना यगुज़्ज़ू मिन अबसारिहिम अल्ख़*

यानी "मोमिनों से फ़रमा दीजिए के वो अपनी नज़रें पस्त रखें"

इस एक ही आयत के सुनाने ने ये असर दिखाया के इस्लामी फौज बाज़ार में नज़रें नीची किए हुए दाख़िल हुई और किसी एक सिपाही ने भी आँख उठा कर ना देखा के यहाँ क्या है और कौन है? और वो खुदा के ख़ायफ बन्दे इस्लामी शान के साथ एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ निकल गए। इस्लामी फौज की इस अज़ीम बुलंदी-ए-किरदार का ये असर हुआ के दुश्मन ने मुत्तफिरक़ होकर बिला जिदाल व क़िताल बैत-उल-मुक़द्दस मुसलमानों के हवाले कर दिया। (अलफतूहात, सफ़ा 134)

सबक़:- मुसलमान बड़ा बुलंद अख़लाक़ होता है और वो खुदा के इरशादात की मज़बूत गिरफ़्त में होता है और उससे कभी कोई नाशाईस्ता हरकत सादिर नहीं होती और मुसलमानों की फतूहात ज़्यादा तर उनकी इसी अख़लाक़ी तलवार की रहीने मिन्नत हैं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(209) नसरानी पहलवान

हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह जब तख़्ते खिलाफत पर सद्रनशीन हुए तो आपकी ख़िलाफत का चर्चा और आपकी शान व शौकत की धूम मशरिक़ से मग़रिब तक पहुँची। जिस वक़्त बादशाह हरक़ुल ने आपका ज़िक्र सुना तो बड़ा बेचैन हुआ और एक नसरानी पहलवान को इनाम का लालच देकर हज़रत को शहीद कर देने के लिए आमादा किया और उससे कह के तो मदीने जाकर अगर उमर को क़त्ल कर आएगा तो तुझे बहुत साल माल व दौलत दिया जाएगा। ये हुक्म सुन कर कर वो नसरानी पहलवान मदीने की तरफ़ रवाना हुआ। जब मदीने के क़रीब पहुँचा तो उसे पता चला के मुसलमानों का अमीर उमर फारूक़ बेवा और यतीम बच्चों की ज़मीन और बाग़ात वग़ैरा के मुलाहेज़ा के लिए बाग़ में तशरीफ़ ले गया है। ये नसरानी पहलवान इस बाग़ में पहुँचा और हज़रत उमर को देखकर एक गुनजान से दरख़्त पर चढ़ गया। कुछ देर के बाद इत्तेफाक़ से हज़रत उमर भी इस दरख़्त के नीचे तशरीफ़ लाए और ज़मीन पर बैठकर हाथ का तकीया बना कर लेटे और बग़ैर बिछोने, बग़ैर तकीये सो गए। आपको सोता पाकर वो नसरानी पहलवान दरख़्त से नीचे उतरा और बहुत जल्दी आपके क़त्ल का इरादा किया जिस वक़्त तलवार उठाई। फौरन एक शेर आपके पेरों की तरफ़ से आया जिसकी सूरत देखकर वो नसरानी पहलवान बेहोश होकर ज़मीन पर गिरा और वो शेर चारों तरफ़ आपका पहरा देने और आपके तलवे चाटने लगा। उस नसरानी के गिरने से हज़रत उमर बैदार हुए, जब आपकी आँख खुल गई, शेर ग़ायब हो गया। आपने इस नसरानी पहलसपन से पूछा के तू कौन है? नसरानी बोला, जनाब आपका रूत्बा अल्लाह ने बड़ा बुलंद किया है, मैं बेवकूफ आपको शहीद करने के इरादे से यहाँ तक आया था, लेकिन जब आप सोये तो जंगल से शेर आपकी हिफाज़तके लिए आ गया। ये सुनकर हज़रत उमर ने चारों तरफ़ देखकर फ़रमाया के यहाँ तो कोई शेर नज़र नहीं आता, वो शेर किधर गया। इतने में हातिफ से एक आवाज़ आई। "ऐ उमर तू हमारे दीन की हिफाज़त करता है हम तेरे दुश्मनों से तेरी हिफाज़त करेंगे"

ये ग़ैबी आवाज़ सुनकर नसरानी पहलवान और भी हैरान हुआ, और आपके हाथों को बोसा देकर अर्ज़ किया, हज़रत! जंगल के शेर आपका पहरा देते है। और आसमान के फरिश्ते आपकी तारीफ करते हैं, फ़िर आपके हाथ पर लाइलाहा इललल्लाह मोहम्मदुर रसूल अल्लाह पढ़कर मैं मुसलमान

Scanned by CamScanner

क्यों ना हों। ये कहकर वो नसरानी मुसलमान हो गया। (आलाम वाक़दी व दरमंज़ूर, सफ़ा 44)

सबक़:- हज़रत फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह की बहुत बड़ी बुलंद शान है के जंगल के शेर भी आपके पाबोस होते हैं और हज़रत उमर दीन के सच्चे अलमबरदार थे इसीलिए अल्लाह तआला की ख़ास नज़रे रहमत आप पर थी और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों के पेर चूमना शेरों का काम है।

हिकायत नम्बर(210) जंगल का शेर

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का एक सहाबी जिनका सफीना था, एक दफा एक कश्ती में सवार हुआ, इत्तेफाक़ से कश्ती टकराकर टूट गई। हज़रत सफीना एक तख़्ते पर बहते हुए चले गए। कुछ देर के बाद वो तख़्ता एक किनारे पर आ लगा। हज़रत सफीना वहाँ से उतरे तो एक जंगल में जहाँ शेर और दरिंदे थे जा पहुँचे एक शेर ने जब आपको देखा तो आप पर हमला करने को दौड़ा। हज़रत सफीना ने पुकार कर कहा। ख़बरदार! ऐ शेर! देख मैं रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का ग़ुलाम हूँ। ये सुनते ही शेर ने अपना सर झुका लिया, और हज़रत सफीना के पास पहुँचकर अपनी दुम हिलाने लगा और अपने इशारे से हज़रत सफीना को अपने पीछे लगाकर आपको एक ऐसे रास्ते पर लाकर खड़ा कर दिया। जिस पर चल कर हज़रत सफीना सही सालिम घर पहुँच गए। (हुज्जत-उल्लाह अललआलमीन, सफ़ा 873, और मिशकात शरीफ, सफ़ा 537)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान की वो अज़मत थी के जंगल के शेर भी उनके ग़ुलाम थे और जो सहाबा इक्राम के ग़ुलाम हैं। वही दरअसल शेर हैं।

हिकायत नम्बर(211) शौहर या बेटा

एक दिन हज़रत अली करमल्लाहो वज्ह ने सुबह की नमाज़ के बाद अपने ख़ादिम से फ़रमाया के फलाँ मोहल्ले में जा। उस मोहल्ले में एक मस्जिद है। मस्जिद के पहलू में एक घर है। उसमें एक औरत और मर्द बहुत देर से लड़ रहे हैं। उनको मेरे पास बुला ला। आपका ख़ादिम उस पता पर पहुँचा तो देखा के वाक़ई एक मर्द और एक औरत बाहम तकरार कर रहे हैं। ग़ुलाम ने कहा, चलो तुम्हें हज़रत अली बुला रहे हैं। ये दोनों के दोनों हज़रत अली

Scanned by CamScanner

की ख़िदमत में हाज़िर हुए आपने फ़रमाया! आज सारी रात तुम्हें लड़ते हुए गुज़री? मर्द ने अर्ज़ किया, हुज़ूर! मैंने इस औरत से निकाह किया था, मगर जिस वक़्त ये औरत मेरे सामने आई, मुझे उससे सख़्त नफरत पैदा हो गई। अगर मुझे ताक़त होती तो उसी वक़्त उसको निकाल देता। इस औरत ने मुझे मुतनफिर देखकर मुझ से लड़ना झगड़ना शुरू कर दिया। हज़रत अली ने तमाम हाज़रीने मजलिस को रूख़सत कर दिया। और औरत से ये फ़रमाया: के जो बात हम तुम से पूछेंगे सच सच जवाब देना ऐ औरत तुम्हारा नाम ये है। तेरे बाप का नाम ये है। औरत ने कहा ठीक है फ़रमाया एक रात तो अपने घर से बाहर निकली थी। तेरे चचा ज़ाद भाई ने तुझे पकड़ लिया, तू अपने चचाज़ाद भाई से हामला हुई। मुद्दत तक तू और तेरी माँ ने इस हमल को मख़्फी रखा। जब तेरे दर्द शुरू हुआ तो तेरी वालिदा तुझ को किसी दूसरी जगह ले गई, वहाँ तेरे हाँ लड़का पैदा हुआ, तूने उस बच्चे को गठरी में लपेट कर उस मकान से बाहर जाकर रख दिया। इत्तेफाक़ से एक कुत्ता इस बच्चे के पास आया। तेरी माँ ने कुत्ते को पत्थर मारा मगर वो पत्थर मारा मगर वो पत्थर इस बच्चे को जा लगा बच्चे का सर फूट गया। तेरी माँ ने अपना दोपट्टा फाड़कर बच्चे का सर बाँधा। फिर वहाँ से तुम चली गई। उसके बाद फिर तुम्हें इस बच्चे की कुछ ख़बर ना रही। क्या ये वाक़ेया ठीक है? औरत ने हैरान होकर कहा या हज़रत! बिलकुल ठीक है।

उसके बाद हज़रत अली ने इस मर्द से कहा के ऐ मर्द! तू अपना सर खोल कर उसे दिखा दे। मर्द ने सर खोला तो उस ज़ख़्म का निशान मौजूद था। फ़रमाया के ऐ औरत ये तेरा ख़ाविंद नहीं है बल्के तेरा बेटा है। हक़ तआला ने तुझे दूसरी क़िस्म के हराम से बचाया। अब तू अपने बेटे को ले जा। (शवाहिद-उल-नबुव्वत, सफ़ा 161)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सदक़े में आपके ग़ुलामों में भी इल्म इस क़द्र था के मुद्दतों पहले की छुपी हुई राज़ भेद की बातें वो जान जाते थे। फिर खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो ताअला अलेह व सल्लम से कोई बात कैसे ग़ैब रह सकती है।

हिकायत नम्बर(212) सुहैब व अम्मार रज़ी अल्लाहो अन्हुमा

हज़रत सुहैब और हज़रत अम्मार रज़ी अल्लाहो अन्हुमा दोनों इस्लाम लाने की ग़र्ज़ से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत अरक़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के मकान पर तशरीफ़ फ़रमा थे के ये दोनों

Scanned by CamScanner

हज़रात अलेहदा अलेहदा हाज़िरे ख़िदमत हुए और मकान के दरवाज़ों पर दोनों इत्तेफाक़िया इक्ठ्ठे हो गए। हर एक ने दूसरे की गर्ज़ मालूम की तो एक ही ग़र्ज़ यानी इस्लाम लाना और हुज़ूर के फेज़ से मुसतफीद होना दोनों का मक़सूद था। इस्लाम लाए और इस्लाम लाने के बाद जो उस ज़माने में इस थोड़ी और कमज़ोर जमाअत को पेश आता था वो पेश आया। हर तरह सताए गए, तकलीफें पहुँचाई गईं। आख़िर तंग आकर हिजरत का इरादा फ़रमाया तो काफिरों को ये चीज़ भी गवारा ना थी के ये लोग किसी दूसरी जगह जाकर आराम से ज़िन्दगी बसर करें। इसलिए जिस किसी की हिजरत का हाल मालूम होता था उसको पकड़ने की कोशिश करते थे के तालीफ से निजात ना पा सके। चुनाँचे उनका भी पीछा किया गया और एक जमाअत उनको पकड़ने के लिए गई। उन्होंने अपना तरकश संभाला जिसमें तीर थे। हज़रत सुहैब ने उन लोगों से कहा के देखो तुम्हें मालूम है के मैं तुम सबसे ज़्यादा तीर अंदाज़ हूँ। जब तक मेरे पास एक भी तीर बाक़ी रहेगा। तुम लोग हमारे नज़दीक ना आ सकोगे और जब तीर ख़त्म हो गए तो मैं तलवार से मुक़ाबला करूंगा। यहाँ तक के तलवार भी ना रहे उस वक़्त तुम जो चाहे करना। अगर तुम चाहो तो अपनी जान के बदले में मैं अपने माल का पता बतला सकता हूँ जो मक्का में है इस पर वो लोग राज़ी हो गए और हज़रत सुहैब ने अपने माल का पता बता कर अपनी जान छुड़ाई और फिर हुज़ूर की ख़िदमत में पहुँच गए हुज़ूर उस वक़्त क़बा में तशरीफ़ फ़रमा थे। उनको देखकर फ़रमाया के नफे की तिजारत की। (असद-उल-ग़ाबा व हिकायात सहाबा, सफ़ा 16)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वानल्लाही अलेहिम अजमईन को अपनी जान व माल और दुनिया की हर चीज़ से इस्लाम ज़्यादा प्यारा था और उन्होंने सब कुछ क़ुर्बान करके इस्लाम को अपनाया और उस तिजारत में वो सरासर नफे में रहे।

हिकायत नम्बर(213) क़िला ज़मीन में धंस गया

मुसलमानों का लश्कर इसकंद्रिया पर हमला आवर था। इसकद्रिया का बादशाह खुद भी इस जंग में मौजूद था और बड़े ज़ोर शौर से लड़ाई का इन्तेज़ाम कर रहा था। काफिर लोग एक बहुत बड़े मज़बूत क़िले में थे और मुसलमान क़िले के सामने मैदान में पड़े हुए थे। बहुत रोज़ तक बाहम जंग होती रही मगर कुफ़्फार बवजह क़िले के मग़लूब ना हुए और ना उन्हें कुछ

Scanned by CamScanner

नुक़सान पहुँचा, एक दिन शरजील बिन हसना रज़ी अल्लाहो अन्ह सहाबी ने काफिरों से ये फ़रमाया के ऐ काफिरो! हमारे अन्दर इस वक़्त ऐसे अल्लाह के प्यारे बन्दे भी मौजूद हैं के अगर इस क़िले की दीवार से कहें के ज़मीन में धंस जाओ तो फौरन ये क़िला ज़मीन में धंस जाएगा ये फ़रमाकर आपने अपना हाथ क़िले की जानिब उठाया और मुंह से नारा अल्लाहू अक्बर का मारा और हाथ से क़िला की फसील को ज़मीन में धंस जाने का इशारा किया। फीअलफौर सारा क़िला जो बड़ा मज़बूत और संगीन था। ज़मीन में उतर गया और सारे काफिर जो क़िले के अन्दर थे। आन की आन मैं एक खुले मैदान में ख़ड़े रह गए। इसकंद्रिया के बादशाह के ये वाक़ेया देखकर होश उड़ गए। शहर छोड़ कर बादशाह और उसकी फौज सब भाग गई और शहर मुसलमानों के हाथ आ गया। (तारीख़ वाक़दी व सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 22)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मोहब्बत और उनकी इत्तिबा की बदौलत कायनात पर तसर्रूफ हासिल था। वो खुदा के हो चुके थे और खुदा उनका हामी व नासिर था। आज हम भी खुदा के हो जाएँ तो सारी खुदाई अपनी है।

हिकायत नम्बर(214) फसतात का क़िला

इस्लामी फौज ने हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह की सरदारी में जब मुल्क मिस्र का रूख़ किया तो छोटे छोटे इलाके फतह करते हुए फसताता पहुँचे और क़िले का मुहासरा कर लिया। बहुत मज़बूत था। मिस्री अपनी हिफाज़त के ख़याल से क़िला बंद हो गए। उधर मुसलमानों के पास सामान रसद और फौज भी कम थी। दोबारा ख़िलाफत से मदद के तलबगार हुए। हज़रत उमर ने दस हज़ार सिपाही और चार अफ़्सर मदद के लिए रवाना किए और ये लिखकर एक ख़त भी रवाना किया के इन चार अफ़्सरों में हर एक एक हज़ार सवार के बराबर है जब ये मदद फसतात पहुँच गई तो हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत ज़ुबैर के रूत्बे का ख़याल करके उन्हें मुहासरा (घेरने) करने वाली फौज का हाकिम बना दिया। हज़रत ज़ुबैर ने घोड़े पर सवार होकर पहले क़िले के चारों तरफ़ चक्कर लगाया और जिन जिन जगहों पर मुनासिब समझा, फौज के दस्ते मुक़र्रर कर दिए। इस तरह से सात महीने तक क़िले का मुहासरा रहा लेकिन हार जीत का कोई

Scanned by CamScanner

फैसला ना हो सका। आख़िर एक दिन उक्ता कर हज़रत ज़ुबैर ने कहा आज मैं इस्लाम पर फिदा होता हूँ। ये कहकर एक सीढ़ी लगाकर क़िले की दीवार पर चढ़ गए और ऊपर जाकर ज़ोर से नारा-ए-तकबीर बुलंद किया। इधर नीचे फाटक के सामने जो फौज थी। उसने भी इतने ज़ोर से नारा तकबीर बुलंद किया के क़िले की ज़मीन दहल गई। अहले क़िला समझे के मुसलमान अन्दर घुस अए हैं और वो परेशान होकर इधर उधर भागने लगे। मौक़े को ग़नीमत जानकर हज़रत ज़ुबैर ने नीचे उतर कर क़िले का दरवाज़ा खाले दिया और पूरी फौज अन्दर घुस आई। लोग घबरा कर इधर उधर भागने लगे। हाकिम शहर मक़ूक़स ने अमन की दरख़्वास्त की और फौरन अमन दे दिया गया। इस तरह हज़रत की अक़्लमंदी और बहादुरी से ये ज़बरदस्त क़िला भी मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया। (तारीख़ इस्लाम)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने अल्लाह की राह में अपनी जानें क़ुर्बान करने में दरीग़ ना फ़रमाया और इसी जज़्बे के साथ वो सारी दुनिया पर छा गए। फिर आज जो लोग अल्लाह की राह में क़ुर्बानी का एक बकरा भी क़ुर्बान करने को तैयार नहीं होते और सौ सौ क़सम के हीले बहाने करते और क़ुर्बानी देने के ख़िलाफ मज़मून लिखते हैं। वो बराए नाम मुसलमान ना हुए तो क्या हुए।

हिकायत नम्बर(215) एक सरफ़रोश मुजाहिद

मुजाहेदीने इस्लाम हज़रत ख़ालिद और अबु उबैदा बिन जर्राह रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की क़यादत में रोज़ अफ़्ज़ों फतूहात से बहरावर हो रहे थे। सामराज ताक़तों की कमर टूट चुकी थी ताहम वो लोग अपने मकरो फ़रैब से मुसलमानों का मुक़ाबला कर रहे थे। इन्हीं फतूहात के सिलसिले में रोमियों का एक गिरोह कुछ मुसलमान औरतों को असीर बना कर ले गया। उन गिरफ़्तार होने वाली मसतूरात में ज़रार बिन अज़वर की बहन खोला बिन्ते अज़वर भी थीं। जब आपके भाई को मालूम हुआ के रोमी मुसलमान औरतों को असीर करके ले गए हैं तो आप हज़रत ख़ालिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत ख़ालिद ने फ़रमाया घबराने की कोई बात नहीं। शिकार को हाथ से ना जाने दो। फिर आपने हज़रत अबु उबैदा बिन जर्राह को दो हज़ार लश्कर के साथ दुश्मन के मुक़ाबले पर रवाना किया और खुद ज़रार और चन्द मुजाहेदीन के हमराह असीर शुदा औरतों की रिहाई के लिए रवाना हुए अभी कुछ ही फासले तय

Scanned by CamScanner

करने पाए थे के मुक़ाम असतरयाक़ के क़रीब गर्दो ग़बार का तूफान उठता हुआ नज़र आया। हज़रत ख़ालिद ने फ़रमाया के "खुदा ख़ैर करे" हुबैरा जो आपके क़ायद थे। अर्ज़ करने लगे के "रोमियों का बचा कुछा लश्कर मालूम होता है।" आपने हुक्म दिया के तमाम मुजाहेदीन आने वाली मुसीबत के लिए तैयार रहें।

इधर अब उन औरतों का हाल सुनिए, जिन्हें पतरस ने क़ैद कर लिया था। पतरस जो बोलिस का भाई था (बोलिस जो मुसलमानों के क़ैद में था, मुसलमान औरतों और लूट खसूट के माल को लेकर असतरयाक़ के क़रीब फ़रोकश हुआ जब उसने इतमिनान का साँस लिया तो उसने हुक्म दिया के औरतें हाज़िर की जाएँ जब औरतें हाज़िर की गईं तो उसने हर औरत को देखा लेकिन उसकी नज़र इन्तिख़ाब खोला पर जा रूकी और उसने एलान कर दिया के वाहिद मालिक मैं हूँ। इसमें कोई मुखासमत ना करे इसी तरह हर शख़्स ने एक एक औरत को अपने लिए मुनतख़िब कर लिया।

मुसलमानों की ग़यूर माँओं, बहनों बेटियों को ये हरकत निहायत नागवार हुई। गुस्से से वो कांप रही थीं, लेकिन मजबूरी उनकी राह में हायल थी। सब औरतों को खेमे में फिर वापस पहुँचा दिया गया। हज़रत खोला ने सब औरतों को इकट्ठा किया और एक पुर जोश तक़रीर की के "ऐ नामूस हमीर व तबअे और ऐ अमालक़ा की बाक़ियात सालेहात! क्या तुम चाहती हो के रोम के वहशी दरिंदे तुम को अपनी हवा व हवस का निशाना बना लें? और क्या तुम्हें ये पसंद है के तुम अपनी बक़िया उमरें अग़यार की ख़िदमत गुज़ारी में सर्फ करके फातेहीन अरब पर कलंक का टीका लगा दो? कहाँ गई तुम्हारी वो हुमीयत व शुजाअत, जिसका चर्चा महाफिल अरब के लिए बाइस सरखरोई और सर बुलंदी था। मेरे नज़दीक अहले रोम के हाथों हमेशा ज़िल्लत उठाने से ये कहीं बेहतर है के हम सबकी सब खुदा की राह में अपनी हक़ीर जानों का हदिया पेश कर दें और अपनी क़ौम को हमेशा की बदनामी से महफूज़ कर लें।"

इस पर अफीरा ने तमाम औरतों की तर्जुमानी करते हुए कहा के हमारी दिली ख़्वाहिश है के हमारे खून का आख़री क़तरा तक खुदा की राह में बहे लेकिन बिला तदबीर कुछ करना अपने आपको हलाकत में डालना है हम निहत्ते हैं।"

खोला ने कहा के बेशक हम निहत्ती हैं। लेकिन अल्लाह की मदद हमारे शामिले हाल है, खेमे की चोबें उखेड़ कर एक दम उन नामुरादों पर हमला

Scanned by CamScanner

कर दो। अल्लाह या तो हमारी मदद फ़रमा कर हमको फतह अता फ़रमाएगा या हम इज़्ज़त की मौत से अल्लाह की राह में शहीद हो जाऐंगी।"

ये सुनते ही तमाम औरतों ने खेमों की चोबें उखाड़ कर यकबारगी हमला कर दिया और ये कहती जाती थीं के देखो! सब मिलकर रहना क्योंके जो भेड़ गले से अलेहदा होती है वो लुक़मा-ए-अजल बन जाती है, खोला ने एक रोमी के सर पर इस ज़ोर से चोब मारी के वो बेहोश होकर गिरा और कुछ देर बाद व असल जहन्नुम हो गया। जब रोमियों ने ये शिकस्त व रीख़्त का आलम देखा तो बदहवास हो गए। पतरस ने हुक्म दिया के इन सब औरतों को घेरा डाल कर पकड़ लो और देखो खोला के साथ अच्छा बरताओ करना।

मोर्रिखीन ने लिखा है के जब भी कोई सवार आगे बढ़ता ये औरतें भूकी शेरनियों की तरह उस पर टूट पड़तीं और उसकी तिक्का बोटी कर देंतीं। खोला फ़रमाती थीं "ऐ रोमियो! आज तुम्हारे भेजे हमारी चोबों से कुचले जाऐंगे। आज तुम्हारी बीवियाँ रांड और तुम्हारे बच्चे यतीम हो जाऐंगे। तुम्हारी उमरें आज के दिन मुनक़तअे हो चुकी हैं। ये सुनते ही पतरस आग बगूला हो गया और उसने अपने लश्कर को पुकारा के खराबी हो तुम्हारी, तुम से चन्द औरतें नहीं पकड़ी जातीं ये सुनते ही बहुत से सिपाहियों ने बड़ी सख़्ती से हमला किया। जिसका उन्होंने डट कर मुक़ाबला किया।"

खोला फ़रमाती थीं: ऐ मुजाहेदीने इस्लाम की माँओं, बहनों, बेटियों अल्लाह ने तुम को इस क़ाबिल समझा के वो तुम्हारा इम्तिहान ले तो तुम अब इम्तिहान में घबराना मत।

ये सख़्त हमला हो ही रहा था के हज़रत ख़ालिद अपने हमराहियों के साथ उन असीरशुदा औरतों की जुसतुजू में असतरयाक़ के क़रीब आ पहुँचे और गर्दो गुबार तलवारों की चमक और झंकार देखकर फ़रमाया: के हमें जल्द अज़ जल्द वहाँ पहुँचना चाहिए। चुनाँचे उन लोगों ने अपने घोड़े सरपट दौड़ा दिए और ये वाक़ेया देखकर हैरान रह गए।

जब पतरस ने देखा के मुजाहेदीन इस्लाम उसके तआक्क़ुब में आ पहुँचे तो उसने भागकर जान बचाना चाही और ख़बासत तबअे से मुसलमानों पर अहसान रखना चाहा बोला के ऐ मुसलमानो! लो जाओ मैं तुम को तुम्हारी माँयें बहनें बेटियाँ वापस करता हूँ, हज़रत ज़रार ने तआक़्क़ुब किया और मामूली तआक़्क़ुब के बाद जा लिया और एक भरपुर हमला किया, जिसकी वो ताब ना लाकर फौरन व असल जहन्नन हुआ और तमाम लश्करी गिरफ़्तार

Scanned by CamScanner

कर लिए गए। मोर्रिख़ीन लिख़ते हैं के इस जंग में औरतों ने मुतअद्दिद ज़ख़्मी और कम व बेश तीस काफिरों को मौत के घाट उतारा। (तारीख़ इस्लाम)

सबक़:- मुसलमान मर्द तो मर्द, औरतें भी जज़्बा-ए-जिहाद से मामूर थीं। और कुफ्र की यलग़ार जब सर पर आ पहुँचे तो इज़्ज़त व नामूस और दीन के बचाओ के लिए मुसलमान औरतें भी काफिरों को शिकस्त दे देती हैं। जिस क़ौम के बुज़ुर्गों में ऐसी मुजाहेदात औरतें मौजूद हों जिनके हाथों में दुश्मन के मुक़ाबले के लिए चोबें पकड़ी हों। आज अगर इस क़ौम के मर्दों के हाथों में टेनिस और हाकी हों या कंकूवे दौड़ या बटैर नज़र आए तो किस क़द्र अफसोस का मुक़ाम है आह...

था जिसे क़ुरआन पढ़ना गाने गाता है वो आज
और हॉकी खेलता है अब धनी तलवार का

हिकायत नम्बर(216) मुजाहिदा माँ

हज़रत खनसा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा मशहूर शायरा हैं आप अपनी क़ौम के चन्द आदमियों के साथ मदीना मुनव्वरह आकर मुसलमान हुईं थीं। हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के ज़माने में जंग क़ादसिया में ये अपने चार बेटों समेत शरीक हुईं लड़कों को एक दिन पहले बहुत नसीहत की, और जिहाद में शिरकत के लिए उभारा कहने लगीं: मेरे बेटो! तुम अपनी खुशी से मुसलमान हुए हो, और अपनी ही खुशी से तुम ने हिजरत की! इस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। तुम एक माँ एक ही बाप के बेटे हो। मैंने तुम्हारे बाप से ख़्यानत की ना तुम्हारी शराफत में कोई धब्बा लगाया है। ना तुम्हारे नसब को मैंने खराब किया तुम्हें मालूम है के अल्लाह तआला ने मुजाहिदों के लिए क्या सवाब रखा हैं तुम्हें ये भी याद रखना चाहिए के आख़िरत की बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी दुनिया की फना हो जाने वाली ज़िन्दगी से बेहतर है। अल्लाह का इरशाद है।

याअय्योहल लज़ीना आमनूसबिरू व साबिरू व राबितू वत्तकुल्लाह लअल्लाकुम तुफलीहून

ऐ ईमान वालो! सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर के कामयाब रहो, (कंज़-उल-ईमान)

लिहाज़ा कल सुबह को जब तुम सही व सालिम उठो तो बहुत होशियारी

Scanned by CamScanner

से लड़ाई में शरीक हो और दुश्मनों के मुक़ाबले में अल्लाह से मदद माँगते हुए बढ़ो और जब तुम देखो के लड़ाई ज़ोर पर आ गई है और उसके शौले भड़कने लगे तो उसकी गर्म आग में घुस जाना और काफिरों के सरदार का मुक़ाबला करना इंशाअल्लाह, जन्नत में इज़्ज़त व इक्राम के साथ रहोगे। चुनाँचे जब सुबह को लड़ाई ज़ोरों पर हुई तो हज़रत खनसा के चारों लड़कों में से एक एक नम्बरवार आगे बढ़ता था और अपनी माँ की नसीहत को अश्आर में पढ़कर उमंग पैदा करता था। और जब एक शहीद हो जाता था तो दूसरा बढ़ता था और शहीद होने तक लड़ता रहता था। बिलआख़िर चारों शहीद हो गए और जब माँ को उनके शहीद होने की ख़बर पहुँची तो उन्होंने कहा के अल्लाह का लश्कर है के जिसने उनकी शहादत से मुझे शरफ़ बख़्शा, मुझे अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है के उसकी रहमत के साय में उन चारों के साथ में भी रहूंगी। (असद-उल-ग़ाबा व हिकायत-उल-सहाबा सफ़ा 109)

सबक़: सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान की माँयें भी जज़्बा-ए-जिहाद से मामूर थीं। और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नज़रे रहमत से मुक़द्दस औरतें भी अल्लाह की राह में अपना सब कुछ कुर्बान कर देने वाली बन गईं, माँओं को अपनी औलाद से बड़ी मोहब्बत होती है। मगर हज़रत खनसा ने बताया के मुसलमान औरत के दिल में औलाद से भी बढ़कर अल्लाह और उसके रसूल की मोहब्बत होती है। और बता दिया के मुसलमान माँ की अपनी औलाद के मुतअल्लिक़ ये ख़्वाहिश होती है के मेरी औलाद इबादत और शहादत की अलमबरदार हो। इसीलिए एक शायर ने उन मुक़द्दस माँओं के मुतअल्लिक़ लिखा है के

वो माँयें पैदा करती थीं नमाज़ी
धनी तलवार के मैदान के ग़ाज़ी
वो माँयें जब के लेती थीं बलायें
दिया करती थीं बेटों को दुआयें
इबादत में कटे बेटा जवानी
शहादत पर हो आख़िर ज़िन्दगानी

हिकायत नम्बर(217) हुज़ूर(स०अ०स०) की फूफी

हुज़ूर सल-लल्लाहो ताअला अलेह व सल्लम की फूफी और हज़रत हमज़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की हकीकी बहन हज़रत सफ़ीया

Scanned by CamScanner

रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा की तक़रीबन साठ साल की उमर शरीफ थी। जब के ग़ज़वा-ए-ख़ंदक के मौक़े पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सब मसतूरात को एक क़िले में बन्द फ़रमा दिया था। और हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को बतौर मुहाफिज़ उनमें मुक़र्रर फ़रमा दिया था। यहूदियों ने इस मौक़े को ग़नीमत जाना के हुज़ूर तो सहाबा समेत मदीना मुनव्वरह से बाहर तशरीफ़ फ़रमा हैं और औरतें क़िले में तनहा हैं इस ख़याल से यहूदियों की एक जमाअत ने औरतों पर हमला कर इरादा किया और एक यहूदी हालात मालूम करने के लिए क़िले पर पहुँचा। हज़रत सफीया ने कहीं से देख लिया और हज़रत हस्सान से कहा के ये यहूदी मौक़ा देखने के लिए आया है तो क़िले से बाहर निकलो और इस मारो, हज़रत हस्सान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ज़ईफ थे। ज़ौफ की वजह से निकल ना सके तो हज़रत सफीया ने खेमे का एक खूंटा अपने हाथ में लिया और खुद निकल कर उस यहूदी का सर कुचल दिया फिर क़िले में आकर हज़रत हस्सान से कहा के चूंके वो यहूदी मर्द था और ना महरम होने की वजह से मैंने उसका सामान और कपड़े नहीं उतारे। तुम जाओ और उसके कपड़े उतार लाओ और सर भी काट लाओ। हज़रत हस्सान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने ज़ौफ की वजह से हिम्मत ना फ़रमा सके तो दोबारा तशरीफ़ ले गईं और उसका सर काट लीं और दीवार पर से सर को यहूदियों के मजमअे में फैंक दिया। यहूदियों ने अपने मुख़बिर का सर कटा हुआ देखा तो सहम गए। और कहने लगे के हम ने ग़लत समझा है। मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम औरतों को बिलकुल तनहा नहीं छोड़ गए। ज़रूर उनके मुहाफिज़ बहुत से मर्द भी अन्दर मौजूद हैं। (कुंज़-उल-अमाल सफ़ा 278 जिल्द 5)

सबक़:- मुसलमान औरत का दीन और नामूस जब ख़तरे में हो तो मुसलमान औरत भी मुक़ाबला कुफ्र में *अशिद्दा अललकुफ़्फारी* की तफसीर बन जाती है।

हिकायत नम्बर(218) सिद्दीक़े अक्बर(र०अ०) की बेटियाँ

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जिस रात हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मईयत में हिजरत फ़रमा कर तशरीफ़ ले चले तो इस ख़याल से ना मालूम रास्ते में क्या ज़रूरत

Scanned by CamScanner

दरपेश हो। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम भी साथ हैं इसलिए जो कुछ भी माल आपके पास मौजूद था। जिसकी मिक़्दार पाँच हज़ार दरहम थी। वो सब साथ ले लिया। हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी तआला अन्ह के वालिद अबु क़हाफा नाबीना हो गए थे और उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे। उन्हें जब पता चला के अबु बक्र रात को मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ मक्के से चला गया है और माल भी सारा साथ ले गया है तो पोतियों के पास तसल्ली के लिए आए और कहने लगे के मेरी बेटियो! अबु बक्र ने बड़ा सितम किया के खुद भी चला गया और माल भी सारा ले गया। हज़रत असमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा उठीं और छोटी छोटी कंकरियाँ एक थेली में भर कर बोलीं: दादा जान! आप फिक्र ना कीजिए, ये देखिए सारा माल तो वो छोड़ गए हैं। ये कहकर कंकरों से पुर थेली आगे कर दी। अबु क़हाफा ने उसे अबु क़हाफा ने उसे टटोला तो समझे के इस थेली में दरहम भरे हैं। और मुतमईन हो गए और बोले! चलो अच्छा हुआ के माल वो नहीं ले गया। (मसनद इमाम अहमद सफ़ा 350 जिल्द 5)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान की बच्चियों में भी खुदा और रसूल की मोहब्बत कूट कूट कर भरी हुई थी और खुदा और रसूल के मुक़ाबले में वो माल दुनिया की कुछ परवाह ना करती थीं।

हिकायत नम्बर(219) हज़रत मआविज़ की बेटी

हज़रत मआविज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अबु जहल के क़त्ल करने वालों में से एक थे। आपकी बेटी हज़रत रबीअ् के घर एक रोज़ एक इत्र फ़रोश औरत आई और बातों ही बातों में उसे मालूम हुआ के ये घर क़ातिल अबु जहल हज़रत मआविज़ की बेटी का घर है ये मालूम होने के बाद इत्र फ़रोश औरत जो मुसलमान ना थी हज़रत रबीअ् को मुख़ातिब करके बोली तो उसकी बेटी है जिसने अपने सरदार को क़त्ल किया। ये सुनकर हज़रत रबीअ् को ग़ुस्सा आ गया और बोलीं। मैं उसकी बेटी हूँ। जिसने अपने ग़ुलाम को क़त्ल किया। इत्र फ़रोश औरत को भी ये बात सुन कर ग़ुस्सा आया और बोली: तुम ने एक सरदार को ग़ुलाम कहा। इसलिए मुझ पर हराम है के तेरे हाथ इत्र फ़रोख़्त करूं। हज़रत रबीअ् ने फ़रमाया और तूने एक ग़ुलाम को सरदार कहा। मुझ पर भी हराम है के मैं तुझ से इत्र खरीदूं मैंने तेरे इत्र के सिवा किसी चीज़ में गंदगी और बदबू नहीं देखी। (असद-उल-ग़ाबा और

Scanned by CamScanner

हिकायत-उल-सहाबा सफ़ा 117)

सबक़:- सहाबा इक्राम और सहाबियात रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन में इस क़द्र दीनी ग़ैरत थी के एक दुश्मन दीन के मुतअल्लिक़ वो लफ़्ज़ "सरदार" तक ना सुन सकते थे और आज कल दीन के बड़े बड़े दुश्मनों पर इससे भी ज़्यादा ऊँचे लफ़्ज़ बोले जाते हैं

वाए नाकामी मुसलमानों में ग़ैरत ना रही
पास मज़हब ना रहा और दीन से उल्फत ना रही

हिकायत नम्बर(220) ग़ाज़ी व नमाज़ी

मुसलमानों का लश्कर जब मिस्र फतह कर रहा था, एक दिन क़ब्तियों के बादशाह ने अपने लश्कर के सरदारों से कहा के मैंने सुना है ये मुसलमान लोग जुमअे के दिन की बड़ी तअज़ीम करते हैं और जुमअे की नमाज़ बड़े एहतिमाम से पढ़ते हैं। पस जुमअे का दिन क़रीब है तुम अपनी फौजों को हुक्म दो के चार हज़ार जवान मुसल्लह होकर पहाड़ की आड़ में छुप जाएँ। जिस वक़्त मुसलमान जुमअे की नमाज़ पढ़ने खड़े हों वो फौज उन पर हमला करे। इस हुक्म को सुनकर सरदारों ने चार हज़ारों फौज को एक पहाड़ के पीछे छुपा कर चन्द मुख्बिर लगा दिए के जिस वक़्त ये लोग नमाज़ के सज्दे में जायें तू फौरन हमें ख़बर करना। जब सहाबा इक्राम जुमअे की नमाज़ पढ़ने खड़े हुए। मुख्बिरों ने ख़बर दी के अरब लोग रूकू से फारिग़ होकर सज्दे में गए हैं। काफिर तलवारें लेकर आन पड़े। सेंकड़ों मुसलमानों को सज्दे के अन्दर शहीद कर दिया और हज़ारों को ज़ख़्मी कर दिया लेकिन अल्लाहो अक्बर, क्या इश्क़े इलाही था। तलवार से कट रहे थे। मगर इसी इतमीनान से जुमआ पढ़ रहे हैं। हुज़ूरी-ए-क़ल्ब में कुछ भी फर्क नहीं पड़ता। उसी खुशू व खुज़ू के साथ दूसरी रकअत पूरी की नमाज़ का सलाम फैरा। फौरन अल्लाहो अक्बर, अल्लाहो अक्बर की आवाज़ बुलंद हुई चारों तरफ़ से क़ुत्बी फौजों को घेर लिया और आन की आन में सब को क़त्ल कर दिया। चार हज़ार फौज दुश्मन की थी। एक भी ज़िन्दा ना बचा। सबको वहीं क़त्ल कर दिया। (मग़ाज़ी इब्ने इसहाक़, 216)

सबक़:- मुसलमान नमाज़ी भी होता है और ग़ाज़ी भी। आबिद भी और मुजाहिद भी। आज कल बाज़ लोगों को अगर नमाज़ पढ़ने के लिए कहा जाए तो वो जवाब ये देते हैं के साहब! हम ग़ाज़ी हैं ग़ाज़ी! गोया जो ग़ाज़ी होता है वो बे नमाज़ी होता है। हालाँके ये बात ग़लत है। देख लीजिए।

Scanned by CamScanner

उन सहाबा इक्राम ने मैदाने जिहाद में भी जुमअे की नमाज़ तर्क ना फ़रमाई और साबित कर दिया के मुसलमान नमाज़ी भी है और ग़ाज़ी भी और इसी वास्ते इक़बाल ने भी लिखा है के ...

आ गया ऐन लड़ाई में अगर वक़्ते नमाज़!
क़िबला रू होके ज़मीं बोस हुई क़ौमे हिजाज़

ऐसे हज़रात को कम अज़ कम इक़बाल ही का शेअर पढ़ लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर(221) नोजवान दूलहा

जंगे ओहद के अय्याम में हनज़ला बिन अबी आमिर रज़ी अल्लाहो अन्ह की शादी हुई थी जिस रात आप अपनी दुलहन को बियाह कर लाए थे। उसी रात हुज़ूर सल-लल्लाहो ताअला अलेहव सल्लम की तरफ़ से मनादी हो गई के कुफ़्फ़ारे मक्का मदीना मुनव्वरह पर हमला करने वाले हैं। उनके मुक़ाबले के लिए मैदाने जिहाद में चलो। हज़रत हनज़ला रज़ी अल्लाहो अन्ह बावजूद यके नोजवान थे और शादी की पहली शब थी। मगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तरफ़ से ऐलाने जिहाद सुनकर सब कुछ भूल गए और अपनी दुलहन को भी नज़रअंदाज़ करके गोया शेअर पढ़ते हुए के...

सबसे बेगाना रहे यार शनासा तेरा
हूर पर आँख ना डाले कभी शैदा तेरा

मैदाने जिहाद में चलने के लिए उठ खड़े हुए और इस महवीयत के आलम में आपको अपने ग़ुस्ल करने की ज़रूरत भी याद ना रही। उसी हालत में मारका-ए-जंग में तशरीफ़ ले गए और उसी दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सामने शहीद भी हो गए। जब लड़ाई ख़त्म हुई तो शोहदा की लाशें जमा करने का हुक्म नबव्वी हुआ। सब लाशें मिल गईं। मगर हज़रत हनज़ला की लाश मुबारक ना मिली यक़ायक हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने आसमान की तरफ़ निगाह उठा कर मुलाहेज़ा फ़रमाया तो आपने देखा के हज़रत हनज़ला की लाश फरिश्ते ऊपर ले जाकर एक नूरानी तख़्ते पर लिटा कर आब रहमत से ग़ुस्ल दे रहे हैं। उसी दिन से आपका लक़ब ग़ुसील-उल-मलायका हुआ। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 94, जिल्द 1, व अहसन-उल-वाज़ , सफ़ा 22)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इर्शाद पर दुनिया की हर चीज़

Scanned by CamScanner

को क़ुर्बान कर दिया था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बढ़कर उन्हें कोई चीज़ अज़ीज़ ना थी और वो अल्लाह की राह में क़ुर्बान होने के लिए हर वक़्त तैयार रहते थे और अल्लाह तआला को भी सहाबा इक्राम से बड़ा प्यार था। और फरिश्ते भी सहाबा इक्राम के ख़ादिम थे। फिर जो शख़्स ऐसे पाकबाज़ और जाँनिसाराने इस्लाम नफूस क़ुदसिया से बैर व अदावत रखे, किस क़द्र गुमराह है और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की निगाह आली ऐसी चीज़ों को भी देख लेती है जिन चीज़ों को दूसरी आँखें नहीं देख सकतीं।

हिकायत नम्बर(222) शौक़े शहादत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ग़ज़वा-ए-ओहद में हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी अल्लाहो अन्ह से कहा के ऐ सअद! आओ मिलकर दुआ करें। हर शख़्स अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ दुआ करे और दूसरा आमीन कहे। फिर दोनों हज़रात ने एक कोने में जाकर दुआ की। अव्वल हज़रत सअद ने दुआ की या अल्लाह जब कल लड़ाई हो तो मेरे मुक़ाबले में एक बड़े बहादुर को मुक़र्रर फ़रमा ताके मैं उसको तेरे रास्ते में क़त्ल करूं। हज़रत अब्दुल्लाह ने दुआ की। ऐ अल्लाह! कल मैदाने जिहाद में एक बहादुर से मुक़ाबला करूं, जो सख़्त हमला वाला हो। मैं उस पर शिद्दत से हमला करूं। वो भी मुझ पर ज़ोर से हमला करे और मैं बहुत सों को क़त्ल करके फिर खुद भी शहीद हो जाऊँ और शहीद होने के बाद काफिर मेरे नाक कान काट लें। फिर क़यामत में जब तेरे हुज़ूर पेश हों तो तू कहे के अब्दुल्लाह तेरे नाक कान क्यों काटे गए हैं तो मैं अर्ज़ करूं। या अल्लाह, तेरे और तेरे रसूल के रास्ते में काटे गए, फिर तू कहेगा के सच है, मेरे ही रास्ते में काटे गए। हज़रत सअद ने आमीन कही। दूसरे दिन लड़ाई हुई तो दोनों हज़रात की दुआएँ उसी तरह क़बूल हुईं। जिस तरह माँगी थीं। (ख़मीस व हिकायात , सफ़ा 67)

सबक़:- सहाबा इक्राम अल्लाह की राह में क़ुर्बान हो जाने का सच्चा जज़्बा रखते थे और अल्लाह और उसके रसूल की ख़ातिर उन पाक लोगों ने अपनी जानें क़ुर्बान करके बता दिया के सच्चा मुसलमान अल्लाह और उसके रसूल की राह में जान दे देने की तड़प रखता है और मालूम हुआ के सहाबा की दुआएँ किसी दुनयावी जाह व हशमत एहदो हकूमत के लिए नहीं, बल्के शहादत के लिए होती थीं और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम

Scanned by CamScanner

आयत *यक़तुलूना व यक़तुलूना* की तफसीर थे। यानी अल्लाह की राह में मारते थे और मरते थे। सिर्फ मरना व पिटना कोई कमाल नहीं। अल्लाह की रात में मारना और फिर बच कर ग़ाज़ी बन जाना या मर कर शहीद हो जाना ये कमाल है। ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन में एक जानिब कमाल बहादुरी भी थी के बहादुर दुश्मन से मुक़ाबले की दुआ किया करते थे और दूसरी जानिब कमाले इश्क़ भी था के महबूब के रास्ते में बदन के टुकड़े टुकड़े होने की तमन्ना रखते थे ताके महबूब जब पूछे के ऐसा क्यों हुआ तो वो कहें। तुम्हारे लिए...

रहेगा कोई तो तीग़ सितम के यादगारों में!
मिरे लाशे के टुकड़े दफ़्न करना सौ मज़ारों में

फिर अगर कोई शख़्स ऐसे जाँनिसाराने इस्लाम और आशिक़ाने रसूल अनाम अलेह अस्सलाम के दीन व ईमान पर शुबह करके तो इस बदबख़्त ने अपने दीन व ईमान के टुकड़े किए या नहीं?

हिकायत नम्बर(223) हबीब बिन ज़ैद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

मुसीलमा कज़्ज़ाब ने जो अपनी नबुव्वत का मुद्दई था। अपने वतन यमामा से एक ख़त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के नाम लिखा जो ये है।

मिन मुसीलमात रसूलिल्लाही इला मोहम्मदिन रसूलिल्लाही अम्मा बअदू फइन्ना लना निस्फलअर्ज़ी वलीकुरैशी निस्फन वला किन्नल कुरैशा ला युनसिफूना वस्सलामू अलेका।

खुदा के रसूल मुसीलमा की तरफ़ से खुदा के रसूल मोहम्मद (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) की तरफ़ वाज़ह हो के आधी ज़मीन हमारी और आधी कुरैश की है, लेकिन कुरैश इंसाफ नहीं करते। और सलाम हो आप पर"

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फौरन उस ख़त का जवाब लिखवाया। जो ये है:

बिस्मिल्लाहीर्रहमानिर्रहीम। मिन मोहम्मदिन्नबी इला मुसीलमातल कज़्ज़ाबी अम्मा बअदू फइन्नल अर्ज़ा लिल्लाही यूरीसूहा मंयशाऊ वलआकिबत लिलमत्ताकीन वस्सलाम् अला मिनत्तबाअल हुदा

Scanned by CamScanner

अल्लाह के नाम से जो कमाल मेहरबान और रहम वाला है। मोहम्मद खुदा के नबी की तरफ़ से बहुत बड़े झूटे मुसीलमा की तरफ़। वाज़ेह हो के ज़मीन खुदा की है वो अपने बन्दों में जिसे चाहे वारिस बनाता है और अंजाम नेक लोगों के लिए है सलाम हो उस पर जो सीधी राह चले।"

ये मक़्तूब ग्रामी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत हबीब बिन ज़ैद रज़ी अल्लाहो अन्ह को देकर यमामा रवाना फ़रमाया। हज़रत हबीब ये ग्रामी नामा लेकर मुसीलमा के दरबार में पहुँचे और आपका ख़त पेश किया। मुसीलमा ये ख़त पढ़कर जल भुन गया और ग़ुस्से में बोला। *अतशहद अन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाही* क्या तुम इस बात की गवाही देते हो के मैं भी अल्लाह का रसूल हैं। हज़रत हबीब ने फ़रमाया, हाँ हाँ बेशक वो अल्लाह के सच्चे रसूल हैं मुसीलमा ने फिर पूछा अतशहद *इन्नी मोहम्मदन रसूल अल्लाह* क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि मैं भी अल्लाह का रसूल हूँ हज़रत हबीब ने फ़रमाया *इन्नी असम्मू ला असमअ्* मैं इस कलाम के सुनने से बेहरा और ये गवाही देने से गूंगा हूँ। मुसीलमा ने एक दो मरतबा फिर पूछा और आपने हर बार यही जवाब दिया। तो उस मरदूद ने हज़रत हबीब के सर से पाँऊ तक के कुल आज़ा अलग कर दिए और आप शहीद हो गए। (असाबा फी तमीज़-उल-सहाबा, सफ़ा 328)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वान-उल्लाही अजमईन *इन्नल लज़ीना क़ालू रब्बुनल्लाहा सुम्मसतक़ामू* की सच्ची तफसीर थे और उनके पाऐ इसतक़लाल में दुनिया की कोई ताक़त लग़ज़िश ना ला सकी, और उन्होंने इश्के रसूल की राह में ये साबित करके दिखा दिया के....

सिराते इश्क़ पर अज़ बसके है क़दम मेरा!
दम शमशीर क़ातिल पर भी खूं जाता है जम मेरा!

और उन लोगों ने अपने रसूल (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) से मोहब्बत करने का जो हक़ था वो अदा करके दिखा दिया और मुसलमानों को ये दर्स दे दिया के मुसलमानों! अपने रसूल (सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम) की मोहब्बत व उल्फत को हर हाल में सामने रखो ओर अपना विर्द यही रखो के या रसूल अल्लाह!...

मौत आ जाए मगर आए ना दिल को आराम
दम निकल जाए मगर निकले ना उल्फत तेरी

और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बाद जो नबुव्वत का मुद्दई है वो बहुत बड़ा झूटा है और ऐसे शख़्स के

Scanned by CamScanner

हाथों मुसलमानों को नुक़सान ही पहुँचता है और ये भी मालूम हुआ के मुसीलमा कज़्ज़ाब अगरचै हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम को भी अल्लाह का रसूल मानता था, लेकिन फिर भी वो झूटा ही था। इसी तरह और कोई मुद्दई नबुव्वत भी अगरचै हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को भी मानता हो मगर वो फिर भी झूटा ही होगा और ये भी मालूम हुआ के मुसीलमा कज़्ज़ाब अस्सलाम अलेकुम भी कहता था। मगर बावजूद इसके वो फिर भी झूटा ही था। इसी तरह आज भी अगर कोई हमें अस्सलाम अलेकुम कहे तो ज़रूरी नहीं के वो सच्चा ही हो।

हिकायत नम्बर(224) मुजस्समा-ए-ईसार

हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के अहदे ख़िलाफत में जब उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने मुल्क मिस्र पर चढ़ाई की, तो इसाई लश्कर के सिपह सालार जरजीस ने तमाम इसाई मुमालिक से फौज जमा की और टिड्डी दल लश्कर मुसलमानों के मुक़ाबले में ले आया और इन्तिहाई कोशिश से सिपाहियों को जोश दिला दिला कर हमले पर हमले करता रहा लेकिन इस्लामी मुजाहेदीन की आहिनी दीवार सद सिकंद्री की तरह ना क़ाबिल उबूर ही साबित हुई।

जरजीस को जब कामयाबी के आसार नज़र ना आए तो उसने अपनी फौज में एलान कर दिया के जो शख़्स सिपह सालारे इस्लाम का सर काट कर लाएगा। उसको ग्राँक़द्र इनाम के अलावा मैं अपनी खूबसूरत और शेर दिल लड़की भी दे दूंगा। इस एलान से हवस परस्तों में जोश पैदा हुआ और जरजीस की लड़की हासिल करने की ख़ातिर हर इसाई सिपह सालारे इस्लाम हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह का सर क़लम करने की कोशिश करने लगा। इसका नतीजा ये हुआ के हज़रत उमरो बिन आस को अपनी हिफाज़त का ख़ास तौर पर इन्तिज़ाम करना पड़ा और जब इसकी इत्तिला बारगाहे ख़िलाफत में भेजी गई तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो अन्ह हिमायती फौज के सिपह सालार बन कर इन्तिहाई सरअत के साथ आ पहुँचे और सबसे पहले हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो के पास पहुँचे और कहा तअज्जुब है के आप जैसे मर्द मैदाने सियासत और मुदब्बिर को अपने बचाओ की कोई तदबीर ना सूझी। उसका इलाज तो बहुत आसान है। कल ही इस्लामी फौज में एलान कर दिया जाए के जो शख़्स जरजीस का सर क़लम कर के लाएगा उसको ग्राँक़द्र इनाम के अलावा जरजीस की परी पैकर लड़की

Scanned by CamScanner

भी नज़्र की जाएगी। हज़रत उमरो बिन आस इस राय से बहुत खुश हुए और ये एलान कर दिया गया। अब जो मैदान जंग में दोनों फौजें सफ आरा हुईं तो आगाज़े जंग का इशारा पाते ही मुसलमानों ने ऐसे जोश व खरोश से हमले किए के इसाईयों के छक्के छूट गए और मुसलमान मुजाहेदीन दुश्मनों को काट काट कर रास्ता साफ करते हुए जरजीस की तरफ़ बढ़ने लगे। जरजीस की लड़की भी अपने बाप के दोश ब दोश मुक़ाबले पर तुली हुई थी। लेकिन तक़दीर ने पांसा जो पलटा तो जरजीस एक ग़ाज़ी के वार से क़त्ल हो गया और उसका एलान होते ही इसाईयों के पाँऊ उखड़ने लगे। सारा जोश व खरोश काफूर हो गया। भागना चाहा, मगर बे सूद सेंकड़ों गिरफ़्तार हुए, और उन क़ैदियों में जरजीस की लड़की भी यावा ज़ंजीर हो गई।

जश्न फतह में हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने मुजाहेदीन की तारीफ की और फ़रमाया: मैं जरजीस का सर क़लम करने वाले मुजाहेद भाई से दरख़्वास्त करता हूँ के वो अपने आपको ज़ाहिर करे ताके हस्बे वादा इनाम से सरफ़राज़ किया जाए। इस एलान के बाद कुछ देर इन्तिज़ार किया गया। मगर किसी ने आगे बढ़ कर अपना नाम पेश ना किया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने बकमाल मुतानत फ़रमाया के कोई मुजाहिद भाई अपने आपको ज़ाहिर करने पर आमादा नहीं होता इसलिए बेहतर है के जरजीस की लड़की सिपह सालारे इस्लाम खुद क़बूल फ़रमा लें।

हज़रत उमरो बिन आस अफसोस के मैं भाई अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर का मशवरा क़बूल नहीं कर सकता। मैं इस जाँबाज़ मुजाहिद की हक़ तलफी जिसने ये मैदान सर किया है, नहीं करना चाहता। अगर मेरा क़यास ग़लत नहीं तो मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ और मेरा दिल गवाही दे रहा है के इस मुबारक इक़्दाम का सहरा अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के सर होना चाहिए।

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर आपने जो कुछ फ़रमाया मैं उसका शुक्र अदा करता हूँ, लेकिन इस मैदान का सर करने वाला अभी तक तो आगे बढ़ा नहीं।

मुजाहेदीन: भाई अब्दुल्लाह! बस अब इज़हारे हक़ीक़त में ताम्मुल ना कीजिए। आपको बे तहाशा जरजीस की तरफ़ बढ़ते हम सबने देखा है बल्के हम को अंदेशा था के कहीं दुश्मनों में घिर कर आप शहीद ना हो जाएँ। क्यों जनाब! जरजीस का क़ातिल आपके सिवा दूसरा कौन है!

हज़रत अब्दुल्लाह: अल्लाह तआला खूब जानता है के शौहरत व अनाम के लालच में नहीं बल्के अपना फर्ज़ समझ कर मैंने ये ख़िदमत अंजाम दी

Scanned by CamScanner

है। अगर सब बुज़ुर्गों की यही ख़्वाहिश है तो मैं अपना सर तसलीम ख़म करता हूँ। चुनाँचे जरजीस की लड़की का आईने इस्लामी के मुताबिक़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो अन्ह से उक़्द कर दिया गया और मुजाहेदीन ने जोश मुसर्रत में दोगाना अदा किया और बारगाहे ख़िलाफत में इस अज़ीम कारनामे की इत्तिला दे दी गई। (तारीख इस्लाम, सफ़ा 224)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान तदबीर व सियासत में भी बड़े माहिर थे और दुश्मन की सियासी चाल को खूब समझ लेते थे और मालूम हुआ के मुसलमानों की लड़ाई महेज़ आला कलमत-उल-हक़ के लिए होती है। वो शौहरत व इनाम के लालच में नहीं लड़ते और माले ग़नीमत जो कुछ भी हासिल हो वो मुसलमानों का मक़्सूदे असली नहीं होता। मक़्सूदे असली रज़ाऐ हक़ ही होता है। जिस तरह गंदम बोने वाले का मक़्सूदे असली तो दाना गंदम ही होता है लेकिन उसके साथ साथ परालो व भूसा भी उसे हासिल हो जाते हैं। इस तरह मुसलमान का मक़्सूद असली तो रज़ाऐ हक़ ही होता है। लेकिन उसके साथ साथ माले ग़नीमत भी उसे हासिल हो जाता है और जिस तरह कोई दाना शख़्स गंदम इसलिए नहीं बोता ताके उसे परालो व भूसा मिल जाए। इसी तरह कोई मुसलमान सिर्फ इसलिए जंग नहीं करता के उसे कोई दुनयवी मनफअत हासिल हो जाए। दुनयवी मनफअत तो एक भूसा है जो खुद ब खुद ही हासिल हो जाता है।

हिकायत नम्बर(225) तमाँचे की हिकमत

जंग इसकंद्रिया में रोमी एक क़िले में बंद थे। और मुसलमानों ने इस क़िले का मुहासरा कर रखा था। एक रोज़ रोमी मैदान में निकले और सिपह सालार हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह चन्द सवार लेकर उनके मुक़ाबिल हुए लड़ाई घमसान की हुई। मुसलमान रोमियों को दबाते हुए बराबर क़िले की तरफ़ चले गए और रोमियों के हमराह क़िले के अन्दर दाख़िल हो गए। हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह हर एक लड़ाई में सब से आगे हुआ करते थे। इस मौक़े पर भी वो सब से आगे थे। रोमियों ने मुसलमानों को दरवाज़े में देखा तो सख़्त घबराए और चार इत्राफ से सिपाहियों के ग़ल के दल दरवाज़े पर अपने हमराहियों की पुश्त पर आ गए और फिर क़िले का दरवाज़ा एक दम बन्द कर लिया। इस असना में उमरो बिन आस मअे मुस्लिमा बिन मख़्ला और अपने ग़ुलाम दरदान के क़िले के अन्दर ही रह गए रोमी उनको गिरफ़्तार करके अपने आला अफ़्सर के पास

Scanned by CamScanner

ले गए। रोमी अफ़्सर ने उन क़ैदियों को मामूली सिपाही समझा। क्योंके हज़रत उमरो बिन आस ने कोई जरनैली वर्दी ना पहनी हुई थी बल्के उनका लिबास बिलकुल अपने हमराही और ग़ुलाम का सा सादा था। इसलिए रोमी अफ़्सर ने बड़ी हिक़ारत से उन्हें मुख़ातिब करके कहा। तुम भूके नंगे और जाहिल अरबों ने इन मुमालिक में फितना बर्पा कर रखा है। हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने निहायत बेबाकाना तौर पर जवाब दिया के हम फितना फ़ैलाने नहीं आए। बल्के हम इन अक़्वाम को क़अेर पस्ती से निकाल कर तरक़्क़ी व खुशहाली के बाम पर पहुँचाने आए हैं। हम इस्लामी बरकतें साथ लाए हैं जो हम हर एक क़ौम के सामने पेश करते हैं। अगर तुम इस लाज़्वाल दौलत से महरूम रहना चाहते हो तो हम तुम को अपनी हिफाज़त में लेकर मुल्क को दार-उल-अमान बना देंगे।

रोमी अफ़्सर ये दिलैराना जवाब सुनकर अपने मातहतों को रोमी ज़बान में कहने लगा के ये शख़्स अरबी लश्कर का सरदार मालूम होता है। बेहतर है के हम इसको क़त्ल कर दें ताके मुसलमान सिपाहियों में हमारी दहशत बैठ जाए। उमरो बिन आस का ग़ुलाम वरदान रोमी ज़बान समझता था। उसने अपने आक़ा को ख़तरे में देख कर उमरो बिन आस के मुंह पर ज़ोर से एक तमाँचा मारा और कहा, बेअदब, गुस्ताख़ किसने तुझ को इख़्तियार दिया है के अहले अरब की तरफ़ से ऐसे कलमात अफ़्सरों और हाकिमों के सामने कहे। चुप रहो। ये तुम्हारा काम नहीं। उमरो बिन आस ख़ामोश हो गए और मुस्लिमा ने कहा। बेशक हमें ऐसी कोई बात कहने का हक़ नहीं अगर आप अपने चन्द अफ़्सर अहले अरब के अफ़्सरों के पास भेजें तो मुमकिन है के वो सब मिलकर ऐसी शरायत बाहम तय कर लें जिन पर हम मैं और आप में सुलह हो जाए क्योंके हमें अच्छी तरह मालूम है के अरब सरदार जंग की बनिसबत सुलह को ज़्यादा पसंद करते हैं। रोमी अफ़्सर जो अहले अरब के शिद्दत मुहासरे से तंग आ चुका था। इस बात से बहुत खुश हुआ और कहा, अच्छा हम तुम्हें छोड़ देते हैं तुम जाकर अपने अफ़्सरों को कहो के वो सुलह करना चाहें तो हम बिलकुल तैयार हैं। मुस्लिमा ने रोमी अफ़्सर का शुक्रिया अदा किया और रोमी सिपाही उन्हें क़िले के बाहर छोड़ आए। इधर इस्लामी लश्कर में हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह और मुस्लिमा की गिरफ़्तारी के बाइस बड़ी परेशानी थी मगर जूंही उन्होंने अपने सरदार को सही सालिम वापस आते देखा तो मारे खुशी के अल्लाह अक्बर के नारे से आसमान सर उठा लिया। रोमियों के कानों में ये खुशी की आवाज़ पड़ी तो

Scanned by CamScanner

वो सख़्त परेशान हुए और इस तमाँचे की हिकमत जो ग़ुलाम ने आक़ा के मुंह पर मारा था। अब समझे। (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 225)

सबक़:- मुश्किल के वक़्त मुसलमान के औसान ख़ता नहीं होते और कमाल तदब्बुर और दूर अंदेशी से काम लेकर मुश्किल पर क़ाबू पा लेता है और मालूम हुआ के मुसलमान जाबिर से जाबिर हाकिम के सामने भी हक़ बात कहने से हर गिज़ नहीं चूकता और हक़ गो अफ़राद की अल्लाह तआला ज़रूर मदद फ़रमाता है। लिहाज़ा आज भी मुसलमानों को हक़ व सदाक़त का अलम्बरदार बन जाना चाहिए और किसी हाल में भी हक़ व सदाक़त का दामन हाथ से ना छोड़ना चाहिए और अल्लाह से डरना चाहिए और उसकी रज़ा पर ही राज़ी रहना चाहिए...

डरना है तो एक अल्लाह से डर
मरना है तो उसकी राह में मर!
रख उसकी रज़ा पर अपनी नज़र
फिर सारी ये दुनिया तेरी है

हिकायत नम्बर(226) सोने की गेंद

फातह मिस्र हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक मरतबा क़ुरैश के बाज़ लोगों के साथ बग़र्ज़ तिजारत बैत-उल-मुक़द्दस की जानिब गए। इत्तेफाक़ से उन्हीं दिनों इसकंद्रिया का एक रोमी राहिब ज़ियारत की ग़र्ज़ से वहाँ आया हुआ था। और बैत-उल-मुक़द्दस के गिर्द पहाड़ों में फिर रहा था। हज़रत उमरो बिन आस भी अपने साथियों समेत यहाँ अपने ऊँट चरा रहे थे वो रहिब उस वक़्त पहाड़ों में शिद्दते प्यास से जाँ बलब हो रहा था। उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अपने मशकीज़े से उसे पानी पिलाया। और वो अपनी प्यास बुझा कर एक दरख़्त के साये में सो गया। इसी असना में उसके क़रीब एक सूराख़ में से एक ज़हरीला साँप निकला और इस राहिब की तरफ़ चला। हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो ताआला अन्ह की इस पर नज़र पड़ गई और आपने तीर के निशाने से उसे हलाक कर दिया। थोड़ी देर के बाद राहिब जब बैदार हुआ तो वो अपने क़रीब मरा हुआ साँप देखकर बहुत घबराया और उमरो बिन आस से उसका हाल पूछा और तमाम वाक़ेया सुनकर उमरो बिन आस की पैशानी को चूमा और कहने लगा। तुम ने मेरी दो दफा जान बचाई है अब तुम बताओ के तुम कैसे आए?

उमरो बिन आस: तिजारत की ग़र्ज़ से।

Scanned by CamScanner

राहिबः तुम्हें इस दफा कितने नफे की उम्मीद है?

उमरो बिन आसः इतने नफे की के ऊँट खरीद सकूं।

राहिबः तुम्हारे मुल्क में इंसान की जान का बदला क्या है?

उमरो बिन आसः एक सौ ऊँट।

राहिबः हमारे हाँ ऊँट नहीं मगर रुपया बहुत है।

उमरो बिन आसः अगर ऊँट नहीं और रुपया बहुत है तो सौ ऊँटों की क़ीमत एक हज़ार दीनार होती है।

राहिबः तुम जानते हो के मैं मुसाफिर हूँ बग़र्ज़ तिजारत आया हूँ अगर तुम मेरे साथ मेरे वतन चलो तो मैं तुम को दो जानों का मुआवज़ा दूंगा।

उमरो बिन आसः तुम कहाँ के रहने वाले हो।

राहिबः मुल्क मिस्र में इसकंद्रिया नाम एक शहर है वही मेरा वतन है। तुम मेरे हमराह वहाँ चलो। मैं खुदा को गवाह करके कहता हूँ के मैं अपना वादा ज़रूर पूरा करूंगा और फिर बहिफाज़त तुम्हें तुम्हारे साथियों के पास पहुँचा दूंगा।

उमरो बिन आसः इसकंद्रिया आने और जाने में कितने दिन लगेंगे?

राहिबः दस दिन जाने के, दस दिन आने के और दस दिन वहाँ ठहरने के।

उमरो बिन आसः एक रफ़ीक़ के साथ राहिब के हमराह मिस्र की जानिब रवाना हो गए। मिस्र के इलाक़े में दाख़िल हुए तो वहाँ की चहल पहल और आबाद की कसरत और लोगों का तमव्वुल देख कर पुकार उठे के वाक़ई मैंने मिस्र जैसा खूबसूरत और मुतमव्वुल मुल्क कभी नहीं देखा। हज़रत उमरो बिन आस जिस दिन इसकंद्रिया पहुँचे। इत्तेफाक़न उस रोज़ वहाँ एक बहुत बड़ी ईद थी। जिसमें सरदार रऊसा और शुरफ़ा सब जमा हुआ करते थे और उसी दिन सोने का एक मरसअे गेंद उछाला जाता था और सब लोग उसे अपनी आसतीनों में लेना चाहते थे। क़दीम ज़माने से ये अक़ीदा चला आ रहा था के जिसकी आसतीन में वो गेंद चला जाए वो अपनी उमर में एक दफा मिस्र का बादशाह ज़रूर होगा।

इसकंद्रिया में पहुँच कर राहिब ने हज़रत उमरो बिन आस की बहुत ख़ातिर व मदारात की और निहायत क़ीमती कपड़े पहना कर उनको अपने साथ उसी ईद के जलसे में ले गया। जहाँ गेंद फैंका जा रहा था और वो लोग उसे अपनी आसतीनों में लेने की कोशिश कर रहे थे। इतने में गेंद फैंका गया और वो सीधा हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की आसतीन में दाख़िल हो गया। इस पर तमाम लोग हैरान रह गए। हज़रत उमरो

Scanned by CamScanner

बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह चन्द रोज़ वहाँ रहे। राहिब ने अपना वादा पूरा किया, और आप वापस चले आए। उस वक़्त से हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दिल में फतह मिस्र का ख़याल चुटकियाँ लेने लगा और हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के अहेदे ख़िलाफत में आपने मिस्र फतह किया और उसके फ़रमाँ रवा बने। (अख़बार-उल-मिस्र वअलकाहेरा सेवती, सफ़ा 370)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के दिलों में अल्लाह और उसके रसूल की मोहब्बत व उल्फत जागुज़ीं थीं। जिसकी बदौलत उनकी आसतीनों में सोने की गेंदें और उनके क़दमों में दुनिया की हकूमतें गिरने लगीं और खुदा तआला उन मोहम्मद अरबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के वफादारों के लिए ये एलान फ़रमाने लगा के...

की मोहम्मद से वफा तूने तो हम तेरे हैं
ये जहाँ चीज़ है क्या लोह व क़लम तेरे हैं

हिकायत नम्बर(227) रसूल की तलवार

जंगे ओहद में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने तलवार को हाथ में लेकर फ़रमाया। कौन है जो मेरी इस तलवार को ले और उसका हक़ अदा करे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम का ये एलान सुनकर सहाबा इक्राम आगे बढ़े और हर एक की ये तमन्ना थी के ये तलवार मुझे मिल जाए। मगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने किसी को ना दी। हत्ता हज़रत अबु दजाना रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जो बहुत बड़े पहलवान थे। आगे बढ़े तो हुज़ूर सल-लल्लाहो ताअला अलेह व सल्लम ने वो तलवार अबु दजाना रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को मरहेमत फ़रमाई। और फ़रमायाः अबु दजाना! इस तलवार का हक़ अदा करना। और इससे दुश्मन पर खूब वार करना। हज़रत अबु दजाना रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह रसूल सल-लल्लाहो ताअला अलेह व आलिही व सल्लम की तलवार पाकर बड़े खुश हुए और एक सुर्ख रंग का रूमाल सर पर बाँध कर और हाथ में वो तलवार लेकर अकड़ते हुए (जैसा के पहलवानों की आदत होती है) मैदाने जंग में निकले। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने उनकी ये चाल देखी तो फ़रमाया, ये चाल अल्लाह तआला को बड़ी नापसंद है। मगर उस वक़्त जब के अबू दजाना काफ़िरों के

Scanned by CamScanner

मुक़ाबले में अकड़ता हुआ जा रहा है। अबु दजाना रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ये चाल अल्लाह तआला को बड़ी पसंद है चुनाँचे अबु दजाना ने उस रसूल की तलवार से वो जोहर दिखाए के जो भी सामने आया। रसूल की तलवार से काट कर फीन्नार कर दिया। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 913, जिल्द 1)

सबक़:- तवक्बुर व गुरूर अल्लाह को बड़ा ना पसंद है मगर दुश्मन के मुक़ाबले में अकड़ना अल्लाह को पसंद है। गोया मुसलमान *अशिद्दाऊ अललकुफ़्फारी* के मुताबिक़ काफिर के सामने तो ज़रूर अकड़े लेकिन *रूहामाऊ बेनाहुम* के मुताबिक़ अपने भाईयों के साथ हमेशा तवाज़ै के साथ पेश आए ये नहीं के...

अपना आए सामने तो लड़ने को ठन जाईए
ग़ैर का हो सामना तो बस कुली बन जाईए

हिकायत नम्बर(228) ज़ात-उल-उयून

जंगे फारस में इस्लामी सिपह के मुक़दमत-उल-हबीश के सरदार हज़रत अक़रअ बिन हाबिस थे। ये ऐसे बहादुर और चुलबुली तबीयत के शख़्स थे के बग़ैर कुफ़्फार के साथ जिहाद के उनको चैन ना आता था। चुनाँचे उन्होंने जब दुश्मन से जंग जारी रखी, एक हज़ार तीर अंदाज़ों को आगे बढ़ाया और हुक्म दिया के दुश्मनों की आँखों का निशाना बाँध कर एक साथ तीरअंदाज़ी करें। चुनाँचे उन एक हज़ार तीर अंदाज़ मुजाहेदीन ने कमानों में तीर चढ़ाकर निशाने बाँध के एक हज़ार तीर ऐसे तरीक़ से फैंके के किसी तीर ने भी निशाना ख़ता ना किया और एक चुटकी बजाने में दुश्मनों के सिपाह की एक हज़ार आँख छिद गई। इसी वास्ते मुसलमानों ने उस दिन का नाम ज़ात-उल-उयून यानी "आँखों वाला दिन" रख दिया।

ईरानियों का सरदार शेरज़ाद नामी एक शख़्स था। उसने दम भर में अपने सिपाहियों की एक हज़ार आँखें ज़ाए होते देखीं तो फौरन लड़ाई से रूक कर सुलह का पैग़ाम भेज दिया मगर उसकी शरायत हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मंज़ूर ना फ़रमाई और लड़ाई फिर ज़ोर शौर से शुरू हो गई। ईरानियों को उनके ख़ंदक महफ़ूज़ किए हुए थे। उन ख़दक़ों के बाइस मुसलमनों को उनके लश्कर तक पहुँचना दुश्वार था। आख़िर मुसलमानों ने ख़ंदक़ से पार उतरने के लिए ये कारवाई शुरू की के अपनी फौज के तमाम कमज़ोर और मरीज़ ऊँट ज़िबह करके ख़ंदक में

Scanned by CamScanner

डाल दिए और उन ऊँटों की लाशों से ख़ंदक का एक हिस्सा पाट के पुल सा बनाया और उसी पर से होकर दुश्मन की सफों की तरफ़ बड़े। ईरानियों ने बढ़कर रोका मगर मुसलमानों के जज़्बे के सामने रह गए और शेरज़ाद ने फिर पयामे सुलह दिया और अब की मरतबा जो शर्तें पेश की गईं। वो हज़रत ख़ालिद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने क़बूल फ़रमा लीं। इस सुलह में एक शर्त ये भी थी के दुश्मनों को बग़ैर किसी माल व असबाब के ऐसी जगह पहुँचा दिया जाए जहाँ से वो अपनी हदूद में जा सकें। चुनाँचे मुसलमानों ने यही किया। शेरज़ाद को मअे उसकी फौज के सरहद अजम पर पहुँचा दिया और शहर अंबाद मअे तमाम साज़ व सामान के सहाबा इक्राम के क़ब्ज़े में आ गया। (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 379)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान जिहाद फी सबीलिल्लाह की तड़प रखते थे और फिनून हर्ब के बकमाल दर्जा वाक़िफ थे और आला दर्जे के तीर अंदाज़ थे और ये भी मालूम हुआ के दुश्मन सुलह पर आमादा हो जाए तो मुसलमान सुलह कर लेते थे। ख़्वाह-म-ख़्वाह लड़ाई जारी नहीं रखते।

हिकायत नम्बर(229) जर्जा पहलवान

मुसलमानों की रोमियों के साथ घमसान की जंग जारी थी के रोमी लश्कर से जर्जा पहलवान जो रोम का नामी ग्रामी बेमिस्ल पहलवान था। घोड़ा बढ़ा कर मैदान में आया, और उसने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को अपने मुक़ाबले में बुलाया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फौरन अपने लश्कर से निकल कर गए तो जर्जा ने कहा। मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ लिहाज़ा थोड़ी देर के लिए आप मुझे अमन व अमान से मिलें और हम एक दूसरे पर हमला ना करें। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उसकी दरख़्वास्त क़बूल कर ली और जर्जा ने क़रीब आकर कहा जो मैं पूछुं उसको आप सच सच बता दें। क्योंके आज़ाद और बहादुर लोग झूट नहीं बोला करते और उम्मीद है के आप मुझे धोका ना देंगे।

आप ये बताईये के क्या खुदा ने आपके पैग़म्बर (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) पर कोई तलवार आसमान से उतारी है और उनसे वो तलवार आपको मिल गई है के जिस क़ौम पर आप उसको खींचते हैं बग़ैर शिकस्त दिए वो मियान में नहीं आती" हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी

Scanned by CamScanner

अल्लाहो तआला अन्ह ने कहा "नहीं" फिर पूछा "तो फिर लोग आपको सैफउल्लाह क्यों कहते हैं"? हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने जवाब दिया "सुनिए। खुदा तआला ने हम में अपने पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलैह व आलिही व सल्लम को मबऊस फ़रमाया। मैं उन लोगों में था जो इब्तिदा उनके मुख़ालिफ रहे। फिर अल्लाह ने हिदायत बख़्शी। और मैंने उनकी ग़ुलामी इख़्तियार कर ली उस वक़्त हुज़ूर ने मुझे फ़रमाया। के तुम मुशरिकीन के हक़ में अल्लाह की तलवार हो और मेरे लिए ताईद इलाही की दुआ फ़रमाई। ये सब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दुआ ही की बर्कत है।"

जर्जा ने कहा। अच्छा बताईये! अगर कोई इस्लाम क़बूल करे और आपकी जमात में शामिल हो जाए उसका दर्जा आप लोगों में क्या होता है। फ़रमाया "हमारा और उसका दर्जा बराबर और यक्साँ होता है। बल्के वो हम से भी बढ़ जाता है।"

जर्जा ये सुनकर हज़रत ख़ालिद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हमराह लश्करे इस्लाम में आनकर मुशर्रफ ब इस्लाम हो गया। हज़रत ख़ालिद ने उसे दीन की तलक़ीन व तालीम की। फिर उसने ग़ुस्ल करके दो रकअत नमाज़ अदा की और उसके बाद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हमराह मैदान में निकल कर काफिरों से जिहाद करने लगा। (रज़ी अल्लाहो अन्ह) (तारीख इस्लाम, सफ़ा 405)

सबक़:- हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बहुत बड़े जरी और क़ौमी इस्लामी जरनैल थे। ऐसे के दुश्मन भी उनकी धाक मानते थे और आप ऐसे मक़्बूल बारगाहे नबव्वी थे के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़बाने हक़ तर्जुमान से आपको "अल्लाह की तलवार" का लक़ब अता हुआ। और इस तलवार से कुफ्र ने हमेशा शिकस्त खाई। फिर इस "अल्लाह की तलवार" से कुफ्र बुग्ज़ व अदावत ना रखे, तो क्या करे?

हिकायत नम्बर(230) उमरो बिन जमूह (र०अ०)

हज़रत उमरो बिन जमूह रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह पाँव से लंगड़े थे उनके चार बेटे थे जो अक्सर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम की ख़िदमत में भी हाज़िर होते और लड़ाईयों में भी शिरकत करते थे। ग़ज़वा-ए-ओहद में हजरत उमरो बिन जमूह रज़ी अल्लाहो अन्ह को भी

Scanned by CamScanner

शौक़ पैदा हुआ के मैं भी चलूं। लोगों ने कहा के तुम मअज़ूर हो। लंगड़े पन की वजह से चलना भी दुश्वार है। उन्होंने फ़रमाया। कैसी बुरी बात है के मेरे बेटे तो जन्नत में जायें और मैं रह जाँऊ। बीवी ने भी उभारने के लिए ताने के तौर पर कहा के मैं तुझ को देख रही हूँ के वो लड़ाई से भाग कर आए हैं। हज़रत उमरो बिन जमूह रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने ये सुनकर हथियार लिए, और क़िबले की तरफ़ मुंह करके दुआ की *अल्लाहुम्मा ला तरूहुनी इला अहली* ऐ अल्लाह! मुझे अपने अहल की तरफ़ ना लौटाईयो" उसके बाद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी ख़्वाहिश और लोगों के मना करने का इज़हार किया। और कहा मैं उम्मीद करता हूँ के मैं अपने लंगड़े पैर से जन्नत में चलूं, फिरूं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया के तुम मअज़ूर हो तो ना जाने में क्या हर्ज है? उन्होंने फिर ख़्वाहिश की तो आपने इजाज़त दे दी। अबु तलहा कहते हैं के मैंने उमरो को लड़ाई में देखा के अकड़ते हुए जाते थे और कहते थे के खुदा की क़सम मैं जन्नत का मुशताक़ हूँ। उनका एक बेटा भी उनके पीछे दौड़ा हुआ था। दोनों लड़ते रहे हत्ता के दोनों शहीद हो गए। उनकी बीवी अपने ख़ाविंद और अपने बेटे की नअश को ऊँट पर लाद कर दफ़्न के लिए मदीना लाने लगीं तो वो ऊँट बैठ गया। बड़ी दिक़्क़त से उसको मार कर उठाया और मदीने लाने की कोशिश की मगर वो ओहद की तरफ़ ही मुंह करता था। उनकी बीवी ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम से ज़िक्र किया। तो आपने फ़रमाया, ऊँट को यही हुक्म है। क्या उमरो चलते हुए कुछ कहकर गए थे। उन्होंने अर्ज़ किया के क़िबले की तरफ़ मुंह करके ये दुआ की थी *अल्लाहुम्मा ला तरूहुनी इला अहली* आपने फ़रमाया। इसी वजह से ऊँट इस तरफ़ नहीं जाता। (क़र्रत-उल-उयून)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के जज़्बा-ए-जिहाद और शौक़े शहादत का ये आलम था के उन्हें कोई उज़्र और मर्ज़ भी मैदाने जिहाद में जाने से ना रोक सका और सरसवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वो सच्चे पैरूकार थे और घर बार, बीवी बच्चों की मोहब्बत, उक़्बा के मुक़ाबले में उनकी नज़र में कोई चीज़ ना थी और अल्लाह की राह में उन्होंने बड़ी खुशी से अपनी जानें कुर्बान कीं और शहादत पाई और अहले बैत अज़ाम की तरह जन्नत के मालिक बन गए।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(231) जन्नत का साथी

हज़रत वहाब बिन क़ाबूस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मदीना मुनव्वरह के क़रीब किसी गाँव में रहते थे और बकरियाँ चराया करते थे। एक दिन अपने भतीजे के साथ बकरियाँ रस्सी में बाँधे हुए मदीने मुनव्वरह पहुँचे। और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम का पता पूछा तो पता चला के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ओहद के लड़ाई में गए हुए हैं। बकरियाँ को वहीं छोड़कर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के पास पहुँच गए। इतने में एक जमात कुफ़्फार की हमला करती हुई आई। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया, जो उनको मुनतशिर कर दे वो जन्नत में मेरा साथी है। हज़रत वहब बिन क़ाबूस ने ये एलान सुनकर ज़ोर से तलवार चलाना शुरू की और सबको हटा दिया। दूसरी मर्तबा फिर वही सूरत पेश आई और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने फिर वही इर्शाद फ़रमाया और वहब बिन क़ाबूस ने फिर उन्हें हटा दिया। तीसरी मर्तबा फिर वही सूरत पेश आई और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने फिर वही एलान फ़रमाया और हज़रत वहब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तलवार पकड़ कर कुफ़्फार के जमघठे में घुस गए और बहुत सों को फीन्नार करके शहीद हो गए और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के वादे के हक़दार बन गए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने उनके सिरहाने खड़े होकर फ़रमाया। "ऐ वहाब! अल्लाह तुम से राज़ी हो मैं तुम से राज़ी हूँ" फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने खुद अपने दस्ते मुबारक से आपको दफ़्न फ़रमाया। (असाबा व हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 71)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हर इर्शाद पर पूरा पूरा यक़ीन था और उनका ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम जो फ़रमा दें वो हो जाता है। चुनाँचे हज़रत वहब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने इसी ईमान व यक़ीन की बिना पर के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुझे जन्नत में अपनी रफ़ाक़त अता फ़रमा देंगे और अता

Scanned by CamScanner

फ़रमा सकते हैं। कुफ़्फार के नरग़े में कूद पड़े और शहीद हो गए फिर अगर कोई शख़्स यूं कहे के जिसका नाम मोहम्मद है किसी बात का मुख़्तार नहीं तो वो किस क़द्र जाहिल और गुमराह है पस सहाबा के ईमान की तरह हमारा ईमान भी यही होना चाहिए के...

हम रसूल अल्लाह के जन्नत रसूल अल्लाह की

हिकायत नम्बर(232) यक़ीन

आहद की लड़ाई शुरू थी के एक शख़्स खजूरें खाते हुए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के पास हाज़िर हुआ और अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! अगर मैं जिहाद करूं और मारा जाऊँ तो कहाँ जाऊँगा? हुज़ूर(स०अ०स०) ने फ़रमाया, जन्नत में उस शख़्स ने उसी वक़्त खजूरें हाथ से डालीं और तलवार पकड़ कर कुफ़्फार के साथ जिहाद करने लगे और इस हद तक लड़ा के शहीद हो गया। (बुखारी शरीफ, सफ़ा 579, जिल्द 2)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान जज़्बा-ए-जिहाद से मामूर थे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के हर वादे पर उनका यक़ीन कामिल था।

हिकायत नम्बर(233) रात का पहरा

हुज़ूर(स०अ०स०) एक ग़ज़वे से वापस तशरीफ़ ला रहे थे। शब को एक जगह क़याम फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, के आज रात को हिफाज़ और चौकीदारी कौन करेगा। एक मुहाजिर और एक अनसारी हज़रत अम्मार बिन यासिर और हज़रत इबादा बिन बशीर रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा ने अर्ज़ किया के हम दोनों करेंगे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक पहाड़ी जहाँ से दुश्मन के आने का रास्ता हो सकता था, बता दी के उस पर दोनों क़याम करो। दोनों हज़रात वहाँ तशरीफ़ ले गए, वहाँ जाकर अनसारी ने मुहाजिर से कहा के रात को दो हिस्सों पर तक़सीम करके एक हिस्सा में आप सो रहें मैं जागता रहूं। दूसरे हिस्से में आप जागें मैं सोता रहूं के दोनों के तमाम रात जागने में ये भी अहतमाल है के किसी वक़्त नींद का ग़ल्बा हो जाए और दोनों की आँख लग जाए। अगर कोई ख़तरा जागने वाले को महसूस हो तो वो अपने साथी को जगा ले। रात का आधा पहला हिस्सा अनसारी के जागने का क़रार पाया और मुहाजिर सो गए। अनसारी ने नमाज़ की नीयत बाँध ली। दुश्मन की जानिब से एक शख़्स आया। और दूसर से खड़े

Scanned by CamScanner

हुए शख़्स को देखकर तीर मारा। और जब कोई हरकत ना हुई तो दूसरा और फिर तीसरा मारा। हर तीर उनके बदन में घुसता रहा और ये हाथ से उसको बदन से निकाल कर फैंकते रहे। उसके बाद इतमिनान से रूकू किया। सज्दा किया। नमाज़ पूरी करके अपने साथी को जगाया। दुश्मन एक की जगह दो देखकर भाग गया के ना मालूम कितने हों। और साथी ने उठकर ये आलम देखा तो मुहाजिर ने फ़रमाया। सुबहान अल्लाह! तुम ने मुझे शुरू ही में क्यों ना जगा लिया। अनसारी ने कहा के मैंने सूरह कहेफ शुरू कर रखी थी। मेरा दिल ना चाहा के उसको ख़त्म करने से पहले रूकू करूं। अब भी मुझ को इस बात का अंदेशा हुआ के ऐसा ना हो के मैं बार बार तीर लगने से मर जाऊँ और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने जो हिफाज़त की ख़िदमत सपुर्द कर रखी है। वो फौत हो जाए। अगर मुझे ये ना होता तो मर जाता मगर सूरह ख़त्म करने से पहले रूकू ना करता। (बेहकी व हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 53)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने ईमान व क़ुरआन के मुक़ाबले में जान की भी परवाह ना की। और वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के हर इर्शाद की तअमील में अपनी जानें भी निछावर करने को आमादा रहते थे और...

यही जज़्बा था उन मर्दाने ग़ैरतमंद पर तारी!
दिखाई जिनके हाथों हक़ ने बातिल को निगोनिसारी

ये भी मालूम हुआ के वो अल्लाह के पाक बन्दे अल्लाह के हुज़ूर खड़े होते थे तो तीरों के लग जाने की भी परवाह नहीं करते थे। एक हम भी हैं जो नमाज़ में मच्छर भी काट ले तो नमाज़ का ख़याल जाता रहता है।

हिकायत नम्बर(234) ईसार

एक सहाबी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और भूक और परेशानी की हालत की इत्तिला दी। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने अज़वाजे मुताहरात के हुजरों पर मालूम कराया, के किसी के हाँ खाने को कुछ है? मालूम हुआ के किसी बीबी सहाबा के यहाँ कुछ भी नहीं है। तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने सहाबा इक़्राम से फ़रमाया, के कोई शख़्स है जो उनकी एक रात की महमानी क़बूल करे। हज़रत अबु तलहा अनसारी रज़ी अल्लाहो अन्ह खड़े हुए और अर्ज़ किया

Scanned by CamScanner

या रसूल अल्लाह! मैं महमानी करूंगा, उनको घर ले गए, घर जाकर अपनी बीबी से फ़रमाया, ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के महमान हैं। उनके इक्राम में कोई कसर ना रहे और कोई चीज़ छुपा कर ना रखना। बीवी ने कहा, खुदा की क़सम बच्चों के लिए थोड़ा सा खाना रखा है, हज़रत अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया। तुम बच्चों को बहला कर सुला दो और जब सो जाएँ तो खाना लेकर महमान के सामने बैठ जावेंगे और तू चिराग़ दुरूस्त करने के बहाने से उठकर उसे बुझा देना ताके महमान ये ना देखे के हम नहीं खा रहे क्योंके अगर उसको मालूम हो गया के हम नहीं खा रहे तो वो इसरार करेगा के हम भी साथ खाएँ। इस तरह फिर वो भूका रह जाएगा। चुनाँचे बीवी ने बच्चों को बहला कर सुला दिया, और ये खाना खाने बैठे और बीवी ने चिराग़ दुरूस्त करने के बहाने से चिराग़ बुझाने दिया और सारा खाना महमान को ही खिला दिया और दोनों मियाँ बीवी और बच्चों ने फाक़ा से रात गुज़ारी। हज़रत अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के इस ईसार पर अल्लाह तआला बड़ा राज़ी हुआ और ये आयत नाज़िल फ़रमाई *"वयूसीरूना अला अनफुसीहिम वलो काना बिहिम ख़सासत"* अपनी जानों पर उनको तरजीह देते हैं अगरचे उन्हें शदीद मोहताजी हो" (क़ुरआन करीम, पारा 28, रूकू 4)

(ख़ज़ायन-उल-इर्फान, सफ़ा 770, रूह-उल-बयान, सफ़ा 289, जिल्द 4)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन अखुव्वत ईसार और हमदर्दी के पेकर थे और उनके ईसार पर अल्लाह तआला बहुत खुश है और क़ुरआने पाक में उनकी तारीफ फ़रमाता है तो अगर कोई शख़्स यूं कहे के मैं सहाबा से खुश नहीं और उनकी तारीफ नहीं करता तो क्या ऐसा शख़्स गोया ये नहीं कह रहा के मैं अल्लाह की खुशी पर खुश नहीं और जिसकी अल्लाह तारीफ फ़रमाता है मैं उसकी तारीफ नहीं करता। सच है....

बुग्ज़ व हसद का हाल ये है जल मरे वहीं
देखा किसी का बाग़ जो फूला फला हुआ

हिकायत नम्बर(235) पानी की मश्क़

ग़ज़वाऐ यरमूक में बहुत से सहाबी शहीद हुए थे। जिस वक़्त शहीद हज़रात नीम जान धूप में पड़े खून में लौट रहे थे। हज़रत इब्ने हज़ीफा रज़ी

Scanned by CamScanner

अल्लाहो अन्ह पानी की मुश्क कंधे पर उठा कर ज़ख़्मियों को पानी पिलाने के लिए तशरीफ़ ले चले। एक तरफ़ से आवाज़ आई *अलअतश। अलअतश* हज़रत इब्ने हज़ीफा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ये आवाज़ सुनी तो दौड़कर वहाँ पहुँचे देखा के एक ज़ख़्मी मुसलमान प्यास के मारे नीम जान हो रहा है, चाहा के उनके हलक़ में पानी डालें फौरन मुंह अपना ज़ख़्मी ने बन्द कर लिया। और ये कहा के ऐ अल्लाह के बन्दे मुझ से भी ज़्यादा एक ज़ख़्मी मुसलमान प्यासा आगे पड़ा है। पहले उसे पानी पिलाओ। तब मुझे पिलाओ। इब्ने हज़ीफा रज़ी अल्लाहो अन्ह उस दूसरे ज़ख़्मी मुसलमान के पास पहुँचे। चाहा के उन्हें पानी पिलाएँ। उस खुदा के बन्दे ने भी पानी पीने से इंकार कर दिया और ये फ़रमाया के मुझ से ज़्यादा एक और मुसलमान भाई प्यासा अलअतश। अलअतश पुकार रहा है। पहले उसे पानी पिलाओ। हज़रत इब्ने हज़ीफा रज़ी अल्लाहो अन्ह उस तीसरे की ख़िदमत में पहुँचे मगर वहाँ तक पहुँचने ना पाए थे के वो प्यासे विसाल फ़रमा गए। दौड़ कर वापस आए तो देखा के दूसरे प्यासे भी अल्लाह के घर तशरीफ़ ले गए, यहाँ से भागे और अव्वल ज़ख़्मी के पास आए तो इतने अर्से में वो प्यासे भी होज़े कोसर पर पहुँच चुके थे। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 289, जिल्द 4)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने आख़िर दम तक भी अपने मुसलमान भाईयों की हमदर्दी तर्क ना फ़रमाई और हमे इस बात का दर्स दिया के मुसलमान अपने मुसलमान भाई का हमेशा ख़याल रखता है।

हिकायत नम्बर(236) सत घिरा मोहल्ला

मदीना तय्यबा में एक मोहल्ला सत घिरा था। ये लोग बड़े मिसकीन और ग़रीब थे। हर एक घर में नौबत फाक़ा कशी की थी एक दिन इत्तिफाक़न उनमें से एक घर में एक बकरे की सिरी तोहफा आई बावजूद इस बात के के ये लोग खुद भूके और प्यासे थे लेकिन ख़याल ये किया के हमारा हमसाया हम से भी ज़्यादा भूका और फाक़ा से है। हीफ है के हमसाया भूका रहे और हम खायें, क़यामत में खुदा को क्या मुंह दिखाऐंगे। उसी वक़्त वो बकरे की सिरी हमसाया के घर भेज दी जब ये तोहफा दूसरे घर में पहुँचा वो भी इसी तरह खुदा तरस थे। हमसाया के हक़ूक़ का ख़याल करके उसे दो वक़्त के फाक़े को बदस्तूर क़ायम रख कर वो तोहफा तीसरे घर में भेज दिया। तीसरे घर वालों ने इसी जज़्बे के मातहत वो तोहफा आगे चौथे घर में भेज दिया। उन्होंने पाँचवें घर। उन्होंने छटे घर भेज दिया और छटे घर वालों ने बजिन्सीही

Scanned by CamScanner

सातवें घर भेज दिया। ये सातवें घर वाले वही थे जिन्होंने सब से पहले ये सिरी दूसरे घर में भेज दी थी। इन लोगों ने जब देखा के ये तोहफा फिरता फिराता फिर हमारे ही पास आ गया है तो समझे के खुदा ने ये हिस्सा हमारे ही नसीब में लिखा है। नाचार इसे पकाया। और थोड़ा थोड़ा सबको तक़सीम कर दिया। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 289, जिल्द 4)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने खुद भूके रह कर भी दूसरों को खिलाया और ईसार व हमदर्दी के वो मुज़ाहेरे किए के तारीख़ के तारीख़ के अवराक़ इस क़िस्म के मुज़ाहेरों से ख़ाली हैं। ये हैं वो पाक लोग जिन्होंने अपना हिस्सा भी अपने भाईयों पर सर्फ किया और एक आज कल के वो लोग भी हैं जिन का दिन रात का ये विर्द है के

"राम राम जपना पराया माल अपना"

हिकायत नम्बर(237) वफा-ए-अहेद

एक दिन हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का दरबारे ख़िलाफत सरगर्म इंसाफ व अद्ल था। अकाबिर सहाबा मौजूद थे और मुख़्तलिफ मामलात पेश हो हो कर तय हो रहे थे के नागहाँ एक ख़ुश रू नोजवान को दो नो जवान पकड़े हुए लाए और फ़रयाद की के या अमीर-उल-मोमिनीन! इस ज़ालिम से हमारा हक़ दिलवाए। इसलिए के इसने हमारे बूढ़े बाप को मार डाला। हज़रत फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने इस नोजवान की तरफ़ देखा और फ़रमाया, हाँ इन दोनों का दावा तो सुन चुका अब बता तेरा क्या जवाब है? उसने निहायत अदब से वाक़ेया बयान किया जिसका ख़ुलासा ये था के मुझ से ये जुर्म ज़रूर हुआ है और मैंने तैश में आकर एक पत्थर खींच कर मारा जिससे वो ज़ईफ मर्द मर गया। तैश की वजह ये थी के उसने मेरे अज़ीज़ अज़ जान ऊँट को पत्थर मार कर उसकी आँख फोड़ दी थी जो के उसके बाग़ में चला गया था। हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया, तो तुझे एत्राफ है लिहाज़ा अब क़िसास का अमल लाज़मी है और उसके अवज़ तुम्हें अपनी जान देनी होगी। नोजवान ने सर झुका कर अर्ज़ किया। मुझे शरीअत का हुक्म और इमाम का फतवा मानने में कोई उज़्र नहीं लेकिन एक बात की दरख़्वास्त करता हूँ। इर्शाद हुआ क्या? मेरा एक छोटा ना बालिग़ भाई है जिस के लिए वालिद मरहूम ने कुछ सोना छोड़ा था और मेरे सपुर्द किया था के वो बालिग़ हो तो उसके

Scanned by CamScanner

सपुर्द कर दूं। मैंने उस सोने को एक जगह ज़मीन में दफ़्न कर दिया और उसका हाल सिवाए मेरे किसी को मालूम नहीं है। अगर वो सोना उसको ना पहुँचा तो क़यामत के दिन मैं ज़िम्मेदार होंगा इसलिए इतना चाहता हूँ के तीन दिन के लिए ज़मानत पर छोड़ दिया जाए।"

हज़रत फारूक़ आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उस बारे में ज़रा ग़ौर फ़रमाया और फिर सर अनवर उठाकर इर्शाद फ़रमाया, अच्छा तुम्हारी ज़मानत कौन देता है? के तू तीन दिन के बाद तकमील क़िसास के लिए वापस आ जाएगा।

फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के इस इर्शाद पर उस नोजवान ने चारों तरफ़ देखा और हाज़रीने मजलिस के चहरों पर एक सरसरी नज़र डाली और फिर हज़रत अबुज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ी अल्लाहो अन्ह की तरफ़ इशारा करके अर्ज़ किया ये मेरी ज़मानत दे देंगे। हज़रत फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने पूछा। क्यों अबुज़र! तुम ज़मानतत देते हो? उन्होंने फ़रमाया बेशक मैं ज़मानत देता हूँ के ये नोजवान तीन दिन के बाद हाज़िर हो जाएगा।

ये एक जलील-उल-क़द्र सहाबी की ज़मानत थी। चुनाँचे फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह राज़ी हो गए और उन दोनों मुद्दई नोजवानों ने भी अपनी रज़ामंदी ज़ाहिर की और वो शख़्स छोड़ दिया गया।

अब तीसरा दिन था। हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का दरबार बदस्तूर क़ायम हुआ। तमाम सहाबा जमा हुए वो दोनों मुद्दई भी आए। हज़रत अबुज़र रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी तशरीफ़ फ़रमा हुए और वक़्त मुक़र्ररा पर मुज़िम का इन्तिज़ार करने लगे।

वक़्त गुज़रता जाता था और मुज़िम का कुछ पता ना था।

मुद्दय्यों ने कहा, अबुज़र! हमारा मुज़िम कहाँ है। उन्होंने कमाल इसतक़लाल से जवाब दिया, अगर तीसरे दिन का वक़्त मुक़र्रर गुज़र गया और वो ना आया तो खुदा की क़सम मैं अपनी ज़मानत पूरी करूंगा। हज़रत फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह संभल बैठे और फ़रमाया अगर वो ना आया तो अबुज़र की निसबत वही काररवाई की जाएगी जिसकी शरीअते इस्लामिया मुताक़ाज़ी होगी।

ये सुनते ही सहाबा इक्राम में तशवीश पैदा हुई। बाज़ आबदीदा और बाज़ की आँखों से बे इख़्तियार आँसूं टपक पड़े। मजबूर होकर लोगों ने उन नो उम्र मुद्दय्यों से कहना शुरू किया के तुम खून बहा क़बूल कर लो उन्होंने इंकार किया के हम खून के बदले खून ही चाहते हैं। ग़र्ज़ लोग उसी परेशानी में थे

Scanned by CamScanner

के नागहाँ वो मुज्रिम नमूदार हुआ, मगर इस हालत में के पसीने में शराबोर था, और सांस फूली हुई थी वो आते ही हज़रत फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के सामने आया और ख़ंदा पैशानी से सलाम अर्ज़ किया और कहा।

"मैंने उस बच्चे को उसके मामू के सपुर्द कर दिया और उसकी जायदाद उन्हें बता दी, अब जो खुदा और रसूल का हुक्म है बजा लायें, मैं हाज़िर हूँ"।

हज़रत अबुज़र रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया, अमीर-उल-मोमिनीन! खुदा की क़सम मैं जानता भी ना था के ये शख़्स कौन है और कहाँ का रहने वाला है मगर और सब को छोड़ कर मुझे उसने अपना ज़ामिन बना लिया तो मुझे इंकार करना मुरव्वत के ख़िलाफ मालूम हुआ। उसके बशरे ने यक़ीन दिलाया के ये शख़्स अपने अहेद में सच्चा होगा इसलिए ज़मानत दे दी।

उस मुज्रिम नोजवान ने अर्ज़ किया, मैं हज़रत अबुज़र का शुक्रिया अदा करता हूँ, मैं अगर ना आता तो ऐसा कर सकता था मगर एक मुसलमान अपने अहेद को बहर हाल निभाता है और वो कभी अहेद को नहीं तोड़ता।

उसके आ पहुँचने से हाज़रीन में एक मामूली जोश पैदा हो गया। हत्ता के उन नो उम्र मुद्दय्यों ने खुशी में आकर अर्ज़ किया।

अमीर-उल-मोमिनीन! हम ने अपने बाप का खून माफ किया।

सब की तरफ़ से एक नारा मुसर्रत बुलंद हुआ। और हज़रत फारूक़े रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का चेहरा मारे खुशी के चमकने लगा और फ़रमाया, मुद्दई नोजवानो! तुम्हारे बाप का खून बहा में बैत-उल-माल से अदा करूंगा और तुम अपनी इस नेक नफ़्सी के साथ फायदा भी उठाओगे। उन दोनों ने अर्ज़ किया। हुज़ूर!

अब हमें कुछ लेने का हक़ नहीं और ना कुछ लेंगे।

अलग़र्ज़ इस अजीबो ग़रीब वफाऐ अहेद का वाक़ेया इस मुसर्रत व शादमानी पर ख़त्म हुआ। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 479)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान मुरव्वत और नेक सलूक फ़रमाने वाले और अपने अहेद के पक्के और पूरा करने वाले थे जान देने का सवाल था। मगर क्या मजाल के जान बचाने के लिए अहेद को तोड़ देते चुनाँचे अपने वादे के मुताबिक़ पहुँच गए। एक वो भी पक्के और अहेद के सच्चे मुसलमान थे और एक आज कल के मुसलमान भी हैं जिनका वादा के मुतअल्लिक़ ये ख़याल है के

वो वादा ही क्या जो वफा हो गया

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(238) हरक़ुल के दरबार में

हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के अहेदे ख़िलाफत में शाम की लड़ाई में हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़ाफा रज़ी अल्लाहो अन्ह को अस्सी (80) सहाबा इक्राम समेत इसाईयों ने गिरफ़्तार कर लिया। मुसलमानों को इस का बड़ा रंज हुआ और अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने शाह हरक़ुल को हस्बे ज़ैल ख़त लिखा।

मिन अब्दिल्लाही अमीरिलमोमिनीना उमर इब्निल ख़त्ताबी इला हिराकुला अज़ीमिर्रूमी अम्मा बअदू फाइज़ा वसला इलेका किताबी फबअसू इलय्या बिलअसीरिल्लज़ी इंदका वहुवा अब्दुल्लाही इब्नु हुज़ाफात फइन फअल्लता रजूतू लका अलहिदायाता वइन अबेता बअस्तू इलेका रिजालन वअय्या रिजालिन रिजालुन ला तुलहीहिम तिजारातुन वला बीअउन अन ज़िक्रिल्लाही अमामस्सलातिल अख़

ये ख़त अल्लाह के बन्दे की तरफ़ से जिसका लक़ब अमीर-उल-मोमिनीन है बादशाह रोम के नाम। ऐ शाहे हरक़ुल! जिस वक़्त मेरा ये ख़त तेरे पास पहुँचे उसी वक़्त अब्दुल्लाह बिन हज़ाफा को जो तेरे पास क़ैद है छोड़ दे अगर तू ऐसा करेगा तो तेरे लिए बेहतर होगा और अगर तूने ऐसा ना किया, तो याद रख! मैं ऐसा लश्कर तेरी तरफ़ भेजूंगा। जिस लश्कर के सिपाहियों का ये हाल होगा के वो ऐसे बाखुदा और ज़ाकिर बन्दे होंगे के किसी वक़्त घर में या बाज़ार में तिजारत करते, या सौदा ख़रीदते वक़्त ज़िक्रे इलाही और नमाज़ पढ़ने से ग़ाफिल नहीं रहते।"

जब ये ख़त शाहे रोम को मिला तो उसने हज़रत अब्दुल्लाह को उनके साथियों समेत तलब किया और हज़रत अब्दुल्लाह से पूछा।

शाहे रोमः तुम्हारा नबी अरबी से या उमर फारूक़ से क्या रिश्ता है?

हज़रत अब्दुल्लाहः वो हमारे रसूल हैं और ये हमारे अमीर"

शाहे रोमः तुम अगर इसाईयत क़बूल कर लो तो हम किसी बड़े घराने की लड़की तुम्हारे साथ बियाह देंगे और कोई बड़ा ओहदा भी दे देंगे।

हज़रत अब्दुल्लाहः मैं हर गिज़ हर गिज़ दीन मोहम्मदी तर्क नहीं कर सकता।

शाहे रोमः (एक बैश क़ीमत हार मंगवा कर सामने करते हुए) देखो ये हार तुम्हें दे दूंगा और बहुत से ग़ुलाम भी दूंगा बोला क्या इरादा है?

हज़रत अब्दुल्लाहः ऐ हरक़ुल अगर तू अपना सारा मुल्क भी दे दे तो

Scanned by CamScanner

इस्लाम के बदले हरगिज़ क़बूल ना करूंगा।

शाहे रोम: अच्छा तो फिर मरने को तैयार हो जाओ।

हज़रत अब्दुल्लाह: ऐ हरकुल! "तू मेरे जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर दे तो भी इस्लाम ना छोड़ूगा"

शाहे रोम: अच्छा तुम इसाईयत क़बूल ना करो, सिर्फ इतना करो के सलीब को सज्दा कर लो तो मैं तुझे उन सब साथियों के समेत छोड़ दूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाह: हमारे रसूल ने हमें अल्लाह का ये हुक्म सुनाया है *ला तसजुदू लिश्शम्सी वला लिलक़मरी वसजुदू लिल्लाहिल्लज़ी ख़लाक़ाहुन्ना इन कुंतुम अय्याहू तअबुदूना*

ना सज्दा करो सूरज को ना चाँद को बल्के सज्दा करो अल्लाह को जिसने सूरज चाँद को पैदा किया है। अगर तुम ख़ास अल्लाह की इबादत करने वाले हो।"

शाहे रोम: अच्छा थोड़ी सी शराब ही पी लो मैं अभी छोड़ दूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाह: मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ शराब के पीने से।

शाहे रोम: तुम्हें ज़रूर शराब भी पीना पड़ेगी और ख़िंज़ीर के कबाब भी खाना पड़ेंगे।

फिर शाह रोम ने हुक्म दिया के इस शख़्स को क़ैद ख़ाने में तनहा क़ैद कर दो और आस पास शराब और ख़िंज़ीर के कबाब रख दो। सिवाये इसके और कोई चीज़ खाने को ना दो। भूक से तंग आकर खुदबखुद ये चीज़ें खाएगा। चुनाँचे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को तीन रोज़ तक बराबर एक मकान में क़ैद रखा फिर चौथे दिन दरबार में तलब किया और क़ैद खाने के मुहाफिज़ों से पूछा के उसने कुछ खाया पिया? मुहाफिज़ ने कहा के वो सब कुछ इसी तरह रखा है। उसने नज़र उठा कर भी नहीं देखा। शाहे रोम ने हज़रत अब्दुल्लाह से पूछा।

शाहे रोम: तुम ने इन्हें क्यों इस्तेमाल नहीं किया?

हज़रत अब्दुल्लाह: महेज़ अल्लाह के ख़ौफ से।

शाहे रोम: मगर जब जान जाने का ख़तरा हो तो तुम्हारे मज़हब में हराम चीज़ भी हलाल हो जाती है फिर तुम ने इन्हें क्यों इस्तेमाल ना किया?

हज़रत अब्दुल्लाह: मगर मैं वो काम क्यों करूं जिससे एक काफिर की खुशी हो जाए और खुदा नाराज़ हो जाए।

शाहे रोम: (अपना पैर आगे करते हुए) अच्छा अगर रिहाई चाहते हो तो सिर्फ इतना करो के मेरे इस पैर के आगे झुक जाओ...

Scanned by CamScanner

अगर जाँ को बचाना है तो झुक जा पैर के आगे

हज़रत अब्दुल्लाह: मुसलमाँ हूँ ये सर झुकता नहीं है ग़ैर के आगे।

शाहे रोम: अच्छा तो लो मेरे माथे को एक बोसा ही दे दो। मैं तुम्हें और तुम्हारे अस्सी भाईयों को फौरन छोड़ दूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाह: मुझे ये मंज़ूर है। चुनाँचे आपने बादशाह के माथे को एक बोसा दे दिया जिसे अहले अरब की आदत थी के मुलाक़ात के वक़्त अपने दोस्त के माथे पर बोसा दिया करते थे, शाहे हरकुल ने हज़रत अब्दुल्लाह और अस्सी मुसलमानों को रिहा कर दिया और बहुत कुछ सामान देकर रूख़्सत किया।

जब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मुसलमानों में वापस पहुँचे तो सब बहुत खुश हुए और बाज़ सहाबा ने खुश तबई से कहा के ये वो हैं जिन्होंने एक काफिर के माथे पर बोसा दिया तो आपने फ़रमाया, बेशक! लेकिन इस बोसे का नतीजा ये हुआ के अस्सी मुसलमानों की जानें क़ैद और मौत से बच गईं। (असद-उल-ग़ाबा व सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 49)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का इस क़द्र पक्का ईमान था के दुनिया की कोई ताक़त और कोई मुसीबत उनके पाये इसतक़लाल में लग़ज़िश ना ला सकी और वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इस इर्शाद के *ला तुशरिक बिल्लाही वइन हुर्रिक़त ओकुतिलता* यानी हर गिज़ शिर्क ना करना ख़्वाह आग में जलाए या क़त्ल किए जाओ" पर कामिल तौर पर आमिल थे और ये भी मालूम हुआ के जान पर बन आने के वक़्त भी उन्होंने शराब व कबाब की तरफ़ आँख उठा कर भी नहीं देखा ताके एक काफिर खुश ना हो जाए फिर आज कल वो मुसलमान जो ग़ैर मुस्लिमों की दअवतें करते और उनके साथ खाते और उनको खुश करने के लिए शराबें पीते हैं किस क़द्र नाअक़्बत अंदेश और ग़ाफिल हैं और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान अपने भाईयों के बड़े हमदर्द और ख़ैरख़्वाह थे। चुनाँचे उन्होंने जो हरकुल के माथे पर बोसा देना मंज़ूर कर लिया। वो सिर्फ इसलिए के अस्सी मुसलमानों की जान बच जाएँ और उनके पास इस बोसे का मअक़ूल उज़्र था। फिर आज जो आए दिन कुफ़्फार की नाजायज़ इत्तिबा, कुफ़्फार के रस्मो रिवाज की पाबंदी और बद मज़हबों से मसाफहे करना रवादारी समझना हमारा शीवा हो चुका था। सोचो! ऐसे अफ़्राद के पास कौन सा उज़्र मौजूद माक़ूल है? और ये

Scanned by CamScanner

भी मालूम हुआ के हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का दुनियाऐ कुफ़्र पर वो रौब व दबदबा तारी था के आपका ख़त पाते ही शाहे रोम ने किसी ना किसी बहाने मुसलमानों को रिहा कर देना मुनासिब समझा।

हिकायत नम्बर(239) बैश क़ीमत मोती

शाम की लड़ाई में हरक़ुल शाहे रोम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़ाफा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह और उनके साथ अस्सी सहाबा इक्राम को क़ैद कर लिया तो हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हरक़ुल के नाम एक ख़त लिखा जिसमें हरक़ुल को हुक्म दिया के वो मुसलमानों को रिहा कर दे वरना उस पर चढ़ाई कर दी जाएगी। शाहे रोम ने ये ख़त पाकर मुलमानों को रिहा कर दिया और रूख़्सत के वक़्त बहुत से बैश क़ीमत मोती हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदम्त में भेजे। जब वो तोहफा मदीना मुनव्वरह में हज़रत फारूक़े आज़म रज़ अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में पेश हुआ तो आपने उनकी क़ीमत को अहले मदीना के जोहरियों से जाँच कराया। जोहरियों ने बताया के उनकी क़ीमत ज़ायद है इसे के जो कोई कुछ लगाए। सहाबा इक्राम ने हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से अर्ज़ किया के हरक़ुल ने ये तोहफा आपको भेजा है आपको मुबारक हो ये हदया है, आप ही क़बूल फ़रमा लीजिए। हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया, तुम्हारी इजाज़त से ये मोती मेरे लिए किस तरह दुरूस्त हो कसते हैं जब तक सारे जहाँ के मुसलमान इजाज़त ना दें। बताओ फिर किसी तरह मुझे इजाज़त मिल सकती है। इन मुसलमनों से जो अभी तक माँ के पेट में है। और उम्र में इतनी ताक़त नहीं के जो क़यामत के दिन उन बच्चों की हक़ तलफी की जवाब दही कर सके। फिर हुक्म दिया के इन मोतियों को फ़रोख़्त किया जाए और इसका रुपया बैत-उल-माल में दाख़िल किया जाए। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा : 51)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान कमाले तक़वा के मालिक थे और दुनिया की हर बैश क़ीमत चीज़ भी उन्हें अपने मसलक से ना हटा सकती थी और वो आक़बत के पेशे नज़र दुनिया की ज़रा भर भी परवाह ना फ़रमाते थे, फिर वो लोग जो एक एक पैसे की ख़ातिर दीनो ईमान तर्क कर देने के आदी हों। अगर हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो

Scanned by CamScanner

तआला की ज़ात ग्रामी पर (मआज़ अल्लाह) कोई एत्राज़ करें तो वो किस क़द्र ज़ालिम और गुमराह हैं।

हिकायत नम्बर(240) मुजाहेदाना जवाब

क़ुरैशे मक्का ने मुसलमानों को तंग करने के लिए जब जंगे बद्र की बुनियाद डाली तो हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान में से मुहाज़ीन ने जवाब दिया। या रसूल अल्लाह आप वही करें जिस बात का खुदा ने आपको हुक्म दिया हे। हम आपके साथ हैं। खुदा की क़सम हम ऐसा नहीं कहेंगे। जैसा के बनी इस्राईल ने अपने पैग़म्बर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से कहा था *इज़हब अन्ता व रब्बुका फक़ातिला इन्ना हाहुना क़ाईदून* यानी जा तू और तेरा रब दोनों जाकर लड़ो, हम तो यहीं बैठेंगे।"

या रसूल अल्लाह! हम हुज़ूर के नाम पर क़ुर्बान हो जाने को तैयार हैं। अनसार ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! हम आप पर ईमान ले आए हैं। उस खुदा की क़सम जिसने आपको मबऊस फ़रमाया है। अगर आप हमें दरया में कूद जाने को इर्शाद फ़रमाऐंगे तो हम उसमें कूद जायेंगे या रसूल अल्लाह! आप हम से मशवरा क्यों तलब फ़रमाते हैं? हम बे वफाई करने वाले नहीं हैं...

तआला अल्लाह ये शेवा ही नहीं है बावफाओं का
पिया है दूध हम लोगों ने ग़ैरत वाली माँओं का
नबी का हुक्म हो तो कूद जायेंगे हम समुंद्र में!
जहाँ को महू कर दें नारा-ए-अल्लाहो अक्बर में

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने सहाबा का ये मुजाहिदाना जवाब पाकर बड़े खुश हुए। (तारीख़े इस्लाम व मदारिज-उल-नबुव्वत सफ़ा 53 जिल्द: 2)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सच्चे जाँनिसार और रफ़ीक़ थे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इशारे पर बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी देने को तैयार हो जाते थे और हर मौक़े पर उन्होंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मईयत व रफ़ाक़त का मुज़ाहेरा फ़रमाया और किसी वक़्त भी उन्होंने अपने नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बे वफाई नहीं की। वो पाक लोग गोया इस शैर के मिसदाक़ थे।

Scanned by CamScanner

मोहरो वफा में यार ने जब इम्तिहाँ लिया
सब आशिक़ों में नम्बर अव्वल हमीं रहे

फिर अगर कोई जफा कारान बा वफा हज़रात की वफा पर किसी क़िस्म का शक व शुबह करे तो उसे ये रूबाई क्यों ना सुनाई जाए के

हासिद के लिए दोज़ख़ उसका सीना
जलती है जहाँ आतिशे बुग्ज़ व कीना
दिल साफ हो हासिद का है मुश्किल इर्शाद
कब साफ धुएँ में रहा है आईना

हिकायत नम्बर(241) मोहम्मद की दुहाई

मदीने मुनव्वरह के एक बाज़ार से एक दहक़ानी औरत गुज़र रही थी के चन्द यहूदी ओबाशों ने उस पर दस्त दराज़ी शुरू कर दी वो बेचारी उनकी नाजायज़ हरकतों को देख कर घबराई और

ना हिफ़्ज़े आबरू की जब कोई सूरत दिखाई दी
तो उस मज़लूम औरत ने मोहम्मद की दुहाई दी
पुकारी क्या! नहीं ग़ैरत, किसी इंसाँ के सीने में
के यूं बे आबरू हूं मैं मोहम्मद के मदीने में

उस औरत की ये फ़रयाद एक मुसलमान के कानों में पड़ी, और वो दौड़ा हुआ मदद करने वहाँ पहुँच गया। और उन यहूदिों से लड़ने लगा हत्ता के उस औरत की इज़्ज़त बचाने की ख़ातिर खुद शहीद हो गया। (तारीख़े इस्लाम सफ़ा 157, जिल्द:1)

सबक़:- मुसलमान बड़ा ग़यूर और शुजा है और वो बेहयाई फहाशी और बेशर्मी के हर काम के ख़िलाफ सीना सप्र हो जाता है।

हिकायत नम्बर(242) दो नन्हे मुजाहिद

जंगे बद्र में जब नूर व ज़ुल्मत, कुफ्र व इस्लाम का मअरका शुरू था और अबु जहल अपने लश्कर को मुसलमानों से लड़ा रहा था। तो हज़रत 'अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाते हैं के मेरे दिल की तमन्ना थी के मैं किसी तरह इस सरगिरोह कुफ़्फार अबुजहल को क़त्ल कर दूं। मगर मौक़ा ना पा सका। इसी तमन्ना में था के मेरे दायें बायें दो नन्हे मुजाहिद (मआज़ मऊज़ दो सगे भाई) तलवारें लिए आ खड़े हुए...

Scanned by CamScanner

अभी नो उम्र थे दोनों के हाथों में थीं शमशीरें
नज़र आईं मुझे दो सादा रू मासूम तसवीरें
बहुत शाईस्ता खुश अतवार कम उम्र व हसीं दोनों
फरिश्तों की तरह आए थे बालाऐ ज़मीन दोनों

उन दोनों नन्हे मुजाहिदों ने आते ही पूछा तो क्या? फ़रमाते हैं...

निहायत राज़दारी से निशाँ अबु जहल का पूछा
शबाहत और हुलिया और मौजूदा पता पूछा

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं मैंने पूछा: बच्चू! इस बेदीन से तुम्हारा क्या काम है? तो बोले

क़सम खाई है मर जायेंगे या मारेंगे नारी को
सुना है गालियाँ देता है वो महबूबे बारी को

फरमाते हैं: मैं उनकी जुर्रात पर हैरान व शशिद्र रह गया और फिर उनकी शहादत के ख़याल से तड़प कर रह गया मगर उन बच्चों का जवाब ये था के बेशक मौत सामने है...

मगर इश्शाक़ अपनी जान की परवाह नहीं करते
खुदा से डरने वाले मौत से हरगिज़ नहीं डरते

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया बच्चू! अबु जहल तक तुम्हारी रसाई कैसे होगी के

हिफाज़त कर रहा है गर्द उसके फौज का दस्ता
बच्चों ने कहा...
ये दस्ता कब तलक रोकेगा इज़राईल का रस्ता

आख़िर हज़रत अब्दुर्रहमान ने अबु जहल का निशान बताया, तो

खुदा हाफिज़ कहा और खींच लीं दोनों ने शमशीरें
बढ़े यकबारगी कहते हुए पुर जोश तकबीरें
अबु जहल सियाः रू पर निगाहें गाड़ के दौड़े
क़ुरैशी फौज के दल बादलों को फाड़ कर दौड़े

ये दोनों नन्हे मुजाहिद अबु जहल पर जा झप्टे, अबु जहल ने बचने की हज़ार कोशिश की, मगर उसे नन्हे मुजाहिदों के हाथों फीन्नार होना ही था। दो नन्ही नन्ही तलवारें बे दीन पर ऐसी पड़ीं के घोड़े समेत ज़मीन पर आकर गिर। और दम तोड़ने लगा। कुफ़्फार ने जब अपने सरदार को मरते देखा तो उन दोनों मासूमों बच्चों पर लश्कर टूट पड़ा। मगर अल्लाह रे इश्के मुसतफा के उन नन्हे मुजाहिदों ने जी ना हारा। बहुत से काफिरों को फीन्नार करके

Scanned by CamScanner

पहले हज़रत मऊज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह शहीद हो जाते हैं और दूसरे भाई हज़रत मआज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तनहा कुफ़्फार में रह जाते हैं। लड़ते लड़ते हज़रत मआज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का एक बाज़ू कट जाता है ओर एक तसमा साबाक़ी रह जाता है जिससे बाज़ू लटक कर रह गया। हज़रत मआज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तलवार दूसरे हाथ में लेकर लड़ना शुरू कर देते हैं। मगर कटा हुआ हाथ एक तसमा रह जाने की वजह से लटकता हुआ हाथ तलवार चलाने में मुख़्ल जो नज़र आया। तो अल्लाह की रहमतें उस नन्हे मुजाहिद की हिम्मत व जुर्रात पर के उस हाथ को अपने पाँओं के नीचे दबा कर ज़ोर से खींचा और इस तसमे को भी तोड़ कर हाथ अलग फैंक दिया और फिर इतमीनान से लड़ने लगा। (मदारिज-उन-नबुव्वत सफ़ा 65 जिल्द:2)

सबक़:- बड़े बड़े सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के अलावा जो कमसिन सहाबी थे। अल्लाह की राह में क़ुर्बान हो जाने का जज़्बा उनमें भी बदर्जा उत्तम मौजूद था और हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से उन्हें इस क़द्र प्यार था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के खिलाफ कोई बात सुनना उनके लिए ना गवार था और अल्लाह व रसूल की मोहब्बत के दरमियान वो जिस चीज़ को हायल देखते उसे फी-अल-फौर अलग कर देते थे। चाहे उनका वो बाज़ू ही क्यों ना हो और उनका ये ईमान था के

मोहम्मद है मताए आलम ईजाद से प्यारा
पद्र, मादर, बरादर, जान व माल, औलाद, से प्यारा

हिकायत नम्बर(243) आराबी का घोड़ा

हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक आराबी से घोड़ा खरीदा। वो बेच कर मुकर गया और गवाह माँगा। जो मुसलमान आता। आराबी को झिड़कता के खराबी हो तेरे लिए! रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हक़ के सिवा क्या फ़रमाऐंगे। हर मुसलमान यही कहता मगर गवाही कोई ना देता। इसलिए के किसी के सामने ये वाक़ेया ना था। इतने में हज़रत ख़ज़ीमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह आ गए और गुफ़्तगू सुनकर बोले! मैं गवाही देता हूँ के तूने अपना घोड़ा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हाथ बेचा है हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया: तुम मौजूद थे

Scanned by CamScanner

ही नहीं फिर तुम ने गवाही कैसे दी? अर्ज़ किया! या रसूल अल्लाह आप हमें आसमान की ख़बरें सुनाते हैं और हम बग़ैर देखे आपकी ज़बाने हक़ तर्जुमान पर यक़ीन करके उनकी तसदीक़ करते हैं। फिर ये ख़बरें जो ज़मीन की है। उसकी तसदीक़ क्यों ना करूं? हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत ख़ज़ीमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का जवाब सुनकर बहुत खुश हुए और उसके इनाम में हज़रत ख़ज़ीमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की गवाही दो मर्दों के बराबर फ़रमा दी और फ़रमाया: ख़ज़ीमा जिस किसी के नफे व ज़रर की गवाही दें एक उन्हीं की गवाही काफी है। (अबु दाऊद, सफ़ा 341 जिल्द: 2)

सबक:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम के हर इर्शाद की तसदीक़ की और उनका ईमान था के ज़बान नबुव्वी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से जो इर्शाद होता है हक़ ही होता है। और इस ज़बान से कभी ख़िलाफे वाक़ेया बात निकल नहीं नहीं सकती। फिर अगर कोई शख़्स अल्लाह तआला ही के मुतअल्लिक़ यूं कहने लगे के वो झूट भी बोल सकता है तो वो किस क़द्र ज़ालिम और झूटा है और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुख़्तार और अहकामे शरीअत के मालिक हैं। किसी हुक्म से जिसे चाहें मुसतसना फ़रमा लें। चुनाँचे क़ुरआन का हुक्म ये है के *वअशहिदू नवा अदूलिन मिनकुम* (प28, रूकू 17) और अपने मैं दो सक़ा को गवाह कर लो" इस हुक्मे क़ुरआन से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ख़ज़ीमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को मुसतसना फ़रमा दिया और उनकी अकेले ही की गवाही को दो मर्दों की गवाही के बराबर फ़रमा दिया। साबित हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम शारअे और मालिक व मुख़्तार हैं।

हिकायत नम्बर(244) निराली सज़ा

एक सहाबी से रमज़ान शरीफ के महीने में रोज़ा टूट गया। वो बारगाहे नबुव्वी में हाज़िर हुए और अर्ज़ की: या रसूल अल्लाह! मैंने रमज़ान में अपनी औरत से नज़दीकी की। मैं हलाक हो गया। फ़रमाईये अब मैं क्या करूं? हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया: ग़ुलाम आज़ाद कर सकते हो? अर्ज़ किया नहीं या रसूल अल्लाह! फ़रमाया लगातार दो महीने रोज़े रख सकते हो? अर्ज़ की नहीं

Scanned by CamScanner

या रसूल अल्लाह! फ़रमाया साठ मिसकीनों को खाना खिला सकते हो? अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! ये भी नहीं कर सकता। इतने में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में किसी ने कुछ खजूरें हदया हाज़िर कीं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने वो सारी खजूरें उस शख़्स को दे दीं और फ़रमाया इन्हें खैरात कर दे। तुम्हारा कुफ़्फारा हो जाएगा। वो बोला या रसूल अल्लाह! मदीने भर में मेरे बराबर कोई मोहताज नहीं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ये बात सुनकर हंसे यहाँ तक के दंदाने मुबारक आशकार हुए और फिर फ़रमाया: *इज़ हब फअतइमहू अहलका* जा अपने घर वालों को ही खिला दे तेरा कुफ़्फारा अदा हो जाएगा। (बुखारी शरीफ, सफ़ा 360, ज़िल्दः 1)

सबक़:- किसी सहाबा से बतक़ाज़ाऐ बशरीयत अगर कोई लग़ज़िश वाक़े हुई भी तो फौरन उसका तदारूक फ़रमाते। बे परवाही से काम नहीं लेते थे। और माफी के लिए वो बारगाहे नबव्वी ही में हाज़िर होते। इसलिए के उनका ईमान ये था के खुशनूदी उसी दरेपाक से हासिल हो सकती है और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम का ये ईमान था के हमारे हुज़ूर मालिक व मुख़्तार हैं और शरीयत उन्हीं के इर्शाद का नाम है, इसीलिए तो हुज़ूर के फ़रमाने पर के ग़ुलाम आज़ाद कर सकता है। दो महीने के लगातार रोज़े रख सकता है, साठ मिसकीनों को खाना खिला सकता? वो सहाबी यही फ़रमाते रहे के नहीं या रसूल अल्लाह! गोया उनका ईमान था के हुज़ूर कुफ़्फारा की इन तीनों क़िस्मों के सिवा अगर चाहें तो मेरे लिए कोई चौथी क़िस्म का कुफ़्फारा भी इर्शाद फ़रमा सकते हैं। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने भी अपने मुख़्तार होने पर अपनी मोहर तसदीक़ यूं सिब्त फ़रमा दी के अच्छा जाओ तुम्हारे लिए हम कुफ़्फारा ये मुक़र्रर फ़रमाते है। के बजाए कुछ देने के, लिए जाओ। और फिर जब इस सहाबी ने ये अर्ज़ किया के मदीने भर में मेरे बराबर कोई मोहताज नहीं तो यूं फ़रमाया के अच्छा जाओ खुद ही खा लो। तुम्हारा कुफ़्फारा हो जाएगा गोया जहाँ सारे मुसलमानों के लिए रोज़ा तोड़ने का कुफ़्फारा ये है के ग़ुलाम आज़ाद करे या मुतावातिर साठ रोज़े रखे या साठ मिसकीनों को खानें खिलाए वहाँ सिर्फ़ उसी सहाबी के लिए सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने कुफ़्फारा ये मुक़र्रर फ़रमाया के तुम्हारा कुफ़्फारा ये है के तुम बजाए

Scanned by CamScanner

कुछ देने के हमारी जानिब से ले जाओ और बजाए किसी पर खर्च करने के खुद ही खा भी लो ये है सरकार मदीना की बारगाह बेकस पनाह...

ये वही हैं जो बख़्श देते हैं
कौन इस जुर्म पर सज़ा ना करे

फिर जो लोग हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मालिक व मुख़्तार होने पर शुबह करें किस क़द्र नावाक़िफ हैं।

हिकायत नम्बर(245) सोने की अंगूठी

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में बहुत ग़नीमत का माल हाज़िर था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उसे तक़्सीम फ़रमा रहे थे। जब सारा माल आप बाँट चुके तो एक सोने की अंगूठी बच गई। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नज़र मुबारक उठा कर सहाबा इक्राम को देखा और फिर नज़र मुबारक नीची कर ली। फिर नज़र उठा कर मुलाहेज़ा फ़रमाया फिर निगाह मुबारक नीची कर ली फिर नज़र उठा कर देखा और हज़रत बराअ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को बुलाया। हज़रत बराअ हाज़िर हुए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया बैठ जाओ बराअ बैठ गए हुज़ूर ने अंगूठी लेकर हज़रत बराअ की कलाई थाम ली और फिर फ़रमाया पहन ले जो कुछ तुझे अल्लाह रसूल पहनाते हैं। हज़रत बराअ ने वो अंगूठी पहन ली। उसके बाद दोस्तों ने हज़रात बराअ से फ़रमाया। इसे बराअ तुम ये सोने की अंगूठी क्यों पहनते हो जब के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उससे मुमानअत फ़रमाई है हज़रत बराअ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने सारा वाक़ेया सुनकर जवाब दिया के जो अंगूठी मुझे खुद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ये फ़रमा करके "पहन ले" पहनाई है। मैं क्यों ना पहनूं। (इब्ने अबी शीबा, अलअम्न व अलअला सफ़ा 168)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का इर्शाद ही शरीअत है वो जिस चीज़ से रोक दें वो ना जायज़ है और वो जिस किसी को किसी चीज़ की इजाज़त दे दें उसके लिए वो जायज़ है। चुनाँचे सोने की अंगूठी और सारे मुसलमानों के लिए तो हराम और सिर्फ हज़रत बराअ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के लिए जायज़। इसीलिए हज़रत बराअ वो अंगूठी पहनते रहे।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(246) सरदार हवाज़न

ग़ज़वा-ए-हुनैन में जब मुशरिकीन भाग गए तो उस लड़ाई में क़बीला हवाज़न के सरदार मालिक बिन ओफ भी भागे और तायफ में जाकर पनाह गज़ीर हो गए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के मालिक बिन औफ अगर ईमान लाकर हाज़िर हो तो हम उसके अहलो माल उसे वापस दे देंगे। ये ख़बर मालिक बिन ओफ को पहुँची तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और ईमान ले आए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उनके अहलो माल उन्हें वापस दे दिए और सौ ऊँट अपने ख़ज़ाने करम से अता किए रहमत आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बहेर रहमत का जोश मुलाहेज़ा फ़रमा कर हज़रत मालिक बिन ओफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को मुख़ातिब फ़रमा कर ये क़सीदा अर्ज़ किया...

मा इन राऐतू वला समीअतू बिवाहीदिन
फीन्नास कुल्लीहिम कमिस्ली मोहम्मदी
ओफा व आता लिलजज़ीयली लिमुजतदी
व मता तशा युख़्बिरूका अम्मा फी ग़दी

मैंने तमाम जहान के लोगों में मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मिस्ल कोई ना देखा ना सुना। हुज़ूर सबसे ज़्यादा वफा फ़रमाने वाले और सबसे ज़्यादा तर सायल को कसरत के साथ अता फ़रमाने वाले हैं और जब तू चाहे हुज़ूर कल की ख़बर बता दें। " (असाबा सफ़ा 352, वअलअमन व अलअला सफ़ा 203)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहे अलेह व सल्लम माँगने वालों के लिए दाता हैं और हुज़ूर कल की बात को भी जानने वाले हैं फिर अगर कोई शख़्स हुज़ूर को अपनी मिस्ल बशर कहे या यूं कहे के हुज़ूर कुछ नहीं दे सकते। या क्यों कहे के हुज़ूर को आईंदा की बात का और ग़ैब का कोई इल्म ना था, वो किस क़द्र जाहिल और सहाबा इक्राम के अक़ीदे का मुख़ालिफ है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम की शैरों में नअत ख़्वानी करना बिदअत नहीं बल्के सहाबा इक्राम की सुन्नत है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(247) कमाले अद्ल

हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाह तआला अन्ह के अहेदे ख़िलाफत में हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मिस्र के गवरनर थे। एक बार हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे ने एक मिस्री शख़्स के साथ दौड़ की तो वो मिस्री शख़्स आगे निकल गया। साहबज़ादे को ग़ुस्सा आया और वो उस मिस्री शख़्स को कोड़े मारने लगे। मिस्री इस ज़ुल्म की फ़रयाद लेकर हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बारगाह में हाज़िर हो गया और फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से फ़रयाद की के मुझे गवरनर के बेटे ने नाहक़ कोड़े मारे हैं। हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमान नाफिज़ किया के उमरो बिन आस अपने बेटे के हमराह हाज़िर हों। चुनाँचे फ़रमान फारूक़ी पाकर गवरनर मअे बेटे के हाज़िर हुए। अमीर-उल-मोमिनीन फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मिस्री को हुक्म दिया के कोड़ा ले, और अपने मारने वाले को मार। उसने बदला लेना शुरू किया और फारूक़े आज़म फ़रमाते जाते मारो उसको। हज़रत उन्स रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाते हैं के उसने इस क़द्र मारा के हम तमन्ना करने लगे के काश अब हाथ उठा ले। जब मिस्री फारिग़ हुआ तो फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया: अब ये कोड़ा उमरो बिन आस की चन्दिया पर रख। यानी ये वहाँ के हाकिम थे। उन्होंने क्यों ना दादरसी की और बेटे का क्यों लिहाज़ किया। मिस्री ने अर्ज़ किया! या अमीर-उल-मोमिनीन! उनके बेटे ही ने मुझे मारा था। उससे बदला मैं ले चुका। फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से फ़रमाया तुम लोगों ने बन्दगाने खुदा को कब से अपना ग़ुलाम बना लिया। हालाँके वो माँ के पेट से आज़ाद पैदा हुए थे। हज़रत उमरो बिन आस ने अर्ज़ की। या अमीर-उल-मोमिनीन ना मुझे ख़बर हुई ना ये शख़्स मेरे पास फ़रयादी आया तो फारूक़े आज़म ने उन्हें माफ फ़रमा दिया (अलअमन वअलअला सफ़ा 245)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के अहेद में हर मज़लूम की फ़रयाद सुनी जाती थी और ज़ालिम चाहे गवरनर का बेटा ही क्यों ना होता। उसे सज़ा मिल जाती थी और हर शख़्स आज़ादी से बहरावर था और ये भी मालूम हुआ के फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह वाक़ई फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह थे। अद्लो इंसाफ के बादशाह

Scanned by CamScanner

थे। और आपके ज़ात वाला सिफात पर सारी उम्मत को बजा तौर पर फख्र व नाज़ है...

हुसन दर आलम पस्ती सर रफ़अत अगरदारी
बया फर्क़ इरादत बरदर फारूक़े आज़म(र०अ०) सा

हिकायत नम्बर(248) खुदा की अमानत

हज़रत अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब घर वापस आए तो पूछा के लड़का कैसा है? आपकी बीवी उम्मे सलीम ने जवाब दिया। आराम में है, ये कहकर अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के आगे खाना रखा। जब खाना खाने से फारिग़ हुए तो उम्मे सलीम बोली के एक मसला तो बताईये मेरे पास अगर किसी ने कोई अमानत रखी हो और कुछ दिनों के बाद वो शख़्स अपनी अमानत वापस तलब करे तो क्या मुझे वापस दे देना चाहिए या नहीं? हज़रत अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाने लगे ये भी कोई पूछने की बात है फौरन वापस दे देना चाहिए। उम्मे सलीम ने कहा और वापस देकर उसका कोई रंजो ग़म तो नहीं करना चाहिए। अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बोले नहीं, वो बोली: तो फिर सुनिए! हमारा लड़का जो खुदा वंद करीम ने हमें अमानत दी थी वो वापस ले ली है और लड़के का इन्तिक़ाल हो गया है। अब सब्र कीजिएगा। अबु तलहा ने ये सुनकर सब्र किया। और रात गुज़रने के बाद सुबह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हुज़ूर से सारा माजरा अर्ज़ किया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। खुदा तआला आज रात तुम्हें लिए बाबर्कत करे। चुनाँचे अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को खुदा तआला ने एक लड़का अता फ़रमाया जब पैदा हुआ तो अबु तलहा उसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बारगाह में लाए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उसकी पैशानी पर हाथ फेरा और उसका नाम अब्दुल्लाह रखा। अब्दुल्लाह जब तक ज़िन्दा रहा। हुज़ूर के हाथ मुबारक फेरने की जगह यानी पैशनी बहुत नूरानी और रोशन नज़र आती थी। (हुज्जत-उल्लाह अलआलमीन सफ़ा 580)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान मर्द और औरतें सभी की रज़ा पर राज़ी थे। और उनके मुंह से कभी कोई ख़िलाफे शरअ आवाज़ ना निकली थी। और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम मुसीबत

Scanned by CamScanner

के वक़्त अपना दुखः दर्द बयान करने के लिए हुज़ूर ही की बारगाह में हाज़िर होते थे। और हुज़ूर की दुआओं से मुसतफीद होते थे और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर ना सिर्फ ये के खुद नूर हैं बल्के नूर अता फ़रमाने वाले भी हैं...

जो भी आता है लिए जाता है तोड़ा नूर का
नूर की सरकार है क्या उसमें तोड़ा नूर का

हिकायत नम्बर(249) खून मुबारक

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने एक मर्तबा पछनियाँ लगवाईं लगवाईं और जो खून मुबारक निकला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक सहाबी से फ़रमाया के उसे गिरा आओ वो सहाबी खून मुबारक को लेकर एक दीवार के पीछे गए और दायें बायें देखकर उस खून मुबारक को पी गए और जब वापस आए तो हुज़ूर ने फ़रमाया उस खून को क्या कर आए अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! उसे दीवार के पीछै ग़ायब कर आया हूँ फ़रमाया लेकिन किस जगह? उसने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मुझे आपका खून मुबारक ज़मीन पर गिराना या ज़मीन में दबाना बहुत गराँ मालूम हुआ के हुज़ूर के खून अक़्दस की बेअदबी ना हो और किसी का पाँऊ ऊपर ना आ जाए इसलिए मैंने तो उसे पी लिया है हुज़ूर ने फ़रमायाः *इज़ हब अहरज़ता नफसका मिनन्नार* जा तूने अपने आपको दोज़ख़ की आग से बचा लिया। (अलअनवार-उल-मोहम्मदिया, सफ़ा 140)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के दिलों में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का बेहद अदबो एहत्राम था और उसी अदबो एहत्राम के पेशे नज़र वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का खून मुबारक पी गए हालाँके हुज़ूर ने पी जाने का इर्शाद नहीं फ़रमाया था। मालूम हुआ के जो काम हुज़ूर के अदबो एहत्राम के पेशे नज़र किया जाए वो अगरचै हुज़ूर ने ना भी फ़रमाया हो तो भी वो अच्छा और दोज़ख़ से बचा लेने वाला होता है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ात बाबर्कत बे मिस्ल और मुमतनअे-उल-नज़ीर है एक हमारा खून भी है के कपड़े को या जिस्म को लग जाए तो कपड़ा और जिस्म नापाक हो जाता है और एक वो खून मुबारक भी है जिस जिस्म से लग गया वो जहन्नुम से आज़ाद हो गया।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(250) नाबीना सहाबी

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में एक नाबीना सहाबी हाज़िर हुए और अर्ज़ की या रसूल अल्लाह दुआ फ़रमाईये मैं अच्छा हो जाऊँ। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया: अगर चाहो तो ये बात मोख़्ख़र कर दूं अगर चाहूं तो अभी दुआ करूं। उसने अर्ज़ किया या रसूल अल्ल्लाह! अभी दुआ फ़रमाईये, हुज़ूर ने फ़रमाया: अच्छा तो यूं करो। वज़ करो और दो रकअत नमाज़ पढ़ो। और ये दुआ माँगो।

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलूका व अतावज्जाहू इलेका बिमोहम्मदिन नबीय्यी अर्रहमती या मोहम्मदू इन्नी क़द तवज्जहतू बिका इला रब्बी फी हाज्जती हाज़िही लीतुक़्ज़ा ली अल्लाहुम्मा फशफ़्फीऊहू फिय्या

"इलाही मैं तुझ से माँगता और तेरी तरफ़ तवज्जह करता हूँ। तेरे नबी मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वसीले से जो मेहरबानी के बनी हैं। या रसूल अल्लाह! मैं हुज़ूर के वसीले से अपने रब की तरफ़ अपनी इस हाजत की तवज्जह करता हूँ ताके मेरी हाजत रवा हो या इलाही उन्हें मेरा शफीअ कर! उनकी शफाअत मेरे हक़ में क़बूल कर। (इब्ने माजा, सफ़ा 100)

चुनाँचे उस नाबीना सहाबी ने ऐसा ही किया और रावी कहते हैं के वो यूं अच्छे हो गए जैसे कभी नाबीना थे ही नहीं। (हाशिया इब्ने माजा सफ़ा मज़कूर)

सबक़:- सहाबा इक्राम इलेहिम-उर-रिज़वान मुसीबत के वक़्त इज़ाला मुसीबत के लिए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ करते थे और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का वसीला और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मदद तलब करना या मोहम्मद का नारा लगाना और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को हर्फ़े निदा से पुकारना शिर्क हर गिज़ नहीं है बल्के ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की अपनी तालीम है और हुज़ूर ने खुद सिखाया है के दुआ माँगो, तो मेरे वसीले से और मुझे पुकार कर माँगा करो। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सामने रह कर या अलग होकर। क़रीब होकर या दूर रह कर हर हालत में "या मोहम्मद" कह सकते हैं। इसलिए के इस नाबीना सहाबी को जो ये दुआ सिखाई तो इसमें ये बात नहीं

Scanned by CamScanner

फ़रमाई के नमाज़ पढ़कर दुआ का ऊपर का टुकड़ा तो अल्लाह तआला से अर्ज़ करना और इसके बाद फिर मेरे पास आकर "या मोहम्मद" से आख़िर तक अर्ज़ करना। मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का वसीला और आप से इसमदाद और नारा-ए-रिसालत ये सब बातें बड़ी अच्छी और मौजिबे इजाबत दुआ और बाइसे सद बर्कात हैं और सहाबा इक्राम का उन पर अमल था।

हिकायत नम्बर(251) एक हाजतमंद

एक हाजतमंद शख़्स अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बारगाह में अपनी किसी हाजत के लिए हाज़िर हुआ करते थे। मगर हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह उनकी तरफ़ इलतिफात ना फ़रमाते थे। और ना उनकी हाजत पर ग़ौर फ़रमाते थे। एक दिन वो हाजतमंद हज़रत इब्ने हनीफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से मिले। ओर उनसे शिकायत की के मुझे एक बड़ी ज़रूरत है। मगर अमीर-उल-मोमिनीन मेरी तरफ़ तवज्जह ही नहीं फ़रमाते। हज़रत इब्ने हनीफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया तुम वज़ू करके मस्जिद में जाओ और दो रकअत नमाज़ पढ़ो। फिर यूं दुआ करो

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलूका वअतूवज्जाहू इलेका बिनाबय्यना मोहम्मदिन सल-लल्लाहो अलेह व सल्लमा नबय्यी अर्हमती या मोहम्मदू इन्नी अतवज्जाहू बिका इला रब्बी फयक़्ज़ी हाजती

"इलाही! मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी तरफ़ हमारे नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम नबी रहमत के वसीले से मुतवज्जह होता हूँ। या रसूल अल्लाह! मैं हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वसीले से मुतवज्जह होता हूँ। या रसूल अल्लाह! मैं हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वसीले से अपने रब की तरफ़ तवज्जह करता हूँ के मेरी हाजत रवा फ़रमाईये"

और फिर ये दुआ पढ़कर अपनी हाजत को याद करना और शाम को मेरे पास आना, ताके मैं तुम्हारे साथ चलूं। चुनाँचे उस शख़्स ने ऐसा ही किया और फिर अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दरवाज़े पर हाज़िर हुए तो दरबान आया। और हाथ पकड़ कर अमीर-उल-मोमिनीन के हुज़ूर ले गया। अमीर-उल-मोमिनीन ने उसे अपने साथ मसनद पर बिठा लिया और फ़रमाया कैसे आए? उसने अपनी हाजत

Scanned by CamScanner

पेश की। अमीर-उल-मोमिनीन ने फौरन वो हाजत पूरी फ़रमा दी। और फ़रमाया के इतनी देर तुम ने ये हाजत हम से बयान क्यों ना की।

और फ़रमाया! आईंदा जब कभी कोई हो हम से कह दिया करो। हम पूरी करेंगे। अब ये साहब बाहर निकले और हज़रत इब्ने हनीफ रज़ी अल्लाह तआला अन्ह से मिले और उनसे कहा: खुदा आपको जज़ा-ए-ख़ैर दे। अमीर-उल-मोमिनीन तो मेरी तरफ़ तवज्जह ही ना फ़रमाते थे। मगर आज तो उन्होंने बड़ी मेहरबानी फ़रमाई और मुझे खुद ही अन्दर बुला कर मेरी हाजत फौरन पूरी कर दी। इब्ने हनीफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह कहते हैं। खुदा की क़सम मैंने तुम्हारे बारे में अमीर-उल-मोमिनीन को कुछ नहीं कहा। मगर वाक़ेया ये के मैंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा के एक नाबीना हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी नाबीनाई की शिकायत हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम से की तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया तुम वज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़ो और ये दुआ पढ़ो। जो मैंने तुम को बताई है। खुदा की क़सम हम उठने भी ना पाए थे। बातें ही कर रहे थे के वा नाबीना हमारे पास बिलकुल बीना होकर आए। गोया कभी उनकी आँखों में कोई नुक़सान हुआ ही ना था। (तिबरानी शरीफ, सफ़ा 103 और हाशिया इब्ने माजा, सफ़ा 100)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान मुश्किल और हाजत के वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का वसीला इख़्तियार फ़रमाते थे और अपनी दुआओं में "या मोहम्मद" का नारा लगाया करते थे और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम का ये ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इस दुनयवी ज़िन्दगी में भी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का वसीला ज़रूरी है और आपके विसाल शरीफ के बाद भी आपका वसीला ज़रूरी है और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इस दुनयवी ज़िन्दगी में भी "या मोहम्मद" कहते रहे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के विसाल शरीफ के बाद भी ये नारा लगाते रहे।

हिकायत नम्बर(252) असीर रोम

हज़रत अबु क़रसाफा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का एक बेटा था जो इसाईयों के साथ एक जंग में लड़ते हुए पकड़ा गया और रोमी इसे क़ैदी बना

Scanned by CamScanner

कर अपने मुल्क में ले गए और जेल में डाल दिया। हज़रत अबु क़रसाफा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह उस वक़्त असक़लान में थे। आपको जब अपने बेटे की गिरफ़्तारी का और जेल में डाल दिए जाने का इल्म हुआ तो आप अपने शहर से हर नमाज़ के वक़्त अपने बेटे को यूं पुकारते:

"या फलान अस्सलात" यानी ऐ बेटे नमाज़ का वक़्त हो गया।

हज़रत अबु क़रसाफा रज़ी अल्लाह तआला अन्ह की ये आवाज़ उनका बेटा जेल में सुन लेता और जवाब देता, हालाँके बाप बेटे के दरमियान समुंद्र हायल था। (तिबरानी शरीफ सफ़ा 90)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान में निदा-ए-ग़ायबाना का रिवाज था और वो दूर से हर्फ "या" के साथ किसी ग़ायब शख़्स को पुकारना मना नहीं समझते थे और वो दूर की आवाज़ सुन भी लिया करते थे फिर जिस मेहबूब (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) के ग़ुलामों में दूर की आवाज़ सुन लेने की ताक़त है वो मेहबूबे पाक सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम खुद क्यों दूर की आवाज़ सुन नहीं सकते? सुनते हैं और ज़रूर सुनते हैं...

दूर व नज़दीक के सुनने वाले वो कान
काने लअले करामात पे लाखों सलाम

हिकायत नम्बर(253) नअत ख़्वानी

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जब ग़ज़्वा-ए-तबूक से वापस तशरीफ़ लाए और सहाबा इक्राम समेत मदीना मुनव्वरह में दाख़िल हुए तो मदीने वालों में मुसर्रत की एक लहर दौड़ गई और हुज़ूर के इसतक़बाल के लिए सब आगे बढ़े उस वक़्त हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आगे बढ़कर अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! मेरी ख़्वाहिश है के मैं हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ कुछ नातिया अश्आर अर्ज़ करूं और नात पढ़ूं। या रसूल अल्लाह! मुझे नात ख़्वानी की इजाज़त दीजिए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया *"कुल ला युफज़िज़ल्लाहो फाका"* "कहो जो कहना है अल्लाह तुम्हारे मुंह को सलामत रखे"

हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाह तआला अन्ह ने बारगाहे नबुव्वी से इजाज़त पाकर शैरों में नात ख़्वानी की और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को मुख़ातिब करके उन ख़यालाते आलिया का इज़हार फ़रमाया:

Scanned by CamScanner

"या रसूल अल्लाह! आप क़ब्ल पैदाईश में पाक व साफ थे और नूर थे। हज़रत नूह अलेहिस्सलाम की कश्ती पर भी आप रोनक़ अफरोज़ थे और हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम की पुश्त में भी आपका नूर जलवागर था जब वो आग में डाले गए और जब आप पैदा हुए तो आपके नूर से ज़मीनो आसमान मुनव्वर हो गए और आपकी अज़मत व बुज़ुर्गी बड़े बड़े आली नसब वालों पर हावी है। हुज़ूर! हम आपकी के नूर और आप ही की रोशनी में हैं और आप ही के नूर की बदौलत हम हिदायत में तरक्क़ी कर रहे हैं।" हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाह तआला अन्ह की इस नात ख़्वानी से बड़े खुश हुए। (मवाहिब-उल-लुदनिया सफ़ा 175, जिल्द:1)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन में नात ख़्वानी का रिवाज था और वो पाक लोग अपने हुज़ूर की नसरन व नज़मन नात ख़्वानी किया करते थे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने ग़ुलामों के मुंह से अपनी नात ख़्वानी सुन कर खुश हुआ करते थे और अपने नात ख़्वाह के लिए ये दुआ फ़रमाते थे के अल्लाह तुम्हारे मुंह को सलामत रखे। मालूम हुआ के जिस मुंह से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नात ख़्वानी होगी। वही मुंह सलामत है। यहाँ भी और वहाँ भी और ये भी मालूम हुआ के नात ख़्वानी बिदअत नहीं है बल्के सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का भी यही मामूल था।

हिकायत नम्बर(254) मेहबूब का अदब

हज़रत बराअ इब्ने आज़िब रज़ी अल्लाह तआला अन्ह से किसी शख़्स ने मसला पूछा के किन किन जानवरों की क़ुर्बानी दुरूस्त नहीं? हज़रत बराअ इब्ने आज़िब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जवाब दिया के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक रोज़ हम में खड़े हुए और फ़रमाया के चार क़िस्म के जानवर हैं जिनकी क़ुर्बानी जायज़ नहीं। एक वो जिसकी आँख फूटी हो। दूसरा वो जो सख़्त बीमार हो। तीसरा वो जिसका लंग ज़ाहिर हो। चौथा वो जो निहायत दुबला हो और उसको हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपनी उंगलियों पर गिन कर फ़रमाया था। लेकिन मेरी उंगलियाँ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उंगलियों जैसी नहीं, छोटी हैं।" (इब्ने माजा सफ़ा 234)

सबक़:- सहाबा इक्राम के दिलों में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला

Scanned by CamScanner

अलेह व सल्लम का इन्तिहाई अदब था। चुनाँचे देख लीजिए के हज़रत बराअ रज़ी अल्लाह तआला अन्ह ने इस रिवायत को बयान किया तो अदब से इजाज़त नहीं दी के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उंगलियों की हिकायत अपनी उंगलियों से करें और जब ये कहा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस तरह अपने हाथ की उंगलियों पर गिन कर बताया तो साथ ही फौरन कह दिया "लेकिन मेरी उंगलियाँ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उंगलियों जैसी नहीं गोया अपनी उंगलियों से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उंगलियों की हिकायत को ख़िलाफ अदब समझा और गुस्ताख़ी समझा फिर जो लोग हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बड़ी बेबाकी से अपने जेसा बशर कह देते हैं, ग़ौर फ़रमा लीजिए वो किस क़द्र बे अदब और ना आशना-ए-रसूल हैं...

बड़े बे अदब और गुसताख़ हैं जो
उन्हे अपना जैसा बशर देखते हैं

हिकायत नम्बर(255) रसूल अल्लाह की दुहाई

हज़रत अबु मसऊद बदरी रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक रोज़ अपने ग़ुलाम को किसी बात पर मारने लगे। वो ग़ुलाम पिटने लगा, तो बाआवाज़ बुलंद कहने लगा "अल्लाह की दुहाई" हज़रत अबु मसऊद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हाथ ना रोका, और मारना जारी रखा। ग़ुलाम ने देखा के जब अल्लाह की दुहाई से मेरी ख़ुलासी नहीं हुई तो उसने ज़ोर से कहना शुरू किया "रसूल अल्लाह की दुहाई", "रसूल अल्लाह की दुहाई" रसूल अल्लाह का नाम सुनते ही हज़रत अबु मसऊद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फौरन हाथ रोक लिया और छोड़ दिया इतने में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ ले आए और अबु मसऊद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से फ़रमाया: खुदा की क़सम! अल्लाह तआला तुझ पर इससे ज़्यादा क़ादिर है जितना तू इस ग़ुलाम पर क़ादिर है।" हज़रत अबु मसऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्ह ने इर्शाद सुनकर फौरन वो ग़ुलाम आज़ाद कर दिया। (सही मुस्लिम शरीफ अलअमन व अलअला सफ़ा 77)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान मुश्किल के वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दुहाई दिया करते थे और अल्लाह तआला उस नाम पाक की बर्कत से उनकी मुश्किल दूर कर दिया

Scanned by CamScanner

करता था। फिर आज हम भी अगर मुश्किल के वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दुहाई दें और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को पुकारें तो हमारी मुश्किल भी क्यों दूर ना होगी। यक़ीनन होगी! और मालूम हुआ के मुश्किल के वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दुहाई देना शिर्क नहीं है। बल्के सहाबा इक्राम का भी यही मामूल था पस ऐ मुसलमानो!...

बैठते उठते हुज़ूरे पाक से
इल्तिजा व इसतआनत कीजिए
या रसूल अल्लाह दुहाई आपकी
गो शुमाली अहले बिदअत कीजिए

हिकायत नम्बर(256) अहमद मुख़्तार

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मिंबर पर जलवा अफरोज़ हुए और सहाबा इक्राम को मुख़ातिब फ़रमा कर इर्शाद फ़रमायाः सुनो अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दे को इख़्तियार दे दिया है के वो जब तक चाहे दुनिया में रहे या वो अपने रब की मुलाक़ात को पसंद करे, पस उस बन्दे ने अपने रब की मुलाक़ात को इख़्तियार कर लिया है, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का ये इर्शाद सुनकर हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह रोने लगे। सहाबा इक्राम ने सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाह तआला अन्ह को रोते हुए देखा तो बड़े हैरान हुए के ये रोने क्यों लगे। फिर जब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का विसाल शरीफ हुआ तो सहाबा इक्राम ने फ़रमाया के अब हम समझे के सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह सुनकर क्यों रोए थे *फकाना रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह हुवल मुख़य्यरू व काना अबु बक्री आलमना* पस वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ही थे। जिन्हें अल्लाह ने इख़्तियार दे दिया था और सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह वाक़ई हम सबसे ज़्यादा समझदार थे। (मिशकात शरीफ सफ़ा 546)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का ईमान था के रसूल अल्लाह सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम मुख़य्यर व मुख़्तार हैं और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने भी इसी हक़ीक़त का बयान फ़रमाया था के मैं मिनजानिब अल्लाह मुख़्तार हूँ और मेरा दुनिया में रहना

Scanned by CamScanner

या विसाल फ़रमा जाना मेरे इख़्तियार में है और ये इख़्तियार मुझे अल्लाह तआला ही ने दिया है। मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का विसाल फ़रमा जाना हुज़ूर के अपने इख़्तियार से था। आपने चाहा तो आपका विसाल हुआ।

बरअक्स उसके हम भी हैं। जो मरना नहीं चाहते लेकिन मर जाते हैं। ना अपनी मर्ज़ी से आते है। और ना अपनी मर्ज़ी से मरते हैं बक़ौल शायर...

लाई हयात आए क़ज़ा ले चली चले
अपनी खुशी ना आते ना अपनी खुशी चले

फिर अगर कोई शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मिस्ल बनने लगे और यूं कहे के वो हमारे जैसे बशर थे तो किस क़द्र ज़ुल्म है और ये भी मालूम हुआ के सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह सारे सहाबा इक्राम से आलम व अफ़्ज़ल और बालिग़-उन-नज़र थे इसीलिए जब हुज़ूर ने फ़रमाया के अल्लाह ने अपने एक बन्दे को इख़्तियार दे दिया है तो आप फौरन समझ गए के ये खुद हुज़ूर ही हैं और हुज़ूर अपने ही विसाल की ख़बर दे रहे हैं और रोना शुरू कर दिया।

हिकायत नम्बर(257) मुक़द्दस शायर

ग़ज़्वा-ए-ख़ैबर को जाते हुए हज़रत आमिर इब्ने अलअकूअ रज़ी अल्लाहो अन्ह कुछ अश्आर पढ़ रहे थे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उनके अश्आर सुनकर फ़रमाया ये कौन है? सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! ये आमिर है। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया *यरहमू हुल्लाहू* यानी इस पर अल्लाह रहमत फ़रमाए और चूंके हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ऐसी जगह किसी ख़ास शख़्स के लिए दुआऐ मग़फिरत फ़रमाते थे तो वो शख़्स शहीद हो जाता था। इसलिए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का ये फैसला सुनकर हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह बोल उठे, यो रसूल अल्लाह! *लोला अमतअना बिही* आपने हमें उनसे नफा क्यों ना लेने दिया? अब तो वो इस ग़ज़्वे में शहीद हो जाएँगे हुज़ूर! आप उन्हें अभी ज़िन्दा रखते ताके हम उनसे बहरामंद होते। (बुखारी शरीफ सफ़ा 603)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिस शख़्स को ज़िन्दा रखना चाहें, ज़िन्दा रख सकते हैं। और जिसके मुतअल्लिक़ इस मौक़े पर *यरहमू हुल्लाहू*

Scanned by CamScanner

फ़रमा दें उसके लिए शहादत वाजिब हो जाती है। फिर जो शख़्स ये कहे के रसूल अल्लाह के चाहने से कुछ नहीं होता वो किस क़द्र जाहिल है।

हिकायत नम्बर(258) मुक़द्दस पानी

एक मुक़ाम पर हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम ने वज़ू फ़रमाया। तो हज़रत बिलाल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हुज़ूर के वज़ू से बचा हुआ पानी ले लिया, दीगर सहाबा इक्राम ने जब देखा के बिलाल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वज़ू का बचा हुआ पानी है तो वो हज़रत बिलाल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की तरफ़ दौड़े और इस मुक़द्दस पानी को हासिल करने की कोशिश करने लगे और जिस किसी को इस पानी से थोड़ी बहुत तरी मिल गई। उसने उसे अपने मुंह पर मल लिया और जिस किसी को ना मिल सकी तो उसने किसी दूसरे के हाथ से तरी लेकर मुंह पर हाथ फैर लिया। (मिशकात शरीफ सफ़ा 65)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान को हर चीज़ से जिसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कोई निसबत हासिल हो गई। मोहब्बत व प्यार था और वो उसे वाजिब-उल-ताज़ीम समझते थे और उससे बर्कत हासिल करते थे, मालूम हुआ के "तबर्रूक" कोई नई बात और बिदअत नहीं बल्के सहाबा इक्राम का भी मामूल था और ये भी मालूम हुआ के अपने वज़ू के बचे हुए पानी को बतौर तबर्रूक लेकर अपने चहरों पर मल लेने का हुक्म हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं दिया था मगर सहाबा इक्राम फिर भी ऐसा करते थे और ये उनका फैल मोहब्बत की वजह से था जो ऐन ईमान है, इसी तरह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने जलूस मीलाद, मेहफिल मिलाद या अज़ान में नाम पाक सुनकर अंगूठे चूमने का हुक्म अगर ना भी दिया हो तो भी जो शख़्स मोहब्बत की वजह से ऐसा करेगा वो इंशाअल्लाह सहाबा इक्राम के सदक़े में सवाब पाएगा।

हिकायत नम्बर(259) तबुर्रूकाते आलिया

हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की एक चादर मुबारक, एक क़मीस मुबारक, चन्द बाल मुबारक और कुछ नाख़ून मुबारक थे, हज़रत मुआविया

Scanned by CamScanner

रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को उनसे बड़ी मोहब्बत थी और इन तबर्रूकात आलिया को वो जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ समझते थे। आपके विसाल शरीफ का जब वक़्त क़रीब आया तो आपने वसीयत फ़रमाई के जब मर जाऊँ तो मुझे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की क़मीस का कफ़न पहनाना और चादर मुबारक में मुझे लपेटना और मेरे सज्दे की जगहों पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बाल मुबारक और नाखून मुबारक बाँध देना चुनाँचे आपके विसाल शरीफ के बाद ऐसा ही किया गया और ये अज़ीम-उल-मुरतबत सहाबी रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उन तबर्रूकात आलिया की बर्कतों और रहमतों में लिपटे हुए दफ़्न किए गए। (शरह-अल-शिफा सफ़ा 420 जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बड़ी मोहब्बत थी और हुज़ूर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के बर्कात आपकी ज़िन्दगी में भी आपके पास रहे और क़ब्र में भी ये तबर्रूकात आपके साथ ही रहे यानी रहमत हक़ यहाँ भी आपके साथ रही और वहाँ भी साथ ही रही।

हिकायत नम्बर(260) इब्रत आमोज़ ख़्वाब

हज़रत मौलाना मुफ़्ति मोहम्मद अब्दुल अज़ीज़ साहब मज़ंग लाहौर का एक मज़मून माह तय्यबा शुमारह दिसम्बर 1965ई॰ में शाय हुआ था। जिसमें हज़रत मोसूफ ने हज़रत मौलाना नूर बख़्श साहब तवक्कली एम ऐ रहमत-उल्लाह अलेह की किताब तज़करह नक़्शबन्दिया में से हस्बे ज़ेल एक वाक़ेया नक़्ल फ़रमाया था। इसे पढ़िये और इब्रत हासिल कीजिए!

एक सय्यद तालिब इल्म का बयान है के जो लोग हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से लड़े मुझे उनसे बिलअमूम और हज़रत मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से बिलख़सूस नफ़रत थी। एक रोज़ मैं मुजद्दिद अलिफ सानी अलेहिर्रहमत के मक़्तूबात का मुतालेआ कर रहा था के उसमें ये लिखा देखा के हज़रत इमाम मालिक अलेहिर्रहमत हज़रत शेखेन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को गाली देने वाले को जो हद लगाते थे। वही हद हज़रत मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को गाली देने वाले पर भी जारी करते थे। मैंने ये पढ़कर ग़ुस्से की हालत में मक्तूबात को ज़मीन पर फैंक दिया और सो गया, ख़्वाब में मैंने देखा के हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी अलेहिर्रहमत ग़ुस्से की हालत में तशरीफ़ लाए और अपने हाथों से मेरे

Scanned by CamScanner

दोनों कानों को पकड़ कर फ़रमाने लगे। ऐ तुफ़्ल नादाँ! तू भी मेरी तहरीर पर एत्राज़ करता है? और उसे ज़मीन पर फैंकता है? अगर तू मेरे क़ौल को मोअतबर नहीं समझता तो आ तुझे हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ही के पास ले चलूं जिनकी ख़ातिर उनके भाईयों यानी सहाबा इक्राम को बुरा कहता है। चुनाँचे हज़रत मुजद्दिद साहब मुझे कुशाँ कुशाँ एक बाग़ में ले गए और मुझे उस बाग़ के किनारे ठहरा कर खुद एक महल की तरफ़ जो उस बाग़ में नज़र आ रहा था। चले गए मैंने देखा के वहाँ एक नूरानी शक्ल बुज़ुर्ग बैठे हुए थे। हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी अलेहिर्रहमा ने बड़ी तवाज़ो से उनको सलाम कहा, वो भी बड़ी खुशी से आपको मिले उसके बाद हज़रत मुजद्दिद साहब उस बुज़ुर्ग के आगे दो ज़ानो बैठ गए और कुछ अर्ज़ किया। हज़रत मुजद्दिद साहब और वो बुज़ुर्ग दोनों मेरी तरफ़ देखते और इशारा करते थे। मुझे यक़ीन हो गया के वो मेरी निसबत कुछ कह रहे हैं। कुछ देर के बाद हज़रत मुजद्दिद साहब ने उठ कर मुझे नज़दीक बुलाया और फ़रमाया के ये बुज़ुर्ग जो बैठे हुए हैं। हज़रत शेरे खुदा अली अलमुर्तज़ा कमरमल्लाहो वजह हैं सुनो क्या फ़रमाते हैं।

मैंने सलाम अर्ज़ किया हज़रत अली करमल्लाहो वजह ने फ़रमाया "ख़बरदार! हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के असहाब से कोई कदूरत अपने दिल में ना रखो और उनकी मलामत ज़बान पर ना लाओ। हम जानते हैं और हमारे भाई के किन नेक नीयतों से हमारे और उनके दरमियान झगड़ा होता था।"

और फिर हज़रत मुदद्दिद साहब का नाम लेकर फ़रमाया के "उनकी तहरीर से हर गिज़ मुंह ना फैरना।"

हज़रत अली अलमुर्तज़ा करमल्लाहो वजह की इस नसीहत के बावजूद मैंने देखा के सहाबा इक्राम की नफरत बदस्तूर मेरे दिल में बाक़ी है। हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया के उसका दिल अभी साफ नहीं हुआ। और फिर हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी साहब की तरफ़ मुझे तमाँचा मारने का इशारा फ़रमाया चुनाँचे मुजद्दिद साहब ने मुझे एक ज़ोरदार तमाँचा मारा। उस वक़्त मेरे दिल सहाबा इक्राम के बुग्ज़ से पाक व साफ हो गया और इस असना मेरी नींद खुल गई। अब मैं अपने सीने को सहाबा इक्राम के कीना से पाक पाता हूँ और हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह कें कलाम की बाबत मेरा हुस्न ऐतमाद सौ गुना ज़्यादा हो गया है।

Scanned by CamScanner

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान सबके सब हमारे लिए वाजिब-उल-ताज़ीम हैं और किसी एक से भी बुग्ज़ व नफरत रखना बेहद बुरा हज़रत अली अलमुर्तज़ा करमल्लाहो वजह की भी नाराज़गी का मौजिब है।

हिकायत नम्बर(261) भिड़ों का हमला

इब्ने मुख़्तार तलमेसी फ़रमाते हैं के एक शख़्स ने ये किस्सा बयान किया के हम एक सफर में थे और हमारे हमराह एक ऐसा बद गो शख़्स भी था जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सहाबा इक्राम से बैर रखता था। ये गुसताख़ राह में हज़ारात सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान की शान में नाज़ेबा अल्फाज़ कहने लगा। हमने रोका मगर वो किसी सूरत बाज़ ना आया। रास्ते में हम एक जगह ठहरे और ये शख़्स किसी काम को बाहर निकला तो अचानक बहुत सी भिड़ों ने उस पर हमला कर दिया। ये चिल्लाया हम उसकी मदद को दौड़े तो भिड़ों ने हमारा तआक्क़ब करके हमें उसके पास ना पहुँचने दिया के उन भिड़ों ने उस गुसताख़ को हलाक कर दिया। (हयात-उल-हैवान सफ़ा 8 जिल्द: 3)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान से अदावत व बैर रखना बड़ी ख़तरनाक चीज़ है। हर मुसलमान को इस मोहलक चीज़ से इजतिनाब रखना लाज़िम है।

हिकायत नम्बर(262) गश्ती फ़रमान

जंग सफैन जब ख़त्म हो गई तो हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने एक गश्ती फ़रमान लिखकर इत्राफे मुल्क में रवाना फ़रमाया जिसमें ये तहरीर फ़रमाया के:

"हमारे काम का आग़ाज़ यूं हुआ के हम में और अहले शाम की एक क़ौम में मुक़ाबला हुआ, और ज़ाहिर है के हमारा और उनका खुदा एक है और हमारा और उनका नबी एक है और हमारी और उनकी दअवते इस्लाम यक्साँ है। अल्लाह पर ईमान रखने में और तसदीक़े रसूल में ना हम उनसे ज़्यादा होने के मुद्दई हैं, ना वो हमसे ज़्यादा होने के मुद्दई हैं। हमारे और उनके दरमियान सिर्फ खून उस्मान (रज़ी अल्लाहो अन्ह) का झगड़ा है और हम इस खून से बरी हैं" (नहज-उल-बलाग़त क़िस्म दो सफ़ा 118)

सबक़:- सहाबा इक्राम और अहले बैत अेज़ाम रज़ी अल्लाहो तआला

Scanned by CamScanner

अलेहिम अजमईन सबका दीन व मज़हब एक था जो तरीक़ा व तर्ज़े अमल अहले बैत अेज़ाम का था। वही सहाबा इक्राम भी था। तौहीद व रिसालत उसूल व फरूअ, सियासत, व इमारत और इरादत व अक़ीदत में ये सब हज़रांत मुत्तहिद व मुत्तफिक़ थे। उनमें से किसी एक पर भी किसी क़िस्म का तान करना ज यज़ नहीं। ये सब हज़रात अल्लाह के मेहबूब के मेहबूब हैं। (रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन)

हिकायत नम्बर(263) मशवरा

अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ग़ज़्वा-ए-रोम के मौक़े पर हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से मशवरा तलब फ़रमाया के इस ग़ज़्वे में मैं बज़ाते खुद शिर्कत करूं या ना? हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हस्बे ज़ेल मशवरा दिया।

अल्लाह तआला इस दीन वालों को ग़ालिब फ़रमाने का ज़ामिल है।

अल्लाह वो है जिसने मुसलमानों की उस वक़्त भी मदद फ़रमाई थी जब के वो थोड़े थे और दूसरा कोई उनका मददगार ना था और उनकी हिफाज़त फ़रमाई थी जब के वो थोड़े थे और दूसरा कोई उनकी हिफाज़त करने वाला ना था। ऐ उमर! अगर आप बज़ाते खुद चले गए और दुश्मन से मुक़ाबला हुआ। आपको कोई तकलीफ पहुँची तो फिर मुसलमानों की कोई जाए पनाह ना रहेगी क्योंके मुसलमानों के लिए सिवाए आपके कोई और मरजअे नहीं इसलिए आप किसी और को भेज दें, खुद ना जाएँ।" (नहज-उल-बलाग़त तक़्तीअ् खूर्द मतबूआ मिस्र सफ़ा 271)

सबक़:- इस मशवरे में हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाह तअला अन्ह ने जिस दीन की हिफाज़त का मुतकुफ़्ल और मुहाफिज़ अल्लाह को फ़रमाया था। इसी दीन को हज़रत उमर और दीगर सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान इसी सच्चे दीन के अलम्बरदार थे और जिस दीन की पसंदीदगी का एलान अल्लाह ने क़ुरआन में फ़रमाया है और वो दीन में कामिल। दीन के हामिल और दीन पर आमिल थे और जिस शख़्स को मआज़ अल्लाह सुम्मा मआज़ अल्लाह) उन पाक लोगों के दीन में किसी क़िस्म का कोई शुबह हो तो वो खुद अपने ही दीन व ईमान की फिक्र करे।

Scanned by CamScanner

छटा बाब

अहले बैत अेज़ाम

रिज़वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

इन्नामा यूरीदूल्लाहू लियुज़हिबा अनकुम रिजसा अहलल बैती व यूतहिर्राकुम ततहीरा (प: 22, रूकू : 1)

अल्लाह तू यही चाहता है ऐ नबी के घर वालो! के तुम से हर ना पाकी दूर माफिदे और तुम्हें पाक करके खूब सुथरा कर दे। (कुंज़-उल-ईमान)

हिकायत नम्बर (264) उम्म-उल-मोमिनीन ख़दीजात-उल-कुबरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा

ख़वील्द नामी एक शख़्स अहले कुरैश में बड़ा अमीर कबीर शख़्स था। उसकी एक लड़की थी जिसका नाम ख़दीजा था। ये लड़की निहायत ज़हीन आली दिमाग़ और सूरत व सीरत और अफ़्फत व असमत के लिहाज़ से मक्का भर में सबसे ज़्यादा मुमताज़ थी। खदीजा का बाप कुछ ज़र व माल छोड़ कर फौत हो चुका था, और ये भी अहेद शबाब में बेवा हो चुकी थी। सिवाए एक चचा ज़ाद भाई वरक़ा बिन नवफ़्फिल के उसका कोई असल वारिस ना था। लेकिन ख़दीजा ने अपनी क़ाबलियत से तिजारत का काम खुद संभाला और बड़ी तरक़्क़ी की।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के चचा अबु तालिब की सिफ़ारिफ़ से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ख़दीजा के तिजारती सिलसिले में काम करने लगे और जब आपने ख़दीजा के कारोबार में काम फ़रमाया तो ख़दीजा (रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा) के कारोबार में चन्द दिनों ही में बहुत तरक्क़ी हुई और ये कारोबार कहीं से कहीं जा पहुँचा। इस बर्कत और तरक़्क़ी का ख़दीजा (रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा) के दिल पर असर हुआ।

एक दिन ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा अपने महल के ऊपर खड़ी थी। धूप का वक़्त था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ ला रहे थे तो ख़दीजा ने देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह

Scanned by CamScanner

व सल्लम के सर पर बादल का साया है और जैसे जैसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम आगे बढ़ते हैं और वो बादल का टुकड़ा भी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सर पर साथ साथ बढ़ रहा है। ख़दीज़ा को देखकर बड़ा तअज्जुब हुआ, और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इज़्ज़त व तौक़ीर उसकी नज़रों में और भी ज़्यादा हो गई और एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बुला कर कहने लगी के मेरे क़ाफला-ए-तिजारत के साथ इस दफा आप भी तशरीफ़ ले जाएँ। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया "अच्छा जाऊँगा।"

ख़दीजा की तिजारत का बड़ा मोहतमिम ख़दीजा का आज़ाद कर्दा गुलाम मेसरा था जिसकी तहवील में तिजारत का सब हिसाब रहता था। हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने मेसरा को बुला कर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ ताकीदन कह दिया के इस साल क़ाफले के साथ ये भी जाएँगे। ये जो कुछ तुम लोगों को मशवरा दें। उनके मशवरे पर अमल करना, और सफर में उनकी ज़ात से जो कुछ वाकेयात गुज़रें, उनको अच्छी तरह याद रखना। मेसरा ने अपनी मालिका की ये हिदायात सुनकर उन पर अमल करने का इक़्रार कर लिया।

चन्द रोज़ बाद ये क़ाफला मक्का से शाम की तरफ़ रवाना हुआ। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम भी साथ थे। चन्द मनाज़िल तय करके जब इस क़ाफले ने एक इसाई पादरी नसतूरा नामी के गिर्जे के पास मंज़िल की तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिस दरख़्त के पास बैठे थे उस दरख़्त का साया हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर झुक आया। पादरी ये वाक़ेया देखकर मेसरा की तरफ़ आया और मुतअज्जिब होकर पूछने लगा ऐ मेसरा! इस साल तुम्हारे क़ाफले के साथ कौन नोजवान आए हैं? मेसरा ने कहा ये अहले क़ुरैश में से हैं पादरी ने कहा बेशक ये तुम्हारे क़ाफले ही के सरदार नहीं बल्के किसी दिन सारे जहाँ के सरदार होंगे।

मेसरा ने कहा! आपको ये कैसे मालूम हुआ? पादरी ने कहा उनकी आँखों में सुर्खी मालूम होती है और सिवाए नबी के इस दरख़्त के नीचे और कोई नहीं बैठा। मुझे तो ये नबी आख़िर-उज़्ज़माँ मालूम होते हैं। काश मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा रहता जब के ये मबऊस होंगे। इस तमन्ना के बाद पादरी ने मेसरा को ताकीद कर दी के उनसे किसी वक़्त जुदा ना होना। सच्चे इरादे

Scanned by CamScanner

और नेक नीयती से उनके साथ रहना क्योंके मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम वो हैं जिन्हें अल्लाह तअला शर्फे नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाएगा।

अलावा इस वाक़ये के और भी ऐसे ही वाक़ेयात रास्ते में गुज़रे आख़िर ये क़ाफला मुल्क शाम में पहुँचा और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बर्कत से हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा का तमाम सामान तिजारत इस साल दुगने चौगने मुनाफे पर फ़रोख़्त हो गया तो तमाम क़ाफले वाले खुश व खुर्रम अपनी मालिका ख़दीजा से इनामो इक्राम हासिल करने की खुशी में मक्का शरीफ की तरफ़ वापस हुए।

इन बाबर्कत वाक़ेयात से सब क़ाफले वालों के दिलों में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की पहले से भी ज़्यादा अक़ीदत पैदा हो गई थी। मेसरा अपनी मालिका की हिदायत के मुताबिक़ निहायत अदब से आपकी एक एक अदाऐ मुबारक और पेश आम्दा वाक़ेयात पर ग़ौर करता हुआ साथ साथ आ रहा था। जब ये क़ाफला मक्का के क़रीब पहुँचा तो सब में राय ये क़रार पाई के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी सवारी दौड़ाते हुए सय्यदा ख़दीजा को सामान तिजारत की फ़रोख़्त और काफी मुनाफे की खुशख़बरी देने सबसे पहले जाएँ।

चुनाँचे इस तजवीज़ के मुताबिक़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी सवारी दौड़ाते हुए जिस वक़्त ख़दीजा के महल की तरफ़ तशरीफ़ ला रहे थे। इत्तेफाक़न उस वक़्त ख़दीजा भी अपने महल की छत पर खड़ी थीं। जिन्हें उस सवार वलअतबार की अजीब शान नज़र आई। सवार का चहरा चाँद से ज़्यादा मुनव्वर था और उसके सर पर अब्र का टुकड़ा साया किए हुए साथ साथ दौड़ रहा था। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ये शान पाक हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा के दिल पर गहरा असर फ़रमा गई। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जब तशरीफ़ लाए और माल के चौगने मुनाफे पर फ़रोख़्त हो जाने की ख़बर सुनाई तो ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के दिल में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बर्कत व सीरत और अक़ीदत का ख़ास जज़्बा पैदा हो गया।

इतने में क़ाफले वाले भी आ गए। मेसरा ने अपनी मालिका से सफर के सारे हालात और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बर्कात का ज़िक्र किया और पादरी की नसीहत के अल्फाज़ भी सुनाए। हज़रत ख़दीजा

Scanned by CamScanner

रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को पुख़्ता यक़ीन हो गया के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम खुदा के बरगज़ीदा और मुक़र्रब इंसान हैं। जो हिदायत आलम के लिए पैदा हुए हैं।

कुछ दिनों तक तो हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा खामोश रहीं और एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को पैग़ामे निकाह़ दे दिया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने निहायत हया व शर्म के साथ ये जवाब मरहमत फ़रमाया: के इसके मुतअल्लिक़ मेरे चचा अबु तालिब की इजाज़त ज़रूरी है।

चुनाँचे हज़रत ख़दीजा रज़ी तआला अन्हा ने अबु तालिब के पास तोहफा तहायफ देकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ अपने निकाह का पैग़ाम इरसाल किया। अगरचै अबु तालिब को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह की उम्र शरीफ कम और हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की उम्र शरीफ ज़्यादा होने के बाइस ये पैग़ाम क़बूल करने में कुछ ताम्मुल था। लेकिन अपनी बीवी के मशवरे से पैग़ाम क़बूल का लिया और तारीख़ निकाह मुक़र्रर हो गई और विरक़ा बिन नवफ़िफल अबु तालिब, हमज़ा और दीगर रौसा मक्का की शिर्कत व मौजूदगी में निकाह हो गया और हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के उक़्द में आ गईं और निकाह के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा ने अपना तमाम माल व असबाब, जायदाद मनक़ूला वग़ैरा मनक़ूला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नज़्र करके बन्दगाने क़ुरैश से कहा के तुम लोग गवाह रहो मैं अपनी मर्ज़ी से तमाम माल व मताअ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में पेश करती हूँ। आज से ये सब कुछ इन्हीं का है चाहे अपने पास रखें या किसी को दें या राह खुदा में खर्च कर दें। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा की मर्ज़ी के मुताबिक़ तमाम ज़र व माल राहे खुदा में खर्च कर दिया और सब कनीज़ों, ग़ुलामों को आज़ाद करके हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा को भी अपने साथ ज़ाहिदाना ज़िन्दगी बसर करने का अमली सबक़ दिया। (मवाहिब लुदनिया जिल्द: 1, सफ़ा : 38 और तारीख़े इस्लाम सफ़ा : 60 ता 66)

सबक़:- उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा शराफ़त व निजाबत, सीरत व सूरत और खूबी क़िसमत में बहुत

Scanned by CamScanner

मुमताज़ दर्जे पर फायज़ थीं और सबसे पहले ये शर्फ आपको हासिल हुआ के सरवरे कोनैन मेहबूबे किब्रिया, हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के निकाह में आईं और आप बड़ी फय्याज़, दरया दिल और सखी थीं के अपना सारा ज़र व माल हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के क़दमों में निछावर कर दिया और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का सिक्का ज़मीन व आसमान पर जारी है। ज़मीन पर इस शहनशाह "आलम पनाह" पर अगर दरख़्त साया करते रहे तो आसमान पर बादल साया किनाँ रहे।

फायदा: (1) हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इस निकाह के वक़्त उम्र शरीफ 25 साल की थी और हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की 40 साल की और जब तक हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा ज़िन्दा रहीं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने दूसरा निकाह नहीं फ़रमाया दीगर अज़वाज मुतहरात आपके निकाह में हज़रत ख़दीजा के विसाल के बाद आईं। (मवाहिब लुदनिया सफ़ा 203 जिल्द: 1)

मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का निकाह फ़रमाना, महेज़ तालीम व तशरीह उम्मत के लिए था वरना ऐन आलम शबाब में हर कोई अपनी हम उम्र औरत से निकाह करता है।

(2) हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की जुमला औलाद अमजाद बजुज़ हज़रत इब्राहीम के, हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा से पैदा हुई। हज़रत इब्राहीम हज़रत मारिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से पैदा हुए। (मवाहिब लुदनिया जिल्द: 1, सफ़ा 196) और हाशिया बुखारी शरीफ जिल्द: 1, सफ़ा 539)

(3) हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो अन्हा से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की जो चार साहबज़ादियाँ पैदा हुईं। उनके नाम ये हैं ज़ैनब, रूक़य्या, उम्मे कुलसुम और फातिमा रज़ी अल्लाहो अन्हन (मवाहिब लुदनिया जिल्द: 1, सफ़ा 196)

(4) हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की चार साहबज़ादियाँ पैदा होने में मसलक की किताबें मुत्तफिक़ हैं। चुनाँचे हज़रात शिआ की मुसतनिद किताब हदीस उसूल काफी सफ़ा 278, जिल्द: असतर:2 में इसी हक़ीक़त का इज़हार है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(265) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अन्हा

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के विसाल के बाद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने बिन्ते सिद्दीक़े अक्बर हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से निकाह फ़रमाया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक मर्तबा हज़रत आयशा से फ़रमाया ऐ आयशा! निकाह से क़ब्ल एक फरिश्ता तीन रात मुतावातिर ख़्वाब में तुम्हारी सूरत एक रेशमी कपड़े में लपेटे हुए मुझे दिखाता रहा और कहता रहा ये आपकी बीवी है और अब जो मैंने तुझे देखा तो तुम वही हो और फ़रमाया एक रोज़ जिब्राईले अमीन मेरे पास तुम्हारी तसवीर एक सब्ज़ रंग के रेशमी कपड़े में लपेट कर लाया और कहने लगा! या रसूल अल्लाह! ये आपकी दुनिया व आख़िरत में बीवी है। अल्लाह तआला ने आपका निकाह इससे कर दिया है। (मिश्कात शरीफ सफ़ा 565, मवाहिब लुदनिया सफ़ा 204 जिल्द:1)

सबक़:- उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा की बहुत बड़ी शान है। आप हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दोनों जहाँ में रफ़ीक़ा हैं और आपका निकाह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से खुद अल्लाह तआला ने फ़रमाया। फिर अगर कोई बदगो आपकी ज़ात वाला सिफात पर किसी क़िस्म का कोई तान करे तो यक़ीनन उसने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का दिल दुखाया और अल्लाह ताला पर भी एत्राज़ किया।

हिकायत नम्बर(266) बोहताने अज़ीम

5 हिज्री में ग़ज़्वा बनी-उल-मुसतलिक़ से वापसी के वक़्त क़ाफला क़रीब मदीना एक पड़ाव पर ठहरा। तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ज़रूरत के लिए एक गोशे में तशरीफ़ ले गईं। वहाँ आपका हार टूट गया और आप उसकी तलाश में मसरूफ हो गईं इधर काफले ने कूच किया और आपका मोहमिल शरीफ ऊँट पर कस दिया। क़ाफले वालों ने यही गुमान किया के उम्मुल मोमिनीन उसमें हैं। क़ाफ़ला चल दिया और जब आप वापस आईं तो देखा के क़ाफला जा चुका है। आप क़ाफले की जगह बैठ गईं। आपने ख़याल किया के मेरी तलाश में

Scanned by CamScanner

क़ाफला ज़रूर वापस आएगा। क़ाफले के पीछे गिरी पड़ी चीज़ उठाने के लिए एक साहब रहा करते थे, उस मौक़े पर हज़रत सफवान उस काम पर मुतय्यन थे। जब वो आए तो उम्मुल मोमिनीन को देखा तो बुलंद आवाज़ से इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन पढ़ा उम्मुल मोमिनीन ने कपड़े से पर्दा कर लिया। उन्होंने अपनी ऊँटनी बिठाई आप उस पर सवार होकर लश्कर में पहुँचीं। मुनाफिक़ीन सियाह बातिन को मौक़ा मिल गया और उन्होंने ओहाम फासिदा फैलाने शुरू कर दिए और आपकी शान में बदगोई शुरू कर दी। उम्मुल मोमिनीन इस बोहतान को सुनकर बीमार हो गईं। और एक माह तक बीमार रहीं। इस अर्से में आपको इत्तिला ना हुई के मुनाफिक़ीन आपके मुतअल्लिक़ क्या क्या अफ़्वाहें फैला रहे हैं। एक रोज़ उम्मे मुसतह से उन्हें ये ख़बर मालूम हुई और उससे आप और भी ज़्यादा बीमार हो गईं और इस सदमे से इस क़द्र रोईं के आपका आँसू ना थमता था और ना एक लमहे के लिए नींद आती थी। इस हाल में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर वही नाज़िल हुई और हज़रत उम्मुल मोमिनीन की तहारत व पाकीज़गी की खुद अल्लाह तआला ने शहादत दी और कई आयतें सूरह नूर की आपकी तहारत और पाकीज़गी में नाज़िल फ़रमाईं और फ़रमाया:

लिकुल्लिमरिय्यन मिनहुम्म मक़्तसाबा मिनल इसमी वल्लज़ी तव्वला किबराहू मिनहुम लहू अज़ाबुन अज़ीम

"उनमें हर शख़्स के लिए वो गुनाह है जो उसने कमाया और उनमें वो जिसने सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ा अज़ाब है। (सूरह नूर)"

यानी उम्मुल मोमिनीन के बारे में बोहतान तराज़ी में जिस जिस ने जिस क़द्र भी हिस्सा लिया, किसी ने तूफान उठाया, किसी ने बोहतान उठाने वाले की ज़बान मवाफ़्क़त की। कोई हंस दिया, किसी ने ख़ामोशी के साथ ही सुन लिया। जिसने जो कुछ किया इस गुनाह का उसे बदला मिलेगा और जिसने सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए सबसे बड़ा अज़ाब है।" (क़ुरआन करी, पारा 18, रूकू 8। ख़ज़ायन-उल-इर्फान, सफ़ा 497)

सबक़:- उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की वो ज़ात ग्रामी है जिसकी तहारत व पाकीज़गी की खुद खुदा ने शहादत दी और आप पर बोहतान उठाने वाले के लिए अज़ाब का ऐलान फ़रमाया और आपको इस शरफ़ से नवाज़ा के क़ुरआने पाक के ज़रिये आपकी उफ़्फ़त व तहारत के क़यामत तक डंके बजते रहेंगे फिर जो ज़ालिम आपकी ज़ात वाला सिफात पर कोई किसी क़िस्म का ऐत्राज़ करे या

Scanned by CamScanner

आपकी अज़मत में शक करे तो वो बड़ा ही जाहिल है और अपने आपको अज़ाब का मुसतहिक़ बनाने वाला है।

हिकायत नम्बर(267) गवाहियाँ

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा पर मुनाफिक़ीन ने जब बोहतान उठाया तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान से फ़रमाया के उसकी तरफ़ से मेरे पास कौन मअज़रत पेश कर सकता है? हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! मुनाफिक़ीन बिलयक़ीन झूट हैं और उम्मुल मोमिनीन यक़ीनन पाक हैं, अल्लाह तआला ने आपके जिस्म अतहर को मक्खि बैठने से महफ़ूज़ रखा है के वो नजासतों पर बैठती है। फिर कैसे हो सकता है के वो आपको बद औरत की सोहबत से महफ़ूज़ ना रखे।

हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! अल्लाह तआला ने आपका साया ज़मीन पर नहीं पड़ने दिया ताके उस पर किसी का क़दम ना पड़े तो जो परवरदिगार आपके साये को महफ़ूज़ रखता है किस तरह मुममिन है के वो आपके अहल को महफ़ूज़ ना रखे।

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! एक जूं का खून लगने से अल्लाह तआला ने आपको नअलैन उतार देने का हुक्म दिया तो जो परवरदिगार आपकी नअल शरीफ की इतनी सी आलूदगी को पसंद नहीं फ़रमाता मुमकिन नहीं के वो आपके अहल की आलूदगी को पसंद करे।

इसी तरह और बहुत से सहाबा इक्राम और सहाबियात ने, उम्मुल मोमिनीन के हक़ में तहारत व पाकीज़गी के बयान दिए और क़समें खाईं। आयत नाज़िल होने से पहले ही उम्मुल मोमिनीन की तरफ़ से दिल मुतमईन थे और आयत के नज़ूल ने उम्मुल मोमिनीन का इज़्ज़ो शरफ़ और ज़्यादा कर दिया। (ख़ज़ायन-उल-इर्फान, सफ़ा 497, रूह-उल-बयान, सफ़ा 751, जिल्द 2, व मदारिज-उन्नबुव्वत, सफ़ा 101)

सबक़:- उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की अफ़्फ़त व तहारत का हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह, हज़रत उस्मान और हज़रत अली और दीगर सहाबा और सहाबियात रज़ी अल्लाह तआला अन्हुम सभी को यक़ीन था और बोहतान तराज़ी मुनाफिक़ों का काम था। पस हमें भी हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ी

Scanned by CamScanner

अल्लाहो तआला अन्हुमा के नक़्शे क़दम पर चलना चाहिए और मुनाफिक़ीन की आदत से बचना चाहिए।

फायदाः- उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की अफ़्फ़त व तहारत का खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को भी इल्म था चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अलल ऐलान फ़रमा दिया था।

वल्लाही मा अलिम्तू अला अहली इल्ला ख़ैरा (बुखारी शरीफ, सफ़ा 595)

"क़सम अल्लाह की मैं जानता हूँ के मेरी बीवी नेक ही है।"

मगर चूंके क़ाज़ी फैसला अपने इल्म की बिना पर नहीं करता बल्के गवाहों की गवाहियों पर करता है। इसलिए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने बाक़ायदा तहक़ीक़ की और गवाहियाँ लीं और अगर गवाहों की गवाहियाँ लेने से ये साबित होता है के क़ाज़ी को इल्म ना था। तो फिर खुदा के मुतअल्लिक़ क्या कहा जाएगा जो क़यामत के दिन *लीतकूनू शौहदाआ अलन्नासी* और *वजीअेना बिका अला हौलाई शहीदा* के मुताबिक़ मुसलमानों से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम से गवाहियाँ लेकर फैसला फ़रमाएगा। नीज़ अगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम खुद ही फौरन फैसला फ़रमा देते तो जो शरफ़ उम्मुल मोमिनीन को सूरह नूर के नज़ूल से और अल्लाह तआला के ऐलान बरियत से हासिल हुआ है के क़यामत तक आपकी अफ़्फ़त का ऐलान होता रहेगा, ये शरफ़ आपको हासिल ना होता।

हिकायत नम्बर(268) शौहर की मोहब्बत

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से फ़रमया! ऐ आयशा! जब तुम मुझ से खुश होती हो तो मुझे पता चल जाता है और जब कुछ नाराज़ सी हो जाती हो तो भी मुझे पता चल जाता है। हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने अर्ज़ किया। वो कैसे या रसूल अल्लाह! हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया। जब तुम मुझ से खुश होती हो तो यूं कहती हो।"

मुझे रब्बे मोहम्मद की क़सम! और जब कुछ नाराज़ सी होती हो तो यूं कहती हो *ला व रब्बी इब्राहीम* मुझे रब्बे इब्राहीम की क़सम। हज़रत आयशा

Scanned by CamScanner

रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने अर्ज़ किया, हाँ या रसूल अल्लाह! बात यही है मगर हुज़ूर *मअहजुरू इल्ला इसमूका* मैं सिर्फ आपका नाम ही तो छोड़ती हूं लेकिन आपकी ज़ात ग्रामी की मोहब्बत तो मेरे दिल में बदस्तूर रहती है। (मदारिज-उन्नबुव्वत, सफ़ा 276, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की हर अदा तालीम उम्मत के लिए है। इस वाक़ये में हमें ये सबक़ दिया गया है के मियाँ बीवी की कोई आपस में मामूली सी रंजिश भी हो जाए तो दिली मोहब्बत में फर्क़ ना आना चाहिए और ये रंजिश भी मामूली होना चाहिए उसे बढ़ाना ना चाहिए।

हिकायत नम्बर(269) सख़ावत

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा बेहद सखी थीं। हज़रत अरवा बिन ज़ुबैर फ़रमाते हैं के मैंने देखा, एक रोज़ उम्मुल मोमिनीन सत्तर हज़ार दर्हम राहे खुदा में तक़सीम कर दिए और एक दफा हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनकी ख़िदमत में सौ हज़ार दर्हम भेजे तो आपने वो सब दर्हम एक ही रोज़ में राहे खुदा में तक़सीम कर दिए और उस रोज़ आप खुद रोज़े से थीं। शाम के वक़्त बाँदी ने अर्ज़ किया। क्या अच्छा होता अगर एक दर्हम आप अपनी अफ़्तारी के लिए रख लेतीं। और आज गोश्त मंगवा लिया जाता। तो फ़रमाया मुझे याद नहीं रहा। याद रहता तो गोश्त मंगवा लिया जाता। (मदारिज-उन्नबुव्वत, सफ़ा 276, जिल्द 2)

सबक़:- उम्मुल मोमिनीन ने वुसअत के बावजूद अपनी ज़िन्दगी निहायत सादा और ज़ाहिदाना गुज़ार दी और जो दौलत भी हाज़िर हुई आपने राहे खुदा में तक़सीम फ़रमा दी। आज हमें भी उम्मुल मोमिनीन के नक़्शे क़दम पर चलना चाहिए और दौलत से इस क़द्र मोहब्बत ना रखना चाहिए के खुदा को भुला दिया जाए और ज़कात व सदक़ात व ख़ैरात का नाम तक ना लिया जाए।

हिकायत नम्बर(270) ख़ाला जान

उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा का अपने भांजे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से बड़ा प्यार था उन्होंने ही गोया अपने भांजे को पाला था। उम्मुल मोमिनीन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की

Scanned by CamScanner

सख़ावत व फय्याज़ी का ये आलम देखकर जो कुछ आता, आप राहे खुदा में तक़सीम कर देती थीं। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने एक दिन कह दिया के ख़ाला जान! का हाथ किस तरह रोकना चाहिए। उम्मुल मोमिनीन को ये बात मालूम हुई के अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा मेरा हाथ रोकना चाहते हैं तो आप नाराज़ हो गईं और उनसे ना बोलने की क़सम खा ली। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाह तआला अन्ह को ख़ाला जान की नाराज़गी का बेहद सदमा हुआ बहुत से लोागें से सिफारिश कराई मगर उन्होंने अपनी क़सम का उज़्र पेश कर दिया। आख़िर जब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बहुत ही परेशान हुए तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के ननिहाल के दो हज़रात को सिफारशी बनाकर साथ ले गए वो दोनों हज़रात इजाज़त लेकर अन्दर गए। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी छुप कर साथ हो लिए। जब वो दोनों पर्दे के पीछे बैठे और उम्मुल मोमिनीन पर्दा के अन्दर बैठकर बात चीत करने लगीं तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जल्दी से अन्दर चले गए और ख़ाला जान से लिपट कर रोने लगे और बहुत रोये और खुशामद की। वो दोनों हज़रात भी सिफारिश करते रहे और मुसलमान से बोलना छोड़ने के मुतअल्लिक़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के इर्शादात याद दिलाते रहे और अहादीस में जो मुमानिअत इसकी आई है वो सुनाते रहे जिसकी वजह से उम्मुल मोमिनीन इन अहादीस में जो मुमानिअत और मुसलममान से बोलना छोड़ने पर जो अत्ताब वारिद हुआ। उनकी ताब ना ला सकें और रोने लगें, आख़िर माफ फ़रमा दिया और बोलने लगीं। लेकिन अपनी क़सम के कुफ़्फारे में बार बार ग़ुलाम आज़ाद कराती थीं हत्ता के चालीस ग़ुलाम आज़ाद किए और जब भी कभी इस क़सम के तोड़ने का ख़याल आ जाता इतना रोतीं के दोपट्टा तक आँसूओं से भीग जाता। (बुख़ारी शरीफ, हिकायात-उल-सहाबा, सफ़ा 101)

सबक़:- अल्लाह वालों की नाराज़गी सिर्फ अल्लाह ही के लिए होती है वो किसी दुनयवी मुफाद के पेशे नज़र किसी से नाराज़ नहीं होते और ये भी मालूम हुआ के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के इर्शादात सुनकर मुसलमान का सर तसलीम ख़म हो जाता है, और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह का नाम लेकर जो अहेद किया जाए, उसका पूरा करना बहुत ज़रूरी है और उसको तोड़ने पर कुफ़्फारा ज़रूरी

Scanned by CamScanner

है और अल्लाह वालों के क़लूब में इस नाम पाक का बड़ा वक़ार होता है और खुदा का इस क़द्र ख़ौफ होता है के कुफ़्फारा अदा कर देने के बाद भी रोते रहते हैं।

हिकायत नम्बर(271) रोज़ा-ए-मेहबूब

हुज़र सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का जब विसाल शरीफ हो गया तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के रोज़ा-ए-अनवर में हाज़िर होने लगीं और चूंके हुज़ूर सल-लल्लाहो तआल अलेह व सल्लम हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के शौहर थे इसलिए हज़रत उम्मुल मोमिनीन इस ख़याल से के ये मेरे शौहर हैं। रोज़ा-ए-अनवर में खुले मुंह हाज़िर होतीं और फिर जब सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का विसाल शरीफ हुआ और वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ इसी रोज़ा-ए-अनवर में दफ़्न हुए तो फिर भी हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा इस ख़याल से एक मेरे शौहर हैं और दूसरे मेरे वालिद हैं, खुले मुंह ही हाज़िर होती रहीं और फिर जब हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का विसाल शरीफ हुआ, और वो भी इसी रोज़ा-ए-अनवर में दफ़्न हुए तो अब उम्मुल मोमिनीन ने अपना मुंह सर कपड़े से ढाँप कर हाज़िर होना शुरू किया और फ़रमाया अब यहाँ उमर भी हैं जो ग़ैर मेहरम हैं। इसलिए उनसे हया ज़रूरी है। (मिशकात शरीफ, सफ़ा 146)

सबक़:- अल्लाह वाले क़ब्र में भी तशरीफ़ ले जाएँ तो ज़िन्दा ही होते हैं। देखते और सुनते भी हैं। इसलिए हज़रत उम्मुल मोमिनीन ने हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के विसाल क बाद और क़ब्र में तशरीफ़ ले जाने के बाद भी उनसे हया ही फ़रमाई और उनसे पर्दा किया।

हिकायत नम्बर(272) उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ी अल्लाहो अन्हा

हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की साहबज़ादी हज़रत हफ़्सा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा हज़रत ख़ुनीस की बीवी थीं, हजरत ख़ुनीस के इन्तिक़ाल से ये बेवा हो गईं तो हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को उनकी फिक्र रहने लगी और जब हज़रत

Scanned by CamScanner

उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बीवी हज़रत रूक़य्या का जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की साहबज़ादी थीं। इन्तिक़ाल हुआ तो हज़रत फारूक़े आज़म ने हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से दरख़्वास्त की के वो हज़रत हफ़्सा से निकाह कर लें। हज़रत उस्मान ने इस बारे में सकूत फ़रमाया और हाँ ना की। हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने इस बात की हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से शिकायत की तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के मैं हफ़्सा के लिए उस्मान से बेहतर ख़ाविंद और उस्मान के लिए हफ़्सा से बेहतर बीवी बताता हूँ। उसके बाद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत हफ़्सा से खुद निकाह फ़रमाया और हज़रत उस्मान का निकाह अपनी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसुम से कर दिया। (मदारिज-उन्नबुव्वत, सफ़ा 277, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के रूहानी व जिस्मानी दोनों रिश्ते थे। सिद्दीक़े अक्बर व फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम दामाद थे और उस्मान ग़नी अली अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो अन्ह के आप खुस्र थे फिर जो कोई उन पाक लोगों के ख़िलाफ कुछ कहेगा तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को क्यों रंज ना पहुँचेगा।

हिकायत नम्बर(273) उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिनते हबश रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की फूफी ज़ाद बहन ज़ैनब का निकाह हज़रत ज़ैद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतनब्बे थे, हुआ था, हज़रत ज़ैद ने उनको तलाक़ दे दी थी। तलाक़ के बाद फिर उनका निकाह खुद खुदा तआला ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कर दिया था। चुनाँचे हज़रत ज़ैद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जब उनको तलाक़ दी और इद्दत गुज़र गई तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उनके पास पयाम भेजा। उन्होंने जवाब में अर्ज़ किया के मैं उस वक़्त तक कुछ नहीं कह सकती, जब तक अपने अल्लाह से मशवरह ना कर लूं और ये कह कर वज़ू किया और

Scanned by CamScanner

नमाज़ की नीयत बाँध ली और ये दुआ की के या अल्लाह! तेरे रसूल मुझ से निकाह करना चाहते हैं अगर मैं इस क़ाबिल हूँ तो मेरा निकाह उनसे फ़रमा दे इधर हुज़ूर पर ये आयत उतरी *फलम्मा क़ज़ा ज़ैदन वतरन ज़व्वजना काहा* (प 23, रूकू 2)

"फिर जब ज़ैद की ग़र्ज़ उससे निकल गई तो हमने वो तुम्हारे निकाह में दे दी"

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस आयत की खुशख़बरी भेजी तो आप खुशी से सज्दे में गिर गईं और आपको इस बात पर बड़ा फख्र रहा के सब बीबियों का निकाह उनके वलियों ने किया और मेरा निकाह खुद खुदा जिल्लो शानूहू ने किया। (मदारिज-उन-नबुव्वत, सफ़ा 279)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बदौलत अज़वाज मुतहरात की इतनी बुलंद शानें थीं के वो अपने उमूर में अपने अल्लाह से मशवरह लेती थीं और अल्लाह तआला उन्हें मसरूर फ़रमाता था फिर अगर कोई बदगौ इन पाक हस्तियों की शान में कोई एत्राज़ करे तो खुदा उस पर क्यों नाराज़ ना होगा?

हिकायत नम्बर(274) लम्बा हाथ

उम्मुल मोमिनीन हज़रत रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा बड़ी सखी थीं और बड़ी मेहनती, अपने हाथ से मेहनत करतीं जो हासिल होता वो सद्क़ा कर देतीं। एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अज़वाज मुतहरात से फ़रमाया के मुझ से सबसे पहले मरने के बाद वो मिलगी जिसका हाथ लम्बा होगा। ये इर्शाद सुनकर अज़वाज मुतहरात ने ज़ाहिरी लम्बाई समझी और लकड़ी से अपने अपने हाथ नापने शुरू कर दिए। देखा तो हज़रत सौदा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा का हाथ सबसे लम्बा निकला, और जब हज़रत ज़ैनब रज़ी अल्लाहो अन्हा का इन्तिक़ाल सबसे पहले हुआ तो फिर समझीं के हाथ की लम्बाई से मुराद सद्क़ा व ख़ैरात की कसरत थी। (मदारिज-उन्नबुव्वत, सफ़ा 279)

सबक़:- सख़ावत से खुदा और रसूल की क़ुरबत हासिल होती है।

हिकायत नम्बर(275) यसरब(1) का बादशाह

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा हज़रत

Scanned by CamScanner

मूसा अलेहिस्सलाम के भाई हज़रत हारून अलेहिस्सलाम की औलाद हैं और सरदार जी की बेटी हैं। आप पहले किनाना इब्ने अबी हक़ीक़ के निकाह में थीं। एक रात आपने ख़्वाब में देखा के चाँद मेरी गोद में है, आपने ये ख़्वाब अपने ख़ाविंद किनाना से बयान किया तो उसने गुस्से में आकर एक तमाँचा इस ज़ोर मे मुंह पर मारा के आँख पर उसका निशान पड़ गया, और ये कहा के तू यसरब के बादशाह से निकाह की तमन्ना करती है।

ख़ैबर की लड़ाई में किनाना मारा गया और हज़रत सफिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा बाँदी बन कर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गईं। हज़रत दहिया कल्बी रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से एक बाँदी माँगी। हुज़ूर ने हज़रत सफिया उन्हें दे दी। चूंके मदीने मुनव्वरह में हज़रत सफिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के क़बीले के बहुत से लोग आबाद थे और ये सरदार की बेटी थीं इसलिए लोगों ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! ये बात बहुत से लोगों को ना गवार गुज़रेगी। सफिया को अगर हुज़ूर अपने निकाह में ले लें तो बहुत से लोगों की दिलदारी होगी। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत दहिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को ख़ातिर ख़्वाह मुआवज़ा देकर उनको ले लिया और उनको आज़ाद फ़रमा कर उनसे निकाह फ़रमा लिया, और ख़ैबर से वापसी में एक मंज़िल पर उनकी रूख़सती हुई। सुबह को हुज़ूर ने फ़रमाया के जिसके पास जो चीज़ खाने की हो वो ले आए, सहाबा के पास मुताफर्रिक़ चीज़ें खजूरें, पनीर, घी वग़ैरा जो था वो ले आए, एक चमड़े का दसतरख़्वान बिछाया और उस पर वो सब डाल दिया गया और सब ने शरीक होकर खा लिया। यही वलीमा था।

बाज़ रिवायात में ये भी आया है के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत सफिया को इख़्तियार दे दिया था के अगर तुम अपनी क़ौम और मुल्क में रहना चाहो तो आज़ाद हो, चली जाओ और अगर मेरे पास मेरे निकाह में रहना चाहो तो रहो, उन्होंने अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह! मैं शिर्क की हालत में हुज़ूर की तमन्ना करती थी, अब मुसलमान होकर कैसे जा सकती हूँ? (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 205, जिल्द 1)

सबक़:- इस्लाम में तकल्लुफात का वजूद नहीं है देख लीजिए वलीमा किस सादगी से हुआ के जिसके पास जो चीज़ भी थी ले आया और एक दसतरख़्वान पर रखकर सब ने मिल कर खा लिया। फिर आज जो दुनिया भर के तकल्लुफात इख़्तियार किए जाते हैं और बिरादरी की खुशी के लिए

Scanned by CamScanner

अंधा धुंद फिज़ूल खर्ची की जाती है। किस क़द्र ग़लत और तकलीफ दह रविश है। ऐसी रविश के इंसान उमर भर के लिए मक़रूज़ भी हो जाता है।

(1) मदीना मुनव्वरह का पहला नाम यसरब था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तशरीफ़ आवरी से उसका नाम मदीना मुनव्वरह हो गया। अब मदीना मुनव्वरह को यसरब कहना जायज़ नहीं। उनवान हिकायत में यसरब इसलिए लिखा गया है के हज़रत सफिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के पहले ख़ाविद ने यसरब ही कहा था।

हिकायत नम्बर(272) नबी की बेटी, भतीजी और बीवी!

एक रोज़ हज़रत हफ़्सा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने हज़रत सफिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से कह दिया के तू यहूदी की बेटी है। हज़रत सफिया रोने लगीं। इतने मैं हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ ले आए और दरयाफ़्त फ़रमाया, सफिया। क्यों रो रही हो? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! हफ़्सा ने मुझे "यहूदी की बेटी" कहा है हुज़ूर(स०अ०स०) ने फ़रमाया, सफिया तुम क्यों रोती हो, तुम नबी की बेटी हो, नबी की भतीजी हो और नबी की बीवी हो, यानी तुम्हारे बाप हारून अलेहिस्सलाम हैं, चचा मूसा अलेहिस्सलाम हैं और ख़ाविंद मैं हूँ। फिर ये हफ़्सा तुम पर किस बात का फख्र करती है। फिर हुज़ूर(स०अ०स०) ने हज़रत हफ़्सा से मुख़ातिब होकर फ़रमाया। ऐ हफ़्सा! अल्लाह से डरो और ऐसी बात ना करो। (मिशकात शरीफ, सफ़ा 566)

सबक़:- किसी मुसलमान का दिल नहीं दुखाना चाहिए।

फायदा:- (1) मोहद्दिसीन का अज़वाजे मुतहरात की तादाद में इख़्तिलाफ है। ग्यारह होने में तो सबका इत्तिफाक़ है ग्यारह से ज़्यादा में इख़्तिलाफ है। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 201, जिल्द 1)

(2) ग्यारह अज़वाजे मुतहरात के असमाग्रामी ये हैं:- उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिनते हबश। उम्मुल मोमिनीन हज़रत मेमूना। उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिनते ख़ज़ीमा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत जवेरिया बिनते हारिस। उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफिया रिज़वानुल्लाही तआला अलेहिन।

Scanned by CamScanner

(मवाहिब लुदनिया, सफ़ा मज़कूरा)

(3) हम ने सिर्फ पाँच अज़वाजे मुतहरात का ज़िक्र किया है।

हिकायत नम्बर(277) ख़ातूने जन्नत

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की चार साहबज़ादियों में से हज़रत ख़ातूने जन्नत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से हुज़ूर को बहुत ज़्यादा प्यार था और आपकी बहुत बड़ी शान थी। एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुसकुराते हुए तशरीफ़ लाए। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने दरयाफ़्त किया। या रसूल अल्लाह! ये कैसी खुशी है? फ़रमाया। एक ताज़ा खुशखबरी की वजह से। जो अभी मेरे परवरदिगार की तरफ़ से अली और फातिमा के बारे में आई है। आज खुदा तआला ने फातिमा को अली के निकाह में दे दिया है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 378, जिल्द 2)

सबक:- हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की बहुत बड़ी शान है और आपका निकाह हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ हुआ है।

हिकायत नम्बर(278) रसमे निकाह

हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा जब बालिग़ हो गईं तो हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में बहुत से पयाम पहुँचे लेकिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने किसी पयाम को मंज़ूर ना फ़रमाया। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से एक मर्तबा सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने आपस में मशवरा करके कहा के आप भी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में निकाह का पैग़ाम भेजें। हज़रत अबुबक्र रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने ज़र इम्दाद देने का भी वादा फ़रमाया। चुनाँचे हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए लेकिन इज़हार अर्ज़ के लिए हया मानअे थी। इसलिए सर झुका ख़ामोश बैठ गए। आखिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने खुद ही फ़रमाया क्यों ऐ अली। क्या कहना चाहते हो, कहो जो कहना है तुम्हारी अर्ज़ी सुनी जाएगी। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अपना इरादा ज़ाहिर फ़रमाया। जिसको सुनकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला

Scanned by CamScanner

अलेह व सल्लम ने फ़रमाया, हमें मंज़ूर है। और फिर एक दिन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के साथ चालीस दीनार चाँदी मेहर बाँधकर मस्जिदे नबव्वी में खुत्बा पढ़ा। (तारीख़े इस्लाम, सफ़ा 162)

सबक़:- सहाबा इक्राम और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह सब आपस में एक दूसरे के ख़ैर ख़्वाह और दोस्त थे और हज़रत अली के निकाह क लिए सब ने कोशिश की और और हज़रत सिद्दीक़े अक्बर ने माली इम्दाद भी फ़रमाई और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह व रसूल की मर्ज़ी यही थी के हज़रत फातिमा का निकाह हज़रत अली से हो।

(मंज़ूम)

हिकायत नम्बर(279) जलवा-ए-बराअत

गोशे दिल से मोमिनो सुन लो ज़रा
है ये क़िस्सा फातिमा के अक़द का
पंद्रह साला नबी की लाडली!
और थी बाईस साल उमर अली
अक़द का पयाम हैदर ने दिया
मुसतफा ने मरहबा अहलन कहा
पीर का दिन सत्रह माहे रजब
दूसरा सनहे हिजरत शाहे अरब
फिर मदीना में हुआ एलाने आम
ज़ोहर के वक़्त आएँ सारे ख़ास व आम
इस ख़बर से शोर बर्पा हो गया
कूचा व बाज़ार में ग़ुल सा मचा
आज है मौला की दुख़्तर का निकाह
आज है उस नेक अख़्तर का निकाह
आज है उस पाक सच्ची का निकाह
आज है बे माँ की बच्ची का निकाह
ख़ैर से जब वक़्त आया ज़ोहर का
मस्जिद नबव्वी में मजमा हो गया
एक जानिब हैं अबुबक्र और उमर
इक तरफ़ उस्मान भी हैं जलवा गर

Scanned by CamScanner

हर तरफ़ असहाब और अनसार हैं
दरमियाँ में अहमदे मुख़्तार हैं
सामने नोशा अली अल मुर्तज़ा
हैदर करार शाहे ला फता
आज गोया अर्श आया है उतर
या के कुद्सी आ गए हैं फर्श पर
जमा जब ये सारा मजमा हो गया
सय्यद-उल-कोनैन ने खुत्बा दिया
जब हुए खुत्बे से फारिग़ मुसतफा
अक़द ज़ौहरा का अली से कर दिया
चार सौ मिसक़ाल चाँदी मेहर था
वज़न जिसका डेढ़ सौ तोला हुआ
बाद में खुर्मे लुटाए ला कलाम
मासिवा उसके ना था कोई तआम
उनके हक़ में फिर दुआऐ ख़ैर की
और हर इक ने मुबारकबाद दी
घर से रूख़्सत जिस घड़ी ज़ोहरा हुईं
वालिदा की याद में रोने लगीं
दी तसल्ली अहमद मुख़्तार ने
और फ़रमाया शहे अबरार ने
फातिमा हर तरह से बाला हो तुम
मैका व सुसराल में आला हो तुम
बाप हैं तेरे इमाम-उल-अंबिया
और शौहर औलिया के पैशवा
माह ज़िलहिज में जब रूख़्सत हुई
तब अली के घर में इक दावत हुई
जिसमें थीं दस सैर जौ की रोटियाँ
कुछ पनीर और थोड़े खुर्मे बेगमाँ
इस ज़ियाफत का वलीमा नाम है
और ये दावत सुन्नते इस्लाम है

(मौलाना मुफ़्ती अहमद यार खाँ की तालीफ इस्लामी ज़िन्दगी, सफ़ा 30)

Scanned by CamScanner

सबक़:- सबको उनकी राह पर चलना चाहिए
और बुरी रसमों से बचना चाहिए

हिकायत नम्बर(280) जहैज़

फातिमा ज़ोहर का जिस दिन अक़्द था
सुन लो उनके साथ क्या क्या नक़्द था
एक चादर सत्रह पैवंद की
मुसतफा ने अपनी दुख़्तर को ये दी
एक तोशक जिसका चमड़े का ग़िलाफ
एक तकिया ऐसा ही लिहाफ
जिसके अन्दर ऊन ना रेशम रूई
बल्के उसमें छाल खुर्मे की भरी
एक चक्की पीसने के वास्ते
एक मशकीज़ह भी पानी के लिए
एक लकड़ी का पियाला साथ में
नुक़रई कंगन की जोड़ी हाथ में
और गले में हार हाथी दांत का
एक जोड़ा भी खड़ाओं का दिया
शाहज़ादी सय्यदे कोनैन की
बे सवारी ही अली के घर गई!
साहबे लोलाक पर लाखों सलाम
इस जहैज़े पाक पर लाखों सलाम
(किताबे मज़कूरा, सफ़ा 31)

सबक़:- वास्ते जिनके बने दोनों जहाँ
उनके घर की थीं सादी शादियाँ

हिकायत नम्बर(281) शाहज़ादी की ज़िन्दगी

आईं जब ख़ातूने जन्नत अपने घर
पड़ गए सब काम उनकी ज़ात पर
काम से कपड़े भी काले पड़ गए
हाथ में चक्की से छाले पड़ गए
दी ख़बर ज़ोहरा को असद-उल्लाह ने

Scanned by CamScanner

बाँटे हैं क़ैदी रसूल अल्लाह ने
एक लोंडी भी अगर हमको मिले
इस मुसीबत से तुम्हें राहत मिले
सुनकर ज़ोहरा आईं सिद्दीक़ा के घर
ताके देखें हाथ के छाले पदर
पर ना थे दौलत कदा पै शाहे दीं
वालिदा ने माजरा सारा कहा
फातिमा छाले दिखाने आई थीं
घर की तकलीफें सुनाने आई थीं
आपको घर में ना पाया शाहे दीं
मुझ से सब दुख दर्द अपना कह गईं
एक लोंडी आप गर उनको भी दें
चक्की और चूलहे के वो दुख से बचें
सुन लिया सब कुछ रसूले पाक ने
कुछ ना फ़रमाया शहे लोलाक ने
शब को आए मुसतफा ज़ोहर के घर
और कहा दुख़्तर से ऐ जान पदर
हैं ये ख़ादिम इन यतीमों के लिए
बाप जिनके जंग में मारे गए
तुम पर साया है रसूल अल्लाह का
आसरा रखो फक़्त अल्लाह का
हम तुम्हें तसबीह इक ऐसी बताएँ
आप जिससे ख़ादिमों को भूल जाएँ
अव्वलन सुबहान 33 बार हो!
और फिर अलहम्द इतनी ही पढ़ो
और 34 बार हो तकबीर भी
ताके सौ हो जाएँ ये मिल कर सभी
पढ़ लिया करना इसे हर सुबह व शाम
विर्द में रखना इसे अपने मुदाम
खुल्द की मुख़्तार राज़ी हो गईं
सुन के ये इर्शाद खुश खुश सो गईं

(किताब मज़कूरा, सफ़ा 32)

Scanned by CamScanner

सबक़:- *सालिक उनकी राह जो कोई चले*
दीन व दुनिया की मुसीबत से टले

फायदा:- अल्लामा रहावी जामअे-उल-मोजज़ात में फ़रमाते हैं, हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा हाथ से आटा गूंधती, ज़बान से क़ुरआन पढ़तीं, दिल से तफ़्सीर करतीं और पैर मुबारक से हुसनैन का झोला झुलातीं और आँखों से खुदा की याद में रोती थीं और आज कल की औरतें हाथ से ढोलक बजातीं, ज़बान से ग़ीबत करतीं , दिल से दुनिया को चाहतीं, आँखें से बेशर्मी का मुज़ाहेरा करतीं और पैरों से नाचतीं हैं, फिर ये जन्नत में कैसे जा सकेंगी?

हिकायत नम्बर(282) जन्नत का जोड़ा

एक यहूदी की लड़की जो बड़ी मालदार थी, बियाही गई और बहुत सी औरतें उसकी शादी में बुलाई गईं जो बड़े बैश क़ीमत कपड़े पहन कर आईं। उन औरतों ने कहा के हमारी दिली आरज़ू है के किसी तरह मोहम्मद(स०अ०स०) की बेटी फातिमा और उसके फ़ुक्र को भी देखें। चुनाँचे यहूदी की लड़की ने हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को बुला भेजा। आपने उसकी इस तक़रीब में शामिल होने का वादा भी कर लिया अभी थोड़ी देर भी ना गुज़री थी के जिब्राईल अलेहिस्सलाम जन्नत का एक जोड़ा लेकर हाज़िर हुए और हुज़ूर(स०अ०स०) ने वो जन्नती जोड़ा हज़रत फातिमा को पहनने के लिए दिया। आपने वही जोड़ा पहना और यहूदी की लड़की की शादी में तशरीफ़ ले गईं। जब आप उन औरतों में बैठीं तो उस जोड़े से नूर के चमकारे पैदा हुए। औरतों ने हैरत में आकर पूछा, फातिमा ये लिबास तुम्हारे पास कहाँ से आया? फ़रमाया, मेरे बाप के घर से। औरतें बोलीं, तुम्हारे बाप को किस ने दिया? फ़रमाया, जिब्राईल ने, और जिब्राईल कहाँ से लाए? फ़रमाया, जन्नत से ये सुनकर सबने बाइत्तिफाक़ कलमा-ए-शहादत पढ़ा और *नशहदअन्ना लाइलाहा इलल्लाह वअन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह* के नारे से सारा मकान गूंज उठा। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 279, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और अहले बैत अेज़ाम का फुक्र, फुक्र इख़्तियारी था, ज़ैहदो फुक्र और सादगी उनकी अपनी इख़्तियार कर्दा और तालीम उम्मत के लिए थी वरना वो जन्नत के मालिक थे और उनका लिबास भी जन्नत से बन कर आता था।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(283) शाही दावत

एक रोज़ हज़रत उस्मान ग़नी रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की या रसूल अल्लाह! आज आपकी मेरे घर दावत है, हुज़ूर ने क़बूल फ़रमा लिया और अपने असहाब समेत हज़रत उस्मान के घर तशरीफ़ ले चले, हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर के पीछे पीछे चलने लगे और हुज़ूर और हुज़ूर का एक एक क़दम मुबारक जो उनके घर की तरफ़ चलते हुए ज़मीन पर पड़ रहा था गिनने लगे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया। ऐ उस्मान! ये मेरे क़दम क्यों गिन रहे हो? हज़रत उस्मान ने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों। मैं चाहता हूँ के हुज़ूर के एक एक क़दम के अवज़ में आपकी तअज़ीम व तौक़ीर की ख़ातिर एक एक ग़ुलाम आज़ाद करूं। चुनाँचे हज़रत उस्मान के घर तक हुज़ूर के जिस क़द्र क़दम पड़े, उसी क़द्र ग़ुलाम हज़रत उस्मान ने आज़ाद किए।

जब ये दावत हो चुकी तो हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने घर तशरीफ़ लाए तो हज़रत फ़ातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने देखा के आप बड़े मग़मूम से थे। हज़रत फ़ातिमा ने दरयाफ़्त फ़रमाया। के आप परेशान क्यों हैं। तो फ़रमाया, फ़ातिमा! आज मेरे भाई उस्मान ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बड़ी शानदार दावत की है और हुज़ूर के एक एक क़दम के अवज़ उसने ग़ुलाम आज़ाद किए हैं ऐ काश! हम भी हुज़ूर की इसी क़िस्म की कोई दावत कर सकते। हज़रत फ़ातिमा ने फ़रमाया। आप परेशान ना हों। जाईये और हुज़ूर को आप भी दावत दे आईये। हज़रत रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया मगर इस क़द्र बड़ा इन्तिज़ाम और एक एक क़दम के बदले एक एक ग़ुलाम आज़ाद करना ये कैसे होगा? फ़रमाया, इंशा अल्लाह सारा इन्तिज़ाम हो जाएगा। चुनाँचे हज़रत अली गए और हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर दावत अर्ज़ कर दी। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने क़बूल फ़रमा ली और अपने असहाब समेत हज़रत फ़ातिमा के घर तशरीफ़ ले चले। हज़रत फ़ातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने हुज़ूर को असहाब समेत बिठाया और ख़ुद ख़लवत में तशरीफ़ ले जाकर सज्दे में गिर गईं और अल्लाह से अर्ज़ की कः

ऐ अल्लाह! तेरी बंदी फ़ातिमा ने तेरे मेहबूब और मेहबूब के असहाब

Scanned by CamScanner

की दावत की है और तेरी बंदी का तुझी पर भरोसा है। इलाही! मेरी लाज रख और इस दावत के खाने का तू इन्तिज़ाम फ़रमा दे।"

ये दुआ माँग कर हज़रत फातिमा ने हंडिया को चूलहे पर रखा और रो रो कर फिर अपने अल्लाह से दुआ की के मौला! अपनी बंदी फातिमा को शर्मिंदा ना करना। खुदा तआला का दरयाऐ करम जोश में आया, और उसने उस हंडिया को जन्नत के खाने से भर दिया। हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने इस हंडिया में से सबको खाना भेजना शुरू फ़रमाया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और आपके सारे असहाब ने खाना तनावुल फ़रमा लिया। लेकिन, हंडिया में से कुछ भी कम ना हुआ।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सहाबा इक्राम से फ़रमाया जानते हो! ये खाना कहाँ से आया है? सहाबा ने अर्ज़ की, नहीं या रसूल अल्लाह! फ़रमाया, ये खाना अल्लाह ने हमारे लिए जन्नत से भेजा है। सहाबा इक्राम ये सुनकर बड़े खुश हुए।

हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो अन्हा फिर ख़लवत में गईं और सज्दे में गिर कर दुआ की के:

"ऐ अल्लाह! उस्मान ने तेरे मेहबूब के एक एक क़दम के अवज़ एक एक गुलाम आज़ाद किया है और तेरी बंदी में इतनी इसततताअत नहीं। मौला! जहाँ तूने मेरी ख़ातिर जन्नत से खाना भेज कर मेरी शर्म रख ली है वहाँ तू मेरी ख़ातिर अपने मेहबूब के इन क़दमों के बराबर जितने क़दम चलकर वो मेरे घर तशरीफ़ लाए हैं मेहबूब की उम्मत के गुनहगारों को जहन्नुम से आज़ाद कर दे।"

हज़रत फातिमा जब इस दुआ से फारिग़ हुईं तो जिब्राईले अमीन ने हाज़िर होकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! अल्लाह तआला ने मुझे ये बशारत देकर भेजा है के आपकी साहबज़ादी की दुआ क़बूल फ़रमाते हुए हमने आपके हर क़दम के अवज़ एक हज़ार गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद कर दिया। ये बशारत सुनकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और सहाबा इक्राम बड़े खुश हुए। (जामअे-अल-मोजज़ात मिस्री, सफ़ा 65)

सबक:- हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा का बड़ा बुलंद मर्तबा है के आपकी ख़ातिर अल्लाह ने जन्नत से खाना भेजा। और आपके तुफैल खुदा ने गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद कर दिया, और ये भी मालूम

Scanned by CamScanner

हुआ के हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बड़े सख़ी और हुज़ूर के सच्चे जाँबाज़ थे और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम और अहले बैत अेज़ाम सब आपस में मोहब्बत रखते थे।

हिकायत नम्बर(284) राज़ की बात

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा फ़रमाती हैं के हुज़ूर अलेहिस्सलाम के मर्ज़ विसाल के दिनों एक दिन हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुईं तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उन्हें अपने दायें जानिब बिठा लिया और फिर कोई राज़ की बात उनसे फ़रमाई। जिसे सुनकर हज़रत फातिमा रो पड़ीं हुज़ूर ने फिर कोई दूसरी बात फ़रमाई जिसे सुनकर हज़रत फातिमा हंस पड़ीं। हज़रत फातिमा ने फ़रमाया, मैं रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के राज़ को अफ़शा ना करूंगी। फिर जब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का विसाल हो गया तो मैंने हज़रत फातिमा से पूछा के बेटी! अब तो बता दो, के उस रोज़ क्या बातें हुईं थीं के तुम पहले रो पड़ी थीं और फिर हंस भी दी थीं। हज़रत फातिमा ने फ़रमाया, अम्मी जान! हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझे पहले ये फ़रमाया था के जिब्राईल मेरे साथ हर साल क़ुरआन का एक बार दौरा किया करता था मगर इस साल उसने दो दफा दौरा किया है। मुझे मालूम होता है के मेरे विसाल का वक़्त आ गया है। मैं ये बात सुन कर रो पड़ी और फिर हुज़ूर ने फ़रमाया, बेटी! मेरे अहले बैत में से सबसे पहले तुम्हारा विसाल होगा, तो मैं ये बात सुनकर हंस पड़ी थी। (बुखारी शरीफ, सफ़ा 512, जिल्द 1)

सबक़:- हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को एक ख़ास मुक़ाम हासिल था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को अपने विसाल शरीफ का इल्म था। और आपको हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के भी विसाल शरीफ का इल्म था।

हिकायत नम्बर(285) विसाल फातिमा

ख़ातूने जन्नत हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा जब बीमार हुईं तो हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनसे फ़रमाया। ऐ फातिमा! मेरी ये वसीयत है के जब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह

Scanned by CamScanner

व सल्लम के पास पहुँचो तो मेरा सलाम अर्ज़ करना और कहना, या रसूल अल्लाह! मैं आप का बड़ा मुश्ताक़ हूँ। हज़रत फातिमा ने फ़रमाया और मेरी भी एक वसीयत है और वो ये के जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो मुझ पर चीख़ चिल्लाकर मातम ना करना और मेरे नूरे चश्म हसन व हुसैन को मारना नहीं, और ऐ शेरे खुदा! वो देखिए, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम फरिश्तों के अंबूह में तशरीफ़ ले आए हैं। अब मैं जा रही हूँ और मेरे इन्तिक़ाल के बाद फलाँ जगह मैंने एक काग़ज़ का टुकड़ा बड़ी हिफाज़त से रखा है उस काग़ज़ को निकाल कर मेरे कफन में रख देना और उसे पढ़ना नहीं। हज़रत अली ने फ़रमाया, फातिमा! रसूल अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूँ के मुझे बता दो के उस काग़ज़ में क्या लिखा है? हज़रत फातिमा ने फ़रमाया। मेरा निकाह जब आपसे होने लगा था तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझ से फ़रमाया, फातिमा! मैं अली से चार सौ मिश्क़ाल चाँदी के मेहर पर तुम्हारा निकाह करने लगा हूँ। मैंने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! अली मंज़ूर हैं लेकिन इतना मेहर मुझे मंज़ूर नहीं। इतने में जिब्राईले अमीन ने हाज़िर होकर हुज़ूर से अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! खुदा फ़रमाता है के मैं जन्नत और उसकी नअेमतें फातिमा का मेहर मुक़र्रर करता हूँ। हुज़ूर ने मुझे उसकी ख़बर दी तो मैं फिर भी राज़ी ना हुई हुज़ूर ने फ़रमाया तो फिर तुम खुद ही बताओ के मेहर क्या हो? मैंने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! आप हर वक़्त अपनी उम्मत के ग़म में रहते हैं। मैं चाहती हूँ के आपकी गुनहगार उम्मत की बख़्शिश मेरा मेहर मुक़र्रर हो। चुनाँचे जिब्राईल वापस गए और फिर ये काग़ज़ का टुकड़ा लेकर आए जिसमें लिखा है। *जअल्तू शिफाअता उम्मती मोहम्मदिन सदाक़ू फातिमाता* मैंनें उम्मते मोहम्मद की शफाअत फातिमा का मेहर मुक़र्रर किया" (जामअे-अल-मोजज़ात मिस्री, सफ़ा 62)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सदक़ा में हम गुनहगारों पर अल्लाह का बड़ा फज़्लो करम है के हुज़ूर की साहबज़ादी को भी हम गुनहगारों का ख़याल रहा और वो हमारी बख़्शिश का इन्तिज़ाम फ़रमा गईं। फिर ये कहना के उन अल्लाह वालों से कुछ हासिल नहीं होता। किस क़द्र जहालत की बात है है और ये भी मालूम हुआ के चीख़ चिल्ला कर मातम नहीं करना चाहिए। इस चीज़ से खुद ख़ातूने जन्नत ने भी मना फ़रमाया है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(286) हज़रत अली(र०अ०) और कूफे का लश्कर

एक दफा जब हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने कूफे से लश्कर तलब फ़रमाया और बहुत सी क़ीलो क़ाल के बाद वहाँ से लश्कर भेजा गया तो लश्कर के आने से पहले ही हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने ख़बर दे दी के कूफे से बारह हज़ार आदमी आ रहे हैं। आपके साथियों में से एक साहब लश्कर की गुज़रगाह पर आन बैठे और जब लश्कर आया तो एक एक आदमी को गिनना शुरू कर दिया। चुनाँचे जितनी तादाद हज़रात अली ने बताई थी। उससे एक भी कमो बैश ना निकला, और पूरे बारह हज़ार आदमी ही निकले (शवाहिद-उन्नबुव्वत, सफ़ा 2)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का ये इल्म सब सद्क़ा था हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का फिर खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की वुसअते इल्म का कौन अंदाज़ा कर सकता है, बावजूद इसके अगर कोई हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ यूं कहे के आपको दीवार पीछे का भी इल्म ना था तो खुद ही फैसला कर लीजिए के वो शख़्स खुद जाहिल बल्के अजहल है या नहीं?

हिकायत नम्बर(287) क़िबाला नवैसी

हज़रत मौलाना अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ और अर्ज़ की के मैंने एक मकान ख़रीदा है। आप उसका क़िबाला बीअ नामा तहरीर फ़रमा दीजिए। हज़रत अली ने फ़रमाया के बीअ नामा का पहले मुसव्वदा सुन लो फिर क़िबाला लिखवा लेना।

इश्तरा मग़रूरुन मिन मग़रूरी रारन ला बक़ाआ लहा वला लिसाहिबहा व हिया फी सिक्कातिल ग़ाफीलीना अलहद्दू अव्वलु अलमौतू। वलहद्दुस्सानिल क़ब्र। वलहद्दुस्सालिसुल हशरू वलहद्दुर्राबीअ ग़ैरू मालूमिन इम्मा जन्नतू अविन्नारू।

एक मकान धोका खाने वाले ने धोका खाए हुए से ख़रीदा। ना वो मकान रहेगा, ना मकान वाला और वो मकान ग़ाफिल लोगों की गली में है और उसकी चारों हदें ये हैं।

"अव्वल हद उसकी मौत है, दूसरी हद क़ब्र है, तीसरी हद मैदाने हश्र है

Scanned by CamScanner

और चौथी हद मालूम नहीं जन्नत है या दोज़ख़"

जब ये मुसव्वदा ख़रीदार ने सुना तो रोता हुआ चला गया। और मकान खरीदने से इंकार कर दिया। (सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 71)

सबक़:- दुनिया और अहले दुनिया को बक़ा हासिल नहीं आख़िर फना है और इंसान को लाज़िम है के वो हर वक़्त मौत, क़ब्र और हश्र को याद रखे।

हिकायत नम्बर(288) अमल का संदूक़

एक शख़्स जिनका नाम कमील था। हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हमराह कहीं जा रहे थे के रास्ते में एक क़ब्रिस्तान आ गया। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो आला अन्ह ने वहाँ अहले क़बूर को ख़िताब फ़रमाया। और फ़रमाया ऐ अहले क़बूर! ऐ वहशत व तनहाई वालो! क्या ख़बर है और क्या हाल है फिर इर्शाद फ़रमाया के हमारी ख़बर तो ये है के तुम्हारे बाद तुम्हारे अमवाल तक़सीम हो गए। तुम्हारी औलादें यतीम हो गईं तुम्हारी बीवियों ने दूसरे ख़ाविंद कर लिए।

ये तो हमारी ख़बर है, तुम कुछ अपनी तो कहो, कमीन कहते हैं के हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फिर मेरी तरफ़ मुख़ातिब हुए और फ़रमाया के ऐ कमील! अगर इन लोगों को बोलने की इजाज़त होती तो ये लोग जवाब में ये कहते के बेहतरीन तोशा तक़वा है। ये फ़रमया और फिर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह रोने लगे और फ़रमाया, ऐ कमील! क़ब्र अमल का संदूक़ है और मरने के बाद क़ब्र में इस बात का इल्म हो जाता है। (कंज़-उल-उम्माली व मिसलाहू फी हुज्जतुल्लाही अललआलीमीना, सफ़ा 862)

सबक़:- मरने के बाद सब कुछ यहीं रह जाता है और सब चीज़े दूसरों के क़ब्ज़े में आ जाती हैं। इंसान के साथ अगर कोई चीज़ जाती है तो नेक आमाल, बक़ौल शायर

कहा अेहबाब ने ये दफ़्न के वक़्त
के हम क्यों कर वहाँ का हाल जानें
लहद तक आपकी तअज़ीम कर दी
अब आगे आपके आमाल जानें

और ये भी मालूम हुआ के क़ब्र अमल का संदूक़ है जिस तरह संदूक़ में चीज़ मेहफ़ूज़ रहती है। इसी तरह आदमी जो कुछ अच्छा बुरा काम करता

Scanned by CamScanner

है। वो उसकी क़ब्र में मेहफ़ूज़ रहता है।

हिकायत नम्बर(289) खुश तबई

एक दिन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे और उनके दायें बायें दो बुलंद क़ामत सहाबी चल रहे थे। चूंके हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का क़द मुबारक उन दोनों सहाबियों से छोटा था। इसलिए उनमें से एक सहाबी ने हज़रत अली से अज़रह खुश तबई कहा के *"अंता बेनना कान्नोनी फी लना"* यानी ऐ अली! आप हम दोनों के दरमिमयान ऐसे होते हैं जैसे लफ्ज़ "लना" में "नून" मतलब ये के हम दोनों आपकी निस्बत दराज़ क़द के हैं। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जवाब में फ़रमाया: *लो लम अकुन बैनाकुमा लकुंतुमा ला* यानी अगर मैं तुम्हारे दरमियान होता तो तुम मअदूम हो जाते क्योंके "लना" से नून को निकाल दिया जाए तो बाक़ी "ला" रह जाता है और का मानी (ना) और मअदूम है। (कशफ-उल-ग़मा और मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 308)

सबक:- पाक लोगों का मज़ाक़ भी पाक और इल्मी होता है, बस मज़ाक़ व खुश तबई ऐसी होनी चाहिए जिसमें फुक्कड़ बाज़ी और बेहूदगी ना हो।

मंज़ूम

हिकायत नम्बर(290) इम्तिहान

मुर्तज़ा शेरे खुदा के सामने
अर्ज़ की इक मुशरिक नाकाम ने
आपको कहते सुना है बारहा
हाफिज़ व नासिर हमारा है खुदा
आप का सच्चा है अगर ये कलाम
उस पे रखते हैं यक़ीं भी आप तमाम
उस मकाँ के बाम पर चढ़िए ज़रा
कह के बिस्मिल्लाह गिर पढ़िए ज़रा
हम भी तो देखें तुम्हारा वो खुदा
किस तरह मरने से लेता है बचा
आपने फ़रमाया ये तेरा सवाल
है हिमाक़त का निशाँ ऐ बे कमाल

Scanned by CamScanner

है तेरा मतलब बनूं मैं बे अदब
इम्तिहाँ लूं उसका जो है मेरा रब
हम तो बन्दे हैं हमारी क्या मजाल
इम्तिहाँ लें उसका जो है ज़िल्लो जलाल
है हकीम व क़ादिर व मतलक़ खुदा!
काम में उसके नहीं चूं व चरा

(दर मंज़ूम तर्जुमा मसनवी शरीफ, सफ़ा 36)

सबक़:-

इख़्तियार आक़ा को है ये बारहा
आज़माए अपने बन्दे की वफा
बन्दा आक़ा का अगर ले इम्तिहाँ
उसको दीवाना कहेगा कुल जहाँ

हिकायत नम्बर(291) मसले का जवाब

मुर्तज़ा के पास इक नादाँ गया
फिक्रे जब्र व क़द्र में था मुबतला
ये कहा हज़रत मुझे समझाइये
अक़्ल है चक्कर में कुछ बतलाइये

आपने फ़रमाया मेरे सामने
सरोक़द हो जाओ इक लहज़ा खड़े
उसने इर्शाद की तामील चुस्त
आप बोले हाँ खड़े हो तुम दुरूस्त

पर ज़रा तकलीफ इतनी कीजिए!
थोड़ी इक टाँग अपनी ऊँची कीजिए
इक पाऊँ पर खड़ा फौरन हुआ
और कुछ इर्शाद? वो कहने लगा

कह रहा था ये निहायत फ़ख्र से
इख़्तिार और मुक़्दरत सब है मुझे
यूं कहा हज़रत ने किया शक है भला
दूसरी भी टाँग उठा कर पर दिखा

सुन के बोला उससे मैं मजबूर हूँ
ये तो हो सकता नहीं मअज़ूर हूँ

Scanned by CamScanner

फिर पकड़ कर कान बोला ऐ जनाब
पा लिया अपनी ज़बाँ से खुद जवाब

(दर मंज़ूर, सफ़ा 144)

सबक़:- *गो के कहलाते हैं फाइल सब के सब*
है हक़ीक़ी फाइल में एक रब
आदमी में गो के हैं अक्सर सिफात
पर वो नाक़िस हैं निहायत बे सिबात

(नोट) हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के मुतअल्लिक़ मुफस्सिल हिकायत इस किताब के पहले हिस्से के चौथे बाब खुलफाऐ राशिदीन में गुज़र चुकी है।

हिकायत नम्बर(292) हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तअला अलेह व सल्लम मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा थे। और साथ ही पहलू में हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी तशरीफ़ फ़रमा थे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक नज़र लोगों की तरफ़ फ़रमाते और एक नज़र इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की तरफ़। और फ़रमाते ये मेरा बेटा सरदार है और अल्लाह तआला इसके ज़रिये मुसलमानों के दो बड़े बड़े गिरोहों में सुलह कराएगा। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 501)

सबक़:- हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बहुत प्यारे थे, लिहाज़ा हर मुसलमान को उनसे मोहब्बत रखना चाहिए और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने जो आपको मुसलमानों के दो गिराहों में सुलह कराने वाला फ़रमाया है वो इशारा था इस वाक़ेया की तरफ़ जब के हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के विसाल शरीफ के बाद हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तख़्ते ख़िलाफत पर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो एक गिरोह हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का हामी था और उसके इख़्तिलाफ से लड़ाई का एहमाल था इस मौक़े पर हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने चन्द शरायत पर हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हक़ में ख़िलाफत से दस्त बरदारी

Scanned by CamScanner

फ़रमा कर तख़्ते सलतनत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के लिए ख़ाली कर दिया और मुसलमानों के दो गिराहों को आपस में टकराने से बचा लिया। मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का हामी था और इस इख़्तिलाफ से लड़ाई का एहमाल था इस मौक़े पर हज़रत पर हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने चन्द शरायत पर हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हक़ में ख़िलाफत से दस्त बरदारी फ़रमा कर तख़्त सलतनत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के लिए ख़ाली कर दिया और मुसलमानों के दो गिरोहों को आपस में टकराने से बचा लिया। मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के तरफ़दार भी मुसलमान ही थे। इसलिए के हुज़ूर ने मुसलमानों के दो बड़े बड़े गिरोहों का जुमला इर्शाद फ़रमाया है और ये भी मालूम हुआ के हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वाजिब-उल-ताज़ीम सहाबी हैं। उनके मुतअल्लिक़ किसी क़िस्म की गुस्ताख़ी जायज़ नहीं इसलिए के अगर वो ऐसे ना होते तो हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह उनके हक़ में दस्त बरदार क्यों हो जाते। और क्यों ना उनकी बिलकुल इसी तरह मुख़ालफत फ़रमाते। जिस तरह आप के छोटे भाई हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने यज़ीद की मुख़ालफत की थी।

हिकायत नम्बर(293) डेढ़ लाख

हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की तरफ़ से हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का वज़ीफा एक लाख सालाना मुक़र्रर था। एक साल वज़ीफा पहुँचने में ताख़ीर हो गई और इस वजह से हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को सख़्त तंगी दरपैश हुई। आपने चाहा के अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को उसकी शिकायत लिखें। लिखने का इरादा फ़रमाया। और दवात मंगाई। मगर कुछ सोच कर तवक़्क़ुफ फ़रमाया। ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दीदार से मुशर्रफ हुए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया के ऐ मेरे फ़रज़ंद क्या हाल है? अर्ज़ किया। अलहम्दू लिल्लाह बख़ैर हूँ। और वज़ीफा की ताख़ीर की शिकायत की। हुज़ूर

Scanned by CamScanner

ने फ़रमाया तुम ने दवात मंगाई थी ताके तुम अपनी तकलीफ की ख़ैरित लिख कर भेजो। अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह मजबूर था। क्या करता, फ़रमाया। ये दुआ पढ़ो। *अल्लाहुम्मा अफ़्ज़फू फी क़ल्बी रिजाअका इक़्ता रिजाई अम्मन सिवाका हत्ता ला अरजू अहादा ग़ैराका। अल्लाहुम्मा वमा ज़अफत अनहू वकावती व क़सरा अनहू अमली वलम तनतही इलेही रग़बती वलम तबलुग़हू मस्अलती वलम यजिर अला लिसानी मिम्मा आतेता मिनल अव्वलीना व आख़िरीना मिनल यक़ीनी फखुस्सनी बिही या रब्बिल आलमीन।*

हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाते हैं के इस वाक़ेये पर एक हफ़्ता ना गुज़रा था के अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मेरे पास एक लाख पचास हज़ार भेज दिए और मैंने अल्लाह तआला की हम्दो सना की और उसका शुक्र बजा लाया। फिर ख़्वाब में दौलत दीदार से बहरामंद हुआ। सरवरे आलम सल-लल्लाहो ताला अलेह व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ हसन! क्या हाल है, मैंने खुदा का शुक्र करके वाक़ेया अर्ज़ कर दिया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ फ़रज़ंद जो अपने ख़ालिक़ से लौ लगाए। उसके काम यूंही बनते हैं। (तारीख़-उल-खुल्फा, सफ़ा 135)

सबक़:- हज़रत अमीर मुआविया(र०अ०) के दिल में हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का अदब व एहत्राम था और आपने हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का एक माक़ूल वज़ीफा मुक़र्रर कर रखा था और एक साल ताख़ीर हो जाने पर उसकी तलाफी मज़ीद निस्फ लाख से कर दी और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िलाफत व इमामत को जायज़ समझते थे। वरना आप हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की तरफ़ से मुक़र्रर कर्दा वज़ीफा कभी क़बूल ना फ़रमाते।

हिकायत नम्बर(294) अच्छा सवार

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को जब के वो बच्चे थे, अपने कंधे मुबारक पर बिठा लिया। रास्ते में एक शख़्स मिला और उसने जो इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम

Scanned by CamScanner

के कंधे पर देखा तो कहने लगा ऐ बच्चे! बड़ी अच्छी सवारी पर सवार हो। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने ये सुनकर फ़रमाया! और सवार भी तो बड़ा अच्छा है (तारीख़-उल-ख़ुल्फा, सफ़ा 32)

सबक़:- हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को बड़े प्यारे थे। पस उनसे प्यार रखना हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को खुश करना है।

हिकायत नम्बर(295) ख़ताकार को इनाम

एक दिन हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने दौलत कदा में चन्द महमानों के साथ मिल कर खाना तनावुल फ़रमा रहे थे के आपने अपने ग़ुलाम को सालन लाने के लिए इर्शाद फ़रमाया। वो लाया तो अचानक उसके हाथ से बर्तन गिर पड़ा। और टूट गया। और सालन का कुछ हिस्सा हज़रत इमाम हसन पर भी गिरा। ग़ुलाम ये मंज़र देखकर घबराया। हज़रत इमाम हसन रज़ी अलाहो तआला अन्ह ने उसकी तरफ़ देखा तो उसने झट ये आयत पढ़ दी के *वलकाज़ीमीनल ग़ैज़ा* (और ग़ुस्सा पीने वाले) आपने फ़रमाया, मैंने ग़ुस्सा पी लिया। उसने फिर पढ़ा *वलआफीना अनिन्नासी* (और लोगों से दरगुज़र करने वाले) आपने फ़रमाया, जाओ, मैंने माफ भी कर दिया। उसने फिर पढ़ा *वल्लाहो युहिब्बुल मूहसीनीना* और अहसान करने वाले अल्लाह के महबूब हैं, आपने फ़रमाया। जाओ मैंने तुम्हें आज़ाद भी कर दिया। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 367, जिल्द 1)

सबक़:- ज़ैर दस्तों पर रहम करना चाहिए और ग़ुस्से को पी लेना और ख़ताकार को माफ कर देना और उस पर एहसान भी करना ये अल्लाह के महबूबों का काम है। पस हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अल्लाह के महबूब थे।

हिकायत नम्बर(296) सख़ी घराना

एक मर्तबा हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हज को जा रहे थे के जिस ऊँट पर ज़ादे राह लदा हुआ था वो ऊँट कहीं पीछे रह गया, एक जगह भूके प्यासे होकर एक बूढ़िया की झोंपड़ी में तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कुछ पीने को है? उसने अर्ज़ की हाँ है, उस बूढ़िया के पास एक बकरी थी और उसका दूध दोह कर हाज़िर किया। उन्होंने पिया। फिर पूछा, कुछ खाने

Scanned by CamScanner

को भी है? उसने जवाब दिया के तैयार नहीं है। उसी बकरी को ज़िबह करके खा लीजिए। चुनाँचे वो बकरी ज़िबह की गई और उसे खाकर फ़रमाया! बड़ी बी! हम क़ुरैश में से हैं। जब इस सफर से फिरेंगे तो तू हमारे पास आना। हम तेरे एहसान का बदला देंगे ये फ़रमा कर रवाना हो गए। जब उस बूढ़िया का ख़ाविंद घर पहुँचा तो ख़फा होकर कहने लगा के तूने बकरी उन लोगों को खिला दी जिनको तू जानती भी नहीं के वो कौन हैं। थोड़े दिन गुज़रे थे के वो मियाँ बीवी मुफलिसी के बाइस मदीने मुनव्वरह में आ पड़े। और ऊँट की लेंडियाँ चुन चुन कर बैचने लगे। एक दिन बूढ़िया कहीं जाती थी के हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने दर दौलत पर तशरीफ़ फ़रमा थे। आपने उस बूढ़िया को देख लिया और पहचान लिया और उसे बुलाकर फ़रमाया बड़ी बी! मुझे पहचानती है? उसने अर्ज़ किया नहीं। फ़रमाया! मैं वो शख़्स हूँ जो फलाँ दिन तेरा महमान हुआ था। बूढ़िया ने बग़ौर देखा और बोली, हाँ हाँ पहचान गई वाक़ई आप मेरी झोंपड़ी में तशरीफ़ लाए थे। हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हुक्म फ़रमया के एक हज़ार बकरियाँ खरीद कर इस बूढ़िया को दी जाएँ और साथ ही एक हज़ार दीनार नक़्द भी दिया जाए। चुनाँचे तामील इर्शाद की गई और बूढ़िया को एक हज़ार बकरियाँ और एक हज़ार दीनार नक़्द दे दिया गया और फिर हज़रत इमाम हसन ने अपने ग़ुलाम को साथ करके उस बूढ़िया को हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास भेज दिया। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उससे पूछा के भाई साहब ने तुम्हें क्या दिया? बूढ़िया ने जवाब दिया के एक हज़ार बकरियाँ और एक हज़ार दीनार। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भी एक हज़ार बकरियाँ और एक हज़ार दीनार उस बूढ़िया को इनायत फ़रमाए और फिर आपने ग़ुलाम के साथ उस बूढ़िया को हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर(र०अ०) के पास भेज दिया। उन्होंने पूछा के दोनों भाईयों ने तुम्हें क्या दिया। वो बोली! दो हज़ार बकरियाँ और दो हज़ार दीनार। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर (र०अ०) ने भी उसको दो हज़ार बकरियाँ और दो हज़ार दीनार अता फ़रमा दिए। वो बूढ़िया चार हज़ार बकरियाँ और चार हज़ार दीनार लेकर अपने ख़ाविंद के पास आ गई और कहने लगी। ये इनाम उन सख़ियों ने इनायत फ़रमाया है जिनको मैंने बकरी खिलाई थी। (कीमियाऐ सआदत, सफ़ा 259)

सबक़:- अहले बैत अेज़ाम का घराना सखी घराना है। बूढ़िया ने बग़ैर जाने पहचाने सिर्फ एक बकरी खिलाई और अहले बैत की सख़ावत से माला

Scanned by CamScanner

माल हो गई। फिर जो उन लोगों को जान पहचान कर उनके नाम किसी नियाज़ का ईसाल करेगा तो वो क्यों ना दीन व दुनिया में कामयाब होगा।

हिकायत नम्बर(297) क़ीमती शर्बत

हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हाँ एक मेहमान आया। उसने खाना खाने के बाद शर्बत तलब किया हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने दरयाफ़्त फ़रमाया के आपको कौन सा शर्बत दरकार है। मेहमान ने जवाब दिया के वो शर्बत जो ना मिलने के वक़्त जान से ज़्यादा क़ीमती और मिल जाने के वक़्त निहायत कम क़ीमत होता है। इमाम साहब ने नौकरों से फ़रमाया के मेहमान पानी माँगता है। हाज़रीन को आपकी ज़हानत पर निहायत हैरानी हुई। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 218)

सबक़:- पानी खुदा तआला की एक बड़ी ग्राँक़द्र और क़ीमती नअेमत है। शेख सादी अलेहिर्रहमत फ़रमाते हैं के मुर्ग़ी को देखिए के एक घूंट पानी का पी कर फौरन अपना मुंह ऊपर आसमान की तरफ़ उठा कर गोया अल्लाह का शुक्र अदा कर लेती है। मगर अफ़्सोस के ग़ाफिल इंसान बीसियों मन पानी पी कर भी अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करता।

हिकायत नम्बर(298) खून आलूद छुरी

एक रोज़ एक शख़्स को गिरफ़्तार करके हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के सामने लाया गया। गिरफ़्तारी एक वीरान ग़ैर आबाद मुक़ाम से हुई थी। गिरफ़्तारी के वक़्त उसके हाथ में एक खून आलूद छुरी थी। ये खड़ा हुआ था और एक लाश खाक व खून में तड़प रही थी।

उस शख़्स ने हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के सामने इक़्बाले जुर्म कर लिया और उन्होंने क़िसास का हुक्म दिया। इतने में एक और शख़्स दौड़ता हुआ आया और उसने हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के सामने इक़्बाले जुर्म किया। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मुल्ज़िम अव्वल से दरयाफ़्त किया के तूने क्यों इक़्बाल किया था उसने कहा के जिन हालात में मेरी गिरफ़्तारी की गई थी। मैंने समझा के इन हालात की मौजूदगी में मेरा इंकार कुछ भी मुफीद साबित ना होगा पूछा गया के वाक़ेया क्या है? उसने कहा मैं कसाब हूँ, मैंने जाए वक़ू के क़रीब ही बकरे को ज़िबह किया था। गोश्त काट रहा था के मुझे पैशाब का ज़ोर पड़ा और मैं जाए वक़ के क़रीब पैशाब के लिए

Scanned by CamScanner

बैठा और जब फारिग़ हुआ तो मेरी नज़र लाश पर पड़ गई। मैं उसे देखने के लिए क़रीब पहुँचा और देख ही रहा था के पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया सब लोग कहने लगे के यही क़ातिल है मुझे यक़ीन हो गया के उन लोगों के बयानात के सामने मेरे बयान का कुछ ऐतबार ना किया जाएगा। इसलिए मैंने इक़्बाल ही कर लेना बेहतर समझा।

अब दूसरे इक़्बाली मुजरिम से दरयाफ़्त फ़रमाया। उसने कहा मैं एक आराबी हूँ, मुफ़लिस हूँ, मक़्तूल को मैंने ब तमे माल क़त्ल किया था। इतने में मुझे किसी के आने की आहट मालूम हुई मैं एक गोशे में जा छिपा इतने में पुलिस आ गई उसने पहले मुल्ज़िम को पकड़ लिया। अब जब उसके ख़िलाफ फैसला सुनाया गया तो मेरे दिल ने मुझे आमादा किया के मैं इस बेगुनाह को बचाऊँ और अपने जुर्म का इक़्बाल कर लूं।

ये सुनकर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से पूछा के तुम्हारी क्या राय है? तो उन्होंने कहा। अमीर-उल-मोमिनीन अगर इस शख़्स ने एक को हलाक किया है तो उस शख़्स की जान भी बचाई है और अल्लाह ने फ़रमाया है *वमन अहयाहा फकान्नामा अहयान्नसा जमीआ* हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने ये मशवरा क़बूल कर लिया और दूसरे मुल्ज़िम को भी छोड़ दिया और मक़्तूल का खून बहा बैत-उल-माल से दिला दिया। (अत्तरक़-उल-हिकमियह फी अलसियासत-उल-शरिया, सफ़ा 56)

सबक़:- क़ाज़ी व हज को फैसला करते वक़्त बड़ी सोच और समझ के साथ और सोच व समझ वालों से मशवरा लेने के बाद फैसला करना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बड़े दाना और नुक़्ता के मालिक थे और ये भी मालूम हुआ के बड़ा अगर छोटे के मशवरे को बेहतर जानकर उस पर अमल करे तो उसकी बड़ाई में फर्क नहीं आ जाता जिस तरह के हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी बाज़ अवक़ात हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के मशवरे पर अमल फ़रमा लिया करते थे।

हिकायत नम्बर(299) जन्नत का सेब

एक मर्तबा हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा ने बचपन में दो तख़्तियों पर कुछ लिखा और बाहम एक दूसरे से कहने लगे के मेरा ख़त अच्छा है, चुनाँचे दोनों इस बात का फैसला लेने

Scanned by CamScanner

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास पहुँचे। हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने इस मुक़द्दमे का मुराफेआ हज़रत फ़ातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के सपुर्द फ़रमाया और हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने फ़रमाया। बेटो! इस बात का फैसला तुम अपने नाना जान हुज़ूर मोहम्मद-उर-रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कराओ। चुनाँचे दोनों भाई हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। तुम्हारा फैसला जिब्राईल करेंगे। जिब्राईले अमीन हाज़िर हुए। और कहने लगे। या रसूल अल्लाह! खुदा तआला ये फैसला खुद फ़रमाएगा। चुनाँचे खुदा तआला का जिब्राईल को हुक्म हुआ के जिब्राईल जन्नत से एक सेब ले जाओ। और वो सेब उन दोनों की तख़्तियों पर डाल दो। सेब जिस की तख़्ती पर ठहर जाए। वही ख़त अच्छा है। चुनाँचे जिब्राईल ने जन्नत का एक सेब लाकर इन तख़्तियों पर गिरा दिया तो खुदा के हुक्म से उस सेब के दो टुकड़े हो गए और एक टुकड़ा तो हज़रत हसन की तख़्ती पर और दूसरा हज़रत हुसैन की तख़्ती पर जा पड़ा और फैसला ये हुआ के दोनों ही का ख़त अच्छा है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 391, जिल्द 2)

सबक:- हज़रत इमाम हसन और हज़र इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को खुदा तआला से एक ख़ास निस्बत थी और खुदा तआला अपने मेहबूब के इन शहज़ादों की दिल शिकनी नहीं चाहता फिर जो शख़्स इन शहज़ादों की किसी क़िस्म की तोहीन का इरतिकाब करे तो वो किस क़द्र ज़ालिम है।

हिकायत नम्बर(300) फरिश्ते की डयूटी

एक मर्तबा हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्हा बचपन में घर से कहीं बाहर तशरीफ़ ले गए तो हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा कुछ परेशान सी हुईं के शहज़ादे कहाँ चले गए इतने में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ ले आए तो हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! हसन व हुसैन आज कहीं खो गए, और मुझे मालूम नहीं के कहाँ चले गए। इतने में जिब्राईले अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह आपके दोनों शहज़ादे फलाँ जगह हैं। आप परेशान ना हों। खुदा ने उनकी हिफाज़ के लिए एक फरिश्ता मतय्यन कर रखा है। ये सुनकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम

Scanned by CamScanner

इस जगह तशरीफ़ ले गए। क्या देखते हैं के दोनों साहबज़ादे तो पड़े सोते हैं और फरिश्ता एक बाज़ू उनके नीचे बिछाए हुए और दूसरे से साया किए हुए बैठा है। हुज़ूर ने दोनों का मुंह चूम लिया और उठा कर घर ले आए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 392, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम के ये दोनों शहज़ादे फरिश्तों के भी मख़्दूम हैं। फिर इंसानों के लिए भी क्यों लाज़िम ना होगा के वो इन शहज़ादों की मोहब्बत अपने दिल में रखें और उनके नक़्शे क़दम पर चलकर उनको अपना पैशवा व मख़्दूम जानें।

हिकायत नम्बर(301) प्यास का इलाज

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के रोने की आवाज़ सुनी तो आप जल्दी से घर तशरीफ़ ले गए और हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से फ़रमाया मेरे बेटे क्यों रो रहे हैं? हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! इन्हें प्यास लग रही है और इस वक़्त पानी यहाँ मौजूद नहीं। हुज़ूर ने फ़रमाया! इन्हें इधर लाओ। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने पहले हसन को उठाया और अपनी ज़बान मुबार उनके मुंह में डाल दी और हसन ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़बान चूसना शुरू की और उनकी प्यास जाती रही और चुप हो गए। फिर आप सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हुसैन को उठाया और उनकी मुंह में भी ज़बान डाली और वो भी ज़बान मुबारक चूस कर सैर हो गए। और चुप हो गए। (हुज्जत-उल्लाह अललआलमीन सफ़ा 681)

सबक़:- हज़रत हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को किसी क़िस्म की तकलीफ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर शाक़ गुज़री थी और उनके रोने से हुज़ूर को रंज पहुँचता था। फिर जिन ज़ालिमों ने हज़रत हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को सताया और रूलाया। उन्होंने हुज़ूर को किस क़द्र रंज पहुँचाया? और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सरतापा एजाज़ और मुख़्तार व मुतसर्रिफ हैं के अपनी ज़बान मुबारक के चुसाने से ही प्यास दूर फ़रमा दी आज कोई अपनी ज़बान किसी प्यासे के मुंह में डाल कर उसकी प्यास बुझा कर तो दिखाए और हुज़ूर की मिस्ल बनने

Scanned by CamScanner

वाला कोई शख़्स अपने किसी नवासे के मुंह में अगर अपनी ज़बान डाले भी तो बहुत मुमकिन है के वो नवासा अपने दांतों से इस गुसताख़ की ज़बान ही चबा डाले।

हिकायत नम्बर(302) हैबत व शुजाअत

एक दिन हज़रत फातिमा-उज़-ज़ोहरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा अपने दोनों शहज़ादों यानी हसन व हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा को लेकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ की या रसूल अल्लाह इन दोनों को कुछ अता फ़रमाईये। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया हाँ मंज़ूर है और फिर फ़रमाया: हसन को तो मैंने अपना इल्म और अपनी हैबत अता की और हुसैन को अपनी शुजाअत और अपना करम बख़्शा। (इब्ने असाकर, अलअमन वलअला सफ़ा 99)

सबक़:- हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हैबत व शुजाअत और इल्मो करम के मालिक थे। और ये चीज़ें इन्हें अपने नाना जान से मिली थीं और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अल्लाह के ख़ज़ानों के बाज़न अल्लाह मालिक व मुख़्तार और मुतसर्रिफ हैं। वरना आप ये क्यों फ़रमाते के मैंने हसन को हैबत व इल्म और हुसैन को शुजाअत व करम बख़्शा और बख़्शता वही है जो मालिक व मुख़्तार और मुतसर्रिफ हो...

कौन देता है देने को दिल चाहिए
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

हिकायत नम्बर(303) एक अजीब ख़्वाब

हज़रत इमाम हसन (र०अ०) ने एक रात ख़्वाब में देखा के आपकी दोनों चश्म मुबारक के दरमियान कुल हुवल्लाहो अहद लिखी हुई है, आपके अहले बैत ये ख़्वाब सुन कर बहुत खुश हुए लेकिन जब ये ख़्वाब हज़रत सईद बिन अलमसीब (र०अ०) के सामने बयान किया गया तो उन्होंने फ़रमाया के वाक़ई अगर ये ख़्वाब देखा है तो हज़रत इमाम उमर के चन्द रोज़ ही बाक़ी रह गए हैं, चुनाँचे ये ताबीर सही वाक़े हुई और थोड़े दिनों के बाद आपके दुश्मनों ने ज़ेहर देकर शहीद कर दिया। (तारीख़-उल-ख़ुल्फा, सफ़ा 134)

Scanned by CamScanner

सबक़:- हज़रत इमाम हसन ने दुश्मनों के ज़ुल्म से जाम शहादत नोश फ़रमाया और आपकी शहादत की तरफ़ इशारा पहले ही ख़्वाब में हो गया था।

हिकायत नम्बर(304) पर्दापोशी

हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को दुश्मनो की साज़िश से ज़ेहर दे दिया गया। जिसके असर से आपको असहाल कबदी लाहक़ हुआ और आंतों के टुकड़े कट कट कर असहाल में ख़ारिज हुए। इस सिलसिले में आपको चालिस रोज़ सख़्त तकलीफ रही। क़रीब वफात जब आपकी ख़िदमत में आपके बरादर अज़ीज़ हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हाज़िर होकर दरयाफ़्त किया के आपको किसी ने ज़ेहर दिया है तो आपने फ़रमाया के तुम उसे क़त्ल करोगे? हज़रत इमाम हुसैन ने जवाब दिया। बेशक क़त्ल करूंगा। हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया के मेरा गुमान जिसकी तरफ़ है। अगर दर हक़ीक़त वही क़ातिल है तो अल्लाह तआला मुनतक़िम हक़ीक़ी है और उसकी गिरफ़्त बहुत सख़्त है अगर वो नहीं तो मैं नहीं चाहता के मेरे सबब से कोई बेगुनाह मुबतलाऐ मुसीबत हो। (तारीख़-उल-ख़ुल्फा सफ़ा 134)

सबक़:- हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का इंसाफ व अद्ल और आपकी एहतियात क़ाबिल सद तहसीन व आफरीन है और ये हज़रत इमाम ही का हिस्सा है के सख़्त तकलीफ के बावजूद जिसकी तरफ़ गुमान है उस क़ातिल का नाम नहीं बताते ताके गुमान सही ना होने के बाइस कोई बे गुनाह ना मारा जाए। मालूम हुआ के हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भी वैसे ही किसी को क़ातिल नहीं क़रार दे दिया फिर आज अगर कोई ख़्वाह म ख़्वाह अपनी तरफ़ से क़ातिल को मुतय्यन करता फिरे तो ये इसकी ज़ियादती है या नहीं।

हिकायत नम्बर(305) हज़रत इमाम हसन(र०अ०)

हज़रत अब्बास की बीवी हज़रत उम्मुल फज़्ल रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने एक रात ख़्वाब में देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के जिस्म अक़्दस का एक टुकड़ा उनकी गोद में रखा है। ये ख़्वाब देख कर वो बड़ी हैरान हुईं और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर बोलीं। या रसूल अल्लाह! मैंने एक अजीब ख़्वाब

Scanned by CamScanner

देखा है और वो ये के आपके जिस्म अक़्दस का एक टुकड़ा मैंने अपनी गोद में पड़ा देखा है। हुज़ूर(स०अ०स०) ने फ़रमाया तूने बड़ा अच्छा ख़्वाब देखा है। इंशा अल्ला मेरी फातिमा के हाँ एक बच्चा पैदा होगा। सो तेरी गोद में खेलेगा। चुनाँचे हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के हाँ हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह पैदा हुए और वो उम्मुल फज़्ल की गोल में खेले। (मिश्कात शरीफ सफ़ा 564)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लख़्ते जिगर हैं और आपकी मोहब्बत हुज़ूर की मोहब्बत और आपको ईज़ा देना हुज़ूर को ईज़ा देना है।

हिकायत नम्बर(306) इमाम हुसैन(र०अ०) और एक बदवी

एक बदवी ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह से अर्ज़ किया के मैंने आपके नाना यानी नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से सुना है के जब तुम किसी हाजत के ख़्वास्तगार हो। तो चार शख़्सों में से एक से दरख़्वास्त करो। या तो किसी शरीफ से और ये चारों सिफतें आपमें बदर्जा उत्तम पाई जाती हैं। इसलिए के सारे अरब को शराफत अगर मिली है तो आप ही की वजह से मिली है। और सख़ावत आपका जबली वस्फ है, रहा क़रआन तो वो आपके घर उतरा ही है और मिलाहत के मुतअल्लिक़ अर्ज़ हैं के मैंने आपके नाना सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से सुना है के जब तुम मुझे देखना चाहो तो हसन व हुसैन को देख लो।

बदवी की ये गुफ़्तगू सुनकर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया क्या हाजत है। बयान कर। बदवी ने अपनी हाजत ज़मीन पर लिख कर बयान की इस पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया के मैंने अपने नाना जान सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से सुना है के नेकी बक़द्र मारफ़त हुआ करती है। मैं तुझ से तीन मसअले पूछता हूँ। अगर तूने उनमें से एक का जवाब दे दिया तो इस थेली का तीसरा हिस्सा तेरी नज़्र है और अगर दो का जवाब दिया तो दो हिस्सा तेरे होंगे और अगर तीनों का जवाब दे दिया तो सारी थेली तेरी नज़्र कर दूंगा। बदवी ने कहा दरयाफ़्त फ़रमाइये। आपने फ़रमाया तमाम अमलों में से कौन सा अमल अफ़्ज़ल है? कहा खुदा पर ईमान लाना, फ़रमाया, बन्दे की हलाकत से निजात किस चीज़ से है? कहा खुदा पर तवक्कुल करने में, फ़रमाया बन्दे को किस चीज़ से ज़ीनत हासिल होती है? कहा इल्म से

Scanned by CamScanner

जिसके साथ तहम्मुल व बुर्दबारी भी हो। फ़रमाया। अगर किसी शख़्स में ये वस्फ ना हो तो? कहा उसके पास वो माल होना चाहिए जिसमें सख़ावत हो। फ़रमाया अगर किसी के पास ऐसा माल ना हो तो? कहा फिर उसके लिए जलाने वाली बिजली चाहिए। हज़रत हंस पड़े और बदवी को पूरी थेली दे दी। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 393, जिल्द:2)

सबक़:- अल्लाह वालों से हाजात तलब करना इर्शादे नबव्वी है और अल्ला वाले हाजतमंदों की हाजात पूरी फ़रमा देते है। और मालूम हुआ के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बड़े फय्याज़ और सख़ी थे और ये के पहले ज़माने के बदवी भी इल्म व इर्फान के मालिक थे।

हिकायत नम्बर(307) बूऐ कर्बला

एक रोज़ हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की गोद में तशरीफ़ फ़रमा थे। और हज़रत उम्मुल फज़्ल भी पास बैठीं थीं। उम्मुल फज़्ल ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तरफ़ देखा के आपकी दोनों आँखों से आँसूं बेह रहे थे। उम्मुल फज़्ल ने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह ये आँसू कैसे हैं? तो हुज़ूर ने फ़रमाया के जिब्राईल ने मुझे ख़बर दी है के मेरे इस बच्चे को मेरी उम्मत क़त्ल कर देगी। और जिब्राईल ने मुझे इस सरज़मीन की जहाँ मेरा ये बच्चा शहीद होगा। सुर्ख मिट्टी भी लाकर दी।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस मिट्टी को सूंघा और फ़रमाया इस मिट्टी से मुझे बूऐ कर्बला आती है और फिर वो मिट्टी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को दे दी। और फ़रमाया ऐ उम्मे सलमा! इस मिट्टी को पास रखो। जब ये मिट्टी खून बन जाए तो समझ लेना। मेरा बेटा शहीद हो गया। हज़रत उम्मे सलमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने उस मिट्टी को एक शीशी में बंद कर लिया और फिर जिस दिन हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह कर्बला में शहीद हुए उसी रोज़ ये मिट्टी बंद शीशी में खून बन गई। (मिश्कात शरीफ सफ़ा 564, और हुज्जत-उल्लाह अललआलमीन सफ़ा 477)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को अपने लख़्ते जिगर इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की शहादत का इल्म था और इस सरज़मीन का भी जहाँ ये वाक़ेया होना था। इल्म था और

Scanned by CamScanner

इस सरज़मीन का नाम कर्बला भी मालूम था। आपसे कोई बात पनहाँ ना थी और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ये भी इल्म था के हज़रत उम्मे सलमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की शहादत के बाद तक ज़िन्दा रहींगी, जभी तो आपने हज़रत उम्मे सलमा से ये फ़रमाया के इस मिट्टी को पास रखो, जब ये खून बन जाए तो समझ लेना मेरा बेटा शहीद हो गया है बावजूद उसके फिर भी अगर कोई हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्मे ग़ैब में शक व शुबह करे तो ग़ौर कर लीजिए के वो किस क़द्र जाहिल है।

हिकायत नम्बर(308) दिलैराना जवाब

हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के विसाल के बाद जब यज़ीद तख़्त नशीन हुआ तो उसने अपनी बैत के लिए इत्राफ व मुमालिक सल्तनत में ख़त रवाना किए और मदीना मुनव्वरह के आमिल को भी लिखा के वो इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से भी यज़ीद की बैत ले, चुनाँचे जब आमिल मदीने हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में यज़ीद की बैत लेने के लिए हाज़िर हुआ। तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने यज़ीद के फिस्क़ व फिजूर की बिना पर उसे ख़िलाफत के लिए ना अहल क़रार दिया और शुजाअत व दिलैरी के साथ जवाब दिया के मैं इस ज़ालिम की हर गिज़ बैत ना करूंगा, आमिल ये जवाब पाकर पलट गया और यज़ीद को इस जवाब से मतला कर दिया यज़ीद ये जवाब पाकर बड़ा मुश्तअल हुआ। (सर-उल-शहादतैन सफ़ा 13, व सवानेह कर्बला सदर-उल-फाज़िल सफ़ा 50)

सबक़:- यज़ीद बड़ा फासिक़ व फाजिर था और उसके फिस्क़ व फिजूरी ही के पैशेनज़र हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उसकी बैत से इंकार फ़रमा दिया और ये भी मालूम हुआ है के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह शुजा इब्ने अलशुजा थे। आपने ये जानते हुए भी के यज़ी की बैत से इंकार यज़ीद के लिए वजह इश्तिेआल होगा और वो खून का प्यासा हो जाएगा कलमा-ए-हक़ फ़रमाने से ग़ैरज़ ना फ़रमाया और जान बचा लेने के लिए हक़ीक़त को नहीं छिपाया। फिर ये कैसे हो सकता है के आपके वालिद माजिद हज़रत शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो तआला ने कभी हक़ीक़त को छुपाया हो, या किसी से दब कर आपने कलमा-ए-हक़ का एलान ना फ़रमाया हो?

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(309) मज़ारे अनवर पर

यज़ीद को जब इस बात का पता चला के इमाम हुसैन ने मेरी बैत नहीं की तो उसने मुश्तअल होकर आमिल मदीने को हुक्म भेजा, के इमाम हुसैन को मेरी बैत पर मजबूर करो। वरना उसका सर काट कर मेरे पास भेज दो। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को जब इस यज़ीदी हुक्म का पता चला, तो आपने मदीना मुनव्वरह की सकूनत तर्क फ़रमा कर मक्का मोअज़्ज़मा चले जाने का इरादा फ़रमा लिया और मदीने मुनव्वरह से रवांगी से पहले रात को नाना जान हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मज़ार अनवर पर हाज़िर हुए और रो रो कर अर्ज़े हाल करने लगे और फिर रोज़ा-ए-अनवर से लिपट कर वहीं सो गए। ख़्वाब में देखा के नाना जान तशरीफ़ लाए हैं और आपने हुसैन को चूमा और सीना-ए-अक़्दस से लगा लिया और फ़रमाया बेटा हुसैन! अनक़रीब ज़ालिम तुझे कर्बला में भूका प्यासा क़त्ल कर देंगे। तेरे माँ बाप और भाई तेरे इन्तिज़ार में हैं बहिश्त तेरे लिए आरास्ता हो रहा है। उसमें ऐसे दर्जात आलिया हैं जो शहीद हुए बग़ैर तूझे नहीं मिल सकते जाओ बेटा! सब्र व शुक्र से जामे शहादत पी कर मेरे पास आ जाओ। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ये ख़्वाब देखकर घर आए और अहले बैत को जमा करके ये ख़्वाब सुनाया और मदीने से मक्का जाने का मुसम्मिम इरादा कर लिया और फिर अपने बरादर बुज़ुर्ग हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के मज़ार अनवर पर हाज़िर हुए और कलमात रूख़्सत ज़बान पर लाए और फिर माँ की क़ब्र अनवर पर हाज़िर हुए और अर्ज़ किया। ऐ अम्माँ जान! ये नाज़ों का पाला तुम्हारा हुसैन आज तुम से जुदा होने आया है और आख़री सलाम अर्ज़ करता है। क़ब्र अनवर से आवाज़ आई। व अलेक अस्सलाम ऐ मज़लूम और आप वहाँ कुछ देर रोते रहे और फिर वापस तशरीफ़ लाए और मक्का मोअज़्ज़मा जाने की तैयारी फ़रमा कर मक्का मोअज़्ज़मा को रवाना हो गए। (तज़करह हुसैन सफ़ा 27)

सबक़:- हज़रत इमाम की शहादत का खुद हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को भी इल्म था और ये आप ही की शान है के इल्म के बावजूद भी पाऐ इसतक़लाल में ज़र्रा भी लग़ज़िश नहीं आई और शौक़े शहादत में कमी नहीं आती। और जज़्बा-ए-जाँ निसारी और

Scanned by CamScanner

भी ज़्यादा ही होता है। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अपनी सीरते पाक से बता दिया के तालिब रज़ाऐ हक़ मौला की मर्ज़ी पर फिदा होता है। इसी में उसके दिल का चैन और उसकी हक़ीक़ी तसल्ली है। कभी वहशत व परेशानी उसके पास नहीं फटकती, बल्के वो इन्तिज़ार की साअतें शौक़ के साथ गुज़ारता है। और वक़्त मोऊद का बेचैनी के साथ मुनतज़िर रहता है।

हिकायत नम्बर(310) कूफियों के ख़तूत

हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की वफात के बाद यज़ीद तख़्त नशीं हुआ। तो अहले इराक़ को जब मालूम हुआ के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने यज़ीद की बैत नहीं की और आप मक्का मोअज़्ज़मा तशरीफ़ ले आए हैं तो उन्होंने मुत्तफिक होकर इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में ख़त भेजने शुरू किए जिसमें इस अमर का इज़हार था के हम अपने जानो माल आप पर क़ुर्बान कर देंगे। आप यहाँ कूफे में तशरीफ़ लायें हम आपकी बैत कर के आपके हुक्म से ज़ालिमों से मुक़ाबला करेंगे और आपका बहरहाल साथ देंगे। इस तरफ़ के इल्तिजा नामों और दरख़्वास्तों का सिलसिला बंध गया और तमाम जमातों और फिर्क़ों की तरफ़ से डेढ़ सौ के क़रीब ख़तूत हज़रत इमाम की ख़िदमत में पहुँचे। आप कहाँ तक ख़ामोश रहते। कूफियों के पैहम इसरार पर आपने उन्हें जवाब दिया के तुम्हारे डेढ़ सौ के क़रीब ख़त पहुँचे। मैं फिलहाल अपने चचा ज़ाद भाई मुस्लिम बिन अक़ील को तुम्हारी तरफ़ भेजता हूँ ताके तुम्हारी सच्चाई का पता चल सके। तुम अगर वाक़ई मेरा साथ देना चाहते हो तो मेरे नुमाईंदे मुस्लिम बिन अक़ील की बैत करो जब वो तुम्हारे हाल और सिद्के मक़ाल से मुझे मतलअ करेंगे तो मैं भी आ जाऊँगा। (सर-उल-शहादतें, सफ़ा 14, व सवानह कर्बला, सफ़ा 52, व तज़करह, सफ़ा 300)

सबक़:- कूफियों की बे वफाई मश्हूर होने के बावजूद हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनकी दरख़्वास्तों पर तवज्जह इसलिए फ़रमाई ताके कल क़यामत के दिन वो लोग ये ना कह सकें के हम ज़ालिमों से मुक़ाबला और उन से रिहाई के तलबगार थे। लेकिन इब्ने अली हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हमारी किसी दरख़्वास्त पर तवज्जह ना फ़रमाई। हज़रत इमाम आली मुक़ाम ने इतमामे हुज्जत के लिए अपने भाई को कूफा भेज दिया और आप अपना फर्ज़ अदा करने को तैयार हो गए।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(311) बारह हज़ार

कूफियों के कूफियों के पैहम इसरार पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह कूफे तशरीफ़ ले जाने पर आमादा हो गए। लेकिन हालात का पता लगाने के लिए आने पहले अपने चचा ज़ाद भाई हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को वहाँ भेजा और हज़रत मुस्लिम से फ़रमाया के तुम वहाँ जाकर मेरे लिए कूफियों से बैत लो। अगर उन्होंने बैत कर तो मुझे मतलअ करना मैं भी आ जाऊँगा। चुनाँचे हज़रत मुस्लिम अपने दो कमसिन बच्चों को साथ लेकर कूफे को रवाना हो गए। इन दो साहबज़ादों का नाम मोहम्मद और इब्राहीम था। ये दोनों अपने बाप को बहुत प्यारे थे। इसलिए ये दोनों भी इस सफर में अपने वालिद बुज़ुर्गवार के हमराह हो गए हज़रत मुस्लिम कूफ पहुँचे तो आपने मुख़्तार बिन उबैद के मकान पर क़याम फ़रमाया। आपकी तशरीफ़ आवरी की ख़बर सुन कर जूक़ दर जूक़ मख़लूक़ आपकी ज़ियारत को आई और बारह हज़ार से ज़्यादा तादाद ने आपके दस्ते मुबारक पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बैत की। हज़रत इमाम मुस्लिम ने अहले इराक़ की गरवीदगी व अक़ीदत देखकर हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की जनाब में अरीज़ा लिखा जिसमें यहाँ के हालात की इत्तिला दी और इल्तिमास किया के आप जल्दी तशरीफ़ ले आएँ ताके बंदगाने खुदा यज़ीद के नापाक शर से महफूज़ रहें और दीने हक़ की ताईद हो। (सर-उल-शहादतें, सफ़ा 14, व सवानह कर्बला; सफ़ा 35)

सबक़:- अहले बैत अेज़ाम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन की मनशा सिफ यही थी के बंदगाने खुदा ग़ैर शरई निज़ाम से निजात पाएँ। आला कलमत-उल-हक़ और दीने हक़ की ताईद हो और अहले हक़ हमेशा इसी मसलक पर क़ायम रहें।

हिकायत नम्बर(312) जल्लाद इब्ने ज़ियाद

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब कूफे पहुँचे तो बारह हज़ार से ज़्यादा इराक़ियों ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बैत इमाम मुस्लिम के हाथ पर कर ली। ये सूरते हाल देखकर इमाम मुस्लिम ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को लिखा के आप जल्द तशरीफ़ ले आएँ उधर जब यज़ीद को इस सूरते हाल का पता चला तो

Scanned by CamScanner

उसने हाकिम बसरा उबैद-उल्लाह बिन ज़ियाद को हुक्म भेजा के वो फौरन कूफे पहुँच कर लोगों को इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बैत से रोके और जिन्होंने बैत कर ली है उन्हें तंबीह करे। इब्ने ज़ियाद बड़ा मक्कार और जल्लाद था। ये ज़ालिम झट कूफ पहुँचा और अहले कूफे को जमा करके यज़ीद की मुख़ालफत से डराया धमकाया और बड़े बड़े लालच देकर उन्हें हिमायत हुसैन से रोका और सब पर अपना रौब व दाब बिठाया। हज़रत इमाम मुसिल्म ये सूरते हाल देखकर रात को हानी बिन उरवा के मकान में तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया ऐ हानी! मैं यहाँ ग़रीब मुसाफिर हूँ तू अहले कूफे से खूब वाक़िफ है मैं तेरी पनाह में आया हूँ। मुझे अपने मकान में पनाह दे। हानी ने क़बूल किया और एक हुजरा अपने घर का उनके लिए खाली कर के कहा के....

रवाके़ मंज़र चश्म मन आशयाना तस्त
करम नमाव फरूद आके ख़ाना ख़ाना तस्त

इब्ने ज़ियाद को पता चल गया के मुस्लिम को हानी ने पनाह दे रखी है। चुनाँचे उसने अपनी फौज भेजकर हज़रत हानी को गिरफ़्तार कर लिया और इस तरह कूफे के दीगर रऊसा व अमायद को भी क़िले में नज़रबंद कर लिया।

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को इस सूरत हाल का पता चला तो आपकी रग हाश्मी जोश में आई और अपने दोनों बच्चों को क़ाज़ी शरीह के घर में रवाना कर के मुहिब्बान अहले बैत को बुलाया तो आपकी निदा पर जूक़ दर जूक़ आदमी आने शुरू हुए। और चालीस हज़ार की जमीअत ने आपके साथ मिलकर क़स्र शाही का आहाता कर लिया और इब्ने ज़ियाद को घेर लिया। क़रीब था के इब्ने ज़ियाद और उसके साथी गिरफ़्तार हो जाते के इब्ने ज़ियाद ने एक चाल चली और वो ये के उसने कूफे के जिन बड़े बड़े आदमियों को क़िले में नज़रबंद कर रखा था। उन्हें मजबूर किया के तुम छत पर जाकर अहले कूफे को समझाओ और डराओ और उन्हें मजबूर करके मुस्मिल से अलग कर दो। ये लोग इब्ने ज़ियाद की क़ैद में थे ओर जानते थे के अगर इब्ने ज़ियाद को शिकस्त भी हुई तो वो क़िला फतह होने तक़ उनका ख़ात्मा कर देगा। इस ख़ौफ़ से वो घबरा कर उठे और दीवार क़िले पर चढ़ कर चिल्लाए के भाईयो! मुस्लिम की हिमायत तुम्हारे लिए ख़तरनाक है। हकूमत तुम्हारी दुश्मन हो जाएगी। यज़ीद तुम्हारे बच्चे बच्चे को मरवा डालेगा। तुम्हारे माल लुटवा देगा तुम्हारी जागीरें और मकान ज़ब्त हो जाऐंगे और अगर तुम इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ही के साथ

Scanned by CamScanner

रहे तो देखो हम जो इब्ने ज़ियाद की क़ैद में हैं। क़िले के अन्दर मारे जायेंगे। अपने अंजाम पर नज़र डालो। हमारे हाल पर रहम करो और अपने घरों को चले जाओ ये हीला कामयाब रहा। और हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का लश्कर मुनतशिर होने लगा। सब बेवफाई पर उतर आए और हज़रत इमाम मुस्लिम का साथ छोड़ने लगे। हत्ता के शाम तक हज़रत मस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साथ सिर्फ पाँच सौ की तादाद रह गई और ग़रूबे आफताब के बाद अंधेरा हुआ तो वो भी साथ छोड़ गए और इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तनहा रह गए। (सर-उल-शहादतें सफ़ा 16, व सवानह कर्बला, सफ़ा 5 तज़करह, हुसैन: सफ़ा 36)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह और अहले बैत अेज़ाम की मोहब्बत व वफा के उन दावेदारों के जुमला अहदो पैमान झूटे थे और ये लोग वक़्त पर बेवफा साबित हुए; मालूम हुआ के हर मुद्दई मोहब्बत अहले बैत ज़रूरी नहीं के सच्चा ही हो।

हिकायत नम्बर(313) इमाम मुस्लिम(र०अ०) की शहादत

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब कूफे पहुँचे तो बेवफा कूफियों ने आपके हाथ पर बैत करके फिर आप से मुंह मोड़ लिया और आपका साथ छोड़ दिया और इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तनहा रह गए। रात का वक़्त था और इब्ने ज़ियाद ने आपकी गिरफ़्तारी के लिए शहर के चारों तरफ़ कड़ी निगरानी कर रखी थी। हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भूके प्यासे एक मस्जिद में बैठे रहे, रात को बाहर निकले, रास्ते का इल्म ना था दिल में कहते जाते थे, अफसोस हुसैन से छुटे और दुश्मनों में घिरे ना कोई हमदम है के राज़े दिल सुने ना कोई क़ासिद है के हुसैन को हमारी ख़बर करे।

ना क़ासिद ए के पियामे बिसोए यारबर्द
ना महरमे के सलामे दराँ दयार बर्द
फतादा एम बशहर ग़रीब दयारे नीस्त
के क़िस्सा ज़ग़रीबे बशहर यार बर्द

इसी तरह हैरान परेशान एक मोहल्ले में फिर रहे थे, वहाँ एक बूढ़िया तूआ नामी को देखकर उससे पानी तलब फ़रमाया। तो उसने पानी पिलाया और ये मालूम करके के ये ग़रीब-उल-वतन मुस्लिम हैं। उन्हें अपने मकान में जगह दी। इस औरत का बेटा इब्ने ज़ियाद का आदमी था। उसने इब्ने ज़ियाद

Scanned by CamScanner

को ख़बर दे दी के मुस्लिम हमारे घर में हैं। इब्ने ज़ियाद ने अपनी फौज भेज दी जिसने बूढ़िया के मकान का मुहासरा कर लिया और चाहा के हज़रत मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को गिरफ़्तार कर लें, हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को इस मुहासरे का पता चला तो आप तनहा तलवार लेकर इब्ने ज़ियाद के लश्कर पर टूट पड़े। जैसे शेरे बब्बर बकरियों के गल्ले पर हमला आवर होता है। आपके हमले से दिल आवरों ने दिल छोड़ दिए और बहुत आदमी ज़ख़्मी हुए और बहुत से मारे भी गए। उन ज़ालिमों ने फिर दरो दीवार पर चढ़ कर आप पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। जिससे हज़रत मुस्लिम का बदन मुबारक ख़स्ता हो गया और एक पत्थर आपकी पैशानी पर लगा खून बहने लगा। उस वक़्त आपने मक्का की तरफ़ रूख़ करके कहा।

ऐ हुसैन! कुछ आपको आपने भाई ख़स्ता जिग्र की भी ख़बर है के उस पर क्या गुज़री और कूफियों ने उसके साथ क्या किया अफसोस मेरे हाल ज़ार की आपको ख़बर कौन पहुँचाए और कौन आपको यहाँ आने से रोके...

ना क़ासिद ने सबाऐ मुर्ग़ नामा बरे
किसे ज़बे किसी मानमे बर्द ख़बरे
सबा बगुलशन अहबाब मअगर बगुज़री
इज़ा लक़ीता हबीबी फकुल लहू ख़बरी

इसी असना में एक और पत्थर आकर आपके लब व दनदान पर लगा मुंह से खून जारी हुआ दाढ़ी मुबारक रंगीन हो गई तो अब मजबूर होकर एक दीवार से तकिया लगा कर बैठ गए के एक नामर्द ने घर में से आकर आपके सर पर तलवार मारी जिससे ऊपर का होंट कट गया। आपने इसी हाल में इस बुज़दिल को जहन्नुम रसीद फ़रमा दिया और फिर दीवार से तकिया लगा कर बैठ गए और फ़रमाने लगे। इलाही! मैं इस वक़्त प्यासा हूँ, आपकी ये फ़रयाद सुनकर वही बूढ़िया घर में से पानी लाई और आपको दिया। आपने मुंह से लगाया मगर उसमें खून मिल गया। इसलिए आपने फेंक दिया। बूढ़िया ने दोबारा दिया वो भी खून आलूद हो गया, फिर सहबारह दिया उसमें आपके दांत निकल कर गिर पड़े। पस आपने पियाला हाथ से रख कर फ़रमाया खुदा को मंज़र ही नहीं है। पीछे से किसी ने नेज़ह मारा जो पुश्त के पार हो गया। आप सरनिगों हो गए। ज़ालिमों ने दौड़कर पकड़ लिया और आपको इब्ने ज़ियाद के पास ले आए। इब्ने ज़ियाद बद निहाद ने हुक्म दिया के उन्हें छत पर ले जाकर क़त्ल किया जाए। चुनाँचे एक ज़ालिम इब्ने

Scanned by CamScanner

बकीर आपका हाथ पकड़कर आपको छत पर ले गया। हज़रत मुस्लिम जाते थे दरूद पढ़ते और कहते जाते थे। *अल्लाहुम्मा अहकम बेनना व बयाना क़ौमिना बिलहक़्क़ी* जब छत पर पहुँचे तो नीचे देखा के अहले कूफा जमा होकर देख रहे हैं, आपने फ़रमाया ऐ कूफियो! जब मेरा सर तन से जुदा किया जाए तो बदन दफ़्न करना और कपड़े उतार कर जो क़ाफला मक्का जाता हो हुसैन के पास भेज देना और मेरे बच्चों पर रहम करना। फिर मक्का की तरफ़ रूख करके कहा *अस्सलाम अलेका या इब्ने रसूल अल्लाह*

भाई यहाँ की आपको कैसे ख़बर करें!
हर गिज़ इधर को आप ना अज़्म सफर करें

इतने में ज़ालिम क़ातिल ने आपका सर मुबारक तन अतहर से जुदा कर दिया। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेहि राजिऊन

शहीद मुस्लिम बेकस हुए हज़ार अफसोस
फरिश्ते करते हैं इस ग़म से बार बार अफसोस
शक़ी ने कुछ भी ना ग़ुर्बत का उनकी पास किया
चलाई हलक़ पे शमशीर आब दार अफसोस

(तज़करह हुसैन, सफ़ा 43)

सबक़:- दुनिया दार नशा दुनिया में बदमस्त होकर अल्लाहो वालों पर इन्तिहाई ज़ुल्म व सितम ढाने पर उतर आते हैं। लेकिन अल्लाह वालों के पास इसतक़लाल में लग़ज़िश नहीं आती और ये भी मालूम हुआ के ये सारे ज़ुल्मो सितम ढाने वाले बड़े ही झूटे और बुज़दिल थे बज़ाहिर मुहिब्ब और बबातिन दुश्मन थे। पहले मोहब्बत का दम भरते रहे और फिर इब्ने ज़ियाद से डरकर अहले बैत की जान के भी दुश्मन बन गए।

हिकायत नम्बर(314) मज़लूम बच्चे

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब कूफे तशरीफ़ ले गए तो अपने दो नन्हे बच्चे हज़रत मोहम्मद और हज़रत इब्राहीम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को भी अपने हमराह ले गए थे। इब्ने ज़ियाद हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के क़त्ल से फारिग़ हुआ तो उसे पता चला के इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दो लड़के भी इसी शहर में हैं। इब्ने ज़ियाद ने फौरन मनादी करा दी के जो कोई मुस्लिम के लड़कों को अपने घर में जगह देगा। क़त्ल व ग़ारत किया जाएगा। उस वक़्त दोनों बच्चे क़ाज़ी शरीह के घर थे। क़ाज़ी साहब ने उन बच्चों को सामने

Scanned by CamScanner

बुलाया। और बेइख़्तियार रोने लगे। बच्चों ने पूछा क़ाज़ी साहब आज इस तरह रोने का सबब क्या है? क्या हम दोनों यतीम तो नहीं हो गए? क़ाज़ी साहब ने बजब्र रोना रोक कर कहा बच्चो! अल्लाह तआला तुम्हें सब्र अता फ़रमाए, वाक़ई तुम यतीम हो गए हो। बच्चों ने ये ख़बर सुनी तो रोने लगे और *वअतबाहू व ग़रबताहू* के नारे लगाने लगे। क़ाज़ी साहब ने कहा, बच्चो! चुप रहो। इब्ने ज़ियाद के लोग तुम्हारी तलाश में हैं मुझे तुम्हारी और अपनी जान का ख़ौफ है मैं चाहता हूँ के तुम्हें किसी के साथ मदीना रवाना कर दूं। बच्चे ये बात सुनकर इब्ने ज़ियाद के ख़ौफ से चुपके हो रहे।

क़ाज़ी साहब ने अपने लड़के असद से कहा के आज दरवाज़ इराक़ैन से एक क़ाफला मदीना को जा रहा है तू इन बच्चों को किसी नेक आदमी के सपुर्द कर आ। ताके वो इन्हें मदीना पहुँचा दे, असद जब लेकर दरवाज़ा इराक़ैन पर आया तो क़ाफला रवाना हो चुका था और गर्द क़ाफला नज़र आ रही थी, असद ने बच्चों से कहा के वो क़ाफला जा रहा है। दौड़ कर उसमें मिल जाओ। बेकस बच्चे क़ाफले की तरफ़ दौड़ पड़े। मगर क़ाफला दूर जा चुका था। इसलिए क़ाफले को ना पा सके। असद घर को वापस आ गया था। अंधेरी रात थी। बच्चे राह भूल गए रात भर इधर उधर फिरते रहे सुबह होने लगी तो एक चश्मा देखा थके मांदे थे। इसलिए लबे चश्मा बैठ गए। इत्तिफाक़न एक लोंडी इस चश्मे पर पानी भरने आई और उनको देखकर जब उसे मालूम हुआ के ये इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के यतीम बच्चे हैं, रोने लगी और कहा साहबज़ादो मेरे साथ चलो, मेरी मालिका मुहिब्ब अहले बैत है वो तुम्हें पाकर बहुत खुश होगी। बिलकुल ना घबराओ और मेरे साथ चलो बच्चे हैरान व परेशान उसके साथ हो लिए और जब घर पहुँचे तो घर की मालिका ये मालूम करके के ये मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के यतीम बच्चे हैं दौड़ी दोनों को सीने से लगाया और उनके हाल पर रोने लगी और फिर खिला पिला कर एक कमरे में सुला दिया।

इधर ये औरत तो इतनी खुदा तरस और मुहिब्ब अहले बैत थी। और इधर उसका ख़ाविंद हारिस नामी बेहद नाखुदा तरस और दुश्मन अहले बैत था। और दिन भर उन्हीं बच्चों की तलाश में सरगर्दां था के ये बच्चे मिल जायें तो मैं उन्हें क़त्ल करके उनका सर इब्ने ज़ियाद के पास ले जा कर इनाम पाऊँ।

ये अजीब मंज़र था के हारिस दिन भर जिन बच्चों की तलाश में था वो बच्चे उसी के घर में आराम फ़रमा थे। रात को जब ये ज़ालिम घर आया तो उसकी बीवी डरी के कहीं उसे इन बच्चों का इल्म ना हो जाए, चुनाँचे

Scanned by CamScanner

उसकी बीवी ने उसे जल्द जल्द खाना खिला कर उसे सो जाने को कहा और वो ज़ालिम दिन भर का थका मांदा सो गया।

कुछ रात गए बड़े बच्चे ने छोटे को जगाया और कहा भाई मैंने अभी अभी ख़्वाब देखा है के हमारे वालिद माजिद बहिश्त में हुज़ूर नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ टहल रहे हैं। और हुज़ूर नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उन से फ़रमा रहे हैं। ऐ मुस्लिम! तुम खुद चले आए और बच्चों को क्यों ज़ालिमों में छोड़ आए वालिद माजिद ने उनसे अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह! वो भी मेरे पीछे आ रहे हैं और और सुबह तक आ जाऐंगे।

छोटे बच्चे ने कहा! भाई जान! मैंने भी यही ख़्वाब देखा है ओर फिर दोनों बग़लगीर होकर रोने लगे।

उनके रोने से हारिस की आँख खुल गई। बीवी से पूछा ये शौर कैसा है? घर में कौन छुपा है? वो औरत सहम गई और डरी के खुदा जाने अब क्या हो? हारिस उठा और चिराग़ जलाकर अन्दर आया तो उन दोनों यतीमों को रोते देखकर बोला तुम कौन हो? उन दोनों साहबज़ादों ने साफ साफ कह दिया के हम फ़रज़ंदाने मुस्लिम हैं। ज़ालिम हारिस खुश हो गया और....

आया हारिस तो कहा तुम ही हो मुस्लिम के पुत्र
कल तुम्हीं ने मुझे हैरान किया चार पहर
ख़ैर अब कल के अवज़ आज मैं लूंगा जी भर
फैंक दी हाथ से फिर शमा इधर, तीग़ उधर
दस्त बैदार से इक भाई का बाज़ू खींचा
दूसरे भाई का इक हाथ से गेसू खींचा
क़त्ल के ख़ौफ से उठे ना अली के प्यारे
इस तवक़्कुफ पर सितम गर ने तमांचे मारे
खींचा इस तरह के पुरज़े हुए कुर्ते सारे
मुंह के बल गिर पड़े वो बुर्जे शरफ़ के तारे
या हुसैन इब्ने अली इक ने बस्द यास कहा
दूसरे भाई ने हज़रत अब्बास कहा

फिर ये ज़ालिम उन दोनों साहबज़ादों को घसीटता हुआ बाहर लाया, और बेचारी बहोतेरा हाथ पैर मारती रही, अपना सर उसके पैरों में रखती रही। और उसे ज़ुल्म से रोकती रही मगर इस ज़ालिम ने एक ना सुनी और वो बे रहम तलवार लेकर उठा और दोनों को फ़रात की तरफ़ ले चला और उनको

Scanned by CamScanner

क़त्ल करने के लिए तैयार हो गया। जब उन दोनों ने देखा के ये ज़ालिम हमें क़त्ल करने वाला है तो....

की बड़े भाई ने क़ातिल की ये मिन्नत उस आन
तुझ से अर्ज़ इक मैं करता हूँ अगर तू ले मान
छोटे भाई पे मैं क़ुर्बान मिरा सर क़ुर्बान
सर मिरा पहले क़लम कर तू बड़ा हो अहसान
शौक़ से और हर एक सदमा व ईज़ा दिखला
पर ना भाई का मुझे नन्हा सा लाशा दिखला

आख़िर कार ज़ालिम व बेरहम हारिस ने तलवार पकड़ ली। उस वक़्त बच्चों ने कहा। हम यतीम हैं बे वतन हैं। हम पर रहम कर मगर इस दुनिया के कुत्ते ने एक ना सुनी और ज़ालिम ने बड़े साहबज़ादे को पहले शहीद किया और फिर देखते ही देखते छोटे को भी शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन (तज़करह सफ़ा 48)

सबक़:- अल्लाह वालों की जान व माल और छोटे बड़ों पर बड़ी बड़ी आज़माईशें नाज़िल हुईं और उन पाक लोगों ने बड़े सब्रो शुक्र के साथ उन पर तहम्मुल फ़रमाया और "हरचै रसद ज़दो सत नकूसत" पर अमल पैरा होकर हमेशा दामन रज़ा व तसलीम को थामे रखा और कोई शिकवा शिकायत नहीं फ़रमाई।

हिकायत नम्बर(315) ज़ालिम का अंजाम

ज़ालिम हारिस ने हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दोनों साहबज़ादों को शहीद कर के चाहा के उनके सर इब्ने ज़ियाद के पास ले चलूं और इनाम पाऊँ, चुनाँचे वहाँ मुक़द्दस सरों को लेकर इब्ने ज़ियाद के पास आया। इब्ने ज़ियाद ने इन नन्हे और नूरानी सरों को देखकर पूछा ये किसके सर हैं? हारिस ने बताया के मुस्लिम के बच्चों के इब्ने ज़ियाद बजाए खुश होने के कहने लगा ऐ मलऊन! मैंने तो यज़ीद को ये लिखा है के वो मेरे पास क़ैद हैं अगर उसने ज़िन्दा मंगवाऐ तो मैं कहाँ से लाऊँगा तू इन्हें मेरे पास ज़िन्दा क्यों ना लाया? हारिस ने कहा, अगर ज़िन्दा लाता तो शहर वाले मुझ से छीन लेते और मैं इनाम से महरूम रह जाता। इब्ने ज़ियाद ने कहा के तूने मुझे ख़बर की होती मैं खुफिया मंगवा लेता। हारिस चुप हो गया इब्ने ज़ियाद ने अपने नदीमों में से मक़ातिल नामी शख़्स को जो मुहिब्ब अहले बैत था, हुक्म दिया के इस ख़बीस को लबे फिरात ले जाकर क़त्ल कर दो और जहाँ

Scanned by CamScanner

इन बच्चों के बदन डाले गए हैं। वहीं ये दोनों सर भी डाल दो, मक़ातिल ये हुक्म सुनकर बड़ा खुश हुआ और हारिस का हाथ पकड़कर बाहर आकर अपने राज़दारों से कहने लगा के अगर इब्ने ज़ियाद मुझे तमाम मुल्क दे देता तब भी मुझे इतनी खुशी ना होती जितनी उसके हुक्म से हुई। फिर मक़ातिल ने हारिस के पसे पुश्त हाथ बाँधे। सर नंगा किया। सरे बाज़ार लेकर चला और बच्चों के सर लोगों को दिखाता जाता था। लोग इन्हें देख कर रोते और हारिस पर लानत करते। हत्ता के लबे फिरात लाकर मक़ातिल ने पहले इन दोनों मुक़द्दस सरों को नहर में डाला। क़ुद्रते इलाही से दोनों के तन पानी के ऊपर आकर सरों से मिल गए और फिर पानी में डूब गए।

फिर मक़ातिल ने ज़ालिम हारिस को भी क़त्ल कर दिया और उसकी लाश को फिरात में फैंका तो फिरात ने उसे क़बूल ना किया और बाहर फैंक दिया, फिर उसे ज़मीन में दबा दिया। तो ज़मीन ने भी क़बूल ना किया और बाहर निकाल फैंका और आख़िर लकड़ियाँ जमा करके उसको जला दिया गया। (तज़रह सफ़ा 50)

सबक़:- दीन से मुंह मोड़ कर इस बेवफा दुनिया को अपनाने का फल यही मिलता है के आदमी ना दीन का रहता है ना दुनिया का और ऐसा ज़ालिम धोबी के कुत्ते की तरह ना घर का रहता है ना घाट का।

हिकायत नम्बर(316) कूफे का सफर

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को कूफे में जिस रोज़ शहीद किया गया। उसी रोज़ हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मक्का मोअज़्ज़मा से कूफे को रवाना हो पड़े। आपके अहले बैत मुवाली व खुद्दाम कुल बयासी नफूस आपके हमराह थे। ये मुख़्तसिर सा अहले बैत का क़ाफला मक्का मोअज़्ज़मा से जब रूख़सत हुआ तो मक्का मुकर्रमा का बच्चा बच्चा अहले बैत के इस क़ाफले को हरम शरीफ से रूख़सत होता देख कर आब दीदा और मग़मूम हो रहा था। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह का ये क़ाफला जब मुक़ामे शक़ूक़ में पहुँचा तो कूफे से आने वाले एक आदमी ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो अन्ह को बताया के कूफियों ने बे वफाई की और हज़रत मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह शहीद कर दिए गए हैं। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ये ख़बर सुनकर इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन पढ़ी फिर खेमे में आए हज़रत मुस्लिम की साहबज़ादी सामने आई तो उसके सर पर शफ़्क़त से हाथ फैरा और उससे तसल्ली व

Scanned by CamScanner

शफ़्क़त आमेज़ बातें फ़रमाईं। साहबज़ादी ने ख़िलाफे आदत ये मिराअत देखकर अर्ज़ की के आज तो आप मुझ पर यतीमाना नवाज़िश फ़रमा रहे हैं, शायद मेरे वालिद मारे गए। ये सुनकर हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो अन्ह बेइख़्तियार रो पड़े और फ़रमाया बेटी। ग़म ना करो। मैं तेरा बाप। मेरी बहन तेरी माँ और मेरी लड़कियाँ लड़के तेरे भाई बहन हैं। साहबज़ादी रोने लगी। फ़रज़ंदाने मुस्लिम दौड़े और वालिद की शहादत की ख़बर सुनकर वो भी रोए और फिर इन्तिहाई दिलैरी से फ़रमाने लगे। चचा जान! इंशा अल्लाह हम कूफियों से बाप के खून का बदला लेंगे। या खुद भी उनकी तरह शहीद हो जाऐंगे। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फिर अपने हमराहियों में एक तक़रीर फ़रमाई। और फ़रमाया के कूफियों ने बदअहदी की और मुस्लिम रज़ी अल्लाहो अन्ह को शहीद कर दिया तुम में से जिसका जी चाहे, वापस चला जाए। चुनाँचे बाज़ लोग जो इधर उधर से आकर मिल गए थे। ये सुनकर वापस चले गए और जो शहीद होने वाले थे वो रह गए। आगे बढ़े तो एक मुक़ाम सोलबा पर आकर उतरे। हज़रत इमाम अपनी बहन हज़रत ज़ैनब रज़ी अल्लाहो अन्हा के ज़ानो पर सर रखकर सो गए। थोड़ी देर के बाद रोते हुए उठे और फ़रमाया बहन! मैंने नाना जान को ख़्वाब में देखा है आप सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम रो रो कर फ़रमा रहे हैं के ऐ हुसैन! तुम जल्द हम से आकर मिलोगे। और एक सवार कह रहा है के लोग चल रहे हैं और उनकी क़ज़ायें उनकी तरफ़ चल रही हैं। हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया। अब्बा जान! क्या हम हक़ पर नहीं हैं? इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया बेशक हम हक़ पर हैं। और हक़ हमारे साथ है। पस अली अक्बर ने अर्ज़ की तो फिर मौत का क्या ख़ौफ! के एक ना एक दिन मरना ही है, अब्बा जान! हम गुलज़ार शहादत को फूला फला देख रहे हैं। दुनिया से बेहतर घर और उम्दा नअमतें हमारे सामने हैं। (तज़करह सफ़ा 57)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह और आपके अहले बैत सभी आला कलमात-उल-हक़ की ख़ातिर कमर बस्ता थे और मौत से मतलक़ हरासाँ ना थे और यज़ीद के फिस्क़ो फिजूर के ख़िलाफ आवाज़ बुलंद फ़रमाने में किसी दुनयवी नुक़सान का उन्हें मतलक़ ख़याल ना था।

हिकायत नम्बर(317) हुरा इब्ने रबाही

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की रवांगी की ख़बर

Scanned by CamScanner

पाकर इब्ने ज़ियाद ने हुरा इब्ने रबाही को एक हज़ार लश्कर देकर हज़रत इमाम को घेर कर कूफे में लाने के वास्ते आगे भेज दिया। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जब लश्कर को देखा तो एक शख़्स को मालूम करने के लिए भेजा के ये कैसा लश्कर है। इतने में हुरा इब्ने रबाही खुद हज़रत इमाम के सामने आया और कहने लगा। मुझे इब्ने ज़ियाद ने आपको घेर कर कूफे में ले जाने के लिए भेजा है। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने इस लश्कर में खुत्बा पढ़कर फ़रमाया के ऐ लोगो! मेरा इरादा इधर आने का ना था। मगर पै दरपै तुम्हारे ख़त पहुँचे, क़ासिद आए के जल्द आओ, तो मैं आया। अब अगर तुम अपने वादे पर क़ायम हो तो मैं तुम्हारे शहर चलूं वरना वापस चला जाऊँ, हर बोले के खुदा की क़सम मैं इन ख़तूत से ख़बरदार नहीं हूँ, हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया मगर तुम्हारे इसी लश्कर में बहुत से ऐसे आदमी मौजूद हैं जिन्होंने मुझे ख़त लिखे। फिर आपने ख़तूत पढ़कर सुनाए। अक्सर ने सर नीचा किया। और कुछ जवाब ना दिया हुर ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से कहा के हज़रत! इब्ने ज़ियाद ने मुझे आपको घेर कर कूफे ले चलने का हुक्म दिया है। मगर मेरे हाथ कट जायें जो आप पर तलवार उठाऊँ। चूंके मुख़ालिफ मेरे साथ हैं। इसलिए मसलेहत ये है के मैं आपके हमराह रहूं। रात को आप मसतूरात का बहाना करके मुझे से अलेहदा उतरें और जब लश्कर वाले सो जायें तो आप जिस तरह चाहें चले जायें। मैं सुबह को कुछ देर जंगल में तलाश करके वापस चला जाऊँगा और इब्ने ज़ियाद से कुछ बहाना कर दूंगा। (सर-उल-शहादतें, सफ़ा 19, व तज़करह, सफ़ा 59)

सबक:- हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो अन्ह महज़ इतमामे हुज्जत के लिए उन लोगों की दावत पर वहाँ तशरीफ़ ले गए और सिर्फ दीन की हिमायत का जज़्बा आपको आगे ले गया। जो गुसताख़ आपका मुद्दा सल्तनत का हिसूल बताते हैं। वो ग़ौर तो करें के अगर बक़ौल उनके आपका यही मुद्दा होता तो आप इस बे सरो सामानी के साथ हर गिज़ सफर ना फ़रमाते, जब के आपको इल्म था के दुश्मन बे हद क़वी है और हज़ारों की तादाद में लश्कर रखता है इधर लश्कर अज़ीम, और उधर चन्द नफूस कुदसिया किया कोई अक़्ल का दुश्मन ये कह सकता है के इस बे सरो सामानी के साथ आप सल्तनत के हिसूल के लिए निकले थे? हर गिज़ नहीं, बल्के आप को मैदान में सिर्फ हिमायत दीन का जज़्बा ले गया था...

Scanned by CamScanner

ना अपनी आन की ख़ातिर ना अपनी शान की ख़ातिर
वो मैदाँ में निकल आए फक़्त ईमान की ख़ातिर

हिकायत नम्बर(318) दश्त कर्बला

हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की कूफे को रवांगी की ख़बर पाकर इब्ने ज़ियाद ने हुर बिन रबाही की क़यादत में एक लश्कर आगे भेज दिया था। हुर बिन रबाही मर्दे सईद ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को मशवरा दिया के वो मसतूरात का बहाना फ़रमा कर रात को अलेहदा उतरें और रात ही को कहीं तशरीफ़ ले जायें। चुनाँचे हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने यही किया और रात को जब यज़ीदी लश्कर सो गया तो आपने वहाँ से कूच किया। अंधेरी रात में मालूम ना हुआ के किधर जा रहे हैं। सुबह को एक मैदान होलनाक में पहुँचे। यहाँ उतरे तो इस मैदान में जिस जगह मेख गाढ़ते। ज़मीन से खून निकलता। जिस दरख़्त से लकड़ियाँ तोड़ते, खून टपकता। ये हाल देखकर इमाम ने हमराहियों से पूछा। तुम में से किसी को इस दश्त का नाम मालूम है। एक ने कहा इसे मारिया कहते हैं। फ़रमाया! शायद कोई दूसरा नाम भी हो। लोगों ने कहा इसे कर्बला भी कहते हैं। ये सुनकर आपने फ़रमाया अल्लाहो अक्बर। *अरज़ो कर्बिन व बलाई व मसफका दिमाअ* ज़मीन कर्बला यही है। हमारे खून बहने की जा यही है अब हम यहाँ से कहीं नहीं जा सकते...

दुश्मन यहाँ पे खून हमारा बहायेंगे
ज़िन्दा यहाँ से हम ना कभी फिर के जाऐंगे
आले नबी का होगा इसी जा पे ख़ात्मा
सब तश्ना लब यहाँ पे सर अपना कटायेंगे!
कर्ब व बला है नाम इसी सर ज़मीं का
बच्चे यहाँ पे पानी का क़तरा ना पायेंगे
होगा हर इक शहीद यहाँ मुसतफा का लाल
और लाश क़त्ल गाह से हम सबकी लायेंगे

अली अक्बर ने अर्ज़ किया, अब्बा जान! आप ये क्या फ़रमा रहे हैं, फ़रमाया बेटा! तेरे दादा जान अली अलमुर्तज़ा सफैन जाते हुए यहाँ ठहरे और बड़े भाई हसन के ज़ानो पर सर रख कर सोए। मैं सिरहाने खड़ा था के रोते हुए उठे। बड़े भाई ने रोने का सबब पूछा। तो फ़रमाया मैंने अभी ख़्वाब में इस जगह हुसैन को दरयाऐ खून में डूबता हुआ हाथ पाँव मारता हुआ

Scanned by CamScanner

फ़रयाद करता हुआ देखा है मगर कोई उसकी फ़रयाद नहीं सुनता। फिर मुझ से फ़रमाया। बेटा! जब तुझे इस जगह वाक़ेया अज़ीम दरपैश होगा तो तू उस वक़्त क्या करेगा? मैंने अर्ज़ किया के सब्र करूंगा। इस पर फ़रमाया बेटा ऐसा ही कना के सब्र करने वालों का सवाब बेशुमार है।

अन्नामा यूतिस्साबिरूना अजराहुम बग़ैरी हिसाब

ये फ़रमा कर आपने असबाब उतरवाया। लब फिरात खैमा नस्ब फ़रमाया और दूसरी मोहर्रम 61हि॰ को आप दश्त कर्बला में क़याम पज़ीर हुए। (तज़करह, सफ़ा 61)

सबक़:- दश्त कर्बला अज़ल ही से हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के लिए इम्तिहान गाह मुक़र्रर हो चुका था और हज़रत को खुद भी अपने इस इम्तिहान देने का इल्म था और ये आप ही की शान और आप ही का हिस्सा है के इस ज़बरदस्त इम्तिहान के लिए आप हर तरह तैयार थे और आपने पाये इसतक़लाल और अज़्मो सिबात में ज़र्रा भी भी लग़ज़िश ना आने दी।

हिकायत नम्बर(319) तलक़ीन सब्र

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब दश्त कर्बला में उतरे तो आपने अहले बैत में ये वाज़ फ़रमाया के "मेरी मुसीबत व मुफारक़त पर सब्र करना जब मैं मारा जाऊँगा तो हर गिज़ मुंह ना पीटना और बाल ना नोचना और गिरेबान चाक ना करना ऐ मेरी बहन ज़ैनब! तुम फातिमा ज़ोहरा की बेटी हो। जैसा उन्होंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मुफारक़त पर सब्र किया था इसी तरह तुम भी मेरी मुसीबत पर सब्र करना।" (अनारत-उल-बसायर, सफ़ा 297) (बहवाला नासिख-उल-तवारिख मनक़ूल अज़ फैसला शरीया सफ़ा 41)

सबक़:- सब का इस अमर पर इत्तिफाक़ है के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह ने खुद भी सब्र फ़रमाया और अपने मुतअल्लिक़ैन को भी सब्रो शुक्र से रहने की तलक़ीन फ़रमाई पस हमें भी सब्रो शुक्र से काम लेना चाहिए। और जज़े व फज़े से बचना चाहिए। ताके इमाम साहब की खुशनूदी हासिल हो।

हिकायत नम्बर(320) इब्ने ज़ियाद का ख़त

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मुक़ामे कर्बला में

Scanned by CamScanner

क़याम फ़रमाया तो इब्ने ज़ियाद ने एक ख़त हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की तरफ़ इस मज़मून का भेजा के या तो यज़ीद की बैत कीजिए या लड़ने को तैयार हो जाइये। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने इस ख़त को पढ़कर फैंक दिया। और क़ासिद से फ़रमाया *मालाहू इन्दी* (जवाब) मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं। इब्ने ज़ियाद ये सुनकर ग़ुस्से में आ गया और इब्ने साद को बुला कर कहा के तुम एक मुद्दत से मुल्क रैए के हाकिम बनने की तमन्ना रखते हो लो आज मौक़ा है तुम हुसैन के मुक़ाबले के लिए जाओ और हुसैन को मजबूर करो के वो यज़ीद की बैत करे वरना उसका सर काट कर ले आओ। तो मुल्क रैए का परवानाए हकूमत तुम को दे दिया जाएगा। सग दुनिया इब्ने साद मुल्क रैए की हकूमत के लालच में आकर हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के मुक़ाबले के लिए तैयार हो गया और लश्कर लेकर कर्बला में पहुँच गया। कर्बला में पहुँच कर उसने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से दरयाफ़्त किया के आप यहाँ किस वास्ते आए हैं आपने फ़रमाया कूफ़ियों ने हज़ारों ख़त लिख लिख कर मुझे बुलाया। मैं खुद यहाँ नहीं आया मगर अब जब के तुम सबकी बेवफाई मुझे मालूम हो गई है तो मुझे अब भी तुम लोग वापस जाने दो और मुझ से मुतआर्रिज़ ना हो तो वापस चला जाऊँ। इब्ने साद ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की इस गुफ़्तगू की इत्तिला इब्ने ज़ियाद को दी तो इब्ने ज़ियाद ने ग़ुस्से से हुक्म भेजा के तुम्हें हुसैन रज़ी अल्लाहो रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से लड़ने को भेजा है सुलह करने नहीं। हम सिवा बैत के हुसैन से कुछ भी क़बूल नहीं करेंगे। फिर इब्ने ज़ियाद ने शमरशीत वग़ैरा ज़ालिमों को सरदार बना बना कर हज़ारों की तादाद में और फौजें भी भेज दीं और हुक्म दे दिया के हुसैन का पानी भी बन्द कर दिया जाए और उसे हर तरह तंग किया जाए। (तनक़ीह-उल-शहादतैन, सफ़ा 56)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह दीन के लिए मैदान में तशरीफ़ लाए और इब्ने साद वग़ैरा यज़ीदी लोग दुनयवी हकूमत के लालच में हज़रत इमाम के मुक़ाबले में आए। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह आख़िर तक उन पर इतमामे हुज्जत फ़रमाते रहे और फ़रमाते रहे के तुम अगर अब भी मुतारिज़ ना हो तो मैं वापस चला जाऊँ। मगर वो लोग खुद ही इस सारे फितने के बानी थे।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(321) नहर फिरात

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मैदाने कर्बला में नहर फिरात के किनारे अपने खैमे गाढ़ रखे थे मगर मोहर्रम की सातवीं तारीख को इब्ने साद को फौज ने जो बयासी हज़ार की तादाद में फिरात को घेर लिया और हज़रत इमाम को पानी लेने से रोक दिया इस फौज में अक्सर वही लोग थे। जो मुहिब्बाने अली और मुहिब्बाने हुसैन होने का दावा करते और जिन्होंने हज़रत इमाम को ख़त लिखकर खुद ही बुलाया था और अब खुद ही उनका पानी भी बन्द कर दिया। इब्ने साद ने हज़रत इमाम को कहा के वो अपने खैमे नहर के किनारे से उखाड़ लें। हज़रत अब्बास ने इस मौक़े पर फ़रमाया के ऐसा नहीं हो सकता मगर हज़रत इमाम ने फ़रमाया के भाई अब्बास जाने दो तुम बहर करम हो ये क़तरा-ए-ना चीज़ हैं उनसे झगड़ना फिज़ूल है। अपना खैमा यहाँ नहीं तो नहर से दूर ही सही। चुनाँचे हज़रत इमाम ने अपना खैमा वहाँ से उखाड़ने का हुक्म दे दिया। (तनक़ीह-उल-शहादतैन, सफ़ा 96)

सबक़:- साक़ी कोसर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के नवासे और उनके अहले बैत पर पानी बन्द कर देना यज़ीदियों की इन्तिहाई शिक़ावत और हज़रत इमाम का बकमला सब्रो शुक्र वहाँ से ख़ैमा उखाड़ लेना आपकी इन्तिहाई बुलंद होसलगी और जुर्रातो शुजाअत का मुज़ाहेरा था और ये भी मालूम हुआ के ये सब शक़ी जिन्होंने हज़रत पर पानी बन्द किया था और जो पहले अपनी झूटी मोहब्बत का एलान करते रहे थे। अफसोस उन ज़ालिमों पर जिन्होंने....

ख़ौफे खुदा व पास पैग़म्बर भुला दिया
सिब्ते नबी का नहर से ख़ैमा उठा दिया

हिकायत नम्बर(322) कुआँ

मैदाने कर्बला में ज़ालिमों ने हज़रत इमाम पर सातवीं मोहर्रम से पानी बन्द कर दिया। आठवीं तारीख़ को जब अहले बैत के छोटे बड़े प्यास से निढाल हुए और अलअतश अलअतश की आवाज़ें आने लगीं। तो हज़रत इमाम ने वहाँ एक कुआँ खुदवाया जिससे कुछ अफ्राद ने पानी पिया लेकिन वो कुआँ फिर आप ही आप ग़ायब हो गया। (तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 57)

सबक़:- मालूम हुआ के खुद ख़ुदा वंद करीम को यही मंज़ूर था के

Scanned by CamScanner

हुसैनी लश्कर सब्रो शुक्र का मुज़ाहेरा करके अब होज़े कोसर ही के पानी से अपनी प्यास बुझाए।

हिकायत नम्बर(323) बरीर हमदानी और इब्ने साद

मोहर्रम की नवीं तारीख़ को हुसैनी लश्कर में से हज़रत इमाम के रफ़ीक़ बरीर हमदानी हज़रत इमाम से इजाज़त लेकर इब्ने साद के पास गए और जाके उसके पास बैठ गए। इब्ने साद ने कहा के हमदानी! क्या तुम मुझे मुसलमान नहीं समझते जो मुझे सलाम अलेक नहीं कहा। हमदानी बोले के ज़ौफ है तेरे इस मुसलमान बनने पर के दावा तू इस्लाम का करता है और अहले बैत रसूल को दरया से पानी तक नहीं लेने देता। नहर फिरात से जानवर तक पानी पी रहे हैं मगर साक़ी कोसर के लख़्ते जिगर प्यास से तड़प रहे हैं....

फिटकार ज़ौफ लअन है तुझ बद मआल पर
पानी किया है बन्द मोहम्मद की आल पर

इब्ने साद ने कहा सच है लेकिन क्या करूं मुझ से मुल्क रैए की हकूमत नहीं छूटती। (तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 58)

सबक़:- दुनिया परस्त अपनी आक़बत से अंधा हो जाता है।

हिकायत नम्बर(324) मज़लूम सय्यद

मोहर्रम की नवीं तारीख़ सुबह से दोपहर तक इब्ने साद से गुफ़्तगू में गुज़री। बाद नमाज़ ज़ोहर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ख़ैमे से बाहर बैठे हुए कलाम अल्लाह की तिलावत फ़रमाते थे और आँखों से आँसू बहते जाते थे। इस दश्त होलनाक में इस वक़्त किसी मुसाफिर खुदा परस्त का गुज़र हुआ। हज़रत इमाम रज़ी अल्लो तआला अन्ह को इस आलम में देखकर उसने आपका हाल पूछा तो आपने फ़रमाया...

मुसाफिर सय्यद आवारा वतन हूँ
ग़रीक़ कुलज़मे रंज व महन हूँ
सितम मुझ पे किया इन शामियों ने
नबी की आल हूँ तशना दहन हूँ

कूफ़ियों ने बड़ी बड़ी खुशामदों से ख़त और क़ासिद भेज भेज कर मुझे बुलाया और अब मेरे साथ बेवफाई और दग़ा कर रहे हें और मेरे खून के प्यासे हो गए। (तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 58)

सबक़:- हज़रत इमाम आली मुक़ाम का ये वाक़ेया क़यामत तक

Scanned by CamScanner

यही पुकारता रहेगा के कूफियों ने झूटी मोहब्बत का मुज़ाहेरा करके हज़रत इमाम आली मुक़ाम पर इन्तिहाई ज़ुल्मो सितम किया सफ़ा क़िस्म के झूटे मदअयान मोहब्बत से इजतिनाब ही लाज़िम है।

हिकायत नम्बर(325) सरवरे अंबिया(स०अ०स०) की आमद

मोहर्रम की दसवीं रात शाम से सुबह तक हज़रत इमाम ने इबादते इलाही में गुज़ार दी। रात के पिछले पहर आप पर एक इसतग़राक़ की कैफियत तारी हुई। हक़ तआला की याद में इस क़द्र महू हुए के दुनिया व माफीहा की तरफ़ तवज्जह ना रही। इस आलम में हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम फरिश्तों की जमात के साथ मैदाने कर्बला में तशरीफ़ लाए और हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को बच्चों की तरह गोद में लेकर खूब प्यार फ़रमाया। और फ़रमाया ऐ जानो दिल के चैन नूर-उल-ऐन मेरे हुसैन में खूब जानता हूँ के दुश्मन तेरे दरपे आज़ार हैं और तुझे क़त्ल करना चाहते हैं। बेटा! तुम सब्रो शुक्र से इस साअत को गुज़ारना! तेरे जितने क़ातिल हैं।

क़यामत के दिन सब मेरी शफाअत से महरूम रहेंगे और तुझे शहादत का बहुत बड़ा दर्जा मिलने वाला है और थोड़ी ही देर में तुम कर्बला से छूट जाओगे। बेटा! बहिश्त तेरे लिए संवारी गई है। तेरे माँ बाप बहिश्त के दरवाज़े पर तेरी राह तक रहे हैं। ये बातें इर्शाद फ़रमा कर हुज़ूर ने फिर हज़रत इमाम के सर व सीने पर हाथ मुबारक फैर कर दुआ फ़रमाई के अल्लाहुम्मा आतिल हुसैना सबरन व अजरन ऐ अल्लाह मेरे हुसैन को सब्रो अज्र इनायत फ़रमा।

हज़रत इमाम जब इस मुकाशफे से चौंके और अहले बैत से ये सारा माजरा बयान किया तो सब हैरत से एक दूसरे का मुंह तकने लगे। (तनक़ीह-उल-शहादतैन)

सबक़:- कर्बला का सारा क़िस्सा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नज़र आली में था। हुज़ूर ज़ालिमों का ज़ुल्म और साबिरों का सब्र मुलाहेज़ा फ़रमा रहे थे।

हिकायत नम्बर(326) करामात

मोहर्रम की दसवीं को हज़रत इमाम ने ख़ैमा के गिर्द जो ख़ंदक़ खुदवा रखी थी। वो लकड़ियों से भरवा कर उसमें आग रोशन कर दी ताके हरम शबखून वग़ैरा से महफूज़ रहें और दुश्मन ख़ैमे तक ना पहुँच सके। इस

Scanned by CamScanner

यज़ीदी बेदीन ने आग रोशन देख कर कहा। ऐ हुसैन! आतिश दोज़ख़ से पहले ही तुम ने अपने आप को आग में डाल लिया है। (मआज़ अल्लाह) हज़रत इमाम ने फ़रमाया *कज़िबता या अदूवल्लाही* ऐ दुश्मने खुदा, तूने झूट बोला। फिर आपने रूबक़िबला होकर फ़रमाया *अल्लाहुम्मा अजीरूहू इलन्नारी* ऐ अल्लाह! इसे आग की तरफ़ खींच ये दुआ करते ही उस बेदीन के घोड़े का पाँव एक सूराख़ में फंसा, घोड़ा गिरा। लगाम हाथ से छूटी, पाँव लगाम में उलझा, घोड़ा लेकर भागा हत्ता के उसे ख़ंदक की आग में लाकर गिराया और खुद चला गया। हज़रत इमाम ने सज्दा शुक्र अदा किया और सर उठा कर बाआवाज़े बुलंद फ़रमाया। इलाही हम तेरे रसूल की आल हैं। हमारा इंसाफ ज़ालिमों से लेना। इतने में एक और बेदीन ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को मुख़ातिब करके कहा। देख ऐ हुसैन! नहर फिरात कैसी मौजें मार रही है। मगर उससे तुझे एक क़तरा भी नसीब ना होगा। यूंही प्यासा क़त्ल किया जाएगा। इमाम ये सुनकर आज़र्दा हुए और आबदीदा होकर दुआ फ़रमाई। इलाही! उसे प्यासा मार, यकायक उसके घोड़े ने शोखी करके गिराया। ये उठ कर घोड़ा पकड़ने दौड़ता फिर। प्यास ग़ालिब हुई, प्यास प्यास पुकारता रहा मगर हलक़ से पानी ना उतरा आख़िर उसी प्यास की हालत में मर गया। (तज़करह सफ़ा 68)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के महबूब थे। खुदा आपकी सुनता था मगर शहादत चूंके आपके नाम लिखी जा चुकी थी। और अल्लाह व रसूल की यही मर्ज़ी थी इसलिए आप राज़ी बरज़ाऐ हक़ थे। और आपने बकमाल सब्रो रज़ा जामे शहादत नोश फ़रमाया।

हिकायत नम्बर(327) इतमामे हुज्जत

यज़ीदियों ने जब बहर सूरत हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से लड़ना ही चाहा तो हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भी अमामा-ए-रसूल बाँध कर ज़ुलफिक़ार हैदर करार हाथ में लेकर और नाक़े पर सवार होकर मैदान में तशरीफ़ लाए और क़रीब लश्कर इब्ने साद होकर फ़रमाया।

"ऐ इराक़ वालो! तुम खूब जानते हो के मैं नवासा रसूल हूँ, फ़रज़ंद तबूल और दिलबंद अली अलमुतर्ज़ा और बरादर हसन मुजतबा हूँ देखो ये अमामा किस का है? ग़ौर करो के इसाई अब तक निशान पाऐ मूसा को बोसा देते हैं, ग़र्ज़ हर दीन व मिल्लत के लोग अपने पैशवाओं की यादगार को

Scanned by CamScanner

दोस्त रखते हैं पस मैं तुम्हारे रसूल का नवासा हूँ, अली शेरे खुदा का फ़रज़ंद हूँ अगर तुम मेरे साथ कोई अच्छा सलूक नहीं कर सकते तो कम अज़ कम मुझे क़त्ल ही ना करो। बताओ तुम ने किस वजह से मेरा और मेरे अहलो अयाल का पानी बन्द कर रखा है, क्या मैंने तुम में से किसी का खून किया है या किसी की जागीर ज़ब्त की है? जिसका बदला तुम मुझ से ले रहे हो, तुम ने खुद मुझ को यहाँ बुलाया और अब ये अच्छी मेरी मेहमान नवाज़ी कर रहे हो? ज़रा सोचो के तुम क्या कर रहे हो।?"

आप ये तक़रीर फ़रमा ही रहे थे के ख़ैमे से रोने की आवाज़ आई। आपने मुतास्सिर होकर लाहोल पढ़ी और अब्बास व अली अक्बर से फ़रमाया तुम जाकर सब को रोने से मना करो और कहो, ज़रा सब्र करो के अभी तुम्हें बहुत रोना है। दोनों हज़रात ने अहले हरम को रोने से बाज़ रखा हज़रत इमाम ने फिर लश्कर इब्ने साद से ख़िताब फ़रमाया के:

"ऐ कूफियो! तुम्हें मेरा हस्बो नस्ब मालूम है जिसका मिस्ल आज रूऐ ज़मीन पर नहीं है फिर सोच लो के तुम ने खुद ही मुझे ख़तूत लिखकर बुलाया है फिर अब मेरे खून के प्यासे क्यों हो गए हो। देखो ये तुम्हारे ख़तूत हैं।"

हज़रत इमाम ने ख़तूत दिखाए तो उन बेवफाओं ने इंकार कर दिया और कहा ये हमारे ख़तूत नहीं हैं। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनके इस कज़िब व उज़्र से मुतहय्यर होकर फ़रमाया, बहम्दुलिल्लाह! हुज्जत तमाम हुई, मुझ पर कोई हुज्जत ना रही। (तज़करह सफ़ा 70)

सबक़:- हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह आख़िर तक यही चाहते रहे के ये लोग अपनी बेवफाई से बाज़ आयें और मेरे खून नाहक़ से अपने हाथ ना रंगें मगर इन बदबख़्तों के नसीब ही बुरे थे। इसलिए वो अपने ज़ुल्मो सितम से बाज़ ना आए और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह अपने नाम के और झूटे मेहबूब से बेज़ार होकर दुनिया से तशरीफ़ ले गए।

हिकायत नम्बर(328) हज़रत हुर(र०अ०)

हिकायत नम्बर 317 में हुर बिन रबाही का ज़िक्र आपने पढ़ा। ये हुर मर्दे सईद और खुश क़िसमत थे। लश्कर इब्ने साद में हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साथ लड़ने आए थे मगर उनकी तक़दीर में कुछ और ही लिखा था। हज़रत इमाम आली मुक़ाम के अहबाब व अनसार जब यज़ीदियों के साथ लड़ते हुए शहीद हो चुके थे और हज़रत इमाम रज़ी

Scanned by CamScanner

अल्लाहो तआला अन्ह के पास बजुज़ भाई, भतीजों, भांजों, लड़कों और तीन ख़ादिमों के और कोई बाक़ी ना रहा तो ये सूरते हाल देखकर हज़रत इमाम बेइख़्तियार रो पड़े और पुकार उठे।

हल मिन मुग़ैसिन यूग़ीसूना

"है कोई हमारी फ़रयाद सुनने और मदद करने वाला"

ये दर्दनाक आवाज़ हज़रत हुर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के कानों में पड़ी तो कलेजा दहल गया और फौरन अपने घोड़े की बाग दोज़ख़ की तरफ़ से फैर कर जन्नत की तरफ़ कर ली। यानी लश्कर इब्ने साद से घोड़ा दौड़ा कर हज़रत इमाम की ख़िदमत में हाज़िर हो गए और रकाब का बोसा देकर अर्ज़ किया: हुज़ूर! मेरा क़सूर माफ और मेरी तौबा क़बूल होगी या नहीं? इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनके सर पर दस्त मुबारक फैर कर फ़रमाया अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है, मैं तुम से खुश हूँ हज़रत हुर ये बशारत सुनकर लश्कर इमाम में शामिल हो गए। (तज़करह सफ़ा 73)

सबक़:- जिनका नसीब अच्छा हो वो किसी ना किसी वक़्त गुमराही से निकल कर हिदायत की तरफ़ आ ही जाते हैं।

हिकायत नम्बर(329) हज़रत हुर(र०अ०) की शहादत

हज़रत हुर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह यज़ीदी लश्कर से निकल कर हुसैनी सिपाह में आ मिले थे और इस तरह उन्होंने अपने आपको आग से बचा कर जन्नत ख़रीद ली थी। आप बहुत बड़े बहादुर और दिलैर थे। इब्ने साद के लश्कर के आप सिपह सालार थे। इब्ने साद ने जब उन्हें हुसैनी सिपह में मिलते हुए देखा तो वो बहुत घबराया और सफवान से कहने लगा तू जा और हुर को समझा कर वापस फैर। वरना सर तन से जुदा कर। चुनाँचे सफवान ने हुर से आकर कहा, तुम मर्द दाना व आक़िल होकर यज़ीद जैसे अज़ीम हाकिम की रफ़ाक़त छोड़ कर हुसैन की तरफ़ क्यों चले आए, चलो वापस चलो, हज़रत हुर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया, अब मैं वापस नहीं जा सकता। सफवान ने पूछा क्यों? तो फ़रमाया....

क्यों छोड़ के दीं फौज में गुमराह के आऊँ
हाकिम को हंसाऊँ मैं मोहम्मद को रूलाऊँ
क्या हाकिम दुनिया का तो अहसास करूं मैं
और ज़ोहरा के रोने का ना कुछ पास करूं मैं

Scanned by CamScanner

ऐ सफवान! यज़ीद नापाक है और हुसैन पाक और रीहान मुसतफा है। सफवान ने गुस्से में आकर नेज़ह मारा। हुर ने नेज़ह तोड़ डाला और फिर उसे एक ऐसा नेज़ह मारा के सीने से पार हो गया। और फीन्नार हो गया। ये सूरत देखकर सफवान के भाई दौड़े। हज़रत हुर ने उन्हें भी मार डाला और फिर खुद वहाँ से फिर कर हज़रत इमाम के पास आकर अर्ज़ की। हुज़ूर! अब तो आप मुझ पर राज़ी हैं। फ़रमाया मैं तुझ से राज़ी हूँ तू आज़ाद है जैसा के तेरी माँ ने तेरा नाम रखा हे। हुर ये मसदा सुनकर फिर मैदान में आए जिस तरफ़ हमला किया कश्तों के पुश्ते लगा दिए। एक यज़ीदी ने आकर आपके घोड़े को ज़ख़्मी कर दिया। आप पियादा ही लड़ने लगे, इमाम ने उन्हें पियादा देख कर दूसरा घोड़ा भेज दिया हज़रत हुर इस पर सवार हो गए। लेकिन अब ज़ालिमों ने एक दम हल्ला बोल दिया। हज़रत हुर ने एक बार और ख़िदमत इमाम में हाज़िर होने का इरादा किया के ग़ैब से आवाज़ आई। अब ना जाओ, हूरें तुम्हारी मुंतज़िर हैं। पस हुर ने वहीं से अर्ज़ की या इब्ने रसूल अल्लाह! ये गुलाम आपके नाना जान के पास जा रहा है कुछ फ़रमाइये तो कह दे, इमाम ने रो कर फ़रमाया हम भी तुम्हारे पीछे आ रहे हैं। उसके बाद हज़रत हुर ज़ालिमों के मुतावातिर हमलों से निढाल होकर गिर पड़े और इमाम को आवाज़ दी। हज़रत इमाम आवाज़ सुनकर दौड़े और हुर को उठा कर लश्कर में लाए। ज़ानवे मुबारक पर उनका सर रख कर चहरे का गर्दो गुबार साफ करने लगे। हुर ने अपनी आँखें खोलीं, और अपना सर इमाम के ज़ानो पर रख कर मुसकुराए और जन्नत को सिधारे। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन(तज़करह: 75, सर-उल-शहादतैन सफ़ा 22)

सबक़:- हज़रत हुर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने नाम के मुताबिक़ वाक़ई हम से आज़ाद और जन्नत के मालिक बन गए और ये दर्स दे गए के दुनिया चन्द रोज़ा है और एक दिन आख़िर मरना है, फिर क्यों ना ऐसी मौत मरा जाए जिससे अल्लाह व रसूल खुश हो, और आक़बत दुरूस्त हो जाए। फिर आज अगर कोई कहलाए हुसैनी और ना नमाज़ पढ़े ना दाढ़ी रखे। भंग पिये चरस पिये, और बुज़ुर्गों की तोहीन करे गोया कहाऐ हुसैनी और काम करे यज़ीदी तो उसके मुतअल्लिक़ क्यों ना कहा जाए के ये हुसैनी लश्कर से कट कर यज़ीदी सिपह में जा मिला है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(330) दो शेर

हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के जब सब यार वफादार और रफ़ीक़ व जाँनिसार शहीद हो गए तो हज़रत की सगी और बेवा बहन हज़रत ज़ैनब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दो यतीम साहबज़ादे हज़रत मोन और हज़रत मोहम्मद माँ और मामूँ की इजाज़त लेकर घोड़ों को दौड़ाते हुए और नअरा-ए-तकबीर बुलंद करते हुए दुश्मनों की तरफ़ बढ़े....

जंग गाह में घोड़ों को उड़ाते हुए आए
शान अपनी सवारी की दिखाते हुए आए
नेज़ों को दिलैराना हिलाते हुए आए
ईनाँ सूए अशरार बनाते हुए आए
लरज़ा था शुजाओं को दिलैरों की नज़र से
तकते थे सफे फौज को शेरों की नज़र से
लश्कर में ये ग़ल था के वो जाँबाज़ पुकारे
लड़ना हो जिसे सामने आ जाए हमारे
हम वो हैं के जब होते हैं मैदाँ में उतारे
रूस्तम को भगा देते हैं तलवार के मारे
है क़ेहर खुदाए दो जहाँ हर्ब हमारी
रूकती नहीं दुश्मन से कभी ज़र्ब हमारी
ये रिज्ज़ पढ़ी दोनों ने जोलाँ किए घोड़े
चिल्ले में इधर तीर कमानदारों ने जोड़े
ग़ल था के ख़बरदार कोई मुंह को ना मोड़े
ये दोनों बहादुर हैं तो हम भी नहीं थोड़े
या मार के तलवार गिरा देते हैं उनको
या नेज़ों की नोकों पर उठा लेते हैं उनको

ये दोनों शेर फौज अशकिया में घुस गए और कई यज़ीदी फीन्नार कर दिए जब अशकिया ने देखा के ये बच्चे तो शेरों की तरह लड़ रहे हैं तो उन्होंने दोनों को इस तरह नरग़े में ले लिया के दोनों भाई एक दूसरे से जुदा हो गए फिर भी किसी की हिम्मत ना पड़ती थी। ताहम एक शख़्स ने पीछे से आकर इस ज़ोर से नेज़ा मारा के हज़रत ज़ैनब का ये लाल घोड़े से खून में लहू लहान नीचे गिर पड़ा। दूसरे भाई को भी फिरऔनों ने नेज़ों से छलनी कर दिया और दोनों शेर फर्शे ख़ाक पर तड़पने लगे। उस वक़्त हज़रत इमाम

Scanned by CamScanner

रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह दौड़े। आपको देखकर दोनों ने आँखें खोलीं। और मुसकुरा दिए। और दम तोड़ दिया। हज़रत ज़ैनब रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा आख़िर माँ थीं। बच्चों की शहादत की ख़बर पाकर उनका जिगर पाश पाश हो गया। आसमान व ज़मीन की आँखों में भी आँसू आ गए थे लेकिन उन संग दालान कूफे के दिल रहम से बिलकुल खाली थे इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन (तनक़ीह-उल-शहादतैन तबेसर्रूफ मोल्लिफ सफ़ा 71)

सबक़:- अहले बैत अेज़ाम के हर छोटे बड़े फर्द में जुर्रात व शुजाअत पाई जाती थी और अल्लाह की राह में कट मरने का जज़्बा अहले बैत अेज़ाम में बदर्जा उत्तम मौजूद था और वो पाक लोग दीन की ख़ातिर अपना सब कुछ कुर्बान कर गए। और हमें ये दर्स दे गए के तुम भी दीन की ख़ातिर अपना सब कुछ कुर्बान कर देने का अपने आप में जज़्बा पैदा करो।

हिकायत नम्बर(331) अज़रक़ पहलवान

मैदाने कर्बला में जब हज़रत हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के अहबाब शहीद हो चुके और आपके भतीजे और भांजे भी जामे शहादत नोश फ़रमा चुके। तो फिर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे हज़रत क़ासिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मैदान में तशरीफ़ लाए। आपको देखकर यज़ीदी लश्कर में खलबली मच गई। यज़ीदी लश्कर में एक शख़्स अज़रक़ पहलवान भी था। उसे मिस्र व शाम वाले एक हज़ार जवान की ताक़त का मालिक समझते थे। ये शख़्स यज़ीद से दो हज़ार रुपये सालाना पाता था। और कर्बला में अपने चार ताक़तवर बेटों समेत मौजूद था। जब हज़रत इमाम क़ासिम मैदान में आए तो मुक़ाबला में आने के लिए कोई तैयार ना हुआ। इब्ने साद ने अज़रक़ से कहा के क़ासिम के मुक़ाबले में तुम जाओ अज़रक़ ने उसमें अपनी तोहीन समझी और मजबूरन अपने बड़े बेटे को ये कहकर भेज दिया के मेरे जाने की क्या ज़रूरत है। मेरा बेटा अभी क़ासिम का सर लेकर आता है। चुनाँचे उसका बेटा हज़रत क़ासिम के मुक़ाबले में आया और हज़रत क़ासिम के हाथों बड़ी ज़िल्लत के साथ मारा गया। उसकी तलवार पर हज़रत क़ासिम ने क़ब्ज़ा कर लिया और फिर ललकारे के कोई दूसरा है तो मेरे सामने आए अज़रक़ ने अपने बेटे यूं मरते देखा तो बड़ा रोया और ग़ुस्सा में आकर अपना दूसरा लड़का मुक़ाबले में भेज दिया। हज़रत क़ासिम ने उस दूसरे को भी मार डाला। अज़रक़ ने दीवाना वार फिर

Scanned by CamScanner

अपना तीसरा लड़का भेजा। अल्लाह के शेर ने उसे भी जहन्नुम रसीद कर दिया। अज़रक़ ने फिर चौथा लड़का भेजा तो क़ासिम के हाथों वो भी ना बच सका। अब तो अज़रक़ की आँखों में अंधेरा छा गया। और ग़ुस्से में दीवाना होकर खुद मैदान में आ गया। हज़रत क़ासिम के मुक़ाबले में अज़रक़ को देखकर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हाथ उठाए और दुआ की के मेरे मौला! मेरे क़ासिम की लाज तेरे हाथ में है। लोग दोनों की लड़ाई देखने लगे। अज़रक़ ने पे दरपे बारह नेज़े मारे। हज़रत क़ासिम ने सब रोके। फिर उसने झल्ला कर क़ासिम के घोड़े की पुश्त पर नेज़ा मारा घोड़ा मर गया क़ासिम पैदल रह गए। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फौरन दूसरा घोड़ा भेज दिया। क़ासिम ने उस सवार होकर मुतावातिर तीन नेज़े मारे, अज़रक़ ने रोक लिए। और तलवार निकाल ली। हज़रत क़ासिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भी तलवार निकाल ली। अज़रक़ ने तलवार को देखकर कहा। ये तलवार तो मैंने हज़ार दीनार से ख़रीदी थी और हज़ार दीनार में ज़ेरे आब कराई थी। तुम्हारे पास कहाँ से आ गई? क़ासिम ने फ़रमाया ये तुम्हारे बड़े लड़के की निशानी है वो तुम्हें इसका मज़ा चखाने के लिए मुझे दे गया है। और फिर साथ ही ये भी फ़रमाया के तुम एक मशहूर सिपाही होकर इस क़द्र बेएहतियाती से काम लेते हो के मैदान में लड़ने के लिए आ गए। और घोड़े का तंग ढीला रखते हो। उसे कसा भी नहीं वो देखो ज़ीन पुश्त मुरक्कब से फिसला हुआ है और अज़रक़ ये देखने को झुका ही था के हज़रत क़ासिम ने खुदा का नाम लेकर एक ऐसी तलवार मारी के अज़रक़ के वहीं दो टुकड़े हो गए। (तज़करह: सफ़ा 80)

सबक़:- अहले बैत अेज़ाम के मुक़द्दस अफ़राद फने हर्ब से भी खूब वाक़िफ़ थे। पस आज हमें भी फिनूने हर्ब से आशना होना चाहिए, ताके अगर कोई ऐसा वक़्त आ जाए तो हज़रत इमाम क़ासिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के सदक़े में हम भी बातिल के दांत खट्टे कर सकें।

हिकायत नम्बर(332) अलमबरदार की शहादत

मैदाने कर्बला में हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दोस्त अहबाब भेजते और भांजे शहीद हो गए तो हज़रत अब्बास अलमबरदार रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ख़िदमत इमाम हाज़िर हुए। और कहा के अब मुझे मैदान में जाने की इजाज़त दीजिए। अब तो हद हो गई। इन ज़ालिमों ने

Scanned by CamScanner

हमारे जुमला अज़ीज़ शहीद कर दिए और बाक़ी जो हैं, सब प्यास के मारे निढाल हो रहे हैं मुझ से छोटे बच्चों की प्यास देखी नहीं जाती। मैं पानी लेने फिरात पर जा रहा हूँ।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपने भाई को चन्द बातें तालीम फ़रमा कर रूख़्सत फ़रमाया और आप मुश्क लेकर फिरात की जानिब से रवाना हुए फिरात पर चार हज़ार का मुहासरा था हज़रत अब्बास ने जो फिरात पर क़दम रखा। तो सब ने आपको घेर लिया, आपने उन से मुख़ातिब होकर फ़रमाया तुम लोग मुसलमान हो काफिर? वो बोले हम मुसलमान हैं आपने फ़रमाया मुसलमानों में ये कब रवा है के चरिंद व परिंद तो पानी पियें और फ़रज़ंदाने मुसतफा प्यासे तड़पें तुम लोग क़यामत की प्यास से नहीं डरते? ज़ालिमो! जिगर गोशा रसूल हुसैन प्यासा है उसके बच्चे प्यासे हैं। कुछ ख़याल करो। बच्चों के लिए तो पानी ले लेने दो। ये सुनकर भी उन संग दिलों पर कुछ असर ना हुआ और सबने आप पर हमला कर दिया। हज़रत ने भी उन पर हमला करके उसी को क़त्ल कर डाला और बाक़ी को मुनतशिर करके फिरात तक पहुँचे और पानी में उतर कर मश्क भर ली। और खुद चुल्लू में पानी भर कर पीना चाहा के बहन भाई और बच्चों की प्यास याद आ गई, फौरन चुल्लू का पानी फैक दिया और मुश्क कांधे पर रख कर रवाना हुए। राह में अशक़िया ने घेर लिया। आप हर एक से लड़ते भिड़ते मुश्क पर सीना-ए-सप्र हो के जा रहे थे। कोनाफिल नामी एक ज़ालिम ने पीछे से आकर हाथ पर तलवार और मुश्क पर तीर मारा। हाथ कट गया और मुश्क का पानी बह गया। उस वक़्त आप अपनी मेहनत और बच्चों की प्यास पर अफसोस करके रोने लगे। चूंके ज़ख़्म कारी लग चुका था। घोड़े से गिरकर भाई को आवाज़ दी। इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनकी आवाज़ सुनकर एक ऐसी आह की, जिससे ज़मीन कर्बला लरज़ गई। और फिर आगे जो बढ़े। तो हज़रत अब्बास को खाक व खून में तड़पता देखकर फ़रमाया। *अलाना इनकसारा ज़हारी* अब मेरी पीठ टूटी। हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भाई को देखा और दारे बक़ा को तशरीफ़ ले गए। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन हज़रत इमाम उनकी नअश मुबारक को खैमे की तरफ़ लाए और फ़रमाने लगे...

बाद अब्बास के अब कौन है ग़मख़्वार अपना
ना तो मोनिस है कोई और ना मददगार अपना
सूऐ जंग गए सब छोड़ के तनहा मुझ को

Scanned by CamScanner

लुट गया आन के इस दश्त में गुलज़ार अपना
तशना लब राहे खुदा में है मिरा सर हाज़िर
काम पूरा करें अब जल्द सितमगर अपना

(तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 194)

सबक़:- यज़ीदी बड़े ही ज़ालिम और ना आक़बत अंदेश थे उन्हें क़यामत के होलनाक दिन का कुछ भी ख़याल ना रहा। हालाँके मुसलमान को क़यामत का होलनाक दिन कभी ना भूलना चाहिए। हज़रत इमाम हसन और उनके मुतअल्लिक़ैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम की शहादत का एक दर्स ये भी है के इस चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में हमें क़यामत को भुला नहीं देना चाहिए।

हिकायत नम्बर(333) अली अक्बर(र०अ०)

मैदान कर्बला में जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के जुमला अहबाब व अक़्बा जामे शहादत नोश फ़रमा चुके तो आपके साथ बजुज़ आपके तीन साहबज़ादों के और कोई बाक़ी ना रहा। ये तीन साहबज़ादे हज़रत इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन, हज़रत अली अक्बर और हज़रत अली असग़र रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम थे। हज़रत इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन तो बीमार थे। और अली असग़र भी शीर ख़्वार ही थे और हज़रत अली अक्बर की उम्र शरीफ अठ्ठारह बरस की थी, हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अलाहो तआला अन्ह ने जब देखा के अब बजुज़ मेरे तीन बच्चों के और कोई बाक़ी नहीं रहा तो आपने खुद ब नफ़्से नफीस मैदान कारे ज़ार में जाने का इरादा फ़रमाया और जुलजनह सवारी के लिए मंगवाया हथियार बदन पर आरास्ता फ़रमाया और रूख़्सत के वास्ते ख़ैमे के अन्दर तशरीफ़ लाए और फ़रमाने लगे....

ऐनक आमद नोबत मन अलविदा
अलविदा ऐ अतरते मन अलविदा
ज़ोद दुलहाऐ शमा ख़्वाहिद शदन
सोज़नाक अज़ फ़रक़ते मन अलविदा

हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मंज़र देखकर इमाम के क़दमों पर गिरे और अर्ज़ करने लगे, अब्बा जान! खुदा वो दिन ना दिखाए, जब के आप मेरे सामने शर्बते शहादत नोश फ़रमायें, आप मेरे होते हुए मैदान में क्यों तशरीफ़ ले जाते हैं, मुझे इजाज़त फ़रमाईये मैं जाता हूँ हज़रत इमाम ने फ़रमाया ऐ अली अक्बर! किस दिल से तुझे मरने की इजाज़त दूं, और किन आँखों से तुम को ज़ख़्मों से चूर चूर देखूं। हज़रत अली अक्बर ने इमाम

Scanned by CamScanner

को क़समें देना और रोना शुरू किया, आखिर इमाम ने इजाज़त दे दी और अपने हाथ से उनके कदन पर हथियार लगाए। ज़िरह जोशन पहनाए। अमामा सर पर रखा टीका कमर पर बाँधा और घोड़े पर बिठा कर फ़रमाया....

मैंने दी रह की इजाज़त तुम्हें जाओ बेटा
हो फिदा मुझ पे गला अपना कटाओ बेटा

अहले बैत रकाब से आकर लिपट गए। इमाम ने सबको हटा कर फ़रमाया जाने दो के सफर आख़िरत कर रहा है। (तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 197)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बड़े ही साबिर व शाकिर और इसतक़लाल के मालिक थे के अठ्ठारह साल के अपने लख़्ते जिगर को अल्लाह की राह में क़र्बान होने के लिए खुद अपने हाथों तैयार फ़रमाते हैं और शिकवा शिकायत और नाशकीबाई का लफ़्ज़ तक ज़बान पाक पर नहीं लाते।

हिकायत नम्बर(334) अली अक्बर की शहादत

रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब मैदाने कारज़ार में तशरीफ़ लाए, तो लश्कर अदा में एक सन्नाटा छा गया। हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अठ्ठारह साल की उम्र शरीफ़ रखते थे और शक्ल व शमायल में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बहुत मुशाबेह थे, आपका हुस्नो जमाल व जलाल देखकर दुश्मन मुतहय्यर हो गए। हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मैदान में पहुँचते ही रिज्ज़ ख़वाँ और मुबारिज़ तलब हुए, और जब कोई सामने ना आया तो आपने खुद ही लश्कर आदा में घुस कर हमला कर दिया और अशक़िया को दरहम बरहम कर दिया और ता देर लड़ते रहे और फिर प्यास के बाइस हज़रत इमाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और प्यास का ज़िक्र किया। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनके चेहरे का गर्दो ग़ुबार साफ करके रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अनेह व सल्लम की अंगश्तरी उनके मुंह में डाल दी जिसके चूसने से उन्हें तसकीन हुई और फिर मैदान में आए। और अक्सर को वअसल जहन्नुम करने के बाद आप फिर एक मर्तबा हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

Scanned by CamScanner

के हुज़ूर आए और प्यास का ज़िक्र किया। तो हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उस वक़्त रो कर फ़रमाया के जान पद्र! ग़म ना खा अनक़रीब तुम होज़े कोसर पर सैराब होगे, अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ये बशारत सुनकर फिर मैदान की तरफ़ तशरीफ़ लाए और लश्कर आदा में घुस कर बहुत सों को वअसल नार किया। दुश्मनों ने चारों तरफ़ से आपको घेर लिया और एक ज़ालिम इब्ने नमीर ने आपको एक ऐसा नेज़ा मारा के आपकी पुश्त मुबारक से पार हो गया। और आप घोड़े से गिर गए। उस वक़्त आपने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को पुकारा और फ़रमाया *या आबताह आररिक्नी* अब्बा जान अपने अली अक्बर की ख़बर लीजिए।

हज़रत इमाम ने अपने लख़्ते जिगर की ये आवाज़ सुनी तो आप दौड़े और मैदान में जाकर देखा के अली अक्बर ज़ख़्मों से चूर ज़मीन पर गिरे हुए हैं हज़रत इमाम ने वहाँ बैठ कर बेटे का सर अपने ज़ानों पर रखा और फिर.....

होश आया चन्द साअत कामिल के बाद जब
देखा के मिट रही है शबीह रसूले रब
आँसूं बहा के रख दिए बेटे के लब पे लब
फरमाया बेटा छोड़ के जाते हो मुझे को अब
दिल से गले लिपटने की हसरत निकाल लो
बाहें उठा के बाप की गर्दन में डाल लो
अक्बर ने आँखें खोल के देखा रूख पद्र!
गालों पे अश्क आँखों से टपके इधर उधर
फरमाया शेह ने ज़ानों पे रख कर सर पस्र
रोते हो किस लिए भला ऐ ग़ैरत क़मर
याँ से उठा के आले पैयम्बर मैं ले चलूं
ग़म माँ का है तो आओ तुम्हें घर में ले चलूं

हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आँखें खोल कर कहा अब्बा जान! वो देखिये! दादा जान दो पियाले शर्बत के लिए खड़े हैं और मुझे एक दे रहे हैं मैं कहता हूँ के मुझे दोनों दीजिए के बहुत प्यासा हूँ, वो फ़रमाते हैं के एक तू पी दूसरा तेरे बाप हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के लिए है के वो भी प्यासा है, ये पियाला वो आकर पियेगा। ये कहा और आप वहीं राही जन्नत हो गए। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन (तनक़ीह-उल-शहादतैन, सफ़ा 199)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मैदाने

Scanned by CamScanner

कर्बला में बहुत बड़ा इम्तिहान दिया और आपने इस इम्तिहान में बहुत बड़ी कामयाबी हासिल की।

हिकायत नम्बर(335) यतीम

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जब जामे शहादत नोश फ़रमा लिया तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तनहा रह गए। सिफ हज़रत इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन बाक़ी रह गए या हज़रत अली असग़र, मगर इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन बीमार थे और अली असग़र शीर ख़्वार, इसलिए हज़रत इमाम ने अब खुद मैदान में जाने की तैयारी फ़रमाई और आप खैमा के अन्दर तशरीफ़ लाए और अहले बैत में तशरीफ़ फ़रमा होकर फ़रमाया के मुसीबत और बला पर सब्र व शुक्र करना तुम्हारे वास्ते बेहतर है। ख़बरदार मेरे बाद तुम चाहे कैसी ही मुसीबत व बला में मुबतला हो, मगर मेरे ग़म में सर के बाल परेशान ना करना, मुंह पर तमाँचे ना मारना। और सीना ज़नी ना करना और वावेला वज़ारी ना करना। ये बातें जायज़ नहीं हैं, हाँ कसरते ग़म से आँखों से आँसूं बहाना मज़लूमों और दर्दमंदों का काम है। रोना मना नहीं फिर आप ने हज़रत सकीना को गोद में लिया और गले से लगाया और अपनी बहन हज़रत ज़ैनब से फ़रमाया बहन! ये मेरी सकीना मुझे बड़ी प्यारी और मुझ से मानूस है, मेरे बाद इसकी ग़मख़्वारी व पासदारी करना, फिर हज़रत सकीना से फ़रमाया बेटी मेरी प्यारी बेटी! आज शाम तुम यतीम हो जाओगी। हज़रत सकीना ने लफ़्ज़ यतीम सुना तो.....

नन्हे से हाथ जोड़ के कहने लगी ये तशना काम
फरमाईये के आज ये आएगी कैसी शाम
बतलाईये मुझे के यतीमी है किस का नाम
आँखों से खूं बहा के ये कहने लगे इमाम
बेटी! ना पूछ कुछ ये मुसीबत अज़ीम है
मर जाए जिसका बाप वो बच्चा अज़ीम है

(तनक़ीह-उल-शहादतैन, सफ़ा 200)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का आख़री वाज़ मुबारक ये था के मुसीबत और बला के वक़्त सब्र व शुक्र करना, शरीअत का हुक्म है और सब्र व शुक्र का दामन हाथ से छोड़ना देना अच्छी बात नहीं। इसलिए आज भी हर मुसलमान को हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो

Scanned by CamScanner

तआला अन्ह का ये आख़री वाज़ मुबारक हर वक़्त पेशे नज़र रखना चाहिए और हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के इर्शाद के ख़िलाफ कोई हरकत ना कना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अल्लाह की मोहब्बत पर अपने छोटे छोटे बच्चों की मोहब्बत भी कुर्बान कर डाली।

हिकायत नम्बर(336) नन्हा शहीद

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी जब शहीद हो गए तो हज़रत इमाम ने अहले बैत को तसल्ली व तशफ़्फी देकर खुद मैदान में आने का इरादा किया। एक बार ख़ैमा से रोने की आवाज़ सुनी। आप ख़ैमे की तरफ़ फिरे और हाल दरयाफ़्त फ़रमाया तो मालूम हुआ के तुफ़्ल शीरख़्वार हज़रत अली असग़र प्यास से बेचैन हैं। छः महीने की उम्र शरीफ में ये मुसीबत के तीन दिन से भूके और प्यासे हैं। ज़बान मुंह के बाहर निकल पड़ी है। मछली की तरह तड़प रहे हैं। हज़रत इमाम ने फ़रमाया, अली असग़र को मेरे पास लाओ हज़रत ज़ैनब लेकर आईं आपने अली असग़र को गोद में लिया और मैदान में ज़ालिमों के सामने लाकर फ़रमाया ऐ क़ौम! तुम्हारे नज़दीक अगर मुज्रिम हूँ तो मैं हूँ मगर ये मेरा नन्हा बच्चा तो बेगुनाह है खुदारा तरस खाओ और इस मेरे नन्हे मुसाफिर सय्यद बेकस मज़लूम को तो चुल्लू भर पानी पिला दो...

बच्चा है शीर ख़्वार तड़पता है प्यास से
इस पर तो रहम खाओ के तकता है यास से

ऐ क़ौम! आज जो मेरे इस नन्हे मुसाफिर को पानी पिलाएगा, मेरा वादा है के मैं उसे होज़े कोसर पर सैराब करूंगा।

हज़रत इमाम की ये दर्दनाक तक़रीर सुनकर भी उन ज़ालिमों का दिल ना पसीजा और एक ज़ालिम हुरमल इब्ने काहिल ने एक ऐसा तीर मारा जो हज़रत इमाम की बग़ल से निकल गया। आह! एक फव्वारह खून का इस नन्हे शहीद के हलक़ से चलने लगा और नन्हे शहीद की आँखें अपने वालिद के चेहरे की तरफ़ तकती की तकती रह गईं। और इमाम ने बेक़रार होकर अपनी ज़बान अनवर नन्हे के मुंह में डाल दी और नन्हे सय्यद ने वहीं अपने अब्बा की गोद में शहादत पा ली और आप उसकी नन्ही सी नअश मुबारक लेकर खैमा में आए और माँ की गोद में देकर फ़रमाया: लो अली असग़र भी होज़े कोसर से सैराब हो गए इसी नन्ही नअश को देख अहले बैत बे क़रार

Scanned by CamScanner

हो गए और हज़रत इमाम की मुबारक आँखों से भी आँसूं जारी हो गए। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन (तज़करह:87)

सबक:- यज़ीदी ज़ुल्म की इन्तिहा तक पहुँच चुके थे और रहम व शफ़्क़त से उनके दिल बिलकुल खाली थे फिर ऐसे लोग खुदा की रहमत के उम्मीदवार कैसे हो सकते हैं।

हिकायत नम्बर(337) हज़रत शहर बानो का ख़्वाब

मैदाने कर्बला में शबे आशूर हज़रत शहर बानो ने एक ख़्वाब देखा के एक नूरानी सूरत मुक़द्दस ख़ातून हैं जो बड़ी परेशान नज़र आ रही हैं और कर्बला की ज़मीन साफ कर रही हैं, हज़रत शहर बानो ने इस मुक़द्दस ख़ातून से दरयाफ़्त फ़रमाया के आप कौन हैं? और इस ज़मीन को क्यों साफ कर रही हैं? तो उसने जवाब में फ़रमाया के....

बेटी सुन मैं फातिमा हूँ बिन्ते शाह मुशरक़ीन
सुबह इस मक़्तल में लेटेगा मेरा प्यारा हुसैन
इसलिए मैं झाड़ती हूँ कर्बला की ये ज़मीन
उसके ज़ख़्मों में ना चुभ जाए कोई कंकर कहीं

(तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 110)

सबक:- हज़रत असग़र की शहादत का आपकी वालिदा हज़रत ख़ातूने जन्नत रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को इल्म था और क़ब्र अनवर में तशरीफ़ फ़रमा होकर भी अपने बेटे के इस इम्तिहान को मुलाहेज़ा फ़रमा रही थीं और चूंके माँ थीं इसलिए अपने लख़्ते जिग्र के मसायब से मुतास्सिर थीं फिर जिन ज़ालिमों ने हज़रत इमाम को इस क़द्र सताया उन्होंने हज़रत फातिमा की किस क़द्र नाराज़गी मोल ले ली।

हिकायत नम्बर(338) अलविदा

मैदाने कर्बला में दसवीं मोहर्रम को जब हज़रत इमाम के जुमला अहबाब व अक़ारिब शहीद हो गए तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने खुद पोशाक बदली क़बाए मिस्री पहनी, अमामा-ए-रसूले खुदा बाँधा सप्रे हम्ज़ा और ज़ुलफिक़ार हैदर करार लेकर ज़ुलजनह पर सवार होकर इरादा मैदान का किया। इतने में हज़रत के साहबज़ादे हज़रत अली ओला यानी इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह उस वक्त बीमार थे। और नतवानी से उठ ना सकते थे बड़ी मुश्किल से

Scanned by CamScanner

असा थामे हुए ज़ौफ के बाइस लड़खड़ाते हज़रत इमाम के पास आके अर्ज़ करने लगे के अब्बा जान! मेरे होते हुए आप क्यों तशरीफ़ ले जा रहे हैं, मुझे भी हुक्म दीजिए के मैं भी लड़ कर दर्जा शहादत हासिल कर लूं और अपने भाईयों से जा मिलूं हज़रत इमाम ये गुफ्तगू सुनकर आबदीदा हो गए और इर्शाद फ़रमाया, ऐ राहत जान हुसैन तुम खैमा अहले बैत में जाकर बैठो! और क़सद शहादत ना करो बेटा। रसूल मक़्बूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नस्ल तुम्हारे जीने ही से बाक़ी रहेगी और क़यामत तक मुनक़तअे ना होगी। हज़रत इमाम का ये इर्शाद सुनकर साहबज़ादे ख़ामोश हो रहे फिर हज़रत इमाम ने उनको नसीहत व वसीयत करके तमाम इलूम ज़ाहिरी व बातिनी और राज़ इमामत से आगाह फ़रमाया जो तरीक़ा तालीम सीना ब सीना रसूल मक़्बूल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से जारी हुआ था, सब उसी वक़्त उन पर मुनकशिफ फ़रमा दिया और फिर आप ख़ैमा के अन्दर तशरीफ़ लाए और अहले बैत की तरफ़ मुख़ातिब होकर हर एक से अलविदाई कलाम फ़रमाया जिसका नक़्शा शायर ने यूं खींचा है के...

अलविदा ऐ अहले बैत मुसतफा
अलविदा आले पैयम्बर अलविदा
फिर गले लिपटा के आबिद से कहा
ऐ मिरे बीमार दिलबर अलविदा
ज़ैनब व कुलसुम से ये फिर कहा
अब है तुम से भी बिरादार अलविदा
बोले फिर बाली सकीना से हुसैन
ऐ मेरी मज़लूम दुख़्तर अलविदा
शहर बानो से यही कहते थे शाह
ऐ मेरी ग़मख़्वार मुज़तर अलविदा
बस खुदा हाफिज़ तुम्हारा दोस्तो
साबिर व मज़लूम मुज़तर अलविदा

(तनक़ीह-उल-शहादतैन, सफ़ा 78)

सबक़:- हज़रत इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन बीमारी के आलम में भी जज़्बा-ए-शहादत की तड़प का इज़हार फ़रमाते हैं फिर जो उनका नाम लेवा होकर तनदुरूस्ती के आलम में भी नमाज़ तक के राह ना जाए तो वो किस क़द्र ग़ाफिल है? और ये भी मालम हुआ के हजरत इमाम

Scanned by CamScanner

ज़ैन-उल-आबेदीन की बीमारी में ये हिकमत मुज़्मिर थी के आपके वजूद से नस्ल मुसतफा की बक़ा थी।

हिकायत नम्बर(339) शेर का हमला

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के जब अहबाब व अक़ारिब सब शहीद हो गए तो हज़रत इमाम खुद बनफ़्से नफीस मैदान में तशरीफ़ लाए और पहले कुछ रिजज़िया अश्आर पढ़े, फिर लश्कर इब्ने साद से इतमाम हुज्जत के लिए बहुत कुछ फ़रमाया मगर वो ज़ालिम ना माने और बहर हाल लड़ने पर आमादा हुए और सब अपनी तलवारें और नेज़े चमका कर बढ़े। हज़रत इमाम ने भी ज़ुलफिक़ार मियान से निकाली और दुश्मनों पर हमला कर दिया। अल्लाह अल्लाह! ये हमला क्या था शेर यज़दाँ का हमला था जो आपके मुक़ाबले में आया। पेक क़ज़ा ने सीधा उसको जहन्नुम में पहुँचा दिया। सेंकड़ों जफाकारों से लड़े और सेंकड़ों को फीन्नार कर दिया जिस तरफ़ निगाह पलटी सफ की सफ उलट दी.....

चली शाहे दीं की ग़र्ज़ ज़ुलफिक़ार
ना पैदल रहा सामने ना सवार
यहाँ तक किया ज़ालिमों को हलाक
छुपाया लईनों ने मुंह ज़ेरे खाक
दिए रन को पलटे कई दमबदम
शुजाअत ने भी आके चूमे क़दम
दिलैर ऐसा है और ना होगा कोई
सुना आज तक और ना देखा कोई
हज़ारों ही कुश्तों के पुश्ते बंधे
तो ज़िन्दों को जानों के लाले पड़े
सुनो इस दिलावर की ये शान है!
के रूस्तम की भी रूह कुर्बान है

(तनक़ीह सफ़ा 80)

सबक़:- हज़रत इमाम आली मुक़ाम बड़े जरी व बहादुर शुजा, दिलैर और शेर के बेटे शेर थे रज़ी अल्लाहो अन्ह

हिकायत नम्बर(340) आख़री दीदार

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब खुद बनफ़्स

Scanned by CamScanner

नफीस मैदान में तशरीफ़ लाए तो जुर्रात व शुजाअत के वो जोहर दिखाए के मलायका भी अश अश कर उठे, इतने में एक शख़्स इब्ने क़ुत्बा शामी सामने आया और कहने लगा के ऐ हुसैन! तमाम अहबाब व अक़ारिब को हलाक करा चुके मगर अभी भी लड़ाई की हवस बाक़ी है तुम अकेले हज़ारों का मुक़ाबला कैस कर सकोगे? हज़रत इमाम ने फ़रमाया तुम लोग मुझ से लड़ने आए हो या मैं तुम से? तुम ने मेरा रास्ता बंद किया और तुम ने मेरे अहबाब व अक़ारिब को क़त्ल किया। अब मुझे सिवाए लड़ाई के क्या चारा है ज़्यादा बातें ना कर और सामने आ। ये फ़रमा कर आपने एक ऐसा नारा फलक शिगाफ मारा के तमाम लश्कर थर्रा गया और वो ज़ालिम बद हवास हो गया और हाथ पैर ना हिला सका। इमाम ने तलवार मार कर सर उड़ा दिया फिर फौज पर हमला किया और सब भागने लगे। इब्ने असतह नामी एक यज़ीदी पुकारा। ऐ मर्दों! अब एक तन बाक़ी रह गया है। उससे भाग रहे हो? ठहरो मैं उसके मुक़ाबले को जाता हूँ ये कहकर इमाम के सामने आया और तलवार मारने को उठाई हज़रत इमाम ने पेश दस्ती फ़रमा कर कमर पर तलवार मार कर दो टुकड़े कर दिया। फिर हज़रत इमरम ने फिरात पर जाने का इरादा फ़रमाया।

शमर ने पुकार कर कहा। ऐ लश्करियो! हुसैन को हर गिज़ पानी ना पीने देना अगर उसने पानी पी लिया तो फिर किसी को ज़िन्दा ना छोड़ेगा पस सबने मिलकर हज़रत इमाम पर हमला कर दिया। हज़रत इमाम तलवार खींच कर अशक़िया के सर उड़ाते हुए और सफों को दरहम बरहम फ़रमाते हुए लबे फिरात तक जा पहुँचे घोड़ा पानी में डाला, चुल्लू में पानी लेकर पीना चाहा के मक्कारों ने पुकार कर कहा: ऐ हुसैन! तुम यहाँ पानी पी रहे हो और वहाँ ख़ैमा लुट रहा है। इमाम फौरन पानी फैंक कर ख़ैमे की तरफ़ चले राह में बहतों को फीन्नार किया ख़ैमे के पास आकर देखा तो किसी को ना पाया और मक्कारों का हीला तसव्वुर फ़रमाया फिर ख़ैमे के अन्दर तशरीफ़ लाए और अहले बैत से फ़रमाया चादरें ओढ़ो जज़अे व फज़अे ना करो मुसीबत पर कमर बसता रहो। मिरे यतीमों को आराम से रखना फिर इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन को सीनेह से लगा कर पैशानी को चूमा और फ़रमाया बेटा! जब मदीना पहुँचो तो मेरे दोस्तों को मेरा सलाम कहना और मेरी जानिब से मेरा ये पैग़ाम देना के जब तुम में कोई रंज व बला में मुबतला हो तो मेरा रंज व बला में मुबतला होना याद कर ले और जब कोई पानी पिये तो मेरी प्यास याद करे। हजरत इमाम अपना ये आखरी दीदार देकर फिर मैदान में

Scanned by CamScanner

तशरीफ़ ले आए। (तज़करह, सफ़ा 90)

सबक़:- हज़रत इमाम की जुर्रात व हिम्मत और आपका अज़्म व इसतक़लाले क़यामत तक के मुसलमानों के लिए मशअले राह है। अज़ीज़ व अक़ारिब की जुदाई भूक प्यास और ज़ालिमों के मुतावातिर ज़ुल्मो सितम के बावजूद आपके जज़्बा-ए-सादिक़ा में सरमू भी फ़र्क़ नहीं आया। और हर हाल में आपने अल्लाह का शुक्र ही अदा किया। और शरीअत के ख़िलाफ हर हरकत से हर दम तक मना फ़रमाया। रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

हिकायत नम्बर(341) क़यामत

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह जब ख़ैमे में अपना आख़री दीदार देकर मैदान में फिर तशरीफ़ लाए तो यज़ीदियों ने यकबारगी आप पर हमला कर दिया। आप ने भी डट कर उनका मुक़ाबला फ़रमाया। मगर ज़ालिमों ने इस क़द्र मुतावातिर हमले किए के हज़रत का तन अनवर ज़ख़्मों से चूर हो गया और आपके घोड़े में भी चलने की ताक़त ना रही पस हज़रत इमाम एक जगह खड़े हो गए। एक शख़्स ज़दअद नामी ने बढ़कर आपको तलवार मारी। आपने उसका हाथ पकड़ कर ऐसा झटका दिया के उसका हाथ कांधे से जुदा हो गया। हज़रत इमाम उस वक़्त सबको यास भरी निगाहों से देख रहे थे। गोया ये ख़याल फ़रमा रहे थे के इतनों में कोई ग़मगुसार नहीं है। सब ही खून के प्यासे हैं। आख़िरकार उन ज़ालिमों ने दूर ही से तीर मारने शुरू किए के एक ज़ालिम का तीर आपकी पैशानी नूरानी पर आकर लगा। खून का फव्वारा जारी हुआ आपने वो खून चुल्लू में लेकर मुंह पर मला और फ़रमाया कल क़यामत के दिन इस हय्यत से अपने नाना जान के पास जाऊँगा और अपने मारने वालों की शिकायत करूंगा।

उस वक़्त हज़रत इमाम के तन अनवर पर बहत्तर(72) ज़ख़्म नेज़े और तलवार के आ चुके थे जिनके बाइस आप बहुत निढाल हो गए थे और क़िबला रू होकर अपने मौला की याद कर रहे थे और अर्ज़ कर रहे थे के....

या रब ग़नी बन्दा है इक बन्दा-ए-मोहताज
तेरी ही इनायत से हुआ ख़ल्क़ का सरताज
सरेनज़ को दरबार में लाया है ग़ुलाम आज
है हाथ तिरे मौला मिरे आज मिरी लाज
हंगाम तरद्दुद है मदद कीजियो मौला!
ये तोहफा-ए-दुरवैश ना रद् कीजियो मौला!

Scanned by CamScanner

कहता नहीं कुछ और ये कअबे का मुसाफिर!
इक जाँ है सौ क़ुरबान है इक सर है सौ हाज़िर
अब तक मैं तिरी राह में हूँ साबिर व शाकिर
बेकस पे करम कीजियो मौला दम आख़िर!
सीने पर मिरे ज़ानवऐ क़ातिल ना ग्राँ हो
ख़ंजर के तले नाम तिरा विर्द ज़बाँ हो
वाक़िफ नहीं इस मरहले सोअब से शब्बीर
तक़दीर पे राज़ी हों मैं ऐ मालिक तक़दीर
प्यासा हूँ कई रोज़ से मैं बेकस व दिलगीर
इन खुश्क रगों में कहीं रूक जाए ना शमशीर
मुज़तर मिरा होना ख़लल अंदाज़े अदब हो!
तड़पूं बशरियत से जो दम तो ग़ज़ब हो
आई ये निदा काम में फिर शाहे हुदा के
रहमत तुझे ऐ बन्दा-ए-मक़्बूल खुदा के
सह सब्र से और शुक्र से सब तीर जफा के
ले ताज शहादत मिरी सरकार में आ के
ग़मगीन ना हो हम तुझ को बहुत शाद करेंगे
ज़ेरे दम ख़जर तिरी इमदाद करेंगे!

इतने में एक ज़ालिम का तीर आपके हलक़ में आकर लगा और ज़रआ इब्ने शरीक ने आपके दस्ते मुबारक पर और शमर ने आपके फर्क़ अनवर पर तलवार तारी और सनान बिन अनस ने पुश्त मुबारक पर नेज़ा मारा....

तक़दीर व क़ज़ा से नहीं जब कोई भी चारा
नेज़ा किसी ज़ालिम ने पसे पुश्त से मरा
तब रूह नबी बोली उठा चैन हमारा!
इस तीग़े अलम से जिगर व दिल है दो पारा

हज़रत इमाम इन मुतावातिर ज़र्बों से चकरा कर घोड़े से गिरे...

आया ये वक़्त क़िबला-ए-हाजाते दीन पर
कअबे को ढाया संग दिलों ने ज़मीन पर

उस वक़्त दोपहर ढल चुकी थी और नमाज़ ज़ोहर का वक़्त था। हज़रत इमाम ने इस वक़्त भी उस सूरत में नमाज़ को अदा किया के गिरते हुए मुंह क़िबला की तरफ़ किया। घोड़े पर क़याम था और जब ग़श से झुके तो रूकू था और जब जब ज़मीन पर गिरे तो सर के बल के वो सिज्दे का मुक़ाम

Scanned by CamScanner

था। इतने में शमर आया और आप के सीने मुबारक पर बैठ गया। इमाम ने आँखें खोल कर पूछा तू कौन है उसने बताया के मैं शमर हूँ फ़रमाया: ज़रा सीना खोल कर दिखा उसने सीना खोला तो दाग़ सफेद नज़र आया। आपने फ़रमाया *सदक़े जद्दी रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेही व सल्लम* सच फ़रमाया नाना जान ने रात को ख़्वाब में के तेरे क़ातिल का निशान ये है वही निशान तुझ में मौजूद है। फिर आपने फ़रमाया: ऐ शमर तू जानता है: आज कौनसा दिन है कहा: जुमआ का, फ़रमाया वक़्त कौन सा हे? कहा खुत्बा पढ़ने और नमाज़ जुमआ अदा करने का। फ़रमाया इस वक़्त ख़तीब मिम्बरों पर खुत्बा पढ़ते होंगे मेरे नाना जान की तारीफ करते होंगे। इन पर दुरूद पढ़ते होंगे और तू उनके नवासे के साथ ये सलूक कर रहा है। जहाँ रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम बोसा दिए करते थे वहाँ तू खंजर फैरना चाहता है। देख इस वक़्त मैं अपनी दहनी तरफ़ ज़क्रया मासूम और बायें तरफ़ याहिया मासूम को देख रहा हूँ। ऐ शमर! ज़रा मेरे सीने से हट के वक़्त नमाज़ है मैं क़िबला रूख़ होकर नमाज़ पढ़ूँ तू नमाज़ पढ़ते में जो चाहे कर ताके नमाज़ में ज़ख़्मी होना मेरे बाप की मीरास है। पस शमर आपके सीने से उतरा और इमाम क़िबला रूह होकर नमाज़ में खुदा से राज़ोनियाज़ में मशग़ूल हुए और शमर ने हज़रत इमाम आली मुक़ाम का सज्दे ही में 10 मोहर्रम 60हि॰ योम जुमआ को 56 साल पाँच माह पाँच योम की उमर शरीफ में सर तन से जुदा कर दिया। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन

डूबा शफक़ में जब मेह ताबाँ मुसतफा
यानी हुसैन इब्ने अली जान मुसतफा
बाद ख़िज़ाँ थी और गुलसिताने मुसतफा
जब गिर पड़ा ज़मीन पे वो जानाने मुसतफा
खुद मुसतफा ने फर्शे ज़मीन से उठा लिया
और फातिमा ने अपने गले से लगा लिया!
आया जो वक़्त ज़ोहर तो सज्दा अदा किया
तन पे जो देखते ज़ख़्म तो शुक्र खुदा किया
तय आप ने तमाम मुक़ाम रज़ा किया!
दुश्मन ने जब के सर को बदन से जुदा किया
खुद मुसतफा ने फर्शे ज़मीन से उठा लिया
और फातिमा ने अपने गले से लगा लिया
खूँ से भरा हुआ जो बदन का लिबास था

Scanned by CamScanner

हूरो मल्क को देख के उसे दिल उदास था
पर शाहे कर्बला को ना मतलक़ हरास था
जिस दम गिरे ज़मीं पे तो कोई ना पास था
खुद मुसतफा ने फर्शे ज़मीन से उठा लिया
और फातिमा ने अपने गले से लगा लिया!

(तज़करह सफ़ा 89 ता 95, और तनक़ीह, सफ़ा 12 ता 112)

सबक़:- हज़रत इमाम मज़लूम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह पर जिस क़द्र ज़ालिमों ने ज़ुल्मो सितम किया। आपने उसी क़द्र सब्रो शुक्र का मुज़ाहेरा फ़रमाया और आपने हर हाल में अल्लाह की याद की और खुदा को किसी वक़्त भी फ़रामोश नहीं फ़रमाया और आख़री वक़्त जब के आपका तन अनवर ज़ख़्मों से चूर था, और उनके बाइस आप निढाल हो चुके थे। उस वक़्त भी आपको नमाज़ का खयाल रहा और नमाज़ की ही हालत में आपने जामे शहादत नोश फ़रमाया फिर वो लोग जो हट्टे कट्टे होकर भी कभी नमाज़ नहीं पढ़ते और जिन्होंने उम्र भर मोहर्रमात शरीआ को नहीं छोड़ा। और जो भंग व चरस पीने के शैदाई और ख़िलाफे शरअे हरकात के फिदाई हैं। ऐसे लोग किस मुंह से हज़रत इमाम आली मुक़ाम से किसी निसबत का दम भर सकते हैं? पस हमें भी चाहिए के हज़रत इमाम आली मुक़ाम के प्यारे उसवा को सामने रखें और फिस्क़ो फिजूर के ख़िलाफ सफ आरा हो जायें और आला कलमत-उल-हक़ की ख़ातिर बातिल के मुक़ाबले में डट जायें। और अल्लाह की याद किसी हातल में भी तर्क ना करें और नमाज़ के इस क़द्र आदी बन जायें के बड़ी से बड़ी तकलीफ में भी छूट ना सके और खसूसन सय्यद हज़रत को तो एक पंजाबी शायर का ये शैर अपने सामने रखना चाहिए....

सय्यद सो जो पढ़े नमाज़ रब दी सय्यद सज्दा ना करे ताँ सज्दा नहीं
भावें सय्यद दी छाती ते शमर हूदे सय्यद ताँ दी नमाज़ थीं पहज्दा नहीं

हिकायत नम्बर(342) उम्मुल मोमिनीन का ख़्वाब

एक बी बी फ़रमाती हैं के मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के हाँ गई तो देखा के उम्मुल मोमिनीन रो रही हैं। मैंने पूछा आप क्यों रो रही हैं, तो फ़रमाया मैंने रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ख़्वाब में देखा है के आपके सर अनवर और रेश मुबारक पर गर्दो गुबार है। मैंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! ये क्या

Scanned by CamScanner

बात है? तो आपने फ़रमाया मैं अभी अभी कर्बला से आया हूँ। आज मेरे हुसैन को क़त्ल कर दिया गया है। (तिरमीज़ी शरीफ, सफ़ा 218, जिल्द:2)

सबक़:- हज़रत इमाम की शहादत के वक़्त हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम शहादत गाह में मौजूद थे औ अपने साहबज़ादे के इस अज़ीम इम्तिहान को आपने खुद मुलाहेज़ा फ़रमाया। मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ज़िन्दा और उम्मत के जुमला आमाल व अफआल और हालात से बा ख़बर हैं।

हिकायत नम्बर(343) फ़रैबी

बारहवीं मोहर्रम को इब्ने साद अहले बैत अेज़ाम को ऊँटों पर बिठा कर और सर हाए शोहदा को हमराह लेकर कूफे को रवाना हुआ। और जब ये लोग कूफे के क़रीब पहुँचे और इब्ने ज़ियाद को इसकी ख़बर हुई तो उसने तमाम शहर में मनादी करा दी के कोई शख़्स हथियार लेकर घर से बाहर ना निकले और फौज का पहरा लगा दिया के कोई शख़्स फितना व फसाद ना कर सके, लोग सुनकर देखने को दौड़े और असीराने कर्बला और सरहाऐ शोहदा को देख कर रोने लगे। हज़रत इमाम ज़ैनुलआबेदीन ने फ़रमाया ऐ रोने वालो! तुम लोग तो हम पर रोने वाले हो, फिर वो कौन लोग हैं जिन्होंने इन्हें क़त्ल किया है। (तज़करह: 97)

सबक़:- हर रोने वाला सच्चा ही नहीं होता। बाज़ अवक़ात ज़ालिम अपना ज़ुल्म छुपाने को मज़लूम का हामी बन जाता है। और ये उसका फ़रैब होता है।

हिकायत नम्बर(344) ज़िन्दा हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

ज़ैद बिन इरक़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जो एक सहाबी हैं फ़रमाते हैं के जब कूफी सरे इमाम को गली कूचे में फिरा रहे थे। तो मैं अपने घर की खिड़की में बैठा था जब सर अनवर मेरे क़रीब आया। तो मैंने सर अनवर को ये आयत पढ़ते हुए सुना *उम्मे हसिबता अन्ना असहाबुल कहफी वर्रकीम कानू मिन आयातिना अजाबन* पस मेरे बदन के रोंगटे खड़े हो गए और मैंने अर्ज़ किया। ऐ इब्ने रसूल अल्लाह! बखुदा आपका क़िस्सा इससे ज़्यादा तअज्जुब ख़ेज़ है। फिर जब इब्ने ज़ियाद के पास लाकर नेज़ों से सर उतारे गए तो हज़रत इमाम के लब मुबारक हिल रहे थे। लोगों ने कान लगा कर

Scanned by CamScanner

सुना, तो ये आयत तिलावत फ़रमा रहे थे। *फला तहसाबन्नल्लाहा ग़ाफिलन अम्मा यामलूज़्ज़ालीमूना* (तज़करह, सफ़ा 98)

सबक़:- अल्लाह की राह में जान देने वाले मरते नहीं, बल्के वो ज़िन्दा ही रहते हैं और शोहदा की ज़िन्दगी पर क़ुरआन शाहिद है। चुनाँचे खुदा फ़रमाता है *ला तक़ूलू लिमन युक़्तलू फ़ी सबीलिल्लाही अमवात* यानी जो अल्लाह की राह में क़त्ल हों। उन्हें मुर्दा मत कहो। लिहाज़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ज़िन्दा हैं और ज़िन्दा रहेंगे।

हिकायत नम्बर(345) उज़ैर बिन हारून

असीराने कर्बला और सिरहाऐ शोहदा को चन्द रोज़ कूफे में रखने के बाद इब्ने ज़ियाद ने फौज के हमराह दमिशक़ रवाना किया। दमिश्क़ जाते हुए ये क़ाफला हवाली हलब में आकर एक पहाड़ के नीचे उतरा। इस पहाड़ पर एक क़स्बा था। इस क़स्बे के अमीर का नाम अज़ीज़ बिन हारून था और ये यहूदी था। रात को हज़रत शहर बानो की लोंडी शीरीं ने रो कर अर्ज़ किया के अगर इजाज़त हो तो जो कुछ मेरे पास बक़िया है उसे बेचकर इस पहाड़ी क़स्बा से आपके वास्ते कुछ कपड़ा ख़रीद लाऊँ। बी बी साहिबा ने उसके इसरार पर इजाज़त दे दी। पस शीरीं पहाड़ पर गई और क़स्बा का दरवाज़ा बन्द पाकर खटखटाया। अमीर क़स्बा अज़ीज़ बिन हारून ने खुद आकर दरवाज़ा खोला और शीरीं का नाम लेकर पुकारा। शीरीं ने सलाम किया। वो बकमाल ताज़ीम शीरीं को अपने घर ले गया शीरीं ने पूछा। आपने मेरा नाम कैसे जान लिया? उसने जवाब दिया के मैंने अभी ख़्वाब में हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलेहिस्सलाम को परेशान हाल देखकर हाल पूछा। तो उन्होंने फ़रमाया तुझे नहीं मालूम के नबी आख़िरउज़्ज़माँ मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के फ़रज़ंद मज़लूमाना मारे गए हैं उनका सर लोग शाम को ले जा रहे हैं और आज रात इस पहाड़ के नीचे ठहरे हैं। मैंने अर्ज़ की। क्या आप मोहम्मद(सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) को जानते हैं और मानते हैं? फ़रमाया: ऐ अज़ीज़ वो सच्चे हैं। उनके बारे में अल्लाह ने हम से अहेद लिया है। हम उन पर ईमान लाए हैं जो उन पर ईमान ना लाएगा दोज़ख़ में जाएगा। मैंने अर्ज़ की के मज़ीद यक़ीन के लिए मुझे कुछ बतलाईये। तो फ़रमाया दरवाज़ा-ए-क़िला पर जाकर खड़े हो जाओ, एक लोंडी शीरीं नाम आकर दरवाज़ा बजाएगी तो उसकी मुताबेअत करना। उसी के बाइस तू मुशर्रफ बा सलाम होगा। और जब सर हुसैन के पास

Scanned by CamScanner

पहुँचे तो हमारा सलाम कहना। वो सलाम का जवाब देंगे चुनाँचे मैं ख़्वाब से चौंक कर फौरन दरवाज़े पर आया के तूने दरवाज़ा बजाया। पस शीरीं ने सारा क़िस्सा आकर बी बी साहिबा से कहा। ये क़िस्सा सुन कर सब अहले बैत हैरान हुए। और सुबह अज़ीज़ इब्ने हारून यज़ीदी लश्कर को कुछ रिश्वत देकर अहले बैत के पास आया और हर एक के लिए क़ीमती जोड़ा लाया। और हज़ार दीनार इमाम ज़ैनुलआबेदीन को नज़्र करके मुसलमान हो गया। फिर इमाम के हुज़ूर हाज़िर होकर हज़रत मूसा व हारून अलेहिस्सलाम का सलाम अर्ज़ किया तो सर अनवर ने सलाम किया जवाब दिया। (तज़्करह, सफ़ा 102)

सबक़:- हज़रत इमाम आली मुक़ाम का विसाल शरीफ के बाद भी फैज़ जारी है के एक यहूदी मुशर्रफ बा सलाम हो गया। मालूम हुआ के अल्लाह वाले दुनिया से तशरीफ़ ले जायें। तो भी उनके फयूज़ व बर्कात बदस्तूर जारी रहते हैं।

हिकायत नम्बर(346) गिरजे का पादरी

यज़ीदी लश्कर असीरान कर्बला और सिरहाए शोहदा को दमिश्क़ ले जाते हुए रात के वक़्त एक मंज़िल पर पहुँचे तो वहाँ एक बड़ा मज़बूत गिरजा नज़र आया। यज़ीदियों ने सोचा के रात का वक़्त है। इस गिरजे में रहना अच्छा रहेगा। गिरजे में एक बूढ़ा पादरी रहता था। शमर ने उस पादरी से कहा के हम लोग रात तुम्हारे गिरजे में रहना चाहते हैं। पादरी ने पूछा के तुम कौन हो और कहाँ जाओगे? शमर ने बताया के हम इब्ने ज़ियाद के सिपाही हैं। एक बाग़ी और उसके साथियों और उसके अहलो अयाल को दमिश्क़ लिए जा रहे हैं। पादरी ने पूछा वो सर जिसे तुम बाग़ी का सर बता रहे हो कहाँ है? शमर ने दिखाया। तो देखकर पादरी पर एक हैबत तारी हो गई और कहने लगा के तुम्हारे साथ बहुत से आदमी हैं और गिरजे में इतनी जगह नहीं। इसलिए तुम इन सरों और क़ैदियों को तो गिरजे में रखो और खुद बाहर रहो। शमर ने उसे ग़नीमत समझा के सर और क़ैदी महफ़ूज़ रहेंगे। चुनाँचे सर इमाम को एक संदूक़ में बंद करके गिरजे की एक कोठरी में और अहले बैत को गिरजे के एक माकान में रखा गया। आधी रात के वक़्त पादरी को कोठरी के रोशन दानों में से कुछ रोशनी नज़र आई। पादरी ने उठकर देखा तो कोठरी में चारों तरफ़ रोशनी देखी। फिर थोड़ी देर बाद देखा के कोठरी की छत फटी और

Scanned by CamScanner

हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा व दीगर अज़वाज मुतहरात आँहज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ज़ाहिर हुईं और संदूक़ खोल कर सर अनवर को देखने लगीं फिर थोड़ी देर बाद आवाज़ सुनी के ऐ बुड्ढे पादरी! झांकना बन्द कर के ख़ातूने जन्नत तशरीफ़ लाती हैं। पादरी ये आवाज़ सुनकर बेहोश हो गया और फिर जब होश आया तो आँखों पर पर्दा पड़ा देखा। मगर ये सुना के कोई रोते हुए यूं कह रहा है:

"अस्सलाम अलेक! ऐ मज़लूम मादर! ऐ शहीद मादर! ग़म ना कर मैं दुश्मनों से तेरा इन्तेक़ाम लूंगी। और खुदा से तेरा इंसाफ चाहूंगी।"

पादरी फिर बेहोश हो गया और फिर जब होश में आया तो कुछ ना पाया बेहद मुश्ताक़ होकर कोठरी का क़ुफ़्ल तोड़कर अन्दर आया। संदूक़ का ताला तोड़ा और सर अनवर को निकाल कर मुश्क व गुलाब से धोकर मुसल्ले पर रखा और सामने दस्त बस्ता खड़े होकर अर्ज़ की ऐ सरदार! मुझे मालूम हो गया के आप उनमें से हैं जिनका वस्फ तौरात व इंजील में मैंने पढ़ा हे। लीजिए गवाह रहिये मैं मुसलमान होता हूँ। चुनाँचे वहीं कलमा पढ़कर मुसलमान हो गया। (तज़करह, सफ़ा 105)

सबक़:- अल्लाह की राह में क़ुर्बान होने वाला मरजअे अवाम व ख़्वास होता है और ये अल्लाह वाले बज़ाहिर दुनिया से तशरीफ़ ले जाते हैं, लेकिन काम उनका बदस्तूर जारी रहता है और ये भी मालूम हुआ के इमाम आली मुक़ाम ने विसाल शरीफ के बाद भी इसाईयों को मुसलमान किया। फिर किस क़द्र अफसोस का मुक़ाम है के उनके नाम लेवा आज खुद ही इसाईयों की सीरत व सूरत अपनाने लगे हैं।

हिकायत नम्बर(347) ढोल बाजे

असीरान कर्बला और सरहाए शोहदा जब दुश्मन के क़रीब पहुँचे और यज़ीद को इल्म हुआ तो उसने तमाम शहर आरास्ता करने और अहले शहर को खुशियाँ मनाने और घर से तमाशा देखने को बाहर आने का हुक्म दिया और यज़ीदी खुशियाँ मनाने लगे। एक सहाबी-ए-रसूल हज़रत सहल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बग़र्ज़ तिजारत शाम आए हुए थे। वो दमिश्क़ के क़रीब एक क़स्बे गुज़रे तो आपने देखा के तमाम लोग खुशी करते ढोल और बाजे बजाते हैं। उन्होंने एक शख़्स से इस खुशी मनाने की वजह पूछी तो लोगों ने बताया के अहले इराक़ ने सर हुसैन यज़ीद को हदया भेजा है। तमाम अहले अहले शाम उसकी खुशी मना

Scanned by CamScanner

रहे हैं। हज़रत सहल ने एक आह भरी और पूछा के सर हुसैन कौन से दरवाज़े से लायेंगे? कहा बाब-उल-साअत से। आप उस तरफ़ दौड़े और बड़ी दौड़ धूप के बाद अहले बैत तक पहुँच गए। आपने देखा के एक सर मुशाबह सरे रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम नेज़े पर चढ़ा है। जिसे देखकर आप बे इख़्तियार रो पड़े। अहले बैत में से एक ने पूछा के तुम हम पर क्यों रो रहे हो? उन्होंने पूछा आपका नाम क्या है? फ़रमाया। मेरा नाम सकीना बिनते हुसैन है। उन्होंने फ़रमाया और मैं आपके नाना का सहाबी हूँ मेरे लायक़ जो ख़िदमत हो फ़रमाईये फ़रमाया! मेरे वालिद के सरे अनवर को सब से आगे करा दो ताके लोग इधर मुतवज्जह हों और हम से दूर रहें उन्होंने चार सौ दरहम देकर सरे इमाम मसतूरात से दूर कराया। (तज़करह, सफ़ा 107)

सबक़:- मालूम हुआ के ढोल बाजे बजा बजा कर मोहर्रम के दिन गुज़ारने यज़ीदियों की सुन्नत है।

हिकायत नम्बर(348) गुसताख़

सरहाऐ शोहदा और असीराने कर्बला जब दमिश्क में दाख़िल हुए तो यज़ीद ने दरबार आरास्ता किया और तमाम रौसाऐ शहर और सरदाराने ममलिकत को जमा किया और फिर सब को दरबार में बुलाया। जब लाए गए तो क़ैदियों को एक तरफ़ ठहराया और सरों को अपने सामने मंगवा कर हर एक को देखना और हाल पूछना शुरू किया और हालात सुन कर यज़ीद देर तक चुपका सर नीचा किए रहा। फिर हुक्म दिया के सरे इमाम तश्त में रख कर हमारे सामने लाओ। जब तश्त में सर मुबारक रख कर लाया गया तो अपने हाथ की लकड़ी से इमाम के लब व दनदान छू कर बोला के क्या ये हुसैन के लब व दनदान हैं? ये देख कर एक सहाबी रसूल इब्ने जिनदब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जो उस वक़्त वहाँ वहाँ तशरीफ़ फ़रमा थे बोले और कहा *क़तअल्लाहू यदाका या यज़ीदू* तू इस जगह को लकड़ी से छू रहा है जिस जगह मैंनें बारहा आँहज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बोसा देते देखा है। यज़ीद ने ये सुनकर उन्हें मजलिस से निकाल दिया। (तज़करह, सफ़ा 110)

सबक़:- यज़ीद फासिक़ व फाजिर और बे अदब व गुसताख़ भी था और उसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की निसबत का कुछ भी पास ना था।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(349) फ़रैब का रोना

जिस वक़्त अहले बैत इमाम का क़ाफला कूफे से दमिश्क में आकर दरबार यज़ीद में पेश हुआ। तो यज़ीद की औरत हुंदा बेताब होकर बे पर्दा दरबार यज़ीद में चली आई। यज़ीद ने दौड़ कर उसके सर पर कपड़ा डाल दिया और कहा ऐ हुंदा! तू फ़रज़ंदे रसूल पर नोहा दारी कर इब्ने ज़ियाद लईन ने उनके मामले में जल्दी की। हालाँके मैं उनके क़त्ल पर राज़ी ना था। (जलाअ अलउयून और खुलासत-उल-मसायब) बहवाला फैसला शरीया, सफ़ा 50)

सबक़:- यज़ीद और उसके घर वालों का ये सारा फ़रैब था के खुद ही क़त्ल कराये और फिर इंकार कर दिया।

हिकायत नम्बर(350) नक़्क़ारा-ए-खुदा

असीराने कर्बला जब दरबारे यज़ीद में पेश किए गए तो हज़रत इमाम ज़ैनुलआबेदीन को देखकर यज़ीद ने पूछा। ये कौन है? बताया गया। ये अली बिन हुसैन है। बोला मैंने तो सुना था। वो मारा गया बताया गया के हुसैन के तीन लड़के थे। अली अक्बर, अली असग़र मारे गए, ये अली औसत हैं के बवजह बीमारी के बच रहे और गिरफ़्तार करके लाए गए। यज़ीद ने हज़रत इमाम ज़ैनुलआबेदीन को बुलाकर अपने लड़के के पास बिठाया और कहा ऐ अली! मेरा लड़का तेरे बराबर है। क्या इससे मुक़ाबला कर सकते हो? आप ने फ़रमाया। एक एक तलवार दोनों को दे और मुक़ाबला करा के देख ले। इतने में नक़्क़ारा-ए-यज़ीद बजा, यज़ीद के बेटे ने बड़े फख्र से कहा ये नौबत मेरे बाप के नाम की बज रही है या तेरे बाप के नाम की? हज़रत इमाम ने जवाब में ताम्मुल फ़रमाया के मोज़्ज़न ने अज़ान कही। पस इमाम ने पुस्र यज़ीद से फ़रमाया। देख मेरे बाप दादा के नाम की नौबत बजी जो क़यामत तक यूहीं बजती रहेगी और तेरे बाप के नाम की नौबत चन्द रोज़ बज कर बन्द हो जाएगी। पुस्र यज़ीद इस जवाब से ला जवाब हो गया। और हाज़रीन फ़ुसाहत शहज़ादा से बड़े मुताज्जिब हुए। (तज़करह, सफ़ा 113, और तनक़ीह, सफ़ा 131)

सबक़:- हुसैन और अहले बैत अेज़ाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम के नाम लेवा क़यामत तक बाक़ी रहेंगे और यज़ीद का कोई नाम तक लेने

Scanned by CamScanner

को तैयार नहीं। मालूम हुआ के ज़ुल्म ज़ालिम को मिटा देता है और सब्रो शुक्र साबिर को खुदाई भर में और खुदा का मक़्बूल बना देता है।

हिकायत नम्बर(351) दमिश्क़ की जामअे मस्जिद में

दरबार यज़ीद में हज़रत इमाम ज़ैनुलआबेदीन रज़ी अलाहो तआला अन्ह पेश किए गए तो यज़ीद ने हज़रत इमाम से कहा के ऐ इब्ने हुसैन! तुम्हें कोई हाजत हो तो तलब कर। शहज़ादे ने फ़रमाया एक तो ये हाजत रखता हूँ के मेरे बाप का क़ातिल को मेरे हवाले कर ताके अपने हाथ से क़त्ल करूं। यज़ीद ने इस बात से इंकार किया। फिर हज़रत ने फ़रमाया अच्छा तो सर इमाम मेरे हवाले कर ताके तन अक़्दस से मिलकर दफ़्न करूं। यज़ीद ने कहा ये मंज़ूर है और कुछ? फ़रमाया मुझे इजाज़त दे के मैं अहले बैत को लेकर मदीना चला जाऊँ। यज़ीद ने कहा ये भी मंज़ूर है और कुछ? फ़रमाया कल जुमआ है मुझे इजाज़त दे के मिंबर पर जा कर खुत्बा पढ़ूं। यज़ीद ने कहा ये ख़्वाहिश भी तुम्हारी पूरी कर दी जाएगी और कल खुत्बा तुझी से पढ़वाऊँगा। चुनाँचे दूसरे रोज़ यज़ीद ने बादिल नख़्वास्ता हज़रत इमाम को खुत्बा पढ़ने की इजाज़त दे दी। उस रोज़ मस्जिद में ख़ल्क़त का इस क़द्र हजूम था के किसी को जगह ना मिलती थी। हज़रत इमाम ज़ादा मिंबर पर रौनक़ अफरोज़ हुए और अव्वल निहायत फसाहत व बलाग़त से हम्द व नात बयान की। फिर फ़रमाया जो मुझे जानता हो जाने और जो ना जानता हो। अब जाने के मैं नूर दीदा-ए-मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम, और हसन मुजतबा हूँ। जिन्हें मैदाने कर्बला में तीन रोज़ भूका प्यासा मज़लूम शहीद किया गया। ये सुनकर मस्जिद में कोहराम पड़ा। अहले दमिश्क़ में शौर बर्पा हुआ। यज़ीद डरा। और मोज़्ज़न को अक़ामत के लिए इशारा किया। पस मोज़्ज़न ने अल्लाहो अक्बर कहा शहज़ादे ने *नअम ला शई अक्बरू मिनहू* फ़रमाया मोज़्ज़न ने *अशहदूअन्नला इलाहा इलल्लाह* कहा शहज़ादे ने *नअम शहीदू बिहा लहयी व शअेरी व दमी* फ़रमया: मोज़्ज़न ने *अशहदू अन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह* कहा शहज़ादे ने अपना अमामा उतार कर मोज़्ज़न की तरफ़ फैंका और बाल सर परेशान करके मोज़्ज़न से फ़रमाया। बहक़ मोहम्मद ज़रा ठहर जा। मोज़्ज़न चुप हो गया तो शहज़ादे फ़रमाया ऐ यज़ीद! ये मोहम्मद तेरे दादा हैं या मेरे! अगर तू इन्हें अपना दादा कहेगा तो आलम तुझे झूटा कहेगा और अगर मेरे दादा कहेगा तो मेरे बाप को मज़लूम क्यों शहीद किया? मुझे यतीम किया, अहले बैत को शहर बशहर फिराया।

Scanned by CamScanner

क़ैद करवाया। दरबार में बुलाया। मेरे बाप दादा के दीन में रख़ना डाला। बावजूद के उनका कलमा पढ़ता है। फिर भी शर्म नहीं करता है। फिर शहज़ादे ने लोगों से फ़रमाया तुम में से सिवाए मेरे कोई ऐसा है जिसका दादा पैग़म्बर हो? उस वक़्त मस्जिद में शौरे क़यामत बर्पा हुआ और लोग रोने लगे कई बेहोश हो गए। यज़ीद ने मोज़्ज़न को डांटा अक़ामत पूरी कराई, नमाज़ अदा की और फिर लोगों से बे चैनी दूर करने के लिए एक मजलिसे आम बुलाई और उसमें सब के सामने सरदाराने कूफे को बुला कर सख़्त बुरा भला कहा। गालियाँ दीं उनकी हरकात पर नफरीं और ख़फ़्गी का इज़हार किया और कहा मैं तुम पर जब राज़ी होता के तुम हुसैन को ज़िन्दा मेरे पास लाते मैं उनकी ख़िदमत में खुशामद कर लेता। लानत है इब्ने ज़ियाद जिसने ये काम किया। (तज़करह, सफ़ा 115, व तन्क़ीह, सफ़ा 133)

सबक़:- पज़ीद बड़ा चालाक और मक्कार था के खुद ही सब कराके फिर करने वालों पर लानत मलामत भी करने लगा और अपने आपको बे क़सूर ज़ाहिर करने लगा।

हिकायत नम्बर(352) मदीने को वापसी

यज़ीद ने अहले बैत को मअे सरहाऐ शोहदा हज़रत नौमान बिन बशीर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हमराह मदीने मुनव्वरह जाने की इजाज़त दी और नौमान बिन बशीर निहायत ताज़ीम व अदब के साथ अहले बैत को मदीना ले चले। अहले बैत अेज़ाम नौमान बिन बशीर की इस ख़िदमत व ताज़ीम पर बड़े खुश हुए और उन्हें दुआऐं दीं। अहले मदीना को जब अहले बैत के आने की ख़बर हुई तो हर छोटा बड़ा बे क़रार होकर रोता हुआ उन्हें लेने के लिए दौड़ा। अहले बै अेज़ाम से सब से पहले रोज़ा-ए-अक़्दस पर हाज़िर हुए और दर्दनाक आवाज़ों में *वजद्दाहू* का नारा मार कर अर्ज़ गुज़ार हुए के या रसूल अल्लाह! हम यतीम ग़रीब मज़लूम मग़मूम दरे वाला पर हाज़िर हैं....

या रसूल अल्लाह! ज़रा देखो हमारा हाले ज़ार
दुश्मनों के हाथ से कैसे हुए हम ज़ुलफिगार
जो मुसीबत हम पे गुज़री क्या करें उसका बयान
कोई दुनिया में ना होगा इस तरह ज़ारो नज़ार

अहले बैत अेज़ाम यूं रो रो कर अपने प्यारे नाना जान से अर्ज़े हाल कर रहे थे के उम्मुलमोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक हाथ में शीशी जिसमें वो मिट्टी भरी हुई थी, जो हुज़ूर ने उन्हें देकर फ़रमाया

Scanned by CamScanner

था के जब मेरा बेआ हुसैन कर्बला में शहीद होगा उस दिन ये मिट्टी खून बन जाएगी जिसका ज़िक्र हिकायत नम्बर 307 में हो चुका है। और आज ये मिट्टी खून बन चुकी थी, जिसमें खाक कर्बला खून शुदा भरी थी। लिए हुए और दूसरे हाथ से हाथ सिग़रा दुख़्तर इमाम पकड़े हुए आईं। अहले बैत ने जो उन्हें देखा और शीशी की खाक को खून शुदा पाया तो और ज़्यादा बे क़रार हुए। अलग़र्ज़ वो वक़्त भी क़यामत का नमूना था। मदीना मुनव्वरह में कोहराम पड़ा था हर छोटा बड़ा बे क़रार और अशकबार हो रहा था। (तज़करह, सफ़ा 116, व तनक़ीह, सफ़ा 136)

सबक़:- वाक़ेया कर्बला बड़ा ही दर्दनाक वाक़ेया है और मुसलमान का दिल उससे मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रहता और उसमें मुसलमान के लिए सेंकड़ों सबक़, इबरतें और दर्स हैं। पस मुसलमानों को चाहिए के वो अहले बैत अेज़ाम को नक़्शे क़दम पर चल कर ईलाअे कलमत-उल-हक़ की ख़ातिर हर क़िस्म की क़ुर्बानी का जज़्बा पैदा करें। और उन मुनकिरात शरीआ और बिदआत से बचें। जिनसे आख़िर तक अहले बैत अेज़ाम मना फ़रमाते रहे हैं।

हिकायत नम्बर(353) ज़ैनुल आबेदीन

हज़रत इमाम हुसैन(र०अ०) के साहबज़ादे अली औसत(र०अ०) का नाम नामी तो अली था। मगर आप कसरत इबादत की वजह से ज़ैनुल आबेदीन के लक़ब से मश्हूर थे। आप हर दिन रात में एक हज़ार नफ़िल पढ़ा करते थे। एक रोज़ आप अपने मकान में नफ़िल पढ़ रहे थे के आपके मकान को आग लग गई। लोग आग बुझाने लगे। मगर हज़रत इमाम उसी खुज़ू व खुशू से नमाज़ अदा करते रहे। जब आग बुझ गई और आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो लोगों ने अर्ज़ की हुज़ूर! मकान को आग लग गई थी, हम बुझाने में मसरूफ रहे मगर आपने परवाह तक ना फ़रमाई। आपने फ़रमाया तुम लोग ये आग बुझा रहे थे और मैं आख़िरत की आग बुझाने में मशग़ूल था। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 55, व हयात-उल-हैवान, सफ़ा 117, जिल्द:1)

सबक़:- हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन जन्नती होने के बावजूद इस क़द्र इबादत फ़रमाते और आख़िरत की आग बुझाने में मसरूफ रहते थे। फिर हम लोग अगर पाँच नमाज़ें भी बाक़ादगी से अदा ना करें और जहन्नुम की आग से बचने की कोशिश ना करें तो हमारी ये किस क़द्र ग़फ़्लत है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(354) बुर्दबारी

एक दिन हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह घर से तशरीफ़ ले जा रहे थे के रास्ते में गुसताख़ ने आपको बुरा भला कहना शुरू कर दिया। हज़रत इमाम ने उससे फ़रमाया के भाई, जो कुछ तुम ने मुझे कहा है। अगर मैं वाक़ई ऐसा ही हूँ तो खुदा मुझे माफ फ़रमाए। ये सुनकर वो शख़्स बड़ा नादिम हुआ और बढ़कर आपकी पैशानी चूम कर कहने लगा हुज़ूर! जो कुछ मैंने कहा है। आप हर गिज़ एसे नहीं हैं, मैं ही झूटा हूँ। आप मेरी मग़फिरत की दुआ फ़रमाएँ। आपने फ़रमाया अच्छा जाओ खुदा तुम्हें माफ फ़रमाए। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 56)

सबक़:- अल्लाह वालों की ये सीरत है के बुराई का बदला कुछ ऐसे तरीक़ से देते हैं के ख़ता कार नादिम होकर अपनी ख़ता से किनारा कश हो जाता है और नेकी इख़्तियार कर लेता है।

हिकायत नम्बर(355) ख़तरनाक असदहा

ख़लीफा मनसूर ने एक दिन अपने वज़ीर से कहा के इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को बुला लाता के मैं उसे क़त्ल कर दूं वज़ीर ने कहा के एक सय्यद गोशा नशीन को क़त्ल करना मुनासिब नहीं, ख़लीफा उस पर नाराज़ हुआ और कहा जो हुक्म मैं देता हूँ तुम बजा लाओ। नाचार वज़ीर हज़रत इमाम जाफर सादिक़ को बुलाने के लिए गया और उधर ख़लीफा मनसूर ने ग़ुलामों को हुक्म दिया के जब जाफर सादिक़ आए और मैं ताज को अपने सर से उतार लूं। तो तुम उसी दम उसको क़त्ल कर देना चुनाँचे हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तशरीफ़ लाए। आप दरबार में दाख़िल हुए तो मनसूर उन्हें देखते ही उनके इसतक़बाल को दौड़ा और सद्र मुक़ाम पर आपको बिठाया और खुद मोद्दबाना तरीक़ से आपके सामने बैठ गया। ग़ुलामों को बड़ा ताज्जुब हुआ के परोग्राम तो कुछ और था और हो कुछ और रहा है। मनसूर ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से फ़रमाया के आपकी कोई हाजत हो तो बयान फ़रमाइये। आपने फ़रमाया के मेरी हाजत तुम से यही है के आईंदा मुझे अपने हुज़ूर तलब ना करना ताके मैं खुदा की इबादत में मशग़ूल रहूं। मनसूर ने आपको इजाज़त दी और बड़ी इज़्ज़त से आपको रूख़्सत किया और उस वक़्त मनसूर का बदन कांप रहा था। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के तशरीफ़ ले जाने के बाद

Scanned by CamScanner

वज़ीर ने इस हाल का सबब पूछा तो मनसूर ने कहा के जब जाफर सादिक़ दरवाज़े से दरबार में दाख़िल हुए तो मैंने आपके हमराह एक बड़ा ख़तरनाक असदहा देखा जिसका एक लब मेरे तख़्त से ऊपर और एक नीचे था और वो बज़बाने हाल मुझ से कह रहा था के अगर तूने इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को सताया तो मैं तुम्हें तख़्त समेत निगल जाऊँगा। चुनाँचे मैंने इस असदहे के ख़ौफ से जो कुछ सलूक उनसे किया। तुम ने वो देख लिया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 15)

सबक़:- अल्लाह वालों को सताना बड़ा ख़तरनाक होता है, इसी लिए मौलाना रूमी भी फ़रमाते हैं...

गर खुदा ख़्वाहिद के पर्दा किस दर्द
मेलिश अन्दर ताना-ए- पा काँ कंद

हिकायत नम्बर(356) क़ीमती लिबास

हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को लोगों ने देखा के आप बड़ा बैश क़ीमती लिबास पहने हुए हैं एक शख़्स ने कहा के ऐ इब्ने रसूल अल्लाह! इतना क़ीमती लिबास अहले बैत को ज़ैबा नहीं। आपने उसका हाथ पकड़ा और आसतीन के अन्दर खींच कर दिखाया के देख ये क्या है? उसने देखा के नीचे आप टाट जैसा खुरदुरा लिबास पहने हुए हैं। आपने फ़रमाया के ये ख़ालिक़ के लिए है और वो ख़ल्क के वास्ते है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 17)

सबक़:- अल्लाह वालों के पास बज़ाहिर दुनिया नज़र आए तो किसी क़िस्म की बदगुमानी ना करना चाहिए। उन अल्लाह वालों का दिल जब दुनिया से बिलकुल खाली होता है।

हिकायत नम्बर(357) दीनारों की थेली

एक शख़्स की दीनारों की थेली गुम हो गई। इस नादान ने हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को पकड़ कर कहा के थेली आपने ली है। इस बेख़बर ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को पहचाना नहीं और इलज़ाम लगा दिया हज़रत ने फ़रमाया थेली में कितनी रक़म थी वो बोला एक हज़ार आप उसे घर ले गए और हज़ार दीनार उसे दे दिया। दूसरे रोज़ उस शख़्स को वो गुमशुदा थेली मिल गई। फिर वो हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास आया और माज़रत करते हुए वो

Scanned by CamScanner

हज़ार दीनार वापस करने लगा। आपने फ़रमाया अब ये माल तुम्हारा ही हुआ। हम ने जो चीज़ दे दी वापस नहीं लेते। उसके बाद उसने किसी से पूछा के ये कौन हैं। लोगों ने बताया के ये इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हैं। वो शख़्स बड़ा नादिम हुआ। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 17)

सबक़:- अल्लाह वाले दुनिया को बिलकुल हैच समझते हैं और वो दुनिया का क़तअन कोई लालच नहीं रखते। फिर आज वो लोग जो मुरदार दुनिया के लिए मुख़्तलिफ हीले बहाने करते और दुनिया पर मरते हैं किस क़द्र ग़ाफिल और नादान हैं।

हिकायत नम्बर(358) हारून अलरशीद और एक आराबी

हारून अलरशीद एक मर्तबा मक्का में आया तो अवाम को तवाफ करने से रोक दिया ताके वो खुद तनहा तवाफ कर सके। और जब वो तवाफ करने लगा तो झट एक आराबी ने सबक़त करके उसके साथ तवाफ करना शुरू कर दिया। हारून अलरशीद को ये बात नागवार गुज़री और अपने हाजिब की तरफ़ देखा। हाजिब ने अपने बादशाह की मर्ज़ी पाकार आराबी से कहा मियाँ आराबी! यहाँ से हट जाओ ताके अमीर-उल-मोमिनीन तवाफ कर सकें। आराबी ने जवाब दिया खुदा के नज़दीक इस मुक़ाम में छोटे, बड़े, अदना, व आला अमीर व ग़रीब और राई व रिआया सब बराबर हैं। यहाँ कौन छोटा और कौन बड़ा है जाओ मैं ना हटता। हारून अलरशीद ने उसकी ये गुफ़्तगू सुनी तो हाजिब से कहा उसे रहने दो। उसके बाद हारून अलरशीद हज्रे असवद को चूमने के लिए आगे बढ़ा तो आराबी ने सबक़त करके हज्रे असवद को पहले चूम लिया। हारून अलरशीद जब मुक़ामे इब्राहीम में नमाज़ पढ़ने को बढ़ा तो आराबी ने सबक़त करके वहाँ पहले नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी। हारून अलरशीद जब तवाफ व नमाज़ से फारिग़ हुआ तो हाजिब से कहा के उस आराबी को मेरे पास बुला लाओ। चुनाँचे हाजिब गया और आराबी से कहने लगा। चलो तुम्हें अमीर-उल-मोमिनीन बुलाते हैं। आराबी ने कहा मुझे उन से कोई हाजत नहीं है। फिर मैं क्यों जाऊँ। हाँ अगर उन्हें मुझ से कोई काम है तो वो खुद मेरे पास क्यों नहीं आते? हाजिब ये सुनकर गुस्से में आकर वापस हुआ और उसका जवाब हारून अलरशीद को सुना दिया। हारून अलरशीद ने सुनकर कहा बेशक वो ठीक कहता है। मुझे खुद उसके पास चलना चाहिए, चुनाँचे हारून अलरशीद खुद उस आराबी के पास पहुँचे और उसके सामने खड़े होकर अस्सलाम अलेकुम कहा जिसका

Scanned by CamScanner

जवाब व अलेकुल अस्सलाम कहकर आराबी ने दिया। हारून अलरशीद ने कहा क्यों भई! इजाज़त है बैठ जाऊँ। आराबी ने जवाब दिया। ये घर ना आपका है ना मेरा। फिर मुझ से इजाज़त कैसी? और मैं इजाज़त देने वाला कौन? यहाँ हम सब बराबर हैं। आप चाहें तो बैठ जायें, चाहें तो वापस चले जायें। हारून अलरशीद इस क़िस्म की जुर्रात आमेज़ गुफ़्तगू सुनकर हैरान रह गया उसे गुमान तक ना था के ऐसी गुफ़्तगू भी कोई उससे कर सकता है। फिर वो आराबी के पहलू में बैठ गया और कहने लगा। मियाँ आराबी! मैं तुम से तुम्हारे फर्ज़ के मुतअल्लिक़ पूछता हूँ क्या तुम बता सकोगे? अगर तुम अपने फर्ज़ पर रोशनी डाल सको तो मैं तुम्हारा क़ायल हो जाऊँगा। आराबी ने जवाब दिया आपका ये सवाल मोअल्लिम बन कर है या मुतअल्लिम बन कर? हारून अलरशीद ने कहा मुतअल्लिम बन कर। आराबी ने कहा तो फिर तालिब इल्मों की तरह सामने मौद्दिब होकर बैठो। और फिर पूछो! चुनाँचे हारून अलरशीद मौद्दबाना तरीक़ से सामने बैठ गया और फिर फर्ज़ के मुतअल्लिक़ पूछा। आराबी ने जवाब दिया के एक फर्ज़ बताऊँ या पाँच, सत्रह फर्ज़ बताऊँ, चौंतीस बताऊँ या चोरानवे, चालीस में से एक फर्ज़ का बयान करूं या उम्र भर में एक फर्ज़ का?

ये तफसील सुनकर हारून अलरशीद ने तनज़न हंस कर कहा, मैंने तो तुम से एक फर्ज़ का पूछा है और तुम दुनिया भर का हिसाब ले बैठे हो। आराबी ने कहा हारून! अगर दीन में हिसाब ना होता तो क़यामत के रोज़ ख़ालिक़ मख़लूक़ से कभी हिसाब ना लेता खुदा का इर्शाद क्या याद नहीं *वइन काना मिसक़ालू हब्बाती खूऊदलिन आतैना बिहा व काफा बिना हासिबीना हारून* अलरशीद ने जब ये सुना के आराबी ने उसका नाम लेकर उसे मुख़ातिब किया है। और उसे अमीर-उल-मोमिनीन नहीं कहा तो ग़ुस्से में आ गया और जब ग़ुस्सस फरू हुआ तो कहने लगा। क़सम बखुदा अगर तुम ने मेरे सवाल का जवाब ना दिया तो मैं तुझे सफा और मरवा की पहाड़ियों के दरमियान मरवा दूंगा हाजिब ने कहा अमीर-उल-मोमिनीन जाने दीजिए। इस हरम शरीफ के तुफैल इसकी जाँ बख़्शी फ़रमा दीजिए। आराबी ये सुनकर खिलखिला कर खूब हंसा, हारून अलरशीद और भी ज़्यादा हैरान हुआ। और पूछा इस क़द्र हंसे क्यों? आराबी ने जवाब दिया तुम दोनों की मुज़्हका ख़ैज़ गुफ़्तगू सुनकर के एक तुम दोनों में से ऐसी मौत ले आने का मुद्दई है जो आई नहीं और दूसरा ऐसी मौत को हटा रहा है जो आ चुकी। भला ऐसी ना मअक़ूल बातें दाना तसलीम कर सकता है, हारून रशीद ये सुनकर

Scanned by CamScanner

बेहद नादिम हुआ अैर मिन्नत से कहने लगा। भई! अब तो मुझे तुम्हारे जवाब का बेहद शौक़ है। बराऐ खुदा मेरे सवाल का जवाब ज़रूर दो। आराबी न कहा तो लो सुनो। तुम्हारा सवाल इस फर्ज़ के मुतअल्लिक़ है। जो खुदा ने मुझ पर किया है। तो खुदा के मुझ पर बहुत से फ़रायज़ हैं मैंने जो तुम से एक फर्ज़ का कहा था वो तो दीने इस्लाम है और जो पाँच फर्ज़ कहे थे। वो पाँच नमाज़ें हैं और जो सत्रह फर्ज़ हैं वो दिन रात की सत्रह रकआत हैं। और चौंतीस फर्ज़? दिन रात के सज्दे हैं और चौरानवे फर्ज़? वो उन सब रकआत की तकबीरात हें और जो मैंने चालीस में से एक फर्ज़ कहा था वो चालीस दीनार में से एक दीनार ज़कात है और सारी उम्र में से एक फर्ज़? वो हज है। हारून अल रशीद आराबी के हुस्ने बयाँ और तशरीह मसायल को सुनकर बेहद मसरूर हुआ और उसके दिल में बेहद क़द्र पैदा हो गई।

उसके बाद आराबी ने कहा के आपके सवाल का जवाब तो मैंने दे दिया। अब मेरे भी सवाल का जवाब क्या आप देंगे? हारून रशीद ने कहा हाँ पूछिये आराबी ने कहा। क्या फ़रमाते हैं। अमीर-उल-मोमिनीन उस शख़्स के लिए जिसने सुबह एक औरत को देखा तो वो औरत उस पर हराम थी। ज़ोहर का वक़्त हुआ तो हलाल हो गई। इशा का वक़्त आया तो फिर हराम हो गई। सुबह हुई तो हलाल हो गई उसके बाद फिर ज़ोहर का वक़्त आया तो हराम हो गई अस्र का वक़्त आया तो फिर हलाल हो गई। मग़रिब का वक़्त हुआ तो हराम हो गई। इशा का वक़्त आया तो फिर हलाल हो गई। हारून अलरशीद ये सुनकर कहने लगा के तुम ने मुझे एक ऐसे दरया में डाल दिया है जिससे बजुज़ तुम्हारे दूसरा कोई ना निकाल सकेगा तुम खुद ही उसका जवाब दो। आराबी ने कहा अमीर-उल-मोमिनीन! आप तो बहुत बड़े साहबे इख़्तियार हाकिम हैं। मेरे एक मामूली से मसले के सामने आजिज़ क्यों आ गए? हारून अलरशीद ने कहा वाक़ेया ये है के खुदा ने तुम्हारा दर्जा-ए-इल्म मुझ से बुलंद किया है। मेरी दरख़्वास्त है के इस हरम शरीफ की ख़ातिर तुम ही जवाब दो। आराबी ने कहा बहुत अच्छा तो सुनिए वो एक ऐसा शख़्स है जिसने सुबह किसी दूसरे की लोंडी को देखा जो उस पर हराम थी। ज़ोहर का वक़्त आया तो वो लोंडी उसने खरीद ली। अब वो इस पर हलाल हो गई। अस्र के वक़्त उसने उसे आज़ाद कर दिया तो वो फिर उस पर हराम हो गई। मग़रिब के वक़्त उसने उससे निकाह कर लिया तो फिर हलाल हो गई। इशा के वक़्त उसने तलाक़ दे दी तो वो फिर हराम हो गई। सुबह उसने रूजू कर लिया तो फिर हलाल हो गई। ज़ोहर का वक़्त आया तो वो शख़्स मुरतिद हो

Scanned by CamScanner

गया। वो फिर उस पर हराम हो गई। अस्र के वक़्त वो शख़्स फिर मुसलमान हो गया तो उसकी औरत फिर उस पर हलाल हो गई। मग़रिब के वक़्त वो औरत मुरतिद हो गई फिर वो हराम हो गई, इशा का वक़्त आया तो फिर वो मुसलमान हो गई। लिहाज़ा फिर हलाल हो गई।

हारून अलरशीद ये तफसील सुनकर हैरान व शशिद्र रह गया और उस आराबी को दस हज़ार दीनार देने का हुक्म दिया। जब ये दीनार आराबी को पेश किए गए तो उसने कहा के ये दरहम उनके अहल को दे दो। मुझे ज़रूरत नहीं। हारून अलरशीद ने कहा क्या मैं तुम्हारे नाम कोई जागीर कर दूं जो उम्र भर तुम्हारे लिए काफी हो? आराबी ने कहा जिस ने तुम्हारे नाम मुल्क कर रखा है वो चाहेगा तो मेरे नाम भी कोई जागीर कर देगा तुम्हारे वास्ते की ज़रूरत नहीं।

हारून अलरशीद वहाँ से लौटा और उस आराबी के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो लोगों ने बातया के ये हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे मूसा रज़ा हैं जिन्होंने ज़ाहिदाना ज़िन्दगी इख़्तियार फ़रमा रखी है। हारून अलरशीद ये हक़ीक़त सुनकर उल्टे पाऊँ दौड़ा और हज़रत मूसा रज़ा बिन जाफर सादिक़ बिन मोहम्मद बिन अली बिन अबी तालिब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की पैशानी को चूम लिया। (अलरोज़ अलफायक़, सफ़ा 58 ता 59)

सबक़:- अहले बैत अेज़ाम मुनब्बअे अलउलूम थे। और ये भी मालूम हुआ के पहले बादशाह भी इल्म दोस्त और बुज़ुर्गाने दीन के क़द्र शनास थे।

सातवाँ बाब

आइम्मा इक्राम

रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

योमा नदऊ कुल्ला उनासिन बिइमामीहिम फमिन ऊतिया किताबाहू बियमीनिही फऊलाईका यक़राऊना किताबाहुम वला युज़लमूना फतीला (प 15, रूकू 8)

जिस दिन हम हर जमात को उसके इमाम के साथ बुलायेंगे तो जो अपना नामा दाहिने हाथ में दिया गया। ये लोग अपना नामा पढ़ेंगे और तागे फिर उनका हक़ ना दबाया जाएगा। (कनज़ुल ईमान)

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(359) इमाम-उल-मुस्लिमीन अबु हनीफा(र०अ०)

हज़रत इमाम आज़म इमाम अबु हनीफा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत के लिए जब मदीना मुनव्वरह पहुँचे और रोज़ा-ए-अनवर पर हाज़िर हुए तो आपने अर्ज़ किया। *अस्सलाम अलेका या सय्यदुल मुरसलीन*

तो रोज़ा-ए-अनवर से जवाब आया

व अलेका अस्सलाम या इमाम-उल-मुस्लिमीन।(तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 246)

सबक़:- मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हयात-उन्नबी हैं। ग़ुलाम का सलाम सुनते हैं और जवाब भी अता फ़रमाते हैं और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मुसलमानों के इमाम हैं और खुद सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने आपको मुसलमानों का इमाम फ़रमाया है फिर अगर कोई शख़्स हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की शान वाला में कोई बे अदबी का लफ़्ज़ कहे तो हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम क्यों ना उससे नाराज़ होंगे।

हिकायत नम्बर(360) मुक़द्दस बूढ़ा

हज़रत शेख़ बू अली बिन उस्मान जलाली रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैं मुल्के शाम में था के एक रोज़ में हज़रत बिलाल रज़ी अल्लाहो अन्ह के मज़ार शरीफ पर सो गया। मैंने ख़्वाब में देखा के मैं मक्का शरीफ में हूँ और हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम बाब बनी शीबा से दाख़िल हुए और आप एक बूढ़े शख़्स को बड़ी शफ़्क़त से अपनी मुबारक गोद में लिए हुए और अपने सहारे चला रहे हैं। मैंने दौड़कर हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम के मुबारक क़दमों को बूसा दिया और मेरे दिल में ये सवाल उठ रहा था के ये बूढ़े कौन हैं जिन्हें हुज़ूर इतनी शफ़्क़त से अपनी गोद में संभाले और अपने सहारे चला रहे हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मेरे इस सवाल को सुना और फ़रमाया ये मुसलमानों का इमाम अबु हनीफा है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 252)

सबक़:- मालूम हुआ के हमारे इमामे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला

Scanned by CamScanner

अन्ह के जुमला मसायल वही हैं जो हदीस में बयान हुए और आपका मज़हब वही है जिस पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने चलाया और हमारे इमाम ने शरई मसायल और इसतंबात व इजतिहाद में जो क़दम भी उठाया है। हदीस नबव्वी के सहारे पर ही उठाया है।

हिकायत नम्बर(361) पैश्वा

एक दिन हज़रत इमाम आज़म(र०अ०) कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे के एक लड़के को आपने देखा के कीचड़ में चल रहा है आपने उस लड़के से फ़रमाया। बेटा! होश से चलो। ऐसा ना हो के तुम्हारा पाँव फिसल जाए और गिर पड़ो। लड़के ने जवाब दिया। ऐ अमीर-उल-मुस्लिमीन! मैं तो अकेला हूँ अगर फिसलूंगा भी तो फिर संभल जाऊँगा। और ना भी संभल सका तो मैं ही गिरूंगा। मगर आप तो मुसलमानों के पैश्वा हैं आपको इसका ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है के आपका पाँव ना फिसले क्योंके अगर आपका पाँव फिसल गया तो सारे मुसलमानों का जो आपके पीछे चल रहे हैं पाँव फिसल जाएगा और इस वक़्त सबका संभलना बहुत मुश्किल हो जाएगा। हज़रत इमाम उस लड़के की ये बात सुनकर रोने लगे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 250)

सबक़:- इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मुसलमानों के पैश्वा हैं। और हर छोटे बड़े को उसका एत्राफ है के हज़रत इमाम आज़म इमाम-उल-मुस्लिमीन हैं और ये भी मालूम हुआ के इमाम व पैश्वा पर क़ौम व जमात की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारियाँ होती हैं।

हिकायत नम्बर(362) शब बैदार इमाम

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हर रात तीन सौ रकात नफिल पढ़ा करते थे। एक बार आप कहीं जा रहे त्थे के रास्ते में एक शख़्स ने दूसरे से कहा। ये वो इमाम है जो हर रात पाँच सौ रकात नफिल पढ़ता है। हज़रत इमाम ने ये सुना तो उसी वक़्त ये नीयत कर ली के आज से पाँच सौ रकात ही नफिल पढ़ा करूंगा। ताके उसका गुमान दुरूस्त हो जाए। एक दिन आपके शार्गिदों ने आप से कहा के लोग कहते हैं के इमाम साहब रात भर इबादत करते रहते हैं और नहीं सोते। फ़रमाया आज से मैं ऐसा ही किया करूंगा। और सारी सारी रात जागा करूंगा। क्योंके खुदा तआला फ़रमाता है के जो बन्दे इस चीज़ की तारीफ को पसंद करते हैं जो उनमें नहीं है पस वो हर गिज़ अज़ाब से ना छूटेंगे लिहाज़ा आईंदा मैं सारी रात

Scanned by CamScanner

जागा करूंगा ताके इस आयत की ज़द में ना आ जाऊँ। उसके बाद आपने चालीस बरस तक इशा के वज़ू से सुबह की नमाज़ पढ़ी और आपने जिस जगह वफात पाई वहाँ आपने सात हज़ार बार क़ुरआन शरीफ ख़त्म फ़रमाया था। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 249। और जवाहर-उल-बयान फी तर्जुमत-उल-ख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 63)

सबक़:- हमारे इमाम हम्माम इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह शब बैदार इमाम थे। और अपने अल्लाह की बड़ी इबादत करने वाले और अल्लाह के बहुत बड़े मक़्बूल व मुक़र्रिब बन्दे थे। फिर जिसने कभी उमर भर वज़ू ही ना किया हो वो अगर हज़रत इमाम की शान वाला कोई गुस्ताख़ी करे तो किस क़द्र ज़ुल्म है?

हिकायत नम्बर(363) नाखुन भर मिट्टी

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह इक बार बाज़ार से गुज़र रहे थे के नाखुन भर कीचड़ उड़कर आपके लिबास पर आ पड़ा। आप उसी वक़्त दजले के किनारे गए और उस मिट्टी को खूब मल मल कर धोया। लोगों ने कहा हुज़ूर आप उसके बराबर तो निजासत को जामे पर जायज़ बताते हैं और खुद इस क़द्र मिट्टी को धोते हैं। आपने फ़रमाया। तुम सच कहते हो। मगर वो फतवा है और ये तक़वा है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 251)

सबक़:- हमारे इमाम तक़वे व परहैज़गारी के पैकर थे। फिर जिन्होंने ने कभी फतवे की भी परवाह ना की हो। वो अगर इस पैकरे तक़वा पर किसी क़िस्म का तान करें तो क्यों ना खुद ही मतऊन होंगे।

हिकायत नम्बर(364) ओहदा-ए-क़ज़ा

ख़लीफा मंसूर ने हज़रत इमाम आज़म(र०अ०) को बुलाकर कहा आप ओहदा-ए-क़ज़ा क़बूल कर लें। और मेरी ममलिक़त के आप क़ाज़ी अलक़ज़ात यानी चीफ जज बन जायें। हज़रत इमाम आज़म ने फ़रमाया। मैं इस ओहदे के क़ाबिल नहीं हूं। ख़लीफ ने कहा। आप झूट कहते हैं। आप से ज़्यादा इस ओहदे के और कौन क़ाबिल होगा। आपने फ़रमाया अगर मैं झूट बोलता हूँ तो आपने खुद ही फैसला कर दिया के मैं जज बनने के क़ाबिल नहीं हूँ इसलिए झूटा आदमी जज नहीं बन सकता ये कह कर आप वहाँ से उठकर चले गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 248)

Scanned by CamScanner

सबक़:- अल्लाह वालों में किसी दुनयवी ओहदे की लालच नहीं होती। और अगर दुनिया के पीछे भी पड़े तो वो दुनिया से हत्ता अलइमकान पीछा छुड़ाना चाहते हैं। फिर जो रूपे खर्च करके और दिन रात कोशिश कर करके किसी बड़े ओहदे पर पहुँचने की कोशिश करें। वो अगर ऐसे बड़े मुत्तक़ी इमाम की शान में गुस्ताख़ी करें तो किस क़द्र बे इंसाफी है।

हिकायत नम्बर(365) कमाल तक़्वा

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक जनाज़ा पढ़ने तशरीफ़ ले गए। धूप की बड़ी शिद्दत थी और वहाँ कोई साया ना था। साथ ही एक शख़्स का मकान था। उस मकान की दीवार का साया देखकर लोगों ने हज़रत इमाम से अर्ज़ किया के हुज़ूर! आप इस साये में खड़े हो जाइये। हज़रत ने फ़रमाया के इस मकान का जो मालिक है वो मेरा मक़रूज़ है और अगर मैंने उसकी दीवार से कुछ नफा हासिल किया तो मैं डरता हूँ के इंदल्लाह मैं कहीं सूद लेने वालों में शुमार ना हो जाऊँ। क्योंके सरवरे आलम सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया है के जिस क़र्ज़ से कुछ नफा लिया जाए वो सूद है। चुनाँचे आप धूप में ही खड़े रहे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 248)

सबक़:- मालूम हुआ के हमारे इमाम हम्माम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह में कमाल दर्जा का तक़्वा पाया जाता था। आप बड़े ही मुत्तक़ी व परहैज़गार थे और ये भी मालूम हुआ के आप हर हाल में हदीस रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को पेशे नज़र रखते थे। फिर ये कैसे कहा जा सकता है के आपने रोज़े नमाज़ वग़ैरा शरई उमूर में हदीस को मलहूज़ नहीं रखा और अपने क़यास से काम लिया।

हिकायत नम्बर(366) तासीर क़ुरआन

हज़रत यज़ीद बिन लीस जो अख़यार में से थे, फ़रमाते हैं। मैंने एक बार इशा की नमाज़ में देखा के इमाम ने सूरत *इज़ा ज़ुलज़िलातिल अर्ज़* पढ़ी और इमामे आज़म मुक़्तदी थे। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मैंने देखा के इमाम साहब मुतफक्किर बैठे हैं और ठंडी सांस ले रहे हैं। मैं वहाँ से उठ गया ताके आपका दिल मशग़ूल ना हो। और चिराग़ को रोशन ही छोड़ दिया। और उसमें थोड़ा सा तेल था। फिर तुलू फज्र के बाद मैंने देखा के चिराग़ रोशन है और इमाम साहब अपनी रेश मुबारक पकड़े हुए कह रहे हैं, ऐ वो

Scanned by CamScanner

ज़ात! के बमिक़्दार ज़र्रा ख़ैर के जज़ाऐ ख़ैर देगा और मिक़्दार ज़र्रा शर के जज़ाऐ शर देगा। नौमान को तो अपने फज़्ल से आग से बचा ले के आग के क़रीब भी ना जाए और उसको अपनी वसी रहमत में दाखिल कर ले। जब मैं अन्दर गया तो इमाम साहब ने पूछा क्या चिराग़ लेना चाहते हो? मैंने कहा के मैं तो सुबह की अज़ान भी दे चुका। फ़रमाया। जो कुछ तुम ने देखा है। उसे छुपाना। ज़ाहिर ना करना। (जवाहर-उल-बयान फी तर्जुमात-उल-ख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 68)

सबक़:- इमामे आज़म अलेह अर्रहमत जितने बड़े इमाम थे इतने ही बड़े मुत्तक़ी और आरिफ़ कामिल थे। फिर जिस पाक हस्ती के तक़्वा व परहैज़गारी और ख़ौफे खुदा का ये आलम हो कम मुमकिन है के वो किसी मसले में अल्लाह व रसूल के इर्शाद के ख़िलाफ कोई अपनी राय पेश करे।

हिकायत नम्बर(367) ख़ौफे क़यामत

एक बार हज़रत इमामे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का बे ख़बरी में एक लड़के के पाँव पर पाँव पड़ गया। लड़के ने कहा ऐ शेख! क़यामत के दिन के बदले से नहीं डरते? हज़रत इमाम ने ये सुना। तो आप पर ग़शी तारी हो गई। जब अफाक़ा हुआ तो फ़रमाया के मेरा ये खयाल है के ये कलमा उसे तलक़ीन हुआ है। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 69)

सबक़:- इमाम साहब अलेह अर्रहमत बावजूद इतने बड़े इमाम और मुत्तक़ी होने के क़यामत के बदले से डरते हैं। फिर किस क़द्र ग़फ़्लत है। हम लोगों की। के सरतापा गुनहगार होने के बावजूद क़यामत के दिन का हमें कोई अहसास ही नहीं। और इमाम साहब से बेख़बरी के आलम में एक लड़के का पाँव कुचला गया तो आप बेहोश हो गए मगर हम जान बूझ कर भी सेंकड़ों ज़ुल्म करते हैं। मगर कुछ परवाह नहीं करते।

हिकायत नम्बर(368) हमसाया-ए-मोची

हज़रत इमामे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के मोहल्ले में एक मोची रहता था जो निहायत रंगीन तबअे और खुश मिज़ाज था। उसका मामूल था के दिन भर मेहनत मज़दूरी करता। शाम को बाज़ार जाकर गोश्त और शराब मोल लाता। कुछ रात गए दोस्त व अहबाब जमा होते। खुद सीख पर कबाब लगाता। खुद खाता। यारों को खिलाता। खूब शराब का दौर चलता और मज़े में आकर शैर गाता...

Scanned by CamScanner

अज़ाऊनी वअय्या फता अज़ाऊ
लियौमा करीहतिन सिदादी सग़ीरिन

यानी लोगों ने मझ को हाथ से खो दिया। और कैसे बड़े शख़्स को खोया। जो लड़ाई और रिखना बंदी के दिन काम आता।

इमाम साहब ज़िक्र व शुग्ल की वजह से रात को बहुत कम सोते थे। रात को उसकी नग़मा सबख़ियाँ सुनते और कुछ तअर्रूज़ ना करते। एक रात ऐसा हुआ के शहर का कोतवाल इधर आ निकाला और उसका गिरफ़्तार करके ले गया। और क़ैदखाने में भेज दिया। सुबह को इमाम साहब ने दोस्तों से तज़करह किया के गुज़िश्ता रात हमारे हमसाया की आवाज़ नहीं आई। ना मालूम क्या वजह हुई। लोगों ने रात का तमाम माजरा बयान कर दिया। के वो ग़रीब तो क़ैदखाने में है। आपने उसी वक़्त सवारी तलब की और दरबार के कपड़े पहन कर दार-उल-इमारत की तरफ़ रवाना हो गए। कूफे के गवरनर को लोगों ने इत्तिला दी के इमाम अबु हनीफा आप से मिलने आए हैं। उसने ये सुनते ही आपके इसतक़बाल के लिए अपने दरबारियों को भेजा जब आपकी सवारी नज़दीक आई तो गवरनर खुद भी ताज़ीम के लिए उठा। और निहायत अदबो एहत्राम से लाकर बिठाया और अर्ज़ किया। आपने कयों तकलीफ फ़रमाई। मुझ को बुला भेजते। मैं खुद हाज़िर हो जाता। आपने फ़रमाया, हमारे मोहल्ले में एक मोची रहता था। कोतवाल ने उसको गिरफ़्तार कर लिया है मैं चाहता हूँ के वो रिहा कर दिया जाए। गवरनर ने उसी वक़्त हुक्म भेजा और वो रिहा कर दिया गया। इमाम साहब जैसे गवरनर से रूख़्सत होकर चले तो वो मोची भी हमरकाब हो गया। इमाम साहब ने उसे मुख़ातिब होकर फ़रमाया। क्यों हम ने तुम को ज़ाये तो नहीं किया। उसने अर्ज़ किया। नहीं आपने हक़ हमसायगी खूब अदा किय.! इमाम साहब के इस ख़ल्क़ व मुरव्वत का उसके दिल पर ये असर हुआ के उसने ऐश परस्ती से तौबा की और इमाम साहब के हल्क़ा दरस में बैठने लगा। रफ़्ता रफ़्ता इल्मे फिक़ा में महारत हासिल की। और फिक़िया के लक़ब से मुमताज़ हुआ। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 118, जिल्द 1)

सबक़:- इमामे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने हमसायों के एक बहुत बड़े अच्छे हमसाये थे। और मालूम हुआ के हमसायों के दुख दर्द में शरीक होना चाहिए। ओर ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमामे आज़म(र०अ०) की तवज्जह से एक अय्याश आदमी की काया पलट गई और वो इल्मो फज़्ल की दौलत से माला माल हो गया।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(369) एहसान व करम

हज़रत शफीक़ फ़रमाते हैं के मैं हज़रत इमाम आज़म के साथ जा रहा था के एक शख़्स ने आपको देखा। और छुप गया। और दूसरा रास्ता इख़्तियार किया। आपको मालूम हुआ। तो आपने उसे पुकारा। वो आया। तो आपने उससे पूछा के तुम क्यों अपनी राह से बे राह होकर चले। उसने कहा मैं आपका मक़रूज़ हूँ। दस हज़ार दरहम मैंने आपको देने हैं। जिसको काफी अर्सा गुज़र चुका है। और मैं तंग दस्त हूँ। आप से शर्माता हूँ। आपने फ़रमाया। सुबहान अल्लाह! मेरी वजह से तुम्हारी ये हालत है। जाओ मैंने सब रूपया तुम को बख़्श दिया। और मैंने अपने आपको अपने नफ़्स पर गवाह किया। अब आईंदा मुझ से ना छुपना। और जो ख़ौफ तुम्हारे दिल में मेरी वजह से पैदा हुआ। मुझे माफ कर दो। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 74)

सबक़:- हमारे इमाम हम्माम हज़रात इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह बड़े ज़ाहिद, सख़ी, मोहसिन और मख़लूक़ पर मेहरबानी फ़रमाने वाले थे। हम सबको आपके नक़्शे क़दम पर चलना चाहिए और ज़ेर दस्तों पर रहम करना चाहिए और दुनिया की मोहब्बत से दिल को खाली रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर(370) फिरासत इमाम

चन्द लड़के गेंद खेल रहे थे। इत्तिफाक़ से एक बार उनकी गेंद हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के आगे मजमअे में आकर गिरी। किसी लड़के की ये हिम्मत ना पड़ी। के गेंद वहाँ से उठा लाए। एक लड़के ने उन लड़कों में से कहा के अगर कहो तो गेंद में उठा लाऊँ? फिर इन्तिहाई गुस्ताख़ी के साथ गया। और वो गेंद जाकर उठा लाया। हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया। मालूम होता है के ये लड़का हलाली नहीं है लोगों ने दरयाफ़्त किया तो वाक़ई वो लड़का वैसा ही निकला। जैसा के हज़रत इमाम ने फ़रमाया था। लोगों ने पूछा। हुज़ूर! आपने ये कैसे जान लिया के वो लड़का हलाली नहीं है। फ़रमाया अगर वो हलाली होती तो हया उसे मानअे होती। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 248)

सबक़:- बुज़ुर्गों से हया और उनका अदब करना नेक बख़्ती और शराफत व निजाबत की अलामत है।

हिकायत नम्बर(371) मसकत जवाब

हज़रत इमाम आज़म(र०अ०) के मुख़ालिफों में से एक शख़्स ने आप से

Scanned by CamScanner

पूछा के आपका फतवा ऐसे शख़्स के बारे में क्या है? जो जन्नत का उम्मीदवार ना हो, और ना दोज़ख़ से डरता हो। ना खुदा से। और मुरदार खाता है और बे रूकू सजूद के नमाज़ पढ़ता है। और बिन देखे गवाही देता है। सच्ची बात को ना पसंद करता है। फितने को दोस्त रखता है। रहमत से भागता है। यहूद नसारा की तसदीक़ करता है।

इमाम आज़म अलेह अर्रहमत ने अपने शार्गिदों से फ़रमाया के ऐसे शख़्स के बारे में तुम क्या कहते हो? उन लोगों ने जवाब दिया। ऐसा शख़्स बहुत ही बुरा है। ये सिफात तो काफिर की हैं। आपने तबस्सुम फ़रमाया। और इर्शाद फ़रमाया नहीं बल्के ऐसा शख़्स तो अल्लाह का दोस्त! और मोमिन कामिल है। फिर आपने उस शख़्स से कहा। के अगर मैं उसका जवाब बता दूं। तो तू मेरी बदगोई से बाज़ रहेगा? उसने वादा किया के हाँ। आप ने फ़रमाया के वो रब जन्नत की उम्मीद रखता है। और रब नार से डरता है। और अल्लाह तआला से इस बात का ख़ौफ नहीं करता के वो उस पर ज़ुल्म करेगा। मुर्दा मछली खाता है जनाज़े की नमाज़ पढ़ता है। नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर दुरूद पढ़ता है। और अन देखी बात पर गवाही देने के ये मानी हैं के वो अल्लाह को बिन देखे उसकी गवाही देता है। और वो मौत को ना पसंद करता है। जो हक़ है। ताके ज़िन्दा रह कर अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करे। और माल व औलाद फितना जिसको दोस्त रखता है और वो रहमत जिससे भागता है, बारिश है। और यहूद की इस बात में तसदीक़ करता है *लैसत-उल-नसारा अला शेइन* और नसारा की इस बात में तसदीक़ करता है *लैसत-उल-यहूद अला शेइन* जब इस शख़्स ने ये पुर मग़्ज़ और मसकत जवाब सुना तो खड़ा हुआ। और हज़रत इमाम साहब के सर मुबारक का बोसा दिया। और कहा के मैं क़सम खा के गवाही देता हूँ के आप हक़ पर हैं। (जवाहर-उल-बयान फी तर्जुमत-उल-ख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 48)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह को खुदा तआला ने दीन की ऐसी समझ अता फ़रमाई थी के बड़े बड़े मुश्किल मसायल जिनको कोई हल नहीं कर सकता था आप पल भर में हल कर लेते थे और आपकी इस *तफक़्क़ा फिद्दीन* का लोहा अग़्यार भी मानते थे।

हिकायत नम्बर(372) ज़बरदस्त फ़रैब

हमारे इमाम हम्मा हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

Scanned by CamScanner

के बाज़ हासिदों ने एक औरत को फिसला कर इस बात पर राज़ी कर लिया के वो किसी तरीक़ा से हज़रत इमाम आज़म पर तोहमत लगाए। चुनाँचे वो औरत एक रात इमाम साहब के पास आई और कहने लगी के मेरा ख़ाविंद सख़्त बीमार है और वो आपके रूबरू कुछ वसीयत करना चाहता है। आप मेरे साथ मेरे घर चलिए। इमाम साहब चल पड़े। आप जब उसके घर पहुँचे तो उसने सब दरवाज़े बन्द कर लिए और शौर मचाना शुरू कर दिया के अबु हनीफा ने तनहाई में मुझे सताया है (मआज़ अल्लाह) ये सुनकर हासिदैन इमाम फौरन वहाँ पहुँच गए। और इमाम साहब और उस औरत को ख़लीफा के पास ले गए। ख़लीफा ने इमाम साहब और उस औरत को जेल में बन्द कर दिया और कहा के सुबह फैसला किया जाएगा। इमाम आज़म सारी रात जेल में नफिल पढ़ते रहे। वो औरत ये देखकर बड़ी शर्मिंदा हुई और इमाम साहब के क़दमों में गिर गई और असल वाक़ेया अर्ज़ करके माफी मांगने लगी। इमाम साहब ने फ़रमाया। अब तुम यूं करो के दारोग़ा जेल से किसी बहाने इजाज़त लेकर बाहर निकलो और सीधी मेरे घर जाओ और उम्मे हम्माद (ज़ोजा इमाम) को सारा क़िस्सा सुनाओ। और अपनी जगह उसे यहाँ भेज दो। चुनाँचे वो औरत उठी और दारोग़ा जेल से किसी बहाने इजाज़त लेकर बाहर निकली और दिन चढ़ने से पहले ही हज़रत इमाम की ज़ोजा को जेल में भेज दिया। सुबह हुई तो इमाम साहब के जुमला हासिद अदालत में पहुँच गए। ख़लीफा के हुक्म से इमाम साहब और औरत को बुलाया गया और ख़लीफा ने इमाम साहब से कहा।

ख़लीफा:- ऐ अबु हनीफा! कया आपको एक अजनबीया औरत से बन्द मकान में खलवत जायज़ थी?

इमाम आज़म:- किस औरत के साथ?

ख़लीफा:- ये जो सामने बैठी है।

इमाम आज़म:- उम्मे हम्माद के वालिद को बुलाया जाए (चुनाँचे इमाम साहब के खुस्र को बुलाया गया।)

इमाम आज़म:- (वालिद उम्मे हम्माद की तरफ़ मुख़ातिब होकर) जनाब ज़रा इस औरत का घूंघट उठा कर पहचानिए के ये औरत कौन है?

वालिद हम्माद:- (घूंघट उठा कर देखते ही) ऐ ख़लीफा ये तो मेरी बेटी है। जिसका निकाह अबु हनीफा से हो चुका है। फिर ये हंगामा कैसा?

ये बात सुनते ही हासिदैन इमाम धर लिए गए और सख़्त ज़लील हुए

Scanned by CamScanner

और हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की इज़्ज़त व अज़मत के नारे बुलंद हुए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 83)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हासिद पहले भी थे। और अब भी हैं। और वो नाकाम पहले भी होते रहे और अब भी होते हैं।

हिकायत नम्बर(373) इमाम मालिक व इमाम आज़म का मुकालमा

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक दिन हज़रत इमाम मालिक रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दर्स में तशरीफ़ ले गए। मगर हज़रत इमाम मालिक ने आपको पहचाना नहीं। और अपने असहाब के सामने एक मसले पेश किया। जिसका हज़रत इमाम आज़म ने बड़ी मुतानत के साथ जवाब दे दिया। हज़रत इमाम मालिक रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आँख उठा कर आपकी तरफ़ देखा और फ़रमाया। ये शख़्स कहाँ से आया है? हज़रत इमाम आज़म ने खुद ही फ़रमाया जनाब मैं इराक़ से आया हूँ। इमाम मालिक न फ़रमाया। निफाक़ व शिक़ाक़ के शहर वालों में से? इमाम आज़म ने फ़रमाया। क्या मुझे इजाज़त है के क़ुरआन मजीद से कुछ पढ़ूं? फ़रमाया हाँ! हाँ!! ज़रूर पढ़ो। हज़रत इमाम आज़म ने ये आयत पढ़ी।

व मिम्मन होलाकुम् मिनल आराबी मुनाफिक़ूना व मिन अहलिल इराक़ी मराज़ू अलान्निफाक़ी हज़रत इमाम आज़म ने अहले अलमदीना की जगह अहले अलइरारक़ दानिसता पढ़ा और उससे आपकी ग़र्ज़ इमामे मालिक पर इलज़ाम क़ायम करना था। इमाम मालिक ये सुन कर झट बोल उठे। के क़ुरआन में यूं तो नहीं आया। इमाम साहब ने फ़रमाया। फिर किस तरह आया है? फ़रमाया। असल आयत यूं है *अहलिल मदीनातिल मराज़ू अलान्निफाक़ी* इमाम आज़म ने फ़रमाया। खुदा का शुक्र है के उसने आप पर खुद इसी बात का हुक्म फ़रमाया जिसकी निसबत मेरी तरफ़ की गई थी। ये कहकर आप झट पट इस मजलिस से निकल आए। इमाम मालिक को जब ये मालूम हुआ के वो इमाम अबु हनीफा थे तो आपने उन्हें बुलाया और बड़ी इज़्ज़त व तकरीम से पेश आए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 137, जिल्द 2)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह को अल्लाह तआला

Scanned by CamScanner

ने हाज़िर जवाबी का एक ख़ास मल्का अता फ़रमाया था। और बड़े बडे मोहद्दिस व इमाम भी आपकी इज़्ज़त करते थे।

हिकायत नम्बर(374) दुल्हनों की तबदीली

एक शख़्स ने अपने दो बेटों का निकाह दूसरे शख़्स की दो बेटियों से किया। और दूसरे रोज़ दावत वलीमा में उलमा को भी मदऊ किया। हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी तशरीफ़ ले गए। उन बेटों का बाप बड़ी परेशानी के आलम में मकान से बाहर निकला और अर्ज़ करने लगा। हम लोग बड़ी मुसीबत में पड़ गए। रात ग़ल्ती से दुल्हनें बदल गईं। बड़े की दुल्हन छोटे के कमरे में और छोटे की बड़े के कमरे में ग़ल्ती से चली गई। सुबह हुई तो इस ग़ल्ती का इल्म हुआ। फ़रमाइये अब क्या हो? हज़रत सफयान ने कहा। कोई मुज़ायक़ा नहीं। ये वती बिलशुबह है। दोनों भाईयों पर सोहबत की वजह से मेहर वाजिब हो गया और आज दोनों बहनें अपने अपने शौहरों के पास चली जायें। हज़रत इमाम साहब ख़ामोश थे। मसअर ने आप से कहा। आप फ़रमाईये। सफ़्यान ने कहा। इसके सिवा और क्या कहेंगे। हज़रत इमाम साहब ने फ़रमाया के मेरे पास दोनों लड़कों को लाओ। चुनाँचे दोनों लड़के लाए गए। आपने हर एक से पूछा। के रात तुम जिस औरत के पास रहे हो तुम को पसंद है। दोनों ने कहा हाँ। आपने फ़रमाया। तुम दोनों अपनी अपनी बीवियों को तलाक़ दो। और जिसके पास जो औरत सोई है वो उसी के साथ शादी कर ले। चुनाँचे उसी जगह उन दोनों ने अपनी अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी और चूंके अपनी बीवी से किसी ने भी सोहबत ना की थी इसलिए इद्दत तो उन पर वाजिब ही ना थी। इसलिए वहीं उनका निकाह भी हो गया। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 86)

सबक़:- हमारे इमम हम्माम की दानाई और दूरबीनी क़ाबिले दाद है। ग़ौर फ़रमाइये के इस मुश्किल सूरते हाल को आपने किस खुश असलूबी से सुलझाया। आपकी यही वो फिक़ह व दानाई है जिसकी बदौलत आपने अल्लाह व रसूल के इर्शादात के मुताबिक़ मसायल शरीया को मुदव्वन फ़रमाया। और आज हम आपकी खुदाद समझ की बदौलत हज़ारों मुश्किल मसायल का हल कुतब फिक़ह में पा लेते हैं फिर किस क़द्र अफसोस है इस शख़्स पर जो बजाए ममनून होने के हज़रत पर ज़बान तान दराज़ करता है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(375) रोशन दान

क़ाज़ी इब्ने अबी यअला की अदालत में एक शख़्स ने दरख़्वास्त दी। के अपनी दीवार में एक रोशनदान बनाना चाहता हूँ लेकिन मेरा पड़ोसी मुझे रोकता है। पड़ोसी को बुलाकर क़ाज़ी साहब ने जब उसकी वजह दरयाफ़्त की तो उसने कुछ ऐसी वजूहात पेश कीं। जिनकी बिना पर क़ाज़ी साहब ने रोशनदान बनाने की इजाज़त ना दी। और फैसला मुद्दा अलिया के हक़ में दे दिया।

हज़रत इमाम को जब ये ख़बर हुई तो आपने उस आदमी से फ़रमाया के अब तुम अपनी दीवार गिरानी की दरख़्वास्त करो। और जिस दीवार में रोशनदान बनाना चाहते हो। उसी को गिरा दो। उस शख़्स ने यही दरख़्वास्त दी। चूंके हर शख़्स को अपनी दीवार गिराने का हक़ है। इसलिए क़ाज़ी साहब ने दीवार गिराने की इजाज़त दे दी। इस शख़्स ने इस इजाज़त के बाद दीवार गिराने का एलान कर दिया।

इस एलान को सुनकर पड़ोसी घबराया हुआ क़ाज़ी साहब के पास आया। और कहा के जनाब अब तो वो दीवार गिरा रहा है। इसलिए उसे रोशनदान बनाने की इजाज़त दे दीजिए के मेरे लिए ये उससे ज़्यादा आसान है। क़ाज़ी साहब समझ गए और खुशी से रोशनदान बनाने की इजाज़त दे दी। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 88)

सबक़:- हमारे इमाम हम्मा मरजअे ख़लायक थे और जो भी आता था अपनी मुराद पा लेता था। और आप बेहतरीन तदबीर व हिकमत के मालिक थे।

हिकायत नम्बर(376) तदबीर व हिकमत

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पड़ोस में एक जवान रहता था। उसने हज़रत इमाम साहब से एक रोज़ अर्ज़ किया। हुज़ूर मैं जहाँ शादी करना चाहता हूँ। वो लोग मेरी मुलाक़ात से ज़्यादा मेहर तलब करते हैं। फ़रमाइये मैं क्या करूं? आपने इसतख़ारा किया। और उसे वहाँ शादी करने की इजाज़त दे दी। चुनाँचे उस शख़्स ने शादी कर ली। उसके बाद लड़की वालों ने कुल मेहर अदा किए बग़ैर लड़की रूख़सत करने से इंकार कर दिया। इमाम साहब ने फ़रमाया। तुम किसी से क़र्ज़ हासिल करो। और मेहर अदा कर दो। चुनाँचे उसने कुछ लोगों से क़र्ज़ लिया। मिनजुमला

Scanned by CamScanner

और क़र्ज़ देने वालों के आप ने भी उसको क़र्ज़ दिया। और उसने मेहर अदा कर दिया। और उन्होंने लड़की की रूख़्सती कर दी। दूसरे रोज़ आपने उससे फ़रमाया। के अब तुम अपने सुसराल वालों से अपना इरादा ज़ाहिर करो के मैं अपनी बीवी को लेकर एक दूरदराज़ जगह जाना चाहता हूँ। चुनाँचे उसने ऐसा ही किया। उसके सुसराल वालों ने ये सुना तो बहुत परेशान हुए और हज़रत इमाम साहब के पास हाज़िर हुए। और उस शख़्स की शिकायत की। और उस बारे में फतवा चाहा। आपने फ़रमाया के शौहर को इख़्तियार है के जहाँ चाहे अपनी बीवी को ले जाए। उन लोगों ने कहा। मगर हम से ये नहीं हो सकता के लड़की हम से जुदा हो जाए। आपने फ़रमाया। तो तुम ने जो कुछ उससे लिया है वो उसे वापस करके उसको राज़ी कर लो। वो लोग इस पर राज़ी हो गए। आपने अपने पड़ोसी जवान को बुलाया। और फ़रमाया के ये लोग इस बात पर राज़ी हैं के जो उन्होंने मेहर तुम से लिया है तुम को वापस कर दें और तुम अपने इरादे को तर्क कर दो। वो शख़्स मौक़े से नाजायज़ फायदा उठाने के लिए बोला मैं तो उससे ज़्यादा लूंगा। इमाम साहब ने जो सुना तो उससे फ़रमाया ये बात मंज़ूर करते हो। या किसी क़र्ज़ ख़्वाह का तुम पर ये दावा। के उसने मेरा क़र्ज़ देना है। और तुम जब तक उसका क़र्ज़ अदा ना कर लो बाहर जा ही ना सको। ये मंज़ूर करते हो? उसने अर्ज़ किया। खुदा के वास्ते हुज़ूर! इस बात का ज़िक्र भी ना फ़रमाइये। वरना वो लोग सुन पायेंगे तो मुझे कुछ भी ना देंगे। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 9 और लतायफ इलमिया किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 143)

सबक:- हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बहुत बड़े मुदब्बिर और हकीम थे। और आपके नाख़ुन तदबीर से कई उक़्दे हल हुए। ये भी मालूम हुआ के मेहर शौहर की ताक़त से ज़्यादा मुक़र्रर ना करना चाहिए। उससे कई क़िस्म की क़बाहतें पैदा जो जाती हैं।

हिकायत नम्बर(377) गुमशुदा ख़ज़ाना

इमाम आज़म अलेह अर्रहमत के ज़माने में एक शख़्स अपना कुछ माल ज़मन में दफ़्न करके भूल गया। और इमाम साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और वाक़ेया अर्ज़ किया। हज़रत इमाम साहब ने फ़रमाया। जाओ। आज तुम सारी रात नमाज़ पढ़ते रहो। तुम्हें याद आ जाएगा के माल तुम ने कहाँ दबाया है। चुनाँचे वो शख़्स गया। और रात को उसने नमाज़ पढ़ना शुरू की अभी चन्द रकात ही पढ़ी थीं के उसे याद आ गया के माल कहाँ दबाया

Scanned by CamScanner

है। बड़ा खुश हुआ और सुबह इमाम साहब की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा के हुज़ूर! आपने ये तदबीर कैसे इर्शाद फ़रमाई? फ़रमाया। मुझे मालूम था के शैतान तुझे रात भर नमाज़ ना पढ़ने देगा। और तुझे तेरा माल याद दिला देगा। ताके तू नमाज़ छोड़ दे। अफसोस के तूने शुक्रिया में रात भर नमाज़ क्यों ना पढ़ी? (लतायफ इलमिया किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 144, जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 96)

सबक़: इंसान मुश्किल के वक़्त खुदा याद भी बन जाता है। मगर मुश्किल टल जाने के बाद फिर वही बेढंगी चाल इख़्तियार कर लेता है और ये बात बड़ी अफसोसनाक है ऐसा नहीं होना चाहिए।

हिकायत नम्बर(378) दामाद

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के ज़माने में एक शख़्स अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाो तआला अन्ह से बड़ी दुश्मनी रखता था। हत्ता के हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को (मआज़ अल्लाह) यहूदी कहता था। हज़रत इमाम साहब को इस बात का इल्म हुआ तो आपने उसे बुलाया। और उससे फ़रमाया के मैंने तुम्हारी लड़की के लिए एक मुनासिब रिश्ता तलाश किया है। लड़के में हर क़िस्म की खूबी मौजूद है। सिर्फ इतनी सी बात है के वो लड़का यहूदी है। उस शख़्स ने जवाब दिया। के बड़े अफसोस की बात है के आप इतने बड़े इमाम होकर एक मुसलमान लड़की का निकाह ये यहूदी से जायज़ समझते हैं। मैं तो हरगिज़ इस निकाह को जायज़ नहीं समझता। हज़रत इमाम ने फ़रमाया सुबहान अल्लाह! तुम्हारे जायज़ ना समझने से ऐसा है। जब के खुद हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपनी दो साहबज़ादियों का निकाह एक यहूदी से कर दिया था। वो शख़्स फौरन समझ गया के हज़रत इमाम किस बात की हिदायत फ़रमा रहे हैं चुनाँचे उस वक़्त उसने हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ज़ाते पाक के मुतअल्लिक़ खयाल बातिल से तौबा की। और हज़रत इमाम आज़म की बर्कतों से माला माल हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 250)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म बहुत बड़े इमाम और हादी थे और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की शान में कोई गुसताखी दरअसल हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(379) मियाँ बीवी

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के ज़माने में एक मियाँ बीवी में किसी बात पर रंजिश पैदा हुई। तो मियाँ ने गुस्से में कह दिया के मैं तुम से कलाम ना करूंगा। जब तक तू मुझ से पहले कलाम ना करे। बीवी ने भी क़सम खा ली और कहा के खुदा की क़सम मैं भी तुम से कभी कलाम ना करूंगी जब तक तू मुझ से पहले कलाम ना करे। उसके बाद दोनों ने एक दूसरे को बुलाना छोड़ दिया। और बड़ी मुश्किल में पड़ गए। आख़िर मियाँ एक दिन इमाम आज़म के पास हाज़िर हुआ। और सारा वाक़ेया सुनाया। इमाम साहब ने वाक़ेया सुनकर फ़रमाया के जाओ एक दूसरे को राज़ी खुशी बुलाओ। तुम में से कोई हानिस ना होगा। इसलिए के जब तुम ने ये कहा था के मैं तुम से कलाम ना करूंगा। जब तक तू मुझ से कलाम ना करे। तो उसके बाद अगर औरत ख़ामोश रहती तो बेशक तुम हानिस होते। मगर जब उसने ये कहा के खुदा की क़सम मैं भी तुम से कलाम ना करूंगी। जब तक तू मुझ से कलाम ना करे। तो उसने तुम्हारी क़सम के बाद तो तुम से कलाम कर लिया। लिहाज़ा अब तुम उसे बुला सकते हो। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 95)

सबक़:- इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का दिमाग़ वहाँ पहुँचता था जहाँ बड़े बड़े मोहद्दिसों का दिमाग़ भी नहीं पहुँचता।

हिकायत नम्बर(380) चोरों का सुराग़

एक शख़्स के घर में चोर घुस आए। घर वाले की आँख खुल गई और उसने चोरों को देख लिया। चोरों ने इस डर से के ये कहीं सुबह पकड़वा दे। उसे दबोच लिया। और उससे कहा के तुम यूं कहो के अगर मैंने किसी को बताया के ये लोग मे मेरे चोर हैं तो मेरी बीवी पर तीन तलाक़। घर वाला बेचारा मजबूर था। उसने ये हलफ उठा लिया और कह दिया के अगर मैं किसी को बताऊँ के ये लोग मेरे चोर हैं। तो मेरी बीवी पर तीन तलाक़ चोर ये कहलवा कर उसका माल व असबाब ले गए। अब सुबह हुई तो वो शख़्स चोरों को देखता रहा। मगर हलफ बिलतलाक़ की वजह से बोल ना सकता था। आख़िर वो हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास आया। और पूरा वाक़ेया अर्ज़ करके कहने लगा के हुज़ूर! चोरों को मैं भी अच्छी तरह पहचानता हूँ। मगर वो ज़ालिम मुझ से ये क़सम ले चुके हैं। के अगर मैं किसी को बताऊँ के ये लोग मेरे चोर हैं। तो मेरी बीवी पर तीन

Scanned by CamScanner

तलाक़। आपने मोहल्ले के मोअज़्ज़िज़ और ज़ी जाह लोगों को जमा किया और उनसे फ़रमाया के इस बेचारे के मामले में मदद करो और शहर के जितने बदचलन और मुतहिम लोग हैं। उनको एक हवेली में जमा करो। चुनाँचे उन लोगों ने शहर के जिस क़द्र बदचलन लोग थे। उन सब को एक हवेली में जमा किया। और फिर हज़रत इमाम ने उस शख़्स से जिसके घर चोरी हुई थी फ़रमाया के तुम हमारे साथ दरवाज़े पर खड़े हो जाओ। हम एक एक शख़्स को बाहर करते जायेंगे। और तुम से पूछते जायेंगे के क्या ये है तुम्हारा चोर? अगर वो चोर ना हो तुम "नहीं" कहते रहना। और अगर चोर हो तो चुप हो जाना। कुछ मत बताना। क्योंके तुम्हारी क़सम ये है के अगर मैं बताऊँ के ये लोग मेरे चोर हैं तो मेरी बीवी पर तीन तलाक़। उस शख़्स ने कहा। बहुत अच्छा। चुनाँचे हवेली में से एक एक शख़्स को निकाला जाने लगा और हर शख़्स के मुतअल्लिक़ उससे पूछा जाने लगा के क्या ये है तुम्हारा चोर? तो वो सबके मुतअल्लिक़ "नहीं" कहता रहा। और जब उसका चोर आ जाता तो वो चुप कर जाता। और लोग उसे पकड़ लेते। इस तरह सारे चोर पकड़े गए और वो शख़्स तलाक़ की मुश्किल से भी बच गया। (लतायफ इलमिया किताब-उल-अज़किया, इमाम इब्ने जोज़ी, सफ़ा 138)

सबक़:- हमारे इमाम हम्माम को अल्लाह ने दीन व दुनिया की बेहतरीन समझ अता फ़रमाई थी। और आप मुश्किल से मुश्किल गुथ्थी पल भर में सुलझा लेते थे।

हिकायत नम्बर(381) चाह किनारा चाह दुरवैश

ख़लीफा मनसूर का हाजिब रबीअ हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का बड़ा दुश्मन था। एक रोज़ हज़रत इमाम आज़म को ख़लीफा ने बुलाया और आप तशरीफ़ ले गए तो रबीअ ने ख़लीफा से कहा के ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! ये अबु हनीफा आपके दादा हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की मुख़ालफत करते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास का ये क़ौल था के किसी मामले में हलफ करने वाला अगर इस हलफ से एक या दो दिन बाद भी इंशा अल्लाह कह दे। तो वो हलफ क़ायम नहीं रहता। और इमाम आज़म का ये क़ौल है के हलफ के साथ मुतासल्लन ही इंशाअल्लाह कहे। तो हलफ पर असर अंदाज़ होगा। बाद में मोतबिर ना होगा। इमाम आज़म ने फ़रमाया। ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! रबीअ ये चाहता है के आपके लश्कर की गर्दन को आपकी बैत व इताअत से आज़ाद कर दे। मनसूर ने

Scanned by CamScanner

पूछा। ये कैसे? आपने फ़रमाया के लोग आपके सामने तो हलफ उठा जायेंगे के हम आपकी इताअत करेंगे। और घर जाकर इंशा अल्लाह कह देंगे। और आपकी इताअत से आज़ाद हो जायेंगे। मनसूर सुनकर हंसने लगा और रबीअ से कहा। ऐ रबीअ! अबु हनीफा को कभी ना छेड़ना। फिर जब इमाम साहब बाहर आए तो रबीअ ने आपसे कहा। आज तो आप मुझे मरवाने ही लगे थे। आपने फ़रमाया इब्तिदा तो तुम ही ने की थी। (लतायफ इलमिया किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 140, अलख़ैरात-उल-हस्सान, सफ़ा 101)

सबक:- हमारे इमाम के बड़े बड़े दुश्मन थे। और आपके साथ दुश्मनी के मुज़ाहरे करते थे। मगर हज़रत इमाम साहब अपनी खुदादाद क़ाबलियत से उनकी दुश्मनी का असर उन्हीं पर लौटा देते थे।

हिकायत नम्बर(382) तूसा का जवाब

अबु जाफर मनसूर के दरबार में हज़रत इमाम को ग़ैर मामूली एज़ाज़ हासिल था। इस सबब से मनसूर के हाशिया नशीन हज़रत इमाम साहब से सख़्त बुग्ज़ रखते थे। और इसी जज़्बे के मातेहत एक दिन अबु अलअब्बास तूसा ने दरबार में हज़रत इमाम से सवाल किया। के अबु हनीफा! बताइये के अगर अमीर-उल-मोमिनीन हम में से किसी को हुक्म दें के फलाँ आदमी की गर्दन मार दो और उसके क़सूर और जुर्म से हम लोग बिलकुल बे ख़बर हैं तो ऐसी सूरत में गर्दन मारनी जायज़ होगी या नहीं?

हज़रत इमाम बरजस्ता फ़रमाया के मैं तुम से पूछता हूँ के अमीर-उल-मोमिनीन सही हुक्म देते हैं या ग़लत?

तूसा ने कहा। भला अमीर-उल-मामिनीन ग़लत हुक्म क्यों कर दे सकते हैं।

इमाम ने फ़रमाया। फिर सही हुक्म की तामील में तरद्दुद कैसा? बेचारे तूसा इस जवाब से अपना सा मुंह लेकर रह गए। (अलख़ैरात-उल-हस्सान, सफ़ा 101)

सबक:- अल्लाह वालों के हासिद चाहते हैं के अल्लाह वालों की इज़्ज़त घटे। मगर वो अल्लाह वालों का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इसी तरह हमारे इमाम के हासिदैन ने बड़ी बड़ी चालें चलीं। मगर हमारे इमाम का कोई ना बिगाड़ सका।

हिकायत नम्बर(383) मोर का चोर

इमाम आज़म अलेह अर्रहमत के एक पड़ोसी का मोर किसी ने चुरा

Scanned by CamScanner

लिया। वो हज़रत इमाम के पास आया। और मोर की चोरी का ज़िक्र किया। आपने फ़रमाया चुप रहो। फिर मस्जिद में तशरीफ़ लाए। जब सब लोग नमाज़ के लिए जमा हुए तो आप ने फ़रमाया। क्या वो शख़्स जो अपने पड़ोसी का मोर चुराता है। शर्माता नहीं। के मोर चुराता है और फिर आकर नमाज़ इस हाल में पढ़ता है के उसके सर मोर के पर का असर होता है। ये सुनते ही एक शख़्स ने अपना सर छुपाया। आपने फ़रमाया। तू ही मोर का चोर है। उसे उसका मोर दे दे। उसने उसी वक़्त मोर ला दिया। (अलख़ैरात-उल-हस्सान, सफ़ा 102)

सबक़:- हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक बहुत बड़े सियासत व हिकमत के भी मालिक थे।

हिकायत नम्बर(384) आटा

हज़रत अेमश रहमत-उल्लाह अलेह एक बहुत बड़े मोहद्दिस थे। और इमाम आज़म रहमत-उल्लाह अलेह के हम अस्र। हज़रत अेमश का एक रोज़ अपनी बीवी से झगड़ा हो गया। आप बड़े तेज़ मिज़ाज थे। आपने तेज़ मिज़ाजी में अपनी बीवी से ये कह दिया के तुम ने अगर मुझे घर में आटा ख़त्म हो जाने की ज़बानी ख़बर दी। या लिख कर बताया। या पैग़ाम भेजा। या दूसरे शख़्स से इस बात का ज़िक्र किया। ताके वो मुझ से ज़िक्र करे। या उसके बारे में इशारा किया तो तुझ पर तलाक़! आपकी बीवी इस मामले में बड़ी हैरान हुई। तो किसी ने उनसे कहा। के इमाम अबु हनीफा की ख़िदमत में हाज़िर होकर कोई हल दरयाफ़्त कीजिए। चुनाँचे हज़रत अेमश की बीवी हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास आई। और सारा वाक़ेया अर्ज़ किया। इमाम साहब ने फ़रमाया। के जब आटे का चर्मी थेला खाली हो जाए तो उस चर्मी थेले को उनके सोते हुए उनके कपड़ों से बाँध देना। जब बैदार होंगे और उसे देखेंगे तो आटे का ख़त्म हो जाना उनको मालूम हो जाएगा। उन्होंने ऐसा ही किया। तो हज़रत अेमश आटे के ख़त्म हो जाने को समझ गए। और कहने लगे। खुदा की क़सम ये हज़रत इमाम अबु हनीफा के हीलों में से है। आप ज़िंदा हैं। तो हम कैसे फलाह पायेंगे। आप तो हमारी औरतों के सामने हम को रूसवा करते हैं। के उनको हमारा आजिज़ होना और हमारी समझ का ज़ौफ दिखाते हैं। (जवाहर-उल-बयान फी तर्जुमात-उल-ख़ैरात अलहस्सान., सफ़ा 102)

सबक़:- हमारे इमाम हम्मा इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला

Scanned by CamScanner

अन्ह के इल्मी व फ़िक़ही शिकवा और दबदबे का एत्राफ बड़े बड़े मोहद्दिसों को भी था।

हिकायत नम्बर(385) पियाले का पानी

इमाम आज़म अलेह अर्रहमत के ज़माने में एक शख़्स ने अपनी बीवी से पानी मांगा। वो पियाले में पानी लाई। अभी वो ला ही रही थी के किसी बात पर रंजीदा होकर ख़ाविंद ने कहा। के मैं ये पानी ना पियूंगा। और अगर तू इस पानी को खुद भी पिये तो तुझ पर तलाक़। और अगर उसे किसी दूसरे को पीने के लिए दे तो भी तुझ पर तलाक़। और अगर उसे बहा दे तो भी तुझ पर तलाक़। वो औरत बेचारी बड़ी हैरान हुई। एक शख़्स हज़रत इमाम साहब के पास आया और ये सूरत बयान की। आपने फ़रमाया। फौरन जाओ और उस पियाले में कोई कपड़ा डाल कर पानी को उस कपड़े में जज़्ब करके उसे धूप में सुखा दो इस तरह तलाक़ ना पड़ेगी। (अलख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 104)

सबक़:- परवरदिगारे आलम ने हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को अपने फज़्लो करम से एक ख़ास समझ अता फ़रमाई थी। जिसकी बदौलत आप ऐसे ऐसे मसायल को जिनकी तेह तक आज कोई बड़े से बड़ा फलसफी भी नहीं पहुँच सकता। पल भर में हल फ़रमा लेते थे। फिर अगर कोई शख़्स जिसे "दो दूनी चार" भी ना आता हो। हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के इल्मो फज़्ल पर एत्राज़ करे तो किस क़द्र अफसोस का मुक़ाम है?

हिकायत नम्बर(386) मुर्ग़ी का अंडा

इमाम आज़म अलेह अर्रहमत के ज़माने में एक शख़्स ने क़सम खाई के अंडा ना खाऊँगा। फिर क़सम खाई के मेरे दोसत की आसतीन में जो चीज़ है वो ज़रूर खाऊँगा। और दोस्त ने आसतीन से जब वो चीज़ निकाली तो वो अंडा ही था। अब वो हैरान हुआ और हज़रत इमाम साहब के पास आया। इमाम साहब ने फ़रमाया। ये अंडा किसी मुर्ग़ी के नीचे रख दो। जब बच्चा हो जाए तो वो बच्चा पका कर खा लो। क़सम ना टूटेगी। (अलख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 105)

सबक़:- हज़रत इमाम आज़म की हर बात सुनकर इल्मी इनबिसात पैदा होता है और अक़्ले सलीम का मालिक पुकार उठता है के इमाम आज़म वाक़ई इमाम आज़म हैं। रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(387) अंगूठी का नक़्श

एक शख़्स के पास एक अंगूठी का नगीना था। जिस पर किसी दूसरे शख़्स का नाम "अता बिन अब्दुल्लाह" नक़्श था। वो सारा नाम इस पर से मिटाना सख़्त मुश्किल था। उसने हज़रत इमाम साहब से मशवरा लिया तो आपने फ़रमाया। तुम "बिन" का सर गोल बना दो और "बे" के नुक़्ते को ज़ेर बना लो। और अब्दुल्लाह का नुक़्ता नीचे से ऊपर ले आओ। तो "अता मिन इंदल्लाह" हो जाएगा। (अलख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 26)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का इल्म व फज़्ल भी "अता मिन इंदल्लाह" था और आप से किसी क़िस्म की पर खाश रखना खुदा की नाराज़गी का मौजिब है।

हिकायत नम्बर(388) ग़लत परोपागंडा

एक दफा हज़रत इमाम साहब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मदीने मुनव्वरह हाज़िर हुए तो हज़रत अली मुर्तज़ा करमल्लाहो वज्ह के पोते हज़रत मोहम्मद हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत मोहम्मद हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया। आप ही वो इमाम हैं जिनके मुतअल्लिक़ मैंने सुना है के वो मेरे जद्दे अमजद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की हदीस की अपने क़यास के साथ मुख़ालफत करते हैं। इमाम आज़म अलेह अरर्हमत ने फ़रमाया मआज़ अल्लाह! ये कैसे हो सकता है। आप तशरीफ़ रखें। इसलिए के आपके लिए अज़मत व तौक़ीर है। जिस तरह आपके जद्दे अमजद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए अज़मत व तौक़ीर है। हज़रत मोहम्मद बिन हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तशरीफ़ फ़रमा हुए। इमाम आज़म ने फ़रमाया। फ़रमाइये! मर्द ज़ईफ या औरत! उन्होंने फ़रमाया औरत! फ़रमाया औरत का हिस्सा किस क़द्र है? उन्होंने फ़रमाया। मर्द के हिस्से का आधा। इमाम साहब ने फ़रमाया अगर मैं क़यास को तरजीह देता तो उसके बरअक्स हुक्म देता। और यूं कहता के मर्द चूंके क़ौमी है इसलिए उसका हिस्सा कम हो और जो ज़ईफ है उसका हिस्सा ज़्यादा हो।

फिर पूछा! नमाज़ अफ़्ज़ल है या रोज़ा? उन्होंने फ़रमाया। नमाज़! फ़रमाया! नमाज़! फ़रमाया और हायज़ा औरत जब पाक हो जाए तो वो नमाज़ें क़ज़ा पढ़ेगी। या क़ज़ा रोज़े रखेगी? उन्होंने फ़रमाया। रोज़ों की क़ज़ा

Scanned by CamScanner

करेगी। आपने फ़रमाया। अगर मैं क़यास से काम लेता तो हायज़ा औरत को नमाज़ की क़ज़ा का हुक्म देता ना के रोज़े का।

फिर आपने पूछा। के फ़रमाइये पैशाब ज़्यादा नजिस है या मनी? उन्होंने फ़रमाया। पैशाब! आपने फ़रमाया। अगर मैं क़यास को मुक़द्दम करता तो पैशाब निकलने से ग़ुस्ल वाजिब बताता। ना के मनी निकलने से।

हज़रत इमाम मौहम्मद बिन हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आपकी पैशानी चूम ली और फ़रमाया मालूम हो गया के आपके मुतअल्लिक़ ग़लत खयाल फैलाया गया है। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 106)

सबक़:- मालूम हुआ के जो लोग ये कहते हैं के इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हदीस के मुक़ाबले में राय पर चलते और चलाते हैं और हदीस पर क़यास को तरजीह देते हैं वो बिलकुल ग़लत कहते हैं। और ये मुख़ालफीन का महज़ एक ग़लत परोपागंडा है। वरना हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का हर इर्शाद क़ुरआन व हदीस के पेशे नज़र। और आपका हर मसला क़ुरआन व हदीस ही से मुसतनबित है।

हिकायत नम्बर(389) दीनारों भरी थेली

एक शख़्स मरने लगा। तो उसने अपने एक दोस्त को बुलाया। और एक थेली उसके सपुर्द की। जिसमें हज़ार दीनार थे। और कहा के मेरा लड़का जब बड़ा हो जाए तो इस थेली से "जो तू पसंद करे" उसे दे देना। ये कह कर वो मर गया और जब उसका लड़का बड़ा हुआ तो उस शख़्स ने उसे ख़ाली थेली दे दी और हज़ार दीनार खुद रख लिए। लड़का हज़रत इमाम आज़म अलेह अर्रहमत के पास पहुँचा और सारा वाक़ेया सुनाया। आपने उस शख़्स को बुलाया। और फ़रमाया के हज़ार दीनार इसके हवाले कर दो। इसलिए के उसके वालिद ने मरते दम तुझ से ये कहा था के इस थेली से "जो तू पसंद करे" उसे दे देना। और इस थेली से तुम ने दीनारों ही को पसंद किया है। इसी लिए तुम ने उन्हें रख लिया है। लिहाज़ा दीनार जो तूने पसंद किए हैं।

हस्बे वसीयत इसे दे दो। चुनाँचे नाचार उसे वो दीनार देने पड़े। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 108)

सबक़:- अमानत में खयानत ना करना चाहिए। और यतीमों का माल दबाना बड़े ज़ुल्म की बात है और ये भी मालूम हुआ के हमारे इमाम अलेह

Scanned by CamScanner

अर्रहमा बड़े ही दाना और मुश्किलात को हल फ़रमा देने वाले थे।

हिकायत नम्बर(390) एक आराबी और सत्तू

हज़रत इमाम आज़म अलेह अर्रहमत एक मर्तबा कहीं तशरीफ़ लिए जा रहे थे असना राह में आपको पानी की ज़रूरत पड़ी। इतने में एक आराबी नज़र आया। जिसके पास पानी का एक मशकीज़ा था। आपने उससे पानी तलब फ़रमाया। तो उसने इंकार किया। और कहा। पाँच दरहम में दे दूंगा। हज़रत इमाम साहब ने पाँच दरहम देकर मशकीज़ा उससे ले लिया और आपके पास सत्तू थे। आपने उस आराबी से फ़रमाया के अगर सत्तू खाना हो तो शौक़ से खाओ। उस आराबी ने वो सत्तू ज़िन में रोग़ने ज़ैतून भी मिला हुआ था। पेट भर के खा लिए। अब उसको प्यास लगी। तो उसने कहा के एक पियाला पानी दीजिए। आपने फ़रमाया पाँच दरहम में मिलेगा। उससे कम नहीं होगा उस बेचारे को प्यास लगी थी। नाचार उसने पाँच दरम देकर एक पियाला पानी पी लिया और इमाम साहब को अपने दरहम भी वापस मिल गए और उनके पास बाक़ी भी रह गया। (लतायफ इलमिया किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 140)

सबक़:- खुदा ने जिसे इल्मो हिकमत अता फ़रमाई हो वो अपनी हकीमाना तदाबीर से मुश्किलात पर क़ाबू पा लेता है।

हिकायत नम्बर(391) खारिजी को जवाब

खारिजियों को शोरिश के ज़माने में हज़रत इमाम भी गिरफ़्तार हुए। ज़ोहाक खारिजी के सामने लाए गए। ज़ोहाक ने अपने उसूल के मुताबिक़ हज़रत इमाम से तौबा करने को कहा।

हज़रत इमाम ने फ़रमाया *"अना तायबुन मिन कुल्लि कुफरिन"* यानी मैं हर क़िस्म के कुफ्र से तायब हूँ। ये सुनकर हज़रत को खारिजियों ने छोड़ दिया। लेकिन किसी को फिर शरारत सूझी और उसने ज़ोहाक को बावर कराया के अबु हनीफा के नज़दीक तुम्हारे अक़ायद कुफ्र हैं और उन्होंने उसी से तौबा की है। दोबारा फिर गिरफ़्तार करके लाए गए। ज़ोहाक ने दरयाफ़्त किया के शेख! हम ने सुना है के जिस कुफ्र से तुम ने तौबा की है वो हमारे अक़ायद हैं।

ख़ारिजी सिर्फ क़ुरआन को हुक्म मानते थे और उनका अक़ीदा था के हर चीज़ से अलग होकर सिर्फ क़ुरआन से फैसला तलब करना चाहिए।

Scanned by CamScanner

हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जब देखा के इन जाहिलों से पीछा छूटना मुश्किल है तो क़ुरआन ही से उन पर एत्राज़ फ़रमाया और ज़ोहाक से पूछा के जो कुछ तुम कह रहे हो वो मेह ज़न और गुमान है या हक़ीक़त को भी उसमें दख़्ल है?

ज़ोहाक ने कहा। सिर्फ गुमान और ज़न की बिना पर कह रहा हूँ।

हज़रत इमाम ने बरजस्ता आयत तिलावत फ़रमाई के *इन्ना बाज़ज़्ज़न्नी इसमुन* यानी बाज़ ज़न (बदगुमानी) गुनाह होता है और तुम गुनाह के इरतिकाब को कुफ्र समझते हो लिहाज़ा इस गुनाह के इरतिकाब पर तुम खुद तौबा करो। ख़ारिजी लीडर ने ये सुन कर कहा के तुम सच कहते हो और मैं तौबा करता हूँ।" (जवाहर-उल-बयान सफ़ा 107)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह इस क़द्र इल्मो फ़ज़्ल के मालिक थे के कोई बद मज़हब और दुश्मन दीन आपका मुक़ाबला ना कर सकता था और ये भी मालूम हुआ के जिस तरह अहले हक़ को अहले बातिल से तकलीफें पहुँचतीं रहीं। इसी तरह हमारे इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को भी अहले बातिल ने बहुत सताया।

हिकायत नम्बर(392) सेब का राज़

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने असहाब के साथ मस्जिद में बैठे थे के एक औरत मस्जिद में दाखिल हुई और उसके हाथ में एक सेब पकड़ा था। जिसका एक हिस्सा सुर्ख और एक हिस्सा ज़र्द था। उस औरत ने वो सेब हज़रत इमाम साहब के आगे रख दिया। और मुंह से कुछ ना बोली। हज़रत इमाम साहब ने इस सेब को चीर कर उसके दो टुकड़े कर दिए और औरत को दे दिए। औरत वो लेकर चली गई।

हाज़रीन इस उक़्दे को ना समझे और उन्होंने हज़रत इमाम साहब से पूछा के ये सेब का राज़ क्या है? आपने फ़रमाया। इस औरत ने मुझ से एक मसला पूछा था और मैंने उसे जवाब दे दिया। हाज़रीन और भी मुताज्जिब हुए और वो मसला दरयाफ़्त किया। तो आपने फ़रमाया के उसने सेब मेरे सामने रखकर मुझ से पूछा के उसे जो खून आता है उसका रंग कभी सेब के एक हिस्से की तरह सुर्ख और कभी दूसरे हिस्से की तरह ज़र्द होता है तो क्या ये खून हैज़ ही है? मैंने सेब को चीर कर उसे ये जवाब दिया के जब तक सेब के अन्दरूनी हिस्से की तरह उसका रंग बिलकुल सफेद ना होगा। वो खून

Scanned by CamScanner

हैज़ ही है। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 119)

सबक़:- पहले ज़माने की औरतें भी बड़ी दाना थीं और मसायल शरीआ पूछती रहती थीं एक ये ज़माना भी है के औरतों को अपने मख़सूस मसायल का इल्म ही नहीं और ना उसे ज़रूरी समझती हैं

हिकायत नम्बर(393) मैदाने हश्र

हज़रत नवफ़्फिल बिन हयान रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के जब हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का विसाल हो गया तो मैंने ख़्वाब देखा के मैदाने क़यामत है और सारी मख़लूक़ हिसाब गाह में खड़ी है और मैंने देखा के हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम होज़े कोसर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं और आप सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दायें बायें बड़े बड़े नूरानी लोग खड़े हैं और मैंने एक बूढ़े शख़्स को देखा जो बहुत बड़े साहबे जमाल थे। और उनकी दाढ़ी और सर सफेद था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दाईं तरफ़ खड़े थे और मैंने हज़रत इमाम अबु हनीफा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को भी देखा। जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के क़रीब ही खड़े थे। मैंने हज़रत इमाम साहब की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ किया और अर्ज़ किया मुझे पानी अता फ़रमाईये हज़रत इमाम साहब ने फ़रमाया। जब तक रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम इजाज़त ना देंगे मैं ना दूंगा। फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। उसे पानी दे दो। हज़रत इमाम साहब ने एक पियाला में मुझे पानी दिया। मैंने पानी पिया और फिर हज़रत इमाम साहब से पूछा के ये जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दाईं तरफ़ पीर मर्द साहबे जमाल हैं ये कौन बुज़ुर्ग हैं? इमाम साहब ने फ़रमाया। ये हज़रत इब्राहीम ख़लील-उल्लाह हैं और बाईं तरफ़ हज़रत अबु बक्र सिद्दिक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हैं। इसी तरह मैं पूछता रहा और इमाम साहब बताते रहे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 253) मुतरजिम सफ़ा 129

सबक़:- इमाम आज़म रज़ीं अल्लाहो तआला अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की क़ुर्बत हासिल है और आपको फ़िक़ा एक ऐसा जामे हिदायत है जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मर्ज़ी के मुताबिक़ हदीस के सर चश्मा-ए-हिदायत से भर कर आपने हमें अता फ़रमाया है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(394) हज़रत इमाम शाफई (र०अ०) का ख़्वाब

हज़रत इमाम शाफई रज़ी अल्लाहो अन्ह खुद फ़रमाते हैं के बचपन में मैंने हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझ से फ़रमाया। ऐ लड़के! तू कौन है? मैंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! आपकी उम्मत में से हूँ। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के क़रीब आ मैं आपके नज़दीक गया तो आपने अपने दहन मुबारक से लुआब मुबारक मेरे मुंह में डाल दिया। फिर फ़रमाया के अब जाओ खुदा तआला तुझ पर फज़्ल व बर्कत फ़रमाए फिर उसके बाद उसी दम हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तशरीफ़ लाए और आपने अपनी अंगश्तरी उंगली से उतारी और मेरी उंगली में पहना दी। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 255)

सबक:- इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम शाफई रहमत-उल्लाह अलेह की बहुत बड़ी शान है और ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लुआब दहन शरीफ और हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की अंगश्तरी मुबारक की बर्कत है के आप इल्मो फज़्ल के आफताब बनकर चमके और इमाम-उल-मुस्लिमीन होने के शरफ़ से मुशर्रफ हुए।

हिकायत नम्बर(395) ज़हीन बच्चा

हज़रत इमाम शाफई रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की उम्र शरीफ छः बरस की थी के आप मदरसे जाया करते थे। आपकी वालिदा माजिदा औलाद बनी हाशिम में से थीं और बड़ी आबिदा व ज़ाहिदा थीं लोग अनी अमानतें उनके पास रख जाया करते थे। एक रोज़ दो शख़्स आए और एक संदूक़ बतौर अमानत उनको सोंपा और चले गए। चन्द दिनों के बाद उनमें से एक शख़्स आया और कहने लगा के संदूक़ दे दीजिए। उन्होंने दे दिया। फिर चन्द रोज़ के बाद दूसरा आया और संदूक़ मांगने लगा उन्होंने फ़रमाया के तुम्हारा साथी आया था वो ले गया है। उसने कहा के क्या हम आप से ये ना कहा था के जब तक हम दोनों ना आएँ संदूक़ ना देना। उन्होंने कहा हाँ बेशक तुम ने कहा तो था। उसने कहा फिर आपने उसे क्यों दे दिया? हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमत की वालिद परेशान हो गईं और सोचने लगीं के अब क्या

Scanned by CamScanner

किया जाए? इतने में हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमा मदरसे से तशरीफ़ ले आए। आपने वालिदा साहिबा से पूछा के आप परेशान क्यों हैं? उन्होंने सारा क़िस्सा सुनाया हज़रत इमाम अलेह अर्रहमा ने फ़रमाया कुछ परवा नहीं है। मुद्दई कहाँ है? ताके मैं उसको जवाब दूं। मुद्दई जो वहीं मौजूद था। बोला मैं हूँ हज़रत इमाम शाफई ने फ़रमाय के तुम्हारा संदूक़ मौजूद है। अपने साथी को बुला लाओ ताके संदूक़ तुम दोनों के हवाले किया जाए। वो शख़्स हैरान हुआ और लाजवाब होकर वापस चला गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 255)

सबक़:- हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमत बचपन ही में बड़े दाना, और इल्मो फज़्ल के मालि थे। फिर बड़े होकर क्यों ना आप इमाम-उल-मुस्लिमीन बनते।

हिकायत नम्बर(396) हारून रशीद के तख़्त पर

एक रात हारून रशीद और उसकी बीवी ज़ुबैदा में कुछ बहस व तकरात हो गई। इत्तिफाकन ज़ुबैबा के मुंह से निकल गया। ऐ दोज़ख़ी! हारून अलरशीद ने ये सुनकर कहा के अगर मैं दोज़ख़ी हूँ तो तुझे तलाक़ है और उसी वक़्त एक दूसरे से अलग हो गए। लेकिन चूंके हारून अलरशीद को ज़ुबैदा से बड़ी मोहब्बत थी। इसलिए उसकी जुदाई से बहुत बेचैन हुआ और ज़ुमला उलमा व फज़्ला को जमा करके इस मसले का फतवा चाहा। मगर किसी ने इसका जवाब ना दिया और सब ने मुत्तफिक़ होकर ये कहा के इस बात का खुदा ही को इल्म है के हारून अलरशीद दोज़ख़ी है या बहिश्ती। एक लड़का उन उलमा की जमात से खड़ा हुआ और कहने लगा अगर इजाज़त हो तो मैं जवाब दूं। सब लोग हैरान रह गए के जब इतने बड़े बड़े उलमा इस मसले का जवाब में आजिज़ हैं। फिर ये लड़का क्या जवाब देगा। हारून अलरशीद ने उस लड़के को अपने रूबरू बुलाया ओर कहा के तुम ही जवाब दो। उस लड़के ने कहा के आपको मेरी ज़रूरत है या मुझे आपकी? हारून अलरशीद ने कहा के मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। ये सुनकर उस लड़के ने कह के फिर आप तख़्त से नीचे उतर आईये और मुझे तख़्त पर बैठ कर जवाब देने दीजिए। इसलिए के उलमा का रूत्बा बुलंदतर है हारून अल रशीद ने कहा। बहुत अच्छा और तख़्त से नीचे उतर आया और वो लड़का तख़्त पर बैठ गया और तख़्त पर बैठकर हारून अलरशीद से मुख़ातिब हुआ के पहले आप मरे एक सवाल का जवाब दें के क्या आप कभी किसी गुनाह

Scanned by CamScanner

से बावजूद उसकी क़ुद्रत रखने के सिर्फ खुदा के ख़ौफ की वजह से गुनाह करने से बाज़ भी रहा हूँ, ये सुनकर लड़के ने कहा मैं फतवा देता हूँ के आप दोज़ख़ी नहीं बल्के अहले बहिश्त में से हैं। सारे उल्मा पुकार उठे के किस दलील से? उस लड़के ने जवाब दिया के कुरआन मजीद की इस आयत से के अल्लाह तआला फ़रमाता है: *व अम्मा मन ख़ाफा मक़ामा रब्बीही व नहा अन्ननफ़्सा अनिल हवा फइन्नल जन्नाता हियल मावा* यानी जिस शख़्स ने के गुनाह का क़सद किया और फिर खुद के ख़ौफ से उससे बाज़ रहा, पस उसकी जगह जन्नत है।"

सारे उल्मा ये सुनकर वाह वाह करने लगे और कहा के जो लड़कपन में इस क़द्र फेहमो ज़का का मालिक है वो बड़ा होकर नहीं मालूम किस दर्जे का आलिम होगा। ये लड़का कौन था? ये हज़रत इमाम शाफई रहमत-उल्लाह अलेह थे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 256)

सबक़:- जिन्होंने बड़े होकर इल्मो फज़्ल का ताजदार बनना हो। उनका बचपन भी दूसरे से मुमताज़ व अफ़्ज़ल होता है। फिर जो लोग बड़े होकर भी दीन से कोई मस ना रखे और अगर इमामाने दीन की मुबारक शानों में कोई गुस्ताख़ी करें तो किस क़द्र जहालत की बात है।

हिकायत नम्बर(397) रहबानी

सुलतान रोम जो इसाई था। हर साल हारून अलरशीद को कुछ माल भेजा करता था। उसने एक साल ये हीला किया के चन्द रहबानियों को भेज कर ये कहला भेजा के इन इसाईयों रहबानियों से अगर आपके उल्मा बहस करें और उन पर ग़ालिब आ जाएँ तो माले मुक़र्ररा बराबर देता रहूंगा। वरना नहीं। चुनाँचे जब ये रहबानी हारून अलरशीद के पास पहुँचे। तो हारून अलरशीद ने दजले के किनारे पर उल्मा इस्लाम को जमा किया और उन रहबानियों को भी वहाँ बुलाया। इतने में हज़रत इमाम शाफई रहमत-उल्लाह अलेह भी तशरीफ़ ले आए और हारून अलरशीद ने आप से इलतिजा की के इन रहबानियों से आप बहस करें। हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमत ने ये सुनकर अपना मुसल्ला कंधे से उतार कर दरया के पानी के ऊपर बिछा दिया और उस पर जा बैठे और फ़रमाया के जो शख़्स हम से बहस करना चाहे वो यहाँ आकर हम से बहस करे। राहिबों ने जब ये हाल देखा तो सबके सब मुसलमान हो गए। सुलतान रोम को जब ये ख़बर पहुँची के वो सारे राहिब इमाम शाफई के हाथ पर मुसलमान हो गए हैं तो कहने लगा। शुक्र है के वो

Scanned by CamScanner

इमाम यहाँ नहीं आया। अगर यहाँ आ जाता तो सारा रोम मुसलमान हो जाता। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 258)

सबक़:- अल्लाह वालों की बहुत बड़ी शान होती है। और अनासिर अरबअे भी उनके मातेहत होते हैं और उनके फयूज़ व बर्कात की ये शान है के उनकी अज़मत शान को देखकर ही कई लोग मुसलमान हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(398) फिरासत

हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमत और हज़रत इमाम अहमद रहमत-उल्लाह अलेह जामअे मस्जिद में बैठे थे के एक शख़्स आया और नमाज़ पढ़ने लगा। हज़रत इमाम अहमद ने उसे देखकर फ़रमाया के ये शख़्स लोहार है हज़रत इमाम शाफई ने फ़रमाया के नहीं ये शख़्स तरखान है। फिर जब वो शख़्स नमाज़ पढ़ चुका तो उससे पूछा गया के तुम क्या काम करते हो तो वो बोला के मैं पिछले साल लोहे का काम करता था और आज कल लकड़ी का काम करता हूँ। नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 117, जिल्द:1)

सबक़:- अल्लाह वालों के मुंह से जो बात निकलती है। सच्ची ही होती है।

हिकायत नम्बर(399) विरासत अंबिया

एक बुज़ुर्ग हज़रत रबीअ ने एक रात ख़्वाब में देखा के हज़रत आदम अलेहिस्सलाम का इन्तिक़ाल हो गया है। और लोग आपका जनाज़ा मुबारक उठा रहे हैं। हज़रत रबीअ ये ख़्वाब देखकर जाग पड़े और सुबह एक ताबीर बताने वाले से इस ख़्वाब की ताबीर पूछी तो उसने बताया के इस वक़्त जो ज़माना भी में बहुत बड़ा आलिम है उसका इन्तिक़ाल हो जाएगा क्योंके *वअल्लमा आदामा अलअसमआ कल्लाहा* के मुताबिक़ इल्म ख़ासियत हज़रत आदम अलेहिस्सलाम की है, चुनाँचे चन्द दिनों के बाद हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमा का इन्तिक़ाल हो गया। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 259)

सबक़:- इमामाने दीन अंबिया इक्राम अलेहिम अस्सलाम के वारिस हैं और उनके फयूज़ व बर्कात अंबिया इक्राम अलेहिम अस्सलाम ही के उलूम का सदक़ा है। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम शाफई रहमत-उल्लाह अलेह अपने ज़माने में बड़े आलिम थे।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(400) इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल(र०अ०)

बग़दाद में जब मोतज़लियों का ग़लबा हुआ। तो उन्होंने चाहा के हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह से ज़बरदस्ती कहलायें के क़ुरआन मख़लूक़ है। चुनाँचे मुख़तलिफ साज़िशों के ज़रिये वो आपको ख़लीफा के दरबारे में ले गए, दरबार के एक दरवाज़े पर एक सिपाही खड़ा था। हज़रत इमाम रहमत-उल्लाह अलेह जब उस दरवाज़े से गुज़रे तो उस सिपाही न कहा ऐ इमाम-उल-मुस्लिमीन क़ुरआन को मख़लूक़ हर गिज़ ना कहना और मर्दों की तरह रहना देखिये मैं एक दफा चोरी के इलज़ाम में गिरफ़्तार हुआ था और हज़ार बैद मुझ पर पड़े लेकिन मैंने इक़्रार ना किया था और इंकार पर ही डटा रहा था। बिलआख़िर मैं रिहा हो गया। और अपने दरोग़ व नारास्ती पर कामयाब हो गया तो जब मैं हक़ पर ना था और सब्र की बदौलत कामयाब हो गया फिर आप जब सरासर हक़ पर हैं। भला सब्र से कामयाब क्यों ना होंगे, हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह उसकी बात सुनकर बड़े मुतास्सिर हुए। और आपने फ़रमाया जज़ाकल्लाह! मैं तुम्हारी ये बात खूब याद रखूंगा और हर गिज़ हक़ को ना छोड़ूंगा। चुनाँचे आपको दरबार में पेश किया गया और आपको मजबूर किया गया के क़ुरआन को मख़लूक़ कहें मगर आपने ना कहा हत्ता के आपको शिकंजे में कसा गया और हज़ार कोड़े मारे गए। मगर आप ने हर दफा ये कहा के क़ुरआन मख़लूक़ नहीं है। इसी असना में जब के आपको शिकंजे में कसा हुआ था आपका इज़ारबंद खुल गया आपके दोनों हाथ बंधे हुए थे। सब ने देखा के दो हाथ ग़ैब से ज़ाहिर हुए और उन्होंने आपका इज़ारबंद बाँध दिया। आपकी ये करामत देखकर आपको छोड़ दिया गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 261)

सबक़:- हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह इमाम-उल-मुस्लिमीन थे। और हक़ के अलमबरदार दुश्मनों ने आपको बेहद सताया और तक्लीफें दीं मगर आपने सब्रो शुक्र से काम लिया और मसलक हक़ को नहीं छोड़ा और आपने क़ुरआने पाक की इज़्ज़त की ख़ातिर अपनी जान पर सख़्तियाँ बर्दाश्त कीं मालूम हुआ के इमामाने दीन के दिलों में क़ुरआन व हदीस की बड़ी वक़त और ताज़ीम थी।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(401) ताज़ीम और सिला

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक बार एक नहर के क्निारे वज़ू कर रहे थे और कोई दूसरा शख़्स आप से ऊपर की जानिब बुलंदी पर वज़ू कर रहा था। उसने जब हज़रत इमाम को वज़ू करते देखा। तो वहाँ से उठ कर ताज़ीम के लिहाज़ से नीचे उतर आया और आपसे नीचे उतर कर वज़ू करने लगा। जब वो शख़्स मर गया। तो किसी ने उसे ख़्वाब में देखा और पूछा के खुदा तआला ने तेरे साथ क्या सलूक किया। तो उसने जवाब दिया के हक़ तआला ने उस ताज़ीम का सिले में जो मैंने हज़रत इमाम अहमद रहमत-उल्लाह अलेह के वज़ू करते वक़्त उनकी, की थी। मुझ पर रहमत फ़रमाई है और मेरी निजात फ़रमा दी है। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 262)

सबक़:- अल्लाह वालों की ताज़ीम से अल्लाह खुश होता है। लिहाज़ा उन अल्लाह वालों की बे अदबी व गुस्ताख़ी से हर वक़्त डरते रहना चाहिए और हमेशा उनका अदब करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(402) ख़मीरी रोटी

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह के साहज़ादे हज़रत सालेह असफहान के क़ाज़ी थे। हज़रत सालेह हर रोज़ दिन को रोज़ा रखते और रात को नफिल पढ़ा करते थे। एक रोज़ हज़रत इमाम अहमद के ख़ादिम ने आपके साहबज़ादे के हाँ से ख़मीर लेकर आपके लिए ख़मीरी रोटी पकाई और जब आपके सामने लाया। तो आपने पूछा के इस रोटी में क्या मिलाया है के ऐसी फूली है। ख़ादिम ने अर्ज़ किया के हुज़ूर! आपके साहबज़ादे के बावरची खाने से मैंने ख़मीर लेकर आटे में मिलाया था। आपने फ़रमाया: वो तो असफहान का क़ाज़ी है ये रोटी अब मेरे खाने के क़ाबिल नहीं। अब मैं इस रोटी को क्या करूंगा। फिर फ़रमाया। जब कोई सायल आए तो उसको दे देना। और साथ ही ये भी कह देना के इसमें ख़मीर तो सालेह के घर का मिला हुआ है और आटा अहमद बिन हंबल का है। अगर तुम्हारा जी चाहे तो ले लो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 263)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे बड़े मुत्तक़ी और परहैज़गार होते हैं के ज़र्रा भर शक व शुबह की बिना पर भी एहतियात फ़रमाते हैं फिर किस क़द्र अफसोस का मुक़ाम है के हम यक़ीनी ना जायज़ चीज़ों के

Scanned by CamScanner

भी इस्तेमाल से बाज़ नहीं रहते।

हिकायत नम्बर(403) इल्म व अमल

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह का एक शार्गिद आपके घर आया। हज़रत इमाम साहब ने रात को उसके पास एक लौटा पानी का भर कर रख दिया। सुबह हुई तो आपने देखा के लौटा वैसे का वैसा ही पड़ा हुआ है और पानी खर्च नहीं किया गया। हज़रत इमाम ने फ़रमाया के लौटा वैसे का वैसा ही क्यों रखा हुआ है? शार्गिद ने पूछा हज़रत मैं उसको क्या करता। आपने फ़रमाया के वज़ू करते और रात भर नफिल पढ़ते वरना तूने ये इल्म क्यों सीखा? (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 264)

सबक़:- इल्म हासिल करने के बाद जब तक अमल भी ना किया जाए इल्म का कोई फायदा नहीं।

हिकायत नम्बर(404) सोने का पहाड़

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह एक बार किसी बयाबान से गुज़र रहे थे के आप रास्ता भूल गए। आपने बयाबान में एक शख़्स को देखा जो एक गोशे में बैठा हुआ था आपने सोचा के इस शख़्स से रास्ता दरयाफ़्त करूं, चुनाँचे आप उसके पास गए वो शख़्स हज़रत इमाम को देखकर रोने लगा। हज़रत इमाम साहब ने सोचा के शायद ये भूका है आपने इस खयाल से उसे अपने पास से कुछ रोटी देना चाही। वो शख़्स बहुत ख़फा हुआ और कहने लगा। ऐ अहमद बिन हंबल! तू कौन है जो मेरे और खुदा के दरमियान दख़ल देता है। क्या तू खुदा के कामों पर राज़ी नहीं है? इसी लिए तू रास्ता भी भूलता है। हज़रत इमाम अहमद उसके कलाम से बड़े मुतास्सिर हुए और दिल में कहने लगे। इलाही। गोशों में तेरे ऐसे ऐस बन्दे भी पौशीदा हैं। इस शख़्स ने कहा। ऐ अहमद बिन हंबल क्या सोचते हो। उस खुदाऐ पाक के ऐसे ऐसे बन्दे हैं के अगर खुदा तआला को क़सम देकर चाहें तो तमाम ज़मीन और पहाड़ उनके वास्ते सोने के हो जायें। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल ने जो नज़र की। तो तमाम रूऐ ज़मीन और पहाड़ उन्हें सोने के नज़र आने लगे। फिर आप ने एक आवाज़ सुनी के ऐ अहमद! ये शख़्स हमारा ऐसा मक़्बूल बन्दा है के अगर चाहे तो हम उसकी ख़ातिर ज़मीन आसमान को उलट पलट कर दें। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 262)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की इस क़द्र बुलंद शान होती है

Scanned by CamScanner

के वो दिल के इसरार भी जान लेते हैं और उनकी ज़बान हिले तो पहाड़ भी सोने के बन जाते हैं और अगर वो चाहें तो अल्लाह तआला ज़मीनो आसमान को भी उलट दे फिर जो उन सबके सरदार व आक़ा हुज़ूर मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं उनकी शान को कौन अंदाज़ा कर सकता है। और उनके चाहने से क्या नहीं हो सकता है?

हिकायत नम्बर(405) इब्ने ख़ज़ीमा का ख़्वाब

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल के विसाल शरीफ के बाद एक बुज़ुर्ग मोहम्मद इब्ने ख़ज़ीमा ने ख़्वाब में देखा के इमाम अहमद बिन हंबल कहीं तशरीफ़ ले जा रहे हैं। पूछा के आप कहाँ जा रहे हैं? तो आपने फ़रमाया के दार-उल-सलाम को जा रहा हूँ। उन्होंने पूछा के खुदा तआला ने आपसे क्या सलूक फ़रमाया। तो आपने फ़रमाया के मुझे बख़्श दिया। और मेरे सर पर ताज रखा और नालैन मुझे पहनाई और खुदा ने मुझ से फ़रमाया के ऐ अहमद! ये सब इनाम तुझ पर इस सबब से है के तूने कुरआन को मख़लूक़ ना कहा। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 267)

सबक़:- हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह ने अपने इल्मो फज़्ल और अमल की बदौलत अल्लाह की रज़ा हासिल कर ली और अल्लाह की बारगाह से ताज हासिल किया पस जो कोई भी अल्लाह का काम करने लगे खुदा और खुदाई उसकी हो जाती है।

हिकायत नम्बर(406) इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम मालिक रज़ी अल्लाहो अन्ह

हज़रत मोहम्मद इब्ने अबी अलसरी असक़लानी ने ख़्वाब में हुज़ूर(स०अ०स०) की ज़ियारत की और हुज़ूर से अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह कुछ इर्शाद फ़रमाईये ताके मैं हुज़ूर की जानिब से इस इर्शाद की तबलीग़ करूं। हुज़ूर(स०अ०अ०) ने इर्शाद फ़रमाया ऐ असक़लानी! मैंने मालिक बिन अनस को एक ख़ज़ाना दे दिया है जिसे वो तुम सब में तक़सीम कर रहा हो। और वो ख़ज़ाना मौता है। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 148)

सबक़:- हज़रतइमाममालिकरज़ीअल्लाहोअन्हइमाम-उल-मुस्लिमीन थे और हुज़ूर(स०अ०स०) के मंज़ूरे नज़र और आपकी किताब मौता इमाम मालिक एक ऐसी मुसतनिद और सही जामअे है के खुद हुज़ूर(स०अ०स०) अपना ख़ज़ाना इर्शाद फ़रमाया है

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(407) एहत्रामे इल्म

हारून अलरशीद एक मर्तबा मदीना मुनव्वरह हाज़िर हुआ। तो उसे मालूम हुआ के हज़रत इमाम मालिक यहाँ मौता का दर्स देते हैं। हारून अलरशीद ने इमाम मालिक को पैग़ाम भेजा के आप मौता मेरे पास लाकर मुझे यहाँ सुना जायें। हज़रत इमाम मालिक ने जवाब में फ़रमाया के हारून अलरशीद को कह दो के इल्म किसी के पास नहीं जाता। तालिबे इल्म खुद इल्म के पास आता है। हारून अलरशीद ये सुनकर हज़रत इमाम मालिक की ख़िदमत में खुद हाज़िर हुआ। हज़रत इमाम मालिक ने उसे अपने पास मसनद पर बिठा लिया। हारून अलरशीद ने अर्ज़ की के अब आप मौता पढ़िये और मैं सुनता हूँ। हज़रत इमाम ने फ़रमाया के मैंने आज तक खुद पढ़कर किसी को नहीं सुनाया लोग पढ़ते हैं और मैं सुनता हूँ। लिहाज़ा अब आप पढ़ें और मैं सुनता हूँ। हारून अलरशीद ने कहा तो फिर उन लोगों को बाहर निकाल दीजिए। ताके मैं तनहाई में पढ़ूं आपने फ़रमाया के जब ख़्वास के लिए इल्म को अवाम से रोक लिया जाए तो ख़्वास को कुछ नफा नहीं पहुँचता चुनाँचे हारून अलरशीद ने मौता को पढ़ना शुरू किया। पढ़ने लगा तो हज़रत इमाम मालिक ने फ़रमाया। हारून इलम के लिए तवाज़ो की ज़रूरत है। इसलिए इस मसनिद से उतर कर मेरे सामने मुतावाज़ो होकर पढ़ो। चुनाँचे हारून अलरशीद मसनिद से नीचे उतर आए और सामने मुतावाज़ो होकर बैठा और पढ़ने लगा। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 148)

सबक़:- इल्म हासिल करने के लिए इंकिसार और तवाज़ो को इख़्तियार करना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने क बादशाहों में भी इल्म दीन की बेहद तलब थी और उनके दिलों में हदीस रसूल का बड़ा एहत्राम था।

हिकायत नम्बर(408) क़मीस में बिछू

हज़रत इमाम मालिक रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की हदीस बयान फ़रमा रहे थे के लोगों ने देखा के आपका चेहरा किसी तकलीफ के बाइस ज़र्द हो रहा है। और बड़े बेचैन हो रहे हैं बावजूद उसके आपने हदीस का दर्स तर्क ना फ़रमाया। और बदस्तूर बयान फ़रमाते रहे और जब बयान ख़त्म फ़रमा चुके तो लोगों ने वजह दरयाफ़्त की तो आपने क़मीस उतार दी जिसमें से एक बिछू निकला

Scanned by CamScanner

जिसने छः दफा हज़रत इमाम को डसा था। हज़रत इमाम ने फ़रमाया के हदीस बयान करते हुए ये बिछू मुझे डस रहा था। मगर मैंने एहत्राम हदीस के पेशे नज़र हदीस का दर्स ना छोड़ा। मेरा क्या है कुछ हो मगर हदीस का अदबो एहत्राम बेहरहाल मुक़दम है। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 149)

सबक़:- इमामाने दीन के दिलों में हदीस शरीफ का बड़ा एहत्राम था। आज हमें भी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की हदीस पाक का अदबो एहत्राम करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(409) विसाल

हज़रत इमाम शाफई रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मेरी फूफी ने मक्का मोअज़्ज़मा में ख़्वाब देखा के कोई शख़्स कह रहा के ज़माना हाल का सब से बड़ा आलिम विसाल पा गया। इमाम शाफई फ़रमाते हैं के हम ने उसी दिन सुन लिया के हज़रत इमाम मालिक रहमत-उल्लाह अलेह का विसाल हो गया है। *इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन* (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 150)

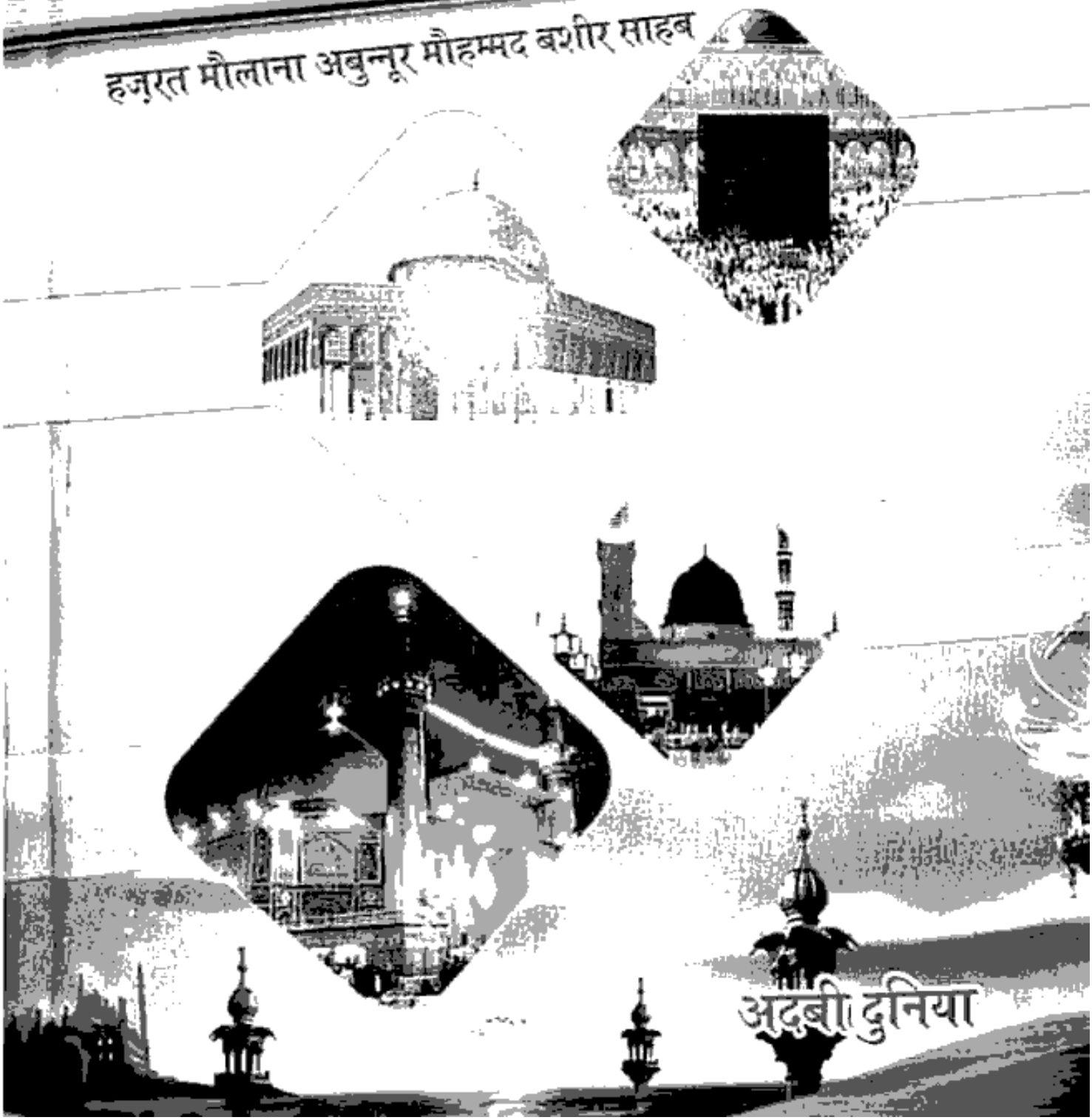
सबक़:- हज़रत इमाम मालिक रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने वक़्त के बहुत बड़े आलिम और मरजअे ख़लायक़ थे और उसी इल्मो फज़्ल की बदौलत वो चारों इमामों में से एक हैं।

हिस्सा दोम खत्म हुआ

Scanned by CamScanner

सच्ची हिकायात

हज़रत मौलाना अबुन्नूर मौहम्मद बशीर साहब



अदबी दुनिया

Scanned by CamScanner

इल्तिज़ा है कि इस किताब को अपनी मोबाईल की मैमोरी में सेव करके ना रखे वल्कि आप से गुजारिश है कि इस किताब का मुताला की जिये ये किताब बहुत शानदार है।

दुआ की गुजारिश
डॉ ज़ाहूर रज़वी
अल अश्हर अकडमी

दुआ की ग़ुज़ारिश
मोहम्मद अहतिराम क़ुरैशी
तीसरा हिस्सा

आप हज़रात से गुजारिश है कि इस किताब को आप अपना निम्ती वक़्त दे और इस किता ब का मुताला करे और हम ना चीज़ को अपनी अपनी दुआओं में याद रखे

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

जुमला हक़ूक़ बहक़ नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताब	:	सच्ची हिकायात मुकम्मल
तालीफ़	:	मौलाना अबु अलनूर बशीर
सन इशाअत	:	2013
सफ़हात	:	936
मतबअ	:	नाहिद प्रेस, देहली
हदिया	:	
नाशिर	:	अदबी दुनिया, देहली

इस किताब में

कुतब अहादीस और दीगर मुसतनिद इस्लामी किताबों से दिलचस्प, मुफ़ीद और सबक़ आमोज़ हिकायात जमा कर दी गई हैं और हर हिकायत के बाद इससे जो सबक़ हासिल होता हैए लिख दिया गया है और हर हिकायत को असल किताब से देखकर दर्ज किया गया है और किताब का नाम, सफ़हा और जिल्द सब कुछ दिया गया है।

Publisher

ADABI DUNIYA

399, Matia mahal, jama masjid,
Delhi - 110006
Phone : 23250122

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहली नज़र

इस ज़माने में अफ़साने, ड्रामे, किस्से और कहानियाँ बड़े शौक़ से पढ़ी जाती हैं और ये शौक़ बिलअमूम हर छोटे बड़े मर्द और औरत में पाया जाता है, आज कल हर वो तहरीर जिसमें अफ़सानवी तर्ज़ और हिकायती रंग मौजूद हो, पसंदीदगी की नज़र से देखी जाती है, क़ौम का यही रूहजान तबअे इस अम्र का बाइस है के मुल्क के अक्सर रसायल व जरायद अपने अपने "कहानी नम्बर" और "अफ़साना नम्बर" शाय करते हैं और अफ़साना पसंद अफ़राद इन्हें हाथों हाथ लेते हैं।

ये अफ़साने, ड्रामे और आज कल की हिकायात व कहानियाँ ज़्यादा तर दरोग़ व कज़िब और ग़ैर वाक़ेई बिना पर मुबनी होती हैं, उनकी कोई हक़ीक़त और असल नहीं होती और ऐसे अफ़साना लिखने वाले उन वज़अई हिकायात को "तबै ज़ाद" और अपनी तख़लीक़ क़रार देकर अपने वज़अे व कज़िब को अपना एक शाहकार साबित करते हैं और अफ़साना पसंद तबीअतें उन्हें उस कारनामे पर दादे तहसीन देती हैं और उसे तरक्क़ी पसंद अदब के नाम से मोसूम करने लगती हैं।

क़िस्से और हिकायात ज़रूरी नहीं के झूट ही हों, इस आलम में क़िस्सों और सच्ची हिकायात का वजूद भी है, खुद क़ुरआने पाक और अहादीसे शरीफ़ा में भी हिकायात व क़सस मौजूद हैं और वो हिकायात व क़सस ऐसे हैं जिनमें सौ फ़ीसदी सदाक़त है और जो अपनी सदाक़त के बाइस मख़लूक़ के लिए मौजिबे रूश्दो हिदायत और वजह दर्से इब्रत हैं। खुदा तआला ने अपनी सच्ची किताब मजीद में अम्बियाइक्राम अलेहिमअस्सलाम के ईमान अफ़रोज़ क़िस्से और उमम साबिक़ा की सबक़ आमोज़ हिकायात बयान फ़रमाई हैं और रसूले खुदा सल-लल्लाहो-तआला-अलेह व सल्लम ने भी अपने इर्शादाते आलिया में पहली उम्मतों के इब्रत आमोज़ वाक़ेयात और सबक़ आमोज़ हिकायात सुनाई हैं और इसी तरह बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात और उनकी तालीफ़ात में भी इस क़िस्म की सच्ची हिकायत का वजूद पाया जाता है मगर मुश्किल ये है के ये सब पुरानी बातें हैं और इस नए दौर में उन पुरानी बातों की तरफ़ तवज्जह नहीं की जाती ऐ काश! मुसलमान आज

Scanned by CamScanner

कल के लायानी अफ़्सानों और वज़अई और झूटी हिकायात की बजाए अपने हक़ीक़ी अफ़्सानों और सच्ची हिकायात को पढ़ते पढ़ाते तो दिलचस्पी के अलावा उन्हें दीनी और दुनयवी फ़वायद भी हासिल होते।

मुद्दत से मेर दिल में ये ख़याल था के क़ुरआन व हदीस और दीगर इस्लामी लिटरेचर से हक़ीक़ी क़िस्सों और सच्ची हिकायात को जमा करूं और उन्हें सादा और आम फ़हेमो तर्ज़ में क़लमबंद कर के मुसलमानों के लिए एक ऐसी किताब लिखूं जिसका मुतअल्ला उनके लिए दिलचस्पी भी पैदा करे और साथ साथ ही उनके लिए सबक़ व इब्रत पेश करके उनके दीन व दुनिया की इस्लाह भी करे चुनाँचे इसी अपने इरादे के तहेत मैंने सच्ची हिकायात को जमा करना शुरू कर दिया और क़ुरआन व हदीस के अलावा और बहुत सी इस्लामी कुतुब का मुतअल्ला करने के बाद इस सबक़ आमोज़ सिसिले की इब्तिदा कर दी।

मेरे ज़हेन में ये सिलसिला बड़ा तवील है और इरादा है के मुबारक सिलसिला को दूर तक ले जाऊँ, मैंने इस तालीफ़ के लिए जो बाब तजवीज़ किए हैं वो हस्बे ज़ेल हैं:-

पहला बाब	तौहीदे बारी
दूसरा बाब	सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा सल-लल्लाहो-अलेह व सल्लम
तीसरा बाब	अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल-सलाम
चौथा बाब	खुलफ़ाए राशिदीन रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
पाँचवा बाब	सहाबाइक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
छटा बाब	अहले बैत अेज़ाम रिज़वान-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन
सातवाँ बाब	आयम्माइक्राम रहमत-उल्लाही अलेहिम अजमईन
आठवाँ बाब	औलियाइक्राम रहमत-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
नवाँ बाब	सलातीने इस्लाम
दसवाँ बाब	मुख़्तलिफ हिकायात

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

चूँके ये सिलसिला बहुत तवील है इसलिए इस किताब को तीन हिस्सों पर तक़सीम कर दिया है इसका ये पहला हिस्सा जो आपके हाथ में है पहले चार अबवाब पर मुशतमिल है, इसमें पहला, दूसरा, तीसरा, और चौथा बाब है और बाक़ी दूसरे अबवाब इंशाअल्लाह दूसरे हिस्सों में आएँगे इस किताब के पहले बाब में ऐसी हिकायात का इन्तिख़ाब है जिनका ताल्लुक़ "तौहीदे बारी" से है और दूस. . बाब में उन रिवायात व हिकायात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ातेग्रामी से है, उन सच्ची हिकायात व रिवायात से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मरातिब व मदारिज, आपके इख़्तियारात व कमालात और आपके उलूम का पता चलता है और ये बात साबित होती है के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार हैं और दानाऐ ग़यूब हैं और हर गिज़ हर गिज़ हमारी मिस्ल नहीं हैं, तीसरे बाब में अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल सलाम के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे पता चलता है के अम्बियाऐक्राम की बहुत बड़ी शानें हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात अता फ़रमाए हैं, चौथे बाब में ख़ुल्फ़ाऐ राशिदीन यानी हज़रत सिद्दिके अक्बर, हज़रते उमर फ़ारूक़ आज़म हज़रत उस्मान ज़ूलनोरैन और हज़रते मौला अली रिज़वानउल्लाही अलेहिम अजमईन के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे इन चार यारानें नबी के मरातिब व मदारिज ज़ाहिर होते हैं और पता चलता है के ये चारों ही अल्लाह के महबूब के महबूब हैं और उनकी मोहब्बत ऐन ईमान है और उनकी अदावत से ईमान जाता रहता है। इस हिस्से में ये चारों बाब हैं बाक़ी के छः अबवाब दूसरे और तीसरे हिस्से में हैं।

ज़रूरत है के आज वो मुसलमान जो क़िस्सों के शौक़ीन हैं वो झूटी हिकायात को छोड़ कर उन सच्ची हिकायात को पढ़ें ताके उन के लिए दीनी तरक़्क़ी का सबब हो और वो मुसलमान औरतें जो रातों में बच्चों को झूटी कहानियाँ सुनाया करती हैं इन सच्ची हिकायात को पढ़ें, याद करें और अपने बच्चों को ये सच्ची हिकायात सुनाएँ ताके बच्चों के दिल में भी दीन की रग़बत पैदा हो।

(अबु अलनूर मोहम्मद बशीर)

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

389	पियाले का पानी	433
390	मुर्ग़ी का अंडा	434
391	अंगूठी का नक़्श	434
392	ग़लत परोपागंडा	435
393	दीनारों भरी थैली	435
394	एक आराबी और सत्तू	436
395	खारिजी को जवाब	437
396	सेब का राज़	437
397	मैदाने हश्र	438
398	हज़रत इमाम शाफई का ख़्वाब	439
399	ज़हीन बच्चा	440
400	हारून रशीद के तख़्त पर	440
401	रहबानी	441
402	फिरासत	442
403	विरासत अंबिया	443
404	इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल (र०अ०)	443
405	ताज़ीम और सिला	444
406	ख़मीरी रोटी	445
407	इल्म व अमल	445
408	सोने का पहाड़	446
409	इब्ने खुज़ीमा का ख़्वाब	446
410	इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम मालिक (र०अ०)	447
411	एहत्रामे इल्म	447
412	क़मीस में बिछू	448
413	विसाल	448
414	हज़रत उवैस क़रनी (र०अ०)	449
415	मातियों का सौदागर	450
416	जिनों में वाज़	453
417	मस्जिद ख़ीफ का वा कमाल कुश	455
418	आतिश परस्त शमकन	456
419	दजले के किनारे	458
420	ग़ीबत का बदला	459
421	दहरिये से मुनाज़रा	460
422	यहूदी का परनाला	461
423	हबीब अजमी रहमत-उल्लाह अलेह	461
424	राबिया बसरी	462
425	चोर	464
426	शाहे बलख़	465
427	खट्टे अनार	466
428	पराई खजूर	468
429	रूमान-उल-आबेदीन	469
430	पैग़ामे हक़	470
431	चौपायों का अदब	470
432	ज़लनून	472
433	सर्राफ	472
434	सारंगी	473
435	इंसान और कुत्ता	474
436	बायज़ीद और एक कुत्ता	474
437	रोशनी	475
438	बराऐ नाम मुसलमान	476
439	मुनकर नकीर को जवाब	477
440	दौलतमंद और दुरवैश	478
441	पुर असरार बुढ़िया	478
442	बीमार या तबीब	479
443	हर दिल अज़ीज़	481
444	हारून रशीद को नसीहत	481
445	बदशाह फकीर के घर	482

हिस्सा सोम
आठवाँ बाब
औलिया इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

446	हाकिम नीशापूर	483
447	आतिश परस्त बेहराम	486
448	कफन चोर	487
449	एक मुलहिद का जवाब	489
450	शैतान की मायूसी	489
451	वली की बीवी	490
452	ज़ादे राह	490
453	मुर्दों का माल	491
454	बुज़र्गों की नमाज़	491
455	बुज़र्गों का इल्म	492
456	बुज़र्गों की दुआ	492
457	निराली दुआ	493
458	रूमी हाकिम	494
459	इन्तिक़ाल मकानी	495
460	चिरागों	495
461	भाई को नसीहत	496
462	ख़्वाब की ताबीर	497
463	शमै ईमान	498
464	चार दुआयें	499
465	फिरासत मोमिन	499
466	ग़ीबत	501
467	मुंह की सियाही	502
468	दो तलवारें	502
469	नवाज़ी	503
470	शैतान का जाल	504
471	गंवार	504
472	ज़माना नबुव्वत से बाद	505
473	दो सूफी	505
474	सफेद बाज़	506
475	तेल और पानी	507
476	दाना मुरीद	508
477	आँसू	509
478	इसतम्दाद	509
479	सुलतान मेहमूद दर खारज़्मी पर	510
480	सोमनात	511
481	सरवरे आलम(स०अ०स०) और ग़ौसे आज़म(र०अ०)	512
482	बारिश	513
483	दजला की तुग़यानी	515
484	ग़ौसे आज़म(र०अ०) का इल्म	516
485	डाकूओं का सरदार	516
486	रमज़ान का चाँद	516
487	ग़ौसे आज़म की फूफी	518
488	कुम बिइज़निल्लाही	518
489	चील का सर	519
490	बायज़ीद बसतामी और सम्आन का बुत खाना	520
491	चुड़िया और अंधा सांप	520
492	शेर पर हकूमत	526
493	या लतीफ	528
494	मेहमान या मेज़बान	528
495	दाना दीवाना	530
496	गठरी	530
497	गोदड़ी में लअल	531
498	सायल हरम	532
499	पुर असरार जवान	533
500	बग़दाद का ताजिर	534
501	शेर ने हुक्म माना	535
502	शेर ने क़दम चूमे	537
503	सालेह नोजवान	537
504	दवाऐ ज़ुनूब	538
505	आफियत	539
506	हसीन लोंडी की क़ीमत	540
507	गुनाह करने का तरीक़ा	540

Scanned by CamScanner

508	रफ़ीक़ा जन्नत	541
509	जमाले हक़	542
510	एक बाक़ी	542
511	वली का तसर्रूफ	543
512	तवंगर व मुफलिस	543
513	ईफा अहद	544
514	दुश्मन की नुक्ता चीनी	544
515	बादशाह को नसीहत	545
516	शराबी का मुंह	545
517	रास्त गोई	546
518	जेलखाने से बाग़ में	547
519	शाही महल	548
520	इम्तिहान	548
521	गोश्त और हलवा	549
522	जवानी औरत	550
523	कमसिन लड़का	551
524	हरगिज़ ममीरद आँके दिलिश ज़िंदा शद बआश्क़	552
525	कुआँ	553
526	जानवर भी ग़ुलाम	553
527	रेत की चोनी	554
528	भेड़ियों और बकरियों में सुलह	554
529	शराबी	555
530	अल्लाह के इनाम	555
531	तुम्हारे मुंह से जो निकली वो बात हो के रही	556
532	आंजोरा	556
533	निसबत का लिहाज़	557
534	बूढ़ा ग़ुलाम	557
535	जिन्दा पीर	558
536	तीन क़लंदर	558
537	ख़्वाजा तौरे बलिहारी जाऊँ	559
538	दिल की बात	559
539	रूबाई का जवाब	561
540	खयानत	562
541	गिरफ़्तारी	562
542	एक सय्यद बुज़ुर्ग	563
543	अब्दाल	563
544	अगर दारिद जराए दोस्त दारिद	564
545	जनाज़ा	565
546	ग़ौसे आज़म	565

नवाँ बाब
खुलफा-ए-सलातीन

548	सवारी का घोड़ा	566
549	बैश क़ीमत मोती	566
550	भेड़िये और बकरियां	567
551	बारे हकूमत	567
552	अपना काम आप	568
553	किस्सा	568
554	ताऊन	570
555	मर्दे खुदा	570
556	ज़नदीक़	570
557	तअज़ीमे इल्म	571
558	बादशाह रोम	571
559	पैंतीस हज़ार दीनार	572
560	सौदागरों का काम	573
561	निराली तदबीर	573
562	क़ातिल	575
563	मोतियों का हार	576
564	ज़ेहर आलूद हलवा	578
565	तरबूज़	579
566	जौ का दलिया	580
567	उल्लू की कहानी	581

Scanned by CamScanner

568	हश्शाम और हज़रत ताऊस	581
569	ग़रीब परवरी	583
570	दो मलऊन	583
571	जंडियाला का क़िला	586
572	बेवा की गाय	589
573	आलमगीरी अदल	589
574	सुलतान आलमगीर और एक बहरूपिया	592
575	अशर्फ़ियों की थैली	592
576	वाली-ए-खरासान	595
577	सिकंदर और चीन की शहज़ादी	597
578	सिकंदरे आज़म और एक क़स्साक़	597
579	सुलतान मेहमूद और एक हासिद	599
580	अमीर काबुल का एक फैसला	601
581	अदालते इस्लाम	603

दसवाँ बाब
मुख़्तलिफ़ हिकायात

583	मौलूद शरीफ	605
584	शहीद ज़िन्दा हैं	605
585	गाय की बछेरी	606
586	इंसाफ़	607
587	बदला	608
588	नहूसते ज़ुल्म	609
589	नीयत का फल	609
590	सदक़े की बर्कत	610
591	संगदिल हाकिम	610
592	जज़े व फज़े	611
593	तोती का पैग़ाम	611
594	दाना की खामोशी	612
595	नादान की खामोशी	613
596	दुश्मन की नेकी	613
597	दुश्मन का वबाल	614
598	सलतनत व गुर्बत	614
599	ईसार का बदला	615
600	अता बुज़र्गान	616
601	वली की क़ब्र पर	616
602	बरसाती नाला	617
603	कफ़नी लिखने का फायदा	617
604	ताज़ीम व तकरीम	618
605	अंगूर का हदया	619
606	ख़िज़्र अलेहिस्सलाम	620
607	जिन्न का क़त्ल	620
608	सलतनत की क़ीमत	621
609	शरावी का अंजाम	622
610	पत्थर और फूल	622
611	मेहनत व मज़दूरी	623
612	छुहारे का दरख़्त	623
613	अब्दुल करीम	623
614	हिकमत	624
615	पाखाने का कीड़ा	625
616	अंधा परिंदा	626
617	चोर पकड़े गए	626
618	शऊबाना	627
619	ईंट की कहानी	627
620	बे सिबाती दुनिया	628
621	पुर असरार फक़ीर	629
622	दुनिया परस्त का अंजाम	630
623	मोहलिक दुनिया	633
624	माले दुनिया	634
625	गधा और शाही घोड़े	635
626	शेर की खाल में गधा	635
627	हलवा	636

Scanned by CamScanner

628	रुपों की थैली	636
629	उक़्दत-उल-ममसूख़	638
630	हारून रशीद और उसकी लौंडी	639
631	बनान तुफैली	640
632	युज़िल्ला बिही कसीरन	641
633	मुर्ग़ी की तक़सीम	642
634	चार ज़हीन भाई	643
635	क़ुरआन से जवाब देने वाली औरत	645
636	हसीन लौंडी	649
637	तीन लौंडियाँ	650
638	दो लौंडियाँ	650
639	छः ज़हीन औरतें	651
640	औरत का फ़रेब	653
641	फैशन ऐक्ल धोका	654
642	ज़न मुरीद	655
643	लकड़ी की औरत	656
644	हीरे की तलाश	657
645	जामओ जवाब	659
646	हथैली के बाल	660
655	गवाह	671
656	मेहनत का फल	671
657	दुश्मने रसूल	672
658	मरने से डरना	673
659	हिसाब	673
660	आबादी	674
661	चार बुज़र्ग	674
662	एक बूढ़ा शेर	676
663	आईना-ए-हक़ नुमा	677
664	तवक्कल	678
665	क़ीमती पियाला	679
666	पुल सिरात	679
667	अद्ल व इंसाफ	680
668	रस्ता	681
669	नामे अक़्दस	681
670	दुनयवी मेहबूब	682
671	चालाक औरत	683
672	हज़रत अबु सईद रहमत-उल्लाह अलेह	685
673	मर्दे ज़ाकिर	686
674	तीन तीर	687
675	हल्वा फरोश	688
676	चालाक लोमड़ी	689
677	इत्तिफ़ाक़	690
678	दिल की बात	691
679	दूरदराज़ से	692
680	हक़ हक़ हक़	693
681	फिरऔन की हलाकत	693
682	गाय	695
683	एक राहिब का ख़्वाब	695
684	राहिब के सवालात	696
685	नफ़्स की मुख़ालफत	698

हिस्सा चहरम
दसवाँ बाब
मुख़्तलिफ हिकायात

647	सफ़ेद साँप	662
648	उमरो बिन जाबिर (रज़ि०)	663
649	सर्फ़ रज़ी अल्लाहो अन्ह	664
650	ख़ौफनाक वादी	664
651	मुबल्लिग़ जिन्न	666
652	बिछड़ों का मिलाप	667
653	आरिफ़ा	670
654	ना अहल	670

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

लक़द काना फी क़सासीहिम इबरातुन लिऔलियल अलबाब

(बेशक उनके क़िस्सों में इबरत है समझदारों के लिए-पारा: 13, रूकू: 6)

मुसतनिद और सबक़ आमोज़

सच्ची हिकायात मुकम्मल

हिस्सा सोम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिल करीम

आठवाँ बाब

औलिया इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन

हिकायत नम्बर(409) हज़रत उवैस क़ुरनी(र०अ०)

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के विसाल शरीफ का वक़्त आया तो सहाबा इक्राम अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह! आपका पीरहन मुबारक हम किस को दें? हुज़ूर ने फ़रमाया। उवैस क़ुरनी को। चुनाँचे हुज़ूर के विसाल शरीफ के बाद हज़रत उमर और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्हुमा आपका पीरहन मुबारक लेकर, यमन में आए। और लोगों से दरयाफ़्त किया। के यहाँ क़ुर्न का कोई शख़्स है। लोगों ने कहा। हाँ है। हज़रत उमर ने हज़रत उवैस क़ुरनी की ख़बर पूछी। तो उन्होंने बताया के हम उसे नहीं जानते। हाँ इतना ज़रूर जानते हैं के इस नाम का एक शख़्स आबादी से दूर बाहर जंगल में रहता है। और लोग उसे दीवाना कहते हैं। हज़रत उमर ने फ़रमाया के हमें उसी के पास ले चलो। चुनाँचे हज़रत उमर और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्हुमा को वहाँ ले जाया गया। ये दोनों बुज़ुर्ग जब वहाँ गए तो

Scanned by CamScanner

उन्होंने देखा के हज़रत उवैस नमाज़ पढ़ रहे हैं। हज़रत उमर व हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्हुमा वहाँ बैठ गए। हज़रत उवैस ने जब नमाज़ ख़त्म की तो हज़रत उमर व हज़रत अली ने अस्सलाम अलेकुम कहा। और हज़रत उवैस ने व अलेकुम अस्सलाम जवाब दिया। फिर हज़रत उमर ने नाम दरयाफ़्त किया तो हज़रत उवैस ने बताया मेरा नाम उवैस है। फिर हज़रत उमर ने फ़रमाया के अपना दाहिना हाथ दिखाओ। तो आपने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया। हज़रत उमर ने उस हाथ में वो निशानी देख ली। जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने बताई थी। हज़रत उमर ने उसका हाथ का बोसा दिया और फ़रमाया के मुबारक हो के हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने आपको सलाम फ़रमाया है। और अपना पीरहन मुबारक आपके वास्ते भेजा है। और वसीयत की है के मेरी उम्मत के वास्ते दुआ कीजिए। हज़रत उवैस रज़ी अल्लाहो अन्ह ये पैग़ामे रहमत सुनकर आलमे वज्द में आ गए और पीरहन मुबारक लेकर एक तरफ़ फासले पर चले गए और सज्दे में गिर कर दुआ करने लगे। ऐ इश्क़ व मोहब्बत के बनाने वाले और ऐ अपने हबीब के चाहने वाले! तेरे मेहबूब ने अपना जामा पाक मुझ शीफ़्ता व शीदा फक़ीर बेसरोपा को भेजा है। अगर इजाज़त हो तो ये फक़ीर इसे पहन ले आवाज़ आई के हाँ। पहनो। अर्ज़ किया ऐ मौलाऐ ग़फ़ूरो रहीम! मैं इस पीरहन मुबारक को इस वक़्त तक ना पहनूंगा जब तक के तू अपने मेहबूब की कुल उम्मत को ना बख़्श दे। इर्शाद हुआ हमने चन्द हज़ार को बख़्श दिया। अर्ज़ किया। इलाही सब उम्मत को बख़्श इर्शाद हुआ जिस क़द्र इस पीरहन मुबारक के तार हैं। उसे दुगने सह गुने हिस्से को बख़्श दिया। अर्ज़ किया इलाही जब तक सारी उम्मत को ना बख्शेगा मैं ये पीरहन ना पहनूंगा। निदा आई। मैंने और भी कई हज़ार को बख़्श दिया। अर्ज़ किया। मैं तो सबको चाहता हूँ। इसी तरह राज़ो नियाज़ की बातें हो रही थीं के इसी हालत में हज़रत अली और हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्हुमा वहाँ तशरीफ़ ले आए। आप ने उनको देखकर फ़रमाया के आप क्यों आ गए। मैं ये पीरहन हर गिज़ ना पहनता। जब तक के सारी उम्मत को ना बख़्शवा लेता। फिर आपने इस पीरहन मुबारक को पहना और फ़रमाया के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उम्मत मेरी शफाअत और इस पीरहन की बर्कतें

Scanned by CamScanner

से रबीआ और मुज़िर की भेड़ों के बालों के बराबर बख़्श दी गई है। फिर हज़रत उवैस फर्त मुसर्रत से रोने लगे।

हज़रत उवैस की ये शान और ये अंदाज़ देखकर हज़रत उमर और हज़रत अली भी रोने लगे। और फिर हज़रत उवैस से दरयाफ़्त किया के बावजूद इस ग़ल्बा-ए-शौक़ और वलवला इश्तियाक़ के दीदारे जमाल मेहबूब से कौन से सबब मानअे हुआ? और आपने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मुलाक़ात क्यों नहीं की? हज़रत उवैस ने जवाब दिया के आप ने हुज़ूर को देखा है अगर आपने इस महबूब का जमाल जहाँ आरा देखा है तो फ़रमाईये के मेहबूबे पाक के वो अबरूऐ पाक आपस में मिले हुए थे या कुशादा थे। इत्तिफाक़ देखिये के हज़रत उमर व हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्हुमा उस वक़्त उसका जवाब ना दे सके। और हज़रत उवैस ने अबरूऐ पाक की पूरी पूरी नूरानी तसवीर खींच कर बता दी और फ़रमाया मैं अगरचै बज़ाहिर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर नहीं हुआ मगर जलवा-ए-मेहबूब किसी वक़्त मुझ से अपनेहाँ नहीं रहा। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 24)

सबक़:- हज़रत उवैस क़ुरनी रज़ी अल्लाहो अन्ह की बहुत बड़ी शान है। आप अगरचै बज़ाहिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत शरीफा से मुशर्रफ नहीं हुए लेकिन इश्क़ व मोहब्बत की बदौलत बातिनी आँखों से आप हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के जमाल जहाँ आरा से मुशर्रफ हो चुके थे ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम इश्क़ व मोहब्बत और बातिनी आँख वालों के सामने हाज़िर व नाज़िर हैं और हक़ीक़त यही है के.....

दीदा-ए- कोर को क्या आए नज़र क्या देखे
आँख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे

और ये मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बदन अनवर से मस शुदा पीरहन अनवर की बर्कतों और बुज़ुगों की दुआओं से हम गुनाहगारों की निजात हो जाती है।

फायदा:- जिस खुश क़िस्मत शख़्स ने ब-नज़र ईमान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उन ज़ाहिरी आँखों से ज़ियारत की हो। या जिस साहबे ईमान पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की

Scanned by CamScanner

नज़र मुबारक पड़ गई हो। वो "सहाबी" है और जिसने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तो ज़ियारत ना की हो और उनके सहाबी को देखा हो वो ताबई है। इस मानी में हज़रत उवैस रज़ी अल्लाहो अन्ह ताबई हैं और हज़रत उवैस रज़ी अल्लाहो अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने "ख़ैर-उल-ताबईन" फ़रमाया है। (मिशकात शरीफ, सफ़ा 574)

2- हज़रत उवैस रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ज़माने ही में थे। लेकिन वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में इसलिए हाज़िर ना हो सके के आपकी वालिदा बूढ़िया और ज़ईफा थीं। और उनको छोड़कर कहीं जा ना सके थे। (हाशिया मिशकात सफ़ा मज़कूर)

3- चूंके हज़रत उवैस रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर ना हो सके थे इसलिए इस खयाल से के हज़रत उवैस इस बात का खयाल ना फ़रमाईं हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत उवैस की दिलजोई के लिए अपने सहाबा से यूं फ़रमाया के *मन लक़ीहू मिनकुम फलयसतग़फिर लकुम* यानी तुम में से जो शख़्स उनसे मिले तो अपने लिए उनसे मग़फिरत की दुआ कराऐ। गोया उनकी अज़मत शान को बयान फ़रमा दिया।

हिकायत नम्बर(410) मातियों का सौदागर

हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा इब्तिदा में मोतियों और जवाहरात के सौदागर थे। क़िस्म क़िस्म के मोती और जवाहरात की आप तिजारत करते और बड़े बड़े बादशाहों के पास जवाहरात तोहफा में ले जाकर पेश करते थे। एक दफा कुछ जवाहरात हरकुल बादशाह रोम के पास लेकर गए। पहले वज़ीर से मिले। और अपने आने का और आदशाह की ख़िदमत में तोहफा लाने का हाल बयान किया। वज़ीर ने कहा। कल तो बादशाह को एक निहायत ज़रूरी काम है असलन फ़ुरसत ना होगी। और काम देखने के क़ाबिल है। हज़रत हसन ने कहा के मैं ज़रूर देखूंगा। वज़ीर ने हज़रत हसन को ले जाकर एक जगह मैदान में ठहराया। मैदान में एक ख़ैमा ज़री का

Scanned by CamScanner

क़ायम था। उसके आस पास आला दर्जे की मख़मल का फर्श था ख़ैमे की तनाबीन ज़री की थीं। उसकी चौबें चाँदी की थीं। मेखें सोने की थीं। निहायत क़ाबिल दीद मंज़र था। वज़ीर ने हज़रत हसन को ख़ैमा के अक़ब में चिलमन के पीछे खड़ा किया। के जिस जगह से हज़रत हसन ने सारा तमाशा देख लिया। लेकिन वो ख़ैमा दरअसल शाह हरकुल के अज़ीज़ फ़रज़ंद की क़ब्र पर खड़ा था। और आज उसकी सालाना बर्सी का दिन था। बादशाह सालाना रसम ताज़ीयत अदा करने यहाँ आया था। हज़रत हसन ने देखा के पहले एक जमात मुक़द्दस इसाई लोगों की ख़ैमा के अन्दर आई। और क़ब्र के पास खड़े होकर कुछ पढ़ने लगे और फिर रोते हुए निकल कर चले गए। उसके बाद एक जमात तबीबों की और बड़े बड़े ज़ी अक़्ल लोगों की आई। ये लोग भी नंगे सर। क़ब्र के पास खड़े रोते रहे। और थोड़ी देर के बाद निकल कर चले गए। उनके बाद फौज के अफसरों की जमात नंगी तलवारें लेकर ख़ैमा के अन्दर आई वो भी क़ब्र की सलामी उतार कर नाकाम वापस गई। फौजी लोगों के बाद एक झुंड नोजवान औरतों का आया। जिनके सर के बाल खुले हुए थे। उनके हाथों में सोने की थालियाँ थीं। जिनमें मोती और जवाहरात भरे थे। इन औरतों ने क़ब्र का तवाफ किया और बहुत रोकर ये भी ख़ैमे से बाहर चली गईं। इन सबके बाद बादशाह खुद खैमे के अन्दर आया और कब्र के पास खड़ा होकर कहने लगा। बेटा! तू मुझे बहुत प्यारा था। मगर अफसोस के तू मर गया। अगर मुझे ये मालूम हो जाए के जिसने तेरी जान ली है वो उन बड़े बड़े राहिबों और पाद्रियों का कहा मान कर तेरी जान वापस कर देगा तो ये बड़े बड़े इसाई राहिब इस काम के लिए तेरे पास हाज़िर हैं। मगर मैं जानता हूँ के उनके कहने से कुछ ना होगा। अगर मुझे ये मालूम हा जाए के अक़्लमंदों और तबीबों की तदबीर करने से तेरी जान खुदा तुझे बख़्श देगा तो ये बहुत बड़ी जमात तबीबों और बड़े बड़े अक़्लमंदों की तेरी क़ब्र के पास खड़ी है। और तेरी रिहाई की तदबीरें करने को मौजूद है। मगर मैं जानता हूँ के तुझे ऐसे ज़बरदस्त ने मारा है के उसके सामने किसी की तदबीर नहीं चलती। ऐ फ़रज़ंद! अगर मुझे ये मालूम हो जाए के जिसने तेरी जान निकाली है। वो किसी बड़ी फौज से डर तुझे छोड़ देगा तो ये कसीर फौज और फौज के अफ़्सर तुझे क़ैद से छुड़ाने को तेरी क़ब्र के पास मौजूद हैं।

Scanned by CamScanner

लेकिन जिसने तुझे क़ैद किया है वो ऐसा ज़बरदस्त खुदा है के कोई फौज उसके सामने कोई हस्ती नहीं रखती। ऐ फ़रज़ंद अगर ये मुझे मालूम हो जाए के जिसने तुझे मारा है वो हसीन और खूबसूरत औरतों का तालिब है और हसीन औरतें लेकर तुझे छोड़ देगा तो ये खूबसूरत औरतों की जमात हाज़िर है। मगर मैं जानता हूँ के ना वो हसीन औरतों का तालिब है। ना माल व जवाहर का ख़्वास्तगार है और अब वो तुझे किसी तरह ना छोड़ेगा। इसलिए अब मैं तुझ से फिर एक साल के लिए रूख़्सत होता हूँ ये कहकर बादशाह ख़ैमे से बाहर निकल आया। और सब लोग क़ब्र के पास से रूख़्सत हुए। हज़रत हसन ने ये वाक़ेया देखा तो दिल पर ऐसा असर पड़ा के दुनिया से तबीयत यक लख़्त हट गई। और आपने आईंदा दुनिया के जवाहरात बैचने छोड़ कर आख़िरत के जवाहरात ख़रीदने शुरू कर दिए और दुनिया के जुमला कारोबार से अलग होकर इस फिक्र में पड़ गए के आख़िरत का ज़ादे राह मोहय्या करें। और बसरे में आकर क़सम खाई के अब इस दुनिया में हंसूंगा नहीं। और फिर इबादत व मुजाहेदा में कुछ इस तरह मशग़ूल हो गए के इस ज़माने में कोई वैसा ना था। और 70 बरस तक ता दम ज़ीसत बे वज़ू ना रहे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 76-77)

सबक़:- अल्लाह तआला बड़ी ताक़त और क़ुद्रत का मालिक है। उसके मुक़ाबले में बड़े बड़े दाना व तबीब और बड़ी बड़ी फौजें और बड़े बड़े लश्कर कुछ भी हैसियत नहीं रखते। और उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते और ये भी मालूम हुआ के चाहे कितना बड़ा आदमी क्यों ना हो। एक दिन उसे मरना ज़रूर है। और मौत के आने में अमीर व ग़रीब सब बराबर हैं। बक़ौल शायर....

कितने मुफलिस हो गए कितने तवंगर हो गए
ख़ाक में जब मिल गए दोनों बराबर हो गए

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले इस दुनियाऐ फानी के वाक़ेयात से इब्रत हासिल करते और अपनी आक़बत संवारने की फिक्र में रहते हैं।

हिकायत नम्बर(411) जिनों में वाज़

हज़रत अब्दुल्लाह का बयान है के मैं एक रोज़ सुबह उठा ताके जमात

Scanned by CamScanner

के साथ नमाज़ पढ़ूं। मैं हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह की मस्जिद के दरवाज़े पर आया। दरवाज़ा बन्द था। और हज़रत हसन दुआ माँग रहे थे और लोग आमीन कह रहे थे। मैंने अपने दिल में कहा के शायद हज़रत हसन के अहबाब यहाँ मौजूद हैं। मैं थोड़ी देर ठहरा रहा। यहाँ तक के सुबह हो गई मैंने दरवाज़े पर हाथ रखा। दरवाज़ा खुल गया। मैं अन्दर गया तो हज़रत हसन को अकेला पाया। मैं हैरत में रहा और जब नमाज़ से फारिग़ हुआ तो वो क़िस्सा उनसे बयान किया। और मैंने कहा के खुदा के वास्ते मुझे इस हाल से ख़बरदार कीजिए के आमीन कहने वाले कौन थे। आपने फ़रमाया के किसी से मत कहना। मैंने हर जुमआ की रात जिनों में वाज़ कहने लिए मुक़र्रर कर रखी है। वो हर जुमअे की रात को यहाँ आते हैं और मैं उनके सामने वाज़ कहता हूँ और फिर दुआ माँगता हूँ और वो आमीन कहते हैं। (तज़करह औलिया, सफ़ा 36)

सबक़:- अल्लाह वालों की बहुत बड़ी शान है। यहाँ तक के जिन्न भी उनके ग़ुलाम होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के किसी नेक काम के लिए कोई दिन या रात मुक़र्रर करना बिदअत नहीं बल्के जायज़ है।

झर्रे में एक हाफिज़ क़ुरआन रहते थे। जिनका नाम अबु उमरो था। ये लोगों को पढ़ाया करते थे एक रोज़ एक बे दाढ़ी मूंछ का खबसूरत लड़का उनके पास आया। और कहा मुझे भी क़ुरआन पढ़ाहिये। अबु उमरो ने उसकी तरफ़ ख़ियानत की नज़र से देखा। तो उसकी पादाश में उन्हें सारा क़ुरआन भूल गया। अबु उमरो बड़े घबराए और परेशानी के आलम में हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सारा क़िस्सा अर्ज़ करके तालिबे दुआ हुए। हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह ने फ़रमाया के हज का ज़माना क़रीब है। जाओ जाकर हज कर लो। और जब हज कर चुको तो मस्जिदे ख़ीफ में जाना। वहाँ तुम्हें एक बूढ़े शख़्स मिलेंगे जो मेहराब में बैठे होंगे। उनकी ख़िदमत में हाज़िर होना और उनके वक़्त ज़ाए ना करना जब वो अपने अवरादो वज़ायफ से फारिग़ हो जायें उस वक़्त अपनी अर्ज़ पेश करना और दुआ के लिए कहना। अबु उमर ने ऐसा ही किया।

Scanned by CamScanner

और हज करके मस्जिदे ख़ीफ मे पहुँच गए वहाँ मेहराब में वाक़ई एक ज़ी शौक़त नूरानी और पुर जलाल बूढे को बैठा हुआ पाया जिनके इर्दगिर्द बहुत से आदमी बैठे थे। ये भी उन आदमियों में बैठ गए। थोड़ी दर गुज़री तो एक बुज़ुर्ग सफेद और पाकीज़ा लिबास पहने वहाँ आए। लोग उनके सामने गए और सलाम किया। और आपस में बात चीत करते रहे। और जब नमाज़ का वक़्त आया तो वो बुज़ुर्ग चले गए। और लोग भी उनके हमराह चले ग़ए। और बूढ़े बुज़ुर्ग तनहा रह गए। अबु उमरो आगे बढ़े। और उनको सलाम करके अपना सारा क़िस्सा बयान किया। और रोते हुए अर्ज़ किया के मेरी फ़रयाद को पहुँचिये और मेरी छीनी हुई दौलत (हिफ़्ज़ क़ुरआन) मुझे वापस दिलाईये। वो बूढ़े शख़्स ग़मनाक से हुए। और फिर कुन अखियों से आसमान की तरफ़ नज़र की। अभी उन्होंने नज़र नीचे ना की थी के अबु उमरो पर सारा क़ुरआन फिर कशफ हो गया। अबु उमरो मारे खुशी के उनके क़दमों में गिर गए। वो बूढ़े बुज़ुर्ग पूछने लगे के तुझे मेरा पता किस ने बताया था? अबु उमरो ने जवाब दिया के हज़रत हसन बसरी ने। वो बोले। हसन बसरी ने हमें रूसवा किया। और हमारा पर्दा फाश किया। अब हम उसको रूसवा करेंगे और उसका पर्दा फाश करेंगे। फिर फ़रमाया के तुम ने इस बुज़ुर्ग को देखा? जो ज़ोहर की नमाज़ से पहले यहाँ आए थे। जिनका सफेद और पाकीज़ा लिबास था। और जो सबसे पहले चले गए थे। अबु उमरो ने कहा! हाँ देखा था। फ़रमाया वो हसन बसरी ही थे। हर रोज़ नमाज़ ज़ोहर बसरा में पढ़कर यहाँ आते हैं। और हम से बात चीत करते हैं और दूसरी नमाज़ के वक़्त बसरा चले जाते हैं। फिर फ़रमाया के जिसका इमाम हसन बसरी जैसा हो। उसको हमारी दुआ की क्या हाजत है। (तज़करह औलिया, सफ़ा

सबक़- मुश्किल के वक़्त बुज़ुर्गों की ख़िदमत में हाज़िर होकर फ़रयाद करने से और बुज़ुर्गों की दुआ से बड़ी बड़ी मुश्किलें हल हो जाती हैं और ये भी मालूम हुआ के बदनिगाही से बड़ी बड़ी आफतें नाज़िल हो जाती हैं। और इल्मे दीन भी सलब हो जाता है....

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले अपने कमालात को छुपाते हैं।

Scanned by CamScanner

और बावजूद उलू शान के तवाज़ो इख़्तियार फ़रमाते हैं। उन्हें अपनी बड़ाई का खयाल तक नहीं आता। बलके वो दूसरे बुज़ुर्गों को ही बड़ा समझते हैं। और ये भी मालूम हुआ के सेंकड़ों मील की मुसाफत ये अल्लाह वाले पल भर में तय करते हैं। फिर जो लोग एक मील तक का भी सफर ना कर सकते हों। वो उन पाक लोगों के मिस्ल कैसे हो सकते हैं।

हिकायत नम्बर(413) आतिश परस्त शमऊन

हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह के पड़ोस में एक आतिश परस्त शमऊन नामी रहता था। वो एक बार बीमार पड़ गया। और क़रीब-उल-मर्ग हो गया। हज़रत हसन को इसकी बीमारी का पता चला तो आप उसके पास पहुँचे। आपने देखा आग उसके पास सुलग रही है और वो आग धूएँ से काला पड़ गया है। आपने फ़रमाया के खुदा से डर और मुसलमान हो जा। सारी उम्र तूने आग और धूएँ की परसतिश की। अब दीने इस्लाम को आज़मा। शायद खुदा तुझ पर रहम फ़रमाए। शमऊन ने कहा। के दीन इस्लाम की सदाक़त की कोई निशानी दिखाईये। आपने फ़रमाया। देख तूने सत्तर बरस आग की पूजा की। और मैंनें एक रोज़ भी उसको नहीं पूजा। अब मैं और तुम दोनों आग में अपना अपना हाथ डालते हैं और फिर देखते हैं के आग किस का जलाती है और किस को छोड़ती है। चाहिए तो ये के इसका पुजारी है। इसलिए वो तुझे ना जलाए और मैं उसका पुजारी नहीं इसलिए वो मुझे जला दे। मगर मुझे अपने अल्लाह से उम्मीद है के आग मुझे हर गिज़ ना जलाएगी अगर तुम मेरे खुदा की कुद्रत और इस आग की कमज़ोरी को देखना चाहते हो तो लो देख लो ये कह कर आपने अपना हाथ जलती आग में डाल दिया। और देर तक उसमें डाले रखा। शमऊन ने देखा के आपका हाथ बिलकुल नहीं जला। ये मंज़र देख कर शमऊन बेक़रार हुआ। और खुदा की मोहब्बत का नूर उसकी पैशानी से चमकने लगा और अर्ज़ करने लगा अब तक पूरे सत्तर बरस मैंने इस आग की पूजा की है और अब चन्द सांस बाक़ी हैं तो इसमें मैं आपके खुदा की क्या इबादत कर सकता हूँ? हज़रत ने फ़रमाया तो उसकी फिक्र ना कर। कलमा पढ़ ले। तो मेरा खुदा फौरन राज़ी हो जाएगा और पिछले सत्तर बरस की आग की सारी परसतिश माफ फ़रमाएगा। शमऊन ने कहा अगर आप एक इक़्रार नामा लिख दें के हक़ तआला मुझे अज़ाब ना देगा तो मैं ईमान ले आता हूँ। हज़रत हसन ने एक इक़्रार नामा लिख दिया और शमऊन को दे दिया। शमऊन ने वो इक़्रार नामा लिया और कलमा पढ़कर मुसलमान

Scanned by CamScanner

हो गया। और फिर हज़र हसन को वसीयत की के जब मैं मर जाऊँ तो गुस्ल देने के बाद आप खुद मुझे क़ब्र में उतारें और ये इक़्रार नामा मेरे हाथ में रखना ताके कल क़यामत के दिन में ये दिखा कर अज़ाब से बच जाऊँ। फिर कलमा शहादत पढ़ा। और शमऊन मर गया। हज़रत ने उसकी वसीयत के मुताबिक़ किया और बहुत से लोगों ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। उस रात हसन बसरी मतलक़ ना सोए और सारी रात नमाज़ पढ़ते रहे और अपने दिल में कहते रहे के मैंने क्या किया मैं तो खुद अपनी जायदाद पर क़ुद्रत नहीं रखता। फिर खुदा की मलिक पर मैंने कैसे मोहर कर दी और इक़्रार नामा लिख दिया। इसी ख़याल में सो गए तो शमऊन को देखा के ताज सर पर रखे और नूरानी लिबास पहने बहिश्त के बाग़ों में टहल रहा है। हज़रत हसन ने दरयाफ़्त किया के ऐ शमऊन! क्या हाल है? उसने कहा आप क्या पूछते हैं। हक़ तआला ने मुझ पर बड़ा फज़्ल फ़रमाया है और एक बहुत बड़े महल में उतारा है। और अपना दीदार भी अता फ़रमाया है। और जो जो मेहरबानियाँ मुझ पर फ़रमाई हैं के मुझ में ताक़त नहीं के बयान कर सकूं ऐ हसन! अब आपके ज़िम्मे कुछ बोझ ना रहा। आपका इक़्रार नामा बड़े काम आया। अब ये लीजिए अपना इक़्रार नामा। क्योंके अब इसकी ज़रूरत नहीं। ये कहकर वो इक़्रार नामा उसने हज़रत हसन बसरी को दे दिया। हज़रत हसन बसरी जब बैदार हुए तो वो इक़्रार नामा उनके हाथ में था। (तज़्करह औलिया, सफ़ा 39-40)

सबक़:- अल्लाह वाले जब किसी बदकार गुनहगार और काफिर नाहिंजार की तरफ़ भी तवज्जह फ़र लें तो उसका बैड़ा पार हो जाता है और वो जन्नत का हक़दार बन जाता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले जब किसी बात का अहेद व इक़्रार कर लें अल्लाह तआला अपने वली के अहेद व इक़्रार सच्चा कर देता है। और जो बात उनके मुंह से निकल जाए वो पूरी कर देता है। फिर जो उन वलियों और नबियों के भी आक़ा व मौला और सरदार हैं। यानी हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम वो क्यों ना जन्नत के मालिक व मुख़्तार होंगे और उनकी ये शान क्यों ना होगी? के वो जिस चाहें जन्नत में दाख़िल कर दें और जिसे चाहें जन्नत से निकाल दें।

हिकायत नम्बर(414) दजले के किनारे

हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ दजले के किनारे

Scanned by CamScanner

जा रहे थे के एक हबशी को देखा जो अपने पास एक औरत को लिटाए हुए एक बोतल से खुद भी कुछ पी रहा था और उस औरत को भी पिला रहा था।

हज़रत हसन के दिल में ख़याल गुज़रा के उस शख़्स से अच्छा मैं ही हूँ। जो ऐसी हरकत का मुरतकिब नहीं हूँ। ये शख़्स औरत के साथ शराब पी रहा है और शराब की बोतल आगे रखी है। इसी फिक्रो खयाल में थे के एक कश्ती असबाब से भरी हुई दरया में आई जो चक्कर खाकर डूब गई। उस पर दस आदमी भी सवार थे। वो दसों ग़ौते खाने लगे इस हबशी ने जो ये मंज़र देखा तो झट उठा। और दरया में कूद कर एक एक को निकालने लगा। हत्ता के नौ आदमी उसने निकाल लिए और फिर हज़रत हसन बसरी को मुख़ातिब करके कहने लगा.....

ऐ हसन बसरी ऐ मर्द बा कमाल
मुझ से अच्छा है तो दसवाँ तू निकाल

ऐ मुसलमानों के इमाम! बदगुमानी अच्छी नहीं। ये औरत मेरी माँ है और इस बोतल में पानी है। हज़रत हसन उसके क़दमों में गिर गए और माज़रत तलब करने लगे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 40)

सबक़:- जब तक किसी बात का यक़ीन ना हो। किसी के हक़ में बदगुमानी ना करना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की नज़र से दिल के ख़याल भी पौशीदा नहीं रहते।

हिकायत नम्बर(415) ग़ीबत का बदला

हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह से किसी शख़्स ने आकर कहा के फलाँ शख़्स ने आपकी ग़ीबत की है। हज़रत हसन बसरी ने उसी वक़्त ताज़ा छुहारे मंगवाए। और एक तबाक़ में रखकर उन्हें इस शख़्स के पास बतौर तोहफा भेजा और कहला भेजा के मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ के आपने मेरी ग़ीबत करके अपनी नीकियों को मेरे दफ़्तर आमाल में मुनतक़िल कर दिया है। आपके इस एहसान का बदला मैं चुका नहीं सकता। ताहम ये हक़ीर सा तोहफा क़बूल फ़रमाईये। वो शख़्स हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा के इस सलूक को देखकर बहुत शर्मिंदा हुआ और ख़िदमत में हाज़िर होकर माफी चाही।

सबक़:- किसी की ग़ीबत करने से सरासर अपना ही नुक़सान है और जिसकी ग़ीबत की जाए वो फायदे में रहता है। और वो इस तरह के ग़ीबत करने वाले की नेकियाँ उसको मिल जाती हैं। लिहाज़ा ग़ीबत से बचना

Scanned by CamScanner

चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के नेक बन्दे बुराई का बदला बुराई से नहीं देते बल्के बुराई के बदले भी नेकी ही करते हैं।

हिकायत नम्बर(416) दहरिये से मुनाज़रा

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमत उल्लाह अलेह का एक बार एक दहरिये से मुनाज़रा हुआ। गुफ़्तगू बढ़ गई और बात यहाँ आकर ख़तम हुई के इस दहरिये का हाथ और हज़रत मालिक बिन दीनार का हाथ दोनों के हाथों को यकजा बाँध कर आग में डाला जाए फिर देखा जाए के आग किस के हाथ को जलाती है और किस के हाथ को छोड़ देती है जिस के हाथ को आग छोड़ दे वो सच्चा और जिसके हाथ को जला दे वो झूटा है चुनाँचे दोनों हाथ बाह मिलाकर बाँधे गए और आग में डाले गए। खुदा की क़ुद्रत से ऐसा हुआ के दोनों में से किसी का हाथ ना जला। बल्के आग सर्द हो गई। और दोनों बच गए। हज़रत मालिक बिन दीनार रहमत-उल्लाह अलेह ये वाक़ेया देखकर बड़े परेशान हुए। और सज्दे में गिर कर मनाजाता की। के इलाही! ये क्या किस्सा है। ग़ैब से आवाज़ आई के ऐ.....मालिक! दहरिये का हाथ तेरे हाथ के साथ मिला हुआ बाँधा गया है और तेरे हाथ के साथ साथ आग में डाला गया है। और जो चीज़ तेरे हाथ से लग जाएगी हम उसे भी ना जलाऐंगे। दहरिये का हाथ हलने से अगर बजा है तो तुम्हारे ही हाथ की बर्कत से तुम अपना हाथ अलग और उसका हाथ अलग आग में डालो। फिर तमाशा देखो। चुनाँचे फिर दूसरी मर्तबा ऐसा ही किया गया। तो हज़रत मालिक का हाथ तो मेहफ़ूज़ रहा और दहरिये का हाथ हल गया। और उसका झूटा होना ज़ाहिर हो गया। (तज़करह औलिया, सफ़ा 50)

सबक़:- अल्लाह वालों की सोहबत और उनके हाथ में हाथ दे देने की बर्कत से गुनहगार निजात पा जाता है और उनसे अलेहदा होने में नुक़सान व खसरान के सिवा कुछ हासिल नहीं होता। इसी लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है *कूनूअ मआस्सादीक़ीन।* और मौलाना रूमी अली अर्रहमा भी फ़रमाते हैं के...

सोहबत सालेह तिरा सालेह कंद

हिकायत नम्बर(417) यहूदी का परनाला

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमत-उल्लाह अलेह ने एक मकान किराए पर लिया। इस मकान के पड़ोस में एक यहूदी का मकान था। और

Scanned by CamScanner

हज़रत मालिक बिन दीनार का हुजरा सफ़ा यहूदी के मकान के दरवाज़े से क़रीब था इस यहूदी ने एक परनाला बना रखा था। और हमेशा इस परनाले की राह से निजासत हज़रत मालिक के घर में फैंका करता था। उसने मुद्दत तक ऐसा ही किया। मगर हज़रत मालिक ने उसकी शिकायत कभी ना फ़रमाई। आख़िर एक दिन इस यहूदी ने खुद ही हज़रत मालिक से पूछा के हज़रत! आपको मेरे परनाले से कोई तकलीफ नहीं होती। आपने फ़रमाया होती तो है। मगर मैंने एक टोकरी और एक झाड़ू रख छोड़ी है। जो निजासत गिरती है उससे साफ कर देता हू। उसने कहा के आप इतनी तकलीफ क्यों करते हैं? और आपको ग़ुस्सा क्यों नहीं आता? फ़रमाया के मेरे खुदा का क़ुरआन में इर्शाद है के जो लोग ग़ुस्सा पी लेते हैं और लोगों को माफ कर देते हैं वो बड़े अच्छे लोग हैं। यहूदी ने कहा के फिर मुझे कलमा पढ़हाईये। जो दीन ऐसी अच्छी तालीम देता है वो दीन भी बड़ा अच्छा है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 52)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दों की आदत बड़ी ही नेक होती है और वो तकलीफ पहुँचने पर भी ग़ुस्से में नहीं आते और ख़ता कार की ख़ता माफ कर देते हैं। और ये भी मालूम हुआ के इस्लाम अल्लाह वालों के अख़लाक़े हसन्ना से फैला है। बक़ौल शायर

दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा
ना किताबों से ना कालिज के है दर से पैदा

हिकायत नम्बर(418) हबीब अजमी रहमत-उल्लाह अलेह

हज़रत हबीब अजमी रहमत-उल्लाह अलेह शुरू में बड़े मालदार और अपना माल सूद पर अहले बसरा को दिया करते थे। और हर रोज़ अपने लेन देन के तक़ाज़े के लिए जाया करते थे और जब तक के जिनसे कुछ लेना होता वसूल ना कर लेते थे ना टलते थे। और अगर देखते के और कुछ वसूल नहीं होता तो कहते के अच्छा मेरे आने की मज़दूरी दो और इसी से अपना गुज़ारा करते। एक रोज़ अपने माल की तलब के लिए एक घर में गए वो क़रज़दार घर में ना था। उसकी बीवी ने कहा के मेरा ख़ाविंद घर में नहीं। और मेरे पास कुछ नहीं। हाँ मैंने आज एक भेड़ ज़िबह की है उसकी गर्दन मेरे पास है। वो अगर चाहें तो ले जायें। आपने कहा अच्छा वही दे दो। चुनाँचे इस औरत ने वो गर्दन दे दी। और आप वसे सिरी लेकर अपने घर आए और बीवी से कहा के ये सिरी सूद

Scanned by CamScanner

में आई है। पकाओ बीवी ने कहा। रोटियाँ और लकड़ियाँ नहीं हैं। आपने कहा। मैं अभी जाकर सूद में रोटियाँ और लकड़िया लाता हूँ। चुनाँचे गए और इसी तरह पर रोटियाँ और लकड़ियाँ ले आए। बीवी ने हाँडी चढ़ाई जब पक गई तो चाहा के पियाले में निकाले के एक सायल ने दरवाज़े पर आकर सवाल किया और राहे खुदा में कुछ माँगा। हबीब कहने लगे के वापस हो जाओ। इसलिए के तुझे जो कुछ हम देंगे उससे तू अमीर ना हो जाएगा। मगर हम फक़ीर हो जाऐंगे। सायल लौट गया। हज़रत हबीब की बीवी ने जो डोई हांडी में डाली तो क्या देखती है के उसमें सब खून ही खून है। अपने ख़ाविंद को बुलाया और दिखा कर कहने लगी। देखिये ये आपकी बदबख़्ती व शोमी से क्या हो गया। हज़रत हबीब ने ये हाल देखा तो दिल पर एक ऐसा असर हुआ के आपकी हालत फीअलफोर बदल गई। और कहने लगे ऐ मेरी बीवी! तू गवाह रह के मैंने आज हर बुरे काम से तौबा कर ली। फिर आप बाहर निकले ताके क़र्ज़ दारों को तलाश करके अपना माल व ज़र उनसे वापस लें और फिर सूद पर ना चलायें। जुमआ का रोज़ था और लड़के के खेल रहे थे उन लड़कों ने जब हज़रत हबीब को देखा तो आपस में कहने लगे के देखो सूद खौर आ रहा है। अलग हो जाओ ऐसा ना हो के उसके पाँव की गर्द हम पर पड़ जाए। और हम भी इस तरह बदबख़्त हो जाएँ। जब ये आवाज़ हज़रत हबीब के कानों में पहुँची तो बड़े रंजीदा हुए और सीधे हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह की मजलिस में गए। हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा ने तौबा कराई और कुछ पंदो निसायहे बयान फ़रमाए हज़रत हबीब की वहाँ काया पलट गई। और आप वहाँ से अल्लाह के महबूब बनकर निकले वापस आते वक़्त रास्ते में आपका मक़रूज़ आपको देखकर भागा। हज़रत हबीब ने उसे आवाज़ दी। और फ़रमाया। भाई! अब तू मुझ से ना भाग। अब मुझे तुझ से भागना चाहिए। ये कहा और घर की तरफ़ लौटे। रास्ते में फिर वही लड़के खेलते नज़र आए और उन्होंने जब हज़रत हबीब को आते देखा तो आपस में कहने लगे के अलग हट जाओ। हबीब तौबा करके आ रहा है। अब जो हमारी गर्द इस पर पड़ गई तो ऐसा ना हो। के हम गुनहगार हो जायें। हज़रत हबीब ये जुमला सुनकर दिल में कहने लगे। ऐ रब्बे ग़फ़ूर! अजब तेरी रहमत है के आज ही मैंने तौबा की। तूने उसका असर अपनी मख़लूक़ के दिल में पहुँचाया। और मेरी नेक नामी मशहूर कर दी। फिर आपने आवाज़ दी

Scanned by CamScanner

के जिस किसी ने हबीब का कुछ देना हो वो आए और अपनी दसतावेज़ वापस ले जाए। ये आवाज़ सुनकर सब मक़रूज़ जमा हुए। फिर आपने जो माल जमा किया था। सब लोगों को बाँट दिया। यहाँ तक के आपके पास कुछ बाक़ी ना रहा। (तज़करह औलिया, सफ़ा 59)

सबक़:- अल्लाह की रहमत बड़ी वसी है। और गुनहगार जब सच्चे दिल से तायब हो जाए तो उसकी रहमत फौरन उसे अपनी आग़ौश में ले लेती है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला अपने मक़्बूल से मोहब्बत फ़रमाता है तो *वज़आ लहुल क़बूलू फिल अर्ज़ी* के मुताबिक़ खुदाई के दिल में उसकी मोहब्बत व क़बूलियत पैदा फ़रमा दी जाती है और सब उसे चाहने लगते हैं। मसलन हुज़ूर ग़ौस-उल-आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की महबूबियत व मक़्बूलियत का ये आलम है के हमने हिन्दूओं तक को देखा। जो ग़ौस-उल-आज़म के साथ बड़ी अक़ीदत रखते थे। फिर जो शख़्स उन अल्लाह वालों से अक़ीदत ना रखे वो किसी क़द्र बद नसीब है।

हिकायत नम्बर(419) राबिया बसरी

हज़रत राबिया बसरी के वालिद माजिद एक ग़रीब शख़्स थे। उनकी तीन बेटियाँ और भी थीं। और हज़रत राबिया बसरी चौथी बेटी थीं और उनको राबिया इसलिए कहते हैं के राबिया का मानी चौथी औरत के हैं। जिस रात हज़रत राबिया पैदा हुईं उसी रात उनके वालिद के घर में खर्च करने को कुछ ना था वो उसी फिक्र में सो गए के रात को हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई और हुज़ूर ने फ़रमया तुम ग़मगीन मत हो ये लड़की जो तुम्हारे हाँ पैदा हुई है बड़ी बरग़ज़ीदा और मक़्बूल होगी। तुम सुबह अमीर बसरा के पास जाओ एक काग़ज़ पर मेरी तरफ़ से ये लिखकर उसे पहुँचा दो के हर रात तुम जो मुझ(हुज़ूर(स०अ०स०) पर सौ बार दुरूद भेजते हो और जुमअे की रात को चार सौ बार, ये जुमअे की रात जो गुज़र गई है तुम उसमें दरूद पढ़ना भूल गए हो। उसके अवज़ में चार सौ दीनार बतौर कुफ़्फारा इस शख़्स को दे दो। हज़रत राबिया के वालिद जब बैदार हुए तो रोते हुए उठे और हस्ब-उल-इर्शाद एक अर्ज़ी लिखी। और अमीर बसरा के पास पहुँचे और एक दरबान के हाथ वो अर्ज़ी अन्दर भेजी। अमीर वो अर्ज़ी देखकर आलमे वज्द में आ गया और हुक्म दिया के इस

Scanned by CamScanner

शुक्राने में के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझ को याद फ़रमाया है। उसी वक़्त दस हज़ार दरहम फक़ीरों को तक़सीम किए जायें और चार सौ दरहम इस बुज़ुर्ग शख़्स को दिए जायें जो ये पैग़ाम लाया है और उसको कहा जाए के वो अन्दर तशरीफ़ लाए ताके उसकी ज़ियारत करूं। फिर एक दम उठा और कहा मगर ये खिलाफे अदब है के मैं उसे अन्दर बुलाऊँ। मैं खुद उसकी ख़िदमत में हाज़िर होता हूँ और उसकी राह को अपनी दाढ़ी से साफ करता हूँ। चुनाँचे अमीर बसरा खुद बाहर आया और हज़रत राबिया के वालिद के हाथ चूमे और बड़े ताज़ीम व तकरीम से उसे मसनदे शाही पर बिठाया अैर अर्ज़ किया आईंदा जब भी कभी कोई हाजत हो। खुदारा मुझ ही से वो ख़िदमत लिया कीजिए।

सबक़:- हज़रत राबिया बसरी रहमत-उल्लाह अलेहा ऐसी बरगज़ीदा और मक़्बूल हक़ थीं के जिनकी खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने तारीफ फ़रमाई और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों के दम क़दम से घर में बर्कतों और रहमतों का नज़ूल होने लगता है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के हाला से आज भी बा ख़बर हैं और अब भी मोहताजों की मदद फ़रमाते हैं और ये भी मालूम हुआ के दुरूद शरीफ पढ़ना बड़ी बर्कत व रहमत का बाइस है और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम दुरूद पढ़ने वाले को जानते हैं चाहे वो कहीं भी हो और ये भी जानते हैं उसने कितना दुरूद पढ़ा। गोया हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कोई बात भी पौशीदा नहीं। फिर अगर कोई शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म में कलाम करे तो वो किस क़द्र बे इल्म है।

हिकायत नम्बर(420) चोर

हज़रत राबिया बसरी रहमत-उल्लाह अलेहा एक रात नमाज़ पढ़ते पढ़ते थक गईं और इत्तिफाक़न उस रात आपके घर कोई चोर घुस आया और आपके सामान की गठरी बाँध कर उठाई और चाहा के चल दे। मगर ब उसने गठरी उठाई तो अंधा हो गया और रास्ता ना पाया घबराकर उसने गठरी रख दी गठरी रखी तो फिर बीना हो गया। उसने फिर गठरी उठाई। उठाई तो फिर अंधा हो गया गर्ज़ दो तीन बार ऐसा ही हुआ। और फिर इस। हातिफ से एक आवाज़ सुनी के ऐ नादान! अगर एक दोस्त सो रहा है तो दूसरा दोस्त जाग

Scanned by CamScanner

रहा है। बेवकूफ! राबिया ने अपने आपको जब से हमारे सपुर्द कर रखा है इस वक़्त से बिचारे इबलीस को ये कुद्रत हासिल नहीं के वो उसके पास फटके फिर चोर बिचारे की क्या ताक़त है के इस सामान के पास फटके। पस ऐ गिरह कट! निकल यहाँ से वो चोर ये आवाज़ सुन कर वहाँ से भाग गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 77)

हिकायत नम्बर(421) शाहे बलख़

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम रहमत-उल्लाह अलेह बलख़ के बादशाह थे और एक जहाँ आपके ज़ेरे फ़रमान था। जब आप सवार होते थे तो आपके खिद्दाम चालीस ढालें सोने की और चालीस गर्ज़ सोने के आपके आगे और पीछे लेकर चलते थे। एक रात आप अपने शाही बिस्तर पर सो रहे थे। तो आधी रात के वक़्त आपको छत पर आहट मालूम हुई। आपने आवाज़ देकर पूछा के छत पर कौन है? तो किसी ने जवाब दिया के मेरा ऊँट खो गया है। मैं अपना ऊँट तलाश कर रहा हूँ। आपने फ़रमाया के ऐ नादान! ऊँट का छत पर क्या काम क्या कभी ऊँट छत पर भी मिला है? किसी ने जवाब दिया के ऐ ग़ाफिल! तू खुदा को अतलसी लिबास और शाही तख़्त पर ढूंडता है! क्या कोठे पर ऊँट पर ऊँट ढूंडने से ये बात ज़्यादा ताज्जुब की नहीं के शाही ऐशो इशरत और ग़फ़लत के बिस्तर पर खुदा को ढूंडा जाए। हज़रत इब्राहीम ये ग़ैबी आवाज़ सुनकर बड़े मुतास्सिर और हैरान हुए और सुबह जब आप तख़्ते शाही पर बैठे और दरबारे आम हो रहा था तो एक अजनबी और पुर शौकत आदमी दरबार में दाख़िल हुआ। इस पुर शौकत शख़्स का कुछ ऐसा रौब व दबदबा था के उसे अन्दर दाख़िल होते हुए कोई ना रोक सका ये अजनबी जब दरबार में दाख़िल हुआ तो कहने लगा के ये सराये मुझ पसंद नहीं। बादशाह बोला के ये सराये कब है ये तो मेरा महल है इस अजनबी ने पूछा के ये बताओ के आपसे पहले ये महल किस के पास था? बादशाह बोला। मेरे बाप के पास। अजनबी ने पूछा और तेरे बाप से पहले ये महल किस के पास था। बादशाह ने जवाब दिया मेरे दादा के पास अजनबी ने पूछा। आपके दादा से पहले किसके पास था? बादशाह ने जवाब दिया के मेरे दादा के वालिद के पास? अजनबी ने कहा। तो गोया आपसे पहले उसमें आपके वालिद रहते थे। और आपके वालिद से पहले आपके दादा इसमें रहते थे। और आपके दादा से पहले उनके वालिद रहते थे तो ऐ

Scanned by CamScanner

बादशाह! अब खुद ही सोच के सराये और किस को कहते हैं। सराये भी तो वही होती है। जिसमें एक जाए और दूसरा आए ये कहकर वो पुर शिकूह अजनबी बाहर निकल गया और गुम हो गया हज़रत इब्राहीम तख़्त से उतरे और इस अजनबी के पीछे दौड़े यहाँ तक के उसे पा लिया और उससे दरयाफ़्त किया के आप कौन हैं तो उसने जवाब दिया के ख़िज़्र हूँ। हज़रत इब्राहीम के दिल पर इन वाक़ेयात का एक गहरा असर हुआ और दुनयवी सलतनत को ख़ैरबाद कहकर आपने नो बरस तक एक ग़ार में सकूनत इख़्तियार करके बहुत मुजाहिदे और रियाज़तें की और फिर आप आसमानी विलायत के एक दरख़शिंदा सितारे बनकर चुके। मौलाना रूमी अलेह अर्रहमत ने आपका यही वाक़ेया लिखकर फिर ये भी लिखा (तफसील तज़करत-उल-औलिया के सफ़ा 127 पर मुलाहेज़ा करें) है के आप एक दिन दरया के किनारे बैठे अपने हाथ से अपना पीराहन सी रहे थे के वहाँ एक अमीर आदमी का गुज़र हुआ सफ़ा अमीर आदमी ने आपको जब इस हाल में देखा के आप अपने हाथ से अपना पीरहन सी रहे हैं। तो दिल में कहने लगा के उन्होंने सलतनत छोड़ कर इस फक़ीरी में क्या हासिल किया? हज़रत इब्राहीम उसके इस खयाल पर मतलअ हो गए और आपने झट अपने हाथ की वो सूई दरया में डाल दी और फिर बआवाज़ बुलंद फ़रमाया के ऐ दरया की मछलियो! मेरी सूई मुझे वापस ला दो। अमीर ने जब ये वाक़ेया देखा तो मुतअज्जिब हुआ। और सोचने लगा के इतने बड़े दरया में इतनी छोटी सी सूई गिरी हुई भला वापस कैसे मिल सकती है? मगर मौलाना रूमी फ़रमाते हैं के....

सद हज़ाराँ माही इलहय्ये
सोज़न ज़र बरलब हर माहिय्ये
रूबरूआवरदंद अज़ दरयाऐ हक़
के बगीराए शेख़ सोज़न हाय हक़

हज़ारों मछलियाँ अपने अपने मुंह में एक एक सोने की सोई पकड़े हुए दरया से बाहर निकल आईं। आपने फ़रमाया मुझे ये सोइयाँ नहीं चाहियें मुझे तो अपनी सूई चाहिए। चुनाँचे फिर एक छोटी सी मछली अपने मुंह में आपकी सूई पकड़े हुए लाई और आपके आगे रख दी। इस अमीर आदमी ने जब ये करामत देख ली तो....

रूबरू कर्दा बगफ़्तश ऐ अमीर
मुल्क हक़ ब या चुनीं मुल्क फक़ीर

Scanned by CamScanner

आपने इस अमीर की तरफ़ तवज्जह फ़रमा कर फ़रमाया के बताओ मुझे वो हकूमत अच्छी थी या ये हकूमत? (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 104, मसनवी शरीफ)

सबक़:- ऐशो इशरत और ग़फ़्लत की ज़िन्दगी इख़्तियार करके फिर ख़ुदा को पा लेने का ख़याल ख़याले खाम है और ये भी मालूम हुआ के इस सराये फानी दुनिया में अपने पास झोंपड़ी हो या अज़ीम-उश्-शान महल। ना वो हमारे पास हमेशा रहेगा। और ना हम इसमें हमेशा रहेंगे हम मुसाफिरों की तरह इस में चन्द रोज़ रह कर चले जायेंगे। फिर इसमें कोई दूसरा आ जाएगा। फिर वो भी इसमें चन्द रोज़ रहेगा फिर कोई तीसरा आ जाएगा। लिहाज़ा दुनिया में दिल लगाना बहुत बड़ी नादानी है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले दिल के ख़यालात पर भी मतलअ हो जाते हैं। फिर उनका हुक्म व तसर्रूफ दरयाओं और दर की मख़लूक़ पर भी जारी होता है। फिर जिसका इसकी अपनी बीवी पर भी ना चलता हो वो अगर उन अल्लाह वालों के इख़्तियार व तसर्रूफ पर एत्राज़ करे तो उसकी किस क़द्र नादानी है।

हिकायत नम्बर(422) खट्टे अनार

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम तख़्ते शाही छोड़ने के बाद कुछ अर्से के लिए किसी बाग़ की निगहबानी व हिफाज़त के लिए मुलाज़िम हो गए। बाग़ के मालिक को उसका कोई इल्म ना था के ये हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम हैं। एक दिन वो बाग़ का मालिक अपने बाग़ में आया और हज़रत इब्राहीम से कहने लगा जाओ कोई मीठा अनार ले आओ। हज़रत इब्राहीम गए और एक अनार तोड़ कर ले आए। मालिक ने उसे चखा तो वो खट्टा निकला। उसने कहा। कोई दूसरा अनार लाओ। चुनाँचे आप दूसरा ले आए। मालिक ने चखा तो वो भी खट्टा ही निकला। आख़िर मालिक ने झुंझला कर कहा के इतने दिन गुज़र गए, मगर तुम्हें इतना भी पता ना चला के अनार मीठा कौन सा है। और खट्टा कौन सा? कोई अनार चख कर मीठा होता है। हज़रत इब्राहीम बोले, मगर बाग़ मेरे सपुर्द इसलिए किया है के मैं इसकी हिफाज़त करूं ना इसलिए के मैं उसके अनार खाऊँ और चखूं। मालिक ये जवाब सुनकर कहने लगा। वा सुबहान अल्लाह! इतने परहैज़ार और मुत्तक़ी! कोई जाने के आप इब्राहीम इब्ने अदहम हैं। हज़रत इब्राहीम ये बात सुनकर फौरन बाग़ से निकल गए और मालिक हैरान रह गया और सोचने लगा के ये कौन

Scanned by CamScanner

था। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 124)

सबक:- अल्लाह के नेक बन्दे बड़े मुत्तक़ी और अमीन होते हैं वो कभी किसी के माल में ख़यानत नहीं करते फिर अगर कोई ऐसा शख़्स जिसका मसलक ये हो के "राम राम जपना पराया माल अपना" उन अल्लाह वालों पर मौतरिज़ हो तो उसकी ये किस क़द्र ज़ियादती है।

हिकायत नम्बर(423) पराई खजूर

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत-उल्लाह अलेह एक रात बैत-उल-मुक़द्दस में लेटे थे और मस्जिद में आप तनहा ही थे। और कोई ना था थोड़ा हिस्सा रात का गुज़रा तो मस्जिद का दरवाज़ा खुला और एक ज़ईफ और नूरानी शख़्स चालीस हमराहियों के साथ मस्जिद में दाख़िल हुए और मेहराब के पास आकर सब ने नफिल पढ़े। और फिर सब मेहराब की तरफ़ पुश्त करके बैठ गए। एक शख़्स उनमें से बोला के आज कोई ऐसा शख़्स भी इस मस्जिद में है। जो हम में से नहीं। वो ज़ईफ शख़्स मुसकुराए और फ़रमाया के हाँ है और वो इब्राहीम बिन अदहम है। चालीस दिन से इबादत में लुत्फ नहीं पाता। हज़रत इब्राहीम ने ये बात सुनी तो आप कोने से उठे और इस मर्द ज़ईफ की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगे। आप ने सच फ़रमाया। मगर ये तो बताईये के इसकी वजह क्या है? वो फ़रमाने लगे। फलाँ रोज़ तूने बसरे में खजूरें खरीदी थीं। उनमें एक खजूर दसरे की गिर पड़ी थी। तुमने समझा के तुम्हारी ही है तुम ने उसे भी उठा लिया। और अपनी खजूरों में मिला लिया। बस इस पराई खजूर के तुम्हारे माल में मिल जाने से तुम्हारी इबादत में जो मज़ा था जाता रहा हज़रत इब्राहीम ये सुनते ही बसरे को रवाना हुए और इस शख़्स के पास जिसकी वो खजूर थी पहुँचे और उससे माफी चाही। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 125)

सबक:- अल्लाह के नेक बन्दों का किरदार बड़ा ही पाकीज़ा होता है। पराई और मशकूक चीज़ भूल कर भी उनके इस्तेमाल में नहीं आती। और आ भी जाए तो अल्लाह तआला उन्हें इस ख़िलाफ शान अम्र से भी बचा लेता है और उनकी शान पर कोई धब्बा नहीं आने देता। फिर अगर कोई बिलेक ख़यानत और इसमगल करने वाला इन पाक किरदार अल्लाह के नेक बन्दों की शाम में कोई नाज़ैबा अलफाज़ बके तो किस क़द्र ज़ुल्म है। और ये भी मालूम हुआ के पराये और हराम माल से इजतिनाब ना हो। तो इबादत बे जान रह जाती है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(424) रूमान-उल-आबेदीन

हज़रत मोहम्मद मुबारक और हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत-उल्लाह अलेहिमा एक रोज़ बैत-उल-मुक़द्दस की तरफ़ जा रहे थे के रास्ते में एक जंगल में एक अनार का दरख़्त देखा। दोपहर का वक़्त था। और ये दोनों बुज़ुर्ग थोड़ी देर आराम करने के लिए इस दरख़्त के साये में बैठ गए। इतने में इस दरख़्त से आवाज़ आई के ऐ इब्राहीम! मुझे इज़्ज़त बख़्शिये और मेरे अनार से कुछ तनावुल फ़रमाइये। तीन मर्तबा इस दरख़्त ने ये दरख़्वास्त की। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम और हज़रत मुबारक दोनों बुज़ुर्गों ने इस दरख़्त से एक अनार तोड़ा। और खाया और चल दिए। फिर जब वापस आए तो दरख़्त पहले की निसबत बड़ा घना और तनावर था और उसके अनार भी बहुत मीठे थे और इन बुज़ुर्गों की बर्कत से फल भी वो एक साल में दो दफा देने लगा। और इसी वजह से लोगों ने उसका नाम ही "रूमान-उल-आबेदीन" रख दिया यानी "अल्लाह वालों का अनार"(तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 126)

सबक़:- उन अल्लाह वालों के जहाँ क़दम आ जायें। वहाँ बर्कत ही बर्कत पैदा हो जाती है और उनके हाथ जिस चीज़ से लग जायें इस चीज़ को इज़्ज़त व अज़मत मिल जाती है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों के हाथ में हाथ दे दने से आमाल सालेह में बर्कत पैदा हो जाती है और नेक कामों की कसरत की तौफीक़ हासिल होती है।

हिकायत नम्बर(425) पैग़ामे हक़

हज़रत बशर हाफी रहमत-उल्लाह अलेह अपनी पहली ज़िन्दगी में एक बहुत बड़े शराबी थे। आप एक मर्तबा शराब के नशे और मस्ती के आलम में कहीं जा रहे थे के रास्ते में आपने एक काग़ज़ का टुकड़ा देखा जिस पर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखा हुआ था। हज़रत बशर ने इस काग़ज़ पर अल्लाह का नाम लिखा देखकर तअज़ीमन उसे उठा लिया। और इत्र खरीद कर उसे मोअत्तर किया और फिर उसे एक बुलंद जगह पर रख दिया। उसी रात एक बुज़ुर्ग ने ख़वाब में सुना के कोई कह रहा है जाओ बशर हाफी से कह दो के तुम ने मेरे नाम को मोअत्तर किया। उसकी तअज़ीम और उसे बुलंद जगह पर रखा हम भी तुझ को पाक करेंगे और दुनिया व आख़िरत में तुम्हें बुज़ुर्गी अता फ़रमायेंगे और बुलंद मुक़ाम अता फ़रमायेंगे इन बुज़ुर्ग ने दिल में सोचा के बशर तू

Scanned by CamScanner

एक शराबी और फासिक़ शख़्स है। शायद मैंने ये ख़्वाब ग़लत देखा है। चुनाँचे उन्होंने वज़ू किया और नफिल पढ़े और फिर सो रहे। दूसरी बार उन्होंने फिर वही ख़्वाब देखा। इसी तरह तीन मर्तबा यही नज़र आया। और यही आवाज़ सुनी के ये हमारा पैग़ाम बशर ही तरफ़ है। जाओ उसे हमारा ये पैग़ाम पहुँचा दो। चुनाँचे सुबह हुई तो वो बुज़ुर्ग हज़रत बशर की तलाश में निकले। उनको पता चला के वो शराब की मजलिस में बैठे हैं। तो वो वहीं पहुँचे और बशर को आवाज़ दी। लोगों ने बताया के वो शराब के नशे में बेहोश पड़े हैं, उन्होंने कहा के तुम लोग उसे किसी तरह ये बात सुना दो के तुम्हारे नाम एक ज़रूरी पैग़ाम लाने वाला बाहर खड़ा है चुनाँचे वो लोग गए और हज़रत बशर से जाकर कह दिया के उठो बाहर चलो तुम्हारे नाम कोई पैग़ाम आया है। हज़रत बशर ने फ़रमाया उनसे जाकर पूछो के वो किस का पैग़ाम लाए हैं। वो बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे के मैं खुदा तआला का पैग़ाम लाया हूँ क्या ख़बर के पैग़ाम अत्ताब आमेज़ है या अक़्क़ाब आलूदा। फिर बाहर आए और पैग़ामे हक़ सुनकर सच्चे दिल से तौबा की और इस बुलंद मुक़ाम पर जा पहुँचे के मुशाहिदा-ए-हक़ के ग़ल्बे की शिद्दत से ब्रिहेना पा रहने लगे। और कभी जूता पाँव में ना पहना। और इसी लिए आप "हाफी" के नाम से मश्हूर हो गए के हाफी नंगे पाँव वाले को कहते हैं लोगों ने आप से पूछा के आप जूती क्यों नहीं पहनते। तो फ़रमाया हक़ तआला फ़रमाता है के मैंने ज़मीन को तुम्हारा बिछोना बनाया है पस बादशाह के बिछाए हुए बिछोने पर जूती पहने जाना बे अदबी है। (तज़करत-उल-औलिया 129)

सबक़:- एक ऐसे काग़ज़ के टुकड़ की तअज़ीम करने से जिस पर अल्लाह का नाम लिखा था। एक गुनहगार शख़्स को इतना बुलंद मुक़ाम हासिल हो गया के वो अल्लाह के बड़े बड़े मक़्बूलों और वलियों की फेहरिस्त में आ गया। तो इन नफ़ूस क़ुदसिया की तअज़ीम व तकरीम से जिनके दिलों में खुदा का नाम कुदा है ओर जिनके दिल ज़िक्रे हक़ से मामूर हैं। हम गुनहगार अल्लाह के फज़्लो करम से क्यों बहरावर ना होंगे? नीज़ इन जुमला अल्लाह वालों, नबियों और रसूलों के भी सरदार हैं। यानी हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया अहमद मुजतबा मोहम्मद मुस्तफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उनकी तअज़ीम व तकरीम अल्लाह को किस क़द्र मेहबूब व पसंद होगी? और ये भी मालूम हुआ के किसी शान वाले के नाम की भी तअज़ीम मौजिब अज्र व सवाब है। हज़रत बशर हाफी ने अल्लाह

Scanned by CamScanner

के नाम की तअज़ीम की तो इज़्ज़त पाई। तो आज हम अगर रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के नाम की तअज़ीम करें जहाँ सुनें चूम कर आँखों से लगायें। तो क्यों इज़्ज़त ना पायेंगे? हज़रत बशर हाफी ने जहाँ अल्लाह का नाम देखा। वहाँ इत्र मला तो पाक हो गए। तो हम अगर जहाँ ज़िक्र रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हो। वहाँ इत्र व गुलाब छिड़कें। तो क्यों पाक ना होंगे? और ये भी मालूम हुआ के जिस बात की शरीयत में मुमानेअत ना हो वो बात हर गिज़ बिदअत नहीं। वरना हज़रत हाफी अलेह अर्रहमा का नंगे पाँव फिरना भी बिदअत ही होता।

हिकायत नम्बर(426) चौपायों का अदब

हज़रत बशर हाफी अलेह अर्रहमा हमेशा नंगे पाँव चलते थे और जब तक आप बग़दाद में ज़िन्दा रहे। चौपाया ने रास्ते में गोबर ना की। इस हुर्मत व अदब के पेशे नज़र के हज़रत हाफी नंगे पाँव चलते हैं। एक दिन एक चौपाया ने रास्ते में गोबर कर दी तो उसका मालिक ये बात देखकर घबराया और समझा के आज यक़ीनन बशर हाफी का इन्तिक़ाल हो गया है। वरना ये जानवर कभी रास्ते में गोबर ना करता चुनाँचे थोड़ी देर के बाद उसने सुन लिया के वाक़ई हज़रत का विसाल हो गया है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 137)

सबक़:- अल्लाह वालों का जानवर भी लिहाज़ करते हैं। फिर अगर कोई गुसताख़ अल्लाह के मक़्बूलों पर कीचड़ उछाले तो उसके लिए क्यों ना कहा जा के *ऊलाईका कालअनआमी बल हुम अज़ल्ला*

हिकायत नम्बर(427) ज़ुलनून

हज़रत ज़ुलनून मिस्री रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा कश्ती पर सवार कहीं जा रहे थे। कश्ती के मुसाफिरों को हज़रत से तआर्रूफ ना था। इस कश्ती में एक सौदागर भी था। इत्तिफाक़न उसका एक मोती गुम हो गया उसने ग़लत फहमी से हज़रत ज़ुलनून पर ये इलज़ाम लगा दिया के मोती उन्होंने लिया है। हज़रत ने फ़रमाया के हाशा व कला मोती मैंने नहीं लिया। वो सौदागर कहने लगा के मोती आप ही ने लिया है और गुसताखी से पेश आने लगा। हज़रत ज़ुलनून ने उस वक़्त आसमान की तरफ़ मुंह करके अर्ज़ किया। इलाही! तू जानता हे मैं इससे बरी हूँ। ये कहना था के हज़ारों मछलियाँ दरया से अपने अपने मुंह में एक एक मोती लेकर निकल आईं आपने उनमें से एक मोती

Scanned by CamScanner

लेकर उस सौदागर को दे दिया। कश्ती के लोगों ने हज़रत की जब ये शान और करामत देखी तो सब आपके क़दमों पर गिर गए। और माफी चाहने लगे। "नून" मछली को कहते हैं। आपकी इसी करामत की वजह से आपका नाम ज़ुलनून से मश्हूर हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 144)

सबक़:- जो अल्लाह का हो जाए सारी खुदाई उसकी हो जाती है और अल्लाह के मक़्बूलों की या शान होती है के दरया की मछलियाँ भी उनका ख़ादिम व रज़ाकार होती हैं और उनके लिए क़ीमती मोती लकर हाज़िर होती हैं। फिर वो शख़्स जिसके हाथ का टुकड़ा कव्वा भी ले उड़े अगर इन अल्लाह वालों की शान व अज़मत का इंकार करे और उन से मसावात का दम भरे, तो ग़ौर फ़रमा लीजिए के वो किस क़द्र बेख़बर है।

हिकायत नम्बर(428) सर्राफ

एक शख़्स औलिया इक्राम का मुनकिर था। एक रोज़ हज़रत ज़ुलनून से उसकी इत्तिफाक़न मुलाक़ात हो गई। हज़रत ज़ुलनून ने उसे अपनी अंगूठी देकर फ़रमाया के जाओ किसी नानबाई के पास उसे गिरवी रख आओ। वो शख़्स अंगूठी लकर एक नानबाई के पास गया और उसे अंगूठी गिरवी रखने को कहा। इस नानबाई ने अंगूठी देखी। और कहा के मैं इसे एक दरहम से ज़्यादा पर ना रखूंगा। वो शख़्स अंगूठी वापस ले आया। और हज़रत ज़ुलनून से कहने लगा के वो इसे एक दरहम से ज़्यादा पर गिरवी रखने को तैयार नहीं। आपने फ़रमया। अच्छा अब इसे किसी सर्राफ के पास ले जाओ और उससे दरयाफ़्त करो के वो इसे कहाँ तक गिरवी रख लेगा। चुनाँचे वो फिर सफ़ा अंगूठी को लेकर एक सर्राफ के पास आया। सर्राफ ने अंगूठी को देख कर बताया के वो उसे एक हज़ार दीनार पर गिरवी रख लेगा। वो शख़्स हज़रत ज़ुलनून के पास आया और बताने लगा के सर्राफ उसके एक हज़ार दीनार देता है। हज़रत ने फ़रमाया मुझ यही समझाना था के तुम्हारा इल्म औलिया इक्राम के मुतअल्लिक़ सिर्फ़ इतना ही है। जितना इल्म इस नानबाई का इस अंगूठी के मुतअल्लिक़ था। तुम अगर आरिफ़ पहचानने वाले होते तो औलिया इक्राम का कभी इंकार करते वो शख़्स फौरन अपनी ग़लती पर नादिम हुआ। और तायब हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 145)

सबक़:- औलिया इक्राम का इंकार दरअसल अपनी कम मायगी और अपनी नादानी का मुज़ाहेरा है। "वली रावाली मै शनासद" के मुताबिक़ जिन लोगों के अपने हाँ ना कोई वली गुज़रा है ना है ना होगा। वो ये समझते हैं

Scanned by CamScanner

के दुनिया में कोई वली है ही नहीं और जिनमें हज़ारों लाखों औलिया हुए हैं और होंगे वो औलिया इक्राम के मौतरिफ़ भी हैं। ख़ादिम भी और मुरीद भी।

हिकायत नम्बर(429) सारंगी

एक नोजवान सारंगी बजा रहा था। इत्तिफाक़न वहाँ से हज़रत बायज़ीद बसतामी रहमत-उल्लाह अलेह का गुज़र हुआ। आपने उसे सारंगी बजाते हुए देखा तो फ़रमाया *ला होला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह* इस नोजवान को गुस्सा आया। और उसने सारंगी हज़रत बायज़ीद के सर पर दे मारी वो सारंगी टूट गई और हज़रत बायज़ीद का सर भी फूट गया। हज़रत बायज़ीद ख़ामोशी से घर तशरीफ़ ले आए। और फिर उसकी सारंगी की क़ीमत और कुछ मीठाई इस नोजवान के पास भेजी। और कहला भेजा के भाई तुम ने अपनी सारंगी मेरे सर पर मार कर तोड़ डाली। ये इसकी क़ीमत है। दूसरी ख़रीद लो और मीठाई इसलिए भेज रहा हूँ ताके इसके टूटने से जो तुझे रंज पहुँचा है वो दूर हो जाए इस नोजवान ने जब ये बातें सुनीं तो दौड़ा हुआ आया और हज़रत बायज़ीद के क़दमों पर गिरा और तौबा की और बहुत रोया। और भी कई जवान देखकर तायब हो गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा175)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दों के अख़लाक़ बड़े बुलंद होते हैं और वो बुराई का बदला भी भलाई से देते हैं और ये सब झलक है। उस प्यारे आक़ा हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इस प्यारी सीरत की के....

सलाम उस पर के जिसने दुश्मनों को भी क़ुबायें दीं
सलाम उस पर के जिसने गालियाँ सुनकर दुआयें दीं

अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की मक़्बूलियत व अज़मत का राज़ इसी इत्तिबाऐ रसूल में मुज़मिर है और वो अपने उन्हें पाकीज़ा अख़लाक़ की बदौलत गुमराहों के रहबर बने और हम जैसों के लिए मौजिब रूश्दो हिदायत साबित हुए। *रज़कनल्लाहू हुब्बाहुम*

हिकायत नम्बर(430) इंसान और कुत्ता

हज़रत बायज़ीद बसतामी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा अपने मुरीदों के साथ एक बहुत तंग गली से गुज़र रहे थे के आपने दूसरी तरफ़ से एक कुत्ते को आते देखा। जब कत्ता सामने आया तो हज़रत बायज़ीद

Scanned by CamScanner

पीछे मुड़ आए और कुत्ते के वास्ते रास्ता खाली कर दिया। आपके मुरीदों में से एक मुरीद के दिल में ये बात गुज़री के हक़ तआला ने इंसान को तो बुज़र्गी व शराफत अता फ़रमाई है और हज़रत बायज़ीद ने बावजूद इस मर्तबे के सबको इस कुत्ते के लिए पीछे मोड़ लिया है गोया इस कुत्ते को तरजीह दे दी। हज़रत बायज़ीद उसके इस ख़दशे पर मतलअ हो गए और उस मुरीद को मुख़ातिब करके फ़रमाया के इस कुत्ते ने बज़बान हाल मुझ से ये कहा है के ऐ बायज़ीद! ये सब खुदा की शान है के उसने रोज़ेअज़ल में मुझे कुत्ता बना दिया। और आप को जामा-ए-इंसानी पहना दिया और फिर आपको सुलतान-उल-आरफ़ीनी की क़बा भी पहना दी। देखिये मैं भी उसकी मख़लूक़ हूँ। कुत्ते की इस बात से मैं परेशान हो गया। और खुदा के फज़्लो करम के शुक्रिये में मैं पीछे हट गया और कुत्ते के लिए रास्ता खाली कर दिया। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 176)

सबक़:- खुदा वंद करीम का हम इंसानों पर ये बड़ा ही फज़्ल व अहसान है के उसने अपने फज़्लो कमर के साथ हमें किसी ज़लील नोअ में पैदा नहीं फ़रमाया बल्के अशरफ़-उल-मख़लूक़ात नोअे इंसान में पैदा फ़रमाया जो चाहता बना देता। और ये किसकी मजाल थी के वो ये कहता के: ऐ खुदा! मुझे कुत्ता या गाय घोड़ा वग़ैरा ना बना। मुझे इंसान ही बना। मगर ये उसका अहसान ही है के हमें उसने इंसान बनाया और सारी मख़लूक़ पर हमें शराफत व करामत अता फ़रमाई। और *लक़द करमना बनी आदामा* का ताज पहनाया। मालूम हुआ के ये शराफ भी महज़ अल्लाह का फज़्लो करम है और हमें उसका शुक्र अदा करना चाहिए और तकब्बुर व ग़रूर ना करना चाहिए बल्के तवाज़ो इख़्तियार करना चाहिए। और अल्लाह की दूसरी मख़लूक़ पर शफक़त व रहम से पेश आना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले दूसरों के वली ख़यालात पर भी मतलअ हो जाते हैं फिर वो ज़ात ग्रामी जिनके सदक़े में इन अल्लाह वालों को ये कमाल हासिल हुआ। यानी हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम वो क्यों असरार अक़लूब पर भी मतलअ ना होंगे?

हिकायत नम्बर(431) बायज़ीद और एक कुत्ता

हज़रत बायज़ीद बसतामी अलेह अर्रहमा एक मर्तबा कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे के रास्ते में एक कुत्ता आता हुआ नज़र आया जब वो कुत्ता हज़रत बायज़ीद के पास से गुज़रने लगा। तो आपने अपने कपड़े समेट लिए कुत्ता

Scanned by CamScanner

ठहर गया और हज़रत बायज़ीद से कहने लगा के हुज़ूर आप ने कपड़े क्यों समेटे आपने फ़रमाया इसलिए के तू नजिस है कुत्ते ने जवाब दिया के हुज़ूर अगर मेरी वजह से आपके कपड़े पलीद हो गए। तो ये निजासत तो पानी के साथ धोने से दूर हो जाएगी।

और अगर मुझे हक़ीर जान कर और अपने आप को बड़ा जान कर नखुव्वत व ग़ुरूर से आपने कपड़े समेटे तो तकब्बुर व ग़ुरूर की निजासत दिल में पैदा हो जाएगी और ये दिल की निजासत सात समुंद्रों के पानी से भी दूर ना हो सकेगी। हज़रत बायज़ीद कुत्ते की ये बात सुनकर फ़रमाने लगे के तो सच कहता है के वाक़ई तो ज़ाहिरी निजासत रखता है। मगर मुतकब्बिर इंसान बातिनी निजासत रखता है। फिर फ़रमाया के ऐ कुत्ते! तुझ से मुझे बड़ा सबक़ हासिल हुआ। आओ हम तुम मिल कर रहे। कुत्ते ने जवाब दिया। हुज़ूर आप मेरे साथ नहीं रह सकते इसलिए के मैं मरदूद खिलाक़ हूँ। जो मुझे देखता है पत्थर मारता है और आप मक़बूल खलाक़ हैं। जो आपको देखता है अस्सलाम अलेकुम या सुलतान-उल-आरफ़ीन कहता है और इसलिए भी नहीं रह सकते के मैं हड्डियों को जमा करके कल के लिए नहीं रखता। और इंसान गंदम के ज़खीरे जमा करके रखते हैं। हज़रत बायज़ीद कुत्ते की ये बात सुनकर फ़रमाने लगे ऐ कुत्ते तेरी बातें बड़ी ही सबक़ आमोज़ हैं। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 172)

सबक़:- इंसान को कभी फख्रो ग़ुरूर और तकब्बुर ना करना चाहिए। ये एक ऐसी निजासत है जिससे दिल नापाक हो जाता है और खुदा की नज़र रहमत के लायक़ नहीं रहता और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों से जानवर भी बातें करते हैं और वो समझते हैं और ये उनकी करामत है। जिसका मुसलमानों को इक़्रार है और ये भी मालूम हुआ के इंसान चाहे तो एक कुत्ते से भी बड़े बड़े सबक़ हासिल कर सकता है।

हिकायत नम्बर(432) रोशनी

हज़रत बायज़ीद के पड़ोस में एक आतिश परस्त रहता था। उसका एक शीरख़्वार बच्चा था। बच्चा रात की तारीकी में रोता रहता इसलिए के वो आतिश परस्त एक ग़रीब शख़्स था और चिराग़ जलाने के लिए भी उसके पास कुछ ना था। एक रात बच्चा बहुत रोया। हज़रत बायज़ीद उठे और अपना चिराग़ उसके घर छोड़ आए। बच्चा चुप हो गया। दूसरी रात

Scanned by CamScanner

भी हज़रत बायज़ीद ने ऐसा ही किया और फिर तीसरी रात भी। आपके इस सलूक का इस आतिश परस्त के दिल पर बड़ा असर हुआ और अपनी बीवी से कहने लगा के जब शेख़ बायज़ीद की रोशनी हमारे घर में आ पहुँची। तो अब हमें ज़ैबा नहीं के हम कुफ्र की तारीकी में ही भटकते फिरें। चलो उठो। शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हों और मुसलमान हो जायें चुनाँचे वो दोनों हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कलमा पढ़कर मुसलमान हो गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 181)

सबक़:-

ना किताबों से ना कालिज के है दर से पैदा
दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा

हिकायत नम्बर(433) बराऐ नाम मुसलमान

एक काफिर रहता था बसताम में
आरिफ़ बसताम के अय्याम में
एक मुसमलमान से थी उसकी दोस्ती
कोई बात इस्लाम की उसमें ना थी
एक दिन काफिर से वो कहने लगा
तुझ को है इबलीस ने गुमराह किया
क्यों नहीं ईमाँ ले आता शताब
क्या खुद को देगा ज़ालिम तू जवाब
छोड़ दे तू शिर्क को ऐ बे तमीज़
शिर्क से गंदी नहीं दुनिया में चीज़
बोला काफिर मेहरबाँ इस्लाम के
दो नमूने हैं मिरे अब सामने
एक तो इस्लाम शेख़ बा यज़ीद!
शौकत इस्लाम जिसने की मज़ीद
ताब ताक़त उसकी मैं रखता नहीं
कौन रख सकता है उसका सा यक़ीं
ऐसे तो इस्लाम का हूँ मैं गुलाम
पर नहीं वो हर कस व नाकिस का काम
दूसरा इस्लाम जो है आपका
ऐसे ईमाँ से तो मैं काफिर भला

Scanned by CamScanner

मैल दिल गर इस तरफ़ लाता हूँ मैं
देखकर हज़रत को रूक जाता हूँ मैं

(तज़करत-उल-औलिया और दरमंजू सफ़ा 152)

सबक़:-

हर बशर को दावते इस्लाम है
पर मुसलमान होना मुश्किल काम है

हिकायत नम्बर(434) मुनकर नकीर को जवाब

हज़रत बायज़ीद अलेह अर्रहमत का जब विसाल हो गया तो एक मुरीद बा सफा ने हज़रत को ख़्वाब में देखा और पूछा के हज़रत आपने मुनकर नकीर को क्या जवाब दिया था। आपने फ़रमाया के उन्होंने जब मुझ से सवाल किया के मन रब्बुका तुम्हारा रब कौन है? तो मैंने उससे कहा के तुम्हारे इस सवाल से और मेरे जवाब से कुछ हासिल नहीं मैं अगर यूं कह दूं के अल्लाह तआला मेरा रब है और अल्लाह तआला मुझे अपना बन्दा तसली ही ना फ़रमाए तो मेरा अपनी ज़बान से बन्दा बनना किस काम का? जाओ ऐ फरिश्तो! पहले अल्लाह तआला से दरयाफ़्त कर लो के बायज़ीद उसका बन्दा है या नहीं। अगर वो मुझे अपना बन्दा फ़रमा दे तो फिर मेरा बैड़ा पार है। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 217)

सबक़:- यूं कहलाने को तो हम सभी मुसलमान हैं मगर दरअसल मुसलमान वो है जिसे अल्लाह और उसका रसूल भी मुसलमान समझे और अगर कोई शख़्स अपने अक़ायदो आमाल से अल्लाह और रसूल को अपने आप से बेज़ार करके मुसलमान बनता और कहलाता है तो उसका क्या फायदा। ये तो ऐसा ही होगा जिसे किसी जाहिल का नाम "मोहम्मद फाज़िल" किसी बे इल्म का नाम "इल्म-उद्दीन" या किसी नाबीना का नाम "रोशन दीन" रख दिया जाए।

हिकायत नम्बर(435) दौलतमंद और दुरवैश

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह दुनयवी हैसियत से भी बहुत बड़े रईस थे। एक बार हज को जा रहे थे के आपके हमराह एक दुरवैश भी हो लिया। आपने उससे फ़रमाया के दुरवैश हम लोग तो दौलतमंद हैं और बुलाए हुए हैं, मगर तुम हमारे साथ क्यों जा रहे हो? इस दुरवैश ने जवाब दिया के जब मेज़बान करीम होता है। तो तुफैली की मेहमान से भी

Scanned by CamScanner

ज़्यादा ख़ातिरदारी करता है अगर आपको उसने अपने घर बुलाया है तो मुझे उसने अपने पास बुलाया है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया खुदा तआला ने हम दौलतमंदों से क़र्ज़ माँगा है। दुरवैश ने जवाब दिया। मगर आप जानते हैं के खुदा ने वो क़र्ज़ माँगा किन के लिए है? खुदा ने वो क़र्ज़ हम दुरवैशों के लिए माँगा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ये जवाब सुनकर बड़े मुतास्सिर हुए और उससे माज़रत चाही। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 220)

सबक़:- दुरवैशों, मिसकीनों और ग़रीबों को हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए उनके पास अगर दुनयवी जाह व मंज़िलत ना भी नज़र आए। तो भी बहुत मुमकिन है के उनमें ऐसे भी हों। जिनका दिल दौलत ईमान से मामूर और जो इश्क़ हक़ में मख़मूर हों और ये भी मालूम हुआ के दुनयवी दौलत का पास होना बाइसे फज़ीलत नहीं। असल में वजह फज़ीलत खुदा तरसी व तशरअे व तदय्युन और मख़लूक़ नवाज़ी है।

हिकायत नम्बर(436) पुर असरार बुढ़िया

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के एक बार ऐसा इत्तिफाक़ हुआ के मैं एक बयाबान में था के हज का ज़माना आ गया मैं निहायत बेक़रार हुआ के किस तरह वहाँ पहुँचूं। आख़िर कार मैंने अपने दिल में ख़याल किया के मैं अब वहाँ तो नहीं पहुँच सकता। ख़ैर वो आमाल ही बजा लाऊँ जो हज्जाज बजा लाते हैं ताके इसी जगह हज का सवाब हासिल कर लूं। यानी नाखुन ना उतारूं, बाल ना मुंडवाऊँ वग़ैरा मैं इसी शशो पंज में था के क्या देखता हूँ के नूरानी शक्ल की कुबड़ी बुढ़िया लाठी टेकती चली आती है जब मेरे पास आई तो मुझ से कहा ऐ अब्दुल्लाह! शायद तू हज की तमन्ना रखता है? और इसी खयाल में है? मैंने कहा हाँ निहायत आरज़ूमंद हूँ। बुढ़िया ने कहा मुझे तुम्हारे ही वास्ते भेजा गया है। ऐ अब्दुल्लाह मेरे साथ चले आओ ताके मैं तुझ को अरफ़ात में पहुँचा दूं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने दिल में सोचा के अब तो सिर्फ दो रोज़ बाक़ी रह गए हैं। भला ये मुझे इतनी जल्दी अराफात तक कैसे पहुँचा सकती है इस बुढ़िया ने कहा ऐ अब्दुल्लाह! जिसने सुबह की नमाज़ की सुन्नतें संजाब में पढ़ी हों और फर्ज़ जीहूँ के किनारे पर और नमाज़ इशराक़ शहर मुर्द में, तो उसकी हमराही में क्यों अरफ़ात ना पहुँच सकेगा? बिस्मिल्लाह पढ़ो और

Scanned by CamScanner

चलो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक फ़रमाते हैं: मैंने बिस्मिल्लाह पढ़ी और इस पुर असरार बुढ़िया के साथ हो लिया। चलते हुए रास्ते में जो जो दुश्वार मंज़िलें आतीं बुढ़िया के तुफैल वहाँ से बाआसानी गुज़रते रहे। राह में ऐसा ऐसा गहरा पानी जिसमें कश्ती पर भी सवार होकर गुज़रना दुश्वार होता मिला। हम उससे बाआसानी उबूर करते रहे जब पानी के किनारे पहुँचते, तो वो बुढ़िया मुझ से कहती के आँखें बन्द कर लो जब आँखें बन्द कर लेता तो ऐसा मालूम होता के पानी सिर्फ कमर तक है इसी तरह इस पुर असरार बुढ़िया ने मुझे उसी दिन अरफ़ात में पहुँचा दिया और मैंने हज कर लिया। फिर जब हम हज कर चुके तो उस बुढ़िया ने कहा ऐ अब्दुल्लाह! अब आओ। मेरा एक बेटा है के जिसको अर्सा हो गया। एक ग़ार में इबादत व रियाज़त में मशग़ूल है। उसके पास चलें और उससे मिलें। चुनाँचे उसके सफ़ा ाथ हो लिया और हम एक ग़ार में पहुँच गए। मैंने देखा के ग़ार में एक जवान ज़र्दरू और ज़ईफ व नातवाँ और नूरानी शक्ल का वहाँ मौजूद है। जूंही उसने अपनी माँ को देखा उसके क़दमों पर गिर पड़ा और अपना मुंह उसके तलवों पर मलने लगा के जानता हूँ के आप अपने आप नहीं आई हैं। बल्के खुदा तआला ने आपको भेजा है ताके आप मेरी तजहीज़ व तकफीन करें क्योंके मेरे इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब है उस बुढ़िया ने फिर मुझ से कहा। ऐ अब्दुल्लाह! कुछ वक़्त यहाँ तुम भी ठहरो ताके मेरे बेटे को तुम दफ़्न करो। चुनाँचे मैंने देखा थोड़ी देर के बाद उस जवान का इन्तिक़ाल हो गया और हम ने उसको दफ़्न किया। उसके बाद उस बुढ़िया ने कहा के मुझे अब कोई काम नहीं। मैं अपनी बाक़ी उम्र अब अपने बेटे की क़ब्र पर बैठूंगी और ऐ अब्दुल्लाह! अब तुम जाओ और तुम दूसरे साल आओगे तो मुझे ना पाओगे मुझे दुआऐ ख़ैर से याद करते रहना। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 221)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की बड़ी ही शान होती है। उनके दिल में हर वक़्त खुदा की याद रहती है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के वलियों में ऐसी ऐसी बा कमाल औरतें भी गुज़री हैं के जिनके हालात व कमालात पढ़कर ईमान ताज़ा हो जाता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले मुद्दतों का सफर पल भर में तय कर लेते हैं ओर दिलों के इरादों और खयालात पर भी मतलअ हो जाते हैं और ये भी मालूम हुआ के औलिया उम्मत को अपनी मौत का

Scanned by CamScanner

भी इल्म हो जाता है। और ये सारे कमालात व उलूम उन औलिया को हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया जनाब अहमद मुजतबा मोहममद मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सदक़े में हासिल हुए हैं। फिर हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दाना ग़यूब और *आलम माकाना व यकून* होने में कोई शक कैसे हो सकता है।

हिकायत नम्बर(437) बीमार या तबीब

हज़रत सफयान सूरी रहमत-उल्लाह अलेह एक दफा बीमार हो गए। तो ख़लीफा वक़्त जो आपकी बड़ी इज़्ज़त करता था। उसने एक क़ाबिल तबीब को आपके पास इलाज करने के लिए भेजा। ये तबीब आतिश परस्त था। उसने जब आपका क़ारोरह देखा तो कहने लगा के मालूम होता है। ये कोई खुदा परस्त बुज़ुर्ग हैं। इनका जिगर खुदा के ख़ौफ से पारा पारा हो गया है और फिर कहने लगा के जिस दीन में ऐसे कामिल लोग हैं। वो दीन हर गिज़ बातिल नहीं हो सकता। लिहाज़ा मैं मुसलमान होता हूँ ये कहा और हज़रत के दस्ते हक़ परस्त पर तायब होकर मुसलमान हो गया। ख़लीफ-ए-वक़्त ने जब ये क़िस्सा सुना तो खुश होकर कहने लगा के मैंने तो समझा था तबीब को बीमार के पास भेजता हूँ। हालाँके मैंने खुद एक बीमार को तबीब के पास भेजा था। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 231)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों के दिलों में खुदा का ख़ौफ रहता है। और वो खुदा से निडर और बेबाक नहीं होते और ये भी मालूम हुआ के पाक लोगों का क़ारोरह भी गुमरहों के लिए मौजिबे हिदायत बन जाता है।

हिकायत नम्बर(438) हर दिल अज़ीज़

हज़रत सफयान सूरी रहमत-उल्लाह अलेह एक शख़्स का जनाज़ा पढ़कर आए। तो आपने जिस शख़्स की ज़बान से भी सुना। तो यही के ये मरने वाला बड़ा ही अच्छा था कोई भी उसके ख़िलाफ नहीं कह रहा था। हज़रत सफयान ने फ़रमाया अगर मुझे पहले मालूम होता के ये शख़्स ऐसा हर दिल अज़ीज़ है तो मैं उसका जनाज़ा हर गिज़ ना पढ़ता इसलिए के ये शख़्स हक़ गो ना था। अगर ये हक़ बात कहने का आदी होता तो कई लोग उसके मुख़ालिफ भी होते। मगर चूंके सभी उससे खुश

Scanned by CamScanner

हैं इसलिए ये मालूम हुआ के ये हर एक की हाँ में हाँ मिलाने वाला था। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 223)

सबक़:- अल्लाह वालों के जहाँ कई लोग मौतक़िद मद्दाह और ग़ुलाम होते हैं, वहाँ कई उनके मुख़ालिफ भी होते हैं और ये इसलिए के अल्लाह वाले सच्ची बात कहने से नहीं चूकते, और जिन लोगों को वो सच्ची बात कड़वी लगती है वो उनके मुख़ालिफ हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(439) हारून रशीद को नसीहत

हज़रत शफीक़ बलख़ी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा को जाते हुए बग़दाद शरीफ पहुँचे। तो हारून रशीद ने आपको अपने पास बुलाया। आप जब हारून रशीद के पास तशरीफ़ ले गए। तो उसने पूछा के आप ही शफीक़ ज़ाहिद हैं। आपने फ़रमाया शफीक़ तो मैं हूँ मगर ज़ाहिद मैं नहीं हूँ। हारून रशीद ने कहा। आप मुझे कुछ नसीहत फ़रमाईये आपने फ़रमाया के होश रख! हक़ तआला ने तुझे सिद्दीक़ की जगह बैठाया है। वो तुझ से सिद्क तलब करेगा और फारूक़ की जगह बैठाया है। वो तुझ से हक़ व बातिल के दरमियान फर्क़ तलब करेगा और ज़ुलनूरैन की जगह बैठाया है। तुझ से हया व करम चाहेगा और अली मुर्तज़ा की जगह बैठाया है वो तुझ से इल्मो अद्ल चाहेगा हारून रशीद ने कहा। जज़ाकल्लाह कुछ और फ़रमाईये। आपने फ़रमाया के हज़रत हक़ सुबहाना व तआला का एक मकान है। जिसे दोज़ख़ कहते हैं। खुदा ने तुझे उसका दरबार बनाया है। और तीन चीज़ें तुझे दी हैं। माल ताज़याना और तलवारें और फ़रमाया है के मख़लूक़ को इन तीनों चीज़ों से दोज़ख़ से अलेहदा रख जो हाजतमंद तेरे पास आए। माल से उसकी एआनत कर। ताके वो गुमराह ना हो जाए और जो खुदा के हुक्म के ख़िलाफ करे उसे कोड़े से तनबीह कर और किसी को मार डाले। उससे तलवार के साथ क़सास ले। अगर इन कामों को तू ना करेगा तो क़यामत के रोज़ तुझ से बाज़ पुर्स होगी, हारून रशीद ने कहा। जज़ाकल्लाह! और कुछ फ़रमाईये। अगर किसी जंगल में तुझे प्यास लगे और तुम प्यास से क़रीब-उल-मर्ग हो जाओ। तो उस वक़्त अगर तुम्हें पानी का एक पियाला कहीं मिल जाए तो तुम उस पानी के पियाले को कितने में खरीदोगे। हारून रशीद ने कहा के मैं आधी बादशाहत भी देकर खरीद लूंगा। आपने फ़रमाया के अगर फिर इस पानी पीने के बाद तेरा पैशाब बन्द हो जाए और बिलकुल जारी ना हो यहाँ तक के तम करीब-उल-मर्ग हो जाओ और उस वक़्त कोई

Scanned by CamScanner

शख़्स आ जाए और कहे के मैं तेरा इलाज करूंगा। मगर इस शर्त पर के अगर तुम्हारा पैशाब जारी हो जाए तो आधी बादशाहत ले लूंगा। तो तुम क्या करोगे? हारून रशीद ने जवाब दिया के मैं दे दूंगा। आपने फ़रमाया तो फिर समझ लो के ये हक़ीक़त तुम्हारे बादशाहत की है के हक़ की क़ीमत चन्द घूंट पानी के और चन्द क़त्रे पैशाब के हैं। फिर ऐ हारून रशीद! इस हक़ीर बादशाह पर फख्र कैसा? हारून रशीद रोने लगा और कहने लगा आप सच फ़रमा रहे हैं। फिर आपको बड़ी इज़्ज़त व ताज़ीम के साथ रूख़सत किया। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 243)

सबक़:- पहले बादशाहों को अल्लाह वालों से बड़ी अक़ीदत थी वो अल्लाह वालों से पंदो नसायह सुनने और उन पर अमल करने के आदी थे और ये भी मालूम हुआ के मुसलमानों का अमीर खुल्फा राबिआ रिज़वान-उल्लाही अलेहिम अजमईन का जानशीन होता है। इसलिए उन्हें पाक लोगों के नक़्शे क़दम पर चलकर ख़ालिक़ व मख़लूक़ के हक़ूक़ पूरे अदा करने चाहिएँ। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की नज़र में इस दुनिया और उसकी फानी नअेमतों की कुछ भी वक़अत नहीं।

हिकायत नम्बर(440) बदशाह फक़ीर के घर

हज़रत हारून रशीद ने एक रात अपने वज़ीर से कहा के आज मुझे किसी बुज़ुर्ग के पास ले चलो। क्योंके मेरा दिल इस कारोबार से उक्ता गया हे। थोड़ी देर इतमीनान व राहत पाऊँ। वज़ीर हारून रशीद को सफयान ऐनिया के मकान पर ले गए। और दरवाज़ा खटखटाया सफयान ने कहा कौन है? वज़ीर ने जवाब दिया अमीर-उल-मोमिनीन हैं। सफयान बोले के मुझे ख़बर क्यों ना की। ताके मैं खुद ख़िदमत में हाज़िर हो जाता। हारून रशीद ने ये सुनकर कहा के ये वो नहीं हैं के जिसकी मुझे तलाश है। वज़ीर ने कहा तो फिर जैसा मर्दे कामिल चाहते हैं वो फज़ील अयाज़ है। बादशाह ने कहा तो चलो उनके मकान पर ले चलो। चुनाँचे हज़रत फज़ील के मकान पर पहुँचे। उस वक़्त हज़रत फज़ील क़ुरआन की तिलावत कर रहे थे। और ये आयत पढ़ रहे थें *अम हसीबल्लज़ीनज तरीहू सय्यीअती अन नजअलूहुम कल्लज़ीना आमनू।* यानी जिन लोगों ने बुरे काम किए हैं। क्या वो गुमान करते हैं के हम उनको उन लोगों के साथ बराबर कर देंगे जिन्होंने नेक काम किए "हारून रशीद ने ये आयत सुनकर कहा के अगर कोई नसीहत

Scanned by CamScanner

तलब करूं तो यही आयत काफी है।" फिर दरवाज़ा खटखटाया हज़रत फज़ील ने कहा। कौन है? वज़ीर ने जवाब दिया अमीर-उल-मोमिनीन हैं। आपने फ़रमाया अमीर-उल-मोमिनीन का मुझ से क्या काम? और मुझे उनसे क्या काम? मुझे मशगूल ना कीजिए वज़ीर ने कहा के हाकिमों की इताअत ज़रूरी है। फ़रमाया मुझे परेशान ना करो। वज़ीर ने कहा। हमें अन्दर आने की इजाज़त दीजिए। वरना हम ज़बरदस्ती अन्दर आ जायेंगे। आपने फ़रमाया मेरी इजाज़त नहीं है। और ज़बरदस्ती आते हो तो मुख़्तार हो। हारून रशीद के दिल पर इन बातों का बड़ा असर हुआ। और वज़ीर के साथ अन्दर दाख़िल हुआ। हज़रत फज़ील ने चिराग गुल कर दिया ताके हारून रशीद का चेहरा नज़र ना आए इसी असना में हारून रशीद का हाथ फज़ील के हाथ पर पड़ गया। हज़रत फज़ील ने फ़रमाया ये हाथ कैसा नर्म है। अगर दोज़ख़ की आग से बच जाए और ये कहकर नमाज़ की नीयत बाँध ली हारून रशीद रोने लगे और अर्ज़ की के आख़िर कोई बात तो हम से कीजिए, हज़रत फज़ील ने सलाम फैरा तो फ़रमाया आपके बाप हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के चचा थे उन्होंने आँहज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से दरख़्वास्त की के आप मुझे किसी क़िस्म का सरदार कर दीजिए। तो हुज़ूर ने फ़रमाया के ऐ चचा! मैंने आपको आपके नफ़्स पर सरदार किया। हारून रशीद ने अर्ज़ किया कुछ और फ़रमाईये तो फ़रमाया के जब हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को तख़्त सलतनत पर बैठाया गया तो उन्होंने अपने दोस्त से कहा के मैं बहुत बड़ी आज़माईश में मुबतला हुआ हूँ। मुझे इस आज़माईश में कामयाब होने की कोई तदबीर बताए। तो एक साहब ने उनसे कहा के अगर आप चाहते हैं कल आपको अज़ाब से निजात हो। तो मुसलमान बूढ़ो को मिस्ल अपने बाप के और जवानों को मिस्ल अपने भाईयों के और बच्चों को बजाए फ़रज़ंदों के और औरतों को बजाए माँ बहन के जानिए। और उनके साथ बर्ताओ भी अच्छा कीजिए हारून रशीद ने कहा। कुछ और फ़रमाईये फ़रमाया के बुज़ुर्गों पर मेहरबानी करो और भलाई के साथ एहसान करो, और औलाद के साथ नेकी करो। फिर फ़रमाया! ऐ हारून रशीद! मैं तेरे खूबसूरत चेहरे को देखकर डरता हूँ के ऐसा ना हो के दोज़ख़ की आग उसको जलाए। इसलिए के *"कम मिन आमीरिन हुनाका असीर"* कितने अमीर हैं जो वहाँ (कयामत के रोज) असीर होंगे। हारून रशीद

Scanned by CamScanner

ये बातें सुनकर रोने लगा और खूब रोया और पिर कहा के कुछ और फ़रमाईये। हज़रत फज़ील ने फ़रमाया के खुदा से उसके सामने जवाब देने से होशयार रह! और तेयार रह के क़यामत के रोज़ खुदा तआला तुझ से एक एक मुसलमान के बारे में बाज़ पुर्स करेगा और हर एक का इंसाफ तलब करेगा अगर किसी रात कोई बुढ़िया भी किसी घर में भूकी सोई होगी तो कल क़यामत के रोज़ तेरा दामन पकड़ेगी और तुझ से झगड़ेगी। हारून रशीद रोते रोते बेहोश हो गया। वज़ीर ने कहा बस कीजिए के आपने तो अमीर-उल-मोमिनीन को मार डाला। हज़रत फज़ील फ़रमाने लगे ख़ामोश रह! उसे मैं नहीं बल्के तुझ से खुशामदी मारते हैं।

फिर हारून रशीद को होश आया तो हज़रत फज़ील से कहा किसी का कुछ देना है? हज़रत फज़ील ने फ़रमाया हाँ खुदा तआला का मुझ पर क़र्ज़ है और वो क़र्ज़ उसकी इताअत है। अगर वो इस बात में मुझ पर गिरफ़्त करे तो अफसोस है मुझ पर, हारून रशीद न कहा। मैं लोगों का क़र्ज़ पूछता हूँ। फ़रमाया खुदा का शुक्र है के उसने बहुत बड़ी नअेमतें अता फ़रमा रखी हैं और मुझे उसकी कोई शिकायत नहीं। फिर हारून रशीद ने एक हज़ार दीनार की थेली उनके सामने रख दी और कहा ये माल हलाल है और मुझे माँ के विरसे से मिला है। हज़रत फज़ील ने फ़रमाया के मेरी सारी नसीहतें बेकार हो गईं। मैं तुझे निजात और बे ताल्लुक़ी की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझे हलाकत में डालना चाहते हो मैं कहता हूँ के जो कुछ तुम्हारे पास है हक़दारों को दे दो मगर तुम जिसे ना देना चाहिए उसे देते हो। ये फ़रमा कर हारून रशीद के पास से उठ खड़े हुए और दरवाज़ा बन्द कर लिया। हारून रशीद और वज़ीर बाहर आए तो हारून रशीद ने कहा के वाक़ई ये मर्दे हक़ और अल्लाह का दोस्त है। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 94 ता 96)

सबक़:- जिनको इर्फान मारफ़त की दौलत हासिल हो जाए, वो इस दुनयवी दौलत की पवाह तक नहीं करते। और ऐसे ही लोग दरअसल बादशाह होते हैं और दुनिया के बड़े बड़े बादशाह भी उन रूमानी बादशाहों के दरबारों में हाज़री देते हैं और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने के मुसलमान बादशाह भी अल्लाह वालों से अक़ीदत रखते थे और उनके हुज़ूर हाज़िर हुआ करते थे। और *निअमा अमीरा अला बाबिल फक़ीरी* के मुताबिक़ वो बड़े ही अच्छे थे। और ये भी मालूम हुआ के नफ़्स पर हकूमत बड़ी क़ाबिल क़द्र हकूमत है। और.....

Scanned by CamScanner

बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा

के मुताबिक़ जो शख़्स नफ़्से अम्मारा पर क़ाबू पा लेता है। वो बड़ा ही जवाँमर्द है और ये मालूम हुआ के जिस क़द्र बड़ा ओहदा हासिल हो। आदमी उसी क़द्र ज़्यादा आज़माईश में पड़ जाता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की नज़र में दुनिया और उसकी फानी शानो शौकत की कुछ भी वक़अत नहीं।

हिकायत नम्बर(441) हाकिम नीशापूर

अब्दुल्लाह बिन ताहिर हाकिम नीशापूर एक मर्तबा शहर नीशापूर में वारिद हुआ तो सारा शहर उसके इसतक़बाल को निकल आया और तीन रोज़ तक शहर के छोटे बड़े उसके सलाम को आते रहे। हाकिम नीशापूर ने दरयाफ़्त किया के कोई शख़्स बाक़ी तो नहीं रहा। जो मेरे सलाम को ना आया हो। लोगों ने बताया के सिर्फ दो शख़्स नहीं आए। एक तो हज़रत अहमद हर्ब, दूसरे हज़रत असलम तूसा। उसने कहा के क्यों नहीं आए लोगों ने कहा के ये दोनों औलियाऐ हक़ और उलमाऐ रब्बानी हैं और बादशाहों के सलाम को नहीं जाते हैं। अब्दुल्लाह बिन ताहिर ने कहा के अगर वो हमारे सलाम को नहीं आए तो हम उनके सलाम को जायेंगे। फिर उसने ये इरादा किया के हज़रत अहदम हर्ब के पास जाए। लोगों ने हज़रत को ख़बर दी के हाकिम शहर आपकी ख़िदमत में आ रहा है। हज़रत ने फ़रमाया हमें उसके मिलने से नाचारी है अलग़र्ज़ अब्दुल्लाह बिन ताहिर आया। तो हज़रत ने अपना सर मुबारक झुका लिया और उसकी तरफ़ देखा भी नहीं फिर काफी देर के बाद अपना सर अनवर उठाया। और हाकिम शहर की तरफ़ नज़र की और फ़रमाया के मैंने सुना था के तुम बहुत खूबसूरत हो अब मुझे देखने से पता चला के वाक़ई तुम बहुत खूबसूरत हो। ऐ अब्दुल्लाह! देखो अपनी इस खूबसूरती को हक़ तआला के अहकाम की मुख़ालफत और नाफरमानी के साथ बिगाड़ मत लेना। हाकिम शहर इजाज़त लेकर फिर हज़रत असलम तूसा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हज़रत तूसा का दरवाज़ा बन्द था और आपने उसे अन्दर आने की इजाज़त ना दी। और पता चला के हज़रत नमाज़ के वक़्त बाहर निकलेंगे। हाकिम शहर दरवाज़े पर इसी तरह सवार खड़ा रहा। और हज़रत के बाहर निकलने का इन्तिज़ार करने लगा। नमाज़ का वक़्त हुआ। तो हज़रत का दरवाज़ा खुला और आप बाहर तशरीफ़ लाए। जूंही अब्दुल्लाह बिन ताहिर हाकिम शहर की आप पर नज़र पड़ी घोड़े से उतर पड़ा। और

Scanned by CamScanner

आपके पाँव को चूमने लगा और कहा। इलाही इस सबब से के मैं बुरा हूँ। ये तेरा मक़्बूल बन्दा मुझ से दुश्मनी रखता है। और इस सबब से के ये नेक और तेरा मक़्बूल बन्दा है मैं इससे दोस्ती रखता हूँ। तू इस बुरे को इस नेक के तुफैल में नेक बना दे फिर हज़रत ने भी हाकिम शहर के लिए दुआ की और मोहब्बत के साथ उसे रूख़्सत किया (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 290)

सबक़:- अल्लाह वाले रूहानी हाकिम व बादशाह होते हैं और उनकी बारगाह में दुनिया के बड़े बड़े बादशाह भी हाज़िर होते हैं। और ये हकूमत व क़बूलियत उन्हें अपने अल्लाह व रसूल की ताबेदारी से हासिल होती है। और ये भी मालूम हुआ के नेकों के तुफैल अल्लाह तआला बुरों पर भी अपना फज़्लो करम फ़रमाता है....

शनीदम के दर रोज़ उम्मीद वबीम
बदाँ राबा बख़्शद बा नीकाँ करीम

हिकायत नम्बर(442) आतिश परस्त बेहराम

हज़रत अहमद हर्ब रहमत-उल्लाह अलेह के पड़ोस एक आतिश परस्त रहता था। उसका नाम बेहराम था उसने अपना माल तिजारत को भेजा था। जो राह में डाकूओं ने लूट लिया। हज़रत अहमद हर्ब को पता चला तो आपने अपने दोस्तों से फ़रमाया हमारे पड़ोसी पर ये वाक़ेया गुज़रा है आओ उसकी लिजोई व ग़मख़्वारी के लिए उसके पास चलें चुनाँचे हज़रत अपने दोस्तों समेत बेहराम के घर पहुँचे। बेहराम ने जब सुना के मुसलमानों का एक पैश्वा मेरे हाँ तशरीफ़ लाया है तो बड़ा खुश हुआ। और इसतक़बाल के लिए दरवाज़े पर आया। और हज़रत की आसतीन को बोसा दिया और बड़ी इज़्ज़त के साथ आपको बिठाया हज़रत ने फ़रमाया। भई तुम्हारा माल लूटा गया है हम इस बात का अफसोस के लिए आए हैं, बेहराम ने कहा हाँ ऐसा ही हुआ है लेकिन मैं उसके सबब से तीन शुक्र करता हूँ। एक तो इस बात का के दूसरे मेरा माल लूट कर ले गए हैं दूसरों का माल लूट कर नहीं लाया। दूसरे इस बात का के वो आधा माल लूट कर ले गए हैं और आधा बाक़ी है। तीसरे इस बात का के वो दुनिया को लूट कर ले गए हैं। दीन मेरे पास बाक़ी है।

हज़रत अहमद हर्ब उसकी ये माक़ूल बातें सुनकर दोस्तों से फ़रमाने लगे के इस बात को लिख लो के बेहराम से आशनाई की बू आती है। फिर आपने फ़रमाया के बेहराम ये तो बताओ के तुम आग की परसतिश किस वास्ते करते हो। उसने कहा। इसलिए के कल क़यामत को मुझे ना जलाए

Scanned by CamScanner

और आज के रोज इस क़द्र लकड़ियाँ मैंने इसी वास्ते उसकी खूराक मुक़र्रर की हैं के मेरे साथ उस रोज़ बेवफाई ना करे। और मुझे खुदा तक पहुँचा दे, हज़रत ने ये सुनकर फ़रमाया के तुम बड़ी ग़लती में पड़े हो। क्योंके आग तो एक कमज़ोर व नातवाँ शै है। ज़रा खयाल तो करो के अगर एक अगर एक छोटा सा लड़का एक चुल्लू भर पानी इस पर डाल दे। तो वो बुझ जाती है। पस खयाल करने की बात है के जो ऐसी नातवाँ व कमज़ोर हो। वो क़वी तक कैसे पहुँचा सकती है? अलावा इसके आग जाहिल भी है के मुश्क व निजासत में ज़रा भी तमीज़ नहीं करती फौरन दोनों को जला डालती है। फिर ये भी के तुम उसके पुजारी हो मगर तुम भी अगर उसके अन्दर हाथ डालोगे तो तुम्हारा भी लिहाज़ ना करेगी बेहराम के दिल पर इन बातों का गहरा असर हुआ और कहने लगा। मेरे कुछ सवाल हैं। उनका जवाब दीजिए अगर आपके जवाबात सही हुए तो मैं मुसलमान हो जाऊँगा। आपने फ़रमाया पूछो क्या पूछते हो। बेहराम ने कहा के

(1) हक़ तआला ने मख़लूक़ को क्यों पैदा किया (2) और अगर पैदा किया तो रिज़्क़ क्यों दिया? (3) और अगर रिज़्क़ दिया तो मारा क्यों? (4) और अगर मारा तो फिर ज़िंदा क्यों करेगा? हज़रत ने जवाब दिया के (1) मख़लूक़ को इसलिए पैदा किया के उसकी ख़ालक़ीयत को पहचानें (2) और रिज़्क़ इसलिए दिया ताके उसकी रज़्ज़ाक़ी को जानें (3) और मारता इसलिए है ताके उसकी क़ह्हारी को पहचानें (4) और फिर ज़िंदा इसलिए करगा के ताके उसकी क़दिरी को जानें। फिर बेहराम ने कहा। अच्छा अगर आपका दीन सच्चा है तो लीजिए ये आग है इसमें अपना हाथ डालिये अगर आग ने आपको ना जलाया तो मैं मुसलमान हो जाऊँगा। चुनाँचे हज़रत ने अपना हाथ बिस्मिल्लाह पढ़कर आग में डाल दिया और देर तक डाले रहे मगर आग ने मतलक़न कोई असर ना किया। बेहराम ये देखते ही पुकार उठा। *अशहद अनलाइलाहा इलल्लाह व अशहदूअन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू*
(तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 295)

सबक़:- अल्लाह वालों की ये सीरत है के वो अपने पड़ोसियों के हक़ूक़ का खयाल रखते हैं और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों के क़दमों के तुफैल काफिर व मुशरिक भी फायदा हासिल कर लेते हैं और कुफ्र व शुक्र की तारीकियों से निकल कर दीन व ईमान की रोशनी पा लेते हैं और ये भी मालूम हुआ के बुज़ुर्गाने दीन की ताज़ीम व इज़्ज़त से खुदा तआला खुश होता है। और इज़्ज़त करने वाला काफिर भी हो। तो खुदा उसे

Scanned by CamScanner

इस्लाम की दौलत अता फ़रमा कर आग से बचा लेता है। फिर अगर कोई बराऐ नाम मुसलमान इन अल्लाह वालों की इज़्ज़त ना करे तो वो किस क़द्र बदनसीब है।

हिकायत नम्बर(443) कफन चोर

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह एक बार बलख़ शहर में वाज़ फ़रमा रहे थे आप ने असना वाज़ में फ़रमाया के इलाही! जो इस मजलिस में सबसे ज़्यादा गुनहगार है उस पर अपना रहम फ़रमा। और उसको बख़्श दे। एक कफन चोर भी इस मजलिस में मौजूद था। जब रात हुई तो कफन चोर कब्रिस्तान में गया। और एक क़ब्र को खोदा उसने हातिफ से एक आवाज़ सुनी। के ऐ कफन चोर तू तो आज दिन को हातिम असिम की मजलिसे वाज़ में बख़्श दिया गया। फिर आज ही रात को दोबारा ये गुनाह क्यों करने लगे हो? कफन चोर ने ये आवाज़ सुनी तो रोने लगा। और सच्चे दिल से तायब हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 297)

सबक़:- अल्लाह वालों की मजलिस में हाज़री से इंसान खुदा की मग़फिरत व बख्शिश पा लेता है। और गुनाहों से पाक हो जाता है।

हिकायत नम्बर(444) एक मुलहिद का जवाब

एक आवारा मिज़ाज। बातूनी, और *कट हुज्जतियों* का आदी मुलहिद हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह के पास पहुँचा। और आपकी शान में नाज़ैबा अलफाज़ बकने लगा। हज़रत ने उसकी *कट हुज्जतियों* के ऐसे जवाब दिए के वो ला जवाब होता रहा। चुनाँचे हस्बे ज़ैल सवाल जवाब हुए।

मुलहिदः- तुम मुफ़्त खौर हो। और आदमियों का माल खाते हो।

हज़रत हातिम असिमः- मैंने तेरे माल से कुछ खाया है।

मुलहिदः- नहीं।

हज़रत हातिम असिमः- तो फिर तुम आदमी ना हुए।

मुलहिदः- तुम हुज्जत करते हो।

हज़रत हातिम असिमः- खुदा तआला भी क़यामत के रोज़ बन्दे से हुज्जत तलब करेगा।

मुलहिदः- ये सब बातें ही बातें हैं।

हज़रत हातिम असिमः- खुदा ने बातें ही भेजी हैं। और तेरी माँ तेरे बाप

Scanned by CamScanner

पर बात ही की वजह से हलाल हुई है।

मुलहिदः- तो क्या तुम्हारी रोज़ी आसमान पर से आती है।

हज़रत हातिमः- सब की रोज़ी आसमान ही से आती है। *वफिस्समाइ रज़ाकुम* यानी आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ है।

मुलहिदः- अच्छा तो आराम से साते रहो। ताके तुम्हारे मुंह में तुम्हारा रिज़्क़ आए।

हज़रत हातिमः- दो बरस तक गहवारा में सोया। और रोज़ी मेरे मुंह में आती रही।

मुलहिदः- क्या तुम ने किसी को देखा के बग़ैर बोए के काटे।

हज़रत हातिमः- तुम्हारे सर के बाल बग़ैर बोए के काटे जाते हैं।

मुलहिदः- अच्छा तो हवा में उड़ो, तुम्हारा रिज़्क़ वहीं पहुँचेगा।

हज़रत हातिमः- अगर मैं परिंदा होता तो मेरी रोज़ी हवा पर पहुँचती।

मुलहिदः- अच्छा ज़मीन के अन्दर घुस जाओ। वहाँ रिज़्क़ मिलेगा।

हज़रत हातिमः- अगर मैं चियूंटी होता तो वहाँ रिज़्क़ मिलता।

मुलहिदः- ख़ामोश हो गया। और मुतास्सिर होकर तौबा करके मुसलमान हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 299)

सबक़ः- मुलहिदीन की तमाम बातें महज़ *कट हुज्जतियाँ* होती हैं। और अल्लाह वाले इन कट हुज्जतियों का जवाब अहसन पैराए में दे देते हैं।

हिकायत नम्बर(445) शैतान की मायूसी

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह ने यक रोज़ फ़रमाया के शैतान ने एक दफा मुझे फिसलाना चाहा। मगर मैंने उसको ऐसा जवाब दिया के वो मायूस होकर चला गया। वो मुझ से कहने लगा के तू क्या खाएगा? मैंने कहा मौत!

उसने कहा क्या पहनेगा? मैंने कहा कफन!

उसने कहा कहाँ रहोगे? मैंने कहा क़ब्र में!

मेरे ये जवाब सुनकर कहने लगा। तुम बड़े सख़्त मर्द हो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 301)

सबक़ः- अल्लाह के बन्दों पर शैतान का क़ाबू नहीं चलता।

हिकायत नम्बर(446) वली की बीवी

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा कहीं बाहर

Scanned by CamScanner

सफर में जाने लगे। तो अपनी बीवी से फ़रमाया। के मैं चार महीने तक बाहर रहूंगा, तुम्हारे वास्ते किस क़द्र खर्च मोहय्या कर जाऊँ? उन्होंने जवाब दिया के जिस क़द्र आपको मेरी ज़िन्दगी मंज़ूर है। हज़रत ने फ़रमाया। तुम्हारी ज़िन्दगी मेरे हाथ में तो नहीं, बीवी साहिबा ने जवाब दिया। तो मेरी रोज़ी भी आपके हाथ में नहीं है। हज़रत हातिम जब चले गए तो एक बुढ़िया ने हज़रत की बीवी से पूछा, के आपके वास्ते कितनी रोज़ी छोड़ गए हैं। उन्होंने जवाब दिया के हज़रत हातिम तो खुद ही रोज़ी खाने वाले थे जो खाने वाला था वो चला गया। और जो देने वाला है वो यहीं है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 301)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उम्मत में ऐसी पाकबाज़ औरतें भी गुज़री हैं जो बड़ी खुदा रसीदा और हक़ तआला पर कामिल एतमाद और भरोसा रखने वाली थीं। फिर जो मर्द होकर भी अल्लाह तआला पर एतमाद व भरोसा ना रखे तो वो किस क़द्र ग़ाफिल है।

हिकायत नम्बर(447) ज़ादे राह

एक शख़्स सफर मे जाने लगा। तो हज़रत हातिम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा, के हज़रत मुझे कुछ नसीहतें फ़रमाइये। आपने फ़रमाया, अगर तू यार चाहता है तो खुदा तआला तेरा यार काफी है। और हमराही चाहता है तो करामन कातिबीन काफी हैं। और अगर इब्रत चाहता है तो दुनिया इब्रत के लिए काफी है। और अगर मोनिस व ग़मख़्वार चाहता है तो क़ुरआन मजीद तेरा मोनिस व ग़मख़्वार काफी है। और अगर शुग़्ल दरकार है तो इबादत काफी है। और अगर वाज़ चाहता है तो मौत काफी है। और अगर ये बातें जो मैंने बयान कीं। तुझे पसंद नहीं तो दोज़ख़ तेरे वास्ते काफी है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 202)

सबक़:- इंसान के लिए इस मुसाफिर खाने दुनिया में ज़िक्रो फिक्र सब से बड़ा मुफीद और कारआमद ज़ादे राह है।

हिकायत नम्बर(448) मुर्दों का माल

हज़रत हातिम से किसी ने कहा के फलाँ शख़्स ने बड़ा माल जमा कर लिया है। फ़रमाया, क्या उसने उसके साथ ज़िन्दगानी भी जमा कर ली है? फ़रमाया तो मुर्दों का माल किस काम का है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 304)

Scanned by CamScanner

सबक़:- आगाही अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सौ बरस का है पल की ख़बर नहीं

हिकायत नम्बर(449) बुज़ुर्गों की नमाज़

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह से किसी ने दरयाफ़्त किया के आप नमाज़ किस तरह पढ़ते हैं। आपने फ़रमाया के जब नमाज़ का वक़्त आता है तो मैं ज़ाहिर का वज़ू करता हूँ और बातिन का वज़ू भी करता हू। और मेरा वज़ू इस तरह होता है के ज़ाहिरी वज़ू पानी से करता हूँ। और बातिनी वज़ू तौबा के पानी से करता हूँ। और फिर मस्जिद में दाखिल होता हूँ और कअबा शरीफ का मुशाहेदा करता हूँ। और मुक़ामे इब्राहीम को दोनों अबरो के दरमियान रखता हूँ और बहिश्त को अपनी दाहिनी तरफ़ और दोज़ख को बायें तरफ़। और पुल सिरात को अपने क़दमों के नीचे रखता हूँ। और मलक-उल-मौत को पुश्त के पीछें खयाल करता हूँ और दिल को खुदा की तरफ़ मुतवज्जह करता हूँ। बल्के उसको सोंप देता हूँ। उस वक़्त बड़ी तअज़ीम के साथ तक्बीर कहता हूँ। और बड़ी हुर्मत के साथ क़याम करता हूँ। और बड़ी हुय्यत व शौकत के साथ क़िरात करता हूँ और बड़ी आजज़ी के साथ रूकू करता हूँ और निहायत आजज़ी के साथ सिजदा बजा लाता हूँ और बहुत ही हिल्म व बुर्दबारी के साथ क़अेदे में बैठता हूँ। और निहायत शुक्रगुज़ारी के साथ सलाम फैरता हूँ। मैं इस तरह नमाज़ पढ़ता हूँ। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 302)

सबक़:- अल्लाह वालों की नमाज़ वाक़ई नमाज़ होती है। और एक हमारी नमाज़ है। के हज़ारहा ख़ामियाँ इसमें पाई जाती हैं। फिर एक ऐसा शख़्स जिसने सारी उम्र नमाज़ पढ़ी ही ना हो। उन अल्लाह वालों पर मौतरिज़ हो तो वो किस क़द्र नाअक़्बत अंदेश है।

हिकायत नम्बर(450) बुज़ुर्गों का इल्म

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमत-उल्लाह अलेह ने एक मर्तबा अपने दोस्तों से फ़रमाया के मुझे खूब याद है के हज़रत हक़ सुबहाना तआला ने जब रोज़े अज़ल में *अलस्तू बिरब्बिकुम* फ़रमाया था। और मैंने *ब-ल-या* कहा था। और जब मैं माँ के पेट में था उस वक़्त के कुल हालात भी मुझ को मालमू हैं और जब मैं तीन साल का था तो तमाम रात अपने मामू मोहम्मद बिन सवार रहमत-उल्लाह अलेह के साथ नमाज़ पढ़ा करता था।

Scanned by CamScanner

(तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 208)

सबक़:- उन अल्लाह वालों का ये इल्म है के रोज़े अज़ल तक की सारी बातें इल्म में हैं। शिकमे मादर में होते वक़्त की भी तमाम बातें और बचपन की तमाम बातें इल्म से बाहर नहीं। और ये भी मालूम हुआ के वो ज़ात ग्रामी जिन के सदक़े में उन अल्लाह वालों को ये इल्म हासिल हुआ यानी ज़ात बाबर्कात हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम। भला इस ज़ात ग्रामी से कोई बात कैसे ग़ायब रह सकती है? जिनके तुफैल अल्लाह वालों को रोज़े अज़ल तक की बातें मालूम हों। खुद उनको पीठ पीछे का भी इल्म ना हो। ये किस क़द्र जहालत की बात है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों का बचपन भी अल्लाह की याद व इबादत में गुज़रता है। फिर वो जिसने बुढ़ापे तक भी कभी नमाज़ ना पढ़ी हो। उन अल्लाह वालों का मिस्ल कैसे हो सकता है।

हिकायत नम्बर(451) बुज़ुर्गों की दुआ

एक हाकिम जिसका नाम उमरोलीस था। बीमार पड़ गया, और ऐसा बीमार हुआ के तबीब उसके इलाज से थक गए मगर वो अच्छा ना हो सका। आख़िर किसी ने कहा के दवा की तो इन्तिहा हो गई, अब किसी मुसतजाब-उल-दावात से दुआ कराई जाए। चुनाँचे सब ने हज़रत सहल रहमत-उल्लाह अलेह का नाम लिया। के वो बड़े बुज़ुर्ग और अल्लाह के वली हैं। उन से दुआ की दरख़्वास्त की जाए। चुनाँचे आपको बुलाया गया। और आप मुताबिक़ फ़रमाने हक़ *वओलिल अमरी मिनकुम* तशरीफ़ ले गए। जब मरीज़ हाकिम के पास बैठे तो उसने फ़रमाया के दुआ ऐसे शख़्स के हक़ में क़बूल होती है जो सच्चे दिल से तौबा करे और खुदा की जानिब रूजू करे। और ऐ उमरो! तेरे क़ैदखाने में बहुत से बेगुनाह क़ैदी भी हैं। पहले उन सब क़ैदियों को रिहा कर और तौबा कर। फिर मैं दुआ करता हूँ। उमरोलीस ने ऐसा ही किया। क़ैदियों की रिहाई का हुक्म दिया। और तौबा की। फिर हज़रत सहल ने हाथ उठाए और कहा के...

"खुदावंदा। ऐसा के तूने अपनी नाफरमानी की ज़िल्लत उसको दिखाई। इसी तरह मेरी इताअत की इज़्ज़त भी उसको दिखला दे। और जिस तरह के तूने उसके बातिन को लिबास तौबा पहनाया है। इसी तरह उसके ज़ाहिर को लिबास आफियत भी पहना दे।"

आप ये दुआ कर ही रहे थे के उमरोलीस बिलकुल अच्छा हो गया

Scanned by CamScanner

उमरोलीस आपको बहुत सामान नज़्र देने लगा। मगर आपने इंकार कर दिया। (तज़्करत-उल-औलिया, सफ़ा 312)

सबक़:- जहाँ दवा की इन्तिहा हो। दुआ की वो इब्तिदा होती है। और ये भी मालूम हुआ के....

बुज़ुर्गों की दुआ से बदल जाती है तक़दीरें

और ये भी मालूम हुआ के दुआ की क़बूलियत के लिए जहाँ दुआ माँगने वाला, मुसतजाब-उल-दावात होना चाहिए। वहाँ वो शख़्स जिसके लिए दुआ की जाए उसे भी अपने गुनाहों से सच्चे दिल से तौबा कर लेना चाहिए। जब दोनों तरफ़ से ये पाकीज़गी, और अफ़्फ़त पाई जाएगी। तो दुआ बहुत जल्द सुनी जाएगी।

हिकायत नम्बर(452) निराली दुआ

हज़रत मअरूफ कुर्खी रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ एक जमात के साथ कहीं जा रहे थे। के आपने दजला के किनारे जवानों की एक जमात देखी जो फिस्क़ो फिजूर में मुबतला थे। आपके हमराहियों ने अर्ज़ की। हुज़ूर इन के लिए दुआ कीजिए। ताके खुदा तआला इन सब बदमाशों को ग़र्क़ कर दे और उनकी नहूसत फैलने ना पाए। हज़रत मअरूफ ने फ़रमाया के हाथ उठाओ। मैं दुआ करता हूँ। तुम सब आमीन कहना। चुनाँचे सब ने हाथ उठाए और आपने दुआ की। के इलाही! जिस तरह तूने उनको इस जहान में ऐशो इशरत में रखा है। इसी तरह उनको उस जहान में भी ऐशो इशरत अता फ़रमा। आपकी इस दुआ पर हमराहियों ने ताज्जुब किया। और वजह दरयाफ़्त की। आपने फ़रमाया के ज़रा ठहरो मेरा मक़्सद अभी ज़ाहिर होता है। चुनाँचे थोड़ी देर के बाद इस जमात की नज़र जूहीं मअरूफ कुर्खी पर पड़ी तो उन्होंने अपने बाजे गाजे तोड़ फोड़ डाले और शराब फैंक दी। और ज़ार ज़ार रोने लगे। और सब आकर हज़रत के क़दमों में गिर गए। और सच्चे दिल से तायब हो गए। हज़रत मअरूफ ने अपने हमराहियों से फ़रमाया के देख लिया तुम ने? के मुराद हासिल हो गई। बग़ैर उसके के ये ग़र्क़ हों। या इन्हें कोई तकलीफ पहुँचे। (तज़्करत-उल-औलिया सफ़ा 330)

सबक़:- बुज़ुर्गों की दुआओं से काया पलट जाती है और जो काम तीग़ व तीर से नहीं हो सकता वो काम किसी अल्लाह वाले की नज़र और दुआ से फौरन हो जाता हैं इसी लिए शायर ने लिखा है के:-

Scanned by CamScanner

ना किताबों से ना कालिज के है दर से पैदा
दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा

हिकायत नम्बर(453) रूनी हाकिम

हज़रत मअरूफ कुर्खी रहमत-उल्लाह अलेह के मामूँ शहर के हाकिम थे। एक रोज़ इस हाकिम का गुज़र एक जंगल से हुआ। जहाँ हज़रत मअरूफ कुर्खी बैठे रोटी खा रहे थे और एक कुत्ता भी साथ ही बैठा था। हाकिम शहर ने देखा के हज़रत मअरूफ एक लुक़मा अपने मुंह में डालते हैं और एक लुक़मा उस कुत्ते के मुंह में डालते हैं। आपके मामूँ ने देखकर कहा के तुम्हें शर्म नहीं आती के एक कुत्ते के साथ रोटी खा रहे हो। आपने फ़रमाया के मैं शर्म ही के सबब से तो उसे रोटी खिला रहा हूँ। आपने सर उठाया। और एक परिंदे को जो हवा में उड़ रहा था। आवाज़ दी। वो परिंदा हुक्म पाते ही नीचे उतर आया। आपके हाथ पर आ बैठा। लेकिन अपने पर से अपना मुंह और अपनी आँखें छुपा लीं। हज़रत मअरूफ ने फ़रमाया के देख लो जो शख़्स खुदा तआला से शर्म रखता है हर चीज़ उससे शर्म रखती है। आपके मामूँ ने ये शान देखी तो बड़ा शर्मिंदा हुए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 331)

सबक़:- अल्लाह वालों के अख़लाक़ बड़े बुलंद होते हैं। और उनके दिल अल्लाह की मख़लूक़ की हमदर्दी से मामूर होते हैं। और वो भूके कुत्तों का भी खयाल रखते हैं। फिर जिसके दिल में किसी भूके इंसान का भी खयाल ना हो, तो वो किस क़द्र संग दिल और ग़ाफिल है। और ये भी मालूम हुआ के ग़ुरबा व मसाकीन से नेक सलूक करना और हमदर्दी रखना दरअसल यही शर्म व हया है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की हकूमत जानवरों पर भी जारी है। इसलिए हज़रत शेख़ सअदी ने फ़रमाया के...

तोहम गर्दन अज़ हुक्म दावर मेच
के गर्दन ना पीचदज़ हुक्म तो हैच

यानी तुम अल्लाह के हुक्म से सरताबी ना करो, तो सारी मख़लूक़ में से कोई तुम्हारी हुक्म की सरताबी ना करेगा।

हिकायत नम्बर(454) इन्तिक़ाल मकानी

हज़रत फतह मूसल रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ अपने यारों के साथ मस्जिद में बैठे थे। के एक नोजवान जो सादा लिबास पहने हुए था, आया, और कहने लगा के जनाब! क्या मुसाफिरों का भी कोई हक़ होता है या

Scanned by CamScanner

नहीं। हज़रत मूसली ने फ़रमाया के हाँ होता हैं इस नोजवान ने कहा तो फिर मैं एक मुसाफिर हूँ, फलाँ मोहल्ले के फलाँ मकान में ठहरा हुआ हूँ। कल मैं मर जाऊँगा। कल आप इस मोहल्ले में आइये और मेरे मकान में पहुँच कर मेरा ग़ुस्ल आप खुद दें। और मेरे इसी पीराहन को कफन बनाएँ। और इसी कफन में दफनायें। ये कहकर वो नोजवान चला गया।

हज़रत मूसली दूसरे रोज़ उसी मोहल्ले में पहुँचे। और इस मकान में गए तो वाक़ई वो नोजवान फौत हो चुका था। हज़रत मूसली ने हस्बे वसीयत उसको खुद निहलाया और इसी पीराहन में कफनाया। हज़रत मूसली रहमत-उल्लाह अलेह जब कफन पहना कर फारिग़ हुए तो उस नोजवान ने कफन से हाथ निकाला। और हज़रत मूसली का दामन पकड़ कर कहा के जज़कल्लाह! ऐ फतह मूसली! अगर मैं हक़ तआला के नज़दीक मर्तबा पाऊँगा तो आपकी इस ख़िदमत के अवज़ ज़रूर आपकी ख़िदमत का बदला चुकाऊँगा। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 349)

सबक़:- अल्लाह वालों को बअता इलाही ये इल्म भी होता है के वो कब मरेंगे। फिर जो उन सब अल्लाह वालों के सय्यद व सरदार हैं और जिनके सदक़े में उन सबको ये अज़मतें मिलीं, उनका अपना इल्म किस क़द्र वसी होगा। और ये भी मालूम हुआ के ये अल्लाह वाले मरते नहीं हैं बल्के उनकी मौत महज़ इन्तिक़ाल मकानी होती है। यानी एक जगह छोड़ कर देसरी जगह चले जाना। जैसे के एक शायर ने लिखा है...

औलिया को मत समझिये मर गए
वो तो इस दुनिया से अपने घर गए

हिकायत नम्बर(455) चिराग़ाँ

हज़रत अहमद ख़िज़्रविया रहमत-उल्लाह अलेह के घर एक दूसरे मक़्बूल हक़ तशरीफ़ लाए। हज़रत अहमद ख़िज़्रविया ने अपने घर में सात चिराग़ रोशन किए। मेहमान बुज़ुर्ग ने फ़रमाया के ये तकलीफ क्यों किया? हज़रत अहमद ख़िज़्रविया ने फ़रमया के आप उठिये। और जो चिराग़ मैंने खुदा के वास्ते रोशन ना किया हो। उसे बुझा दीजिए। मेहमान बुज़ुर्ग उठे और इन चिराग़ों को बुझाने लगे। मगर इनमें किसी चिराग़ को भी ना बुझा सके। हज़रत अहमद ख़िज़्रविया दूसरे रोज़ अपने मेहमान बुज़ुर्ग को साथ लेकर एक कलीसा के दरवाज़े पर पहुँचे इस कलीसा के दरवाज़े पर इसाईयों का सरदार बैठा हुआ था। उस सरदार ने हज़रत अहमद ख़िज़्रविया से कहा के आइये।

Scanned by CamScanner

दसतरख़्वान बिछ रहा है। खाना खाईये। आपने फ़रमाया के दोस्त दुश्मनों के साथ कोई चीज़ नहीं खाया करते। उसने कहा। तो आप मुझे मुसलमान कर लीजिए। चुनाँचे आपने उसे कलमा पढ़ाकर मुसलमान कर लिया इस सरदार के साथ उसकी क़ौम के सत्तर अफ़्राद और भी थे। उन्होंने अपने सरदार को मुसलमान होते देखा। तो वो सब भी मुसलमान हो गए। उस रात आपने ख़्वाब में खुदा तआला की तरफ़ से हातिफ की ये आवाज़ सुनी के

"तुम ने हमारे वास्ते सात चिराग़ रोशन किए, हम ने तुम्हारे वास्ते तेरे ज़रिये सत्तर दिलों को नूर ईमान से रोशन कर दिया।" (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 260)

सबक़:- जो काम भी अल्लाह की खुशनूदी के लिए किया जाए। उसी तकल्लुफ या इसराफ नहीं कहा जा सकता। मालूम हुआ के ईद मीलाद-उन्नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मौक़े पर जो चिराग़ाँ की जाती है। इस में बजुज़ उसके खुदा के मेहबूब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की खुशी का मुज़ाहेरा हो। और कोई नीयत नहीं होती। फिर इस चिराग़ाँ को तकल्लुफ या बिदअत समझना क्यों ना हो। और ये भी मालूम हुआ के जो लोग अल्लाह के मेहबूब की खुशी मनाते हुए अपने घर रोशन करते हैं। अल्लाह तआला अपने मेहबूब के सदक़े में इंशा अल्लाह उनकी क़ब्रों को रोशन करेगा।

हिकायत नम्बर(456) भाई को नसीहत

हज़रत याहिया मआज़ राज़ी रहमत-उल्लाह अलेह के एक भाई थे जो के मक्का मोअज़्ज़मा में जाकर वहाँ के मुजाविर हो गए। एक रोज़ उन्होंने हज़रत याहिया को ख़त लिखा के मुझे तीन चीज़ों की आरज़ू थी। दो तो उन में से मुझे हासिल हो गईं। एक बाक़ी है। दुआ फ़रमाइये के वो भी हासिल हो जाए। इन तीनों आरज़ूओं में से एक ये आरज़ू थी के मैं अपनी आख़िर उम्र में एक बेहतरीन और मुबारक जगह में रहूं। चुनाँचे मैं अब ख़ाना कअबा में पहुँच गया हूँ। जो सबसे बढ़कर मुबारक जगह है। ये आरज़ू तो पूरी हुई। दूसरी आरज़ू ये थी के मेरा एक ख़ादिम हो, ताके मेरी ख़िदमत करे। और मेरे वज़ू के लिए पानी तैयार करे। सो खुदा तआला ने ये आरज़ू भी पूरी फ़रमा दी। के मुझे एक शायस्ता ग़ुलाम अता फ़र दिया। तीसरी आरज़ू मेरी ये थी के मौत से पहले आपको देखूं। तो उम्मीद है के हक़ तआला ये भी आरज़ू मेरी पूरी फ़रमा देगा।

Scanned by CamScanner

हज़रत याहिया रहमत-उल्लाह अलेह ने अपने भाई को जवाब लिखा के ये जो आपने लिखा है के मैं बेहतरीन जगह की आरज़ू रखता हूँ। इसका जवाब ये है के आप खुद बेहतरीन मख़लूक़ बनने की कोशिश कीजिए। और खुद बेहतरीन मख़लूक़ बनकर फिर जिस जगह में भी दिल चाहे रहिए। याद रखिये के जगह मर्दों से बुज़ुर्ग व अज़ीज़ बनती है ना के मर्द जगह से। और जो आपने लिखा है के मुझे एक खादिम की ज़रूरत थी। और वो भी पूरी हो गई। तो इसका जवाब ये है के अगर आप में मुरव्वत व जवाँ मर्दी होती तो आप अल्लाह तआला के एक ख़ादिम को अपना ख़ादिम ना बनाते। और हक़ तआला की ख़िदमत से उसे बाज़ ना रखते। और अपनी ख़िदमत में उसे मशगूल ना करते। आपको तो खुद ख़ादिम बनना चाहिए। ना के आप मखदूमी की आरज़ू करें। याद रखिये के मख़दूमी हक़ तआला की सिफात में है। और ख़ादिमी बन्दे की सिफात में से पस बन्दे को बन्दा ही रहना चाहिए। और जब बन्दा हक़ तआला की सिफात की आरज़ू करे तो ऐसा जानना चाहिए के वो फिरऔनित इख़्तियार करना चाहता है। और ये आपने लिखा है के मुझे तुम्हारे दीदार की आरज़ू है तो उसका जवाब ये है के मालूम होता है के आप खुदा तआला से ग़ाफिल हैं। अगर आप खुदा तआला से बाख़बर होते तो मैं आपको कभी याद ना आता आपको लाज़िम है के हक़ तआला की याद इस तरह रखें। के आपको भाई की याद ना आए। मेरे भाई अगर आपने हक़ तआला को पा लिया। तो फिर मेरी क्या हाजत? और अगर उसको ना पाया तो मुझे पा लेने से क्या फायदा। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 368)

सबक़:- इंसान को लाज़िम है के वो हक़ तआला की याद और नेक आमाल से अपने आपको बेहतरीन व मुबारक बना ले फिर वो चाहे कहीं भी रहे। नेक ही है। और इंसान को लाज़िम है के वो जहाँ तक मुमकिन हो। ख़िदमत व तवाज़ौ इख़्तियार करे और तकब्बुर व अनानियत और मख़दूमीयत का शौक़ नज़दीक ना आने दे और हमातन अल्लाह की ख़िदमत व इबादत में मसरूफ रहे और अल्लाह तआला की याद में इतना महू व मुसतग़रिक़ रहे के दुनयवी रास्ता उसकी मोहब्बत हक़ में हायल ना हो सके।

हिकायत नम्बर(457) ख़्वाब की ताबीर

हज़रत याहिया मआज़ राज़ी रहमत-उल्लाह अलेह ने एक मर्तबा अपने एक अज़ीज़ को ख़त लिखा के दुनिया मिस्ल ख़्वाब के है। और आख़िरत मिस्ल बैदारी के। और जो शख़्स ख़्वाब में देखे के रो रहा है तो ताबीर इसकी

Scanned by CamScanner

उल्टी होती है। यानी बैदारी में वो हंसेगा। और शाद होगा। पस ऐ अज़ीज़! तुम को इस दुनिया में जो मिस्ल ख़्वाब के है। ख़ौफे खुदा से रोना चाहिए ताके आख़िरत की बैदारी तुम हंसी और खुशी पा सको। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 369)

सबक़:- इंसान को लाज़िम है के वो आखिरत को संवारने के लिए इस दुनिया में अच्छे काम करे और खुदा के हुज़ूर खड़े होने का हर वक़्त खयाल रखे। और ख़ौफे खुदा से आँसू बहाए। ताके उसकी आख़िरत अच्छी हो जाए। इसी लिए मौलाना रूमी ने फ़रमाया के

हर कजा आब रवाँ गुनचा बोद
हर कजा अश्क रवाँ रहमत शोद

यानी जहाँ पानी बहता है, वहाँ फूल उगते हैं। इसी तरह जहाँ खुदा के ख़ौफ से आँखों से आँसूं बहते हों वहाँ रहमत के फूल उगते हैं।

हिकायत नम्बर(458) शमै ईमान

एक रात हज़रत याहिया मआज़ राज़ी रहमत-उल्लाह अलेह के सामने एक शमादान रोशन थी। जो हवा के एक झोंके से बुझ गई। हज़रत ने रोना शुरू कर दिया, मुरीदों ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! शमा फिर रोशन कर देते हैं। आप रोते क्यों हैं? आपने फ़रमाया। मैं इसलिए नहीं रो रहा के ये शमा क्यों बुझ गई, मैं तो इस खयाल से रोने लगा हूँ के ईमान की शमा और तौहीद का जो चिराग़ बुतों में रोशन है। कहीं ऐसा ना हो के खुदा तआला की बेनियाज़ी की हवा लगे तो ये शमा भी गुल हो जाए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 270)

सबक़:- अल्लाह तआला से हर वक़्त अंजाम व आक़्बत की बेहतरी माँगना चाहिए और ये दुआ करते रहना चाहिए के खुदा तआला हमारा ईमान सलामत रखे। और हर वक़्त हम इस दौलत ईमान से माला माल दुनिया से रूख़्सत हों।....

या खुदा जिस्म में जब तक के मेरी जान रहे
तेरे सदक़े तेरे मेहबूब के क़ुर्बान रहे
कुछ रहे या ना रहे पर ये दुआ है के अमीर
नज़अ के वक़्त सलामत मेरा ईमान रहे

हिकायत नम्बर(459) चार दुआयें

एक शख़्स जो बड़ा अमीर था, हर वक़्त फिस्क़ो फिजूर में मुबता रहता

Scanned by CamScanner

था। और कभी भूल कर भी खुदा की याद नहीं करता था। एक रोज़ अपने ग़ुलाम को चार दरहम दिए ताके वो बाज़ार से मीठाई खरीद कर लाए। चुँनाँचे वो ग़ुलाम गया। रास्ते में उसने देखा के एक जगह हज़रत मनसून रहमत-उल्लाह अलेह एक मजमअे में वाज़ फ़रमा रहे हैं। ग़ुलाम ने सोचा थोड़ी देर हज़रत मनसूर का वाज़ ही सुन लूं। चुनाँचे वो इस मजलिस में हाज़िर हो गया। उस वक़्त हज़रत मनसूर एक मुसतहिक़ दुरवैश की ख़िदमत करने के लिए लोगों से अपील कर रहे थे और फ़रमा रहे थे के जो शख़्स इस दुरवैश को चार दरहम देगा मैं उसके लिए चार दुआएँ करूंगा। ग़ुलाम ने दिल में सोचा के ये चार दरहम जो मेरे पास हैं। मैं इस दुरवैश को दे दूं। और चार दुआएँ अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ करा लूं। चुनाँचे उसने वो चार दरहम दुरवैश को दे दिए। हज़रत मनसूर ने फ़रमाया के *जज़ाकल्लाह* अब बताओ के मैं तुम्हारे वास्ते कौन कौन सी दुआ करूं। ग़ुलाम ने कहा पहली तो ये दुआ कीजिए के खुदा तआला मुझे ग़ुलामी से आज़ादी दे दे। दूसरी ये के अल्लाह तआला मेरे मालिक को तौबा कर लेने की तौफीक़ दे दे। तीसरे ये के मुझे चार दरहम और मिल जाए। चौथे ये के अल्लाह तआला मुझे और हाज़ीने मजलिस को और मेरे मालिक को सब को बख़्श दे। हज़रत मनसूर ने ये चारों दुआएँ कीं और वो ग़ुलाम ये चारों दुआएँ कराके घर वापस आ गया। मालिक ने उससे पूछा के तुम ने इतनी देर कहाँ लगाई। तो उसने सारा क़िस्सा बयान किया और कहा के मैं वो चार दरहम हज़रत मनसूर की मजलिस में देकर आया हूँ और उनके अवज़ हज़रत मनसूर से चार दुआएँ करा ली हैं। मालिक नू पूछा के वो चार दुआएँ कौन कौन सी हैं ज़रा मुझे भी तो सुना। ग़ुलाम ने कहा के एक तो ये के खुदा तआला मुझे आज़ादी अता फ़रमाए। और दूसरे ये के इन चार दरहमों के अवज़ चार दरहम मिल जाएँ। तीसरे ये के खुदा तआला आपको तौबा की तौफीक़ अता फ़रमाए। चौथे ये के खुदा तआला मुझ पर आप पर हज़रत मनसूर और सारे हाज़रीन जलसा पर अपनी रहमत फ़रमाए। और सबकी मग़फिरत फ़रमा दे। मालिक ने ये सुना। तो कहने लगा। पहली दुआ तो क़बूल हुई। जाओ मैंने तुझे आज़ाद किया। दूसरी भी क़बूल हुई लो उन दरहमों के अवज़ में तुझे चार सौ दरहम देता हूँ और तीसरी भी क़बूल हुई। सनो! मैं सच्चे दिल से तौबा करता हुँ आईंदा कभी खुदा की नाफरमानी ना करूंगा। और किसी गुनाह के क़रीब ना फटकूंगा। अब जो कुछ के मेरी क़ुद्रत में था मैंने उसको पूरा कर दिया लेकिन चौथी बात मेरे इख़्तियार में नहीं। उसमें मैं मजबूर हूँ। और वो काम मैं नहीं कर सकता। उसी

Scanned by CamScanner

वक़्त हातिफ से एक आवाज़ आई। ऐ बन्दे! जो कुछ तेरे इख़्तियार में था, बन्दा होकर तुम ने वो काम कर दिखाया। तो जो कुछ हमारे इख़्तियार में है। रहीम होकर हम वो काम क्यों ना करें। जाओ हम ने तुझे तुम्हारे ग़ुलाम, मनसूर और सारे हाज़ीने मजलिस को अपनी रहमत में ले लिया। और सबको बख़्श दिया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 415)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूलों की मजलिस में शिर्कत मौजिबे रहमत हक़ और बाइस निजात है। और मुसतेहक़ीन की मदद व एआनत से अल्लाह तआला खुश होता है। और मदद करने वाले पर रहमत फ़रमाता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दों से दुआ कराने में मक़्सद जल्दी हल हो जाता है। इसलिए के अल्लाह तआला अपने मक़्बूल बन्दों की दुआ मुताबिक़ हदीस *लइन साअलनी लाअतीन्नाहू* (यानी मेरा मक़्बूल जब मुझ से कुछ मांगे तो मैं उसे ज़रूर अता फ़रमाता हूँ) जल्दी सुनता है। और ये भी मालूम हुआ के बुज़ुर्गों की दुआओं से गुनाहगारों की काया पलट जाती है। इसी लिए शायर ने लिखा है के...

बुज़ुर्गों की दुआओं से बदल जाती हैं तक़दीरें

हिकायत नम्बर(460) फिरासत मोमिन

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह के ज़माने में एक मजूसी रहता था। एक रोज़ उसने अपने गले में ज़िनार पहना। और उसके ऊपर मुसलमानों का लिबास पहन कर हज़रत जुनैद के पास आया। और कहने लगा, हुज़ूर! एक हदीस का मतलब दरयाफ़्त करने आया हूँ। हदीस में आया है के *इत्तक़ू बिफिरासतिल मोमिनी फइन्नहू यनज़ुरू बिनूरिल्लाही* यानी मोमिन की फिरासत से डरो। इसलिए के वो अल्लाह के नूर से देखता है। इस हदीस का क्या मतलब हैं हज़रत जुनैद मुसक्कुराए और फ़रमाया "इस हदीस का मतलब ये है के तू अपना ज़िनार तोड़। कुफ्र छोड़। और कलमा पढ़कर मुसलमान हो जा" मजूसी ने जब ये सुना तो फौरन पुकार उठा। *अशहद अनलाइलाहा इलल्लाह व अशहदूअन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू* (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 433)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे जो सही मानों में साहबे ईमान होते हैं। उनकी नज़र से कोई पौशीदा बात पनेहाँ नहीं रहती। और वो मुताबिक़ हदीसे पाक के नूरे हक़ के साथ सब कुछ देख लेते हैं। इसी लिए मौलाना रूमी ने फ़रमाया... लोह महफ़ूज़ अस्त पैश औलिया

Scanned by CamScanner

फिर खुद सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से जिनके सदक़े में उन अल्लाह वालों को ये वुसअत नज़र अता हुई। कायनात की कोई शै पौशीदा कैसे रह सकती है? सच फ़रमाया आँहज़रत ने के....

दिल फर्श पर है तेरी नज़र, सरे अर्श पर है तेरी गुज़र
मलकूत व मुलक में कोई शै नहीं वो जो तुझ पर अयाँ नहीं

हिकायत(461) ग़ीबत

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह ने एक शख़्स को देखा, जो सवाल कर रहा था। हज़रत जुनैद के दिल में खयाल आया के ये शख़्स तनदुरूस्त होकर सवाल कर रहा है। हालाँके खुद कमा भी सकता है। शब को सोए तो ख़्वाब में देखा के एक ख़्वान सर पोश से ढका हुआ सामने रखा है। और लोग कहते हैं। के खाओ हज़रत जुनैद ने सर पोश उठाया। तो देखा वही सायल दुरवैश मुर्दा उसमें रखा हुआ है। जुनैद फ़रमाने लगे के मैं मुर्दाखौर तो नहीं हूँ? लोगों ने जवाब दिया। तो फिर आपने इस दुरवैश को दिन के वक़्त क्यों खाया था? जुनैद फ़रमाते हैं मैं समझ गया के शायद ये इशारा इसी मेरे दिली खयाल की तरफ़ हैं। पस मैं मारे हैबत के जाग उठा। और वज़ू करके दो रकात नमाज़ पढ़ी। और इस दुरवैश की तलाश में निकला। देखा के वो दरया के किनारे बैठा हुआ है। और साग जो लोग धोकर चले गए हैं। उसके टुकड़े पानी से चुन चुन कर खा रहा है मैं उसके क़रीब पहुँचा तो उसने सर उठाया और कहा। ऐ जुनैद! मेरे हक़ में जो तुम्हारे दिल में खयाल आया था। उससे तौबा कर ली! मैंने कहा हाँ! कहने लगा अब जाओ *हुवल्लज़ी युक़्बलूत्तोबाता अन इबादिहीं* यानी खुदा अपने बन्दों से तौबा क़बूल फ़रमाता हैं जुनैद अब दिल की हिफाज़त करना। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 440)

सबक़:- बदगुमानी व ग़ीबत बहुत बुरी चीज़ है और किसी मुसलमान भाई की ग़ीबत करना ऐसा है जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों से कोई बात छुपी नहीं रहती।

हिकायत नम्बर(462) मुंह की सियाही

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह का एक मुरीद था। जो बसरा में रहता था। उसके दिल में एक रोज़ किसी गुनाह का खयाल पैदा हुआ ये खयाल बद आते ही उसके मुंह पर सियाही फैल गई। उसने आईना में जो

Scanned by CamScanner

अपना मुंह देखा तो बड़ा घबराया और शर्म के मारे घर से बाहर निकलना छोड़ दिया। अलग़र्ज़ तीन रोज़ के बाद उसके मुंह की सियाही कम होते होते दूर हो गई। और मुंह फिर उसी तरह रोशन हो गया। उसी रोज़ एक शख़्स आया। और हज़रत जुनैद बग़दादी अलेह अर्रहमा का एक ख़त दे गया। एक ने ख़त जो पढ़ा तो उसमें लिखा था के अपने दिल को अपने क़ाबू में रखे और बारगाहे बन्दगी के दरवाज़े पर अदब से रहो। आज मुझे तीन रात तीन दिन गुज़र गए हैं के धोबी का काम करना पड़ा ताके तुम्हारे मुंह की सियाही दूर हो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 446)

सबक़:- पीरो मुर्शिद की बदौलत इंसान गुनाहों से बचता रहता है और अगर कोई लग़ज़िश वाक़े हो भी जाए तो पीरो मुर्शिद की एआनत व इम्दाद से उसका तदारूक भी हो जाता है। पस किसी मुर्शिद का दामन ज़रूर पकड़ना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के खुदा की याद से मुंह पर एक ख़ास नूरानियत का जलवा नज़र आता है। और गुनाहों के इरतिकाब से दिल भी सियाह हो जाता है और मुंह पर भी नहूसत छा जाती है।

हिकायत नम्बर(463) दो तलवारें

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक सय्यद साहब तशरीफ़ लाए आप ने दरयाफ़्त किया। सय्यद साहब! आप कहाँ से तशरीफ़ लाए हैं सय्यद साहब ने जवाब दिया। गीलान से फ़रमाया आप किस की औलाद हैं? सय्यद साहब ने जवाब दिया। अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत अली रज़ी अन्ह की औलाद से हूँ। आपने फ़रमाया। आपके दादा दो तलवारें मारते थे। एक काफिरों को। दूसरी नफ़्स को। सय्यद साहब आप उनकी औलाद से हैं। फ़रमाईये आप कौन सी तलवार मारते हैं? सय्यद साहब ये सवाल सुनकर रोने लगे और कहने लगे आप मेरी रहनुमाई करें। और पंदो निसायह फ़रमाएँ। चुनाँचे आपने सय्यद साहब को बहुत कुछ इर्शाद फ़रमाए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 448)

सबक़:- हर मुसलमान को अपने नफ़्स से मुक़ाबला करना चाहिए और *मौतू क़बला अन तमूतू* के मुताबिक़ इस नफ़्स सरकश को मार डालना चाहिए। हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की तरह जहाँ कुफ़्फ़ार से जिहाद करने पर आमादा रहना चाहिए। वहाँ अपने नफ़्स से भी जिहाद करना ज़रूरी है इसलिए के ये भी मर्दे मोमिन का बड़ा दुश्मन है। और इसका मारना भी बहुत बड़ा जिहाद है।

Scanned by CamScanner

नहंग व अज़दहा शेर नर मारा तो क्या मारा
बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा

हिकायत नम्बर(664) तवाज़ौ

हज़रत उस्मान अलजीरी रहमत-उल्लाह अलेह बाज़ार में से गुज़र रहे थे के किसी गुसताख ने राख से भरा हुआ एक तबक़ अपने कोठे से आपके सर पर फैंक दिया। आपके मुरीद इस गुसताख़ पर ब्रिहम हुए तो आपने फ़रमाया के ये गुस्सा का मुक़ाम नहीं। बल्के ये तो मुक़ाम शुक्र है के जो शख़्स इस क़ाबिल था के उसके सर पर आग डाली जाए। ज़रा सी राख डालकर उसको कह दिया गया के बदला हो गया सो मैं तो शुक्र कर रहा हूँ के अल्लाह ने आग की बजाए राख पर मामला ख़त्म कर दिया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 491)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे बुराई का बदला बुराई से नहीं देते और हर वक़्त तवाज़ौ पसंद रहते हैं।

हिकायत नम्बर(665) शैतान का जाल

हज़रत अब्दुल्लाह जला रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ एक खूबसूरत मजूसी लड़के को देखा और उसके हुस्नो जमाल से आप इस क़द्र मुतास्सिर हुए के उसे देखते ही रहे। थोड़ी देर के बाद हज़रत जुनैद बग़दादी अलेह अर्रहमा वहाँ से गुज़रे। तो आपने उनसे अर्ज़ की। या उस्ताद! मैं इस लड़के का हुस्नो जमाल देखकर ये सोच रहा था के ऐसी अच्छी सूरत दोज़ख़ की आग में जलेगी। हज़रत जुनैद बग़दादी ने फ़रमाया। ऐ अब्दुल्लाह! ये शैतान का एक जाल और फ़रैब नफ़्स है। जो तुझे यूं लुभा रहा है। और याद रख! के ये नज़्ज़ारा-ए-इब्रत नहीं। बल्के नज़्ज़ारा-ए-शेहवत है। अगर नज़्ज़ारा-ए-इब्रत होता तो अठ्ठारह हज़ार आलम में बहुत से अजायबात हैं। तों उनसे इब्रत हासिल करता मगर ये शैतानी जाल है के उस लड़के ही के हुस्नो जमाल को तू नज़्ज़ारा-ए-इब्रत समझने लगा। अनक़रीब तुम इसकी पादाश में गिरफ़्त में आओगे। चुनाँचे अबु अब्दुल्लाह जो हाफिज़े क़ुरआन भी थे। क़ुरआन को भूल गए। फिर वो बरसों रोते रहे। और अपनी लग़ज़िश की माफ़ी चाहते रहे। और तौबा करते रहे। तब जाकर अल्लाह तआला ने अपना फज़्ल फ़रमाया और क़ुरआन फिर याद हो गया। उसके बाद हज़रत अबु अब्दुल्लाह फिर किसी चीज़ की तरफ़ इलतिफात ना फ़रमाते थे।

Scanned by CamScanner

(तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 498)

सबक़:- जो लोग पराई औरतों को देखते और यूं कहते हैं के हम ख़ालिक हुस्नो जमाल की क़ुद्रत व सनअत को देखते हैं और जो लोग सिनेमा व तमाशा देखकर यूं कहते हैं के हम इब्रत हासिल करने के लिए सिनेमा देखते हैं। वो दरअसल शैतान के जाल में फंस चुके होते हैं। क्योंके इब्रत के लिए तो और भी हज़ारों लाखों चीज़ें मौजूद हैं। फिर एक "तमाश बीनी और नज़रबाज़ी" ही को मौजिबे इब्रत समझना शैतानी चाल व जाल नहीं तो और क्या है।

हिकायत नम्बर(466) गंवार

हज़रत अबु अलहसन बूशिंजी रहमत-उल्लाह अलेह के शहर में एक गंवार का गधा गुम हो गया वो गंवार सीधा हज़रत अबु अलहसन के पास आया। और कहने लगा मेरा गधा आपने लिया है, हज़रत ने फ़रमाया ये क्या कह रहे हो। मैंने तुझे आज ही देखा है, मुझे तुम्हारे गधे से क्या ग़र्ज़। जाओ इस इलज़ाम व इतहाम से बाज़ आओ वो गंवार कहने लगा मैं तो हरगिज़ ना जाऊँगा। और मैं शौर मचाऊँगा और मेरा गधा आप ही ने चुराया है। हज़रत अबु अलहसन ने हाथ उठाकर दुआ माँगी के इलाही! मुझे इस गंवार के मख़मसे से निजात दे दुआ माँगते ही गंवार के पास एक आदमी आया जिसने बताया के गधा मिल गया है। गंवार हज़रत के क़दमों में गिर गया। और कहने लगा हज़रत माफ फ़रमाईयेगा मुझे यक़ीन था के गधा आपने नहीं लिया मगर अपना गधा पाने की मैंने तरकीब सोची थी के हज़रत अबु अलहसन जो मक़्बूले खुदा है। उसे तंग करो तो वो अल्लाह से दुआ माँगेगा। अल्लाह क़बूल फ़रमाएगा और मेरा गधा मिल जाएगा। चुनाँचे ऐसा ही हुआ।
(तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 529)

सबक़:- एक गंवार तक को भी ये इल्म है के अल्लाह वालों की दुआएँ क़बूल होती हैं और उनकी बारगाह में हाज़िर होने से मुश्किलात टल जाती हैं। फिर जो पढ़ा लिखा होकर भी उन अल्लाह वालों को अपने बराबर समझे तो वो इस गंवार से भी गया गुज़रा हुआ या नहीं?

हिकायत नम्बर(467) ज़माना नबुव्वत से बाद

हज़रत हकीम तिरमीज़ी रहमत-उल्लाह अलेह बड़े हसीनो जमील थे एक बार एक मालदार औरत उनके सामने आई और उन पर फ़रीफ़्ता हो गई। और

Scanned by CamScanner

हज़रत से अपनी दिली कैफियत बयान की। हज़रत ने लाहोल पढ़ी और वहाँ से भागे। फिर जब तीस बरस के बाद आप बूढ़े हो गए तो आपको एक मर्तबा यही जवानी के आलम का वाक़ेया याद आया और दिल में सोचने लगे के अगर मैं उस वक़्त उस औरत का दिल ना तोड़ता और बाद में तौबा कर लेता तो क्या मुज़ायक़ा था। ये खयाल आते ही आप चौंके और रोने लगे। और नफ़्स को मलामत करने लगे के ऐ बदज़ात! गुनाहों के दिलदादा! जवानी में तो ये आरज़ू ना हुई। अब बुढ़ापे में इस क़द्र मुजाहिदे और रियाज़त के बाद भी गुनाह करने पर ये पशेमानी? हीहात! हीहात! और बहुत ग़मगीन हुए के ये खयाल क्यों आया? तीन रोज़ इसी परेशानी में रहने के बाद ख़्वाब में सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत हुई। हुज़ूर ने फ़रमाया: ऐ तिरमिज़ी रंजीदा मत हो। इस खयाल के आने में तुम्हारा क़सूर नहीं। इसकी वजह ये है के मेरे इन्तिक़ाल को तीस बरस और गुज़र गए और तुम्हारा ये बुढ़ापे का ज़माना मेरे ज़माने से तीस बरस और दूर गुज़र गया और इस क़िस्म के खयाल मेरे ज़माने से दूरी और बाद की वजह से हैं। तुम मतलक़ ना घबराओ और अल्लाह अल्लाह करते रहो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 535)

सबक़:- अल्लाह वालों के दिल में किसी क़िस्म का बुरा खयाल भी पैदा हो जाए तो इस पर रंजीदा और परेशान हो जाते हैं। फिर ऐसे लोग बुरे कामों से क्यों ना मेहफूज़ होंगे? और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को अपनी उम्मत की परेशानियों और सारी कैफियतों का बादअज़ विसाल शरीफ भी इल्म है। और हुज़ूर अपने ख़ास ग़ुलामों की तसल्ली व तसकीन के लिए अब भी तशरीफ़ फ़रमा होते हैं और ये भी मालूम हुआ के ज़माना नबुव्वत बड़ा ही बाबर्कत व रहमत का ज़माना था। और नमाज़ जिस क़द्र इस मुबारक ज़माने से दूर होता चला जा रहा है। इसी क़द्र मसायब व आलाम और ज़नूब व मआसी बढ़ रहे हैं।

हिकायत नम्बर(468) दो सूफी

हज़रत अब्दुल्लाह हनीफ रहमत-उल्लाह अलेह के मिलने को दो सूफी दूरराज़ मुल्क से आए जब आपकी ख़ानक़ाह में पहुँचे तो उन्हें मालूम हुआ के हज़रत अब्दुल्लाह बादशाह के दरबार गए हैं। उन दो सूफियों ने दिल में सोचा के ये कैसा वली है जो बादशाहों के दरबार में जाता है। फिर वो वहाँ से निकल कर शहर में घूमने लगे। जब वो एक दर्ज़ी की दुकान के पास

Scanned by CamScanner

पहुँचे तो उन्होंने सोचा के हमारा ख़िरक़ा फट रहा है उसे सी लें। चुनाँचे दर्ज़ी की दुकान पर गए और उससे सुई तलब करके अपना ख़िरक़ा सीने लगे। इत्तिफाक़न दर्ज़ी की कैंची खो गई। और दर्ज़ी ने गुमान किया के मेरी कैंची इन्हीं दो सूफियों ने चुराई है। चुनाँचे वो इन दोनों को पकड़ कर बादशाह के पास ले गया। और कहने लगा के ये दोनों मेरी कैंची के चोर हैं। हज़रत अब्दुल्लाह हनीफ वहीं तशरीफ़ फ़रमा थे। आपने बादशाह से फ़रमाया ये तो दो सूफी मनशन इंसान हैं इनका ये काम नहीं हो सकता। इन्हें छोड़ दो। बादशाह ने हज़रत के कहने पर उनको छोड़ दिया। फिर आप ने इन दोनों सूफियों से फ़रमाया। भाई तुम्हारी बदगुमानी दुरूस्त ना थी मैं ऐसे ही कामों के लिए यहाँ आया हूँ। ये बात देखकर दोनों आपके मुरीद हो गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 571)

सबक़:- अल्लाह वालों से जो बदगुमान होता है वो मुश्किलात में घिर जाता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की हर अदा में कोई ना कोई हिकमत होती है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों को दिली कैफियात का भी इल्म होता है।

हिकायत नम्बर(469) सफेद बाज़

हज़रत अबु मोहम्मद जरीरी रहमत-उल्लाह अलेह ने एक मर्तबा फ़रमया के चालीस साल से मैं एक सफे बाज़ की तलाश में हूं। लेकिन वो आज तक नहीं मिला। मुरीदैन ने अर्ज़ किया। हुज़ूर इस राज़ से मतलअ फ़रमाएँ। आपने फ़रमाया के आज से चालीस साल पहले मैं एक रोज़ नमाज़ अस्र से फारिग़ होकर मस्जिद में बैठा था के मैंने एक नोजवान को देखा। जो नंगे पाँव और ज़र्दरू और बिखरे हुए बालों वाला और सर झुकाए हुए था। वो मस्जिद में दाखिल हुआ और वज़ करके नमाज़ पढ़ने लगा। और नमाज़ पढ़ने के बाद फिर सर झुकाए वहीं बैठा रहा। फिर नमाज़ मग़रिब का वक़्त हुआ तो जमात के साथ उसने भी नमाज़ पढ़ी। और नमाज़ के बाद फिर वो सर झुका कर बैठ गया। इस रात ख़लीफा के हाँ सब सूफियों की दावत थी। मैंने उस नोजवान से कहा। ऐ दुरवैश मैं ख़लीफा के हाँ दावत में जा रहा हूँ। तुम भी चलोगे? उसने कहा। मुझे ख़लीफा की दावत की परवाह नहीं है हाँ अगर आपका जी चाहे तो थोड़ा सा हलवा मेरे लिए लेते आईयेगा। मैंने उसकी इस बात पर तवज्जह ना की। और दावत पर चला गया। और जब वापस आया तो देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए हैं। और

Scanned by CamScanner

हमराह हज़रत इब्राहीम हज़रत मूसा कलीम अलेहिमस्सलाम भी हैं और दीगर अंबिया इक्राम अलेहिम अस्सलाम भी हैं। मैंने सलाम अर्ज़ किया। तो हुज़ूर अनवर ने अपना रूख अनवर फैर लिया। मैंने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! क्या मुझ से कोई खता वाक़े हो गई है? हुज़ूर ने फ़रमाया हाँ! हमारे दोस्तों में से एक ने तुम से हलवा माँगा। और तुम ने पहलूतही की मैं उसी वक़्त ख़्वाब से चौंक पड़ा और रोने लगा। और दौड़ा हुआ मस्जिद में आया। क्या देखता हूँ के वही नोजवान मस्जिद से निकल कर बाहर जा रहे हैं। मैंने जाकर अर्ज़ की, के जनाब ज़रा ठहर जाइये मैं अभी हलवा लाता हूँ। उन्होंने फ़रमाया सच है। जब कोई दुरवैश हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया और दीगर अंबिया अलेहिम अस्सलाम को सिफारशी लाए तब कहीं आप से हलवा पाए। बेशक बड़ा मुश्किल काम था पस ये कहा और चले गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 574)

सबक़:- ख़ाकसाराने जहाँ राबक़ारत मंगर
तू चै दानी के दरीं गर्द सवारे बाशिद

हदीस के मुताबिक़ बहुत से गर्द आलूद चेहरों और बिखरे हुए बालों वाले खुदा के मक़्बूल व मुक़र्रिब बन्दे होते हैं। पस इन बज़ाहिर सादा मिज़ाज बन्दों को हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों का लिहाज़ खुद सरवरे अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को भी होता है। लिहाज़ा उन अल्लाह वालों की दिलशिकनी रसूल अल्लाह सल-अल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नाराज़गी का मौजिब है। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उम्मत के जुमला हालात से बाख़बर हैं और हुज़ूर के सदके में जो अल्लाह वाले हैं वो भी सब कुछ जान लेते हैं।

हिकायत नम्बर(470) तेल और पानी

हज़रत अबु इसहाक़ इब्ने इब्राहीम रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ वाज़ फ़रमा रहे थे मजमआ बहुत ज़्यादा था और इस मजमअे में खरासान के एक आलिम भी थे। लोगों पर वाज़ का बड़ा असर हो रहा था। और सब हाज़ीन पर एक कैफियत तारी थी। वो आलिम दिल मे सोचने लगे के में भी बड़ा आलिम हूँ। लेकिन मेरे वअज़ में ये बात क्यों नहीं? और उनके वअज़ में इतना असर क्यों है? हज़रत अबु इसहाक़ ने वअज़ फ़रमाते हुए ही क़नदील की तरफ़ नज़र फ़रमाई। और फ़रमाया। इस क़नदील में पानी और तेल का मुनाज़रा हो

Scanned by CamScanner

रहा है। पानी तेल से कह रहा है के मैं तुम से ज़्यादा अज़ीज़ हूँ। सारी ख़लक़त की ज़िन्दगी मुझ से है। मगर ये क्या बात! के तू मेरे सर पर आके बैठा है। तेल जवाब दे रहा है के मुझे ये मर्तबा इसी वजह से हासिल हुआ है के मैंने तरह तरह के रंज उठाए हें मैं बोया गया। फिर काटा गया। फिर मुझ पर चक्की चली। फिर मैं ओरों को रोशनी देने के लिए अपने आपको जलाता हूँ। इसी वजह से मैं तुम से बरतर हूँ। वो आलिम ये सुनकर उठे। और ख़िदमत में हाज़िर होकर अपने खयाल से तौबा की। (तज़रकत-उल-औलिया, सफ़ा 618)

सबक़:- अल्लाह वाले बड़े बड़े मुजाहिदों के बाद मंज़िल तक पहुँचते हैं और मख़लूक़ के खयालात को भी जान जाते हैं।

हिकायत नम्बर(471) दाना मुरीद

हज़रत जुनैद रहमत-उल्लाह अलेह का एक मुरीद था। जिसकी तरफ़ आप ज़्यादा मुतवज्जह होते थे। बअज़ों को बुरा मालूम हुआ। तो हज़रत ने फ़रमाया के ये मेरा मुरीद अबद और अक़्ल में तुम से बढ़ा हुआ है। इस वजह से मैं उसे बहुत चाहता हूँ। लो मैं दिखाता हूँ ताके तुम्हें भी मालूम हो जाए के इसमें क्या ख़सूसियत है। आपने फिर हर मुरीद को एक एक मुर्ग़ी दी। और एक एक छुरी और फ़रमाया के ऐसी जगह इन मुर्ग़ियों को ज़िबह कर लाओ जहाँ कोई देखने वाला ना हो। चुनाँचे सब गए और पौशीदा जगहों में इन मुर्ग़ियों को ज़िबह करके ले आए। मगर वो दाना मुरीद वैसे ही ज़िन्दा मुर्ग़ी फैर लाया। हज़रत ने पूछा, के तुम ने ज़िबह क्यों ना की? तो बोला, हुज़ूर मैं जिस जगह भी पहुँचा। वहाँ अल्लाह तआला देखने वाला मौजूद था। इसलिए मजबूरन वापस ले आया हूँ। हज़रत ने फ़रमाया देख लो। ये है इसका वस्फ खास जिसकी वजह से में उसे बहुत चाहता हूँ। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 447)

सबक़:- इंसान अगर इस बात पर सही मअनों मं यक़ीन कर ले, के ख़ुदा हर जगह हर फैल को देखने वाला मौजूद है तो कभी कोई गुनाह करे।

हिकायत नम्बर(472) आँसू

हज़रत अबु बक्र शिबली रहमत-उल्लाह अलेह ने एक मर्तबा चूलहे में एक लकड़ी को जलते देखा जो एक तरफ़ से जल रही थी और उसकी दूसरी तरफ़ से पानी निकल रहा था। आप ये देखकर रो पड़े। और फ़रमाया। लोगा! अगर तुम भी आतिश शौक़ में जलते हो और इस दावे में सच्चे हो तो तुम्हारी

Scanned by CamScanner

आँखों से आँसू क्यों नहीं बहते। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 427)

सबक़:- जिनके दिलों में आतिशे शौक़ मौजूद है उनकी आँखों से अक्सर आँसू भी बहते हैं।

हिकायत नम्बर(473) इसतम्दाद

एक क़ाफले वाले सफर को जाते हुए पहले अबु अलहसन ख़रक़ानी रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ करने लगे के हुज़ूर! राह ख़तरनाक है। कोई दुआ सिखाईये, जिसकी बदौलत हम महफूज़ व मामून रहें। हज़रत अबु अलहसन ने फ़रमाया जब किसी मुश्किल का सामना देखो। तो मुझे याद कर लेना। क़ाफले वालों को ये बात पसंद ना आई। और वो आपस में कहने लगे के मुश्किल के वक़्त हम अल्लाह को क्यों याद ना करें। उन्हें याद करें? चुनाँचे वो चले गए। इत्तिफाक़ से रास्ते में डाकूओं ने आ घेरा। और वो उनके नरग़े में घिर गए एक शख़्स ने उसी वक़्त हज़रत अबु अलहसन का नाम लिया। और अर्ज़ किया के हुज़ूर! इम्दाद फ़रमाईये। वो शख़्स ये कहते ही ग़ायब हो गए। डाकूओं ने बाक़ी सारे क़ाफ्ले वालों को लूट लिया। मगर वो शख़्स जिसने हज़रत अबु अलहसन को याद किया था। बच गया। डाकू अपना काम करके जब चले गए तो वो शख़्स फिर ज़ाहिर हुआ। और लुटे हुए साथियों ने उससे पूछा, तुम कैसे बच गए। और कहाँ ग़ायब हो गए थे! तो उसने सारा क़िस्सा सुनाया। फिर जब ये लोग लौट कर हज़रत अबु अलहसन के पास पहुँचे। और दरयाफ़्त किया। के हज़रत उसकी वजह क्या है? के हम सब तो खुदा को पुकारते रहे। मगर ना बचे। और जिसने आपको याद किया वो बच गया। आपने फ़रमाया भाई! तुम लोग खुदा को पुकारते तो हो मगर महज़ ज़बान से दिल से नहीं और अबु अलहसन दिल से पुकारता है बल्के दिल कें भी दिल से। पस तुम अबु अलहसन को याद करो। ताके अबु अलहसन तुम्हारे लिए खुदा को याद करे। और तुम अपने मक़्सद में कामयाब हो जाओ। इसलिए के महज़ रसमन और आदतन हज़ार बार भी पुकारना ग़ैर मुफीद है। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 632)

सबक़:- असल मदद और हक़ीक़ी एआनत अल्लाह ही की तरफ़ से है। और अल्लाह के मक़्बूल बन्दे मज़हरऊने इलाही हैं। उन अल्लाह के बन्दों को मुश्किल के वक़्त याद करना सिर्फ इसलिए होता है के वो हुज़ूर क़ल्ब से अल्लाह के हुज़ूर दुआ करके हमारी मुश्किल आसान करा दें।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(474) सुलतान मेहमूद दर ख़रक़ानी पर

हज़रत अबु अलहसन ख़रक़ानी रहमत-उल्लाह अलेह के कशफ व करामात का तज़करह जब सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी रहमत-उल्लाह अलेह ने सुना। तो सुलतान को आपकी ज़ियारत व मुलाक़ात का शौक़ पैदा हुआ और कई दफा आपको ग़ज़नी आने की दावत दी लेकिन हज़रत ने क़बूल ना फ़रमाई। आख़िर सुलतान मेहमूद ग़ज़नी से रवाना होकर ख़रक़ान पहुँचा। और शहर के बाहर शाही ख़ैमा गाड़ दिया। और एक क़ासिद हज़रत की ख़िदमत में रवाना करके उसके हाथ कहला भेजा। के बादशाह वक़्त आपकी ज़ियारत के लिए ग़ज़नी से आपके वतन ख़रक़ान आया है। आप ज़रा क़दम रंजा फ़रमा कर बादशाह के ख़ैमे तक अगर तशरीफ़ ले चलें तो बड़ी मेहरबानी होगी। साथ ही क़ासिद को समझा दिया के अगर शेख़ यहाँ आने से मअज़ूरी का इज़हार करें तो इन्हें ये आयत सुना देना *अतीउल्लाहा व अतीऊर्रसूला व ओलिल अमरी मिनकुम* "यानी इताअत करो अल्लाह और उसके रसूल की और *ओलिल अमरी* यानी बादशाहे वक़्त की।"

जिस वक़्त क़ासिद शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बादशाह का फ़रमान सुनाया तो शेख़ ने बादशाह के ख़ैमे तक जाने से मअज़ूरी ज़ाहिर की। तो उस पर क़ासिद ने आयात मज़कूरा पढ़कर कहा के उसकी रू से बादशाह की इताअत आप पर फर्ज़ है। आपने जवाब दिया के बादशाह से कह दो के मैं अभी *अतीउल्लाह* के फ़रमान ही से सबुकदोश नहीं हो सका हूँ। और उसके बाद *अतीऊर्रसूला* के बेशुमार फ़रामीं भी आदा करने बाक़ी हैं। खुदा जाने *ओलिल अमरी* की। इताअत की बारी ज़िन्दगी में पेश आएगी या नहीं? अभी तो अतीउल्लाह से ही लम्हा भर फ़ुरसत नहीं। क़ासिद ने जब सुलतान के पास हज़रत की तरफ़ से ये मसकत और माक़ूल जवाब दिया तो सुलतान ने कहा के हज़रत ने हमें ला जवाब कर दिया। अब हमें हज़रत के हुज़ूर चलना चाहिए। चुनाँचे सुलतान मेहमूद ने हज़रत के बातिनी कशफ का इम्तिहान लेने का ये हीला बनाया के अपने ग़ुलाम अयाज़ को शाही लिबास पहना कर शाही ताज उसके सर पर रख दिया। और खुद अयाज़ का ग़ुलामाना लिबास पहन लिया और लोंडियों को मर्दों का लिबास पहना कर अपने साथ ले लिया और इस तरह उल्टे रूप में हज़रत की कुटिया की तरफ़ रवाना हुआ। चुनाँचे जब ये क़ाफ़ला हज़रत की बारगाह मं हाज़िर हुआ। तो

Scanned by CamScanner

हज़रत ने अयाज़ के शाहाना लिबास की तरफ़ मतलक़ तवज्जह ना फ़रमाई। बल्के सुलतान को जो उस वक़्त एक ग़ुलाम के लिबास में पीछे खड़े झाँक रहे थे। मुख़ातिब होकर फ़रमाया के इन ना मेहरम औरतों को बाहर निकाल दो। चुनाँचे उन मर्दों के लिबास में लोंडियों को बाहर निकाला गया। बअदहू हज़रत ने सुलतान से फ़रमाया के बड़ा दाम फ़रैब उठा कर लाए हो। उस पर सुलतान ने अर्ज़ किया। के आप जैसे अनक़ा के लिए हमारा दाम ना कारा व हैच साबित हुआ।

सुलतान ने उस वक़्त हज़रत से कुछ तबर्रूक तलब किया। हज़रत ने जौ की रोटी का एक सूखा टुकड़ा पेश किया। सुलतान ने बड़े एहत्राम के साथ वो टुकड़ा लेकर अशर्फियों की चन्द थेलियों बतौर नज़राना हज़रत की ख़िदमत में पेश कीं और हज़रत का दिया हो तबर्रूक मुंह में डाल कर खाने लगा। इत्तिफाक़न बादशाह के नाज़ुक गले में जौ का रूखा सूखा टुकड़ा अटक गया और बादशाह खाँसने लगा। जिस पर हज़रत इन अशर्फियों की तरफ़ इशारा करके फ़रमाने लगे। के ऐ मेहमूद! पैग़म्बरों की ग़िज़ा आपके गले से नीचे नहीं उतरती। और ये अशर्फियाँ जो फिरौना की मीरास हैं। इस फक़ीर के गले से क्योंकर उतरेंगी? चुनाँचे सुलतान के बे शुमार इसरार, और मिन्नत व समाजत के बावजूद भी हज़रत ने अशर्फियाँ लेने से इंकार कर दिया। और फ़रमाया मुझे उनकी ज़रूरत नहीं और ना ही मैं उनके लेने का हक़दार हूँ। जिनका ये माल है वही उसके हक़दार हैं। उस पर सुलतान मेहमूद और भी ज़्यादा गरवीदा हो गया। और सच्चे दिल से आपका मौतक़िद हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 638)

सबक़:- अल्लाह वालों को अल्लाह ने ऐसा इल्म व कशफ अता फ़रमाया है। के उनकी निगाह बातिनी से कोई चीज़ पनेहाँ नहीं रहती। और ये भी मालूम हुआ के पहले बादशाहों के दिलों में अल्लाह वालों की बड़ी अक़ीदमत व मोहब्बत होती थी। और वो लोग उन अल्लाह वालों के पास हाज़िर होते और उनके फयूज़ बर्कात से मुसतफीद हुआ करते थे।

हिकायत नम्बर(475) सोमनात

सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी रहमत-उल्लाह अलेह को हज़रत अबु अलहसन ख़रक़ानी से बड़ी अक़ीदत थी और वो हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। तो हज़रत ने उसे अपना एक पीराहन मुबारक बतौर तबर्रूक दिया।

सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी ने जब सोमनात पर हमला किया तो इस अज़ीम

Scanned by CamScanner

लड़ाई में सुलतान का लश्कर लड़ते लड़ते थक गया। बहादुरों के दिल दहल गए। तलवारें कुंद हो गईं। नेज़े टूट गए। और तीर ख़त्म हो गए। ज़ाहिरी ताक़तों और मादी सामानों ने जवाब दे दिया। उस वक़्त सुलतान मेहमूद ने लाचार और मजबूर होकर रूहानी मदद की तरफ़ तवज्जह की और लश्कर से अलेहदा होकर दो रकअत नमाज़ नफिल अल्लाह की बारगाह में अदा किए। और हज़रत अबु अलहसन का दिया हुआ पीराहन हाथ में लेकर दुआ माँगी। के इलाही! इस पीराहन वाले तेरे मक़्बूल बन्दे की आबरू का सदक़े मुझ इन पर फतह अता फ़रमा। ये दुआ माँगते ही जंग का नक़्शा पलट गया।

और मेहमूद ग़ज़नवी ने जवाँ मर्दी से मुक़ाला किया। ये था हज़रत अबु अलहसन की दुआओं का असर।

सबक़:- जब मादी कोशिशें ख़त्म हो जायें वहाँ रूहानी मदद काम आती है और जो मुश्किल बड़ी बड़ी तलवारों और फौजों से हल ना हो सके। अल्लाह वालों के एक कुर्ते के सदक़े में वो मुश्किल हल हो जाती है। फिर जिन पाक लोगों के बदन से लग जाने वाले एक कपड़े का अल्लाह को इस क़द्र लिहाज़ मंज़ूर है तो जो बन्दा उन अल्लाह वालों से ताल्लुक़ पैदा करेगा उस पर अल्लाह की क्यों रहमतें नाज़िल ना होंगी। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला की बारगाह में उन अल्लाह वालों की बड़ी इज़्ज़त और बड़ी आबरू है। फिर उन सब के आक़ा व मौला हुज़ूर सरवरे अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इज़्ज़त व आबरू और आपकी रफ़अत व अज़मत का कोई अंदाज़ा ही नहीं कर सकता। बावजूद उसके अगर यूं कहा जाने लगे के वो हमारी मिस्ल एक बशर है। तो ये किस क़द्र जहालत और ज़ुल्म है।

हिकायत नम्बर(476) सरवरे आलम(स०अ०स०)

और ग़ौसे आज़म(र०अ०)

हुज़ूर ग़ौस आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाते हैं के मैंने एक दिन क़ब्ल अज़ ज़ोहर जागते हुए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत की। तो हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने मुझ से फ़रमाया, बेटा! तुम वअज़ क्यों नहीं कहते? मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर! मैं बग़दाद के बड़े बड़े फ़सुहा के सामने बोल नहीं सकता। हुज़ूर ने फ़रमाया। अच्छा अपना मुंह खोलो, चुनाँचे मैंने अपना मुंह खोल दिया। हुज़ूर ने मेरे मुंह में सात मर्तबा

Scanned by CamScanner

अपना थूक मुबारक थूका। और फ़रमाया। लो अब मजमअे में बिला ख़ौफ वअज़ कहना शुरू कर दो। चुनाँचे मैं नमाज़ ज़ोहर के बाद वअज़ के लिए बैठ गया। तो लोग खुद ब खुद ही मेरा वअज़ सुनने के लिए जमा होने शुरू हो गए हत्ता के एक अज़दहाम कसीर हो गया। इस मजमअे में हज़रत मौलाना अली रज़ी अल्लाह तआला अन्ह भी मेरे सामने तशरीफ़ फ़रमा नज़र आए। और मुझ से फ़रमाने लगे। बेटा! अब वअज़ क्यों नहीं कहते। मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर! इतने बड़े मजमअे में बोलने की हिम्मत नहीं पड़ती। हज़रत अली ने फ़रमाया। अच्छा अपना मुंह खोलो। चुनाँचे मैंने अपना मुंह खोला। तो हज़रत अली ने मेरे मुंह में छः मर्तबा थूका मैंने पूछा के आपने क्यों थूका? तो हज़रत अली ने फ़रमाया अदबाअन रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम। यानी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के अदब के लिए इसलिए के हुज़ूर ने सात मर्तबा थूका था। तो मैं भी अगर सात ही मर्तबा थूकता। तो ये हुज़ूर से बराबरी हो जाती। जो बे अदबी है। इसलिए मैंने एक मर्तबा कम थूका है।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म फ़रमाते हैं। फिर मेरे सारे हिजाब उठ गए और मैं खूब वअज़ कहने लगा। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 25। नीज़ फतावा हदीसिया इमाम इब्ने हज्र मक्की रहमत-उल्लाह अलेह, सफ़ा 213)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआा अलेह व सल्लम अपने विसाल शरीफ के बाद भी बदस्तूर ज़िन्दा हैं। और अपने ग़ुलामों के पास तशरीफ़ भी ले जाते हैं। और अहले नज़र खुश नसीब अफ़्राद जागते हुए भी हुज़ूर की ज़ियारत करते हैं और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने ग़ुलामों की आज भी मदद करते हैं और आपका थूक मुबारक भी मुनब्बअे सद उलूम व असरार है। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर(स०अ०स०) के फैज़ व सदक़े से सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान भी ज़िन्दा हैं। और अपने ग़ुलामों के पास तशरीफ़ ले जाते हैं। और अहले नज़र जागते हुए भी उनकी ज़ियारत से मुशर्रफ होते है। और उनका थूक मुबारक भी उलूम व असरार का मख़ज़न व मुनब्बअे है। फिर जिनकी थूक हज़ारों जरासीम और बीमारियों को लिए हुए बेहूदा लोग उन पाक हस्तियों के मुमासिल कैसे हो सकते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की नस्ल पाक से हैं और सय्यद हैं। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला

Scanned by CamScanner

अलेह व सल्लम और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के मंज़ूरे नज़र और रूश्दो हिदायत के लिए उन्हीं की तरफ़ से मामूर हैं। फिर अगर ग़ौसे आज़म से मोहब्बत ना होगी तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और हज़रत अली रज़ी अन्ह क्यों कर राज़ी हो सकते हैं।

हिकायत नम्बर(477) बारिश

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक मर्तबा वअज़ फ़रमा रहे थे के बारिश होने लगी। और लोग उठने लगे। हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आसमान की तरफ़ मुंह किया और कहा *अना अजमाऊ व अनता तुफर्रिक़ इलाही!* मैं तेरे ज़िक्र के लिए, लोगों को जमा कर रहा हूँ और तू उन्हें मुनतशिर कर रहा है" इतना कहना ही था के बारिश फौरन थम गई। और जलसे गाह के बाहर बाहर तो बदस्तू बारिश जारी रही। मगर जलसे गाह में बारिश बिलकुल बन्द हो गई। (बहुज्जत-उल-असरार-उल-शेख अबु अलहसन अली इब्ने यूसुफ़ इब्ने जवीर-उल-खमी अलशाफई, सफ़ा 75)

सबक़:- अल्लाह वालों की जो मर्ज़ी हो, वही मर्ज़ी खुदा की भी होती है। और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की इतनी बड़ी शान है। के आपकी मर्ज़ी के मुताबिक़ अल्लाह तआला ने जलसे गाह के बाहर बाहर तो बारिश जारी रखी। और जलसे गाह के अन्दर बन्द करके दिखाया दिया। के मेरे मक़्बूल बन्दों की मेरे यहाँ इतनी क़द्र है। के वो जो कुछ भी चाहें मैं वैसे ही कर देता हूँ।

फायदा:- इसी किताब के इसी सफहे पर लिखा है के बाज़ दीगर बुज़ुर्गों का भी ये तजुर्बा है के वो भी किसी वक़्त बारिश में घिर गए तो उन्होंने हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ही करामत बयान की। तो बारिश फौरन थम गई।

हमारे क़स्बे "कोटली लोहाराँ" में एक मर्तबा रमज़ान शरीफ में आख़िरी जुमआ पढ़ने के लिए क़स्बे के बाहर एक खुले मैदान में बहुत बड़ा इजतिमा था। जिसमें हज़रत फिक़िया आज़म रहमत-उल्लाह अलेह वअज़ फ़रमा रहे थे के इतने में बारिश आ गई। और लोगों में इंतिशार फैलने लगा। हज़रत फिक़िया आज़म अलेह अर्रहमा ने हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की यही करामत बयान की तो बारिश फौरन थम गई। और जुमआ बड़े इतमीनान से पढ़ा गया। इस वाक़ये के अहबाब कोटली शाहिद हैं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(478) दजला की तुग़यानी

एक दफा दरयाऐ दजला में सैलाब आ गया। लोग घबराए हुए हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास आए *व यसतग़ीसूना बिही* और आपसे इसतिग़ासा करने लगे। और मदद चाहने लगे। हज़रत ग़ौसे आज़म ने अपना असाऐ मुबारक लिया। और दरया की तरफ़ चल पड़े। और किनारे दरया पर पहुँच कर आपने पानी की असल हद पर वो असा गाढ़ दिया और फ़रमाया *इलाही हाहुना* ऐ पानी बस यहीं तक! इतना फ़रमाना था के पानी ने घटना शुरू कर दिया। और इस असाऐ मुबारक तक आ गया!
(बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 75)

सबक़:- अल्लाह वालों की हकूमत दरयाओं पर भी जारी रहती है और एक हम भी हैं के घर का परनाला भी हमारे बस में नहीं रहता।

हिकायत नम्बर(479) ग़ौसे आज़म(र०अ०) का इल्म

एक मर्तबा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया, यानी अगर मेरी ज़बान पर शरीअत की रोक ना हो, तो तुम अपने अपने घरों में जो जो कुछ खाते, और जो जो कुछ जमा रखते हो, मैं उन सबकी तुम्हें ख़बर दे दूं, तुम सब मेरे सामने उन कांच की बोतलों की मानिंद हो जिनका बाहर भी नज़र आता है। और जो कुछ इन बोतलों के अन्दर हो वो भी दिखाई देता है।
(बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 24)

सबक़:- हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह का इल्म इस क़द्र अमीक़ और वसी था के ज़ाहिर और बातिन की कोई शै उनसे पनेहाँ ना रही। फिर अगर वो शख़्स जो एक बोतल का ज़ाहिर भी बग़ैर ऐनक के ना देख सके, उन अल्लाह वालों के इल्म में कलाम करने लगे तो किस क़द्र बेख़बर है। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का ये कमाल इल्म हुज़ूर सरवरे अंबिया सल-ल्लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मोहब्बत व मुताबेअत की बदौलत है। फिर जिस ज़ात वाला सिफात के एक गुलाम का इस क़द्र वसी इल्म है, तो खुद इस ज़ातग्रामी के उलूम की वुसअत का क्या आलम होगा?

हिकायत नम्बर(480) डाकूओं का सरदार

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह अभी बच्चे ही थे के आपको

Scanned by CamScanner

इल्म का और मक़्बूलाने हक़ की सोहबत का शौक़ पैदा हुआ। आपने अपनी वालिदा से अर्ज़ किया के अम्मी जान! मुझे इजाज़त दीजिए ताके मैं बग़दाद जाकर इल्मे दीन हासिल करूं। वालिदा ने फ़रमाया बेटा! जाओ इजाज़त है। और फिर चालीस दीनार लाकर हुज़ूर ग़ौसे आज़म को दिए के लो ये अपने ख़र्च के लिए साथ लेते जाओ। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने वो दीनार ले लिए। और एक बटवे में सी कर कमर के साथ बाँध लिए और बग़दाद जाने के लिए तैयार हो गए, वालिदा ने रूख़्सत करते वक़्त इर्शाद फ़रमाया के बेटा! हमेशा सच बोलना। और झूट से हमेशा किनारा कश रहना।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म वालिदा से रूख़्सत पाकर एक क़ाफले के हमराह बग़दाद को चल दिए। ये क़ाफला एक जंगल में पहुँचा तो साठ घोड़े सवार डाकूओं ने इस क़ाफले पर हमला कर दिया। और क़ाफले को लूटना शुरू कर दिया। एक डाकू हुज़ूर ग़ौसे आज़म के पास भी आया और कहा ओ फक़ीर लड़के! बता तेरे पास भी कुछ है? ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया! मेरे पास चालीस दीनार हैं। डाकू ने पूछा कहाँ हैं? फ़रमाया। ये कमर में बंधे हैं। डाकू ने इस बात का मज़ाक़ समझा और चला गया। फिर दूसरा डाकू आया। और उसने भी आपसे यही सवाल किया। और आपने उसे भी यही जवाब दिया और वो भी मज़ाक़ समझ कर चला गया। फिर तीसरा डाकू आया। और उससे भी यही सवाल जवाब हुआ। उसी तरह मुतअद्दिद डाकूओं ने आप से यही सवाल किया। तो आपने सभी से फ़रमाया के हाँ मेरे पास चालीस दीनार हैं। डाकूओं को कुछ शक गुज़रा तो वो आप को पकड़ कर अपने सरदार के पास ले आए। डाकूओं के सरदार ने भी आप से सवाल किया के क्यों ऐ फक़ीर लड़के! तुम्हारे पास भी कुछ है? आपने फ़रमाया के हाँ है! सरदार ने पूछा क्या है, फ़रमाया, चालीस दीनार। सरदार ने पूछा कहाँ हैं? फ़रमाया कमर के साथ बंधे हैं। सरदार ने आगे बढ़कर तलाशी ली तो वाक़ई चालीस दीनार निकल आए। डाकूओं का सरदार बड़ा हैरान हुआ। के इस लड़के ने अपना माल बताया क्यों? जब के डाकूओं से माल छुपाया जाता है। चुनाँचे डाकूओं के सरदार ने बड़े ताज्जुब के साथ हुज़ूर ग़ौसे आज़म से पूछा के लड़के तुम ने ये माल हम से छुपाया क्यों नहीं। और साफ साफ बता क्यों दिया? आपने फ़रमाया के मेरी वालिदा ने मुझ से सच बोलने का वादा लिया था। इसी लिए मैंने सच ही बोला। और सच ही बोलता रहूंगा। ताके वालिदा के साथ वादा शिकनी ना हो जाए। डाकूओं के सरदार ने ये बात सुनी तो चीख़ मार कर

Scanned by CamScanner

रोने लगा। और कहा के अफसोस! ये लड़का तो अपनी वालिदा के साथ किए हुए वादे की इतनी पासदारी करे और मैं जो अपने रब से वादा कर के आया हूँ। आज तक उसे निभा ना सका। ऐ लड़के! इधर ला हाथ! मैं तेरे हाथ पर आईंदा के लिए तौबा करता हूँ। ये कहकर उसने सच्चे दिल से तौबा की। और फिर अपने मातेहत डाकूओं से कहा के जाओ भई! मेरे साथ अब तुम्हारा कोई वास्ता नहीं। उन डाकूओं ने जवाब दिया के आप हमारे सरदार हैं हमारे सरदार ही रहेंगे और वो इस तरह के हम भी सब इस बुरे काम से तौबा करते हैं। और अब हम तौबा करने वालों में भी आप ही हमारे सरदार हैं। चुनाँचे उन सब ने भी सच्चे दिल से तौबा की। और लूटा हुआ माल वापस कर के आईंदा अच्छी और शरई ज़िन्दगी गुज़ारने लगे। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 57)

सबक़:- अल्लाह वाले कभी झूट नहीं बोलते हैं। और उनकी रास्त बाज़ी व सिद्क़ पसंदी की बदौलत हज़ारों गुमराह हिदायत पा जाते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह बचपन ही से गुमराहों के लिए हावी और मुरशिद थे।

हिकायत नम्बर(481) रमज़ान का चाँद

एक मर्तबा रमज़ान शरीफ के चाँद के बारे कुछ इख़्तिलाफ पैदा हो गया। बअज़ कहते थे के रात को चाँद हो गया। बअज़ कहते नहीं हुआ। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की वालिदा ने इर्शाद फ़रमाया के मेरा ये बच्चा (ग़ौसे आज़म) जब से पैदा हुआ है। रमज़ान शरीफ के दिनों में सारा दिन दूध नहीं पीता। और आज भी चूंके अब्दुलक़ादिर (रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह) ने दूध नहीं पिया। इसलिए रात को वाक़ई चाँद हो गया है। चुनाँचे फिर तहक़ीक़ करने पर यही साबित हुआ के चाँद हो गया है। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 79)

सबक़:- अल्लाह वालों की सीरत बचपन ही से अच्छी होती है और उनकी आदत इब्तिदा ही से शरई आदत होती हैं, फिर अगर एक ऐसा शख़्स जिसने उम्र भर एक रोज़ा ना रख हो। हुज़ूर ग़ौसे आज़म की शान वाला में कोई गुस्ताख़ी करे। तो वो किस क़द्र गुसताख़ है।

हिकायत नम्बर(482) ग़ौसे आज़म की फूफी

एक मर्तबा जीलान में बारिश ना होने की वजह से बड़ी परेशानी वाक़े

Scanned by CamScanner

हो गई। लोगों ने बहुत दुआएँ की। मगर बारिश ना हुई। आख़िर बहुत से लोग जमा होकर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की फूफी हज़रत आयशा रहमत-उल्लाह अलेहिमा की ख़िदमत में हाज़िर हुए। और अर्ज़ की के बारिश ना होने के बाइस बड़ी परेशानी हो रही है। दुआ फ़रमाइये ताके अल्लाह तआला हमें बारिश से मुसतफीद फ़रमाए। ग़ौसे आज़म की फूफी उठीं और झाड़ू देकर अपने घर का सहन साफ करने लगीं। और फिर हाथ उठा कर कहने लगीं। इलाही! सहन को साफ मैंने कर दिया है। अब छिड़काओ तू कर दे। इतना फ़रमाना ही था के अब्र आ गया। और बारिश होने लगी। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 98)

सबक़:- हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के वालदैन और मुतअल्लिक़ैन सभी अल्लाह के मक़्बूलों में से थे। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला अपने मक़्बूलों की दुआ जल्दी सुनता है।

हिकायत नम्बर(483) कुम बिइज़निल्लाही

एक औरत अपने बच्चे को लेकर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास हाज़िर हुई। और कहने लगी, इस मेरे बच्चे को हुज़ूर से बड़ी मोहब्बत है। मैं उसको आपके पास छोड़ती हूँ। इसकी तरबीयत फ़रमाइये और अपने फयूज़ व बर्कात से इसे माला माल कीजिए। चुनाँचे वो औरत अपने बच्चे को हज़रत ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में छोड़ गई। कुछ दिनों के बाद अपने बच्चे को देखने के लिए आई तो देखा के उसका बच्चा कमज़ोर नातवाँ हो गया है और जौ की खुश्क रोटी खा रहा है। फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में गई तो देखा के आपके आगे पकी हुई मुर्ग़ी रखी है जिसे आप तनावुल फ़रमा रहे हैं। उस औरत ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! आप खुद तो मुर्ग़ी खा रहे हैं। और मेरा बेटा जौ की खुश्क रोटी खा रहा है। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने इस खाई हुई मुर्ग़ी की हड्डियों पर अपना हाथ रखा और फ़रमाया *क़ौमी बिइज़निल्लाह* इतना फ़रमाना ही था के वो मुर्ग़ी ज़िन्दा होकर बोलने लगी। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया देख जब तुम्हारा बेटा भी इस दर्जे तक पहुँच जाएगा तो जो चाहेगा खाया करेगा। (बहज्जत-उल-असरार, सफ़ा 65)

सबक़:- हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को अल्लाह तआला ने ये शान अता फ़रमाई थी के मुर्दों को कुम बिइज़निल्लाह फ़रमाते तो वो ज़िन्दा हो जाते थे।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(484) चील का सर

एक मर्तबा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह वअज़ फ़रमा रहे थे के ऊपर हवा मे एक चील चीखने लगी। और बार बार एक ही जगह चक्कर लगाने लगी हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने ऊपर देखा। और फ़रमाया *या रीहू खूज़ी रासा हाज़ीहिल हुदाती* ऐ हवा, इस चील का सर पकड़ ले" इतना फ़रमाना ही था के वो चील तड़पती हुई नीचे आ गिरी। और सर उसका अलग जा गिरा। फिर जब आप वअज़ फ़रमा चुके तो उस मुर्दा चील के पास तशरीफ़ लाए। और उसका सर और धड़ पकड़ कर इकठ्ठा किया। और फ़रमाया। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। इतना फ़रमाना ही था के चील ज़िन्दा हो गई। और हवा में उड़ गई और इस अम्र का सारे मजमअे में मुशाहेदा किया। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 65)

सबक़:- हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को अल्लाह ने ये शान बख़्शी थी के अल्लाह के अज़्न व अता से ज़िन्दों को मुर्दा और मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमा लेते थे।

हिकायत नम्बर(485) बायज़ीद बसतामी और समआन का बुत खाना

हज़रत बायज़ीद अलेह अर्रहमत फ़रमाते हैं के मैं एक दिन अपनी ख़ल्वत में खुश, अपने फिक्र में मुसतग़रिक़ और ज़िक्र में मानूस था के नागहाँ मुझे ग़ैब से आवाज़ आई। के ऐ बायज़ीद समआन के बुत खाने में आओ। और उनकी ईद में लिबास रिहबान पहन कर हाज़िर होकर शामिल हो जाओ। मैंने ये बात सुनकर कहा के मैं खुदा की पनाह माँगता हूँ इस खयाल से। फिर जब रात हुई तो हातिफ ने मेरे ख़्वाब में इसी बात का फिर एयादा किया। तब मैं इस जवाब के हातिफ से मरऊब होकर ख़्वाब से फौरन ख़ौफज़दा होकर चौंक पड़ा। उसके बाद फिर मुझे ज़ाहिरी तौर पर आवाज़ आई के (ऐ बायज़ीद) तुझ पर इसमें कोई गुनाह नहीं। तो इससे मत डर। तू मेरे नज़दीक औलिया और अख़्यार में से है। तो रिहबान का लिबास पहन ले और गले में ज़िनार डाल ले और तुझ पर कोई गुनाह नहीं उससे इंकार मत कर। बायज़ीद रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं के तब मैं जल्दी से उठा और हुक्म की तामील की और रिहबान का लिबास पहना। और समआन के बुत खाने में जाकर उनमें शामिल हो गया। फिर जिस वक़्त उनका बड़ा रिहबान

Scanned by CamScanner

हाज़िर हुआ और वो सब जमा हुए तो उसकी बात सुनने के लिए चुप हो गए। मगर ये बड़ा रिहबान बोल नहीं सकता था गोया मुंह में लगाम दे दी गई है। तब दूसरे रिहबानों ने कहा। के ऐ रिहबान ये क्या बात है के तुम कुछ गुफ़्तगू नहीं करते। ताके तुम्हारी बात से हिदायत पाकर तेरे इल्म की पैरवी करें। रिहबान ने कहा के मुझे किसी शख़्स ने गुफ़्तगू करने से नहीं रोका। के मैं बात ना करूं। लेकिन बात ये है के कोई शख़्स मोहम्मदी तुम्हारे में बैठा हुआ है और वो तुम्हारे दीन के इम्तिहान लेने को आया है। उन लोगों ने कहा हमें दिखलाइये। वो कौन है, ताके हम उसको इसी वक़्त क़त्ल कर डालें। रिहबान ने कहा के नहीं उसे क़त्ल मत करो। लेकिन दलील और हुज्जत से उसे मारो। उन्होंने कहा। के जैसा आप चाहें वैसा करें।

हज़रत बायज़ीद फ़रमाते है। के उनका बड़ा रिहबान खड़ा हुआ। और आवाज़ दी ऐ शख़्स मोहम्मदी तुम को हज़रत मोहम्मद (सल-लल्लाहो तआला अले व सल्लम) की क़सम है के तुम उठ के खड़े हो जाओ। ताके हम देखें। तब बायज़ीद उठकर खड़े हो गए और ज़बान से तसबीह और तक़्दीस और तमहीदे इलाही जारी थी। तब रिहबान ने कहा के ऐ मोहम्मदी! मैं आपसे कुछ मसायल पूछना चाहता हूँ। अगर उनके जवाब आपने दे दिए तो हम तेरे ताबअे हो जाऐंगे। अगर तुम जवाब देने से आजिज़ हो गए तो हम तुझे क़त्ल कर डालेंगे। हज़रत ने फ़रमाया मंज़ूर है। मन्क़ूल व मनक़ूल से जो चाहो पूछ लो। मैं जवाब दूंगा। चुनाँचे रिहबान ने सवालात शुरू किए और पूछने लगा। बताओ के:-

वो एक चीज़ क्या है जिस जैसी दूसरी कोई चीज़ नहीं।
वो दो क्या हैं, जिनका तीसरा नहीं।
वो तीन क्या हैं, जिनके साथ चौथा नहीं।
वो चार क्या हैं, जिनके साथ पाँचवा कोई नहीं।
वो पाँच क्या हैं, जिनके साथ छठा नहीं।
वो छः क्या हैं, जिनके साथ सातवाँ नहीं।
वो सात क्या हैं, जिनके साथ आठवाँ नहीं।
वो आठ क्या हैं, जिनके साथ नवाँ नहीं।
वो नो क्या हैं, जिनके साथ दसवाँ नहीं
वो दस क्या हैं जो कामिल हैं।

और ग्यारह क्या हैं। बारह क्या हैं। तेरह क्या हैं और चौदह क्या हैं जो अल्लाह से बातें करती हैं। और बतलाओ! के एक क़ौम ने झूट बोला। और

Scanned by CamScanner

वो जन्नत में दाखिल हो गई और एक क़ौम ने सच बोला और वो दोज़ख़ में डाली गई। और *ज़ारियाते ज़रवन* क्या हैं और *हामिलाते वक़रन* क्या है। और *जारियाते युसरन* क्या है और *मुक़स्सिमाती अमरन* क्या है?

और बताओ! के वो क्या चीज़ है के बग़ैर रूह के दम लेती है। और वो क़ब्र कौनसी है जो साहब क़ब्र को लिए फिरती है। और वो पानी कौन सा है जो ना आसमान से आया और ना ज़मीन से निकला।

और बताओ! वो चार चीज़ें क्या हैं जो ना जिन्न है ना आदमी ना फरिश्ता। और ना वो बाप की पुश्त से हैं और ना माँ के शिकम से।

और बताओ! के सबसे अव्वल ज़मीन में किस ने खून किया, और वो क्या चीज़ है जिसको खुदा ने पैदा किया और उसको अज़ीम फ़रमाया। और सबसे अफ़्ज़ल औरत कौन सी है। और सब से अफ़्ज़ल दरया कौन सा और सब से अफ़्ज़ल पहाड़ कौन सा है और सबसे अफ़्ज़ल चारपाया कौन सा है। और सबसे अफ़्ज़ल महीना कौन सा है और सबसे अफ़्ज़ल कौन सी रात है और अलतामिया क्या है। और वो कौन सा दरख़्त है जिसकी बारह टहनियाँ हैं। और हर टहनी में तीस पत्ते हैं और हर पत्ते में पाँच शगूफे हैं। और दो इन में धूप के अन्दर हैं और तीन साये में। और वो क्या चीज़ है जो बैत-उल-हराम का हज करती है। मगर उसमें रूह नहीं और ना उस पर हज फर्ज़ है।

और बताओ! के कितने अल्लाह तआला ने पैदा किए। और कितने मुरसिल हैं और कितने ग़ैर मुरसिल हैं। और वो चार चीज़ें क्या हैं। जिनका मज़ा और रंग मुतलिफ है। लेकिन उनकी असल क्या है।

और बताओ! के फक़ीर और फतील और क़तमीर क्या हैं और सब्द और लब्द और तम और रम क्या हैं।

और बताओ! जब कुत्ता भोकता है तो क्या कहता है और गधा हींकता है तो क्या कहता है और बैल बोलता है। तो क्या कहता है। और घोड़ा जब हिनहिनाता है तो क्या कहता है। और ऊँट जब बोलता है तो क्या कहता है और मोर जब बोलता है तो क्या कहता है और तीतर अपनी आवाज़ में क्या कहता है और बुलबुल अपनी आवाज़ में क्या कहती है। और मेंढक अपनी आवाज़ तसबीह में क्या कहता है और संख जब बजता है तो वो क्या कहता है।

और बताओ! के वो कौन सी क़ौम है जिस पर अल्लाह ने वही की ना वो जिनों में है ना आदमियों में से। और ना फरिश्तों में।

और बताओ! रात कहाँ जाती है, जब दिन निकलता है और जब रात

Scanned by CamScanner

हो जाती है, दिन कहाँ चला जाता है।

जब रिहबान ये सवालात कर चुका तो हज़रत बायज़ीद ने पूछा के कोई और सवाल भी बाक़ी है। रिहबान ने जवाब दिया नहीं! तब हज़रत ने फ़रमया के अगर मैं ने जवाबात इन सवालों के दे दिए तो तुम अल्लाह तआला और उसके रसूल मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर ईमान लाओगे? तब सबने इक़्रार करके कहा के हम ईमान ले आऐंगे। पस हज़रत बायज़ीद ने फ़रमाया के ऐ अल्लाह तू गवाह है इस बात का जो कुछ ये लोग कहते हैं।

लो सुनो अपने सवालों के जवाब! जो सवाल किया तुम ने, के वो एक क्या है जिस जैसा दूसरा नहीं, पस वो अल्लाह तआला अज़्ज़ोजल है। और जो दो हैं तीसरा उनके साथ नहीं वो रात और दिन हैं। बमौजिब क़ौल अल्लाह तआला के *व जअलनल्ल लैली वन्नहारी आयातीन।* और जो तीन हैं चौथा उनके सानहीं वो अर्श है। कुर्सी और कलम हैं। और चार हैं पाँचवाँ उनके साथ नहीं। वो चार किताबें हैं, तौरेत और ज़बूर और इंजील और क़ुरआन हैं। और जो पाँच हैं छटा उनके साथ नहीं। वो पाँच फर्ज़ हैं नमाज़ पंज वक़्ता जो तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों पर फर्ज़ हैं। और जो छः हैं सातवाँ उनके साथ नहीं। वो छः दिन हैं जिनकी बाबत अल्लाह तआला फ़रमाता है *वलक़द ख़लक़नस समावाती वलअर्ज़ी वमा बैनाहुमा फी सित्ताती अय्यामिन।* और जो सात हैं आठवाँ उनके साथ नहीं। वो सात आसमान हैं। जैसे अल्लाह तआला फ़रमाता *ख़-ल-क़ समावातिन तिबाक़ा।* और जो आठ हैं नवाँ उनके साथ नहीं। वो अर्शे अज़ीम के उठाने वाले आठ फरिश्ते हैं। जैसे अल्लाह तआला फ़रमाता है *व यहमिल अर्शा रब्बिका फोक़ाहुम योमाईज़िन समानिय्यत।* और जो नो हैं दसवाँ उनके साथ नहीं। वो नो आदमियों का गिरोह है। जिन्होंने ज़मीन पर फसाद किया था। जैसे अल्लाह तआला ने ख़बर दी है *वकाना फिल मदीनती तिसअतू रहूतिन युफ़्सिदूना फिल अर्ज़ी वला युसलीहून।* और जो दस कामिला का सवाल है वो दस फ़रायज़ हैं, जो मक्के में हाजियों पर वाजिब हैं। जब के वो हरम में हों। जैसे अल्लाह तआला फ़रमाता है *फसियामू सलासती अय्यामिन फिल हज्जी व सबअतू इज़ा रजअेतुम तिलका अशरतुन मिलातुन।* और जो ग्यारह हैं, वो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के ग्यारह भाई हैं और जो बारह हैं महीने साल के हैं और जो तेरह है। वो यूसुफ़

Scanned by CamScanner

अलेहिस्सलाम के ख़्वाब हैं जैसे अल्लाह तआला फ़रमाता है *इन्नी रायतू अहदा अशरा कोकबवँ वश्शम्सा वलक़मरा।* और जो तुम्हारा सवाल है के वो क़ौम कौन है जिसने झूट बोल और बहिश्त में दाखिल हुई वो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के भाई हैं जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया: *व जाअऊ अला क़मीसिही बिदामिन कज़िब।* और वो क़ौम जिसने सच बोला और दोज़ख़ में डाली गई वो यहूद और नसारा हैं। जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया: *वक़ालातिल यहूदो लेसातिन्न नसारा अला शेइन व क़ालातिन्न नसारा लेसातिल यहूदा अला शेइन फहुम सदाक़ व उदखिलून्नार।* और *ज़ारियाती ज़रवन* चार हवायें हैं। और *हामिलाती वक़रन।* बादल हैं। और *जारियाती युसरन* वो दरया में चलने वाली कशतियाँ हैं *मुक़स्सिमाती अमरन* वो फरिश्ते हैं जो निस्फ शब शअबान को लोगों पर रिज़्क़ तक़सीम करते हैं। और जो चौदह चीज़ें खुदा के साथ कलाम करती हैं। वो सात आसमान और सात ज़मीनें हैं जैसे अल्लाह तआला ने *फक़ाला लहा व लिलअर्ज़ी ईतिना तौअन ओ कराहन क़ालिता अतीना ताईअीन।* और वो क़ब्र जो अपने क़ब्र वाले को लिए फिरती थी। वो यूनुस अलेहिस्सलाम की मछली है। और ये सवाल के अल्लाह ने कितने नबी पैदा किए। और कितने मुरसिल और कितने ग़ैर मुरसिल। सो अल्लाह तआला ने एक लाख कई हज़ार नबी पैदा किए। इनमें से तीन सौ तेरह मुरसिल हैं, और वो चीज़ जो बग़ैर रूह के सांस लेती है। वो सुबह है। और वो पानी जो ना आसमान से है और ना ज़मीन से निकला है। वो शीशा है जिस में बिलक़िस ने हज़रत सुलैमान अलेहिस्सलाम के पास घोड़े का पसीना भेजा था। वो चार चीज़ें जो ना जिन्न हैं ना आदमी ना फरिश्ता ना बाप की पुश्त से और ना माँ की शिकम से। वो चार ये हैं। एक उनमें दुंबा हज़रत इसमाईल अलेहिस्सलाम का, दूसरी ऊंटनी सालेह अलेहिस्सलाम की तीसरी आदम अलेहिस्सलाम। चौथी माई हव्वा हैं। और ये सवाल के वो क्या चीज़ है, और ये सवाल के वो क्या चीज़ है, जिसको अल्लाह तआला ने पैदा किया। और फिर उससे कराहत की। वो गधे की आवाज़ है जैसे फ़रमाया अल्लाह तआला ने। *इन्नल अनकरल असवती लसोतुल हमीर* और ये सवाल के सबसे पहले क़त्ल या खून ज़मीन पर किस ने किया। वो खून है जो क़ाबील ने अपने भाई हाबील को क़त्ल किया। और ये के वो कौन सी चीज़ है जिसको अल्लाह तआला ने पैदा किया। और उसको अज़ीम फ़रमाया। वो औरतों का मक्र है। जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया *इन्ना केदाकुन्ना अज़ीम।* और ये

Scanned by CamScanner

सवाल के औरतों में अफ़्ज़ल कौन है। सो वो ये हैं जो उम्मुल बशर हज़रत ख़दीजा, हज़रत आयशा, हज़रत आसिया, हज़रत मरयम बिन्ते इमरान रज़ी अल्लाहो अनहन। और दरयाओं में अफ़्ज़ल सीहून, जीहून, फिरात, नील, मिस्र। और पहाड़ों में अफ़्ज़ल तूर है। और चार पायों में अफ़्ज़ल घोड़ा है। और महीनों में अफ़्ज़ल रमज़ान है। और *अत्तामतू* क़यामत का दिन है। और ये सवाल के वो कौन सा दरख़्त है जिसकी बारह टहनियाँ हैं और हर टहनी के तीस पत्ते और हर पत्ते में पाँच शगूफे हैं और दो उन में धूप में हैं और तीन साये में। सो वो एक साल है, टहनियाँ उसकी बारह माह हैं, और पत्ते उसके हर माह में तीस दिन हैं और पाँच शगूफे पाँच नमाज़ें हैं, दो दिन के वक़्त और तीन रात को। और ये सवाल के वो क्या चीज़ है जिसने मक्का मोअज़्ज़मा का हज किया और तवाफ किया मगर उसमें रूह नहीं। और ना उस पर हज फर्ज़ है। सो वो नूह अलेहिस्सलाम की कश्ती है। और ये के वो चार चीज़ें क्या हैं, जिनका रंग और मज़ा जुदा जुदा है। लेकिन असल एक है। वो दोनों आँखें। और वो कान और नाक और मुंह हैं। यानी आँखों का पानी नमकीन और कानों का पानी कड़वा है। और नाक का पानी तुर्श है। और मुंह का पानी शीरीं। और असल उनका दिमाग़ है जो एक है और नफीर्दा है। जो गुठली खुर्मा के पुश्त पर है और जो उसके अन्दर है। और क़तमीर उसको कहते हैं जो ऊपर का छिलका है। और सब्द और लब्द भेड़ों और बकरियों के बाल हैं। और तम और रम वो उम्मतें है। जो हज़रत आदम अलेहिस्सलाम से पहले थीं। और ये सवाल के गधा जब हींकता है तो क्या कहता है। सो वो शैतान को देखकर कहता है *लअनल्लाहुल ईशार* और कुत्ता अपने भोकने में कहता है, वैल है दोज़खियों के लिए और *गज़ब-उल-जब्बार।* और घोड़ा अपने हिनहिनाने में कहता है। अल्लाह तआला मेरा मुहाफिज़ है। जिस वक़्त झूट फैले और मर्द मर्द के साथ मशगूल हो। ऊँट अपनी आवाज़ में कहता है *हसबियल्लाहू व काफा बिल्लाही वकीला।* और बुलबुल कहती है पाक है अल्लाह जब सुबह हुई और शाम हुई। और मेंढक अपनी तसबीह में कहता है *सुबहानल मअबूद फिल बरारी व ग़फ्फार सुबहानल्लाही हक्कन हक्का उंज़ुर या इब्ना आदम फी हाज़िहिदुनिया ग़रबन व शरक़न मा तरा फीहा अहदन यब्क़ा।* और ये सवाल के वो कौन क़ौम है जिसकी तरफ़ वही की गई, ना वो जिन्न में ना आदमी ना फरिश्ते। वो शहद की मक्खि है। जैसे फ़रमाया अल्लाह तआला ने *व ओहया रब्बुका इलन्नहली आयात।* और ये सवाल

Scanned by CamScanner

के रात कहाँ जाती है, जब दिन निकलता है और दिन कहाँ जाता है। जब रात होती है तो वो दोनों अल्लाह तआला के इल्म के गढ़े में पौशीदा हो जाते हैं। (जवाबात ख़त्म हुए)

अब हज़रत बायज़ीद बसतामी अलेह अर्रहमा ने पूछा के क्या कोई और सवाल बाक़ी है? तब उन सब ने कहा के नहीं, अब हज़रत ने सवाल किया। के अब तुम बताओ के मुफ़्ताह-उल-जन्नत और मुफ़्ता-उस-समावात क्या है। यानी बहिश्त और आसमान की कुंजियाँ क्या हैं? रिहबान ने अपने लोगों से कहा के चुप रहो, बात ना करो। बायज़ीद अलेह अर्रहमा ने फ़रमाया के तुम ने मुझ से बहुत से सवालात किए। और मैंने उनके जवाबात दिए और मैंने तुम से सिर्फ एक सवाल किया और तुम जवाब नहीं देते। क्या तुम जवाब देने से आजिज़ हो। उन्होंने कहा। हाँ! हम सब जवाब देने से आजिज़ हैं। फिर वो सब लोग अपने बड़े सरदार रिहबान की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहा के क्या तुम भी जवाब देने से आजिज़ हो गए हो। रिहबान ने कहा के मैं जवाब देने से आजिज़ नहीं हूँ। लेकिन मैं डरता हूँ के तुम मेरी मवाफ़क़त ना करोगे। सबने कहा के हम बेशक तेरी मवाफ़क़त करेंगे। क्योंके तुम हमारे बड़े सरदार हो। जो कुछ आप कहेंगे हम उसको सुनेंगे और उस आपकी मवाफ़क़त करेंगे। तब रिहबान ने कहा के कुंजी बहिश्त और आसमानों की मुसमानों के लिए *ला इलाहा इलल्लाहू मोहम्मदुर्रसूल अल्लाह* है। ये सुनते ही सब लोगों की ज़बान पर कलमा तय्यबा जारी हो गया और उसी वक़्त सबके सब दीने इस्लाम पर ईमान ले आए। और बहुत अच्छा हुआ, उनका इस्लाम लाना और बुत खाने से निकल गए और उसे गिरा दिया। और अपने ज़िनार तोड़ डाले। और उस बुतखाने को मस्जिद बना दिया।

उसी वक़्त हज़रत बायज़ीद को इलहाम हुआ के तूने हमारे लिए एक ज़िनार पहना था इसलिए हम ने तेरे लिए पाँच सौ ज़िनार तुड़वा डाले। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 40)

हिकायत नम्बर(486) चुड़िया और अंधा सांप

डाकूओं का एक गिरोह डाका ज़नी के लिए एक ऐसे मुक़ाम पहुँचा जहाँ खजूर के तीन दरख़्त थे। इन दरख़्तों में से एक दरख़्त खुश्क था। और दो फल दार थे। डाकू वहाँ आराम के लिए लेटे तो डाकूओं के सरदार ने देखा के एक चुड़िया फल दार दरख़्त से उड़कर खुश्क खजूर पर जा बैठी है और थोड़ी देर के बाद फिर वहाँ से उड़ती है और फल दार दरख़्त पर जा बैठती है

Scanned by CamScanner

और वहाँ से उड़कर फिर उसी खुश्क दरख़्त पर आ बैठती है इसी तरह उसने कई चक्कर लगाए। सरदार ने ये देखा तो तजस्सुस के लिए खुश्क दरख़्त पर चढ़ा। और जाकर देखा के एक अंधा सांप सब से बुलंद टहनी पर लेटा बैठा है। और मुंह खोले हुए है। वो चुड़िया उसके लिए कुछ लाती है और उसके मुंह में डाल देती है। सरदार ने ये देखा तो मुतास्सिर हुआ। और वहीं कहने लगा। इलाही! ये एक मूज़ी जानवर है जिसके रिज़्क़ के लिए तूने एक चुड़िया मुक़र्रर फ़रमा रखी है। फिर मेरे लिए जो अशफ-उल-मख़लूक़ात में से हूँ। ये डाका ज़नी कब मुनासिब है? ये कहा। तो उसने हातिफ की ये आवाज़ सुनी के:-

"मेरी रहमत का दरवाज़ा हर वक़्त खुला है, अब भी तौबा कर लो तो मैं क़बूल कर लूंगा।"

सरदार ने ये आवाज़ सुनी तो रोने लगा। और नीचे उतरकर उसने अपनी तलवार तोड़ डाली और चिल्लाने लगा के मैं अपने गुनाहों से बाज़ आया, बाज़ आया, इलाही! मेरी तौबा क़बूल फ़र ले। आवाज़ आई।

"हम ने तुम्हारी तौबा क़बूल कर ली।"

सरदार के साथियों ने ये माजरा देखा तो दरयाफ़्त किया, के बात क्या है? सरदार ने सारा क़िस्सा सुनाया। तो वो सब भी रोने लगे और कहने लगे के हम भी अपने अल्लाह से मुसालेहत करते हैं। चुनाँचे उन्होंने भी सच्चे दिल से तौबा की। और बइरादा-ए-हज सारे मक्का मुकर्रमा को चल पड़े। तीन दिन की मुसाफत के बाद एक गाँव में पहुँचे। तो वहाँ एक नाबीना बुढ़िया देखी। जो इस सरदार का नाम लेकर पूछने लगी के इस जमात में वो भी है। सरदार आगे बढ़ा और कहने लगा के हाँ ऐ ज़ईफा है। और वो मैं हूँ। कहो क्या बात है? बुढ़िया उठी। और अन्दर से कपड़े निकाल लाई और कहने लगी। चन्द रोज़ हुए मेरा नेक फ़रज़ंद इन्तिक़ाल कर गया है। ये उसके कपड़े हैं। मुझे तीन रात मुतावातिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआलास अलेह व सल्लम ने ख़्वाब में तशरीफ़ लाकर तुम्हारा नाम लेकर इर्शाद फ़रमाया है के वो आ रहा है ये कपड़े उसे देना। लिहाज़ा ऐ मर्द खुश नसीब! ये अपनी अमानत लो। सरदार ये सुनकर आलमे वज्द में आ गया। और वो कपड़े पहन कर मक्का मोअज़्ज़मा हाज़िर हुआ। और फिर अल्लाह के मक़्बूलों में शुमार होने लगा। रहमत-उल्लाह अलेह। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 126)

सबक:- इंसान चाहे कितना ही गुनाहगार क्यों ना हो। मगर वो जब सच्चे दिल से तौबा कर ले खदा तआला उसके पिछले गुनाह माफ फ़रमा

Scanned by CamScanner

देता है। और अपने मक़्बूलों में शामिल कर लेता है। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के हर अमल से आज भी बा ख़बर हैं। और उनका कोई गुनाहगार उम्मती सच्चे दिल से तौबा कर ले तो आप खुश होते हैं। और उम्मत के नेक व बद अमल हुज़ूर पर सब आशकार हैं।

हिकायत नम्बर(487) शेर पर हकूमत

हज़रत सफयान सूरी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के एक बार मैं और हज़रत सफयान दोनों हज के लिए जा रहे थे के रास्ते में एक जंगल में शेर बैठा हुआ नज़र आया। मैंने शीबान से कहा। के आपने देखा। वो रास्ते में शेर बैठा हुआ है? शीबान बोले! परवाह नहीं। चुनाँचे हम आगे बढ़े। तो हज़रत शीबान ने शेर के पास जाकर उसके कान पकड़ लिए। और फ़रमाया, हमारा रास्ता छोड़ दो शेर उठा और कुत्ते की मानिंद अपनी दुम हिलाने लगा और हुक्म पाकर वहाँ से जाने लगा। मैंने कहा। शीबान तुम ने कमाल कर दिया। वो बोले ऐ सफयान! अगर शौहरत का डर ना हो तो बखुदा मैं अपना सामान इसकी पीठ पर लाद कर उसे मक्का मोअज़्ज़मा तक ले चलूं। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 128)

सबक:- अल्लाह वालों की ये शान है के वो अल्लाह के ताबअे होते हैं। और अल्लाह तआला हर चीज़ को उनके ताबअे कर देता है। वो अल्लाह से डरते हैं। और हर चीज़ उनसे डरने लगती है। फिर वो शख़्स जो चूहे से भी डर जाता हो उन अल्लाह वालों के मिस्ल कैसे हो सकता है।

हिकायत नम्बर(488) या लतीफ

एक बुज़र्ग फ़रमाते हैं के एक साल मुझे ऐसा ख़ौफ और ख़तरा पेश आया के मैं हैरान रह गया। के क्या करूं। और क्या ना करूं? उसी ख़ौफो हिरास के आलम में मैं मक्का शरीफ की तरफ़ रवाना हो गया। और रवाना इस तरह हुआ। के ना कोई सवारी पास थी। और ना रास्ते का खर्च। इसी तरह तीन दिन चलता रहा। अैर जब चौथा दिन आया। तो मुझे गर्मी और प्यास ने बड़ा तंग किया। हत्ता के मुझे अपनी हलाकत का ख़ौफ लाहक़ हो गया। रास्ते में कोई ऐसा दरख़्त भी ना था जिसके साये में बैठता। इसी हालत में मैं *तवक्कलन अललल्लाही* क़िबला की तरफ़ रूख करके बैठ गया। ताके अगर मरूं तो रू बक़िबला होकर मरूं। बैठने के बाद नींद आ

Scanned by CamScanner

गई और मैं बैठा बैठा ही सो गया। फिर ख़्वाब में मैंने एक नूरानी शख़्स को देखा जो मेरे पास आया। और अपना हाथ बढ़ा कर कहने लगा। अपना हाथ बढ़ाओ। मैंने हाथ बढ़ाया तो उसने मुसाफहा किया। और फ़रमाया। तुम्हें बशारत हो के तुम अनक़रीब मक्का मोअज़्ज़मा पहुँच जाओगे। और रोज़त-उल-नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत करोगे। मैंने कहा। आप कौन हैं? वो बोला! मैं हाज़िर हूँ। मैंने कहा। हुज़ूर मेरे लिए दुआ फ़रमाइये। वो बोले मुझ से ये दुआ सीख लो। और इस तीन मर्तबा पढ़ो। *या लतीफन बिख़ल्क़िही या अलीमन बिख़ल्क़िही या ख़बीरन बिख़ल्क़िही अलतफ़ू बी बिल्लुत्फी या अलीमू या खबीरू* "लो ये हमारे जानिब से हमशा के लिए तुम्हारे वास्ते एक तोहफा है। जब कभी कोई मुश्किल पेश आए, या कोई ख़तरा दरपेश हो, या कोई तकलीफ लाहक़ हो तो इस दुआ को तीन मर्तबा पढ़ा करो। इंशा अल्लाह वो तकलीफ दूर हो जाएगी। और खतरा टल जाएगा।" इतने में मुझे किसी ने जगा दिया। मेरी आँख खुली, तो एक शख़्स ने जो ऊँट पर सवार था, मुझे जगाया। और मुझ से पूछने लगा के मेरा लड़का इस शक्लो सूरत का तुम ने गुज़रते देखा है? मैंने नफी में जवाब दिया और असल वाक़ेया पूछा। तो वो बोला के हम दोनों बाप बेटा हज को जा रहे हैं। रास्ते में हम एक दूसरे से बिछड़ गए हैं। और मैं उसकी तलाश में हूँ। फिर उसने पूछा तुम कहाँ जाओगे। मैंने कहा मैं भी हज के लिए जा रहा हूँ। तो उसने अपना ऊँट बिठाया। और मुझे खाने को रोटी और पीने को पानी दिया। और फिर ऊँट पर बिठा लिया। और हम आगे बढ़े। थोड़ी देर चलने के बाद एक क़ाफला नज़र आ गया। जिसमें वही गुमशुदा लड़का भी मिल गया। और हम उसी क़ाफले के साथ बख़ैरियत मक्का मोअज़्ज़मा पहुँच गए। मक्का मोअज़्ज़मा में एक शख़्स मिला जिसने मुझे एक थेली नज़्र पेश की। जिसमें बहुत से रुपये थे। गोया अल्लाह ने मुझे वापसी के लिए ज़ादे राह भी अता फ़रमा दिया। फिर मैं मदीना मुनव्वरह भी हाज़िर हुआ। और बा इतमिनान घर वापस आया और बफज़्ल अल्लाह मेरा वो ख़तरा भी दूर हो चुका था। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 175)

सबक़:- मुश्किल व ख़ौफ के वक़्त जब अल्लाह की तरफ़ रूजू कर लिया जाए तो खुदा अपने मक़्बूल बन्दों की वसातत एआनत फ़रमाता है और ये भी मालूम हुआ के किसी तकलीफ या ख़ौफ के वक़्त हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम का बताया हुआ वज़ीफा बड़ा ही ज़ोदे असर और मफीद है। लिहाज़ा ये वज़ीफा हमें भी याद कर लेना चाहिए।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(489) मेहमान या मेज़बान

एक सय्यद बुज़ुर्ग एक पहाड़ी पर रहा करते थे जहाँ दिन रात वो अल्लाह की याद में मशग़ूल रहा करते थे। ईद का दिन आया। तो वो पहाड़ी पर से उतरे। ताके नमाज़ ईद जमात के साथ अदा करें। नमाज़ पढ़कर वो वापस पहाड़ आए। तो अपनी क़याम गाह पर उन्होंने एक ऐसे नूरानी शख़्स को नमाज़ पढ़ते हुए देखा। जिस पर सफर का कोई निशान ना था। वो बुज़ुर्ग उसे देखकर हैरान रह गए। के ये कौन है? और यहाँ कैसे और कब आया है। और फिर दिल में सोचने लगे। के आख़िर ये मेरा मेहमान है। और आज ईद का दिन है। और इस मेहमान के खिलाने को कुछ ना कुछ ज़रूर चाहिए। मगर यहाँ तो ऐसी चीज़ है नहीं फिर क्या किया जाए। इतने में इस शख़्स ने सलाम फैरा। और कहा मेरी फिक्र ना कीजिए। मुझे खिलाने वाला खुद ही कुछ खिला देगा। और फिर फ़रमाया। और अगर ज़रूर ही कुछ खिलाना पिलाना है तो थोड़ा पानी पिला दो जब पानी लाने के लिए बर्तन के पास पहुँचा तो बर्तन के पास दो ताज़ा रोटियाँ और साथ ही सालन रखा हुआ देखा। वो रोटियाँ और सालन बिलकुल ताज़ा और गर्म था। जैसे अभी अभी तैयार हुआ हो। मैं देखकर हैरान रह गया। इतने में वो पुर असरार मेहमान बोला हैरान कयों होते हो। *फइन्ना लिल्लाही इबादन एनामा कानू वजदू मा अरादू* "अल्लाह के बअज़ बन्दे ऐसे भी हैं जो जहाँ भी कुछ चाहें पा लेते हैं, फिर फ़रमाया खाना लाओ मिलकर खायें। चुनाँचे हम दोनों ने वो खाना खाया और खाना खाने के बाद फिर उस मेहमान ने अस्सलाम अलेकुम कहा और ग़ायब हो गया।" (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 178)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की अजीब शानें होती हैं। वो अवाम से बहुत मुमताज़ और बरगज़ीदा होते हैं और वो जहाँ भी चाहें और जो कुछ भी चाहें पा लेते हैं और दूसरों की इम्दाद एआनत फ़रमाते हैं।

हिकायत नम्बर(490) दाना दीवाना

हज़रत हारून रशीद एक साल हज को गए, तो कूफे में चन्द रोज़ ठहरे फिर वहाँ से क़ूच किया तो उसकी सवारी शाहाना शान से हज़रत बहलूल मजनूँ अलेह अर्रहमत के पास से गुज़री, हज़रत बहलूल ने हारून रशीद को देखा तो आगे बढ़कर कहा। ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! मुझ से एक हदीस सुनते जाओ। सुनो हज़रत अब्दुल्लाह आमरी रज़ी अल्लाहो अन्ह से रिवायत है

Scanned by CamScanner

के एक साल हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज को तशरीफ़ ले गए तो मिना में आपकी सवारी इस सूरत में गुज़री के आप एक ऊँट पर सवार थे और आपके नीचे एक सादा सा कजावा था और हुज़ूर की ये शाही सवारी बग़ैर किसी दुनयवी दबदबे के गुज़री। यानी ऐ हारून रशीद! तुम भी बग़ैर किसी तकब्बुर व दबदबे के इन्तिहाई तवाज़ौ से गुज़रो। हारून रशीद ये हदीस पाक सुनकर रोने लगा और कहने लगा ऐ बहलूल! कुछ और नसीहत करो। बहलूल बोले। ऐ अमीर-उल-मोमिनीन जिस शख़्स को अल्लाह ने मालो जमाल अता किया हो और वो शख़्स माल में से फी सबीलिल्लाह खर्च करे और जमाल में अफ़्फत क़ायम रखे तो अल्लाह तआला उसे अपने मक़्बूलों में शामिल कर लेता है। हारून रशीद ने कहा *अहसनता या बहलूलु* फिर कहा ऐ बहलूल! अगर तुम पर किसी का क़र्ज़ हो तो बताओ मैं अदा कर दूं। बहलूल बोले। मगर क़र्ज़ क़र्ज़ के साथ कैसे अदा हो सकता है बेहतर है के आपके नफ़्स पर खुदा का क़र्ज़ है उसकी अदायगी की फिक्र कीजिए। हारून रशीद ने कहा के अच्छा आपके नाम कोई जागीर कर दूं। बहलूल ने आसमान की तरफ़ मुंह उठाया और कहा ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! मैं और आप दोनों ही खुदा के बन्दे हैं। फिर ये कैसे हो सकता है के खुदा एक बन्दे को याद रखे और दूसरे को भूल जाए। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 31)

सबक़:- अल्लाह वाले दुनिया वालों की नज़र में मजनून व दीवाने हों तो हों मगर वो दरअसल बड़े ही दाना और अक़्ल के मालिक होते हैं। और उनकी नसीहत आमोज़ बातें दीन व दुनिया के संवारने वाली होती हैं और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने के बादशाहों के दिल में खुदा का ख़ौफ और हदीसे पाक की बड़ी अज़मत मौजूद थी।

हिकायत नम्बर(491) गठरी

हज़रत अबु अलहुसैन नूरी रहमत-उल्लाह अलेह की एक ख़ादिमा थी। आपने इस ख़ादिमा से फ़रमाया के मेरे लिए रोटी और दूध लाओ। चुनाँचे ख़ादिमा ले आई। हज़रत अबु अलहुसैन नूरी ने कोयले सुलगा कर दूध गर्म किया। और रोटी दूध के साथ खाने लगे। ख़ादिमा ने देखा हज़रत अबु अलहुसैन के हाथ पर कोयलों की सियाही लग रही है और आप इसी हाथ से रोटी खा रहे हैं। खादिमा ने दिल में कहा के ये अल्लाह के वली हैं। मगर इनमें निज़ामत नहीं है दिल में ये कहकर बाहर निकली। तो एक औरत ने उसे पकड़ लिया और कहा के मेरे कपड़ों की गठरी चुरा ली गई है। और उसकी

Scanned by CamScanner

चुराने वाली तुम हो। लिहाज़ा मैं तुम्हें थाने ले चलूंगी। चुनाँचे वो ज़बरदस्ती इस ख़ादिमा को थाने ले गई। हज़रत अबु अलहुसैन को पता चला तो आप थाने पहुँचे और फ़रमाया ये बेक़सूर है इसे छोड़ दो। सिपाही ने कहा उसकी बेगुनाही का आपके पास क्या सबूत है? आपने फ़रमाया वो देखो। लोगों ने इधर देखा तो इस औरत के घर वालों से एक औरत वही गठरी लेकर आई और बोली गठरी मिल गई है। चुनाँचे खादिमा को छोड़ दिया गया। और हज़रत अबु अलहुसैन रहमत-उल्लाह अलेह न खादिमा से फ़रमाया क्या आईंदा फिर भी यूं कहोगी के अल्लाह के वलियों में निज़ाफत नहीं होती। ख़ादिमा ने कहा हुज़ूर! मेरी तौबा! (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 126)

सबक़:- अल्लाह वालों को कभी हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की दिल के खयालों पर भी नज़र जा पड़ती है।

हिकायत नम्बर(492) गोदड़ी में लअल

हज़रत शफीक़ बलखी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैं एक मर्तबा हज के लिए घर से निकला तो जब क़ादसिया पहुँचा तो वहाँ एक खूबसूरत नूरानी शक्ल वाले शख़्स को देखा जो सादा कपड़े पहने हुए लोगों की राह में बैठा था। मैंने उसे देखकर दिल में खयाल किया के ये शख़्स कोई सूफी है और लोगों की राह में लोगों पर बोझ बनने के लिए बैठा है ये सोच कर में उसके पास पहुँचा तो उसने देखते ही फ़रमाया। ऐ शफीक़ *इजतनीबू कसीरन मिनज़्ज़न्नी इन्ना बाज़ज़ ज़न्नी इसमुन* ये कह कर वो उठकर चले गए। मैं भी पीछे पीछे चल दिया और दिल में सोचने लगा के ये तो कोई बड़ा ही कामिल शख़्स है जिसने मेरे दिल के खयाली को भी जान लिया। मैं उससे ज़रूर माफी चाहूंगा। चुनाँचे मैं आगे बढ़ा तो देखा वो एक जगह नमाज़ पढ़ रहे हैं और नमाज़ में उनकी आँखों से आँसू जारी है और आज़ा कांप रहे हैं। मैं वहीं बैठ गया और जब वो नमाज़ से फारिग़ हुए तो मुझ देखते ही फ़रमाया। ऐ शफीक़! ये आयत पढ़ो *इन्नी लग़फ़्फ़ारून लिमन ताबा व आमना व अमिला सालिहन* फिर वो वहाँ से भी चले गए और नज़रों से ग़ायब हो गए। फिर जब मैं मिना में पहुँचा तो एक कुएँ पर उन्हें बैठा हुआ देखा। और वो कह रहे थे। इलाही मेरे पास डोल नहीं है और मुझे पानी दरकार है। क्या देखता हूँ के कुएँ का पानी उबल कर ऊपर आ गया और उन्होंने बर्तन भर कर वज़ू किया और नमाज़ पढ़ी और फिर उसी बर्तन में रेत की मुट्ठी डाल

Scanned by CamScanner

कर और बर्तन को हिला कर वो पानी पीना शुरू कर दिया। मैं आगे बढ़ा सलाम अर्ज़ किया और कहा के ये जो अल्लाह ने आप पर इनाम फ़रमाया है उसमें से कुछ मुझे अता फ़रमाइये। चुनाँचे उन्होंने वही बर्तन मुझे दिया। और फ़रमाया। लो पियो! मैंने पिया। तो खुदा की क़सम इसमें नफीस सत्तू बेहतरीन मीठे में मिले हुए थे जिन्हें मैंने खाया और पिया। बखुदा इतने लज़ीज़ थे के आज तक उनकी लज़्ज़त नहीं भूली। फिर वो वहाँ से भी ग़ायब हो गए और अगले दिन मैंने उनको आधी रात को हरम शरीफ में नमाज़ पढ़ते देखा। फिर सुबह को मैंने देखा के वो जिस रास्ते से गुज़रते हैं। लोग बड़े अबदो तअज़ीम के साथ उन्हें सलाम अर्ज़ करते हैं। मैंने लोगों से उनके मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो मालूम हुआ के वो हज़रत ज़ैन-उल-आबेदीन रज़ी अल्लाहो अन्ह के पोते हज़रत इमाम मूसा बिन जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो अन्हुमा हैं। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 59)

सबक़:- हज़रत इमाम मूसा(र०अ०) सय्यदों के सरदार होने के बावजूद अल्लाह की इबादत में इस क़द्र मशग़ूल रहते हैं। फिर अगर कोई शाह साहब क़िबला नमाज़ ना पढ़ें। मोहर्रमात से ना बचें तो किस क़द्र अफसोस का मुक़ाम है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की नज़र से दिल की बातें भी पौशीदा नहीं रहतीं।

हिकायत नम्बर(493) सायल हरम

हज़रत अबु सईद खराज़ रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैंने हरम शरीफ में एक सायल को देखा जिसने एक फटी सी चादर ओढ़ रखी थी और वो लोगों से कुछ तलब कर रहा था। मैंने दिल में कहा इस क़िस्म के लोग लोगों पर बोझ बनते हैं। मेरा इतना सोचना ही था के वो मेरी तरफ़ मुखातिब होकर कहने लगा *इन्नल्लाहा यालमू मा फी अनफुसीकुम फलयहज़ुरूहू* यानी अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों की बातें जानता है पस उससे डरो।

मैं ये सुनकर दिल ही दिल में असतग़फार करने लगा। तो उसने फिर हंसते हुए ये आयत पढ़ी के *वहुवल्लज़ी यक़बलू तौबता अन इबादाहू व यअफू अन सय्यात* वो अल्लाह अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है और गुनाह माफ फ़रमाता है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 59)

सबक़:- किसी को भी हिक़ारत से ना देखना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों के सामने दिल के खयाल भी पौशीदा नहीं रहते। फिर जो इन मक़्बूलों के भी आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला

Scanned by CamScanner

अलेह व सल्लम हैं जिनके सदक़े में सबको सब कुछ मिला। उनसे कोई चीज़ किसी तरह ग़ायब रह सकती है।

हिकायत नम्बर(494) पुर असरार जवान

हज़रह सहल बिन अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं के मैं एक रोज़ जुमआ पढ़ने के लिए जामअे मस्जिद में गया। तो हुजूम बहुत था और मस्जिद में कोई जगह बाक़ी ना थी। मैंने जहाँ जगह पाई वहीं बैठ गया। क्या देखता हूँ के मेरी दायें जानिब एक खूबसूरत और नूरानी चेहरे वाला नोजवान बैठा है और उसने सादा से सूफ के कपड़े पहन रखे हैं और उसके बदन से बड़ी आला खुश्बू आ रही है।

जब उसने मुझे देखा तो कहा। ऐ सहल! क्या हाल है? मैंने कहा अलहम्दू लिल्लाह, ख़ैरित से हूँ। मगर मैं हैरान रह गया, के मेरी उसकी कोई जान पहचान नहीं। फिर उसने मुझे पहचान कैसे लिया। और मेरा नाम लेकर मेरा हाल कैसे पूछा? ख़ैर मैं बैठा रहा। इत्तिफाक़न मुझे पैशाब की हाजत हुई और बड़ी शिद्दत के साथ ये हाजत मेहसूस होने लगी। हत्ता के बैठना मुश्किल हो गया। ख़लक़त बहुत थी और जमात का वक़्त भी क़रीब था इसलिए बाहर निकलना भी मुश्किल था और बैठे रहना भी मुश्किल था। मैं इस शशो पंज मं था के वही खूबरू जवान मुझ से मुखातिब होकर कहने लगा क्यों जनाब आपको पैशाब की हाजत है? मैंने कहा हाँ! फिर उसने अपनी चादर उतार कर मेरे मुंह पर डाल दी और कहा लीजिए पैशाब कर के जल्द फारिग़ हो जाइये के जमात तैयार है। मेरे मुंह पर इस चादर के पड़ने से मुझ पर ग़नूदगी सी तारी हुई और मैंने अपनी आँख खोली तो मैंने एक दरवाज़ा खुला हुआ देखा जिसके अन्दर से आवाज़ आई के अन्दर आ जाइये मैं अन्दर गया तो एक बड़ा अज़ीम-उश्शान महल देखा जिसमें हर क़िस्म की सहूलत मयस्सर थी। वहाँ एक दरख़्त नज़र आया। जिसके साथ ही एक ग़ुस्ल खाना बना हुआ था और एक तोलिया भी वहाँ मौजूद था और एक कोज़ा भी पानी का भरा हुआ रखा था। और मिसवाक भी साथ ही रखी हुई थी। मैंने वहाँ पैशाब किया और फिर ग़ुस्ल भी और वज़ू भी कर लिया। इतने में आवाज़ आई के क्या आप फारिग़ हो गए? मैंने कहा हाँ तो फौरन मेरे मुंह पर से चादर उतार ली गई मैंने देखा के वही जामअे मस्जिद है। वही सफ वही जगह, वही मैं और दायें तरफ़ वही खूबरू जवान बैठा है। और वही वक़्त है और मेरी इस सरगुज़िश्त से वहाँ कोई भी मतलअ नहीं हुआ। मैं ये माजरा देखकर हैरान

Scanned by CamScanner

रह गया और कुछ समझ में ना आया के ये क्या हुआ। जब इस वाक़ेये की तरफ़ ध्यान करता तो यक़ीन करना पड़ता। इतने में जमात खड़ी हुई और नमाज़ अदा की गई। नमाज़ के बाद मैं उसी जवान के साथ हो लिया उसने मुझे देखकर मुसकुराते हुए कहा के ऐ सहल! शायद तुम ने जो कुछ देखा है इस पर तुम को यक़ीन नहीं आ रहा, मैंने कहा हाँ! उसने कहा तो आप मेरे साथ आइये मैं उसके हमराह चल पड़ा इतने में वही दरवाज़ा सामने आ गया जो मैं देख चुका था। वो जवान उसी दरवाज़े के अन्दर दाखिल हो गया। मैं भी उसके साथ अन्दर चला गया। क्या देखता हूँ के वही महल है। वही दरख़्त, वही ग़स्ल खाना और वही लौटा और मिसवाक वहाँ मौजूद है और वही तोलिया है जो अभी तक भीगा हुआ था। मैंने ये सब कुछ देख कर कहा *आमन्तू बिल्लाही* इस जवान ने फ़रमाया। ऐ सहल! *मन अताअल्लाहा तआला अताअहू कुल्लु उतलुबहू तजिदहू* जो शख़्स अल्लाह की इताअत करता है तो हर चीज़ उसकी इताअत करती है। उसे ढूंडो, ज़रूर मिलेगा।

मैं ये सुनकर रोने लगा। उस जवान ने मेरे आँसू पोंछे। मैंने आँखें खोलीं तो ना वो जवान नज़र आया ना वो मकान। और मैं हैरान रह गया और उस रोज़ से अल्लाह की इबादत में और भी ज़्यादा महू हो गया। (रोज़-उल-रियाहीन-उल-इमाम याफई रहमत-उल्लाह अलेह, सफ़ा 105)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उम्मत में ऐसे कामिल और खुदा रसीदा बन्दे भी मौजूद हैं जो बड़ी बड़ी ताक़तों और तसर्रूफात के मालिक हैं और जो मुश्किलात को पल भर में दूर कर देते हैं और ये ताक़तें उन्हें अल्लाह ही की तरफ़ से अल्लाह की इताअत के बदले हासिल होती हैं उनकी इन ताक़तों का इंकार अल्लाह की दैन व बख़्शिश का इंकार है। और ये भी मालूम हुआ के जिस आक़ा (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ग़ुलामों की ये शान है वो आक़ा अगर खुद शबे मैराज पल भर में फ़र्श से अर्श पर जा पहुँचा और वहाँ सारी मलकूत की सैर फ़रमा कर फौरन वापस भी तशरीफ़ ले आया और जब वापस आया तो वही वक़्त था और वही वज़ू का पानी चल रहा था। और वही ज़ंजीर बदस्तूर हिल रही थी तो इसमें ताज्जुब की कौन सी बात है।

हिकायत नम्बर(495) बग़दाद का ताजिर

बग़दाद शरीफ का एक ताजिर औलिया इक्राम से बड़ा बुग़्ज़ रखता था। एक रोज़ नमाज़े जुमआ पढ़ने के बाद उसने हज़रत बशर हाफी

Scanned by CamScanner

रहमत-उल्लाह अलेह को देखा के वो नमाज़ पढ़ते ही फौरन मस्जिद से बाहर निकल गए हैं। ये देखकर वो दिल में कहने लगा के देखो तो ये वली बना फिरता है। लेकिन मस्जिद में इस का दिल नहीं लगा और नमाज़ पढ़ते ही फौरन मस्जिद से बाहर निकल गया है। वो ताजिर यही कुछ सोचता और कहता हुआ उनके पीछे पीछे चलने लगा। हज़रत बशर हाफी ने एक नानबाई की दुकान से रोटी खरीदी और शहर से बाहर की जानिब चल पड़े। ताजिर को ये देखकर और गुस्सा आया के ये शख़्स महज़ रोटी के लिए मस्जिद से जल्दी निकल आया है। और अब रोटी खरीदकर शहर से बाहर किसी सब्ज़ा ज़ार में बैठकर खाएगा। ताजिर ने इरादा किया के मैं उसके साथ ही चलता हूँ और जहाँ बैठकर रोटी खाने लगेगा मैं वहीं उससे गुफ़्तगू करूंगा और पूछुंगा के क्या वली ऐसे ही होते हैं जो रोटी के लिए मस्जिद से फौरन निकल आएँ। चुनाँचे ताजिर पीछे पीछे हो लिया हत्ता के हज़रत बशर हाफी एक गाँव में दाखिल हुए और फिर उस गाँव की एक मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। ये ताजिर भी साथ ही मस्जिद में पहुँचा उसने देखा के इस मस्जिद में एक बीमार आदमी लेटा हुआ है। हज़रत बशर हाफी उस बीमार के सिरहाने बैठ गए और उसे अपने हाथ से रोटी खिलाना शुरू किया। ताजिर ये मामला देखकर हैरान हुआ फिर गाँव देखने के लिए बाहर निकला। थोड़ी देर के बाद फिर मस्जिद में आया तो देखा के बीमार आदमी वहीं लेटा है मगर हज़रत बशर हाफी वहाँ मौजूद नहीं हैं। उसने इस बीमार से पूछा के बशर हाफी कहाँ गए तो उसने बताया के वो बग़दाद चले गए हैं। ताजिर ने पूछा बग़दाद यहाँ से कितनी दूर है। वो बोला के चालीस मील। ताजिर ने इन्नालिल्लाह पढ़ी और सोचने लगा के मैं अच्छी मुश्किल में फंस गया। के उनके पीछे इतनी दूर निकल आया। और ताज्जुब ये है के आते हुए कुछ पता ही नहीं चला मगर अब वापसी मुश्किल है फिर उसने पूछा के अब वो यहाँ कब आयेंगे तो वो बोला, के अगले जुमअे को। नाचार ताजिर अगले जुमअे तक वहीं रूका रहा। फिर जब अगला जुमआ आया तो हज़रत बशर हाफी अपने वक़्त पर तशरीफ़ लाए। इस बीमार ने हज़रत बशर से कहा के हुज़ूर ये शख़्स पिछले जुमअे को बग़दाद से आपके साथ यहाँ आया था और बेचारा आठ दिन से यहीं पड़ा है। हज़रत बशर ने गुस्से से इस ताजिर को देखा और फ़रमाया तुम क्यों मेरे पीछे आए थे। ताजिर ने कहा मेरी ग़लती थी, हज़रत ने फिर गुस्से से फ़रमाया के उठ और मेरे पीछे पीछे चला आ। चुनाँचे ताजिर उठा और

Scanned by CamScanner

हज़रत के पीछे पीछे चलने लगा और थोड़ी देर के बाद वो बग़दाद पहुँच गए। फिर बशर हाफी ने उससे फ़रमाया के जाओ अपने घर पहुँचो और ख़बरदार आईंदा ऐसी हरकत ना करना। ताजिर ने औलिया इक्राम की बुग्ज़ से तौबा की और आईंदा उन पाक लोगों का दिल से मौतक़िद हो गया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 118)

सबक़:- अल्लाह वालों को कभी हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए। उन पाक लोगों की हर अदा में लिल्लाहियत और खलूस होता है। और उनके दिलों में मख़लूक़े खुदा का दर्द होता है और ये पाक लोग दिनों का सफर पल भर में तय कर लेते हैं।

हिकायत नम्बर(496) शेर ने हुक्म माना

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम रहमत-उल्लाह अलेह के पास चन्द लोग आए और कहने लगे के हुज़ूर! फलाँ रास्ते में एक शेर आ बैठा है और रास्ता बन्द हो गया है वो शेर वहाँ से जाता ही नहीं। जिससे लोग बड़े परेशान हो रहे हैं। फ़रमाइये क्या करें? हज़रत इब्राहीम उठे और जहाँ शेर बैठा था वहाँ तशरीफ़ ले गए और वहाँ जाकर शेर से मुखातिब होकर फ़रमाने लगे के ऐ शेर! अगर हम में से किसी पर हमला करने का तुझे हुक्म हो चुका है तो अपना काम कर और अगर ऐसा नहीं। तो यहाँ से उठ और अपनी जगह चला जा। शेर ने ये सुना तो फौरन उठा और हज़रत इब्राहीम की तरफ़ देखने लगा और फिर वहाँ से वापस जंगल में चला गया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 128)

सबक़:- अल्लाह वालों की हकूमत शेरों पर भी है। वो खुदा के ज़ेरे फ़रमान हो जाते हैं और सारी खुदाई उनके ज़ेरे फ़रमान हो जाती है।

हिकायत नम्बर(497) शेर ने क़दम चूमे

एक बादशाह ने एक वली अल्लाह पर नाराज़ होकर उसे शेर के पिंजरे में डाल दिया ताके शेर इस अल्लाह के मक़्बूल को हलाक कर डाले। तमाशाईयों ने देखा के जब शेर ने इस मक़्बूले हक़ को अपने पिंजरे में देखा तो वो दौड़ता हुआ आया और इस मक़्बूले हक़ के क़दमों पर अपना सर रखकर चाटने लगा। गोया उस वली के क़दम चूमने लगा। ये करामत देखकर बादशाह ने बड़ी इज़्ज़त के साथ उस मक़्बूल हक़ को पिंजरे से निकाल दिया। लोगों ने उनसे पूछा के जनाब जब शेर आपके क़दमों को चाट रहा

Scanned by CamScanner

था तो उस वक़्त आपके दिल में क्या खयाल आ रहा था? वो बोले उस वक़्त में एक शरई मसला सोच रहा था के शेर मेरे पैर चाट रहा है। शेर का लुआब पाक है या नापाक? और क्या मेरे पैर नापाक तो नहीं हो गए? (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 129)

सबक़:- जो खुदा से डरता है हर चीज़ उनसे डरने लगती है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों का क़दम चूमना शेरों का काम है।

हिकायत नम्बर(498) सालेह नोजवान

हज़रत ज़ुलनून मिस्री अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं, मैंने मुल्क शाम के मुज़ाफात में एक मकान देखा जिसके अन्दर एक नोजवान एक सेब के दरख़्त के नीचे नफिल पढ़ रहा था। मैं उस आबिद नोजवान के क़रीब बैठ गया। जब उसने सलाम फैरा तो मैंने अस्सलाम अलेकुम कह कर पूछा के आप कौन हैं? और इस ग़ैर आबाद इलाक़े में क्यों मुक़ीम हैं? इस नोजवान ने कुछ जवाब ना दिया। मैंने फिर पूछा तो उसने इस अपनी उंगली से ज़मीन पर ये शैर लिखा के

मुनिअल लिसानू अनिल कलामी लीअन्नाहू
कहफुल बलाई रजालिबुल अफाती
फइज़ा नतक़्ता फकुन लिरब्बिका ज़ाकिरन
ला तनसीहू वहमदहू फिलहालाती

यानी ज़बान कलाम करने से रोक ली गई है। इसी लिए ये बलाओं का घर और आफतों को ले आने वाली है। पस तुम भी जब कोई बात करो तो अपने रब का ही ज़िक्र करो और उसे ना भूलो। और हर हाल में उसकी हम्द करते रहो।"

हज़रत ज़ुलनून फ़रमाते हैं मैं ये शैर पढ़ कर रोया। और फिर मैंने ज़मीन पर ये शैर लिखा के

वमा मिन कातिबिन इल्ला सयबला
व यबक़्दहरू मा कताबत यदाहू
फला तकतुब बीकफ़्फीका ग़ैरा शेईन
यसऊकू फिलक़यामती अन तराहू

यानी जो भी लिखने वाला है वो अनक़रीब आज़माया जाएगा। और उसका लिखा हुआ हमेशा बाक़ी रहेगा। पस तुम अपने हाथ से कुछ लिखो तो कोई ऐसी बात ना लिखो जिसे देखकर कल क़यामत के दिन पछताना पड़े।

Scanned by CamScanner

बल्के ऐसी चीज़ लिखो के क़यामत को उसे देखो तो खुशी हासिल हो।"

ये शैर इस नोजवान ने पढ़ा तो चीख मारकर गिरा और उसका इन्तिक़ाल हो गया। मैंने चाहा के मैं अब उसकी तजहीज़ व तकफीन कर चलूं। तो मुझे हातिफ़ से एक आवाज़ आई के तुम इस बात की फिक्र ना करो। उसका अल्लाह अपने फरिश्तों के ज़रिये खुद ये काम पूरा फ़रमाए। चुनाँचे हज़रत ज़ुलनून अलग हो गए और थोड़ी देर के बाद उस तरफ़ देखा तो उस नोजवान की नअश वहाँ से ग़ायब थी। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 22)

सबक़:- अपनी ज़बान से बेहूदा, लग़ू और ग़ैर शरई गुफ़्तगू हर गिज़ करना चाहिए। और अपनी हर तक़रीर और तहरीर में ये अम्र मलहूज़ होना चाहिए के क़यामत के रोज़ हर बात का हिसाब होगा और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों को अल्लाह तआला से एक ख़ास निसबत होती है।

हिकायत नम्बर(499) दवाए ज़नूब

हज़रत ज़ुलनून मिस्री रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैंने बसरा के एक बाज़ार में एक हुजूम देखा के आगे बढ़कर देखा तो एक पुर वक़ार शख़्स बैठा हुआ लोगों को मुख़्तलिफ अमराज़ के नुस्खे लिख कर दे रहा था। हज़रत ज़ुलनून फ़रमाते हैं मैंने उससे दरयाफ़्त किया, क्या तुम्हारे पास गुनाहों की दवा है? तबीब ने मुझे बग़ौर देखा और कहा हाँ है, मैंने कहा तो मुझे भी वो नुस्ख़ा लिखवा दो। वो बोला, लो लिख लो, ईमान के बाग़ में जाकर नीयत व यक़ीन और तवक्कुल की चन्द टहनियाँ ले आओ और शर्म व नदामत के बीज और ज़हदो वरअे के कुछ पत्ते भी ले लो। नीज़ इख़लास का मग़्ज़, इजतिहद का छिलका, और फिक़्ह का कुछ फल लेकर अनाबत व तवाज़ौ के तरयाक़ में डाल दो। और फिर तौफीक़ के हाथ और तसदीक़ की उंगलियों से उन चीज़ों को तहक़ीक़ के तबक़ में डाल कर उन सब चीज़ों को आँसूंओं के पानी से खूब धो लो, फिर इन चीज़ों को उम्मीद की हंडिया में डाल कर शौक़ की आग से खूब पकाओ हत्ता के हिर्सो हवा की मैल कुचैल अलग हो जाए। जिस दस्ते हिम्मत से निकाल कर फिर रज़ा के पियाले में डाल लो। और असतग़फार के पंखे से फिर उसे ठंडा कर लो। उसके बाद ये एक मज़ेदार शर्बत बन जाएगा और उसके पीने की तरकीब ये है के एक ऐसी जगह पिया जाए जहाँ खुदा के सिवा कोई ना देखता हो। बस उसके पिते ही गुनाहों का मर्ज़ जाता रहेगा। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 29)

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(500) आफियत

एक बुज़ुर्ग "इलाही आफियत" बड़ी कसरत से कहा करते थे। लोगों ने पूछा उसकी वजह क्या है? तो फ़रमाया मैं हमाल था। एक दफा में ने गंदम की बोरी उठाई तो थक गया और मुंह से ये दुआ निकली। "इलाही! मुझे बग़ैर किसी मेहनत के हर रोज़ दो रोटियाँ दे दिया कर" थोड़ी देर के बाद दो आदमी आपस में लड़ते हुए देखे मैं उनको छुड़ाने के लिए गया तो एक ने दूसरे को मारा तो उसकी वो ज़र्ब मेरे मुंह पर पड़ी, इतने में पुलिस आ गई। और उनके साथ मुझे भी पकड़ कर ले गई। और मुझे लड़ाई में शरीक समझ कर उनके साथ ही जेल में डाल दिया। जेल में हर रोज़ दो रोटियाँ मिलने लगीं। एक दिन रात को मैंने सुना के कोई कह रहा है के तुम ने बग़ैर मेहनत के हर रोज़ दो रोटियाँ माँगी थीं वो तुझे मिल रही हैं। अगर तुम आफियत माँगते तो आफियत मिलती। मैंने उसी वक़्त कहा। इलाही आफियत। इलाही आफियत। सुबह आँख खुली तो मेरे बे गुनाह ज़ाहिर होने पर मुझे रिहा कर दिया गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 79, जिल्द 1)

सबक़:- जिस तरह जान बचाने के लिए हज़ार जतन करके दुनयवी तबीब के बताने के मुताबिक़ नुस्खा तैयार किया जाता है उसी तरह ईमान की हिफाज़त के लिए भी रूहानी तबीब के बताए हुए नुस्खे को ज़रूर तैयार करके इसतेमाल करना चाहिए ताके रूहानी अमराज़ से निजात मिले।

हिकायत नम्बर(501) हसीन लोंडी की क़ीमत

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा बसरा के बाज़ार से गुज़र रहे थे, आपने एक लोंडी को देखकर उसके मालिक से उसकी क़ीमत पूछी। वो कहने लगा। आप दुरवैश आदमी हैं। आप उसकी क़ीमत ना दे सकेंगे। हज़रत मालिक बिन दीनार ने फ़रमाया ये बेचारी क्या माल है मैंने बड़ी बड़ी ग्राँक़द्र लोंडियों का बीअनामा दे रखा है। इस लोंडी की क़ीमत तो मेरे नज़दीक़ कुछ भी नहीं। अगर है तो खजूर की दो गुठलियाँ हैं और वो इसलिए के उस लोंडी में बहुत ऐब हैं। दो दिन इत्र ना लगाए तो बदन और कपड़ों से बदबू आने लगे। मिसवाक ना करे तो गंदा दहन हो जाए। कंघी चोटी से ग़ाफिल रहे तो सर में जूएँ पड़ जायें। ज़्यादा उम्र वाली होकर बुढ़िया कहलाने लगे। किसी महीने में हैज़ और किसी वक़्त निजासत से खाली नहीं। भाई जान! मैंने उन लोंडियों का बीअनामा दे रखा है जो

Scanned by CamScanner

काफ़ूर व मुश्क और सरासर नूर से पैदा हुई हैं। जिनका लुआब दहन दरयाऐ शौर को मीठा कर दे, जिनका तबस्सुम मुर्दा को ज़िंदा कर दे, जिनका चेहरा चश्मे आफताब़ को गदला, और जिनका हल्ला जान को मोअत्तर कर दे और जिनकी सिफ़्त *हूरून मक़्सूरातुन फिल खिय्यमी* है। उस शख़्स ने पूछा के ऐसी हसीन व जमील लोंडियों की क्या क़ीमत है। हज़रत मालिक ने फ़रमाया। तर्क ख़्वाहिशाते नफ़्सानी और रात को दो रकातें पढ़ लेना। उस शख़्स ने अपने तमाम ग़ुलाम और लोंडियों को आज़ाद कर दिया और खुदा की राह में सब कुछ लुटाकर गोशा नशीन हो गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 434, जिल्द 1)

सबक़:- दुनिया की हर चीज़ फानी और ग़ैर मुकम्मल है और अख़रवी नअेमतें बाक़ी और अयूब से पाक हैं। और तर्के ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया से बड़े बड़े इनाम हासिल होते हैं।

हिकायत नम्बर(502) गुनाह करने का तरीक़ा

एक शख़्स इब्राहीम अदहम अलेह अर्रहमा के पास आया, और कहा। कोई ऐसा तरीक़ा बताइये जिससे में बुरे काम करता रहूं और गिरफ़्त ना हो। हज़रत इब्राहीम ने फ़रमाया। छः बातें क़बूल कर लो। फिर जो चाहे करो। तुझे कोई गिरफ़्त ना होगी। अव्वल ये के जब तू कोई गुनाह करे खुदा का रिज़्क़ मत खा। उसने कहा ये तो बड़ी मुश्किल है के रज़्ज़ाक तो वी है फिर मैं कहाँ से खाऊँ। फ़रमाया! तो ये कब मुनासिब है के तो जिसका रिज़्क़ खाए फिर उसकी नाफरमानी करे। दूसरे ये के अगर तू कोई गुनाह करना चाहे तो उसके मुल्क से बाहर निकल कर कर। उसने कहा तमाम मुल्क ही उसका है फिर मैं कहाँ निकलूं। फ़रमाया तो ये बात बहुत बुरी है के जिसके मुल्क में रहो उसकी बग़ावत करने लगो। तीसरे ये के जब तू कोई गुनाह करे तो ऐसी जगह कर जहाँ वो तुझे ना देखे। उसने कहा ये तो बहुत ही मुश्किल है इसलिए के वो तो दिलों का भेद भी जानता है। फ़रमाया तो ये कब मुनासिब है के तू उसका रिज़्क़ खाये और उसके मुल्क में रहे और उसी के सामने गुनाह करे। चौथे ये के जब मलक-उल-मौत तेरी जान लेने आए तो उसे कह के ज़रा ठहर जा। मुझे तौबा कर लेने दे। उसने कहा के वो मोहलत कब देता है। फ़रमाया तो ये मुनासिब है के उसके आने से पहले तौबा कर ले और उस वक़्त को ग़नीमत समझ। पाँचवीं ये के क़यामत के दिन जब हुक्म हो के उसे दोज़ख़ में ले जाओ तो कहना के मैं नहीं जाता। उसने कहा वो

Scanned by CamScanner

ज़बरदस्ती भी ले जायेंगे। फ़रमाया तो अब खुद ही सोच ले के क्या गुनाह तुझे ज़ैबा है। वो शख़्स क़दमों में गिर गया और सच्चे दिल से तायब हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 130)

सबक़:- जो बन्दा खुदा का रिज़्क़ खाता है और उसके मुल्क में रहता है, फिर उसका रिज़्क़ खाकर और उसके मुल्क में रह कर और फिर उसी के सामने उसकी नाफरमानी करना खुदा की नाराज़गी का मौजिब है इसलिए बन्दे को गुनाहों से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(503) रफ़ीक़ा जन्नत

हज़रत इब्राहीम अदहम ने एक रोज़ जनाब इलाही में अर्ज़ किया, इलाही जो औरत जन्नत में मेरी रफ़ीक़ होगी उसे मुझे दिखा दे। जब सो गए तो ख़्वाब में उनसे कहा गया के तुम्हारी रफ़ीक़ा-ए-जन्नत सलामा नामी एक औरत है जो फलाँ फलाँ मोज़े में बकरियों का रैवड़ चरा रही है। ये ख़्वाब देखकर हज़रत इब्राहीम अदहम उठे और जिस मोज़े का निशान व पता खवाब में बताया गया था उसकी तरफ़ चल दिए और उस मोज़े में पहुँच गए। वहाँ आपने एक औरत को बकरियाँ चराते देखा और उसे सलाम किया। इस औरत ने जवाब में कहा *व अलेकुम अस्सलाम या इब्राहीम।* इब्राहीम ने कहा भला तुझे किस ने बताया के मै। इब्राहीम हूँ। वो बोली जिसने आपको इस बात की इत्तिला दी है के मैं आपकी रफ़ीक़े जन्नत हूँ। इब्राहीम बोले ऐ सलामा! मुझे कुछ नसीहत कर। कहा शब बैदारी और रात को नमाज़ तहज्जुद पर मदावमत इख़्तियार कीजिए इसलिए रात का क़याम बन्दे को अपने रब की तरफ़ पहुँचा देता है। आपको अगर मोहब्बते इलाही का दावा है तो रात की नींद छोड़ दीजिए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 227, जिल्द 1)

सबक:- अल्लाह वाले इसरार व रमूज़ पर वाक़िफ़ हैं। और शब बैदारी व नमाज़ तहज्जुद बड़ी मुफीद चीज़ है।

हिकायत नम्बर(504) जमाले हक़

एक औरत हज़रत जुनैद बग़दादी अलेह अर्रहमा के पास आकर कहने लगी के या हज़रत! मेरा शौहर दूसरा निकाह करना चाहता है, फ़रमाया! अगर इस वक़्त उसके निकाह में चार औरतें नहीं हैं तो उसे दूसरा निकाह करना जायज़ है। औरत बोली। या हज़रत! अगर ग़ैर मर्दों को औरतों की तरफ़ देखना जायज़ होता तो मैं अपना चेहरा खोल कर आपको दिखाती ताके आप

Scanned by CamScanner

मुझे देखकर बताते के जिस शख़्स के निकाह में मेरे जैसी साहबे जामल औरत हो उसे मेरे सिवा दूसरी औरत से निकाह करना लायक़ है। हज़रत जुनैद ने औरत की ये बात सुनकर एक नारा मारा। और रोने लगे और उसका सबब पूछने पर बताया। के मेरे ज़हन में उस वक़्त ये खयाल आया है के हक़ तआला फ़रमाता। अगर दुनिया में किसी को मुझे देखना जायज़ होता तो मैं अपने जमाल से हिजाब उठाकर इस पर ज़ाहिर हो जाता। ताके वो मुझे देखता। फिर उसे मालूम होता के जिसका मुझ जैसा रब हो, उसके दिल में मुझे छोड़ कर किसी और से मोहब्बत होनी चाहिए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 11, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह तआला को छोड़ कर उसके ग़ैर से मोहब्बत करना बहुत बड़ी नादानी है।

हिकायत नम्बर(505) एक बाक़ी

एक शीर फ़रोश दूध भरे पियाले बेच रहा था। और आवाज़ लगा रहा था के *लम यबक़ा इल्ला वाहिदन* एक ही बाक़ी रह गया है। हज़रत शिबली ने आवाज़ सुनी तो एक नारा मारा और फ़रमाया *व लायब्क़ा इला वाहिदुन* और ही बाक़ी रह जाएगा। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 698)

सबक़:- खुदा के सिवा सब पर फना आने वाली है।

हिकायत नम्बर(506) वली का तसर्रूफ

एक शख़्स हज़रत मनसूर बताएही रहमत-उल्लाह अलेह की ज़ियारत को आया, हज़रत ने उसे देखकर फ़रमाया। के मैंने इन आँखों के दरमियान बदबख़्ती की सत्र लिखी देखी है। इस शख़्स ने जब सुना तो बड़ा परेशान हुआ और उल्टा फिरा। और हज़रत शेख़ अहमदी रूमी रहमत-उल्लाह अलेह की मजलिस में दाखिल हुआ। शेख अब्दुल्लाह ने उसे देखकर हवा में कुछ इस तरह इर्शाद फ़रमाया। जिससे मालूम होता था के किसी शै को मिटाते हैं और साथ ही ये आयत पढ़ी *यमहूहुल्लाहू मा यशाऊ व युसब्बितू* उसके बाद फिर ये शख़्स हज़रत मनसूर की मजलिस में गया तो उन्होंने देखकर फ़रमाया। अल्लाह तआला शेख अहमद रफ़ाई की बर्कत से उसे शिक़ावत के दफ़्तर से निकाल कर सआदत के दफ़्तर में दाखिल कर दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 277, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह ने अपने ख़ास बन्दों को बड़े बड़े इख़्तियार बख्शे हैं

Scanned by CamScanner

और अल्लाह के वली अपनी तसर्रूफ व बर्कत से तक़्दीर भी बदल देते हैं...

निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती है तक़्दीरें

हिकायत नम्बर(507) तवंगर व मुफलिस

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह बड़े मालदार थे। एक मर्तबा हज को जा रहे थे तो रास्ते में एक ग़रीब दुरवैश मिला उससे आपने फ़रमाया ऐ दुरवैश। हम तवंगर हैं उसके बुलाए हुए जा रहे हैं मगर तुम तो एक मुफलिस आदमी हो। तुम तुफैली होरक कहाँ जाते हो। उस दुरवैश ने जवाब दिया। ऐ अब्दुल्लाह! मेज़बान जब करीम होता है तो तुफैली की ज्यादा ख़ातिर करता है। अगर उसने तुम को अपने घर बुलाया है तो मुझ को खुद अपने पास बुलाया है। अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया जानते हो? खुदा ने हम तवंगरों से क़र्ज़ लिया है। दुरवैश ने जवाब दिया। मगर ये भी तो देखिए के उसने अगर तुम से क़र्ज़ लिया है तो लिया किन लोगों के वास्ते है। ऐ अब्दुल्लाह! उसनें हमारे ही वास्ते क़र्ज़ लिया है। गोया हमारी ख़ातिर मंज़ूर है। हज़रत अब्दुल्लाह ने ये बात सुनकर फ़रमया वाक़ई तुम सच कहते हो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 170)

सबक़:- ग़रीबों को हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए। क्या ख़बर के एक ग़रीब आदमी मक़्बूले हक़ हो, नीज़ ये तवंगरी और मुफलिसी कोई क़ाबिले एतबार शै नहीं। बक़ौल शायर

कितने मुफलिस हो गए कितने तवंगर हो गए
खाक में जब मिल गए दोनों बराबर हो गए

हिकायत नम्बर(508) ईफा अहद

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह एक दफा जिहाद को गए। उसमें आप एक काफिर से जंग कर रहे थे के नमाज़ का वक़्त क़रीब आ गया। आपने काफिर से मोहलत चाही और नमाज़ अदा की। फिर जब उस काफिर की इबादत का वक़्त हुआ तो उसने भी मोहलत चाही। जब वो बुत की तरफ़ इबादत के वास्ते मुतवज्जह हुआ तो अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने सोचा के इस वक़्त इस पर हमला कर दूं तो फतह पा लूंगा। चुनाँचे आपने तलवार खींची और उस पर हमला करने की ख़ातिर क़रीब पहुँचे ही थे के एक आवाज़ सुनी। के ऐ अब्दुल्लाह!

ओफू बिलअहदी काना मसऊला "यानी अहद पूरा करो, के उससे

Scanned by CamScanner

सवाल किए जाओगे।"

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रोने लगे। उस काफिर ने जो अब्दुल्लाह बिन मुबारक को देखा के तलवार खींचे हुए रो रहे हैं तो वजह पूछी। आपने सारा क़िस्सा सुनाया तो उस काफिर ने एक चीख़ मारी और कहा बड़े शर्म की बात है के ऐसे खुदा की नाफरमानी करूं। जो दुश्मन की ख़ातिर अपने दोस्त पर अत्ताब कर रहा है। और फिर मुसलमान हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 171)

सबक़:- इस्लाम में ईफा अहद की बड़ी ताकीद है और मुसलमान हत्ता-उल-इमकान अपना वादा पूरा करता है।

हिकायत नम्बर(509) दुश्मन की नुक्ता चीनी

हज़रत शफीक़ बलखी रहमत-उल्लाह अलेह बहुत बड़े वली अल्लाह थे। एक रोज़ मजलिस गर्म थी के शहर में गुल पड़ा के काफिर आ गए। हज़रत शफीक़ फौरन बाहर निकले और कुफ़्फार को भगा कर लौट आए। एक मुरीद ने चन्द फूल हज़रत के मुसल्ले पर रख दिए थे। आप उन फूलों को सूंघने लगे। एक बद अक़ीदा ने देखकर कहा। के लश्कर तो शहर के दरवाज़े पर आ पहुँचा। और मुसलमानों के इमाम अभी तक फूल ही सूंघ रहे हैं। हज़रत ने फ़रमाया। मुनाफिक़ फूल सूंघना तो देखते हैं मगर लश्कर को शिकस्त देना नहीं देखते। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 185)

सबक़:- औलिया अल्लाह के मआंद बद अक़ीदा अफ़्राद को अल्लाह वालों की खूबियाँ तो नज़र नहीं आती। और उन पाक लोगों की बज़अम खवैश वा नुक्ता चीनियाँ ही बयान करते रहते हैं।

हिकायत नम्बर(510) बादशाह को नसीहत

एक दिन हज़रत शफीक़ बलखी रहमत-उल्लाह अलेह हज़रत हारून रशीद के पास आए, तो हारून रशीद ने हज़रत बलखी से कहा। जनाब मुझे कोई नसीहत कीजिए। फ़रमाया ऐ हारून! खुदा तआला ने तुझे सिद्दीक़े अक्बर की जगह बिठाया है। तो तुझ से सच्चाई और रास्त बाज़ी चाहता है। और जब फारूक़े आज़म की मसनद पर बिठाया है तो चाहता है के तू हक़ और नाहक़, सच और झूट में तफरीक़ करे और जब तुझे उस्मान ज़ुलनूरैन के मुक़ाम पर बिठाया है तो वो तुझ से शर्म व हया का तालिब है। और जब उसने तुझे अली अलमुर्तज़ा के मुक़ाम

Scanned by CamScanner

पर बिठाया है तो वो तुझ से अद्लो इंसाफ और इल्मो अमल का ख़्वाहाँ है। हारून रशीद ने कहा कुछ और भी फ़रमाईये। फ़रमाया खुदा का बनाया हुआ एक घर है। जिसे दोज़ख़ कहा जाता है उसका खुदा ने तुझे दरबान बनाया है। के लोगों को उसमें दाखिल होने से बचाए और ऐ हारून रशीद तू दरया है और तमाम रूइय्यत नहरें हैं। अगर तूने सफाई हासिल की। तो सब सफाई के साथ रहेंगे और अगर तूने ही अपने अन्दर कदूरत पैदा कर ली तो सब मक्दूर हो जायेंगे। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 100, जिल्द 2)

सबक़:- बादशाह और हाकिम को सदाक़त, हक़ व बातिल में तफरीक़, शर्म व ग़ैरत और इल्मो अमल से काम लेना चाहिए और अपनी रूय्यत के लिए एक बेहतरीन नमूना बनकर दिखाना चाहिए।

हिकायत नम्बर(511) शराबी का मुंह

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत-उल्लाह अलेह एक रास्ते से गुज़र रहे थे। आपने एक शराबी को देखा जो शराब के नशे में राह में गिरा हुआ था। और बेहोशी के आलम में अपनी ज़बान से बहुत बकवास कर रहा था। हज़रत इब्राहीम उसके पास ठहर गए और फ़रमाया। ये ज़बान तो ज़िक्रे हक़ के लिए थी। उसे कौन सी आफत पहुँची के ये ऐसे बकवास कर रही है। फिर आपने पानी मंगवाया और उसका मुंह और उसकी ज़बान धोने लगे और धोकर आगे तशरीफ़ ले गए। शराबी होश में आया तो लोगों ने उसे ये सारा क़िस्सा सुनाया। शराबी ये सुनकर के हज़रत इब्राहीम अदहम मेरा मुंह और ज़बान धो गए हैं। रोया। और कहने लगा। इलाही! तेरे मक़्बूल बंदे की शर्म खाकर मै। सच्चे दिल से तौबा करता हूँ। तू अपने मक़्बूल बन्दे के तुफैल मुझे बख़्श दे।

रात को इब्राहीम ने ख़्वाब में देखा के कोई कहने वाला कह रहा है के ऐ इब्राहीम तून इस शराबी का हमारी ख़ातिर मुंह धोया। हम ने तुम्हारी ख़ातिर उसका दिल धोया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 117)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की क़र्बत व मईयत से इंसान की काया पलट जाती है और अल्लाह की रहमत से सब गुनाह धुल जाते हैं और आक़्बत अच्छी हो जाती है। फिर जो लोग ये कहें के उन वलियों के पास क्या पड़ा है और उनके पास जाने से क्या फायदा? वो बद नसीब और बदबख़्त हैं। या नहीं?

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(512) रास्त गोई

हज्जाज बिन यूसुफ़ ने एक दफा एक शख़्स को कअबा शरीफ का तवाफ करते हुए देखा उस शख़्स से हज्जाज को एक ख़ास कशिश नज़र आई। चुनाँचे अपने मुक़ाम पर पहुँच कर हज्जाज ने हुक्म दिया के उस शख़्स को हाज़िर किया जाए। अम्माल ने तामीले हुक्म की और उस शख़्स को दरबार में बुला लाए, वो शख़्स कोई मक़्बूले हक़ था। दरबार में पहुँचकर वो बड़ी बेनियाज़ी से खड़ा हो गया। हज्जाज ने उसे देखा और यूं गोया हुआ।

हज्जाजः- तुम कौन हो?

वो शख़्सः- मुसलमानों में से एक मुसलमान हूँ।

हज्जाजः- मेरा मतलब ये नहीं। बल्के मेरा मतलब ये है के तुम कहाँ के रहने वाले हो?

वो शख़्सः- मैं यमन का रहने वाला हूँ।

हज्जाजः- यमन का हाकिम मोहम्मद बिन यूसुफ़ मेरा भाई है। तुम ने उसे कैसा देखा।

वो शख़्सः- वो बड़ा क़दआवर जिस्म और अच्छे कपड़े पहनने वाला शख़्स है।

हज्जाजः- मेरा मतलब ये नहीं। मेरा मतलब ये है के उसकी सीरत कैसे है?

वो शख़्सः- वो बड़ा ज़ालिम। मख़लूक़ का फ़रमाँबर्दार और ख़ालिक़ का नाफरमान।

हज्जाजः- गुसताख़ इतनी बड़ी गुसताखी। क्या तुम्हें इल्म नहीं के मेरा उससे क्या ताल्लुक़ है। मैं उसका भाई हूँ।

वो शख़्सः- और क्या तुम्हें इल्म नहीं। के मेरा खुदा से क्या ताल्लुक़ है। मैं उसका बन्दा हूँ। और उसके घर की ज़ियारत के लिए यहाँ आया हूँ। और उसके रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तसदीक़ करने वाला हूँ।

हज्जाज ख़ामोश हो गया और कोई जवाब ना दे सका और वो शख़्स बग़ैर इजाज़त लिए दरबार से निकल गया (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 115)

सबक़:- अल्लाह वाले रास्त बाज़ होते हैं और ज़ालिम हाकिम के सामने भी सच्ची बात कहने से नहीं चूकते। ऐसे रास्त बाज़ों की अल्लाह मदद फ़रमाता है। और ज़ालिम उनसे मरऊब होता है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(513) जेलखाने से बाग़ में

एक नोजवान वली अल्लाह ने किसी नेक काम का हुक्म दिया और बुरे काम से रोका तो ये बात ख़लीफा हारून को नागवार गुज़री और उसने हुक्म दिया के उस नोजवान को जेल के एक ऐसे बन्द कमरे में क़ैद कर दिया जाए जिसमें हवा भी दाख़िल ना हो सके और ये वहीं घुट कर मर जाए। चुनाँचे उस नोजवान को जेल में ले जाया गया और एक बन्द और तारीक कमरे में डाल दिया गया। दूसरे दिन लोगों ने देखा के वो नोजवान एक बाग़ में टहल रहा है। लोगों ने बादशाह को बताया। बादशाह ने उस नोजवान को फ़ि तलब किया और उससे पूछा।

हारून रशीदः- तुम्हें जेल से किस ने निकाला?

नोजवानः- उसने जिसने मुझे बाग़ में पहुँचाया।

हारून रशीदः- और तुम्हें बाग़ में किस ने पहुँचाया।

नोजवानः- उसने जिसने मुझे जेल से निकाला

हारून रशीदः- ये अजब बात हैं

नोजवानः- अल्लाह के सामने ये बात ना मुश्किल है ना अजब।

हारून रशीद ये सुनकर बहुत रोया और उसकी बड़ी इज़्ज़त व तौक़ीर की और एक खलअत खास से उसे नवाज़ा। और एक घोड़ पर बिठा कर एक मनादी को हुक्म दिया के वो एलान करता हुआ उसके साथ चले। के

ये वो बन्दा-ए-हक़ है जिसे अल्लाह ने इज़्ज़त दी। हारून रशीद ने उसकी तोहीन करना चाही। मगर वो इस बात पर क़ादिर ना हो सका। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 104)

सबक़:- अल्लाह वालों की इज़्ज़त व अज़मत को कोई छीन नहीं सकता और जो उनकी तोहीन करना चाहे वो खुद ही शर्मिंदा हो जाता है। उन अल्लाह वालों का मुक़ाबला दरअसल अल्लाह से मुक़ाबला है लिहाज़ा उन पाक लोगों का दिल में अदबो एहत्राम पैदा करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(514) शाही महल

एक बादशाह ने अपने लिए बहुत बड़ा एक शाही महल बनावाया और जब वो बन कर तैयार हो गया तो एक दावते आम करके अपने दोस्त व अहबाब को बुलाया और खाना खिलाने के बाद सबसे कहा। के इस महल को देखो। और जिसे इसमें कुछ ऐब नज़र आए वो हमें बताए चुनाँचे सब

Scanned by CamScanner

ने इस महल को देखा और सभी ने तारीफ की। और बताया के ये महल हर लिहाज़ से मुकम्मल है और इसमें कोई ऐब नहीं है।

उन लोगों में एक मर्दे हक़ भी था। बादशाह ने जब उससे पूछा। तो उसने जवाब दिया के इसमें दो बड़े ऐब हैं। बादशाह ने हैरान होकर पूछा के वो कौन से? उसने बताया के एक ये के ये महल एक दिन बर्बाद हो जाएगा और दूसरे ये के इसमें रहने वाला एक दिन मर जाएगा।

बादशाह ने पूछा। तो कोई ऐसा महल भी है जो कभी बर्बाद ना हो और जिसका मकीन कभी ना मरे। फ़रमाया, हाँ! और वो जन्नत है। फिर इस मर्दे हक़ ने जन्नत की तरग़ीब और जहन्नुम की तखवीफ में एक ऐसा वाज़ फ़रमाया के बादशाह रोने लगा। और हकूमत से किनारा कश होकर अल्लाह अल्लाह करने लगा। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 108)

सबक़:- ये दुनिया नापायदार है और आख़िरत की नअेमतें अब्दी और लाज़वाल हैं। इंसान को इस दुनिया में दिल नहीं लगाना चाहिए।

हिकायत नम्बर(515) इम्तिहान

एक बादशाह ने चन्द अल्लाह वालों का इम्तिहान लेने की ख़ातिर उन की दावत की। और दावत में कुछ खाने तो हलाल रखे। और कुछ हराम भी रख दिए और अपने मसाहिबों से कहने लगे। देखें ये अल्लाह वाले हलाल व हराम में तमीज़ कर सकते हैं या नहीं? चुनाँचे जब वो अल्लाह के वली दसतरख़्वान पर बैठे तो बादशाह अपने मसाहिबों समेत उनके साथ बैठ गया। और देखने लगा के ये लोग हराम खाने भी खाते हैं या नहीं, चुनाँचे खाना शुरू हुआ तो उन अल्लाह वालों में से एक बुज़ुर्ग अपने साथियों से फ़रमाने लगे के आज मैं आपकी ख़िदमत करूंगा और आपके सामने और बादशाह और उसके मसाहिबों के सामने खाना मैं रखूंगा। फिर जिन पलेटों में हलाल खाना था वो अपने साथियों के सामने अेर जिन में हराम खाना था वो बादशाह और उसके मसाहिबों के सामने रखने लगे और साथ साथ ये आयत पढ़ने लगे।

अत्तय्यीबातू लित्तय्यीबीना वल खबीसातू लिल खबीसीना

बादशाह ने ये माजरा देखा तो वहीं तौबा की और उन सबके सामने अपने क़सूर का एत्राफ किया और सच्चे दिल से अल्लाह वालों का मौतक़िद हो गया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 228)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों का इल्मो इर्फान बड़ा वसी होता

Scanned by CamScanner

है। और उनकी नज़रों के सामने पौशीदा और राज़ की बातें भी ज़ाहिर होती हैं और ये सब सद्क़ा है हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का जिनकी इत्तिबा की बदौलत उन्हें ये वुसअते नज़र हासिल होती है। फिर खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नज़रे पाक से कोई राज़ की बात कैसे पौशीदा या ग़ायब रह सकती है।

हिकायत नम्बर(516) गोश्त और हलवा

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं, मैं बाद अज़ नमाज़ इशा एक मस्जिद में गया तो देखा के वहाँ एक रईस ताजिर बैठा है। और साथ ही एक खूबसूरत नूरानी चेहरे वाला कोई मक़्बूले हक़ भी बैठा है, मैं नमाज़ पढ़ चुका तो देखा के वो मक़्बूले हक़ अपने हाथ उठा कर खुदा से दुआ माँग रहा है और कह रहा है। इलाही! "भुना हुआ गोश्त और हलवा खिला दे" उस रईस ताजिर ने सुना तो हंस कर कहने लगे के ये फक़ीर दरअसल मुझे सुना रहा है। खुदा की क़सम! अगर मुझ से माँगता तो मैं उसे देता मगर अब मैं इसे कुछ ना दूंगा। थोड़ी देर के बाद वो मक़्बूल सो गया और मैंने देखा के एक शख़्स एक ढका हुआ तबाक़ लेकर आया और हम सब को देखने के बाद उस सोए हुए मक़्बूल हक़ को देखकर तबाक़ नीचे रखकर उसके पास बैठ गया। और उसे जगा कर अर्ज़ करने लगा। भुना हुआ गोश्त और हलवा हाज़िर है। खाईये। इस मक़्बूले हक़ ने हस्बे तलब इसमें से कुछ खा लिया और फिर वो तबाक़ वापस कर दिया। उस ताजिर ने इस खाना लाने वाले से क़सम देकर पूछा। के ये क्या क़िस्सा है? बयान तो करो। वो बोला, मैं एक मज़दूर हूँ। आज बड़े दिनों के बाद मज़दूरी में कुछ ऐसे पैसे मिल गए थे। मेरी बीवी ने भुने हुए गोश्त और हलवा की ख़्वाहिश का इज़हार किया। हम ने ये चीज़ें तैयार कीं। मैं थोड़ी देर के लिए सो गया। तो हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया तुम्हारी मस्जिद में एक "वली" बैठा है जो भुना हुआ गोश्त और हलवा चाहता है। तुम ये भुना हुआ गोश्त और हलवा पहले उसे खिलाओ। उसके अवज़ में तुम्हें जन्नत ले चलूंगा। चुनाँचे मैं फौरन ये खाना लेकर यहाँ पहुँचा और खुश हूँ के आज मुझे जन्नत मिल गई।

वो ताजिर कहने लगा इस खाने पर तुम्हारा क्या खर्च आया है। उसने बताया के दो दीनार। ताजिर ने कहा के ये लो दो दीनार तुम मुझ से ले लो और अपने अज्र में से कुछ मुझे भी दे दो, वो बोला हर गिज़ नहीं। ताजिर ने

Scanned by CamScanner

दस दीनार ले लो। वो बोला नहीं। ताजिर ने कहा सौ दीनार ले लो। उसने कहा सारी दुनिया के ख़ज़ाने भी दे दो तो रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से किए हुए सौदे में तुम्हें शरीक ना करूंगा। तुम्हारी क़िसमत में ये चीज़ होती तो तुम मुझ से पहल कर सकते थे। मगर अब तुम अपने आपको महरूम समझो। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 153)

सबक़:- अल्लाह वालों की ये शान है के वो अल्लाह की मर्ज़ी पर चलते हैं और अल्लाह उनकी मर्ज़ी पूरी फ़रमा देता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला अपना इनामो इक्राम अपने मेहबूब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वास्ते व वसीले से मख़लूक़ पर फ़रमाता है। और ये भी मालूम हुआ के अपनी दौलत फानी के नशे में रह का अल्लाह वालों को नज़रे हिक़ारत से देखने वाले खुदा के फज़्ल और रसूले खुदा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के करम से महरूम रह जाते हैं।

हिकायत नम्बर(517) नूरानी औरत

हज़रत ज़ुलनून रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं, के एक दफा कअबा शरीफ का तवाफ कर रहा था के मैंने एक नूर देखा जो आसमान तक बुलंद हो रहा था। मैंने तवाफ ख़त्म किया तो एक नूरानी औरत को देखा जो पर्दा कअबा को पकड़ कर ये शैर पढ़ रही थी।

अन्ता तदरी मिन हबीबी
मन हबीबी अन्ता तदरी
क़द कतअतुल हुब्बा हत्ता
ज़ाक़ बिलकितमानी सदरी

"ऐ मेरे हबीब तू जानता है के मेरा हबीब कौन है। मैंने मोहब्बत को छुपाया। यहाँ तक के इस राज़दारी से मेरा सीना तंग हो गया।"

"फिर उसने रोते हुए यूं दुआ माँगना शुरू की। इलाही! तुझे इस मोहब्बत का वास्ता है जो तुझे मुझ से है मेरी मग़फिरत फ़रमा दे" मैंने इस नूरानी औरत से कहा। ऐ अल्लाह की बन्दी यूं कहो के तुझे उस मोहब्बत का वास्ता है। जो मुझे तुम से है। तुम जो यूं कह रही हो के जो मोहब्बत तुम्हें मुझ से है ये तुम्हें कैसे पता चल गया। तो वो बोली ऐ ज़ुलनून! क़ुरआन की ये आयत नहीं पढ़ी *फसोफा याती अल्लाहू बिक़ोमी युहिब्बूहुमुल्लाहू व युहिब्बूनाहू* देख लो इस आयत में अल्लाह तआला ने पहले अपनी मोहब्बत का ज़िक्र फ़रमाया है और यूं फ़रमाया है के अल्लाह उनसे मोहब्बत फ़रमाएगा और

Scanned by CamScanner

वो अल्लाह से मोहब्बत करेंगे" गोया जो अल्लाह से मोहब्बत करते है। उनसे पहले अल्लाह मोहब्बत फ़रमाता है।

मैंने कहा तुम ने मेरा नाम कैसे जान लिया। वो बोली जो ख़ालिक़ को जान ले वो मख़लूक़ को क्यों ना जान लेगा। फिर उसने कहा। ज़रा इस तरफ़ देखना मैंने दूसरी तरफ़ मुंह मोड़ लिया तो वो नज़रों से ग़ायब हो गई। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 219)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे अल्लाह के महबूब हैं और अल्लाह उन से मोहब्बत फ़रमाता है और अल्लाह की याद से एक नूर पैदा होता है जिससे ग़ाफिल महरूम होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के जो अल्लाह को जान लेते हैं वो मख़लूक़ से बे ख़बर नहीं रहते और उनको सब ख़बरें होती हैं।

हिकायत नम्बर(518) कमसिन लड़का

हज़रत अब्दुल्लाह बिन दासान रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैंने एक दफा बसरा के बाज़ार में एक लड़के को देखा। जो रो रहा था। मैंने उससे पूछा। बेटा क्यों रोते हो? वो बोला दोज़ख की आग से डरकर रो रहा हूँ। मैंने कहा तुम कमसिन हो। तुम्हें दोज़ख़ की आग का क्या डर है? वो बोला! मैंने अपनी माँ को देखा है के जब वो चूलहा जलाती हैं तो बड़ी बड़ी लकड़ियों को जलाने के लिए नीचे छोटी छोटी लकड़ियाँ भी रख देती हैं। तो मैं डरता हूँ के खुदा तआला बड़े बड़े नाफरमानों को जलाने के लिए मुझ जैसे छोटों को भी आग में डाल दे।

मैं उस कमसिन लड़के की इस गुफ़्तगू से बड़ा मुतास्सिर हुआ और उससे कहा। बेटा! क्या तुम मेरे पास रहना मंज़ूर करोगे? मगर चन्द शर्तों पर। मैंने कहा बोलो क्या शर्तें हैं। तो कहने लगा।

के मुझे भूक लगे तो खाना खिलाओ।

प्यास लगे तो पानी पिलाओ।

और मुझ से ग़लती हो जाए तो माफ कर दो।

और मैं मर जाऊँ तो मुझे ज़िन्दा कर दो।

मैंने कहा। बेटा! इन सब बातों पर में क़ुद्रत नहीं रखता। तो वो बोला तो फिर जाइये अपना काम कीजिए। मैं जिस आक़ा के दर पर मुलाज़िम हूँ वो इर सब बातों पर क़ादिर है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 94)

सबक़:- अल्लाह के अज़ाब से डरते रहना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने में छोटे छोटे बच्चे भी अल्लाह के अज़ाब से डरते थे

Scanned by CamScanner

और आज कल बड़े बड़े भी ग़फ़्लत की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं।

हिकायत नम्बर(519) हरगिज़ नमीरद आँके दिलिश ज़िंदा शद बअश्क़

हज़रत अहमद बिन मनसूर रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मेरे उस्ताद अबु याक़ूब मूसा अलेह अर्रहमा ने मुझे सुनाया के मेरे एक मुरीद का इन्तिक़ाल हो गया। तो उसका ग़ुस्ल मैंने खुद किया। जब मैं उसे ग़ुस्ल दे रहा था तो मेरे मुरीद ने मेरा अंगूठा पकड़ लिया। हालाँके वो पटरे पर पड़ा हुआ था और मैं उसे नहला रहा था। मैंने उससे कहा। बेटा मेरा अंगूठा छोड़ दो मैं जानता हूँ तुम मरे नहीं। बल्के एक घर से इन्तिक़ाल करके दूसरे घर चले गए हो। तुम ज़िन्दा ही हो। छोड़ दो मेरे अंगूठे को ये सुनकर मेरे मुरीद ने मेरा अंगूठा छोड़ दिया। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 71)

सबक़:- अल्लाह वाले मरते नहीं, बल्के इस जहान से उस जहान में इन्तिक़ाल फ़रमा जाते हैं

कौन कहता है के मोमिन मर गए
क़ैद से छूटे वो अपने घर गए

हिकायत नम्बर(520) कुआँ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हनीफ रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैं बारादाऐ हज घर से निकला और जब बग़दाद शरीफ पहुँचा। तो हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में हाज़िर ना हुआ। सोचा के वापसी पर हाज़री दूंगा। रास्ते में प्यास ने बहुत सताया। तो एक कुएँ पर पहुँचा वहाँ देखा के किनारे पर खड़े होकर एक हिरन पानी पी रहा है। मैं खुश हुआ के कुएँ का पानी बहुत क़रीब है। मैं जब कुएँ के पास पहुँचा तो हिरन वापस चला गया तो पानी भी नीचे चला गया। मैं बड़ा हैरान हुआ और वापस होते हुए इतनी बात ज़बान से निकली। के मेरा दर्जा हिरन के बराबर भी ना हुआ। इतने में पीछे से आवाज़ आई बेसब्र आदमी तुम्हारा तजुर्बा किया गया है मगर तुम बे सब्र निकले चलो वापस कुएँ पर और पानी पी लो। मैं फिर कुएँ पर पहुँचा, तो कुआँ पानी से किनारों तक भरा हुआ था मैंने पानी पिया और मशकीज़ा भी भर लिया। फिर ये पानी मदीना मुनव्वरह तक ख़त्म ना हुआ। हज से वापसी पर जब बग़दाद पहुँचा हूँ तो हज़रत जुनैद की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो हज़रत जुनैन ने मुझे देखते ही फ़रमाया ऐ

Scanned by CamScanner

अब्दुल्लाह! अगर कुएँ पर थोड़ी देर और सब्र करते तो पानी तुम्हारे पेरों के नीचे से उबलने लगता। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 71)

सबक़:- अल्लाह वालों का ये इल्मो इर्फान है के जो बात एक जंगल में वाक़े हुई वो हज़रत जुनैद को बग़दाद शरीफ में मालूम हो गई और एक वो लोग भी हैं जो उनके मिस्ल बनते हैं के घर बैठे हुए घर बात का इल्म भी नहीं के क्या हो रहा है।

हिकायत नम्बर(521) जानवर भी ग़ुलाम

हज़रत अबु अय्यूब हम्माल रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के अबु अब्दुल्लाह दीलमी रहमत-उल्लाह अलेह जब कहीं तशरीफ़ ले जाते तो अपनी सवारी के गधे को कहीं बाँधा नहीं करते थे बल्के उसके कान में ये कह देते के जा जंगल में कुछ खा पी के आ। और फलाँ वक़्त यहाँ पहुँच जाना। चुनाँचे गधा जंगल में चला जाता और ठीक उस वक़्त यहाँ पहुँच जाना। चुनाँचे गधा जंगल में चला जाता और ठीक उस वक़्त पर जिस वक़्त का उसे कहा जाता वो वापस वहीं पहुँच जाता था। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 72)

सबक़:- ये है अल्लाह वालों का इक़्तिदार के जानवर भी तामीले हुक्म करते हैं। एक ये भी हैं जो उनकी मिस्ल बनते हैं के किसी गधे के क़रीब आयें तो दूलत्तियाँ खायें।

हिकायत नम्बर(522) रेत की चीनी

हज़रत इब्ने अबी अयास रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। असक़लान में एक नोजवान मर्दे खुदा को देखा जो हमारे पास आकर बैठता और अच्छी अच्छी बातें सुनाता। एक दिन उसने बताया के वो इसकंद्रिया जा रहा है उसकी नेक सोहबत के असर से मैं भी उसके साथ जाने को तैयार हो गया। मैंने कुछ रुपये साथ ले लिए और रास्ते में वो रुपये उसे देना चाहे। मगर उसने लेने से इंकार कर दिया। मैंने ज़ोर दिया के ज़रूर ले लो। उसने रेत मुठ्ठी भर कर अपने पियाले में डाली और दरया का कुछ पानी उसमें डाला। और वो पियाला मेरे आगे बढ़ा दिया के लो खाओ मैंने देखा के पियाला में शक्कर में मिले हुए लज़ीज़ सत्तू हैं। मैं ये देखकर हैरान रह गया और वो कहने लगा के जिसका काम इस तरह चल रहा है उसे रूपों की क्या ज़रूरत। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 72)

सबक़:- ये हैं अल्लाह वाले के उनके लिए रेत भी चीनी बन जाए

Scanned by CamScanner

और एक उनकी मिस्ल बनने वाले भी हैं जिन्हें देसी चीनी भी ना मिले।

हिकायत नम्बर(523) भेड़ियों और बकरियों में सुलह

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रहमत-उल्लाह फ़रमाते हैं के मैंने तीन रात अल्लाह से ये दुआ की। के ऐ अल्लाह! मुझे बता दे के कल जन्नत में मेरा साथी कौन होगा? तीसरी रात मुझ हातिफ से एक आवाज़ आई के तुम्हारी जन्नत में साथी मेमूना वलीद होंगी जो कूफे में रहती है। मैं कूफे गया और मेमूना का दरयाफ़्त किया। लोगों ने बताया के वो तो एक दीवानी औरत है जो हमारी बकरियाँ चराने जाया करती है। और शाम को वापस आती है। मैंने चरागाह का पता लिया और शहर से बाहर जंगल में निकला। देखता क्या हूँ के मेमूना नमाज़ पढ़ रही है। और बकरियाँ और कुछ भेड़िये मिले जुले फिर रहे हैं। ना बकरियाँ भेड़ियों से डरती हैं और ना भेड़िये बकरियों पर हमला करते हैं। मैं वहाँ बैठ गया। इतने में मेमूना ने सलाम फैरते ही कहा। ऐ अब्दुल्लाह! वादा तो जन्नत में मिलने का है। यहाँ नहीं। मैंने कहा तुम्हें मेरा नाम किस ने बताया। वो बोली जिसने तुम्हें मेरा पता बताया। मैंने कहा ये तो बताओ के इन भेड़ियों ने बकरियों से सुलह कब से कर ली है? उसने कहा जब से मेमूना ने खुदा से सुलह कर ली है (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 73)

सबक़:- अल्लाह वाले इसरार के वाक़िफ होते हैं और उनके दम क़दम से भेड़ियों और बकरियों में भी अमन क़ायम रहता है। एक ये मिस्ल बनने वाले भी हैं। के उनके "दमक़दम" से बाप बेटे में, भाई भाई में, सास बहू में और घर भर में जंग जारी है।

हिकायत नम्बर(524) शराबी

हज़रत सरी सक़्ती रहमत-उल्लाह अलेह ने एक शराबी को देखा जो मदहोश ज़मीन पर गिरा हुआ था और अपने शराब आलूदा मुंह से अल्लाह अल्लाह कह रहा था, हज़रत सरी ने वहीं बैठ कर उसका मुंह पानी से धोया, और फ़रमाया। इस बेख़बर को क्या ख़बर? के नापाक मुंह से किस पाक ज़ात का नाम ले रहा है? मुंह धोकर आप चले गए। आपके जाने के बाद शराबी को होश आया तो लोगों ने उसे बताया के तुम्हारी बेहोशी के आलम में हज़रत सरी यहाँ आए थे और तुम्हारा मुंह धोकर गए हैं। शराबी ये सुनकर बड़े पशेमान और नादिम हुआ और रोने लगा और नफ़्स को मुखातिब करके बोला। बेशर्म! अब तू सरी भी तुझे इस हाल में देख गए हैं। खुदा से डर और

Scanned by CamScanner

आईंदा के लिए तौबा कर। रात को हज़रत सरी ने ख़्वाब में किसी कहने वाले को ये कहते सुना के ऐ सरी तुम ने शराबी का हमारी ख़ातिर मुंह धोया है। हम ने तुम्हारी ख़ातिर उसका दिल धोया। हज़रत सरी तहज्जुद के वक़्त मस्जिद में गए तो उसी शराबी को तहज्जुद पढ़ते हुए पाया। आपने उससे पूछा के तुम में ये इंक़िलाब कैसे आ गया। तो वो बोला। आप मुझ से क्यों पूछते हैं जब के अल्लाह ने आपको बता दिया है। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 169)

सबक़:- अल्लाह वालों की बर्कत व निसबत से काया पलट जाती है और मरदूद भी मक़्बूल बन जाता है।

हिकायत नम्बर(525) अल्लाह के इनाम

एक आरिफ़ ने एक मग़रूर शख़्स को घोड़े पर सवार देखकर अज़ राह ताज्जुब उससे पूछा के भई इतना क्यों अकड़ते हो। उसने कहा बादशाह का ख़ास मौतमिद आला मसाहिब और उसकी खलवत का मोनिस हूँ। वो सोता है तो पेहरा मैं देता हूँ। उसे भूक लगती है तो खाना मैं खिलाता हूँ। प्यास लगती है तो पानी मैं पिलाता हूँ और मुझे इस बात पर बड़ा नाज़ है के बादशाह हर रोज़ दिन में तीन मर्तबा मुझ प्यार से देखता है। आरिफ़ ने पूछा अगर तुम से किसी काम में ग़फ़्लत या ख़ता हो जाए तो क्या होता है। वो बोला कोड़े लगते हैं और मारा जाता हूँ। आरिफ़ ने फ़रमाया अगर ये बात है तो फिर फख्र व नाज़ तो मुझे तुम से बढ़कर करना चाहिए। क्योंके मैं जिस बादशाह का ग़ुलाम हूँ वो मुझे खुद खिलाता पिलाता है। सो जाऊँ तो मेरी हिफाज़त करता है। और तनहाई में मेरा मोनिस बन जाता है। और मुझ से कोई ग़फ़्लत या ख़ता हो जाए तो माफ कर देता है। और हर रोज़ दिन में तीन सौ साठ मर्तबा नज़रे रहमत से मुझे देखता है वो बादशाही ग़ुलाम इस बात से मुतास्सिर हुआ और घोड़े से उतर पड़ा। और कहा मुझे भी उस बादशाह का ग़ुलाम बना लीजिए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 440, जिल्द अव्वल)

सबक़:- जो इनामो इक्राम अल्लाह ने अपनी मख़्लूक़ पर किए हैं। ऐसे इनामो इक्राम कोई बड़े से बड़ा बादशाह भी नहीं कर सकता है।

हिकायत नम्बर(526) तुम्हारे मुंह से जो निकली वो बात हो के रही

सय्यद मोहम्मद यमनी रज़ी अल्लाहो अन्ह के एक साहबज़ादे थे जो मादरज़ाद वली थी। एक मर्तबा जब उम्र शरीफ चन्द साल की थी। बाहर

Scanned by CamScanner

तशरीफ़ लाए और अपने वालिद माजिद की जगह तशरीफ़ रखी। एक शख़्स से कहा लिख *फुलानुन फिल जन्नती* यानी फलाँ शख़्स जन्नत में है। यूंही नाम बनाम बहुत से शख़्स को लिखवाया। फिर फ़रमाया लिख *फुलानुन फिन्नारी* यानी फलाँ शख़्स दोज़ख़ में है। उन्होंने लिखने से हाथ रोक लिया। आपने फिर फ़रमाया। उन्होंने ना लिखा। आपने तीसरी बार फ़रमाया। उन्होंने लिखने से इंकार कर दिया। इस पर आपने फ़रमाया अन्ता फिन्नारी तू आग में है" वो घबराए हुए उनके वालिद के पास पहुँचे। हज़रत ने फ़रमाया *अन्ता फिन्नारी* कहा। या *अन्ता फी जहन्नम?* अर्ज़ की *अन्ता फिन्नार* फ़रमाया। हज़रत ने इर्शाद फ़रमाया। मैं उसके कहे को बदल नहीं सकता तुझे इख़्तियार है। दुनिया की आग पसंद कर या आख़िरत की। अर्ज़ की दुनिया की आग पसंद है। उनका जल कर इन्तिक़ाल हुआ। (आला हज़रत मुजद्दिद बरैलवी रहमत-उल्लाह अलेह के मलफ़ूज़ात, सफ़ा 18, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूलों के मुंह से जो बात निकल जाए *लो अक्सम अलल्लाह ला बर्राह* के मुताबिक के मुताबिक़ अल्लाह तआला वो बात पूरी फ़रमा देता है। लिहाज़ा उन अल्लाह वालों का हमेशा अदबो एहत्राम मलहूज़ रखना चाहिए और उनसे दुआएँ लेना चाहिए। और उनकी ख़फ़्गी से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(527) आंजोरा

हज़रत सरी सक़्ती रहमत-उल्लाह अलेह का रोज़ा था। ताक़ में ठंडा पानी होने के लिए आंजोरा रख दिया था। अस्र के मुराक़्बे में थे, हवारने बहिश्त ने यके बाद दीगरे सामने से गुज़रना शुरू किया। जो सामने आती उससे दरयाफ़्त फ़रमाते तो किस के लिए है। वो एक बन्दा खुदा का नाम लेती है। एक आई उससे पूछा। उसने कहा उसके लिए हूँ जो रोज़े में पानी ठंडा होने को ना रखे। फ़रमाया। अगर तू सच कहती है तो उस कोज़ह को गिरा दे। उसने गिरा दिया। उसकी आवाज़ से आँख खुल गई। देखा तो आंजोरा टूटा पड़ा था। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 86)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे आक़्बत की ख़ातिर दुनिया के ऐशो आराम को ख़ातिर में नहीं लाते।

हिकायत नम्बर(528) निसबत का लिहाज़

एक फक़ीर भीक माँगने वाला एक दुकान पर खड़ा कह रहा था। एक

Scanned by CamScanner

रुपा दे दो। वो ना देता था। फक़ीर ने कहा। रुपया देना है तो दे दो। वरना तेरी सारी दुकान उलट दूंगा।" इस थोड़ी देर में बहुत लोग जमा हो गए। इत्तिफाक़न एक साहबे दिल का गुज़र हुआ जिनके सब लोग मौतक़िद थे। उन्होंने दुकानदार से फ़रमाया। जल्द रुपया दे दो वरना दुकान उलट जाएगी। लोगों ने अर्ज़ की, हज़रत! ये बे शरअे जाहिल क्या कर सकता है? फ़रमाया मैंने इस फक़ीर के बातिन पर नज़र डाली के कुछ है भी? मालूम हुआ बिलकुल खाली है। फिर उसके शेख को देखा। उसे भी खाली पाया। उसके शेख के शेख को देखा उन्हें अहले अल्लाह से पाया और देखा वो मुंतज़िर खड़े हैं के कब ज़बान से निकले और उसकी दुकान को उलट दूं। (अलमलफूज़, सफ़ा 15, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह वालों के सिलसिला नसब में जो बड़ा भी आ जाए उस निसबत की बर्कत से वो मुसतफीद ज़रूर होता है। पस उन अल्लाह वालों से ताल्लुक़ पैदा करना चाहिए और उनकी ग़ुलामी इख़्तियार करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(529) बूढ़ा ग़ुलाम

एक साहब सालेहीन से थे। बहुत ज़ईफ हुए। पंजगाना नमाज़ की हाज़री ना छोड़ते। एक शब इशा की हाज़री में गिर पड़े चोट आई। बाद नमाज़ अर्ज़ की। इलाही अब मैं बहुत ज़ईफ हुआ। बादशाह अपने बूढ़े ग़ुलामों को खिदमत से आज़ाद कर देते हैं। मुझे आज़ाद फ़रमा। उनकी दुआ क़बूल हुई। मगर यूं के सुबह उठे तो मजनून थे। यानी जब तक अक़्ल तकलीफी बाक़ी है नमाज़ माफ नहीं। (मलफूज़ात, सफ़ा 82, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे जवानी और बूढ़ापे हर हाल में फ़रायज़ इलाही से ग़ाफिल नहीं रहते। और ये भी मालूम हुआ के जब तक होश क़ायम है नमाज़ का पढ़ना फर्ज़ है और जो शख़्स चंगा भला होकर नमाज़ ना पढ़े वो बड़ा ही पागल है।

हिकायत नम्बर(530) जिन्दा पीर

हज़रत सय्यदी अहमद जाम ज़िन्दा पीर रज़ी अल्लाहो अन्ह एक मर्तबा तशरीफ़ लिए जाते थे। राह में एक हाथी मरा पड़ा था। लोगों का मजमआ था आप तशरीफ़ ले गए। फ़रमाया क्या है? अर्ज़ की हाथी मर गया है। आपने फ़रमाया। उसकी सूंड भी वैसी ही। आँखें भी वैसी ही हैं हाथ भी वैसे हैं। पैर भी वैसे ही हैं। फिर मर कैसे गया? ये फ़रमाना था के हाथी फौरन

Scanned by CamScanner

ज़िन्दा हो गया। जब से उनका लक़ब ज़िन्दा पीर हो गया। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 16, जिल्द 1)

सबक़:- उन अल्लाह वालों की ज़बान में वो असर व तासीर होती है के उसकी बदौलत मुर्दों को ज़िन्दगी मिल जाती है। फिर वो लोग जो खुद ही मुर्दा हों इन ज़िन्दा बल्के ज़िन्दा करने वालों से दावा बराबरी कैसे कर सकते हैं?

हिकायत नम्बर(531) तीन क़लंदर

तीन क़लंदरों ने निज़ाम-उल-हक़ वालदैन महबूबे इलाही क़ुद्स सरहू से खाना माँगा खुद्दाम को लाने का हुक्म दिया। ख़ादिम ने जो उस वक़्त मौजूद था उनके सामने रखा। उनमें से एक ने वो खाना उठा कर फैंक दिया और कहा अच्छा खाना लाओ। हज़रत ने इस नाशायस्ता हरकत का कुछ खयाल ना फ़रभाया। खुद्दाम को इससे अच्छा खाना लाने का हुक्म फ़रमाया। ख़ादिम ने पहले से अच्छा लाया। उन्होंने फिर फैंक दिया। और उससे भी अच्छा माँगा। हज़रत ने और अच्छे का हुक्म दिया। ग़र्ज़ उन्होंने इस बार भी फैंक दिया और इससे अच्छा माँगा इस पर क़लंदर को अपने पास बुलाया और कान में इर्शाद फ़रमाया के ये खाना इस मुर्दार बैल से तो अच्छा था जो तुम ने रास्ते में खाया था। ये सुनते ही क़लंदर का हाल मुतग़य्यर हुआ। राह में तीनों फाक़ों के बाद एक मरा हुआ बैल जिस पर कीड़े पड़े हुए थे। मिला था। उसका गोश्त खाकर आए थे। क़लंदर हुज़ूर के क़दमों पर गिर पड़ा। हुज़ूर ने उसका सर उठाकर अपने सीने से लगा लिया। और जो कुछ अता फ़रमाना था अता फ़रमा दिया। (मलफ़ूज़ात आला हज़रत, सफ़ा 12, जिल्द 1)

सबक़:- बुज़ुर्गों को हर बात का इल्म होता है और वो अपने इल्म का इज़हार वक़्त पर और ज़रूरत के मौक़े पर करते हैं।

हिकायत नम्बर(532) ख़्वाजा तौरे बलिहारी जाऊँ

भागल पुर से एक साहब हर साल अजमेर शरीफ हाज़िर हुआ करते थे। एक मुनकिर औलिया रईस से मुलाक़ात हुई। उसने कहा। मियाँ हर साल कहाँ जाया करते हो। बेकार इतना रुपया सर्फ करते हो। उन्होंने कहा चलो और इंसाफ की आँखों से देखो। फिर तुम्हें इख़्तियार है। खैर एक साल वो साथ में आया देखा एक फक़ीर सोंटा लिए रोज़ा शरीफ का तवाफ कर रहा है। और ये सदा लगा रहा है ख़्वाजा पाँच रुपये लूंगा और एक घंटा के अन्दर लूंगा

Scanned by CamScanner

और एक ही शख़्स से लूंगा। जब इस मुनकिर औलिया रईस को खयाल हुआ के अब बहुत वक़्त गुज़र गया। एक घंटा हो गया होगा और अब तक किसी ने उसे कुछ ना दिया। जब से पाँच रुपये निकाल कर उसके हाथ पर रखे और कहा। लो। मियाँ तुम ख़्वाजा से माँग रहे थे। भाई ख़्वाजा क्या देंगे लो हम देते हैं फक़ीर ने वो रुपये जैब में रखे और एक चक्कर लगा कर ज़ोर से कहा।

ख़्वाजा तोरे बलिहारी जाऊँ। दिलवाए भी कैसे....मुनकिर से।(मलफूज़ात, सफ़ा 41, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह वाले ऐसा वसी इख़्तियार रखते हैं के मुनकिरों की जैब से भी उन्हें दिलवालने का तसर्रूफ हासिल है।

दर फैज़ हक़ बन्द जब था ना अब कुछ
फक़ीरों की झोली में अब भी है सब कुछ
ये अल्लाह वाले हैं देते हैं सब कुछ
मगर चाहिए उनसे लेने का ढब कुछ

हिकायत नम्बर(533) दिल की बात

एक साहब औलिया इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन में से थे। आपकी ख़िदमत में बादशाहे वक़्त क़दम बोसी के लिए हाज़िर हुआ। हुज़ूर के पास कुछ सेब नज़्र में आए थे। हुज़ूर ने एक सेब दिया। और कहा खाओ अर्ज़ की हुज़ूर भी नोश फ़रमायें आपने भी खाए और बदाशाह ने भी। उस वक़्त बादशाह के दिल में खयाल आया के ये जो सब में बड़ा खुश रंग सेब है अगर अपने हाथ से उठा कर देंगे। तो जान लूंगा के ये वली हैं। आपने वही सेब उठा कर फ़रमाया। हम मिस्र में गए थे वहाँ एक जलसा बड़ा भारी था। देखा के एक शख़्स है। उसके पास एक गधा है उसकी आँखों पर पट्टी बंधी है। एक चीज़ एक शख़्स की दूसरे के पास रख दी जाती है। उस गधे से पूछा जाता है। गधा सारी मजलिस में दौरा करता है। जिसके पास होती है सामने जाकर सर टेक देता है। ये हिकायत हम ने इसलिए बयान की के अगर ये सेब हम न दें तो वली ही नहीं और अगर दे दें तो इस गधे से बढ़कर क्या कमाल किया। ये फ़रमा कर सेब बादशाह की तरफ़ फैंक दिया (मलफूज़ात, सफ़ा 10, जिल्द 4)

सबक़:- अल्लाह वाले दिलों के भेदों और छुपी बातों को जान लेते हैं। और ये भी मालूम हुआ के दिल की बातें जान लेना उन अल्लाह वालों के सामने कोई ऐसा बड़ा कमाल नहीं और वो इस बात को एक मामूली बात कहते हैं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(534) रूबाई का जवाब

अमीर खुसरो के वालिद अपने दो बेटों को लेकर ख़्वाजा निज़ामउद्दीद औलिया का मुरीद होने के लिए हाज़िर हुए। लकिन जब अन्दर ख़ानक़ाह में घुसने लगे तो अमीर खुसरो ने जो छोटे बेटे थे, कहा मैं अंधाधुंद मुरीद बनना नहीं चाहता। आप और भाई तशरीफ़ ले जाइये और मुझे दरवाज़े पर ही छोड़िये। चुनाँचे वो अन्दर चले गए। और अमीर खुसरो ने दरवाज़े पर बैठे बैठे ये रूबाई तसनीफ की।

तो आँ शाहे के बर एवाने क़सरत
कबूतर गरनशीद बाज़ गर्दो
ग़रीबे मस्तमंदे बर दरे आमद
बयायद अंदुरूं या बाज़ गर्दो

"यानी ऐ ख़्वाजा निज़ामउद्दीन! तू वो बादशाह है के तेरे क़स्र के ऊपर अगर कबूतर बैठे तो बाज़ बन जाए। एक मुसाफिर और हाजतमंद तेरे दर पै आया है उसके लिए क्या हुक्म है। अन्दर चला आए या वापस जाए।"

इस रूबाई को कहकर अमीर खुसरो ने सोचना शुरू किया। के अगर ख़्वाजा साहब बातिन हैं तो मुझे जवाब देंगे तो फिर मैं उनका मुरीद हो जाऊँगा। के इतने में ख़्वाजा निज़ामउद्दीन औलिया ने अपने एक ख़ादिम से फ़रमाया के बाहर एक तुर्क बच्चा बैठा है उसे जाकर ये शैर सुना दो...

बयायद अंदरून मर्द हक़ीक़त
के बामा यक नफ़्स हम राज़ गर्दो
अगर अबला बूद आँ मर्दे नादाँ
अज़ाँ रा है के आमद बाज़ गर्दो

"यानी खुसरो मैदाने हक़ीक़त का मर्द है तो अन्दर आ जाए ताके थोड़ी देर हमारा हमराज़ बन सके। और अगर वो मर्दे नादान अबला है तो जिधर से आया है उधर चल दे।"

अमीर खुसरो ये सुनकर हज़रत ख़्वाजा साहब की ख़िदमत में हाज़िर हो गए। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 224)

सबक़:- अल्लाह वाले साहबे बातिन होते हैं और दिली इसरार रमूज़ पर उन्हें आगाही हासिल होती है। पस उन अल्लाह वालों के मुतअल्लिक़ कोई बदगुनामी दिल में ना रखनी चाहिए।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(535) खयानत

वाली-ए-लाहोर ने एक मर्तबा ने एक मर्तबा हज़रत बाबा फ़रीदउद्दीन शकर गंज रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में सौ दीनार आपके दोस्त शहाबउद्दीन ग़ज़नवी के हाथ भेज। शहाबउद्ददी ने पचास दीनार अपने पास रख लिए और पचास हज़रत की नज़्र किए। आपने क़बूल फ़रमा कर फ़रमाया। शहाबउद्दीन! खूब बिरादराना निस्फ़न निस्फ़ी तक़सीम की। दुरवैशों के लिए ये बात मुनासिब नहीं। शहाबुउद्दीन बड़ा शरमिंदा हुआ और बक़िया दीनार पेश किए। आपने तमाम दीनार उनको दे दिए। फ़रमाया ये बात सिर्फ इसलिए की गई के खयानत बड़ा गुनाह है। खायन को कोई इबादत क़बूल नहीं। शहाबउद्दीन ने दोबारा आपकी बैत की। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 224)

सबक़: सच्चे मुसलमान कभी खयानत नहीं करते और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों पर हर बात अयाँ हो जाती है।

हिकायत नम्बर(536) गिरफ़्तारी

हज़रत ख़्वाजा अजमेरी अलेह अर्रहमा विलायते हिन्द मिलने के बाद कुछ रोज़ देहली में ठहरे। उस वक़्त शाहान हनूद में से राय पथूरा हकूमत करता था। एक मर्तबा राय पथूरा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ के एक मुसलमान ख़ादिम पर गुस्सा हुआ और उसे बे वजह तकलीफ दी। खादिम ने हुज़ूर ग़रीब नवाज़ से शिकायत की। आपने राय पथूरा को एक ख़त लिखा और हुक्म दिया के आईंदा मेरे ख़ादिम को तकलीफ ना दी जाए। लेकिन बदबख़्त पथूरा ने उसकी परवाह की। बल्के गुसताखी से कहने लगा के ये मुसाफिर जब से यहाँ आया है। ग़ैब की ख़बरें देता है। मगर मुझे इस शख़्स की कुछ परवाह नहीं। हुज़ूर ग़रीब नवाज़ ने जब उसका ये रऊनत आमेज़ जवाब सुना तो अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाया।

"हम ने राय पथूरा को ज़िन्दा पकड़ लिया और पकड़कर लश्करे इस्लाम के हवाले कर दिया"

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ज़बान से जो निकल गया वही होकर रहा। लश्करे इस्लाम शहर ग़ज़नी से बसर कर्दगी सुलतान शहाबउद्दीन ग़ौरी दफअतन आ पहुँचा और लश्कर हनूद को लड़ाई में शिकस्त दी। (इक़्तिबास-उल-अनवार, सफ़ा 128)

Scanned by CamScanner

सबक़:- अल्लाह वालों की ज़बान से जो बात निकल जाए वो होकर रहती है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों पर ग़ैब जानने की फबतियाँ कहना और उनसे बे परवाह रहना मुसलमानों का काम नहीं। पस उन अल्लाह वालों को सताने के दरपे ना होना चाहिए।

हिकायत नम्बर(537) एक सय्यद बुज़ुर्ग

एक बुज़ुर्ग सय्यद साहब के पास उलमाऐ बाकमाल के हर एक उनमें से एक एक फन में माहिर था। हाज़िर हुए और अर्ज़ उनकी आपका इम्तिहान लेना था। क्योंके मश्हूर था के सय्यद साहब उलूम दरसिया में कोई साहबे कमाल नहीं। ये उलमा आपको दिक़ करने की ग़र्ज़ से हाज़िर हुए थे। ग़र्ज़ उन्होंने आपसे मुखतलिफ फिनून के कुछ सवालात किए। सय्यद साहब कभी दाहिनी तरफ़ देखकर जवाब देते थे और कभी बायीं तरफ़। जब उलमा चले गए तो किसी ने पूछा के आप दायीं तरफ़ देखकर क्यों जवाब देते थे। फ़रमाया। जब ये उलमा आए तो मैंने हक़ तआला से दुआ की। के एक अल्लाह मेरी सुबकी ना हो। अल्लाह तआला ने अबु हनीफा की रूह को मेरी दाहिनी तरफ़ और शेख बू अली सीना की रूह को बायें जानिब हाज़िर कर दिया। जब उलमा मनक़ूलात का वाल करते। मैं हज़रत अबु हनीफा से दरयाफ़्त करके जवाब दे देता था। और माक़ूलात का सवाल करते तो शेख से दरयाफ़्त करके बयान कर देता था। (देवबंदी हज़रात के हकीम-उल-उम्मत मोलवी अशरफ़ अली साहब थानवी रिसाला अलबक़ा अप्रेल 1950)

सबक़:- मोलवी अशरफ़ अली साहब थानवी की भी इस तहरीर से साबित हो गया के अल्लाह वाले विसाल के बाद भी मुश्किल के वक़्त इम्दाद करते हैं। फिर जो सारे वलियों और नबियों के भी सरदार हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं उनके इम्दाद फ़रमाने और बाद अज़ विसाल भी मुश्किल कुशा होने का इंकार करना क्यों बेख़बरी और नादानी और अदावत पर महमूल ना होगा।

हिकायत नम्बर(538) अब्दाल

शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमत-उल्लाह अलेह से किसी शेख़ ने शिकायत की के हुज़ूर आज कल देहली का इन्तिज़ाम बहुत सुस्त है उसकी वजह-क्या है? फ़रमाया आज कल यहाँ के साहबे ख़िदम (अब्दाल देहली) सुस्त हैं। पूछा के कौन साहब हैं शाह साहब ने कहा के एक कुंजड़ा बाज़ार में ख़रबूज़े

Scanned by CamScanner

फ़रोख़्त कर रहा है। वो आज कल साहबे खिदमत है। उसके इम्तिहान के लिए आ गए। और इम्तिहान इस तरह किया के खरबूज़े काट काट कर और चख चख कर सब नापसंद करके टोकरे में रख दिए। वो कुछ नहीं बोले। चन्द रोज़ के बाद देखा के इन्तिज़ाम बिलकुल दुरूस्त है। उसी शख़्स ने फिर पूछा के आज कल कौन हैं? शाह साहब ने फ़रमाया के एक सक़्क़ा है जो चाँदनी चौक में पानी पिलाता है। मगर एक प्यास की एक छिदाम लेता है। ये छिदाम ले गए और उनसे पानी माँगा। उन्होंने पानी दिया। उसने पानी गिरा दिया। के इसमें तिंका है। और दूसरा कटोरा माँगा। उन्होंने पूछा के और छिदाम है? उसने कहा के नहीं। उन्होंने एक धूल रसीद किया और कहा खरबूज़े वाला समझा होगा। (मोलवी अशरफ़ अली साहब की किताब तादीब अलमअसियत, सफ़ा 12)

सबक़:- अल्लाह वाले रूहानी हाकिम होते हैं और ये भी मालूम हुआ के अगली पिछली सब बातें उन अल्लाह वालों के इल्म में होती हैं और इस हक़ीक़त पर मौलवी अशरफ़ अली अली साहब की भी तहरीर शाहिद है।

हिकायत नम्बर(539) अगर दारिद बराए दोस्त दारिद

मौलाना जामी अलेह अर्रहमत पीर की तलाश में हज़रत ख़्वाजा उबैदउल्लाह अहरार के यहाँ पहुँचे तो ख़्वाजा साहब के यहाँ बड़ा ठाठ था। हर तरह की नअेमतें दुनिया की मौजूद थीं। मौलाना जामी आकर बहुत पछतावे और जोश में आकर ख़्वाजा साहब के सामने ही बे इख़्तियार मुंह से निकला.... ना मर्दअस्त आँके दुनिया दोस्त दारिद

और ये कहकर बहुत हसरत व अफसोस के साथ किसी मस्जिद में जाकर लेट गए। ख़्वाब में देखा के मैदाने हश्र क़ायम है और मौलाना जामी किसी क़र्ज़ ख़्वाह के तक़ाज़े से सख़्त परेशान हैं के एक जानिब से हज़रत ख़्वाजा साहब बातज़क व एहतिशाम तशरीफ़ लाए। और फ़रमाया। दुरवैश को क्यों परेशान किया"। हम ने जो ख़ज़ाना यहाँ जमा किया है। उसमें से उसे क़र्ज़ दे दो। उसके बाद आँख खुल गई। उस वक़्त ख़्वाजा साहब उसी मस्जिद में मशरीफ ला रहे थे। मौलाना जामी ने फौरन हाज़िर होकर पाँव पर सर रख दिया और अर्ज़ किया। हुज़ूर! मेरी गुसताख़ी माफ कीजिए। ख़्वाजा साहब ने फ़रमाया वो मिसरा किस तरह पढ़ा था। अर्ज़ किया हुज़ूर वो तो ग़लती थी। फ़रमाया। उसको हम फिर सुनना चाहते हैं। मौलाना ने फ़रमाया मेरे मुंह से यहाँ के सामान को देखकर ये निकला था। ना मर्दअस्त आँके

Scanned by CamScanner

दुनिया दोस्त दारिद

फरमाया के ये सही है। मगर मिसरा ना तमाम है उसके साथ ये मिसरा और मिला दो..... अगर दारिद बराऐ दोस्त दारिद (मौलवी अशरफ़ अली साहब की किताब दावत अब्दीयत)

सबक़:- अल्लाह वाले मुश्किल के वक़्त काम आते हैं। और ये भी मालूम हुआ के जो माल मोहताजों की मदद और दीन की ख़िदमत के लिए जमा किया जाए वो माल दुनिया नहीं बल्के सब दीन है।

हिकायत नम्बर(540) जनाज़ा

हज़रत सुलतान औलिया सुलतान निज़ामउद्दीन क़ुद्स सरहू की वफात हुई तो उनके खलीफा ने जनाज़े के साथ ये शैर पढ़े।

सख़्त बे मोहरी के बे मामी रवी
सरो सीमीना बसहरा मै रवी
ऐ तमाशा गाह आलम रूवे तो
तो कजा बहर तमाशा मी रवी

लिखा है के कफन में से हाथ ऊँचा हो गया। लोगों उनको खामोश कर दिया। (मोलवी अशरफ़ अली साहब का वाज़ अलबक़ी, सफ़ा 21)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह वाले विसाल के बाद भी ज़िन्दा होते हैं। फिर अगर कोई शख़्स खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ही को हयातउन्नबी ना माने तो वो किस क़द्र बदबख़्त और मुर्दा दिल है।

हिकायत नम्बर(541) ग़ौसे आज़म

हज़रत ग़ौसे आज़म रहमत-उल्लाह अलेह के हमअस्र एक बुज़ुर्ग हैं। हज़रत सय्यद अहमद कबीर रफ़ाई, ये बहुत बड़े औलिया कबार में से हैं। मगर हज़रत ग़ौसे आज़म रहमत-उल्लाह अलेह के बराबर मश्हूर नहीं। एक मर्तबा हज़रत ग़ौसे आज़म रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक शख़्स मुरीद होने को आया। फ़रमाया। भई! तेरी पैशानी से शिक़ावते नुमायाँ हैं। तुझ को क्या मुरीद करूं। ये शख़्स सय्यद अहदम कबीर रफ़ाई रहमत-उल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। सूरत देखकर फ़रमाया। आओ भई! मैं खुद भी ऐसा हूँ" (मौलवी अशरफ़ अली साहब की किताब-उल-अज़ाफात अलयोमिया। मनदर्जा अलनूर थाना भवन रजब-उल-मुजर्रिब, सफ़ा 1351हि०)

सबक़:- ये सारी इबाद मौलवी अशरफ़ अली साहब की अपनी है

Scanned by CamScanner

और इस मौलवी साहब ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म को "ग़ौसे आज़म" लिखा है और "ग़ौस" का मानी है। "फ़रयादरस" (सराह, 122) और आजम् का मानी है "बहुत बड़ा" तो गोया मौलवी अशरफ़ अली साहब भी हुज़ूर ग़ौसे आज़म को "बहुत बड़ा फ़रयादरस" तसलीम करते हैं। फिर अगर कोई शख़्स अल्लाह के मक़्बूल बन्दों से फ़रयाद करने और उनको मुश्किल कुशा मानने को शिर्क बताए तो वो मौलवी अशरफ़ अली साहब के खिलाफ भी हुआ या नहीं?

नवाँ बाब

खुलफा-ए-सलातीन

हिकायत नम्बर(542) सवारी का घोड़ा

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाह अन्ह जब ख़लीफ मुक़र्रर हुए, तो दारोग़ा असतबल आपके लिए ख़ास सवारी का घोड़ा लाया। तो आपने फ़रमाया। के ये क्या है बताया गया। के ये ख़लीफ-ए-वक़्त के लिए सवारी का ख़ास घोड़ा है। आपने फ़रमाया के मेरा अपना जो खच्चर है वही लाओ। मैं इस ख़ास घोड़े पर ना बैठूंगा। (तारीख़-उल-खुलफाअल इमाम सयूती रहमत-उल्लाह अलेह, सफ़ा 160)

सबक़:- हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बड़े ही खुदा तरस, आदिल और रिआया परवर ख़लीफा थे, और आपकी सीरत हमारे लिए एक मशअले राह है इस हिकायत से मालूम हुआ के इंसान को किसी ओहदा मिलने से अपनी पहली हालत भुला ना देनी चाहिए।

हिकायत नम्बर(543) बैश क़ीमत मोती

हज़रत उमर अब्दुल अज़ीज़ की बीवी फातिमा बिन्ते अब्दुल मलिक के पास एक बैश क़ीमत मोती था, जो उनके वालिद अब्दुल मलिक ने उनको दिया था, एक रोज़ हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने अपनी बीवी से कहा के तुम अपना ज़ैवर या तो बैत-उल-माल में दे दो, या मुझे ना पसंद करो। ताके मैं तुम्हें अलेहदा कर दूं। क्योंके मुझ से ये नहीं देखा जाता के मैं और तुम्हारा ज़ैवर एक घर में हो। आपकी ज़ोजा मोहत्रमा ने जवाब दिया के मैं आपको तरजीह देती हूँ। आप मेरा ताम ज़ैवर बैत-उल-माल में दाखिल कर

Scanned by CamScanner

दीजिए। चुनाँचे आपने उनका तमाम ज़ैवर बैत-उल-माल में जमा कर दिया। और जब आपका इन्तिक़ाल हो गया। और यज़ीद बिन अब्दुल मलिक तख़्त पर बैठा। तो उसने आपकी हरम मोहत्रम से कहा के आगर आप चाहें तो आपका सारा ज़ैवर बैत-उल-माल से वापस दे दिया जाए। आपने जवाब दिया के जो चीज़ मैं खुशी से उनकी हयात में दे चुकी हूँ। वो उनके इन्तिक़ाल के बाद वापस ना लूंगी। (तारीख-उल-ख़ुलफा सफ़ा 122)

सबक़:- खुदा तरस हाकिम दुनयवी माल से कभी मोहब्बत नहीं करते और वो हर हाल में अपनी रिआया के नफे व फायदे को मलहूज़ रखते हैं, ये भी मालूम हुआ के जो लोग "बैत-उल-माल" का मानी "घर का माल" समझते हैं वो बड़े ही नाअक़्बत अंदेश हैं।

हिकायत नम्बर(544) भेड़िये और बकरियाँ

हसन क़साब ने एक दफा देखा के भेड़िये और बकरियाँ एक साथ फिर रहे और चर हैं। ये अजीब मंज़र देखा वो बोला सुबहान अल्लाह! भेड़िया बकरियों के पास हो और फिर बकरियों का कोई नुक़्सान ना हो। ये अजीब बात है। चरवाहे ने ये बात सुनी तो कहने लगा। *इज़ा सुलह अलरास फलेसा अलल जस्द बास*

यानी जब सर में इस्लाह हो तो फिर बदन को भी कोई किसी क़िस्म का नुक़्सान व ख़तरा नहीं होता। मतलब ये के हमारा हाकिम नेक और आदिल है, इसलिए रिआया भी अमन व आफियत में है। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 162)

सबक़:- हाकिम के अद्ल व इंसाफ से मुल्क भर में अमन व आफियत रहती है।

हिकायत नम्बर(545) बारे हकूमत

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ जब ख़लीफ मुक़र्रर हुए तो आप अपने घर जाकर मुसल्ले पर बैठ कर रोने लगे हत्ता के आपकी तमाम दाढ़ी आँसूओं से तर हो गई। आपकी बीवी ने आपसे दरयाफ़्त किया। के आप रोते क्यों हैं? तो फ़रमाया मेरी गर्दन में उम्मत मोहम्मदिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का कुल बोझ डाल दिया गया है। मैं अपनी रिआया के भूके, नंगे फक़ीर, मरीज़ और मज़लूम व मोहताज, क़ैदी व मुसाफिर, बूढ़े और बच्चे और अयाल दार ग़र्ज़ तमाम मुसीबत ज़दों की ख़बर गीरी के मुतअल्लिक़

Scanned by CamScanner

ग़ौर करता हूँ और डरता हूँ के कहीं उनके मुतअल्लिक़ खुदाऐ तआला मुझ से बाज़ पुर्स ना कर बैठे और मुझ से जवाब ना बन आए। उसी फिक्र में रो रहा हूँ। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 164)

सबक़:- हकूमत एक बहुत बड़ा बोझ और ज़िम्मेदारी का काम है खुदा तरस हाकिम मसनदे हकूमत पर बैठ कर अपने भी हाकिम खुदा तआला को भूल नहीं जाते बल्के उसकी बाज़ पुर्स से डरते रहते हैं। और रिआया के हर फर्द का खयाल रखते हैं।

हिकायत नम्बर(546) अपना काम आप

रिजाह बिन हयात कहते हैं। के एक रात मैं किसी काम के लिए हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के पास गया और रात के काफी हिस्से तक वहाँ बैठा रहा, इतने में चिराग़ बुझ गया। और आपका ख़ादिम आपके बराबर सो रहा था। मैंने कहा के मैं उसे जगा दूं? ताके ये चिराग़ जला दे। और आपने फ़रमाया, कोई ज़रूरत नहीं। मैंने कहा। तो मैं जला दूं? आपने फ़रमाया के मेहमान से काम लेना मुरव्वत के खिलाफ है। मैं खुद जलाता हूँ। चुनाँचे आप खुद उठे और चिराग़ में तेल डाल कर उसको रोशन कर दिया। फिर आप मेरे पास आए और फ़रमाने लगे क मैं खुद उठा और चिराग़ जला लिया। और वही उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बाक़ी रहा जो पहले था। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 166)

सबक़:- पहले नेक दिल लोग बावजूद बहुत बड़े ओहदे पर फायज़ हो जाने के भी अपना काम आप कर लिया करते थे ये नहीं के जितना ऊँचा हो जाए उतना ही अपाहज बन जाए। खुद सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम भी जो सारे ऊँचों से ऊँचे हैं अपना काम आप कर लिया करते थे। पस आज हमें भी अपना काम आप करने की आदत डालना चाहिए। और हर काम के लिए नौकर ही रखने की आदत ना रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर(547) क़िस्सा

ख़ालिद बिन सफवान एक रोज़ हश्शाम बिन अब्दुल मलिक के यहाँ मेहमान हुए ख़लीफा हश्शाम ने ख़ालिद से कहा के कोई किस्सा सुनाओ। ख़ालिद ने कहा सुनिए।

एक ज़ी इल्म और साहिबे इक़्बाल बादशाह खोरलिक़ की तरफ़ सेर के लिए निकला उसने रास्ते में अपने हमराईयों से पूछा के बताओ जिस

Scanned by CamScanner

क़द्र मालो मताअ मेरे पास है, उतना कभी किसी बादशाह के पास हुआ है? एक पुराने ज़माने का बूढ़ा भी साथ था। वो कहने लगा के अगर इजाज़त हो तो इस बात का जवाब मैं अर्ज़ करूं। बादशाह ने कहा। बहुत अच्छा तुम ही बताओ। बूढ़े ने कहा। पहले आप ये बतायें के जो कुछ आपके पास है क्या उसमें कमी ना आएगी। और क्या ये सारा मालो मताअ आपको विरसे में नहीं मिला? और क्या आपके बाद ये मालो मताअ आपके जानशीन को विरसे में ना मिलेगा?

बादशाह ने जवाब दिया के ये तीनों बातें वाक़ै होंगी, बूढ़े ने कहा। तो फिर बड़ा ताज्जुब है के आप ऐसी चीज़ से ग़रूर में आ गए। जो कम भी होने वाली है। और जिसका ज़्यादा हिस्सा आपके पास से दूसरे के पास मुंतक़िल होने वाला है। और जो कुछ आपने खर्च कर लिया है। उसका हिसाब होने वाला है। बादशाह ये सुनकर कांप उठा और बोला के कहाँ चला जाऊँ और करूं? बूढ़े ने कहा के अगर बादशाही करना चाहता है तो अपने ज़ाहिर व बातिन में अल्लाह तआला की इताअत व फ़रमाँबर्दारी कर। वरना तख़्तो ताज छोड़ और गडरी पहन कर रब की इताअत और फ़रमाँबर्दारी कर। बादशाह ने कहा के मैं रात को सोचूंगा और सुबह जो राय हुई बताऊँगा। चुनाँचे सुबह हुई तो बादशाह ने कहा के मैं बादशाहत छोड़ कर पहाड़ और चटयल मैदान इख़्तार करता हूँ। और बजाए पोशाक शाही के गद्दी पहनता हूँ। तुम भी मेरे साथ रहो। चुनाँचे उन दोनों ने एक पहाड़ को मिसकिन बना लिया। और मरते दम तक वहीं रहे।"

ये क़िस्सा सुनकर हश्शाम इतना रोया के उसकी दाढ़ी आँसूओं से तर हो गई। और अपने दोनों बेटों के काम सपुर्द करके गोशा नशीनी इख़्तियार कर ली। और अपने महल से नहीं निकला। ये हालत देखकर अराकीने सलतनत ने ख़ालिद बिन सफवान से कहा के तुम ने ये क्या कर दिया। और अमीर-उल-मोमिनीन की राहत व लज़्ज़त को गंवा दिया। ख़ालिद ने कहा के मैं मअज़ूर हूँ। मैंने अपने अल्लाह से अहद कर लिया है के जब कभी किसी बादशाह से मिलूंगा तो उसे ख़ुदा तआला से ज़रूर डराऊँगा। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 173)

सबक़:- दुनयवी मालो मताअ और हकूमत पर कभी मग़रूर ना होना चाहिए ये दुनिया किसी के हाथ से मिलती है। और किसी के हाथ में चली जाती है। उसे बक़ा व क़रार नहीं। और जितनी देर ये हमारे पास रहेगी उतना ही हिसाब भी देना पड़ेगा।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(548) ताऊन

ख़लीफा मनसूर ने एक मर्तबा मुल्के शाम में एक बदवी से कहा के शुक्र करो के खुदा तआला ने हमारी हकूमत के दौर में तुम लोगों के सर से ताऊन का मर्ज़ उठा लिया है। बदवी ने जवाब दिया। के तुम्हारी हकूमत और ताऊन दोनों बराबर हैं। खुदा तआला का शुक्र है के उसने दोनों को इकट्ठा हम पर मुसल्लत नहीं कर दिया। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 184)

सबक़:- ज़ालिम हकूमत रिआया के हक़ में मर्ज़ ताऊन से कम नहीं होती।

हिकायत नम्बर(549) मर्दे खुदा

ख़लीफा मनसूर ने एक रोज़ हज़रत उमरो बिन उबैद को बुला भेजा वो तशरीफ़ लाए। तो मनसूर ने उन्हें कुछ माल देना चाहा। उन्होंने क़बूल करने से इंकार फ़रमा दिया। मनसूर ने क़सम खाकर कहा के आपको ये माल लेना ही पड़ेगा। हज़रत उमरो बिन उबैद ने भी क़सम खा कर फ़रमाया के मैं हरगिज़ ना लूंगा। मनसूर का बेटा मेहदी जो पास ही बैठा था। कहने लगा के अमीर-उल-मोमिनीन ने क़सम खा ली है। आप ये माल ले लें आपने फ़रमाया। क़सम मैंने भी खा ली है। अमीर-उल-मोमिनीन को क़सम तोड़ने का कुफ़्फारा अदा कर देना मेरी निसबत ज़्यादा आसान है। मनसूर ने कहा अच्छा कोई हाजत बयान कीजिए। आपने फ़रमाया। मेरी हाजत ये है के जब तक मैं खुद यहाँ ना आऊँ। मुझे बुलवाया ना जाए। और जब तक मैं खुद आप से कुछ ना माँगूं। मुझे कुछ ना दिया जाए। मनसूर ने कहा। क्या आपको इल्म है के मैंने मेहदी को अपना वली अहद कर दिया है। आपने फ़रमाया के तुम्हें मौत आएगी। तो तुम दूसरी बातों की तरफ़ इस तरह मशग़ूल हो जाओगे के तुम्हें इस बात का खयाल तक भी ना आएगा। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 184)

सबक़:- मर्दे खुदा बड़े से बड़े हाकिम के सामने भी जाकर मरऊब नहीं होते। और वो अपनी हक़ परस्ती की बदौलत अहले दुनिया और दुनिया से बे नियाज़ होते हैं।

हिकायत नम्बर(550) ज़नदीक़

अबु मुआविया ज़रीर फ़रमाते है। के मैंने एक रोज़ ख़लीफा हारून रशीद के दरबार में रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ये हदीस सुनाई के "हज़रत आदम और हज़रत मूसा अलेहिमा अस्सलाम की बेहस हुई"। इत्तिफाक़ से एक मौअज़्ज़िज़ शख़्स वहाँ बैठा था जिसके मुंह

Scanned by CamScanner

से ये बात निकल गई के इन दोनों पैग़म्बरों की मुलाक़ात कहाँ हो गई थी? हारून रशीद को इस पर इतना ग़ुस्सा आया के फौरन हुक्म दिया के ऐसे शख़्स की सज़ा तलवार है। ज़ंदीक़ हदीस रसूल अल्लाह सल-लल्लो तआला अलेह व सल्लम पे तान करता है। मैंने अमीर-उल-मोमिनीन से कहा के उससे नादानिस्ता तौर ये बात निकल गई है। ये बात कहकर बमुश्किल हारून रशीद का ग़ुस्सा ठंडा किया। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 197)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो ताअला अलेह व सल्लम की हदीसे पाक के सामने अपनी समझ व अक्ल को पेश करना। और हदीसे पाक पर किसी क़िस्म का तान करना अलहादू ज़िंदक़ा है और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने में बड़े बड़े बादशाहों के दिलों में भी अज़मत हदीस मौजूद थी।

हिकायत नम्बर(551) तअज़ीमे इल्म

एक रोज़ अबु मुआविया ज़रीर (नाबीना) हारून रशीद के साथ खाना खाने बैठे। जब खाना खा चुके तो मामूल के मुताबिक़ अबु मुआविया के हाथ धुलाए गए। अबु मुआविया हाथ धो चुके तो हारून रशीद ने पूछा आप जानते हैं के ये आपके हाथ धुलाने वाला कौन था? अबु मुआविया बोले। के नहीं मैं नहीं जानता। हारून रशीद ने बताया के महेज़ तअज़ीमे इल्म के लिए आपके हाथ मैंने खुद धुलाए हैं। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 197)

सबक़:- आलिम की इल्म के सदक़े में बड़े बड़े बादशाह भी तअज़ीमे इल्म करते हैं और पहले ज़माना के बादशाह भी इल्म नवाज़ और उलमा दोस्त थे।

हिकायत नम्बर(552) बादशाह रोम

187हि॰ में बदाशाह रोम यक़फूर ने हारून रशीद को एक ख़त लिखा। जिसमें मलिका रोम ज़बनी के साथ किए गए अहद का ज़िक्र था। और लिखा था के ये ख़त यक़फूर बादशाह रोम की जानिब से हारून बादशाह अरब की तरफ़ है। वाज़ेह हो के मुझ से पहले जो मल्का रोम पर क़ाबिज़ थी। उसके ज़माने में तुम लोगों की हैसियत रही थी जो शतरंज में रूख की होती हैं। और मलिका उसकी हिमाक़त के बाइस बमंज़िला पैदल के थी। इसीलिए उसने बहुत सा माल तुम्हें दे दिया। और सुलह कर ली। मगर अब जबके ये मेरा ख़त तुम्हारे पास पहुँचे तो वो सारा माल जो तुम आज तक उससे ले चुके हो। फौरन वापस कर दो। वरना तुम्हारे हमारे दरमियान अब

Scanned by CamScanner

तलवार फैसला करेगी। फक़्त

ये ख़त पढ़कर हारून रशीद को इस क़द्र ग़ुस्सा आया के ग़ुस्से की वजह से मुशतईल हो गया यहाँ तक के उसके चेहरे को देखने की किसी को ताब ना रही। चै जायका उससे कोई बात कर सकता। उसके वज़ीर वुज़रा सब उसके पास से उठ कर चले आए। हारून रशीद ने बग़ैर किसी वज़ीर से मशवरा किए हुए क़लम दवात मंगवा कर उसकी पुश्त पर लिख दिया।

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम!" हारून अमीर-उल-मोमिनीन की तरफ़ से यक़्फूर रोम के कुत्ते को मालूम हो। के ओ काफिरा के बच्चे! मैंने तेरा ख़त पढ़ा जिसका जवाब तू अनक़रीब आँखों से देखेगा सुनने की ज़रूरत नहीं। फक़्त

और फिर खुद बनफ़्स नफीस लश्कर को लेकर उसी रोज़ रवाना हो गया। और रोम पहुँच कर वो मआरका आरा जंग लड़ी जो आज तक मश्हूर चली आती है और फतह हासिल की। यक़्फूर ने बा मजबूरी सुलह की दरख़्वास्त की। और हर साल खिराज देना मंज़ूर किया। जिसको हारून रशीद ने मंज़ूर कर लिया। और फौज को वापसी का हुक्म दे दिया। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 199)

सबक़:- मुसलमान *अशिदाऊ अलल कुफ़्फारी* की तफसीर होता है और ग़ुरून कुफ्र को तोड़ने के लिए हर वक़्त तैयार रहता है। और जब ये आला कलमत-उल-हक़ के लिए मैदान में निकल आए तो अल्लाह तआला की मदद व नुसरत उसके शामिले हाल होती है।

हिकायत नम्बर(553) पैंतीस हज़ार दीनार

ख़लीफा अबु नस्र मोहम्मद के ख़ज़ाने के तराज़ू में निस्फ क़ीरात के क़रीब कान थी। ख़ज़ाना के अम्माल चीज़ लेते तो हल्के पलड़े की तरफ़ तोल कर लेते थे और जब देते तो भारी पलड़े की तरफ़ तोल कर देते थे। इस बात का अबु नस्र को इल्म अहुआ तो उसने अमीर की तरफ़ एक तहदीद आमेज़ चिट्ठी लिखी जिसके अव्वल में चन्द क़ुरआनी आयतें लिखीं। जो कम तोलने वालों के मुतअल्लिक़ आई हैं। और फिर हुक्म दिया के हमें पता चला है के ख़ज़ाने तराज़ू का एक पलड़ा हल्का है। और चीज़ लेते वक़्त उस तरफ़ से और देते वक़्त भारी पलड़े की तरफ़ से तोल किया जाता है अगर ये इत्तिला दुरूस्त है तो आमिल ख़ज़ाने को हिदायत की जाए। के लोगों को बुला बुला कर अब वज़न करके पिछली तमाम कमी पूरी कर दी जाए। वज़ीर

Scanned by CamScanner

ने जवाब में लिखा के तहक़ीक़ात करने से पता चला है के ये खराबी बड़ी मुद्दत से चली आती है जिसका हर रोज़ हिसाब हम ने लगा कर देखा तो 35 हज़ार दीनार हमें लोगों को देने पड़ेंगे। ख़लीफा ने जवाब में लिखा के अगर 35 करोड़ भी देने पड़ें तो कोई हर्ज नहीं। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 319)

सबक़:- कम तोलना बहुत बड़े अज़ाब का मौजिब है। क़ुरआने पाक में *वैलुन लिलमुतफ़्फ़ीन* का इर्शाद है। यानी कम तोलने वालों के लिए वैल है" पस हर मुसलमान को इस खयानत से बचना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के क़यामत की गिरफ़्त से बचने के लिए दुनिया में करोड़ों रुपये भी खर्च करने पड़ें। तो इसी में फायदा है।

हिकायत नम्बर(554) सौदागरों का काम

ख़लीफा अबु नस्र एक रोज़ ख़ज़ाना में दाखिल हुए। तो ख़ादिम ख़ज़ाने ने अर्ज़ किया के हुज़ूर! ये आपके बाप के ज़माने में भरा रहता था। और अब आपकी सखावत के बाइस खाली है। अबु नस्र ने कहा। आख़िर मैं क्या तदाबीर इख़्तियार करूं के ये ख़ज़ाना भरा रहे। मुझे अल्लाह की राह में खर्च करना ही आता है। जमा करना तो सौदागरों का काम है। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 319)

सबक़:- माल दुनिया जहाँ तक हो सके अल्लाह की राह में खर्च करना चाहिए उसे जमा करके रख देना दीनदार लोगों का काम नहीं। बल्के ये दुनयावी सौदागरों का काम है।

हिकायत नम्बर(555) निराली तदबीर

ख़लीफा मनसूर अपने शहर में एक जगह बैठे थे के आपने एक ग़मगीन और परेशान हाल शख़्स को वहाँ से गुज़रते हुए देखा। ख़लीफा ने अपने ख़ादिम को हुक्म दिया के उसे मेरे पास बुला लाओ। चुनाँचे इस परेशान हाल शख़्स को ख़लीफा के रूबरू बुलाया गया। ख़लीफा ने उससे हाल पूछा तो वो बोला। के मैं तिजारत की ग़र्ज़ से बाहर गया हुआ था। और बहुत सा माल लेकर घर आया। और सारा माल अपनी बीवी के सपुर्द कर दिया। कुछ दिनों के बाद मेरी बीवी ने मुझे बताया। के सारा माल चोरी हो गया है। हालाँके घर में ना कोई नक़ब लगी देखी और ना ही छत उखड़ने का कोई निशान। ख़लीफा ने पूछा, के तुम्हारे निकाह को कितना अर्सा गुज़रा? उसने बताया के एक साल। फिर पूछा, के क्या वो कुंवारी थी? उसने कहा। नहीं। फिर पूछा,

Scanned by CamScanner

के दूसरे ख़ाविंद से उसकी कोई औलाद है? कहा नहीं। फिर पूछा, के क्या वो जवान उम्र है या सन रसीदा? उसने बताया के नो उम्र है।

मनसूर ने एक इत्र की शीशी मंगाई। उस इत्र में बड़ी तेज़ खुश्बू थी। और ये इत्र सिर्फ मनसूर ही के लिया तैयार किया जाता था। ये शीशी उसे देकर कहा के इसे इस्तेमाल करो। इसके असर से तुम्हारा ग़म जाता रहेगा। जब ये परेशान हाल शख़्स वापस हो गया तो मनसूर ने अपने चार मौतमिद ख़ादिमों को बुलाकर वो इत्र सूंघाया। और कहा। के तुम में से हर एक शहर के एक एक दरवाज़े पर जाकर चक्कर लगाओ। और जो आने जाने वाला तुम्हारे क़रीब से गुज़रे। और उसमें से तुम्हें यही खुश्बू आए। तो उसको मेरे पास ले आओ।

इधर वो परेशान हाल शख़्स इत्र की शीशी लेकर घर गया। और वो शीशी अपनी बीवी को दी। और कहा के ये मुझे अमीर-उल-मामिनीन ने दी है। उसने सूंघकर अपने इस आशना को बुला भेजा। जिसे उसने सारा माल दिया था। और उसे वो शीशी दी। और कहा। के ये बेमिस्ल इत्र लो। और इसे लगाओ। ये इत्र अमीर-उल-मोमिनीन ने मेरे शौहर को दिया है। उसने वो इत्र लिया। और अपने कपड़ों पर और बदन पर मल लिया। और फिर शहर के एक दरवाज़े से गुज़रा। उस दरवाज़े पर जो ख़ादिम मुतय्यन था। उसने उसके बदन से वही खुश्बू मेहसूस की और उसे पकड़ कर मनसूर के पास ले आया। मनसूर ने उससे पूछा के ये इत्र कहाँ से लिया? उसने कहा। मैंने ये ख़रीदा है। मनसूर ने पूछा कहाँ से? तो वो घबरा गया। मनसूर ने पुलिस अफ़्सर को बुलाया और कहा के इसको ले जाओ। अगर ये चुराया हुआ माल जो इस क़द्र है वापस कर दे तो उसको छोड़ देना। और अगर ना दे तो उसे एक हज़ार कोड़े मारना। जब वो दोनों चले गए तो पुलिस अफ़्सर को फिर तनहा बुलाया। और कहा उसे डराओ धमकाओ और मारना मत। चुनाँचे उस पुलिस अफ़्सर ने उसे जेल खाने में बन्द कर दिया। और उसे डराया धमकाया। तो उसने चुराए हुए सारे माल का इक़्रार कर लिया। और बजन्सही हाज़िर कर दिया। मनसूर को उसकी इत्तिला दी गई। तो उसने मालिक को तलब किया और पूछा, के अगर हम तुम्हारा सारा माल तुम्हें दे दें तो तुम अपनी बीवी के बारे में मुझे इख़्तियार दोगे? उसने कहा, ज़रूर। मनसूर ने कहा। अच्छा ये अपना माल संभालो और मैं तुम्हारी बीवी को तलाक़ देता हूँ। तुम उसे इस तलाक़ की इत्तिला दे दो। (किताब-उल-अज़किया-उल-इमाम इब्ने जोज़ी रहमत-उल्लाह अलेह, सफ़ा 71)

Scanned by CamScanner

सबक़:- ऐसी बुरी औरत परेशानी और नुक़्सान का मौजिब होती है और उससे किनारा ही बेहतर होता है। और ये भी मालूम हुआ के अरबाब हकूमत को खुदा तआला फिरासत व दूर अंदेशी की नअेमत भी अता फ़रमाए। तो बड़ी से बड़ी मुश्किल को भी वो अपनी तदबीर व हिकमत से हल कर लेते हैं।

हिकायत नम्बर(556) क़ातिल

ख़लीफा मौतज़िद बिल्लाह का मकान तामीर हो रहा है और एक रोज़ वो बैठे हुए कारीगरों को देख रहे थे के एक सियाह रंग बदसूरत मज़दूर को देखा जो बड़े मज़ाक़ कर रहा था। और सीढ़ियों के दो दो दर्जे फैलांग कर और दूसरे मज़दूरों से दोगुना बोझ उठा कर काम कर रहा था। उसे देखकर ख़लीफ के दिल में कुछ शुबह पैदा हुआ और उसे बुला कर उसका सबब पूछा तो वो कुछ घबरा सा गया। ख़लीफा ने इब्ने हमदून से जो वहाँ मौजूद था। कहा। उसे या तो बग़ैर मेहनत के कुछ रुपया कहीं से मिल गया है या ये शख़्स चोर है और मिट्टी गारे के काम से ये अपना राज़ छुपाना चाहता है। चुनाँचे ख़लीफा ने कोड़े मारने वाले को बुलाया। और कहा। उसे कोड़े मारे जायें। जब सौ कोड़े उसे लग चुके और ख़लीफ ने क़सम खा ली के अगर उसने सच मुच अपना हाल बयान ना किया तो उसे क़त्ल कर दिया जाएगा। और तलवार और चमड़े का फर्श भी मंगवा लिया। तो उस वक़्त वो सियाह रंग मज़दूर बोला। के मुझे अमान दीजिए। तो मैं सच्ची बात बता देता हूँ। ख़लीफा ने कहा। अमान दी जाती है। बजुज़ इस सूरत के जिसमें हद वाजिब हो" आख़री लफ़्ज़ों को वो समझ ना सका और उसने खयाल किया के अब मैं महफूज़ हो चुका हूँ। तो उसने बताया के मैं मुद्दत से ईंटों के भट्टे पर काम करता था। कुछ दिन गुज़रे के मैं वहाँ बैठा हुआ था। के एक शख़्स मेरे पास से गुज़रा जिसकी कमर में एक हमयानी बंधी हुई थी। मैं उसके पीछे लग गया। उस शख़्स ने एक भट्टी के क़रीब बैठकर हमयानी खोली। और एक दीनार निकाला। उसे मेरी मौजूदी का कोई इलम ना था। मैंने देखा के उसकी सारी हमयानी दीनारों से भरी हुई है। तो मैंने उस पर हमला करके उसके हाथ पैर जकड़ के उसकी हमयानी छीन ली। और उसका मुंह बन्द करके कंधे पर उठा कर उसे भट्टे के एक गढ़े में डाल कर मिट्टी से भर दिया। चन्द दिनों के बाद उसकी हड्डियाँ निकाल कर दजला में बहा दीं। वो दीनार मेरे पास मौजूद हैं। जिनसे मैं खुश रहता हूँ। ख़लीफा मौतक़िद ने एक

Scanned by CamScanner

शख़्स को हुक्म दिया के उसके मकान से दीनार ले आए। चुनाँचे दीनार मअे हमयानी के मंगवा लिए गए। हमयानी पर मक़्तूल का नाम व पता लिखा था। ख़लीफा ने शहर में मनादी कराई, तो एक औरत एक छोटे बच्चे समेत हाज़िर हुई। और कहने लगी। के ये मेरे शौहर का नाम है और ये उसी का बच्चा है। फलाँ वक़्त वो घर से निकला था। और उसके पास एक हमयानी थी। जिसमें हज़ार दीनार थे। वो अब तक ग़ायब है। ख़लीफा ने वो हमयानी मअे हज़ार दीनारों के उस औरत को दी। और उस काले कातिल को क़त्ल करा दिया। और हुक्म दिया के उसकी लाश को भी वहीं भट्टी में डाल दिया जाए। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 80)

सबक़:- बुरे काम को लाख छुपाया जाए। मगर एक ना एक दिन उसका होलनाक अंजाम सामने आकर रहता है। और बुरे काम का नतीजा हमेशा बुरा ही होता हैं और ये भी मालूम हुआ के तदबीर व हिकमत और नेक नीयती से बड़े बड़े जरायम का पता चल जाता है।

हिकायत नम्बर(557) मोतियों का हार

एक खरासानी शख़्स हज के लिए घर से निकला। तो शहर बग़दाद में पहुँचा। और अपना एक क़ीमती मोतियों का हार जिसकी क़ीमत एक हज़ार दीनार थी। बग़दाद में बैचना चाहा। मगर हार बिक ना सका। नाचार उसने ये क़ीमती हार एक अत्तार के पास जिसकी शौरहत अच्छी थी, अमानत रखा और हज को चला गया। फिर जब हज करके वापस आया और उस अत्तार से अपना हार वापस तलब किया तो वो अत्तार फिर गया। और कहने लगा के मैं ना तुम्हें जानता हूँ और ना किसी हार को। और इस बेचारे खरासानी को धक्के देकर दुकान से नीचे उतार दिया। लोग जमा हुए। तो सब ने अत्तार की हिमायत की और इस खरासानी हाजी की किसी ने तरफ़दारी ना की। ये बडा हैरान हुआ। और बार बार अपना क़िस्सा सुनाने लगा। मगर उसकी कोई सुनता ही ना था। नाचार ये ख़लीफा-ए-वक़्त अज़्द-उल-दौला के पास पहुँचा। और अपना पूरा वाक़ेया पेश किया। अज़्द-उल-दौला ने कहा। तुम कल सुबह जाकर इस अत्तार की दुकान पर बैठ जाओ। वो ना बैठने दे तो उसके सामने की किसी दुकान पर जाओ। और मग़रिब तक बैठे रहो। और अत्तार से कोई बात ना करो। इसी तरह तीन दिन करो। चौथे दि हम वहाँ से गुज़रेंगे और खड़े होकर तुम से अस्सलाम अलेकुम कहेंगे,

Scanned by CamScanner

तुम खड़े ना होना। और व अलेकुम अस्सलाम के सिवा और कोई लफ़्ज़ ना कहना। और जो सवाल मैं करूं सिर्फ उसी का जवाब देना। और कुछ ना कहना। और फिर हमारी वापसी के बाद तुम इस अत्तार से हार का क़िस्सा छेड़ देना। फिर जो कुछ वो जवाब दे हमें उसकी इत्तिला करना। और अगर हार वापस कर दे तो मेरे पास ले आना। चुनाँचे इस परोग्राम के मुताबिक़ वो खरासानी हाजी दूसरी सुबह को इस अत्तार की दुकान पर बैठने के लिए पहुँचा तो उसने ना बैठने दिया तो वो सामने की एक दुकान पर बैठ गया। और तीन दिन तक वहीं बैठता रहा। जब चौथा दिन हुआ तो ख़लीफा अज़्द-उल-दौला एक शानदार जलूस के साथ इधर आए और जब इस खरासानी को देखा तो वहीं खड़े हो गए और अस्सलाम अलेकुम कहा। उसने अपनी जगह पर बैठे हुए व अलेकुम अस्सलाम कहा। ख़लीफा ने कहा। भाई साहब! आप यहाँ तशरीफ़ लाए हैं। मगर हम से नहीं मिलते। और ना ही कोई ख़िदमत हमारे सपुर्द करते हैं। उसने कोई बात ना की। और मामूली तौर पर हाँ हूँ कर दी। अज़्द-उल-दौला उससे बार बार इसरार करते रहे और खड़े रहे। और उनकी वजह से पूरा लश्कर खड़ा रहा। इस बात से लोगों को यक़ीन हो गया के ये शख़्स अज़्द-उल-दौला का कोई बड़ा मोहत्रम दोस्त है। इधर अत्तार ने ये नज़्ज़ारा देखा तो उस पर ख़ौफ के मारे ग़शी तारी होने लगी। और उसने गुमान किया के इस ख़रासानी ने अज़्द-उल-दौला को अभी हार का क़िस्सा बताया नहीं। और अगर उसने बता दिया तो खुदा जाने मेरा क्या हश्र होगा। अज़्द-उल-दौला जब वहां से चला गया, तो अत्तार खुद उस खरासानी के पास आया। और कहा के आपने ये ना बताया के वो हार आपने कब और किस चीज़ में लिपटा हुआ हमारे पास रखा था। आप मुझे याद दिलायें। शायद याद आ जाए। उसने सब कुछ बताया। तो उस अत्तार ने इधर उधर हाथ मारने के बाद एक थेला उल्टा। जिसमें से हार गिरा। तो कहने लगा, के मैं असल में भूल ही गया था। शुक्र है के आपका हार मिल गया। ये लीजिए अपना हार। खरासानी अपना हार पाकर सीधा ख़लीफा अज़्द-उल-दौला के पास पहुँचा। अज़्द-उल-दौला ने उसके साथ अपने हाजिब को वो हार देकर अत्तार की दुकान पर भेजा। जिसने अत्तार को पकड़कर वो हार उसके गले में डाल दिया। और उसको दुकान के दरवाज़े ही पर फाँसी देकर लटका दिया। और मनादी करा दी के ये इस शख़्स की सज़ा है के जिसके सपुर्द एक अमानत की गई मगर

Scanned by CamScanner

वा मुनकिर हो गया। जब दिन गुज़र गया तो हाजिब ने उसकी गर्दन से हार निकाल कर हाजी के सपुर्द कर दिया। और जाने की इजाज़त दे दी। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 93)

सबक़:- अमानत में खयानत करना बहुत बड़ा जुर्म है। और खायन आदमी कभी फलाह नहीं पाता। नुक़्सान ही उठाता है। और ये भी मालूम हुआ के पहले बादशाह मुज्रिमों को ठिकाने पहुँचाने के लिए खुदादाद फिरासत से अजीब अजीब तरीक़ों से मुज्रिमों को पकड़ लेते थे।

हिकायत नम्बर(558) ज़ेहर आलूद हलवा

ख़लीफा अज़्द-उल-दौला के ज़माने में कुर्द क़ौम के डाकूओं ने बड़ा ऊधम मचाया। ये लोग पहाड़ी घाटियों में छिपे रहते। और आने जाने वाले क़ाफलों को लूट लेते थे। इन डाकूओं पर क़ाबू पाना मुश्किल हो गया। तो अज़्द-उल-दौला ने एक ताजिर को बुलाया। और उसे एक खच्चर दिया जिस पर दो संदूक़ लदे हुए थे उन संदूक़ में एक ऐसा हलवा बन्द था जिसमें बहुत तेज़ और नफीस खुश्बू मिली हुई थी। और इस हलवे को बड़े खूबसूरत बर्तनों में बन्द करके संदूक़ में रखा गया था। अज़्द-उल-दौला ने इस ताजिर को ये खच्चर देकर हुक्म दिया। के फलाँ क़ाफले के साथ रवाना हो जाओ। और ज़ाहिर ये करो। के उन बाज़ हुक्काम और उनकी औरतों के लिए बतौर हदिया शाही हलवा भेजा रहा है। ताजिर ने शाही हुक्म की तामील की और क़ाफले के आगे आगे रवाना हो गया। जब क़ाफला डाकूओं के मुक़ाम के पास पहुँचा। तो डाकूओं ने क़ाफले पर हमला कर दिया। और क़ाफले वालों को लूट लिया। और इस खच्चर को भी अपने क़ब्ज़े में कर लिया। जिस पर हलवे के संदूक़ लदे थे। फिर उन्होंने जब संदूक़ों को खोला। तो हलवे की नफीस और तेज़ खुश्बू से सब डाकू उस हलवे के गिर्द जमा हो गए। भूके थे। इसलिए सब ही उस पर टूट पड़े और खूब सैर होकर खाया। बस खाकर लौटे ही थे के सबके सब हलाक हो गए फिर तो सब क़ाफले वालों ने दौड़कर उनके मालो मता पर क़ब्ज़ा कर लिया। और उनके हथियार भी ले लिए। और जिस क़द्र माल लूटा हुआ था वो भी मिल गया। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 97)

सबक़:- झूट, मक्र, फ़रैब और लूट खसूट से जमा कर्दा दुनिया का अंजाम अच्छा नहीं होता। और ज़ालिम लोग कभी कामयाब नहीं होते और उनका दीन और दुनिया भी बर्बाद हो जाती है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(559) तरबूज़

सुलतान जलाल-उल-दौला एक रोज़ शिकार को निकले तो उनको एक दीहाती मिला। जो रो रहा था। पूछा क्यों रोते हो? तो कहा, के मेरे पास तरबूज़े थे जो मेरी कुल पूंजी थी, तीन लड़कों ने वो तरबूज़ मुझ से छीन लिए हैं। सुलतान ने कहा। तुम मेरे लश्कर में चले जाओ। और वहाँ फलाँ मुक़ाम पर जाकर बैठ जाओ। मैं शाम को वापस आऊँगा और तुम्हें खुशहाल कर दूंगा। चुनाँचे वो दीहाती लश्कर में गया और सुलतान के बताए हुए मुक़ाम पर बैठ गया। सुलतान जब लश्कर में आया। तो अपने मुलाज़मीन से कहा के मुझे तरबूज़ की ख़्वाहिश है। लश्कर और खैमों में पता लो शायद मिल जाए। मुलाज़िमों ने इधर उधर पता लिया। तो एक मुलाज़िम तरबूज़ लेकर आ गया। सुलतान ने पूछा के ये तरबूज़ किस से मिला? तो उसने बताया के फला हाजिब के ख़ैमे में था। सुलतान ने हुक्म दिया के इस हाजिब को हज़िर करो। हाजिब आया तो उससे पूछा के ये तरबूज़ कहाँ से लिया। उसने बताया के कुछ लड़के लाये थे। सुलतान ने कहा उन लड़कों को हाज़िर करो। वो हाजिब गया तो ये मालूम करके के मामला कोई संगीन मालूम होता है। लड़के कहीं क़त्ल ही ना कर दिए जायें। उन लड़कों को भगा दिया। और सुलतान से कह दिया के वो लड़के कहीं भाग गए हैं। सुलतान ने इस दीहाती से पूछा। क्या यही वो तरबूज़ है जो तुझ से छीना गया था। उसने कहा हाँ। तो उससे कहा के इस साहब को ले जाओ। ये हमारा ग़ुलाम है। हम तुझे बख़्शते हैं इसलिए के उसने उन लड़कों को हाज़िर नहीं किया जिन्होंने तुम्हारे तरबूज़ छीने थे। और खुदा की क़सम! अगर तूने उसे छोड़ दिया तो मैं तेरी गर्दन उड़ा दूंगा। चुनाँचे दीहाती ने उस साहब का हाथ पकड़कर उसे बाहर ले आया। अब हाजिब ने अपने आप को आज़ाद कराने पर उससे तीन सौ दीनार पर सौदा तय कर लिया, और उसे तीन सौ दीनार देकर उसके पंजे से आज़ाद हो गया। फिर वो दीहाती सुलतान के पास आया और कहा हुज़ूर! जो ग़ुलाम आपने मुझ दिया था वो मैंने तीन सौ दीनार पर बैच दिया है। सुलतान ने कहा। और तुम इस सौदे पर खुश भी हो। वो बोला बड़ा खुश हूँ फ़रमाया अच्छा जा क़ीमत अपने क़ब्ज़ा में कर और सलामती के साथ रूख़्सत हो जा। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 100)

सबक़:- आदिल हाकिम फ़रयादी और मज़लूम की किसी ना किसी तरह इम्दाद और एआनत ज़रूर करते हैं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(560) जौ का दलिया

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाह अन्ह को एक रोज़ इत्तिला मिली के सिपह सालार अफवाज के बावर्ची खाने का रोज़ाना खर्च एक हज़ार दरहम है। ये इत्तिला पाकर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने अफसोस ज़ाहिर किया और फ़रमाया के अफसोस बेकसों, यतीमों और बेवाओं का हक़ यूं उड़ाया जा रहा है। सिपह सालार को अमीर-उल-मोमिनीन ने हुक्म दिया, के कल दोपहर का खाना हमारे दसतरख़्वान पर खाया जाए। और फिर अपने बावर्चियों को हुक्म दिया के हर क़िस्म के पुर तकल्लुफ खाने तैयार किए जायें और साथ ही जौ का दलिया भी तैयार किया जाए। सिपह सालार जब दूसरे दिन दावत पर पहुँचा तो खलीफा ने खाना मंगवाने में देर कर दी और खाने के लिए हुक्म देने में इस क़द्र ताम्मुल किया के सिपह सालार के पेट में भूक से चूहे क़लाबाज़ियाँ करने लगा। अदब के मारे कुछ तो कह सकता नहीं था के भूक लग रही है। मगर उसके चेहरे पर हवाईयाँ ऐसी दौड़ रही थीं के जिससे उसकी भूक का बखूबी अंदाज़ा हो रहा था। जब वो भूक से बेताब हो गया तो अमीर-उल-मोमिनीन ने खाना लाने का हुक्म दिया। और पहले जौ का दलिया मंगवाया। सिपह सालार चूंके बहुत भूका था इसलिए अपने मोहत्रम ख़लीफा के साथ ही जौ का दलिया खाना शुरू कर दिया। और जब पुर तकल्लुफ खाने आए। उस वक़्त उसका पेट जौ के दलिये के साथ ही भर चुका था। दाना ख़लीफ ने उसके बाद फिर पुर तकल्लुफ खानों की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया। के आपका खाना तो अब आया है खाईये। सिपह सालार ने इंकार किया और कहा के मेरा पेट तो दलिया ही से भर चुका है। अमीर-उल-मोमिनीन ने फ़रमाया। सुबहान अल्लाह! क्या अच्छा खाना है। के पेट भी भर देता है और और ज़्यादा खर्च भी नहीं करता। एक दरहम में दस आदमी भी पेट भर कर खा सकते हैं जब ये बात है तो आप पर अफसोस है के आप एक हज़ार दरहम हर रोज़ अपने खाने पर खर्च करते हैं। सिपह सालार साहब! खुदा से डरिये और अपने आप को ज़्यादा खर्च करने वालों में दाखिल ना कीजिए। जो रुपया आप अपने बावरची खाने में बे फायदा सर्फ करते हैं। भूकों, हाजतमंदों और ग़रीबों को दें। खुदा उससे खुश होता है। मुत्तक़ी ख़लीफा के इन नसीहत आमेज़ कलमात ने सिपह सालार के दिल पर गहरा असर किया और उसने अहद किया के आईंदा में इतना खर्च ना करूंगा। (मुग़नी अलवाज़ैन, सफ़ा 491)

Scanned by CamScanner

सबक़:- फ़िज़ूल खर्ची से बचना चाहिए और खूराक व लिबास में हमेशा सादगी और मियाना रवी इख़्तियार करना चाहिए। जो लोग अपनी खूराक व लिबास में अंधा धुंद खर्च करते हैं। वो ग़रीबों और बे कसों का हक़ तलफ करते हैं।

हिकायत नम्बर(561) उल्लू की कहानी

अब्दुल मलिक बिन मरवान को एक रात नींद नहीं आती थी। उसने अपने क़िस्सा गौ दरबारी को बुलाया और कहा के कोई कहानी सुनाओ। क़िस्सा गौ ने अर्ज़ किया। आज एक अनोखी कहानी सुनता हूँ। और फिर बयान करना शुरू किया। के एक था बसरे का उल्लू और एक था मवस्सल का उल्लू। एक दिन मवस्सल का उल्लू ने बसरे के उल्लू से कहा के वो अपनी बेटी उसके बेटे से बियाह दे। बसरे के उल्लू ने जवाब दिया के इस शर्त पर अपनी बेटी तुम्हारे बेटे को देता हूँ। अगर तुम मेहर में उजड़े हुए सौ गाँव देना मंज़ूर करो। मवस्सल के उल्लू ने जवाब दिया के मैं इतनी जल्दी तो इतने बर्बाद गाँव मोहय्या नहीं कर सकता। हाँ दुआ करो। खुदा हमारे बादशाह अब्दुल मलिक को सलामत रखे। ये अगर एक साल भी हम पर हाकिम रह गया। तो एक सौ उजड़े हुए गाँव बड़ी आसानी से दे सकूंगा।

अब्दुल मलिक ये सुनकर चौंका और समझ गया और उसी वक़्त अपने मज़ालिम से बाज़ रहने का एहद कर लिया। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 135, जिल्द 1)

सबक़:- ज़ुल्म करने से मुलक वीरान हो जाता है इसलिए ज़ुल्मो सितम से बाज़ रहना चाहिए।

हिकायत नम्बर(562) हश्शाम और हज़रत ताऊस

ख़लीफा हश्शाम इब्ने अब्दुल मलिक जब मदीना में पहुँचा तो उसने हुक्म दिया के सहाबा इक्राम रज़ी अल्लाहो अन्हुम में से किसी को मेरे पास लाओ। लोगों ने अर्ज़ किया के तमाम सहाबा इक्राम इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं। कहा के ताबेईन में से किसी को मेरे पास लाओ। चुनाँचे हज़रत ताऊस को ख़लीफा के पास ले गए। उन्होंने अन्दर जाकर जूता उतारा। और कहा अस्सलाम अलेकुम या हश्शाम, हश्शाम सख़्त ग़ज़बनाक हुआ। और उन्हें क़त्ल कर डालने का अज़्म बिलजज़्म कर लिया। लोगों ने अर्ज़ किया के ये जगह हरम रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम है।

Scanned by CamScanner

और ये शख़्स अकाबिर उलमा में से है। इस इरादे से बाज़ आ। उससे पूछा ऐ ताऊस! तुम ने इसे क्या दिलैरी और गुसताखी की? फ़रमाया मैंने क्या किया? ये सुनकर हश्शाम और भी बुरा फ़रोख़्ता हुआ और कहने लगा। तुम ने चार बे अदबियाँ की हैं।

1) जूता लबे फर्श उतारा (याद रहे के हश्शाम के नज़दीक ये अम्र मअयूब था। बल्के उसके सामने मोज़ा और जूता पहने हुए बैठना चाहिए था)

2) मुझे अमीर-उल-मोमिनीन ना कहा।

3) मेरा नाम लेकर पुकारा। मेरी कनियत ना कही। (इस बात को भी अरब बनज़र इसतहसान नहीं देखते)

4) मेरी इजाज़त के बग़ैर बैठ गए।

हज़रत ताऊस रहमत-उल्लाह अलेह ने इन चारों बातों का ये जवाब दिया।

1) तेरे सामने जूता उतारने का मतलब ये है के हर रोज़ पाँच बार उस रब्बुल इज़्ज़त के सामने जो सबका मालिक और अहकम-उल-हाकिमीन है। जूता उतार कर ही जाता हूँ। और इस हरकत से वो भी मुझ से खफा नहीं होता।

2) तुझे अमीर-उल-मोमिनीन इसलिए नहीं कहा के तेरी इमारत पर सब लोग राज़ी नहीं इसलिए क़ौल-उल-ज़ोर से मोहतरिज़ रहा।

3) तुझे नाम लेकर पुकारा और कनियत से नहीं पुकारा। इसकी वजह ये है के हक़ तआला ने अपने दोस्तों को नाम लेकर पुकारा है। या दाऊद, या याहिया, या ईसा वग़ैरा और अपने दुश्मनों को कनियत से या फ़रमाया है। जैसे *तब्बत यदा अबी लहब*

4) तेरे सामने जो बग़ैर इजाज़त के बैठ गया हूँ उसका सबब ये है के हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया है के अगर कोई किसी दोज़खी को देखना चाहे तो उसे कह दो के ऐसे शख़्स को देख ले जो खुद तो बैठता हो। बन्दगाने खुदा उसके सामने दस्त बस्ता खड़े हों।

हश्शाम को ये बातें बेहद पसंद आईं। कहा मुझे नसीहत कीजिए। फ़रमाया। हज़रत अली रज़ी अल्लाह अन्ह ने फ़रमाया है के दोज़ख़ में पहाड़ के बराबर साँप और ऊँट के बराबर बिच्छू हैं। वो सब ऐसे अमीर की राह देखा करते हैं जो रिआया पर अद्ल ना करे, या फ़रमाया और चले गए। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 217)

सबक:- खुदा के मक़्बूल बन्दे किसी दुनयवी दबदबे से मरऊब नहीं होते। और अक्सर दिल अमीर सच्ची बातों की क़द्र करते हैं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(563) ग़रीब परवरी

ख़लीफा मामून अलरशीद एक मर्तबा जंगल में शिकार के लिए जा रहा था, एक गंवार पानी की एक मश्क भरकर लश्कर में लाया और ख़लीफा से कहने लगा। मैं आपके लिए निहायत सर्द और शीरीं पानी तोहफा लाया हूँ। मामून ने पिया तो सख़्त बदबूदार और कड़वा पानी था। मगर अपने अख़लाक़ की वजह से मामून ने कुछ ना कहा। बल्के ये कहा के वाक़ई हम ने आज तक ऐसा पानी नहीं पिया था। अच्छा ये पानी हमारे बर्तन में डाल दो। और ख़ज़ांची के पास जाकर अनी मश्क अशर्फियों से भरा लो। और फौरन यहाँ से वापस अपने घर लौट जाओ"। उसके चले जाने के बाद मुसाहिबों पूछा। के पानी जब इतना सख़्त कड़वा था तो आपने उससे क्यों नहीं कहा। और क्यों पिया? और फिर उसे ईनाम भी क्यों दिया? और इसमें क्या मसलेहत थी के उसे आगे जाने से रोक दिया।

मामून ने कहा। वो बद्दू बड़े शौक़ से इतनी दूर से किसी जोहड़ से मेरे लिए पानी भरकर लाया था। मैं उससे पानी के कड़वे होने की क्या शिकायत करता। जब उसने कटोरा मुझे दिया तो मुझे शर्म आई के मैं उसे ना पियूँ। क्योंके इस तरह ग़रीब की दिल शिकनी होती। ईनाम इसलिए दिया के बेचारा ईनाम की लालच ही मैं तो इतनी दूर से मश्क भरकर लाया था। मैंने उसे आगे जाने से इसलिए रोका। के अगर ये बग़दाद जाकर दरया-ए-दजला का पानी पियेगा तो अपने दिल में शर्मिंदा होगा। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 319)

सबक़:- ग़रीबों के खुलूस की क़द्र करना चाहिए और उनसे हमदर्दी के साथ पेश आना चाहिए।

हिकायत नम्बर(564) दो मलऊन

सुलतान नूरउद्दीन शहीद बिन ज़ंगी रहमत-उल्लाह अलेह को एक रात ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत हुई। और हुज़ूर ने दो शख़्सों की तरफ़ इशारा फ़रमा कर फ़रमाया "नूरउद्दीन! मुझे उनके शर से बचा" और फिर तीसरी रात भी तशरीफ़ लाकर दो शख़्सों की तरफ़ इशारा फ़रमाकर इर्शाद फ़रमाया। के नूरउद्दीन! मुझे उनके शर से बचा।

सुलतान नूरद्दीन ने जब मुतावातिर तीन रात हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी देखी और हुज़ूर का दो शख़्सों की तरफ़ इशारा फ़रमा कर फ़रमाना के मुझे इनके शर से बचा" सुना तो वो बेचैन हो गया और अपनी फिरासत ईमानी

Scanned by CamScanner

से समझ गया के मदीना मुनव्वरह में ज़रूर कोई वाक़ेया फाजिआ ऐसा ज़हूर पज़ीर हुआ है। जिसके बाइस आक़ाऐ दो जहाँ सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझे ये इर्शाद फ़रमाया है। तीसरी बार जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो रात का कुछ हिस्सा बाक़ी था। सुलतान उसी वक़्त बिस्तर से उठा और बहुत सा ख़ज़ाना हमराह लेकर बीस मक़रबान दौलत के साथ दमिश्क़ से मदीना मुनव्वरह की तरफ़ रवाना हो गया।

सोलह दिन के सफर के बाद मदीना मुनव्वरह पहुँच कर सुलतान ने ख़ज़ाना का मुंह खोल दिया और मनादी करा दी। के अहले मदीना पर आज दरहम व दीनार की बारिश होगी। हर छोटा बड़ा इस ख़बर को सुनते ही बारगाहे सुलतानी की तरफ़ दौड़ पड़ा। हर शख़्स बारी बारी से बारयाब होता था। और ईनामो इक्राम से माला माल होकर रूख़्सत हो जाता था। इसी तरह सारा शहर सुलतान की नज़र से गुज़र गया मगर वो मूज़ी जो ख़्वाब में दिखाए गए थे और जिनका हुलिया पत्थर की लकीर की तरह सुलतान के दिमाग़ पर नक़्श था। नज़र ना आए। आख़िर सुलतान ने रोज़ा-ए-नबव्वी के बाज़ ख़िद्दाम से दरयाफ़्त किया के कोई ऐसा शख़्स तो बाक़ी नहीं रहा जो ईनाम लेने ना आया हो। उन्होंने अर्ज़ किया के और तो सब लोग हाज़िर हो चुके हे। फक़्त दो खुदा रसीदा बुज़र्ग नहीं आए जो मग़रिब के रहने वाले हैं और दिन रात इबादत करते रहते हैं। सुलतान ने हुक्म दिया के उन दोनों को भी हाज़िर किया जाए।

कुछ देर के बाद दो आदमी सुलतान के पास लाए गए। सुलतान ने आँख उठाकर देखा और एक नज़र में पहचान लिया के ये वही दो शख़्स हैं जिनकी तरफ़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ख़्वाब में इशारा फ़रमाया था। पूछा के तुम दोनों कहाँ रहते हो? कहने लगे के राज़ा-ए-मतहर के मग़रिब की जानिब मस्जिद की दीवार से बना हुआ एक वीरान सा मकान है, हम उसमें रहते हैं। सुलतान ने उन्हें तो वहीं छोड़ा। और खुद सीधा उस मकान में दाखिल होकर उसने हर तरफ़ मुतजस्सुसाना निगाह डाली। मकान का सामान मुख़्तसिर था। मगर जिस क़द्र था ज़बाने हाल से मकीनों के ज़ैहदो वरअे की शहादत दे रहा था। ताक़ पर क़ुरआन मजीद रखा हुआ था। उसके अलावा कुछ और किताबें भी थीं। जिनके मज़ामीन पंदो निसायह से ममलू थे। एक कोने में फक़ीरों और मिसकीनों में तक़सीम करने की ग़र्ज़ से ग़ल्ले का एक ढेर लगा हुआ था। फर्श पर एक बहुत बड़ा बोरिया बिछा हुआ था। उनमें से कोई चीज़ बजाए खुद क़ाबिले एत्राज़ ना थी। सुलतान हैरान था के

Scanned by CamScanner

अब क्या करे। आख़िर उसी क़ुद्सी जज़्बे ने जो उसे दमिश्क से कुशाँ कुशाँ मदीने ले आया था। उसका हाथ बोरिये की तरफ़ बढ़ाया के देखे तो सही के इसके नीचे क्या है। बोरिये का उठना था के एक ख़ौफनाक हक़ीक़त का इंकेशाफ हुआ। इन मलऊनों ने जिनके तक़द्दुस का घर घर चर्चा था एक नक़ब लगा रखी थी। जिसका रूख हुजरा नबव्वी की तरफ़ था। पास ही एक गढ़ा था जिसमें खुदी हुई मिट्टी भर दी जाती थी। और जब रात होती थी तो दोनों नक़ब ज़न इस मिट्टी को थेलों में भर भर कर बक़ीअ के मैदान में डाल आते थे।

सुलतान ने उन दोनों खबीसों को मौक़े पर तलब करके ग़ज़रनाक लहजे में पूछा के सच सच बाताओ, के तुम कौन हो और तुम ने ये हरकत क्यों की? पहले तो उन्होंने इधर उधर की बातें करना शुरू कीं। लेकिन मौत को सर पर मंडलाती देखकर सोचा के अब अखफाए राज़ बेसूद है। निडर होकर बोले। के हम नसरानी हैं। हमारी क़ौम ने हमें इस मक़द्दस ख़िदमत पर मामूर किया था। के मराकशी हाजियों के भेस में मदीना पहुँच कर नक़ब लगा कर तुम्हारे पैग़म्बर की क़ब्र तक जा पहुँचें और उसकी लाश को निकाल लें और बे आबरू करें। (मआज़ अल्लाह) हमारा काम ख़त्म ही हो चुका था और नक़ब क़ब्र तक पहुँच गई थी। के दफअतन आसमान पर बादल गर्जा। झक्कड़ चलना शुरू हुआ। ज़लज़ला आया और उसके बाद तुम आ पहुँचे।

सुलतान की उस वक़्त अजीब हालत थी। दिल उलट गया और जिगर पानी होकर आँखों में आ गया इतना रोया इतना रोया के दाढ़ी आँसूओं से तर हो गई। फिर सरापा जलाल होकर उठा। और तलवार खींचकर नक़ब ही के किनारे उन दोनों मलऊनों की गर्दनें उड़ा दीं और उनकी नापाक लाशें आग के एक दहकते हुए लावे में डलवा दीं। के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की जनाब में गुसताखी करने वालों का यही हश्र होना चाहिए। उसके बाद सुलतान के हुक्म से हुजरे नबव्वी के इर्दगिर्द एक गहरी ख़ंदक़ खोदी गई। जिसे पिघले हुए सीसे से पाट दिया गया ताके फिर किसी खबीस नक़ब ज़न का हाथ हुज़ूर रहमते आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की आराह गाह तक ना पहुँच सके। (हज-उल-करामा फी आसार-उल-क़यामा, बहवाला जज़्ब-उल-क़लूब, सफ़ा 124)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम क़ब्र अनवर में इसतराहत फ़रमा होकर भी ज़िन्दा हैं और सारे आलम के नेक व बद आमाल को देख रहे हैं और सब कुछ जानते हैं और ये भी मालूम हुआ

Scanned by CamScanner

के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का हयात-उन्नबी होना और आपके जिस्म अनवर का मेहफ़ूज़ होना एक ऐसी हक़ीक़त है जिसे नसरानी तक भी तसलीम करते हैं। जभी तो वो हुज़ूरे अनवर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के जस्दे अतहर को क़ब्र अनवर से निकाल लाने के लिए इतनी दूर दराज़ से आए थे। फिर जो बराऐ नाम मुसलमान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को मर कर मिट्टी में मिल जाने वाला लिखे वो नसरानियों से भी गया गुज़रा हुआ या नहीं? और ये भी मालूम हुआ के बज़ाहिर क़ुरआन पढ़ना, इबादत करना और सदक़ा व खैरात करना और नेकूं की सूरत बनाए रखना इस अमर का मौजिब नहीं है के वो शख़्स वाक़ई ऐसा हो। बल्के बाज़ अफ़्राद ऐसे भी होते हैं जो बज़ाहिर बड़े पारसा नज़र आते हैं। मगर बातिन सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बेअदब और गुसताख होते हैं इसीलिए खुद हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ऐसे लोगों के लिए इर्शाद फ़रमाया के *ज़ियाब फी सियाब* के ये लोग इंसानों के लिबास में भेड़िये हैं। और मौलाना रूमी ने भी फ़रमाया है के

ऐ बसा इबलीस आदम रूए हस्त
पस ना दर हर दस्त बायद दाद दस्त

यानी बहुत से शैतान भी इंसानों के भेस में फिर रहे हैं। लिहाज़ा हर शख़्स का मौतक़िद ना होना चाहिए बल्के कुछ पहचान भी पैदा करना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के सुलतान नूरउद्दीन रहमत-उल्लाह अलेह बड़ा ही खुशक़िस्मत सुलतान था, जिसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपनी इस ख़िदमत के लिए मुंतख़िब फ़रमाया।

हिकायत नम्बर(565) जंडियाला का क़िला

अहमद शाह दुर्रानी एक एक मर्तबा क़ंधार में सो रहा था। के आधी रात के वक़्त उठा और बाहर आते ही बग़ैर किसी को इत्तिला दिए घोड़े पर सवार होकर सिर्फ उन तीन सौ सवारों के साथ जो हरम सराऐ के दरवाज़े पर पहरा दे रहे थे रवाना हो गया और चलते हुए किसी को कह दिया के फौरन वज़ीरे आज़म शाह वली खाँ को ख़बर कर दो के बादशाह हिन्दुस्तान की तरफ़ जिहाद के लिए रवाना हो गया। शाह वली खाँ को उसी वक़्त बैदार करने के बाद इत्तिला की गई वो हैरान था के क्या वाक़ेया पेश आ गया। के बग़ैर मुझ से मशवरा किए हुए बादशाह इस तरह रवाना हुआ मगर उसने

Scanned by CamScanner

हवास बजा कर के फौरन पचास साठ फ़रामीन इस मज़मून का लिखा कर मुल्क के हिस्सों में सरदारों के नाम रवाना कर दिए के बदाशाह बग़र्ज़ ग़ज़ा हिन्दुस्तान की तरफ़ रवाना हो गया है उसके हुक्म पहुँचते ही बहुत जल्द तुम सब अपने आपको बादशाह तक पहुँचाओ। इस इन्तिज़ाम के बाद शाह वली खाँ फौरन इस जमीअत के साथ जो इस वक़्त मौजूद थी बादशाह की तरफ़ रवाना हो गया। बादशाह दुर्रानी पहाड़ों पर अक़ाब, दरयाओं में नहंग और मैदानों में हवा की तरह उड़ता, तेरता, दौड़ता इस सरअत के साथ चला के सिंध, झेलम, चिनाब दरावी को उबूर करके जब लाहोर पहुँचा है तो तीन सौ आदमियों में से उसके हमराह सिर्फ बारह आदमी थे। बाक़ी सब पीछे रह गए थे।

दरयाऐ रावी उबूर करने के बाद बादशाह ने एक शख़्स से जो सरे राह गुज़रता मिला। दरयाफ़्त किया के सिख कहाँ ठहरे हुए हैं उसने जवाब दिया के तमाम पंजाब के सिखों ने जमा होकर क़िले जंडियाला का मुहासरा कर रखा है जो अमृतसर से सात कोस के फासले पर है। और क़िले में चन्द नानक शाही फक़ीर जो राग़िब अललइस्लाम और मती-उल-इस्लाम हो चुके हैं। महसूर हैं जिनको अज़ान से रोका जाता है और मुहासरे की सख़्ती से उनकी हालत बड़ी ख़तरनाक है। लेकिन वो तर्के अज़ान पर राज़ी नहीं होते हैं। सिखों की तादाद जिन्होंने मुहासरा कर रखा है तिरासी हज़ार है। बादशाह इस ख़बर को सुनते ही जंडियाला की तरफ़ रवाना हुआ। सिखों को ख़बर लगी के शाह दुर्रानी आ पहुँचा है तो वो यकबारगी क़िले का मुहासरा छोड़कर भाग गए। फक़रा नानक शाही ने देखा के सिख बग़ैर किसी हमला किए मुहासरा छोड़ कर भाग गए हैं। तो वो समझे के हम को धोका दिया गया है। के हम ग़ाफिल होकर दरवाज़ा क़िला खोल दें। और वो यकायक क़िले में दाखिल होकर हम पर हमला कर दें। जासूस रवाना हुए और ख़बर लाए के सिखों का दूर दूर तक कहीं नामो निशान नहीं है। मगर दो कोस के फासले पर एक शख़्स क़िबला रू एक दरख़्त के नीचे बैठा हुआ है। दो शख़्स बानात की चादर से उसके ऊपर साया किए हुए हैं। दस आदमी थोड़े फासले पर अपनी बंदूकें ज़मीन पर टेके हुए मौद्दिब और मुसतअद खड़े हैं उस शख़्स के सर पर ताज है ये ख़बर जब उन फुक़रा को पहुँची तो वो समझ गए के ये अहमद शाह दुर्रानी है जो हमारी मदद को पहुँचा है। चुनाँचे ज़मीनदारों की रसम के मुताबिक़ नज़ो नियाज़ और हमराहियों को साथ लेकर सरदार जंडियाला दुर्रानी की हकूमत में हाजिर हुआ। देखा तो बादशाह दुर्रानी तकिया लगाए बैठा है और

Scanned by CamScanner

दो आदमी उसकी ख़िदमत के लिए मौजूद हैं। सरदार जंडियाला आदाब बजा लाकर गौया हुआ के अभी घंटे भर का अर्सा हुआ के सिखों की अफवाज कसीरा ने हमारा मुहासरा कर रखा था। आपकी आमद की ख़बर सुनकर खुद भाग गए हैं और अभी ज़्यादा दूर ना गए होंगे। क़रीब ही होंगे। इसलिए मुनासिब है के हुज़ूर क़िले के क़रीब नुज़ूल इजलाल फ़रमायें। बादशाह ने फ़रमाया के नहीं कोई ख़ौफ का मुक़ाम नहीं। हम यहीं फ़रोकश रहेंगे।

उसके बाद क़िले वालों ने देखा के अफवाज शाही गिरोह दर गिरोह येके बाद दीगरे चली आती हैं शाम के वक़्त वज़ीरे आज़म शाह वली खाँ भी आ पहुँचा। और क़रीबन तीन हज़ार फौज जमा हो गई। वहीं ख़ैमे नसब हुए। सुबह के वक़्त छः हज़ार सवार जमा हो गए। जासूस सिखों की ख़बर लाने के लिए मुतय्यन हुए। शाह वली खाँ ने अर्ज़ किया के हुज़ूर इस तरह उजलत और बे सरोसामानी के साथ तशरीफ़ लाना और फिर दुश्मनों के मुल्क में आना बज़ाहिर मसलेहत के ख़िलाफ था। मैं चाहता हूँ के मुझ को इस सबब से आगाह फ़रमाया जाए। अहमद शाह दुर्रानी ने फ़रमाया के मैंने उस रोज़ आधी रात के वक़्त ख़्वाब में हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा। के मुझ से मुखातिब होकर फ़रमाते हैं के ऐ अहमद शाह दुर्रानी! उठ और पंजाब की तरफ़ जल्द रवाना हो के वहाँ एक गिराह मती इस्लाम को क़स्बा जंडियाला में सिखों ने महसूर कर रखा है और इस गिरोह मती इस्लाम की हालत बहुत नाज़ुक है। मैं उसी वक़्त बैदार हुआ और मैंने ना चाहा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इर्शाद की तामील में एक लमहा का भी ताम्मुल हो। इसीलिए मैं लश्कर के जमा करने और लवाज़िम फौज कशी करने में देर करना मुनासिब नहीं समझा। और महेज़ खुदा तआला के फज़्लो करम पर भरोसा करके रवाना हो गया।

अलकिस्सा दो तीन दिन जंडियाला के क़रीब मुक़ाम किया और फिर सिखों की गोशमाली के लिए रवाना हुआ। और इस काम से फारिग़ होकर अफग़ानिस्तान को वापस चला गया। (याद माज़ी, 114)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हयात-उन्नबी और ज़िन्दा हैं। और क़यामत तक के होने वाले हालात से बाख़बर हैं और आज भी मसायब में घिरे हुओं की मदद फ़रमाते हैं और ये भी मालूम हुआ के अहमद शाह दुर्रानी भी बड़ा खुश क़िस्मत बादशाह था जिसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ख़्वाब में मिले और इस ख़िदमत के लिए उसे मुंतख़िब फ़रमाया।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(566) बेवा की गाय

सुलतान मलिक शाह सलजोक़ी एक मर्तबा असफहान के जंगलों में शिकार खेल रहा था। इत्तिफाक़न उसी दौरान में एक गाँव में उसका क़याम हुआ। शाही ग़ुलामों ने एक मोटी ताज़ी गाय देखी। और लावारिस खयाल करके ज़िबह कर डाली और कबाब बना कर खा गए। वो गाय एक ग़रीब बेवा की थी। जिसके तीन कमसिल बच्चे उस गाय के दूध से परवरिश पा रहे थे। जब बेवा को इस हाल की ख़बर हुई तो सुबह सवेरे ज़िन्दा रोद के पुल पर जो असफहान के क़रीब वाक़े है आ खड़ी हुई। इतनें में सुलतान की सवारी का जलूस इस पुल से गुज़रा। अब बुढ़िया को ताब कहाँ थी। बे ख़ौफी से सुलतान की सवारी के क़रीब पहुँची और निहायत बेबाकी से कहने लगी।

अवालप अरसलान के फ़रज़ंद! तू मेरा इंसाफ यहाँ ज़फदरोद के पुल पर करेगा। या क़यामत में पुल सिरात पर? जो जगह पसंद हो इख़्तियार कर ले।

खुदा तरस सुलतान बेवा की फ़रयाद से ख़ौफ के मारे कांप उठा और बे इख़्तियार घोड़े से उतर पड़ा और बोला।

"बड़ी बी मुझे पुल सिरात की ताब नहीं है मैं तुम्हारा इंसाफ करने के लिए इसी पुल पर तैयार हूँ। क़रीब आकर अपना हाल बयान करो।"

बेवा औरत आगे बढ़ी, सुलतान चित्र शाही के नीचे खड़ा था। उसने अपनी गाय का सारा माजरा कह सुनाया। सुलतान सब हाल सुनकर बोला। मैं तुम्हारी गाय के अवज़ सत्तर गायें देने के लिए तैयार हूँ। अगर तुम राज़ी हो जाओ"।

बेवा औरत को और क्या चाहिए था उसने फौरन रज़ामंदी ज़ाहिर कर दी और सुलतान उसे हर तरह खुश करके वहाँ से रवाना हुआ। (तारीखे इस्लाम, सफ़ा 134)

सबक़:- क़यामत के रोज़ जज़ा से डरना चाहिए। वहाँ हर बात का जवाब देना पड़ेगा और वो लोग बड़े ही आक़बत अंदेश और दाना हैं जो क़यामत की बाज़ पुर्स से बचने के लिए यहीं सामान मोहय्या कर लेते हैं और मज़लूमों की दादरसी करके अपनी आक़बत अच्छी कर लेते हैं और ये भी मालूम हुआ के नेक दिल हाकिम कभी किसी पर ज़ुल्मो सितम नहीं होने देते।

हिकायत नम्बर(567) आलमगीरी अद्ल

हजरत आलमगीर रहमत-उल्लाह अलेह एक रात आराम फ़रमा थे के

Scanned by CamScanner

किसी फ़रयादी ने शाही महल में लटकी हुई ज़ंजीर को हिलाया। ये ज़ंजीर इस मक़्सद के लिए लटकाई गई थी ताके जो फ़रयादी शहनशाह के हुज़ूर कोई फ़रयाद सुनाने आना चाहे वो ज़ंजीर हिला दे ताके शहनशाह को पता चल जाए के कोई फ़रयादी सुनाने आया है।

ज़ंजीर हिली तो हज़रत आलगीर फौरन क़िले के दरवाज़े पर तशरीफ़ ले आए और हुक्म दिया के फ़रयादी को हाज़िर किया जाए।

थोड़ी देर के बाद ज़ईफा को हाज़िर किया गया। ज़ईफा ने आदाब शाही बजा लाने के बाद अर्ज़ किया। हुज़ूर! मैं राम नगर)जो आगरा से 15 मील पर है) से आ रही हूँ। मेरी एक जवान बेटी है। जिसकी मंगनी मेरी खुशी से एक रिश्तेदार से हो चुकी है। गाँव के ज़मीनदार का बेटा मेरी बेटी से शादी करना चाहता है। मैंने इंकार कर दिया है लेकिन अब उसने इरादा कर लिया है के वो ज़बरदस्ती मेरी बेटी को अपनी हवस का शिकार करे। मैं बेवा हूँ, और ग़रीब। और वो ज़मीनदार है। मैं किस तरह उसका मुक़ाबला कर सकती हूँ? हज़रत आलमगीर ने फ़रमाया घबराओ नहीं, उसका इन्तिज़ाम कर दिया जाएगा। ज़ईफा ने कहा। मुझे आज ख़बर मिली है के आज रात वो अपने दोस्तों की मदद से ज़बरदस्ती घर से निकाल कर ले जाएगा। और मुझे यक़ीन है के ऐसा हो जाएगा। मैं ये सुनते ही इधर भागी हूँ और ज़ौफ व पीरी के बाइस बमुश्किल इस वक़्त तक पहुँच सकी हूँ। आप इन्तिज़ाम फ़रमायेंगे मगर बेसूद। जो कुछ होने वाला था हो चुका होगा। या अनक़रीब हो जाएगा।

हज़रत आलगीर ने उसी वक़्त हुक्म दिया के दो घोड़े हाज़िर किए जायें और फिर थोड़ी देर ही में तैयारी करके ज़ईफा से कुछ बातें दरयाफ़्त फ़रमा कर हुक्म दिया के ज़ईफा को इज़्ज़त व असाइश के साथ महल खास में पहुँचा दिया जाए और खुद मुसल्लह होकर और वज़ीरे आज़म को मुसल्लह करके अपने साथ लिया और घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए राम नगर को रवाना हो गए। थोड़ी देर के बाद गाँव के क़रीब ही पहुँचे थे के गुनजान दरख़्तों में से कुछ आदमियों के बोलने की आवाज़ सुनाई दी, दोनों घोड़ों से उतर पड़े और उस तरफ़ हुए क़रीब पहुँचे तो इस क़िस्म की आवाज़ें सुनाई दीं।

एक आवाज़:- देखो ज़िद्दी लड़की, क्यों जान गंवाती हो। अब भी समझ जाओ और मेरा कहना मान लो।

दूसरी मग़मूम आवाज़:- वो! आबरू का सदक़ा जान है। मेरे नज़दीक जान की कोई क़ीमत नहीं।

पहली आवाज़:- मैं जवान हूँ, ज़मीनदार और साहिबे दौलत हूँ।

Scanned by CamScanner

खूबसूरत हूँ। फिर इंकार की वजह।

दूसरी आवाज़:- वजह कुछ भी नहीं। मेरी माता ने आपका पैग़ाम वापस कर दिया। मैं माता की अमानत हूँ।

पहली आवाज़:- हम तुझे जान से मार डालेंगे।

दूसरी आवाज़:- जो परमेशवर की मर्ज़ी

पहली आवाज़:- बादा सिंह व मोरसिंह वग़ैरा पहुँचो। इस आवाज़ को सुनते ही बहुत से नोजवान इधर उधर से निकले ओर ये हुक्म पाकर उसे मारो। उस लड़की पर हमला कर दिया। और क़रीब था के इस बेचारी लड़की को ख़त्म कर दें के शहनशाह आलमगीर अपनी तलवार सूंत कर वहाँ जा पहुँचे और बादल की तरह गरज कर फ़रमाया। ख़बरदार! और फिर बादशाह वज़ीर दोनों ने उन बदमाशों पर हमला कर दिया। ज़मीनदार के गिरोह ने शहनशाह को इस लड़की का होने वाला मंगेतर समझा और दिल खोल कर मुक़ाबला किया। गंवारों की हड़बोंग और लाठियों की बोछाड़ ने शहनशाह और वज़ीर को ज़ख्मी कर दिया। लेकिन इक़्बाल शाही और असफहानी तलवारों की काट ने आख़िर कई एक को मौत के घाट उतार दिया। और कितनों ही के पाँव कट गए बाक़ी माँदा भाग गए।

ज़ख़्मों में चूर शहनशाह ने उस लड़की को जो इस मंज़र को देखकर बेहोश हो चुकी थी। घोड़े की पीठ पर डाला। और पीछे आप बैठ कर वापस रवाना हुए। वज़ीर भी ज़ख़्मों से निढाल हो चुका था। बादशाह इसे भी संभाले हुए आ रहे थे। घढ़याल ने अभी दो ही बजाए थे के शहनशाह आगरा के क़िले में दाखिल हुए और लड़की को उसकी माँ के सपुर्द किया। और उसी वक़्त हकीमों और जर्राहों को तलब फ़रमाया। और उन्हें हुक्म दिया के वज़ीर की मरहम पट्टी की जाए और हमें मरहम पट्टी की ज़रूरत नहीं। ज़ख़्म आप ही अच्छे हो जायेंगे। मर्दान कारी इन बातों की परवाह नहीं किया करते।

सुबह उठकर शहनशाह ने कोतवाल को हुक्म दिया और दोपहर तक राम नगर के ज़ख़्मी और मफरूर तमाम आदमी जिनमें वो ज़मीनदार भी शामिल था हाज़िर कर दिए गए। शहनशाह ने हुक्म फ़रमाया के हमारे वज़ीर की तरफ़ से कोई इसतग़ासा उनकी ज़ात पर नहीं। हम ने अपना जुर्म माफ कर दिया। हाँ इस मज़लूम बुढ़िया और उसकी लड़की पर जो ज़ुल्म हुआ है उसकी हस्बे क़ानून सज़ा दी जाएगी।

ज़ईफा को पाँच सौ अशर्फियाँ आलमगीर अलेह अर्रहमा ने ख़ज़ाने शाही से दिलवाईं और जब उस लड़की की शादी हुई तो शहंशाह उस शादी

Scanned by CamScanner

में शरीक भी हुए। (याद माज़ी, सफ़ा 119)

सबक़:- हज़रत आलमगीर अलेह अर्रहमा बड़े ही खुदा तरस, आदिल और ग़रीबों की हमदर्दी रखने वाले शहनशाह थे और आप बिला इम्तियाज़ मज़हब व मिल्लत मज़लूमों की हिमायत फ़रमाया करते थे और रिआया की ख़बरगीरी व राहत के लिए अपनी नींद तक कुर्बान कर देने वाले थे। और बड़े जवाँमर्द और बहादुर थे।

हिकायत नम्बर(568) सुलतान आलमगीर और एक बहरूपिया

हज़रत आलमगीर अलेह अर्रहमा को एक बहरूपिये ने धोका देना चाहा, बादशाह ने फ़रमाया अगर धोका दे दिया तो जो माँगेगा वो पाएगा। उसने बहुत कोशिश की लेकिन हज़रत आलमगीर ने जब देखा पहचान लिया आख़िर मुद्दत मदीद का भलावा देकर सूफी ज़ाहिद आबिद बनकर एक पहाड़ की खो में जा बैठा। रात दिन इबादते इलाही में मशग़ूल रहता। पहले दीहातियों का हजूम हुआ। फिर शहरियों का फिर उमरा का फिर वुज़रा। सब आते ये किसी तरफ़ इलतिफात ना करता। शुदा शुदा बादशाह तक ख़बर पहुँची सुलतान को अहले अल्लाह से ख़ास मोहब्बत थी। खुद तशरीफ़ ले गए। बहरूपिये ने दूर से देखा। बादशाह की सवारी आ रही है। गर्दन झुका ली और मुराक़बे में मशगूल हो गया। सुलतान मुंतज़िर रहे। देर के बाद नज़र उठाई। और बैठने का इशारा किया। सुलतान मौद्दिब बैठ गए उनका मौद्दिब बैठना था के बेहरूपिया उठा और झुक कर सलाम किया के जहाँ पनाह मैं फलाँ बेहरूपिया हूँ। बादशाह शर्मिंदा हुए और फ़रमाया। वाक़ई इस बार मैं ना पहचान सका। अब माँग जो कुछ माँगना है। उसने कहा। अब मैं आप से क्या माँगूं। मैंने उनका नाम झूटे तौर पर लिया। उसका तो ये असर हुआ के आप जैसा जलील-उल-क़द्र बादशाह मेरे दरवाज़े पर बा अदब हाज़िर हुआ। अब सच्चे तौर पर उसका नाम ले देखूं। ये कहा और कपड़े फाड़े और जंगल को चला गया। (मलफूज़ात अला हज़रत, सफ़ा 60, जिल्द 2)

सबक़:- अल्लाह का नाम लेना बड़ा बाइस बर्कत है और उसकी याद की बर्कत से दुनिया के बड़े बड़े लोग भी खुदाया व हज़रत के दर पर हाज़री देने लगते हैं।

हिकायत नम्बर(569) अशर्फियों की थैली

एक ताजिर हज़रत सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी के पास फ़रयादी हुआ।

Scanned by CamScanner

उसने कहा के मैंने दो हज़ार की बन्द थेली आपके क़ाज़ी को दी थी। के ये मेरा अमानत है अपने पास रखो। मैं सफर से वापस आकर लूंगा। क़ाज़ी ने थेली ले ली और मैं सफर पे चला गया। हमारे क़ाफले पर डाका पड़ा। जिस पर मेरा बाक़ी मांदा सामान भी लुट गया। अब मैं अपनी बन्द थेली आपके क़ाज़ी से वापस लाया हूँ। मगर ये देखिये उसमें अशर्फियों की बजाए पैसे भरे हुए हैं।

मेहमूदः- क्या तुम ने क़ाज़ी से उसकी शिकायत नहीं की?

ताजिरः- जहाँ पनाह! मैं उसके पास गया था। उन्होंने कहा के तुम ने मुझे बन्द थेली दी थी। मैंने बन्द थेली तुझे वापस कर दी है। अलावा अज़ीं तुम ने खुद ही अपनी थेली शनाख़्त की। और कहा था के मेरी थेली यही है और ठीक हालत में है।

मेहमूदः- क्या थेली ठीक हालत में थी?

ताजिरः- जहाँ पनाह! थेली बिलकुल ठीक हालत में थी।

मेहमूदः- ये बड़ी अजीब बात है। अच्छा तुम जाओ और मैं कोई तदबीर करता हूँ। ताजिर की वापसी के बाद सुलतान ने थेली को चारों तरफ़ से देखा वो कहीं से दरीदह ना थी। फिर भी सुलतान इस नतीजे पर पहुँचा के थेली ज़रूर फाड़ी गई है और इसमें अशर्फियाँ निकाल कर पैसे भरे गए हैं। और फिर उसे रफ़ू किया गया है। अब ये मालूम करना चाहिए के शहर में कौन ऐसा रफ़ूगर है जो रफ़ू कर दे तो असल और नक़्ल में फर्क़ में ज़ाहिर नहीं होता। सुलतान जब थेली के मामले पर ग़ौर कर रहा था तो उस वक़्त एक मसनद ज़र निगार पर बैठा हुआ था। यहाँ बैठे बैठे उसने छुरी निकाली और अपनी मसनद को चीर दिया। और फिर उसी वक़्त उठा और तीन दिन के लिए शिकार को चला गया।

थोड़ी देर के बाद फिराश सुलतान के कमरे में दाखिल हुआ। देखा के मसनद खास फटी हुई है इसलिए दारोग़ा को इत्तिला दी। महल के तमाम मुलाज़िम जमा हो गए। उस वक़्त फिराश फर्ते ख़ौफ से कांप रहा था। आखिर एक बूढ़े ने कहा। ऐ दोस्त तुम इस क़द्र डरो मत। तुम अभी अहमद रफ़ूगर के पास जाओ। वो तुम्हें इस मसनद को इस तरह रफ़ू कर देगा के अगर सुलतान सौ मर्तबा भी उसे देखेगा तो शनाख़्त ना कर सकेगा।

फिराश ने मसनद उठाई और रफ़ूगर के यहाँ पहुँच गया।

अहमदः- इसकी उज्रत दो अर्शफी होगी।

फिराशः- चार अशर्फियाँ हाज़िर हैं। मगर तीन दिन से पहले उसे

Scanned by CamScanner

मुकम्मल कर दो ताके सुलतान की आमद से पहले ये तख़्त शाही पर बिछ जाए। और ये समझ लो। के मेरी ज़िन्दगी और मौत का सवाल है। अगर सुलतान ने इसका ऐब पहचान लिया तो फिर मेरी सज़ा मौत होगी।

अहमदः- तौबा करो ऐ दोस्त! अगर सुलतान ने पहचान लिया तो मेरे हाथ कटवा देना। अहमद ने दो दिन में मसनद रफू कर दी। इस तरह तार के साथ तार जोड़ दी के पूरी मसनद एक जान हो गई। फिराश ने उसका शुक्रिया अदा किया। और क़ब्ल उसके के सुलतान वापस आए ये मसनद पूरे इतमीनान के साथ शाही तख़्त पर बिछा दी गई।

सुलतान मेहमूद शिकार से वापस आ गया। उसके कमरे में मसनद बिछी थी। सुलतान ने कई मर्तबा फटी हुई जगह को पहचानने की कोशिश की मगर वो कामयाब ना हो सका।

सुलतानः- फिराश!

फिराशः- जहाँ पनाह हाज़िर!

सुलतानः- ये मसनद फटी हुई थी।

फिराशः- हुज़ूर बिलकुल नहीं।

सुलतानः- कज़ाब! मैंने खुद छुरी से फाड़ी थी (अब फिराश डर के मारे कांपने लगा। सुलतान ने कहा डरो मत! सिर्फ इस रफूगर को बुलाओ जिसने उसे रफू किया था। अहदम रफूगर को दरबार में हाज़िर किया गया।

सुलतानः- ये मसनद तुम ने रफू की है?

अहमदः- हुज़ूर इसी ख़ादिम ने।

सुलतानः- शाबाश! तुम बड़े बा कमाल रफूगर हो।

अहमदः- हुज़ूर का इक़्बाल!

सुलतानः- ये थेली देखो ये तुम ने रफू की थी।

अहमदः- हुज़ूर! हुज़ूर के क़ाज़ी साहब ने उसे रफू कराया था।

सुलतानः- क़ाज़ी को दरबार में हाज़िर करो (क़ाज़ी दरबार में हाज़िर हो गया) सुलतान ने क़ाज़ी से मुखातिब होकर कहा।

"ऐ ज़ालिम तेरे बाल सफेद हैं। मैंने इस शहर की क़ज़ा तेरे सपुर्द की थी और तुझे मख़लूक़ खुदा के जानो माल का मुहाफिज़ बनाया था। क्या मेरे इस एतमाद का यही नतीजा है के मुहाफिज़ व अमीन कहलाए और लोगों के माल में खयानत करे।"

क़ाज़ीः- जहाँ पनाह खयानत के इलज़ाम से पाक हूं। मैंने सुलतान के एतमाद को कभी मजरूह नहीं किया। मेरे मुखालफीन मेरे खिलाफ ग़लत

Scanned by CamScanner

बयानी की है।

सुलतानः- तुम ने इस थेली में अशर्फियों की बजाए पैसे भर दिए और फिर अमानत दार को धितकार दिया।

क़ाज़ीः- जहाँ पनाह! मैं अभी इस थेली को देख रहा हूँ।

सुलतान ने हुक्म दिया, ताजिर और रफ़ूगर दोनों दरबार में हाज़िर हो गए। अब क़ाज़ी अर्क़ नदामत में ग़र्क था। वो सर से पाँव तक कांप रहा था। उसने कई दफा माफी माँगने की कोशिश की मगर अलफाज़ उनकी ज़बान से नहीं निकलते थे। सुलतान ने हुक्म दिया के इस बददियानत को पकड़ लो उस आवाज़ के साथ ही क़ाज़ी ज़मीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

उसी वक़्त दो हज़ार मोहरें लाई गईं और ताजिर के हवाले कर दी गईं। जब क़ाज़ी दरबार से निकला उसका चेहरा सियाह और उसका जिस्म पसीने में ग़र्क़ था। उसके आज़ा कांप रहे थे। तमाम मख़लूक़ उसे देख रही थी और उस पर लानत बरसा रही थी।

क़ाज़ी बड़ी मुश्किल से अपने घर में दाखिल हुआ और अपने बिस्तर पर लेट गया। रात के वक़्त उसके घर वालों ने बहुत कोशिश की के वो कुछ खा पी सके। मगर ग़िज़ा का एक ज़र्रा और पानी का एक क़तरा भी उसके हलक़ से नीचे ना उतर सका। सुबह के वक़्त जब घर के सब लोग बैदार हुए तो क़ाज़ी अपने बिस्तर पर मरा पड़ा था। (माखूज़)

सबक़:- ये दुनयवी दरबार का वाक़ेया है इससे आख़िरत की जवाब दही का अंदाज़ा करना चाहिए। के क़ाज़ी एक जुर्म खयानत का मुरतकिब था। मगर हमारा एक एक बाल जुर्मों और गुनाहों में ग़र्क है। हमारे हाथ मुज्रिम। हमारे कान मुज्रिम, हमारी ज़बान मुज्रिम और आँखें मुज्रिम हैं। हमारे दिल और रूहें मुज्रिम हैं। हम सरापा जुर्म व गुनाह हैं। क़ाज़ी की खयानत पर गवाही देने वाला एक ताजिर था। और रफ़ूगर। मगर हमारे आज़ा अल्लाह की बारगाह में खुद हमारे खिलाफ गवाही दे रहे होंगे। पस हमें अल्लाह के सामने जवाब दही से पहले। अपने जुर्मों की सफाई का इन्तिज़ाम कर लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर(570) वाली-ए-खरासान

वाली-ए-खरासान इसमाईल बिन मोहम्मद फ़रमाते हैं के मैं एक रोज़ समरकंद में दरबारी मामलात व मुक़द्मात की समाअत में मसरूफ था। के यकायक शेख़-उल-इस्लाम आलम रब्बानी हज़रत मोहम्मद बिन नस्र मरोज़ी तशरीफ ले आए। मैं उनको देखकर ताज़ीमन खड़ा हो गया। और अदब से

Scanned by CamScanner

लाकर अपने पास बिठाया। वो कुछ बात चीज करके जब वापस तशरीफ़ ले गए तो मेरे भाई इसहाक़ ने मुझ से फ़रमाया।

तक़ोमू लिरजूलिम मिनर्अय्यती के तुम रिआया के किसी आदमी के आने पर ताज़ीम के लिए खड़े होते हो।"

मक़्सद ये के ये इंकिसारी व खाकसारी वक़ार सलतनत के ख़िलाफ है। वाल-ए-ख़रासान कहते हैं के उसी रात मैंने ख़्वाब में देखा के हुज़ूर सरवरे दो आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए हैं और मेरा बाज़ू पकड़ कर मुझ से फ़रमाते हैं।

सब्बित मुलकाका व मुल्का बनीका बिइजलालिका मोहम्मदिब्नी नस्र तुम्हारी और तुम्हारी औलाद की सलतनत मोहम्मद बिन नस्र की ताज़ीम व तकरीम के सबब से दायम अलसबूत कर दी गई है। और तुम्हारे भाई इसहाक़ का मुल्क अनक़रीब छिन जाएगा। क्योंके उसने मोहम्मद बिन नस्र की तख़फीफ की है। (तज़करत-उल-हफ़्फाज़, सफ़ा 203, जिल्द 1 व तहज़ीब-उल-असमा, सफ़ा 93, जिल्द 1)

सबक़:- मालूम हुआ के उलमा व औलिया की ताज़ीम व तकरीम से खुदा और रसूल की खुशनूदी हासिल होती है। और ये भी मालूम हुआ के किसी मक़्बूले हक़ के लिए क़याम ताज़ीमी करना जायज़ है। बल्के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की रज़ा व खुशनूदी का मौजिब है। फिर अगर ख़ुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ताज़ीम व तकरीम के लिए क़याम किया जाएगा तो क्यों ना हुज़ूर भी खुश होंगे। और खुदा भी खुश होगा। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हर फैल का आज भी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को इल्म हो जाता है। और ये भी मालूम हुआ के उलमा व औलिया की तख़फीफ व तौहीन से खुदा नाराज़ होता है और हकूमतें भी छिन जाती हैं।

असल हदीस: लोगों के तर्जुमान हफ़्त रोज़ा अख़बार अलअतसाम लाहोर ने भी अपनी 15 जनवरी 1960ई० की इशाअत में ये हिकायत दर्ज की है। देखिये, सफ़ा 6।

"पस ये भी मालूम हुआ के शऊरी या ग़ैर शऊरी तौर पर हज़रत अहले हदीस ने भी इस अम्रे हक़ का एलान फ़रमा दिया है। के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ज़िन्दा हैं, हमारे आमाल से बा ख़बर हैं। और क़याम तअज़ीमी से खुश होते हैं। और उन पाक लोगों की तख़फीफ से खुदा नाराज़ होता है।"

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(571) सिकंदर और चीन की शहज़ादी

सिकंदर रूमी जिस वक़्त फतूहात हासिल करता हुआ मुल्क चीन तक पहुँचा तो चीन की शहज़ादी ने पहले से सिकंदर की तसवीर उतरवा कर मंगा रखी थी और इसी वजह से शहज़ादी सिकंदर को पहचानती थी। सिकंदर ने फौज को शहर से बाहर ठहराया। खुद लिबास बदल कर फक़ीर बनकर शहर के अन्दर दाखिल हुआ और शाही महल तक पहुँचा। शहज़ादी ने फक़ीर को देखकर पहचान लिया के ये फक़ीर सिकंदर बादशाह है। हुक्म दिया के इस फक़ीर को गिरफ़्तार करके तीन दिन तक क़ैदखाने में रखो और एक दाना खाने को ना दो। चुनाँचे ऐसा ही किया गया। चौथे रोज़ शहज़ादी ने सिकंदर को क़ैदखाने से तलब करके अपने सामने बिठा कर लाखों रुपया के मोती और जवाहरात उसके सामने रखे और कहा के ये खा लीजिए। मगर सिकंदर ने भूक की शिद्दत से इस तरफ़ निगाह भी ना की। उसके बाद शहज़ादी ने जौ की रोटी सिकंदर के सामने रखी। वो रोटी खा कर सिकंदर ने पानी पिया। तब शहज़ादी ने कहा के इन बैश क़ीमत जवाहरात की तरफ़ आपने तवज्जह ना फ़रमाई और ये आपको बेकार नज़र आए। तो ऐ बादशाह! ऐसी बेकार चीज़ के लिए क्यों दुनिया को क़त्ल करता और तबाह करता फिरता है। जा क़िनाअत इख़्तियार कर। ये नसीहत सुनकर सिकंदर ने मुल्क चीन से फौज को हटा लिया। (सीरत-उल-सालेहीन)

सबक़:- सिर्फ तीन रोज़ के क़ैदखाने की तकलीफ ने करोड़हा रुपया के जवाहरात को बेकार कर दिया और सिर्फ जौ की रोटी का एक टुकड़ा काम आया। इसी तरह एक रोज़ क़ब्र के क़ैदखाने में ये सब दुनयवी जाह व जलाल और ये जौ की रोटी वग़ैरा भी सब कुछ बेकार हो जाएगा और वहाँ सिर्फ नेक आमाल ही कारआमद होंगे...

कहा अहबाब ने ये दफ़्न के वक़्त
के हम क्यों कर वहाँ का हाल जानें
लहद तक आपकी ताज़ीम कर दी
अब आगे आपके आमाल जानें

हिकायत नम्बर(572) सिकंदरे आज़म और एक क़ज़्ज़ाक़

सिकंदरे आज़म के सामने एक दफा एक क़ज़्ज़ाक़ पेश किया गया जिसकी लूट मार से सारे मुल्क में आफत मच रही थी। ये शख़्स बड़ी मुश्किल

Scanned by CamScanner

से गिरफ़्तार किया गया। सिकंदर के साथ उसकी हस्ब ज़ैल दिलचस्प गुफ़्तगू हुई।

सिकंदरः- हैं! क्या तू थिरैस का क़ज़्ज़ाक़ है? जिसकी लूट मार का मुल्क भर में चर्चा है।

क़ज़्ज़ाक़ः- मैं थिरैस का बाशिन्दा और एक सिपाही हूँ।

सिकंदरः- सिपाही नहीं बल्के चोर, लुटैरा, क़ज़्ज़ाक़ और क़ातिल। मुल्क के लिए आफत, मैं तेरी जुर्रात की दाद देता हूं। मगर तुझ से नफरत भी करता हूँ। और तुझे तेरे जुर्मों की सज़ा भी दूंगा।

क़ज़्ज़ाक़ः- आख़िर मैंने क्या किया। जिसकी आपको शिकायत है।

सिकंदरे आज़मः- क्या तूने मुल्क के अमन में खलल नहीं डाला। मेरी रिआया के जानो माल को नुक़्सान पहुँचाने में सारी उम्र नहीं गुज़ारी?

क़ज़्ज़ाक़ः- सिकंदर इस वक़्त मैं आपका क़ैदी हूँ। जो बात आप कहें उसका सुनना और जो सज़ा दें उसका सहना मेरे लिए ज़रूरी है। मगर मेरी रूह पर आपकी कोई हकूमत नहीं। अगर मुझे आपकी बात का जवाब देना पड़ा तो एक आज़ाद आदमी की तरह जवाब दूंगा।

सिकंदरः- जो कहना हो आज़ादी से कहो मैं ऐसा नहीं हूँ के अपनी हकूमत के ज़ोम में किसी को बोलने से रोक दूं।

क़ज़्ज़ाक़ः- मैं आपकी बात का जवाब देने से क़ब्ल एक और सवाल करना चाहता हूँ। ये तो बताईये के आपने अपनी ज़िन्दगी क्यों कर गुज़ारी?

सिकंदरः- एक बहादुर आदमी की मानिंद, शौहरत आम से पूछो वो तुम को बताएगी के मैं बहादुरों में सबसे बढ़कर ताक़तवर फतहमंद हूँ।

क़ज़्ज़ाक़ः- और क्या यही बातें "शौहरत आम" मेंरी बाबत नहीं कहतीं। क्या कोई कपतान मुझ से बहादुर हुआ है? जिसके पास मेरी फौज से बढ़कर बहादुर फौज रही हो। क्या कभी कोई (कहते कहते रूक गया और फिर बोला) मुझ ग़रूर शेखी से नफरत है। आप खुद जानते हैं के मैं आसानी से आपके बस में नहीं आया।

सिकंदरः- ख़ैर फिर भी तो क़ज़्ज़ाक़ ही है। एक कमीना बेईमान क़ज़्ज़ाक़!

क़ज़्ज़ाक़ः- और फातेह कौन होता है? क्या आप दुनिया में भूत बला की तरह इधर उधर घूमते नहीं रहे। क्या आपने अमनो आसायश और सनत व हर्फत के उम्दा उम्दा समर बर्बाद नहीं किए। क्या आप हकूमत की भूक को सैर करने के लिए जो कभी सैर होने वाली नहीं, बग़ैर क़ानून और बग़ैर

Scanned by CamScanner

इंसाफ के तबाही व बर्बादी और क़त्ल व ग़ारत नहीं करते रहे? जो काम मैंने सौ हमराहियों की मदद से सिर्फ एक ज़िले में किया है वो काम आप ने लाखों आदमियों की मदद से क़ौमों की क़ौमों के साथ किया है। अगर मैंने मामूली आदमियों को लूटा है तो आपने बादशाहों और शहज़ादों को तबाह किया है। अगर मैंने चन्द घरों को जलाया है तो आपने निहायत आबाद सलतनतों को बर्बाद किया है। और दुनिया के निहायत सर सब्ज़ शहरों को खाक में मिलाया है। फिर मुझ में और आपमें इसके सिवा क्या फर्क है के आप एक बादशाह के घर में पैदा हुए। और मैं एक मामूली आदमी के घर में और इसी लिए आप मुझ से ज़्यादा क़वी क़ज़्ज़ाक़ बन गए।

सिकंदर:- बड़ा फर्क है, ज़मीन व आसमान का फर्क़ है। मैंने बादशाह तरह लिया और बादशाह की तरह दिया। अगर मैंने सलतनतों को तहे व बाला किया है तो उनसे भी ज़्यादा अज़ीम-उश्शान सलतनतों की बुनियाद रखी। इल्मो फन और फलसफे की तरक़्क़ी दी।

क़ज़्ज़ाक़:- मैंने भी जो कुछ अमीरों से लिया, ग़रीबों को मुफ़्त दिया। मैंने निहायत खूंख़्वार इंसानों में बाक़ायदगी और इन्तिज़ाम क़ायम किया। और मज़लूमों पर दस्त हिफाज़त बढ़ाया। बेशक जिस इल्म व फलसफा का आप ज़िक्र करते हैं उसको मैं नहीं जानता मगर इतना ज़रूर जानता हूँ के जो नुक़्सान दुनिया को हम ने पहुँचाए हैं ना मैं पूरा कर सकता हूँ ना आप!

सिकंदर:- उसकी ज़ंजीरें खोल दो। और उसके साथ अच्छा सलूक करो। क्या हम एक दूसरे से इस क़द्र मुशाबह हैं? सिकंदर और क़ज़्ज़ाक़ दोनों यक्साँ हैं मैं ज़रा इस बात को सोच लूं (माखूज़)

सबक़:- जो बादशाह अपना शुग़्ल जंग व जिदाल और लूट खसूट रखे उसमें और क़ज़्ज़ाक़ व डाकू में कोई फर्क़ नहीं।

हिकायत नम्बर(573) सुलतान मेहमूद और एक हासिद

एक दिन मेहमूद से हासिद कोई
चुग़ली खाता था अयाज़ नेक की
यूं लगा कहने के ये मक्कार है
उससे रहना बाख़बर ग़द्दार है
ज़ाहिरन करता है जाँ तुझ पर फिदा
बातिनन उसको नहीं उल्फत ज़रा

Scanned by CamScanner

बन्दा-ए-ज़र है लगी है उसको लो
जमा हो जायें ख़ज़ाने। नौ-ब-नौ
सिम्त शिर्की में जो हुजरा है फलाँ
रात को जाता बिला नाग़ा है वाँ
हुजरा देखोगे ना एक दम भी खुला
उसको रखता है मुक़फ़्फ़िल ये सदा
हो प्यारा उसका कैसा ही कोई
उसको ले जाता नहीं अन्दर कभी
दिल को है मेरे यक़ीन ये ना सिपास
जमा रखता है ख़ज़ाना बे क़यास
बादशाह सुनकर ये हैराँ रह गया
हुक्म एक सरदार को फौरन दिया
जा अभी और क़ुफ़्ले हुजरा तोड़ के
हाँ उठा ला जो वहाँ तुझ को मिले
वो गया और हुक्म की तामील की
शेह के आगे ला के एक गठरी रखी
इतनें में दरबार के अरकान सब
आ गए थे मुल्क के अयान सब
बादशाह ने क़िस्सा कुल करके बयाँ
ये कहा खोलो जो है उसमें नेहाँ
खोली गठरी देखते हैं उसमें क्या
घास की पापोश कम्बल की क़बा
थीं पुरानी जूतियाँ टूटी हुई
और क़बा पर तेह चढ़ी थी मैल की
शेह ने फ़रमाया के ऐ मेहर जहाँ
हैं ये चीज़ें क्या तू कर उनका बयाँ
दस्त बस्ता अर्ज़ की उसने शहा
थी यही पोशाक जब घर से चला
देखता हूँ उसको हर रोज़ एक बार
ता ना भूलूं अपना मैं असल व तबार
मेहरबानी शेह की उनको देखकर
सौ गुनी आती है आँखों में नज़र

Scanned by CamScanner

रह गए जितने थे हासिद सुनके सुन
चुप हुए मुंह से ना निकला कुछ सुख़न

(दरमंज़ूम, सफ़ा 122)

सबक़:-

जाह व इज़्ज़त दूसरे की देख कर
दिल में आए कुछ तिरे ग़ैरत अगर
तू भी उसको देखकर कोशिश करे
ताके उस सा साहब इज़्ज़त बने
रश्क है ये नहीं आदत बुरी
रश्क करने में ना कर हरगिज़ कमी
गर तू चाहे उसकी नअेमत का ज़वाल
ये हसद है उसको तो दिल से निकाल
ये बुरी आदत है उसको तर्क कर
कर दिए बर्बाद उसने घर के घर
कुछ ना उसमें हाथ तेरे आएगा
नेकियाँ तेरी हसद खा जाएगा!

हिकायत नम्बर(574) अमीर अब्दुर्रहमान अमीर काबुल का एक फैसला

ज़िला पिशावर के दो शिराकती इस ग़र्ज़ से काबुल गए ताके वहाँ गोश्त की तिजारत करें। क़लील अर्से में उन्होंने दो तीन हज़ार रूपया कमा लिया। और अपने वतन आने का इरादा किया, दोनों शिराकती अपने मुनाफे की रक़म साथ लेकर अपने वतन की तरफ़ चल पड़े। जलाल आबाद के क़रीब पहुँचकर उन्होंने एक नाबीना गदागर को देखा, जो रास्ते के किनारे एक बड़े दरख़्त के नीचे ये सदा लगा रहा था।

"अफसोस गर्दिश दौराँ ने सब कुछ छीन लिया। हत्ता के आँखों की नज़र भी छीन ली। क्या ही अच्छा हो। अगर फिर एक मर्तबा हथैली पर रुपया रखने का मौक़ा मयस्सर आ जाए।"

बार बार वो गदागर यही जुमले दौहराता था। दोनों शिराकती उसके क़रीब पहुँच गए। और गदागर से दरयाफ़्त किया। भाई! तुम ज़माने की गर्दिश से नालाँ क्यों हो? नाबीना गदागर ने कहा मैं इस इलाक़े में मुमताज़ शख़्सीयत

Scanned by CamScanner

का मालिक था। मेरी बहुत सी जायदाद थी। लेकिन क़िस्मत ने पलटा खाया। के मेरी आँखों की बीनाई भी साथ लेती गई। मुझे इस बात का बहुत शौक़ है के इस मुफलिसी में अगर अपना नहीं तो दूसरे का कमाया हुआ नक़द रुपया उन हाथों में एक लम्हा के लिए रखकर अपने दिल को तसकीन दूं। ये था वो माजरा जो गदागर ने उनको सुनाया।

उन्होंने ये फैसला करते हुए मुनासिब समझा। के ये एक नाबीना गदागर है। जाएगा कहाँ? अपने रुपों की थेली उसको एक लम्हा के लिए देने में क्या हर्ज है। उसके दिल में अगर यही ख़्वाहिश है तो वो भी पूरी हो जाए। एक ने रुपों की वो थेली गदागर के हाथ में देते हुए कहा, लो भाई फक़ीर! अपनी तमन्ना पूरी कर लो।"

गदागर ने थेली लेते हुए उनका शुक्रिया अदा किया। थोड़ी देर बाद उनमें से एक ने कहा।

"भाई गदागर! अब हम को हमारी रुपों की ये थेली वापस कर दो, लेकिन गदागर ने कमाल संजीदगी से जवाब दिया, थेली! थेली! कैसी थेली? वापस कैसे ये क्या है? दूसरे साथी ने गदागर से कहा।"

"मज़ाक़ मत करो, थेली जल्दी वापस कर दो, हमें दूर जाना है। मगर गदागर थेली वापस करने से इंकार कर दिया। शिराकती हैरान हुए। अजीब मुसीबत में फंस गए।"

गदागर ने कहा। मैंने तमाम उम्र यहाँ बैठे बैठे गुज़ार दी है। पैसा पैसा जमा किया। तुम कहाँ से बदबख़्त डाकू यहाँ पहुँच गए। जो मेरी सारी उम्र की कमाई ऐसी आसानी से छीन लेना चाहते हो।

शिराकतियों ने जब गदागर के ये अलफाज़ सुने तो हवास बाख़्ता हो गए। गदागर उठ कर चलने लगा। तो दोनों ने अपना रुपया उससे ज़बरदस्ती छीन लेने की कोशिश की। लेकिन गदागर ने ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया। डाकू, डाकू, कोई मदद को पहुँचे। पास ही बस्ती थी। वहाँ के लोग जाए वक़ू पर पहुँच गए। और हर दो शिराकतियों को डाकू खयाल करते हुए गिरफ़्तार कर लिया। दोनों ने हर चन्द कोशिश की के वो देहाती उनकी बात का एतबार कर लें। लेकिन बेसूद बस्ती के लोगों ने ये तजवीज़ मंज़र की के इन डाकूओं को बादशाह के दरबार में हाज़िर करें और उनकी गिरफ़्तारी के सिले में ईनाम हासिल करें। चुनाँचे दोनों को बमअे गदागर बादशाह के दरबार में हाज़िर किया गया।

अमीर अब्दुर्रहमान अदालत की कुर्सी पर मुतमकिन थे। दरबारी हाज़िर

Scanned by CamScanner

थे। बादशाह ने पहले गदागर का बयान सुना और फिर मुलज़िमों की दास्तान मज़लूमी सुनी। और फिर हुक्म दिया के एक कड़ाही ले आओ। और उसमें पानी डाल कर खूब गर्म करो। ये सुनते ही दोनों शिराकती बिचारे सहम गए। इस दर्दनाक तरीक़े से अपनी मौत का खयाल करने लगे। उनकी आँखों में अंधेरा अच्छा गया। कड़ाही लाई गई। पानी डाल कर खूब गर्म करके हुक्म का इन्तिज़ार होने लगा। बादशाह ने गज़बनाक होकर कहा। लाओ वो रुपों की थेली खोल कर पानी में डाल दो। फौरन तामील हुई। बादशाह ने फिर कहा। कड़ा ही सब दूर हट जाओ। चुनाँचे सब अलेहदा हो गए। बादशाह मसनद इंसाफ से उठा। और कड़ा ही के पास आकर गर्म पानी की सतह बग़ौर देखकर वापस चला गया। हुक्म हुआ, कड़ाही का पानी गिराकर रुपया शिराकतियों के हवाले कर दिया जाए। जो थोड़ी देर क़ब्ल अपनी मौत का इन्तिज़ार कर रहे थे। अब खुशी के मारे फूले ना समाते थे। जो थोड़ी देर क़ब्ल अपनी मौत का इन्तिज़ार कर रहे थे। अब खुशी के मारे फूले ना समाते थे। बादशाह ने फ़रमाया। नाबीना गदागर को मुनासिब सिज़ा दी जाए। लोगों में चैह मेगोयाँ शुरू हो गईं। क़ाज़ी ने जुर्रात करते हुए फैसले की तफसील सुनने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। बादशाह ने फ़रमाया जिन दो शख़्सियतों को मुलज़िम ठहराया जाता था। दरहक़ीक़त वो बिलकुल बे गुनाह थे। उन्होंने गोश्त फ़रोख़्त करके रुपया जमा किया था। क्योंके गर्म पानी की सतह पर चर्बी के पिघले हुए ज़र्रात ज़ाहिर हुए। जिससे ये ज़ाहिर हुआ के उन गोश्त फ़रोशों के हाथ का मेल है जो उनके हाथों पर गोश्त की चर्बी की वजह से पड़ता था। वो रुपों को भी लग गया होगा तजुर्बा किया जो सही निकला। बादशाह के इस फैसले से हाज़्रीने दरबार बेहद खुश हुए।

हिकायत नम्बर(575) अदालते इस्लाम

बनाया खाना खुदा इक खजिंदी ने!
बहुक्म हज़रत सुल्तान मुराद ज़ी सतवत
मगर पसंद नहीं आई शाह को तामीर
अगरचै सिर्फ की मोअम्मार ने बहुत सनअत
दिया ये हुक्म शहनशाह शेर ख़सलत ने
के हाथ क़तअे हो मोअम्मार का पए इब्रत
ग़रीब राज के बे दस्त हो गया था वो
गया जनाब मैं क़ाज़ी की अब बाईं हालत

Scanned by CamScanner

कहा के ज़ुल्म किया आह मुझ पर सुलतान ने!
बिला गुनाह मिरे सर पर ढाई है आफत
तवक़्क़ो आप से इंसाफ़ की मगर है मुझे
के आप फज़्ल खुदा से हैं हामिले मिल्लत
तलब किया गया दार-उल-क़ज़ा मैं अब सुल्ताँ
खड़ा था रूबरू क़ाज़ी के ताक़ थी ताक़त
डरा रही थी उसे बस सियासत कुराँ
बदन पर लरज़ा था और थी ज़बान पर लुकनत
किया जवाब तलब जब के उससे क़ाज़ी ने
कहा ये शेह ने हुआ जुर्म मुझ से या हज़रत
मैं मुनफइल हूँ जिसारत पे अपनी लेकिन अब
हक़ीक़तन हूँ मैं ख़ाती व मुज़्रिमे मिल्लत
मगर निकाल के आँखें कहा ये क़ाज़ी ने!
क़सास तुम से लिया जाएगा पए इब्रत
के बन्दा मौला बराबर हैं हुक्म क़ुरआन से
नहीं है ताज की इस्लाम में कोई क़ीमत
सुनी ये बात जो सुल्तान अद्ल परवर ने
निकाला हाथ पए क़त्ल अब बायें सतवत
मगर ये देख के चिल्लाया मुद्दई फी अल फौर!
के खूरेज़ी नहीं मेरा मुद्दा हज़रत
माफ करता हूँ सुल्ताँ को मैं बराए खुदा
के इन्तिक़ाम मैं पाता नहीं हूँ कुछ राहत
ग़र्ज़ के फतह हुई इस तरह ख़जिंदी की!
शेह मुराद की गर्दन झुकी ब ईं शौक़त

सबक़:-

ये अद्ल वो है के इस्लाम जिस पे नाज़ाँ है
ये वो जनाब है झुकता है याँ सरे नखुव्वत

Scanned by CamScanner

दसवाँ बाब

मुख़्तलिफ हिकायात

हिकायत नम्बर(576) मौलूद शरीफ

हज़रत शाह वली-उल्लाह साहब मोहद्दिस देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह अपने वालिद माजिद हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रहमत-उल्लाह अलेह के मुतअल्लिक़ फ़रमाते हैं के हज़रत शाह अब्दुर्रहमी मोहद्दिस देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह मौलूद शरीफ के दिनों हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मोहब्बत और हुज़ूर से ताल्लक़ पैदा करने के लिए हर साल खाना पकाया करते थे। एक साल उन्हें कुछ मयस्सर ना आया। जिससे खाना पकाते। सिर्फ भुने हुए चने मिल सके। हज़रत शाह साहब ने वही चुने मौलूद शरीफ के दिन तक़सीम कर दिए। फिर आपने ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा के आपके आगे वही भुने हुए चने रखे हैं। और आप ऐसे खुश हैं के चेहरा अनवर से बशाशत ज़ाहिर हो रही है। (अद्दर अलसमीन फी मुबश्शरात-उन्नबी अलअमीन बाईसवीं हदीस)

सबक़:- साल बसाल मौलूद शरीफ करना और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मलीादे पाक की खुशी में हस्बे तौफीक़ कुछ तक़सीम करना बिदअत नहीं है। बल्के बड़े बड़े बुज़ुर्गों और वलियों का ये तरीक़ा है। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मीलाद पाक की खुशी मनाने से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम खुश होते हैं।

हिकायत नम्बर(577) शहीद ज़िन्दा हैं

हज़रत फारूक़े आज़म(र०अ०) के ज़माने में चन्द मुजाहिदीन मैदाने जिहाद में दुश्मन की गिरफ़्त में आ गए। और काफिर बादशाह के रूबरू पेश किए गए। काफिर बादशाह ने उनसे कहा के सलाम छोड़कर मेरे दीन में आ जाओ। वरना क़त्ल कर दिए जाओगे। मुजाहिदीन ने जवाब दिया। के जान जाए तो जाए। मगर खुदा करे के ईमान ना जाए। कुछ भी करो, मगर दामने इस्लाम ना छोड़ा जाएगा। ज़ालिम काफिर ने सबको शहीद कर दिया। मगर एक मुजाहिद को क़त्ल ना किया। और दोबारा उसे इस्लाम छोड़ने पर मजबूर किया। तरह तरह के लालच दिए। मगर उस मर्दे मुजाहिद ने उसके जुमला

Scanned by CamScanner

ईनामात को ठुकराते हुए इस्लाम पर क़ायम व दायम रहने का एलान किया। हत्ता के काफिर बादशाह ने उसे जेल में भिजवा कर इस्लाम से बरगश्ता करने की ये तरकीब की के एक खूबसूरत लड़की जेल में ये कहकर भेज दी के अपने हुस्नो जमाल के जाल में उसे फंसा कर इस्लाम से उसे फिराओ। वो लड़की गई तो मर्दे मुजाहिद ने उसकी तरफ़ तवज्जह तक ना की और क़ुरआन की तिलावत में मशग़ूल हो गया। और जब मोहम्मद-उर-रसूल-उल्लाह वल्लज़ीना मआहू तक पहुँचा तो लड़की रोने लगी। और कहने लगी। मुझे मुसलमान कीजिए। मुसलमान होकर फिर इसी लड़की की तरकीब से ये दोनों रातों रात जेल से फ़रार हो गए। और ज़ालिम बादशाह की ममलिकत से बहुत दूर पहुँच गए। सुबह हुई तो उन्होंने चन्द घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी। डर गए। के शायद ज़ालिम बादशाह ने पीछा करने के लिए अपने आदमी भेज दिए हें जब सवार क़रीब आए। तो क्या देखते हैं के ये वही मुजाहिदीन हैं जिन्हें एक दिन पहले बादशाह ने शहीद कर दिया था। उन मुजाहिदीन ने कहा के भाई! हमें मुर्दा ना जानियो। हम ज़िन्दा हैं और इस बहन के इस्लाम लाने पर मुबारकबाद देने आए हैं। और बशारत हो के ये तुम्हारे निकाह में आएगी। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफा 163, जिल्द 1)

सबक:- अल्लाह की राह में जानें देने वाले अब्दी ज़िन्दगी पा जाते हैं और वो मुर्दा नहीं होते बल्के ज़िन्दा होते हैं और शहीदों को ये ज़िन्दगी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ग़ुलामी से और हुज़ूर की बदौलत मिलती है। फिर खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम क्यों हयात-उन्नबी ना होंगे? नहर का पानी से भरपूर होना दलील है इस बात की दरया में पानी बकसरत मौजूद है। और अगर कोई नहर को तो पानी से भरपूर माने। और दरया को पानी से खाली और खुश्क बताए। तो उसके बे वकूफ होने में क्या शुबह है। पस इसी तरह शहीद जो बहरे मोहम्मद की नहरें हैं जब उनमें ज़िन्दगी पाई जाती है तो बहरे मोहम्मदी में यक़ीनन आबे हयात मौजूद है। फिर जो शख़्स शहीद को तो ज़िन्दा माने और हुज़ूर सल-लल्लाहाहे तआला अलेह व सल्लम को मर कर मिट्टी में मिल जाने वाला बताए उसकी जहालत में क्या शुबह हो सकता है। और ये भी मालूम हुआ के मर्द मोमिन जान पर बन जाए तो बन जाए मगर वो अपना ईमान कभी नहीं छोड़ता।

हिकायत नम्बर(578) गाय की बछेरी

बनी इस्राईल के ज़माने में तीन नामी ग्रामी क़ाज़ी थे। जिनकी खुदा ने

Scanned by CamScanner

जाँच करना चाही। और दो आदमियों को भेजा जिनमें एक तो घोड़ी पर सवार था जिसकी बछेरी उसके साथ थी। दूसरा गाय पर सवार था। गाय वाले ने घोड़ी के बछेरी को बुलाया। और वो उसके साथ लग गई। इस पर घोड़ी सवार बोला, के बछेरी घोड़ी की है। दूसरा बोला, नहीं, ये मेरी गाय की है। इस पर दोनों झगड़े हुए एक क़ाज़ी के पास पहुँचे। और दोनों ने अपने दावे के सबूत में दलीलें पेश कीं। मगर गाय वाले ने पहले से क़ाज़ी की मुट्ठी गर्म कर दी थी। और रिश्वमत के तौर पर उनकी जैब में एक काफी रक़म डाल दी थी। जिसका असर ये हुआ के क़ाज़ी साहब ने फैसले में ये लिखा के बछेरी गाय की है। फिर ये दोनों अदालत से निकल कर दूसरे क़ाज़ी के मेहकमा में गए और उन्हें भी रिश्वमत देकर गाय वाले ने अपने ही हक़ में फैसला लिखवा लिया फिर इन दोनों ने तीसरे क़ाज़ी की अदालत में अपना मुक़दमा पेश किया। जिसके जवाब में क़ाज़ी साहब बोले के मुझे हैज़ आ रहा है। हैज़ से फ़राग़त के बाद तुम्हारा मुक़दमा सुनूंगा। इस पर दोनों हैरत से बोले, भला मर्दों को भी कहीं हैज़ आता है? इस पर नेक निहाद क़ाज़ी ने बरजस्ता कहा भला गाँय भी बछेरी जन सकती हैं? (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 76, जिल्द अव्वल)

सबक़:- रिश्वत के ज़ोर से खिलाफ अक्ल भी फैसले कराए जा सकते हैं और जो नेक निहाद और सच्चे क़ाज़ी और जज हैं वो किसी वक़्त भी इंसाफ का दामन हाथ से नहीं छोड़ते।

हिकायत नम्बर(579) इंसाफ

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने एक दफा अल्लाह से अर्ज़ किया। इलाही! मुझे अपने अद्लो इंसाफ का कोई नमूना दिखा। फ़रमाया, अच्छा फलाँ मुक़ाम की तरफ़ चले जाओ। वहाँ हमारे इंसाफ का नमूना देख लोगे। मूसा अलेहिस्सलाम उस मुक़ाम की तरफ़ चले गए। जहाँ चन्द दरख़्तों के झुंड थे। और पानी का साफ और सुथरा चश्मा बेह रहा था। आप इन दरख़्तों में छुप कर बैठ गए के एक घुड़ सवार आया और चश्मे से थोड़ा सा पानी पिया। और एक हज़ार अशर्फियों की थेली वहीं भूल कर चला गया। इतने में एक कमसिन लड़का वहाँ आया। और थेली उठाकर चलता बना। उसके बाद एक अंधा शख़्स आया। और चश्मे से वज़ू करने लगा। मगर सवार जब थोड़ी दूर पहुँचा तो उसे थेली याद आई। तो फौरन पलट कर चश्मे पर आया। और अंधे से पूछा। उसने कहा। मुझे

Scanned by CamScanner

कोई ख़बर नहीं। मैंने कोई थेली नहीं उठाई। उस पर सवार को ग़ुस्सा आया। और उसने अंधे को क़त्ल कर दिया। मूसा अलेहिस्सलाम ये सब माजरा देख रहे थे। अल्लाह ने वही भेजी के मूसा! ताज्जुब की कोई बात नहीं। कमसिन लड़के ने अपना हक़ पा लिया। क्योंके घोड़े सवार ने उस लड़के के बाप से हज़ार अशर्फियाँ ज़ुलमन छीनी थीं। और अंधे ने सवार के बाप को ना हक़ क़त्ल कर डाला था। तो हर एक हक़दार को हक़ मिल गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 104, जिल्द 2)

सबक़:- खुदा की हर बात में कोई ना कोई हिकमत ज़रूर होती है और बाज़ अवक़ात किसी अच्छे वाक़ये को हम अच्छा नहीं समझते। लेकिन उसमें यक़ीनन कोई राज़ मुज़मिर होता है।

हिकायत नम्बर(580) बदला

किसी शहर में एक बहिश्ती रहता था। जो एक सुनार के घर में पानी भरा करता था। और उसे पानी भरते हुए तीस साल का अर्सा हो गया था। उस सुनार की बीवी बड़ी खूबसूरत थी। और जिस क़द्र खूबसूरत थी उसी क़द्र नेक और पारसा भी थी।

एक रोज़ वो बहिश्ती पानी भरने को आया। तो उसने सुनार की बीवी का हाथ पकड़ लिया। और उसे अपनी तरफ़ खींचा। इस औरत ने बमुश्किल हाथ छुड़ाया। और अन्दर जाकर दरवाज़ा बन्द कर लिया। थोड़ी देर के बाद सुनार घर आया। तो उसकी बीवी ने उससे पूछा, के आज दुकान पर कौन सा काम आपने खुदा की रज़ा के खिलाफ किया है? सुनार बोला, के आज एक औरत के हाथ में कंगन पहनाते हुए मुझे उसका बाज़ू बड़ा खूबसूरत नज़र आया। तो मैंने उसका हाथ पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचा था बस यही लग़ज़िश मुझ से वाक़े हुई है। बीवी बोली! तो अब मालूम हुआ के तुम्हारे बहिश्ती ने आज मेरा हाथ क्यों पकड़ कर खींचा था। सुनार ने सारा वाक़ेया सुना तो कहने लगा मैं अपनी ग़लती से तौबा करता हूँ। खुदा मुझे माफ करे। दूसरे रोज़ वो बहिश्ती आया। और कहने लगा, कल वाली ग़लती से मैं तौबा करता हूँ। खुदा मुझे माफ करे। सुनार की बीवी ने कहा। मियाँ बहिश्ती जाओ! इसमें तुम्हारा कोई क़सूर ना था। ये तो मेरे मियाँ ही का क़सूर था। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 99, जिल्द 2)

सबक़:- हमारे बाज़ गुनाहों का कुछ बदला यहाँ भी मिल जाता है। और गुनाह की नहूसत अपना रंग लाए बग़ैर नहीं रहती और जो कोई किसी

Scanned by CamScanner

का बुरा चाहता है वो दरअसल अपना ही बुरा चाहता है। पस अपनी इज़्ज़त को बचाना है तो दूसरों की इज़्ज़त का भी लिहाज़ रखो।

हिकायत नम्बर(581) नहूसते ज़ुल्म

एक बादशाह सैर के लिए निकला, उसने एक गाँव में एक ऐसी गाँय देखी जिसने बादशाह के सामने मन भर के क़रीब दूध दिया। ऐसी उम्दा गाँय देख कर बादशाह की नीयत बदली और इरादा कर लिया के उस गाँय पर मैं अपना क़ब्ज़ा कर लूंगा, चुनाँचे इसी इरादे से बादशाह दूसरे दिन फिर इस गाँव में पहुँचा और देखा गाँय का मालिक दूध दोह रहा है। मगर आ इस गाए ने पहले दिन से निस्फ दूध दिया। बादशाह ने मालिक से पूछा। के आज क्या बात हुई? जो उसने पूरा दूध नहीं दिया। मालिक ने जवाब में कहा। शायद हमारे बादशाह ने किसी ज़ुल्म का इरादा कर लिया है। ये सुनकर बादशाह बड़ा नादिम हुआ और उसी वक़्त उस गाँय पर क़ब्ज़ा करने का खयाल दिल से निकाल दिया। गाँय ने भी और दूध देना शुरू कर दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 5, जिल्द 1 व हयात-उल-हैवान, सफ़ा 135, जिल्द 1)

सबक़:- इरादा-ए-बद और ज़ुल्म की नहूसत सारे मुल्क को बर्बाद कर देती है। पस हम सबको बुरी नीयतों और ज़ुल्म करने के इरादों से बाज़ रहना चाहिए।

हिकायत नम्बर(582) नीयत का फल

नोशेरवाँ एक बार शिकार के लिए निकला ,से प्यास ने सताया तो एक बाग़ में दाख़िल हुआ। बाग़ में एक लड़का बैठा था। उससे उसने कहा। मुझे पानी पिलाओ, लड़के ने जवाब दिया। पानी नहीं है। बादशाह ने कहा। अच्छा एक अनार खिलाओ। वो लड़का एक अनार तोड़ कर ले आया। अनार बड़ा मीठा था। नोशेरवाँ ने खाते हुए ये नीयत कर ली के ये बाग़ अपने क़ब्ज़े में कर लूंगा। इतने में अनार ख़त्म हुआ तो दूसरा लाने को कहा। लड़का एक और अनार ले आया। बादशाह ने वो खाया तो तुर्श पाया। लड़के से कहा। क्या ये अनार किसी दूसरे दरख़्त से लाए हो? लड़के ने जवाब दिया। नहीं बल्के इसी पहले दरख़्त से लाया हूँ। बादशाह ने कहा तो फिर इसका मज़ा कब से बदल गया? लड़के ने जवाब दिया जब से बादशाह की नीयत बदल गई। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 5, जिल्द 1)

सबक़:- जैसी नीयत। वैसा फल!

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(583) सदक़े की बर्कत

हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम के ज़माने में एक बुढ़िया थी। उसने एक मर्तबा तीन रोटियाँ राहे खुदा में दीं। और फिर आटा गूधने बैठी। अचानक हवा आई और उसका सारा आटा उड़ा कर ले गई। बुढ़िया हज़रत दाऊद के पास फ़रयाद लेकर पहुँची और हवा की शिकायत। दाऊद अलेहिस्सलाम ने हवा को बुलाया। और पूछा। तुम ने उसका आटा क्यों उड़ाया। हवा ने अर्ज़ की। हवा के फरिश्ते से पूछिये। दाऊद अलेहिस्सलाम ने उसे बुलाया। और उससे पूछा। तो उसने अर्ज़ किया। खुदा से पूछिये। खुदा से पूछा। तो खुदा ने फ़रमाया। ऐ दाऊद हमारा कोई काम अबस नहीं होता। समुंद्र में एक कश्ती पर बड़े बड़े ताजिर जा रहे थे के उनकी कश्ती में एक चूहे न सूराख कर दिया और कश्ती को डूबने का ख़तरा पैदा हो गया। मैंने हवा को हुक्म दिया के वो ये आटा उड़ा कर उस कश्ती में डाल दे ताके वो लोग इस आटे से सूराख़ बन्द कर लें। चुनाँचे उन्होंने उसी आटे से सूराख़ बन्द किया। और बसलामती किनारे पर पहुँच गए। ऐ दाऊद! इन कश्ती के ताजिरों से उनके सारे माल का तीसरा हिस्सा इस बुढ़िया को दिलाओ। चुनाँचे दाऊद अलेहिस्सलाम ने ऐसा ही किया। और तीन सौ हज़ार दीनार का माल बुढ़िया को मिला। दाऊद अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। ये उसकी तीन रोटियों के सदक़े की बर्कत है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 192, जिल्द 1)

सबक़:- खुदा की राह में कुछ खर्च करने से बड़ी बर्कतें हासिल होती हैं। और कई बलायें दफा हो जाती हैं।

हिकायत नम्बर(584) संगदिल हाकिम

हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने एक शख़्स को एक इलाक़े का हाकिम मुक़र्रर फ़रमाते वक़्त उससे अहदनामा लिखवाना चाहा। जब वो अहद नामा लिख रहा था तो उसका छोटा बच्चा आ गया। और हज़रत फारूक़ की गोद में आ बैठा। फारूक़े आज़म उस बच्चे से प्यार करने लगे। बच्चे के बाप ने कहा, हुज़ूर! मेरे दस बच्चे हैं मगर मैंने आज तक किसी बच्चे से भी इस तरह प्यार नहीं किया। फारूक़े आज़म ने ये सुनकर फ़रमाया के अहदनामे को फाड़ दो और घर की राह लो। जिस शख़्स के दिल में अपने बच्चों के लिए प्यार नहीं। वो रिआया से कब प्यार व मोहब्बत से पेश आएगा। मैं ऐसे संगदिल शख़्स को हाकिम

Scanned by CamScanner

नहीं बना सकता। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 58, जिल्द)

सबक़:- हाकिम के दिल में रिआया के लिए शफ़्क़त और प्यार का होना ज़रूरी है।

हिकायत नम्बर(585) जज़े व फज़े

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के ज़माने में एक शख़्स ने एक खूबसूरत और खुशनवा परिंदा खरीदा। और उसे जब पिंजरे में डाला तो एक दूसरा परिंदा उड़ता हुआ पिंजरे के ऊपर आया। और अपनी ज़बान में कुछ बोल कर चल दिया। उसके बाद इस क़ैदी परिंदे ने पिंजरे में बोलना बन्द कर दिया। और बिलकुल चुप साध ली। मालिक ने ये देखा तो सुलामन अलेहिस्सलाम के पास फ़रयाद लेकर पहुँचा। हज़रत सुलेमान ने वो पिंजरा मंगवाया। और परिंदे से फ़रमाया। परिंदे! तुम्हारे मालिक ने तुम्हें क़ीमत से खरीदा है। उसका तुम पर हक़ है। तुम ने बोला क्यों बन्द किया। परिंदे ने जवाब दिया। हुज़ूर! उससे कह दीजिए के वो मेरा खयाल छोड़ दे। मैं जब तक पिंजरे में हूँ। कभी ना बोलूंगा। फ़रमाया क्यों, उसने कहा, हुज़ूर! मैं वतन और औलाद की मोहब्बत में रोता था। के एक मेरे भाई परिंदे ने मुझ से आकर कहा। नादान जज़े व फज़े छोड़। वरना उम्र भर पिंजरे ही में क़ैद रहेगा। सब्र व सकूत इख़्तियार कर तो फिर देखो तुम आज़ाद होते हो या नहीं? सुलेमान अलेहिस्सलाम ने इस शख़्स से इसका जवाब बयान किया तो उसने कहा। हुज़ूर ! तो फिर उसे आज़ाद कर दीजिए। मैंने तो उसे खुशनवाई के लिए खरीदा था। चुनाँचे सुलेमान अलेहिस्सलाम ने अपनी गिरह से क़ीमत इसे देकर परिंदा को आज़ाद कर दिया। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 77, जिल्द अव्वल)

सबक़:- जज़े और फज़े और रोना धोना मौजिब रंज व मलाल और सब्रो शुक्र मौजिब निजात है। पस मुश्किल और मुसीबत के वक़्त कभी गरया वावेला और ना शुक्री का इज़हार ना करना चाहिए। बल्के खुदा की रज़ा पर राज़ी रह कर सब्रो शुक्र से काम लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर(586) तोती का पैग़ाम

एक सौदागर के पास एक तोती थी। एक मर्तबा वो सौदागर मुल्क हिन्द में सौदागरी के लिए चला। तो तोती से पूछा, तुम्हारे लिए क्या लाऊँ, तोती ने कहा। मेरा एक पैग़ाम है ले जाईये और उसका जवाब लेते आईये। और वो ये है के आप हिन्द के किसी बाग़ में अगर बहुत से तोते देखें, तो उनसे मेरी

Scanned by CamScanner

तरफ़ से ये कह दें के ऐ खुली फिज़ा में उड़ने वालो, और आज़ादी के मज़े लूटने वालो! मैं भी एक तुम्हारा भाई हूँ, जो पिंजरे में असीर हूँ। कुछ मेरी भी ख़बर है? मेरे इस पैग़ाम का जो कुछ वो जवाब दें वो मुझे आकर सुना दीजिएगा। सौदागर ने कहा। बहुत अच्छा। चुनाँचे सौदागर मुल्क हिन्द में गया तो इत्तिफाक़न एक बाग़ में बहुत से तोते देखे। सौदागर ने उनको अपनी तोती का पैग़ाम दिया। इतने में क्या देखा के एक तोती ये पैग़ाम सुनकर दरख़्त से गिरा। सौदागर ने बग़ौर से देखा। तो वो मर चुका था। सौदागर बड़ा हैरारन हुआ। के ये क्या बात है। शायद ये मेरे तोती का अज़ीज़ था। सौदागर जब घर वापस आया तो अपने तोती को ये सारा क़िस्सा सुनाया। ये क़िस्सा जब सौदागर ने तोती को सुनाया तो वो भी पिंजरे में तड़पने लगा। और तड़प तड़प कर मर गया। सौदागर बड़ा हैरान हुआ के ये क़िस्सा क्या है मगर कुछ समझ में ना आया। अख़िर पिंजरा का दरवाज़ा खोल कर मुर्दा तोती को निकाल कर बाहर फैंक दिया। सौदागर ने तोती को बाहर फैंका ही था के वो एक दम जी उठा। और उड़कर दरख़्त पर जा बैठा। सौदागर ये तमाशा देखकर हैरान रह गया और तोती से कहने लगा के ये अजीब बात है जो मैंने देखी है। अब तुम आज़ाद तो हो ही गए हो। ज़रा इस सारे क़िस्से की हक़ीक़त तो बयान करते जाओ। वो तोती बोला। ऐ सौदागर! असल में ना मैं मरा था और ना ही वो तोती मरा था। जिसे आपने हिन्द के बाग़ में दरख़्त से गिरते और मरते देखा था। वो तो उसने मुझे पिंजरे से रिहा होने की तरकीब बताई थी के अगर पिंजरे से रिहाई हासिल करना है तो इस तरह मरने से पहले मर जाओ। चुनाँचे मैंने उसकी हिदायत पर अमल किया। और इस पिंजरे से रिहाई हासिल कर ली। (दर मंज़ूम तर्जुमा मसनवी मौलाना रोम, सफ़ा 13)

सबक़:- तफक्कुरात दुनिया के आहिनी पिंजरे से रिहाई पाने के लिए *मोतो क़बाला अन तमूतो* पर अमल करके अपने नफ़्स को मार डालना चाहिए जिन पाक लोगों ने नफ़्सानी ख़्वाहिशात को मार डाला है वो वाक़ई आज़ाद और खुशहाल हैं और जिनका नफ़्स ज़िन्दा है। वो हज़ारहा परेशानियों के पिंजरे में बुरी तरह असीर हैं

हिकायत नम्बर(587) दाना की ख़ामोशी

हज़रत शअबी की मजलिस में एक शख़्स बैठा करता था जो हमेशा ख़ामोश रह कर गुफ़्तगू सुना करता था। और खुद कभी ना बोलता था। एक बार हज़रत शअबी ने उससे फ़रमाया के मियाँ तुम हमेशा चुप ही रहते हो।

Scanned by CamScanner

कभी तुम भी बोला करो। तो उसने कहा मैं चुप रहता हूँ। सलामत रहता हूँ। और सुनता हूँ और जान लेता हूँ। कान में तो अपना हिस्सा है। और ज़बान में दूसरे का हिस्सा। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 119, जिल्द अव्वल)

सबक़:- फिज़ूल बातें और यावह गोई अमन व सलामती के लिए ख़तरा बन जाती हैं। इसलिए फिज़ूल बातों और यावह गोई से बचना चाहिए। शायर ने क्या खूब लिखा है के

बे बस हैं वो जो बहसों में यहाँ खूर संद हैं
जिनकी आखें खुल गईं उनकी ज़बानें बन्द हैं

हिकायत नम्बर(588) नादान की ख़ामोशी

इमाम अबु यूसुफ़ रहमत-उल्लाह अलेह की मजलिस में एक शख़्स बैठा करता था, जो हमेशा ख़ामोश रहकर गुफ़्तगू सुना करता था। और खुद कभी ना बोलता था। एक बार हज़रत इमाम अबु यूसुफ़ ने उसे फ़रमाया। के मियाँ तुम हमेशा चुप ही रहते हो। कभी तुम भी बोला करो। तो उसने कहा। अच्छा हुज़ूर! एक मसला बताईये के रोज़ेदार इफ़्तार किस वक़्त करे? इमाम अबु यूसुफ़ ने फ़रमाया? जब सूरज डूब जाए। तो वो बोला, के अगर सूरज आधी रात तक भी ना डूबे तो फिर क्या करे। हज़रत इमाम हंस पड़े और फ़रमाया के तुम्हारा चुप रहना ही बेहतर है। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 19, जिल्द अव्वल)

सबक़:- नादान की चुप ही भली होती है और नादान जब बोलता है तो तूफान ही तोलता है।

हिकायत नम्बर(589) दुश्मन की नेकी

एक शख़्स बोसी दीवार के नीचे सो रहा था के दीवार गिरने लगी। फौरन एक शख़्स आया और उसने सोने वाले शख़्स को जगा कर एक तरफ़ खींच लिया। दीवार गिर गई। और सोने वाला बच गया। उसने अपने मोहसिन का शुक्रिया अदा किया। और पूछा, आप कौन हैं? उसने बताया, के इबलीस हूँ, ये हैरान रह गया और पूछने लगा के शैतान होकर ये नेकी का काम तुम ने क्यों किया? तो इबलीस बोला के चूंके मसला ये है के जो शख़्स दीवार के नीचे दबकर मर जाए वो शहीद मरता है। तो मैंने तुम्हें दीवार के नीचे दब कर मरने से इसलिए बचाया है ताके तुम शहीद ना मरो। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 163, जिल्द अव्वल)

Scanned by CamScanner

सबक़:- बदमज़हब का हुस्ने ख़ल्क़ और उसकी बज़ाहिर नेकी व मुरव्वत भी ख़तरनाक होती है। पस बदमज़हबों के मुंह से कुरआन का सुनना भी ख़तरे से खाली नहीं

ऐ बसा इबलीस आदम रूऐ हस्त

हिकायत नम्बर(590) दुश्मन का वअज़

हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो अन्ह आराम फ़रमा थे के फज्र की नमाज़ के वक़्त किसी ने आवाज़ दी, के मुआविया, उठ फज्र का टाईम हो गया है। और जमात के साथ नमाज़ अदा कर। वरना जमात रह जाएगी। हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो अन्ह उठे। और आपने चारों तरफ़ देखा। मगर जगाने वाला और वअज़ सुनाने वाला नज़र ना आया। आपने फ़रमाया, मियाँ तुम कौन हो, जिसने मुझे आवाज़ देकर जगाया है? फिर आवाज़ आई के हज़रत! मै। शैतान हूँ। आप हैरान होकर बोले, के शैतान का जमात के साथ नमाज़ पढ़ने के लिए जगाना बड़े ताज्जुब की बात है। पहले तुम ये बताओ के तुम इस अम्र नेक की तरग़ीब क्यों दे रहे हो? और तुम्हारा इसमें मक़्सद क्या है? आवाज़ आई के हज़रत! पिछले हफ़्ते भी आप जमात फज्र से रह गए थे। और आप इस ग़म में इतना रोये थे के मैंने रहमत के फरिश्तों की आपस में ये गुफ़्तगू सुनी के खुदा तआला ने हज़रत मुआविया के इस रोने को क़बूल फ़रमा कर उनको सत्तर जमातों का सवाब अता फ़रमा दिया है। तो ऐ मुआविया! आज तुम सो रहे थे तो मुझे डर पैदा हुआ के अगर आज भी तुम्हारी जमात रह गई। और तुम ने फिर रोना शुरू कर दिया तो ऐसा ना हो के खुदा आज फिर तुम्हें सत्तर जमातों का सवाब दे दे। इसलिए उठो और जमात के साथ नमाज़ पढ़ो ताके तुम्हें एक ही जमात का सवाब मिले। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- बदमज़हब का वअज़ कुरआन व हदीस पर भी मुशतमिल हो तो ख़तरनाक ही होता है। और मुसलमान को कभी किसी बदमज़हब का वअज़ नहीं सुनना चाहिए। वरना वो हलवे में ज़हर मिलाकर ईमान को ज़रूर तबाह कर देगा।

हिकायत नम्बर(591) सलतनत व ग़ुर्बत

एक बहुत बड़ा बादशाह एक गाँव से गुज़रा। तो एक ग़रीब आदमी ने बढ़कर बादशाह से कहा। जनाब आप गुज़री हुई लज़्ज़तों को और मैं गुज़री

Scanned by CamScanner

हुई मुसीबतों को इस वक़्त वापस नहीं दिया सकता। इसलिए मैं और आप दोनों बराबर हैं। आप भी दुनिया से इन्तिक़ाल फ़रमा जायेंगे। और मैं भी एक दिन मर जाऊँगा। पस इस बात में भी हम दोनों बराबर हैं। आपसे सल्तनत का हिसाब लिया जाएगा और मुझ से मेरी मेहनत व मुशक़्क़त का। और ज़ाहिर है के आपके लिए हिसाब देने में बड़ी मश्किल होगी। बादशाह ये सुनकर बड़ा रोया। और कहा। अगर खुदा करीम ना होता। और अपनी दी हुई चीज़ वापस ले लिया करता। तो मैं उससे दुआ करता। के वो मुझ से सलतनत वापस ले ले। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 431, जिल्द अव्वल)

सबक़:- ग़रीब की निसबत अमीर को हिसाब ज़्यादा देना पड़ेगा। और अमीर व ग़रीब सबको एक दिन मरना है, मौत आ जाने के बाद सब बराबर हो जाते हैं। बक़ौल शायर।

कितने मुफलिस हो गए कितने तवंगर हो गए
खाक में जब मिल गए दोनों बराबर हो गए

हिकायत नम्बर(592) ईसार का बदला

हज़रत वाक़दी को कुछ रुपों की ज़रूरत पड़ी तो वो क़र्ज़ तलब करने के लिए एक नेक दिल ताजिर के पास गए। ताजिर ने 12सौ की थेली हज़रत वाक़दी के सामने रख दी और कहा। बखुदा इसके सिवा मेरे पास और कुछ भी नहीं। हज़रत वाक़दी वो थेली लेकर चले आए। अभी घर पहुँचे ही थे के एक हाश्मी उनके पास क़र्ज़ माँगने आ गए। और अपनी ज़रूरत बयान की। हज़रत वाक़दी ने चाहा के उस थेली में से कुछ उसे दे दें। और कुछ अपने लिए रख लें। हज़रत वाक़दी की बीवी ने कहा। आप एक बाज़ारी ताजिर के पास गए तो उसने अपनी सारी पूंजी आपके हवाले कर दी। और ये आँहज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के चचा की औलाद है। आप उसे थोड़ा बहुत देते हैं। ये तो बड़ी शर्म की बात है। हज़ा वाक़दी ने ये सुनकर सारी थेली उसके हवाले कर दी। खुदा की क़ुद्रत के वो हाश्मी लेकर घर चले। तो वही ताजिर जिसने हज़रत वाक़दी को थेली दी थी। उनके पास आए। और उनसे क़र्ज़ तलब किया। हाश्मी ने वही थेली उस ताजिर को दे दी। ताजिर ने अपनी थेली को देखा। तो पहचान गया उसके बाद हज़रत वाक़दी हज़रत याहिया बरमुकी के पास गए। तो इस थेली का ये सारा क़िस्सा बयान किया। तो याहिया बरमुकी ने दस हज़ार की एक थेली निकाली। और कहा। इसमें से दो हज़ार तुम्हारे दो हज़ार हाश्मी के, दो हज़ार ताजिर के और चार

Scanned by CamScanner

हज़ार तुम्हारी बीवी के। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 390, जिल्द अव्वल)

सबक़:- पहले मुसलमान एक दूसरे की मदद करने वाले थे। और अपने भाई की ज़रूरत व मुश्किल के वक़्त अपनी ज़रूरत व मुश्किल को भूल जाया करते थे। और ज़रूरतमंद की मदद करने में ज़रा भी पसो पेश नहीं करते थे। और उनके ईसार व एहसान का कुछ बदला उन्हें इस दुनिया में भी मिल जाया करता था। मगर आज...

आह इस्लाम तिरे चाहने वाले ना रहे
जिनका तू चाँद था अफसोस वो हाले ना रहे

हिकायत नम्बर(593) अता बुज़र्गान

हज़रत इमाम इब्ने हज्र असक़लानी रहमत-उल्लाह अलेह जो बहुत बड़े पाया के इमाम हदीस गुज़रे हैं। उनके वालिद के हाँ जो बच्चा पैदा होता था। मर जाता था। आख़िर वो एक रोज़ साहबे करामत बुज़ुर्ग हज़रत शेख सना क़िब्री अलेह अर्रहमा की ख़िदमत में हाज़िर हुए। और अर्ज़ की, के मेरे हाँ जो बच्चा पैदा होता है, मर जाता है। और मैं कबीदा ख़ातिर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ। हज़रत शेख़ ने फ़रमाया। जाओ तुम्हारी पुश्त से एक ऐसा बच्चा पैदा होगा जो अपने इल्म से दुनिया भर को भर देगा, चुनाँचे आपके कहने के मुताबिक़ हज़रत इमाम इब्ने हज्र असक़लानी अलेह अर्रहमा पैदा हुए। (बस्तान-उल-मोहद्दिसीन तालीफ हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दिस देहलवी अलेह अर्रहमा, सफ़ा 114)

सबक़:- मालूम हुआ के उन अल्लाह के मक़्बूलों की ज़बाने पाक से जो बात निकल जाए वो हो के रहती है। और उन पाक लोगों की नज़र अता से खाली झोलियाँ भर जाती हैं। और नामुराद बामुराद होकर लौटते हैं। फिर जो शख़्स उन पाक लोगों के पास जाने और उनके सामने अपने दर्दे दिल के इज़हार करने और अपनी मुराद पानी के इज़हार को शिर्क बताए, तो उसने गौया हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दिस अलेह अर्रहमा जैसी मुस्लिम बुज़ुर्ग हस्ती की भी तकज़ीब कर दी। पस हक़ीक़त ये है। के

दर फेज़ हक़ बंद जब था ना अब कुछ
बुज़ुर्गों की झोली में अब भी सब कुछ

हिकायत नम्बर(594) इमाम बुखारी अलेह अर्रहमा की आँखें

हज़रत इमाम बुखारी रहमत-उल्लाह अलेह की आँखें बचपन में

Scanned by CamScanner

जाती रहीं। आपकी वालिदा को इसका बड़ा सदमा हुआ। एक रोज़ इमाम बुखारी अलेह अर्रहमा की वालिदा ने रात को ख़्वाब में हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम को देखा। आपने फ़रमाया। जाओ तुम्हारी दुआएँ सुनी गईं। और अल्लाह ने तुम्हारे बेटे को आँखें अता फ़रमा दी हैं। चुनाँचे सुबह हुई तो हज़रत इमाम बुखारी अलेह अर्रहमत की आँखें बिलकुल ठीक थीं। (मुक़दमा फतह अलबारी, सफ़ा 563)

सबक़:- अंबिया इक्राम अलेहिम अस्सलाम का बाद अज़ विसाल भी फ़ैज़ जारी रहता है। और ये नफ़ूस क़ुद्सिया मुसीबत ज़दा अफ़्राद को ख़्वाब में भी मिलकर उनकी मुश्किलात को दूर फ़रमा जाते हैं।

हिकायत नम्बर(595) वली की क़ब्र पर

हज़रत अबु अली रहमत-उल्लाह अलेह पर कोई बहुत बड़ी मुश्किल आ पड़ी। और वो इसी फिक्रो ग़म में परेशान रहने लगे। एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को उन्होंने ख़्वाब में देखा, हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। ऐ अबु अली! याहिया बिन याहिया की क़ब्र पर जाओ और वहाँ जाकर असतग़फार करो। और अपनी हाजत पेश करो। तुम्हारी हाजत पूरी हो जाएगी। चुनाँचे जब सुबह हुई तो अबु अली रहमत-उल्लाह अलेह हुज़ूर सल-लल्लाहाहे तआला अलेह व सल्लम के इर्शाद के मुताबिक़ हज़रत याहिया बिन याहिया रहमत-उल्लाह अलेह की क़ब्र पर गए और वहाँ जाकर असतग़फार करके अपनी हाजत पेश की। तो उनकी हाजत पूरी हो गई। और सारे फिक्रो ग़म दूर हो गए। (तहज़ीब-उल-तहज़ीब, सफ़ा 299, जिल्द11)

सबक़:- इस रिवायत से मालूम हुआ के ख़ुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक मुसीबतज़दा को एक वली की क़ब्र पर जाकर वही अपनी हाजत पेश करने की हिदायत फ़रमाई। पस साबित हुआ के अल्लाह वालों की क़ब्र पर हाज़िर होना और वहाँ अपनी हाजतें पेश करना मना नहीं हैं। बल्के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस बात की हिदायत फ़रमाई हैं फिर अगर कोई शख़्स किसी वली की क़ब्र पर जाने से रोके तो उसने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मुख़ालफत की या नहीं?

हिकायत नम्बर(596) बरसाती नाला

ओहद के पहाड़ के नीचे जो बरसाती नाला बहता है। बमू उमय्या के

Scanned by CamScanner

ज़माने में एक मर्तबा उसमें तुग़यानी आ गई। और पानी इस ज़ोर से बहने लगा के जंगे ओहद के शोहदा में से एक शहीद (रज़ी अल्लाहो अन्ह) की लाश मुबारक निकल आई। जिस वक़्त लाश मुबारक बाहर निकली तो उससे बदस्तूर खून जारी था। (तफ़्सीर हक़्क़ानी, सफ़ा 151, जिल्द 3)

सबक़:- कई सौ साल गुज़र जाने पर एक सहाबी रज़ी अल्लाहो अन्ह की लाश मुबारक बदस्तूर वैसी की वैसी जिससे खून भी जारी था, निकली। तो जिनकी बदौलत शहीदों को ये रूत्बा मिला, उस ज़ातेग्रामी के मुतअल्लिक़ अगर कोई ये कहे के। मर कर मिट्टी में मिल गए हैं तो वो किस क़द्र जाहिल और गुमराह है।

हिकायत नम्बर(597) कफनी लिखने का फायदा

एक बुज़ुर्ग ने बसरा के बाज़ार में एक मईयत को देखा जिसे उठाने वाले चार आदमियों के सिवा और कोई उसके साथ ना था। ये बुज़ुर्ग हैरान रह गए के इतने बड़े शहर में इस ग़रीब के जनाज़े के साथ कोई भी नहीं। चुनाँचे वो बुज़ुर्ग भी साथ चल दिए। क़ब्रिस्तान पहुँचे तो उसका जनाज़ा पढ़ा गया। और फिर उसे दफनाया गया। इस बुज़ुर्ग ने लोगों से पूछा के ये क्या बात है के इसके जनाज़े के साथ कोई नहीं आया। तो उन्होंने एक औरत की तरफ़ इशारा किया। जो क़रीब ही खड़ी थी। और कहा। के इससे पूछिये हमें कुछ पता नहीं। चुनाँचे वो इस औरत के पास पहुँचे औरत ने दुआ के लिए हाथ उठा के दुआ की और फिर हंसने लगी। उन्होंने उससे क़िस्सा पूछा। तो वो कहने लगी के ये मरने वाला मेरा बेटा था। और बड़ी ही बदकार था। कोई ऐसा बुरा काम नहीं जो इसने ना किया हो। तीन दिन से ये बीमार था। रात उसने मुझ से कहा। के माँ! जब मैं मर जाऊँ तो किसी को इत्तिला ना करना। इसलिए के लोग मेरे मरने पर खुश होंगे और जनाज़े के लिए कोई ना आएगा। हाँ मेरी अंगूठी पर कलमा शरीफ लिखवा कर मेरी उंगली में पहना देना और फिर अपना पैर मेरे रूख़्सार पर रखकर कहना। ये अल्लाह के मुज्रिम की सज़ा है। और मेरे दफनाने के बाद मेरे लिए दुआ करना। और ये कहना के ऐ अल्लाह! मैं इससे राज़ी हूँ। तू भी इससे राज़ी हो जा। चुनाँचे मैंने हस्ब वसीयत सब कुछ किया है। और अब जबके मैंने दुआ की तो मुझे अपने बेटे की आवाज़ सुनाई दी के माँ! मैं अपने रहीम व करीम रब के पास पहुँच गया हूँ। और वो मुझ से राज़ी हो गया है ये सुनकर मैं हंस पड़ी। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 600, जिल्द 1)

Scanned by CamScanner

सबक़:- मईयत के कफन पर कलमा शरीफ लिखना और मईयत के लिए दुआ करना बड़ा मुफीद है। फिर जो लोग कफन पे कलमा शरीफ लिखने को जायज़ नहीं समझते गोया वो नहीं चाहते के मईयत की बख़्शिश हो।

हिकायत नम्बर(598) ताज़ीम व तकरीम

क़ाज़ी इसमाईल बिन इसहाक़ रहमत-उल्लाह अलेह के दिल में हज़रत इमाम इब्राहीम खरली रहमत-उल्लाह अलेह से मिलने की बड़ी तमन्ना थी। लेकिन हज़रत इमाम इब्राहीम हमेशा ये कह कर टाल देते थे के वो ममलिकत के क़ाज़ी हैं। और वहाँ दरबान और हाजिब हैं। वहाँ मेरा गुज़र क्यों कर होगा? क़ाज़ी साहब को इस उज़्र का पता चला तो उन्होंने सारे दरबान हटा दिए और बड़े इश्तियाक़ से हज़रत इमाम इब्राहीम को बुलाया। चुनाँचे हज़रत इमाम इब्राहीम तशरीफ़ ले आए। और जब आप पहुँचे और जूता उतार कर फर्श पर चलने लगे तो क़ाज़ी साहब ने हुस्ने अक़ीदत से उनके जूतों को उठा कर एक रेशमी कपड़े में रख दिया। थोड़ी देर के बाद जब इमाम साहब वापस होने लगे तो क़ाज़ी साहब ने रेशमी कपड़े से उनका जूता निकाल कर पेश किया। इमाम साहब ने क़ाज़ी साहब की अक़ीदत का ये हाल देखा तो फ़रमाया *ग़फ़रल्लाहू लका कमा अकरमतल इल्मा।* "खुदा इल्म की तकरीम के सबब आपकी बख्शिश फ़रमाए" जब क़ाज़ी इसमाईल साहब का इन्तिक़ाल हुआ तो किसी ने उनको ख़्वाब में देखा और हाल पूछा तो जवाब दिया। इमाम इब्राहीम की ताज़ीम व दुआ की बदौलत खुदा ने मेरी बख़्शिश फ़रमा दी है। (बहवाला मौज्जिम-उल-अदबा हज़रात अहले हदीस का मुफ़्त रोज़ा अख़बार "अलतसाम" 15 जनवरी 1960इ० सफ़ा 6)

सबक़:- अल्लाह के मक़बूल बन्दों की ताज़ीम और उनके तबर्रूकात की तकरीम व इज़्ज़त से खुदा की बख्शिश व मग़फ़िरत हासिल होती है। और ये भी मालूम हुआ के पहले मुसलमान अल्लाह के मक़बूल बन्दो से बड़ी हुस्न अक़ीदत रखते थे। और उनके जूतों को भी रेशमी ग़िलाफों में रख लेते थे। हालाँके ये काम ना क़ुरआन से साबित है और ना हदीस से। और ना ये साबित है के कभी किसी सहाबी ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नअलैन शरीफ के साथ ऐसा किया था। मगर फिर भी अहले हदीस अख़बार लिखता है के क़ाज़ी साहब ने हुस्ने अक़ीदत से ऐसा किया। और यही हुस्ने अक़ीदत उसके लिए मौजिबे निजात हो गया। फिर अगर कोई

Scanned by CamScanner

मुसलमान खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मनसूब किसी चीज़ की तअज़ीम व तकरीम करे। आपकी मेहफिल मीलाद को रेशमी कपड़ों की झंडियों से आरास्ता करके अपने हुस्ने अक़ीदत का मुज़ाहेरा करे, या हुज़ूर के यौम मीलाद को जलसा व जलूस के साथ मनाकर अपनी अक़ीदत का एलान करे या हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के नाम नामी इस्मे ग्रामी को सुनकर चूम ले। और आँखों से लगा ले। तो इससे ये पूछना के ये कहाँ लिखा है। बेइंसाफी है या नहीं? पस हुज़ूर अलेहिस्सलाम से मनसूब बातों की तअज़ीम करने वाले पर हुज़ूर अलेहिस्सलाम भी क्यों खुश होंगे। और ये बातें क्यों कर बिदअत हो सकती हैं?

"अहले हदीस" अख़बार की ये तहरीर शाहिद है के हुज़ूर(स०अ०स०) के ग़ुलामों की जूतियों की तअज़ीम भी हुस्ने अक़ीदत से की जाए। तो ये हुस्ने अक़ीदत मौजिब निजात बन जाती है। फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तअज़ीम व तकरीम भी हुस्ने अक़ीदत के साथ करने वाला क्यों निजात पाने वाला ना होगा।

हिकायत नम्बर(599) अंगूर का हदया

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जान जानाँ रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में एक शख़्स ने हदया अंगूर भेजे। हज़रत ने एक दाना चख कर छोड़ दिया। एक रोज़ वही अंगूर भेजने वाला शख़्स आया। और अर्ज़ किया के हज़रत मैंने अंगूर भेजे थे पहुँचे थे? हज़रत ने फ़रमाया पहुँच गए थे। उसने कहा। आपने खाए थे? फ़रमाया मियाँ क्या बताऊँ उनमें मुर्दों की बू आती थी। वो शख़्स हैरान हुआ के अंगूरों को मुर्दों से क्या ताल्लुक़? कुछ समझ में ना आया, और फिर तहक़ीक़ जो की मालूम हुआ के उन अंगूरों के दरख़्त मुद्दत हुई के मरघट में लगाए गए थे। (देवबंदी हज़रात के हकीम-उल-उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी, अशरफ़-उल-मवाइज़, सफ़ा 103, हिस्सा दोम)

सबक़:- ये अल्लाह वालों का इल्म व इर्फान है। फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिनके सदक़े में उन्हें ये इल्मो इर्फान हासिल हुआ। उनका अपना इल्मो इर्फान किस क़द्र वसी होगा? और जो उनके इल्म में कलाम करे वो किस क़द्र वो किस क़द्र बे इल्म है।

हिकायत नम्बर(600) ख़िज़्र अलेहिस्सलाम

हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम एक ऐसे मजमअे में पहुँचे जहाँ हदीसों का

Scanned by CamScanner

तज़करा हो रहा था। और वहाँ एक शख़्स अलेहदा नमाज़ पढ़ रहा था। ख़िज़्र अलेहिस्सलाम ने उससे कहा के तुम इस मजमअे में क्यों शरीक नहीं होते। वो शख़्स बोला के बताओ ये लोग किस से रिवायत हदीस बयान करते हैं? ख़िज़्र अलेहिस्स्लाम ने फ़रमाया मुफ़्तियान औज़ाई वग़ैरहुमा से। कहा के जो खुद अल्लाह तआला से हदीस बयान करे उसको क्या ज़रूरत है के सफयान औज़ाई से बयान करे। ख़िज़्र अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया के इसकी दलील क्या है के तुम ऐसे हो। कहा, दलील इसकी ये है के मैं तुम को पहचानता हूँ। और तुम मुझ को नहीं। तुम ख़िज़्र हो। और तुम बताओ। मैं कौन हूँ। (मौलवी अशरफ़ अली साहब थानवी, अलतज़करह, सफ़ा 93, हिस्सा दोम)

सबक़:- खुदा के मुक़र्रिब बन्दों का इल्म बड़ा वसी होता है। फिर जो शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म को (मआज़ अल्लाह) जानवरों के इल्म से तश्बीह दे वो किस क़द्र गुसताख़ रसूल है।

हिकायत नम्बर(601) जिन्न का क़त्ल

हज़रत शाह वली-उल्लाह मोहद्दिस देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा तिलावते क़ुरआन फ़रमा रहे थे के एक जिन्न साँप की शक्ल में नमूदार हुआ। और आपके पास से गुज़रा। आपने साँप समझ कर मार डाला। थोड़ी देर के बाद दो शख़्स मस्जिद में आए। और शाह साहब को अपने मुल्क के बादशाह के पास ले आए। मुद्दई ने बादशाह के रूबरू अर्ज़ किया। के शाह साहब ने मेरे बेटे को क़त्ल कर दिया है। लिहाज़ा शरीअत के मुताबिक़ क़सास मिलना चाहिए। उस पर बादशाह शाह साहब के क़त्ल किए जाने का हुक्म देने ही वाला था। के वहाँ एक बूढ़ा जिन्न मौजूद था। उसने कहा, शाह साहब ये क़सास वाजिब नहीं इसलिए के मैं ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से सुना है।

मन क़तिला फी ग़ैरी ज़िय्यीही फदामाहू हदरून "यानी जिस शख़्स का क़त्ल किया जाना जायज़ तो ना हो मगर वो ऐसी क़ौम के लिबास व वज़अ में हो जिसका क़त्ल किया जाना जायज़ है। तो उसे अगर कोई क़त्ल कर दे तो उसका खून माफ है"

तो चूंके ये जिन्न सांप की शक्ल में था। जिसका क़त्ल कर देना जायज़ है। इसलिए शाह साहब का उसे सांप समझ कर क़त्ल कर देना बमौजिब इस हदीस के क़सास का मौजिब नहीं। बादशाह ने ये हदीस सुनकर शाह साहब को रिहा कर दिया। और वो दो जिन आपको अपनी

Scanned by CamScanner

जगह पर पहुँचा आए। (अलतहरीर-उल-अफ़्खम, सफ़ा 54)

हिकायत नम्बर(602) सलतनत की क़ीमत

हज़रत ख़लीफा हारून रशीद रहमत-उल्लाह अलेह उलमा दोस्त थे। दरबार में उलमा का मजमअ हर वक़्त रहता था। एक मर्तबा पानी पीने के वास्ते मंगवाया। मुंह तक ले गए थे। पीना चाहते थे। के एक आलिम साहब ने फ़रमाया। अमीर-उल-मोमिनीन! ज़रा ठहरिये, मैं एक बात पूछना चाहता हूँ। फौरन ख़लीफा ने हाथ रोक लिया उन्होंने फ़रमाया। अगर आप जंगल में हों, और पानी मयस्सर ना हो और प्यास की शिद्दत हो तो इतना पानी किस क़द्र क़ीमत देकर ख़रीदेंगे । फ़रमाया वल्लाह! आधी सलतनत देकर। फ़रमाया। बस पी लीजिए। जब ख़लीफा ने पानी पी लिया। उन्होंने फ़रमाया। अब अगर ये पानी निकलना चाहे और ना निकल सके तो किस क़द्र क़ीमत देकर उसका निकालना मोल लेंगे। कहा, वल्लाह! पूरी सलतनत देकर। इर्शाद फ़रमाया। पस आपकी सलतनत की हक़ीक़त ये है के एक मर्तबा एक चुल्लू पानी पर आधी बिक जाए। और दूसरी बार पूरी। इस पर जितना चाहे तकब्बुर कर लीजिए। (मलफ़ूज़ात आला हज़रत, सफ़ा 36, जिल्द 3)

सबक़:- दुनिया और सारी दुनिया की सलतनत फानी है। इस पर कभी फख़्रो ग़ुरूर ना करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(603) शराबी का अंजाम

एक ताबई एक क़बीला में से होकर गुज़रे। वहाँ एक क़ब्रिस्तान में देखा के अस्र के वक़्त एक क़ब्र शक़ हुई और उनमें से एक आदमी निकला। जिसका सर गधे के सर जैसा था। और बदन आदमी का सा। उसने क़ब्र से निकल कर तीन दफा गधे की मकरूह आवाज़ निकाली। और फिर क़ब्र में घुस गया। और क़ब्र बंद हो गई। उन्होंने इस शख़्स की औरत से सारा हाल दरयाफ़्त किया। तो उसने बताया के ये शख़्स शराब बहुत पीता था। और जब उसकी माँ उसे शराब पीने से रोकती। तो उससे कहता के क्यों गधे की तरह हीचूं हीचूं करती है। एक दिन अस्र के वक़्त उसका इन्तिक़ाल हो गया अब हर रोज़ अस्र के वक़्त उसकी क़ब्र शक़ होती है। और खुद गधे की तरह हीचूं हीचूं करता है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 367, जिल्द अव्वल)

सबक़:- शराब पीना बहुत ही बुरा है। और उसका अंजाम बेहद होलनाक है। और ये भी मालूम हुआ के माँ की बे अदबी से आक़बत खराब

Scanned by CamScanner

हो जाती है।

हिकायत नम्बर(604) पत्थर और फूल

एक दिल हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम का गुज़र यहूद की तरफ़ हुआ। यहूद ने आपकी शान में ना मुलायम और गुसताखाना अलफाज़ कहे। आपने निहायत नर्मी से और ख़ैर भरे अलफाज़ में जवाब दिया। लोगों ने आपसे इसकी वजह दरयाफ़्त की, तो फ़रमाया: *कुल्लु अहादिन युनफिकू मिम्मा इनदाहू* "यानी जिस के पास जो कुछ होता है वही खर्च करता है" (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 383, जिल्द अव्वल)

सबक़:- जहाँ तक हो सके, सख़्ती का जवाब भी नर्मी से ही देना चाहिए। ना के नर्मी का जवाब भी सख़्ती से दिया जाए। जैसे के आज कल आम रोश है।

हिकायत नम्बर(605) मेहनत व मज़दूरी

एक शख़्स सात रोज़ तक बे खाये पिये किसी पहाड़ की खो में बैठा इबादत करता रहा। अल्लाह तआला ने उसके नबी पर वही भेजी के उससे कह दो। क्या तू अपने ज़ेहद से हमारी हिकमत के कारखाने को तबाह करना चाहता है। जा और कहीं चल फिर कर दो चार पैसे की मज़दूरी कर। हम बन्दों को बन्दों ही के हाथ से देना पसंद करते हैं। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 444, जिल्द अव्वल)

सबक़:- अल्लाह तआला बे शक रज़्ज़ाक है। लेकिन इंसान को मेहनत व मज़दूरी करना भी ज़रूरी है। और अल्लाह तआला किसी वसीले ही से अपने ईनामो इक्राम से नवाज़ता है।

हिकायत नम्बर(606) छूहारे का दरख़्त

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ज़माने में एक शख़्स हज़रत अबु दुजाना रज़ी अल्लाहो अन्ह की आदत थी के सुबह नमाज़ पढ़ते ही फौरन मस्जिद से घर चले जाते थे। एक दिन हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने दरयाफ़्त फ़रमाया। के ऐसा क्यों करते हो। तो उन्होंने बयान किया के मेरे पड़ोसी के घर में छुहारे का एक दरख़्त है। रात को उसके छूहारे मेरे सहन में गिरते हैं। तो सुबह को मेरे बच्चे उनको उठा लेते हैं। इसलिए मैं उनको सो उठने से पहले ही वो सारे छूहारे जो रात को गिरते हैं। उठा कर पड़ोसी के घर में फैंक

Scanned by CamScanner

देता हूँ। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उसके पड़ोसी को बुलाया। और फ़रमाया के अपने छूहारे के दरख़्त को जन्नत के छूहारे के दस दरख़्तों के अवज़ फ़रोख़्त कर दे। ये सुनकर सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह बोले। या रसूल अल्लाह! मेरे दस दरख़्त दूहारे के फलाँ जगह पर हैं। मैं वो दस दरख़्त उसे दे देता हूँ और जन्नत के दरख़्त आप मुझे दे दें। चुनाँचे इसी तरह बात तय हो गई। और अबु दुजाना के पड़ोसी ने भी ये बात मंज़ूर कर ली। दूसरी सुबह को जो देखा तो वो छूहारे का दरख़्त अबु दुजाना के सहन में खड़ा था। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 387, जिल्द अव्वल)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम रिज़वान में कमाल दर्जे का तक़वा था। और दूसरे की चीज़ पर वो कभी अपना क़ब्ज़ा नहीं जा लेते थे। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जन्नत और जन्नत की हर चीज़ के मालिक व मुख़्तार हैं। वरना जन्नत के दस दरख़्तों के बदले हुज़ूर अलेहिस्सलाम अबु दुजाना के पड़ोसी का दरख़्त क्यों खरीदते? और ये भी मालूम हुआ के सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर अलेहिस्सलाम की हर बात में सबसे पहले तसदीक़ फ़रमाया करते थे और ये भी मालूम हुआ के दरख़्त भी हमारे हुज़ूर की मर्ज़ी पहचानते थे।

हिकायत नम्बर(607) अब्दुल करीम

हज्जाज बिन यूसुफ़ ने एक शख़्स को मार डालने के लिए बुला भेजा। उसने अदब से कहा के ऐ अमीर! मेरे पास लोगों की अमानतें रखी हुई हैं। आप मुझे इतनी मोहलत दें के मैं जाकर इन्हें वापस कर दूं। हज्जाज ने इस इलतिजा को इस शर्त पर क़बूल कर लिया के वो किसी शख़्स को ज़मानती खड़ा कर दे। ये शख़्स ज़मानती की तलाश में निकला। और एक नेक फित्रत वजीहा मर्द को देखकर कहने लगा। जनाब आपका नाम? कहा अब्दुल करीम! कहा आक़ा को अपने ग़ुलाम में अपने अपने करम की निशानी ज़रूर छोड़नी चाहिए। ये कहकर हज्जाज का सारा वाक़ेया कह सुनाया। वो नेक नफ़्स मर्द बोला। मैं तुम्हारी ज़मानत ज़रूर दूंगा। और उस सरकश नफ़्स की ख़ातिर अपने नाम पर बट्टा ना लगाऊँगा। चुनाँचे ये शख़्स गया। और उसका ज़ामिन बन गया। इधर उस शख़्स ने जाकर लोगों की अमानतें वापस कीं। और ऐसे नाज़ुक वक़्त में वापस आया जब के हज्जाज इस ज़ामिल को बुला कर उसके क़त्ल का हुक्म दे चुका था। ज़ामिन को जब क़त्ल गाह की जानिब ले जाया गया। तो उसने हज्जाज से कहा। के मुझे दो रकआत नमाज़ पढ़

Scanned by CamScanner

लेने की मोहलत मिलनी चाहिए। चुनाँचे उसे मोहलत दी गई। ये शख़्स दो रकअत नमाज़ पढ़कर और क़िबलारू होकर जनाबे इलाही में गिड़गिड़ाया। ऐ मेरे रब! इस शख़्स को मुझ पर यूं इतमिनान हुआ था। के मैं अब्दुलकरीम हूँ। और तू करीम। अब्दुलकरीम तो ज़ामिन बन चुका। अब तू करम फ़रमा। इतने में जल्लाद ने चाहा। के उसका सर क़लम कर दे के सामने से गुबार उठता हुआ दिखाई दिया। और थोड़े अर्से में वो शख़्स नमूदार हुआ। जल्लाद ने उससे कहा। भला तू जान देने को क्यों आ गया। जबके तुम्हारा ज़ामिन क़त्ल किया जाने वाला था। उसने कहा, मुझे खुदा का ये इतमिनान बख़्श इर्शाद *ओफू बिअहदी ओफी बिअहदीकुम* यहाँ कुशाँ कुशाँ ले आया है। नीज़ ईफाऐ अहद ईमान के दरख़्त की एक बड़ी शाख है। तो मैं दुनिया की फानी ज़िन्दगी की ख़ातिर ईमान से बाहर नहीं होना चाहता उस पर हज्जाज ने दोनों ही को रिहा कर दिया। और देनों की साबित क़दमी की तारीफ करने लगा। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 4 जिल्द 2)

सबक़:- सच्चा मुसलमान मुश्किल के वक़्त अपने भाई के काम आता है। और सच्चा मुसलमान अपने अहद को पूरा करने के लिए जान की भी परवाह नहीं करता।

हिकायत नम्बर (608) हिकमत

मसरूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह कहते हैं के एक शख़्स जंगल में रहा करता था। और उसके साथ एक कुत्ता, एक गधा और एक मुर्ग था। गधे पर तो उसके लोग अपना मालो असबाब लाद कर ल या करते थे। कुत्ता उनकी निगहबानी किया करता था। मुर्ग़ उनके लिए वक़ बताने के काम आता था। यानी नमाज़ के लिए उन्हें जगा दिया करता था। एक दिन का ज़िक्र है के लोमड़ी आई और मुर्ग़ को पकड़ कर ले गई। उस शख़्स ने कहा। अलहम्दू लिल्लाह! इसमें कोई बेहतरी होगी। फिर एक दिन कुत्ता मर गया। उसने उस वक़्त भी कहा के अलहम्दू लिल्लाह! इसमें कोई हिकमत ही होगी। फिर एक दिन ऐसा इत्तिफाक़ हुआ के उसके पड़ोसियों पर दुश्मन आ पड़ा। और उनका तमाम मालो असबाब लूट कर ले गया। क्योंके उनके पास आवाज़ देने वाले जानवर थे। जिनकी आवाज़ से उन चोरों को उनका पता चला। और माल लूट कर ले गए। मगर चूंके उन लोगों के पास कोई ऐसी चीज़ आवाज़ देना वाली ना रही थी जिससे उनका इस मुक़ाम में होना मालूम होता। लिहाज़ा चोरों की दस्त बर्द से महफूज़ रहे। सुबह को जब ये लोग उठे और अपने

Scanned by CamScanner

पड़ोसियों को तबाह व बर्बाद देखा। तो कहने लगे बिला शुबह इन जानवरों का मरना हमारे हक़ में बेहतर हुआ। वरना आज हम भी बर्बाद हो जाते। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 150, जिल्द अव्वल)

सबक़: खुदा की हर बात में कोई ना कोई हिकमत ज़रूर होती है। और उसकी तरफ़ से कोई भी वाक़ेया पेश आए। तो अलहम्दू लिल्लाह कहकर यही समझना चाहिए के इसमें ज़रूर बेहतरी ही होगी।

हिकायत नम्बर(609) पाखाने का कीड़ा

एक शख़्स ने पाखाने के कीड़े को देखकर कहा। भला इस ज़लील जानवर को पैदा करने में खुदा की क्या हिकमत है? ना तो उसकी सूरत ही अच्छी है। ना कोई इस में खुशबू है। थोड़े दिनों के बाद वो शख़्स एक मोहलिक फोड़े में मुबतला हो गया। जिसके इलाज से तबीब थक गए। एक दिन एक तबीब आया है उस फोड़े को देखकर कहने लगा के इस फोड़े का इलाज एक ही है। और वो ये के पाखाने का कीड़ा लाया जाए और उसे आग में जलाकर उसकी राख से एक मरहम तैयार की जाए। उस मरहम से वो फोड़ा दूर हो सकता है। चुनाँचे पाखाने का कीड़ा लाया गया। और उसे जलाकर उसकी राख से मरहम तैयार किया गया। और उसके ज़ख़्म पर लगाया गया। तो उसका ज़ख़्म अच्छा हो गया। इस पर इस ज़ख्मी शख़्स ने कहा। इलाही! मैं जान गया। के तेरी हर बात में हिकमत है। और कोई चीज़ तूने बेकार पैदा नहीं फ़रमाई। जो कीड़ा मेरी नज़र में हक़ीर व ज़लील था। वही आज अज़ीज़ साबित हुआ। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 155, जिल्द अव्वल)

सबक़:- अल्लाह तआला ने कोई चीज़ बेकार नहीं पैदा फ़रमाई।

हिकायत नम्बर(610) अंधा परिंदा

हज़रत अनस रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं के एक दिन मैं हुज़ूर सल्ल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ एक जंगल में था। के आपने एक अंधे परिंदे को एक दरख़्त पर ठोंगें मारते हुए देखा। और मुझ से फ़रमाया। ऐ अनस! जानते हो ये परिंदा क्या कह रहा है? मैंने अर्ज़ किया। अल्लाह जाने या उसका रसूल! हुज़ूर ने फ़रमाया। ये कह रहा है। इलाही! तूने मुझे अंधा भी किया और भूका भी। इतने में एक टिड्डी उड़ती हुई आई और उसके मुंह में आकर गिरी। और उस परिंदे ने उसे खा लिया। वो परिंदा फिर ठोंगे मारने लगा। हुज़ूर ने फ़रमाया। ऐ अनस! जानते हो के अब ये क्या कह रहा है। मैंने

Scanned by CamScanner

अर्ज़ किया, के हुज़ूर आप ही जानें, फ़रमाया। ऐ अनस! अब ये कह रहा है के *मन तवक्कला अललाही कफ़्फाहू* जिसने अल्लाह पर तवक्कल किया। अल्लाह उसका काम पूरा कर देता है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 442, जिल्द अव्वल)

सबक़:- अल्लाह पर तवक्कल रखने से सारे काम पूरे हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(611) चोर पकड़े गए

एक बादशह को अपने एक ग़ुलाम से बड़ा प्यार था। दूसरे ग़ुलाम से बहुत जलते थे। एक दफा बादशाह ने सब ग़ुलामों को अपने शाही बाग़ में मेवा लाने के लिए भेजा सब ने बादशाह के इस मंज़ूरे नज़र ग़ुलाम के खिलाफ साज़िश की। और सारा मेवा खुद खा गए। और बादशाह से ये कह दिया के आपका मंज़ूरे नज़र ग़ुलाम सारा मेवा खा गया है। बादशाह ने फौरन एक देग में पानी डलवाया। और उसमें थोड़ा सा लहसन मिलकर उसे आग पर खूब गर्म किया। और फिर उन सब ग़ुलामों को वो पानी पिला कर चन्द सिपाहियों को हुक्म दिया। के इन्हें बाहर मैदान में खूब दौड़ाया जाए। जब वो पानी पीकर थोड़ी देर दौड़े। तो सब ने क़ै कर डाली। और सिवाए उस एक ग़ुलाम के सबके पेट में मेवा बरआमद हो गया। और चोर पकड़े गए। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- जिन लोगों ने सूद, रिश्वत, ग़बन, बलैक और दीगर ना जायज़ तरीक़ों से जो माल कमाया और खाया है। कल क़यामत के दिन जब शहनशाह हक़ीक़ी उन्हें जहन्नुम का खोलता हुआ पानी पिलाएगा। तो ये सारा हराम का माल वहाँ उगलना पड़ेगा। और चोर पकड़े जायेंगे। पस आज तौबा के ज़ुल्लाब के साथ मैदा साफ कर लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर(612) शऊवाना

शहर बसरा में एक गाने वाली तवायफ शऊवाना नामी रहती थी। जिसका शहर भर में बड़ा चर्चा था। और वो बड़ी बदकार औरत थी। उमरा की हर मेहफिल में वो शरीक होती थी। एक दिन वो अपनी लौंडियों के हमराह कहीं जा रही थी के रास्ते में एक मुक़ाम से उसे बहुत से लोगों के रोने की आवाज़ आई। शऊवाना हैरान हुई। और समझी के शायद कोई मातम हो गया है। फिर तहक़ीक़े हाल के लिए उस मुक़ाम पर पहुँची। क्या देखती है। के एक वाज़ बहुत बड़े मजमअे में जहन्नुम की सिफ़्त और खुदा के होलनाक

Scanned by CamScanner

अज़ाब का ज़िक्र कर रहे थे। और मजमअ खुदा के ख़ौफ से रो रहा था। शऊवाना पर भी इस वाज़ का असर हुआ। और वो भी खुदा के ख़ौफ से कांपने लगी और फिर कहने लगी। क्यों हुज़ूर! अगर मैं तौबा कर लूं, तो खुदा क्या मेरी तौबा क़बूल करेगा और मेरे गुनाह माफ फ़रमा देगा? वो बोले हाँ! शऊवाना ने कहा। मगर मेरे गुनाह बेशुमार हैं। और मैं बड़ी बदकार हूँ। वाज़ ने कहा। तुम तो तुम हो, खुदा की क़सम अगर शऊवाना भी तौबा करे तो खुदा उसे भी माफ फ़रमा देगा। शऊवाना रोते हुए बोली। तो जनाब सुनिये! मैं ही शऊवाना हूँ। और आज सच्चे दिल से तौबा करती हूँ। के आईंदा कभी कोई गुनाह ना करूंगी।

उसके बाद घर लौटी और अपनी सब लोंडियाँ आज़ाद करके अपना सारा माल गुरबा में तक़सीम कर दिया। और खुद इबादत में मशगूल हो गई। और चालीस साल तक ज़िन्दा रही और सारे बसरा में आबिदा व ज़ाहिदा के नाम से मशहूर हो गई। (रौनक़-उल-मजालिस, अल्लामा इब्ने याहिया, सफह 24)

सबक़:- सच्चे दिल के साथ तौबा कर लेने से खुदा तआला बड़े बड़े गुनाह माफ कर देता है।

हिकायत नम्बर(613) ईंट की कहानी

बनी इस्राईल में एक आदमी मर गया। और अपने पीछे एक मकान और दो बेटे छोड़ गया। उसके दोनों बेटे मकान की तक़सीम करने लगे तो दोनों आपस में झगड़ पड़े। और लड़ने मरने पर तैयार हुए। इतने में उस मकान की एक ईंट में से उन्होंने ये आवाज़ सुनी के ऐ लड़को! मेरी ख़ातिर मत लड़ो, मेरी तरफ़ देखो, मैं किसी वक़्त बहुत बड़ा बादशाह थी। तीन सौ सत्तर साल मैंने उम्र पाई। फिर मरने के बाद मैं एक सौ साल तक क़ब्र में रही। हत्ता के मेरी क़ब्र एक मैदान बन ग़ई। और मेरी क़ब्र की जगह से मिट्टी खोदी गई। इस मिट्टी में मैं भी थी। फिर मेरी एक ईंट बनाई गई। और चालीस साल तक मैं ईंट की शक्ल में रही। फिर मुझे तोड़ा गया। और मैं एक रोड़े की शक्ल में एक सौ तीन साल तक राहों में और सड़कों में पड़ी रही। हत्ता के फिर मेरी मिट्टी बन गई। और दोबारा फिर मुझे ईंट बना दिया गया। और इस मकान में लगा दिया गया और इस मकान में मैं तीन सौ साल से चली आ रही हूँ। बच्चो! क्यों झगड़े हो, तुम्हारा भी यही हाल होने वाला है। (रौनक़-उल-मजालिस, सफ़ा 30)

Scanned by CamScanner

सबक़:- ये दुनिया बड़ी नापायदार है। इसकी ख़ातिर लड़ना झगड़ना अक्लमंदी का काम नहीं।

हिकायत नम्बर(614) बे सिबाती दुनिया

बनी इस्राईल के एक नोजवान आबिद के पास हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम आया करते थे। ये बात उस वक़्त के बादशाह ने सुनी और उस आबिद को बुलाया। और पूछा क्या ये सच है के तुम्हारे पास हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम आया करते थे? उसने कहा। के हाँ! बादशाह ने कहा। अब जब वो आयें तो उन्हें मेरे पास ले आना। अगर ना लाओगे तो मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा। चुनाँचे ख़िज़्र अलेहिस्सलाम एक रोज़ उसके पास तशरीफ़ लाए। तो उस आबिद ने उनसे सारा वाक़ेया बयान कर दिया। आपने फ़रमाया। चलो मैं उस बादशाह के पास चलता हूँ। चुनाँचे आप उस बादशाह के पास आए। बादशाह ने पूछा, आप ही ख़िज़्र हैं? आपने फ़रमाया, हाँ! बादशाह ने कहा, तो हमें कोई बड़ी अजीब बात सुनाईये, फ़रमाया मैंने दुनिया की बड़ी बड़ी अजीब बातें देखी हैं। मगर उनमें से एक सुनाता हूँ। लो सुनो!

मैं एक मर्तबा एक बहुत बड़े खूबसूरत और आबाद शहर से गुज़रा मैंने इस शहर के एक बाशिन्दे से पूछा, ये शहर कब से बना है? तो वो बोला, के ये बहुत पुराना शहर है। इसकी इब्तिदा का ना मुझे इल्म है ना हमारे आबाओ अजदाद को। खुदा जाने कब से ये शहर चला आता है। फिर मैं पाँच सौ साल के बाद उसी जगह से गुज़रा तो वहाँ उस शहर का नामो निशान ना था। वहाँ एक जंगल था। और एक आदमी वहाँ लकड़ियाँ चुन रहा था। मैंने उससे पूछा के ये शहर बर्बाद कब से हो गया? तो वो शख़्स हंसा, और कहने लगा के यहाँ शहर कब था। ये जगह तो मुद्दतों से जंगली चली आ रही है। हमारे आबाओ अजदाद ने भी यहाँ जंगल ही देखा है। फिर मैं पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा तो वहाँ एक अज़ीम-उश्शान दरया बह रहा था। और किनारे पर चन्द शिकारी मछलियाँ पकड़ रहे थे। मैंने उनसे पूछा के ये ज़मीन दरया कब से बन गई? तो वो हंसकर मुझ से कहने लगे के आप जैसा आदमी ये सवाल करे? ताज्जुब है। जनाब! यहाँ तो हमेशा से दरया ही बहता आया है। हमारे आबाओ अजदाद ने भी यहाँ दरया ही देखा है। फिर मैं पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा तो वो जगह एक बहुत बड़ा मैदान देखी। जहाँ एक आदमी को फिरते देखा। मैंने उससे पूछा के ये जगह खुश्क कब से हो गई तो वो बोला। के ये जगह तो हमेशा से यूंही चली आ रही है। मैंने पूछा। यहाँ

Scanned by CamScanner

कभी दरया नहीं बहता था? तो वो बोला हर गिज़ नहीं, हम ने ऐसा ना देखा। ना अपने आबाओ अजदाद से सुना, फिर मैं पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा। तो वहाँ फिर पहले शहर से भी ज़्यादा एक अज़ीम-उश्शान शहर देखा। मैंने एक बाशिन्दे से पूछा के ये शहर कब से है? वो बोला ये शहर बहुत पुराना है। इसकी इब्तिदा का ना हमें इल्म है ना हमारे आबाओ अजदाद को। (अजायब-उल-मख़लूक़ात लिलकज़वीनी हाशिया हयात-उल-हैवान, सफ़ा 129, जिल्द अव्वल)

सबक़:- ये दुनिया हज़ारों रंग बदलती है। इसकी किसी चीज़ को दव्वाम व क़याम हासिल नहीं। लिहाज़ा ऐसी नापायदार दुनिया में दिल नहीं लगाना चाहिए और अपनी आक़बत की फिक्र करना चाहिए। जहाँ की हर चीज़ पायेदार और हमेशा के लिए काम आने वाली है।

हिकायत नम्बर(615) पुर असरार फक़ीर

ईद का दिन है, सेठ नईम और उसकी बीवी हसीना क़ीमती लिबास में मलबूस एक कमरे में बैठे हुए खाने के इन्तिज़ार में हैं के उनका मुलाज़िम शकूर कमरे में दाखिल हुआ। और मौद्दबाना लहजे में कहा।

शकूर:- हुज़ूर खाना तैयार है, तशरीफ़ ले चलिए।

नईम:- चलो बैगम खाने से फारिग हो लें।

हसीना:- चलिये।

नईम मअे हसीना के खाने पर बैठे ही थे। के बाहर के दरवाज़े से आवाज़ आई।

"बाबा कई दिन से भूका हूँ, ईद का दिन है। खुदारा कुछ खाने को दो। खुदा भला करेगा।"

फक़ीर की ये सदा सुनकर सेठ नईम जो दौलत के नशे में चूर और मग़रूर था। चीं बजबीं होकर बोला।

नईम:- ये मंगते कम बख़्त ईद के दिन भी पीछा नहीं छोड़ते। शकूर उसे धक्के देकर दरवाज़े से बाहर निकाल दो। चुनाँचे फक़ीर को धक्के देकर बाहर निकाल दिया गया।

नईम मुतफक्किर व परेशान घर में दाखिल हुआ। हसीना ने दरयाफ़्त किया।

हसीना:- हालात कुछ सुधरे या नहीं?

नईम:- हसीना! क्या बताऊँ हो क्या गया है। मेरी हर कोशिश मौजिब

Scanned by CamScanner

नुक़्सान साबित हो रही है। थोड़े ही दिनों में मेरी हर चीज़ मेरे क़ब्ज़े से निकल चुकी है। और जो कुछ रह गया है। वो भी जा रहा है। अगर हालात का यही रंग ढंग रहे। तो हसीना मुसतक़बिल बड़ा तारीक नज़र आ रहा है।

क़र्ज़ ख़्वाह हर वक़्त तंग करने लगे। हत्ता के बाहर निकलना भी दुश्वार हो गया है।

ईद के दिन से छः माह बाद वही नईम जो सेठ कहलाता था। इंक़िलाब ज़माने का शिकार हो गया। और उसका सारा मालो मताअ दुकान व मकान वग़ैरा नज़ नुक़्सान होकर गिरफ़्त रहन में आ गया। और फिर नईम के उरूज व इक़्बाल का सूरज दीवालिया पन के सियाह बादलों में छुप कर रह गया। और नईम पैसे पैसे का मोहताज हो गया हत्ता के फाक़ा कशी तक नोबत पहुँच गई।

इन्तिहाई यास अंगेज़ और हसरत आमेज़ लहजे में लरज़ती हुई आवाज़ से नईम ने हसीना को मुख़ातिब किया।

नईमः- मेरा एक आख़री जुमला सुन लो। मैं जानता हूँ के तुझे बेहद रंज पहुँचेगा और उम्र भर के रिश्ते को यूं अआनन फआनन टूटते हुए देखकर तुम्हारा दिल भी टूट जाएगा। मगर हसीना (रोते हुए) क्या करूं। तुम्हारा नईम शिकार इंक़िलाब हो गया। मुफलिस व मोहताज हो गया। खुद फाक़ाकश रहूं मगर तुम्हारी फाक़ा कशी नहीं देख सकता। हसीना! सिर्फ इस खयाल से के तुम अपना मुसतक़बिल बेहतर बना सको मैं तुम्हें बादिले नख़्वास्ता छोड़ देता हूँ। और तलाक़ देता हूँ। जाओ तुम्हें इजाज़त है के बाद अज़ इद्दत कहीं और निकाह कर लो। (दोनों रो पड़े और फिर उसके बाद) पूरा साल गुज़र गया और फिर ईद का दिन आ गया। हसीना अपने दूसरे ख़ाविंद सेठ शाकिर के साथ खाना खाने बैठी ही थी के बाहर के दरवाज़े से एक फक़ीर की आवाज़ आई।

"बाबा कई दिन से भूका हूँ। ईद का दिन है। खुदारा कुछ खाने को दो। खुदा भला करेगा।"

सेठ शाकिर (जो बड़ा नेक दिल और फय्याज़ था) ने हसीना से कहा पहले इस फक़ीर को खाना भिजवाओ। फिर हम खायेंगे। चुनाँचे हसीना फक़ीर को खाने भिजवाने उठी। कमरे से निकली तो अचानक बाहर के दरवाज़े पर खड़े हुए फक़ीर पर नज़र पड़ गई। फक़ीर को देखा तो एक दम चीख मार कर धड़ाम से गिर पड़ी और बेहोश हो गई। शाकिर दौड़ा। और उसे होश में लाने का जतन करने लगा और होश जो आया तो शाकिन

Scanned by CamScanner

मुख़ातिब हुआ।

शाकिरः- हसीना! प्यारी हसीना! क्या बात है। ये क्या हुआ तुम्हें।

हसीनाः- (रोते हुए) माफ करना प्यारे! ये दिल क़ाबू में ना रहा। बड़ी ही इब्रतनाक और दर्दअंगेज़ नज़्ज़ारा है।

शाकिरः- हाँ बताओ तो वो क्या है?

हसीनाः- ये फक़ीर जो बाहर दरवाज़े पर खड़ा है। मैंने उसे पहचान लिया है। ये सेठ नईम है।

शाकिरः- सेठ नईम? और तुम उसे जानती हो और फिर ये अब इस हाल में?

हसीनाः- हाँ, हाँ, मैं उसे जानती हूँ, गुज़िश्ता साल ये मेरा ख़ाविंद था, आज से पूरे एक साल पहले इसी ईद के दिन हम खाना खाने बैठे। तो इसी तरह उस रोज़ भी एक फक़ीर ने हमारे दरवाज़े पर आकर भीक माँगी थी। मगर आह! नईम ने उसे धक्के दकर निकलवा दिया। और आज इस पादाश में खुद भीक माँगता नज़र आ रहा है।

शाकिरः- ये दुनिया बड़ी बेवफा है। इस पर क्या भरोसा! हसीना! लो अब इससे भी ज़्यादा इब्रतनाक हक़ीक़त का नज़्ज़ारा करो। हसीना! तुम ने नईम को तो पहचान लिया मगर अब मुझे भी पहचान लो।

हसीनाः- आपको भी पहचान लूं। क्या मतलब?

शाकिरः- मतलब ये के ये तुम्हारा ख़ाविंद सेठ शाकिर वही पिछले साल वाला फक़ीर है। जो सेठ नईम के दरवाज़े से धक्के देकर निकलवाया गया था। हसीना ये सुनकर फिर बेहोश हो गई। (हिकायत सअदी तबसरफ़ मौल्लिफ)

सबक़ः- ये दुनिया बड़ी बे वफा है। इस पर कभी भरोसा ना करना चाहिए। और दौलत के नशे में मखमूर होकर ग़रीबों, मोहताजों और फक़ीरों को हर गिज़ सताना ना चाहिए। बल्के उनकी मदद करना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के खुदा की गिरफ़्त बड़ी सख़्त और होलनाक होती है। वो देर से पकड़ता है। मगर सख़्त पकड़ता है। उसके जलालो ग़ज़ब से बचना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के इस ज़माने में इमारत व ग़ुर्बत सब आरज़ी चीज़ें हैं। आज जो अमीर है मुमकिन है कल वो ग़रीब हो जाए। और आज जो ग़रीब है मुमकिन है कल अमीर हो जाए और इस इंक़िलाब में उसकी मिसालें बहुत सी देख भी ली गई हैं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(616) दुनिया परस्त का अंजाम

ईसा अलेहिस्सलाम एक सफर में निकले, तो आपके हमराह एक यहूदी हो लिया उस यहूदी के पास दो रोटियाँ थीं। और ईसा अलेहिस्सलाम के पास एक रोटी थी। ईसा अलेहिस्सलाम ने उससे कहा। आओ दोनों मिलकर रोटी खायें। यहूदी ने मान लिया। मगर जब उसने देखा। के ईसा अलेहिस्सलाम के पास एक रोटी है। और मेरे पास दो, तो पछताया के मैंने शिर्कत का वादा क्यों कर लिया? चुनाँचे जब खाने का टाईम हुआ तो यहूदी ने एक ही रोटी रखी। ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुम्हारे पास दो रोटियाँ थीं, एक कहाँ गई? यहूदी बोला, मेरे पास तो एक ही रोटी थी। दो कब थीं? खाना खाकर आगे बढ़े। तो एक अंधा मिला। ईसा अलेहिस्सलाम ने उसके लिए दुआ की तो वो अच्छा हो गया। ये मौजज़ा दिखाकर ईसा अलेहिस्सलाम ने यहूदी से कहा। तुझे उस अल्लाह की क़सम जिसने मेरी दुआ से उस अंधे को अच्छा कर दिया। बता! दूसरी रोटी कहाँ गई? वो बोला मुझे उसी खुदा की क़सम! मेरे पास तो एक ही रोटी थी। दूसरी थी ही नहीं। इतने में आगे बढ़े तो एक हिरन दिखाई दिया। ईसा अलेहिस्सलाम ने उसे बुलाया। वो आ गया। आपने उसे ज़िबह किया। भूना और खाया। और फिर उसकी हड्डियों से फ़रमाया, *कुम बिइज़निल्लाह!* वो हिरन फिर ज़िन्दा हो गया। ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। तुझे उसी खुदा की क़सम जिसने हमें ये हिरन खिलाया। और फिर उसे ज़िन्दा कर दिया। बताओ वो दूसरी रोटी कहाँ गई। वो बोला। मुझे उसी खुदा की क़सम! मेरे पास तो एक ही रोटी थी आगे बढ़े तो एक क़स्बा आ गया। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने वहाँ क़याम किया। यहूदी ने मौक़ा पाकर हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम का असा मुबारक चुरा लिया और खुश हुआ के मैं इस सोंटे से मुर्दे ज़िन्दा किया करूंगा। चुनाँचे उसने क़स्बे में एलान कर दिया के मुर्दे को मुझ से ज़िन्दा करा लो। लोग उसे हाकिम शहर के पास ले गए। जो बीमार था। ये गया और जाते ही पहले वो डंडा उस हाकिम के सर पर दे मारा। वो मर गया। और फिर कहने लगा लो देखो। अब मैं इसे ज़िन्दा करता हूँ। चुनाँचे फिर उसे डंडा मारा और कहा *कुम बिइज़निल्लाह* मगर वो ज़िन्दा ना हो सका। अब तो ये घबराया। लोगों ने पकड़ लिया। और उसे फाँसी पर लटकाने लगे के इतने में हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम पहुँच गए। फ़रमाया। तुम्हारा हाकिम

Scanned by CamScanner

मैं ज़िन्दा कर देता हूँ। उसे छोड़ दो। चुनाँचे आपने कुम बिइज़्निल्लाह कहा। तो हाकिम फौरन ज़िन्दा हो गया। और उन्होंने यहूदी को छोड़ दिया। ईसा अलेहिस्सलाम ने उससे कहा। तुझे उसी अल्लाह की क़सम जिसने तुम्हारी जान बचाई। बताओ वो दूसरी रोटी कहाँ गई? वो बोला मुझे उसी खुदा की क़सम! मेरे पास दूसरी रोटी थी ही नहीं। आगे बढ़े तो सोने की तीन ईंटें मिलीं। ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। इनमें एक ईंट मेरी दूसरी तुम्हारी और तीसरी उसकी जिसने तीसरी रोटी खाई। वो बोला। खुदा की क़सम तीसरी रोटी मैंने ही खाई थी। आपने वो तीनों ईंटें उसी को दे दी। और फ़रमाया। अब तुम मेरा साथ छोड़ दो। चुनाँचे वो ईंटें लेकर चला गया। मगर अल्लाह तआला ने उसे ईंटों समेत ज़मीन में धंसा दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 207, जिल्द अव्वल)

सबक़:- दुनिया का लालच बार्बादी और हलाकत का मौजिब होता है। और ये भी मालूम हुआ के पैग़म्बर के सामने झूट बोलना बड़ा ख़तरनाक है। इसलिए के पैग़म्बर को सब इल्म होता है। और ये भी मालूम हुआ के जो बात पैग़म्बर के मुंह से निकले वही बात दूसरा भी कहे। तो जो असर पैग़म्बर के मुंह से निकले पर होता है दूसरों के मुंह से वो असर नहीं होता। मालूम हुआ के पैग़म्बर की मिस्ल बनने वाला अंजाम कार तबाह व बर्बाद ही होता है।

हिकायत नम्बर(617) मोहलिक दुनिया

तीन आदमियों को असना सफर में तीन सोने की ईंटें मिलीं। तीन ने खुशी खुशी एक एक ले ली। फिर एक उनमें से एक क़रीबी गाँव में खाना लेने के लिए गया। उसकी नीयत बदली और सोचा खाने में ज़हर मिला कर ले चलूं मेरे दोनों साथी खायेंगे। और मर जायेंगे। तो तीनों ईंटें मेरी हो जायेंगी। चुनाँचे वो ज़हर आलूद खाना लेकर आया। उधर उन दोनों ने आपस में ये मशवरा तय कर रखा था के वो खाना लेकर आए तो हम दोनों उसे क़त्ल कर दें। ताके तीनों ईंटें हम दोनों के हिस्से में आयें। चुनाँचे उसके खाना लाते ही ये दोनों उस पर टूट पड़े और उसे क़त्ल कर दिया। और फिर फारिग़ होकर उसका लाया हुआ खाना खाया। तो खुद भी दोनों मर गए और ईंटें वहाँ की वहाँ ही धरी रह गईं। (नुज़हत-उल-मजालिस)

सबक़:- दुनिया फना का घर है उसकी हर चीज़ फानी है। दुनिया का लालच रखने वाला अंजाम कार तबाह हो जाता है और इंसान दुनिया के लिए हज़ार मकरो फ़रैब करता है मगर इंसान मर जाता है। और दुनिया

Scanned by CamScanner

यहीं की यहीं रह जाती है। फिर इस दुनिया के लिए लड़ना मरना किस क़द्र नादानी है।

हिकायत नम्बर(618) माले दुनिया

एक शख़्स सोते में हमेशा बिस्तर पर पैशाब कर दिया करता था। उसकी बीवी ने कहा के ये आपको क्या हो गया है? के हर रोज़ बिस्तर पर पैशाब कर देते हो, उसने कहा के मैं ख़्वाब में शैतान को देखता हूँ के मुझ को सैर के लिए ले जाता है और जब मुझ को हाजत होती है किसी जगह बिठा कर कहता है के पैशाब कर ले मैं पैशाब कर देता हूँ। बीवी ने कहा के शैतान तो जिन्नात में से है जिनके बड़े तसर्रूफात दिए गए हैं। उनसे कहना के हम फिक्रो फाक़ा में रहते हैं हम को कहीं से रुपे दिला दे। उसने कहा, बहुत अच्छा। अब अगर ख़्वाब में आया तो ज़रूर कहूंगा। हस्बे मामूल ख़्वाब में फिर शैतान आया। उसने कहा। कमबख़्त! तू मुझ को हमेशा परेशान करता है। हम परेशानी में मुबतला हैं। हम को कहीं से रुपया नहीं दिलाता। शैतान ने कहा, तूने मुझ से पहले क्यों नहीं कहा। रुपया चाहिए, ग़र्ज़ एक जगह ले गया। और वहाँ से बहुत सा रुपया उसे उठवा दिया। और उस रुपया का इस क़द्र उसे बोझ महसूस हुआ के बोझ से पाखाना निकल गया, जब आँख खुली तो बिस्तर पर पाखाना मौजूद है और रुपये का पता भी नहीं। (माहे तीबा, जनवरी 54ई०)

सबक:- इस आलम की मिसाल आलम ख़्वाब की सी है। और दुनिया के तालिब ख़्वाब देखने वाले की तरह हैं। और माल दुनिया की मिसाल पाखाना की है। उस वक़्त हम ख़्वाब ग़फ़्लत में नहीं जानते के क्या जमा कर रहे हैं। जब आँख खुलेगी यानी मौत आएगी तो उस वक़्त मालूम होगा के माल तो नदारद और पाखाना यानी गुनाह मौजूद है।

हिकायत नम्बर(619) गधा और शाही घोड़े

एक ग़रीब आदमी के कमज़ोर गधे को शाही असतबल में जाने का इत्तिफाक़ हुआ। क्या देखता है के घोड़े खूब मोटे ताज़े हैं और कई खिदमत गुज़ार उनकी ख़िदमत में लगे हुए हैं। गधे को अपनी हालत पर रंज हुआ। और ये तमन्ना करने लगा के ऐ काश! मैं भी उन जैसा होता। इतने में जंग का बुगल बजा। और घोड़ों के मैदाने जंग में जाना पड़ा। और जब वो वापस हुए तो गधे ने देखा के कोई घोड़ा ज़ख्मी है। कोई लहू लहान है। किसी के जिस्म

Scanned by CamScanner

में तीर पैवस्त है। जिसे निकाला जा रहा है। और कोई क़रीब-उल-मर्ग है। ये आलम देखकर गधे ने कहा। मेरे ख़ालिक! मैं इसी हाल में खुश हूँ। मैं नहीं चाहता के मैं इन जैसा हो जाऊँ। (माह तय्यबा, 54ई० फ़रवरी)

सबक़:- खुदा ने जिस जिस हाल में रखा है, वही अच्छा है। और जो बड़े हैं, उनकी आज़माईश भी बड़ी है।

हिकायत नम्बर(620) शेर की खाल में गधा

किसी शख़्स का गधा ज़ख़्मी और नाकारा हो गया। उसने उसको जंगल में आवारा छोड़ दिया। परिंद और मक्खियाँ उसकी रही सही खाल को नोचती थीं। और उसके ज़ख़्म और शदीद होते गए। किसी राहगीर को उस पर रहम आया। और वो उसे घर ले आया। उसके पास शेर की एक खाल थी। उसने वो खाल उस गधे के जिस्म पर डाल दी। और खाल का चेहरे वाला हिस्सा गधे के मुंह पर चढ़ा दिया। अब गधा बे फिक्री से जंगल में चरने लगा। परिंदे, दरिंदे सब उसे शेर समझ कर उससे डरने लगे। कोई नज़दीक़ ना आता था। अब क्या था। बे फिक्री का चरना और जंगल की बादशाही। गधे के ज़ख़्म भी अच्छे हो गए। और खूब मोटा ताज़ा हो गया। गधे की खुरमस्ती मश्हूर है जो बन में आके खुरमस्ती ने जो ज़ोर किया। तो लगा चारों तरफ़ ढेंचूं ढेंचू लगाने। इस आवाज़ को सुनकर जंगल के तमाम जानवरों में मश्हूर हो गया के ये कोई मसख़रा गधा है। जो शेर की खाल ज़ैबतन करके आज तक हमें धोका देता रहा। और आख़िर सब ने जमा होकर गधे का नक़ाब असदी उतारा और आपकी असल शक्ल देखकर आपको अपने ठिकाने पहुँचा दिया। (माह तय्यबा, अप्रैल, 1951ई०)

सबक़:- आज कल बहुत से दुश्मनाने दीन भी मुसलमानों का बहरूप इख़्तियार करके असली मुसलमान बन बन कर फिर रहे हैं। और असल में वो कुछ और ही हैं। मुसलमानों को ऐसे बहरूपों से होशियार रहना चाहिए। इस क़िस्म का कोई बहरूपिया अगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्मो इख़्तियार। औलिया इक्राम की अज़मत व वक़ार या सहाबा इक्राम के फज़्लो शरफ़ या इमामाने दीन की बुज़ुर्गी व इमामत के ख़िलाफ ढेंचूं ढेंचूं करने लगे। तो समझ जाइये के ये शेर की खाल में गधा है।

हिकायत नम्बर(621) हलवा

एक इसाई और एक यहूदी और एक मुसलमान तीनों कहीं जा रहे

Scanned by CamScanner

थे। चूंके रमज़ान शरीफ का महीना था। इसलिए मुसलमान का रोज़ा था। चलते चलते सूरज ग़रूब होने को आया। तो रात गुज़ारने के लिए ये तीनों एक गाँव में पहुँचे, और एक मस्जिद में चले गए मस्जिद के एक पड़ोसी ने तीनों को मुसलमान और रोज़ादार समझकर बहुत सा हलवा पकाया। और एक बर्तन में डाल कर ले आया। और कहा लो भाईयो! रोज़ा इफ़्तार कर लो। हलवा देखकर इसाई और यहूदी ने आपस में मशवरा किया के हमरा ये मुसलमान साथी रोज़े से था। अगर हलवा इस वक़्त खाया। तो ये बहुत सा हलवा खा जाएगा। कोई ऐसी तरकीब करें के हलवा इस वक़्त तो महफूज़ रख दें। और सुबह उठ कर खायें। इस मुसलमान साथी का सुबह रोज़ा होगा। और हम दोनों मज़े से सारा हलवा खा लेंगे। चुनाँचे दोनों ने इस मुसलमान को बुलाया और कहा के हमारा इरादा है के हलवा इस वक़्त संभाल कर रख दें। और सुबह उठ कर तीनों अपना अपना ख़्वाब सुनाऐंगे। रात को जिसने सब से अच्छा ख़्वाब देखा होगा सारे हलवे का वही मालिक होगा। मक़्सद ये के ख़्वाबों की उलझन से उसे उलझाओ। सुबह तो उसका रोज़ा होगा ही। हलवा बहरहाल हमारे काम ही आएगा। मुसलमान ने कहा। मुझे मंज़ूर है। इस फैसले के बाद हलवे को संभाल कर एक कोने में रख दिया गया। और तीनों सो गए। सहरी का वक़्त हुआ तो मुसलमान हस्बे मामूल उठा और देखा के उसके दोनों साथी गहरी नींद सो रहे हैं उसने हलवे का बर्तन उठाया और सारा हलवा खा गया। और रोज़े की नीयत करके फिर सो गया। सुबह इसाई व यहूदी जागे तो हलवा की फिक्र मे एक जगह बैठकर मुसलमान के सामने अपना अपना ख़्वाब बयान करने लगे। ये ख़्वाब महज़ हलवे की लालच में उन्होंने घड़ लिए थे। यहूदी बोला, क्या पूछते हो भाई! रात को मेरे पैग़म्बर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ख़्वाब में तशरीफ़ लाए थे, उन्होंने मुझ से फ़रमाया के उठ चल मेरे साथ कोहे तूर पर, चुनाँचे मैं अपने पैग़म्बर के साथ कोहे तूर पर चला गया। और कोहे तूर की खू सैर की। इससे बेहतर ख़्वाब भला और क्या होगा। लिहाज़ा हलवा मैं खाऊँगा। इसाई बोला। सुनो! मियाँ रात को मेरे पैग़म्बर हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम भी मेरे पास तशरीफ़ लाए थे, और आपने मुझ से फ़रमाया। उठ मेरे उम्मती! चल मेरे साथ आसमान पर जहाँ मैं रहता हूँ। चुनाँचे मैं अपने पैग़म्बर के साथ आसमान पर चला गया। कोहे तूर तो आख़िर ज़मीन पर ही है ना। मैं तो आसमान से होकर आया हूँ। लिहाज़ा हलवा मैं खाऊँगा।

Scanned by CamScanner

अब मुसलमान का नम्बर आया। तो वो बोला भई सहरी का वक़्त हुआ। तो मेरे पैग़म्बर हुज़ूर मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम भी मेरे पास तशरीफ़ लाए थे। और आपने तशरीफ़ लाते ही मुझ से फ़रमाया के उठ! ऐ मेरे उम्मती ! सुबह को तुझे रोज़ा रखना है। उठ कर सहरी खा, हलवा मौजूद है। यही खा लो। चुनाँचे मैं उठा। और हुक्म पैग़म्बरी की तामील में मुझे हलवा खाना पड़ा। और मैंने वो सारा हलवा खा लिया। इसाई व यहूदी ये ख़्वाब सुनकर हैरान रह गए। और बोले। तो क्या सच मुच तुम हलवा खा गए उसने कहा तो क्या करता पैग़म्बर का हुक्म ना मानकर काफिर होता। वो बोले। तो यार हमें भी बुला लेते। मुसलमान ने कहा मैंने तो बहुत आवाज़ें दी थीं। मगर तुम में से एक कोहे तूर पर था। एक आसमान पर। सुनता ही कोई ना था। नाचारा के लिए ही खाना पड़ा। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- बद मज़हब अपनी मतलब बरारी और मुसलमानों का ईमान छीनने के लिए बड़े बड़े हीले बहाने और खुद साख़्ता दलायल क़ायम करते हैं। मगर दाना मुसलमान उनके किसी दाव में नहीं आते। और अपने ईमान व मसलक पर मज़बूती से क़ायम रहते हैं। वो मुसलमान अगर इस इसाई व यहूदी के फ़रैब में आ जाता तो हलवे से महरूम रह जाता। और सुबह भूक से परेशान होता। यूंही जो मुसलमान किसी बद मज़हब के दाव में आ गया समझो के वो ईमान से महरूम हो गया। और क़यामत के रोज़ वो परेशान होगा।

हिकायत नम्बर(622) रुपों की थेली

एक जगह चन्द चोर बैठे हुए थे। उनके पास से एक सुनार गुज़रा। जिसके पास एक रुपों की भरी थेली थी। चोरों मे से एक चोर बोला। लो देखों मैं ये थेली उड़ा कर लाता हूँ। ये कह कर वो इस सुनार के पीछे हो लिया। यहाँ तक के सुनार अपने घर पहुँचा। तो ये चोर भी साथ ही मकान तक पहुँच गया। सुनार ने थेली को चबूतरे पर रखकर अपनी लोंडी से कहा। के मुझे पैशाब की हाजत है। पानी लेकर ऊपर बालाखाने पर आ जाओ। ये कह कर सुनार ऊपर चला गया। और लोंडी भी पानी लेकर ऊपर चली गई। इतने में चोर मकान के अंदर घुस कर थेली उठा लाया। और अपने साथियों में आकर सारा क़िस्सा बयान किया। उन्होंने सुनकर कहा के तूने अच्छा ना किया। उस ग़रीब लोंडी की शामत आ जाएगी। और सुनार यही समझेगा के थेली उसने उठाई है ये अच्छी बात

Scanned by CamScanner

नहीं। उसने कहा के फिर तुम क्या चाहते हो, वो बोले के लोंडी मार पीट से बच जाए। और थेली भी हमें मिल जाए। उसने कहा लो ऐसा ही होगा। चुनाँचे ये चोर उठा और सुनार के मकान पर पहुँच गया। उसने देखा के सुनार वाक़ई लोंडी को मार रहा था। चोर ने दरवाज़ा खटखटाया तो सुनार बोला कौन है? चोर ने कहा के आपके पड़ोसी दुकानदार का नौकर हूँ, सुनार ने बाहर आकर पूछा, क्या कहते हो, तो चोर बोला के मेरी आक़ा ने सलाम कहा है और कहा है के आपका हाफिज़ा खराब हो गया है, आप थेली दुकान में फैंक आए हैं। और चल दिए हैं। अगर हम उसे ना देख लेते तो कोई दूसरा उठा कर ले जाता। और थेली सामने करके दिखाते हुए बोला। यही है ना, उसने कहा। हाँ वल्लाह यही है। सुनार ने थेली को ले लिया। तो चोर बोला। ये मुझे दे दीजिए। और घर में जाकर एक रूक़अे पर लिख ल़ाईये के आपके नौकर से थेली वसूल पा ली। ताके मैं अपनी ज़िम्मेदारी से बरी हो जाऊँ और आपका माल आपको मिल जाए। तो उसने वो थेली उसे वापस की। और खुद रूक़आ लिखने अंदर गया तो चोर थेली लेकर वापस आ गया। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 385)

सबक़:- ये दुनिया एक फ़रैब है, और फ़रैब ही से हाथ आती है और इस दुनिया में बड़े बड़े फ़रैबी और मक्कार भी बस्ते हैं। इसलिए बड़ा होशियार रहना चाहिए।

हिकायत नम्बर(623) उक़्दत-उल-ममसूख़

क़ाज़ी अबुबक्र बिन अरबी हज़रत इमाम ग़ज़ाली अलेह अर्रहमत से इल्म हासिल करके अपने वतन को वापस जा रहे थे। और एक कश्ती पर बैठे हुए दरया उबूर कर रहे थे। अचानक दरया की मौजों में तूफान सा पैदा हुआ। और कश्ती डगमगाने लगी। क़ाज़ी अबु बक्र ने दरया को मुख़ातिब किया। ख़बरदार! ऐ दरया! तुझ पर से तेरी ही मिस्ल एक दरया जा रहा है। (क़ाज़ी साहब ने अपने इल्म पर फख़्र करके अपने आपको दरया कहा) इतने में अजीब शक्ल का एक जानवर दरया से ज़ाहिर हुआ और कश्ती रोक कर खड़ा हो गया। और पूछने लगा। के अगर तुम इतने ही बड़े आलिम हो, तो बताओ जिस औरत के शौहर पर अज़ाब मस्ख़ नाज़िल हो, और वो ममसूख़ हो जाए तो वो औरत कितने दिन इद्दत गुज़ारे? क़ाज़ी अबु बक्र ला जवाब हो गए। और वहीं से फिर वापस हो

Scanned by CamScanner

गए। ताके हज़रत इमाम ग़ज़ाली से ये मसला पूछ के आयें। चुनाँचे इमाम ग़ज़ाली के पास फिर पहुँचे। और यही मसला पूछा तो इमाम ग़ज़ाली ने जवाब दिया, के अगर वो शख़्स ममसूख़ होकर किसी हैवान की शक्ल में चला गया है, तो औरत पर तलाक़ की इद्दत लाज़िम होगी। इसलिए के उस शख़्स की रूह बाक़ी है और अगर वो ममसूख़ होकर पत्थर बन गया है तो औरत पर वफात की इद्दत लाज़िम है इसलिए के रूह भी बदन से जुदा हो गई। ये जवाब मालूम करके क़ाज़ी साहब फिर वापस हुए। और इसी दरया से गुज़रे। तो वही जानवर फिर मिलला। और क़ाज़ी साहब ने उसे सुनाया। तो उसने कहा। जनाब! दरया अगर है तो ग़ज़ाली है। आप नहीं। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 22, जिल्द 2)

सबक़:- इल्म बड़ी नअेमत है और ग़रूर बहुत बुरा है। और ये भी मालूम हुआ के मसायल दीन का खुद ब खुद समझ लेना बड़ा मुश्किल है। किसी आलिम और जानने वाले से पूछना चाहिए।

हिकायत नम्बर(24) हारून अलरशीद और उसकी लोंडी

शायर अबु निवास ने हारून अलरशीद की शान में एक नज़्म लिखी। जिसे सुनाने के लिए वो हारून रशीद के दरबार में गया। इत्तिफाक़न उस रोज़ हारून रशीद अपनी एक लोंडी के पास बैठा था जिसका नाम ख़ालिसा था। और एक बहुत बड़ा क़ीमती हार उस लोंडी के गले में पड़ा हुआ था। जिसे देखकर हारून रशीद खुश हो रहा था। अबु निवास नज़्म सुनाकर कुछ ईनाम हासिल कने के लालच में आया था। मगर हारून रशीद लोंडी और उसके गले के हार की तरफ़ ऐसा मुतवज्जह हुआ। के अबु निवास उसकी तरफ़ उसने तवज्जह ही ना की। अबु निवास बद दिल होकर दरबार से निकल आया। और दरवाज़े से निकलते हुए दरवाज़े पर ये शैर लिख आया। के....

लक़द ज़ाआ शिअरी अला बाबिकुम
कमा ज़ाआ इक़्दुन अला ख़ालिसती

"यानी मेरे शैर तुम्हारे दरवाज़े पर इस तरह ज़ाए हो गए, जिस तरह एक क़ीमती हार ख़ालिसा के गले में ज़ाए हो गया"

हारून अलरशीद को जब पता चला के अबु निवास जाते हुए दरवाज़े पर ये शैर लिख गया है। तो ग़ुस्से में आकर उसे बुलाया। अबु निवास जब लाया गया तो दरवाज़े से गुज़रते हुए उसने शैर के दोनों मिसरओ में लफ़्ज़ "जाअ" के "अैन" के दायरे को मिटा दिया। अब "अैन" की शक्ल ने

Scanned by CamScanner

"हम्ज़ा" की यानी हम्ज़ा की शक्ल इख़्तियार कर ली। और शैर यूं बन गया के...

लक़द ज़ाआ शिअरी अला बाबिकुम
कमा ज़ाआ इक़्दुन अला ख़ालिसती

और मानी उसका ये बन गया के मेरे शैर तुम्हारे दरवाज़े पर इस तरह रोशन हो गए जिस तरह एक क़ीमती हार ख़ालिसा के गले में रोशन हो गया।

अरबी से मस रखने वाले हज़रात इस पुर लुत्फ तग़य्युर व तबद्दुल से महफूज़ हो सकते हैं। "ज़ाअ" जब ऐन से हो तो मानी "ज़ाए हुआ" होते हैं। और जब "ज़ाअ" हम्ज़े से हो तो मानी ज़ूअ यानी रोशन के होते हैं। यानी "रोशन हुआ" तो अबु निवास ने ये कमाल किया के दरबार में दाखिल हाते हुए "ऐन" से "हम्ज़ा" बन जाए। और मानी कुछ और हो जाए। चुनाँचे हारून अलरशीद ने जब बाज़ पुर्स की। तो अबु निवास ने कहा। जनाब मैंने तो तारीफी शैर लिखा है आप खुद मुलाहेज़ा फ़रमा सकते हैं। चुनाँचे हारून अलरशीद ने खुद वो शैर देखा। तो खुश होकर उसे ईनाम दिया। और अबु निवास बजाए सज़ा के अता लेकर आया। (नफहत-उल-यमीन)

सबक़:- अरबी ज़बान बड़ी जामअे मानअे और प्यारी ज़बान है। और दाना आदमी अपनी दानिशमंदी बड़ी बड़ी मुश्किलता को दूर कर लेता है।

हिकायत नम्बर(625) बनान तुफैली

अरब का मशहूर ज़रीफ बनान तुफैली जो इन्तिहा दर्जे का शिकम परवर था। एक दफा वो किसी अमीर की दावत पर उसके हाँ गया। तो अमीर ने उसे अपने पास बिठा लिया। ग़ुलाम ने खुश्क हलवे के टुकड़ों का ख़्वान सामने रखा। अमीर ने एक टुकड़ा उठाकर बनान को दिया।

"बनान ने कहा *अन्ना इलाहाकुम लवाहिदुन* तहक़ीक़ तुम्हारा खुदा एक ही है"

अमीर ने फिर दो टुकड़े दिए। तो बनान ने ये आयत पढ़ी *अरसलना इलैहिमिसनैनी* हमने उनकी तरफ़ दो पैग़म्बर भेजे।

अमीर ने फिर तीन टुकड़े दिए। तो बनान ने ये आयत पढ़ी। *फअज़्ज़ज़ना बिसालिसिन* फिर हम ने तीन से इज़्ज़त बढ़ाई।

अमीर ने फिर चार टुकड़े दिए। तो बनान ने ये आयत पढ़ी। *फखुज़ अरबआता मिनत्तैरी* चार परिंदे ले लो।

Scanned by CamScanner

अमीर ने पाँच दिए तो वो बोला *व यकूलूना ख़मसतुन* वो कहते हैं के पाँच हैं।

फिर उसने छः दिए तो ये आयत पढ़ी *ख़लाक़ास्समावाती वल अरज़ा फी सित्ताती इय्यामिन* खुदा ने ज़मीन व आसमान को छः दिनों में पैदा किया।"

फिर उसने सात दिए तो उसने पढ़ा *व बनीना फोक़ाकुम सबअन शिदादन* हमने तुम पर सात आसमान बना दिए।

उसने आठ दिए। तो उसने कहा *अन ताजुरेनी समानिया हिजज* तुम आठ बरस मेरी मुलाज़मत करो।

फिर उसने नो दिए। तो उसने ये आयत पढ़ी *व काना फिलमदीनती तिसअतू रहतिन* मदीना में नो गिरोह थे।

उसने दस दिए। तो उसने पढ़ा। *तिल्का अशरातिन कामिलतिन* ये है दस की पूरी तादाद।

उसने ग्यारह दिए। तो उसने कहा: *इन्ना इद्दतश्शुहूरी इंदल्लाही इसना अशरा शहरन* खुदा के नज़दीक महीनों की तादाद बारह है।

इस पर अमीर ने तंग आकर तबाक़ उठाया। और बनान के आगे रख दिया। तो बनान ने झट ये आयत पढ़ी *व अरसलना इला मिआती अलफिन ओ यज़ीदूना* हमने उसे एक लाख या उसकी ज़्यादा की तरफ़ भेजा। (लोअ लोअ अश्शरअ, सफ़ा 48)

सबक़:- बद मज़हब अफ़्राद भी अपने खयालात फासिद व अक़ायद बातिला की ताईद में बनान तुफैली की तरह क़ुरआने पाक की आयात पढ़ने लगते हैं। और अहले हक़ खूब जानते हैं के उन लोगों का क़ुरआने पाक पढ़ पढ़ कर सुनाना बिलकुल इसी तरह है जिस तरह बनान तुफैली पढ़ता था।

हिकायत नम्बर(626) युज़िल्ला बिही कसीरन

एक गिरोह किसी दावत पर गया। साहबे खाना ने बहुत बड़े तबाक़ में चावल भर कर दरमियान में गढ़ा करके उसमें घी डाला। और वो तबाक़ इस गिरोह के सामने रख दिया। उनमें से एक शख़्स ने लुक़्मा उठाकर घी पर डाल दिया। और कहा *फकुबकिबू फीहा हुम वल ग़ाइऊन* तो उसमें ओंधे मुंह गिराये जाऐंगे वो और गुमराह लोग और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

दूसरे ने कहा *इज़ा उलक़ू फीहा समीऊ लहा शिहीकन वहिया तफ़ूरू* जब वो इस जहन्नुम में फैंके जायेंगे। तो उसके चीख़ने की

Scanned by CamScanner

आवाज़ सुनेंगे। और वो जोश मारती होगी" और उसने घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

तीसरे ने कहा *आखारक़्ताहिया लितुग़रिक़ा अहलाहा* क्या तूने कश्ती को इसलिए तोड़ा के बैठने वालों को ग़र्क़ कर दे" और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

चौथे ने कहा *इन्ना नसुकुलमाआ इलल अरज़िल जोज़ी* हम पानी को सूखी ज़मीन की तरफ़ ले जाते हैं" और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

पाँचवें ने कहा *फीहिमा ईनानी तजरियान* इन दो बाग़ों में दो चश्मे जारी होंग" और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

छटे ने कहा *फीहिमा ईनानी नज़्ज़ाखतानी* इन दो बाग़ों में दो चश्मे जोश मारते होंगे" और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

सातवें ने कहा *फअलतक़ल मआ अला अमरिन क़दक़ुदीरू* फिर आसमान व ज़मीन का पानी इस काम के लिए जो मुक़द्दर हो चुका था। आपस में मिल गया। और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

आठवें ने कहा *फसुक़्नाहू इला बलादिन मीतिन* हम ने पानी को ऐसे शहर में पहुँचाया। जिसकी ज़मीन मुर्दा थी" और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

नवें ने कहा *व क़ीला या अरज़ुब लई मआका व या समाऊक़्लई।* और हुक्म दिया गया के ऐ ज़मीन अपने पानी को पी जा। और ऐ आसमान उठा ले"। और उसने तमाम घी सारे चावलों में मिला दिया। (किताब-उल-अज़किया सफ़ा 75 लाइमाम बिन जोज़ी रहमत-उल्लाह अलेह)

सबक़:- इस हिकायत से मालूम हुआ के हर्स व आज़ के बन्दे और शिकम परस्त अफ़्राद पहले भी थे। और अब भी हैं। जो क़ुरआने पाक की आयात को ख़्वाह म ख़्वाह अपने ऊपर चसपाँ कर लेते हैं। और अपने ख़यालात फासिदा अक़ायद बातिला को क़ुरआने पाक से खींचा तानी के साथ साबित करना चाहते हैं। चुनाँचे आज भी जो नया फिर्क़ा पैदा होता है। वो अपनी ताईद में क़ुरआन पढ़ने लगता है। यही वजह है के क़ुरआने पाक ही ने खुद एलान फ़र दिया है के *व युज़िल्लुन बिही कसीरन* यानी बहुत से लोग क़ुरआन पढ़कर भी गुमराह हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(627) मुर्ग़ी की तक़्सीम

इब्राहीम अलखरामी कहते हैं के एक दीहाती सहराई अरब के

Scanned by CamScanner

बाशिन्दों में से एक शहरी के यहाँ आया। उसने उसको अपने यहाँ बतौर मेहमान ठहराया उसके पास बहुत सी मुर्गियाँ थीं। और उसके घर वालों में एक बीवी, और उसके दो बेटे, और दो बेटियाँ थीं। ये शहरी मेज़बान बयान करता है के मैंने अपनी बीवी से कहा के आज नाश्ता के लिए मुर्गी भून कर ले आना। जब नाश्ता तेयार होकर आ गया। तो मैं और मेरी बीवी और दोनों बेटे और दोनों बेटियाँ और वो अराबी सब एक दसतरख़्वान पर बैठ गए। हम ने भुनी हुई मुर्ग़ी उसके सामने कर दी। और कहा आप हमारे दरमियान इस तक़सीम कर दें। हमने उससे हंसने और मज़ाक़ के लिए ऐसा किया था। उसने कहा के तक़सीम करने का कोई अहसन तरीक़ तो मैं नहीं जानता। लेकिन अगर तुम मेरी तक़सीम पर राज़ी हो तो मैं सब पर तक़सीम करने को तैयार हूँ। हमने कहा हम सब राज़ी हैं। अब उसने मुर्ग़ी का सर पकड़कर काटा। और वो मुझे दिया। और कहा रास (यानी सर) रईस के लिए। फिर देनों बाज़ू काटे और कहा दोनों बाज़ू दोनों बेटों के लिए। और फिर दोनों पिंडलियाँ काटीं और कहा पिंडलियाँ दोनों बेटियों की। और फिर पीछे से दुम का हिस्सा काटा और बोला अज्ज़ (यानी चूतड़ वाला हिस्सा) अजूज़ (यानी बुढ़िया) के लिए। और वो मेरी बीवी को दे दिया। फिर कहा करोर (यानी धड़ का पूरा हिस्सा) दायर (यानी मेहमान) के लिए और पूरी मुर्ग़ी अपने आगे रख ली। जब दूसरा दिन आया। तो मैंने कहा के आज पाँच मुर्गियाँ भून कर लाना। फिर जब नाश्ता आया तो हम ने कहा तक़सीम कीजिए। तो कहने लगा के मेरा ख़याल ये है के आप साहिबान को मेरी कल वाली तक़सीम ना गवार गुज़री है। हम ने कहा नहीं ऐसा नहीं है आप तक़सीम कीजिए। कहने लगा। तो मैं जुफ़्त का हिसाब रखूंगा या ताक़ का? हम ने कहा। ताक़ का। तो कहा बेहतर! तो यूं होगा के तू और तेरी बीवी और एक मुर्ग़ी। पूरे तीन हो गए। ये कहकर एक मुर्ग़ी हमारी तरफ़ फैंक दी। फिर कहा और तेरे बेटे और एक मुर्ग़ी पूरे तीन हो गए। ये कहकर दूसरी मुर्ग़ी उनकी तरफ़ फैंक दी फिर कहा और तेरी दो बेटियाँ और एक मुर्ग़ी पूरे तीन हो गए। ये कहकर तीसरी मुर्ग़ी उनकी तरफ़ फैंक दी फिर कहा मैं और दो मुर्ग़ियाँ पूरे तीन हो गए और खुद दो मुर्ग़ियाँ लेकर बैठ गया।

फिर हमें ये देखकर के हम उसकी दो मुर्ग़ियों को देख रहे हैं। बोला के तुम लोग क्या देख रहे हो, शायद तुम्हें मेरी ताक़ वाली तक़सीम पसंद नहीं आई वो तो इसी तरह सही आ सकती है। हम ने कहा अच्छा तो जुफ़्त के

Scanned by CamScanner

हिसाब से तक़सीम कीजिए ये सुनकर फिर सब मुर्गियों को इकट्ठा करके अपने सामने रख लिया। और बोला तो और दो तेरे बेटे और एक मुर्ग़ी। चार हो गए। ये कहकर एक मुर्ग़ी मेरी तरफ़ फैंक दी। और तुम्हारी बीवी और दो तुम्हारी बेटियाँ और एक मुर्ग़ी चार हो गए। ये कहकर एक मुर्ग़ी उनकी तरफ़ फैंक दी। और मैं और तीन मुर्गियाँ चार हो गए। ये कहकर तीन मुर्गियाँ अपने आगे रख लीं। फिर अपना मुंह आसमान की तरफ़ उठाकर कहा। ऐ अल्लाह! तेरा बड़ा अहसान है। तूने ही मुझे इस तक़सीम की समझ अता फ़रमाई है। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 172)

सबक़:- बाज़ अवक़ात हंसी मज़ाक का उल्टा अपने ऊपर ही वाक़े हो जाता है।

हिकायत नम्बर (628) चार ज़हीन भाई

नज़ार बिन मअद एक बड़ा रईस आदमी था। उसके चार बेटे थे, जिनके नाम मज़र, रबिआ, अयाद और अनमार थे। नज़ार बिन मअद जब मरने लगा तो अपना माल चारों बेटों में तक़सीम करने के लिए उसने चारों को बुलाया। और कहा, बेटो! देखो फलाँ चीज़ मज़र की है। फलाँ रबिआ की, फलाँ अयाद की और फलाँ अनमार की। और अगर माल की तक़सीम में कुछ मुश्किल पेश आए तो अफई जरहमी शाह नजरान के पास चले जाना। चुनाँचे नज़ार बिन मअद के मरने के बाद तक़सीम में मुश्किल देखकर ये चारों भाई शाह नजरान के पास पहुँचने के लिए नजरान रवाना हुए। चलते हुए रास्ते में उन्होंने एक चरा हुआ खेत देखा। मज़र ने कहा। के जिस ऊँट ने ये खेत खाया है वो काना है रबिआ ने कहा। वो लंगड़ा भी है। अयाद ने कहा। और वो सुस्त भी है। अनमार ने कहा। और उसके दांत भी कमज़ोर हैं। इतने में ऊँट वाला अपने ऊँट की तलाश में आ निकला। और उनसे ऊँट का पता दरयाफ़्त किया। मज़र ने कहा। तुम्हारा ऊँट काना है। वो बोला हाँ। अयाद ने कहा। और वो सुस्त रफ़्तार भी है। उसने कहा। हाँ! अनमार ने कहा। और उसके दांत भी कमज़ोर हैं। उसने कहा। हाँ! रबिया ने कहा। लंगड़ा भी है। वो बोला हाँ, फिर चारों ने कहा। लेकिन भाई खुदा की क़सम हमने तुम्हारा ऊँट देखा नहीं है। वो हैरान होकर बोला, के निशानियाँ तो तुम ने सारी और मुकम्मल बता दी हैं। फिर मैं ये कैसे मान लूं। के मेरा ऊँट तुम ने नहीं देखा। चारों बोले भई! वाक़ेया यही है के ऊँट हम ने देखा बिलकुल नहीं।

Scanned by CamScanner

ऊँट का मालिक उनके साथ ही नजरान पहुँच गया। और शाह नजरान से इन चारों भाईयों की शिकायत कर दी के चारों ने मेरे ऊँट की पूरी पूरी निशानियाँ तो बता दी हैं मगर ऊँट देखने का इंकार कर रहे हैं, बादशाह ने उन से बिन देखे ऊँट की निशानियाँ बता देने की वजह पूछी तो मज़र बोला। जनाब खेत को मैंने एक सिम्त से खाया हुआ देखा और दूसरी जानिब को सालिम पाया तो समझ गया के ऊँट यक चश्म है। रबिया ने कहा और मैंने ज़मीन पर पैर का एक निशान दूसरे पैरों के निशानों से बहुत हल्का पाया तो जान गया के ऊँट एक पैर से लंगड़ा है। अयाद ने कहा और मैंने उसकी मेंगनियों को बहुत थोड़े थोड़े फासले पर मजतमअ पाया, इससे मैंने अंदाज़ा लगाया के ऊँट सुस्त रफ़्तार है। अगर तेज़ रफ़्तार होता तो मेंगनियाँ दूर दूर और मुनतशिर पड़ी होतीं। अनमार कहा, और मैंने खेत का नर्म नर्म हिस्सा खाया हुआ और सख़्त हिस्सा छोड़ा हुआ देखा तो समझ गया के ऊँट के दांत कमज़ोर हैं।

बादशाह ने उनकी ये गुफ़्तगू सुनी तो ऊँट वाले से कहा। के मियाँ तुम्हारा ऊँट वाक़ई उन्होंने नहीं देखा। जाओ उसे कहीं तलाश करो।

उसके बाद बादशाह ने उन चारों को मेहमान खाने में भेजा। ताके कुछ खा पी लें। चारों एक कमरे में पहुँचे। और खा पी कर मज़र ने कहा। के ये शराब जो हम ने पी है। किसी कब्रिस्तान के दरख़्तों से कशीदा है। रबिआ ने कहा। और ये जो गोश्त हम ने खाया है किसी कुतिया के दूध से पले हुए बकरे का है। अयाद ने कहा और ये जो रोटियाँ हम ने खाई हैं उनका आटा किसी हैज़ वाली औरत ने गुंधा है। अनमार ने कहा और हम आज जिसके मेहमान हैं वो अपने बाप का नहीं। (यानी बादशाह हरामी है) उनकी सारी ये गुफ़्तगू जासूस ने बादशाह से कह दी। बादशाह ने फौरन शराब कशीद करने वाले को बुलाकर दरयाफ़्त किया के शराब कहाँ की थी? तो बादशाह के तेवर देखकर उसने सच सच कह दिया के हुज़ूर आपके बाप की क़ब्र पर लगे हुए फलदार दरख़्तों से कशीद की गई थी। बादशाह ने फिर कसाब को बुलाया। और पूछा के गोश्त किस चीज़ का था। कसाब ने भी सच सच कह दिया के ये गोश्त कुतिया के दूध से पले हुए एक मोटे ताज़े बकरे का था। बादशाह फिर घर पहुँचा। और आटा गूंधने वाली के मुतअल्लिक़ तहक़ीक़ की तो वाक़ई वो हायज़ा थी। इन तीनों बातों की सहत मालूम करने के बाद बादशाह हैरान होकर दिल ही दिल में कहने लगा के अब तो चौथी बात भी दुरूस्त ही निकलेगी।

Scanned by CamScanner

गुस्से में अपनी माँ के पास पहुँचा। और तलवार लेकर उसकी छाती पर बैठ गया। और कहने लगा, सच सच बता। मैं हलाली हूँ या हरामी? माँ ने कहा, बेटा खुद ही अंदाज़ा कर लो। हलाली होते तो माँ की छाती पर यूं सवार होते? वाक़ेया ये है के मरहूम बादशाह से मेरा कोई बच्चा ना था। मैं डर गई के इस तरह हकूमत दूसरों के पास ना चली जाए इसलिए मैंने ज़िना से तुझे हासिल किया। और मश्हूर तुझे बादशाह का बेटा कर दिया। ये हक़ीक़त सुनकर बादशाह इन्तिहाई कर्ब व मलाल से वापस आया। और चारों भाईयों से कहने लगा के तुम्हारी सारी गुफ़्तगू मैंने सुनी और तहक़ीक़ के बाद तसदीक़ भी कर ली। मगर ये तो बताते जाओ। के तुम ने इन बातों का अंदाज़ा कैसे लगा लिया। मज़र ने कहा के जनाब शराब पीने से सुरवर व इनबिसात और चश्ती पैदा होती है मगर आपकी शराब पीकर हज़्न व मलाल और सुस्ती पैदा हुई। इससे मैंने समझ लिया के ये किसी बाग़ से नहीं बल्के क़ब्रिस्तान से कशीद कर्दा है। रबिया ने कहा और बकरे के गोश्त पर हमेशा चर्बी ऊपर और बोटी नीचे होती है बरख़िलाफ कुत्ते के गोश्त के के बोटी ऊपर और चर्बी नीचे होती है। और हम ने जो गोश्त खाया वो दूसरी क़िस्म का था। ये तो ना मुमकिन था के आपके हाँ कुत्ते का गोश्त बिकता। इसलिए मैंने ये अंदाज़ा लगाया के ये बकरा किसी कुतिया के दूध से पला हुआ होगा। अयाद ने कहा और हायज़ा औरत के गूंधे हुए आटे की रोटी सालन में डालने से बिखर जाती है। और उसके रेज़े अलग अलग हो जाते हैं। चुनाँचे हम ने जो रोटियाँ खाईं उनका भी यही हाल था, इसलिए मेरा अंदाज़ा ये था के ये आटा किसी हायज़ा औरत ने गूंधा है। अनमार ने कहा। और जनाब के मरहूम बादशाह बड़े मेहमान नवाज़ और हमेशा मेहमानों के साथ बैठकर खाना खाया करते थे। और इज़्ज़त व शराफत भी उसमें है। मगर आपने तनहा हमें एक कमरे में भेंज दिया। इससे मैंने अंदाज़ा कर लिया के आप अपने बाप के नहीं। वरना आप भी हमारे साथ बैठकर खाना खाते।

बादशाह ने पूछा। तुम यहाँ आए क्यों हो? वो बोले, अपना झगड़ा चुकाने। बादशाह ने कहा तुम्हारा झगड़ा चुकाना मेरे बस की बात नहीं। अज़राहे करम वापस जाओ। और मुझ से जो लेना है ल लो। और खुदारा अपनी ये तहक़ीक़ और किसी से ना कहना। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 26, जिल्द अव्वल)

सबक़:- बअज़ लोग ऐसे ज़हीन होते हैं के जहाँ दूसरों का ज़हन नहीं

Scanned by CamScanner

पहुँचता। वहाँ उनका ज़हन पहुँच जाता है। और ये आम लोगों की बात है फिर जो अल्लाह के ख़ास और मक़्बूल बन्दे हैं उनके इल्मो इर्फ़ान की शान क्या होगी। और उनके लिए क्यों ना कहा जाए के वो ऐसी ऐसी बातें जान लेते हैं जिनका हमें कुछ पता नहीं होता।

हिकायत नम्बर(629) क़ुरआन से जवाब देने वाली औरत

हज़रत अब्दुल्लाह वास्ती फ़रमाते हैं। मैंने अरफ़ात में एक औरत को देखा जो तनहा खड़ी कह रही थी *मंयहदिल्लाहू फला मुज़िल्ललाह वमंयुज़लिलहू फला हादियला* यानी जिसे खुदारा समझा दे उसे कोई भटका नहीं सकता। और जिस वो राह भला दे। उसे कोई राह समझा नहीं सकता। मैंने मालूम कर लिया के ये औरत रास्ता भूल गई है। मैंने उसके क़रीब जाकर उससे कहा, के ऐ नेक औरत! तू कहाँ से आई है? तो बोली *सुबहानल्लज़ी असरा बिअब्दीही लेलम्मिन मस्जिदिल हरामी इलल मस्जिदिल अक़्सा* मैंने समझ लिया के ये बैत-उल-मुक़द्दस से आई है। मैंने पूछा, तुम यहाँ क्यों आई हो तो बोली। *व लिल्लाही अलन्नासी हिज्जुलबेती* मुझे मालूम हो गया के ये हज के लिए आई है। मैंने पूछा आप का शौहर भी साथ है या आप अकेली हैं? तो बोली *वला तक़्फू मा लेसा लका बिही इल्मुन* इसमें इशारा था के उसका इन्तिक़ाल हो गया है। मैंने पूछा ऊँट पर सवार होगी? तो बोली *वमा तफअलू मिन ख़ैरिन यअलुमाहुल्लाहू* चुनाँचे मैंने सवारी के लिए ऊँट बिठा दिया और वो सवार होने लगी तो बोली *कुल लिलमोमिनीना यगुज़्ज़ मिन अबसारिहिम* मतलब ये के अपनी नज़रें दूसरी तरफ़ कर लो। चुनाँचे मैंने नज़र दूसरी तरफ़ कर ली। और वो सवार हो गई। फिर मैंने पूछा, आपका नाम क्या है? तो बोली *वज़कुर फिलकिताबी मरयमा* मुझे पता चल गया के उसका नाम मरयम है। मैंने पूछा आपकी औलाद है? तो बोली *ववस्सा बिहा इब्राहिमा बनीही* मैंने समझ लिया के उसके चन्द बच्चे हैं। मैंने पूछा उनके नाम क्या हैं तो बोली *वकल्लमल्लाहू मूसा तकलीमा वत्तखज़ल्लाहू इब्राहीमा ख़लीलन या दाऊदा अन्ना जअलनाका खलीफतन* मतलब ये के उनके नाम मूसा, इब्राहीम, और दाऊद हैं। मैंने पूछा वो तुम्हारे बच्चे कौनसी जगह हैं ताके मैं उनकी तलाश करूं तो बोली *वअलामातिन्नजमी हुम यहतादून* मैंने समझ लिया के वो क़ाफलों के रहबर हैं। फिर मैंने पूछा के क्या कुछ खाओगी, तो बोली *इन्नी नज़रतू लिर्रहमानी सोमन* यानी मैं रोज़े से हूँ। चुनाँचे जब हम ढूंडते ढूंडते

Scanned by CamScanner

उसके बेटों के पास पहुँचे तो वो अपनी माँ को देखकर रोने लगे। और कहने लगे। ये हमारी माँ आज तीन दिन से हम से अलेहदा होकर रास्ता भूल गई थी। फिर थोड़ी देर गुज़री तो वो अपने बेटों से कहने लगी *फबअसू अहादुकुम बिवरीकिकुम हाज़िही इलल मदीनती* यानी उसने मेरे लिए बाज़ार से कुछ मंगवाने का हुक्म दिया। थोड़ी देर के बाद उस नेक औररत की हालत खराब हो गई। और उसका आख़री वक़्त आ पहुँचा। मैं उसके क़रीब पहुँचा। और मिज़ाज पुर्सी की तो बोली *वजाआ सकरतुल मौती बिलहक़्क़ी* चुनाँचे उस पाक बाज़ औरत का इन्तिक़ाल हो गया। फिर मैंने उसे उसी रात ख़्वाब में देखा, और पूछा तो किस मुक़ाम में है तो बोली *इन्नलमुत्तक़ीना फी जन्नातिंव व नहारिन फी मक़्अदी सिदकिन इंदा मलीकिम्मुक़्तदीरिन* (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 27, जिल्द 2)

सबक़:- हर मर्द और औरत को क़ुरआने पाक से शग़फ और मोहब्बत लाज़िम है अफसोस के आज कल हमें क़ुरआने पाक से प्यार ना रहा। एक ज़माना वो भी था के औरतें भी अपनी हर बात क़ुरआने पाक की आयात से करती थीं। और एक ज़माना ये भी है के मर्दों को भी फिल्मी गाने ही याद हैं। (फयालुल अजब)

हिकायत नम्बर(630) हसीन लोंडी

एक निहायत हसीन लोंडी हम्माम खाने से निकली, एक जवान उसे देखकर फ़रीफता हो गया। और उसके सामने आकर कहा *ज़य्यनाहा लिन्नाज़रीना* यानी हम ने उसे देखने वालों के लिए ज़ीनत दी। उस लोंडी ने उसके जवाब में ये आयत पढ़ी *व हफिज़नाहा मिन कुल्ली शैतानिर्रजीम* यानी हम ने हम शैतान मर्दूद से उसकी हिफाज़त की। फिर वो जवान बोला *नुरीदू अन नआकुला मिनहा व ततमाइन्न कुलूबुना* यानी हम सिर्फ यही चाहते हैं के इससे खायें। और हमारे दिल को आराम हो। लोंडी फिर बोली *लनतनालुल बिर्रा हत्ता तुनफिकू मिम्मा तिहिब्बूना* यानी हर गिज़ ना पाओगे भलाई को जब तक के खर्च ना करो। उससे जो तुम दौलत रखते हो, जवान ने यूं जवाब दिया *वल्लज़ीना ला यजीदूना निकाहन* यानी जिनको वो चीज़ ना मिले जिससे निकाह हो सके। (तो वो लोग क्या करें?) इस लोंडी ने फौरन जवाब दिया *ऊलाईका अनहा मुबअदूना* यानी वो उससे से दूर रहेंगे। बिल आखिर जवान ने हार का और तंग आकर कहा *लअनतल्लाही अलेका* तब पर अल्लाह की लानत हो। उस लोंडी ने फौरन

Scanned by CamScanner

जवाब दिया *वलिज़्ज़क्री मिस्लू हज़्ज़िल उनसीयीन* यानी (तुझ) मर्द को दो औरतों के हिस्से के बराबर (लानत) है। उसके बाद वो जवान मुंह की खा कर खामोश हो गया। और ज़लीलो ख़्वार होकर चला गया। (लोअ लोअ अश्शरअ, सफ़ा 34)

सबक़:- क़ुरआने पाक का इल्म इज़्ज़त व असमत का मुहाफिज़ भी है। और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने की औरतें भी बड़ी इल्म वाली और दाना थीं और इल्म अगर है तो क़ुरआन व हदीस का। दिगर सब हैच।

हिकायत नम्बर(631) तीन लोंडियाँ

मामूं रशीद को एक मर्तबा एक लोंडी की ज़रूरत पेश आई तो उसने एलान किया। तो उसकी ख़िदमत में तीन लोंडियाँ हाज़िर हुईं। और तीनों सामने खड़ी हो गईं। बादशाह ने देखा तो कहा मुझे तो एक दरकार है। और तुम तीन हो अच्छा मैं तुम तीनों से इन्तिखाब कर लेता हूँ। तीनों लोंडियाँ सामने एक सफ में खड़ी थीं। बादशाह जब इन्तिख़ाब के लिए उठा तो पहली बोली। *वस्साबिक़ना अव्वलूना मिनल मुहाज़िरना वल अनसारी* पहली ने जब ये आयत पढ़ी तो दूसरी जो दोनों के वस्त में खड़ी थी। बोली। *वकाज़ालिका जअलनाकुम उम्मातंव वस्तनलितकूनू शौहदाआ अलन्नासी* तीसरी जो सबसे आख़िर में खड़ी थी उसने हस्बे ज़ेल आयात पढ़ ली। *वललआख़िरतू ख़ैरूल्लका मिनल ऊला।*

मामूँ रशीद तीनों पर बड़ा खुश हुआ। और तीनों को खरीद लिया। (लोअ लोअ अशश्शरअ, सफ़ा 49)

सबक़:- आज कल की ढोलक के गीत गाने वालियों को लाज़िम है के पहले ज़माने की औरतों की तरह क़ुरआने पाक की आयात को याद करें। और उन फिज़ूल और लचर गानों और गीतों से किनारा करें।

हिकायत नम्बर(632) दो लोंडियाँ

एक मर्तबा हारून अलरशीद को एक लोंडी की ज़रूरत पेश आई तो उसके पास दो लोंडियाँ आईं। एक का रंग काला था। और एक का सफेद। हारून रशीद ने कहा। मुझे तो एक दरकार है। मैं तुम दोनों में। अपनी ख़िदमत के लिए उसे रखूंगा। जो अपने रंग की दूसरी के रंग पर तरजीह साबित कर दे। चुनाँचे सफेद रंग वाली ने अपने रंग की कुछ खूबियाँ बयान कीं। तो काली ने कहा हुज़ूर! देखिये उसका सफेद रंग अगर ज़रा सा भी मेरे चेहरे

Scanned by CamScanner

पर आ जाए तो सब मुझे फलबहरी की मरीज़ा कहेंगे। और मेरा सियाह रंग ज़रा सा भी उसके चेहरे पर चला जाए तो उसका हुस्न दोबाला हो जाएगा। के मेरा रंग तिल बनकर उसके चहरे पर चमकने लगेगा। हारून अलरशीद उनकी हाज़िर दिमाग़ी पर बहुत खुश हुआ। (लो लो अश्शरअ, सफ़ा 50)

सबक:- पहले ज़माने की औरतें बड़ी दाना थीं। आज-कल की जाहिल औरतों को उनसे सबक़ हासिल करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(633) छः ज़हीन औरतें

ख़्वाजा मेहमूद ज़रदार शीराज़ी एक रईस शहर और दुनयवी जद्दोजहद से बे फिक्र थे। एक ईद के दिन उनका आलिशान ख़ैमा नहर के क़रीब नसब किया गया जिसमें एक बज़्म तर्ब क़ायम की गई। इस बज़्म में ख़्वाजा ज़रदार की छः कनीज़ें भी थीं। जो अपनी ज़हानत व क़ाबलियत के लिहाज़ से ख़्वाबजा को बे हद अज़ीज़ थीं। बज़्म तर्ब ख़त्म हुई तो ख़्वाजा ज़रदारान कनीज़ों के लुतायफ व तरायफ से जी बहलाते रहे। यकायक कनीज़ों को कुछ खयाल हुआ। और उन्होंने अपने आक़ा से पूछा के आज ईद का रोज़ है। आप फैसला कीजिए के हम में से अफ़्ज़ल कौन है।

ख़्वाजा ने कहा के ये फैसला मैं उसी वक़्त कर सकता हूँ के तुम में से हर एक अपनी अपनी फज़ीलत और दूसरे पर फौक़ियत साबित करे। शर्त ये है के ये मुनाज़रा अक़्ल व नक़्ल दरायत व रिवायत के साथ हो। ये सुनकर गोरी ने काली को। लाग़िर ने फर्बा को और ज़र्द ने गंदम गूं को अपना अपना हरीफ बनाकर गुफ़्तगू शुरू की।

सब से पहले गोरी कनीज़ ने काली को मुख़ातिब किया, और कहा। ऐ सियाह रू! जानती है के मैं कौन हूँ? मेरा रंग हर रंग से बेहतर है। मेरी पैशानी दरख़्शाँ और मेरे रूख़्सार ताबाँ हैं। मैं चौधवीं रात का चाँद हूँ। खुदा ने अपने पैग़म्बर मूसा अलेहिस्सलाम को यदे बेज़ा अता फ़रमाा। आयात रहमत में से *अबयज़्ज़त वुजूहूहुम* कहकर गोरे रंग का ज़िक्र आया है। हदीस शरीफ में है के सफेद रंग सब रंगों से बेहतर है। हूरों का यही रंग है। तो ऐ हबशन! ज़ाग पीकर है दाग़ मंज़र है। ख़्वाजा ज़रदार ने सियाह फाम कनीज़ को अपनी मज़म्मत पर चीं ब जबीं देखा। तो गोरी कनीज़ से कहा। बस बस इसी क़द्र काफी है। उसके बाद काली कनीज़ ने ज़बान खाली। और बोली।

ऐ सफेद चमड़े पर इत्राने वाली, तू अक़्ल से खाली है। क्या तूने कुरआन में नहीं पढ़ा *वल्लैली इज़ा यग़शा वन्नहारी इज़ा तजल्ला* अगर शब

Scanned by CamScanner

सियाह मोहत्रम ना हो तो अल्लाह उसकी क़सम ना फ़रमाता। और उसे दिन पर मुक़द्दम ना फ़रमाता। तुझे मालूम नहीं के सियाही जवानी की ज़ीनत है। बालों में सफेदी आई के बुढ़ापे ने मौत की ख़बर सुनाई। देख अगर मेरी एक सियाही का धब्बा तेरे चहरे पर पड़े तो उस खाल मशकीं से तेरे हुस्न में इज़ाफा हो जाए। लेकिन तेरी सफेदी का एक ज़र्रा मेरे चहरे पर नमूदार हो तो दुनिया मुझे फलबहरी की मरीज़ा कहने लगे। सियाही की फज़ीलत उससे बढ़कर और क्या होगी। के तमाम उलूम व फिनून की किताबें इसी सियाही से लिखी जाती हैं। मुश्क व अंबर का यही रंग है। अगर सियाही सबसे बेहतर ना होती तो सानअे मतलक़। आँख की पुतली को ये रंग अता ना फ़रमाता। ख़्वाजा ज़रदार ने कहा। बस ऐ आँख की पुतली बस!

उसके बाद फर्बा कनीज़ ने अपने गोल मटोल बाज़ू उठा कर लागिर इंदाम कनीज़ को कहा। ऐ दिक़ज़दा। मेरा तेरा क्या मुक़ाबला? आज तक दुनिया में किसी ने लाग़री को भी पसंद किया है? हर शख़्स फ़रबही का आरज़ूमंद है। आदमी तो आदमी कोई दुबले जानवर को भी अच्छा नहीं समझता। दुबला पन तो खुदा को भी पसंद नहीं इसी लिए दुबले जानवरों की क़ुर्बानी जायज़ नहीं। तेरी टांगें जो चिड़िया के मुशाबह हैं। और तेरे हाथ जो बाँस की खपचियों की मानिंद हैं कैसे मरऊब हो सकते हैं?

कनीज़ लागिर को हुक्म हुआ। तो वो बोली। ऐ फर्बा! अपनी फ़रबही पर ना इत्रा। ऐब को हुनर बनाकर ना दिखा। खुदा का शुक्र है के उसने मुझे शाखे गुल की तरह नाज़ुक और मोजे नसीम की मानिंद सिबक़ पैदा किया है तू रेत का थेला है। गोश्त का एक पहाड़ किसी ने मअशूक़ की पील तनी और कोहे पेकरी की तारीफ नहीं की। सिवाये उसके के ज़िबह करने के लिए फ़रबही बेहतर होती है।

ख़्वाजा ज़रदार ने ये अलफाज़ सुनकर कनीज़ लागिर को भी अपनी तक़रीर ख़त्म करने का हुक्म दिया। और कनीज़ ज़र्दफाम की तरफ़ इशारा किया। उसने गंदम गूं कनीज़ की तरफ़ रूख करके कहा। मैं ज़र्द हूँ। मगर हसीनों में फर्द हूँ। सय्यारो में मेहर दरख़्शाँ हूँ। निबात की ज़ाफरान हूँ। गुलों में गुल सदबर्ग हूँ। सरसासें का सिंगार हूँ। बसंत की बहार हूँ। तू ऐ गंदम गूं! अजीब-उल-ख़लक़त है। ना सफेद है ना सियाह, तेरा रंग खज़्न व मलाल की अलामत है। तेरे मुतअल्लिक़ किसी शायर ने खूब कहा है...

हर करा ग़फ़्ल बोद पेश रोद राह नमूं
शोद शीफ़्ता हर गिज़ बर्ख गंदम गूं

Scanned by CamScanner

चूंके आदम दिल रा मील सूए गंदम कर्द
कर्द अज़ जन्नत फिर्दास बरूं

उसके बाद कनीज़ गंदम ने ज़र्दफाम कनीज़ को मुख़ातिब किया। और कहा, मैं खुदा का शुक्रिया अदा करती हूँ के उसने मुझे बेहतर से बेहतर सूरत अता फ़रमाई है। मैं ना मोटी ना पतली ना गोरी ना काली हूँ ना छिपकली की तरह ज़र्द। मेरा रंग गंदम गूँ है जो सब से अफ़्ज़ल समझा जाता है। मैं मलाहत व सबाहत का मजमूआ हूँ। शौअरा मेरे सनाख़्वाँ और नक़ादान जमाल मेरे क़द्रदान हैं। ख़्वाजा ज़रदार ने उनकी ये पुर लुत्फ बेहस सुनकर फैसला दिया के तुम में एक भी दूसरी से कमतर या बैश्तर नहीं। आँख अपनी जगह पर। बाल अपनी जगह पर। गाल अपनी जगह पर दिलफरैब हैं। एक को एक पर फज़ीलत नहीं दे सकते। बस यही मेरी राय है। (माखूज़)

सबक़:- खुदा तआला ने जो कुछ भी और जिस रंग में भी किसी को पैदा फ़रमाया है, खूब ही पैदा फ़रमाया है। और सब अपनी अपनी जगह पर मोज़ूं व मुनासिब हैं। और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने की औरतें भी बड़ी दाना और ज़हीन होती थीं।

हिकायत नम्बर(634) औरत का फ़रैब

अबु अलहसन हुसैनी ने बयान किया। जो मिसतरशुद बिल्लाह के मौज़्ज़न थे। के बअज़ चलते फिरते ताजिरों ने ज़िक्र किया। के हम मुख़्तलिफ शहरों से आकर मिस्र की जामअे उमरो बिन आस में जमा हो जाते। और बातें किया करते थे एक दिन हम बैठे बातें कर रहे थे के हमारी नज़र एक औरत पर पड़ी। जो हमारे क़रीब एक सतून के नीचे बैठी थी। एक शख़्स ने जो बग़दाद के ताजिरों में से था उस औरत से कहा, क्या बात है? उसने कहा। मैं एक लावारिस औरत हूँ। मेरा शौहर दस बरस से मफक़ूद-उल-ख़बर है। मुझे उसका कुछ भी हाल मालूम नहीं हुआ। मैं क़ाज़ी साहब के यहाँ पहुँची के मेरा निकाह कर दें। मगर उन्होंने रोक दिया। और मेरे शौहर ने कोई सामान नहीं छोड़ा। जिससे बसर अवक़ात कर सकूं। मैं किसी अजनबी शख़्स की तलाश में हूँ जो मेरी इम्दाद के लिए गवाही दे दे और उसके साथ ये भी के वाक़ई मेरा शौहर मर गया। या उसने मुझे तलाक़ दे दी। ताके मैं निकाह कर सकूं या वो शख़्स ये कह दे के मैं उसका शौहर हूँ और फिर वो मुझे क़ाज़ी के सामने तलाक़ दे दे। ताके मैं इद्दत का ज़माना किसी तरह गुज़ार कर

Scanned by CamScanner

निकाह कर लूं। तो उस शख़्स ने उससे कहा। के तू मुझे एक दीनार दे दे तो मैं तेरे साथ क़ाज़ी के पास जाकर कह दूंगा के मैं तेरा शौहर हूँ। और तुझे तलाक़ दूंगा। ये सुनकर वो औरत रोने लगी और उसने कहा, खुदा की क़सम उससे ज़्यादा मेरे पास नहीं है। और उसने चार रूबाईयाँ यानी चौथाई दरहम निकालीं। तो उसे शख़्स ने वही उससे ले लीं। और औरत के साथ क़ाज़ी के यहाँ चला गया। और देर तक हम से नहीं मिला। अगले दिन उससे हमारी मुलाक़ात हुई। हमने उससे कहा। तुम कहाँ रहे। इतनी देर क्यों हुई? उसने कहा छोड़ो भाई मैं एक ऐसी बात में फंस गया जिसका ज़िक्र भी रूसवाई है। हम ने कहा हमें बताओ। उसने बयान किया के मैं उसके साथ क़ाज़ी के यहाँ पहुँचा। तो उसने मुझ पर ज़ोजियत का दावा किया। और दस साल तक ग़ायब रहने का और दरख़्वास्त की के मैं उसका रास्ता साफ कर दूं। मैंने उसके बयान की तसदीक़ कर दी। तो उससे क़ाज़ी ने कहा। क्या तू इससे अलेहदगी चाहती है? उसने कहा। नहीं वल्लाह। उसके ज़िम्मे मेरा मेहर है। और दस साल का खर्चा मुझ देना उसका हक़ है। तो मुझ से क़ाज़ी ने कहा के इसका हक़ अदा करो। और तुझे इख़्तियार है उसको तलाक़ देने या रोके रखने का। तो मेरा ये हाल हो गया के मैं मुतहय्यर रह गया। और ये हिम्मत ना कर सका के असल सूरत वाक़ेया बयान कर सकूं। और उसके बयान की तसदीक़ ना करूं। अब क़ाज़ी ने ये इक़्दाम किया। के मुझे कोड़े वाले के सपुर्द करे। बिलआख़िर बीस दीनारों पर बाहमी तसफिया हुआ जो उसने मुझ से वसूल किए। और वो चारों रबाअयीं जो उसने मुझे दी थीं। वो वकला और क़ाज़ी के अहलकारों को देने पर खर्च और इतनी ही अपने पास से खर्च हुईं। हम ने उसका बहुत मज़ाक़ उड़ाया। वो शर्मिंदा होकर मिस्र ही से चला गया। और फिर उसका हाल मालूम ना हो सका। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 456)

सबक़:- औरत जब फ़रैब करने पर उतर आए तो बड़े बड़े दाना मर्दों को भी परेशान कर देती है।

हिकायत नम्बर(635) फैशन ऐबल धोका

लंदन के एक मश्हूर जोहरी की दुकान में एक खूबसूरत औरत बड़ी ठाठ और अमीराना शानो शौकत से दाखिल हुई। और कहने लगी। मैं फ़लाँ डाक्टर की बीवी हूँ। हमें कुछ बैश क़ीमत जवाहरात दरकार हैं। मालिक दुकान ने

Scanned by CamScanner

बहुत से क़ीमती जवाहरात निकाल कर पेश किए। औरत ने कुछ जवाहरात चुन कर कहा। इन्हें एक डिब्बे में बन्द करके अपना आदमी मेरे साथ कर दो। बाहर कार खड़ी है। आपका आदमी मेरे साथ चले। ताके ये जवाहरात डाक्टर साहब भी देखकर पसंद कर लें। उनकी क़ीमत आपके आदमी को वहीं आदा कर दी जाएगी। चुनाँचे मालिक दुकान ने हज़ारों रुपये की मालियत के वो जवाहरात एक डिब्बे में बन्द करके उस औरत के हवाला किए। और अपना मुलाज़िम साथ भेज दिया। और औरत अपनी कार में उसे बिठा कर चल दी।

थोड़ी देर के बाद ये कार लंदन के किसी दूसरे हिस्से में एक मशहूर डाक्टर की दुकान के सामने रूकी। और औरत ने उस मुलाज़िम से कहा। तुम कार ही में बैठो। मैं डाक्टर साहब के पास जाती हूँ। और अभी तुम्हें अन्दर बुला लिया जाएगा। मुलाज़िम कार ही में रहा। और औरत डाक्टर साहब के मतब में दाखिल हो गई। और डाक्टर साहब से कहने लगी। डाक्टर साहब! मेरा शौहर दिमाग़ी मरीज़ है। किसी ज़माने में बहुत बड़ा जोहरी था। कारोबार में नुक़्सान वाक़े हो जाने से दिमाग़ पर बुरा असर पड़ा। और अब हर वक़्त यही कहता रहता है "लाओ क़ीमत जवाहरात की" मेरे जवाहरात, मैं क़ीमत लेने आया हूँ। वग़ैरा वग़ैरा। और मुझे देखकर उसका मर्ज़ और भी बढ़ जाता है मैं उस साथ वाले कमरे में बैठी हूँ। वो कार में बैठा है। आप उसे अन्दर बुलाकर उसकी तश्खीस करें। डाक्टर साहब! ये लीजिए अपनी फीस माक़ूल फीस देकर औरत खुद दूसरे कमरे में चली गई। और डाक्टर साहब ने अपने दो आदमी बाहर भेज दिए के मरीज़ को अन्दर ले आओ। मुलाज़िम अन्दर आया। तो आते ही बोला। डाक्टर साहब! पसंद आ गए जवाहरात अब क़ीमत दीजिए। डाक्टर साहब ने मुस्कुराकर कहा। बैठ जाइये। अभी सब ठीक हो जाएगा। और फिर उसका मुआयना करने लगा। मुलाज़िम ने घबराकर पूछा। के ये क्या? डाक्टर ने सारा क़िस्सा सुनाया। तो मुलाज़िम ने भी सारा वाक़ेया कह सुनाया। अब जो घबराकर कमरे में गए। तो औरत ग़ायब थी। बाहर निकले तो कार भी ग़ायब थी। (माह तय्यबा सितम्बर 1955ई०)

सबक़:- इस फैशन ऐबल दौर में बड़े बड़े फैशन ऐबल धोके भी होते हैं। लिहाज़ा बड़ा चौकन्ना रहने की ज़रूरत है।

हिकायत नम्बर(636) ज़न मुरीद

एक माही गीर कुछ मछलियाँ लेकर बादशाह के पास आया। और बादशाह को तोहफतन पेश कीं। बादशाह ने खुश होकर उसे चार सौ

Scanned by CamScanner

रुपये ईनाम दिया। बादशाह की बैगम ने कहा। आपने चन्द मछलियों के लिए ना हक़ इतना रुपया दे दिया रुपया अपना वापस ले लीजिए। बादशाह ने कहा। मगर अब तो मैं दे चुका। वापस किस तरह लूं? बैगम ने कहा। तरीक़ा मैं बताती हूँ। आप उससे पूछिये। ये मछलियाँ नर हैं या मादा? वो अगर नर बताए तो आप कहिये मुझ तो मादा दरकार हैं। और अगर वो मादा बताए तो आप कहिये मुझे नर दरकार है। इस बहाने से आप अपना रुपया वापस ले लीजिए। चुनाँचे माही गीर को बुला कर बादशाह ने यही सवाल किया। माही गीर बड़ा होशियार था। उसने जवाब दिया। हुज़ूर ये मछलियाँ ना नर हैं नार मादा। ये मुखन्निस हैं। बादशाह उसके इस जवाब से और भी ज़्यादा खुश हुआ। और चार सौ रुपये और ईनाम दे दिए। ये देखकर बैगम और भी ज़्यादा जली। इतने में माही गीर के हाथ से एक रुपया गिर गया। और उसने फौरन उठा लिया। बैगम को मौक़ा मिल गया। और बादशाह से कहा। देखिये ये कितना हरीस है। के आठ सौ में से एक रुपया गिर गया तो कितनी उजलत से उसे उठाया है। उससे इसी बात पर नाराज़गी का इज़हार करके अपनी सारी रक़म वापस ले लीजिए। चुनाँचे बादशाह ने फिर उसे बुलाया और पूछा के आठ सौ में से एक रुपया गिर गया था तो गिरा रहने देते। तुम ने इतनी उजलत से क्यों उठा लिया? माहीगीर ने जवाब दिया। हुज़ूर! इस पर आपका नाम गंदा था। मैंने गवारा ना किया। के आपके नाम की बे अदबी हो। बादशाह इस जवाब से और भी ज़्यादा खुश हुआ। और चार सौ और इनाम दे दिया। और फिर सारे शहर में डूंडी पिटवाई के कोई शख़्स अपनी बीवी की अंधा धुंद इताअत ना करे। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 12, जिल्द 2)

सबक़:- ज़न मुरीद ख़सारे में रहता है। और ये मर्ज़ कमज़ोर लोगों में पाया जाता है। जिनकी तरफ़ से शायर ने लिखा है...

आए हैं दुनिया में हम दो काम करने के लिए
कुछ खुदा से और कुछ बीवी से डरने के लिए

हिकायत नम्बर(37) लकड़ी की औरत

एक दर्ज़ी, एक बढ़ई, एक सुनार और एक फक़ीर। चारों इकठ्ठे कहीं जा रहे थे। रास्ते में रात हो गई। तो एक जंगल में ठहरे। और रात भर के लिए हर एक के ज़िम्मे दो दो घंटे का पेहरा मुक़र्रर कर दिया। पहले दो घंटा एक आदमी जागे। और बाक़ी तीनों सोयें। फिर दूसरा जागे। और दो घंटा पेहरा

Scanned by CamScanner

दे और बक़ी तीनों सोयें। चुनाँचे सबसे पहले बढ़ई का नमबर आया। और वो दो घंटा पेहरा देने के लिए जागा। और तीनों सो गए। बढ़ई ने सोचा के बेकार क्यों बैठें, हथियार पास हैं कयों ना एक दरख़्त चीर कर लकड़ी की एक औरत बना डालूं। चुनाँचे दो घंटे में उसने एक औरत का मुजस्मा तैयार कर दिया। फिर दर्ज़ी का नम्बर आया। और वो जागा तो उसने लकड़ी की इस औरत को देखा तो समझ गया के ये बढ़ई का कारनामा है। और फिर खयाल आया के मेरे पास भी सारा सामान है। मैं क्यों ना उसे कपड़े पहना दूं। चुनाँचे उसने दो घंटे में उसका सारा लिबास तैयार करके उसे पहना दिया। फिर सुनार का नम्बर आया। और उसने ये नक़्शा देखा तो उसने उसे गहने पहना दिए। आख़िर में फक़ीर का नम्बर आया। आख़िर में फक़ीर का नम्बर आया। उसने ये देखा तो झट सज्दे में गिरकर अल्लाह से दुआ की। के इलाही! मुझ बे सरो सामान की लाज रख और इसमें जान डाल दे। चुनाँचे वो औरत ज़िन्दा भी हो गई।

अब सुबह चारों आपस में झगड़ने लगे। बढ़ई बोला। औरत मेरी है, दर्ज़ी बोला मेरी है। सुनार बोला मेरी हैं और फक़ीर बोला मेरी है। ये झगड़ा क़रीबी शहर के हाकिम के पास गया। हाकिम ने उस औरत को देखा तो वो कहने लगा तुम चारों झूटे हो। औरत तो मेरी है। इतने में वो औरत खुद बोली बोली। के मैं बताऊँ मैं किसकी हूँ। हाकिम ने कहा। हाँ बताओ तुम किस की हो? क़रीब ही एक दरख़्त था। वो औरत दौड़कर उस दरख़्त से चिमट गई। और फिर लकड़ी बन गई और इस दरख़्त में गुम हो गई और वो सब के सब मुंह देखते ही रह गए। (मसनवी शारीफ)

सबक़:- बच्चा पैदा होता है तो माँ बाप कहते हैं हमारा बच्चा है, चचा कहता है मेरा भतीजा है, मामू कहता है मेरा भांजा है, भाई कहता है मेरा भाई है और थोड़े अर्से के बाद वही बच्चा लुक़मा-ए-क़ब्र बन जाता है और मिट्टी का पुतला फिर मिट्टी बन जाता है और सारे रिश्तेदार मेरा मेरा कहने वाले मुंह देखते रह जाते हैं।

हिकायत नम्बर(638) हीरे की तलाश

मिस्टर शक़ी ने मिस्टर शातिर की तमाम जैबें टटोल डालीं। मगर हीरे का पता ना चला। मिस्टर शक़ी बड़ा हैरान हुआ के सोते वक़्त मैं हीरा मिस्टर शातिर के पास देख चुका हूँ। और उसने मेरे सामने हीरा अपनी जैब में रखा था। मगर ये थोड़ी देर में हीरा ग़ायब कहाँ हो गया।

Scanned by CamScanner

मिस्टर शातिर शहर के एक मश्हूर जोहरी का एक बहुत बड़ी क़ीमती हीरा चुरा कर फ़रार होने की ख़ातिर ट्रेन के फस्ट किलास के डिब्बे में सवार था। के मिस्टर शक़ी भी उसी डिब्बे में सवार हुआ। मिस्टर शक़ी ये देखकर के डिब्बा मुख़्तसिर और दो ही मुसाफिर के लिए मख़सूस है, खुश हुआ, शाम का वक़्त था। ट्रेन छोटी और मिस्टर शक़ी मिस्टर शातिर से मुख़ातिब हुआ।

मिस्टर शक़ी:- मिस्टर! क्या मैं पूछ सकता हूँ के आप कहाँ तशरीफ़ ले जायेंगे?

मिस्टर शातिर:- मैं लंदन जाऊँगा।

मिस्टर शक़ी:- बहुत खूब दो दिन दो रात का खूब साथ रहेगा। मुझे भी लंदन जाना है। ट्रेन अपनी पूरी रफ़्तार से जा रही थी। और रात के दस बजे का टाइम था। सोने से पहले मिस्टर शातिर ने अपनी जैब से हीरा निकाला और मिस्टर शक़ी के सामने उसे देखभाल कर फिर जैब में रख लिया। और मिस्टर शक़ी से कहा के अब सोना चाहिए। चुनाँचे दोनों अपनी अपनी सीट पर सो गए।

आधी रात के बाद मिस्टर शक़ी उठा और हीरे की तलाश में मिस्टर शातिर की जैबें टटोलने लगा मगर ये देखकर हैरान रह गया के वो हीरा जो मिस्टर शातिर ने उसके सामने जैब में रखा था उसका किसी जैब में नामो निशान तक नहीं। आख़िर मायूस होकर लेट गया। सुबह हुई तो वो ये देखकर और भी हैरान हुआ के वही हीरा मिस्टर शातिर ने अपनी जैब से निकाला। और मिस्टर शक़ी के सामने उसे देखभाल कर फिर जैब में डाल लिया। मिस्टर शक़ी ने दिल ही दिल में सोचा के एक और भी बाक़ी है। उसा रात को हीरा मिल ही जाएगा। चुनाँचे दूसरी रात फिर सोने से पहले मिस्टर शातिर ने हीरा अपनी जेब से निकाला। और फिर अपनी जैब में डाल लिया। आधी रात के बाद मिस्टर शक़ी फिर उठा और मिस्टर शातिर की जैबें टटोलने लगा मगर ये देखकर बेहद हैरान हुआ के हीरा फिर ग़ायब है। थक हार कर फिर लेट गया। और सुबह उठा तो हीरा शातिर के हाथ में देखा। मिस्टर शक़ी उसी वक़्त मिस्टर शातिर से मुखातिब हुआ।

मिस्टर शक़ी:- गुसताखी माफ! मुझे इतना बता दीजिए के ये हीरा जो आप अपनी जैब में रख कर सो जाते थे आधी रात के बाद कहाँ चला जाता है।

मिस्टर शातिर:- मिस्टर मुझे ग़ाफिल ना समझो। मुझे ये इल्म हो चुका था के इस हीरे के तुम भी ख़्वाहाँ हो। और हीरे के चुरा लेने ही की

Scanned by CamScanner

ख़ातिर मेरे तआक़्क़ुब में तुम इस डिब्बे में सवार हुए हो। मैंने इस हीरे को तुम से बचाने के लिए नफ़्सियाती हर्बे से काम लिया। मैंने सोचा के दिन के वक़्त तो तुम कुछ ना कर सकोगे। रात ही को उड़ाने की कोशिश करोगे। और चूंके नफ़्सियाती तौर पर तुम को मेरी जैबों को टटोलना था। इसलिए रात को मैं हीरा तुम्हारे सामने जैब में डाल कर सो जाता था। और रात के पहले हिस्सा में जब तुम्हारी आँख लग जाती थी। तो वो हीरा अपनी जैब से निकाल कर मैं तुम्हारी जैब में डाल देता था। और तुम आधी रात के बाद जब उठते थे। तो मेरी खाली जैबों को टटोल कर मायूस होकर लेट जाते थे। तो मैं हीरा फिर तुम्हारी जैब से अपनी जैब में डाल लेता था। (हिकायत मसनवी तबसरूफ मौल्लिफ)

सबक़:- खुदा की तलाश में तुम जंगलों में फिरते हो। हालाँके खुदा खुद तुम्हारे अन्दर मौजूद है। *वफी अनफुसीकुम अफ़ाला तुबसिरून*

हिकायत नम्बर(639) जामअे जवाब

एक फलसफी ने एक मजज़ूब से पूछा के क्यों साईं जी! खुदा जब नज़र नहीं आता तो फिर तुम लोग *अशहद* कहकर उसकी गवाही क्यों देते हो। और जब हर काम अल्लाह ही करता है तो फिर बन्दा मुजरिम क्यों है? और शैतान जब आग से बना हुआ है तो फिर उसे दोज़ख़ में डालने से उसको क्या तकलीफ होगी। आग आग को कैसे तकलीफ दे सकती है? साईं साहब ने इन तीनों सवालात के जवाब में एक मिट्टी का ढेला उठाया। और खींच कर इस फलसफी के सर पर दे मारा। फलसफी का सर फट गया और वो सीधा अदालत में पहुँचा और साईं पर मुक़दमा दायर कर दिया। साईं साहब अदालत में बुलाए गए और क़ाज़ी साहब ने उनसे दरयाफ्त किया के आप ने उसे ढेला क्यों मारा। साईं साहब बोले के उनके तीनों सवालात का एक ही जामअे जवाब दिया है। क़ाज़ी साहब ने कहा। मगर ये जवाब कैसे हुआ? तो वो बोले के इस फलसफी से पूछिये के ढेला लगने से उसे तकलीफ हुई? फलसफी बोला, यक़ीनन हुई और हुई। साईं साहब बोले। मगर वो तकलीफ तुम्हें नज़र भी आई? फलसफी ने कहा नज़र तो नहीं आई मगर महसूस तो हुई। साईं साहब ने का बस ये तुम्हारे पहले सवाल का जवाब है के खुदा नज़र तो नहीं आता मगर मालूम तो है। दूसरे सवाल का जवाब इस तरह है के जो करता है खुदा करता है फिर तुम ने दावा मुझ पर क्यों किया? ढेला भी उसी ने मारा है उससे पूछो। तीसरे सवाल का जवाब इस तरह है के फलसफी भी

Scanned by CamScanner

मिट्टी का बना हुआ है और ढेला भी मिट्टी का ही था। तो जिस तरह मिट्टी ने मिट्टी को तकलीफ पहुँचाई उसी तरह आग भी आग को तकलीफ दे सकेगी। फलसफी झट बोल उठा के तीनों मसले मेरी समझ में आ गए। और मैं अपना दावा वापस लेता हूँ। (माह तय्यबा जनवरी 1960ई०)

सबक़:- फलसफा बअज़ अवक़ात गुमराही का बाइस बन जाता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के बन्दों की बातें मुबनी बर हिकमत होती हैं।

हिकायत नम्बर(640) हथैली के बाल

एक बादशाह ने एक रोज़ भरे दरबार में एलान किया के जो शख़्स ये बता दे के मेरी हथैली पर बाल क्यों नहीं तो मैं उसे मुंह माँगा ईनाम दूंगा और अगर कोई शख़्स मेरे इस सवाल का जवाब देने के लिए उठा और जवाब माक़ूल ना दे सका तो मैं उसे मरवा डालूंगा।

बादशाह का ये एलान सुनकर कोई शख़्स जवाब देने के लिए उठने की जुर्रात ना कर सका। थोड़ी देर के बाद एक शख़्स उठा और कहने लगा। हुज़ूर! आपके सवाल का जवाब मैं दे सकता हूँ, बादशाह ने कहा। खूब सोच लो। अगर जवाब माक़ूल ना हुआ तो मरवा डाले जाओगे। वो बोला हुज़ूर मैंने खूब सोच लिया है।

बादशाह ने पूछा, अच्छा बताओ, मेरी हथैली पर बाल क्यों नहीं?

वो बोला, हुज़ूर आप बहुत बड़े सखी हैं। हर वक़्त सख़ावत करते ही रहते हैं और कुछ ना कुछ देते ही रहते हैं। ये वजह है के आपकी हथैली के बाल दे दे कर घिस गए हैं। बादशाह ये जवाब सुनकर खुश हुआ। और फिर पूछा, अच्छा ये बताओ, तुम्हारी हथैली पर बाल क्यों नहीं? वो बोला, हुज़ूर आप जब कुछ देते हैं तो मुझी को देते हैं आपके बाल देदे कर और मेरे लेले कर घिस गए हैं।

बादशाह ने दरबार के हाज़ीन की तरफ़ इशारा करके पूछा। और उनकी हथेलियों पर बाल क्यों नहीं? वो बोला। हुज़ूर! आप जब देते हैं मुझी को देते हैं। आपके बाल दे दे कर मेरे ले ले कर और इनके हसरत व अफसोस में अपने हाथ मल मल कर घुस गए हैं" बादशाह ने जवाब सुनकर उसे बहुत सा ईनाम दिया। (माह तय्यबा)

सबक़:- दाना आदमी हर मुश्किल पर क़ाबू पा लेते हैं और अपनी दानाई से फायदा उठाते हैं।

Scanned by CamScanner

सच्ची हिकायात

हज़रत मौलाना अबुन्नूर मौहम्मद बशीर साहब









अदबी दुनिया

Scanned by CamScanner

इल्तिज़ा है कि इस किताब को अपनी मोबाईल की मैमोरी में सेव करके ना रखे वल्कि आप से गुजारिश है कि इस किताब का मुताला की जिये ये किताब बहुत शानदार है।

दुआ की गुजारिश
डॉ ज़ाहूर रज़वी
अल अश्हर अकडमी

दुआ की ग़ुज़ारिश
मोहम्मद अहतिराम क़ुरैशी

आप हज़रात से गुजारिश है कि इस किताब को आप अपना निम्ती वक़्त दे और इस किता ब का मुताला करे और हम ना चीज़ को अपनी अपनी दुआओं में याद रखे

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जुमला हक़ूक़ बहक़ नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताब	:	सच्ची हिकायात मुकम्मल
तालीफ़	:	मौलाना अबु अलनूर बशीर
सन इशाअत	:	2013
सफ़हात	:	936
मतबअ	:	नाहिद प्रेस, देहली
हदिया	:	
नाशिर	:	अदबी दुनिया, देहली

इस किताब में

कुतब अहादीस और दीगर मुसतनिद इस्लामी किताबों से दिलचस्प, मुफ़ीद और सबक़ आमोज़ हिकायात जमा कर दी गई हैं और हर हिकायत के बाद इससे जो सबक़ हासिल होता हैए लिख दिया गया है और हर हिकायत को असल किताब से देखकर दर्ज किया गया है और किताब का नाम, सफ़हा और जिल्द सब कुछ दिया गया है।

Publisher

ADABI DUNIYA

399, Matia mahal, jama masjid,
Delhi - 110006
Phone : 23250122

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहली नज़र

इस ज़माने में अफ़साने, ड्रामे, किस्से और कहानियाँ बड़े शौक़ से पढ़ी जाती हैं और ये शौक़ बिलअमूम हर छोटे बड़े मर्द और औरत में पाया जाता है, आज कल हर वो तहरीर जिसमें अफ़सानवी तर्ज़ और हिकायती रंग मौजूद हो, पसंदीदगी की नज़र से देखी जाती है, क़ौम का यही रूहजान तबओ इस अम्र का बाइस है के मुल्क के अक्सर रसायल व जरायद अपने अपने "कहानी नम्बर" और "अफ़साना नम्बर" शाय करते हैं और अफ़साना पसंद अफ़राद इन्हें हाथों हाथ लेते हैं।

ये अफ़साने, ड्रामे और आज कल की हिकायात व कहानियाँ ज्यादा तर दरोग़ व कज़िब और ग़ैर वाकेई बिना पर मुबनी होती हैं, उनकी कोई हक़ीक़त और असल नहीं होती और ऐसे अफ़साना लिखने वाले उन वज़अई हिकायात को "तबै ज़ाद" और अपनी तख़लीक़ क़रार देकर अपने वज़ओ व कज़िब को अपना एक शाहकार साबित करते हैं और अफ़साना पसंद तबीअतें उन्हें उस कारनामे पर दादे तहसीन देती हैं और उसे तरक्की पसंद अदब के नाम से मोसूम करने लगती हैं।

क़िस्से और हिकायात ज़रूरी नहीं के झूट ही हों, इस आलम में क़िस्सों और सच्ची हिकायात का वजूद भी है, खुद क़ुरआने पाक और अहादीसे शरीफ़ा में भी हिकायात व क़सस मौजूद हैं और वो हिकायात व क़सस ऐसे हैं जिनमें सौ फ़ीसदी सदाक़त है और जो अपनी सदाक़त के बाइस मख़्लूक़ के लिए मौजिबे रूश्दो हिदायत और वजह दर्से इब्रत हैं। खुदा तआला ने अपनी सच्ची किताब मजीद में अम्बियाइक्राम अलेहिमअस्सलाम के ईमान अफ़रोज़ क़िस्से और उमम साबिक़ा की सबक़ आमोज़ हिकायात बयान फ़रमाई हैं और रसूले खुदा सल-लल्लाहो-तआला-अलेह व सल्लम ने भी अपने इर्शादाते आलिया में पहली उम्मतों के इब्रत आमोज़ वाक़ेयात और सबक़ आमोज़ हिकायात सुनाई हैं और इसी तरह बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात और उनकी तालीफ़ात में भी इस क़िस्म की सच्ची हिकायत का वजूद पाया जाता है मगर मुश्किल ये है के ये सब पुरानी बातें हैं और इस नए दौर में उन पुरानी बातों की तरफ़ तवज्जह नहीं की जाती ऐ काश! मुसलमान आज

Scanned by CamScanner

कल के लायानी अफ़्सानों और वज़अई और झूटी हिकायात की बजाए अपने हक़ीक़ी अफ़्सानों और सच्ची हिकायात को पढ़ते पढ़ाते तो दिलचस्पी के अलावा उन्हें दीनी और दुनयवी फ़वायद भी हासिल होते।

मुद्दत से मेर दिल में ये ख़याल था के क़ुरआन व हदीस और दीगर इस्लामी लिटरेचर से हक़ीक़ी क़िस्सों और सच्ची हिकायात को जमा करूं और उन्हें सादा और आम फ़हेमो तर्ज़ में क़लमबंद कर के मुसलमानों के लिए एक ऐसी किताब लिखूं जिसका मुतअल्ला उनके लिए दिलचस्पी भी पैदा करे और साथ साथ ही उनके लिए सबक़ व इब्रत पेश करके उनके दीन व दुनिया की इसलाह भी करे चुनाँचे इसी अपने इरादे के तहेत मैंने सच्ची हिकायात को जमा करना शुरू कर दिया और क़ुरआन व हदीस के अलावा और बहुत सी इस्लामी क़ुतुब का मुतअल्ला करने के बाद इस सबक़ आमोज़ सिसिले की इब्तिदा कर दी।

मेरे ज़हेन में ये सिलसिला बड़ा तवील है और इरादा है के मुबारक सिलसिला को दूर तक ले जाऊँ, मैंने इस तालीफ़ के लिए जो बाब तजवीज़ किए हैं वो हस्बे ज़ेल हैं:-

पहला बाब	तौहीदे बारी
दूसरा बाब	सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा सल-लल्लाहो-अलेह व सल्लम
तीसरा बाब	अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल-सलाम
चौथा बाब	ख़ुलफ़ाए राशिदीन रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
पाँचवा बाब	सहाबाइक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
छटा बाब	अहले बैत अेज़ाम रिज़वान-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन
सातवाँ बाब	आयम्माइक्राम रहमत-उल्लाही अलेहिम अजमईन
आठवाँ बाब	औलियाइक्राम रहमत-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
नवाँ बाब	सलातीने इस्लाम
दसवाँ बाब	मुख़तलिफ़ हिकायात

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

चूँके ये सिलसिला बहुत तवील है इसलिए इस किताब को तीन हिस्सों पर तक़सीम कर दिया है इसका ये पहला हिस्सा जो आपके हाथ में है पहले चार अबवाब पर मुशतमिल है, इसमें पहला, दूसरा, तीसरा, और चौथा बाब है और बाक़ी दूसरे अबवाब इंशाअल्लाह दूसरे हिस्सों में आएँगे इस किताब के पहले बाब में ऐसी हिकायात का इन्तिख़ाब है जिनका ताल्लुक़ "तौहीदे बारी" से है और दूस. . बाब में उन रिवायात व हिकायात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ातेग्रामी से है, उन सच्ची हिकायात व रिवायात से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मरातिब व मदारिज, आपके इख़्तियारात व कमालात और आपके उलूम का पता चलता है और ये बात साबित होती है के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार हैं और दानाऐ ग़यूब हैं और हर गिज़ हर गिज़ हमारी मिस्ल नहीं हैं, तीसरे बाब में अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल सलाम के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे पता चलता है के अम्बियाऐक्राम की बहुत बड़ी शानें हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात अता फ़रमाए हैं, चौथे बाब में ख़ुल्फ़ाऐ राशिदीन यानी हज़रत सिद्दिके अक्बर, हज़रते उमर फ़ारूक़ आज़म हज़रत उस्मान ज़ूलनोरैन और हज़रते मौला अली रिज़वानउल्लाही अलेहिम अजमईन के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे इन चार यारानें नबी के मरातिब व मदारिज ज़ाहिर होते हैं और पता चलता है के ये चारों ही अल्लाह के महबूब के महबूब हैं और उनकी मोहब्बत ऐन ईमान है और उनकी अदावत से ईमान जाता रहता है। इस हिस्से में ये चारों बाब हैं बाक़ी के छः अबवाब दूसरे और तीसरे हिस्से में हैं।

ज़रूरत है के आज वो मुसलमान जो क़िस्सों के शौक़ीन हैं वो झूटी हिकायात को छोड़ कर उन सच्ची हिकायात को पढ़ें ताके उन के लिए दीनी तरक्क़ी का सबब हो और वो मुसलमान औरतें जो रातों में बच्चों को झूटी कहानियाँ सुनाया करती हैं इन सच्ची हिकायात को पढ़ें, याद करें और अपने बच्चों को ये सच्ची हिकायात सुनाएँ ताके बच्चों के दिल में भी दीन की रग़बत पैदा हो।

(अबु अलनूर मोहम्मद बशीर)

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

628	रुपों की थैली	636
629	उक़्दत-उल-मसमूख़	638
630	हारून रशीद और उसकी लौंडी	639
631	बनान तुर्फली	640
632	युज़िल्ला बिही कसीरन	641
633	मुर्ग़ी की तक़सीम	642
634	चार ज़हीन भाई	643
635	क़ुरआन से जवाब देने वाली औरत	645
636	हसीन लौंडी	649
637	तीन लौंडियाँ	650
638	दो लौंडियाँ	650
639	छः ज़हीन औरतें	651
640	औरत का फ़रेब	653
641	फैशन ऐक्ल धोका	654
642	ज़न मुरीद	655
643	लकड़ी की औरत	656
644	हीरे की तलाश	657
645	जामअे जवाब	659
646	हथैली के बाल	660

हिस्सा चहरम
दसवाँ बाब
मुख़्तलिफ़ हिकायात

647	सफ़ेद साँप	662
648	उमरो बिन जाबिर (रज़ि०)	663
649	सर्क रज़ी अल्लाहो अन्ह	664
650	ख़ौफ़नाक वादी	664
651	मुवल्लिग़ जिन्न	666
652	बिछड़ों का मिलाप	667
653	आफ़िया	670
654	ना अहल	670
655	गवाह	671
656	मेहनत का फल	671
657	दुश्मने रसूल	672
658	मरने से डरना	673
659	हिसाब	673
660	आबादी	674
661	चार बुज़र्ग	674
662	एक बूढ़ा शेर	676
663	आईना-ए-हक़ नुमा	677
664	तवक्कल	678
665	क़ीमती पियाला	679
666	पुल सिरात	679
667	अद्ल व इंसाफ	680
668	रस्ता	681
669	नापे अक़्दस	681
670	दुनयवी मेहबूब	682
671	चालाक औरत	683
672	हज़रत अबु सईद रहमत-उल्लाह अलेह	685
673	मर्दे ज़ाकिर	686
674	तीन तीर	687
675	हल्वा फरोश	688
676	चालाक लोमड़ी	689
677	इत्तिफ़ाक़	690
678	दिल की बात	691
679	दूरदराज़ से	692
680	हक़ हक़ हक़	693
681	फिरऔन की हलाकत	693
682	गाय	695
683	एक राहिब का ख़्वाब	695
684	राहिब के सवालात	696
685	नफ़्स की मुख़ालफत	698

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

686	बातिनी क़िला	699
687	नमाज़ की बर्कत	700
688	माँ	701
689	शाही फ़रमान	701
690	सबसे ज्यादा अहमक़	702
691	मलिक सालेह और एक दुरवेश	702
692	एक लड़के की दानाई	703
693	नोशेरवाँ और एक बूढ़ी औरत	704
694	एक आबिद	705
695	इल्म की बर्कत	706
696	दिल की बात	707
697	खोशा-ए-जन्नत	708
698	जन्नत की रफ़ाक़त	709
699	ग़ज़वा-ए-तबूक में	710
700	दूध का पियाला	710
701	घी का मशकीज़ह	711
702	खजूरें	712
703	नायब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम	712
704	चुड़िया की मौत	713
705	एक सौदागर का क़िस्सा	714
706	जिन्न	715
707	ख़ौफनाक सांप	716
708	अमीर व हाकिम	716
709	आग	717
710	चीस्त दुनिया	718
711	क़ैद	719
712	सच्ची बात	720
713	तीन रूकै़	720
714	एत्राफ	721
715	अशर्फियों की थेली	722
716	नेक नाम	723
717	फ़ुसाहत व हाज़िर जवाबी	723
718	नंगा शैतान	724
719	इम्तिहान	725
720	तक़वा	725
721	फ़िज़ूल खर्ची	726
722	इसतक़लाल	727
723	सिद्दीक़े अक्बर (र०अ०)	727
724	जमा क़रआन	728
725	माफी-उल-अरहाम का इल्म	730
726	चोरी	730
727	दुनिया की तमसील	731
728	आईनूनी या इबादल्लाही	732
729	सबके हाजत रवा सलामुन अलेक	732
730	हलवान का पहाड़	733
731	अमीन भिकारी	735
732	ज़हरीला सांप	735
733	अबु अलमआली की हिकायत	736
734	क़ज़ीब की हिकायत	737
735	अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद क़रशी रहमत-उल्लाह अलेह	738
736	सच्चा मुसलमान	739
737	पनाह	739
738	लुत्फ व नर्मी	740
739	सब्कतगीन बाशाह	741
740	सख़ावत	742
741	काला सांप	742
742	दुरूद शरीफ	743
743	पाकबाज़ माँ	744
744	जलाल फक़ीर	745
745	कलामे हक़	746
746	शायरी	747
747	बुज़र्गों का तसर्रूफ	747

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

748	नर्मी व सख़्ती	748
749	शराब	749
750	शेर शाह सूरी	749
751	नूर मोहम्मदी (स०अ०स०)	753
752	पैग़म्बरे कुल	755
753	दुर्रे यतीम (स०अ०स०)	756
754	आग की खाई	757
755	रसूले बरहक़	758
756	दानाऐ ग़ैब	758
757	हर गिज़ नमीरद आँके दिलश ज़िन्दा शुद बआश्क़	759
758	बुज़र्गों की दुआ	759
759	खुदा की बन्दगी	760
760	नासहाना कलमात	760
761	दिलजोई	762
762	हज़ारों साल की उम्र	762
763	अज़ाबे क़ब्र	762
764	सुलतान को नसीहत सअदी	763
765	हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा की नसीहत	764
766	बादशाह और फ़क़ीर	765
767	ज़ेहरी नज़र	766
768	निशाने मर्दमी	766
769	चुग़ल ख़ौर पर लानत	767
770	क़ब्रिस्तान	767
771	शैतान का अफ़सोस	768
772	अल्लाह की एक मक़्बूल बंदी	768
773	आग में	769
774	सब से बड़ी दौलत	770
775	रोज़ा	770
776	यहूदी से मुनाज़रा	771
777	हक़ बहक़ दार रसीद	773
778	कुत्ते की दुम	775
779	दूरअंदेशी	776
780	ज़ोज-उल-क़हबा	777
781	ज़मीन का बोझ	777
782	एक लाख दीनार	778
783	लज़ीज़ खाना	779
784	हवा	780
785	एक ताजिर	781
786	एक जिन्न	782
787	माँ का हक़	783

अदब-उल-अरब

788	अरब का एक मेहमान और एक लड़की	784
789	हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़	806
790	लाखों सलाम	816

पाँचवाँ हिस्सा ग्यारहवाँ बाब

791	तशरीफ आवरी	818
792	रज़ाअत शरीफा	820
793	दीन व दुनिया	821
794	दाफअ-उल-बला	823
795	अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह	823
796	गोह की गवाही	824
797	मौजज़ा	825
798	मुनाफ़िक़	826
799	ऐलाने हब	826
800	हज़रत दानियाल अलेहिस्साम	827
801	आक़बत अंदेशी	828
802	मौत के बाद कलाम	829
803	अबु जहल	829

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

लक़द काना फी क़सासीहिम इबरातुन लिऔलियल अलबाब

(बेशक उनके क़िस्सों में इबरत है समझदारों के लिए-पारा: 13, रूकू: 6)

मुसतनिद और सबक़ आमोज़

सच्ची हिकायात मुकम्मल

हिस्सा चहारम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिल करीम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

पहली नज़र

"सच्ची हिकायात" का मुफीद सिलसिला बेहद पसंद किया गया है। और सच्ची हिकायात के पहले तीन हिस्सों को जो ग़ैर मामूली क़बूलियत हासिल हुई है। वो शाज़ो नादिर ही किसी कितबा को हासिल होती है।

पहले तीन हिस्से जिनके मुतालअे में आ चुके हैं। उनका बेहद इसरार था के इस दिलचस्प और मुफीद सिलसिले का चौथा हिस्सा भी जल्द शाय हो।

अलहम्दूलिल्लाह

के आज ये चौथ हिस्सा भी आपके हाथ में है।

इस हिस्से में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ाते ग्रमी के मुतअल्लिक़ औलिया इक्राम बिलखसूस हुज़ूर ग़ौसे आज़म अलेहिम अर्रमा और शाहाने इस्लाम के मुतअल्लिक़ मुख़्तलिफ हिकायात दर्ज हैं और आख़िर में।

अदब-उल-अरब

के ज़ेरे उनवान दो तवील हिकायतें दर्ज हैं। अहले अरब की फुसाहत व बलाग़त और उनके खूर्द व कलाँ की बे मिस्ल याददाश्त व ज़हानत की ये

दो शाहकार हिकायतें

अपनी मिसाल आप हैं। इन दो हिकायतों को पढ़कर आप अरबी अदब की अज़मत और अहले अरब की फुसाहत व ज़हानत का अंदाज़ा कर सकेंगे।

मुझे उम्मीद है के पहले तीन हिस्सों की तरह ये हिस्सा भी काफी मक़बूल होगा और शायक़ीन इक्राम इसे भी हाथों हाथ लेंगे।

अबु अलनूर मोहम्मद बशीर

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

सच्ची हिकायत के तीसरे हिस्से में

दसवाँ बाब

की मुख़्तलिफ़ हिकायात का बक़िया दर्ज है

हिकायत नम्बर(641) सफेद साँप

एक बुज़ुर्ग इब्राहीम नामी फ़रमाते हैं के मैं हज़रत अब्दुल्लाह अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ी अल्लाहो अन्ह के चन्द दोस्तों के साथ हज के लिए रवाना हुआ तो रास्ते में हम ने एक सफेद रंग का खूबसूरत साँप देखा जिसके बदन से मुश्क व अंबर की खुश्बू आ रही थी। वो सांप बेचैन सा था और किसी तकलीफ में नज़र आ रहा था। थोड़ी देर के बाद वो सांप मर गया। उसके खुश्बूदार बदन को देखकर मेरे दिल में उसके मुतअल्लिक़ नेक गुमान पैदा हुआ। औ मैंने उसे एक कपड़े में लपेट कर रास्ते से अलग एक अच्छी जगह में दफ़्न कर दिया। फिर हम आगे बढ़े। और नमाज़ मग़रिब से पहले हम एक जगह बैठ गए। थोड़ी देर हुई तो हमारे पास चार औरतें आईं। उनमें से एक बोली, के तुम में से "उमर" को किस ने दफ़्न किया है। "उमर" कौन? वो बोली। वो सफेद सांप जिसे तुम में से किसी दफ़्न किया है, वही "उमर" था। मैंने कहा। बखुदा उसे मैंने दफ़्न किया है। तो वो मुझ से मुखातिब होकर बोली के

"तुम ने एक तहज्जुद गुज़ार और बहुत ज़्यादा रोज़े रखने वाले मोमिन को दफ़्न किया है। उसने नबी आखिर-उज़-ज़माँ मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की सिफ़्त उनकी तशरीफ़ आवरी से चार सौ साल पहले आसमानों पर सुनी थी। और ये उसी वक़्त नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर ईमान ले आया था।"

मैंने ये बात सुनकर अल्लाह का शुक्र अदा किया। और फिर हम मक्का मोअज़्ज़मा में पहुँचे ये ज़माना हज़रत फारूक़े आज़म(र०अ०) का था। हज के बाद हम हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह से मिले। और सफेद सांप वाला किस्सा बयान किया। तो हज़रत फारूक़ आज़म रज़ी अल्लाहो

Scanned by CamScanner

ने फ़रमाया। तुम ने सच कहा। मैंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह सल्लम से भी इस जिन्न का तज़करह सुना था। (हयात-उल-हैवान, जिल्द , सफ़ा 174)

सबक़:- जिनों की कई कई सौ साल उम्र होती है और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर(स०अ०स०) की अज़मत व तारीफ के डंके ज़मीनों आसमानों में बजते रहे और बज रहे हैं और बजते रहेंगे। और ये भी मालूम हुआ के कई खुश नसीब अफ्राद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले ही हुज़ूर पर ईमान ले आए थे और कई बदबख़्त हुज़ूर को देखकर भी इस नअेमत से महरूम रह गए।

हिकायत नम्बर(642) उमरो बिन जाबिर रज़ी अल्लाहो अन्ह

हज़रत सफवान बिन मौत्तल फ़रमाते हैं के हम चन्द मुसलमान मिल कर हज के लिए घर से निकले। तो रास्ते में एक बहुत बड़ा सांप देखा जो तड़प रहा था। हम ने देखा के तड़प तड़प कर थोड़ी देर के बाद वा मर गया। हमारी जमात में से एक शख़्स ने जैब से एक कपड़ा निकाला और इस मुर्दा सांप को इस कपड़े में लपेट कर ज़मीन में एक गढ़ा खोद कर उसमें दबा दिया। फिर हम मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचे और मस्जिद हराम में दाखिल हुए। तो एक शख़्स हमारे पास आया। और कहने लगा। तुम में से वो कौन सा नेक आदमी है जिसने "उमर बिन जाबिर रज़ी अल्लाहो अन्ह" से नेक सलूक किया? हम ने कहा "उमर बिन जाबिर" तो हम में से कोई वाक़िफ नहीं। उस शख़्स ने कहा। वो कौन है जिसने रास्ते में सांप की तजहीज़ व तकफीन की। हमने बताया। वो ये है। फिर वो शख़्स हमारे साथी की तरफ़ मुख़ातिब होकर कहने लगा। जज़ाकल्लाह! ये जिसकी आप ने तजहीज़ व तकफीन की है ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का जिन्न सहाबी था। और उसका नाम "उमरो बिन जाबिर" था। और ये नो जिनों में से था। जिन्होंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़बाने नूर से कुरआन सुना था। (रवाहू अलहाकिम फिल मुसतदरक, हयात-उल-हैवान, जिल्द, सफ़ा 174। रूह-उल-बयान, जिल्द 4, सफ़ा 488)

सबक़: हमारे हुज़ूर(र०अ०) रसूल-उल-सक़लीन हैं। इंसानों और जिनों के भी रसूल हैं और जिनों में भी ऐसे खुश नसीब अफ्राद हैं जो शर्फ सहाबियत से मुशर्रफ हैं रज़ी अल्लाहो अन्ह

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(643) सर्क रज़ी अल्लाहो अन्ह

एक रोज़ हज़रत उमरो बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाहो अन्ह एक चटयल मैदान में से गुज़र रहे थे के आपने रास्ते में एक बहुत बड़ा सांप मरा हुआ देखा। आपने अपनी चादर फाड़ी और उसमें उस सांप को लपेट कर ज़मीन में दफ़्न कर दिया। दफ़्न कर देने के बाद आपने एक आवाज़ सुनी।

"ऐ सर्क! मैं गवाही देता हूँ के मैंने रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से सुना था के उन्होंने तुम से फ़रमाया था। के ऐ सर्क! तुम एक चटयल मैदान में मरोगे और तुम्हारी तजहीज़ व तकफीन एक मर्दे सालेह करेगा।"

हज़रत उमरो बिन अब्दुल अज़ीज़ ने ये आवाज़ सुनी। तो आपने फ़रमाया अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए। तुम कौन हो? और मै। ये किस की आवाज़ सुन रहा हूँ। जवाब मिला।

"मैं उन जिनों में से हूँ जिन्होंने रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़बाने अनवर से क़ुरआन सुना था। उन जिनों में से मेरे और सर्क के सिवा कोई बाक़ी ना था। और अब सर्क भी चल बसा। और सिर्फ मैं ही रह गया हूँ" (हयात-उल-हैवान, ज 1, सफ़ा 174)

सबक़: मालूम हुआ के सरवरे आलम(स०अ०स०) पर ईमान लाने वाले और शर्फे सहाबियत हासिल करने वाले जिनों में भी हैं और हमारे हुज़ूर रसूल-उल-क़ुल हैं और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ये भी इल्म हासिल था के फलाँ शख़्स फलाँ वक़्त और फलाँ ज़मीन पर मरेगा।

हिकायत नम्बर(644) ख़ौफनाक वादी

हज़रत सईद बिन जबीर रज़ी अल्लाह अन्ह फ़रमोते हैं के एक बनू तमीमी शख़्स ने अपने इस्लाम लाने का ये क़िस्सा बयान किया। के एक मर्तबा मुझे एक सफर के दौरान एक बहुत बड़े रेगिस्तान में रात गुज़ारना पड़ी। इस ख़ौफनाक रेगिस्तान में मेरी ऊँटनी मेरे साथ थी। और मैं बिलकुल तनहा था। रात का वक़्त था मैंने ऊँटनी को एक जगह बिठाया। और खुद लेट गया। और सो जाने से पहले मैंने ये पढ़ा। *आऊज़ु बि अज़ीमी हाज़ल वादी* यानी "यानी वादी के बड़े जिन के साथ मैं पनाह माँगता हूँ" ये पढ़कर सो गया। सोने के बाद ख़्वाब में, मैंने देखा के एक

Scanned by CamScanner

क़वी हैकल जो उन जिसके हाथ में एक खंजर है आया और आते ही वो खंजर उसने मेरी ऊँटनी के हलक़ पर रख दिया। ये देखते ही मैं घबरा कर जाग उठा। और इर्दगिर्द देखने लगा। मगर कोई चीज़ ना आई। मैं उसे यूंही वहमो खयाल समझ कर फिर सो गया। दोबारा फिर वही जवान हाथ में खंजर लिए नज़र आया। उसने खंजर फिर मेरी ऊँटनी के गले पर रख दिया। मैं फिर चौंक पड़ा। और देखा के मेरी ऊँटनी भी कांप रही है। मैं फिर सो गया और तीसरी मर्तबा फिर यही क़िस्सा देखा। और अब तो मैं डर कर और घबरा कर जाग उठा। मैंने देखा के ऊँटनी डर के मारे बहुत कांप रही है। मैंने पीछे मुड़कर देखा। तो वही जवान हाथ में खंजर लिए खड़ा नज़र आया। और उसके साथ एक बूढ़ा शख़्स भी देखा जिसने उस जवान का हाथ पकड़ रखा था। और ऊँटनी के क़रीब आने से उसे रोक रखा था। और वो दोनों आपस में लड़ झगड़ रहे थे। थोड़ी देर में तीन बड़े बड़े बैल वहाँ आ गए। और इस बूढ़े ने इस जवान से कहा के इन बैलों में से जो बैल चाहो इस मेरे पड़ोसी आदमी की ऊँटनी के बदले में ले लो। मगर मेरे पड़ोसी आदमी की ऊँटनी को हाथ ना लगाओ। चुनाँचे वो जवान आगे बढ़ा। और उन बैलों मं से एक बैल उसने पकड़ लिया और उसे लेकर वहाँ से चला गया। फिर वो बूढ़ा शख़्स मुझ से मुख़ातिब होकर कहने लगा के देखो भाई! अब तुम लोग इस क़िस्म की डरावनी जगहों में किसी जिन्न के साथ पनाह ना माँगा करो। इसलिए के अब उनका ज़ोर और उनका तिलिसम टूट चुका है। अब तमु यूं कहा करो *आऊज़ बिल्लाही रब्बी मोहम्मदिन मिन होली हाज़िल वादी।* यानी "मैं मोहम्मद के रब के साथ पनाह माँगता हूँ, इस वादी के होल से" मैंने पूछा, कहाँ रहते हैं? उसने कहा के मदीना मुनव्वरह मैं। मैं ये सुनकर इन्तिहाई शौक़ में अपनी ऊँटनी पर सवार हुआ। और सीधा मदीना मुनव्वरह आ पहुँचा। और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो गया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझे देखते ही मेरा ये सारा क़िस्सा खुद ही लफ़्ज़ लफ़्ज़ सुना दिया। और फिर मुझे मुसलमान हो जाने के लिए इर्शाद फ़रमाया तो मैं फ़ौरन कलमा पढ़कर हल्क़ा बगोश इस्लाम हो गया। (हुज्जत-उल्लाह अललआलमीन, सफ़ा 184)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तशरीफ़ आवरी से हर बातिल का ज़ोर व तिलिस्म टूट गया। और ये भी

Scanned by CamScanner

मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम क
रिसालत आलमगीर रिसालत है और जिन्न भी हुज़ूर के ख़ादिम हैं। और
भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम
कोई बात पौशीदा व पनेहाँ नहीं।

हिकायत नम्बर(645) मुबल्लिग़ जिन्न

हज़रत खरीम बिन फातिक रज़ी अल्लाहो अन्ह अपने इस्लाम लाने
किस्सा बयान फ़रमाते हैं के मेरे कुछ ऊँट गुम हो गए। और मैं उनकी
तलाश में बाहर निकला तो उन्हें वादी में पा लिया। चूंके मैं थक गया था
इसलिए थोड़ी देर के लिए वहीं सोने के लिए लेट गया। और आदत के
मुताबिक़ ये पढ़ा *"नऊज़ बअज़ीज़ हाज़ल वादी"* इतने में मैंने सुना के
कोई कह रहा है के...

उज़या फता बिल्लाही ज़िलजलाली
वलमजदी वन्नअमाई व अफज़ाली
ववहिदिल्लाहा वला तबाली
क़द ममारा केदुल जिन्ना फी सिफाली

"यानी ऐ जवान! अल्लाह के साथ पनाह माँग जो अज़मत व जलाल
और फज़्लो करम का मालिक है और अल्लाह की तौहीद का इक़्रार कर
और जिनों का मक्रो तिलिस्म तो अब पस्ती में जा पड़ा है।"

मैंने ये आवाज़ सुनकर कहा ऐ हातिफ! साफ साफ बताओ के तुम्हारा
क्या मतलब है? और मेरी हिदायत के लिए क्या तरीक़ है? तो फिर वही
आवाज़ आई के....

जआ रसूलुल्लाही ज़ुलख़ैराती
बियसराबा यदऊ इलन्नजाती

"यानी अल्लाह के रसूल तशरीफ़ ले आए हैं जो यसरब (मदीना
मुनव्वरह) में हैं। और निजात की तरफ़ बुला रहे हैं।"

मैंने कहा। और तुम कौन हो? तो आवाज़ आई के मैं जिन्न हूँ। मेरा नाम
उमरो बिन आसाल है। और नज्द के मुसलमान जिनों पर हुज़ूर सल-लल्लाहो
अलेह व सल्लम की तरफ़ से आमिल मुक़र्रर हूँ।

मैंने कहा के अगर मेरे ये ऊँट कोई शख़्स मेरे घर तक पहुँचा दे। तो मैं
अभी मदीना मुनव्वरह हाज़िर होकर ईमान ले आऊँ। आवाज़ आई के जाओ
तुम मदीना मुनव्वरह। और रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व

Scanned by CamScanner

सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर ईमान लाओ। तुम्हारे ये ऊँट मैं तुम्हारे घर पहुँचा दूंगा।

चुनाँचे मैं उसी वक़्त उन ऊँटों में से एक ऊँट पर सवार होकर मदीना मुनव्वरह पहुँच गया। ये दिन जुमआ का था और जिस वक़्त में पहुँचा हूँ। उस वक़्त नमाज़ हो चुकी थी। और सहाबा इक्राम मस्जिद से निकल रहे थे। मैं अपनी ऊँटनी बिठा रहा था। इतने में हज़रत अबुज़र रज़ी अल्लाहो अन्ह तशरीफ़ लाए और मुझ से फ़रमाने लगे। अन्दर चलो। हुज़ूर अलेहिस्सलाम तुम्हें बुला रहे हैं चुनाँचे मैं हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। तो हुज़ूर ने फ़रमाया। क्यों भई! जिसने तुम्हारे ऊँट तुम्हारे घर तक पहुँचाने का वादा किया था। उसने तुम से क्या क्या कुछ कहा? और फिर फ़रमाया। सुनो! उसने तुम्हारे ऊँट सही सालिम तुम्हारे घर तक पहुँचा दिए हैं। (हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 185)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की अज़मत व रिसालत के डंके हर जगह बज रहे हैं। और ये भी मालूम हुआ के चाहे दुनिया के किसी गोशे में कोई बात हो हमारे हुज़ूर को इस का इल्म हो जाता है

हिकायत नम्बर(646) बिछड़ों का मिलाप

बनी इस्राईल में एक सालेह शख़्स था। उसका एक बेटा था। जब उसकी वफात क़रीब आई। तो उसने अपने बेटे को वसीयत की। के "खुदा की क़सम" कभी ना खाना, ना झूटी ना सच्ची। जब वो मर गया और लोगों ने ये सुना तो बनी इस्राईल उसाके बेटे के पास आए। और एक एक आके कहने लगा के तेरे बाप के ज़िम्मे मेरा इतना क़र्ज़ था। वो हर एक को उसके कहने के मुताबिक़ रक़म देता रहा। हत्ता के ये बेचारा मुफलिस हो गया। और जब कोड़ी भी उसके पास बाक़ी ना रही तो वो अपनी बीवी और दो बच्चों को साथ लेकर निकल खड़ा हुआ। और दरया में कश्ती पर सवार हो गया। खुदा का हुक्म कश्ती टूट गई। और ये चारों सितम रसीदा अलेहदा अलेहदा एक एक तख़्ते पर बहने लगे। और बाद मुखालिफ ने हर एक को एक दूसरी सिम्त में जा फैंका। ये शख़्स जिसने मुद्दईयों के ज़ुल्म से वतन छोड़ा था एक जज़ीरे में पहुँच गया। जहाँ कोई आदम ज़ाद नज़र ना आता था। हैरान था के क्या करे। इतने में हातिफ से एक आवाज़ आई के ऐ माँ बाप के साथ एहसान करने वाले! मशीयते इलाही इस बात की मुक़तज़ा है के तुझ को एक ख़ज़ाना मिले फलाँ जगह जाओ और वहाँ से ख़ज़ाना निकाल लो। ये वहाँ पहुँचा। तो

Scanned by CamScanner

उस मुक़ाम से वाक़ई ख़ज़ाना मिल गया। फिर अल्लह तआला ने कुछ आदमी कहीं से वहाँ भेज दिए। उसने उनसे बड़ा अच्छा सलूक किया और उसके इस नेक सलूक की ख़बर गर्दो नवाह में फैल गई और मेहमान नवाज़ी व ग़रबा परवरी की दूर दूर तक शौहरत हो गई। चुनाँचे इत्राफ व जवानिब से लोग उसके पास आना शुरू हो गए। और जो आते गए वहीं बस्ते गए। यहाँ तक के वो जज़ीरा एक बड़ा शहर हो गया। और ये शख़्स इस जज़ीरे का हाकिम बन गया। खुदा की शान जैसे के और आदमी उसकी ख़बरें सुन सुन कर उसके पास आते थे ऐसे ही उसके बड़े बेटे को भी ख़बर लगी के एक शख़्स इन ओसाफ का फलाँ जज़ीरे में है और उसकी वजह से वो जज़ीरा आबाद हो गया है। ये सुनते ही वो भी उधर को रवाना हो गया। क़तअे मनाज़िल के बाद सफ़ा जज़ीरे में आया। और हाकिम जज़ीरे से मुलाक़ात की। हाकिम जज़ीरे ने उसकी बड़ी आओ भगत और ख़िदमत की। और उसे अपने ख़ास लोगों में दाखिल कर लिया। बावजूद उसके एक दूसरे से नावाक़िफ़ ही रहे और अपने रिश्ते से बेख़बर ही रहे।

इसी तरह उसके दूसरे बेटे को ख़बर लगी। और वो भी हाज़िरे ख़िदमत होकर अपने बड़े भाई की तरह शरफ़े खिदमत से बहरायाब हुआ। अभी तक एक का हाल दूसरे से मख़्फी ही था। अब हाकिम जज़ीरे बीवी का हाल सुनिए। के वो किसी दूसरे जज़ीरे में पहुँच गई और एक शख़्स ने उसे अपने घर में डाल लिया। जब उस शख़्स को भी इस हाकिम जज़ीरे की सखावत का इल्म हुआ तो वो भी अपनी औरत को साथ लेकर उसकी तरफ़ चल पड़ा। जब जज़ीरे के क़रीब पहुँचा तो औरत को कश्ती में छोड़कर और कुछ हदया लेकर हाकिम जज़ीरे के पास पहुँचा। हाकिम ने उसकी ख़ातिर व मदारात के बाद कहा। के रात यहीं रहो। उसने बताया के मैं अपनी औरत कश्ती में छोड़ आया हूँ। हाकिम ने कहा के उसकी हिफाज़त के लिए दो आदमी मैं वहाँ भेज देता हूँ। फिर उन्हीं दोनों भाईयों को हुक्म दिया के जाओ और रात भर इस कश्ती की हिफाज़त करो। जब वो दोनों कश्ती के पास पहुँचे तो आपस में सलाह करने लगे के हमें इस औरत की हिफाज़त के लिए भेजा गया है कहीं ऐसा ना हो के नींद आ जाए। आओ आपस में कुछ बातें करें। और आज तक ज़माना के हालात में से हो कुछ जिसको मालूम है वो बयान करे। ताके रात बसर हो। और नींद ना आए। चुनाँचे एक ने पहले अपना ही क़िस्सा बयान करना शुरू किया। और अपनी मुसीबत ज़दा दास्तान सुनाना शुरू की।

Scanned by CamScanner

और कहा के हम दो भाई थे। दसूरे भाई का नाम यही था। जो तुम्हारा है। हमारा बाप हम को मअे हमारी वालिदा के लेकर दरया में सवार हुआ। खुदा की कुद्रत कश्ती टूट गई। और हम सब एक दूसरे से अलग अलग हो गए और बिछड़ गए। खुदा जाने कौन कौन कहाँ कहाँ जा पहुँचा है। जब दूसरे ने ये क़िस्सा सुना तो पूछा तुम्हारे बाप का क्या नाम है। उसने बताया के फलाँ नाम है। पूछा और तुम्हारी माँ का नाम? उसने माँ का नाम भी बताया। ये सुन कर उसे ताब ना नही और दौड़ कर उससे लिपट गया। और कहा के रब्बे कअबा की क़सम! तो तू मेरा भाई है। वो औरत जो कश्ती में बैठी थी और जो दरहक़ीक़त उनकी थी। बैठी दोनों की बातें सुन रही थी। जब सुबह हुई और वो शख़्स कश्ती पर आया। तो औरत को निहायत ग़मगीन पाया। ये देखकर उसे शक गुज़रा। के शायद उन दोनों पहरेदारों ने कोई शरारत की है। चुनाँचे वो ग़ुस्से में उल्टे पाँव फिर हाकिम ज़ज़ीरे के पास पहुँचा और सारा क़िस्सा सुनाया। हाकिम ने उन दोनों को तलब किया। और साथ ही इस औरत को भी बुला लिया। और फिर औरत से पूछा के बताओ तुम को उनसे क्या शिकायत। वो बोली। जनाब उन दोनों से कहिये के ये रात का अपना क़िस्सा जो सुना रहे थे फिर दोहरायें। चुनाँचे उन्हें ये हुक्म दिया गया। और उन्होंने फिर वही क़िस्सा बयान किया। हाकिम जज़ीरे ने ये क़िस्सा सुना। तो बे इख़्तियार अपने तख़्त से उठा। और उन दोनों को छाती से लगाकर कहने लगा *अनतुमा वल्लाही वलादी* "खुदा की क़सम तुम तो मेरे ही बेटे हो।" इधर औरत भी बेचैन हो गई। और उठी *वअाना वल्लाही उम्मूहुमा* "और मैं खुदा की क़सम इन दोनों की माँ हूँ" अल्लाह तआला जब चाहे बिछड़ों को जमा करने पर क़ादिर है। (नुज़हरत-उल-मजालिस बाब बर अलवालिदैन, सफ़ा 283, जिल्द अव्वल)

सबक़:- माँ बाप के साथ नेक सलूक और उनकी फ़रमाँबर्दारी का फल मीठा है और माँ बाप की फ़रमाँबर्दारी औलाद की दुनिया भी बन जाती है और दीन भी संवर जाता है। और ये भी मालूम हुआ के मुसीबत के बाद राहत भी हासिल होती है। और मुसीबत के वक़्त सब्र करने वाले को बड़ा अज्र मिलता है। और ये भी मालूम हुआ के खुदा तआला बड़ी हिकमतों और क़ुद्रतों का मालिक है वो बिछड़ों को मिला देने पर भी क़ादिर है। और जिस तरह यहाँ उसने मुनतशिर अफ़्राद को एक जगह जमा फ़रमा दिया। इसी तरह क़यामत के रोज़ तमाम मुनतशिर अफ़्राद और अजज़ा को वो जमा फ़रमा देगा

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(647) आरिफ़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैं बैत-उल-मुक़द्दस जाना चाहता था के रास्ता भूल गया। अचानक एक औरत पर नज़र पड़ी। मैंने उससे कहा। ऐ मुसाफिरा! क्या तू भी रास्ता भूल गई?" उसने ग़ुस्से में आकर जवाब दिया। कहीं आरिफ़बिल्लाह भी मुसाफिर हो सकता है? और खुदा को दोस्त रखने वाला भी राह भूला हुआ कहलाया जा सकता है? फिर कुछ तवक्कुफ के बाद बोली। लो मेरी लकड़ी का सिरा पकड़ लो। और आगे आगे हो लो। मैंने ऐसा ही किया। अभी थोड़ी दूर ही चला होंगा के सामने बैत-उल-मुक़द्दस की चोटियाँ धुंदले ग़ुबार में नज़र आने लगीं। मैंने हैरान होकर पूछा। बड़ी बी! ये क्या माजरा है? के इतनी जल्दी हम बैत-उल-मुक़द्दस पहुँच गए। कहने लगी। ऐ शख़्स! तेरी रफ़्तार ज़ाहिदों जैसी है और मेरी रफ़्तार आरिफ़ों जैसी है। ज़ाहिद सय्यार और आरिफ़ तय्यार है। कहाँ चलने वाला और कहाँ उड़ने वाला। इतना कहकर वो मेरी नज़रों से ग़ायब हो गई (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 26, जिल्द 2। बाब हिफ़्ज़ुलअमानत)

सबक़:- अल्लाह की मारफ़त की बदौलत बड़ी बड़ी मुश्किलें आसान हो जाती हैं। और आरिफ़ बिल्लाह अफ़्राद भूलों भटकों की रहनुमाई फ़रमाते हैं। और मुश्किल में दस्तगीरी फ़रमाते हैं और ये भी मालूम हुआ के मारफ़त हक़ की बदौलत जब एक औरत भी कोसों दूर का सफर पल भर में तय कर सकती है। तो जो ज़ातग्रामी(स०अ०स०) इर्फान व मारफ़त का सर चश्मा है। वो पल भर में अगर अर्शे अला पर जा पहुँचे तो उसमें कौन सी ताज्जुब की बात है।

हिकायत नम्बर(648) ना अहल

हज़रत ज़ुलनून मिस्री रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक शख़्स इस्मे आज़म सीखने के लिए आया और कई महीने मुतावातिर आपकी ख़िदमत में रहा। एक रोज़ हज़रत ज़ुलनून को क़सम देकर कहने लगा के अब तो मुझे इस्मे आज़म की तालीम दे दीजिए। आपने उसे एक बर्तन का मुंह कपड़े से ढका हुआ था। दिया और फ़रमाया के इसे फलाँ शख़्स के पास ले जाओ। ये शख़्स इसे ले चला रास्ते में कुछ खयाल जो आया तो बर्तन का मुंह खोल दिया। मुंह खोलते ही बर्तन में से एक चूहा निकल कर भागा.....ये

Scanned by CamScanner

शख़्स ग़ुस्से में आकर वहीं से पलटा। और हज़रत ज़ुलनून के पास पहुँच कर कहने लगा आप मुझ से दिल लगी करते हैं। हज़रत ने फ़रमाया। दिल लगी की कोई बात नहीं। हम ने एक चूहे पर तेरी अमानत व अहलियत को आज़माना चाहा था। मगर तुम इस बात के अहले साबित नहीं हुए। और तुम ने खयानत कर दिखाई। अब तुम ही बताओ के जब तुम एक हक़ीर सी शै की हिफाज़त नहीं कर सके। तो इस्मे आज़म की अमानत जलीला पर तुम साबित क़दम कैसे रह सकते हो? जाओ। तुम इम्हिान की कसूटी पर खोटे उतरे हो (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 31)

सबक़:- अल्लाह तआला अपनी मारफ़त और अपनी मोहब्बत। ना अहलों को अता नहीं फ़रमाता।

हिकायत नम्बर(649) गवाह

हज़रत सफयान सूरी तालिब इल्मी के ज़माने में जहाँ तालीम पाते थे। वहाँ एक मकान था। जिसकी दीवार के साया में बैठा करते थे। इत्तिफाकन उस मकान में किसी ने नक़ब लगाकर सारा सामान उड़ा लिया। मालिके मकान ने हज़रत सफयान पर चोरी का इलज़ाम लगाकर उनको पकड़ लिया। हज़रत सफयान ने उस बेबसी की हालत में मुज़तरबाना अदा के साथ कहा। इलाही! तू फ़रमाता है। *लायआ-बश-शूहादाऊ इज़ा मा दुऊ* के जब गवाह गवाही देने के लिए बुलाए जायें तो गवाही देने से इंकार ना करें" और यहाँ मेरा गवाह तेरे सिवा कोई नहीं। अचानक उसी वक़्त एक शख़्स चिल्लाता हुआ आया। और कहने लगा। सफयान को छोड़ दो। चोर मैं हूँ। लोगों ने उससे इस इक़्रारे जुर्म की वजह दरयाफ़्त की। तो कहने लगा। मैंने अपने कानों से सुना कोई ग़ज़बनाक लहजे में कह रहा है। चोरी का सामान वापस कर दो। सफयान को फौरन छुड़ाओ। वरना अभी ग़ारत हो जाओगे। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 30)

सबक़:- सच्चे दिल से अल्लाह तआला से जो भी दुआ माँगी जाए वो ज़रूर क़बूल होती है।

हिकायत नम्बर(650) मेहनत का फल

एक बादशाह का गुज़र एक बूढ़े शख़्स पर हुआ। जो दरख़्तों की दुरूस्तगी और कांट छांट कर रहा था। बादशाह ने कहा, ऐ बूढ़े! क्या तुझे इन दरख़्तों का फल खाने की उम्मीद पड़ती है? कहा! बादशाह सलामत! हमारे

Scanned by CamScanner

पहले लोगों ने ज़राअत की। तो उससे हम लोगों ने फायदा उठाया। अब मैं अपने बाद आने वालों के लिए ये मेहनत कर रहा हूँ। ताके वो नफा हासिल करें। बादशाह को उसकी ये बमज़ाक़ और मुफीद बात बहुत ही पसंद आई। और खुश होकर उसे एक हज़ार अशर्फियाँ ईनाम के तौर पर दीं। इस पर बूढ़ा काश्तकार खिलखिला कर हंस पड़ा। बादशाह ने हैरत में आकर पूछा। के इस वक़्त हंसी का क्या मौक़ा है। कहा मुझ इस ज़राअत के इस क़द्र जल्द फल देने से ताज्जुब हुआ। इस बात पर बादशाह और भी ज़्यादा खुश हुआ। और एक हज़ार अशर्फियाँ और दे दीं। बूढ़ा काश्तकार फिर हंसा। बादशाह नू पूछा। के अब क्यों हंसे? तो वो बोला के काश्त कार पूरा साल गुज़रने के बाद एक दफा फायदा उठाता है। मेरी ज़राअत ने इतनी थोड़ी सी देर में दो दफा ख़ातिर ख़्वाह फायदा पहुँचाया। बादशाह ने एक हज़ार अशर्फियाँ और दीं। और इसे वहीं छोड़ कर चला गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 26)

सबक़:- मेहनत का फल ज़रूर मिलता है। और ये भी मालूम हुआ के दानाई की बात करने में बड़े फायदे हैं।

हिकायत नम्बर(651) दुश्मने रसूल

हज़रत ज़क्रया अलेहिस्सलाम के साहबज़ादे हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने किसी जंगल में शैतान को रोते हुए देखा। आपने पूछा रोते क्यों हो? शैतान बोला, ऐ अल्लाह के नबी! वो शख़्स क्यों ना रोये। जिसने एक तवील ज़माना तक खुदा की बन्दगी की हो। और उसकी इबादत महज़ बेकार और रायगाँ जाती रही हो। हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने अल्लाह से अर्ज़ की। इलाही! ये मलऊन अब तो पछताता और रोता है क्या उसके साथ मुसालेहत की कोई सूरत है? खुदा ने फ़रमया ऐ याहिया! इस मलऊन के रोने पर ना जाओ। ये इख़लास के साथ नहीं रोता। बनावटी और मनाफिक़ा रोना रोता है। और अगर तुम इसके निफाक़ को मालूम करना चाहते हो तो उससे को के अल्लाह फ़रमाता है। तुम आज भी अगर आदम अलेहिस्सलाम की क़ब्र को सज्दा कर लो। तो हम राज़ी हो जायेंगे। हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने शैतान से ये बात कही तो वो मलऊन खिलखिला कर हंस पड़ा और कहने लगा मैंने जब आदम को ज़िन्दगी में सज्दा नहीं किया। तो अब उसके मरने के बाद क्यों करने लगा। (नुज़ह-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 60)

सबक़:- मालूम हुआ के हर रोने वाला ज़रूरी नहीं के मुखलिसाना ही

Scanned by CamScanner

रो रहा हो। बल्के बअज़ लोग झूटा रोना भी रोते हैं। और ये भी मालूम हुआ के शैतान रसूल का बहुत बड़ा दुश्मन है और रसूल के आगे झुकने पर वो किसी सूरत तैयार ना पहले हुआ था और ना अब होता है। और ये मालूम हुआ के शैतान ने ना तो रसूल की दुनयवी ज़िन्दगी में तअज़ीमे रसूल की। और ना उनके विसाल के बाद उनकी क़ब्र पर ही जाने के लिए तैयार हुआ। और ये भी मालूम हुआ के रसूल पर "मरने" का लफ़्ज़ शैतान ने बड़े खुले मुंह से कह दिया था।

हिकायत नम्बर(652) मरने से डरना

सुलेमान बिन अब्दुल मलिक ने एक मर्तबा हज़रत अबु हाज़िम अलेह अर्हमा से पूछा के "हम मरने से डरते क्यों हैं?" तो आपने जवाब दिया। इसलिए के तुम ने दुनिया अबाद कर ली। और आक़बत बर्बाद कर डाली। पस आबादी से निकल कर वीराने को जाने पर किस का दिल चाहता है? सुलेमान ने फिर पूछा के क़यामत के दिन खुदा के सामने पेश होने की क्या सूरत होगी? तो आपने जवाब दिया के नेक आदमी तो यूं पेश होगा। जैसे कोई गुमशुदा आदमी घर लौटे और घर वालों से खुशी खुशी मिले। और बुरे आदमी की मिसाल यूं होगी। जैसे कोई भागा हुआ ग़ुलाम पकड़ा जाए। और उसे उसके आक़ा के हुज़ूर पेश किया जाए। और वो लरज़ता कांपता और डरता हुआ पेश हुआ। (रौज़-उल-फायक़, सफ़ा 13)

सबक़:- हमें अपनी आक़बत संवारने और आबाद करने की फिक्र करना चाहिए ताके जब हम मरें तो इस शैर के मिसदाक़ साबित हों.....

निशाने मर्द मोमिन गातो गोयम
चू मर्ग आयद तबस्सुम बरलब ओसत

यानी मोमिन जब मरता है तो हंसता हुआ मरता है। इसलिए के वो वीराने से आबादी की तरफ़ और परदेस से अपने घर की तरफ़ जा रहा होता है।

हिकायत नम्बर(653) हिसाब

एक आक़बत अंदेश आदमी को एक मर्तबा अपने गुनाहों का खयाल आया और वो अपनी उम्र का हिसाब करने लगा। हिसाब जो किया। तो उसकी उम्र साठ साल की निकली। फिर वो इन साठ सालों के दिन गिनने लगा। तो साठ साल के साढ़े इक्कीस हज़ार दिन बने। ये बात देखी। तो वो ग़श खाकर गिर पडा और जब होश में आया। तो कहने लगा। अफसोस मैं हलाक हो

Scanned by CamScanner

गया। साढ़े इक्कीस हज़ार दिनों में फी रोज़ अपना एक गुनाह भी शुमार करूं। तो भी मेरे जुमला गुनाह साढ़े इक्कीस हज़ार बनते हैं। और हाल ये है के मैंने एक एक दिन में कई कई गुनाह किए हैं। ये कहकर वो फिर गिर पड़ा और मर गया। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 14)

सबक़:- हर शख़्स को अपने आमाल का मुहासबा करना चाहिए। और सोचना चाहिए। के सारी उम्र में बिलफर्ज़ अगर फी यौम उसने एक भी गुनाह किया होगा तो भी हज़ारों गुननाह उसके लिए जमा हो जायेंगे। फिर अगर एक एक रोज़ में कई कई गुनाह किए जायें। तो अंदाज़ा लगाईये। के इन गुनाहों के किस क़द्र अंबार लग जायेंगे। और कल क़यामत के दिन किस क़द्र मुश्किल का सामना होगा। पस हर शख़्स को डरना चाहिए। और गुनाहों से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(654) आबादी

एक घुड़सवार ने जाते हुए एक शख़्स से पूछा। भई! आबादी यहाँ से कितनी दूर है? इस शख़्स ने जवाब दिया। आप अपनी दायें तरफ़ देखिये। वो देखिये। सामने आबादी नज़र आ रही है। घुड़सवार ने इधर देखा। तो उसे एक वसी व अरीज़ क़ब्रिस्तान नज़र आया। घोड़े सवार ने दिल में सोचा के ये शख़्स या तो दीवाना है और या कोई मर्द कामिल। फिर उसने उससे कहा। के भई! मैंने आबादी का पूछा है। और तुम क़ब्रिस्तान बता रहे हो। ये क्या बात? तो वो बोला। ये इसलिए के मैंने दूसरे तमाम मुक़ामात के लोगों को यहाँ आते देखा है, और यहाँ से किसी को कहीं जाते नहीं देखा। और आबादी कहते ही उस मुक़ाम को हैं जहाँ दूर दूर से लोग आयें। और वहाँ से फिर वीराने को ना जायें। तो मेरी नज़र में सही मअनों में "आबादी" यही है। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 17)

सबक़:- हर एक को एक दिन मरना है। और अपने शानदार मकान, मोहल्ले और शहर छोड़कर क़ब्रिस्तान में जाना है। जिसे हम आबादी कहते हैं। उसे एक दिन बर्बादी का सामना होगा। असल आबादी तो क़ब्रिस्तान में है। जहाँ आहिस्ता आहिस्ता सब लोग जमा हो रहे हैं।

हिकायत नम्बर(655) चार बुज़ुर्ग

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा अपने अहबाब में तशरीफ़ फ़रमा थे। और वो सब अल्लाह के मक़्बूल बन्दों का

Scanned by CamScanner

तज़करह कर रहे थे। हज़रत सरी सक़्ती रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाने लगे के मैं एक रोज़ बैत-उल-मुक़द्दस में था। और हज के दिनों में बहुत थोड़े दिन बाक़ी रह गए थे। मैंने उस साल हज के लिए ना पहुँच सकने पर बड़ा अफसोस किया। और दिल में सोचने लगा के मक्का मोअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरह पहुँच चुके होंगे। और मैं यहाँ ही हूं। अफसोस के मैं इस नअेमत से महरूम रह गया। मैं रोने लगा और बहुत रोया। थोड़ी देर के बाद हातिफ से एक निदा सुनी। कोई कह रहा था। ऐ सरी! मत रो। अल्लाह तआला तुम्हें किसी सबब हज के लिए मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचा देगा। मैंने कहा। मगर ये कैसे मुमकिन है। जब के मक्का मोअज़्ज़मा यहाँ से काफी दूर है और मैं यहाँ बैत-उल-मुक़द्दस में हूँ। आवाज़ आई के अल्लाह के लिए सब कुछ मुमकिन है। मैंने सज्दा-ए-शुक्र अदा किया और हातिफ की आवाज़ की सदाक़त के ज़हूर की इन्तिज़ार करने लगा। इतने में मस्जिद बैत-उल-मुक़द्दस में वजीहा और नूरानी चहरे वाले चार हज़रात दाख़िल हुए। उनकी नूरानी सूरतें ऐसी पुरनूर थीं जैसे सूरज चमक रहा हो। उन चारों में से एक उनका पैश्वा था। और तीन उनके पीछे पीछे चल रहे थे। ये लोग मस्जिद में दाखिल हुए तो सारी मस्जिद जगमगा उठी। मैंने उन्हें देखा तो उठकर उनके साथ हो लिया। फिर उन्होंने दो दो रकातें बा जमात नमाज़ पढ़ी। इमाम वही बना जो उनका पैश्वा था। नमाज़ के बाद उनका वो इमाम दुआ माँगने लगा। और वो तीनों उसकी दुआ पर आमीन कहने लगे। मैं क़रीब हो गया। मैंने देखा के वो बड़ी वक़्त आमेज़ दुआ माँग रहे हैं। जब वो दुआ से फारिग़ हुए तो मैंने उनसे अस्सलाम अलेकुम कही। और उन्होंने जवाब दिया। फिर उनके इसी पैश्वा ने मुझ से कहा। मुबारकबाद! ऐ सरी! के हातिफ से तुम्हें हज की बशारत मिल चुकी है। मैंने कहा। हाँ! या सय्यदी! आपके यहाँ तशरीफ़ लाने से क़ब्ल मुझे हातिफ से ये बशारत मिली है। वो फ़रमाने लगे। हाँ हाँ! जब तुम्हें वो निदाऐ हातिफ सुनाई गई है। हम उस वक़्त खरासाँ में थे। मैंने हैरान होकर पूछा। हुज़ूर! खरासान की मुसाफत तो यहाँ से साल भर की है। फिर आप इतनी जल्दी यहाँ कैसे पहुँच गए? तो फ़रमाया। मुसाफत अगर हज़ारों साल की भी हो तो कोई बात नहीं। ज़मीन उसी ख़ुदा की है जिसके हम बन्दे हैं। हम उसी के घर की ज़ियारत के लिए निकले हैं। और पहुँचा देना भी इसी का काम है। देखो ये सूरज मशरिक़ से चलकर सिर्फ एक दिन ही में मग़रिब में पहुँच जाता है। हालाँके

Scanned by CamScanner

मशरिक़ व मग़रिब में मुसाफत कई सालों की है। तो क्या सूरज ये इतनी तवली मुसाफत अपनी क़ुद्रत से तय करता है? तो जब एक बे जान वजूद अपनी लम्बी मुसाफत दिन भर में तय कर लेता है तो जो अल्लाह के मक़्बूल बन्दे हैं वो अगर साल भर की मुसाफत पल भर में तय कर लें तो कौन सी ताज्जुब की बात है फिर वो बाहर निकले और मुझे साथ ले लिया। और नमाज़ ज़ोहर के वक़्त हम एक ऐसी जगह पहुँचे। जहाँ पानी का नामो निशान तक ना था। मगर उसी मक़्बूले हक़ की बर्कत व करामत से हम ने वहाँ एक ठंडा चश्मा पाया। जिससे हम ने वज़ू किया और नमाज़ पढ़ी। फिर चले। और नमाज़ अस्र के वक़्त हमें हिजाज़ की निशानियाँ नज़र आने लगीं। और मग़रिब से पहले पहले हम मक्का मोअज़्ज़मा पहुँच गए। मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचा कर वो पाक लोग मेरी नज़रों से ग़ायब हो गए। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 22)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों को अल्लाह तआला से बड़ी बड़ी ताक़तें हासिल होती हैं। ये लोग सेंकड़ों मील की मुसाफत पल भर में तय कर लेते हैं। फिर जो उनके आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं। उनकी मैराजे पाक का इंकार करना क्यों गुमराही ना होगी। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ की मुरादें अपने बन्दों के ज़रिये व वसीले से पूरी फ़रमाता है। और ये भी मालूम हुआ के जो लोग बग़ैर छड़ी के चल नहीं सकते और एक मील ही की मुसाफत तय करके उनका दम फूल जाता है वो लोग उन अल्लाह वालों की मिस्ल बनने लगें। तो बड़े ही गुमराह हैं।

हिकायत नम्बर(656) एक बूढ़ा शेर

(मंज़ूम हिकायत)

कहते हैं एक शेर जब बूढ़ा हुआ
दौड़ने और भागने से रह गया
नाख़ुन व पंजे की ताक़त कम हुई
दांत टूटे पुश्त उसकी खम हुई
भूक से लाचार हो मरने लगा
फिक्र करके दिल में ये हीला किया
बन गया बीमार और जो जानवर
पूछने आता ना आता फिर नज़र

Scanned by CamScanner

लोमड़ी आई अयादत के लिए
ग़ार के दर पर लगी ये पूछने
है तबीयत आपकी कैसी हुज़ूर?
चश्म बद रखने खुदा हज़रत से दूर
शेर बोला उम्र हो तेरी फिज़ूं
बच्ची तो अन्दर नहीं आती है क्यों?
लोमड़ी ने ये कहा ऐ ज़िल्ल रब
अर्ज़ कर देती हूँ उसका भी सबब
कह रहे हैं बरमला ये नक़्श पा
हैं जो ज़ाहिर ग़ार के दर पर शहा
सेंकड़ों अन्दर गए हैं बिलयक़ीन
बाहर आने का निशाँ इक भी नहीं

(दरमंज़ूम, सफ़ा 21)

सबक़:- काम से पहले है लाज़िम सोचना
ये के है इस काम का अंजाम क्या

हिकायत नम्बर(65) आईना-ए-हक़ नुमा

(मंज़ूम हिकायत)

देखकर अहमद का रूऐ पुरज़िया
जहल से बोझल यूं बकने लगा
सब से बद रू है बनी हाशिम मैं तू
क्यों हसीं मश्हूर है आलम मैं तू
आपने फ़रमाया है मुझ को यक़ीं
तू बजा कहता है और झूटा नहीं
देखकर सिद्दीक़ ने फिर ये कहा
आफताबे दो जहाँ तू है शहा
चहरा-ए-रोशन है ऐसा पुर जमाल
बद्र कामिल हो मुक़ाबिल क्या मजाल
सरवरे आलम का यूं इर्शाद था
तूने भी सिद्दीक़! बिलकुल सच कहा
ये कहा यारों ने हो के बा अदब
ऐ नबी हैरान हैं हम सब के सब

Scanned by CamScanner

आप ने दोनों की क्यों तसदीक़ की
रास्त दोनों हो नहीं सकते कभी
आपने फ़रमाया। ऐ याराने दीं
आईना भी देखते हो या नहीं
हर कोई जैसा है दिखलाता है वो
ये सबक़ तुम सब को सिखलाता है वो
ऐ अज़ीज़ मैं भी हूँ वो आईना
अक्स देता है दिलों का जो दिखा

(दर मंज़ूम, सफ़ा 40)

सबक़:-

नूरे हक़ से जिनके दिल मामूर हैं
उनकी नज़रों में मोहम्मद(स०अ०स०) नूर हैं
और जिन के दिल हुए तारीक तर
वहीं कहें अहमद को मिस्ल अपनी बशर

हिकायत नम्बर(658) तवक्कल

थे मदीने में यमन के चन्द मर्द
था तवक्कल में हर इक उनमें से फर्द
सब गए फारूक़ को करने सलाम
आपने पूछा के क्या करते हो काम
बोले वो करते नहीं हम कोई कार
है तवक्कल पर हमारा तो मदार
सुन के ये फारूक़ ने उनसे कहा
ये भी कोई काम है तारीफ का
मुफ़्त खोरे क्यों नहीं कहते के हो
बोझ अपना डालते ओरों पे हो
जाँ खपाता है कोई खाते हो तुम
और तवक्कल उसको बतलाते हो तुम
है तवक्कल असल में दहक़ान का
है तवक्कल पैश-ए-मर्दे खुदा
डाल कर दाना फक़्त उम्मीद पर
रब पै रखता है नज़र जो साल भर

Scanned by CamScanner

(दर मंज़ूम, सफ़ा 121)

सबक़:-

कार कर मत कर भरोसा कार पर
कर भरोसा क़िस्मत जब्बार पर

हिकायत नम्बर(659) क़ीमती पियाला

एक बादशाह के पास कोई शख़्स बेहद क़ीमती पियाला जो जवाहरात से जड़ा हुआ था। बादशाह ऐसा ला जवाब पियाला पाकर बड़ा खुश हुआ। एक मर्द दाना दरबार में हाज़िर था। बादशाह ने उससे पूछा। के तूने इस पियाले को देखा कैसा है? उसने कहा। हुज़ूर! इस पियाले के साथ साथ में रंज व ग़म और नुक़्सान को देखता हूँ। इस पियाले के आने से पहले आप इन बातों से मुतमई थे। मगर अब इस के आने से रंजो ग़म और नुक़्सान का भी अंदेशा पैदा हो गया है। बादशाह ने कहा के ये कैसे? वो बोला के अगर ये टूट गया तो रंजो ग़म का पैदा हो जाना यक़ीनी है और अगर गुम हो गया तो नुक़्सान वाक़े हो जाएगा। इत्तिफाक़न वो पियाला एक रोज़ टूट गया। तो बादशाह को बेहद रंज हुआ। और वो कहने लगा के इस मर्दे हकीम ने सच ही कहा था। (कीमियाऐ सआदत-उल-इमाम ग़ज़ाली अलेह अर्रहमत, सफ़ा 366)

सबक़:- दुनिया की हर चीज़ फानी और अंजाम कार मौजिब हज्नो मलाल है। हक़ीक़ी और अबदी राहत अगर है तो खुदा की याद में माले दुनिया की जितनी इफ़रात होगी उतनी ही परेशानी भी बढ़ेगी। एक शायर ने क्या ख़्वाब लिखा है के....

गरचै ज़ाहिर में सूरत गुल है
पर हक़ीक़त में खार है दुनिया
एक झोंकने में है इधर से उधर
चार दिन की बहार है दुनिया
ज़िन्दगी नाम रख दिया किस ने
मौत का इन्तिज़ार है दुनिया

हिकायत नम्बर(660) पुल सिरात

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाहो अन्ह की एक बांदी ने एक रोज़ सुबह अर्ज की। अमीर-उल-मोमिनीन! आज रात मैंने एक

Scanned by CamScanner

ख़्वाब देखा, आप ने फ़रमाया बयान कर। वो बोली मैंने देखा है के दोज़ख़ भड़काई गई है। और पुल सिरात इस पर रखा गया है। और बअज़ खुलफा को फरिश्ते लाए हैं। पहले ख़लीफा मरवान को देखा के फरिश्ते उसे लाए हैं। और उसे हुक्म दिया के पुल सिरात पर चल। वो थोड़ा सा चला था। के दोज़ख़ में गिर गया। हज़रत उमर बिन अब्दुलअज़ीज़ बोले। फिर आगे क्या हुआ? जल्दी बयान करो। वो बोली। फिर मरवान के बेटे वलीद को लाया गया। वो भी इसी तरह दोज़ख में गिर गया। आप बेचैनी से बोले। जल्दी कहो। फिर क्या हुआ। वो बोली के फिर इब्ने अब्दुल मलिक को लाए। वो भी इसी तरह दोज़ख़ में गिर गया। आप बोले। फिर क्या देखा? जल्दी कहो। वो बोली। फिर आपको लाया गया। बांदी इतना कहा ही था के हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने एक नारा मारा और बेहोश होकर गिर पड़े। इस डर से के कहीं मुझे भी इसी तरह दोज़ख़ में गिरते हुए ना देखा गया हो। बांदी ने चीख कर कहा। अमीर-उल-मोमिनीन! खुदा की क़सम! मैंने देखा के आप सलामत गुज़र गए। बांदी चीख चिल्ला रही थी मगर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बेचैनी में लौटते और हाथ पैर मारते थे। काफी देर के बाद आपको होश आया। (कीमियाए सआदत, सफ़ा 496)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों के दिल में आक़्बत का ख़ौफ रहता है। और वो कभी ऐसा काम नहीं करता जिसका अंजाम दोज़ख में गिरना हो। एक वो पाक लोग भी थे के हर वक़्त आक़्बत की फिक्र रहती थी। और एक ये लाग भी हैं जों अलल एलान कहते हैं के...

आक़्बत की ख़बर खुदा जाने
अब तो आराम से गुज़रती है

खुदा एसे ग़फ़्लत आमोज़ शैरों से भी बचाए।

हिकायत नम्बर(661) अद्ल व इंसाफ

जंगे बद्र में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने हाथ मुबारक में एक तीर पकड़कर मुजाहिद की सफें दुरूस्त फ़रमा रहे थे। हज़रत सव्वाद रज़ी अल्लाहो अन्ह सफ से बाहर निकले हुए थे। हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने उस तीर से हज़रत सव्वाद की पीठ को छू कर फ़रमाया। ऐ सव्वाद! सफ के बराबर हो जाओ। हज़रत सव्वाद ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! आपके इस तीर के मेरे बदन के साथ छू जाने से मुझे जो ठोकर सी लगी है। मैं इसका बदला

Scanned by CamScanner

लेना चाहता हूँ। हुज़ूर! आप अदलो इंसाफ के मुनब्बअे व मख़ज़न हैं। मुझ इसका बदला लेने दीजिए। हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने वही तीर हज़रत सव्वाद को दिया। और कहा। लो तुम भी इस तीर से मेरे बदन पर ठोकर लगा लो। हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने बदला देने को अपनी क़मीज़ मुबारक पुश्त अनवर से उठाई तो हज़रत सव्वाद ने हुज़ूर के बदन अनवर से चिमट कर मेहर नबुव्वत को चूम लिया और अर्ज़ किया मेरे आक़ा! मैंने तो इस बहाने से बदने अनवर से अपना बदन लगा लिया है। ताके बदन अनवर की बर्कतों से मैं माला माल हो जाऊँ। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 93)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अदल व इंसाफ और रहमो व करम के पैग़म्बर हैं। और आप ने हमें ये दर्स दिया है के हम भी अदलो इंसाफ को अपनायें। और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम रज़ी अल्लाहो अन्हुम का ये ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बदन अनवर से छू जाने से इंसान का बैड़ा पार हो जाता है। फिर आज अगर कोई शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का जिस्म मुबारक ना पाकर आपके इस्मे मुबारक ही को चूम ले। तो खुदा तआला उस पर क्यों फज़्लो करम ना फ़रमाएगा। एक शायर ने क्या खूब लिखा है....

तर आसताँ जो मिल सका, तिरी रहगुज़र पै जबीं सही
हमें सज्दा करने से काम है जो वहाँ नहीं तो यहीं सही

हिकायत नम्बर(62) रस्ता

हज़रत अबु इसहाक़ शीराज़ी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा अपने मुरीदैन के साथ कहीं जा रहे थे के रास्ते में एक कुत्ता आता हुआ नज़र आया। मुरीदैन ने आगे बढ़कर कुत्ते को धतकारा। हज़रत ने फ़रमाया। उसे मत धतकारो। क्योंके रास्ता हम में और उसमें मुशतरिक है। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 94)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे जानवरों तक से भी नेक सलूक से पेश आते हैं। और अपनी अज़मत व बड़ाई का खयाल तक नहीं लाते।

हिकायत नम्बर(63) नामे अक़्दस

एक यहूदी तौरात पढ़ रहा था। उसने तौरात में एक सहीफा पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नाम अक़्दस लिखा देखा।

Scanned by CamScanner

यहूदी ने बुग़्ज़ व कीना से उस नामे पाक को खुरच डाला। दूसरे रोज़ तौरात खोली तो इस सफहे पर ये नामे अक़्दस चार जगह लिखा देखा। गुस्से में आकर उसने इस नाम पाक को फिर खुरच डाला। तीसरे रोज़ उसने देखा। के इस सफहे पर ये नाम अक़्दस आठ जगह लिखा हुआ है। उसने फिर ये नाम पाक सब जगह से खुरच दिया। चौथे दिन उसने इस नाम अक़्दस को बारह जगह लिखा देखा। अब इसकी हालत बदली। और इस नाम पाक की दिल में मोहब्बत पैदा हो गई। और इस नाम वाले महबूब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत के लिए शाम से मदीना मुनव्वरह की तरफ़ रवाना हुआ। इत्तिफाक़ देखिये के ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत करने के लिए रवाना हुआ। मगर उधर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का विसाल पाक हो चुका था जब ये मदीना मुनव्वरह पहुँचा। तो उसकी हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह से मुलाक़ात हुई। और हज़रत अली से हुज़ूर के विसाल का इल्म हुआ। अब तो ये सख़्त बेचैन हुआ। और हज़रत अली से कहने लगा। के मुझे हुज़ूर के बदने अनवर का कोई कपड़ा दिखाईये। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हुज़ूर का एक कपड़ा मुबारक उसे दिया। उस यहूदी ने पहले तो उसे सूंघा। फिर हुज़ूर के रोज़ा-ए-अनवर के सामने आकर कलमा पढ़ा। और मुसलमान होकर दुआ माँगी के इलाही! अगर तूने मेरा इस्लाम क़बूल कर लिया हे तो मुझे अपने महबूब के पास बुला ले। इतना कहा। और हुज़ूर के सामने ही इन्तिक़ाल कर गया। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उसे गुस्ल दिया और जन्नत बक़ीअ में उसे दफनाया। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 144)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नाम पाक कोई कीना परवर लाख मिटाना और खुरचना चाहे। मगर बमिसदाक़.....

तू घटाए से किसी के ना घटा है ना घटेगा
जब बढ़ाए तुझे अल्लाह तआला तेरा

हुज़ूर का नाम अनवर ना मिटा ना मिट सकता है। मिटाने वाले खुद मिट गए। मगर इस नाम अक़्दस को वही क़रार और उसकी वही बहार है जो पहले थी। सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम!

हिकायत नम्बर(664) दुनयवी मेहबूब

एक अमीर आदमी एक ग़रीब मगर नेक आदमी की लड़की पर

Scanned by CamScanner

आशिक़ हो गया। ग़रीब बाप को पता चला, तो उसने अपनी बेटी को सख़्त इसहाल आवर दवाई खिला दी। जिससे उसकी लड़की को कसरत के साथ इसहाल आने लगे। बाप उसके इस माद्दा-ए- ग़लाज़त को एक बड़े मटके में जमा करता रहा। लड़की कसरे इसहाल से बेहद लाग़िर और दुबली हो गई। और रंग भी पीला पड़ गया। फिर उस ग़रीब आदमी ने इस रईस को पैग़ाम भेजा। के आप मेरे घर तशरीफ़ लायें। और मेरी लड़की को जो आप की मेहबूबा है देख लें और दिल चाहे तो उससे निकाह कर लें। वो अमीर आदमी खुश खुश उसके घर आया। और जब उस लड़की को देखा तो वो पहला सा हुस्नो जमाल ना देख कर मुंह फैर लिया। और कहा के मुझे जिस हुस्नो जमाल से मोहब्बत थी वो तो सब नज़र नहीं आता। लड़की के बाप ने कहा। ठहरिये आपको वो मेहबूब हुस्नो जमाल भी मैंने एक मटके में मेहफ़ूज़ रखा है। आप अपने मेहबूब ही को साथ लिए जाईये। चुनाँचे वो ग़लाज़त से पुर मटका उठा लाया। और कहने लगा के इसी में है आपका वो मेहबूब जो जब तक इस लड़की के अन्दर मौजूद था। तो ये लड़की आपको अच्छी लगती थी। और अब ये समें से निकल गया है तो लड़की अच्छी नहीं लगती। लीजिए आपका मेहबूब हाज़िर है। ले जाईये इसे साथ। वो अमीर आदमी बड़ा शर्मिंदा हुआ और उठकर चला गया। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- दुनयवी और ग़ैर शरई मोहब्बत ग़लाज़त का एक ढेर ही है। आदमी को चाहिए के हुस्न ज़ाहिरी पर फरिफ़्ता ना हो के उसकी असल सरासर ग़लाज़त की पोट ही है...

रोग़नी है ज़र्फ इसानी बज़ाहिर और बासिल
हम को है मालूम जो कुछ उसकी आब व गुल में है

हिकायत नम्बर(665) चालाक औरत

(मंज़ूम हिकायत)

था मुजर्रिद और बूढ़ा एक मर्द
आज़मोदा था जहाँ के गर्म सर्द
चैन से रहता था वो सुबह व मसबा
आई कमबख़्ती निकाह इक जा किया
बीवी जो आई बड़ी चालाक थी
बद रोया बे हया बे बाक थी

Scanned by CamScanner

चाटने खाने से उसको काम था
और यही काम उसका सुबह व शाम था
एक दिन मेहमान आया उनके घर
उसकी ख़ातिर गोश्त आया सैर भर
भूनती जाती थी जब के देगची
बोटी इक इक चुन के ज़ालिम खा गई
देखकर हांडी को खाली ये किया
लाई बाहर से मियाँ को वो बुला
और कहा तुम को ना आगा यक़ीं
है मगर सच झूट ज़र्रा भर नहीं
उस निगोड़ी बिल्ली को तुम देखना
बैठी है क्या भोला भाला मुंह बना
भूनती थी मैं मसालह गोश्त का
गोश्त था इक तास में रखा हुआ
मैं लगी चखने मसालह का नमक
गोश्त सारा कर गई चट बे धड़क
कुछ ना बोला मर्द साहब दिल मगर
जाके ले आया तराज़ु दोड़ कर
पलड़े में बिल्ली को रखा की ना देर
वज़न में पूरी जो निकली एक सैर
ये कहा मुझ को बता ऐ बे हया
वज़न है बिल्ली का या ये गोश्त का?
गोश्त है गर ये तो बिल्ली है कहाँ?
है जो बिल्ली गोश्त का दे तो निशाँ!

नतीजा

नाव काग़ज़ की कभी बहती नहीं
काठ की हंडिया सदा रहती नहीं
झूट तेरा ज़ाहिर इक दिन होएगा
चोर के सौ दिन तो इक दिन साथ का

(दर मंज़ूम तर्जुमा मसनवी शरीफ)

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(666) हज़रत अबु सईद रहमत-उल्लाह अलेह

हज़रत अब्दुर्रहामन बिन जाफर अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं। मैं बसरा में रहता था। और मरे पड़ोस में एक मस्जिद थी। जिसमें मैं पाँचों नमाज़ें बा जमात अदा किया करता था। इस मस्जिद के इमाम एक खुदा रसीदा बुज़ुर्ग थे जो "अबु सईद" के नाम से मशहूर थे। हज़रत अबु सईद हर रोज़ सुबह बाद अज़ नमाज़ फज्र वअज़ फ़रमाया करते थे। एक साल में हज के लिए घर से निकला। इस साल बड़ी सख़्त गर्मी पड़ रही थी। इसलिए मैं जिस क़ाफले के साथ था। रात को उनसे जुदा होकर सारी रात सफर करता, और सुबह होती तो किसी मंज़िल पर क़याम कर लेता। और दिन भर वहीं रहता। शाम तक मेरा क़ाफला भी वहाँ आ जाता। और मैं दूसरी रात फिर आगे बढ़ता। एक रात मैं रास्ते से भटक गया। और अपने क़ाफले से बाहर जुदा हो गया। और एक ख़तरनाक दश्त में पहुँच गया। सूरज चढ़ा। तो दिल घबराया। के अब क्या होगा। दोपहर को गर्मी की शिद्दत और रेत का सहरा और क़ाफले से जुदाई। इन बातों ने मौत का यक़ीन दिला दिया। और इस तसव्वुर से एक मुक़ाम पर लेट गया। और मौत की इंन्तिज़ार करने लगा। इतने में मुझे किसी शख़्स की आवाज़ सुनाई दी। जो मेरा नाम लेकर मुझे पुकार रहा था। मैंने हैरान होकर ऊपर जो देखा तो ये वही मस्जिद के इमाम अबु सईद थे। उन्हें इस दश्त में देखकर हैरान रह गया। और अल्लाह का शुक्र भी अदा किया। अबु सईद फ़रमाने लगे। तुम भूके मालूम होते हो? मैंने कहा। हाँ! फ़रमाया! लो ये रोटी खाओ। फिर फ़रमाया। लो ये रोटी खाओ। फिर फ़रमाया। तुम प्यासे भी हो? कहा। हाँ। फ़रमाया। लो पानी भी मौजूद है। चुनाँचे मैंने पेट भर कर रोटी भी खाई और पानी भी पिया। और मेरी जान में जान आई। हज़रत अबु सईद ने फिर फ़रमाया। लो अब मेरे पीछे पीछे चले आओ। मैं उनके पीछे पीछे चलने लगा। और थोड़ी ही देर चलने के बाद मक्का मोअज़्ज़मा के शहर की दीवारें नज़र आने लगीं। और हम मक्का मोअज़्ज़मा पहुँच गए। फिर आपने मुझे एक जगह ठहरा कर फ़रमाया। के यहीं ठहरो। तुम्हारा क़ाफला तीन दिन के बाद यहाँ पहुँचेगा। आपने मुझे एक रोटी और फ़रमाया ये तुम्हारे लिए काफी है। चुनाँचे मैं तीन दिन तक उसी एक रोटी से दो लुक़्मे खाता रहा। और सैर शिकम हो जाता रहा।

Scanned by CamScanner

तीसरे रोज़ हमारा क़ाफला भी आ पहुँचा। और फिर जब हम अरफ़ात में पहुँचे। तो मैंने हज़रत अबु सईद को जबले रहमत के क़रीब दुआ में मशग़ूल देखा। मैंने सलाम अर्ज़ किया। तो फ़राग़त के बाद उन्होंने सलाम का जवाब देकर फ़रमाया। के कुछ हाजत हो तो कहो। मैंने कहा। मेरे लिए दुआ कीजिए। चुनाँचे उन्होंने दुआ की। उसके बाद फिर उन्हें नहीं देखा। हत्ता के जब हम हज के बाद बसरा पहुँचे। और रात घर क़याम करने के बाद सुबह उसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने गया। तो हज़रत अबु सईद ही जमाअत करा रहे थे। और बाद नमाज़ आपने हस्बे दस्तूर वअज़ भी फ़रमाया। वअज़ के बाद मैंने उन से मुसाफहा किया। तो आपने मेरा हाथ दबाया। गोया इर्शाद फ़रमाया के राज़ ज़ाहिर ना करना। मैंने मस्जिद के मौअज़्ज़न से पूछा के हज़रत अबु सईद इन दिनों कहीं गए तो नहीं थे तो मौअज़्ज़न ने हलफिया बयान किया। के एक रोज़ भी आप मस्जिद से ग़ैर हाज़िर नहीं रहे। बाक़यदा पाँचों नमाज़ें पढ़ाते रहे हैं। और सुबह वअज़ भी फ़रमाते रहे हैं। ये बात सुनकर मैंने यक़ीन कर लिया। के हज़रत अबु सईद अब्दाल में से हैं। (राज़-उल-फायक़, सफ़ा 54)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों को खुदा तआला ने बड़ी ताक़तें अता कर रखी हैं। वो दिनों और महीनों का रस्ता पल भर में तय कर लेते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हवा के वो एक वक़्त में यहाँ भी और वहाँ भी हो सकते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दे मुश्किल और मुसीबत के वक़्त मदद के लिए पहुँच जाते हैं। फिर जो इन मक़्बूलों के भी सरदार और रसूलों के भी रसूल और सारी कायनात के बादशाह हैं। यानी हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया अहमदे मुजतबा, मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम। उनके इख़्तियार व तसर्रूफ और उनके दाफअे-उल-बला और हामी नासिर होने में अगर कोई शख़्स कलाम करने लगे तो वो किस क़द्र जाहिल व बद नसीब है।

हिकायत नम्बर(66) मर्दे ज़ाकिर

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं। एक रोज़ मैं मस्जिद हराम से निकल कर जबले अबी क़ैस पर गया। तो मैंने एक सियाह रंग आदमी को देखा जो बड़े ज़ौक़ व शौक़ से ज़िक्रे हक़ में मशग़ूल था। और ये कलमात कह रहा था अंता। अंता। याहू। याहू" बस यही कलमात बार बार दोहरा रहा था। मैंने जब उसे देखा के इन कलमात के सिवा और कुछ कहता ही नहीं। तो मैंने उससे कहा

Scanned by CamScanner

के तुम पागल तो नहीं हो? ये सुनकर वो बोला। के या शेख़! पागल तो वो है जो इतने क़दम चल कर यहाँ पहुँचे। और इस अर्से में अपने मालिक को एक बार भी याद ना करे" मैंने कहा। भई! खुदा का ज़िक्र दिल से करना ज़्यादा अफ़्ज़ल है। वो बोला। ठीक है मगर दिल जब ज़िक्रे हक़ से पुर हो जाए। तो वो ज़बान पर भी छलकने लगता है। इतना कहकर वो मेरी नज़रों से ग़ायब हो गया। और मैं बड़ा नादिम हुआ के मैंने ऐसे मक़्बूल से ये तकरार क्यों की। फिर रात को जब सोया हूँ। तो ख़्वाब में एक निदाऐ हातिफ सुनी के इस सियाह रंग के आदमी की हमारे नज़दीक बहुत बड़ी क़द्र है। और क़यामत के रोज़ हम उसे एक ऐसा नूर अता फ़रमायेंगे। जिस नूर से सारा माहोल चमक उठेगा। (रोज़-उल-फायक़ 77)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों का दिल भी और ज़बान भी खुदा के ज़िक्र में मशग़ूल रहती हैं। और वो किसी लम्हा अपने मालिक को फ़ारोमोश नहीं करते। और ये भी मालूम हुआ के मक़्बूलाने हक़ को कभी हिक़ारत की निगाह से ना देखना चाहिए। इसलिए के ये अपने अल्लाह के नज़दीक बड़ी क़द्रो मंज़िलत के मालिक होते हैं।

हिकायत नम्बर(668) तीन तीर

हज़रत फज़ील रहमत-उल्लाह अलेह एक बहुत बड़े क़ज़्ज़ाक़ थे। एक रात वो अपने ग़ुलाम की गौद में सर रखे सो रहे थे। के दफअतन एक क़ाफला ज़ाहिर हुआ। क़ाफले वालों ने जब राह में फज़ील को देखा। तो डर गए। और कहने लगे। के अब हम क्या करें। फज़ील क़ज़्ज़ाक़ वो रास्ते में मौजूद है। क़ाफले में तीन शख़्स हाफिज़ क़ुरआन और क़ारी भी थे। कहने लगें ठहरो हम इस पर तीन तीर बरसाते हैं। मुमकिन है के वो असर कर जायें। चुनाँचे उनमें से एक ने तीर फैंका और ये आयत पढ़ी। *अलम याती लिल्लज़ीना आमनू अन तख़्शा क़ुलूबूहुम लिज़िक्रिल्लाही* "क्या ईमान दारों पर वो वक़्त नहीं आया के ज़िक्रे इलाही से उनके दिल कपकपा उठें।"

फज़ील ने ये आयत सुनी तो लरज़ गए। इतने में दूसरे ने ये आयत पढ़ी:

फफिरू इललाही इन्नी लकुम मिनहू नज़ीरू मुबीना "अल्लाह की तरफ़ रूजू करो। मैं उसकी तरफ़ से तुम्हें डराता हूँ।"

ये आयत सुनकर फज़ील चीख मार कर रोने लगे। इतने में तीसरे ने ये आयत पढ़ दी।

व आनीबू इला रब्बीकुम असलिमू लहू मिन क़ब्ली अन यातीकुम

Scanned by CamScanner

अलअज़ाबु सुम्मा ला तनसुरूना "अपने रब की तरफ़ रूजू करों और अज़ाब टूट पड़ने से पहले पहले मान जाओ। क्योंके इस वक़्त तुम्हें मदद ना मिलेगी।"

अब तो फज़ील बे क़ाबू हो गए और अपने साथियों से कहने लगे। यहाँ से सब पलट जाओ। मैं अपनी करतूतों पर नादिम हूँ। मेरे दिल में ख़ौफ इलाही घर कर गया है। ये कहकर मक्का मोअज़्ज़मा को रवाना हो गए और सच्चे दिल से तायब होकर अल्लाह के वलियों में शुमार होने लगे। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द, 2 सफ़ा 65)

सबक़:- अल्लाह का ख़ौफ बड़ी अच्छी चीज़ है। उससे इंसान की काया पलट जाती है। और उम्र भर के गुनाह छूट जाते हैं। और आदमी अल्लाह का मक़्बूल बन जाता है।

हिकायत नम्बर(669) हलवा फ़रोश

एक बुज़ुर्ग जिनका नाम अहमद था। वो क़र्ज़ ले ले कर लोगों को खिलाया पिलाया करते थे। इस आदत की वजह से उनके ज़िम्मे बहुत सा क़र्ज़ हो गया आपका जब आख़री वक़्त आया। तो क़र्ज़ ख़्वाह आपके पास जमा हो गए। और तक़ाज़ा करने लगे। के आप तो मर रहे हैं। हमारे रुपये किसी तरह देते जाईये। थोड़ी देर के बाद एक हलवाई लड़का हलवे की सीनी लिए हुए हलवे की आवाज़ देता हुआ गुज़रा। हज़रत अहमद ने उसे बुलवाया और सब हलवा उससे खरीद लिया। और उन सब क़र्ज़ ख़्वाहों को खिला दिया। लड़के ने हलवे के पैसे माँगे तो आपने फ़रमाया के जहाँ ये लोग बैठे हैं। तू भी बैठ जा। ये सब मेरे क़र्ज़ ख़्वाह हैं। तू भी इन में शामिल हो जा। लड़के ने रोना शुरू कर दिया। के मैं एक ग़रीब और ग़रीब बाप का लड़का हूँ। मेरा बाप मुझे मार डालेगा। लोगों को ये बात बहुत नागवार गुज़री के नाहक़ इस लड़के को सताया और रूलाया। वो बुज़ुर्ग ख़ामोश पड़े थे। इतने में एक रईस का फ़रसतादा आया। और बहुत सा रुपया सामने लाकर रख दिया और कहा के ये फलाँ रईसे ने भेजा है। हज़रत ने उस रुपये से सब क़र्ज़ ख़्वाहों का क़र्ज़ अदा कर दिया। एक ख़ादिम ने अर्ज़ किया के हज़रत इसमें क्या हिकमत थी के आपने मरते दम भी हलवाई लड़के से हलवा खरीद कर अपने ज़िम्मे क़र्ज़ और बढ़ा लिया। फ़रमाया के मैंने खुदा से दुआ की के मेरा क़र्ज़ अदा हो जाए। तो इर्शाद हुआ के क़र्ज़ की अदाएगी कोई मुश्किल नहीं। मगर कोई

Scanned by CamScanner

रोए तो दरया-ए-रहमत जोश में आए। लेकिन तुम्हारे इन क़र्ज़ ख़्वाहों में कोई रोने वाला तो है नहीं। सब ख़ामोश बैठे हैं। इसलिए मैंने उस ग़रीब लड़के से हलवा खरीदा। जब उसने रोना शुरू कर दिया तो उसी वक़्त रहमते हक़ को जोश आया। तो ये मेरी एक तरीकीब थी जो काम आई...

ताना गरीद को दके हलवा फ़रोश
बहर बख्शायश नमी आयद बजोश

(मसनवी शरीफ)

सबक़:- अल्लाह के हुज़ूर तज़ुर्रो वज़ारी बड़ी मक़्बूल है जो लाग अपने गुनाहों पर नादिम होकर रोते और सच्चे दिल से तायब हो जाते हैं। रहमते हक़ उन्हें अपनी आग़ोश में ले लेती है।

दर तज़ुर्रो बाश ताशादाँ शवी
गर ये किन ताबे दहाँ खिंदाँ शवी
ऐ खुशा दिल के आँ बरयान औस्त
ऐ खोशा चश्मे के आँ गरयान औस्त

हिकायत नम्बर(670) चालाक लोमड़ी

एक शेर ने जंगल के जानवरों को हुक्म दिया। के मैं अब बूढ़ा हो चुका हूँ। आईंदा मार व धहाड़ और शिकार करके खाने की ज़ेहमत मुझ से ना हो सकेगी। मेरा हुक्म है के फलाँ ग़ार में हर रोज़ तुम खुद ही किसी जानवर को मुनतख़िब करके मेरे पास भेज दिया करो। ताके मैं बैठे बिठाए अपना शिकार पा लिया करूं। जानवरों ने ये शाही हुक्म पाकर हर रोज़ किसी जानवर को मुनतख़िब करके उस ग़ार में भेजना शुरू किया। दस पंद्रह दिन के बाद लोमड़ी का नम्बर आ गया। और ग़ार में उसे जाना पड़ गया। चलते हुए लोमड़ी ने सारे जानवरों से कहा के अल्लाह ने चाहा तो आज तुम सबकी मुश्किल दूर करके आऊँगी। दुआ करते रहना। आज मेरा इरादा शेर को ख़त्म करके आने का हैं जानवर हैरान हुए। के ये क्या कहती है? लोमड़ी चली गई। और वक़्त मुक़र्रर से बिलइरादा कुछ देर से ग़ार में पहुँची। शेर ने ग़ुस्से में पूछा। के देर से क्यों आई? लोमड़ी ने जवाब दिया हुज़ूर! हम दो बहनें थीं और हम दोनों ही आपके "राशन" के लिए आ रही थी के रास्ते में एक और शेर मिल गया। उसने ज़बरदस्ती मेरी बहन को पकड़ लिया। और कहा। के उसे मैं खाऊँगा। और उसे साथ ले गया। मैंने बहतेरा कहा। के हम

Scanned by CamScanner

दोनों अपने बादशाह की खूराक हैं। मगर हुज़ूर! वो तो आपको भी कुछ नहीं समझता। और आपकी परवाह किए बग़ैर मेरी बहन को ले गया है ये क़िस्सा सुनकर शेर ग़ुस्से में आ गया। और कहा चलो मुझे वो शेर दिखाओ कहाँ है? पहले मैं उससे निपट लूं। चुनाँचे लोमड़ी उसे एक गहरे कुएँ पर ले आई। और शेर को कुएँ के किनारे खड़ा करके साथ ही आप भी खड़ी हो गई। और कुएँ के अन्दर पानी की तरफ़ इशारा करके कहने लगी। हुज़ूर! वो देखिये। वो शेर है और वो साथ ही उसके मेरी बहन खड़ी है। शेर ने देखा तो उसे वाक़ई (अपना अक्स) शेर नज़र आया। और साथ ही (लोमड़ी का अक्स) लोमड़ी भी नज़र आई। तो ग़ुस्से में उसने मुंह फाड़ कर उस (अपने ही अक्स) शेर पर हमला करने को जस्त लगा दी और जस्त लगाते ही कुएँ में जा पड़ा। लोमड़ी ने किनारे पर से कहा। बादशाह सलामत! बन्दी सलाम अर्ज़ करती है। अफसोस! के आपका आख़री वक़्त आ पहुँचा। ये कहकर लोमड़ी वापस चल गई। और शेर कुएँ में डूब कर मर गया। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- जिस तरह इस शेर ने बज़ौम खवैश दूसरे शेर पर हमला किया था। हालाँके वो उसका हमला किसी ग़ैर पर ना था। बल्के खुद अपनी ही ज़ात पर था। जिसके बाइस वो हलाक हो गया। इसी तरह वो लोग जो अपने भाईयों को लूटते हैं। कम तोलते हैं। रिश्वत लेते हैं। और दूसरों पर ज़ुल्म करते हैं वो दरअसल किसी दूसरे पर नहीं बल्के खुद अपनी ही जान पर ज़ुल्म करते हैं। पस अगर सलामती दरकार है तो किसी भाई पर ज़ुल्म ना करो।

हिकायत नम्बर(671) इत्तिफ़ाक़

(मंज़ूम हिकायत)

एक जंगल में कहीं दो बैल थे
शेर ने उन पर कई हमले किए
वो मगर रहते थे दोनों एक जा
एक लहज़ा भी ना होते थे जुदा
मिल के और सींगों को करके सामने
मारते थे दोनों टक्कर शेर के
जब लगाते मिल के टक्कर और सुम
भागता था शेर हो के नोक दुम
काम देखा ज़ोर से चलता नहीं

Scanned by CamScanner

फिक्र कर तदबीर ये सोची वहीं!!
पाके मौक़ा एक ने उससे कहा
मुफ़्त क्यों खोता है जान अपनी भला
यार से तेरे अदावत है मुझे
कुछ भी हो जाए ना छोड़ूंगा उसे
है क़सम मुझ को खुदा की कर यक़ीन
तुझ से मेरे दिल में कीना कुछ नहीं
दोस्ताना ये समझ मेरा सुख्न!
साथ उसका छोड़ दे अहमक़ ना बन
आ गया दुश्मन के दम में वो गधा
बैल ही आख़िर था धोका खा गया!
इस तरह से जब गए दोनों वो फट
शेर ने फौरन किया दोनों को चट

(मोतियों का हार तर्जुमा मसवी शरीफ)

सबक़:-

है अजब शै इत्तिफाक़ बाहमी
ये कहावत क्या नहीं तुम ने सुनी
दुश्मनों को ज़ेर करना हो अगर
तफर्रक़ा डाल उनमें और मग़लूब कर

हिकायत नम्बर(672) दिल की बात

देवबंदी हज़रात के हकीम-उल-उम्मत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी लिखते हैं। शाह अब्दुर्रहीम साहब के पहले पीर का नाम भी शाह अब्दुर्रहीम साहब ही था। फ़रमाते थे के एक मर्तबा मैं अपने पीर का सर दबा रहा था, पीर साहब ने कहा। के खूब अच्छी तरह ज़ोर से दबाओ। मेरे दिल में खयाल आया के जो बहुत ज़ोर से दबाऊँगा तो सर खरबूज़े की तरह पिचक जाएगा। (क्योंके शाह साहब खूब क़वी थे) पीर साहब ने फ़रमाया। के नहीं भाई तुम खूब ज़ोर से दबाओ। खरबूज़े की तरह नहीं पिचकेगा। (मलफूज़ात हसन-उल-अज़ीज़, सफ़ा 92 यानी मोलवी अशरफ़ अली थानवी के मलफूज़ात)

सबक़:- उन अल्लाह के वलियों से कोई बात छुपी नहीं रहती। और वो दिलों की बातें भी जान लेते हैं। फिर अगर कोई शख़्स खुद हुज़ूर सरवरे

Scanned by CamScanner

आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म में कलाम करे और ये कहे के उन्हे दीवार के पीछे का भी इलम ना था तो वो किस क़द्र जाहिल है।

हिकायत नम्बर(673) दूरदराज़ से

एक मग़रिबी शख़्स ने एक रईस से 150 रुपये क़र्ज़ माँगे। रईस ने कहा के एक साहब मेरे दोस्त हैं। उनका एक दुश्मन लंदन में है। अगर तुम उसको किसी तरकीब से मार दो। तो मैं तुम्हें उन से 150 रुपये दिलवा दूंगा। इस शख़्स ने वादा किया। चुनाँचे साहब के पास गए। इस शख़्स ने एक आईना मंगवाया। और साहब से इस आईने में देखने के वास्ते कहा। चुनाँचे देखा। तो उसमें लंदन नज़र आया। और वो दुश्मन बाज़ार में जा रहा था। उस शख़्स ने साहब से कहा के आप निशाना दुरूस्त करके पंचा का फायर कीजिए। चुनाँचे फायर किया गोली ग़ायब हो गई। वो साहब बराबर आईना में देखते रहे। के वो शख़्स गोली खा कर गिरा। फिर उन्होंने अहतियातन लंदन से बज़रिया तार अपने किसी दोस्त से ख़बर मंगाई के फलाँ शख़्स का क्या हाल है। वहाँ से ख़बर आई के वो फलाँ शख़्स का क्या हाल है। वहाँ सफ़ा ख़बर आई के वो फलाँ तारीख़ में इस तरह हलाक हुआ। के दफअतन गोली आकर लगी। और पता ना चला के किस ने गोली चलाई। पुलिस तहक़ीक़ात में मसरूफ है। क़ातिल का हनूज़ पता नहीं चला। जब साहब बो अपने दुश्मन की हलाकत का यक़ीन हो गया तो उन्होंने मुआहेदा से कुछ ज़्यादा रुपये पेश किए। तो इस मग़रिबी ने सिर्फ 150 रुपये लेकर बाक़ी ज़ायद वापस कर दिए। (मोलवी अशरफ़ अली थानवी के मलफूज़ात हसन-उल-अज़ीज़, सफ़ा 93)

सबक़:- एक मग़रिबी शख़्स अगर इतनी दूरदराज़ से किसी शख़्स को लंदन में ज़रर पहुँचा सकता है और उसकी गोली सेंकड़ों मील दूर से मार कर सकती है और एक आईना के ज़रिये वो सेंकड़ों मील दूर की चीज़ देख सकता है और दिखा भी सकता है तो फिर अल्लाह के वली में ये ताक़त क्यों नहीं हो सकती। के वो सेंकड़ों मील दूर की चीज़ को आईना करामत के ज़रिये से देख भी ले और दिखा भी दे। और दूर दराज़ से वो अपने अक़ीदतमंदों की मदद फ़रमाए। और नफा पहुँचाए। और फिर जो उन सब मक़बूलों के सरदार हुज़ूर अहमद मुख़्तार सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं। उनकी बे पनाह ताक़तों और बे नज़ीर तसर्रूफात का जो इंकार करे। और यूं कहे के जिसका नाम मोहम्मद है वो किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं। और वो कुछ नहीं कर सकते। तो वो शख़्स किस क़द्र बदबख़्त और गुमराह है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(674) हक़ हक़ हक़

शेख़ अहमद अब्दुलहक़ रूदोलवी ने शादी की। औलाद भी हुई मगर औलाद ज़िन्दा ना रहती थी जो बच्चा पैदा होता था वो तीन मर्तबा हक़ हक़ हक़ कहकर मर जाता था। एक मर्तबा आपकी बी बी इस रंज की वजह से के औलाद नहीं जीती। आपके सामने रोईं। आपने फ़रमाया के अच्छा अब जो बच्चा पैदा होगा वो ज़िन्दा रहेगा। चुनाँचे फिर जो बच्चा पैदा हुआ उसने हक़ हक़ हक़ नहीं किया। और वो ज़िन्दा रहा। (मोलवी अशरफ़ अली थानवी के मलफूज़ात हसन-उल-अज़ीज़, सफ़ा 100)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों से फ़रयाद करना जायज़ है। और अल्लाह के वलियों से औलाद और औलाद की ज़िन्दगी तलब करना शिर्क नहीं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों की नज़र से मौत भी ज़िन्दगी बन जाती है। और ये भी मालूम हुआ के जो बात अल्लाह के मक़्बूल कह दें वो हो जाती है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के वलियों को ये इल्म होता है के फलाँ बच्चा मर जाएगा और फलाँ ज़िन्दा रहेगा। फिर जो सारे वलियों और नबियों के भी सरदार के इख़्तियार व तसर्रूफ में और उनके इल्मे पाक में कलाम करे वो किस क़द्र बद नसीब और नाक़द्र शनास शाने रिसालत है।

नोट:- ये तीनों हिकायात मोलवी अशरफ़ अली साहब थानवी की बयान की हुई हैं। लिहाज़ा जो शख़्स मोलवी साहब मज़कूर से अक़ीदत रखता है। इसे हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्मे ग़ैब और हुज़ूर के इख़्तियार व तसर्रूफ का इंकार ज़ैब नहीं देता। यूंही औलिया इक्राम के मतलअ अललअसरार होने और उनके तसर्रूफात को शिर्क बताना मोलवी अशरफ़ अली साहब की इन तहरीरात के खिलाफ है और इसी तरह मोलवी अशरफ़ अली साहब की कोई अपनी तहरीर भी जो किसी दूसरी जगह इन तहरीरात के खिलाफ हो क़ाबिले क़बूल हर गिज़ नहीं। हक़ यही है जो उन ऊपर की हिकायात में लिखा गया है।

हिकायत नम्बर(675) फिरऔन की हलाकत

एक रोज़ खुदा तआला ने हज़रत मूसा अलेहिस्साम से फ़रमाया के ऐ मूसा! मेरी तरफ़ से फिरऔन से कहो। के क्या तुम मुझ से सुलह कर लेने की ख़्वाहिश रखते हो? अगर रखते हो तो तुम ने सारी उम्र अपने नफ्स की

Scanned by CamScanner

पैरवी में गुज़ार दी। अब अगर एक साल भी तुम हमारी मर्ज़ी पर चलो। तो हम तेले उम्र भर के गुनाह माफ फ़रमा देंगे। और अगर तुम से इस क़द्र ना हो सके। तो सिर्फ एक महीना ही हमारी इताअत करो। अगर ये भी ना हो सके तो एक रोज़ ही सही। ये भी नहीं तो एक सांस में *लाइलाहा इल्लल्लाह* कह लो। तो हमारी तुम्हारी सुलह हो जाएगी।

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने ये पैग़ामे हक़ फिरऔन तक पहुँचाया तो वो ज़ालिम गुस्से में आ गया। और सारे लश्कर को जमा करके बरसरे दरबार कहने लगा। कौन है मेरे सिवा दूसरा कोई रब? अना रब्बीकुम अललआला फिरऔन का ये मुताकब्बिराना एलान सुनकर ज़मीनो आसमान लरज़ उठे। और उसके हलाक किए जाने की खुदा तआला से दुआ माँगी। हुक्म हुआ। के फिरऔन कुत्ते की मानिंद है। उसे तो सिर्फ एक लकड़ी ही काफी है। ऐ मूसा! तुम अपना असा ज़मीन पर डालो। मूसा अलेहिस्सलाम ने असा ज़मीन पर डाला। तो वो एक अज़ीम अज़दहा बन गया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ये असा लेकर फिरऔन के दरबार में पहुँचे। और उसे अपना ये करिश्मा दिखाया। तो वो डर कर अपने महल में भाग गया। मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। ऐ फिरऔन! अगर तू घर से ना निकलेगा तो मैं अपने असा को वहीं तेरे पास पहुँच जाने का हुक्म दूंगा। ये सुनकर फिरऔन बोला। ऐ मूसा! मुझे थोड़ी सी मोहलत मिलनी चाहिए। और इस क़द्र जल्द हलाक करना ना मुनासिब है। मूसा अलेहिस्सलाम से खुदा तआला ने फ़रमाया। ऐ कलीम! से मोहलत दे दो। क्योंके मैं हलीम हूँ हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसे चालीस रोज़ तक की मोहलत दे दी। मगर ज़ालिम ने अपना इंकारो कुफ्र फिर भी ना छोड़ा। पस खुदा तआला ने उसे दुनिया व आख़िरत के अज़ाब में पकड़ लिया। और यहाँ दुनिया में उसे अज़ाब ग़र्क में मुबतला किया। और आख़िरत में दोज़ख़ के अलमनाक अज़ाब में डाल दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस, फस्ल फी अलज़िक्र, सफ़ा 33)

सबक़:- खुदा तआला बड़ा ग़फ़ूर-उर-रहीम है। कोई शख़्स उम्र भर गुनाह करता है। मगर पल भर के लिए भी सच्चे दिल से तौबा कर ले तो खुदाए तआला उसके सारे गुनाह माफ फ़रमा देता है। और ये भी मालूम हुआ के तकब्बुर व गुरूर और अनानियत बहुत बुरी चीज़ है। इससे आदमी तबाह व हलाक हो जाता है। तकब्बुर खुदा ही को ज़ैबा है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के पैग़म्बरों को बड़े बड़े मोजज़ात अता हुए हैं। और जो अल्लाह

Scanned by CamScanner

के पैग़म्बरों (अलेहिम अस्सलाम) की इताअत नहीं करते। वो दुनिया व आखिरत के अज़ाब में मुबतला हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(676) गाय

एक आबिद का एक शख़्स पर गुज़र हुआ। जो गाय की पूजा कर रहा था। आबिद ने उससे फ़रमाया। ऐ नादान! इस गाय की पूजा ना कर और ये बुत परस्ती छोड़ कर मुसलमान हो जा और *लाइलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदुर्रसूल अल्लाह* पढ़ ले। उस शख़्स ने कहा के मैं तो ये कलमा हरगिज़ ना पढ़ूंगा। आबिद ने उस गाय की तरफ़ मुंह करके कहा। ऐ गाय! बहक़ *लाइलाहा इल्लल्लाह* तू आग का शौला बन जा। चुनाँचे गाय हुक्म इलाही से आग का शौला बन गई। फिर इस आबिद ने उस शख़्स से कहा। देख अब भी कलमा पढ़ ले। वरना तू भी इसी तरह आग का शौला बन जाए। उस शख़्स ने फौरन पढ़ लिया और मुसलमान हो गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 41)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे बुरा काम होता देखें। तो उससे मना करते हैं और ये भी मालूम हुआ के औलिया इक्राम की करामात बरहक़ हैं। और ये भी मालूम हुआ के ये गाय जिसे बअज़ लोग अपना "खुदा" समझते हैं। मुसलमान की नज़र में ये महज़ एक जानवर ही है। और मुसलमान के ताबे बल्के मुसलमान की ग़िज़ा। गोया मुशरिक का जो खुदा है। मुसलमान की वो ग़िज़ा है।

हिकायत नम्बर(677) एक राहिब का ख़्वाब

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ एक इसाई राहिब के गिर्जे के पास से गुज़रे। तो आपने अन्दर से राहिब की आवाज़ सुनी। जो यूं कह रहा था।

ऐ वो मुक़द्दस ज़ात जिसके हरम में डरने वाले और लोगों के सताए हुए पनाह लेते हैं। और तालिब लोग उसकी रहमत व नअेमत में रग़बत करते हैं। मैं तेरे इन्तिक़ाम से रिहाई की दरख़्वास्त करता हूँ। और अपने गुनाहों की माफी चाहता हूँ। इन गुनाहों की जिनकी लज़्ज़त मिट गई और मुशक़्क़त बाक़ी रह गई।"

मालिक बिन दीनार ये आवाज़ सुनकर राहिब के पास पहुँचे। और पूछा के ये इंक़िलाब कैसे आ गया। तो वो बोला। के मैं इसाई था लेकिन अब

Scanned by CamScanner

नहीं रहा। बात ये हुई। के एक रात ख़्वाब में देखा। के कोई कहने वाला बड़े तसल्ली बख़्श लहजे में कह रहा है। के ऐ राहिब! भला तू कब तक शिर्क व कुफ्र में मुबतला रहेगा। बिला शक ईसा (अलेहिस्सलाम) खुदा के बन्दों में से एक बरग़ज़ीदा बन्दे और उसके पैग़म्बर हैं। मगर वो खुदाया खुदा के बेटे हर गिज़ नहीं। मैंने पूछा। आप कौन हैं? तो फ़रमाया।

मैं गुनहगारों का शफीअ, आख़िर ज़मान का पैग़म्बर हूँ और वो रसूल हूँ, जिसकी बशारत ईसा अलेहिस्सलाम ने भी दी। और जिसकी पेशगोई इंजील में भी मौजूद है। और मैं वो हूँ जिसकी नबुव्वत की गवाही मूसा (अलेहिस्सलाम) ने भी दी और जिसके ओसाफ तौरात ने भी बयान किए।"

फिर इस मुबारक शख़्स ने मेरे सीने पर अपना रहमत का हाथ फैरा। और ये दुआ पढ़ी। *अल्लाहुम्मा अलहम अब्दुकर्रशाद व वफ़्क़लसदाद*

"यानी इलाही! तो अपे बन्दे के दिल में हिदायत की बात डाल दे और मुझे रास्ती और सच्चाई की तौफीक़ अता फ़रमा।"

जूंही मैं नींद से चौंका तो मेरे दिल में इस्लाम की मोहब्बत मौजूद थी और अब मैं मुसलमान हूँ। अलहम्दू लिल्लाह अला ज़ालिका (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 41)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम आज भी ज़िन्दा और क़यामत तक के लिए हादी व रहबर हैं। और आप जिस पर नज़रो करम फ़रमा दें। उसकी काया पलट जाती है और वो दोज़ख़ से निकल कर जन्नत का मालिक बन जाता है।

हिकायत नम्बर(678) राहिब के सवालात

सालेहों का एक मर्दे मुजाहिद रास्ता भूल कर एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उसने देखा, के इसाईयों का एक बहुत बड़ा मजमअ लगा हुआ है। और बीच में एक बड़ी कुर्सी लगी हुई है। मर्दे मुजाहिद ने उनसे इस इजतमअ और बीच में खाली कुर्सी होने की वजह पूछी। तो वो बोले के हमारे पास साल भर में एक दफा एक राहिब यहाँ आता है और कुछ वअज़ व नसीहत करता है। इसीलिए हम यहाँ जमा हैं और ये कुर्सी इस राहिब के लिए है। वो मर्दे मुजाहिद भी इस मजमअे में बैठ गए। थोड़ी देर में एक राहिब आया। और उस कुर्सी पर बैठ गया और चारों तरफ़ मुतजस्सुस नज़रें डाल कर कहने लगा। ऐ हाज़ीन! आज मैं तुम लोगों को वअज़ नहीं सुनाऊँगा। क्योंके इस वक़त तुम में उम्मते मोहम्मदिया का

Scanned by CamScanner

कोई शख़्स मौजूद है। ये कहकर फिर उसने चारों तरफ़ नज़र डाली। और बाअवाज़ बुलंद कहा। ऐ मोहम्मद! मैं तुझे तेरे दीन की क़सम देता हूँ के हम सबके सामने आ खड़ा हो। ताके हम तुम्हें देखें। और तुझ से कुछ सवाल करें। वो मर्दे मुजाहिद फौरन उठा। और राहिब के सामने आ खड़ा हो गया। और राहिब से कहा। मैं हूँ मोहम्मदी! फ़रमाईये, आप क्या पूछना चाहते हैं। राहिब ने कहा। मेरे चन्द सवालात हैं उनका जवाब दो। पहले ये बताओ के मैंने सुना है के खुदा तआला ने जन्नत में रंग रंग के फल और तरह तरह के मेवे पैदा किए हैं। क्या दुनिया में भी उन जैसे फल हैं? मर्दे मुजाहिद ने जवाब दिया। बेशक दुनिया में भी उन जैसे फल हैं। मगर वो जन्नत के फलों के साथ सिर्फ नाम और रंग में मुशाबहत रखते हैं। मज़े और लज़्ज़त में दुनिया के फलों को जन्नत के मेवों से कुछ मुनासबत नहीं। उसके बाद राहिब बोला। के मैंने सुना है के जन्नत में कोई ऐसा घर और बालाखाना नहीं। जिसमें शज्र तूबा की एक शाख़ मौजूद ना हो। क्या दुनिया में उसकी कोई नज़ीर है। मैंने कहा। हाँ देखो। जब आफ़्ताब आसमान के वस्त में पहुँचता है तो जिस तरह शज्र तूबा की शाखें तमाम मकानों में हर जगह पहुँची हुई हैं। इसी तरह इस वक़्त आफ़्ताब का नूर हर जगह फैल जाता है। राहिब ने कहा के जन्नत में चार नहरें हैं। जिनके मज़े तो मुख़्तलिफ हैं मगर उनका मुनब्बअ और जड़ जहाँ से वो निकली हैं एक ही है। क्या दुनिया में इसकी भी नज़ीर है? मुजाहिद बोला, बेशक इसकी मिसाल भी दुनिया में है। देखो कान का पानी कड़वा है। आँख का खारी। नाक का बूदार और मुंह का शीरीं। तो ये चारों पानी मज़े और बू में गो मुख़्तलिफ हैं मगर इन सबकी असल एक ही है। और वो है सर। उसके बाद राहिब बोला। के बस एक बात और पूछनी है। मैंने सुना है के अहले जन्नत तरह तरह के खाने खायेंगे और क़िस्म क़िस्म के मशरूबात नोश करेंगे। मगर उन्हें ना तो पैशाब की हाजत पड़ेगी ना पाखाना की। क्या दुनिया में उसकी भी कोई नज़ीर है? मर्दे मुजाहिद बोले के हाँ उसकी मिसाल भी है। देखो जब तक बच्चा माँ के पेट में रहता है तो वो जिस चीज़ के खाने की ख़्वाहिश माँ के दिल में डाल देता है और क़ुद्रते खुदा से वही ग़िज़ा बच्चा के पेट में पहुँच जाती है। मगर जब तक वो पेट में रहता है ना तो पायखाना ही करता है और ना ही पैशाब!

इसके बाद राहिब खामोश हो गया। और लोगों से कहने लगा। लो आज मेरा वअज़ ये है के *लाइलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदर्रसूल अल्लाह*

Scanned by CamScanner

तुम भी मेरी तरह यही कलमा पढ़ लो। चुनाँचे वो सब कलमा पढ़कर मुसलमान हो गए। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 45-46)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूलों और मुजाहिदों के इल्मो इर्फान की बदौलत हज़ारों को दौलते ईमान मिल जाती है।

हिकायत नम्बर(679) नफ़्स की मुख़ालफत

मिस्र में एक राहिब रहता था। जिसे मुकाश्फा हसिल था। और उसके मुकाश्फे का बड़ा चर्चा था। वहाँ के एक मुसलमान आलिम ने ये सोचा के उसके मुकाश्फे के चर्चे से कहीं ऐसा ना हो के अवाम मुसलमान धोका खा जायें और उसके दाम में फंस जायें। इसलिए बेहतर है के इस रहिब को क़त्ल कर दिया जाए। चुनाँचे वो आलिम एक ख़ंजर लेकर इस राहिब के मकान पर पहुँचे और उसके दरवाज़े को खटखटाया। राहिब ने अन्दर से आवाज़ दी। के "ऐ मुसलमानों के आलिम व रहबर! खंजर को वहीं डाल दो। और खुद अन्दर आ जाओ। आलिम ने खंजर को तो वहीं छोड़ा और खुद अन्दर चले गए। और राहिब से पूछा के ये तो बताओ। के ये मुकाश्फा तुम्हें हासिल कैसे हुआ। राहिब ने कहा। नफ़्स की मुखालफत करने से। आलिम ने फ़रमाया। और तुम्हारा नफ़्स मुसलमान हो जाने पर खुश है या नहीं? राहिब बोला। नहीं। आलिम ने कहा। तो नफ़्स की ये मुखालफत अभी बाक़ी है। नफ़्स की इस मामले में भी मुखालफत करो। और कलमा पढ़ लो। चुनाँचे ये बात राहिब के दिल पर असर कर गई और वो कलमा पढ़कर मुसलमान हो गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द, अव्वल, सफ़ा 187)

सबक़:- नफ़्स की मुखालफत करने से एक काफिर को भी ये मनसब मिल जाता है के वो छुपी हुई बातों को जान जाता है। मालूम हुआ के दिल की बातें जान लेना और पौशीदा बातों की ख़बर दे देना ये कोई कमाल नहीं कमाल ये है के हुज़ूर मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ग़ुलामी इख़्तियार की जाए। और ये भी मालूम हुआ के जब एक काफिर को भी अपने इसतदराज से ये इल्म हो जाता है। के उसके दरवाज़े पर कौन खड़ा है और उसके पास क्या चीज़ हैं फिर अगर कोई शख़्स सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ यूं कहने लगे के उन्हें दीवार पीछे की चीज़ का भी इल्म नहीं होता। तो वो शख़्स किता बड़ा रसूले दुश्मन और गुमराह है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(680) बातिनी क़िला

जंग फारस में एक क़िले को मुसमानों ने घेर लिया। और मजूसी उसके अन्दर महसूर हो गए। इस क़िले में एक हसीन औरत थी। इस औरत ने मुसलमानों के लश्कर में एक हसीन मुसलमान को देखा। और इस पर फ़रीफ़्ता हो गई। इस औरत ने अपना एक क़ासिद भेजा। ताके वो उस मुसलमान को इस औरत के पास ले आए। क़ासिद ने जब इस शख़्स को इस का पैग़ाम दिय तो वो बोला। के तुम उसे जाकर कह दो। के तू अपना ज़ाहिरी और बातिनी क़िला सिर्फ खुदा के लिए हमारे सपुर्द कर दे। औरत ने जवाब दिया। के ज़ाहिरी क़िला तो मैं समझ गई। मगर बातिनी क़िले को मैं नहीं समझी। के इससे क्या मुराद है। उसने जवाब भेजा के इसका मतलब ये है के तू अपना दिल भी ख़ास खुदा के लिए सोंप दे। ये बात सुनकर औरत ने बेसाख़्ता कहा के अच्छा मैंने अपना दिल खुदा को सोंप दिया। उसके बाद उस औरत ने क़िला खोल दिया। और मुसलमानों का लश्कर अन्दर चला गया। औरत ने उस जवान मुसलमान से कहा के तुम्हारे हाथ पर मुसलमान होना चाहती हूँ। उस नोजवान ने कहा के चलो हमारे सरदार हज़रत अब्दुल्लह बिन उमर के पास। उनके हाथ पर मुसलमान होना। चुनाँचे जब उसे हज़रत अमीर लश्कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के पास लाया गया तो वो कहने लगी के मैं उनसे भी बड़े शख़्स के हाथ पर मुसलमान होंगी। आपने फ़रमाया। मेरे वालिद हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन फारूक़े आज़म के हाथ पर? उसने कहा। हाँ! चुनाँचे उसे हज़रत उमर के पास ले गए। उसने हज़रत उमर से भी यही कहा के मैं आपसे भी बड़े शख़्स के हाथ पर मुसलमान होंगी! हज़रत उमर ने फ़रमाया। उसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की क़ब्र अनवर पर ले चलो। चुनाँचे उसे रोज़ा-ए-अनवर के पास लाया गया। उस औरत ने जूहीं क़ब्र अनवर को देखा। कलमा-ए-शहादत पढ़कर उसी वक़्त जान दे दी। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 201)

सबक़:- सच्चे मुसलमान ज़ाहिरी क़िलों के साथ साथ बातिनी क़िले भी फतह करते हैं। और उन की नज़रों से अग़यार के दिलों में भी इंक़िलाब आ जाता है। और वो अपने ईमान। ख़लूस और हुस्ने किरदार के बाइस दीन व दुनिया के बादशाह होते हैं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(681) नमाज़ की बर्कत

एक शख़्स एक औरत पर आशिक़ हो गया। और उस औरत वे अपनी ख़्वाहिश ज़ाहिर की। इस औरत ने इस वाक़ेये की अपने ख़ाविंद को इत्तिला दी। उसका ख़ाविंद नेक आदमी था। उसने अपनी बीवी से कहा के तुम उसे कह दो के अगर तुम चालीस रोज़ तक मेरे ख़ाविंद के पीछ नमाज़ पढ़ोगे तो जो तुम चाहोगे मैं मंज़ूर कर लूंगी। चंनाँचे उसने अपने ख़ाविंद की बताई हुई बात उस शख़्स से कह दी। वो शख़्स बड़ा खुश हुआ उसने चालीस दिन तक बिला नाग़ा उसके ख़ाविंद के साथ नमाज़ पढ़ी। जब चालीस दिन हो गए। तो औरत ने बुला कर पूछा के बताओ तुम्हारा क्या मतलब है। वो बोला। बस अब मुझे तुम्हारी कोई हाजत नहीं। मैंने जो कुछ पा लिया है उसके होते हुए अब मेरी कोई बड़ी ख़्वाहिश बाक़ी नहीं रही। औरत ने ये सारा क़िस्सा ख़ाविंद से कहा। तो वो बोला। नमाज़ के मुतअल्लिक़ इर्शादे हक़ है के *इन्नसलाता तनही अनफाहशाई व मुनकर।* नमाज़ नमाज़ बुरी बातों से रोकती है। मैंने ये उसका इलाज क्या है। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 204)

सबक़:- नमाज़ बड़ी बर्कतों की चीज़ है। और नमाज़ से बुरी बातें छूट जाती हैं।

लतीफा:

और अगर कोई कहे। के हम ने ऐसा भी देखा है के बअज़ लोग नमाज़ पढ़ने के बावजूद बुरी बातों से किनारा कश नहीं हैं। तो उसका जवाब समझने के लिए एक लतीफा सुनिये।

एक भिकारी ने एक रईस से एक भेंस तलब की। रईस ने कहा, मियाँ भिकारी! तुम चालीस रोज़ नमाज़ पढ़ते रहो और जाब चालीस दिन पूरे हो जायें तो मुझ से भेंस ले जाना। चुनाँचे उस भिकारी ने चालीस रोज़ नमाज़ पढ़ना जारी रखी। और 41वें रोज़ उस रईस के पास आकर भेंस तलब करने लगा। रईस ने जवाब दिया। मियाँ अपनी राह लो। कैसी भेंस? मैंने तो तुम्हें नमाज़ की आदत डालने के लिए ये बात कही थी। भिकारी ने कहा। अच्छा अगर यही बात है तो जाइये। मैंने भी चालीस रोज़ सारी नमाज़ बे वज़ू ही पढ़ी हैं। मालूम हुआ के उसकी नमाज़ ही ना थी। नमाज़ वही है जो अपनी शरायत व अरकान के साथ पढ़ी जाए। और ख़लूस, खुशू और खुज़ू से अदा की जाए। ऐसी नमाज़ यक़ीनन बुरी बातों से रोक देती है। और अगर नमाज़ से उसका फायदा मुरत्तब ना हो तो ये नमाज़ का क़सूर नहीं। बल्के तरीक़ अदा

Scanned by CamScanner

का क़सूर है। एक मिसाल और सुनिये हकीम साहब ने आपको बताया के हर रोज़ सुबह दस बादाम खा लिया करो। उससे तुम्हारी कमज़ारी की तमाम शिकायात दूर जाऐंगी। अब आपने हर रोज़ दस बादाम बग़ैर तोड़े के साबित ही निगलने शुरू कर दिए तो बजाए तक़वीयत के आंतें छिलने लगीं। और लहू के दस्त आने लगे। तो फ़रमाईये ये हकीम साहब या बादामों का क़सूर या खुद आपकी तरीक़े इस्तेमाल का क़सूर है? नमाज़ को पूरे खुशू व खुज़ू और उसके जुमला शरायत व अरकान के साथ अदा कीजिए। फिर देखिये। उसके किस क़द्र फवायद हैं।

हिकायत नम्बर(682) माँ

एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा के हज़रत अबु इसहाक़ रहतम-उल्लाह अलेह की दाढ़ी मुबारक याक़ूत और जवाहरात से मरसअे है। उस शख़्स ने सुबह हज़रत अबु इसहाक़ के पास पहुँच कर ये ख़्वाब बयान किया। तो हज़रत अबु इसहाक़ फ़रमाने लगे। तूने सच कहा है। मैंने कल अपनी माँ के क़दम चूमे थे। ये उसी की बदौलत है। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 369)

सबक़:- माँ का बहुत बड़ा दर्जा है। उसके क़दमों तले जन्नत है और उसके क़दम चूमने से नूरानियत व बर्कत हासिल होती है।

हिकायत नम्बर(683) शाही फ़रमान

ख़लीफा हारून अल रशीद के बेटे मामून के अहद में एक मुज्रिम शहर से भाग गया। ख़लीफा ने उसके भाई को पकड़ कर मंगाया और कहा के अपने भाई को हाज़िर करो। वरना तुम्हें क़त्ल कर दिया जाएगा। उसने अर्ज़ किया के ऐ ख़लीफा! अगर तुम्हारा कोई मातहत हाकिम किसी को क़तल करना चाहे और तो हुक्म दे के उसे छोड़ दो। तो वो छोड़ेगा या नहीं? मामूँ रशीद रे कहा के हाँ छोड़ देगा। तो मैं तुम्हारे सामने इस बड़े बादशाह का हुक्म पेश करता हूँ। जिसकी इनायत से तू हाकिम बना है। के तू मुझे रिहा कर दे। मामूँ ने कहा। वो हुक्म मुझे सुनाओ। कहा वो अल्लाह का ये इर्शाद है के *ला तज़ीरू वज़ीरातुन विज़रा उख़रा* "यानी किसी को दूसरे के गुनह के बदले ना पकड़ो"

मामूँ ये सुनकर बड़ा मुतासिर हुआ। और रोते हुए हुक्म दिया के उसे छोड़ दो? उसने मुहक्किम और अटल हुक्म पेश कर दिया है।

Scanned by CamScanner

(तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 483)

सबक़:- बड़े से बड़ा हाकिम भी हो तो उसे क़ुरआने पाक के अहकाम के आगे सर तसलीम ख़म कर देना चाहिए और ये के बे गुनाहों को कभी पकड़ना और सताना नहीं चाहिए।

हिकायत नम्बर(884) सबसे ज़्यादा अहमक़

सुलतान मेहमूद ग़ज़नसी रहमत-उल्लाह अलेह ने एक दफा अपने अरकाने दौलत से कहा के एक ऐसा शख़्स ढूंड कर लाओ। जो सबसे ज़्यादा अहमक़ हो। ये सुनकर सुलतानी मुक़र्रिब तलाश में निकल खड़े हुए। ताके किसी बेवक़ूफ को ढूंड निकालें। आख़िर उन्होंने एक शख़्स को देखा जो एक ऊँचे दरख़्त की शाख़ पर बैठ कर उस शाख़ की जड़ पर कुलहाड़ा मार रहा था। पैश्तर इसके के वो शाख़ जड़ से कटती और वो शख़्स नीचे गिरकर मर जाता। उस शख़्स को दरख़्त पर से उतार लिया गया। और पकड़कर उसे सुलतान मेहमूद के पास ले आए। और अर्ज़ किया हुज़ूर! ये शख़्स बड़ा बेवक़ूफ और अहमक़ है। उसे हम ने इस हालत में पाया है के एक बड़े दरख़्त की शाख़ पर बैठा उसी शाख़ की जड़ पर कुलहाड़ा मार रहा था। सुलतान ने कहा। वाक़ई ये शख़्स बड़ा अहमक़ है। मगर ये बताओ के उससे भी ज़्यादा अहमक़ और कौन हो सकता है? अर्ज़ किया। हुज़ूर खुद फ़रमाएँ। सुलातन ने जवाब दिया। के वो हाकिम सबसे ज़्यादा अहमक़ है। जो ज़ुल्मो सितम से रूइय्यत को तबाह कर दे। और खुद उसके सबब बदबख़्ती और परेशानी के गढ़े में गिरे। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 496)

सबक़:- रूइय्यत की मिसाल जड़ की है। और बादशाह दरख़्त के मानिंद होता है। और दरख़्त जड़ की पायदारी से सलामत रहता है। इस जड़ को जितना मज़बूत किया जाएगा। दरख़्त उतना ही महफ़ूज़ रहेगा। और जब जड़ कमज़ोर हो जाए तो हवा का एक झोंका भी उस दरख़्त को गिर सकता है। पस हर साहबे इक़्तिदार को अपनी रिआया का खयाल रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर(885) मलिक सालेह और एक दुरवैश

मलिक सालेह बादशाह शाम का मामूल था के रात को एक ग़ुलाम के साथ मस्जिदों, मक़्बरों और मज़ारों में जाता और हर एक का हाल मालूम करता। एक रात मौसमे सर्मा में गश्त करता हुआ एक मस्जिद में पहुँचा। देखा के एक दुरवैश बिरहना है। और सर्दी से कांप रहा है। और कह रहा है के या

Scanned by CamScanner

अल्लाह! दुनिया के बादशाह तेरी अता की हुई नअेमत को नफ़्स की हर्स व हवा और लज़्ज़त में बर्बाद कर देते हैं। मोहताजों, ज़ईफों की हालत से बे ख़बर हैं। अगर वो क़यामत के दिन बहिश्त में गए। तो तेरी इज़्ज़तो जलाल की क़सम! मैं वहाँ क़दम ना रखूंगा।

मलिक सालेह ये बात सुनकर आगे बढ़ा और दीनारों भरी थेली आगे रख दी। और रोते हुए कहा के मैंने सुना है के दुरवैश बहिश्त के बादशाह होंगे। आज हम बादशाह हैं और सुलह के लिए तुम्हारे पास आए हैं। क्योंके कल तुम बादशाह होगे। अज़राहे करम उस दिन हम से दुश्मनी ना करना। बल्के इनायत व मेहरबानी से पेश आना। मैं उन बादशाहों में से नहीं हूँ। जो ग़रीबों से मुंह फैर लेते हैं। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 506)

सबक़:- बड़े बड़े लोगों को मोहताजों और ग़रीबों का खयाल रखना चाहिए। और अपनी दौलत से ग़रीब लोगों की ज़रूरतों को भी पूरा करना चाहिए। जो लोग दौलत के नशे में गुर्बा और मोहताजों का खयाल नहीं रखते वो बहुत बड़े ग़ाफिल और ना आक़बत अंदेश हैं।

हिकायत नम्बर(686) एक लड़के की दानाई

मअन बिन ज़ायदा एक अमीर शख़्स और मेहमान नवाज़ी में बड़ा मशहूर था। उसके पास उसकी दुश्मन क़ौम के कई हज़ार अफ़राद असीर करके लाए गए। उसने हुक्म दिया के सब को क़त्ल कर दो। उस क़ौम में से एक लड़का खड़ा हुआ। और कहा। ऐ अमीर! मैं प्यासा हूँ। मुझे क़त्ल तो हो ही जाना है। मगर मुझे पहले पानी तो पिला दो। मअन ने हुक्म दिया के उसे पानी पिला दिया जाए। उसने पियाला हाथ में लिया। और कहा। के ऐ अमीर! मेरे लिए डूब मरने का मुक़ाम है। और मुरव्वत का मुक़ाम नहीं। के मैं तो पानी पी लूं। और मेरी क़ौम प्यासी मरे। आपकी दरया दिली से तवक़्क़ौ है। के उनको भी पानी पिलाने का हुक्म दीजिए। चुनाँचे सबको पानी पिला दिया गया। अब लड़का फिर बोला। के ऐ अमीर! अब तो हम सब तेरे मेहमान हो गए हैं। और मेहमानों को मारना करीमों की शान नहीं बल्के उनकी इज़्ज़त करने का हुक्म है। मअन लड़के की फुसाहत व दानाई पर मुताज्जिब हुआ और सब क़ैदियों को रिहा कर दिया। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 508)

सबक़:- अक्ल व फुसाहत और मौक़ा व महल के मुताबिक़ गुफ़्तगू करने से बड़े बड़े फवायद हासिल होते हैं। और खुदा तरस अफ़राद हमेशा लुत्फो करम से काम लेते हैं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(687) नोशेरवाँ और एक बूढ़ी औरत

नोशेरवाँ ने एक बड़ा आलीशान महल तामीर कराया। और उसकी तकमील के बाद अपने वज़ीरों अमीरों को दिखाया। और पूछा के उसमें कोई कजी तो नहीं? अर्ज़ की गई। के ये महल ऐसा अज़ीम-उश्शान है के चश्मे फलक ने भी ऐसा महल ना देखा होगा मगर उसमें एक नुक़्स की बात ये है के उसके गोशे में एक झोंपड़ी है जिसके रोज़न से धुआँ निकलकर सारे ऐवान को सियाह कर रहा है। उसे उठा देना चाहिए ताके ये महल बिलकुल बे दाग़ हो जाए।

नोशेरवाँ ने कहा। के ये झोंपड़ी एक बूढ़ी औरत की है जिसने सारी उम्र उसी झोंपड़ी में बसर की है। अब वो क़ब्र में पाँव लटकाए बैठी है। मैंने ये महल शुरू करते वक़्त उस बुढ़िया को कहला भेजा था के ये जगह मेरे हाथ बेच दे। और मुंह माँगी क़ीमत ले ले। या उसके अवज़ जैसा अच्छा चाहे कोई मकान ले ले। उसने जवाब दिया के ऐ बादशाह! ये जगह मेरी मलकियत है। उसी में मैं पैदा हुई और इससे मैं मानूस हो गई हूँ मैं तो ये देखकर के तेरे पास इतना बड़ा मुल्क है बुरा नहीं मनाती। और तू इस ग़रीब की कुटिया देखना गवारा नहीं करता। मैं इस बात से मुतास्सिर होकर खामोश हो गया। हत्ता के महल बन कर तैयार हो गया। अब जो उस कुटिया से धुआँ निकल कर खराब करने लगा तो मैंने पैग़ाम भेजा के धुआँ निकालती हो। तो बोली के अपने लिए खाना पकाती हूँ। मैंने उसके लिए भुने हुए मुर्ग़ वग़ैरा समेत ख़्वान इरसाल किया। इस पैग़ाम के साथ के ऐ माँ! मैं हर रोज़ तुम्हें क़िस्म क़िस्म के ख़्वान भेजता रहूंगा। तू अपनी झोंपड़ी में आग लगाना छोड़ दे। बुढ़िया ने जवाब दिया। के मुल्क भर में कितने ही आदमी फाक़ा ज़दा दिल जले रो रहे हैं और मैं भुने हुए मुर्ग़ खाऊँ, ये जायज़ नहीं। मैं अपने खुदा से डरती हूँ के सत्तर साल तो जौ की रोटी खाई। और अब भुने हुए मुर्ग़ खाने लगूं। मेरी कुटिया को बरक़रार रहने दे के ये तेरे अद्ल के महल की ज़ीनत है। उमरा जब देखेंगे के तूने ग़रीब की झोंपड़ी पर भी हाथ डालना पसंद नहीं किया। तो वो रिआया के इमलाक पर दस्त दराज़ी से बाज़ रहेंगे। एक और बात भी है के तेरा मेहल इस ना पायदार दुनिया से कुछ मुद्दत के बाद वीरान हो जाएगा। मगर मेरी झोंपड़ी की हिकायत तेरे अद्ल की शाहिद रहेगी। लिहज़ा मैंने इस बात को पसंद किया और बुढ़िया

Scanned by CamScanner

की हमसायगी को मंज़ूर कर लिया। उस बुढ़िया की एक गाय भी थी। वो इसे महल के फर्श पर से गुज़ार कर हर सुबह बाहर जंगल में चराने ले जाती थी। और शाम को वापस आती थी। इस आम्दोरफ्त से फर्श खराब हो जाता था। एक दिन एक नदीम ने उससे कहा के ऐ बुढ़िया! तू इस हर्कत से बाज़ आ। के शाही महल की खूबसूरती में धब्बा लगता है। उसने जवाब दिया के बादशाही नामूस पर ज़ुल्म से धब्बा लगता है या अद्ल से। मैं जो कुछ कर रही हूँ बादशाह की नेक नामी के लिए कर रही हूँ (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 512)

सबक़:- एक ग़रीब को भी दुनिया में रहने का वैसा ही हक़ है जैसा के किसी अमीर को। और मालूम हुआ के आदिल बादशाह अपनी रिआया का हर तरह खयाल रखते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अपने पड़ोसियों से चाहे वो ग़रीब हों नेक दिल अफ़राद नेक सुलूक करने हैं। और ये भी मालूम हुआ के अद्लो इंसाफ से रहती दुनिया तक नाम रोशन रहता है। चुनाँचे मज़कूरा बाला बुढ़िया से अद्लो इंसाफ करने के बाइस नोशेरवाँ का अद्लो इंसाफ आज तक सुनहरी हर्फों से लिखा हुआ मौजूद है। और ज़बानों पर जारी है।

हिकायत नम्बर(688) एक आबिद

अगली उम्मतों में एक बन्दा-ए-हक़ बीच समुंद्र में एक पहाड़ पर जहाँ इंसान का गुज़र ना था। रात दिन इबादते इलाही में मशगूल रहते। रब्बे अज़्ज़ोजल ने इस पहाड़ पर उनके लिए एक अनार का दरख़्त उगाया। और एक शीरीं चश्मा निकाला। अनार खाते और पानी पीते। और इबादत करते। चार सौ बरस इसी तरह गुज़ारे। ज़ाहिर है के जब इंसान बिलकल तन तनहा ज़िन्दगी बसर करे। और कोई दूसरा ना हो। तो ना झूट बोल सकता है। ना किसी की ग़ीबत कर सकता है। ना चोरी ना कोई और क़सूर कर सकता है। जिसका ताल्लुक़ दूसरे से हो। और अक्सर गुनाह वही हैं। ग़र्ज़ जब उनके नज़अे का वक़्त आया। हज़रत इज़्राईल अलेहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। उन्होंने कहा इतनी इजाज़त दीजिए। के मैं वज़ू ताज़ा करके दो रकअत नमाज़ पढ़ लूं जब दूसरी रकअत के दूसरे सज्दे में जाऊँ। रूह क़ब्ज़ कर लेना। उन्होंने फ़रमाया। मैं तुम्हारे लिए इतनी इजाज़त लाया हूँ। उन्होंने वज़ू किया। दो रकअत नमाज़ पढ़ी। दूसरी रकअत के दूसरे सज्दे में इन्तिक़ाल हुआ। बदन उनका सलामत है। अब

Scanned by CamScanner

तक वैसे ही सज्दे में हैं। जिब्राईले अमीन अलेहिस्सलात वस्सलाम ने हुज़ूरे अक़्दस सल-लल्लाहो ताअला अलेह व सल्लम से अर्ज़ की। हम जब आसमान से उतरते या आसमान को जाते हैं। उन्हें इसी तरह सरसबसजूद देखते हैं। ये बन्दा-ए-खुदा क़यामत के रोज़ जब हाज़िर होंगे। इबादत के सिवा नामा-ए-आमाल में गुनाह तो कोई होगा ही नहीं हिसाब व मीज़ान की क्या हाजत रब्बुल इज़्ज़त इर्शाद फ़रमाएगा। *इज़्हबू बिअब्दी इला जन्नाती बिरहमती।* "यानी मेरे बन्दे को जन्नत में मेरी रहमत से ले जाओ" उनके मुंह से निकलेगा। ऐ रब मेरे! बल्के मेरे अमल से। यानी मैंने अमल ही ऐसे किए हैं जिनसे मुसतहिक़ जन्नत हूँ। इर्शाद होगा। लौटाओ और मीज़ान खड़ी करों उसकी चार सौ बरस की इबादत एक पल्ले में और हमारी नअेमतों से जो हम ने उसे चार सौ बरस में दीं। सिर्फ आँख की नअेमत को दूसरे में रखो। वज़न किया जाएगा। उनके चार सौ बरस के आमाल से एक ये नअेमत कहीं ज़्यादा होगी। इर्शाद होगा *इज़्हबू बिअब्दी इला नारी बिअदली* "मेरे बन्दे को मेरे जहन्नम में मेरे अद्ल से ले जाओ" इस पर घबरा कर अर्ज़ करेंगे। नहीं ऐ रब मेरे! बल्के तेरी रहमत से। इर्शाद होगा *इज़्हबू बिअब्दी इला जन्नती बिरहमती* "मेरे बन्दे को मेरी रहमत से ले जाओ।" (मलफूज़ात अला हज़रत बरेलवी कुद्स सरह, जिल्द दोम, सफ़ा 82)

सबक़:- अपने आमाल पर कभी घमंड ना करना चाहिए और हर हाल में अल्लाह की रहमत पर नज़र करनी चाहिए।

हिकायत नम्बर(689) इल्म की बर्कत

एक हदीस में है बाद नमाज़ अस्र शियातीन समुंद्र पर जमा इबलीस का तख़्त बिछता है। शियातीन की कारगुज़ारी पेश होती है। कोई कहता है। उसने इतनी शराबें पिलाईं। कोई कहता है। उसने इतने ज़िना कराए। सब की सुनें। किसी ने कहा। आज उसने फलाँ तालिब इल्म को पढ़ने से बाज़ रखा। सुनते ही तख़्त पर से उछल पड़ा। और उसको गले से लगाया। और कहा अनता। अनता तूने काम किया। तूने काम किया। और शियातीन ये कैफियत देखकर जल गए के उन्होंने इतने बड़े बड़े काम किए। और उसको इतनी शाबाशी दी। इबलीस बोला। तुम्हें नहीं मालूम। जो कुछ तुम ने किया। सब उसी का सदक़ा है। अगर इल्म होता तो वो गुनाह ना करते। बताओ कौन सी जगह है जहाँ सबसे बड़ा आबिद रहता है। मगर वो आलिम नहीं। और

Scanned by CamScanner

वहाँ एक आलिम भी रहता है। उन्होंने एक मुक़ाम का नाम लिया। सुबह को क़ब्ल तलू आफताब शियातीन को लिए हुए उस मुक़ाम पर पहुँचा। और शियातीन मख़्फी रहे। और ये इंसान की शक्ल बनकर रास्ता पर खड़ा हो गया। आबिद साहब तहज्जुद की नमाज़ के बाद फज्र के वास्ते मस्जिद की तरफ़ तशरीफ़ लाए। रास्ते में इबलीस खड़ा ही था। सलाम अलेकुम व अलेकुम अस्सलाम। हज़रत मुझे एक मसला पूछना है। आबिद साहब ने फ़रमाया। जल्द पूछा। मुझ नमाज़ को जाना है। उसने जैब से एक छोटी सी शीशी किाल कर पूछा। अल्लाह तआला क़ादिर है। के इन समावात व अर्ज़ को इस छोटी सी शीशी में दाख़िल कर दे। आबिद साहब ने सोचा और कहा। कहाँ ज़मीनो आसमान और कहाँ छोटी सी शीशी। बोला। बस यही पूछना था। तशरीफ़ ले जाइये। और शियातीन से कहा। देखो मैंने उसकी राह मार दी। उसको अल्लाह की कुद्रत ही पर ईमान नहीं। इबादत किस काम की।

तुलू आफ़्ताब के क़रीब आलिम साहब जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए। उसने कहा अस्सलाम अलेकुम व अलेकुम अस्सलाम मुझे एक मसला पूछना है। उन्होंने फ़रमाया। पूछो नमाज़ का वक़्त कम है। उसने वही सवाल किया। फ़रमाया मलऊन! तू इबलीस मालूम होता है। अरे वो क़ादिर है के ये शीशी तो बहुत बड़ी है। एक सूई के नाके के अन्दर अगर चाहे तो करोड़ों आसमान और ज़मीन दाख़िल कर दे *इन्नल्लाहा अला कुल्ली शैइन क़दीर*। आलिम साहब के तशरीफ़ ले जाने के बाद शियातीन से बोला। देखा ये इल्म ही की बर्कत है। (मलफूज़ात, जिल्द सोम, सफ़ा 22)

सबक़:- इल्मे दीन हासिल करना चाहिए। बग़ैर इल्मे दीन के शैतान से बचना बड़ा मुश्किल है।

हिकायत नम्बर(690) दिल की बात

एक साहब औलियाऐ इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन में से थे। आपकी ख़िदमत में बादशाहे वक़्त क़दम बोसी के लिए हाज़िर हुआ। हुज़ूर के पास कुछ सेब नज़्र में आए थे। हुज़ूर ने एक सेब दिया। और कहा खाओ। अर्ज़ किया। हुज़ूर भी नोश फ़रमाएँ। आपने भी खाए। और बादशाह ने भी। उस वक़्त बादशाह के दिल में खयाल आया के ये जो सब में बड़ा अच्छा खुश रंग सेब है। अगर अपने हाथ से उठा कर मुझ को दे देंगे। तो जान लूंगा। के ये वली हैं। आपने वही सेब उठा कर फ़रमाया। हम मिस्र में गए थे

Scanned by CamScanner

वहाँ एक जगह जल्सा बड़ा भारी था। देखा के एक शख़्स है। उसके पास एक गधा है। उसकी आँखों पर पट्टी बंधी है। एक चीज़ एक शख़्स की दूसरे के पास रख दी जाती है। उस गधे से पूछा जाता है गधा सारी मजलिस में दौरा करता है जिसके पास होती है सामने जाकर सर टेक देता है। ये हिकायत हम ने इसलिए बयान की के अगर ये सेब हम ना दें तो वली ही नहीं और अगर दे दें तो इस गधे से बढ़कर क्या कमाल किया। ये फ़रमा कर सेब बादशाह की तरफ़ फैंक दिया। (मलफूज़ात, जिल्द 4, सफ़ा 10)

सबक़:- दिल की बात बता देना कोई कमाल नहीं। कमाल तो ये है के शरीअत का इत्तिबा किया जाए।

हिकायत नम्बर(691) खोशा-ए-जन्नत

एक दफा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नमाज़ पढ़ते हुए अपना हाथ मुबारक आगे बढ़ाया। जैसे के आप कुछ पकड़ना चाहते हैं। फिर आपने अपना हाथ मुबारक रोक लिया। सहाबा-ए-इक्राम ने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! हम ने आपको अपना हाथ मुबारक आगे बढ़ाते हुए और फिर रोकते हुए देखा। ये क्या बात थी? हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया।

इन्नी रायतुल जन्नाता फतानावालत उनकूदन लो अख़ज़तुहू लाकलतुम मिनहू मा बक़ीतुदुनिया "मैंने जन्नत को देखा और जन्नत के एक खोशे को पकड़ा अगर उस खोशे को मैं तोड़ लाता। तो तुम रहती दुनिया तक इस खोशे से खाते रहते" (मुस्लिम शरीफ, जिल्द, सफ़ा 298)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुख़्तार व मुतसर्रूफ फिलकवान हैं। जन्नत सातों आसमानों के ऊपर वाक़ै है। मगर हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मुबारक आँखें मदीना मुनव्वरह की ज़मीन से सातवें आसमानों की भी ऊपर की चीज़ को देख लेती हैं। फिर जो शख़्स बग़ैर ऐनक के सात इंच दूर की भी चीज़ ना देख सके। वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मिस्ल बने तो किस क़द्र जहालत है। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मदीना मुनव्वरह में रह कर सातों आसमानों से भी परे की चीज़ को पकड़ सकते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलह व सल्लम जन्नत के मालिक हैं। इसी लिए तो आपने जन्नत में हाथ बढ़ाकर जन्नत के खोशे को पकड़ लिया। वरना पराये

Scanned by CamScanner

घर में कोई हाथ डाल कर तो दिखाए और किसी दूसरे की चीज़ कोई उठा कर तो दिखाए। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुख़्तार भी हैं। इसी लिए तो फ़रमाया। के अगर मैं चाहता तो खोशे को तोड़ लाता।

हिकायत नम्बर(692) जन्नत की रफ़ाक़त

हज़रत रबीआ रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदकमत में रात के वक़्त रहा करते थे। और हुज़ूर की ख़िदमत किया करते थे। एक रात हज़रत रबीआ ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में वज़ू के लिए पानी हाज़िर किया। तो हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम का दरयाऐ करम जोश में आ गया। और हज़रत रबीआ से आपने फ़रमाया। सल माँग। हज़रत रबीआ ने जो देखा के आक़ा का दरयाऐ करम जोश में है। तो अर्ज़ किया। *असअलूका मुराफक़तूका फिल जन्नत* "मैं जन्नत में आपकी रफ़ाक़त आपसे माँगता हूँ।"

यानी या रसूल अल्लाह! जन्नत दीजिए और ना सिर्फ जन्नत बल्के जन्नत में जहाँ आप हों। वहाँ अपने साथ रखिये। हुज़ूर सल-लल्लाहाओ तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया।

ओ ग़ैरू ज़ालिका कुछ और भी?

अर्ज़ किया। नहीं या रसूल अल्लाह! बस यही हाजत है। पूरी कर दीजिए। हुज़ूर ने फ़रमाया। अच्छा तो कसरत सजूद से मेरी एआनत करते रहे यानी नमाज़ पढ़ते रहना। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 84)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम दाता हैं। जभी तो फ़रमाया "माँग" वरना जो दे ना सके वो ऐसा कब कहता है? और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का ये अक़ीदा था के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सब कुछ अता फ़रमा सकते हैं। हत्ता के जन्नत भी दे सकते हैं। और ना सिर्फ जन्नत बल्के जन्नत का आला मुक़ाम भी दे सकते हैं। जभी तो हुज़ूर से यूं अर्ज़ किया। के मैं जन्नत और जन्नत में आपकी रफ़ाक़त माँगता हूँ गोया सहाबा इक्राम का ईमान था के हुज़ूर जन्नत के मालिक व मुख़्तार हैं जिसे चाहें दे दें। फिर अगर यूं कहा जाए के जिसका नाम मोहम्मद है वो किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं। तो ये किस क़द्र गुमराही है। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर

Scanned by CamScanner

सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से जन्नत लेने की ख़्वाहिश हो तो नमाज़ कभी ना छोड़नी चाहिए।

हिकायत नम्बर(693) ग़ज़वा-ए-तबूक में

ग़ज़वा-ए-तबूक में सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान से राशन ख़त्म हो गया। तो भूक की शिद्दत में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से तालिबे दुआ हुए तो हुज़ूर ने फ़रमाया। के जो कुछ भी किसी के पास बचा कुछा हो। मेरे पास ले आओ। चुनाँचे सहाबा इक्राम थोड़ी थोड़ी चीज़ें जो बची कुछी थीं। ले आए। हुज़ूर ने उन थोड़ी थाड़ी चीज़ों पर दुआए बर्कत फ़रमाई। और फिर फ़रमाया जाओ अपने अपने बर्तन ले आओ। और उसमें से भर भर कर लेते जाओ चुनाँचे।

फाखुज़ू फी ओ इय्यतीहि हत्ता मा तराकू फिल असकरी विआअन इल्ला मलाहू

सब सहाबा ने अपने अपने बर्तन भर लिए और लश्कर में जो भी बर्तन था। कोई खाली ना रहा। सब भर लिए गए। और फिर सारे सहाबा ने सैर शिकम होकर खाना खाया। और खाना फिर भी बच गया। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 538)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ये रहमत व बर्कत है। के आप थोड़े को ज़्यादा कर देते हैं। और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम मुश्किल के वक़्त बारगाहे रिसालत ही में फ़रयाद किया करते हैं। और ये भी मालूम हुआ के थोड़ी थोड़ी चीज़ें सामने रखकर उन पर दुआऐ ख़ैर करनी जैसे के ख़त्म व फातिहा में होता है। जायज़ है। बिदअत हर गिज़ नहीं।

हिकायत नम्बर(694) दूध का पियाला

एक मर्तबा हज़रत अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह को बड़े ज़ोर की भूक लगी। और वो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक दूध का पियाला लिया। और हज़रत अबु हुरेरा से फ़रमाया। जाओ असहाब सफा को बुला लाओ। असहाब सफा की तादाद सत्तर थी अबु हुरेरा ने जी में सोचा के वो लोग आ गए तो एक पियाले में से मेरे लिए क्या बचेगा? मगर हुक्म नबव्वी था। इसलिए वो गए और असहाब सफा को बुला लाए। हुज़ूर ने फ़रमाया।

Scanned by CamScanner

लो ये दूध का पियाला, और उन सबको पिलाओ। चुनाँचे हज़रत अबु हुरेरा ने बारी बारी सबको पिलाना शुरू किया। एक को पिला लेते तो फिर वही पियाला दूसरे के आगे रख देते। वो पी लेता तो आगे कर देते। इसी तरह उस एक पियाले से सब ने सैर होकर दूध पिया। मगर दूध वैसे का वैसा ही रहा। ज़र्रा भी कम ना हुआ। फिर वो पियाला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपने हाथ में लिया। और अबु हुरेरा ने फ़रमाया लो अब तुम पियो। अबु हुरेरा ने पीना शुरू किया। हत्ता के जब आपने पियाला मुंह से हटाया। तो हुज़ूर ने वो पियाला अबु हुरेरा के मुंह से फिर लगाया। और फ़रमाया। और पियो। हज़रत अबु हुरेरा ने और पिया। और फिर जो पियाला मुंह से हटाया। तो हुज़ूर ने फ़रमाया नहीं और पियो। कई बार ऐसा हुआ। आखिर हज़रत अबु हुरेरा ने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! अब कोई रास्ता नहीं रहा। (बुखारी शरीफ, सफ़ा 956)

सबक:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुतसर्रूफ व मुख़्तार हैं। चाहें तो एक पियाले से सत्तर आदमियों को खिला पिला दें। फिर अगर यूं कहा जाए के "नबी के चाहने से कुछ नहीं होता" तो ये बात किस क़द्र गुमराही व जहालत की बात है।

हिकायत नम्बर(085) घी का मशकीज़ह

एक सहाबिया उम्मे मालिक रज़ी अल्लाहो अन्हा मशकीज़े में घी डाल कर हुज़ूर की ख़िदमत में पेश किया करती थीं एक रोज़ हुज़ूर ने खुश होकर जो निगाहे करम फ़रमाई। तो वो मशकीज़ह घी का चश्मा बन गया। उम्मे मालिक को जब भी घी की ज़रूरत होती, उसी मशकीज़े से निकाल लेतीं। एक रोज़ उम्मे मालिक ने उस मशकीज़े को निचौड़ लिया। तो ऐसा करने से वो मशकीज़ह खुश्क हो गया। उम्मे मालिक ने हुज़ूर से ये वाक़ेया अर्ज़ किया तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया *लो तरकतिहा मा ज़ाला क़ाइमा* "अगर तू ना निचौड़ती तो घी हमेशा रहता" (मुस्लिम शरीफ, सफ़ा: 537)

सबक:- हमारे हुज़ूर(स०अ०स०) की चश्मे रहमत जिस पर पड़ जाए वो चीज़ हमेशा रहमत बन जाती है। और एक नज़र ऐसी भी होती है के साफ सुथरे दूध पर पड़ जाए तो दूध फट जाए। फिर अगर ऐसा शख़्स उनसे मसावात का दम भरे तो हम अहले नज़र के नज़दीक वो बड़ा ही जाहिल और अंधा है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(696) खजूरें

एक रोज़ हज़रत अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह तक़रीबन बीस इक्कीस खजूरें लेकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह इन खजूरों में दुआए बर्कत फ़रमा दीजिए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इकठ्ठा किया और दुआ फ़रमा कर फ़रमाया। इन्हें अपने तोशेदान में डाल ले। और जब भी कभी ज़रूरत पड़े हाथ डाल कर निकाल लिया करना। और उसे झाड़ना मत। हज़रत अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उन्हें कमर के साथ बाँध लिया। और चौबीस साल से ज़्यादा उस तोशेदान से खजूरें निकाल निकाल कर खाते रहे। मनों खुदा के रास्ते में तक़सीम भी कीं। और लोगों को भी खिलाईं। आख़िर हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह की शहादत के रोज़ वो तोशेदान अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह की कमर से टूट कर कहीं गिर गया। (तिरमीज़ी शरीफ, सफ़ा 241-जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार और कायनात के हाकिम हैं। खुदा तआला की अता से आप जो चाहें वो हो जाता है। जिस तरह चन्द एक खजूरें आप की बर्कत से कई मन हो गईं और 24 साल तक खाई जाती रहीं। इसी तरह हम गुनहगारों की थोड़ी नेकियाँ भी सरकारे अब्दर क़रार सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की निगाहे करम से बेशुमार हो जागेंगी। मगर शर्त ये है के सरकार के मुतअल्लिक़ अक़ीदा भी वही हो जो सहाबा इक्राम का था।

हिकायत नम्बर(697) नायब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम

सनद सही के साथ मरवी है के हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया।

मा ततलअ अलशम्सहती तसलम अला व तजई अलसनत इला व तसल्लम अला व तख़्बरनी बिमा यजरी फीहा। व यजई अलशहरू यसल्लम अला व यख़्बरनी बिमा यजरी फीह। व यजई अलअसबूअ व यसल्लम अला व यख़्बरनी बिमा यजरी फीह। व यजई अलयौम व यसल्लम अला व यख़्बरी बिमा फीह। व इज़्ज़त रब्बी अन अलसअदा व अलशक़िया लयअरिज़ना अला ऐनी फी अललूह-उल-महफ़ूज़।

Scanned by CamScanner

इन्ना ग़ाइस फी बहार अलिमल्लाहू व मशाहिदत। इन्ना हज्जतुल्लाह अलेकुम जमीअकुम अना नायब रसूलुल्लाह(स०अ०स०) ववारसहू फिल अर्ज़। (बहुज्जत-उल-असरार शरीफ, सफ़ा 22)

तर्जुमा:- सूर हर रोज़ तलू होते वक़्त मुझ पर सलाम अर्ज़ करता है। और हर नया साल जब आता है तो मुझ पर सलाम अर्ज़ करके जो कुछ साल भर में होने वाला होता है, उसकी ख़बर मुझे दे देता है। और हर महीना जब शुरू होता है तो पहले मुझे सलाम अर्ज़ करता है। और जो कुछ महीने भर में होना होता है उसकी ख़बर मुझे देता है। और हर हफ़्ता जब शुरू होता है तो पहले मुझे सलाम अर्ज़ करता है और जो कुछ हफ़्ते भर में होना होता है। उसकी ख़बर मुझे देता है इसी तरह हर दिन भी मुझे सलाम अर्ज़ करके दिन भर में होने वाले वाक़ेयात की ख़बर देता है। मुझे मेरे रब की इज़्ज़त की क़सम! नेक व बद सब मुझ पर पेश किए जाते हैं और मेरी आँख लोहे महफ़ूज़ में लगी रहती है। मैं अल्लाह के इल्म व मुशाहेदे के समुंद्रों में ग़ौताज़न हूँ। और मैं तुम सब के लिए अल्लाह की हुज्जत हूँ। और मैं रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नायब हूँ। और ज़मीन में उनका वारिस हूँ।"

सबक़:- मालूम हुआ के हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह को अल्लाह तआला ने बहुत बड़ी शान अता फ़रमाई है और आपको इल्म भी इतना वसी अता फ़रमाया है के साल भर के हर महीने और हर रोज़ में जो जो कुछ होने वाला होता है। वो सब वाक़ेयात हुज़ूर ग़ौस आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के इल्म में दाखिल होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के ये इतना बड़ा वसी इल्म हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के एक नायब का है। तो खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म पाक का अंदाज़ा कौन कर सकता है जिनके सदक़े में हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह को इतना इल्म अता हुआ। फिर अगर कोई शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ही के मुतअल्लिक़ यूं कहने लगे के उन्हें तो दीवार पीछे का भी ना था तो वो किस क़द्र जाहिल है।

हिकायत नम्बर(698) चुड़िया की मौत

हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह एक मर्तबा अपने मदरसे में वज़ू फ़रमा रहे थे। के एक चुड़िया ने बीट कर दी। तो वो आपके कपड़े पर पड़ी। हज़रत ने जलाल में आकर ऊपर इस चिड़िया की तरफ़ देखा। आपकी उस जलाल भरी नज़र से चिड़िया मर गई और नीचे गिर गई। उसके बाद हुज़ूर

Scanned by CamScanner

ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने इस कपड़े को उतार कर बीट वाली जगह को धोया। और वो क़ीमती कपड़ा अपने एक ख़ादिम को देकर फ़रमाया। उसे जाकर बेच दो। और क़ीमत राह खुदा में सदक़ा कर दो। ताके उस चिड़िया की मौत का बदला हो जाए। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 103)

सबक़:- अल्लाह के बन्दों की जलाल भरी नज़रों में खुदाई क़हर पनेहाँ होता है। और उनकी जमाल भरी नज़रों में अल्लाह का फ़ज़्लो करम मौजूद होता है। पस हमें उन अल्लाह वालों का कभी दिल ना दिखाना चाहिए ताके उनके जलाल व अत्ताब के हम मोरिद बन जायें।

हिकायत नम्बर(699) एक सौदागर का क़िस्सा

एक सौदागर जिसका नाम अबु अलमुज़फ़्फर था। हज़रत शेख़ हम्माद अलेह अर्रहमत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और कहा। क़ाफला तैयार है। मैं मुल्क शाम को जा रहा हूँ। सर दस्त सौ अशर्फियाँ अपने साथ ले जा रहा हूँ। और इतनी क़ीमत का सामान मेरे पास है। दुआ कीजिए के कामयाब लूटों। हज़रत शेख़ हम्माद ने फ़रमाया तो अपना ये सफर मुलतवी कर दो। वरना ज़बरदस्त नुक़्सान उठाओगे। डाकू तुम्हारा सब माल लूट लेंगे। और तुम को क़त्ल भी कर देंगे। सौदागर ये ख़बर सुनकर बड़ा परेशान हुआ। और उसी परेशानी में वापस आ रहा था। के रास्ता में हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह मिल गए। पूछा क्यों परेशान हो? सौदागर ने सारा क़िस्सा सुना दिया। आप ने फ़रमाया। परेशान होने की ज़रूरत नहीं। तुम शौक़ से मुल्क शाम को जाओ। इंशाअल्लाह तुम्हें कोई नुक़्सान ना होगा। और तुम बखैरियत और कामयाब लौटोगे। चुनाँचे सौदागर मुल्क शाम को रवाना हो गया।

शाम मैं उसे बहुत सा नफा हुआ। और वो एक हज़ार अशर्फियों की थेली लिए मुल्क हलब में पहुँचा। और इत्तिफाक़न थेली कहीं रखकर भूल गया। इसी फिक्र में नींद ने ग़ल्बा किया। और सो गया तो ख़्वाब में देखा के कुछ डाकूओं ने उसके क़ाफले पर हमला करके सारा सामान लूट लिया है। और उसे भी क़त्ल कर डाला है। ये दहशतनाक ख़्वाब देखकर सौदागर ख़्वाब से चौंका। तो देखा वहाँ कुछ भी ना था। मगर उठा तो याद आया। के अशर्फियों की थेली मैंने फलाँ जगह रखी थी। चुनाँचे झट वहाँ गया तो थेली मिल गई। और खुशी खुशी बग़दाद वापस आया। और अब सोचने लगा के मैं पहले ग़ौसे आज़म को मिलूं या शेख हम्माद को? (रज़ी अल्लाहो अन्हा) इत्तिफाक़न बाज़ार में हज़रत शेख हम्माद मिल गए। और देखकर

Scanned by CamScanner

फ़रमाने लगे। पहले जाकर ग़ौसे आज़म से मिलूं। के वो मेहबूबे रब्बानी हैं। उन्होंने तुम्हारे लिए सत्तर बार बारगाहे इलाही में दुआ माँगी। तब कहीं जाकर तुम्हारी तक़दीर मोअल्लिक़ बदली है। जिसकी मैंने तुझे खबर दी थी। अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ होने वाले वाक़ेये को ग़ौसे आज़म की दुआ से बैदारी से ख़्वाब में मुनतक़िल कर दिया। ये सुनते ही सौदागर हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास आया। जिनके रूहानी तसर्रूफ से वो क़त्लो ग़ारत से बच गया। उसे देखते ही हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया। वाक़ई मैंने तुम्हारे लिए सत्तर बार दुआ माँगी थी। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 29)

सबक़:- बुज़ुर्गों की दुआओं से बदल जाती हैं तक़दीरें

हिकायत नम्बर(700) जिन्न

एक मर्तबा आप जामअे मनसूर में नमाज़ पढ़ रहे थे के दौराने नमाज़ में बोरिये पर आपको कोई आहट महसूस हुई। और ऐसा मालूम हुआ के कोई अन्दर आया और बोरिये पर क़दम रखा है। मगर नज़र कुछ नहीं आता। आप बदस्तूर नमाज़ पढ़ते रहे। जब रूकू में गए तो क्या देखते हैं के सज्दागाह में एक ज़हरीला और ख़ौफनाक सांप मुंह खोले बैठा है। हुक्मे शरीअत के मुताबिक़ सज्दे में जाते हुए हाथ बढ़ा कर उसे हटा दिया। सज्दा करने के बाद जब क़ाअदे में आए तो सांप आपकी रानों पर से होकर गर्दन पर सवार हो गया। अब भी आपने परवा ना की। और नमाज़ में मशग़ूल रहे। लेकिन सलाम फैरते ही देखा। तो सांप ग़ायब। आपको खयाल भी ना हुआ के क्या वाक़ेया पेश आया है।

दूसरे रोज़ आप उसी मस्जिद में गए। तो देखा एक शख़्स आँखें फाड़े हुए निगाहों से आपकी तरफ़ देख रहा था। आप समझ गए के इस वीराने में और इस हय्यत कज़ाई के साथ सिवाऐ जिन्न के और कोई नहीं हो सकता। आपने ये खयाल किया ही था। के उसने आपको मुख़ातिब करके कहा। के कल नमाज़ में जो सांप आपने देखा था वो मैं ही हूँ। मैं इसी तरह सांप बन कर कई बुज़ुर्गों और वलियों को डरा कर उनका इम्तिहान कर चुका हूँ। मगर मैंने आप जैसे साबित क़दम मुसतक़िल मिज़ाज और बेबाक वली किसी को नहीं देखा। वाक़ई आपका ज़ाहिर व बातिन यक्साँ है। ये कह कर उसने उसी वक़्त आपके हाथ पर तौबा की और अहद किया के अब मैं खुदा की इबादत में मशग़ूल रहूंगा। ना किसी को डराऊँगा और ना सताऊँगा। (बहुज्जत-उल-असरार, सफा 84)

Scanned by CamScanner

सबक़:- ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ग़ौसे-उल-अनस वलजिन्न हैं और इंसानों के अलावा जिन्न भी आपके फयूज़ व बर्कात से मुसतफीद हुए।

हिकायत नम्बर(701) ख़ौफनाक सांप

एक रोज़ आपकी मजलिस में उलमा व फुक़रा और अक़ीदतमंदों का हुजूम था। और मसला क़ज़ा व क़द्र पर तक़रीर फ़रमा रहे थे। और लोगों पर कैफ व इसग़राक़ का आलम तारी था। अचानक छत में से एक निहायत ख़ौफनाक और ज़हरीला सांप गिरा। उसके गिरते ही भगदड़ मच गई। और सब पर उसकी हैबत छा गई। लेकिन आपने अपनी जगह से हरकत ना की। खड़े हुए वअज़ फ़रमाते रहे। वो सांप रेंगता हुआ आपके कपड़ों में घुसा। और तमाम जिस्म पर फिर कर गर्दन पर से होता हुआ उतर कर सामने आ खड़ा हुआ। जो लोग वहाँ मौजूद रह गए थे। उन्होंने देखा के वो आपसे कुछ बातें कर रहा था। उसके बाद वो ग़ायब हो गया। लोगों को बड़ी हैरानी हुई। आख़िर आप ही ने उस हैरानी को दूर किया। फ़रमाया। इस सांप ने कहा। के मैं अब तक बहुत से औलिया अल्लाह को आज़मा चुका हूँ। मगर मैंने आप जैसा इसतक़लाल किसी में नहीं पाया। उसके जवाब में मैंने उससे कहा। के मैं चूंके उस वक़्त क़ज़ा व क़द्र बयान कर रहा था। तो मौक़ा देखकर गिरा। मैं तुझ से डरता क्यों? तू भी तो ज़मीन का एक कीड़ा ही है। क़ज़ा व क़द्र ने मुझे मोतहरिक कर रखा है। तेरे गिरने से मेरे क़ौल व फैल में तताबुक़ व तवाज़न पैदा हो गया। गोया क़ुद्रत ने दिखा दिया के मेरा ज़ाहिर व बातिन एक हैं। (बहुन्जत-उल-असरार, सफ़ा 87)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों के दिल तवक्कल व सकून और इतमीनान के नूर से मुनव्वर होते हैं। और कोई भी दुनयवी हादसा उनके इतमीनान क़ल्ब की दौलत छीन नहीं सकता। यही वो मताअ बे बहा है जिसके लिए इक़्बाल ने लिखा है के।

नहीं मिलता ये गोहर बादशाहों के ख़ज़ीनों में

हिकायत नम्बर(702) अमीर व हाकिम

हज़रत अबु इसहाक़ इब्राहीम रहमत-उल्लाह अलेह से एक दुरवैश ने दरख़्वास्त की। के मैं सफर हज में आपके साथ रहना चाहता हूँ। आपने मंज़ूर फ़रमा लिया। और फ़रमाया। के हम दोनों में से एक अमीर व हाकिम होना चाहिए। ताके सारे काम अच्छी तरह पूरे हों। दुरवैश ने

Scanned by CamScanner

कहा। फिर आप ही अमीर व हाकिम बन जाइये। आपने फ़रमाया। बहुत अच्छा। अब तुम मेरे मती हो। मैं तुम्हें जो हुक्म करूं। तुम्हें मानना पड़ेगा।

जब एक मंज़िल पर पहुँचे। तो आपने दुरवैश को बैठने का हुक्म दिया। और खुद पानी लेने चले गए। पानी लाकर फिर लकड़ियाँ इकट्ठी करने लगे। और आग जलाई। फिर राह में जो काम भी होता। खुद ही करते। और दुरवैश को बैठे रहने का हुक्म देते। और वो जब अर्ज़ करता के मुझे भी कोई काम करने दीजिए। तो फ़रमाते शर्त हो चुकी के मैं अमीर व हाकिम हूँ। और तुम मतीअ हो। रास्ते में बारिश होने लगी। तो आपने अपना लिबादा उतार कर उस पर डाल दिया और सारी रात लिबादा के दोनों किनारों को दोनों हाथों से पकड़ कर उस पर साया किए रहे। ताके वो बारिश से महफूज़ रहें। वो ये देखकर बड़ा शर्मसार हुआ। मगर अज़रूऐ शर्त बोल ना सका। सुबह हुई तो दुरवैश बोला। के हज़रत आज मैं अीमर व हाकिम बनूंगा। फ़रमाया। बहुत अच्छा फिर जब एक मंज़िल पर पहुँचे। तो आपने सारी ख़िदमत अपने ज़िम्मे ली। दुरवैश ने कहा। मेरे फ़रमान के ख़िलाफ कुछ ना कीजिए। तो फ़रमाया। ना फ़रमानी ये है के अमीर व हाकिम को अपनी ख़िदमत के लिए कहा जाए। मतीअ के होते हुए अमीर व हाकिम को किसी तकलीफ करने की क्या ज़रूरत है। मक्का मौअज़्ज़मा तक आप इस दुरवैश से यही सलूक फ़रमाते रहे। मक्का मौअज़्ज़मा आ गया। तो दुरवैश आपके हुस्ने सलूक से शर्मिंदा होकर अलग हो गया। आपने फ़रमाया। बेटा! दोस्तों से इसी तरह मोहब्बत रखनी चाहिए। जैसे मैंने तुम से मोहब्बत रखी। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 302)

सबक़:- खुदा तआला के नेक बन्दे हर हाल में ख़िदमते ख़ल्क़ को अपनाए रहते हैं और उनके दिल में कभी किब्रो ग़रूर पैदा नहीं होता। और ये भी मालूम हुआ के अमीर व हाकिम दरअसल अपनी रिआया का ख़ादिम होता है। और उसके फ़रायज़ में ये बात दाखिल होती है के वो रिआया की तकालीफ का इज़ाला करे।

हिकायत नम्बर(703) आग

एक बुर्दबार शख़्स ने एक साधू का इम्तिहान लेना चाहा के देखें ये साधू कितने पानी में है। अगर वाक़ई ये किसी क़ाबिल हुआ तो मैं उसका चैला बन जाऊँगा। चुनाँचे वो इस साधू के पास पहुँचा। देखा तो वो अपनी कुटिया

Scanned by CamScanner

में बैठा था। इस शख़्स ने कहा। महाराज! थोड़ी सी आग दो। साधू ने कहा। भाई! आग मेरी कुटिया में नहीं है।" दरअसल आग थी भी नहीं। लेकिन उस शख़्स का मक़्सूद तो कुछ और था। इसलिए उसने फिर कहा। के महाराज! आग थोड़ी सी ही दे दीजिए। तब साधू ने मुंह बनाया और ग़ज़बनाक होकर कहा। के चला जा कैसा आदमी है। हम कह रहे हैं के आग नहीं है। और ये मानता ही नहीं और मांगने चला जाता है।" इस पर उस शख़्स ने कहा के महाराज! धुआँ तो उठता है। थोड़ी ही दे दीजिए। अब तो साधू को इस क़द्र ग़ुस्सा आया के मारे ग़ज़ब के आँखें सुर्ख हो गईं। और सोंटा उठा कर मारने को दौड़ा। उस शख़्स ने हाथ जोड़े और कहने लगा। महाराज! अब तो आग अच्छी तरह जलने लगी। माफ कीजिए। साधू ने कहा। तू मुझ से बार बार आग क्यों माँगता है। उसने कहा। महाराज! मैंने आपकी खाकसारी की जाँच की थी। जो ग़ुस्सा आपको पहले आया था। वो आग का सुलगना और धुएँ का उठना था। और जो ग़ुस्सा बाद में पैदा हुआ वो गोया आग का पूरे तौर पर भड़क उठना था। ये आग आपके दिल से पैदा हुई। और मुंह के राह निकली। ये आग पहले आपको और फिर दूसरे को जलाती है। अगर आप में खाकसारी होती तो ये आग कभी पैदा ना होती जैसे के खाक में आग नहीं लगती। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 334)

सबक़:- ग़ुस्सा एक ऐसी ख़तरनाक आग है जिससे आदमी खुद भी जल जाता है और दूसरों को भी जला देता है। अल्लाह के नेक बन्दों में खाकसारी व तवाज़ौ होती है। वो कुछ भी हो जाए ग़ुस्से में नहीं आते और ग़ुस्सा आ भी जाए। तो उसे पी जाते हैं।

हिकायत नम्बर(704) चीस्त दुनिया

एक शख़्स ने घर के कारोबार व मसारिफ़ से तंग आकर इरादा किया के दुनिया को तर्क कर दे। एक बीवी थी। उस बिचारी को तनहा छोड़ कर खुद किसी जंगल में निकल गया। और किसी फक़ीर का चैला बन गया। गले में कफनी डाल कर हाथ में कासा लेकर दर बदर भीक माँगने लगा। एक दिन फिरता फिराता उसी बस्ती में आ निकला। जहाँ उसकी बीवी रहती थी। हस्बे आदत सदा की। भला हो माई कुछ फक़ीर को मिल जाए। माई ने उस बेवफा की आवाज़ पहचान ली झांक कर देखा तो वही ज़ात शरीफ हैं। खैर उनको थोड़ा सा आटा दिया। और कहा। शाह जी! गो तुम्हारा हमारा मियाँ बीवी का रिश्ता तो बाक़ी ना रहा। लेकिन लाओ तुम्हारी रोटी पका

Scanned by CamScanner

दें। कहा, अच्छा। मगर आटा, दाल, नमक, मिर्च, और लौटा, तवा, चूलहा, कुछ लकड़ियाँ सब ज़रूरी अशिया फक़ीर की झोली में मौजूद हैं ये सामान लो और पका दो। तब उस औरत ने ज़ोर से एक दोहत्तड़ मारी और कहा के कमबख़्त! सारा सामान दुनिया तो अपनी बग़ल में लिए फिरता है। क्या जोरू ही दुनिया होती है के मुझ ग़रीब को छोड़कर तारिक-उद्दुनिया बन गया। (मख़्ज़न अखलाक़, सफ़ा 415)

सबक़:- मालो दौलत, बीवी बच्चे और दुनयवी सामान ये दुनिया हर गिज़ नहीं है। बल्के खुदा तआला को भूल जाना ये दुनिया है। जो शख़्स लाखों का मालिक हो और खुदा याद भी हो। वो दुनियादार नहीं है। और जो शख़्स मुफलिफ व क़िलाश हो। और खुदा को भूला हुआ हो। वो दुनियादार है।

चीस्त दुनिया अज़ खुदा ग़ाफिल बुदन
ने क़माश व नक़रह व फ़रज़न्द वज़न

हिकायत नम्बर(७७) क़ैद

एक रंद मशरिब फक़ीर हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दिस देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में आया। और कहा। मोलवी बाबा! शराब पिलवा। शाह साहब ने एक रूपया उसकी नज़्र किया। और फ़रमाया जो चाहो सूखा खाओ पियो। तुम को इख़्तियार है। वो बोला। के हम ने आपका बड़ा नाम सुना है। लेकिन आप तो क़ैद में हैं। शाह साहब ने फ़रमाया के शाह जी! क्या आप क़ैद में नहीं हैं? कहा के नहीं! आपने फ़रमाया। के तुम अगर किसी रोश की क़ैद में नहीं हो तो आज ग़ुस्ल करो। और जब्बा पहन और अमामा बाँधकर मस्जिद में चलो। और नमाज़ पढ़ो। वरना जिसे तुम रंदी की क़ैद में हो। इसी तरह हम शरीअत ग़रा की क़ैद में पाबंद हैं। तुम्हारी आज़ादी एक खयाल खाम है। ये सुनकर वो चुप हो गया। और शाह साहब के क़दम पकड़ लिए। के दर हक़ीक़त मेरा खयाल ग़लत था। जो आज़ादी का दम भरते थे। और आईंदा के लिए रंदी मशरिब से तायब हो गया। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 422)

सबक़:- जो लोग उल्मा इक्राम के खिलाफ हैं और कहते हैं के उल्मा तंग नज़र हैं और आज़ाद खयाली के दुश्मन हैं। और यूं कहते हैं के हम किसी मज़हब से मुतअल्लिक़ नहीं। हम आज़ाद खयाल हैं। ऐसे लोग बड़े नादान हैं। और नहीं जानते के उनका आज़ाद खयाल होना महज़ एक वहम ही है। और वो खुद भी आज़ाद खयाली की क़ैद में हैं। किसी मज़हब से मुतअल्लिक़

Scanned by CamScanner

ना होकर ला मज़हबी इख़्तियार कर लेना भी तो एक मज़हब है। यानी जिस तरह दूसरे मज़ाहिब हैं। इसी तरह ला मज़हबी भी एक मज़हब है तो जो किसी मज़हब से मुतअल्लिक़ नहीं। वो ला मज़हब तो है ही फिर वो कैसे कह सकता है के मैं किसी मज़हब से मुतअल्लिक़ नहीं हूँ। मज़हबी आदमी नहीं तो ला मज़हबी आदमी सही। कुछ तो है। मज़हबी आदमी मज़हब की क़ैद में है। और लामज़हबी आदमी इलहाद की क़ैद में है। पस उल्मा इक्राम के मुख़ालफीन अपने आप को आज़ाद नहीं कह सकते। इसलिए के उल्मा अगर शरीअत की क़ैद में हैं तो "आज़ाद खयाल" अफ्राद यूरोप की क़ैद में हैं।

हिकायत नम्बर(706) सच्ची बात

हज्जाज ने एक दिन खुत्बा पढ़ा। और बहुत लम्बा कर दिया। तो लोगों में से एक शख़्स खड़ा हुआ। और कहने लगा। ऐ हज्जाज! नमाज़ पढ़ो, क्योंके वक़्त इन्तिज़ार नहीं करेगा। और खुदा तुझे मअज़ूर नहीं रखेगा। हज्जाज सुनकर ग़ुस्से में आ गया। और उसे क़ैद करने का हुक्म दे दिया। चुनाँचे वो क़ैद कर लिया गया। उस क़ौम के चन्द लोग हज्जाज के पास आए। और कहा। के वो क़ैदी को छोड़ दे। इसलिए के वो क़ैदी एक दीवाना आदमी है। हज्जाज ने कहा। के अगर वो दीवांगी का इक़्रार कर ले तो मैं उसे छोड़ दूंगा। चुनाँचे वो लोग फिर उस क़ैदी के पास पहुँचे और उससे कहा। के वो अपनी दीवांगी का इक़्रार कर ले। और कह दे के मैं दीवाना हूँ। ताके वो इस क़ैद से रिहा हो जाए। उसने कहा। मआज़ अल्लाह! मैं तो हर गिज़ ना कहूंगा। के खुदा ने मुझे किसी मर्ज़ में मुबतला किया है। हालाँके उसने मुझे तनदुरूस्ती अता की है। आख़िर ये बात हज्जाज को पहुँची। तो उसने उसकी रास्त गोई के बाइस उसे माफ कर दिया। और छोड़ दिया। (मख़्ज़न अख़्लाक़, सफ़ा 425)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे कभी झूट नहीं बोलते और हमेशा सच ही बोलते हैं। और ज़ालिम से ज़ालिम बादशाह भी हो। तो उसके सामने भी सच्ची बात कहने से नहीं झिजकते।

हिकायत नम्बर(707) तीन रूक़ै

पुराने ज़माने के नेक बादशाहों में से एक नेक बादशाह ने अपने हुक्म से तीन रूक़ै लिखवाए। और वो तीनों रूक़ै अपने एक ख़ास ग़ुलाम के सपुर्द किए। और कहा के किसी वक़्त किसी मामले में हुक्म करते वक़्त अगर मिज़ाज तग़य्युर पज़ीर हो जाए और ग़स्सा व ग़ज़ब का असर मेरी आँखों और

Scanned by CamScanner

चेहरे पर ज़ाहिर होने लगे तो क़ब्ल उसके के मैं हुक्म करूं। पहला रूक़ा मुझे दिखलाया जाए। फिर अगर देखो के आतिश ग़ज़ब सर्द नहीं हुई। तो उसके बाद ही दूसरा रूक़ा दिखलाओ। और अगर ज़रूरत पड़े तो तीसरा रूक़ा भी नज़र से गुज़ार देना चाहिए।

मज़मून रूक़ा अव्वल:- ताम्मुल और अपने इरादे की बाग को नफ़्से अम्मारा के क़ब्ज़ा व तसर्रूफ में ना दे। क्योंके मख़लूक़ आजिज़ और ख़ालिक़ क़वी तर है। जिसने तुझ को नैस्त से हस्त किया।

मज़मून रूक़ा दोम:- ज़ेर दस्तों के साथ जो के वदिअत परवरदिगार हैं। शिताब ज़दगी से मामला ना कर। और उन लोगों से जो तेरे मग़लूब हैं, रहम करता के वो जो तुझ पर ग़ालिब है, उसके अवज़ तुझ पर रहम करे।

मज़मून रूक़ा सोम:- इस शिताब कारी में जो तू हुक्म करे, शरअे से तजावुज़ ना कर और इंसाफ से जो के दीनदारी का जज़ूआज़म है। दरगुज़र ना कर। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 430)

सबक़:- नेक और खुदा तरस हाकिम कभी ज़ुल्मो सितम नहीं करते। और हमेशा इंसाफ से काम लेते हैं। और खुदा से हर वक़्त डरते रहते हैं।

हिकायत नम्बर(708) एत्राफ

हज़रत सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी अलेह अर्रहमा के पास एक क़ीमती जाम था। एक रोज़ बादशाह ने अराकीने दौलत को हुक्म दिया के इस जाम को तोड़ दो। सब ने उज़्र किया के हुज़ूर! ऐसी क़ीमती चीज़ को तोड़ना मुनासिब नहीं। सुलतान ने फिर अयाज़ को हुक्म दिया के इस जाम को तोड़ दो। अयाज़ ने फौरन इस जाम के टुकड़े कर दिए। अहले दरबार ने अयाज़ को मलामत की। के तूने ये क्या ग़ज़ब किया के एक क़ीमती जाम को तोड़ डाला। अयाज़ ने जवाब दिया के मैंने तो एक जाम ही को तोड़ा है। मुजरिम तुम हो। जिन्होंने शाही फ़रमान को तोड़ा है। बादशाह ने फिर मसनुई नाराज़गी से पूछा के अयाज़! तुम ने ये जाम क्यों तोड़ा। जब के सारे अहले दरबार ने ऐसी हरकत नहीं की। अयाज़ ने झट हाथ जोड़कर अर्ज़ की। के हुज़ूर! क़सूर हो गया। माफ फ़रमाईये। मैं अपनी ग़लती को तसलीम करता हूँ। बादशाह ने अहले दरबार से मुख़ातिब होकर कहा। देखा यही है वो ख़ल्क़े अयाज़ जिसकी बदौलत वो मुझे मंज़ूर नज़र है। देख लो उसने इस जाम तोड़ने के वाक़ये को मेरी तरफ़ मनसूब नहीं किया। बल्के उसे अपनी ग़लती क़रार दिया है। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 428)

Scanned by CamScanner

सबक़:- नेक और फ़रमाँबर्दार बन्दे अपनी लग़ज़िशों की निस्बत कभी अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं करते और हमेशा अपनी ही लग़ज़िश का एत्राफ करते हैं। देख लीजिए। शैतान ने हज़रत आदम अलेहिस्सलाम को सज्दा ना किया तो रब्बे तआला ने जब पूछा के तूने आदम को सज्दा क्यों नहीं किया? तो उसने जवाब दिया *"फबिमा अग़वैतनी"* यानी ऐ अल्लाह! ये काम तू ही ने मुझ से कराया है। मगर जब हज़रत आदम अलेहिस्सलाम से दरयाफ़्त फ़रमाया के ऐ आदम! तुम शज्र ममनूअ के पास क्यों गए? तो हज़रत आदम अलेहिस्सलाम ने अर्ज़ किया *रब्बना ज़लमना अनफुसाना* यानी ऐ रब हमारे! ये हमारी ही लग़ज़िश है। हम ने खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म किया। खुदा तआला को ये एत्राफ पसंद आ गया। और हज़रत आदम अलेहिस्सलाम पर खुदा खुश हो गया। मालूम हुआ के जो लोग बुरे काम करके यूं कह दिया करते हैं के जी उसमें हमारा क्या क़सूर! ये तो अल्लाह ही को ऐसा मंज़र था। और अल्लाह ही ने ये काम कराया(मआज़ अल्लाह) वो लोग बड़े नादान और गुनहगार हैं। हमेशा अपनी ग़लती का एत्राफ करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(709) अशर्फियों की थेली

दो शख़्स इकट्ठे सफर कर रहे थे। चलते हुए रास्ते में उनमें से एक ने एक अशर्फियों की थेली रास्ते में पड़ी हुई पाई। वो थेली को उठा कर अपने साथी से कहने लगा "देखो भाई! मैंने ये थेली पाई है।" दूसरा बोला। ये तुम ने क्या कहा। के मैंने पाई, यूं कहो के "हमने पाई।" इस वास्ते के हम तुम दोनों साथ हैं। ये हम दोनों का हक़ है। पहले ने कहा। मैं ये बात क्यों कहूं। जबके थेली मिली मुझी को है। ग़र्ज़ थेली पर लड़ते झगड़ते चले जा रहे थे। इतने में पीछे से कुछ लोगों की आहट सी मालूम हुई। कान लगाकर सुना तो वो लोग ये कहते हुए चले आ रहे थे के थेली के चोर वो दोनों आगे जाते हैं। ये सुनकर वो थेली पाने वाला अपने साथी से कहने लगा। क्यों भई! अब क्या करें? "अब तो हम मारे गए" दूसरा बोला। ये तुम ने क्या कहा। के "हम मारे गए" यूं कहो के "मैं मारा गया" जब तुम ने थेली पाने में मुझ को शरीक नहीं किया तो अब आफत में भी मैं तुम्हारा शरीक नहीं हूँ।" (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 431)

सबक़:- जो लोग फायदे में किसी दूसरे को शरीक नहीं करते। मुसीबत में भी उनका कोई शरीक नहीं होता।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(710) नेक नाम

एक बादशाह की मजलिस में किसी बुज़ुर्ग का ज़िक्रे ख़ैर हुआ। और लोगों ने उस बुज़ुर्ग की बड़ी तारीफ की। बादशाह का इश्तियाक़ बढ़ा। और उसने चाहा के वो इस बुज़ुर्ग से मुलाक़ात करे। चुनाँचे उसने अपना एक ख़ास आदमी भेज कर उस बुज़ुर्ग को अपने पास बुलाया। वो बुज़ुर्ग जब मजलिस शाही में तशरीफ़ लाए तो आते ही फ़रमाया "बादशाह की हज़ारों साल की उम्र हो जियो" बादशाह ने कहा आपने अपने पहले कलाम ही में अपनी हिमाक़त ज़ाहिर कर दी। जो आप जैसे बुज़ुर्ग की शायाने शान ना थी। भला कोई आदमी हज़ारों साल भी जी सकता है? उस बुज़ुर्ग ने फ़रमाया के आदमी की हयात बक़ाऐ बदन ही पर मौक़ूफ नहीं। जो आदमी हकूमत पाकर अद्ल व इंसाफ और खुदा तरसी से काम ले। और अच्छे काम करे। वो आदमी नेक नाम बनकर हमेशा के लिए ज़िन्दा हो जाता है। मेरी मुराद यही थी के अद्लो इंसाफ की बदौलत आपका नाम हज़ारों साल तक सफ़ा दहर पर क़ायम रहे। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 436)

सबक़:- अद्लो इंसाफ और खुदा तरसी से काम लेने से उम्र भी बढ़ती है। और इंसान मर कर भी ज़िन्दा रहता है। पस हमेशा अद्लो इंसाफ और अच्छे काम करने चाहियें और ज़ुल्मो सितम और बुरे कामों से बाज़ रहना चाहिए।

हिकायत नम्बर(711) फ़ुसाहत व हाज़िर जवाबी

हज्जाज इब्ने यूसुफ़ बड़ा जाबिर और सख़्तगीर हाकिम और अरबी ज़बान का बड़ा फाज़िल और ज़बरदस्त खतीब भी था। एक शायर क़बउस्सरा नामी अंगूरों के मौसम में अपने दोस्तों के साथ एक बाग़ में गया। सारे दोस्त आपस में गुफ़्तगू करने लगे। तो असना-ए-गुफ़्तगू में हज्जाज का भी ज़िक्र छिड़ गया। क़बउस्सरा ने कहा।

अल्लाहुम्मा सव्विद वजहू
वक़्ताआ उनक़ाहू वसक़िनी मिन दमीही

(तर्जुमा) "ऐ अल्लाह! उसका मुंह काला कर और उसकी गर्दन काट। और उसका खून मुझे पिला"

जब ये ख़बर हज्जाज तक पहुँची तो उसी वक़्त उसे हाज़िर करने का हुक्म दिया। जब वो हज्जाज के सामने आया और उसके ग़ज़बो जलाल को

Scanned by CamScanner

देखा तो कहने लगा। के ऐ अमीर! हक़ीक़त ये है के मैंने बाग़ में जाकर देखा। के अंगूर पकने के क़रीब हैं। तो मैंने अल्लाह से दुआ की। के "ऐ अल्लाह! उसका मुंह काला कर। यानी अंगूर पक कर सियाह हो जायें। और उसकी गर्दन काट। यानी अंगूर का खोशा दरख़्त से जुदा हो। और उसका खून पिला। यानी अंगूर का शीरा मुझे पिला।" मेरा मतलब तो ये था। मगर दुश्मनों ने मेरी अदावत में आकर उसके उलटे मअनी मुराद लिए। हज्जाज इन मअनों में उससे झगड़ता रहा। मगर वो अपनी फ़ुसाहत व बलाग़त से ग़ालिब आता रहा। हज्जाज ने तंग आकर कहा।

लहमिलका अला अदहमी "मैं तुझे बैड़ियाँ पहनाऊँगा।

"अदहम" के मअनी लोहे की बैड़ी भी हैं और सिया घोड़े भी। क़बउस्सरा ने उसका ये हुक्म सुनकर कहा। आप से यही उम्मीद है के आप मुझे सियाह घोड़े पर बिठायेंगे। हज्जाज ने कहा "उरदतुल हदीद" मेरी मुराद लोहा (हदीद) है। क़बउस्सरा ने ये सुनकर कहा।

"अन यकुन हदीदा ख़ैर मिन बलीद" अगर घोड़ा तेज़ हो तो सुस्त से बेहतर है।"

"हदीद" के मअनी लोहा भी और तेज़ भी हैं।

हज्जाज उसकी फ़ुसाहत व हाज़िर जवाबी आजिज़ आ गया। और उसे माफ कर दिया। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 407)

सबक़:- अरबी ज़बान बड़ी जामअे है। और अरब के फ़ुसहा बड़े बा कमाल होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के इल्म बड़ी कारआमद चीज़ है। उससे आदमी बड़ी बड़ी मुसीबतों से बच जाता है।

हिकायत नम्बर(712) नंगा शैतान

शेख़ अबु अलक़ासिम जुनैद रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं। मैंने इबलीस को ख़्वाब में नंगा देखा। (खुदा की पनाह उससे) मैंने उससे कहा। तुझे इंसानों से शर्म नहीं आती। कहा ये लोग तुम्हारे नज़दीक इंसान हैं। मैंने का हाँ। इबलीस ने कहा। अगर ये इंसान होते तो जैसे लड़के गोली के साथ खेलते हैं। मैं उनके साथ ना खेलता। हाँ इंसान उनके सिवा और हैं। मैंने पूछा वो कौन हैं? इबलीस बोला। मस्जिद शोनीज़िया में चन्द लोग हैं जिनकी आदत व परहेज़गारी से में आजिज़ हूँ मैंने बड़ी कोशिश की। मगर उन पर क़ाबू ना पा सका।

हज़रत जुनैद फ़रमाते हैं के मैं ख़्वाब से बैदार हुआ तो मस्जिद शोनीज़िया में गया। वहाँ तीन मर्द नजर आए। अपने सर गडरियों में डाले

Scanned by CamScanner

और सर झुकाए बैठे थे। जब मेरी आहट हुई तो उनमें से एक ने गडरी से सर निकाला। और कहा।

"ऐ जुनैद! शैतान ख़बीस की बात से धोका ना खाना। ये कहकर फिर मुंह छुपा लिया।" (रयाज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 6)

सबक़:- उरयानी और नंगा पन शैतानी फैल है। और ये भी मालूम हुआ के शैतान अल्लाह के मक़्बूलों पर क़ाबू नहीं पा सकता। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों पर कोई चीज़ मख़्फी नहीं रहती। फिर सब अल्लाह वालों के आक़ा मौला और सरदार हुज़ूर मुख़्तार सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कोई बात किस तरह ग़ायब रह सकती है।

हिकायत नम्बर(713) इम्तिहान

हज़रत इब्राहीम ख़्वास रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं। मैं बग़दाद में था। वहाँ फुक़रा की एक जमात रहती थी। एक रोज़ एक जवान होशियार, अक़्लमंद, खूबसूरत, खुश अख़लाक़ आया। मैंने अपने दोस्तों और साथियों से कहा। ये जवान यहूदी मालूम होता है। मेरे साथियों को ये बात बुरी लगी। मैं बाहर आया तो वो जवान भी बाहर आ गया। लेकिन फिर अंदर चला गया। और उन मेरे साथियों से पूछा के ये बड़े साहब मेरे मुतअल्लिक़ तुम से क्या कह रहे थे। उन्होंने उसके बताने से इजतिनाब किया। लेकिन जब उसने इसरार किया तो उन्होंने कह दिया के हमारे शेख तुम्हें यहूदी बता रहे थे। इब्राहीम ख़्वास फ़रमाते हैं के ये बात सुनते ही वा जवान मेरे क़दमों में गिर पड़ा। और मुसलमान हो गया। और कहने लगा के मैं इम्तिहान ही की नीयत से आया था। और ये सोच कर आया था के अगर ये लोग सच्चे हैं तो उनमें से कोई मुझे ज़रूर पहचान लेगा। चुनाँचे शेख की निगाह ने मुझे ताड़ लिया। (रियाज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 8)

सबक़:- जो लोग अल्लाह को पहचान लेते हैं और ज़ुमरा-ए-आरफ़ीन में आ जाते हैं फिर वा हर नेक व बद और हर ख़ैरो शर को भी पहचानने लगते हैं। और उनके इल्म व इर्फान से कोई चीज़ बाहर नहीं रहती।

हिकायत नम्बर(714) तक़्वा

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम रहमत-उल्लाह अलेह ने एक रोज़ एक बाग़ में नहर के अन्दर सेब बहते हुए देखा। और ये समझ कर के उसकी क्या क़ीमत हो सकती है। उठाया और खा लिया। खा लेने के

Scanned by CamScanner

बाद आप मुतफक्किर हुए और सोचने लगे के कहीं ये सेब खा लेना ना जायज़ और हराम ना हो। खुदा जाने ये सेब किस का था। और कैसा था। जो मैंने खा लिया। क़यामत के रोज़ अगर उसकी बाज़ पुर्स हो गई तो क्या जवाब दूंगा? इसी फिक्र में बाग़ के मालिक के घर पहुँचे। और दरावाज़ा खटखटाया। एक लोंडी बाहर निकली। हज़रत इब्राहीम कहने लगे। मैं बाग़ के मालिक से मिलना चाहता हूँ। लोंडी ने बताया के बाग़ की मालिक एक औरत है। हज़रत इब्राहीम ने फ़रमाया। उससे कह दो। मैं उससे मिलना चाहता हूँ। चुनाँचे बाग़ की मालिका बाहर निकली। और हज़रत इब्राहीम से सारा क़िस्सा सुनकर कहने लगी। इस बाग़ का आधा हिस्सा मेरा है। और आधा बादशाह का। मैं अपना हक़ तो माफ करती हूँ। और बादशाह के हक़ की मैं ज़िम्मेदार नहीं। बादशाह बलख़ में था। हज़रत इब्राहीम आधा हिस्सा बख़्शवा कर बाक़ी के आधे हिस्से को बख़्शवाने के लिए बलख़ पहुँचे। और बादशाह से भी माफ करा के दम लिया। (रिवायात, सफ़ा 308)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे बड़े ही मुत्तक़ी और परहैज़गार होते हैं। वो पराई चीज़ पर कभी क़ब्ज़ा नहीं करते। और हराम, ना जायज़ चीज़ के इस्तेमाल से हमेशा बचते हैं। मगर आह! आज कल तो ये आलम है के

कहाँ का हलाल और कहाँ का हराम
जो साहब खिलाए वो चट कीजिए

हिकायत नम्बर(715) फिज़ूल खर्ची

एक फिज़ूल खर्च अमीर आदमी से एक भिकारी ने सवाल किया "खुदा के नाम पर एक दीनार मुझे अता कीजिए" अमीर आदमी ने हैरत के साथ सायल से पूछा। के तुम ने इतना ज़्यादा मुझ से क्यों माँगा। जब के दूसरों से तुम बहुत कम तलब करते हो।

भिकारी ने जवाद दिया। बात ये है जनाब! दूसरे लोगों से मुझे उम्मीद है के फिर दोबारा भी उनसे मुझ कुछ ना कुछ मिलेगा। लेकिन आप जिस तर्ज़ से खर्च कर रहे हैं, उसके पेशे नज़र आईंदा आपसे भीक मिलने की तवक्क़ो नहीं है। क्योंके आप खुद मुफलिस हो चुके होंगे। इसलिए इसी वक़्त जितना मिल जाए ग़नीमत है। फिज़ूल खर्च ये बात सुनकर बड़ा मुतास्सिर हुआ। और फिर एहतियात से खर्च करने लगा। (रिवायात, सफ़ा 353)

सबक़:- इंसान को बड़ी एहतियात से खर्च करना चाहिए। और

Scanned by CamScanner

फ़िज़ूल खर्ची से बचना चाहिए। वरना फ़िज़ूल खर्ची के हाथों मुफलिस और भिकारी बनना पड़ता है।

हिकायत नम्बर(716) इसतक़लाल

पुराने ज़माने में एक आदमी था। जो एक शहर से दूसरे शहर का चक्कर लगाया करता था। उसके पास एक मोटा ताज़ा बैल था। इस बैल को वो अपने कांधे पर लिए घूमा करता था। लोग उसकी क़ुव्वत का ये कमाल देखते तो हैरान रह जाते थे। वो सोचा करते थे ये बला की क़ुव्वत इस मामूली शख़्स में कहाँ से आ गई। ये क्या खाता है? कहाँ से ये क़ुव्वत लाता है? एक मर्तबा लोगों में से एक ने ये कमाल देखकर उससे पूछा। के तुम ने इतनी ज़बरदस्त क़ुव्वत व ताक़त कहाँ से और कैसे हासिल की? उसने जवाब दिया। इस बैल को जब ये ज़रा सा बछड़ा था। मैं रोज़ अपने कंधे पर उठाने का आदी हूँ। कोई दिन भी ऐसा नहीं गुज़रा के मैं उसे अपने कंधे पर ना उठाता हूँ। इस मश्क़ और मदावमत व इसतक़लाल का नतीजा ये हुआ के जैसे जैसे उसका वज़न बढ़ता गया। मेरी क़ुव्वत व ताक़त भी बढ़ती गई। यहाँ तक के ये अब अगरचै पूरा सांड बन चुका है मगर इसे अपने कांधे पर उठा लेने में मुझे ज़रा भी तकलीफ नहीं होती। (रिवायात, सफ़ा 55)

सबक़:- जो इंसान हिम्मत व मदावमत व इसतक़लाल से काम लेता है वो कामयाबी से हमकिनार हो जाता है और इसतक़लाल व मदावमत से बड़ी बड़ी मुश्किलें हल हो जाती हैं। और क़ुव्वते बर्दाश्त व तहम्मुल में इज़ाफा होता है। पस हमें भी हिम्मत व इसतक़लाल और मदावमत से काम लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर(717) सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं के एक मर्तबा मुशरिकीने मक्का ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर हमला करके हुज़ूर को तकलीफ पहुँचाई और कहने लगे के तू ही एक खुदा बताता है। खुदा की क़सम किसी को मुशरिकीने मक्का से मुक़ाबला करने की जुर्रात ना हुई मगर अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह आगे बढ़े। और मुशरिकीन को मार मार कर हटाने लगे और धक्का देकर गिराने लगे। और फ़रमाते जाते थे। अफसोस तुम ऐसे शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो जो कहता है, मेरा परवरदिगार एक है। फिर हज़रत अली चादर उठाकर रोने लगे। हत्ता के

Scanned by CamScanner

आपकी दाढ़ी मुबारक तर हो गई। फिर फ़रमाया। खुदा ताअला तुम्हें हिदायत दे। ये तो बतलाओ के मोमिन आले फिरऔन अच्छे थे या अबु बक्र अच्छे हैं। लोग खामोश रहे। तो खुद आप ही ने जवाब दिया। तुम क्यों नहीं जवाब देते। अल्लाह की क़सम! हज़रत अबु बक्र की एक घड़ी उनके हज़ार घंटों से बेहतर है। क्योंके वो अपने ईमान को छुपाते थे और अबु बक्र ने अपने ईमान का अलल एलान इज़हार किया। (तारीख़-उल-खुलफा, हज़रत अबु बक्र की शुजाअत के बयान में, सफ़ा 34)

सबक:- हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह बड़े दिलैर और बहादुर थे। और आपकी हिम्मत व जुर्रात का इक़्रार हज़रत शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो अन्ह को भी है। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बड़ी मोहब्बत थी। और ये भी मालूम हुआ के अपने ईमान को ना छुपाना और उसका एलान करना बेहतर और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के नज़दीक़ फज़ीलत का मौजिब है।

हिकायत नम्बर(718) जमा क़ुरआन

मसीलमा कज़्ज़ाब की जंग के बाद हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी अल्लाहो अन्ह को बुला भेजा। हज़रत ज़ैद जिस वक़्त सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह के पहुँचे तो उस वक़्त हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह भी सिद्दीक़े अक्बर के पास बैठे थे। सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत ज़ैद से फ़रमाया। के ये उमर फारूक़े आज़म मुझ से कहते थे के जंग यमामा में बहुत से मुसलमान शहीद हो गए हैं। मुझे डर है के इसी तरह अगर मुसलमान शहीद होते रहे तो हाफिज़ों के साथ क़ुरआन शरीफ भी ना उठ जाए। इसलिए मैं मुनासिब समझता हूँ के क़ुरआन शरीफ को जमा कर लिया जाए। मैंने उन्हें ये जवाब दिया था के *कैफा तफ़्अल शैअन लम यफ़्अलहू रसूलुल्लाही सल-लल्लाहो तआला अलेही व सल्लम* यानी "वो काम कैसे करोगे जो काम रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया।"

मगर उमर फारूक़ ने ये जवाब दिया के "वल्लाह ये काम नेक है" (यानी अगरचे ये काम रसूले करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया। मगर काम अच्छा है) इस बात पर वो बराबर इसरार करते रहे।

Scanned by CamScanner

हत्ता के मेरा भी सीना खुल गया। और मैं भी उसकी अहमियत को समझ गया।

(ऐ ज़ैद) तुम जवान और अक़लमंद आदमी हो। तुम कातिब वही भी रह चुके हो। लिहाज़ा तुम तलाश करके क़ुरआन शरीफ को एक जगह जमा कर दो। हज़रत ज़ैद को ये हुक्म बहुत शाक़ गुज़रा। और वो भी यही फ़रमाने लगे के

कैफा तफ़अलूना शैअन लम यफ़अलहू रसूलुल्लाही सल-लल्लाहो तआला अलेही व सल्लम। आप वो काम कैसे करेंगे जो काम रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया। हज़रत अबु बक्र रज़ी अल्लाहो ने भी वही जवाब दिया के "खुदा की क़सम ये काम अच्छा है।" मगर हज़रत ज़ैद को इसमें ताम्मुल ही रहा। हत्ता के ज़ैद का भी सीना खुल गया। और वो भी जमा क़ुरआन की अहमियत को समझ गए। फिर हज़रत ज़ैद ने काग़ज़ के परचों और ऊँट बकरियों के शानों की हड्डियों, दरख़्तों के पत्तों और हाफिज़ों के सीनों से क़ुरआन शरीफ को हासिल किया। और जमा करके हज़रत सिद्दीक़े अक्बर की ख़िदमत में पेश कर दिया। (बुखारी शरीफ, बाब जमा अलक़ुरआन, सफ़ा 745)

सबक़:- हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने क़ुरआने पाक को जमा फ़रमा कर उम्मत पर बहुत बड़ा एहसान फ़रमाया है। सारी उम्मत आपके इस एहसान के ज़ेर बार है। और ये भी मालूम हुआ के आज कल जो लोग कई नेक कामों को बिदअत कह देते हैं के ये काम रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया था। और इसी लिए सिद्दीक़े अक्बर और हज़रत ज़ैद ने भी पहले यूं फ़रमाया था। के वो काम कैसे करें। जो रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया। मगर जब अनशराह सदर हो गया। तो जवाब ये था के काम अच्छा है। अगरचै रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया। "जमा क़ुरआन" बावजूद इसके के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से साबित ना था। मगर [illegible] अच्छा समझ कर सहाबा इक्राम ने कर लिया। और किसी ने इस पर बिदअत का फतवा ना लगाया। इसी तरह आज भी अगर कोई मुसलमान जलूस मीलाद शरीफ निकाले। या मेहफिल मीलाद शरीफ और ग्यारहवीं शरीफ का इनेक़ाद करे। या कोई और नेक काम करे और उस पर कोई शख़्स यूं कहे के मरवजा हय्यत से इन कामों को रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया। तो उसके इस ज़ौम का हम ये भी जवाब

Scanned by CamScanner

दे सकते हैं के।

वल्लाही हाज़ा ख़ैरन "खुदा की क़सम ये काम अच्छा है।"

फिर भी अगर कोई ना माने तो समझ लीजिए के इनशराह सदर उसके नसीब ही में नहीं।

हिकायत नम्बर(719) माफी-उल-अरहाम का इल्म

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह का वक़्त विसाल शरीफ आया। तो आपने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अन्हा से फ़रमाया। बेटी! मैं तुझे हर हाल में खुश देखना चाहता हूँ। तेरी ग़ुर्बत से मुझे रंज पहुँचता है। और खुशहाली से राहत। मेरे मरने के बाद मेरा तर्का तेरे जो दूसरे भाई और बहनें हैं, उन पर क़ुरआन की रू से तक़सीम करना। हज़रत आयशा ने अर्ज़ किया। अब्बा जान! ऐसा ही होगा। मगर तो एक ही बहन असमा है। दूसरी बहन है ही कब? फ़रमाया। तुम्हारी सोतैली माँ हबीबा हामला है। उसके पेट में लड़की है पस मैं उसकी भी तुम्हें वसीयत करता हूँ। चुनाँचे आपके बाद उम्मे कुलसुम पैदा हुई। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 79 सिद्दीक़े अक्बर की वफात के बयान में)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ग़ुलाम हैं। उनकी ये शान है के खुदा तआला की अता से वो माफी-उल-अरहाम का भी इल्म रखते हैं। फिर जो उनके आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं और जिनके सदक़े में उन्हें ये शान मिली। उनकी नज़र से माफी-उल-अरहाम ये कोई और चीज़ केसे ग़ायब रह सकती है। फिर किस क़द्र बेख़बर हैं वो लोग जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए भी यूं लिख और कह देते हैं के उन्हें दीवार के पीछे का भी इल्म ना था। (मआज़ अल्लाह)

हिकायत नम्बर(720) चोरी

हज़रत अहमद हर्ब रहमत-उल्लाह अलेह के पड़ोस में एक शख़्स के हाँ चोरी हो गई। आप अपने दोस्तों के साथ उसकी ग़मख़्वारी को तशरीफ़ ले गए। पड़ोसी ने बड़ी ख़ंदा पैशानी से उनका इसतक़बाल किया। हज़रत अहमद हर्ब ने बताया के हम तुम्हारी चोरी हो जाने का अफसोस करने आए हैं। पड़ोसी बोला। मैं तो अल्लाह का शुक्र अदा कर रहा हूँ। और मुझ पर उसके

Scanned by CamScanner

तीन शुक्र वाजिब हो गए हैं। एक ये के दूसरों ने मेरा माल चुराया है। मैंने नहीं। दूसरे ये क अभी आधा माल मेरे पास मौजूद है। तीसरे ये के मेरी दुनिया को ज़रर पहुँचा है। और दीन मेरे पास है। (मख़्ज़न अखलाक़, सफ़ा 238)

सबक़:- अल्लाह के बन्दे इबतला में भी अल्लाह का शुक्र ही अदा करते हैं। और कभी उसका शिकवा नहीं करते। और ये भी मालूम हुआ के सबसे बड़ी दौलत दीन है। ये सलामत है। तो कुछ ग़म ना होना चाहिए। बक़ौल शायर...

कुछ रहे या ना रहे पर ये दुआ है के अमीर!
नज़े के वक़्त सलामत मिरा ईमान रहे

हिकायत नम्बर(721) दुनिया की तमसील

एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा के वो किसी जंगल में चला जाता है। उसने देखा के मेरे पीछे एक शेर आ रहा है। ये भागा जब थक गया तो देखा के आगे एक बड़ा गहरा गढ़ा है। उसने जान बचाने के लिए गढ़े में कूदना चाहा। मगर गढ़े के अन्दर झांका। तो उसमें एक अज़दहा मुंह खोले बैठा था। अब ये घबराया के क्या करे। पीछे शेर है। और आगे अज़दहा। अचानक उसे एक दरख़्त की टहनी नज़र आई। ये उससे लटक गया। मगर जब हाथ टहनी को डाल कर लटक चुका तो उसने देखा के उस टहनी को दो सियाह और सफेद चूहे जड़ से काट रहे हैं। अब तो ये बहुत डरा के थोड़ी देर में ये टहनी कट जाएगी। और मैं गिर जाऊँगा। और शेर व अज़दहा का लुक़मा बन जाऊँगा। इत्तिफाक़न दरख़्त पर उसे शहद का एक छत्ता नज़र पड़ा। और ये उस शहद के पीने में मशग़ूल हो गया। ना शेर का खयाल रहा ना अज़दहा का। और ना चूहों का डर। अचानक वो टहनी जड़ से कट गई। और ये गिर पड़ा। और शेर ने फाड़कर गढ़े में गिरा दिया। और अज़दहे ने उसे निगल लिया। (मख़्ज़न अखलाक़, सफ़ा 383)

सबक़:- जंगल से मुराद दुनिया है। और शेर मौत है। जो पीछे लगी हुई है। और गढ़ा क़ब्र है जो आगे है। और अज़दहा बुरे अमल हैं। जो क़ब्र में डसेंगे। और दो चूहे सफेद और सियाह। दिन और रात हैं और दरख़्त उम्र है। जिसे वो काट रहे हैं। और शहद का छत्ता दुनिया की फानी लज़्ज़ात हैं। जिनमें मशग़ूल होकर इंसान मौत, क़ब्र और सज़ाऐ आमाल बद से ग़ाफिल हो जाता है। फिर अचानक मौत आ जाती है। और बजुज़ नदामत व हसरत के कुछ हासिल नहीं होता।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(722) आईनूनी या इबादल्लाही

माहाना फैज़-उल-इस्लाम रावलपिंडी ने अपनी मार्च ७३ई० की इशाअत में "उल्मा-ए-अमृतसर" के ज़ेरे उनवान "मौलाना नूर अहमद साहब पसरवरी सुम्मा अमृतसरी" के हालात लिखते हुए मौलाना का एक अपना बयान कर्दा ये वाक़ेया भी लिखा है।

"मैंने एक दफा मक्का से पैदल चल कर दरबारे नबव्वी में हाज़री का शर्फ हासिल किया।" असनाऐ सफर एक रात ऐसी आई के क़याम के लिए कोई मंज़िल ना थी। इसलिए बड़ी परेशानी हुई। मअन मुझे याद आया के हज़रत रसूले खुदा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की हदीस है के सफर में राह भूल जाओ तो बुलंद आवाज़ से *या इबादल्लाही आईनूनी* "ऐ अल्लाह के बन्दों मेरी मदद करो।" पुकारा करो। मैंने उस पर अमल करते हुए तीन बार पुकारा। और फिर एक बार चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। तो क़रीब ही एक झोंपड़ी नज़र आई। और मैं इस तरफ़ चला। जब क़रीब पहुँचा तो देखा के चन्द बच्चे झोंपड़ी के बाहर खेल रहे हैं। और ये बच्चे मुझे देखते ही पुकार उठे। "*जाआ ज़ीफुल्लाह*" अल्लाह का मेहमान आया।

बच्चों की आवाज़ सुनते ही अन्दर से एक मर्द निकला। और उसने मेरी बड़ी ख़ातिर व मदारात की। खाना खिलाय। और रात बसर करने के लिए बिस्तर वग़ैरा दिया। और सुबह को मुझे रास्ते पर डाल दिया।

मौलाना फ़रमाते हैं के मैंने उससे क़ब्ल यानी *आईनूनी या इबादल्लाही* पुकारने से क़ब्ल बक़ायमी होश व हवास इस इलाक़े में कोई झोंपड़ी ना देखी थी।"

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का इर्शादे बरहक़ है और आपके इर्शाद के मुताबिक़ इस क़िस्म की मुश्किल के वक़्त अल्लाह के बन्दों को मदद के लिए पुकारना हर गिज़ शिर्क नहीं है। वरना हुज़ूर ऐसी तालीम क्यों देते और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की अहादीस मुबारका के लिए गहरी मोहब्बत और सच्ची अक़ीदत दरकार है और अगर मोहब्बत व अक़ीदत ही में ज़ौफ हो तो फिर ऐसी अहादीस मुबारका भी ज़ईफ नज़र आने लगती हैं।

हिकायत नम्बर(723) सबके हाजत रवा सलामुन अलेक

शबे मैराज हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जब

Scanned by CamScanner

सिदरत-उल-मुनतहा तक पहुँचे तो जिब्राईले अमीन वहाँ रूक गए। और अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! अब मैं यहाँ से बाल भर भी आगे नहीं बढ़ सकता। अगर मैं यहाँ से आगे बढ़ूँगा तो नूरानियत से जल जाऊँगा। हुज़ूर ने फ़रमाया। अच्छा ऐ जिब्राईल!

हल लका मिन हाजाती तेरी कोई हाजत है?

अर्ज़ किया।

सलिल्लाहा अन अबसुता जनाहिया अलस्सिराती लीउम्मूतिका हत्ता यजूज़ व अलेही यानी अल्लाह से मेरे लिए सवाल कीजिए के क़यामत के रोज़ आपकी उम्मत के लिए मैं पुल सिरात पर अपने पर बिछा दूंगा। ताके आपकी उम्मत आसानी से ऊपर से गुज़र जाए। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 29, जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिब्राईले अमीन के भी हाजत रवा हैं। और आपने खुद उससे फ़रमाया। के कोई हाजत हे। तो पेश करो। फिर जिब्राईल ने भी ये नहीं कहा के हुज़ूर मेरी जो हाजत होगी मैं अपने अल्लाह से खुद कह लूंगा। नहीं जिब्राईल ने अपनी हाजत हुज़ूर की बारगाह में पेश की। और अल्लाह से जो माँगा हुज़ूर के वसीले से माँगा। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ग़ुलामी अल्लाह का बहुत बड़ा ईनाम है। इस निसबत से हम जिब्राईल की नज़रों में भी मेहबूब बन गए हैं। देखिये जिब्राईल ने अगर अपनी हाजत पेश की तो ये के मैं पुल सिरात पर अपने पर बिछा देने चाहता हूँ। ताके हुज़ूर की उम्मत को आसानी हो जाए। फसल-लल्लाहो अलेही व सल्लम।

हिकायत नम्बर(724) हलवान का पहाड़

हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के ज़माना-ए-खिलाफत में हज़रत नज़ला बिन मुआविया रज़ी अल्लाहो अन्ह अपने साथियों समेत हलवान में मसरूफ जिहाद थे। इसी असना में एक पहाड़ पर नमाज़े मग़रिब का वक़्त हो गया। और हज़रत नज़ला ने वहीं अज़ान देना शुरू की। जब आपने कहा।

अल्लाहू अक्बर अल्लाहू अक्बर तो उस पहाड़ में से एक ग़ैबी आवाज़ आई।

कब्बरता कबीरन या नज़लतू "इखलास का कलमा है ऐ नज़ला!"

फिर जब कहा *अशहदअन लाइलाहा इल्लल्लाह*.....तो आवाज़ आई:

Scanned by CamScanner

कलीमतुलइखलास या नज़लतू "इख़लास का कलमा है ऐ नज़ला!"
फिर जब कहा *अशहदअन्ना मोहम्मदर्रसूल अल्लाह.....* तो आवाज़ आई:-
हुवल्लज़ी बश्शरना बिही ईसबना मरियमू
"यही वो ज़ाते पाक है जिसकी बशारत हमें ईसा अलेहिस्सलाम ने दी।"
फिर जब कहा *हय्या अलस्सलाह.....* तो आवाज़ आई:-
तूबा लिमन मशिया इलेहा व ज़बा अलेहा
"बशारत हो उसे जो नमाज़ पढ़ने गया और हमेशा पढ़ता रहा।"
फिर जब कहा *हय्या अलल फलाह.....* तो आवाज़ आई:-
क़द अफलाहा मन अहाबाबा मुहम्मदन "निजात पा गया वो शख़्स जिसने मोहम्मद(स०अ०स०) को माल लिया" फिर जब कहा *अल्लाहो अक्बर अल्लाहो अक्बर ला इलाहा इल्लल्लाहू.....* तो आवाज़ आई:
अख़लासतल इख़लासा कुल्लहू या नज़लता "तुम ने पूरा पूरा इख़लास बयान कर दिया ऐ नज़ला!"

हज़रत नज़ला अज़ान से फारिग़ हुए तो आपने आवाज़ दी के ऐ ग़ैब से आवाज़ देने वाले तो फरिश्ते है या जिन्न है। या कोई अल्लाह का मक़्बूल इंसान। तो कौन है? तूने हमें अपनी आवाज़ तो सुना दी। अब अपनी सूरत भी दिखा दे। देख हम अल्लाह और उसके रसूल के और हज़रत उमर के वफ़्द हैं। हमारी बात माल और सामने आ।

इतने में पहाड़ फटा। और उसमें से एक सफेद रेश और सफेद बुज़ुर्ग निकले। और कहने लगे। अस्सलाम अलेकुम व रहमत-उल्लाह। हज़रत नज़ला और उनके साथियों ने व अलेकुम अस्सलाम कहा। और पूछा आप कौन हैं? फ़रमाया मैं हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम का वसी हूँ। मेरा नाम ज़रीब बिन बरग़ला है। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने मुझ इस पहाड़ पर ठहराया है। और मेरे लिए लम्बी उम्र की दुआ फ़रमाई है और दुआ फ़रमाई है के मैं उनके आसमान से नाज़िल होने तक ज़िन्दा रहूँ। चुनाँचे मैं आज तक ज़िन्दा हूँ। ऐ असहाब मोहम्मद! (स०अ०स०) मैं हुज़ूर मोहम्मद मुसतफा(स०अ०स०) से तो मुलाक़ात कर नहीं सका। अब ये हज़रत उमर का दौरे ख़िलाफत है। उमर फारूक़ को मेरा सलाम कहना। (कंज़ुल आमाल, बरहाशिया मसनद इमाम अहमद, सफ़ा 247 जिल्द 2)

सबक़:- सहाबा इक्राम की बहुत बड़ी शान है। बिलखसूस हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह की तो इतनी बड़ी शान है। के हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम के हवारी भी उनपर सलाम भेजते हैं। और ये भी मालूम हुआ

Scanned by CamScanner

के हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम की दुआ से उनके एक गुलाम को तवील उम्र मिल गई। फिर खुद उनका तवली उम्र पाना क्यों मुमकिन नहीं। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम आसमान पर ज़िन्दा मौजूद हैं। और वो आसमान से नज़ल फ़रमायेंगे। और ये भी मालूम हुआ के अहले इस्लाम घरों में हों। जंगलों में या पहाड़ों पर, और हालते अमन में हों या जंग में। नमाज़ को वो किसी हाल में नहीं छोड़ते।

हिकायत नम्बर(725) अमीन भिकारी

एक फक़ीर मिस्र की जामअे मस्जिद के दरवाज़े पर बैठा भीक माँग रहा था। कुछ रईस लोग वहाँ से गुज़रे। उसने उनसे सवाल किया। मगर किसी ने कुछ ना दिया। उन लोगों में से एक रईस की जैब से दीनारों भरी थेली गिर पड़ी। इस थेली में पाँच सौ दीनार थे। उनके जाने के बाद फक़ीर की नज़र पड़ी। तो उसने वो थेली उठा ली। ओर हिफाज़त के साथ रख ली। इतने में दीनारों का मालिक घबराया हुआ आया। और पूछा। मेरी थेली कहीं गिर पड़ी है। तुम ने तो नहीं देखी? फक़ीर ने कहा। वो थेली मुझे मिली है। और मेरे पास है फिर उसने थेली निकाल कर पेश कर दी। वो शख़्स बड़ा खुश हुआ और कहा अब मैं तुझे पंद्रह दीनार दूंगा। फक़ीर बोला। मैं कुछ नहीं लूंगा। इसलिए के मैंने पहले आपसे एक चीज़ बतौर एहसान के माँगी थी मगर अब नहीं लूंगा। क्यों अब अगर कुछ क़बूल करूंगा तो उसके मअनी ये हुए के दीन देकर दुनिया ले लूं। (हिकायत व रिवायात, सफ़ा 328)

सबक़:- पहले ज़माने के भिकारी भी बड़े अमीर होते थे। मगर आज कल ये रोशन आम है के "राम राम जपना पराया माल अपना" या (बज़बान पंजाबी) लबी चीज़ खुदा दी। ना ढेले दी ना पादी।

हिकायत नम्बर(726) ज़हरीला सांप

हज़रत अबु अलसायब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया। के एक नोजवान सहाबी की नई नई शादी हुई। एक दफा वो अपने घर आए। तो देखा। के उनकी दुलहन दरवाज़े में खड़ी है। ये देखकर उनको ग़ैरत आई। और दुलहन को मारने के लिए नेज़ह उठा लिया। दुलहन ने का। मुझे मारो नहीं। पहले अन्दर चल कर देखो। के किस चीज़ ने मुझे बाहर खड़े होने पर मजबूर किया है? चुनाचे वो सहाबी अन्दर गए। तो देखा। के एक बहुत बड़ा सांप कुंडली मारे बिछोने पर बैठा है। आपने वो नेजह उस सांप को मारा। और सांप नेज़े में

Scanned by CamScanner

पिरो लिया। सांप ने तड़प कर उन पर हमला करके डस लिया। सहाबी का इसी वक़्त इन्तिक़ाल हो गया। और वो सांप भी मर गया। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 352)

सबक़:- सहाबा इक्राम बड़े ग़ैरत मंद थे। के बीवी को महेज़ दरवाज़े में खड़े देखकर ये नोजवान सहाबी ग़ैरत में आ गए। और बे क़रार हो गए। मगर आज कल के बअज़ मुसलमान अपनी औरतों को थैट्रों, कलबों में ले जाते हुए भी नहीं शर्माते। और पराये मर्दों से खुद ही अपनी औरतों का हाथ मिलाकर खुश होते हैं। और फख्र करते हैं। मुसलमानों को अपने इसलाफ के नक़्शे क़दम पर चलना चाहिए।। और औरतों को पर्दे में रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर(727) अबु अलमआली की हिकायत

मशायख़ अेज़ा की एक जमात ने मुतअद्दिद इसनाद के साथ रिवायात किया है। के अबु अलमआली मोहम्मद बिन अहमद बग़दादी एक मर्तबा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की मजलिसे वअज़ में हाज़िर हुए। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह एक बहुत बड़े मजमअे में वअज़ फ़रमा रहे थे। ये भी आकर बैठ गए। थोड़ी देर के बाद अबु अलमआली को रफ़अे हाजत की ज़रूरत लाहक़ हुई और इतने बड़े मजमअे में से निकलने की कोई सूरत नज़र ना आई। ये बड़े परेशान हुए। और उसी परेशानी के आलम में हुज़ूर ग़ौसे आज़म की तरफ़ देखने लगे। हुज़ूर ग़ौसे आज़म मिंबर से नीचे उतरे। और सफ़ा शान से उतरे के मिंबर पर भी ग़ौसे आज़म तशरीफ़ फ़रमा रहे। और उनके पास भी तशरीफ़ ले आए। मगर उनके पास तशरीफ़ लाते हुए दूसरा कोई ना देख सका। अबु अलमआली के पास पहुँच कर आपने अपने रूमाल से उनका सर ढांप दिया।

अबु अलमआली ने देखा के वो एक वसी सहरा में हैं जिसमें एक नहर के पास एक दरख़्त है। अबु अलमआली ने अपनी कुंजियाँ उस दरख़्त पर लटका दीं और कज़ाऐ हाजत के बाद नहर से वज़ू करके दो रकअत नफिल पढ़े। और जब सलाम फैरा तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने उनके सर से रूमाल उठा लिया। और उन्होंने देखा के वो बदस्तूर उसी मजलिस वअज़ में हैं। और हुज़ूर ग़ौसे आज़म बदस्तूर वअज़ फ़रमा रहे हैं। गोया मिंबर से उतरे ही नहीं। अबु अलमआला ने ग़ौर किया। तो वज़ू के पानी से आज़ा तर थे। हाजत भी मरफ़ूअ थी। मगर कुंजियाँ ना मिलीं। एक मुद्दत के बाद वो एक क़ाफले के हमराह बिलादे अजम की तरफ़ निकले। बग़दाद से चौदह दिन के सफर के

Scanned by CamScanner

बाद क़ाफला उसी सहरा में पहुँचा। अबु अलमआली ने देखा के वही नहर है और वही दरख़्त। और दरख़्त पर उनकी कुंजियाँ भी लटक रही हैं। क़ाफला जब वापस आया तो अबु अलमआली हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की ख़िदमत में हाज़िर हुए। ताके वो सारा माजरा कह सुनायें। मगर हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने उनका कान पकड़ कर फ़रमाया।

"अबु अलमआली! मेरी ज़िन्दगी में इसका ज़िक्र किसी से ना करना।" (नश्र-उल-मुहासिन-उल-इमाम याफई बर हाशिया जामअे-उल-करामात-उल-जहानी, जिल्द अव्वल, सफ़ा 57)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों बिलख़सूस हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अलाह अन्हुम को अल्लाह तआला ने बड़ी बड़ी ताक़तें अता फ़रमाई हैं। और ये पाक लोग बड़े बड़े तसर्रूफात के मालिक हैं और ये अल्लाह वालों की करामात हैं जो बरहक़ हैं। करामात का इंकार अल्लाह की दीन व अता और उसकी बे पनाह क़ुद्रत का इंकार है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दे एक वक़्त में मुतअद्दिद मुक़ामात पर भी हो सकते हैं। और ये भी मालूम हुआ। के ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह को अल्लाह तआला ने तकालीफ व मुश्किलात के रफ़े व हल की ताक़त बख़्शी है। हम अगर उनकी तरफ़ क़ज़ाऐ हाजात के लिए रूजू करें। तो ये हर गिज़ शिर्क नहीं है।

हिकायत नम्बर(728) क़ज़ीब की हिकायत

हज़रत क़ज़ीब-उल-बान रहमत-उल्लाह अलेह से क़ाज़ी-ए-मवस्सिल दुश्मनी रखता था। और उसका इरादा था के वो हाकिमे वक़्त से उनकी कोई शिकायत करके उन्हें शहर मवस्सिल से निकलवा दे। क़ाज़ी-ए-मवस्सिल का बयान है के मेरे इस इरादे की अल्लाह के सिवा किसी को ख़बर ना थी। एक रोज़ हज़रत क़ज़ीब मवस्सिल के एक कूचे से गुज़र रहे थे। और दूसरी तरफ़ से क़ाज़ी-ए-मवस्सिल भी आ रहे थे। क़ाज़ी-ए-मवस्सिल कहते हैं। के मैंने दिल में कहा के अगर इस वक़्त मेरे साथ कोई दूसरा भी होता तो मैं उससे कहता के उसे पकड़ कर हाकिमे वक़्त के पास ले चलो। क़ाज़ी-ए-मवस्सिल ने इतना सोचा ही था के वो क्या देखता है के हज़रत क़ज़ीब ने एक क़दम उठाया तो एक कुर्दी की शक्ल में थे। फिर एक क़दम उठाया तो एक फ़ुक़िहा की शक्ल में नमूदार हुए। फिर आपने क़ाज़ी-ए-मवस्सिल से फ़रमाया। के क़ाज़ी साहब! आपने चार सूरतें देखीं हैं। उनमें से क़ज़ीब कौन सा है। जिसको तुम हाकिम से कहकर निकलवाना चाहते हो? ये सुनकर क़ाज़ी-ए-मवस्सिल

Scanned by CamScanner

बे इख़्तियार आपके हाथ चूमने लगा। और उनकी दुश्मनी से तौबा की। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 197)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे आम इंसानों की मिस्ल नहीं होते। वो बड़ी शान के मालिक होते हैं। और खुदा तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात व तसर्रूफात अता फ़रमाए हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की नज़र से दिल के भैद भी छुपे नहीं रहते। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों से दुश्मनी कोई नई बात नहीं ये पहले से चली आई है। खुश क़िस्मत हैं। वो लोग जो इस बुरी बात से तौबा कर लेते हैं।

हिकायत नम्बर(729) हज़रत अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद क़ुरशी रहमत-उल्लाह अलेह

हज़रत अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद क़ुरशी एक बहुत बड़े वली अल्लाह थे। और नाबीना थे। उनके एक मुरीद ने एक मर्तबा अपनी लड़की से दरयाफ़्त किया के आज घर में क्या पके। तो लड़की बोली। के आप मेरी आरज़ू पूरी ना कर सकेंगे। बाप ने कहा ज़रूर करूंगा। तुम कहो तो सही। लड़की बोली। तो मेरी आरज़ू है के मेरा निकाह अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद क़ुरशी से कर दीजिए। बाप हज़र क़ुरशी की ख़िदमत में आया। और अपनी लड़की की आरज़ू ज़िक्र किया। हज़रत ने फ़रमाया। क़ाज़ी को बुला लाओ। चुनाँचे क़ाज़ी साहब आए। जिन्होंने निकाल पढ़ा दिया। और बाप ने लड़की को आरास्ता करके हज़रत शेख़ की खिदमत में हाज़िर कर दिया। जब औरतें निकल गईं तो हज़रत क़ुरशी ग़ुस्ल खाने में दाखिल हुए। और निकले। तो एक बेरेश खूबसूरत नोजवान तनदुरूस्त आँखें वाले उम्दा कपड़े पहने हुए ज़ाहिर हुए। लड़की ने हया के मारे अपना मुंह ढांप लिया। आपने फ़रमाया। ऐसा ना कर। मैं ही क़ुरशी हूँ। वो बोली के तू क़ुरशी नहीं। आपने खुदा की क़सम खाकर फ़रमाया। मैं ही क़ुरशी हूँ। लड़की ने पूछा के ये क्या माजरा है? तो फ़रमाया के मैं तेरे साथ इस हाल पर रहूंगा। और ग़ैरों के सामने इस हालत पर नज़र आऊँगा। लेकिन मेरी ज़िन्दगी में इस मामले की ख़बर किसी को ना देना। लड़की ने कहा। ऐसा ही करूंगी। (तबक़ात कुब्रा शैरानी, सफ़ा 135, जुज़ अव्वल)

सबक़:- अल्लाह वाले अपनी शानों को मख़लूक़ की नज़रों से छुपा कर रहते हैं। और खुदा तआला ने उन्हें बड़े बड़े तसर्रूफात पर क़ुद्रत

Scanned by CamScanner

अता फ़रमाई है। और ये भी मालूम हुआ के किसी अल्लाह के मक़्बूल की ज़ाहिरी हालत को देखकर उसे कभी हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए। के *"रब्बा अशअता अग़बरा"* हदीसे पाक के मुताबिक़ बअज़ सादा और दुनयवी जाह व जलाल से खाली मरदाने हक़ हक़ीक़त में बहुत पहुँचे हुए होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अच्छी और नेक औरतें हमेशा दीन और तक़्वे को पसंद करती हैं। और अपना शौहर ऐसा चाहती हैं जो ख़ुदा के अहकाम का पाबंद और शरीअत पर चलने वाला है।

हिकायत नम्बर(730) सच्चा मुसलमान

एक ताजिर का इन्तिक़ाल हो गया। उसने बहुत सी दौलत अपने पीछे छोड़ी। उसका एक ही लड़का था। जो उसका वारिस था। मगर वो मुद्दत से मफ़्क़ूद-उल-ख़बर था। और उसका कोई पता ना था के वो कहाँ है। और इसी वजह से किसी की शक्ल व सूरत भी याद ना रही थी। कुछ मुद्दत के बाद तीन लड़कों ने ये दावा किया के वही मरहूम ताजिर के बेटे हैं यानी उनमें से हर एक का ये दावा था के ताजिर का लड़का मैं हूँ। ये तीनों क़ाज़ी के पास आए। और अपना दावा पेश किया। क़ज़ी ने मरहूम ताजिर की एक तसवीर मंगवाई। और कहा के जो लड़का उस तसवीर पर बंदूक़ का ठीक निशाना लगाएगा। वही वारिस होगा। तीनों में से दो लड़के तो निशाना लगाने को तैयार हो गए। मगर तीसरा परेशान हो गया। चहरे पर परेशानी के आसार ज़ाहिर हो गए। और आँखों से आँसू बहने लगे। और बोला के ना मुमकिन है के मैं अपने बाप की तसवीर को निशाना बनाऊँ। मुझे परवाह नहीं। मुझे कुछ मिले या ना मिले। मगर मैं ऐसा नहीं करूंगा। क़ाज़ी ने फैसला दे दिया के अपने बाप का हक़ीक़ी बेटा यही है। और यही मीरास का हक़्दार है। (हिकायत व रिवायात, सफ़ा 357)

सबक़:- मुसलमान होने के मुद्दई तो सब हैं। मगर जो लोग इस्लाम को अपना तख़्ता मश्क़ नहीं बनाते और इस पर इलहादो ज़ंदक़ा के तीर नहीं बरसाते। असल में वही सच्चे मुसलमान और जन्नत के जायज़ वारिस हैं

हिकायत नम्बर(731) पनाह

बादशाह बहराम एक मर्तबा शिकार के लिए निकला। और एक हिरन को देखकर उसके पीछे घोड़ा दौड़ा दिया। हिरन जान बचाने के लिए इधर उधर भागा। और ये भी उसको तआक़्क़ुब करने लगा। हिरन पर

Scanned by CamScanner

से प्यास का ग़ल्बा हुआ। और बेताक़ती से एक आराबी के ख़ैमे में घुस गया। जिसका नाम क़बीसा था उसने इसे पकड़कर रस्सी से बाँध दिया। बहराम भी ख़ैमे तक पहुँच गया। और क़बीसा से कहा के ऐ आराबी! मेरा शिकार तेरे ख़ैमे में है। उसे बाहर निकाल दो। क़बीसा ने ना पहचाना के ये कौन है और जवाद दिया के ऐ खूबसूरत सवार! के ये बात मुरव्वत से बईद है के जिस जानवर ने मेरी पनाह ली है। मैं उसे किसी के हवाले कर दूं। ताके वो उसे मार डाले। बहराम ने सख़्ती शुरू की। क़बीसा ने कहा। झगड़ा ना बढ़ा। जब तक तू अपने तीर से मेरा सीना छेद देगा। और मुझे क़त्ल ना कर देगा। तेरा हाथ इस हिरन की गर्दन तक नहीं पहुँच सकता। और जब तू मुझे क़त्ल कर देगा तो भी मेरे क़बीले वाले हिरन तेरे हवाले नहीं करेंगे। अपनी जान पर रहम करो। और हिरन का खयाल छोड़ दे। हाँ हिरन के अवज़ अगर तू मेरा ताज़ी घोड़ा जो ख़ैमे के दरवाज़े पर बंधा है ज़ीन व लगाम मतलन समेत लेना पसंद करे। तो इसे ले जा। मगर हिरन जो मेरी पनाह में आ चुका हैं वो मैं तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता। बहराम को ये हिकायत बड़ी पसंद आई। और बाग मोड़ कर वापस चला गया। (अख़लाक़ मोहसिनी तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 486)

सबक़:- किसी बे यारो मददगार मज़लूम की मदद हिमायत करना बहुत बड़ी जवांमर्दी है। और अगर कोई जानवर भी किसी की पानह में आ जाए तो जवांमर्दी व इंसानियत ये है के उसकी मदद की जाए।

हिकायत नम्बर(732) लुत्फ व नर्मी

एक बादशाह बड़ा नर्म मिज़ाज और लुत्फ खू था। एक दिन शाही बावर्ची को एक ख़ास खाना तैयार करने का हुक्म दिया। चुनाँचे जब वो पका कर दूसरे खानों के साथ लाया। और बादशाह के आगे दसतरख़्वान पर रखा तो बादशाह ने पहले अपने फ़रमाईशी खाने पर नज़र डाली। तो उसमें मक्खि नज़र आई। उसे निकाल कर दूर किया। दूसरे लुक़मे में भी एक मक्खि देखी। तो उस खाने से हाथ खींच कर दूसरा खाना नोश जान किया। जब खा चुका तो बावर्ची को बुलाया। और कहा के तूने जो खाना पकाया बहुत लज़ीज़ था। कल भी वही तैयार करना। मगर शर्त ये है के उसमें मक्खियाँ ना डालना। हाज़ीन इस कलाम पर बड़े मुतज्जिब हुए के बादशाह ने कैसे नर्म व लुत्फ तरीक़ से बावर्ची को शर्मिंदा किया और अदब सिखाया है। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 487)

सबक़:- लुत्फ व नर्मी से अगर काम लिया जाए तो वो तलवार व

Scanned by CamScanner

नेज़े से भी ज़्यादा काट करती है। मगर जो मौक़ा सख़्ती का हो वहाँ सख़्ती ही काम देती हैं मसलन ग़द्दारों और सरकशों का सामना हो तो फिर *अलहदीद यक़्तअ बिलहदीद* "लोहा लोहे से काटा जाता है" के मुताबिक़ सख़्ती ही से काम लेना पड़ता है।

हिकायत नम्बर(733) सब्कत्गीन बाशाह

सब्क़त्गीन एक ग़ुलाम था। और उसके पास सिर्फ़ एक घोड़ा था। उस पर चढ़कर वो जंगल में जाया करता था। और अगर कोई शिकार हाथ आ जाता तो उसी पर गुज़ारा कर लेता। एक दफ़ा उसने एक हिरनी देखी। जो अपने बच्चे के साथ चर रही थी। सब्कत्गीनन ने उसके पीछे घोड़ा दौड़ा दिया। हिरनी तो पकड़ी जा ना सकी। मगर उसका बच्चा जो माँ के साथ भाग ना सका हाथ आ गया। सब्कत्गीन ने उसे बाँध कर ज़ीन के आगे रख लिया। और शहर की जानिब चल पड़ा। हिरनी बच्चे को देखकर मुड़ी और सब्कत्गीन के पीछे दौड़ने लगी। और फ़रयाद करने लगी उसे उसकी हालत पर रहम आया। और बच्चे को खेल कर छोड़ दिया। हिरनी ने दौड़ कर बच्चे को ले लिया। और आसमान की तरफ़ मुंह कर के दुआएँ देने लगी। बे ज़बानों की ज़बानें जानने वाले खुदा तआला को सब्कत्गीन का ये रहमदिलाना काम पसंद आया। रात उसे ख़्वाब में हुज़ूर रहमतुललिल आलमीन सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत नसीब हुई। तो आपने फ़रमाया के तूने जो एक बे ज़बान पर रहम किया है। उस पर हम बहुत खुश हुए हैं। उसके अवज़ अल्लाह तआला तुझे बादशाही अता फ़रमाएगा। और याद रखना। जिस तरह तूने इस जानवर पर रहम किया है। इसी तरह अपनी नोय्यत पर भी नज़रे करम किया करना। और ज़ुल्मो सितम ना करना। (तालीम-उल-अख़लाक़ 409)

सबक़:- अल्लाह तआला को मख़लूक़ पर रहम करना बड़ा पसंद है। इसीलिए हुज़ूर रहमतुललिल आलमीन(स०अ०स) को उसने सारे जहानों के लिए रहमत बना कर भेजा है। और ये भी मालूम हुआ के एक जानवर पर रहम करने से अल्लाह तआला और उसके हबीब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जब इस क़द्र खुश होते तो किसी इंसान पर ज़ुल्म करने से वो क्यों नाराज़ ना होंगे। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला ने जिसे हकूमत अता फ़रमाई हो। उसका फर्ज़ है के वो अपनी रिआया पर यूं मेहरबान हो जैसे बाप औलाद पर होता है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(734) सख़ावत

एक रोज़ एक शख़्स हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ की के मैं कसरते अयाल के बाइस बेहद तंगी और इफलास में हूँ। यहाँ तक के आज रात के खाने के लिए भी कुछ नहीं। हज़रत इमाम आली मुक़ाम ने उसे अपने पास ठहराया। इतने में पाँच तोड़े दीनारों के हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत इमाम आली मुक़ाम की ख़िदमत में भेजे। आपने वो पाँचों तोड़े इस फक़ीर को इनायत फ़रमा दिए। और उज़्र भी फ़रमाया। के तुझे जो थोड़ी बहुत इन्तिज़ार करना पड़ी उसकी माफी चाहता हूँ। (तोहफा रहीमी बहवाला कशफ-उल-महजूब, सफ़ा 9)

सबक़:- खुदा तआला ने अपने नेक बन्दों के मुतअल्लिक़ फ़रमाया है *व यूअसिरूना अला अनफुसीहुम वलो काना बिहि खसाखसाहा* यानी वो अपना माल दूसरों को दे देते हैं। अगरचै वो खुद हाजतमंद हों।" हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह इस आयत करीमा के सही मिसदाक़ थे। और अल्लाह के नेक बन्दे ऐसा ही करते हैं सायल का सवाल पूरा करते हैं और उसकी उम्मीद से भी ज़्यादा उसे देते हैं और ये भी मालूम हुआ के मक़्बूलाने खुदा के दरवाज़े से हाजतमंद कभी खाली नहीं लौटते।

हिकायत नम्बर(735) काला सांप

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम एक मर्तबा एक गाँव में तशरीफ़ ले गए। तो वहाँ के लोगों ने शिकायत की के या नबी अल्लाह! इस गाँव में एक धोबी है। जो कपड़े चुराता है। और बदल देता है। इस वजह से हम उससे बहुत आजिज़ आ गए हैं। और उसके हाथों बड़ी तकलीफ में हैं। आज वो कपड़े धोने गया है। आप उसके लिए दुआ करें के वो वहीं ग़ारत हो जाए। और फिर के ना आए। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने उन लोगों की दरख़्वास्त क़बूल करली। और दुआ की के इलाही! इस ख़ायन को वहीं हलाक़ कर दे। इत्तिफाक़न धोबी अपने साथ रोटी पका कर ले गया था। नागाह वहाँ एक फक़ीर का गुज़र हुआ। और वो बहुत भूका था। फक़ीर ने धोबी से सवाल किया। धोबी ने उसे एक रोटी दे दी। फक़ीर ने उसे दुआ दी। के जैसे तू लोगों के कपड़ों को साफ करता है। खुदा तआला तेरे दिल को पाको साफ करे। धोबी ने एक रोटी और दे दी। वो फक़ीर बोला। इलाही! से हर बला से महफूज़ रख।

फिर वो धोबी शाम को बख़ैरियत घर वापस आया। लोगों ने हज़रत

Scanned by CamScanner

ईसा अलेहिस्सलाम से कहा। या हज़रत! ये कैसी बद दुआ थी आपकी। के धोबी ख़ैरियत से वापस आ गया है। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने धोबी को बुला कर पूछा के आज तूने कौन सा नेक अमल किया है? उसने बताया के मैंने राहे खुदा में दो रोटियाँ एक भूके मोहताज को दी हैं। उसने मुझे दुआ दी और चला गया। इतने में खुदा तआला ने हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम पर वही नाज़िल फ़रमाई। के ऐ मेरे नबी! इस धोबी की गठरी को खुलवा कर देख। चुनाँचे हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने उसकी गठरी खुलवा कर देखी। तो उसमें से एक काला सांप निकला। जिसके मुंह पर मोहर लगी हुई थी। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने पूछा के ऐ मारे खूंख़्वार! अगर हक़ तआला ने तुझे इस धोबी के हलाक करने के लिए भेजा है तो तूने क्यों उसे छोड़ दिया। सांप ने अर्ज़ की के एक अल्लाह के नबी! मैंने चाहा, के उसे डसूं। मगर उसने जो दो रोटियाँ राहे खुदा में सदक़ा की थीं। उनकी बर्कत से फरिश्तों ने मेरे मुंह पर मोहर लगा दी। ताके मैं उसे डस ना सकूं। हज़रत ईसा अलेहिस्सलमा ने ये सुनकर उस धोबी से फ़रमाया के ऐ अल्लाह के बन्दे! खुदा ने तेरे सारे गुनाह माफ कर दिए हैं। अब आईंदा के लिए तू हर गुनाह से बचते रहना। खुदा ने तुझे सदक़ा व ख़ैरात के सदक़े से बचा लिया है। (तोहफा रहीमी, सफ़ा 22)

सबक़:- अल्लाह की राह में कुछ देना और सदक़ा ख़ैरात करना बड़ी बड़ी बलाओं से बचा लेता है। और अल्लाह तआला के ग़ज़ब व जलाल की आग को बुझा देता है। पस हमें मोहताजों, फक़ीरों की एआनत करना चाहिए। और बुख़्लो इमसाक से बचना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के ये तीजा, दसवाँ, चालीसवाँ ग्यारवीं शरीफ वग़ैरा तक़रीबात अच्छी चीज़ें हैं के इस तरह कुछ ना कुछ अल्लाह के नाम पर खर्च होता रहता है। अल्लाह की राह में खर्च करने की इन मदों से रोकना अल्लाह के ग़ज़बो जलाल को अपनाने के मुतारादिफ है।

हिकायत नम्बर(736) दुरूद शरीफ

अबु मूसा एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं के मैं एक जमात के साथ एक कश्ती पर सवार था। के यकायक बादे मुख़ालिफ शुरू हुई। और उसने तूफान की सूरत इख़्तियार कर ली। अहले कश्ती सब हैरान हुए। और सब ने यक़ीन कर लेया। के अब बचना मुश्किल है। मायूसी हद से बढ़ गई। तो सब रोने लगे। और तौबा व असतग़फार करने लगे। ऐसे नाज़ुक वक़्त में मुझ पर ग़नूदगी तारी हुई। तो मैंने आलमे इसतग़राक़ में देखा। के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो

Scanned by CamScanner

तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए हैं। और फ़रमाते हैं। ऐ अबु मूसा! कश्ती वालों से कह दो के वो दुरूद *तुनजीना* पढ़ें। मैंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मुझ को ये दुरूद शरीफ याद नहीं। फ़रमाया। लो मैं पढ़ता हूँ। तुम याद कर लो। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने दुरूद शरीफ अपनी ज़बान अनवर से पढ़ा। और हुज़ूर ही के एजाज़ से मुझ वो याद भी हो गया। यकायक मेरी आँख खुल गई। तो वही दुरूद मेरी ज़बान पर जारी था। मैंने सब कश्ती वालों से कहा के लो ये दुरूद शरीफ पढ़ो। ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम खुद तशरीफ़ लाकर पढ़ने को फ़रमा गए हैं। चुनाँचे हम सब ने वो दुरूद शरीफ पढ़ना शुरू किया। तो तूफान थम गया। और हम सब बच गए। वो दुरूद शरीफ ये है।

अल्लाहुम्मा सल्ली अला मोहम्मदिन सलतन तुनजीना बिहा मिन जमीअल अहवाली वल आफाती व तक़्ज़ीलना बिहा जमीअल हाजाती व तुतहिर्रूना बिहा मिन जमीअस्स सय्यीअती व तुरफ़ऊना बिहा इन्दका अलाद्दराजाती व तुबल्लीगुना बिहा अक़्सल ग़ायाती मिन जमीअल ख़ैराती फिलहयाती व बादलममाती इन्नका अला कुल्ली शैइन क़दीर। (तोहफा रहीमी बहवाला फज्र मुनीर सफ़ा 46)

सबक़:- दुरूद शरीफ बहुत बड़ी अल्लाह की नअेमत है। उसके पढ़ने से बड़ी बड़ी मुश्किलें टल जाती हैं। और ये भी मालूम हुआ के दुरूद शरीफ कोई सा भी पढ़िये। मौजिबे अज्रो सवाब है। किसी मख़सूस दुरूद शरीफ ही को पढ़ना और दसूरे सीग़ों और लफ़्ज़ों से दुरूद शरीफ के पढ़ने को बिदअत बताना बहुत बड़ी ज़ियादती है। नमाज़ के अन्दर जिस दुरूद शरीफ की तख़सीस शरअे में वारिद है वो दुरूद शरीफ नमाज़ ही के लिए मख़सूस है। और बैरूने नमाज़ किसी भी सीग़े से दुरूद शरीफ पढ़िये जायज़ और मौजिबे सवाब है। और ये भी मालूम हुआ के हमारे आक़ा मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुश्किल के वक़्त अपने ग़ुलामों की मदद फ़रमाते हैं और अपने ग़ुलामों के पास करम फ़रमा कर खुद भी तशरीफ़ ले आते हैं। *फसल्लल्लाहो अलेही व आलिही क़दरा हुस्निही व जमालिही।*

हिकायत नम्बर(737) पाकबाज़ माँ

हज़रत शेख़ निज़ामउद्दीन अबु अलमवैद रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक मर्तबा देहली के लोग हाज़िर हुए। और अर्ज़ की, हुज़ूर! देहली में कई रोज़ से बारिश नहीं हुई। लोग बड़े परेशान हैं। दुआ कीजिए। बारिश हो।

Scanned by CamScanner

हज़रत निज़ामउद्दीन मिंबर पर चढ़े और अपनी वालिदा के दामन का एक पुराना कपड़ा बग़ल से निकाल कर अपने हाथ पर रखकर यूं दुआ माँगी। इलाही! बहुर्मत इस कपड़े के जो दामन एक ज़ईफे का है जिस पर हर गिज़ किसी ना मेहरम की नज़र नहीं पड़ी। तू मीना बरसा दे। कुद्रते इलाही से उसी वक़्त बादल नमूदार हुए। और बारिश होने लगी। (तोहफ रहीमी, सफ़ा 195)

सबक़:- मुश्किल के वक़्त अल्लाह के नेक बन्दों के पास जाकर तालिब दुआ होने से मुश्किल हल हो जाती है। और अल्लाह के नेक बन्दों से थोड़ी बहुत निसबत भी अल्लाह तआला के हाँ बड़ी पसंदीदा होती है। और ये भी मालूम हुआ के जो मायें पाकबाज़ अफ़्फत माब और खुदा याद हों। उनकी औलाद भी नेक होती है। और जो मायें खुद ही ग़ैर महरमों में आज़ादाना फिरने वाली हों। उनकी औलाद भी "टेडी बुवायज़" क़िस्म की ही होती है।

हिकायत नम्बर(738) जलाल फक़ीर

एक मर्तबा ख़्वाजा क़ुतब-उद्दीन बख़्तियार काकी अलेह अर्रहमा अजमैर में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत में हाज़िर थे। उन दिनों पथोरा (पृथवी राज) ज़िन्दा था। और कहा करता था के क्या ही अच्छा हो जो ये फक़ीर यहाँ से चला जाए। होते होते ये ख़बर हज़रत ख़्वाजा के गोश अक़्दस तक भी पहुँच गई। हज़रत ख़्वाजा उस वक़्त आलमे सुकर में थे। फौरन आपने मुराक़्बा किया। और मुराक़्बे ही में आपकी ज़बान मुबारक से ये कलमात निकले।

"के हम ने राय पथोरा को ज़िन्दा ही मुसलमानों के हवाले किया।"

थोड़े अर्से बाद सुलतान शम्स-उद्दीन मोहम्मद ग़ौरी का लश्कर चढ़ आया। और शहर को लूट मार करने के बाद पथोरा को ज़िन्दा पकड़ कर ले गया।

"मालूम हुआ के दुरवैश एक पियाले में आग रखते हैं और एक पियाले में पानी। यानी वो फायदा भी पहुँचा सकते हैं और नुक़सान भी।" (शोरिश काशमीरी का अख़्बार चट्टान, 10 दिसम्बर सफ़ा 13)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे बहुत बड़े इख़्तियारात के मालिब होते हैं। और खुद शोरिश काशमीरी का अख़्बार भी ये एलान कर रहा है के

"दुरवैश एक पियाले में आग रखते हैं और एक पियाले में पानी। यानी वो फायदा भी पहुँचा सकते हैं और नुक़सान भी।"

फिर जो उन सब के आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इख़्तियारात का मुनकिर हो और यूं कहे के जिसका नाम

Scanned by CamScanner

मोहम्मद या अली है वो किसी चीज़ का मालिक मुख़्तार नहीं। वो क्यों गुमराह ना होगा।

हिकायत नम्बर(739) कलामे हक़

ईरान के एक शहज़ादे ने एक मिसरा कहा। के

दुरे अबलक़ के कम दीदह मौजूद

यानी ऐसा मोती जो कुछ सियाह और कुछ सफेद हो। किसी ने कम देखा होगा।

मतलब ये के ऐसा "दो रंगा" मोती कहीं मौजूद नहीं।

इस मिसरे पर दूसरा मिसरा मोज़ूँ ना हो सका। उसने कई शौअरा से कहा। मगर किसी से इस मिसरे पर मिसरा ना कहा जा सका। आख़िर उसने देहली के बादशाह को लिखा के इस मिसरे का दूसरा मिसरा मौज़ूँ करा के भेज दीजिए। देहली के शौअरा भी मोज़ूँ ना सके। मगर ज़ैब-उन-निसा एक दिन सुर्मा लगा रही थी इत्तिफाक़न आँसू टपक पड़े। तो दूसरा मिसरा आँसू देखकर मोज़ूँ कर दिया के

दुरे अबलक़ किस कम दीदा मौजूद
मगर अश्क बितानें सुर्मा आलूद

यानी कुछ सियाह कुछ सफेद रंग का मोती किसी ने कम देखा होगा। मगर हाँ! मेहबूब की सरमगीन आँख से टपका हुआ आँसू एक ऐसा मोती है जिसमें ये दोनों रंग नज़र आते हैं।

बादशाह ने ये शैर ईरान भेज दिया। वहाँ से ख़त आया के इस शायरा को यहाँ भेज दो। उसके जवाब में ज़ैब-उन-निसा ने ये लिखा के...

दर सुख़न मख़फ़ी मनम चूं बुऐ गुल दर बर्गे गुल
हर के दीदन मील दारिद दर सुख़न बेनद मिरा

फूल की खुश्बू फूल के पत्ते में मख़फ़ी है। इसी तरह मैं अपने कलाम के अन्दर मख़फ़ी हूँ। जिसे मेरे देखने की तमन्ना हो वो मेरा कलाम पढ़ ले। (यादे माज़ी, सफ़ा 29)

सबक़:- ज़ैब-उन-निसा जो अल्लाह की एक मख़लूक़ है। जब उसे कोई ग़ैर आँख नहीं देख सकती तो अल्लाह तआला जो ख़ालिके कुल है उसे कौन देख सकता है? और जिस तरह ज़ैब-उन-निसा के दीदार के तमन्नाई को ये कहा गया के उसे देखने के लिए उसका कलाम पढ़ो। बिला तश्बीह दीदारे हक़ के तमन्नाई के लिए भी लाज़िम है के वो उसका कलामे पाक

Scanned by CamScanner

कुरआन मजीद पढ़े। इसलिए के इस कलामे हक़ में हक़ के जलवे मौजूद हैं।

चीस्त कुरआन ऐ कलामे हक़ शनास
रोनुमाऐ रब नास आमद बा नास

हिकायत नम्बर(740) शायरी

एक शख़्स शायर था। लोग उसके शैर सुन सुन कर वाहवा किया करते थे। और कभी कोई यूं कहता। के ये शैर तो आपका हज़ार रुपये का है। और कभी कोई यूं कहता है के ये शैर तो आपका दो हज़ार का है। वो शायर खुश होकर उसे लिख लेता। एक मर्तबा उसकी माँ ने कहा के तू बेकार काम करता है। कोई ऐसा काम नहीं करता जिसमें कुछ आमदनी हो। उसने कहा। मैं बेकार कब हूँ। मुझ को तो बड़ी आमदनी होती है। किसी रोज़ हज़ार की और किसी रोज़ दो हज़ार की हो जाती है। माँ ने कहा अच्छा एक आने की सब्ज़ी ला दो। शायर साहब अपने अश्आर की कापी लेकर बाज़ार गए। और दुकानदार से कहा के एक आने की सब्ज़ी दे दो। उसने सब्ज़ी दी तो उसने कापी से एक शैर निकाल कर कहा लो ये दस रुपये का शैर है। दुकानदार ने कहा। जनाब! कैसा दस रुपये का शैर। आप ये अपने पास ही रखिये। मुझे तो एक आना दीजिए। अब आप बहुत घबरा गए। के मैं अपने इन शैरों को यूंही क़ीमती समझता रहा। यहाँ तो उनकी कुछ भी क़ीमत नहीं है। फौरन उस्ताद के पास आए और कहा के वाह हज़रत वा! मालूम हो गई आपकी सिखाई हुई शायरी की क़द्रो क़ीमत, मुफ़्त में मेरी उम्र ज़ाए की।

सबक़:- ये दुनयवी मदारिज व ऊरूज महेज जी खुश कर लेने की बातें हैं और कल क़यामत के बाज़ार में उनकी कोई क़ीमत ना होगी। वहाँ तो ईमान व तक़वा ही का सिक्का चलेगा।

हिकायत नम्बर(741) बुज़ुर्गों का तसर्रूफ

देवबंदी हज़रात के हकीम-उल-उम्मत मोलवी अशरफ़ अली थानवी साहब लिखते हैं के शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ झिंजानवी के साहबज़ादे को कीमिया का शौक़ था। एक दफा शाह साहब इसतंजा फ़रमा रहे थे। और ये साहबज़ादे कुछ दवायें कीमिया की लिए हुए खड़े थे। बाद फिराग़ ढेला पत्थर पर मारा। वो पत्थर सोने का हो गया। एक सुनार उसमें से कुछ काट कर ले गया। फिर शाह साहब ने फ़रमाया। के भाई अगर उसको कोई उठा कर ले गया तो नमाज़ियों को तकलीफ हो जाएगी। फिर दुआ की वो पत्थर हो गया।

Scanned by CamScanner

(मोलवी अशरफ़ अली साहब के मलफूज़ात हसन-अलअज़ीज़, सफ़ा 94)

सबक़:- ये तसर्रूफ व इख़्तियार है औलिया इक्राम का जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ग़ुलाम हैं। फिर हुज़ूर के अपने तसर्रूफ व इख़्तियार की क्या शान होगी। बावजूद उसके फिर भी अगर कोई शख़्स यूं कहने लगे या लिख दे के "रसूल अल्लाह के चाहने से कुछ नहीं होता" तो वो कितना बड़ा बे खबर और गुमराह है।

हिकायत नम्बर(742) नर्मी व सख़्ती

(मंज़ूम हिकायत तर्जुमा मसनवी शरीफ)

ज़ैब तन करके लिबास फाखरा
फिरता था इक शख़्स इत्राता हुआ
देख कर उसको हवा और आफताब
दोनों यूं करने लगे बाहम खिताब
देखें तो है कौन सा हम मैं क़वी
इस बशर को जो करे नंगा अभी!
ये कहा सुन के हवा ने मुशफकन
मैं अभी देती हूँ लो तुझ को दिखा
बन के झक्कड़ ज़ोर से चलने लगी
पगड़ी व टोपी ना छोड़ी एक की
पीपल और शीशम गए जड़ से उखड़
बड़ ने और कीकर ने भी दी छोड़ जड़
छप्पर और खपरैल जो मज़बूत थे
मिस्ल काग़ज़ हर तरफ़ उड़ने लगे
जिस क़द्र अपना दिखाती थी वो ज़ोर
कपड़ों को करता था वो क़ाबू बज़ोर
ज़ोर अपना कुल लगा कर थक गई
पर ना नंगा उसको हर गिज़ कर सकी
फिर कहा सूरज ने बस आपा संभाल
हम भी अब अपना दिखाते हैं कमाल
गर्म तदरीजन हुआ फिर आफताब
हो गए कपड़े बदन पर सब अज़ाब
रोंगटों से अर्क़ था फव्वरा ज़न

Scanned by CamScanner

अर्क़ में थे ग़र्क़ सारे मर्द व ज़न
इस बशर ने भी दिया अंगा उतार
बाँध के लुंगी अलग फैंकी अज़ार

सबक़:- *ख़ल्क़ और नर्मी से ले मतलब निकाल*
तू ना बे मौक़ा दिखा अपना जलाल
तेज़ी और सख़्ती से अक्सर नोजवान
अपने हाथों अपना करते हैं ज़याँ

(दर मंज़ूम, सफ़ा 79)

हिकायत नम्बर(743) शराब

एक बादशाह की मजलिस में एक ग़रीब मगर दाना शख़्स हाज़िर हुआ। तो उसे सफे आख़िर में जगह मिली। थोड़ी देर के बाद एक इल्मी गुफ़्तगू में वो शख़्स बोला। तो उसकी क़ाबलियत देखकर बादशाह बड़ा खुश हुआ। और उसे अपने क़रीब बुला कर अपने पास बिठा लिया। थोड़ी देर के बाद मजलिस में शराब लाई गई। और उस दाना शख़्स के सामने भी रखी गई। उसने बादशाह से अर्ज़ की के मुझे उससे माफ रखा जाए। ताके जिस अक़्ल व दानिश के तुफैल मुझे क़ुर्बे सुलतानी हासिल हुआ है। वो ज़ायल ना हो जाए। शराब पी ली। तो मुझ से बे अदबी के लफ़्ज़ सादिर होंगे। और ज़लीलो ख़्वार हो जाऊँगा। बादशाह उसकी इस बात से बड़ा खुश हुआ। और उसे ईनामो इक्राम से नावाज़ा। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 165)

सबक़:- शराब पीने से आदमी ज़लीलो ख़्वार हो जाता है। उससे बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(744) शेर शाह सूरी

दरबार अवाम व ख़्वास और फौजी जान निसार सिपाहियों से पटा पड़ा है। नक़ीब की पुर जलाल आवाज़ और चाविश की ललकार से दिलों पर हैबत तारी है। आदाब, सलाम नियाज़, बादशाह सलामत तसलीमात, खुदावंद आदाब खसूसी बजा लाओ। कोरनिश, बंदगी, नज़र, रूबरू ज़िल्ले सुबहानी, शहनशाह ज़ी जाह, जहाँ पनाह, सुलतान मौअज़्ज़म, की मिली जुली आवाज़ों से दरबारे सूरी गूंज रहा है। मसनद ख़ास पर शाही पोशाक में मलबूस शेर शाह सूरी जलवा अफरोज़ हैं। दायें बायें मुशीराने सलतनत और अरबाब हकूमत, जागीरदार, राजे, महाराजे अदब से गर्दन झुका लिए। सफ

Scanned by CamScanner

बस्ता खड़े हैं। मज़लूमों की दादरसी और ज़ालिमों की बीख कनी के फ़रमान जारी हो रहे हैं। उसी दौरान में चौबदार एक परेशान हाल हिन्दू बनिये को शेर शाह के हुज़ूर में पेश करता है। जो सरासीमगी के आलम में दो ज़ानों होकर कांपने लगता है।

शेर शाहः- "मा बदौलत से क्या कहना चाहते हो?"

बनियाः- माता पिता (और ये कह कर कांपते हुए हाथों से पान का एक बीड़ा शेरशाह की खिदमत में पेश कर देता है)

शेर शाहः- ठीक है। बादशाह रिआया का माता पिता ही होता है। मगर ये बीड़ा क्या है। और उसके पेश करने से तुम्हारा क्या मक़्सद है?

बनियाः- (हकलाते हुए) "माई बाप इज़्ज़त का मामला है और इज़्ज़त सब को प्यारी होती है।"

शेर शाहः- क्यों! क्या किसी ज़ालिम ने तुम्हारी इज़्ज़त पर हमला किया। बताओ! कोन है वो मर्दूद?"

बनियाः- हुज़ूर!.....नाम ना ही पूछें तो अच्छा है।"

शेर शाहः- परवाह नहीं! शेर शाह की नज़र में अराकीने सलतनत से लेकर मामूली खुद्दाम तक सब बराबर हैं। अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो। तो मुज्रिम को क़रार वाक़ई सज़ा दी जाएगी। बोलो! क्या नाम है उस मलऊन का। जिसने तुम्हारी इज़्ज़त पर हाथ डाला।"

बनियाः- (मुरतअश आवाज़ में) हुज़ूर! ग़ुलाम का मुलज़िम.....शहज़ादा आदिल है।"

शेर शाहः- "आदिल!.....क्या क्या आदिल ने?"

बनियाः- खुदावंद! मेरी बीवी अपने मकान की छत पर नहा रही थी। के इत्तिफाक़ से शहज़ादा आदिल की सवारी उस तरफ़ से गुज़री। हाथी पर सवार शहज़ादे की नज़र जब मकान पर पड़ी तो हुज़ूर की लोंडी पर पान का ये बीड़ा फैंक मारा। महाराज वो शर्म व ग़ैरत की मारी जब से रो रो कर हलकान हो रही है। क़सम भगवान की, भूक प्यास के मारे उसकी हालत इस क़द्र ग़ैर हो गई है के मुझ से देखी नहीं जाती। आख़िर मजबूर होकर आपके पास फ़रयाद लेकर आया हूँ।

शेर शाहः- (ग़ैज़ के आलम में) "आदिल को पाबजोलाँ हाज़िर किया जाए।"(सिपह सालार आज़म, शहज़ादा आदिल को हाज़िर दरबार करते हैं)

शेर शाहः- आदिल! तुझे इस वक़्त हाज़िर दरबार होने की वजह मालूम है? अगर नहीं तो सुन ले।

Scanned by CamScanner

तुझे इसलिए तलब किया गया है के तेरी ज़बान से अपनी मेहबूब रिआया की बेहुर्मती का वाक़ेया सुनं।

आदिल! तू इस वक़्त शहनशाह का फ़रज़ंद नहीं, बल्के क़ौम व मिल्लत का मुज्रिम है। क़ब्ल उसके के मा बदौलत तुझ को इब्रतनाक सज़ा दें, बोल! उज़्र में क्या पेश करना चाहता है।"

आदिल..... (सरासीमगी के आलम में) आलम पनाह! ये ग़ुलाम किसी ऐसे फ़ैल का मुरतकिब नहीं हुआ है जिससे दामने शाही आलूद हो। हक़ीक़त ये है के मुद्दई मुसतग़ीस की अहलिया अपने मकान की छत पर आज़ादाना तौर पर ग़ुस्ल कर रही थी के मेरा उस तरफ़ से गुज़र हुआ। उसको बरहंगी का अहसास दिलाने के लिए, ताके आईंदा ऐसी बे एहतियाती और लापरवाही का मुज़ाहेरा ना करे। मैंने पान का बीड़ा उस पर फैंक दिया। वरना खुदा शाहिद है के बन्दे की नीयत हर गिज़ हर गिज़ बुरी ना थी।"

शेर शाहः- आदिल! तेरा ये बयान ख़्वाह कितना ही दुरूस्त क्यों ना हो, लेकिन उससे मुसतग़ीस की तसल्ली नहीं होती। तू मुज्रिम है, ख़ायन है, ज़ालिम है। तुझे सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिए। (नज़ाकत हालात का अंदाज़ा करके वज़ीरे आज़म शहज़ादे की सिफारिश में कुछ कहना चाहता था। मगर शेर शाह ग़ैज़ो ग़ज़ब के आलम में ये कहकर उसको ख़ामोश कर देता है।

शेर शाहः- (हैबत नाक आवाज़ में) "हम उस वक़्त कुछ सुनने के लिए तैयार नहीं। क़ुरआन हकीम में कहा गया है के जो बात करो इंसाफ की रू से करो। ख़्वाह उससे अपने किसी क़राबत दार को नुक़सान ही क्यों ना पहुँचता हो।"

आदिलः- "अज़मत मआब! ग़ुलाम अपनी ग़लती का एत्राफ करता है। अफ़्व का तालिब है। आईंदा ऐसी ग़ुलती का मुरतकिब नहीं होगा।"

शेर शाहः- (ग़ुस्सा से कांपते हुए) क्या कहा। तुझे माफ कर दूं। आज तूने जो जुर्रात की है के दूसरे की बहू पर बीड़ा फैंका है। कल तू इतना दिलैर होगा के उनके उठवा कर अपने हवदज में रख लेगा। और फिर तेरी देखा देखी दूसरे उमरा और नवाब इससे ज़्यादा बेबाकियों का मुज़ाहेरा करेंगे। और इस तरह आख़िरत में तू मुझे रोसिय्या करेगा। क्या खलाक़ दो आलम ने तुझे हाथी की सवारी इसलिए अता की है के तू हाथी पर सवार होकर ग़रीबों के कच्चे मकानों के पास से गुज़रे और उनकी बहू बेटियों की बे पर्दगी करे। और उनके नामूस पर हमला करे। नहीं ऐसा नहीं होगा। तुझे सज़ा ज़रूर मिलेगी। बे इज़्ज़त का बदला बे इज़्ज़ती ही से लिया जाएगा। शेर शाही इंसाफ कहता

Scanned by CamScanner

है के तू अपनी बीवी को बनिये के मकान पर भेज और उससे कह दे के वो भी इसी तरह उसके सहन में गुस्ल करे। हम बनिये को हाथी पर सवार कर के भेजते हैं। जब तक वो तेरी बीवी पर इसी तरह बीड़ा ना फैंक लेगा। शेर शाही इंसाफ की तशंगी रफ़े ना होगी!"

आदिल! (आबदीदा होकर) खुदावंद नअेमत। अगर आदिल की बेहुर्मती का तमाशा देखना मक़्सूद हो तो गुलाम हाज़िर है। उसकी बे इज़्ज़ती से अगर हुज़ूर का मनशाऐ दिली पूरा हो सकता है तो भरे दरबार में उसके दुर्रे उड़वा कर अपनी आतिश ग़ज़ब फ़रो फ़रमा लें। मगर आलम पनाह! आदिल की बीवी भी रिआया के मेहबूब बादशाह की कुछ लगती है। वो अफीफा इस माामले में बिलकुल बेगुनाह है। उसे बे आबरू ना किया जाए।

शेर शाहः- अपनी इज़्ज़त का इतना पास है। मैं बादशाह हूँ। और मा सिवाए ज़ात बारी मेरे हुक्म को कोई रद करने वाला नहीं है। तो कहता है के आदिल की बीवी भी हमारी कुछ लगती है। नहीं शेर शाह की नज़र में मामूली बनिया हो या शहज़ादा आदिल। दोनों की बीवियाँ बराबर हैं। अगर बनिये की बीवी की बेइज़्ज़ती करते हुए आदिल को शर्म ना आई तो शेरशाह भी अपनी बहू की बेइज़्ज़ती बर्दाश्त कर सकता है। जाओ और हुक्म की तामील करो।"

(सारे दरबार में सन्नाटा छाया हुआ है। आदिल की मुतग़य्यर हालत देखकर अहले दरबार दिल ही दिल में कुढ़ रहे हैं। आखिर कार वही हिन्दू बनिया आगे बढ़ता है। और शेर शाह की ख़िदमत में गिड़गिड़ा कर अर्ज़ करता है)

बनिया! ....."बस महाराज मेरा मुक़दमा ख़त्म हुआ। मुझे दाद मिल गई। भगवान मेरे माता पिता की उम्र दराज़ करे। शहज़ादी हुज़ूर का इसमें कोई क़सूर नहीं। मैं उनकी शान में गुसताखी का मुरतकिब नहीं हो सकता। मैंने हुज़ूर का नमक खाया है। फिर भला हरम शाही की बे इज़्ज़ती कैसे बर्दाश्त कर सकता हूँ।"

शेर शाहः- मेरे मज़लूम बच्चे! ऐसा ना करो जिस हिम्मत और दिलैरी से दाद ख़्वाह हुए हो। इसी शान इसतक़लाल से इन्तिक़ाम भी लो। ताके आईंना किसी शहज़ादे, राजे, महाराजे को ऐसी जुर्रात ना हो।

बनिया....."महाराज की जै हो" लेकिन हुज़ूर शहज़ादे को काफी सज़ा मिल चुकी है। वो अपने किए पर नादिम और पशेमान हैं भगवान के लिए अब इससे ज़्यादा सज़ा की ज़रूरत नहीं।

शेर शाहः- सुनते हो आदिल? रिआया बादशाह को अपना माँ बाप

Scanned by CamScanner

तसव्वुर करती है। इसलिए हमें भी उससे वही सूलक करना चाहिए। जो माँ बाप अपनी औलाद के साथ करते हैं। जाओ और उस हिन्दू से माफी माँगो। जिसने फय्याज़ी से काम लेकर तुम्हें बे आबरू होने से बचा लिया। वरना क़यामत तक तुम किसी को मुंह दिखाने के क़ाबिल ना रहते।"

आदिल .....(बनिये से) मैं अपनी ग़लती का एत्राफ करते हुए तुम से माफी का तलबगार हूँ। और इक़्रार करता हूँ के आज से तुम्हारी बीवी मेरी बहन है। और मैं उम्र भर उसको अपनी बहन ही की तरह समझूंगा।

बनिया! शहज़ादे की जै हो।

शेर शाह:- (बनिये से) ठहरो! इधर आओ (गले लगा कर) आज से तुम्हरी बीवी हमारी बेटी है। (इसलिए जिस क़द्र ज़र व जवाहर दरकार हों, बे झिझक शाही खज़ाने से ले जाओ। (माखूज़)

सबक़:- इस्लाम अद् व अंसाफ की तालीम देता है। और मुसलमान बादशाह बड़े आदिल व इंसाफ पसंद होते हैं। और अपनी रिआया के हर फर्द का खयाल रखते हैं। जो लोग मुसलमान बादशाहों के ख़िलाफ परोपेगंडा करते हैं। वो बड़े झूटे हैं।

हिकायत नम्बर(745) नूर मोहम्मदी (स०अ०स०)

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की विलादत तय्यबा से बहुत पहले यमन का एक बादशाह था जिसका नाम अब्रहा था। उसके दिल में कअबा शरीफ की बड़ी अदावत थी। और वो चाहता था के मक्का मुकर्रमा पर चढ़ाई करके कअबा शरीफ को ढहा दे। चुनाँचे एक रोज़ वो अपने लश्कर समेत हाथियों पर सवार होकर कअबा शरीफ को ढहा देने के इरादे से मक्का मोअज़्ज़मा आ पहुँचा। क़ुरैश मक्का ने जब अब्रहा की चढ़ाई और उसके इरादे को मालूम किया तो वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास पहुँचे। और इस अम्र की शिकायत की। तो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने फ़रमाया। के घबराओ नहीं जिसका ये घर है वो खुद ही अपने घर की हिफाज़त फ़रमाने लेगा।

अब्रहा वादी मक्का में ख़ैमा ज़न था। वो अहले मक्का को बहुत तंग करने लगा। हत्ता के एक रोज़ उसने अहले मक्का के सारे ऊँट जिनमें चार सौ ऊँट सिर्फ हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के थे। जंगल से हंकवा लिए। और अपने क़ब्ज़े में ले लिए। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को जब पता चला तो क़ुरैश

Scanned by CamScanner

को साथ लेकर कोहे सबीर पर चढ़ आए। उस वक़्त हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की पैशानी मुबारक से नूरे मोहम्मदी मिस्ल हलाल चमकता नज़र आ रहा था। और उस नूर की शुआएँ कअबा शरीफ पर पड़ रही थीं। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने अपनी पैशानी के इस नूर को मालूम करके क़ौम को फ़रमाया। के वापस चलो और यक़ीन के साथ इतमीनान दिलाया के तुम तसल्ली रखो। ये चमक जो मेरी पैशानी में देखते हो, तुम्हें यही एक नेक फाल काफी है। अब्रहा के मामले में तुम कामयाब रहोगे।

अब्रहा को जब मालूम हुआ के अब्दुल मुत्तलिब मेरे पास ना खुद आए हैं, और ना ही क़ुरैश को आने दिया है तो उसने अपना एक आदमी हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के पास भेजा। वो आदमी जब मक्का शरीफ में दाखिल होकर हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के पास पहुँचा और उसकी आँख हज़रत अबदुल मुत्तलिब के चहरे पर पड़ी तो वो खुद ब खुद बे बस होकर हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के आगे झुक कर उनके पाऊँ पर गिर गया। और ज़बान से कुछ ना बोल सका। और फिर बे साख़्ता कहने लगा के मैं गवाही देता हूँ के तू बे शुबह सरदारी के लायक़ है। और तेरी पैशानी में एक ऐसा नूर है के जिसके सामने बग़ैर झुक जाने के कोइ चारा ही नहीं। फिर उसने निहायत नदामत के साथ अब्रहा का पैग़ाम दिया के अब्रहा कहता है के अगर अब्दुल मुत्तलिब जो सरदारे क़ुरैश है मेरे पास हाज़िर हो जाए। तो मैं बिला मुज़ाहेमत वापस चला जाऊँगा। और माल मक़्बूज़ा ऊँट वग़ैरा भी सब क़ुरैश के हवाले कर दूंगा। क़ुरैश ने ये बात सुनकर बड़ी आजिज़ी और इज़्त्राब के साथ हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को अब्रहा के पास जाने के लिए तैयार किया। चुनाँचे हज़रत अब्दुल मुत्तलिब तशरीफ़ ले गए। और जब अब्रहा के ख़ैमे के क़रीब पहुँचे तो अब्रहा की सवारी का अज़ीम-उल-जसा सफेद हाथी जो बड़ा मुहीब था और ख़ैमे के पास खड़ा किया हुआ था हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को देखते ही झुक गया। और अब्दुल मुत्तलिब की तरफ़ सर करके सज्दा करने लगा। और अल्लाह के हुक्म से यूं गोया हुआ।

अस्सलामू अलान्नूरिल्लज़ी फी ज़हरिका या अब्दल मुत्तलिब "ऐ अब्दुल मुत्तलिब! इस नूर पर सलाम जो तेरी पुश्त में है।"

अब्रहा ने ये मंज़र देखा तो बड़ा हैरान हुआ। और हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को बड़ी इज़्ज़त के साथ बिठाया। और हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने फ़रमाया के हमारे ऊँट वापस कर दे। अब्रहा बोला के ताज्जुब है के

Scanned by CamScanner

आपको ऊँटों की तो फिक्र है। मगर ये घर यानी कअबा जिसकी बदौलत आप सब की इज़्ज़त है। उसके ढहा देने से बाज़ रखने की आपने मुझ से कोई बात ही नहीं की। आपने फ़रमाया। ऊँट हमारे हैं। हमें उन्हीं की फिक्र है और कअबा शरीफ जिसका घर है वो खुद अपने घर को बचा लेगा। कअबे वाला जाने, या तुम जानो। ये कहकर आप वापस तशीफ ले आए। अब्रहा ने सारे ऊँट वापस कर दिए। लेकिन कअबा शरीफ को ढहा देने के लिए उसने लश्कर को हुक्म दे दिया के हाथियों पर चढ़कर और एक हाथी को सब से आगे रखकर कअबे पर फौरन हमला कर दो। ताके ये हाथी पल भर में कअबे को ढहा दें। चुनाँचे जब हाथियों को तैयार करके ये लश्कर कअबा की तरफ़ बढ़ा तो अगले हाथी ने जब बैत अल्लाह शरीफ को देखा तो वहीं अपना सर सज्दे में डाल दिया। हर चन्द फीलबान ने मारा और उठाने का चारा किया मगर उसका सर फिर ना उठा। फीलबान ने उसे पीछे जाने का इशारा किया तो वो फौरन उठ कर पीछे भागा। बाक़ी हाथी भी बे ज़ोर होकर उसके पीछे भाग निकले। उधर अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें आ लिया। और ऊपर से कंकरों का मीना बरसने लगा। जिससे अब्रहा और उसके तमाम साथी हलाक हो गए। (अनवार-उल-मोहम्मदिया, मतबूआ मिस्र, सफ़ा 11)

सबक़:- नूर मोहम्मदी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बर्कतें हर ज़माने में पाई जाती हैं। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ी अल्लाहो अन्ह को सरदारी इसी नूर की बदौलत मिली। और कअबा शरीफ की हिफाज़त अल्लाह तआला ने इसी नूरे पाक की बदौलत फ़रमाई। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नूर जानवरों को भी नज़र आ गया। फिर जो बराऐ नाम इंसान इस नूरे पाक का मौतरिफ़ ना हो और जिसे ये नूर नज़र ना आए। वो जानवरों से भी बदतर हुआ या नहीं? और ये भी मालूम हुआ के कअबा शरीफ को जानवरों ने भी सज्दा किया। फिर जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते और अल्लाह के इस घर की तरफ़ रूख नहीं करते वो *ऊलाईका कलअनआमी बल* हुम *अज़ल्लू* के मिसदाक हुए या नहीं?

हिकायत नम्बर(746) पैश्वाऐ कुल

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने बचपन शरीफ में एक बार घर से निकले तो फिर घर तशरीफ़ ना लाए। आपके मुतअल्लिक़ीन

Scanned by CamScanner

ने समझा के हुज़ूर गुम हो गए हैं। चुनाँचे आपकी तलाश शुरू हुई। एक साहब ऊँटनी पर सवार होकर हुज़ूर की तलाश कर रहे थे के उन्हें हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक दरख़्त के नीचे इसत्राहत फ़रमाते हुए मिल गए। उसने अपनी ऊँटनी को बिठाया। और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अनेह व सल्लम को अपने पीछे बिठा लिया। और ऊँटनी को जो उठाया तो उसने उठने से इंकार कर दिया। फिर उसने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को अपने आगे बिठाया। तो ऊँटनी उठ बैठी। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 268)

सबक:- हमारे सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को जानवर भी पहचानते हैं के हुज़ूर इमाम-उल-अंबिया और पैश्वाऐ कुल हैं। इसी लिए ऊँटनी ने हुज़ूर का पीछे बैठना गवारा ना किया। ऊँटनी के इस क़िस्से के मुतअल्लिक़ शायर ने लिखा है इस ऊँटनी ने गोया ज़बाने हाल से यूं कहा के

गोया थी उस ऊँटनी की ये सदा
बे खबर सरकार को आगे बिठा
जब तलक आगे ना बैठेंगे नबी
मैं क़यामत तक ना उठूंगी कभी

मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम की नबुव्वत व इमामत को जो नहीं मानता। वो जानवरों से भी गया गुज़रा है।

हिकायत नम्बर(747) दुर्रे यतीम (स०अ०स०)

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ी अल्लाह अन्हा फ़रमाती हैं के एक मर्तबा यहूदियों की एक जमात से मैंने कहा। के इस बच्चे मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के अजीब व ग़रीब हालात हैं। जब ये शिकमे मादर में था तो उसकी माँ अजीबो ग़रीब नूरानी मनाज़िर देखती रही। फिर जब ये पेदा हुआ तो उसकी माँ ने एक नूर देखा। जिसने सारे घर को रोशन कर दिया। और अब भी उसके अनवारो बर्कात से हम सब मुसतफीद हो रहे हैं। यहूदियों ने जब ये अलामात सुनीं तो एक दूसरे से कहने लगे के इस बच्चे को क़तल कर दो। फिर उन्होंने हज़रत हलीमा से पूछा के क्या ये यतीम है? तो हज़रत हलीमा ने उनकी नीयत भाँप कर जवाब दिया के मैं इसकी माँ हूँ। और इसका बाप भी है। ये सुनकर यहूदियों ने कहा अगर ये बच्चा यतीम होता तो दूसरी सारी अलामतें इसमें नबी आख़िर-उज़्ज़माँ की हैं हम उसे ज़रूर क़तल कर

Scanned by CamScanner

देते। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 269)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की पेशगोइयाँ कुतब साबिक़ा में मौजूद थीं। और हुज़ूर के ओसाफ व कमालात का ज़िक्रे पाक बिलतफसील उनमें था। और दुश्मनों को भी हुज़ूर की शाने पाक का इल्म था। मगर अदावत व हसद की बिना पर वो नहीं मानते थे। और ये भी मालूम हुआ के दुश्मन इस नूरे ऐज़दी को बुझाने की फिक्र में रहते थे। मगर उस नूरे पाक का अल्लाह हाफिज़ हुआ।

हिकायत नम्बर(748) आग की खाई

अबु जहल ने एक मर्तबा अपने दोस्तों से कहा के मोहम्मद (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) को मैं अगर कभी नमाज़ पढ़ते देख लूंगा। तो मैं उसकी गर्दन मार दूंगा। (मआज़ अल्लाह) चुनाँचे एक दिन जब के हुज़ूर अलेहिस्सलाम नमाज़ पढ़ रहे थे। अबु जहल इसी नापाक इरादे से आगे बढ़ा। लोगों ने देखा के वो हुज़ूर की तरफ़ बढ़ रहा था। के नागहाँ अपनी ऐड़ियों पर फिरा। यानी उल्टा भागता और मुंह पर हाथ रखे हुए नज़र आया। जैसे कोई अपने मुंह को किसी मुंह पर पड़ी हुई चीज़ से बचाता है। लोग देखकर हैरान हुए और उससे पूछा के तुझे क्या हुआ। तो कहने लगा के मैंने जब आपकी गर्दन पर वार करने को आगे होना चाहा तो मैंने देखा के मेरे और आपके दरमियान आग की एक खाई है। और बड़े बड़े पर मुझे नज़र आए। मुझे यक़ीन हो गया के अगर मैं आगे बढ़ा तो ज़रूर आग में गिर पड़ूंगा। चुनाँचे ख़ौफ के मारे मैं वहाँ से जल्द उल्टा दौड़ा। और बमुश्किल जान बचाई। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने जब उसका ये चश्म दीद वाक़ेया सुना तो फ़रमाया। अगर वो मेरे नज़दीक आ जाता तो फरिश्ते उसका जोड़ जोड़ जुदा करके आग की खाई में फैंक देते। (मुस्लिम शरीफ, सफ़ा 467 जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम *वल्लाहो यासीमूका मिनन्नासी* के मुताबिक़ अपने अल्लाह की ख़ास हिफाज़त में थे। और "सारी खुदाई इक तरफ़ फज़्ल इलाही इक तरफ़" के मिसदाक़ खुदा अपने मेहबूब का हाफिज़ था। ये भी मालूम हुआ के सारे फरिश्ते हुज़ूर के दरबान व ख़ादिम हैं। और ये भी मालूम हुआ के जा शख़्स हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का गुसताख है। उसके लिए एक होलनाक आग की खाई तैयार हो चुकी है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(749) रसूले बरहक़

हज़रत अब्दुलल्लाह इब्ने उमर रज़ी अल्लाहो अन्हा फ़रमाते हैं। के मैं जो कुछ रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह सल्लम से सुनता। तो याद रहने की ग़र्ज़ से लिख लिया करता था। क़ुरैश ने मुझे मना किया। के हर बात जो तुम हुज़ूर से सुनते हो। लिख लेते हो। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुंह मुबारक से बशरियत के बाइस कभी ग़ुस्से की हालत में कुछ निकल जाता है। ये सुनकर मैं लिखने से रूक गया। और हुज़ूर से ये बात कह दी। हुज़ूर ने अपने मुंह मुबारक की तरफ़ उंगली से इशारा फ़रमा कर फ़रमाया। बे शक लिखो, के इस मुंह से हर हालत में जो भी निकलता है हक़ ही निकलता है। (अबु दाऊद सफ़ा 257। जिल्द अव्वल)

सबक़:- मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम रसूले बरहक़ हैं। और आपकी ज़बाने अनवर से जो भी निकले हक़ ही होता है। और उस मुंह से हक़ के सिवा कुछ और निकल ही नहीं सकता। और ये बात हो ही नहीं सकती के हुज़ूर के मुंह मुबारक से झूट निकले। फिर जब अल्लाह के रसूल के मुंह से झूट नहीं निकल सकता तो खुद अल्लाह के मुतअल्लिक़ ये कहना के उसका झूट बोलना मुमकिन है। (मआज़ अल्लाह) क्यों सब से बड़ा झूट ना होगा। और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम हदीसे पाक लिख भी लिया करते हैं।

हिकायत नम्बर(750) दानाऐ ग़ैब

अबु जहल के लड़के हज़रत अक्रमा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने इस्लाम लाने से क़ब्ल एक जंग में एक मुसलमान अनसारी को शहीद कर दिया। जब ये ख़बर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को मिली तो हुज़ूर मुसकुरा दिए। सहाबा ने अर्ज़ की। हुज़ूर! आप मुसकुराए क्यों? फ़रमाया। इसलिए के अक्रमा ने एक मुसलमान को शहीद कर दिया है। मगर मैं अक्रमा को भी इस मुसलमान शहीद के साथ जन्नत में देख रहा हूँ। यानी दोनों ही जन्नती हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इस इर्शाद का राज़ उस वक़्त खुला, जब के अक्रमा भी मुसलमान हो गए। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 468)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम दानाऐ

Scanned by CamScanner

ग़यूब हैं। और आपकी नज़रों से कोई बात पनेहाँ नहीं। हत्ता के हर शख़्स के अंजाम की भी आपको ख़बर है।

हिकायत नम्बर(751) हर गिज़ नमीरद आँके दिलश ज़िन्दा शुद बअश्क़

एक शख़्स के मरने पर उसकी क़ब्र खोदी जा रही थी। के क़ब्र खोदते हुए साथ ही एक दूसरी क़ब्र ज़ाहिर हुई। जिसकी लहद से एक ईंट नीचे गिर गई। लोगों ने देखा के इस लहद में एक नूरानी शक्ल के बुज़ुर्ग सफेद लिबास में मलबूस तशरीफ़ फ़रमा हैं। और उनकी गोद में एक सुनहरा क़ुरआन मजीद रखा है। जिसके हरूफ भी सुनहरे हैं। और वो बुज़ुर्ग तिलावत कर रहे हैं। ईंट गिरते ही इस नूरानी बुज़ुर्ग ने अपना सर उठाया। और पूछा। क्या क़यामत क़ायम हो गई? कहा गया नहीं! उन्होंने फ़रमाया तो ये ईंट फिर इसी जगह लगा दो। चुनाँचे वो ईंट फिर उसी जगा लगा दी गई। (बशरा लसयूती अलेह अर्रहमत अली हामिश शरह अलसदूर, सफ़ा 80)

सबक़:- अल्लाह वाले मरते नहीं हैं। बल्के जगह बदलते हैं। और इन्तिक़ाल फ़रमाते हैं। और क़ब्रों में नूरानी लिबास में मलबूस होते हैं। और क़ुरआन भी पढ़ते हैं। फिर जिस ज़ात ग्रामी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बदौलत इन अल्लाह वालों को ये अब्दी हयात मिली। इस ज़ाते ग्रामी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए "मर कर मिट्टी में मिल गए" लिखना बे अदबी व बे दीनी की बात हुई या ना?

हिकायत नम्बर(752) बुज़ुर्गों की दुआ

शारेह बुखारी हज़रत इमाम इब्ने हज्र असक़लानी रहमत-उल्लाह अलेह के वालिद के घर कोई बच्चा पैदा होकर जीता ना था। आप बड़े कशीदा ख़ातिर और ग़मगीन होकर अल्लाह के एक वली हज़रत शेख सना क़िब्री रहमत-उल्लाह अलेह की बारगाह में हाज़िर हुए। और जीते जागते बच्चे के लिए दरख़्वास्ते दुआ की। हज़रत शेख़ अलेह अर्रहमा ने फ़रमा दिया। के जाओ तुम्हारी पशुत से एक ऐसा बच्चा पैदा होगा जो अपने इल्मो फज़्ल से दुनिया भर को भर देगा। चुनाँचे आपकी दुआ से हज़रत इमाम इब्ने हज्र असक़लानी साहब फतह अलबारी शरेह बुखारी पैदा हुए। (बस्तान-उल-मोहद्दिसीन अल माहद्दिस देहलवी, सफ़ा 114)

सबक़:- बुज़ुगों की दुआ से नामुरादों के दामन गोहर मुराद से पुर हो

Scanned by CamScanner

जाते हैं। बे औलादों को औलाद मिल जाती है। और ग़मगीन दिलों को राहत मिलती है। और ये भी मालूम हुआ के बड़े बड़े मोहद्दिसों और बुज़ुर्गों का ये दस्तूर था के मुश्किल के वक़्त वो अल्लाह वालों की बारगाह में हाज़िर हुआ करते थे। और अपनी मुश्किलात का इज़ाला चाहते थे। और ये भी मालूम हुआ के बुखारी शारीफ के शारेह हज़रत इमाम इब्ने हज्र रहमत-उल्लाह अलेह जैसे इमाम व मोहद्दिस एक बुज़ुर्ग की दुआ से पैदा होते हैं। फिर कौन है जो उन मोहद्दिसीन का ग़ुलाम होकर बुज़ुर्गों के तसर्रूफ का मुनकिर हो।

हिकायत नम्बर(753) खुदा की बन्दगी

अबु मनसूर जो सुलतान तग़रूल का वज़ीर था। खुदा तरस और मर्द दाना था। हर सुबह नमाज़ पढ़ता और मुसल्ले पर बैठ जाता और तुलू आफताब तक वज़ाईफ पढ़ता रहता। फिर खिदमत सुलतान में हाज़िर होता। एक दफा बादशाह को एक मुहिम पेश आ गई। सुलतान ने वज़ीर को ब तअजील तलब किया। आदमी बुलाने आया। तो वो मुसल्ले पर बैठा था। उसकी तरफ़ मुतवज्जह ना हुआ। हासिदों को बात हाथ आ गई। और शिकायत का मौक़ा मिल गया। उन्होंने बादशाह को बहकाया के बादशाह ने ऐसे ज़रूरी काम के लिए बुलाया। और वज़ीर ने परवाह नहीं की। बादशाह के ग़ुस्से की आग भड़क उठी। जब वज़ीर अपने मामूल वज़ायफ से फारिग़ हो गया तो बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर हो गया। बादशाह ने सख़्ती से पूछा के इतनी देर से क्यों आए। उसने कहा। ऐ बादशाह! मैं खुदा का बन्दा हूँ। और तेरा चाकर। जब तक उसकी बन्दगी से फारिग़ ना हो जाऊँ। तेरी चाकरी पर हाज़िर नहीं हो सकता। बादशाह उसके इस दिलैराना और सच्चे जवाब से आबदीदा हो गया। और उसकी बहुत तारीफ की और कहा। के खुदा की बन्दगी को मेरी चाकरी पर मुक़द्दम रख। ताके उसकी बर्कत से हमारे सब काम हो जायें। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 411)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे अपने अल्लाह की बन्दगी में कभी ग़फलत इख़्तियार नहीं करते। और अल्लाह की बन्दगी को दुनिया के हर काम से मुक़द्दम समझते हैं और उनके इस पाक जज़्बे की बदौलत अल्लाह तआला उनके हर काम में बर्कत पैदा फ़रमाता है।

हिकायत नम्बर(754) नासहाना कलमात

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ जब तख़्ते ख़िलाफत पर मुतमकिन हुए

Scanned by CamScanner

तो ख़्वाजा हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह को एक ख़त लिखा। जिसका मज़मून ये था:

"मेरे दोस्त तू जानता है के मैं एक बहुत बड़े काम में मुबतला हुआ हूँ। मुझे कुछ नसीहत कीजिए। और अपने हम नशीनान खुदा दोस्त में से एक को मेरे पास भेज दीजिए। ताके मैं उसकी मसालेहत से आसायश हासिल कर सकूं।"

जवाब में हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी अलेह अर्रहमा ने लिखा:-

"अमीर-उल-मोमिनीन का नामा मुतालअे से गुज़रा। और जो इशारा इसमें किया गया था वो समझ लिया। आपने जो फ़रमाया। के उसकी मसाहबत से आसायश हासिल करूं। तो आप समझ लें के जैसा शख़्स आपको चाहिए वो आपके नज़दीक ना आएगा। और आपसे बे नियाज़ होगा। और जो शख़्स आपके पास आएगा ऐसे की आपको ज़रूरत नहीं है। उसकी मसाहबत से आपको कोई नफा ना होगा। और जो आपने नसीहत के लिए लिखा है तो जान लो के जो कोई खुदा से डरता है। तमाम लोग उससे डरते हैं। और जो खुदा से शर्म रखता है लोग भी उससे शर्म रखते हैं। और जो कोई खुदा के हुज़ूर में गुनाहों पर दिलैरी का इज़हार करता है। तमाम लोग इस पर दिलैर हो जाते हैं और जो कोई आज ऐमन है। कल मख्दूश होगा। और जो आज मख़्दूश है कल ऐमन होगा। और जो कोई अपने आप पर मग़रूर होगा वो दुनिया व आख़िरत में माज़ूल होगा। दुनिया की तामम नेकियों का निचौड़ सब्र है। और सब्र का सवाब सब से ज़्यादा है। अपने तमाम कामों में खुदा की पनाह तलब कर और उस पर तवक्कल रख। जो कोई आँख को आज़ाद करता है के जो कुछ चाहे देखे। उसका अंदवा दराज़ हो जाता है। और जो कोई ज़बान को रिहा कर देता है। के जो कुछ चाहे कहे। वो गोया अपने आपको हलाक कर देता है। ग़ालिबन ये कलमात आपकी रहनुमाई के लिए काफी हैं।"
(मख़्ज़न अखलाक़, सफ़ा 413)

सबक़:- अल्लाह वाले दुनिया वालों से बे नियाज़ होते हैं और उनके दिलों में दुनयवी जाह व जलाल का कोई असर नहीं होता। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बड़े खुदा तरस और औलिया दोस्त ख़लीफा थे। और हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह के नासहाना कलमात पर पूरे पूरे आमिल थे।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(755) दिलजोई

एक बादशाह ने अपना एक एलची एक दूसरे बादशाह के पास इस ग़र्ज़ से भेजा के वो उसकी सलतनत की तरक़्क़ी के असबाब पर ग़ौर करके अपने मुल्क में भी उन्हीं क़वानीन को तरवीज दे। एलची ने बादशाह के पास पहुँच कर अपने आने की ग़र्ज़ व ग़ायत बयान की। इधर उधर की बातें होती रहीं। के चिराग़ का तेल ख़त्म हो गया। बादशाह खुद अपने हाथ से चिराग़ में तेल डालने लग गया। एलची ने कहा के ग़ुलाम को क्यों नहीं कह देते। बादशाह ने कहा। उसकी आँख लग गई है। और अभी उसकी कच्ची नींद है। इस वक़्त जगाना मुनासिब नहीं। मेरी सलतनत की तरक़्क़ी का राज़ रिआया की इसी तरह दिलजोई करने में है। आपका बादशाह भी इसी फ़रोतनी और दिलजोई को इख़्तियार करे। तो सलतनत खुद ब खुद तरक़्क़ी पज़ीर हो सकती है। (मख़्ज़न अखलाक़, सफ़ा 425)

सबक़:- नेक दिल हाकिम हमेशा अपनी रिआया की दिलजोई करते हैं और कभी किसी फर्द पर ज़ियादती नहीं करते।

हिकायत नम्बर(756) हज़ारों साल की उम्र

एक बादशाह की मजलिस में एक बुज़ुर्ग की बहुत तारीफ की गई। बादशाह को इश्तियाक़ हुआ। के उससे मिलूं। चुनाँचे फ़रमान भेज कर उनको बुलाया। वो बुज़ुर्ग जब मजलिस में आए तो उन्होंने सलाम के बाद कहा "बादशाह की हज़ारों साल की उम्र हो" बादशाह ने कहा के आपने पहले ही कलाम में हिमाक़त ज़ाहिर की। जो आप जैसे बुज़ुर्ग की शयाने शान ना थी। उसने जवाब दिया के आदमी की हयात बक़ाऐ बदन पर मोक़ूफ नहीं है। लेकिन नेक नाम की ज़िन्दगी वफात के बाद दूसरी हयात है। मेरी ग़र्ज़ ये थी के आपका नाम सफ़ा दहर पर हज़ारों साल तक क़ायम रहे। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 436)

सबक़:- अद्लो इंसाफ इख़्तियार करने से हमेशा के लिए नाम ज़िन्दा रहता है। और ऐसा शख़्स गोया मरता ही नहीं। बल्के वो हज़ारों साल तक जीता रहता है।

हिकायत नम्बर(757) अज़ाबे क़ब्र

हारिस बिन मिनहाल कहते हैं। एक बार मैं ईदगाह में गया। वहाँ मेहराब में सो गया। वहाँ एक क़ब्र भी थी। मैंने आवाज़ सुनी के एक लोहे

Scanned by CamScanner

के हथोड़े से उस मईयत को मार रहे हैं। उसके गले में एक ज़ंजीर है। और उसका चहरा सियाह हो गया है। और आँखें नीली पड़ गई हैं। वो कहता है। हाय मुझ पर क्या बला नाज़िल हुई अगर दुनिया वाले मुझ को देखें तो कोई उनमें से गुनाह का इरादा ना करे। वल्लाह मुझ से खताओं की बाज़ पुर्स हुई। और उसने मुझे हलाक कर डाला। कोई है जो मेरे घर वालों को खबर दे। हारिस कहते हैं मैं नींद से जाग उठा। और मैं हैबत व ख़ौफ में था। मैंने उसके घर वालों की तलाश की। तीन लड़कियाँ पाईं। मैंने उन्हें उसके हाल की ख़बर दी। और उसके दोस्तों से उसका माजरा बयान किया। वो सब उसकी क़ब्र पर आए और रोये और अल्लाह से उसकी मग़फिरत की दुआ की। बाद रोज़ के मैं फिर उसी क़ब्र के पास गया। और वहीं उसके मुतस्सिल सो गया। और उसे बड़ी अच्छी हालत में देखा। उसके सर एक ताज था। और उसके पाँव में साने की नअलैन थीं। उसने मुझ से कहा। जज़ाकल्लाह अनी ख़ैरा। तूने मेरी बेटियों और दोस्तों को ख़बर की। और उन्होंने मेरी मग़फिरत की दुआ की। (दवा-ए-क़ल्ब अलक़ासी बतज़कीर-उल-मौत-उन्नासी, सफ़ा 65)

सबक़:- अज़ाबे क़ब्र बरहक़ है। और अमवात के लिए मुसलमानों की दुआऐ मग़फिरत बड़ी अच्छी और ज़रूरी है। उससे गुनहगार मईयत को फायदा पहुँचता है। और ये भी मालूम हुआ के गुनाहों का इरतिकाब बहुत बुरा काम है। उससे क़ब्र में भी अज़ाब होता है। इसलिए हर शख़्स को गुनाहों से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(758) सुलतान को नसीहत सअदी

हज़रत शेख़ सअदी अलेह अर्रहमा एक मर्तबा हज से वापस हाते हुए शहर तबरैज़ पहुँचे। वहाँ के उलमा व सलहा से मुलाक़ात की। सुलतान अबाक़ा खान के दो मौतमिद वज़ीर थे। जिनका नाम ख़्वाजा शम्सउद्दीन और ख़्वाजा अलाउद्दीन था। हज़रत सअदी से उन दोनों को ख़ास अक़ीदत थी। एक रोज़ सुलतान की सवारी आ रही थी। औरये दोनों वज़ीर भी उसके हमराह सवार थे। इत्तिफाक़न हज़रत सअदी भी राह से गुज़र रहे थे। जब इन दोनों वज़ीरों ने हज़रत सअदी को देखा तो अपने घोड़ों से उतर कर हज़रत सअदी को निहायत अदब से सलाम किया। और उनके हाथ पाँव को बोसे दिए। ये हाल देखकर सुलतान न हाज़ीन से पूछा के शम्सउद्दीन ने कभी हमारी ताज़ीम भी इस मुसाफिर के बराबर नहीं की। ये कौन शख़्स है? जब दोनों वज़ीर

Scanned by CamScanner

हज़रत सअदी को मिल कर वापस आए तो सुलतान ने पूछा ये कौन शख़्स है। जिसकी तुमने इस क़द्र ताज़ीम की। वो बोले ये हमारे शेख़ हज़रत सअदी हैं। सुलतान को हज़रत सअदी से मिलने का शौक़ पैदा हुआ। और दोनों वज़ीरों की वसतात से हज़रत को अपने पास बुला कर उनकी सोहबत से मुसतफीद हुआ। हज़रत शेख जब चलने लगे तो सुलतान ने कहा मुझे कुछ नसीहत कीजिए। हज़रत सअदी ने फ़रमाया। नेकी या बदी के सिवा दुनिया से कोई चीज़ साथ ना जाएगी। अब तुम को इख़्तियार है। जो चाहो साथ ले जाओ। सुलतान ने कहा। अगर ये मज़मून नज़्म में हो जाए तो बेहतर है। आपने उसी वक़्त ये दो शैरों का क़तआ नज़्म करके पढ़ा...

शहे के पास रअय्यत निगाह मीदारिद
हलाल बाद खराजश के मज़्द चू पानी अस्त
वगर ना राई ख़ल्क अस्त ज़हर पारश बाद
के हर चै मेखोरदाज़ जज़िया मुसलमानी अस्त

तर्जुमा:- जो बादशाह रअय्यत की हिफाज़त करता है। खुदा करे उसके लिए खिराज (टेक्स) हलाल हो क्योंके वो उसकी निगहबानी की उजरत है। और अगर ख़लक़त का राई (निगहबान) नहीं है। तो वो उसके लिए सांप का ज़ेहर है। इस सूरत में जो कुछ खाएगा वो मुसलमानी जज़िया है। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 114)

सबक़:- दुनिया से कूच करने के बाद साथ अगर कोई चीज़ जाएगी तो नेकी या बदी। इसलिए आक़बत अंदेश अफ़राद अपने साथ नेकी लेकर जाते हैं और बदी से हमेशा किनारा कश रहते हैं। और ये भी मालूम हुआ के नेक दिल हाकिम अपनी रिआया के राई व निगहबान और उनके दुख दर्द में शरीक होते हैं।

हिकायत नम्बर(759) हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा की नसीहत

हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे। तो रास्ते में आपने एक अमीर शख़्स को देखा जो ज़र्क़ बर्क और मौअत्तर लिबास पहने अपने खिद्दाम व चश्म के साथ बादशाह के दरबार में जा रहा था। हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा ने इस अमीर आदमी को मुखातिब फ़रमा कर फ़रमाया। के ऐ अमीर शहर! तू कहाँ जा रहा है। उसने कहा। मैं बादशाह के

Scanned by CamScanner

दरबार में जा रहा हूँ। आपने फ़रमाया ज़रा ग़ौर कर के तूने जो ये शानदार और मौअत्तर लिबास पहना है। सिर्फ इसलिए के बादशाह के दरबार में हुज़ूरी के वक़्त तू फटे पुराने बोसीदा और बदबूदार लिबास से शर्मिंदा ना हो। हालाँके वो बादशाह भी तेरी तरह एक इंसान है। अब सोचो तो! के ये गुनाहों की कसरत और नाफरमानी की गंदगी से जो तूने अपनी रूह को मुलव्विस कर रखा है। तो कल क़यामत के रोज़ अंबिया व सालेहीन के दरमियान अहकम-उल-हाकिमन के दरबार में हाज़िरी देते वक़्त क्या तुम शर्मिंदा ना होगे?

अमीर पर इस कलाम का बड़ा असर हुआ। और उसने हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा की बैअत कर ली। और अल्लाह तआला की इबादत में मशग़ूल हो गया। (दुर्रत-उन्नासिहीन, सफ़ा 236)

सबक़:- अल्लाह तआला की बारगाह में हुज़ूरी के लिए हमें लाज़िम है के नेक आमाल और अख़लाक़े हसना से अपने आप को आरास्ता व मुज़य्यन कर लें। और गुनाहों की गंदगी से अपने आपको बचाए रखें। ताके अल्लाह के हुज़ूर शर्मिंदगी से दो चार ना होना पड़े।

हिकायत नम्बर(760) बादशाह और फक़ीर

एक दुरवैश बुज़ुर्ग किसी बादशाह अमीर से मिलने नहीं जाते थे। आख़िर बादशाहे वक़्त खुद चल कर उनके पास पहुँचा। जिस वक़्त उस दुरवैश ने देखा के बादशाह मेरे पास आया है। तो उसी वक़्त सज्दा-ए-शुक्र अदा किया। और वजह ये बताई के अल्लाह का शुक्र है के उसने बादशाह को मेरे पास भेजा। और मुझे उसके पास नहीं जाने दिया। क्यों दुरवैशों के पास बादशाह का आना इबादत है। और उनका उसकी तरफ़ चलना गुनाह है। बादशाह को सवाब हासिल हुआ। और मैं गुनाह से बच गया। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 502)

सबक़:- बड़े अच्छे हैं वो अमीर जो दुरवैशों की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं। और बहुत बुरे हैं वो बराये नाम दुरवैश जो अमीरों के दरवाज़ों पर हाज़री देते हैं। इसी लिए कहा जाता है के *"निअमल अमीरू अला बाबिल फक़ीरी व बिअसल फक़ीरू अला बाबिल अमीरी"* यानी वो अमीर बहुत अच्छा है जो फक़ीर के दरवाज़े पर नज़र आए। और वो फक़ीर बहुत बुरा है जो अमीर के दरवाज़े पर नज़र आए।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(761) ज़ेहरी नज़र

इसकंद्रिया के अहद में एक जानवर पैदा हुआ। जिसकी नज़र ज़ेहरीली थी। वो अपनी ज़हर भरी नज़र से जिसकी तरफ़ भी देखता। उसे हलाक कर देता। कोई उसके नज़दीक जाने की जुर्रात ना करता। बादशाह ने बड़े बड़े दानाओं से पूछा के इस जानवर को कैसे हलाक किया जाए। उस वक़्त ऐसे असलह तो थे नहीं। जिन्हें दूर से चला कर उसे ढेर कर दिया जाए। किसी दाना की समझ में कुछ ना आया। आख़िर अरस्ता तालीस ने एक तजवीज़ सोची। एक बहुत बड़ा आईया तैयार किया। उसे छकड़े पर रखवाया। और शीशे के पीछे एक आदमी बिठाया। के उसे उस रूख पर रखे जिधर वो मूज़ी जानवर हो। चुनाँचे वो मूज़ी जानवर छकड़ा देखकर आगे बढ़ा। जूंही उसकी नज़र आईने पर पड़ी और अपनी सूरत नज़र आई तो वहीं गिर कर मर गया। ख़लक़त ने खुदा का शुक्र अदा किया। इसकंद्रिया ने अरसता तालीस से पूछा के इसमें क्या हिकमत थी। अर्ज़ किया के ज़मीन के अन्दर गंदे बुखारात बन्द रहने के बाइस कई सालों के बाद ऐसे जानवर पैदा हो जाते हैं। उस जानवर की आँख में ज़हर क़ातिल था वो जिसकी तरफ़ देखता। हलाक हो जाता। जब उसने आईने पर नज़र की। तो उसकी ज़हर भरी नज़र का अक्स उस पर पड़ा। और सराईय्यत करके उसकी हलाकत का मौजिब बन गया। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 515)

सबक़:- जिस तरह इस मूज़ी जानवर की ज़ेहरीली नज़र का असर खुद उसी पर पड़ा और वो हलाक हो गया। इसी तरह हसद करने वाला इंसान भी अपनी हसद की आग में खुद ही जल भुन जाता है। और अपना ही नुक़्सान कर लेता है। जिस का वो हसद करता है। वो तो खुशिया मनाता रहता है। और हासिद अपने हसद की आग में जलता रहता है।

हिकायत नम्बर(762) निशाने मर्दमी

किरमान का एक बादशाह बड़ा सख़ी और मेहमान नवाज़ था। उसके मेहमान खाने का दरवाज़ा हर वक़्त खुला रहता था। और हर ख़ासो आम को खाना मिलता था। जो कोई उसके शहर में दाखिल होता है। वो उसका मेहमान होता था। और सुबह का नाश्ता और शाम का खाना उसके मेहमान खाने में तैयार मिलता था। एक दफा अज़्दुद्दोला ने उस पर लश्कर कशी की और किरमान का बादशाह ताबे मुक़ाबला ना लाकर क़िला नशीन हो गया।

Scanned by CamScanner

अज़्दुद्दोला का लश्कर हर सुबह महसूरीन से सख़्त जंग करता। जब रात होती तो किरमान का बदशाह दुश्मन के सारे लश्कर के लिए खाना भेजता। अज़्दुद्दोला ने पैग़ाम भेजा के क्या वजह है के हम से सारा दिन लड़ते भी हो और रात को रोटी भी भेजते हो। जवाब दिया, के जंग करना इज़हारे मर्दमी है और रोटी खिलाना निशाने मर्दमी है। आप अगरचै हमारे दुश्मन हैं मगर हमारे शहर में मुसाफिर हैं। ये मुरव्वत के खिलाफ है के आप हमारे शहर में हों और अपना खाना खायें।

अज़्दुद्दोला ये सुनकर रो पड़ा और कहा के ऐसे बामुरव्वत से लड़ना बे मुरव्वती है। चुनाँचे मुहासरा उठा कर चला गया। और फिर छेड़ छाड़ ना की। (तालीम-उल-अखलाक़, सफ़ा 508)

सबक़:- जो काम अखलाक़ व मुरव्वत की तलवार कर सकती है वो काम फौलाद की तलवार नहीं कर सकती।

हिकायत नम्बर(763) चुग़ल खौर पर लानत

ख़लीफा मौतसिम बिल्लाह बड़ा नेक दिल हाकिम था। उसके अहद में एक कमीने चुग़लखौर ने उसके पास रिपोर्ट की। के फलाँ आदमी फौत हो गया है। वो बड़ा दौलतमंद था। उसका एक ही बेटा है। अगर हुक्म हो तो उसके तर्के से कुछ हिस्सा लड़के के गुज़ारे के लिए रखकर बाक़ी सारा माल बतौर क़र्ज़ दाखिल ख़ज़ाना कर लिया जाए। और जब वो बड़ा हो तो उसे दिया जाए। इस तरीक़े से लड़के का माल मेहफूज़ रहेगा और ख़ज़ाना शाही मामूर हो जाएगा मौतसिम ने उस काग़ज़ की पुश्त पर लिख भेजा के।

मरने वाले को खुदा बख़्शे, और उसके मालो मीरास में बर्कत दे। और यतीम नेक नीयती से परवरिश पाए और चुग़लखौर पर खुदा की लानत हो। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 517)

सबक़:- नेक दिल हाकिम कभी किसी चुग़लखौर की बात पर ध्यान नहीं देते और अपनी रिआया के मालो मीरास पर कभी ना जायज़ क़ब्ज़ा नहीं करते और ये भी मालूम हुआ के जो लोग महज़ शरारत व तमअे से हुक्काम को बहकाने की कोशिश करते हैं। वो झूटे और चुग़लखौर होते हैं। और अल्लाह की लानत के मुसतहिक़।

हिकायत नम्बर(764) क़ब्रिस्तान

हज़रत अली बिन अलमग़ैरा रहमत-उल्लाह अलेह दिन रात क़ब्रिस्तान

Scanned by CamScanner

में रहा करते थे। हज़रत ख़ल्फ बिन सालिम अलेह अर्रहमा ने एक बार उनसे पूछा के आप कहाँ रहते हैं? तो फ़रमाया। वहाँ जहाँ अमीर ग़रीब का इमतियाज़ नहीं। और जहाँ सब बराबर हैं। पूछा के वो कौन सी जगह है? फ़रमाया। क़ब्रिस्तान। पूछा क्या आपको वहाँ रात की तारीकी में डर नहीं लगता? फ़रमाया। जब रात पड़ती है तो मैं उस वक़्त क़ब्र की तारीकी याद कर लेता हूँ। फिर मुझे रात की तारीकी नहीं डराती। पूछा। क़ब्रिस्तान के होलनाक मंज़र का आपके दिल पर असर नहीं पड़ता? फ़रमाया। मैं क़यामत के दिन का होलनाक मंज़र याद कर लेता हूँ। तो क़ब्रिस्तान का मंज़र मुझे नहीं डरा सकता। (रोज़-उल-रियाहहीन, सफ़ा 113)

सबक़:- इंसान को हर वक़्त क़ब्र का आलम और क़यामत का दिन याद रखना चाहिए। इसलिए के एक दिन मरना है और क़यामत के रोज़ अल्लाह के रूबरू पेश होना है।

हिकायत नम्बर(765) शैतान का अफसोस

एक मर्तबा एक अल्लाह के मक़्बूल ने शैतान को देखा। और उससे पूछा के ऐ इबलीस! क्या कभी तूने मुझ पर भी अपना दाव चलाया? शैतान ने कहा। के हाँ एक मर्तबा आपने खूब पेट भर कर खाना खाया था। और आप पर उस रोज़ नींद का कुछ ऐसा ग़लबा हुआ के आप रात का वज़ीफा पढ़े बग़ैर सो गए थे। वो बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे। खुदा की क़सम आईंदा मैं कभी खूब सैर शिकम होकर खाना ना खाऊँगा। शैतान बोला! अफसोस मैंने अपना राज़ बता दिया। मुझे भी खुदा की क़सम! आईंदा मैं भी कभी आप जैसे बुज़ुर्ग को नसीहत ना करूंगा। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 117)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों पर शैतान को ग़ल्बा हासिल नहीं होता। और मक़्बूलाने हक़ हर ऐसी बात से जो ग़फ़्लत में डाल देने वाली और शैतान को खुश करने वाली है। बचते हैं। इसी लिए हमें हुक्म है के *कूनो मआस्सादिक़ीना* "यानी सच्चों के साथ हो जाओ।" ताके उन पाक लोगों की तफाक़त व मईयत के सदक़े में हम भी शैतान से बच जायें।

हिकायत नम्बर(766) अल्लाह की एक मक़्बूल बंदी

हज़रत हबीब अजमी रहमत-उल्लाह अले की बीवी भी बड़ी इबादत गुज़ार और अल्लाह की मक़्बूल बंदी थी रात के वक़्त अपने ख़ाविंद को ये कह कर जगाया करती थी। के

Scanned by CamScanner

कुम या रजुलू ज़हाबल्लैलू व बेना यदेका तरीकुन बईदुन व ज़ादूना क़लीलुन व क़वाफिलुस्सालीहीना क़द सारत कुद्दामना व बक़ीना नहनू।

"उठये! के रात गुज़र गई और रास्ता तवील है। और ज़ादे राह क़लील। और अल्लाह वालों के क़ाफले चल भी दिए। और हम पीछे रह गए।" (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 116)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे रातों को भी उठ उठ कर अल्लाह की याद करते हैं। और मंज़िले मक़्सूद तक पहुँचने की फिक्र में रहते हैं। मालूम हुआ के दिन लहू व लअब में और रातें नींद में गुज़ारने वाले बड़े ही ना आक़बत अंदेश हैं। और पीछे रह जाने वाले हैं।

हिकायत नम्बर(767) आग में

एक बुज़ुर्ग वअज़ फ़रमा रहे थे और फ़रमा रहे थे के क़यामत के रोज़ हर एक को जहन्नुम के ऊपर से गुज़रना होगा। खुदा तआला फ़रमाता है।

इन मिनकुन इल्ला वारिदूहा काना अला रब्बिका हतमन मक़ज़िय्या।

वहाँ से एक यहूदी गुज़र रहा था। उसने ये आयत सुनी। तो कहने लगा के अगर ये बात दुरूस्त है तो फिर हम तुम बराबर हैं। इसलिए के हमें और आप सब को जहन्नुम से गुज़रना होगा। वो बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे नहीं ये बात नहीं गुज़रेंगे तो सभी। लेकिन हम सलामती के साथ उबूर कर जायेंगे, और तक़वा और ईमान की बदौलत बच जायेंगे। और तुम उस के अन्दर गिर जाओगे। फिर उन्होंने ये आयत पढ़ी।

सुम्मा नुनज्जिल लज़ीनत्तक़व व नज़ारूज़्ज़ालिमीना फीहा जिसिय्यन

यहूदी ने कहा के अगर मुत्तक़ी बचेंगे तो सुन लीजिए के मुत्तक़ी हम ही हैं। फ़रमाया। ये बात भी नहीं और ये आयत पढ़ी।

वरहमती वसीअत कुल्ला शैइन फसआक़्तुबहा लिल्लज़ीना यत्तक़ूना व यौतूनज़्ज़काता वल्लज़ीना हुम बिआयातिना योमिनूनल्लज़ीना यत्तबिऊनर्रसूला अन्नबिय्यलउमिय्या।

यहूदी ने का। अच्छा अपने दावा पर कोई दलील पेश कीजिए। फ़रमाया। लो ऐसी दलील पेश करता हूँ जिसे हर ख़ास व आम देख सकेगा। और वो ये है के एक कपड़ा मेरा और एक कपड़ा तुम्हारा लेकर दोनों को आग में डालते हैं। जिसका कपड़ा आग में जलने से बच जाए वो सच्चा। यहूदी ने कहा।

Scanned by CamScanner

मुझे मंज़ूर है। चुनाँचे उन्होंने अपना एक कपड़ा लिया। और एक कपड़ा उस यहूदी का लेकर यहूदी के कपड़े को अपने कपड़े के अन्दर लपेट कर जलती आग में डाल दिया। थोड़ी देर के बाद उसे निकाला गया। तो सारे लोगों ने देखा। के हज़रत का कपड़ा जो ऊपर था। बिलकुल महफूज़ है। और यहूदी का कपड़ा जो अन्दर था। जल चुका है। करामत देखकर वो यहूदी उसी वक़्त मुसलमान हो गया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 120)

सबक़:- ईमान एक ऐसी मुफीद और नाफे चीज़ है के उसकी बदौलत इंसान जहन्नुम की आग से बच जाता है। और ये भी मालूम हुआ के एक बुज़ुर्ग की तरफ़ मंसूब हो जाने से एक कपड़ा भी आग में जलने से बच गया तो जो इंसान किसी अल्लाह के मक़बूल बन्दे से निसबत पैदा कर लेगा वो क्यों ना निजात पा लेगा।

हिकायत नम्बर(768) सब से बड़ी दौलत

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलात वस्सलाम एक मर्तबा अपनी पूरी शानो शौकत के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे। परिंदे आपके सर पर साया किनाँ थे। और आपके दायें बायें आगे पीछे जिन्नो इन्स और वहवश व तयूर के लश्कर थे। इस बेमिस्ल शौकत को देखकर एक आबिद ज़ाकिर शख़्स ने कहा। ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आपको बहुत बड़ी सलतनत व दौलत अता फ़रमाई गई है। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मेरी इस सलतनत व दौलत से भी बड़ी दौलत खुदा की याद है। इसलिए के ये सलतनत व दौलत फानी है। और खुदा की याद बाक़ी है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 121)

सबक़:- खुदा की याद बहुत बड़ी दौलत है और जिसे ये दौलत हासिल है असल में अमीर वही है। और जो खुदा की याद से ग़ाफिल है वो ये चन्द रोज़ा हकूमत पाकर भी मुफलिस व क़िलाश है।

हिकायत नम्बर(769) रोज़ा

हज्जाज सक़फ़ी एक मर्तबा हज के लिए मक्का मोअज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरह के दरमियान जाते हुए एक मंज़िल में उतरा और दोपहर का खाना तैयार कराया। खाना तैयार हो गया तो अपने हाजिब से कहा। के किसी मेहमान को ले आओ। जो मेरे साथ बैठ कर खाना खाए। हाजिब ख़ैमे से बाहर निकला। तो उसे एक आराबी लेटा हुआ नज़र आया। उसने उसे जगाया। और कहा। चलो तुम्हें अमीर हज्जाज बुला रहे हैं। आराबी आया। तो हज्जाज

Scanned by CamScanner

ने कहा। मेरी दावत क़बूल करो। और हाथ धोकर मेरे साथ खाना खाने बैठ जाओ। आराबी बोला। माफ फ़रमाइये आपकी दावत से पहले मैं आपसे बेहतर एक करीम की दावत क़बूल कर चुका हूँ। हज्जाज ने कहा। वो किस की? वो बोला। अल्लाह की। जिसने मुझे रोज़ा रखने की दावत दी। और मैं रोज़ा रख चुका हूँ। हज्जाज ने कहा। इतनी सख़्त गर्मी में रोज़ा? आराबी ने कहा। हाँ! क़यामत की सख़्त तरीन गर्मी से बचने के लिए। हज्जाज ने कहा। आज खाना खा लो और ये रोज़ कल रख लेना। आराबी बोला। और क्या आप इस बात की ज़मानत देते हैं। के मैं कल ता ज़िन्दा रहूंगा। हज्जाज ने कहा। ये बात तो नहीं। आराबी बोला। तो फिर वो बात भी नहीं। ये कहा और चल दिया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 130)

सबक:- अल्लाह के नेक बन्दे किसी दुनयवी हाकिम के रौब में नहीं आते। और ये भी मालूम हुआ के जो लोग यहाँ की गर्मी बर्दाश्त करके रोज़ा रखते हैं। वो कल की होलनाक गर्मी से महफूज़ रहेंगे।

हिकायत नम्बर(770) यहूदी से मुनाज़रा

हज़रत अबुअलहज़ील फ़रमाते हैं के एक यहूदी बसरे में आया। और उसने आम मुतकल्लमीन को बन्द कर दिया। मैंने अपने चचा से कहा। के मैं इस यहूदी से मुनाज़रा करने के लिए जाना चाहता हूँ। चचा ने कहा। बेटा! वो मुतकल्लमीन बसरा की एक जमात को हरा चुका है। मैंने कहा। के मुझे ज़रूर जाना है। तो चचा ने मेरा हाथ पकड़ लिया। और हम इस यहूदी के पास पहुँच गए। तो मैंने उसे इस हाल में पाया। के वो इन लोगों से जो उन से बहस करते थे। अपने सामने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की नबुव्वत का इक़्रार कराता है। फिर हमारे नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नबुव्वत का इंकार करता है। फिर कहता है के हम उस नबी के दीन पर हैं के जिसकी नबुव्वत पर मुसलमानों ने भी इत्तिफाक़ किया। और तुम उस नबी की दीन पर हो। जिसकी नबुव्वत पर हम इत्तिफाक़ नहीं करते। तो हम इस दीन को क्यों मानें जिसका नबी मुत्तफिक़ अलेह नहीं है। और उसका इक़्रार क्यों करें? अब मैं उसके सामने पहुच गया। मैंने कहा। के मैं तुझ से सवाल करूं या तू मुझ से सवाल करेगा? उसने कहा। बेटा! क्या तू देखता नहीं के मैंने तेरे बड़ों को गुफ़्तगू में बन्द कर रखा है। मैंने कहा। तुम इन बातों को छोड़ो। और इन दो बातों में से एक को इख़्तियार करो। उसने कहा। मैं सवाल करता हूँ। के मूसा अल्लाह के अंबिया में से एक ऐसे नबी नहीं

Scanned by CamScanner

हैं, जिनकी नबुव्वत सही और उनकी नबुव्वत साबित है? तो उसका इंकार करता है या इक़्रार? अगर तू इंकार करता है तो अपने नबी की मुख़ालफत करेगा मैंने उससे कहा। के जो सवाल तू मूसा के बारे में मुझ से कर रहा है। मेरे नज़दीक इसमें दो सूरतें हैं। एक ये के मैं इक़्रार करता हूँ उस मूसा की नबुव्वत का जिसने हमारे नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नबुव्वत के सही होने की ख़बर दी और हम को हुक्म दिया के उनका इत्तिबा करें। अगर तू उस मूसा के बारे में सवाल कर रहा है। तो मैं उस मूसा अलेहिस्लाम की नबुव्वत का इक़्रार करता हूँ। और अगर तू जिस मूसा के बारे में सवाल कर रहा है वो ऐसा है के हमारे नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नबुव्वत का इक़्रार नहीं करता और उसने उनके इत्तिबा का हुक्म हमें दिया और ना उसने उनकी आमद की बशारत दी तो मैं उसको नहीं पहचानता। और ना मैं उसकी नबुव्वत का इक़्रार करता हूँ। तो मेरे जवाब से वो यहूदी बोखला कर रह गया। फिर उसने कहा तौरात के बारे में तू क्या कहता है। मैंने कहा। तौरात के बारे में भी मेरे नज़दीक दो सूरतें हैं। अगर वही तौरात मुराद है जो उस मूसा पर नाज़िल हुई जिसने हमारे नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नबुव्वत का इक़्रार किया था। तो ये तौरात हक़ है और अगर वो तौरात मुराद है जिसका तू दावा कर रहा है तो झूटी है। और मैं उसकी तसदीक़ नहीं करूंगा। फिर उसने कहा। मैं तुझ से अलेहदगी में एक बात कहना चाहता हूँ। जो सिर्फ मेरे और तेरे दरमियान होगी। मैंने खयाल किया के शायद कोई नेक बात हो। मैं उसके क़रीब हो गया। उसने आहिस्ता आहिस्ता मुझे गालियाँ देना शुरू कीं के तेरी माँ ऐसी और ऐसी है। और जिसने तुझे तालीम दी उसकी माँ ऐसी है। वो गालियों में बजाए कनाया के उरयाँ अलफाज़ इस्तेमाल कर रहा था। दर असल वो कोशिश ये कर रहा था के मैं उस पर हमला कर बैठूं। फिर उसको ये कहने का मौक़ा मिल जाए के मुझ पर हमला कर दिया गया हैं इसलिए मैं जा रहा हूँ। मगर वो इसमें कामयाब ना हो सका। फिर मैंने हाज़ीने मजलिस से खिताब किया। और मैंने कहा। अल्लाह तुम को इज़्ज़त दे। क्या मैंने उसको जवाब नहीं दिया? सब ने कहा। बेशक। फिर मैंने कहा। क्या इस पर लाज़िम ना था। के मेरे जवाबात को रद करता। सब ने कहा। ज़रूर फिर मैंने कहा। के उसने जब मुझ से सरगोशी की। तो मुझे ऐसी गालियाँ दीं। जिनसे हद वाजिब होती है। और मेरे उस्ताद को भी ऐसी गालियाँ दीं और उसने ये समझा था के मैं ये गालियाँ सुनकर उस पर हमला कर दूंगा। फिर उसको ये कहने का मौक़ा

Scanned by CamScanner

मिल जाएगा के हम ने उस पर हमला किया था। अब तुम पहचान चुके हो के ये किस क़माश का शख़्स है। बस फिर तो अवाम के हाथों से उस पर जूते पड़ना शुरू हो गए। और वो भागता हुआ निकला। और वहाँ लोगों के ज़िम्मे उसका बहुत सा क़र्ज़ था। उसको भी छोड़ गया। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 253)

सबक़:- बद मज़हब हमेशा अय्यारी व चालाकी के साथ अपने अक़ायद बातिला की तशहीर करते हैं। और ऐसे चालाक लोगों के दाव से बचने के लिए बड़ी दानाई और होशियारी दरकार होती है। और ये भी मालूम हुआ के बदअक़ीदगी का पोल आखिर खुल कर ही रहता है।

हिकायत नम्बर(771) हक़ बहक़ दार रसीद

शाम के धुंद लके में ख़ैरू माली बाग़ में पौदों को पानी दे रहा था। उस वक़्त वा ना जाने किन खयालों में खोया हुआ था। उसे अपने बीते हुए दिन बुरी तरह याद आ रहे थे। जब वो शेख गुलाम अली के हाँ काम करता था। कितना खुश था। वो शेख़ जी के हाँ। शेख़ साहब उस पर कैसे मेहरबान थे। उसका कितना खयाल रखते थे। उसके काम की कितनी क़द्र करते थे। और वो कैसी बुरी घड़ी थी। जब वो इस शहर से जाने लगे और ऐसे शरीफ आदमी की नौकरी से उसे अलग होना पड़ा।

और अब वो नए आक़ा के हाँ काम करता था। गुल्ज़ार खाँ के हाँ। ये खाँ साहब शेख़ जी की बिलकुल ज़िद थे। बहुत कंजूस, बद मिज़ाज़ और बहुत चिड़चिड़े। बहुत नाक़द्रे। चाहे कोई कितनी ही मेहनत करे। चाहे कोई कितना ही काम करे। पर उनका मुंह सीधा नहीं होता था। उनका लड़का दिलदार खाँ बाप से भी दो क़दम आगे था। ख़ैरू माली उन दो पाटों के बीच में पिस रहा था। मगर आदमी वफादार था। सब तकलीफ़ झेल रहा था। और जैसे तैसे निबह रहा था।

वो अपने खयाल में महू बराबर पानी दे रहा था। इतने में एक नर्म सी आवाज़ ने उसे चौंका दिया। उसने गर्दन उठा कर देखा। तो एक शरीफ आदमी उसके सामने खड़ा था। उसने पूछा। भला ख़ैरू माली को भी तुम जानते हो?

ख़ैरो झट बोला। मैं ही हूँ ख़ैरू माली। क्या बात है सरकार! मेरे लायक़ कोई काम? शरीफ आदमी ने पूछा। शेख गुलाम अली को जानते हो? अपने पुराने आक़ा का नाम सुनकर ख़ैरू का चहरा खुशी से खिल गया। बोला।

मैं खूब जानता हूँ। भला उन्हें ना जानूंगा। बरसों उनका नमक खाया। खुदा

Scanned by CamScanner

उनकी सी आदत सबको अता करे।

शरीफ आदमी ने ख़ैरू की तरफ़ ग़ौर से देखा। और ये इतमिनान करके के जो हुलिया उसे बताया गया था। ख़ैरू बिलकुल वैसा ही है। बहुत ग़मगीन अंदाज़ में बोला। तो भई! तुम्हें ये सुनकर अफसोस होगा के शेख़ जी का इन्तिक़ाल हो गया है। ख़ैरो को यु ख़बर सुनकर एक धक्का सा लगा। और उसे ऐसा मालूम हुआ के जैसे इस दुनिया में उसका कोई सहारा नहीं रहा। फिर वो फूट फूट कर रोने लगा।

शरीफ आदमी भी रो रहा था। उसने गला साफ करते हुए रूक रूक कर कहा। शेख़ जी मरते हुए तुम्हें दुआएँ दे गए हैं और तुम्हें एक तोहफा भेजा है। (कोट की जैब से थेली निकाल कर) ये दो हज़ार के नोट हैं। तुम ने शेख जी की बहुत मेहनत, ईमानदारी और वफादारी से ख़िदमत की है। ये उसका ईनाम है।

ख़ैरू बिलकुल खो गया। जैसे किसी ने इस पर जादू कर दिया हो। थोड़ी देर बाद हवास ठिकाने हुए। तो वो शरीफ आदमी जा चुका था।

उस वक़्त ख़ैरो के दिमाग़ में पहली बात जो आई वो ये थी के उस नौकरी को लात मारेगा। और ज़िन्दगी के बाक़ी दिन आराम व इतमिनान से गुज़ारेगा।

अब ये दौलत हिफाज़त से रखना थी। उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। अपनी झोंपड़ी तो उसकी बिलकुल ग़ैर महफूज़ थी। एक झाड़ी नज़र आई। जो घनी और एक तरफ़ थी। सुर्ख सुर्ख फूलों से लदी हुई। उस झाड़ी के पीछे एक पुराना पेड़ था। पेड़ की जड़ से ज़रा ऊपर एक खोख थी। बस यही जगह सबसे ज़्यादा महफूज़ उसे नज़र आई। ख़ैरू ने वो थेली उसमें ठूंस दी और उस पर एक पत्थर रख दिया।

ख़ैरू को थेली की तरफ़ से इतमिनान हो गया तो उसने सोचा। चलो खाँ साहब को जाकर आख़री सलाम कर आऊँ। उसे ये बिलकुल पता नहीं था। के दिलदार खाँ कहीं छुपा हुआ उसे थेली रखते हुए देख रहा है। ख़ैरो जूंही पेड़ के पास से हटा दिलदार खाँ पंजों के बल दौड़ता हुआ आया। और चुपके से थेली निकाल कर सीधा बाप के पास पहुँचा। उसे बताया के थेली ख़ैरो माली की है। वो इसे एक जगह से उड़ा लाया है।

लालची बाप ने थेली बेटे से ले ली। और कहा तुम इतमिनान रखो ये थेली कहीं बहुत हिफाज़त से रख दूंगा।

इतने में ख़ैरो भी पहुँच गया। गुलज़ार खाँ उस वक़्त बहुत खुश खुश था। और उम्मीद के खिलाफ बहुत मिलनसारी और इंसानियत के साथ बात कर

Scanned by CamScanner

रहा था। उसने बड़ी खुशी के साथ ख़ैरो का हिसाब साफ कर दिया। और दूसरी सुबह को उसे जाने की इजाज़त दे दी। दूसरे दिन जैसे ही ख़ैरो माली रूख़्सत हुआ दिलदार खाँ अपने बाप के पास दौड़ा हुआ आया। और थेली वाली बात पूछने लगा। गुलज़ार खाँ ने कहा। बेटा! ये थेली मैंने ऐसी जगह रख दी है के किसी कि फलक को भी ख़बर नहीं हो सकती।

दिलदार खाँ ने बे सब्री के साथ पूछा। आखिर किस जगह?

गुलज़ार खाँ ने बड़े इतमिनान के साथ बताया। वो जो घनी सी झाड़ी है ना। नीले नीले सुर्ख सुर्ख फूलों से लदी हुई उसके बिलकुल पीछे एक पुराना पेड़ है बस उस पेड़ की कोख में।

इतना सुनना था के दिलदार खाँ के पैरों तले से ज़मीन निकल गई। चहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगीं। गुलज़ार खाँ को बेटे की ये हालत देखकर बहुत अचंबा हुआ। दिलदार खाँ कमज़ोर आवाज़ में बोला।

ये क्या ग़ज़ब किया अब्बा आपने? ये थेली वहीं से तो निकाल कर लाया था मैं" (माहे तय्यबा, नवम्बर 1962ई॰)

सबक़:- हरीस व खायन कभी कामयाब व बामुराद नहीं होता। और पराये माल पर हाथ मारने वाले के पास ना दीन रहता है ना दुनिया। इसलिए खयानत व बददियानती और हर्स व लालच से हमेशा बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(772) कुत्ते की दुम

एक शख़्स को भूत अपने बस में करने का शौक़ पैदा हुआ। बिचारे ने बहुत मंतर जंतर सीखे। मगर भूत बस में ना आया। लाचार वो एक जंगल में रहने वाले फक़ीर के पास गया। और कहने लगा। हुज़ूर! मुझे कोई ऐसी तरकीब बताइये जिससे भूत मेरे क़ब्ज़े में आ जाए और मेरा सब काम धंदा कर दिया करे। फक़ीर अक़्लमंद इंसान था। उसने कहा। भूत बुरे होते हैं। इस खयाल खाम से बाज़ आ जाओ तुम उसको काम काज ना बता सकोगे। आख़िर में वो तुम्हें हलाक कर देगा। उसने कहा मेरे पास काम काज बहुत है। जिनसे वो कभी फर्सत ना पा सकेगा। आख़िर इस फक़ीर ने उसे एक अमल बता दिया। ये घर आकर वो अमल करने लगा। जब मीआद मुक़र्रा पर अमल पूरा हो गया तो भूत हाज़िर हो गया। भूत हाज़िर होकर कहने लगा। बताओ क्या करूं? उसने कहा। एक शानदार इमारत बना दो। एक पल में शानदार इमारत तैयार हो गई। उसने कहा, खेत जोत आओ। और खेत जोता हुआ तैयार था। उसने कहा। बहुत सा रुपया लाओ। ख़ज़ाना वहीं हाज़िर। ग़र्ज़ जो मुश्किल

Scanned by CamScanner

से मुश्किल और मुख़्तलिफ काम उसको बताए गए। सब कुछ किया कराया तैयार। अब कोई काम ना रहा। भूत ने कहा कोई काम बताओ। वरना मैं तुम को हलाक कर दूंगा। ये डरा और दौड़ कर फक़ीर के पास आया। और कहा हुज़ूर! भूत को जो कुछ कहता हूँ वो झट पट कर देता है। अब मेरे पास कोई काम नहीं। बताओ अब क्या करूं? वरना मुझ को वो हलका कर देगा। इतने भूत भी "मैं खाऊँ" "मैं खाऊँ" करता वहाँ पहुँच गया। फक़ीर के पास एक कुत्ता बैठा था। उसने उस आदमी को एक ख़ंजर देकर कहा के उस कुत्ते की दुम काट कर भूत को दो और उसे कहो के इसे सीधी कर दे" उस आदमी ने ऐसा ही किया। और कुत्ते की दुम काट कर भूत को दे कर कहा। के लो ये काम करो। के इसे सीधे कर दो। भूत ने कुत्ते की दुम हाथ में ली। एक दफा सीधी कर दी। फिर जब उसको छोड़ा तो टेढ़ी की टेढ़ी। एक दिन गुज़रा। दो दिन गुज़रे। भूत ने हज़ार कोशिश की मगर कुत्ते की दुम सीधी ना हुई। तब तो भूत बहुत घबराया और उस आदमी से कहने लगा। भाई! जो कुछ मैंने धन दौलत, रुपया पैसा तुझ को दिया वो सब कुछ तेरा। अब मुझ को छुट्टी दे। तू जीता मैं हारा। ये फौरन राज़ी हो गया। भूत अपने ठिकाने गया। और ये अपने घर चला आया। (माहे तय्यबा जनवरी 1963ई॰)

सबक़:- दुनिया भी कुत्ते की दुम है। कोई हज़ार कोशिश करे ये कभी सीधी ना होगी। हज़रत इंसान ने उसे सीधा करने की बहुत कोशिशें कीं। बहुत सी तदबीरें कीं। शिफाखाने बनाए। लेकिन मरीज़ मरते ही रहे। मदरसे और किताबें तालीं व इस्लाह के लिए जारी कीं लेकिन बदकारियाँ इसी तरह जारी हैं इंसाफ गाहें बनीं। मगर जरायम बदस्तूर मौजूद रहे। अलग़र्ज़ ये दुनिया कभी सीधी ना हुई है। और ना होगी। इसके सेंकड़ों काम ख़त्म कीजिए। तो हज़ारों और तैयार नज़र आयेंगे। पस हमें इसकी नीरंगी से इब्रत हासिल करके अपनी ज़िन्दगी को संवारना चाहिए।

हिकायत नम्बर(773) दूरअंदेशी

एक शख़्स ने एक जगह माल दफ़्न किया। और उस ढक्कन रखकर बहुत सी मिट्टी ऊपर डाल दी। फिर उसके ऊपर एक कपड़े में लपेट कर बीस दीनार रखे। और उन पर भी बहुत सी मिट्टी डाल कर जमा दी और चला गया। कुछ अर्से के बाद जब उसे अपने माल की ज़रूरत हुई तो उसने उस मुक़ाम को खोद कर देखा तो वो बीस दीनार ग़ायब थे। फिर उसने नीचे वाली बड़ी मिक़्दार का माल खोद कर देखा तो वो बदस्तूर मौजूद था। तो

Scanned by CamScanner

उसने अल्लाह का शुक्र अदा किया। के उसका ये माल बच गया और उसने इसी अंदेखे की बिना पर ऐसा किया था। के शायद कोई शख़्स मुझे माल दफ़्न करते हुए देखता हो तो वो ऊपर वाले बीस दीनार पाकर ये समझे के इतना ही माल दबाया गया था। और वही लेकर चलता बने। और ज़्यादा माल की तरफ़ उसका खयाल भी ना जाए। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 291)

सबक़:- दूरअंदेशी व हिकमत से बड़े बड़े फवायद हासिल होते हैं और इंसान नुक़्सानात से महफूज़ रहता है।

हिकायत नम्बर(774) ज़ोज-उल-क़हबा

हिन्दुस्तान का एक शायर एक अमीर के पास गया। और उसकी मदह की। उस अमीर ने ये जानते हुए के शायर अरबी ज़बान नहीं समझता कहा *तक़दम या ज़ोज-उल-क़हबती* यानी "एक बदकार औरत के ख़ाविंद आओ!" शायर ने अमीर से पूछा "*ज़ोज-उल-क़हबा*" का क्या मतलब है? तो अमीर ने कहा के लुग़ते अरब में इस अलफाज़ से उस शख़्स को मुराद लिया जाता है। जो शानदार मर्तबा का हो। और जिसका बड़ा महल हो। और उसके पास माल और सवारियाँ बहुत हों। और बहुत से उसके ग़लाम हों। शायर ने कहा। तो वल्लाह! ऐ अमीर! आप दुनिया के सबसे बड़े "*ज़ोज-उल-क़हबत*" हैं। अमीर ये सुनकर बड़ा शर्मिंदा हुा और कुछ ना कह सका। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 305)

सबक़:- किसी से मसख़रा पन और इसतहज़ करना बहुत बुरी बात है। और इस क़िस्म की हरकत से आदमी को बअज़ वक़्त बड़ी नदामत का सामना होता है। पस हर शख़्स को ऐसी बुरी हरकत से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(775) ज़मीन का बोझ

ख़लीफा-अल-हुक्म को अपना महल बनवाना था इत्तिफाक़ से जो ज़मीन पसंद की गई। उसमें एक ग़रीब बेवा का झोंपड़ा आता था। इस बेवा से कहा गया के ये ज़मीन क़ीमतन दे दे। मगर उसने इंकार किया। ख़लीफा ने ज़बरदस्ती उस ज़मीन पर क़ब्ज़ा करके महल बनवा लिया। इस बेवा ने क़ाज़ी की अदालत में हाज़िर होकर इसकी शिकायत की। क़ाज़ी ने उसे तसल्ली देकर कहा के इस वक़्त तुम जाओ। मैं किसी मुनासिब वक़्त तेरा इंसाफ करने की कोशिश करूंगा। ख़ालीफा अलहुक्म जब पहले पहल महल और बाग़ मुलाहेजा करने गया। तो उसी वक़्त क़ाज़ी भी वहाँ खुद एक गधा और

Scanned by CamScanner

एक खाली बोरा लेकर गया। और ख़लीफा से वहाँ से मिट्टी लेने की इजाज़त चाही। इजाज़त दी गई। उसने बोरे में मिट्टी भरकर अर्ज़ की। मेहरबानी करके इस बोरे को उठाने में मेरी मदद की जाए। ख़लीफा ने उसे एक मज़ाक़ समझा। और बोरे को हाथ लगाकर उसे उठाने की काशिश की। चूंके वज़न ज़्यादा था। ख़लीफा से ज़रा भी ना उठा। उस वक़्त क़ाज़ी साहब ने कहा।

"ऐ ख़लीफा! जब तू इतना बोझ उठाने के क़ाबिल नहीं तो क़यामत के दिन जब के हम सब का मालिक इंसाफ करने के लिए अर्श पर जलवा अफरोज़ होगा और जिस वक़्त वो ग़रीब बेवा जिसकी ज़मीन तूने बज़ोर ले ली है, अपने परवरदिगार से इंसाफ की ख़्वाहाँ होगी तो इस ज़मीन के बोझ को किस तरह उठा सकेगा?"

ख़लीफा इस तक़रीर से बड़ा मुतास्सिर हुआ। और फौरन वो महल मअे तमामा चीज़ों के उस बूढ़िया को दे दिया। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 421)

सबक़:- अपनी इमारत और बड़ाई के ज़ौम में कभी किसी ग़रीब के हक़ पर हाथ ना डालना चाहिए। इसलिए के कल क़यामत के रोज़ खुदावंद करीम को हर बात का फैसला फ़रमाना हैं और ज़ालिमों को उनके ज़ुल्म की सज़ा देनी है। और ये भी मालूम हुआ के नेक दिल हाकिम क़यामत के होलनाक दिन का ख़ौफ अपने दिल में रखते हैं और उस दिन की सख़्ती से बचने के लिए अद्लो इंसाफ से काम लेते हैं।

हिकायत नम्बर(776) एक लाख दीनार

एक अमीर आदमी मर गया। तो उसकी विरासत से एक लाख दीनार उसके लड़के को मिले। लड़का हज़रत ज़ुलनून मिस्री रहमत-उल्लाह अलेह के पास आया। और कहने लगा। मैं चाहता हूँ ये एक लाख दीनार आप पर खर्च कर दूं। हज़रत ने फ़रमाया के तू बालिग़ है या ना बालिग़? वो बोला ना बालिग़ हूँ। फ़रमाया के जब तक तू बालिग़ ना हो ले। तब तक इस माल का खर्च करना तुझे रवा नहीं।

जब वो लड़का जवान हुआ तो उसने हज़रत ज़ुलनून के हाथ पर तौबा की। और वो एक लाख दीनार दुरवैशों पर खर्च कर दिए। एक रोज़ वो जवान दुरवैशों के पास आया। इत्तिफाक़ से उन दुरवैशों को कोई काम दरपेश था। जिसमें उन्हें कुछ रक़म की ज़रूरत थी। वो जवान ठंडी सांस भर कर कहने लगा। के हाय अगर मेरे पास और सौ हज़ार दीनार होते तो मैं उन सबको भी उन दुरवैशों पर खर्च करता। हज़रत ज़ुलनून ये बात सुनकर समझ गए के वो

Scanned by CamScanner

असलकार से ग़ाफिल है और उसकी नज़र में क़द्रो इज़्ज़त दरहम व दीनार की है। आपने उस जवान को अपने पास बुलाकर कहा के फलाँ अत्तार की दुक्कान पर जाओ। और मेरी तरफ़ से कहो के तीन दरहम की फलाँ दवा दे दो। वो जवान गया और वो दवा लेकर आ गया। आपने फ़रमाया के उसको ओखली में डाल कर रगड़ो। और फिर तेल में गूंध कर उसकी तीन गोलियाँ बनाओ। और हर एक गोली में सूई के साथ सुराख़ करके मेरे पास ले आओ। उसने ऐसा ही किया। और तीन गोलियाँ तैयार करके ले आया। आपने उन गोलियों को हाथ में लेकर मला। और इन पर कुछ फूंक दिया। एक दम वो तीनों गोलियाँ याकूत के तीन टुकड़े हो गए। के कभी इस जवान ने वैसे ना देखे थे। फिर आपने फ़रमाया के इन्हें बाज़ार में ले जाओ। और देखो के क्या क़ीमत उठती है? लेकिन बेचना नहीं! वो जवान बाज़ार में गया। और वो टुकड़े दिखाए। हर एक की सौ हज़ार दीनार क़ीमत लगी। वापस ले आया। और कहा के ये क़ीमत उठती है। आपने फ़रमाया। अब फिर इन्हें ओखली में डालो। और इन्हें चूरा चूरा कर दो। और खबरदार! के ये दुरवैश रोटी पैसे के भूके नहीं हैं। उनके पास सब कुछ मौजूद है। उस जवान की आँखें खुल गईं। और उसकी नज़र में माले दुनिया की कुछ वक़अत ना रही। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 144)

सबक़:- अल्लाह के बन्दों को बज़ाहिर मफलूक-उल-हाल देखकर ये ना समझना चाहिए के उनके पास कुछ नहीं। मगर उनके दिल में माले दुनिया की कुछ भी वक़अत नहीं होती। और उनका फक्र फिक्र इख़्तियारी होता है।

हिकायत नम्बर(777) लज़ीज़ खाना

हज़र ज़ुलनून मिस्री अलेह अर्रहमा ने दस बरस तक कोई लज़ीज़ खाना तनावुल ना फ़रमाया। नफ़्स चाहता रहा। और आप नफ़्स की मुखालफत फ़रमाते रहे। के मैं अपने नफ़्स का कहा हर गिज़ ना मानूंगा। एक बार ईद की रात को दिल में कहा। के कल ईद के रोज़ अगर कोई लज़ीज़ खाना खा लिया जाए। तो क्या हर्ज है। हज़रत ने अपने दिल से कहा के मैं दो रकअत नफिल पढ़ूंगा। और हर दो रकअत में पूरा क़ुरआन ख़त्म करूंगा। अगर तू इस बात में मेरे साथ मुवाफ़क़त करे तो कल लज़ीज़ खाना मिल जाएगा। चुनाँचे आपके दिल ने इस अम्र मुवाफ़क़त की और आपने दूसरे रोज़ यानी ईद के दिन लज़ीज़ खाना मंगवाया। निवाला उठाकर मुंह में डालना ही चाहते थे के

Scanned by CamScanner

फिर रख दिया और ना खाया। यारों ने इसकी वजह पूछी तो फ़रमाया जिस वक़्त मैं निवाला मुंह के क़रीब लाया तो दिल ने कहा के देखा में आख़िर अपनी दस साल की ख़्वाहिश में कामयाब हो ही गया ना! मैंने उसी वक़्त कहा के अगर ये बात है तो मैं तुझे हरगिज़ कामयाब ना होने दूंगा।

उसी वक़्त एक शख़्स एक लज़ीज़ खाने का तबाक़ उठाते हुए हाज़िर हुआ। और कहने लगा ये खाना मैंने अपने लिए रात को तैयार किया था। रात को ख़्वाब में मैंने रसूले करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत की। हुज़ूर ने मुझ से फ़रमाया के अगर तू कल क़यामत के रोज़ भी मुझे देखना चाहता है तो ये खाना ज़ुलनून के पास ले जा। और उनसे जाकर कह के

हज़रत मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सिफारिश करते हैं। के दम भर के लिए नफ़्स के साथ सुलह कर लो। और चन्द निवाले इस लज़ीज़ खाने से खा लो।

हज़रत ज़ुलनून ये पैग़ामे रिसालत सुनकर वजद में आ गए। और कहने लगे। मैं फ़रमाँबरदार हूँ। मैं फ़रमाँबरदार हूँ और लज़ीज़ खाना खाने लगे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 145)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे नफ़्स के ग़ुलाम नहीं होते। और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की कुछ भी परवाह नहीं। करते। और वो अल्लाह की इबादत व इताअत ही में खुश रहते हैं। और उनकी ये शान होती है के अल्लाह व रसूल की ख़ातिर वो लज़ायज़े दुनयवी से मुजतनिब रहते हैं और खुदा और उसका रसूल खुद उन्हें खिलाता है। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के हालात से आज भी बा ख़बर हैं।

हिकायत नम्बर(778) हवा

हज़रत अबु मोहम्मद मुरतअश रहमत-उल्लाह अलेह से किसी ने आकर कहा। के फलाँ शख़्स हवा में उड़ता है। फ़रमाया के ये कोई कमाल नहीं। कमाल ये है के नफ़्स की हवा की मुखालफत करे। नफ़्स की हवा की मुखालफत करना हवा में उड़ने से कहीं ज़्यादा अफ़्ज़ल व आला है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 525)

सबक़:- इत्तिबाअे शरीअत सबसे बड़ा कमाल है। और इत्तिबाअे शरीअत ही से विलायत हासिल होती है। हवा में उड़ना या पानी की सतह पर

Scanned by CamScanner

चलना कोई कमाल नहीं। ये बातें अल्लाह के मक़्बूलों के सामने एक खेल से ज़्यादा वक़अत नहीं रखतीं।

हिकायत नम्बर(779) एक ताजिर

एक ताजिर अपने ऊँट पर बहुत सा माल तिजारत लाद कर मिस्र गया। मिस्र पहुँचा तो वहाँ हजूम में अपना ऊँट मअे सामान के खो बैठा बड़ा परेशान हुआ। और ऊँट की काफी तलाश की। मगर वो ना मिला। एक शख़्स ने उससे कहा के यहाँ एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग हज़रत अबु-अल-अब्बास व महूरी हैं। उनकी ख़िदमत में जाओ। वो दुआ करेंगे। तो तुम्हारा ऊँट मअे सामान के मिल जाएगा। चुनाँचे वो ताजिर हज़रत अबु अलअब्बास की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ की। के हुज़ूर! मेरा ऊँट मअे सामान के गुम हो गया है। मेरे लिए दुआ फ़रमाइये। हज़रत ने उसकी इस बात का तो कोई जवाब ना दिया। सिर्फ इतना कहा के आज हमारे पास दो मेहमान आए हैं। उनके लिए कुछ आटा और कुछ गोश्त दरकार है। ताजिर ने जब ये सुना। तो दिल ही दिल में कहने लगा। कमाल है मैं अपना दुख बयान कर रहा हूँ और इन्हें अपने आटे गोश्त की पड़ी है। बददिल होकर वापस आ गया। और वापस आते हुए उसे अपना एक मक़रूज़ नज़र आया। जिससे उसने काफी रक़म लेना थी। ये उसके दरपे हो गया। और कहने लगा। आज तू मैं कुछ ना कुछ लेकर ही छूड़ूंगा। उसने साठ दरहम अदा कर दिए। ये ताजिर बाज़ार गया। और दिल में कहने लगा के हज़रत अबुअलअब्बास ने आटे और गोश्त का कहा था। रूपे मिल ही गए हैं चलो ये चीज़ें खरीद लो। और चल कर हज़रत अबु अलअब्बास को दो। या तो सब कुछ मिल गया और या फिर ये साठ दरहम भी गए। चुनाँचे उसने कुछ आटा, कुछ गोश्त और बाक़ी पैसे जो बचे उनसे कुछ मीठी चीज़ें भी खरीद लीं। और सब कुछ लेकर हज़रत अबु अलअब्बास के पास जाने लगा। जब हज़रत के मकान के क़रीब पहुँचा तो क्या देखता है के उनका ऊँट मअे सामान के उनके दरवाज़े के पास खड़ा है ये देखकर वो हैरान रह गया। क़रीब जाकर देखा तो वाक़ई उसका अपना ही ऊँट था। और सामान भी सारा मौजूद था। खुशी से अन्दर गया। और सब चीज़ें अबु अलअब्बास के आगे रख दीं। हज़रत ने देखकर फ़रमाया। के आटे और गोश्त के अलावा ये चीजें कैसे हैं? ताजिर ने कहा। हुज़ूर! ये मैं अपनी तरफ़ से ज़ायद ले आया हूँ। फ़रमाया

Scanned by CamScanner

मुआहेदे में ये चीज़ें तो शामिल ना थीं अच्छा। अगर तुम ले आए हो तो हम भी ज़्यादा कर देते हैं। जाओ अपना सामान मंडी में लेकर जाओ। और अपना सामान अच्छी क़ीमत पर बेचो। और किसी दूसरे ताजिर के आ जाने का ख़ौफ मत करना।

अलबहरू फी यमीनी वलबरू फी शिमाली दरया मेरे दायें हाथ में और खुश्की मेरे बायें हाथ में है।

मतलब ये के जब तक तुम अपना माल ख़ातिर ख़्वाह दामों पर बेच ना लोगे। दूसरा कोई ताजिर मंडी में ना आएगा। चुनाँचे ये ताजिर मंडी में पहुँचा। तो और कोई दूसरा ताजिर वहाँ मौजूद ना था। उसने अपना सब माल अच्छे दामों में बेच लिया। तो फिर देखा के एक दम दूसरे ताजिर भी आ गए। और ये काफी नफा हासिल करके वहाँ से लौटा। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 210)

सबक:- अल्लाह वालों की बारगाह में हाज़री से बड़ी बड़ी मुश्किलें हल हो जाती हैं। और उनकी किसी बात के मुतअल्लिक़ बदगुमानी अच्छी नहीं। उनकी हर बात में कई भेद होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले अपने अल्लाह की मर्ज़ी के ताबअे होकर सारे आलम पर मुतसर्रिफ़ हो जाते हैं। और ये उनकी अल्लाह ही की उन पर अता होती है।

हिकायत नम्बर(780) एक जिन्न

हज़रत अबु अलफज़्ल जोहरी मिस्री अलेह अर्रहमा की एक शख़्स ने बड़ी तारीफ सुनी। और वो उनकी ज़ियारत की नीयत से मिस्र को रवाना हुआ। जब हज़रत की मजलिस में पहुँचा तो क्या देखता है के हज़रत ने बड़ा शानदार लिबास पहन रखा है। और बड़े अमीर नज़र आ रहे हैं। उसने दिल में सोचा के इस क़द्र दुनयवी शानो शौकत रखने वाला खुदा का बन्दा नहीं हो सकता। ये सोचकर वापस चला आया। वापसी में एक गली से गुज़रते हुए एक औरत को देखा जो रो रही थी। और बड़ी परेशान थी। उसने वजह दरयाफ़्त की तो बोली के मेरी एक ही नोजवान लड़की है। उसकी शादी का दिन क़रीब है। और आज अचानक उस पर किसी जिन्न का साया हो गया है। और वो सख़्त बीमार है। मैं ग़रीब औरत हूँ और परेशान हूँ के जिन्न के क़ब्ज़े से वो कैसे निकले। उसने कहा। तुम घबराओ नहीं। उसका इलाज मेरे ज़िम्मे रहने दो। और चलो मुझे अपनी लड़की के पास ले चलो। चुनाँचे वो औरत उसे घर ले आई। उसने लड़की को देखा जो अजीब व ग़रीब हरकात कर रही थी। उसने कुरआन पाक की आयात पढ़कर उस पर दम करना शुरू

Scanned by CamScanner

किया। तो जिन्न बज़बान फसीह बोला।

"सुन लो मैं उन सात जिनों मे से हूँ जो हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के दस्ते हक़ परस्त पर ईमान लाए थे। हम सातों आज हज़रत अबु अलफज़ल के पीछे नमाज़ पढ़ने के लिए आए थे। वही हज़रत अबु अलफज़ल जिनके मुतअल्लिक़ तुम अपने दिल में बदगुमानी पैदा करके लौट आए हो। बदनसीब हो तुम जो लौट आए। हम उनके पीछे नमाज़ पढ़ने को हाज़िर हुए थे। इस लड़की ने हम पर निजासत फैंकी। मेरे साथी तो बच गए। मगर वो निजासत मुझ पर पड़ी। और मैं नमाज़ से रह गया। इसी गुस्से से मैंने उसे पकड़ा है। और तुम ने भी जो हज़रत अबु अलफज़ल के मुताल्लिक़ बदगुमानी की है। उसका भी मुझे रंज है। तुम तौबा करो। और हज़रत की ख़िदमत में फिर हाज़िरी दो" उस शख़्स ने कहा। अच्छा मैं सच्चे दिल से तौबा करता हूँ। और अभी फिर वापस जाता हूँ। मगर तुम भी अब इस लड़की को माफ कर दो। चुनाँचे उस जिन्न ने कहा। लो मैं जाता हूँ ये कहकर जिन्न चला गया। और लड़की अच्छी हो गई।

फिर ये शख़्स भी वापस हुआ। और हज़रत अबु अलफज़ल की खिदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत अबु अलफज़ल ने उसे आता हुआ देखकर मुसकुराते हुए फ़रमाया।

"जब तक जिन्न ने नहीं कहा तुम ने हमारी बुज़ुर्गी तसलीम नहीं की।" (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 415)

सबक़:- अल्लाह वालों से कभी बदगुनाम ना होना चाहिए। उन लोगों के दिलों में बहरहाल अल्लाह की याद होती है। और दुनिया से उनका ताल्लुक़ महेज़ ज़ाहिरी और कई हिकमतों की बिना पर होता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की मक़्बूलियत जिनों में भी होता है। और ये नफ़ूस क़ुदसिया जिन्नो इंस के मरजअे व मतबूअ होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों पर दिलों के इरादे और खयालात भी मुनकशिफ हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(781) माँ का हक़

एक शख़्स ने अपनी माँ को कंधे पर सवार करके सात हज कराये। सातवें हज पर खयाल आया के शायद मैंने हक़ मादरी अदा कर दिया। रात को ख़्वाब में देखा के कोई कह रहा है। सर्दी सख़्त थी। तू बच्चा था, माँ के पास सो रहा था। तूने पाखाना कर दिया। तेरी माँ ने उठकर बिस्तर धोया,

Scanned by CamScanner

ग़रीबी की वजह से दूसरा बिस्तर ना था। उसी गीले बिस्तर पर कड़कती सर्दी में लेट गई। और तुझ को रात भर अपने सीने पर लिटाए रखा। तू कहता है हक़ अदा हो गया। ऐ नादान! अभी तो उस एक रात का भी हक़ अदा नहीं कर सका। (तालीम-उल-अखलाक़, सफ़ा 267)

सबक़:- माँ बाप का बहुत बड़ा हक़ है और बाप से भी ज़्यादा माँ का हक़ है। खुश क़िस्मत हैं वो लोग जो अपने माँ बाप की ख़िदमत करके अल्लाह तआला को खुश कर लेते हैं। और ये भी मालूम हुआ के माँ बाप की जितनी भी ख़िदमत की जाए कम है।

अदब-उल-अरब

अहले अरब की फ़ुसाहत व बलाग़त और ज़हानत की दो दिलचस्प हिकायतें

हिकायत नम्बर(782) अरब का एक मेहमान और एक लड़की

अरब का एक शख़्स क़बीला बनी आमिर की किसी औरत के यहाँ मेहमान हुआ। मेहमान नवाज़ी तो अहले अरब के रगो पै में सराईय्यत किए हुए थी इसलिए ख़ातिर व मदारात में कोई दक़ीक़ा बाक़ी ना छोड़ा। इत्तिफाक़ से जिस रोज़ वो जाने लगा। उसकी ज़बान से ये शैर निकला के जिसमें क़बीला बनी आमिर की हिज्जो थी।

अशआर का तर्जुमा इस तरह है

तर्जुमा:- (ऐ मुख़ातिब) मुझ को तेरी जान अज़ीज़ की क़सम! क़बीला बनी आमिर के बदन पर जब तक उनकी खाल (सालिम) रहती है उस वक़्त तक वो (अपने) कुर्तों को पुराना नहीं होने देते। यानी बदनी तकालीफ को वो माली नुक़सान की ब निस्बत बहुत आसान समझते हैं।

अपने मज़ाक़ के मवाफिक़ वो इस शैर को आहिस्ता आहिस्ता गुनगुना रहा था। इत्तिफाक़ से इस मेज़बान औरत ने भी सुन लिया। अव्वल तो अश्आर हिज्जोविया अललअमूम क़त्ल कर देने वाले सलाह से ज़्यादा समझते थे। और अगर इस पर नज़र डाली जावे के क़त्ल में तल्फ रूह है। और हिज्जो में आबरूरेज़ी। तो एक हद तक ये खयाल फासिद भी ना था। दूसरे मेहमान नवाज़ी के पूरे एहसान के बदले में ऐसी सर्दमोहरी क़ाबिले बर्दाश्त भी ना थी। ताहम उसने ज़ब्त से काम लेकर अपनी लोंडी के ज़रिये से मेहमान से पूछा के मैंने आपकी मदारात और ख़ातिर में कोई कोताही की थी? उसने कहा के नहीं नहीं हर गिज़ नहीं। लोंडी ने कहा। के फिर आपको क्या ज़रूरत

Scanned by CamScanner

पेश आई के आप इस क़िस्म के अश्आर तसनीफ करें। जिनसे हमारे क़बीले की कसरे शान होती है। उसने कहा के मेरी ज़बान से ये शैर बग़ैर क़सद के निकल गया। मैंने अमादन ऐसा नहीं किया। लोंडी ने यही जवाब उस मेज़बान औरत को सुना दिया। मेहमान को खयाल था के खुदा जाने ये औरत क्या फितना बर्पा करेगी। मैं इसी के क़बीले में हूँ। अगर उसने अपने क़बीले वालों से कह दिया तो वो मेरी जान के दरपे होंगे। इसलिए चाहता था के जल्द से जल्द वहाँ से रवाना हा जावे। थोड़ी देर ना गुज़री थी के एक नो उम्र बच्ची को देखा। के वो कमान से निकल कर बाहर आई। और उस मेहमान के पास बैठकर इधर उधर की बातें करने लगी। उस लड़की की बातें कुछ ऐसी प्यारी प्यारी थीं। के वो शख़्स उसकी बातों में अपने उस ख़ौफ को भी भूल गया। जो अभी थोड़ी देर हुई के उसको जल्द रवाना हो जाने पर मजबूर कर रहा था। जब उस लड़की ने अपनी खुदा दाद फिरासत से मालूम कर लिया के मेहमान अब मुतमईन हो गया है तो बातों बातों में उससे दरयाफ़्त किया। के ऐ इब्ने अम (चचा ज़ाद भाई) आप किस क़बीले के हैं। जवाब दिया के मैं क़बीले तमीम का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- क्या आप उस शख़्स को जानते हैं के जिसके ये शैर हैं।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला तमीम को क़ता(एक जानवर का नाम है जो पानी का पता लगाने में ज़र्ब-उल-मिस्ल है)

से ज़्यादा दनाईय्यत और कमीना पन का रास्ता मालूम है और अगर वो इज़्ज़त और शराफत के रास्तों पर चलते तो (यक़ीनन) गुमराह होते।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

मैं देखता हूँ के रात के ज़ुलमत को दिन दूर कर देता है(मगर) मैंने ज़िल्लत और रूसवाईयों की आदतों को तमीम से अलेहदा होते हुए कभी नहीं देखा।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

(उनकी नामर्दी इस हद को पहुँच गई है के(अगर कोई मच्छर जूं की पीठ पर (सवार होकर) क़बीला-ए-तमीम की दोनों सफों पर हमला कर दे तो उनको बजुज़ भागने के और कुछ भी बन ना पड़े।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर क़बीला-ए-तमीम मअे अपनी तमाम जमातों के किसी बंधी हुई च्यूंटी पर हमला कर दें तो वो च्यूंटी (भी) उनको क़लील समझे।

Scanned by CamScanner

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला तमाम गधे के बदत्तर और ज़लील बच्चे की तरह है के अपनी माँ का दूध पीता है। और अगर इधर उधर हो जाती है तो बहज़्ज़ार ज़िल्लत उसके पीछे पीछे लगा रहता।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

हम ने (मेहमान नवाज़ी में) जानवर ज़िबह किए और उन पर खुदा का नाम लिया। लेकिन क़बीला-ए-तमीम ने एक दिन भी ज़िबह ना किया। के उनको बिस्मिल्लाह अल्लाहू अक्बर कहने की नोबत आती।

अगरचै छोटी लड़की के सवाल का ज़ाहिरी मनशा उस शायर का नाम मालूम करना था। मगर मेहमान ऐसा बेवक़ूफ ना था के लड़की के अलफाज़ का मतलब यही समझता। वो समझ गया के उससे लड़की का मनशा क्या है। और अगरचै ये अश्आर इस खूर्द साल लड़की की बदीहा गोई और तेज़ी तबअे का नतीजा थे। मगर मेहमान को ये खयाल हुआ के किसी शख़्स ने क़बीला तमीम की हिज्जो की है जो इस क़द्र मश्हूर हुई के बच्चे बच्चे की ज़बान पर है। ज़िल्लत के खयाल से कांप गया। सर से पैर तक पसीना पसीना हो गया। और ज़िल्लत से बचने की कोई तदबीर बजुज़ उसके समझ में ना आई। के अपने बयान का इंकार करे। चुनाँचे उसने उन अश्आर को सुनकर घबरा कर कहा। अज़ीज़ बहन! मैं सफर की तैयारी में मसरूफ था। तुम ने मेरे क़बीले का हाल दरयाफ्त किया। मेरा दिल तो सामान सफर में मशगूल था। ज़बान से बे इख़्तियारी में निकल गया के मैं क़बीले तमीम का शख़्स हूँ। वरना हक़ीक़त ये है के मेरा नसब क़बीले तमाम से नहीं मिलता है। ना मैं इस क़बीले में से हूँ।

लड़कीः- झूट से ज़्यादा शर्मनाक चीज़ खुदा की पैदा की हुई चीज़ों में से बमुश्किल मिल सकेगी। अच्छा! अगर आप क़बीले तमीम में से नहीं हैं तो फिर किस क़बीले से हैं?

मेहमानः- अज़ीज़ बहन! खुदा की क़सम मैंने जो कुछ कहा। सच कहा। मुझ को ज़रूरत क्या थी। के मैं झूट की निजासत से अपनी ज़बान को आलूदा करता। शायद तुमने सुना होगा के अरब में एक बहुत ही ज़ी इज़्ज़त क़बीला बनी ज़बा के नाम से पुकारा जाता है। मैं उसका एक शख़्स हूँ। मुमकिन है के तुम ने उसके वो औसाफ और मफाख़िर बवजह कम सुनी और दूर होने के ना सुने हों जिनको अरब को छोटा बड़ा जानता है। लेकिन ग़ालिबन नाम ज़रूर सुना होगा।

Scanned by CamScanner

लड़की:- आपने बजा फ़रमाया। मैं चन्द शैर और पढ़ूं क्या। आप अज़राहे करम बतला सकेंगे के ये शैर किस के हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

ज़बा का हर हर शख़्स दनाईय्यत की वजह से नीलगूं चश्म है।

मेहमान ने जब शैर सुना तो दिल में अपने आपको खुद ही मलामत करने लगा। के ख़्वाह-म-ख़्वाह झूट भी बोला। और काम भी ना चला। अगर नाम लिया ही था तो किसी ऐसे क़बीले का नाम लिया होता जो ऐसा ज़लील तो ना होता के उसकी हिज्जो के अश्आर बच्चा बच्चा की ज़बान पर हैं। उस लड़की की भी कुछ उम्र है? इस क़बीला-ए-बनी ज़बा की दनाईय्यत यहाँ तक तो पहुँच गई के उसकी हिज्जो के अश्आर इस खुर्द साल लड़की के कानों तक पहुँच गए। अब मैं किसी मुंह से कहूंगा के मैं इस क़बीले का नहीं हूँ। उसने मेरे पहले इंकार ही की कब तसदीक़ की थी जो अब करेगी। लेकिन ये ज़िल्लत तो क़ाबिले बर्दाश्त नहीं के मैं ऐसे क़बीले की तरफ़ मनसूब हूँ। जिसकी हिज्जोयों ज़बान ज़द हो और सब्क़त लिसानी तो आख़िर बड़े बड़े फुसहा और बलग़ा से हुआ करती है। अगर मैं भी सब्क़त लिसानी का एत्राफ कर लूंगा तो कौन सा गुनाह है। ये खयालात थे। जो मेहमान के दिल में आन की आन में बिजली की तरह इधर से उधर तक दौड़ गए। और ज़रा सी देर में इज़्ज़त के खयाल ने ये फैसला सुना दिया। के इस ज़िल्लत से झूट अच्छा है। इसलिए उसने लड़की से नदामत आमेज़ लेहजे में कहा।

अज़ीज़ बहन! अब तो ग़ालिबन तुम को यक़ीन आ गया होगा के मैं सफर के सामान और उसके इन्तिज़ाम में ऐसा अज़खुद रफ़्ता हो रहा हूँ। के ज़बान गोया मेरे क़ाबू ही में नहीं। देखो फिर मुझ से ग़लती हुई किस क़बीले का नाम लेना चाहता था। और किस क़बीले का नाम ज़बान से निकल गया। भला! मुझ को बनी ज़बा से क्या ताल्लुक़ शायद तुम को यक़ीन ना आवे। मगर मैं खुदा की क़सम क़बीला बनी ज़बा में से नहीं हूँ।

लड़की:- "नहीं नहीं।" मैं आपको दरोग़ गो खयाल नहीं करती हूँ। बेशक ऐसा इत्तिफाक़ होता है के बअज़ मर्तबा इंसान कहना कुछ चाहता है और निकलता कुछ है। मगर मैं भी चाहती हूँ के आपके क़बीले का सही सही हाल मालूम करूं। तो फिर आप किस क़बीले में से हैं।?

मेहमान:- (दिल में) इस मर्तबा किसी क़बीले का नाम लेना चाहिए के जो शराफत और इज़्ज़त में अपनी नज़ीर आप हो। किसी शख़्स ने उसकी

Scanned by CamScanner

हिज्जो की हो (लड़की से) बहन! मैं क़बीला बनी अजल का हूँ और ये वो क़बीला है के जो शरफ़ और इज़्ज़त.....

लड़की:- (बात काट कर) हाँ मैं इस क़बीले को खूब जानती हूँ। खसूसन इस वजह से और भी जानती हूँ के इसकी निस्बत दो शैर मुझ को याद हैं। मेरा दिल चाहता है के मैं मालूम करूं के ये दोनों शैर किसने तसनीफ किए हैं।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

मैं (शरीफ) लोगों को देखता हूँ के वो अताऐ कसीर (मोहताजों और मसाकीन को) तक़सीम किया करते हैं और क़बील-ए-बनी अजल की अता सिर्फ तीन और चार ही पर मौक़ूफ रहती है। (यानी बहुत ही क़लील-उल-ख़ैर लोग हैं।)

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जब क़बीला बनी अजल का कोई शख़्स ज़मीन (के किसी हिस्से) में मरता है तो बवजह ज़लील होने के ज़्यादा (ज़मीन की ज़रूरत नहीं होती) उस ज़मीन में सिर्फ एक हाथ और एक उंगली (के बराबर) ख़त खींच कर उसमें (दफ़्न) कर दिया जाता है।

इन शैरों को सुनकर मेहामन की तो ये हालत हो गई के काटो तो लहू नहीं बदन में। हैरत से लड़की का मुंह तकने लगा। और दिल ही दिल में कहने लगा के इस लड़की से मैंने झूट बोल कर कहा के मैं क़बीला बनी अजल का हूँ और क़बीला-ए-बनी अजल की जो कुछ इज़्ज़त और वक़अत यहाँ है। वो मोहताज बयान नहीं। इन शैरों से ज़ाहिर है के अगर लड़की ने घर वालों से जाकर कहा। के हमारा मेहमान क़बीला-ए-बनी अजल का है तो इसमें मेरी किस क़द्र ज़िल्लत होगी। और यहाँ वाले मुझ को कैसे हिक़ारत की नज़र से देखेंगे। लेकिन! आख़िर चारह-ए-कार क्या है। कई मर्तबा तो झूट बोल चुका हूँ। अब ये लड़की क्यों यक़ीन करने लगी। ख़ैर! अगर यक़ीन ना करेगी तो ना करे। लेकिन मुझ को तो इंकार कर ही देना चाहिए। ये सोच कर कहने लगा। बहन! इस मर्तबा या तो तुम ने ग़ौर से सुना नहीं और या मुझ से फिर नाम लेने में ग़लती हुई। मैं तो इस वक़्त ऐसी मुज़्तरिब हालत में हूँ के अगर कोई मुझ से मेरा नाम भी पूछे। तो शायद उसके जवाब में भी मुझ से ग़लती हो जावे। अगर तुम को मेरे क़बीले का हाल ही मालूम करना है तो ज़रा ग़ौर से सुनो! मैं क़बीला-ए-अज़्द का रहने वाला हूँ।

लड़की:- आपने बजा फ़रमाया। इस क़बीले का हाल तो हमारा बच्चा

Scanned by CamScanner

बच्च जानता है। इस क़बीले के बारे में मुझ को भी दो शैर याद हैं। अगर आप उनको सुनने का वादा करें तो मैं आपको वो अश्आर सुना दूं। जिसमें इस क़बीले का ज़िक्र ख़ैर किया गया है? लेकिन अगर आपको न अश्आर के मुसन्निफ का नाम मालूम हो तो बताने में दरीग़ ना फ़रमावें।

मेहमान ये मालूम करके के फिर ये शैर पढ़ेगी। दिल में तो थर्रा उठा और कहने लगा। के ऐसा ना के क़बीला अज़्द की हिज्जो के अश्आर भी उसको किसी ने याद करा दिए हों। ताहम बज़ाहिर अपना चहरा बेख़ौफों और मुतमईनों का सा बना कर कहने लगा। के बहन! तुम ज़रूर अश्आर सुनाओ। मेरा दिल भी यही चाहता था के तुम मुझ को शैर सुनाओ। मुझ को अगर इस शायर काहाल मालूम होगा तो यक़ीन ज़रूर और मुफस्सिल बयान करूंगा।

लड़की तो इजाज़त की मुंतज़िर थी। फौरन उसने शैर निहायत खुश आवाज़ी से पढ़ना शुरू कर दिए।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमाः- क़बीला अज़्द की कोई औरत खतान से नहीं घबराई और ना उस औरत को तआक़्क़ुब किए हुए शिकार का गोश्त कभी नसीब हुआ (यानी शिकार करना बहादुरों का काम है। और उनके मर्द बुज़दिल और नामर्द हैं। के किसी शिकार का तआक़्क़ुब करके शिकार नहीं करते हैं। के उनकी औरतें उनको खावें) ना कोई शिकारी उसके ख़ैमों में शिकार का गोश्त कभी लाया। (यानी अगर कुछ भी इज़्ज़तदार होते तो बतौर तोहफा और हदिया ही के उनके यहाँ गोश्त शिकार का आ जाता। मगर उनको ये भी नसीब नहीं) और ना उसने मछली की खाल के ज़र्फ में कोई चीज़ पी (इस क़िस्म के नफीस बर्तन अरब के शुरफ़ा में हुआ करते थे)

मेहमान इन अश्आर को सुनकर बिलकुल ही सटपटा गया। और दिल में कहने लगा के ये क़िस्सा है? मैं छांट छांट कर ऐसे ऐसे क़बीलों का नाम ले रहा हूँ। के जिनकी इज़्ज़त फख्र, शौहरत तमाम अरब में ज़र्ब-उल-मिस्ल है। और ये नो उम्र लड़की उसके हिज्जो के अश्आर पढ़ देती है। क्या इस खानदान के लोगों ने उसको बचपन ही से क़बायल अरब की हिजोया अश्आर याद करा दिए हैं। क्या उसके यहाँ इसी की तालीम दी जाती है। और अगर ये नहीं तो आख़िर वो कौन ज़ालिम था। जिसने इस बच्ची को इस क़िस्म के अश्आर याद कराये? इस बच्ची का वक़्त तो ऐसा था के उसको उम्दा उम्दा अख़लाक़ी अश्आर सिखाए जाते। तहज़ीब की देवी बनाया जाता। वो वो तरीके सिखाए जाते के जिनसे

Scanned by CamScanner

ये ख़ाविंद के दिल पर क़ाबू पा सकती। ये भी कोई तालीम है। के इस क़िस्म के अश्आर से उसके पाक और मासूम ज़ेहन को आलूदा किया गया है। मगर कहीं ऐसा तो नहीं के ये लड़की खुद ब खुद इन अश्आर को तसनीफ कर लेती हो। अगर ऐसा है तब तो ये लड़की ग़ज़ब की ज़हीन और ज़की होगी। लेकिन इसकी उम्र तो इस क़ाबिल मालूम नहीं होती मुझ को इस उधैड़ बुन में बहुत देर हो गई। ये लड़की अपने दिल में खयाल करती होगी के मैं इसी मज़मूम क़बीले का हूँ। मेरा इस क़द्र तवील सकूत अपनी ज़िल्लत के इक़्रार का काम देगा। मुझ को जल्द इंकार करना चाहिए। ये खयाल आते ही बोला। बहन! तुम ने अश्आर तो निहायत ही फसीह और बलीग़ याद कर रखे हैं। मगर हक़ीक़त ये है के मैं भी तुम्हारा इम्तिहान ही कर रहा था। के तुम को क़बायल अरब की तहक़ीक़ है। या और लोगों की तरह सिर्फ ज़ाहिरी शौहरत पर ही इक्तिफा कर लिया है। सो बहम्दुलिल्लाह! तुम को क़बायल अरब की असली कैफियत का सही इल्म है। और उनके मुतअल्लिक़ अश्आर खूब याद हैं। तुम चूंके खुद समझदार हो। इसलिए तुम से ये उम्मीद बेजा नहीं के तुम खुद मेरे अंदाज़ से समझ चुकी हो के मैंने अपने क़बीले का सही नाम ना बता कर अपना नसब छुपाने की जो काशिश की थी इससे यही मक़्सूद था के तुम्हारी तहक़ीक़ात का हाल मालूम कर सकूं। अब सुनो! मैं क़बीला बनी अबस का एक शख़्स हूँ।

लड़की ने इस तमाम तक़रीर को बग़ौर सुना और यही नहीं के ज़बान से उसकी तकज़ीब या तसदीक़ नहीं की बल्के अपने चहरे से भी ऐसे आसार ज़ाहिर ना होने दिए। के मेहमान की मुतजस्सुस नज़रें उसको मालूम कर सकतीं के लड़की ने मेरी इस राम कहानी को सच्चा समझा या झूट। और तक़रीर ख़त्म हो चुकी तो अपने पहले से मुसतफसराना अंदाज़ पर पूछा। के जब आप बनी अबस के क़बीले में से हैं। तो ग़ालिबन ये मालूम होगा के ये शैर किस का है और शायर ने उसको क्यों नज़्म किया था?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जब क़बीला बनी अबस की किसी औरत के कोई बच्चा पैदा हो तो उसको खुशखबरी दे दो। के उस बच्चे के पैदा होने से उसकी दनाईय्यत में और इज़ाफा हो गया।

मेहमान ने झूट बोलने के जितने तरीक़े थे। सब ख़त्म कर लिए थे और बात बाक़ी ना थी के उसको कहता। हया व नदामत की वजह से ज़मीन में

Scanned by CamScanner

गड़ा जाता था। दिल चाहता था के इस बच्ची के सामने से उठ कर चल दे मगर जानता था के उसमें रही सही ज़िल्लत होगी। घबरा कर कहने लगा के बहन! मैंने क़बीला बनी अबस का नाम नहीं लिया था। बनी फज़ारह कहा था। मैं तो क़बीला-ए-बनी फज़ारह का एक शख़्स हूँ। क़बीला-ए-बनी अबस तो मुझ से कोसों दूर है।

लड़की:- आपने बजा फ़रमाया। मुमकिन है के मुझ से सुनने में या आप से कहने में ग़लती हुई हो। ये क़बीला-ए-बनी फज़ारा वही क़बीला तो है के जिसकी निसबत किसी शायर ने ये शैर कहा है। आपको तो मालूम होगा के किस का है।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- अगर तुम क़बीला-ए-बनी फज़ारह के किसी शख़्स के पास जाओ तो वहाँ जाकर अपनी ऊँटनी (के खोए जाने पर) मुतमईन ना हो जाना और उसको रस्सियों से खूब बाँध देना। (वरना चूंके बखिलाफ आदत अरब क़बीला-ए-बनी फज़ारह के शख़्स मेहमानों के साथ ग़द्दारी करते हैं। और उनके मालों को खुर्दबुर्द कर जावेंगे। और तुम हाथ मलते रह जाओगे।)

शैर क्या था के मेहमान के खुरमने अक़्ल के लिए बर्क था। होश व हवास जाते रहे। हैरत से लड़की का मुंह तकने लगा। दिल ही दिल में कहने लगा के लड़की तू हर्फों की बनी हुई मालूम होती है। किस ढिटाई से पूछती है के ये शैर किसका है। हालाँके मक़्सूद मुझ को ज़लील करना है। और ज़रा उसके चहरे पर नज़र डालो तो मुसकुराहट के आसार भी मालूम नहीं होते। मालूम है के वाक़ई उसको दरयाफ़्त ही करना मक़्सूद है। अच्छा इस मर्तबा मैं ऐसे क़बीले का नाम लूं के उसकी हिज्जू किसी शायर ने की ही ना हो। अब झूट बोला है। तो इस लड़की को भी आजिज़ कर देना चाहिए। ये सोच कर बोला। के नहीं खुदा की क़सम! मैं क़बीला बनी फज़ारह का नहीं हूँ।

लड़की:- बजा फ़रमाया। तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- बहन! मैं कबीला बजीला का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- आपको मालूम है के ये शैर किस के हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- जब (हमारे सामने) क़बीला बजीला (की जमात) आई तो हमने उसके हाल हाल की तफ़्तीश की ताके वो बतला दे के उसके मुसतक़र ने उसको किस जगह से क़रीब किया है। तो जब हम ने तफ़्तीश की तो क़बीला बजीला की जमात (ये भी) ना बता सकी के उसका नसब क़हतान

Scanned by CamScanner

(सरदार क़बीला का नाम है) से मिलता जुलता है या नज़ार। (दूसरे क़बीले के सरदार का नाम है) तो क़बीला बजीला की जमात दरमियान ही में रह गई (ना इधर ना उधर) और वो (अपनी जमात से इस तरह) निकाल दी गई। जिस तरह लगाम उतार कर फैंक दी जाती है।

मेहमानः- (दिल में) खुदाया ये क्या मुसीबत है के अरब का कोई क़बीला इस खुर्द साला बच्ची की ज़बान ज़ोरी से बचा हुआ नहीं है। मुझ को क़बीला का नाम सोचने में देर लगती है और उस को बे मुहाबा शैर पढ़ देने में देर नहीं होती। (लड़की से) खिलाक़ आलिम की क़सम! मैं कबीला बजीला में से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीला बनू नमीर का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- ग़ालिबन ये शैर तो आपने सुने होंगें आपको मालूम है के शैर किस के हैं।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

तजुर्माः- क़बीला बनी नमीर के किसी शख़्स से मुख़ातिब होकर कहती है तू अपनी नज़र नीची कर (यानी ज़िल्लत के साथ चल) इस वास्ते के तू क़बीला बनी नमीर का है। (क़बीला बनी नमीर बवजह ज़िल्लत के नज़र उठा कर चल नहीं सकता है) पस ना तो (बवजह दनायईय्यत के) तो क़बीला कअब तक पहुँच सका। और ना क़बीला कलाब तक। और अगर बनी नमीर के सरयन लोहार की भट्टी के छूटे हुए ज़ंग पर रख दिए जावें तो बवजह हरारत के वो ज़ंग पिघल जावे (रसयन की शिद्दत हरारत खून की खराबी पर दलालत करती है।)

मेहमान के अब होशो हवास मख़्तल हो चुके थे। अक़्ल काम ना करती थी झूट बोलते बोलते और उसके असबाब बयान करते करते वो आजिज़ आ गया था। ये भी समझ चुका था के लड़की मेरी तकज़ीब के दरपे नहीं है। मुमकिन है के दिल में मेरे कहे हुए की तसदीक़ ना करती होती। मगर ज़बान से तकज़ीब भी नहीं करती है। इसलिए बग़ैर किसी तमहीद के साफ इंकार कर गया और निहायत ढिटाई और जुर्रात से कहने लगा। खुदा की कसम! मुझ से और क़बीला बनू नमीर से कोई ताल्लुक़ नहीं। ना मैं उनके सिलसिले नसब में दाखिल हूँ।

लड़कीः- अगर आप क़बीला बनू नमीर में से नहीं हैं तो आख़िर किस क़बीले में से हैं?

Scanned by CamScanner

मेहमानः- (दिल में) मैंने मौअज़्ज़िज़ मौअज़्ज़िज़ क़बायल अरब के नाम लिए। मगर चूंके उनको छोटे बड़े लायक़ नालायक़, हर तरह शख़्सों से साबक़ा पड़ता है। इसलिए उनको अगर सो अच्छा कहते हैं तो दो चार बुरा भी कहते हैं। इस मर्तबा ऐसा नामा बताना चाहिए के वो ऐसा बदत्तर और कमीना फिर्क़ा हो के हिज्जो करना तो दरकिनार कोई उसको मुंह भी ना लगाता हो। (थोड़ी देर दूर सोच कर दिल ही दिल में) बस! ठीक है। यही कह दूं के मैं क़बीला बनू बाहला में से हूँ ये तो ऐसा कमीना फिर्क़ा है के इसी की निस्बमत किसी दिल जले ने कहा है के

मेहमान के अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमाः- (बनू बाहला कमीने पन में इस दर्जे को पहुँच गए हैं के) अगर किसी कुत्ते को बाहली कहकर पुकारा जाए तो वो भी उस पर वावेला मचाने लगे के मुझ को गाली दी गई।

लेकिन अगर यही शैर उसको भी याद हो तो क्या होगा? नहीं नहीं। किसी ने तफरीह तबअे के तौर पर उसको मौअज़्ज़िज़ क़बायल की हिज्जो के अश्आर याद करा दिए हैं। इस क़बीले बने बाहला की उसको ख़बर भी ना होगी। और अगर बिलफर्ज़ उसको खबर हो भी तो फिर मैं इंकार कर दूंगा। लड़की तो मेरे इस इंकार पर कुछ कहती नहीं जब ये खयालात दिल में आ चुके और क़ल्ब ने यही फैसला किया तो कहने लगा के वल्लाह! मैं बनू बाहला में से हूँ।

लड़कीः- इस मर्तबा तो आप बहुत देर तक ख़ामोश रहे। मैं समझी के शायद मेरी समअे खराशी बार ख़ातिर गुज़ारी। इस मर्तबा ग़ालिबन आपने सोच कर बताया है और ठीक बताया होगा।

मेहमानः- (ये समझ कर के लड़की इस हिज्जो में कोई शैर नहीं पढ़ सकी। दफअे अलवक़्ती कर रही है) हाँ हाँ! मेरी बहन मैं फीअलहक़ीक़त बनू बाहला में से हूँ इससे कम्बख़्त नाम ही याद ना आता था। बमुश्किल तमाम नाम याद आया है।

लड़कीः- बजा फ़रमाया। आप जानते हैं के ये शैर किस के हैं।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जिस वक़्त असबाब शरफ़ व फख़्र की तरफ़ शरमाऐ क़ौम तेज़ी के साथ चलते हैं तो (उनके हमराह होना या पीछे चलना तो दरकिनार बाहला का शख़्स मजमअे से भी दूर हो जाता है।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

Scanned by CamScanner

और जब किसी बाहली शख़्स की बीबी कोई लड़का जनती है तो नालायक़ों और नाकिसों के अदद में इज़ाफा हो जाता है। और अगर (खुदानख्वास्ता) तख़्त खिलाफत पर कोई बाहली शख़्स क़ाबिज़ हो जाए। तब भी (बावजूद इस रफ़अत क़द्र के) शरफ़ा क़ौम का मुक़ाबला बुलंदी मर्तबा में ना कर सके और बाहली की आबरू अगरचै वो इस पर बड़ी सख़्त निगहबानी करे मगर इस रूमाल की तरह है, जिससे खाना खाने की बाद हाथ मुंह पोंछा जाता है। (यानी ज़लील है)।

मेहमान इधर तो हिज्जो के अश्आर और वो भी एक खुर्द साला लड़की की ज़बान से सुनकर नदामत की वजह से ज़मीन में गढ़ा जाता था। इधर ये खयाल के लड़की अपने दिल में ज़रूर झूटा खयाल करती होगी, उसके सर को ऊपर ना उठने देता था। इस पर ये खयाल उसके लिए और भी सोहान रूह हो रहा था के अगर कोई तीसरा शख़्स किसी जगह छुप कर सुन रहा हो के मैं अपने नसब के सिलसिले में इस क़द्र क़बीलों को दाखिल कर चुका हूं और क़समें खा खा कर इंकार कर देता हूँ तो वो यक़ीनन मुझ को हरामी खयाल करेगा। और बिलफर्ज़ कोई शख़्स हम दोनों की ये बातें इस वक़्त ना सुनता हो। मगर जब ये लड़की घर में जाकर इस का ज़िक्र करेगी तो जो सुनेगा वो हरामी ही कहेगा। उस वक़्त मैं अपने मेज़बानों की नज़र में कैसा ख़्वार और ज़लील होंगा। और उसको भी जाने दो ये लड़की भी किसी से ना कहेगी। मगर डूब मरने की बात तो ये है के ये खुद अपने दिल में मेरी निसबत क्या खयाल क़ायम कर चुकी होगी। लेकिन ये सब कुछ सही। उसके सिवा और चारा भी तो नहीं है के मैं इस नसब का इंकार कर दूं। ग़ैरत की वजह से आवाज़ तो निकल ना सकी बहुत दबी हुई आवाज़ से कहा खुदा शाहिद है के मैं क़बीला बाहला से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला सक़ीफ का शख़्स हूँ।

लड़की:- आपको मालूम है के ये शैर किसके हैं?।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जिस क़द्र क़बायल अरब का नसब हम को मालूम है उनमें सबसे ज़्यादा गुमराह क़बीला सक़ीफ है। इस वास्ते के उनका कोई बाप ही सिवाए गुमराही के नहीं है। अगर उनका नसब किसी से मिलाया जावे या ये खुद नसब में अपना ताल्लुक़ किसी से ज़ाहिर करें। तो यक़ीनन ये मुहाल है (इस वास्ते के ये लोग बे नसब हैं) ये लोग पाखानों में रहने वाले सुवर हैं तो तुम इनसे खूब

Scanned by CamScanner

अच्छी तरह से क़त्लो क़िताल करो क्योंके उनके खून तुम्हारे लिए हलाल है।

मेहमान इन अश्आर को सुनकर दिल में कांप उठा और घबरा कर कहने लगा के "नहीं नहीं" खुदा की क़सम! मैं क़बीला सक़ीफ में से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीले सनीह का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- आपको मालूम है के ये मिसरआ किस का है?

लड़की के मिसे का तर्जुमा

"अल्लाह तआला क़बीला सनीह के इजतमे को मुतफर्रिक़ कर दे।"

मेहमान जिस हालत में मुबतला था। उसको वही खूब जान सकता था। लड़की कांटों के झाड़ की तरह उसको चिमटी हुई थी। और वो किसी तरह राह गुज़ीर ना पाता था। मजबूर होकर फिर उसने वही अपना पुराना राग अलापा और कहने लगा। अपनी जान अज़ीज़ की क़सम! मैं तो क़बीला सनीह से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के सिलसिले नसब में दाखिल हैं?

मेहमानः- सच पूछो तो मैं क़बीला खज़ाआ में से हूँ।

लड़कीः- तब तो आप मेरी इस तमन्ना को पूरा कर सकेंगे के मैं इन शैरों के शायर का नाम मालूम करती। क्या आप बता देंगे।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर क़बीला ख़ज़ाआ किसी मजलिस में शेखी बग़ारना चाहें तो सिर्फ उनकी शेखी शराब के पीने पर मुनहसिर होती है। उन्होंने अज़राहे जहालत खाने खुदा को शराब की एक मश्क के अवज़ में बेच डाला। बदकारी पर फख्र करने वाले ये लोग बहुत बुरे हैं"।

मेहमान की ज़बान से क़बीला खज़ाआ का नाम निकलने को निकल गया। मगर लड़की ने अश्आर में इस क़बीले के ऐसे ऐब को ज़ाहिर किया के मेहमान अज़ सरतापा बहर नदामत में ग़र्क हो गया। खुद ही अपने आपको मलामत करता था। के आज मेरी हालत क्या हो गई है। के जिस क़बीले का नाम लेता हूँ वो इस क़बीले से दनाईय्यत में बदर्जहा बढ़ा हुआ होता हे। जिसका नाम मैंने पहले लिया है। क्या अरब के ग़ैर महसूर क़बायल में से कोइ ऐसा क़बीला इस वक़्त मुझ को याद ना आवेगा। जिसने उमूर शनीया का इर्तिकाब ना किया हो और उसकी हिज्जो ना की गई हो? आज मेरे हाफ़्ज़े को क्या हो गया। बिलआख़िर सोचते सोचते ये कहा के मैं क़बीला बनी यश्कर से हूँ।

Scanned by CamScanner

लड़की ने अब इस तरफ़ इलतिफात करना भी छोड़ दिया था के मैंने जो कुछ कहा। सच है या झूट। पहले क्या कहा था। अब क्या कहता है? उसके चेहरे के अंदाज़ से ये बात मालूम होती थी। के वो सिर्फ मेहमान से क़बीले का नाम सुनना चाहती है। और बस! इधर मेहमान ने ये कहकर के मैं फलाँ क़बीले का हूँ। अपनी बात ख़त्म की के लड़की ने अश्आर पढ़ना शुरू कर दिए। और अगरचै मक़्सूद उसका बजुज़ उसके और कुछ ना होता था के मेहमान ने जिस क़बीले का नाम लिया है उसकी हिज्जो करे। लेकिन ज़ाहिर ये करती थी के वो इस शैर को नज़्म करने वाले का नाम मालूम करना चाहती है। मेहमान के इस कलाम को सुनकर फौरन बोली! के आप को मालूम है के ये शैर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला बनी यश्कर (दनाईय्यत और कमीना पन में इस दर्जे को पहुँच गया है के) अगर अपनी तबीयत को वफाऐ अहद पर मजबूर करना चाहे तो) वफा करने पर क़ादिर नहीं। और (चूंके ऐब करने को हुनर चाहे) अगर वो बेवफाई करना चाहे तो बेवफाई करना भी नहीं जानता है। क़बीला यश्कर ऐसा क़बीला है के उसकी ज़िन्दगी सिर्फ रहने में ख़त्म होती है ये लोग खुद ज़लील और उनकी जड़ बुनियाद भी ज़लील है।

मेहमानः- (बहुत जल्दी से) खुदा की क़सम! मैं क़बीला यश्कर से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले से हैं?

मेहमानः- मैं बनी उमय्या के क़बीले में से हूँ।

लड़कीः- तो ग़ालिबन आप इस शख़्स को जानते होंगे जिसके ये शैर हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला बनू उमय्या की शरफ़ और इज़्ज़त की बुनियादें मुतज़लज़िल हो गईं इसलिए आम आदमियों में उनका नैस्त व नाबूद हो जाना एक मामूली बात हो गई और गुज़िश्ता ज़माने में बनू उमय्या की सतवत उनको खुदा के मुक़ाबले में भी बेबाक बनाए हुए थे। तो ना आले हर्ब ने खुदा की इताअत की ना उनके मर्दों ने खुदा का ख़ौफ किया।

लड़की ने तो इस पर सवाल करना भी छोड़ दिया था। के उसके क़ौल में तदाफअे हो रहा है। कभी किस क़बीले की तरफ़। हाँ! मेहमान अव्वल अव्वल बहुत परेशान हुआ था। मगर अब इस क़द्र झूट बोल लेने के बाद उसको भी खुद अपने मुंह अपने क़ौल को रद करते हुए शर्म मालूम ना होती

Scanned by CamScanner

थी। इसलिए उसने इन शैरों को सुनते हुए फौरन कहा। के खुदा की क़सम! मैं बनू उमय्या के क़बीले से नहीं हूँ। बनू उमय्या फीलवाक़ै ज़लील है।

लड़की:- तो फिर किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला अंज़ा का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- आप इन शैरों के कहने वाले जानते हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगरचै ज़माना की नज़रें हमारे ऊपर बुरी बुरी पड़ने लगी थीं। मगर मुझ को ये खयाल था के एक ऐसा वक़्त भी आवेगा के क़बीले अंज़ा भी मेरी ग़ीबत करने पर आमादा हो जाएगा। मुझ को क़बीले वायल से ना समझना। अगर मैं उन गुमराहों से ज़रा भी ख़ौफ करूं। ये तो ऐसे बेक़द्र हैं जैसे के किसी के पास से पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े मफ़्क़ूद हो जावें!

मेहमान:- खुदा की क़सम! मैं क़बीला अंज़ा का भी नहीं।

लड़की तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला कन्दा का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- तो क्या आपको मालूम है के ये शैर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर क़बीला कंदा का कोई खूबसूरत औरतों की सी चोटी पर फख्र करे तो क़बीला कंदा को तुम ज़लील पेशों के लिए रहने दो। इस वास्ते के उसका आला दर्जा का फख्र लोगों को तकालीफ पहुँचाना है।

मेहमान:- खुदा की क़सम! मैं क़बीला कंदा का भी नहीं हूँ। क़बीला कन्दा फी अलहक़ीकत ज़दील कामों में मसरूफ रहता था।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीले बनी असद का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- तो क्या आप जानते हैं के ये शैर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जब क़बीला बनी असद की कोई औरत सने शऊर को पहुँचती तो जल्द उसका निकाह करा दे। लेकिन इस क़बीले में ज़िना की ऐसी कबीह आदत है के बावजूद निकाह कर देने के भी तो इस के ज़िना से पुतमईन ना होना और अगर क़बीला बनी असद की कोई लड़की अपने हाथों मेहंदी लगावे। और अब तक वो ज़िना में मुलव्विस ना हुई हो तो उसके माँ बाप उसको अपना शरीक कर लेते हैं। यानी उसका बाप भी उससे ज़िना कर लेता है।

मेहमान:- खुदा की क़सम! मैं क़बीला बनी असद में से भी नहीं हूँ। इस

Scanned by CamScanner

क़बीले में बेशक ज़िना की आदत आम थी।

लड़की:- तो फिर किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला हमदान का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- तो क्या आपको मालूम है के ये अश्आर किस शख़्स के हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला हमदान की लड़ाई की चक्की मुक़ातलीन के सरों पर किसी दिन चले तो तुम देखोगे के वो निहायत तेज़ी से लड़ाई से भागे हुए जा रहे हैं।

मेहमान:- सच है क़बीला हमदान अक्सर लड़ाईयों में से भागा करते थे। शुजाअत की उनको हवा भी ना लगी थी। लेकिन खुदा की क़सम! मैं क़बीला हमदान में से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीले नहद का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- तो क्या आपको मालूम है के ये शैर किस के हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला नहद के अफ़्राद कमीने साबित होते हैं, जब के उनके पास कोई मेहमान आ जाता है। उनके चहरे रफ़्त और क़ारे की तरह काले हैं और जो शख़्स मुसीबत के वक़्त उनसे फ़रयाद करे वो ऐसा नादान है जैसे के कोई गर्म ज़मीन से बच कर आग में जा कूदे।

ये अश्आर सुनते ही मेहमान ने कहा। ये अश्आर बिलकुल सच्चे हैं। मगर खुदा की क़सम में तो क़बीला नहद से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला क़ज़ा का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- क्या जानते हैं के ये अश्आर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला क़ज़ाआ के किसी शख़्स को अपने कुंबे पर फख़्र नहीं करना चाहिए इस वास्ते के ना वो यमन के ख़ालिस अलनसब लोगों में से है ना मुज़िर के शरीफों में से। ये लोग दोग़ले हैं, ना क़ोहतान उनका बाप है और ना नज़ार, इसलिए उनको जहन्नुम में झोंक दो।

मेहमान:- हाँ हाँ! क़बीला क़ज़ाआ का नसब क़ाबिले ऐतबार ना था मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीला क़ज़ाआ से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला बनी शीबान में से हूँ।

Scanned by CamScanner

लड़की:- तो क्या आपको मालूम है के ये अश्आर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

बनी शीबान का क़बीला बड़ी जमात वाला है। मगर उनमें से हर एक अव्वल नम्बर का अपनी अपनी असल के ऐतबार से कमीना और पाजी है। ये इस बचे हुए पानी को पिया करते हैं जो आम लोगो के पीने से बच रहता है।

फिज़ू मा जिसको हमने बचे हुए पानी से ताबीर किया है। एक ख़ास तरीके से हासिल शुदा पानी को कहा जाता है। यानी जब चश्मों और झीलों पर अहले अरब पहुँच जाते थे तो अपनी मश्कों और पखालों में पानी साफ और उम्दा भर लेने के लिए क़ाफले के शरफ़ा और ज़ी इज़्ज़त लोग जाते थे। और जब वो अपने लिए पानी काफी जमा कर लेते थे तो उसके बाद क़ाफले घटिया और अदना दर्जे के लोग पानी पहुँचते थे। उसके बाद जब के मर्दों से चश्मा खाली हो चुकता था। तो औरतें जाती थीं। और इतमीनान से नहाना। कपड़ों का धोना और इसी क़िस्म की ज़रूरियात को पूरा करना उनका काम होता था। जब ये अपनी ज़रूरियात से फारिग़ हो चुकती थीं। तो उनके बाद लोंडी। ग़ुलाम और ऐसे लोग के जिनकी कोई इज़्ज़त और वक़अत क़ाफले में ना होती थी पहुँचते थे। यही पानी फिज़ूल मा कहा जाता था और इसी को हासिल करने वाले ज़लील और अदना दर्जे के लोग कहे जाते थे।

ग़र्ज़ ये के इन अश्आरों को सुनकर मेहमान ने कहा। के बेशक क़बीला शीबान अगरचै बड़े जथ्थे वाला है। लेकिन उसने मुल्क अरब में किसी क़िस्म की कोई इज़्ज़त नहीं पैदा की है। मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीला शीबान से हूँ ही नहीं।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं।

मेहमान:- मैं क़बीला तनूख़ का हूँ।

लड़की क्या आपको मालूम है के ये अश्आर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जब क़बीला तनूख़ किसी क़बीले को लूटने के इरादे से किसी जगह का सफर करता है तो वो अपनी इज़्ज़त और शरफ़ और अपने कुंबे और पड़ोसियों की शौहरत को खो बैठता है।

मेहमान:- सच है क़बीला तनूख़ ऐसा ही बुज़दिल है। मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीला तनूख में से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

Scanned by CamScanner

मेहमानः- मैं क़बीले ज़हल का हूँ।

लड़कीः- तो क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

खुदा वंद आलम क़बीला ज़हल को हमेशा बदबख़्त रखे। जिस क़द्र लोग आसमान के नीचे बस्ते हैं। ये लोग उन सब से बदत्तर हैं।

मेहमानः- जिस शख़्स ने ये शैर कहा। बिलकुल सच कहा। बेशक क़बीला ज़हल ऐसा ही बदनाम है। लेकिन खुदा की क़सम मैं क़बीला ज़हल से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर किस क़बीले के हैं।

मेहमानः- मैं क़बीला मज़निया का हूँ।

लड़कीः- क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला मज़निया एक ऐसा ज़लील क़बीला है जिससे ना कमर की उम्मीद की जा सकती है ना दी की।

मेहमानः- सच है ये क़बीला मज़निया ऐसा ही बेख़बर बद दीन है। मगर मैं खुदा की क़सम इस क़बीले का नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीला नखअे का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- तो क्या आप जानते हैं के ये शैर किसके हैं।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला नखअे जो अव्वल नम्बर का कमीना है। अगर उसके सारे अफ़्राद किसी पहाड़ की तरफ़ दौड़ें तो ये लोग तादाद में इस क़द्र हैं के उनकी कसरत की वजह से वो भी हिलने लगें। लेकिन उनसे किसी को ज़रा सा भी नफा नहीं पहुँचता है। और ना खालिस शुरफ़ा में उनका शुमार है।

मेहमानः- बिलकुल दुरूस्त! मगर खुदा की क़सम मैं इस क़बीले का नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं।

मेहमानः- मैं क़बीले तेय का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- आपको मालूम है के ये शैर किस का है?

वलो असफ़ूरन यमद जनाहा

अला दूर तय कलहा ला सतज़लत

अगर छोटी सी चुड़िया अपने सर सारे क़बीले तय पर फैला दे तो

Scanned by CamScanner

बवजह अपनी हिक़ारत और कमी तादाद के सारा क़बीला उसके परों के अन्दर आ जावे।

मेहमानः- दुरूस्त है मगर खुदा की क़सम मैं क़बीला तय से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीला अक का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला अक के तमाम आदमी कोढ़ी और खिदमत गार हैं। ये लोग सलामत से कभी जुदा नहीं हो सकते हैं।

अब मेहमान क़बीलों का नाम लेते लेते घबरा गया था। और वो सोच सोच कर क़बायल के नाम बताने लगा था। और लड़की उसके मुंह को इस तरह ग़ौर से और मतानत के साथ तक रही थी। गोया कोई शिकारी जानवर अपने शिकार की तरफ़ बग़ौर देखता है। मेहमान बिलकुल सटपटा गया था। और दुआएँ माँगता था के लड़की की ज़बान से इस सिलसिले कलाम में कोई लफ़्ज़ ऐसा भी निकल जावे जिसको मैं अपनी तोहीन क़रार देकर ग़ुस्सा ज़ाहिर करने के बाद बात करना तर्क कर दूं। काश ये मुझ को झूटा ही कह देती। तो मैं उसी पर ग़ज़बनाक हो जाता। मगर हाँ! उसने अव्वल अव्वल मुझ को झूटा कहा तो था तो क्या उसी पर ग़ुस्सा करूं। और इस ज़बान ज़ोर लड़की को धतकारूं? "नहीं नहीं हर गिज़ नहीं" अव्वल तो उसने मुझ को सराहतन झूटा कहा नहीं था। और अगर बिलफर्ज़ उसने सराहत के साथ ही झूटा कहा भी था तो वो बात तो बहुत देर हुई के गुज़र चुकी। अब इस पर ग़ुस्सा करने का क्या मौक़ा। ये तो मेरे पीछे पंजा झाड़ कर पड़ गई है। इस ग़ज़ब को तो देखो के मुझ को क़बीले के नाम सोचने में देर लगती है। मगर उसको शैर पढ़ते हुए देर नहीं लगती!

इलाहल आलमीन! मैं अपना पीछा इससे किस तरह छुड़ाऊँ? लेकिन मैं तो दूसरी ही फिक्र में पड़ गया। वो लड़की मेरे सकूत को हिक़ारत आमेज़ तबस्सुम के साथ देख रही थी। मुझ को जल्द किसी क़बीले का नाम लेना चाहिए। (कुछ सोच कर) खुदा की क़सम! मैं क़बीला अक का नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीला लख़्म का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- तो क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

Scanned by CamScanner

जब कोई जमात अपने क़दीमी फज़्ल की वजह से अशरफ़ और ज़ी इज़्ज़त समझी जाती है तो उस वक़्त यही अता करम का फख़्र क़बीला लख़्म के हर एक शख़्स से दूर रहता है।

मेहमान:- सच है! मगर मैं खुदा की क़सम इस क़बीले का नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीले जज़ाम का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- क्या आप जानते हैं के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर इस ग़र्ज़ से के शराब के नशे में दाद व दहश खूब होगी, दौरा शराब चले तो क़बीले जज़ाम की शिरकत इसमें भी नहीं हो सकती है।

मेहमान:- सच है! मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीला जज़ाम में से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं।

मेहमान:- मैं क़बीले कल्ब का एक फर्द हूँ।

लड़की:- क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

फला तक़र्रबिन कब्बा वला बाब दारहा

वला यतमईन सारीरी ज़ऊ नारहा

क़बीला कल्ब के बल्के उसके दरवाज़े के क़रीब भी तुम हर गिज़ ना जाना और रात को वो मुसाफिर जिसने उसकी आग की रोशनी देख ली हो उसको हर गिज़ उसकी उम्मीद ना करनी चाहिए के वो क़बीले कल्ब का मेहमान बन कर आराम से रह सकेगा।"

मेहमान:- खुदा की क़सम! मैं क़बीले कल्ब से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीले बिलक़ीन का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- तो क्या आप जानते हैं के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर तुम दनानियत के मुतअल्लिक़ तहक़ीक़ करो पूछो के उसका हैड कवारटर कहाँ है तो तुम देखोगे के वो क़बीला बिलक़ीन के अव्वल व आख़िर अहाता किए हुए है।

मेहमान:- बिलकुल ठीक है। मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीला बिलक़ीन से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

Scanned by CamScanner

मेहमानः- मैं क़बीला बनी अलहारिस बिन कअब का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- क्या आप जानते हैं के ये शैर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

ऐ क़बीला हारिस बिन कअब क्या तुम्हारी अक़्लें तुम को तुम्हारी ईज़ा रसानी से नहीं रोकेंगी और तुम तो बिलकुल खोखली हड्डी की तरह ख़ैर से खाली हो। इन लोगों में बदन की लम्बाई और चौड़ाई का ऐब नहीं। इस वास्ते के उनके जिस्म खच्चरों से हैं मगर उनकी अक़्लें चुड़ियों की सी हैं।

मेहमानः- इसमें तो शक नहीं के क़बीले हारिस बिन कअब हक़ीक़त में अक़्ल से ख़ारिज है। मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीले हारिस बिन कअब से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीला बनी सलीम से हूँ।

लड़कीः- क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर तुम क़बीला सलीम के पास किसी मुसीबत से घबरा कर पहुँचो तो जिस तरह गए थे इसी तरह ना काम और ज़लील व शर्मिंदा होकर वापस होना नसीब हो।

मेहमानः- हाँ हाँ! ये लोग ऐसे ही थे। हमीयत और ग़ैरत तो उनके पास भी होकर ना गुज़री थी। मगर मैं खुदा की क़सम क़बीला बनी सलीम से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं।

अब मेहमान मुतरहुद था के क्या करे। किसी क़बीले का नाम उसको याद ना आता था। आख़िर को मजबूर होकर कहने लगा के दरअसल बात ये है के मुझ को उसका इम्तिहान करना था के तुम को किस क़द्र शैर याद हैं। और किस क़द्र क़बायल से वाक़िफ हो। मैं फी अल हक़ीक़त अर्बी नस्ल हूँ ही नहीं। बल्के मैं तो एक फारसी नसाद शख़्स हूँ।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

सुन लो! ऐसे मोहताजों से जो अपनी मुरादों की कामयाबी के कोशाँ हैं कह दो के इन कमीने मुल्क फारस के बाशिन्दों के क़रीब भी ना जावें इस वास्ते के वो अपने (मोहताजीन तो दर किनार) अक़ारिब और अनसार को भी ख़बस बातिन की वजह से महरूम वापस कर देते हैं।

अब मेहमान बिलकुल ही तंग हो गया था। और दिल ही दिल में कह रहा था के इलाही क्या करूं इसकी ज़बान से तो फारसी लोग भी ना बचे।

Scanned by CamScanner

अब किसका नाम ले दूं। अब तो किसी ऐसी जमात की तरफ़ अपने आपको मनसूब करना चाहिए के जिसके मुतअल्लिक़ किसी शायर का खयाल भी ना गया हो। ना उसकी हिज्जो हो सके। इसलिए सोच कर बोला। "खुदा की क़सम! मैं फारसी अलअसल नहीं हूँ, जिनको उनके मालिकों ने अज़राहे तरहम आज़ाद कर दिया था।"

लड़की:- आप सच फ़रमाते हैं। आपको मालूम है के ये शैर किस का है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर किसी शख़्स को अखलाक़ रज़ीला का मरकज़ मालूम करना हो तो वो जान ले के आज़ाद किए हुए गुलामों के पास अख़लाक़ रज़ीला का मुजस्सम तसवीर मौजूद है।

मेहमान इस शैर को सुनकर चोंक उठा और दिल ही दिल में कहने लगा के अब मौक़ा है के मैं गुस्सा करूं उसने निहायत सख़्त अलफाज़ इस शैर में बयान किए और गुस्सा करके अपनी तोहीन का एक शौर मचा दूं और नाराज़ होकर चल दूं। इस सूरत में बात दब जावेगी। और मैं अपनी इस ज़िल्लत का फी अलजुमला कुछ अवज़ कर सकूंगा। मगर इस क़द्र झूट बोलने और हर मर्तबा परवरदिगारे आलम की झूटी क़सम खाने के बाद इज़हारे ग़ज़ब पर क्या मुझ को शर्म ना आवेगी। मैं तो इस क़द्र झूट बोलते बोलते और झूटी क़समें खाते खाते इस दर्जे पर पहुँच गया हूँ के इस नो उम्र बच्ची के सामने सर ना उठा सकूं अब मैं किस मुंह से गुस्सा कर सकता हूँ।

और इससे ज़्यादा ये के गुस्सा किस बात पर करूं? ये ज़बान दराज़ लड़की मुझ से तो खिताब करती ही नहीं। शैर पढ़कर शायर का नाम पूछती है। अब इसमें गुस्से की क्या बात? इलाही मैं किस मुसीबत में फंस गया। यहाँ तक पहुँच कर फिर उसको कुछ याद आया। और जल्दी से कहने लगा के खुदा की क़सम मैं आज़ाद किए हुए गुलामों से भी नहीं हूँ। बल्के हज़रत नूह (अला नबिय्यीना व अलेह अस्सलातो वस्सलाम) की औलाद में से जो एक साहबज़ादे हाम थे। उनकी औलाद में से हूँ।

ये कहकर अपने दिल में बहुत खुश हुआ के इस मर्तबा ऐसी बात ज़बान से निकली के इस तरफ़ इस लड़की का तो क्या किसी का ज़हन भी नहीं पहुँच सकता है। मगर ये खयाल दिल में अच्छी तरह से गुज़रने भी ना पाया था के लड़की ने अपने इसी मामूली अंदाज़ में कहा। के आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

Scanned by CamScanner

इब्ने अक़ू का तो ज़िक्र ही फिज़ूल है। हाम की तमाम औलाद में से किसी से रिश्ता क़ायम ना करो। इस वास्ते के खुदा की तमाम मख़लूक़ में वो बदतरीन मख़लूक़ हैं।

मेहमान की परेशानी की अब हद ना थी। जिस क़द्र सूरतें वो निजात की निकाल सकता था। वो सब ख़त्म हो चुकी थीं। चहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगीं थीं। मगर क्या कर सकता था आख़िर को झुंझलाकर कहा "खुदा की क़सम! मैं औलादे हाम में से भी नहीं हूँ।"

लड़कीः- (मामूली अंदाज़ से) तो फिर आप किस की औलाद में से हैं?

मेहमानः- (करख़्त आवाज़ से झुंझलाकर) मैं शैतान की औलाद में से हूँ।

लड़कीः- (इसी मामूली लहजे से) शैतान और उसकी तमाम ज़ियारत और उसके तमाम आवान पर खुदा की लानत हो। आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

ऐ खुदा के बन्दो! सुन लो ये (इबलीस लईन) तो तुम्हारा दुश्मन है। और ये इस मलऊन दुश्मन खुदा के साहबज़ादे तशरीफ़ फ़रमा हैं।"

मेहमान बदहवास हो चुका था। होशो हवास बजा ना थे। घबरा कर उठा और लड़की के क़दमों पर गिर पड़ा और निहायत आजज़ी के साथ माफी की दरख़्वास्त की और वहाँ से जल्द अज़ जल्द रवाना हो गया।

(अदब-उल-अरब, सफ़ा 91)

सबक़:- ये हैरत नाक फी अलबदीहा शैर गोई अरब के सिवा किसी क़ौम में नहीं मिल सकती है। उसके साथ ही ये बात भी अजीब मालूम होती है। के जब मेज़बान औरत को मालूम हो गया के बावजूद हर तरह की ख़ातिर व मदारत के मेहमान ने हमारी हिज्जो में शैर नज़्म किया या कम अज़ कम ये के किसी दूसरे का शैर पढ़ा। उस वक़्त अरब के तर्ज़ के मवाफिक़ बहुत आसान था के वो अपनी ज़िल्लत की जानिब अपने क़बीले के मर्दों को मुतवज्जह करती और एक वाज़लाह की आवाज़ से सारे क़बीले को उसके ख़ून का पियासा बना देती। लेकिन वो जानती थी के जिस पर एक मर्तबा मेहमान बना कर एहसान किया जा चुका है। उसको खुद अपने हाथों से ज़लील करना शर्मनाक है। अलावा उसके अहले अरब के अक्सर लोगों को इस तफ़्सील की तो ख़बर होती नहीं। के मेहमान ने ममनून एहसान होने के बावजूद मेज़बान की अहानत की थी। हाँ ये बात शौहरत पज़ीर होती के फलाँ

Scanned by CamScanner

ख़ानदान के लोगों ने एक शख़्स को मेहमान बना कर क़त्ल कर दिया। और इस ग़द्दारी का धब्बा पुश्तहा पुश्त तक लगता। गोया मतलब ये होता के पहले तो सिर्फ एक शख़्स ज़बानी हिज्जो कर रहा था। उसके रोकने की कोशिश में खसायल क़बीहा का अमली जामा पहन कर अपने आपको मतऊन कराया गया। ये एक मामूली फतानत थी। जिससे अरब की एक औरत ने काम लिया था। और ऐसी उम्दा सज़ा दी के उससे उम्दा सज़ा खयाल में भी ना आ सकती थी। अगर उसको क़त्ल कर दिया जाता। तो इस ज़िल्लत में कमी हर गिज़ ना आती जिसने उस औरत को बुरा फ़रोख़्ता कर दिया था। बल्के जितने मुंह उतनी ज़बानें हो जातीं और पहले एक शख़्स ने हिज्जो की थी तो अब इज़ारों ज़बानें हिज्जो करने लगतीं। और अगर अपने एहसान का खयाल करके क़त्ल ना किया जाता बल्के इस तज़लील के बदले में उसकी तोहीन करके क़बीले से निकाल दिया जाता तो क्या ये मुमकिन था के अगर मेहमान की ज़बान से बे इख़्तियारी की हालत में एक शैर ऐसा निकल गया था जिससे क़बीले की हिज्जो होती थी। तो इस तज़लील के बदले में वो क़सदन हिज्जो के क़सायद तसनीफ करे और मुल्क अरब मे उनकी शौहरत दे।

क्या और शौअरा की वो ज़बानें जो हमला करने के लिए मौक़ा और वक़्त की मुंतज़िर रहा करती थीं। इसका साथ ना देतीं? और अगर ग़ौर करो तो क़त्ल या दूसरी किसी क़िस्म की सज़ा इसलिए भी मुनासिब नहीं के उसके जुर्म से बढ़ जाती। उसने अपनी बे लगाम ज़बान से सदमा पहुँचाया था। उसकी सज़ा में ज़बान ही से काम लेना चाहिए था। अब उसको ऐसी सज़ा दी गई के वो खुद नादिम हुआ। और दिल से सच्ची तौबा करने पर मजबूर हुआ। मुमकिन था के सख़्त से सख़्त सज़ा देकर आईंदा ऐसी हरकत ना करने के वादे उससे ले लिए जाते। मगर वो इस वादे पर साबित क़दम भी रहेगा। उसकी ज़मानत मुश्किल थी। इस सज़ा के बाद ना मुमकिन हो गया के वो इस क़बीले की हिज्जो करे।

हिकायत नम्बर(783) हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की तख़्त नशीनी की इब्तिदा ही थी के शौअरा की एक जमात ने दरबारे खिलाफत में हाज़िर होने की इजाज़त चाही। शौअरा इस अम्र के आदी हो चुके थे। के अमअ और सलातीन के दरबारों में हाज़िर होकर अपने क़सायद मदहिया से दरबारों को गर्म करें। और उनसे दिल भर कर नक़्द और ख़ुलअत वसूल करें। उनके इन मज़ामीन

Scanned by CamScanner

बुतखीलह में ऐसी तासीर होती थी के बखील सा बखील अमीर भी बग़ैर दिए ना रह सकता था। ये शौअरा कुछ इस तर्ज़ से ईनामात तलब करते थे के हुस्न तलब उनसे अच्छी गोया किसी को आती ही नहीं थी। और उनके इन समरात फिक्र का ऐसा ग़लग़ला मचा हुआ था के बअज़ बअज़ अमअ तो हज़ारों लाखों की तादाद में रुपया महेज़ इस तमन्ना में सर्फ कर दिया करते थे के फलाँ शायर हमारी मदह में ज़्यादा ना सही एक ही क़सीदा नज़्म कर दे। और उनमें से जिनकी तबाऐ ज़्यादा मोजें मारती थी। उनकी तो ऐसी ऐसी बड़ी तनख़्वाहें होती थीं। के शायद आज कल के औसत दर्जा के ताल्लुक़ दार भी आमदनी में उनका मुक़ाबला ना कर सकें। ग़र्ज़ ये के इधर तो उनके मज़ामीन की आम रग़बत जैबों और ख़ज़ानों से रुपया निकलवाने के लिए काफी थी। और इधर ना देने की सूरत में हिज्जो का ख़ौफ भी सोहाने रूह होता था। शौअरा की हिज्जो क्या थी गोया के एक सेफ क़ातअे थी के जिससे अमअ के क़लूब कांप उठा करते थे और शौअरा की जमात मज़ामीन हिज्जोया को कुछ ऐसे अजीब पैराया में अदा करती थी के बवजह फुसाहत व बलाग़त और मज़ामीन की उम्दगी के इधर शायर की ज़बान से हिज्जो के अश्आर निकले के इधर बच्चे बच्चे ने उनको याद कर लिया। अब गोया उस जगह का हर हर बच्चा उसकी हिज्जो कर रहा है। ग़र्ज़ ये के शौअरा की जमात अपनी मुंह माँगी मुरादें हासिल करती ज़रूर थी। ख़्वाह अपने इन तखिय्युलात की रग़बत की वजह से या हिज्जो के ख़ौफ से।

शौअरा की मज़कूरा बाला जमात अमीर-उल-मोमिनीन की खिदमत में हाज़िर होने की तमन्ना में कई दिन तक मौजूद रही। मगर हाज़री ना मिलना थी ना मिली। अपनी ज़िल्लत के खयाल से ये जमात बे नील मराम जाना पसंद भी ना करती थी। हुस्ने इत्तिफाक़ से अदी बिन इरताता ख़लीफतुल मुस्लिमीन की ख़िदमत में बारयाब होने की ग़र्ज़ से तशरीफ़ लाए। ख़लीफातुल मुस्लिमीन अदी बिन इरताता की बवजह के इल्मो फज़्ल के ताज़ीम व तकरीम बहुत करते थे। इसलिए उनसे अच्छा सिफारिश करने वाला इस जमात को और कौन नसीब हो सकता था। इसलिए सब की राय हुई के उनको हाज़री की इजाज़त मिलले के लिए अपना शफी बनाया जाए। इस जमात में अरब का एक मश्हूर शायर जरीर नामी मौजूद था। फौरन अदी बिन इरताता की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सामने आकर फी अलबदीहा ये अश्आर पढ़े।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- ऐ बुज़ुर्ग! अपनी सवारी को तेज़ हांकने वाले, अब ज़माना आप

Scanned by CamScanner

हज़रात के मवाफिक़ है, हमारी जमात का ज़माना तो गया गुज़रा हुआ। अगर आप दरबारे ख़िलाफत में बारयाब हों। तो हमारे ख़लीफा को हमारा इस क़द्र पैग़ाम ज़रूर पहुँचा दें के हमारी जमात आपके दरवाज़े पर इस जानवर की तरह पड़ी हुई है जिसको रस्सी में बाँध कर डाल दिया गया हो। खुदा आपकी मग़फिरत करे। आप हमारी हाजत को भूल ना जावें। ज़माना दराज़ गुज़रा है। के हमारी जमात अपने बाल बच्चों और वतन से दूर पड़ी हुई है।

अदी इब्ने इरताता से रक़ीक़-उल-क़ल्ब पर इस "इन मिनल बयान-उल-सहरा" के मिसदाक़ कलाम का असर क्यों ना होता। फौरन तसल्ली देकर सिफारिश का वादा फ़रमा लिया। जब दरबार ख़िलाफत में हाज़िर हुए तो बातों बातों में अर्ज़ किया के अमीर-उल-मोमिनीन! शौअरा की जमात दरवाज़े पर मौजूद है उनकी ज़बानें ज़ेहर की बुझी हुई हैं। ये नाराज़ होकर जिसके मुतअल्लिक़ अपनी ज़बानें खोलते हैं वो इस क़ाबिल नहीं रहता के अपने दोस्त अहबाब अज़ीज़ व अक़ारिब किसी को अपना मुंह दिखावे उनके अश्आर के तीर जब उनकी ज़बानों की कमानों से चलते हैं तो कभी खता नहीं करते हैं। अगर आप उनको हाज़री की इजाज़त देकर उनको कुछ थोड़ा बहुत देकर दहन सग बा लुक़मा दो ख़ता बह पर अमल करें। तो ना मुनासिब नहीं बल्के खिलाफत के रौब व अदब में फर्क ना आवेगा।

ख़लीफत-उल-मुस्लिमीन: (निहायत बे ऐतनाई के साथ) इस जमात को मेरे पास आने से क्या वास्ता? मैं अपने अज़ीज़ वक़्त को उनके लग़वियात में सर्फ करना बे फायदा समझता हूँ,

अदी बिन इरतात: अमीर-उल-मोमिनीन! आपने मेरी गुज़ारिश पर ग़ौर नहीं फ़रमाया। उनकी हाज़री इस क़द्र बेकार नहीं। जिस क़द्र के ग़ुलामाने आली के ज़हन में है। और आप तो आप हैं। क्या आप ने ये नहीं सुना के सरवरे कायनात अलेह अलिफ अलिफ सलात व तहय्यात की मदह की गई और आप ने खुद सुनी और इस पर ईनाम अता फ़रमाया। आम मुसलमानों और खसूसन अमीर-उल-मोमिनीन से मतबअे शरीयत के लिए इससे ज़्यादा और क्या चाहिए के वो ख़ातिम-उल-अंबिया (रूही व रूह अबी वामी फदाह) का इत्तिबा करें।

अमीर-उल-मोमिनीन: (कुछ ताम्मुल के बाद) आपने बजा फ़रमाया। मगर ये तो मालूम हो के उनमें से कौन कौन हाज़री की इजाज़त का तालिब है।

अदी बिन इरतात: अमीर-उल-मोमिनीन! हाज़री की तमन्ना करने वालों

Scanned by CamScanner

में हुज़ूर के चचा ज़ाद भाई उमर बिन अबी रबिआ अलक़र्शी भी हैं। जिनकी फ़ुसाहत व बलाग़त, नज़्मो नस्र का सिक्का जमा हुआ है।

अमीर-उल-मोमिनीन: (इस नाम से निहायत बराफरोख़्ता होकर) खुदा उसकी क़राबत को बर्बाद करे और उसको ज़िन्दगी में कभी इज़्ज़त नसीब ना हो। ये शख़्स वही तो है जिसके ये अश्आर मुझ तक पहुँचे हैं।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- ऐ काश के जिस रोज़ मेरी मौत मुझ से क़रीब होती उस रोज़ मैं तेरी आँखों और मुंह के माबैन को सूंघता और चूमता और ऐ काश के (मरने के बाद) जिस चीज़ से मुझ को ग़स्ल दिया जाता वो तेरा लुआब दहन होता। और ऐ काश के वो खुश्बू जो मरने के बाद मेरे बदन और कफन पर लगाई जाती वो तेरे ही गोश्त व पोस्त की होती और ऐ काश के सलमा (मेहबूबा का नाम है) क़ब्र में मेरे, हमबिस्तर होती। ख़्वाह यहाँ या जन्नत में या दोज़ख़ में।

अगर ये दुश्मन खुदा इस क़द्र करता के दुनिया में सलमा से मिलने की तमन्ना करता और उसके कुफ़्फारा में आमाल सालहा करता और इस क़द्र खुराफात ज़बान से ना बकता के जहन्नुम में भी इससे मिलने की तमन्ना का इज़्हार करता तो भी इस क़द्र बुरा ना होता। खुदा की क़सम! मैं ऐसे बेबाक, गुस्ताख़, मुंह ज़ोर को हर गिज़ हर गिज़ अपने पास ना आने दूंगा। अच्छा के सिवा किसी और का नाम लीजिए। जो हाज़री का ख़्वास्तगार हो।

अदी बिन इरताता: हमील बिन मोअम्मर अलअज़री भी मौजूद है जो आज अपना नज़ीर खूद है। उसकी शिकायत तो ग़ालिबन अमीर-उल-मोमिनीन ने भी न सुनी होगी।

अमीर-उल-मोमिनीन: (निहायत नफ़रत के साथ) क्या ये वही शख़्स नहीं जिसकी जसारत यहाँ पहुँच गई के वो इस क़िस्म के अश्आर तसनीफ़ करे और उन पर फख़्र करे।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- काश के हम दोनों साथ साथ ज़िन्दा रहते। और अगर मरते तो क़ब्रिस्तान में मेरी और उसकी क़ब्र बराबर होती जब ये कहा जावे के लैला को दफ़्न करके मिट्टी और पत्थरों में छुपा दिया गया तो मैं ज़िन्दा रहकर क्या करूंगा। मेरा दिन तो इस तरह गुज़रता है के मअशूक़ा के दीदार को मेरी आँखें तरसती रहती हैं। लेकिन रात को ख़्वाब में मेरी और उसकी रूहें ज़रूर मिल लेती हैं।"

Scanned by CamScanner

ये शख़्स के जिसको दिन रात के चौबीस घंटों में एक लम्हा भी अपने ख़ालिक़ का खयाल ना आवे और एक औरत का खयाल उसको घेरे रहे। आप खुद ही खयाल फ़रमावें के किस क़द्र बद इतवार होगा। खुदा की क़सम! मैं उसको भी अपने पास आने की इजाज़त ना दूंगा। अच्छा उसके सिवा किसी और का नाम बताईये।

अदी बिन इरतात: कसीर इज़्ज़त। ये वो मश्हूर शायर है जिसके मदहिया क़सायद की आरज़ू बड़े बड़े अमरअ ने की है और उसने अपने कमाल के ज़ौम में मामूल अमरअ की तारीफ अपने लिए बाइसे तोहीन खयाल की है। और बावजूद बड़े बड़े ईनामात के वादों के उसने किसी को मुंह नहीं लगाया है।

अमीर-उल-मोमिनीन:- मालूम होता है के आप इस जमात के हाल से बिलकुल ही बे ख़बर हैं। इन्हें जामअे कमाल के ये अश्आर हैं।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- मदयन के तारिक-उद्दुनिया और जिन जिन लोगों से मैं मिला हूँ। उनको मैंने खुदा के अज़ाब से रोते पीटते देखा। और अगर वो मेरी प्यारी महबूबा अज़्ज़त की बातें इस तरह सुनते जिस तरह के मैंने सुनी हैं। तो कोई उसके सामने ताज़ीमन सर झुकाता कोई सज्दा करता।

अल्लाह उस पर लानत करे। ये एक नाक़िस-उल-अक़्ल वालदैन, औरत को क़ाबिले सज्दा समझता है। और खुदा के अज़ाब से डर कर रोने वालों का तमसखुर उड़ाता है। ये पहाड़ के बराबर कलमात ज़बान से निकाल देने वाला क्या दरबार में हाज़िर होने की इजाज़त दिए जाने के क़ाबिल है। खुदा की क़सम मैं ऐसे नाहिनजार को अपने पास आने की इजाज़त देकर गुनहगार ना बनूंगा। अच्छा! इसके सिवा और कौन इजाज़त का तालिब है।

अदी बिन इरतात: अदी बिन अहवस अनसारी भी मौजूद है और उसके फज़्लो कमाल का तो हर छोटा बड़ा मदाह है।

अमीर-उल-मोमिनीन:- खुदा इस पर अपना ग़ज़ब नाज़िल फ़रमावे। क्या उस बद किरदार और बद अक़्वाल को मैं अपने पास आने दूंगा। "नहीं नहीं हर गिज़ नहीं।" मैं उसकी हालत से अच्छी तरह वाक़िफ हूँ। ये बदइतवार वही तो है जो मदीने के एक शख़्स की लोंडी को फिसला कर ले भागा था। और खाकिश हिदहन उस पर ये शैर फख़्रन पढ़ा था।

शैर का तर्जुमा

Scanned by CamScanner

तर्जुमा:- मेरे और इस लोंडी के मालिक में हायल होकर खुदा उसको मुझ से अलेहदा करना चाहता है और मैं उसके पीछे पीछे लगा हुआ हूँ।"

अब तो आपको उनके हुस्ने इस्लाम की ख़बर हो गई। ख़ैर किसी और का नाम बताईये।

अदी बिन इरतात: हमाम बिन ग़ालिब अलफरज़दिक़। उसकी बज़्ला संजी और लतीफा गोई तो रोतों को हंसा देती है। अगर उसको इजाज़त दे दी जावे तो ग़ालिबन ना मुनासिब नहीं।

अमीर-उल-मोमिनीन: आपने भी अच्छे का नाम लिया। आपको ख़बर नहीं के ये फासिक़ ज़िना के गुनाह में मुबतला हुआ और उस पर ये अश्आर फख़्रिया कहे।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- उन दोनों ने मुझ को बड़ी बुलंदी से इस तरह लटकाया जिस तरह के कोई नर्म परों वाला बाज़ किसी शिकार पर पूर तोल कर यकायक गुज़रता है। तो जब मेरे दोनों पैर ज़मीन पर जमे। तो इन दोनों ने कहा। के आया ये ज़िन्दा है। के इससे उम्मीद की जा सके। या ये ठंडा हो लिया के इससे अलग हो जावें। तो मैंने कहा। के ऐसा ना हो के निगहबानों को ख़बर हो जावे और मैं जल्दी से रात ही रात में निकल भागा।"

खुदा की क़सम! मैं उसको भी अपने पास ना आने दूंगा। अच्छा किसी और का नाम लीजिए।

अदी बिन इरताता: अख़्तल तग़लबे भी हाज़री का ख़्वास्तगार है। इसमें मुझ को तो कोई ऐब नहीं मालूम होता है।

अमीर-उल-मोमिनीन: (मुस्कुरा कर) ऐब नहीं मालूम होता। ये भी आपने खूब फ़रमाया। इससे ज़्यादा मुंह फट शायर कम होंगे। आपने उसके ये शैर सुने होंगे।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा: मैंने सारी उम्र में कभी रमज़ान के रोज़े नहीं रखे और कुर्बानी करना तो बजाए खुद मैंने कभी कुर्बानी का गोश्त खाया भी नहीं। ना मैंने सुबह के वक़्त, मक्का के टीलों की तरफ़ ऊँटों को बग़र्ज़ हिसूले निजात अखरवी तेज़ भगाया। और ना मैं खरीदे हुए ग़ुलाम की तरह सुबह के वक़्त हय्या अलल फलाह कहकर लोगों को नमाज़ के लिए बुलाता हूँ। हाँ ठंडी और तेज़ शराब के गिलास ज़रूर चढ़ा जाया करता हूँ। और सुबह होते होते सज्दे कर लिया करता हूँ।"

Scanned by CamScanner

ये ज़ात शरीफ तो फ़रज़दिक़ से भी चार हाथ आगे हैं। खुदा की क़सम! मैं इस मुसलमान सूरत काफिर सीरत को अपने फर्श पर भी क़दम ना रखने दूंगा। इसके सिवा अगर कोई और हो तो उसका नाम लीजिए।

अदी बिन इरताता: जरीर भी है। उसकी ज़बान फ़रज़दिक़ के मुक़ाबले में तो बेशक खुली है। मगर उसने फ़रज़दिक़ पर ही बस की। मेरे इल्म में उसने कोई ऐसी जसारत नहीं की जिससे हदूद शरया पामाल होते हों।

अमीर उल मोमिनीन: आपने उनकी मजनूनाना बड़ नहीं सुनी। उनके शैर हैं।

शैर का तर्जुमा

तर्जुमा:- अशाक़ के दिलों को शिकार करने वाली तेरी पास रात को आए और ये वक़्त मुलाक़ात का वक़्त नहीं तो ख़ैरियत से वापस हो जा।"

ताहम अगर शायरों को आने की इजाज़त देना आपके खयाल में ज़रूरी ही है तो खैर उसको बुलवा लीजिए।

अदी बिन इरताता अपने दिल में ये कहते हुए बाहर तशरीफ़ लाए के अलहम्दू लिल्लाह इस क़द्र वक़्त सर्फ करने के बाद अमीर-उल-मोमिनीन ने एक को तो इजाज़त हाज़िर होने की दे दी। अगर उसकी निसबत भी इंकार फ़रमा देते तो मैं क्या कर लेता। बाहर आकर देखा तो सब के सब चूं गोश रोज़ादार पर अल्लाहू अक्बर सत का मंज़र बने हुए थे। आपने जरीर को हमराह लिय और ख़लीफात-उल-मुस्लिमीन की खिदमत में हाज़िर हुए। जरीर एक पुरकाला आतिश था। और फी अलबदीहा कहने में तो ऐसा मशाक़ था के बसाअवक़ात उसके फी अलबदीहा शैर पढ़ देने पर लोगों को गुमान होता था। के ये घर से याद कर लाया है। मौक़ा पाकर पढ़ दिए। ख़लीफत-उल-मुस्लिमीन को दूर से देखते ही ये शैर पढ़ना शुरू कर दिए।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- बेशक जिस क़ादिर मतलक़ ने नबी उम्मी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को नबी बनाकर ख़ल्क़-उल्लाह की हिदायत के लिए भेजा। उसने तख़्ते खिलाफत पर एक आदिल ख़लीफा को मुतमकिन किया है। सारी रिआया के लिए उसका अद्ल व वक़ार आम है। यहाँ तक के उसकी रिआया का एक एक शख़्स अमूरे क़बीहा से मुंतख़िब है। और उसने बड़े बड़े टेढ़ों की कजी को सीधा कर दिया। मैं उसके पास नफा आजिल की उम्मीद लेकर हाज़िर हुआ हूँ और हर शख़्स जानता है के इंसानी नफ़्स मुनाफअे आजिला का दिलदादा है। मालिक हक़ीक़ी ने अपने कुरआने पाक

Scanned by CamScanner

मुसाफिर और अयालदार फक़ीर का हिस्सा मुक़र्रर फ़रमा दिया है। (और मुझ में ये सारे ओसाफ मौजूद हैं)

अमीर-उल-मोमिनीन: (अपने खयाल में इइस मदह को हद से बढ़ा हुआ समझकर) जरीर! अल्लाह से डरो और ज़बान से कोई बात हक़ बात के सिवा ना निकालो। जरीर ने ये सुनते ही फिर शैर पढ़ना शुरू कर दिए।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- मेरे वतन यमामा नामी में बहुत से परागंदा बाल रांड औरतें हैं। बहुत से यतीम हैं। के बवजह फाक़ा कशी के ना उनकी आवाज़ निकलती है। ना उनकी नज़र ऊपर उठती है) ये ऐसी जमात है के बवजह आपके इंसाफ के उनके माँ बाप के नअेम-उल-बदल हो गया। वो चिड़िया के ज़ईफ बच्चे की तरह हैं जो चल ना सकता है ना उड़ सकता है) क्या मैं इस तकलीफ और मुशक़्क़त का हाल बयान करूं जो मेरे ऊपर नाज़िल हो चुकी। या जो कुछ आपको मेरे मसायब और शदायद का हाल सुनाया गया। वही मेरे ऊपर रहम करने के लिए काफी होगा। जब बारिश हम से मुंह फैर लेती है तो हम को अपने ख़लीफा से ऐसी ही उम्मीद लगी रहती है जैसी के बारिश से आज कल ख़िलाफत हक़ बहक़दार रसीद की मिसदाक़ है। जैसे के मूसा अलेहिस्सलाम अपने रब से कलाम करने के मुसतहिक़ समझे गए। हुज़ूर ने रांडों और दुखिया औरतों की तो हाजत रवाई फ़रमा दी। मगर अब इस रंडवे मर्द की हाजत रवाई कौन करेगा। जब तक आप दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा हैं। ख़ैर हम से जुदा नहीं हो सकती। ऐ ख़ैर मुजस्सिम उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ आप पर खुदा की बर्कात की बारिशें होती रहें।

अमीर-उल-मोमिनीन: जरीर! खुदा की क़सम! तुम ने अपने मतलब को निहायत खूबी से अदा किया। मगर मेरी मुल्क में बजुज़ तीस अशर्फियों के और एक पैसा भी नहीं। उस में से भी दस अशर्फियाँ तो मेरा बेटा अब्दुल्लाह सर्फ कर चुका और दस अशर्फियाँ मेरी बीबी ने ले लीं। बाक़ी दस अशर्फियाँ तुम ले लो। ये कहकर ख़ादिम को हुक्म दे दिया के बाक़ी जरीर को दे दे।

जरीर:- अमीर-उल-मोमिनीन! मैं अगरचै अमअ से हज़ारों लाखों, अशर्फियाँ लेकर भी खुश नहीं होता। और ज्यादा का तालिब होता हूँ लेकिन आपकी ये दस अशर्फियाँ मेरी उम्र भर की कमाई से अफ़ज़ल और उम्दा हैं।

जरीर ये शुक्रिया के अलफाज़ अमीर-उल-मोमिनीन की खिदमत में कहकर बाहर आया तो उसकी जमात के बाक़ी मांदा शाबरों ने पूछा के क्या हुआ।

Scanned by CamScanner

जरीर: क्या हाल पूछते हो, सुनोगे तो सर पीट लोगे। मैं एक ऐसे खलीफा के पास से होकर आ रहा हूँ, जो फक़ीरों के लिए सखी और शायरों के लिए बखील है। लेकिन खुदा की क़सम मैं तो उसकी इस आदत के मदाह हूँ।

बाक़ी मांदा शौअरा ने जब जरीर से ये सुना तो उनकी उम्मीदों पर पानी पड़ गया। और अमीर-उल-मोमिनीन के इस हज़्म और एहतियात और तक़वे का नतीजा सिर्फ यही निकला के जिन शौअरा को सिर्फ इस जुर्म में दरबार की हाज़री के बजा फख्र से मेहरूम किया गया था। के उनकी ज़बानें उनके क़ाबू में ना थीं। और हदूद शरिया से मुतजावुज़ होकर दूर अज़ दूर पहुँच जाती थीं। वही लोग अपनी ज़बानों को क़ाबू में रखने लगे। हदूद शरिया और हक़ूक़ मज़हब की हिफाज़त करने लगे। बल्के ये एक आम तनबीह थी। जो बर्क ख़ातिफ की तरह ज़मीन के इस किनारे से होती हुई आन की आन में दूसरे किनारे तक पहुँच गई। और जिन बातों को वो हंसी के तौर से ज़बानों से निकाल दिया करते थे। उन से एहतियात करने लगे। दीनी हदूद और मज़हबी हक़ूक़ की जो अज़मत और वक़अत दिल से निकल चुकी थी। वो इस एक ही ताज़याना में लौट कर आ गई। (अदब-उल-अरब, सफ़ा 128)

सबक़:- अमीर-उल-मोमिनीन के इस मुख़्तसिर से वाक़ेये पर एक सरसरी नज़र डालने से बहुत से नसाऐह और बैश बहा मालूमात हासिल होती हैं।

1- सुलतान को ऐसा बा ख़बर रहना चाहिए के उसको रिआया में से हर एक के अफआल व अक़वाल की पूरी वाक़फीयत हासिल हो।

2- अेहकाम के जारी करने में (अगर वो तरीक़ से मुनहरिफ़ नहीं हैं) तो हर गिज़ उसकी परवा ना करे के आम लोग या रिआया में से ज़बान ज़ोर अशख़ास इस पर क्या कुछ मलमअे साज़ी ना करेंगे।

3- हक़ बात के मानने में इसका हर गिज़ खयाल ना करे। के मैं उससे क़ब्ल इस हुक्म के खिलाफ हुक्म दे चुका हूँ। मेरी बात की वक़अत लोगों के दिलों से निकल जावेगी। अमीर-उल-मोमिनीन ने बावजूद इस ताकीदी हुक्म के शौअरा की जमात हाज़िर दरबार ना हो। जब अदी बिन इरतात से ये सुना के हुज़ूर की खिदमत में भी यही शौअरा हाज़िर हुआ करते थे। तो उन्होंने शौअरा को हाज़िर होने की इजाज़त दे दी।

4- हुक्म जारी करने में अपने पराये की तख़्सीस ना करें। वो हुक्म

Scanned by CamScanner

बे वक़अत है जो अपने आज़ा के लिए और अबाऐद के लिए और हो। अमीर-उल-मोमिनीन ने जब अक़वाल पर गिरफ़्त शुरू की तो अपने अज़ीज़ शायर को भी मुसतसना ना किया। और अजब नहीं के अदी बिन इरतात ने सब से पहले जो इस अज़ीज़ शायर का नाम लिया है। वो इसी मसलेहत से हो के अमीर-उल-मोमिनीन अपने अज़ीज़ का नाम सुनकर हुक्म में किसी क़िस्म की सहूलत कर देंगे। मगर अमीर-उल-मोमिनीन ने हर गिज़ उसको पसंद ना फ़रमाया। के एक ही जुर्म में अक़ारिब और अबाऐद दोनों शरीक हों। और अक़ारिब क़ाबिले अफ़्व समझे जावें। और अबाऐद से मवाख़िज़ा किया जावे। और फी अलहक़ीक़त हुक्म की सच्ची अज़मत रिआया के क़ल्ब में इसी वक़्त मुतमकिन होती है। जब के वो उसको बड़े छोटे अपने पराये की तमीज़ के बग़ैर सब पर बराबर देखती है।

5- अमीर-उल-मोमिनीन ने अपनी मदह में मुबालग़ा को पसंद ना फ़रमाया। उनको मालूम था के ज़बान पर क़ुद्रत रखने वाला अगर किसी बड़ी से बड़ी चीज़ को अच्छा साबित करने पर उतर आवे। तो अच्छा ही साबित करके छोड़ता है और अगर अच्छी से अच्छी चीज़ को बुरा साबित करना चाहे तो इस तौर से काम लेता है के क़लूब में ये बात जागुज़ीं हो जाती है के इससे बदतर चीज़ ख़ालिक जिल्ले व अला शानहू ने कोई पैदा ही नहीं फ़रमाई। इसी लिए अव्वल ही से फ़रमा दिया के देखा हक़ के सिवा और कोई बात ज़बान से ना निकालना।

6- अरबी इल्म अदब की मुनासबत का ये हाल था के इस क़िस्म के अश्आर (जिनकी वजह से शौअरा इस दर्जे के मअतूब क़रार दिए गए के अमीर-उल-मोमिनीन ने उनकी सूरतों को देखना भी गवारा (ना फ़रमाया) इस तौर पर नाम बनाम बरजस्ता याद थे। तो इसमें क्या शक हो सकता है के आपके हाफ़िज़ में अश्आर का एक काफी ख़ज़ाना मौजूद होगा। हुक्मरानी जैसी कुछ मशग़ूलियत को चाहने वाली और आदमी को किसी काम का ना रखने वाली चीज़ है। उसको हर साहब बसीरत मालूम कर सकता है। लेकिन बावजूद इस मशग़ूली के अरबी अश्आर हाफ़ज़ा में महफ़ूज़ थे। अमीर-उल-मोमिनीन की इस अदब दानी पर ग़ौर करके इन क़ासिर हिम्मतों के मुतअल्लिक़ अपनी राय क़ायम करो। जो बावजूद इस क़द्र मशाग़िल ना रखने के अरबी इल्म अदब से बेबेहरा हैं।

Scanned by CamScanner

लाखों सलाम

फाज़िल बरेलवी

मुसतफा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमै बज़्म हिदायत पे लाखों सलाम
मेहर चर्ख नबुव्वत पे रोशन दुरूद
गुले बाग़ रिसालत पे लाखों सलाम
शहर यारे अरम ताजदारे हरम
नो बहार शफाअत पे लाखों सलाम
हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फक़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम
दूर व नज़दीक के सुनने वाले वो कान
काने लअले करामत पे लाखों सलाम
जिसके माथे शफाअत का सहरा रहा
इस जबीं सआदत पे लाखों सलाम
जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
इस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम
पतली पतली गुले क़ुद्स की पत्तियाँ
इन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम
वो ज़बाँ जिसको सब कुन की कुंजी कहें
उसकी नाफिज़ हकूमत पे लाखों सलाम
कुल जहाँ मिलक और जौ की रोटी ग़िज़ा
इस शिकम की क़नाअत पे लाखों सलाम
जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफरोज़ साअत पे लाखों सलाम
काश मेहशर में जब उनकी आमद हो और
भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम
एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम
मुझसे ख़िदमत के क़ुदसी कहें हाँ रज़ा
मुसतफा जाने रहमत पे लाखों सलाम

Scanned by CamScanner

सच्ची हिकायात

हज़रत मौलाना अबुन्नूर मौहम्मद बशीर साहब









अदबी दुनिया

Scanned by CamScanner

इल्तिज़ा है कि इस किताब को अपनी मोबाईल की मैमोरी में सेव करके ना रखे वल्कि आप से गुजारिश है कि इस किताब का मुताला की जिये ये किताब बहुत शानदार है।

दुआ की गुजारिश
डॉ ज़ाहूर रज़वी
अल अश्हर अकडमी

दुआ की ग़ुज़ारिश
मोहम्मद अहतिराम क़ुरैशी

आप हज़रात से गुजारिश है कि इस किताब को आप अपना निम्ती वक़्त दे और इस किता ब का मुताला करे और हम ना चीज़ को अपनी अपनी दुआओं में याद रखे

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जुमला हक़ूक़ बहक़ नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताब	:	सच्ची हिकायात मुकम्मल
तालीफ़	:	मौलाना अबु अलनूर बशीर
सन इशाअत	:	2013
सफ़हात	:	936
मतबअ	:	नाहिद प्रेस, देहली
हदिया	:	
नाशिर	:	अदबी दुनिया, देहली

इस किताब में

कुतब अहादीस और दीगर मुसतनिद इस्लामी किताबों से दिलचस्प, मुफ़ीद और सबक़ आमोज़ हिकायात जमा कर दी गई हैं और हर हिकायत के बाद इससे जो सबक़ हासिल होता हैए लिख दिया गया है और हर हिकायत को असल किताब से देखकर दर्ज किया गया है और किताब का नाम, सफ़हा और जिल्द सब कुछ दिया गया है।

Publisher

ADABI DUNIYA

399, Matia mahal, jama masjid,
Delhi - 110006
Phone : 23250122

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहली नज़र

इस ज़माने में अफ़साने, ड्रामे, किस्से और कहानियाँ बड़े शौक़ से पढ़ी जाती हैं और ये शौक़ बिलअमूम हर छोटे बड़े मर्द और औरत में पाया जाता है, आज कल हर वो तहरीर जिसमें अफ़सानवी तर्ज़ और हिकायती रंग मौजूद हो, पसंदीदगी की नज़र से देखी जाती है, क़ौम का यही रूहजान तबओ इस अम्र का बाइस है के मुल्क के अक्सर रसायल व जरायद अपने अपने "कहानी नम्बर" और "अफ़साना नम्बर" शाय करते हैं और अफ़साना पसंद अफ़राद इन्हें हाथों हाथ लेते हैं।

ये अफ़साने, ड्रामे और आज कल की हिकायात व कहानियाँ ज्यादा तर दरोग़ व कज़िब और ग़ैर वाकेई बिना पर मुबनी होती हैं, उनकी कोई हक़ीक़त और असल नहीं होती और ऐसे अफ़साना लिखने वाले उन वज़अई हिकायात को "तबै ज़ाद" और अपनी तख़लीक़ क़रार देकर अपने वज़ओ व कज़िब को अपना एक शाहकार साबित करते हैं और अफ़साना पसंद तबीअतें उन्हें उस कारनामे पर दादे तहसीन देती हैं और उसे तरक्की पसंद अदब के नाम से मोसूम करने लगती हैं।

क़िस्से और हिकायात ज़रूरी नहीं के झूट ही हों, इस आलम में क़िस्सों और सच्ची हिकायात का वजूद भी है, खुद क़ुरआने पाक और अहादीसे शरीफ़ा में भी हिकायात व क़सस मौजूद हैं और वो हिकायात व क़सस ऐसे हैं जिनमें सौ फ़ीसदी सदाक़त है और जो अपनी सदाक़त के बाइस मख़्लूक़ के लिए मौजिबे रूश्दो हिदायत और वजह दर्से इब्रत हैं। खुदा तआला ने अपनी सच्ची किताब मजीद में अम्बियाइक्राम अलेहिमअस्सलाम के ईमान अफ़रोज़ क़िस्से और उमम साबिक़ा की सबक़ आमोज़ हिकायात बयान फ़रमाई हैं और रसूले खुदा सल-लल्लाहो-तआला-अलेह व सल्लम ने भी अपने इर्शादाते आलिया में पहली उम्मतों के इब्रत आमोज़ वाक़ेयात और सबक़ आमोज़ हिकायात सुनाई हैं और इसी तरह बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात और उनकी तालीफ़ात में भी इस क़िस्म की सच्ची हिकायत का वजूद पाया जाता है मगर मुश्किल ये है के ये सब पुरानी बातें हैं और इस नए दौर में उन पुरानी बातों की तरफ़ तवज्जह नहीं की जाती ऐ काश! मुसलमान आज

Scanned by CamScanner

कल के लायानी अफ़्सानों और वज़अई और झूटी हिकायात की बजाए अपने हक़ीक़ी अफ़्सानों और सच्ची हिकायात को पढ़ते पढ़ाते तो दिलचस्पी के अलावा उन्हें दीनी और दुनयवी फ़वायद भी हासिल होते।

मुद्दत से मेर दिल में ये ख़याल था के क़ुरआन व हदीस और दीगर इस्लामी लिटरेचर से हक़ीक़ी क़िस्सों और सच्ची हिकायात को जमा करूं और उन्हें सादा और आम फ़हेमो तर्ज़ में क़लमबंद कर के मुसलमानों के लिए एक ऐसी किताब लिखूं जिसका मुतअल्ला उनके लिए दिलचस्पी भी पैदा करे और साथ साथ ही उनके लिए सबक़ व इब्रत पेश करके उनके दीन व दुनिया की इसलाह भी करे चुनाँचे इसी अपने इरादे के तहेत मैंने सच्ची हिकायात को जमा करना शुरू कर दिया और क़ुरआन व हदीस के अलावा और बहुत सी इस्लामी क़ुतुब का मुतअल्ला करने के बाद इस सबक़ आमोज़ सिसिले की इब्तिदा कर दी।

मेरे ज़हेन में ये सिलसिला बड़ा तवील है और इरादा है के मुबारक सिलसिला को दूर तक ले जाऊँ, मैंने इस तालीफ़ के लिए जो बाब तजवीज़ किए हैं वो हस्बे ज़ेल हैं:-

पहला बाब	तौहीदे बारी
दूसरा बाब	सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा सल-लल्लाहो-अलेह व सल्लम
तीसरा बाब	अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल-सलाम
चौथा बाब	ख़ुलफ़ाए राशिदीन रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
पाँचवा बाब	सहाबाइक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
छटा बाब	अहले बैत अेज़ाम रिज़वान-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन
सातवाँ बाब	आयम्माइक्राम रहमत-उल्लाही अलेहिम अजमईन
आठवाँ बाब	औलियाइक्राम रहमत-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
नवाँ बाब	सलातीने इस्लाम
दसवाँ बाब	मुख़तलिफ़ हिकायात

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

चूँके ये सिलसिला बहुत तवील है इसलिए इस किताब को तीन हिस्सों पर तक़सीम कर दिया है इसका ये पहला हिस्सा जो आपके हाथ में है पहले चार अबवाब पर मुशतमिल है, इसमें पहला, दूसरा, तीसरा, और चौथा बाब है और बाक़ी दूसरे अबवाब इंशाअल्लाह दूसरे हिस्सों में आएँगे इस किताब के पहले बाब में ऐसी हिकायात का इन्तिख़ाब है जिनका ताल्लुक़ "तौहीदे बारी" से है और दूस. . बाब में उन रिवायात व हिकायात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ातेग्रामी से है, उन सच्ची हिकायात व रिवायात से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मरातिब व मदारिज, आपके इख़्तियारात व कमालात और आपके उलूम का पता चलता है और ये बात साबित होती है के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार हैं और दानाऐ ग़यूब हैं और हर गिज़ हर गिज़ हमारी मिस्ल नहीं हैं, तीसरे बाब में अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल सलाम के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे पता चलता है के अम्बियाऐक्राम की बहुत बड़ी शानें हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात अता फ़रमाए हैं, चौथे बाब में ख़ुल्फ़ाऐ राशिदीन यानी हज़रत सिद्दिके अक्बर, हज़रते उमर फ़ारूक़ आज़म हज़रत उस्मान ज़ूलनोरैन और हज़रते मौला अली रिज़वानउल्लाही अलेहिम अजमईन के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे इन चार यारानें नबी के मरातिब व मदारिज ज़ाहिर होते हैं और पता चलता है के ये चारों ही अल्लाह के महबूब के महबूब हैं और उनकी मोहब्बत ऐन ईमान है और उनकी अदावत से ईमान जाता रहता है। इस हिस्से में ये चारों बाब हैं बाक़ी के छः अबवाब दूसरे और तीसरे हिस्से में हैं।

ज़रूरत है के आज वो मुसलमान जो क़िस्सों के शौक़ीन हैं वो झूटी हिकायात को छोड़ कर उन सच्ची हिकायात को पढ़ें ताके उन के लिए दीनी तरक्क़ी का सबब हो और वो मुसलमान औरतें जो रातों में बच्चों को झूटी कहानियाँ सुनाया करती हैं इन सच्ची हिकायात को पढ़ें, याद करें और अपने बच्चों को ये सच्ची हिकायात सुनाएँ ताके बच्चों के दिल में भी दीन की रग़बत पैदा हो।

(अबु अलनूर मोहम्मद बशीर)

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

748	नर्मी व सख़्ती	748
749	शराब	749
750	शेर शाह सूरी	749
751	नूर मोहम्मदी (स०अ०स०)	753
752	पैग़म्बरे कुल	755
753	दुर्रे यतीम (स०अ०स०)	756
754	आग की खाई	757
755	रसूले बरहक़	758
756	दानाऐ ग़ैब	758
757	हर गिज़ नमीरद आँके दिलश ज़िन्दा शुद बआश्क़	759
758	बुज़र्गों की दुआ	759
759	खुदा की बन्दगी	760
760	नासहाना कलमात	760
761	दिलजोई	762
762	हज़ारों साल की उम्र	762
763	अज़ाबे क़ब्र	762
764	सुलतान को नसीहत सअदी	763
765	हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा की नसीहत	764
766	बादशाह और फ़क़ीर	765
767	ज़ेहरी नज़र	766
768	निशाने मर्दमी	766
769	चुग़ल ख़ौर पर लानत	767
770	क़ब्रिस्तान	767
771	शैतान का अफ़सोस	768
772	अल्लाह की एक मक़्बूल बंदी	768
773	आग में	769
774	सब से बड़ी दौलत	770
775	रोज़ा	770
776	यहूदी से मुनाज़रा	771
777	हक़ बहक़ दार रसीद	773
778	कुत्ते की दुम	775
779	दूरअंदेशी	776
780	ज़ोज-उल-क़हबा	777
781	ज़मीन का बोझ	777
782	एक लाख दीनार	778
783	लज़ीज़ खाना	779
784	हवा	780
785	एक ताजिर	781
786	एक जिन्न	782
787	माँ का हक़	783

अदब-उल-अरब

788	अरब का एक मेहमान और एक लड़की	784
789	हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़	806
790	लाखों सलाम	816

पाँचवाँ हिस्सा ग्यारहवाँ बाब

791	तशरीफ आवरी	818
792	रज़ाअत शरीफा	820
793	दीन व दुनिया	821
794	दाफअ-उल-बला	823
795	अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह	823
796	गोह की गवाही	824
797	मौजज़ा	825
798	मुनाफ़िक़	826
799	ऐलाने हब	826
800	हज़रत दानियाल अलेहिस्साम	827
801	आक़बत अंदेशी	828
802	मौत के बाद कलाम	829
803	अबु जहल	829

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

804	चार यार (रज़ी अल्लाहो अन्हुम)	830
805	अमीर तग़ल्लुल	831
806	तीन सख़्ती	832
807	हसन व हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा	833
808	सिद्दीक़े अक्बर (रज़ि०)	834
809	नेक ख़सलतें तीन सौ साठ हैं	835
810	सुनहरी महल	835
811	सत्तर हज़ार	836
812	चार मेहबूब	836
813	अहसनतुन्ना	837
814	ख़ारजी को जवाब	837
815	अज़ान	838
816	अजीब सवाल	839
817	तक़वा	840
818	सलामती व आफ़ियत	840
819	अद्ल की बर्कत	841
820	करामत	841
821	ग़ुलाम ख़लील	842
822	बेटा	843
823	नसीहत	843
824	हज़रत शिबली अलेह अर्रहमा	844
825	ख़ुदा की ज़मानत	845
826	बेनियाज़ी	847
827	क़सतात	848
828	तवाज़ो	848
829	रोना	849
830	असतग़फार	850
831	सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम	850
832	मोहब्बत औलिया	850
833	ईसाले सवाब	851
834	अदाऐ क़र्ज़	851
835	सलाम	852
836	चार बातें	852
837	ख़्वाहिशे नफ़्स	853
838	दोनों जहाँ	853
839	"से" और "को"	854
840	बदला	854
841	मुसाफिर मदीना	855
842	अल्लाह के शेर	855
843	इल्म की बर्कत	856
844	दुआ में एक हाथ	857
845	बुज़र्गों का फैज़	858
846	भेड़ और शेर	858
847	एक नेक बीवी	858
848	एक बुज़र्ग	859
849	हक़ गो	859
850	कुश्ती	860
851	जेल खाना	860
852	तलबे सादिक़	861
853	नूरानी ख़्वाब	861
854	खुदा का मेहमान	863
855	तारीफ़	863
856	लाइलाहा इल-लल्लाह	864
857	बन्दगी	865
858	मोहताज	866
859	अल्लाह की मर्ज़ी	866
860	गधे	867
861	खुदा का ख़ौफ	868
862	फिक्र इख़्तियारी	868
863	चार सवारियाँ	869
864	बन्द को खोल	869
865	ग़ीबत	870
866	अजज़ो बेचारगी	870

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

867	अनानियत	870
868	पंदो निसाऐह	871
869	दुआ	872
870	पत्थर में आदमी	873
871	नेक नीयती	874
872	बुज़र्गों का हसद	874
873	सद्क़ा	875
874	साँप	876
875	बुज़र्गों की शर्म	876
876	बुज़र्गों का तक़वा	877
877	क़ब्र	877
878	पेट में	878
879	खुदा पर नज़र	878
880	बहुत जल्द	879
881	नंगे सर	879
882	रिहाई	880
883	तासीर कलाम	880
884	इस्मे आज़म	881
885	अय्दाल	881
886	हज़रत सईद बिन जबीर व हज्जाज बिन युसूफ	883
887	मोतियों का हार	885
888	अद्लो इंसाफ	889
889	नसीहत	892
890	रहम दिली	893
891	नमाज़ और बालों की आराईश	893
892	मच्छर का खून	894
893	मसावात	894
894	माज़रत	895
895	ज़हरीला फोड़ा	895
896	बुराई का बदला	896
897	दुनिया की हैसियत	896
898	ग़ाफिल इंसान की हक़ीक़त	897
899	सहाबा इक्राम	897
900	नेक काम में खर्च	898
901	दुनिया का घर	898
902	बुज़र्गों की नज़र	898
903	क़ब्रिस्तान	899
904	पाहान अरमनी	899
905	गवाही	900
906	मसमरीज़्म	901
907	एक बुज़र्ग	902
908	एक शहीद	902
909	ज़िन्दा ज़िन्दा ही हैं	903
910	दायाँ हाथ	904
911	कल की बात	904
912	हज़रत उमैर की कहानी	905
913	नसीहत	906
914	वे नमाज़	906
915	गुदड़ी में लअल	907
916	बूढ़ा यहूदी	908
917	दुआ क़बूल क्यों नहीं होती	909
918	अबु अल्फा	910
919	तीन दुआएँ	911
920	खुश्बू वाला	912
921	मक़्बूल लकड़हारा	913
922	कमाल तक़वा	914
923	बड़ा दरवाज़ा	914
924	दिल और ज़बान	915
925	फैसला	915
926	सबसे ज़्यादा मौअज़्ज़िज़	916
927	फक़ीर	917
928	शराब	918
929	आटे में मिलावट करने वाले का अंजाम	918

Scanned by CamScan
Scanned by CamScanner

930	बहीन लड़का	919
931	खुशहाल मस्त	919
932	हिम्मत व मेहनत	920
933	इत्तिफाक़	921
934	भैंगा	921
935	अगर मगर	923
936	सुलतान मेहमूद और अयाज़	924
937	तवक्कल	926
938	आदमी की तलाश	927
939	गुमराह राहबर	928
940	फारूके आज़म(र०अ०) और एक चोर	929
941	सांप का चोर	930
942	चार जाहिल	931
943	जानवरों की बोलियाँ	932
944	चालाक औरत	934
945	हसद व रश्क	935

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

लक़द काना फी क़सासीहिम इबरातुन लिऔलियल अलबाब

(बेशक उनके क़िस्सों में इबरत है समझदारों के लिए-पारा: 13, रूकू: 6)

मुसतनिद और सबक़ आमोज़

सच्ची हिकायात मुकम्मल

हिस्सा पाँचवाँ

पहली नज़र

"सच्ची हिकायत" के चारों हिस्सों को जो क़बूलियत ताम्मा हासिल हुई है। मज़हबी जमूद के इस दौर में इसकी मिसल नहीं मिलती। इस्लामी लिटरेचर से दिलचस्प और मुफीद हिकायात का इन्तिख़ाब इनकी तरतीब ला जवाब और फिर हर हिकायत के बाद उससे जो सबक़ हासिल होता है। उसका मौस्सर अंदाज़ में बयान एक ऐसी जिद्दत है जो हर पढ़ने वाले के लिए दिलकश साबित हुई। और जिसके बाइस हर खुर्दो कलाँ मर्द वं औरत और अपना व बैगाना इसका शैदाई व तालिब ब गया। मेरी ये कोशिश इस लिहाज़ से भी कामयाब है के हिकायत सुनाते हुए मैं मसलक अहले सुन्नत की हक़्क़ानियत को भी साबित करता चला गया हूं। और ऐसे मौस्सर व ग़ैर दिल शिकन अंदाज़ में के साहबे अक़्ल सलीम को बजुज़ तसलीम के चारा नहीं।

चार हिस्से पढ़ लेने वालों का पैहम इसरार था के इस मुफीद सिलसिले को और आगे बढ़ाया जाए। और इसका पाँचवा हिस्सा भी लिखा जाए। अदीम-उल-फुर्सती के बाइस ये पाँचवा हिस्सा जल्द मुरत्तब ना हो सका।

अलहम्दूलिल्लाह

के आज मैं इस पाँचवें हिस्से को भी शाय करके हाज़िरे ख़िदमत कर रहा हूँ।

गर क़बूल अफ़्तज़र है इज़्ज़ोशराफ
अबु अलनूर मोहम्मद बशीर

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

सच्ची हिकायत के तीसरे और चौथे हिस्से में इस ईमान अफरोज़ सिलसिले का दसवाँ बाब गुज़र चुका है। अब हम अल्लाह का नाम लेकर इसका

ग्यारहवाँ बाब

शुरू करते हैं। मुख़्तलिफ हिकायत का सिलसिला चूंके बड़ा तवील है इसलिए इस बाब में भी मुख़्तलिफ हिकायात दर्ज हैं।

हिकायत नम्बर(786) तशरीफ़ आवरी

हुज़ूर(स०अ०स०) की जब विलादत शरीफा हुई उस वक़्त हुज़ूर के दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब(र०अ०) कअबा शरीफ की दीवार की तामीर में मशग़ूल थे। अब्दुल मुत्तलिब फ़रमाते हैं के मैं कअबा शरीफ का तवाफ कर रहा था। के अचानक कअबा शरीफ चारों तरफ़ झुकता नज़र आया और फिर मुक़ामे इब्राहीम में सज्दे में गिर गया और उसमें से तक्बीर व तहलील की आवाज़ आने लगी। फिर वो सीधा खड़ा हो गया और उससे आवाज़ आई।

अलहम्दू लिल्लाहिल्लज़ी खस्सनी बिमोहम्मदा निलमुसतफा "सब तारीफ उस अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे मोहम्मद मुसतफा(सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) के साथ मख़सूस फ़रमाया।"

और फिर अरकाने कअबा आपस में एक दूसरे पर सलाम भेजने लगे। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब फ़रमाते हैं के मैं बाब सफा से बाहर निकला तो ज़मीन की हर चीज़ मुझे तक्बीरो तहलील में मशग़ूल नज़र आई और मैं उनकी आवाज़ सुन रहा था। फिर ये आवाज़ सुनी के *क़द जाआकुम रसूलुल्लाही सल-लल्लाहो अलेही व सल्लम*

यानी तुम्हारे पास रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ ले आए फिर मैंने बुतों को देखा। तो वो औंधे मुंह गिरे हुए नज़र आए मैं अपनी आँखें मलने लगा। के ये जो कछ मैं देख रहा हूँ। आलमे

Scanned by CamScanner

बैदारी में या अलमे ग़ैब में देख रहा हूँ। फिर मैं जब घर पहुँचा तो घर के इर्दगिर्द अजीबो ग़रीब नूरानी परिंदे उड़ते देखे और घर से मुश्क व अंबर के हले उठते नज़र आए। मैंने दरवाज़ा खटखटाया तो आमना(रज़ी अल्लाहो अन्हा) खुद निकलीं और दरवाज़ा खोला। मैंने देखा के आमना के चहरे पर कोई ज़ौफ वग़ैरा का असर नहीं था। हाँ उसकी पैशानी पर जो नूर चमकता नज़र आया करता था वो नज़र ना आया। मैंने पूछा। आमना! पैशानी का वो नूर कहाँ है? तो बोलीं मेरे हाँ एक बच्चा पैदा हुआ है। जिसकी विलादत के बाद हातिफ से मुझे आवाज़ सुनाई दी है के उसका नाम मोहम्मद रखना। (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) इसलिए के :-

इसमुहू फिस्समाई महमूदुन व फित्तोराती मुवेदुन व फिज़्ज़बूरिल हादीयू व फिलइंजीली अहमदू व फिलकुरआनी ताहा व यासीन व मोहम्मदुन।

उसका आसमानों पर नाम मेहमूद है, और तौरात में "मवैद"। ज़बूर में "हादी"। इंजील में "अहमद"। और कुरआन में "ताहा, यासीन" और "मोहम्मद" है।

हज़रत अब्दुल मुत्तलिब फ़रमाते हैं के मैंने आमना से कहा। चलो मुझे मेरा प्यारा बच्चा दिखाओ। चुनाँचे जब मैं आगे बढ़ा तो एक अज़ीम शख़्स तलवार खींचे रास्ते में खड़ा नज़र आया। जिसने आगे बढ़ने से रोका। अब्दुल मुत्तलिब डर गए। और पूछा के तुम कौन हो। और क्यों रोकते हो। वो बोला। इस मौलूद की जब तक सारे फरिश्ते ज़ियारत ना कर लेंगे। किसी को आगे जाने की इजाज़त नहीं। मैं इसी काम के लिए यहाँ मामूर हूँ। (जामअे अलमौजज़ात, मतबूआ मिस्र, सफ़ा 76)

हमारे हुज़ूर (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) कअबे का भी कअबा हैं। और कअबा शरीफ की सारी इज़्ज़तें हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ही के सद्क़े में हैं, और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की तशरीफ़ आवरी की खुशी सारी कायनात ने मनाई। किसी ने तक्बीर व तहलील के नारे बुलंद करके और किसी ने (बुतों ने) ओंधे मुंह गिर कर और मुंह छुपाकर। और ये भी मालूम हुआ के बच्चा पैदा होने पर उसका नाम उसके माँ बाप रखते हैं। या बहन भाई और दीगर अक़्रबा मगर हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का नाम खुद खुदा तआला ने रखा है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(78) रज़ाअत शरीफा

हज़रत हलीमा सादिया रज़ी अल्लाहो अन्हा फ़रमाती हैं के मैं जब मक्का मोअज़्ज़मा में पहुँची और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के घर आई तो मैंने देखा के जिस कमरे में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे वो कमरा सारा चमक रहा है। मैंने हज़रत आमना से पूछा क्या इस कमरे में बहुत से चिराग़ जला रखे हैं। आमना ने जवाब दिया। नहीं! बल्के ये सारी रोशनी मेरे प्यारे बच्चे के चेहरे की है। हलीमा फ़रमाती हैं। मैं अन्दर गई तो हुज़ूर को देखा के आप सीधे लेटे हुए सो रहे हैं। और अपनी मुबारक नन्ही उंगलियाँ चूस रहे हैं। मैं आपका हुस्नो जमाल देखकर फ़रीफ़्ता हो गई और हुज़ूर की मोहब्बत मेरे बाल बाल में रच गई। फिर मैं हुज़ूर के सर अनवर के पास बैठ गई। और हुज़ूर को उठा कर अपने सीने से लगाने के लिए हाथ बढ़ाया तो हुज़ूर ने अपनी चश्माने मुबारक खोलीं और मुझे देखकर मुस्कुराने लगे। अल्लाहू अक्बर! मैंने देखा के इस नूर भरे मुंह से एक ऐसा नूर निकला जो आसमान तक पहुँच गया। फिर मैंने हुज़ूर को उठा कर अपना दायाँ दूध आपके मुंह मुबारक में डाला तो आप नोश फ़रमाने लगे। बायाँ दूध मुंह मुबारक में डालना चाहा तो रूख पाक फैर लिया। और दूध ना पिया। क्योंके मेरा अपना एक बच्चा था। हुज़ूर ने इंसाफ फ़रमा कर दूध का ये हिस्सा अपने दूध शरीक के लिए रहने दिया। मैं फिर हुज़ूर को लेकर वापस चलने लगी तो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने ज़ादे राह के लिए कुछ देना चाहा। तो मैंने कहा के मोहम्मद(सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) को पा लेने के बाद अब मुझे किसी चीज़ की हाजत नहीं। हलीमा फ़रमाती हैं के जब मैं इस नअेमत अज़मा को गोद में लेकर बाहर निकली तो मुझे हर चीज़ से मुबारक बाद की आवाज़ आने लगी। के ऐ हलीमा रज़ाअत मोहम्मद (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) की तुझे मुबारब हो।

फिर मैं जब अपनी सवारी पर बैठी तो मेरी कमज़ोर सवारी में वो बिजली जैसी ताक़त पैदा हो गई के वो बड़ी बड़ी तवाना ऊँटनियों को पीछे छोड़ने लगी। सब हैरान रह गए के हलीमा की सवारी में यक दम ये ताक़त कैसे आ गई? तो मेरी सवारी खुद बोली:

अला ज़हरी सय्यद-उल-अव्वलीन वल आख़िरीना मेरी पुश्त पर अव्वलीन व आख़रीन के सरदार सवार हैं। इन्हीं की बर्कत से मेरी कमज़ोरी जाती रही और मेरा हाल अच्छा हो गया। (जामअे अलमोजज़ात, सफ़ा 86)

Scanned by CamScanner

सबक:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम नूर मुनव्वअे नूर और नूर अला नूर हैं। बातिनी भी और ज़ाहिरी भी। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को बचपन शरीफ में भी ये इल्म था। के हलीमा मेरी दूध पिलाने वाली है। और मेरे दूध में दूसरा बच्चा भी शरीक है। फिर अगर कोई शख़्स हुज़ूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम के इल्म में कलाम करने लगे तो वो किस क़द्र जाहिल है। और ये भी मालूम हुआ के जिस उम्मत को ऐसा अज़ीम-उश-शान रसूल (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) मिला हो वो उम्मत बड़ी खुश क़िस्मत है। और ये भी मालूम हुआ के हम गुनहगार सही। मगर हुज़ूर की बदौलत जन्नत में जाते हुए हम तमाम उम्मतों से आगे होंगे।

हिकायत नम्बर(788) दीन व दुनिया

एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के पास एक शख़्स आया। और अर्ज़ करने लगा। या रसूल अल्लाह! मैं दीन व दुनिया की बेहतरी के लिए आप से पूछना चाहता हूँ। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। पूछ लो जो पूछना है। उसने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह!

मैं चाहता हूँ के मैं सबसे ज़्यादा जानने वाला हो जाऊँ। हुज़ूर ने फ़रमाया। अल्लाह से डरते रहो। सबसे ज़्यादा जानने बाले हो जाओगे।

उसने अर्ज़ की। हुज़ूर! मैं चाहता हूँ के मैं सबसे ज़्यादा ग़नी हो जाऊँ। फ़रमाया। क़नाअत इख़्तियार कर लो। सबसे ज़्यादा ग़नी हो जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मैं अच्छा बन जाऊँ। फ़रमाया। लोगों से अच्छाई करो। अच्छे बन जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मैं इंसाफ करने वाला बन जाऊँ। फ़रमाया। जो अपने लिए पसंद करते हो। दूसरों के लिए भी वह पसंद करो। इंसाफ करने वाले बन जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मैं अल्लाह का ख़ास बन्दा हो जाऊँ। फ़रमाया अल्लाह की याद कसरत के साथ किया करो। उसके ख़ास बन्दे बन जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मेरा ईमान कामिल हो जाए। फ़रमाया। अपने अखलाक़ अच्छे कर लो। ईमान कामिल हो जाएगा।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मैं अल्लाह के ताबैदारों में से हो जाऊँ। फ़रमाया। अल्लाह के फ़रायज़ अदा करते रहो। उसके ताबैदार बन जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के क़यामत को मैं नूर में उठूँ। फ़रमाया। किसी

Scanned by CamScanner

पर ज़ुल्म ना करो। क़यामत को नूर ही में उठोगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के अल्लाह मुझ पर रहम फ़रमाए। फ़रमाया। खुद अपनी जान पर और अलाह की मख़लूक़ पर रहम करो। अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाएगा।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ, मेरे गुनाह कम हो जाएँ। फ़रमाया। कसरत के साथ असतग़फार किया करो। गुनाह कम हो जाऐंगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के मेरे रिज़्क़ में वुसअत पैदा हो। फ़रमाया। हमेशा तहारत पर रहो। रिज़्क़ में वुसअत पैदा हो जाएगी।

अर्ज़ की मैं चाहता हूँ के अल्लाह और उसके रसूल के दोस्तों में से हो जाऊँ। फ़रमाया। जिससे अल्लाह और उसके रसूल को मोहब्बत है। उससे मोहब्बत रखो। और जिससे अल्लाह और उसके रसूल को दुश्मनी है। उससे दुश्मनी रखो। अल्लाह और उसके रसूल के दोस्तों में से हो जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के अल्लाह के ग़ज़ब से बच जाऊँ। फ़रमाया। तुम किसी पर ग़ज़ब ना करो। अल्लाह के ग़ज़ब से बच जाओगे।

अर्ज़ की। मैं चाहता हूँ के अल्लाह मेरे अयूब को ढाँप दे। फ़रमाया। तुम अल्लाह की मख़लूक़ के अयूब ढाँपो। खुदा तुम्हारे अयूब ढाँप देगा।

अर्ज़ की। मेरे गुनाहों को धो देने वाली कौन सी चीज़ है। फ़रमाया। आँसू और ख़ुज़ू और बीमारियाँ। अर्ज़ की। कौन सी नेकी अल्लाह को बड़ी पसंद है। फ़रमाया। अच्छा ख़ल्क़ और तवाज़ौ और मुसीबत के वक़्त सब्र और अल्लाह की मर्ज़ी पर राज़ी रहना। अर्ज़ की। और कौन सी बुराई अल्लाह को ना पसंद है। फ़रमाया। बुरा ख़ल्क़।

अर्ज़ की। अल्लाह के ग़ज़ब की आग को बुझाने वाली क्या चीज़ है। फ़रमाया। सदक़ा व खैरात और सिला रहमी।

अर्ज़ की। जहन्नुम की आग को बुझाने वाली क्या चीज़ है। फ़रमाया। रोज़ा (कुंज़ुल आमाल, जिल्द 6, सफ़ा 294। बरहाशिया मसनद अहमद)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम दीन व दुनिया की बेहतरी के लिए तशरीफ़ लाए हैं। और आप की तालीम दीन व दुनिया के हुस्न व खूबी की जामअे है। खुश नसीब हैं वो लोग जो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की जामअे तालीम पर अमल पैरा होकर अपना दीन और अपनी दुनिया भी बना लेते हैं। और जो लोग हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के इर्शादात पर अमल पैरा नहीं हैं। वो *ख़सर-उद्दुनिया वलआख़िरत* के मिसदाक़ हैं। और उनके दोनों जहाँ ही खराब हैं।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(789) दाफ़ऐ-उल-बला

इब्ने तलक़ यमामी कहते हैं के हम एक वफ़्द की शक्ल में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। तो हुज़ूर को देखा के आप अपने सर अनवर को धो रहे हैं। हुज़ूर ने मुझे देखकर फ़रमाया बैठ जाओ और तुम भी सर धो लो। इब्ने तलक़ फ़रमाते हैं के हुज़ूर के इर्शाद के मुताबिक़ मैंने आपके बचे हुए पानी से अपना सर धोया। और फिर हुज़ूर पर ईमान ले आया। और मुसलमान हो गया। मैंने फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! मुझे अपनी क़मीस मुबारक का कोई टुकड़ा इनायत फ़रमा दीजिए। चुनाँचे हुज़ूर ने मुझे अपनी क़मीस मुबारक का एक टुकड़ा अता फ़रमा दिया। वो टुकड़ा इब्ने तलक़ यमामी रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास रहा। जब भी कोई बीमार पड़ता तो वो इस टुकड़े के वसीले से शिफा हासिल करने के लिए उसे पानी में डाल कर वो पानी उस बीमार को पिला देते। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 426)

सबक़:- मालूम हुआ के सहाबा इक्राम अलेहिम अर्रिज़वान को हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से बड़ी मोहब्बत थी और वो हर उस चीज़ को जिस हुज़ूर की तरफ़ निसबत होती। दिलो जान से चाहते थे। और हुज़ूर पर नूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के जिस्म नूर से लग जाने वाले मुबारक कपड़े को भी वो दाफ़ै-उल-बला जानते थे। फिर जो लोग खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को ही दाफ़ै-उल-बला मानना शिर्क बताते हों।

ग़ौर कर लीजिए के वो लोग सहाबा इक्राम के मसलक से किस क़द्र दूर हैं।

हिकायत नम्बर(790) अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं के मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के साथ मक्का मोअज़्ज़मा के मुज़ाफात में गया। तो मैंने देखा के रास्ते में हर दरख़्त पर ढैला व पत्थर और हर पहाड़ हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को मुखातिब करके यूं अर्ज़ करता अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह और उनकी ये आवाज़ मैं भी सुनता था। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 440)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की रिसालत को कायनात का हर ज़र्रा जानता है। और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के "रसूल अल्लाह" होने का दरख़्तों और पत्थरों को भी इल्म

Scanned by CamScanner

है। फिर जो लोग हुज़ूर की रिसालत पर ईमान ना लाए। वो पत्थरों से भी गए गुज़रे हुए या नहीं। और ये भी मालूम हुआ के अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह का विर्द तो दरख़्तों पत्थरों और पहाड़ों की ज़बानों पर भी है। फिर जो लोग इस दुरूदे पाक के पढ़ने से रोकते हैं। उनसे तो नबातात व जमादात ही अच्छे रहे। और ये भी मालूम हुआ के जिस तरह पत्थर और दरख़्त ना बोलने वाली चीज़ें हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के लिए बोल उठें। और ये हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का मौजज़ा है। इसी तरह जो आवाज़ बहुत दूर से ना सुनी जा सकती हो। उस आवाज़ को दूर से सुन लेना ये भी हुज़ूर का मौजज़ा है। इसीलिए हमारा ईमान है के हम चाहे कहीं से भी, अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह पढ़ें हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपने ऐजाज़ से हमारी आवाज़ सुन लेते हैं।

हिकायत नम्बर(791) गोह की गवाही

हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाह अन्ह फ़रमाते हैं के एक मर्तबा हम हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे के एक आराबी आया। जिसके पास एक गोह थी वो कहने लगा। मुझे लात व उज़्ज़ा की क़सम!

ऐ मोहम्मद! मैं तुझ पर हर गिज़ ईमान ना लाऊँगा जब तक के ये गोह तुम्हारी सदाक़त की गवाही ना दे। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। अच्छा लो सुनो! फिर हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने गोह से मुखातिब होकर फ़रमाया। ऐ गोह! बोल! गोह सुनते ही साफ अरबी ज़बान में बोल उठी। जिस सब हाज़रीन ने सुना *लब्बैक या रसूला रब्बिल आलमीना* हुज़ूर ने फ़रमाया। तुम किस की इबादत करती हो। गोह ने जवाब दिया।

अल्लज़ी फिस्समाई अरशुहू व फिल अर्ज़ी सुलतानुहू व फिलबहर सबीलुहू व फिलजन्नती रहमतुहू व फिन्नारी अज़ाबुहू

"उसकी इबादत करती हूँ, आसमान में जिसका अर्श है। और ज़मीन में जिमकी हकूमत है और दरया में जिसका रास्ता है और जन्नत में जिसकी रहमत है और दोज़ख में जिसका अज़ाब है।"

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। मैं कौन हूँ। वो बोली।

अन्ता रसूलु रब्बिल आलमीना व ख़ातमुनन्नबियीना क़द अफलाहा मन सदाक़ा व क़द ख़ाबा मन कज़्ज़बाका

Scanned by CamScanner

"आप रब्बुल आलमीन के रसूल हैं। और ख़ातमुनन्नबियीन हैं। जिसने आपको पहचान लिया वो निजात पा गया और जिसने आपको ना माना वो नुक़्सान पा गया।"

आराबी गोह की ये गवाही सुनकर फौरन मुसलमान हो गया। (हुज्जत-उल्लाह, सफ़ा 465)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की सदाक़त व अज़मत का इक़्रार और आपके ख़ातमुनन्नबिय्यीन होने का इल्म जानवरों को भी है। फिर जो शख़्स हुज़ूर की अज़मत और ख़त्म नबुव्वत में शक करे। वो जानवरों से भी बदत्तर हुआ या नहीं।

हिकायत नम्बर(792) मौजज़ा

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम एक तालाब के किनारे तशरीफ़ फ़रमा थे के वहाँ अबु जहल का बेटा अक्रमा (रज़ी अल्लाहो अन्ह ये बाद में मुसलमान हो गए थे) आ गया। और कहने लगा। अगर आप सच्चे हैं तो वो जो तालाब के दूसरे किनारे पर पत्थर पड़ा है। उसे हुक्म दीजिए के वो पानी पर तेरता हुआ आपके पास पहुँच जाए। और डूबे नहीं। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने उस पत्थर की तरफ़ इशारा फ़रमा कर फ़रमाया। के मेरे पास आओ। तो वो पत्थर उसी वक़्त अपनी जगह से उखड़ कर पानी में आ गया। और पानी के ऊपर तेरता हुआ हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो गया। और बाआवाज़ बुलंद कलमा शरीफ पढ़ने लगा। हुज़ूर ने अक्रमा से फ़रमाया। बस या कुछ और है। अक्रमा ने कहा। अब इसे कहिये के ये फिर वापस अपने मुक़ाम पर चला जाए। चुनाँचे हुज़ूर ने फिर उसे इर्शाद फ़रमाया। तो वो वापस तेरता हुआ अपनी जगह चला गया। (तफसीर-उल-इमाम राज़ी, जिल्द 8, सफ़ा 499)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के बेशुमार मौजज़ात में से आपका ये भी मौजज़ा है के पत्थर को पानी पर तेरा दिया। हज़रत नूह अलेहिस्सलाम की बहुत बड़ी कश्ती का पानी पर तेरना भी हज़रत नूह अलेहिस्सलाम का मौजज़ा ही था। मगर उससे बढ़कर ये मौजज़ा है के पानी पर ना तेरने वाली चीज़ तेरे। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की नज़रे करम और आपकी शफाअत का इशारा हो गया। तो बड़े बड़े वज़नी गुनाह वालों को भी तेरा कर वा पार लगा देंगे।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(793) मुनाफिक़

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक दफा कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे के रास्ते में आपकी ऊँटनी गुम हो गई। ज़ैद इब्ने सलत नामी एक मुनाफिक़ ने कहा के मोहम्मद अगर नबी है तो अपनी ऊँटनी के मुतअल्लिक़ क्यों नहीं बता देता के वो कहाँ है? वैसे तो उसका दावा है के वो आसमान की ख़बरें बताता है। मगर वो अपनी ऊँटनी की ख़बर नहीं रखता। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को उसकी इस बात का पता चला तो आपने फ़रमाया। फलाँ शख़्स मेरे मुतअल्लिक़ ऐसा कहता है। हालाँके मुझे अल्लाह तआला जिस बात की ख़बर देता है। मैं उसे जानता हूँ। और मैं अपनी ऊँटनी के मुतअल्लिक़ भी जानता हूँ के वो कहाँ है? मेरी ऊँटनी फलाँ वादी और फलाँ घाटी के पास खड़ी है और उसकी नकैल एक दरख़्त ने पकड़ रखी है। यानी उसकी नकैल एक दरख़्त से अटकी हुई है। और ऊँटनी वहीं खड़ी है जाओ उसे वहाँ से ले आओ। चुनाँचे सहाबा इक्राम गए और ऊँटनी को वहीं खड़ी पाया। और उसे ले आए। (ज़ादा-उल-मआद-उल-बिन क़ीम, जिल्द: 3, सफ़ा 5)

सबक़:- मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म में तान करना मुनाफिक़ों का काम है और जो सच्चे मुसलमान हैं। वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म के दिलो जान से क़ायल हैं और मानते हैं के हमारे आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को अल्लाह तआला की तालीम से हर बात का इल्म है।

हिकायत नम्बर(794) ऐलाने हज

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम तामीर बैत-उल्लाह शरीफ से जब फारिग़ हो गए तो अल्लाह तआला ने आपको हुक्म दिया के अब आप ऐलाने हज फ़रमा दें। हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने अर्ज़ की। इलाही! मैं ऐलान तो कर देता हूँ। मगर मेरे ऐलान को सुनेगा कोई किस तरह?

खुदा तआला ने फ़रमाया। ऐ इब्राहीम तुम ऐलान करो। ऐलान करना तुम्हारा काम है और उसे सुनाना हमारा काम है। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने जबल अबी क़बीस पर खड़े होकर और अपनी उंगलियाँ अपने कानों में दाखिल करके दायें बायें और मशरिक़ व मग़रिब की तरफ़ रूख करके ऐलान फ़रमाया के

याहिय्यूहन्नासू इन्नल्लाहा यदऊकुम इलल हज्जी बिबैतिल हराम

Scanned by CamScanner

तजुर्मा: ऐ लोगो! अल्लाह तआला तुम्हें अपने इज़्ज़त वाले घर के हज के लिए बुलाता है।

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम की ये आवाज़ जिन लोगों की क़िसमत में हज था। उन्होंने अपने बापों की पीठों और माँओं के अरहाम में सुन ली। और जवाब में कहने लगे।

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक

(उम्दत-उल-क़ारी शरह सही बुखारी जिल्द: 4, सफ़ा 484)

सबक़:- मालूम हुआ के दूर तक आवाज़ पहुँचा देना ये अल्लाह का काम है। और मख़लूक़ में की ग़ायब को हर्फ "या" से निदा करना और ये समझना के अल्लाह के सुनाने से वो सुन लेगा। जायज़ है। बल्के इब्राहीम अलेहिस्सलाम की सुन्नत है। जब ये बात साबित हो गई के एक नबी की आवाज़ अल्लाह के सुनाने से आम लोग सुन सकते हैं। तो फिर एक आम आदमी की निदा को अल्लाह का नबी क्यों नहीं सुन सकता?

मालूम हुआ जो मुसलमान इस ऐतमाद व यक़ीन के साथ के अल्लाह तआला के करम से मेरी आवाज़ को मेरा रसूल सुन लेगा "या रसूल अल्लाह" का नारा लगाकर अपने आक़ा से कुछ अर्ज़ करे तो यक़ीनन उसकी इस आवाज़ को अल्लाह तआला अपने मेहबूब तक पहुँचा देता है। और अल्लाह का मेहबूब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने फ़रयादियों की आवाज़ सुन लेता है। इसलिए आला हज़रत ने भी लिखा है के...

फ़रयाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में
मुमकिन नहीं के ख़ैरे बशर को ख़बर ना हो!

हिकायत नम्बर(७६) हज़रत दानियाल अलेहिस्साम

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया के दानियाल अलेहिस्सलाम ने अपने रब से ये दुआ की थी के उन्हें मोहम्मद सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की उम्मत दफ़्न करे। जब अबु मूसा अशअरी रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने क़िले तश्तर फतह किया तो उन्होंने हज़रत दानियाल अलेहिस्सलाम को उनके ताबूत में इस हाल में पाया के उनके तमाम जिस्म और गर्दन की सब रगें। बराबर चल रही थीं। (अलबदाया व अलनहाया, जिल्द: 2, सफ़ा 4)

सबक़:- अल्लाह के पैग़म्बर ज़िन्दा हैं और सेंकड़ों साल गुज़र जाने के बाद भी उनका जिस्म मुबारक सही सालिम रहता है। फिर जो उन सब

Scanned by CamScanner

पैग़म्बरों के सरदार अलेह व अलेहिमअस्सलाम को भी मर कर मिट्टी में मिल जाने वाला लिख दे। (मआज़ अल्लाह) उसकी गुमराही व मुर्दा दिली में कौन शक कर सकता है?

हिकायत नम्बर(796) आक़्बत अंदेशी

एक जलील-उल-क़द्र ताबई हज़रत रबई रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उम्र भर कभी झूट नहीं बोला था। उन्होंने क़सम खाई थी के जब तक उन्हें अपना ठिकाना मालूम ना हो जाए। वो ना हंसेंगे। चुनाँचे वो अपनी मौत के बाद ही हंसे। इसी तरह उनके भाई हज़रत रबीअ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भी क़सम खाई थी के वो उस वक़्त तक नहीं हंसेंगे जब तक के उन्हें अपने जन्नती या नारी होने का इल्म ना हो जाए। चुनाँचे जब उनका इन्तिक़ाल हुआ तो उनको ग़ुस्ल देने वाले का बयान है के वो ग़ुस्ल के तख़्ते पर बराबर हंसते रहे। यहाँ तक के हम उनके ग़ुस्ल से फारिग़ हुए। (शरह मुक़द्दमा सही मुस्लिम, जिल्द: 1, सफ़ा 7)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों को अपनी आक़्बत की फिक्र रहती है। और हर वक़्त आक़्बत अंदेशी में रहते हैं, आक़्बत फ़रामोशी में हंसना इन्तिहाई ग़फ़्लत की अलामत है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले अपने इन्तिक़ाल के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं। और हंसते हैं। पस ज़िन्दगी हो तो ऐसी के मरने के बाद उसके अज़ीज़ तो रो रहे हों। मगर वो हंस रहा हो....

निशान मर्दे मोमिन बा तो गोयम!!
चू मर्ग आयद तबस्सुम बरलब अवस्त

और एक उर्दू शायर लिखता है...

तू आया था तो रोता था तुझे सब देख हंसते थे
अब ऐसा काम कर बन्दे ये रोते हों तू हंसता हो

यानी जब तुम पैदा हुए थे। तो रोते हुए आए थे, तुम रो रहे थे और तुम्हारे अज़ीज़ हंस रहे थे। के हमारे हाँ बच्चा पैदा हुआ है और अब जब के तुम दुनिया से जाने लगो। तो ज़िन्दगी ऐसी गुज़ार कर जाओ के ये हंसने वाले तुम्हारे अज़ीज़ सब रो रहे हों और तुम हंस रहे हो। ऐसा ना हो के अज़ीज़ भी रो रहे हों और तुम भी रो रहे हो। और तुम्हारा आना भी रोते हुए हो। और जाना।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(797) मौत के बाद कलाम

हज़रत रबीअ रज़ी अल्लाह अन्ह एक बहुत बड़े मुत्तक़ी परहैज़गार और ल्लाह के मक़्बूल बन्दे थे। कसरत के साथ नवाफिल अदा करते और रोज़े ा करते थे। उनकी जब वफात हुई तो उनके तीन भाई उनके आस पास ठे हुए थे वो कहते हैं के हम ने देखा के हज़रत रबीअ ने एक दम अपने ह से कपड़ा हआ दिया और अस्सलाम अलेकुम कहा। हम ने व अलेकुम स्सलाम कहकर जवाब दिया और ताज्जुब से कहा "मौत के बाद कलाम? होंने जवाब दिया। हाँ। मौत के बाद मैंने अपने रब से ऐसे हाल में मुलाक़ात ी के वो ग़ज़बनाक नहीं था। मेरे रब ने आला दर्जे की नअेमतों और रेशमी लबास के अतिये के साथ मेरा इसतक़बाल किया।"

ख़बरदार हो जाओ के बेशक हुज़ूर अबु अलक़ासिम हज़रत मोहम्मद सूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुझ पर नमाज़ पढ़ने ा इन्तिज़ार फ़रमा रहे हैं। तुम मेरा जनाज़ा जल्दी ले कर चलो। मेरे ले जाने ं देर ना करो। ये कहकर फिर सकूत मौत के साथ खामोशी इख़्तियार कर ली। (शरह-उल-सदूर-उल-इमाम सयूती, सफ़ा 28)

सबक़:- अल्लाह वाले मरते नहीं। बल्के अपने जगह बदलते हें और अपने मेहबूब हक़ीक़ी से जा मिलते हैं। इसीलिए उनके लिए ये कहा जाता है के फलाँ बुज़ुर्ग का विसाल हो गया है। पस ये लोग मरते नहीं।

कौन कहता है के मोमिन मर गए
क़ैद से छूटे वो अपने घर गए

और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ज़िन्दा हैं और अपनी उम्मत के हालात से बाख़बर। और आप अपने अच्छे ग़ुलामों के इन्तिक़ाल पर उनकी नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ते हैं।

फसल-लल्लाहो अलेही व आलिही
क़दरा हुस्निही व जमालिही

हिकायत नम्बर(798) अबु जहल

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी अल्लाहो अन्हुमा फ़रमाते हैं के मैं नवाहे बद्र में जा रहा था के अचानक एक क़ब्र के गढ़े से एक मर्द निकला। जिसकी गर्दन में जंजीर थी। उसने मुझे आवाज़ देकर कहा। ऐ अब्दुल्लाह! मुझे पानी पिला! इसी गढ़े से एक और शख़्स बरआमद हुआ। उसके हाथ में

Scanned by CamScanner

कोड़ा था। उसने मुझे पुकार कर कहा। ऐ अब्दुल्लाह! उसे पानी ना पिलाना। ये काफिर है। फिर उसे कोड़ा मारता रहा। यहाँ तक के वो अपने गढ़े की तरफ़ वापस लौट गया। अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं फिर मैं नबी करीम सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और मैंने ये वाक़ेया हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से अर्ज़ किया, फ़रमाया: क्या तूने उसे देखा है? मैंने अर्ज़ किया। हाँ! या रसूल अल्लाह मैंने उसे देखा है। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। वो अल्लाह का दुश्मन अबु जहल था और वो इसका अज़ाब था जो उसे क़यामत तक होता रहेगा। (अलहावी-उल-फतावा मतबूआ मिस्र, जिल्द:2, सफ़ा 265)

सबक़:- दुश्मन रसूल अज़ाबे क़ब्र भी क़यामत तक मुब्तला रहता है और उसकी निजात नहीं होती। और ये भी मालूम हुआ के जो कुछ इस दुनिया में और इस दुनिया में हो रहा है। हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को सब इल्म है।

हिकायत नम्बर(799) चार यार (रज़ी अल्लाहो अन्हुम)

हज़रत अबु अब्दुल्लाह अलमोहतदी फ़रमाते हैं। एक साल मैं हज के लिए गया तो हरम शरीफ में एक ऐसे शख़्स से मुलाक़ात हुई। जो पानी नहीं पीता था। मैंने उससे वजह दरयाफ़्त की के तुम पानी क्यों नहीं पीते। तो उसने बताया के मैं हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से मोहब्बत का मुद्दई था और हज़रत अबु बक्र, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम से बुग्ज़ रखता था। एक रात मैं सोया और मैंने देखा के क़यामत बर्पा है। और लोग बड़े परेशान हैं और मुझे सख़्त प्यास लग रही थी प्यास बुझाने के लिए मैं रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के होज़े कोसर पर पहुँचा। तो वहाँ मैंने हज़रत अबु बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम को देखा। जो प्यासों को पानी पिला रहे थे। मैं सीधा हज़रत अली के पास पहुँचा और पानी माँगा। मगर हज़रत अली ने अपना मुंह फैर लिया। फिर हज़रत अबु बक्र के पास गया। तो उन्होंने भी मुंह फैर लिया। फिर मैं हज़रत उमर और हज़रत उस्मान के पास गया तो उन्होंने भी मुंह फैर लिया। मैं बड़ा परेशान हुआ। और रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तलाश की। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मैदान महशर में

Scanned by CamScanner

तशरीफ़ फ़रमा नज़र आए। मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ ओर शिकायत की के या रसूल अल्लाह मुझे सख़्त प्यास लग रही है और मैं होज़े कोसर पर गया और हज़रत अली से पानी माँगा। तो उन्होंने मुंह फैर लिया और पानी नहीं पिलाया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। मेरा अली तुम्हें पानी कैसे पिलाए? जब के तुम मेरे सहाबा से बुग्ज़ रखते हो। मैंने अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! क्या मेरे लिए तौबा की गुंजाईश है या नहीं? फ़रमाया! हाँ है, सच्चे दिल से तौबा करो और मेरे सहाबा से मोहब्बत रखो। फिर मैं तुम्हें अभी ऐसा जाम पिलाऊँगा के उम्र भर तुम्हें प्यास ना लगेगी। चुनाँचे मैं ने बुग्ज़ सहाबा से तौबा की। तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझे एक जाम दिया। जो मैंने पिया। फिर मेरी आँख खुली तो मुझे क़तअन प्यास ना थी। और अब प्यास लगती भी नहीं। पानी पियूं या ना पियूं बराबर है। अब मैं सच्चे दिल से रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के चार यार का मुहिब्ब हूँ। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन सफ़ा 808)

सबक़:- हज़रत अबुबक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्हुम से मोहब्बत रखने वाला अपनी आक़बत दुरूस्त कर लेता है और उनसे बुग्ज़ व बैर रखने वाला अपनी आक़बत बर्बाद कर लेता है।

और ये भी मालूम हुआ के जिसको हज़रत अबु बक्र, हज़र उमर और हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्हुम से मोहब्बत नहीं। उस पर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह भी खुश नहीं। और ये भी मालूम हुआ के होज़े कोसर का पानी पियासों में तक़सीम फ़रमाने वाले ये चार याराने मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं। अगर क़यामत की प्यास से बचना हो तो चार यार से मोहब्बत ज़रूरी है।

हिकायत नम्बर(800) अमीर तग़रूल

शाहान सलजूक़िया में से तग़रूल बादशाह एक मर्तबा अपने लश्कर समेत मवस्सिल की तरफ़ रवाना हुआ। ये अज़ीम लश्कर रास्ते में एक गाँव में पहुँचा। तो गाँव वालों पर ज़ियादतियाँ शुरू कर दीं। जिनसे गाँव वाले बड़े परेशान हुए। इसी रात तग़रूल बादशह को ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मिले। बादशाह ने सलाम अर्ज़ किया तो हुज़ूर ने रूख अनवर फैर लिया। और फ़रमाया।

Scanned by CamScanner

"अल्लाह ने तुम्हें अपनी मख़लूक़ पर हाकिम बनाया है। और तुम उसकी मख़लूक़ को परेशान करने लगे। हो। क्या तुम अल्लाह के क़ेहरो जलाल से नहीं डरते हो।"

बादशाह की आँख खुली तो वो कांप रहा था। और उसी वक़्त उसने सारे लश्कर में मनादी करा दी के ख़बरदार कोई सिपाही किसी शख़्स पर ज़रा भर भी ज़ियादती ना करे वरना उसे सख़्त सज़ा दी जाएगी। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 809)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने ग़ुलामों के हालात से बाख़बर हैं। और अपने ग़ुलामों की परेशानी आप पर शाक़ गुज़रती है और ये भी मालूम हुआ के हाकिम की नज़र अगर अल्लाह की अज़मत व जलाल पर भी है तो वो रिआया पर कभी ज़ुल्मो सितम नहीं होने देता।

हिकायत नम्बर(801) तीन सख़्ती

रमज़ान शरीफ का महीना आने वाला था और हज़रत वाक़दी रहमत-उल्लाह अलेह के पास कुछ ना था। आप को फिक्र लाहक़ हुई के रमज़ान शरीफ का महीना कैसे गुज़रेगा। आपने अपने एक अलवी दोस्त की तरफ़ रूक़आ लिखा के रमज़ान शरीफ का महीना आने वाला है और मेरे पास खर्च के लिए कुछ नहीं। मुझे क़र्ज़े हस्ना के तौर पर एक हज़ार दरहम भेज दें। चुनाँचे उसे अलवी ने एक हज़ार दरहम की थेली भेज दी। थोड़ी देर के बाद हज़रत वाक़दी के एक दोस्त का रूक़आ हज़रत वाक़दी की तरफ़ आ गया के रमज़ान शरीफ के महीने में खर्च के लिए मुझे एक हज़ार दरहम की ज़रूरत है। मुझे एक हज़ार दरहम बतौर क़र्ज़ भेज दें। हज़रत वाक़दी ने वही थेली वहाँ भेज दी।

दूसरे रोज़ वही अलवी दोस्त जिनसे वाक़दी ने क़र्ज़ लिया था। और वो दूसरे दोस्त जिन्होंने वाक़दी से क़र्ज़ लिया था। दोनों हज़रत वाक़दी के घर आए और अलवी कहने लगे के रमज़ान का महीना आ रहा है। और मेरे पास इन हज़ार दरहमों के सिवा और कुछ ना था मगर जब आपका रूकआ आया। तो मैंने ये हज़ार दरहम आपको भेज दिए और अपनी ज़रूरत के लिए इस अपने दोस्त को रूक़आ लिखा के मुझे एक हज़ार दरहम बतौर क़र्ज़ भेज दे उसने वही थेली जो मैंने आपकी भेजी थी। मुझे भेज दी तो पता चला के आपने मुझ से क़र्ज़ माँगा। मैंने उस अपने दोस्त से क़र्ज़ माँगा और उस दोस्त ने आपसे माँगा और जो थेली मैंने आपको भेजी थी वो आपने उसे भेज दी। और

Scanned by CamScanner

उसने वही थेली मुझे भेज दी। फिर इन तीनों ने आपस में इत्तिफाक़ करके इस रक़म के तीन हिस्से करके तक़सीम कर लिए और उसी रात वाक़दी को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ख़्वाब में मिले और फ़रमाया: कल तुम्हें बहुत कुछ मिल जाएगा चुनाँचे दूसरे रोज़ मीर याहिया बरमकी ने वाक़दी को बुला कर पूछा के मैंने रात ख़्वाब में तुम्हें परेशान देखा है। क्या बात है? वाक़दी ने सारा क़िस्सा सुनाया। तो याहिया बरमकी ने कहा के मैं नहीं कह कसता के तुम तीनों में से कौन ज़्यादा सखी है। तुम तीनों ही सखी और वाजिब-उल-एहत्राम हो। फिर उसने तीस हज़ार दरहम वाक़दी को और बीस हज़ार उन दोनों को दिए और वाक़दी को क़ाज़ी भी मुक़र्रर कर दिया। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 812)

सबक़:- सच्चे मुसलमान सखी और ईसार पैशा होते हैं। और अपने भाई की तकलीफ दूर करने की खातिर अपनी परवाह भी नहीं करते। और ये भी मालूम हुआ के सखावत से हमेशा फायदा ही होता है। माल घटता नहीं। बल्के बढ़ता है और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उम्मत के हालात से बाख़बर हैं। और सखियों पर नज़रे रहमत फ़रमाते हैं।

हिकायत नम्बर(४०) हसन व हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा

एक रोज़ हज्जाज ने फुक़िया खरासान हज़रत याहिया इब्ने उमैर को बुलाया और कहा के ऐ याहिया! मैंने सुना है के तुम हसन व हुसैन(रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा) को रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की औलाद से बताते हो। औलाद तो बाप की तरफ़ से होती है और हसन हुसैन रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बेटी के बेटे हैं। फिर वो माँ की तरफ़ से रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की औलाद कैसे हो गए? तुम्हारे पास अगर कोई दलील है तो बयान करो हज़रत याहिया फ़रमाने लगे मेरे पास क़ुरआन की दलील मौजूद है। हज्जाज ने कहा। मगर *नदऊ अबनाआ ना व अबनाआ कुम* वाली आयत ना पढ़ना। इसके अलावा कोई दूसरी आयत हो। तो पढ़ो। हज़रत याहिया ने फ़रमाया। दूसरी ही आयत पढ़ूंगा। हज्जाज हैरान हो गया के दूसरी ऐसी आयत भला कौन सी हो सकती है। कहने लगा अगर तुम कोई ऐसी आयत ना पढ़ सके तो तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दूंगा। फ़रमाया। इंशाअल्लाह वाज़ेह आयत पेश करूंगा लो सुना खुदा तआला फ़रमाता है:

Scanned by CamScanner

व नूहन हदेना मिन क़बलु मिन ज़ुर्रियातिही राऊरावा सुलैमाना व अय्युबा व युसूफा व मूसा व हारूना व कज़ालिका नजज़िल मोहसिनीना। व ज़क्रिया व याहिया व ईसा व इलयासा। (प:7, रूकू 16)

देख लो इस आयत में अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलेहिस्सलल्लाम की औलाद दाऊद, सुलैमान, अय्युब, युसूफ, मूसा, हारून, याहिया और ईसा व इलयास (अलेहिस्सलाम) को बताया है और इस फेहरिस्त में हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम भी हैं। जिनका बाप कोई ना था और माँ ही थी। और अल्लाह तआला ने माँ की तरफ़ से उनको हज़रत नूह अलेहिस्सलाम की औलाद में बताया है। पस इसी तरह हसन व हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा भी अपनी माँ की तरफ़ से रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की औलाद से हैं, हज्जाज ये आयत सुनकर हैरान रह गया और आसमान की तरफ़ मुंह करके कहने लगा। ये आयत गोया मैंने आज तक पढ़ी ही ना थी। फिर उसने हज़रत याहिया बिन उमैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को बहुत सा ईनाम देकर रूख़्सत किया। (तफसीर कबीर, जिल्द: 1, सफ़ा 284)

सबक़:- हज़रत इमाम हसन व हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा की बहुत बड़ी शान है और ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की औलाद में से हैं। उनका अदब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का अदब है। और उनकी शान में (मआज़ अल्लाह) कोई गुसताखी करने वाला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह वसल्लम का गुस्ताख़ है।

हिकायत नम्बर(118) सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के वालिद हज़रत मोहम्मद बाक़र रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाते हैं के मेरे वालिद हज़रत इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन बिन इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा के पास एक शख़्स आया। और कहने लगा। हुज़ूर "अबु बक्र" की कोई बात कीजिए। इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन ने फ़रमाया। हज़रत सिद्दीक़ की? सायल ने हैरान होकर पूछा। अबु बक्र को आप भी सिद्दीक़ कहते हैं? इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जवाब दिया:

क़द सम्माहू सिद्दीक़न रसूलुल्लाही सल-लल्लाहो तआला अलेही व सल्लम वअलमुहाजिरूना वलअनसारू वमिन लम युसम्मीहू सिद्दीक़न फला सद्दाक़ल्लाहो अज़्ज़ा व जल्ला क़ौलाहू फिदुनिया वलआख़िरती इज़हब फहिब अबाबक्रिन व उमरा रज़ी अल्लाहो

Scanned by CamScanner

अन्हुमा (अस्सवाईक़-उल-महर्रिक़त, सफ़ा 31)

उनका नाम खुद रसूल अल्लाह(स०अ०स०) और मुहाजीन व अनसार ने सिद्दीक़ रखा है। और जो उनको सिद्दीक़ नहीं मानता। खुदा तआला उसकी बात को दुनिया व आख़िरत में सच्चा ना करे। जाओ अबुबक्र व उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा दोनों की मोहब्बत पैदा करो।

सबक़:- हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की वो शान है के खुद अहले बैत अेज़ाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम उन्हें "सिद्दीक़" तसलीम फ़रमाते हैं। और जो उन्हें सिद्दीक़ नहीं मानता। उसे वो झूटा समझते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अहले बैत अेज़ाम का भी सबक़ ये है के हज़रत अबुबक्र व उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा से मोहब्बत रखना ज़रूरी है। फिर अगर कोई उनसे मोहब्बत नहीं रखता। तो गोया वो अहले बैत अेज़ाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम का हुक्म नहीं मानता।

हिकायत नम्बर(804) नेक ख़सलतें तीन सौ साठ(360) हैं

एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है। तो उनमें से एक ख़सलत उसमें पैदा फ़रमा देता है। जिसकी वजह से वो बन्दा जन्नत में दाखिल हो जाता है। हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! इन (360) नेक ख़सलतों में से कोई खसलत मुझ में भी है। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। अबुबक्र! तुम्हें मुबारक हो। के वो सारी की सारी नेक खसलतें तुम में मौजूद हैं। (अस्सवाईक़-उल-मोहर्रिक़ा, सफ़ा 44)

सबक़:- हज़रत सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बहुत बड़ी शान है। और वो यक़ीनन जन्नती बल्के जन्नतियों के सरदार हैं। 360 ख़सलतों में से जब एक ख़सलत भी जन्नत में ले जाती है तो जिस ज़ाते पाक में 360 पूरी की पूरी नेक खसलतें हूँ। उसके जन्नती होने में (मआज़ अल्लाह सुम्मा मआज़ अल्लाह) शक व शुबह करने वाला क्यों ना बद ख़सलत होगा।

हिकायत नम्बर(805) सुनहरी महल

एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के मैंने जन्नत में एक अज़ीम-उश-शान सुनहरी महल देखा और पूछा के ये महल किस का है फरिश्तों ने बताया के ये सुनहरी महल एक अरबी का है। मैंने

Scanned by CamScanner

कहा मैं भी अरबी हूँ। बोले एक क़ुरैशी का है। मैंने कहा। मैं भी क़ुरैशी हूँ। फरिश्ते बोले: ये सुनहरी महल मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के एक उम्मती का है। मैंने कहा। मैं मोहम्मद हूँ। बताओ मेरे किस उम्मती का है? उन्होंने बताया। ये महल हज़रत उमर बिन अलख़त्ताब का है।(अलसवाईक़ अलमोहिर्रिक़ा, सफ़ा 59)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो क़ा बहुत बड़ा दर्जा है और अल्लाह तआला ने आपके वास्ते जन्नत में सुनहरी महल तैयार फ़रमाया है। फिर जो कोई इतनी बड़ी मक़्बूल हक़ हस्ती से बुग्ज़ रखे। तो उसका नामा-ए-आमाल सियाह क्यों ना हो?

हिकायत नम्बर(806) सत्तर हज़ार

एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के हज़रत उस्मान (रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह) की शफाअत से क़यामत के रोज़ सत्तर हज़ार अफ़्राद जिनके लिए आग वाजिब हो गई होगी। जन्नत में दाखिल होंगे। (अस्सवाईक़-उल-मोहर्रिक़ा, सफ़ा 65)

सबक़:- हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बड़ी शान के मालिक हैं और आप की मोहब्बत जन्नत में ले जाने वाली है। फिर आपका बुग्ज़ व अनाद रखने वाला जन्नत में कैसे जा सकता है?

हिकायत नम्बर(807) चार मेहबूब

एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के अल्लाह तआला ने मुझे चार शख़्सियतों से मोहब्बत रखने का हुक्म दिया है। इसलिए मैं उनसे मोहब्बत रखता हूँ। हाज़रीन ने पूछा या रसूल अल्लाह! उन खुश क़िस्मतों का नाम लीजिए। फ़रमाया एक तो अली हैं(रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह) और तीन ये हैं अबुज़र, मिक़्दाद और सलमान रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम(अस्सवाईक़-उल-मोहर्रिक़ा सफ़ा 73)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की इतनी बड़ी शान है के खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को खुदा का हुक्म होता है के उनसे मोहब्बत रखो। फिर मावशमा के लिए उनकी मोहब्बत रखना क्यों ज़रूरी ना होगा। और उनका बुग्ज़ खुदा की नाराज़गी का सबब क्यों ना होगा?

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(808) अहसनतुन्ना

हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह तआला अलेह एक मर्तबा एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए। और वहाँ से वापसी पर आपने इब्ने अबी लैला को देखा जो खच्चर पर सवार अदालत की तरफ़ जा रहे थे। इब्ने अबी लैला को एक मुक़द्दमे में हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह तआला अलेह की गवाही दरकार थी। इसलिए उन्होंने इमामे आज़म अलेह अर्रहमा को साथ ले लिया। रास्ते में चन्द औरतें गा रही थीं। उन औरतों ने जब हज़रत इमाम आज़म और इब्ने अबी लैला को देखा तो खामोश हो गईं। इमाम आज़म अलेह अर्रहमा ने फ़रमाया *अहसनतुन्ना* हज़रत इमाम साहब ने फ़रमाया। आप भी याद कीजिए के मैंने ये कलमा किस वक़्त कहा था। गाने के वक़्त या सकूत के वक़्त? इब्ने अबी लैला ने जवाब दिया। सकूत के वक़्त। तो आपने फ़रमाया के मैंने तो उन्हें *अहसनतुन्ना* इसी सकूत पर कहा था के तुम ने गाना छोड़ के जो सकूत इख़्तियार कर लिया है। बहुत अच्छा किया है। इब्ने अबी लैला ने ये बात सुनी। तो आपकी गवाही क़बूल कर ली। (ग़रायब-उल-बयान, सफ़ा 34)

सबक़:- हमारे इमाम हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह तआला अलेह बहुत बड़े इमाम और इल्मो इर्फ़ान के मख़्ज़न थे। आपकी हर बात इल्मो हिकमत से भरी होती थी। और आप पर ऐत्राज़ करने वाला दरअसल अपनी ग़लत फहमी का शिकार होता है। खुदा अगर समझ दे तो हमारे इमाम की किसी बात पर ऐत्राज़ ना किया जाए और ये भी मालूम हुआ के औरतों का गाना बजाना बहुत बुरी बात है। और इस फैल का छोड़ना ही अच्छा काम है।

हिकायत नम्बर(809) खारजी को जवाब

इंक़िलाबात ज़माना से एक खारजी शख़्स जिसका नाम ज़ोहाक था। कूफ़े का गवरनर बन गया। ये शख़्स बड़ा ज़ालिम था। और हमारे इमाम आज़म अलेह अर्रहमा को भी ज़ोहाक से एक दफा वास्ता पड़ा था। ज़ोहाक ने गवरनरी संभालते ही हज़रत इमाम अबु हनीफा अलेह अर्रहमा को गिरफ़्तार कर लिया। और कहा *तुब या शेख़ मिनलकुफ्र।* ऐ शेख! कुफ्र से तौबा करो। इमाम अबु हनीफा ने जवाब दिया। *अना तायबुम्न मिना कुल्ली कुफ्रिन* मैं हर कुफ्र से तायब हूँ। ज़ोहाक समझा के अबु हनीफा ने तमाम ग़ैर खारजी अक़ायद से तौबा कर ली। इमाम अबु हनीफा रिहा हो गए। लेकिन किसी शरीर ने उसे मुतवज्जह किया के अबु हनीफा

Scanned by CamScanner

ने ग़ैर खारजी अक़ायद से तौबा नहीं की है। उल्टा खारजी अक़ायद को कुफ्र बताया है। इमाम अबु हनीफा रहमत-उल्लाह फिर बुलाए गए और पूछा के तुम ने क्या खुद हमारे अक़ायद से तौबा की थी। कुफ्र से मुराद क्या हमारे अक़ायद थे? इमाम अबु हनीफा बोले: आपको यक़ीन है के मेरे पेशे नज़र कुफ्र का लफ्ज़ इस्तेमाल करते वक़्त आपके अक़ायद थे। ज़ोहाक ने जवाब दिया। यक़ीन कैसे हो सकता है। ज़न और गुमान है। इमाम अबु हनीफा रहमत-उल्लाह अलेह ने फ़रमाया *इन्ना बअज़ ज़मिन्नी इसमुन* बअज़ गुमान गुनाह होते हैं।

खारजियों के नज़दीक हर छोटे बड़े गुनाह का मुरतकिब काफिर हो जाता है। इमाम अबु हनीफा रहमत-उल्लाह अलेह ने फ़रमाया। अब आप कुफ्र से तौबा कीजिए। आपने बदगुमानी करके कुफ्र किया है ज़ोहाक गड़बड़ा गया। और बोला। बेशक मुझ से ग़लती हुई। मैं तौबा करता हूँ। लेकिन अबु हनीफा! तुम भी तौबा के अलफाज़ दोबारा कहो। इमाम अबु हनीफा ने वही फिक़रा दोहराया। के मैं हर कुफ्र से तायब हूँ और रिहाई पाकर घर तशरीफ़ ले आए।

सबक़:- हमारे इमाम आज़म अलेह अर्रहमा को अल्लाह ने हाज़िरत दिमाग़ी का खास मल्का अता फ़रमाया था और आपके दुश्मन हमेशा ज़लील ही हुए।

हिकायत नम्बर(810) अज़ान

ज़ोहाक के मरने के बाद उसका जानशीन इब्ने हबीरा हुआ। ये शख़्स इब्तिदा में हज़रत इमाम अबु हनीफा रहमत-उल्लाह अलेह का दोस्त और मौतक़िद रहा। और मौक़ा बे मौक़ा हज़रत इमाम साहब को बुला भेजता था। और उनसे मशवरे और फतवे लेता था और ये उसकी चाल थी।

एक दिन इब्ने हबीरा किसी शख़्स को वाजिब-उल-क़त्ल क़रार देकर जल्लादे के सपुर्द करने वाला था के इमाम अबु हनीफा हस्बे मामूल बुलाए हुए पहुँच गए। ग़रीब मुलज़िम की नज़र इमाम साहब पर पड़ी। तो उसने बदहवासी से या जान बूझ कर इब्ने हबीरा से कहा। आप मेरी बाबत हज़रत से दरयाफ़्त कर लीजिए के मैं कैसा आदमी हूँ इब्ने हबीरा ने इमाम अबु हनीफा की तरफ़ देखा। इमाम अबु हनीफा रहमत-उल्लाह अलेह मुलज़िम को मतलक़ नहीं जानते थे। लेकिन समझ गए के बेचारा ख़्वाह म ख़्वाह इब्ने हबीरा के पंजे में फंस गया है। बचाने की कोई सूरत निकालनी चाहिए। झूट

Scanned by CamScanner

तो बोल नहीं सकते थे। इब्ने हबीरा को जवाब देने की बजाए मुलज़िल से बोले के तुम वही होना जो अज़ान देते वक़्त लाइलाहा इल लल्लाह का कलमा खास तरीक़े से खींचते हो। उसने कहा। जी हाँ! वही हूँ। इमाम अबु हनीफा ने फ़रमाया। अच्छा ज़रा अज़ान दो। उसने अज़ान दी। अज़ान ख़त्म हुई। तो इमाम अबु हनीफा ने इब्ने हबीरा से कहा अच्छा आदमी है मुझे इसमें बुराई नज़र नहीं आई इब्ने हबीरा की बात काट कर और कलमा शहादत पढ़वा कर इमाम अबु हनीफा ने उस शख़्स की तारीफ की गुंजाईश पैदा कर ली के जो तौहीद का मक़्र और रिसालत का क़ायल हो। उसकी बाबत इतना कह देना के अच्छा आदमी है। झूट नहीं होगा। इब्ने हबीरा ने जान बख़्शी कर दी।

सबक़:- हमारे इमाम ने बड़ी बड़ी मुश्किलें हल फ़रमाई हैं और अपनी खुदादाद ज़हानत से बड़ी बड़ी मुसीबतें टाल दी हैं।

हिकायत नम्बर(811) अजीब सवाल

एक शख़्स ने हमारे इमाम हज़रत इमाम आज़म अलेह अर्रहमा से पूछा के फ़रमाईये। उस शख़्स के मुतअल्लिक़ आपका क्या खयाल है। जो यूं कहता है के मैं जन्नत की ख़्वाहिश नहीं रखता और दोज़ख से नहीं डरता और मुर्दा खाता हूँ। और बग़ैर क़िरात के और बग़ैर रूकू व सज्दे के नमाज़ पढ़ता हूँ और इस चीज़ की गवाही देता हूँ। जिसे मैंने ना देखा और हक़ से नफरत रखता हूँ और फितना से रग़बत रखता हूँ।

हज़रत इमाम साहब ने अपने शार्गिदों से मुस्कुरा कर दरयाफ़्त फ़रमाया के तुम बताओ ऐसा शख़्स कैसा होगा? सब ने कहा के ऐसा शख़्स तो बहुत ही बुरा शख़्स है।

इमाम साहब ने फ़रमाया। नहीं बल्के ये शख़्स तो बड़ा ही अच्छा शख़्स है। जो जन्नत की ख़्वाहिश नहीं रखता बल्के खालिक़े जन्नत अल्लाह तआला की मोहब्बत रखता है और दोज़ख़ से नहीं डरता बल्के ख़ालिक़े दोज़ख़ अल्लाह तआला से डरता है। और मुर्दा खाता है। यानी मछली या टिड्डी खाता है और बग़ैर क़िरात व रूकू व सज्दे के नमाज़ पढ़ता है। यानी नमाज़े जनाज़ा पढ़ता है। और बग़ैर देखे गवाही देता है। यानी अल्लाह तआला को बग़ैर देखे उसकी गवाही देता है। और कहता है *अशहदू अन लाइलाहा इल-लल्लाह* और हक़ से नफरत रखता है यानी मौत से नफरत रखता है जो हक़ है और फितने से रग़बत रखता है। यानी मालो औलाद से रग़बत रखता हैं जो दोनों ही फितना हैं।

सायल ने जवाब सुने

Scanned by CamScanner

फक़ब्बला राअसाहू वक़ाला अशहदू अन्नाका लिलइल्मी विआमुन

तो आपके सर को बेसा देकर कहने लगा के मैं गवाही देता हूँ के आप इल्मो फज़्ल के मख़ज़न हैं। (ग़रायब-उल-बयान सफ़ा 32)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म अलेह अर्रहमा वाक़ई इमाम आज़म हैं। और मुश्किलात इल्म के हल फ़रमाने वाले हैं। और जहाँ तक आपके इल्म की रसाई है। उस वक़्त से आज तक किसी दूसरे की वहाँ तक रसाई हुई ना होगी। फिर जो लोग हमारे इमाम आज़म पर तरह तरह की बीसियों ऐत्राज़ात करने वाले हैं। वो खुद क्यों जाहिल व बेख़बर ना हों?

हिकायत नम्बर(812) तक़्वा

हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह तआला अलेह कपड़े के बहुत बड़े ताजिर थे। एक दफा आपने कपड़ा फ़रोख़्त करने के लिए एक शख़्स को वकील किया उन कपड़ों में एक कपड़ा ऐबदार भी था। हज़रत इमाम साहब ने वकील से कह दिया के इस कपड़े को फ़रोख़्त ना करना जब तक उसका ऐब बयान ना कर लेना। इत्तिफाक़ से वकील ने फ़रामोशी से वो कपड़ा ऐब बयन किए बग़ैर फ़रोख़्त कर दिया और सब कपड़ों की क़ीमत में उसकी क़ीमत भी मिला दी।

हज़रत इमाम साहब को जब इस बात का पता चला तो आपने उन तमाम कपड़ों की क़ीमत ग़ुर्बा व मसाकीन पर सदक़ा कर दी। (ग़राब-उल-बयान, सफ़ा ⊕)

सबक़:- हमारे इमाम साहब रहमत-उल्लाह तआला अलेह वरअे व तक़्वा के बादशाह थे। और ताजिर व अमीन थे। फिर ऐसे अमीर व मुत्तक़ी इमाम पर जो शख़्स ज़बान तान दराज़ करे। वो क्यों ख़ायन व आक़्बत ना अंदेश ना हो? और ये भी मालूम हुआ के सच्चा मुसलमान वो है जो किसी से धोका ना करे। ताजिर हो तो अपनी ऐबदार चीज़ को धोके से फरूख़्त ना करे। बल्के गाहक को इस ऐब पर मतलअ कर दे और यूं ना करे के किसी बहाने अपनी ऐदार चीज़ को फ़रोख़्त करके खुश होने लगे और घर में आकर अपने इस कारनामे पर फख़्र करने लगे के लो भई। जो एक रद्दी थान दुकान में था। मैंने आज उसे बड़ी सफाई से निकाल दिया है और गाहक को पता तक नहीं चलने दिया।

हिकायत नम्बर(813) सलामती व आफियत

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह ने एक शख़्स से पूछा। कैसे हो? उसने जवाब दिया। सलामत हूं और आफियत से हूँ। हातिम असिम

Scanned by CamScanner

फ़रमाने लगे। भाई! पुल सिरात पर से गुज़र जाने के बाद तुम सलामत होगे। और जन्नत में दाखिल हो चुकने के बाद आफियत से होगे। पस तुम अपनी सलामती व आफियत की फिक्र में रहो। (कीमियाऐ सआदत, सफ़ा 216)

सबक़:- असल सलामती व आफियत आख़िरत की सलामती व आफियत है। दुनयवी सलामती व आफियत कोई हक़ीक़त नहीं। और जो अल्लाह के सच्चे बन्दे हैं। क़यामत के रोज़ की सलामती व आफियत की फिक्र में रहते हैं।

हिकायत नम्बर(814) अद्ल की बर्कत

बज़रचमहर ने अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में अपना एक ऐलची भेजा। ताके वो फारूक़े आज़म की सूरत व सीरत देख आए। वो ऐलची जब मदीना मुनव्वरह पहुँचा तो मुसलमानों से पूछा *ऐनल मलिकू* यानी तुम्हारा बादशाह कहाँ है? मुसलमानों ने कहा। हमारा बादशाह नहीं। हमारा अमीर है। और अभी अभी दरवाज़ा से बाहर तशरीफ़ ले गया है। ऐलची बाहर निकला। तो हज़रत फारूक़े आज़म को देखा के धूप में सो रहे हैं। दुर्रा सर के नीचे रखा है। और पैशानी नूरानी से ऐसा पसीना बहा है के ज़मीन तर हो गई है। जब ये हाल देखा तो उसके दिल में बड़ा असर हुआ। और दिल में कहने लगा के तमाम जहान के बादशाह जिसकी हैबत से लर्ज़ा बरइंज़ाम हैं। ताज्जुब है के वो इस सादगी से ज़मीन पर सो रहा है। फिर कहने लगा ऐ मुसलमानों के अमीर! आपने अद्ल किया। इस वजह से बे खटके सोए और हमारा बादशाह ज़ुल्म करता है। तो हरासाँ रहता है। मैं गवाही देता हूँ के आपका दीन सच्चा है। (कीमियाऐ सआदत, सफ़ा 267)

सबक़:- हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह पेकर अद्लो इंसाफ थे। और सारी दुनिया पर आपका रौब व दबदबा क़ायम था। और आप तकल्लुफात से दूर और सादगी पसंद थे। और ये भी मालूम हुआ के जो हाकिम ज़ुल्मो सितम से काम लेते हैं वो कभी सुख चैन और इतमिनान नहीं पाते।

हिकायत नम्बर(815) करामत

सरज़मीने शाम में एक अब्दाल का इन्तिक़ाल हो गया। तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह सरज़मीने इराक़ से फौरन वहाँ पहुँच गए और फिर हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम और दीगर अब्दाल भी पहुँच गए और

Scanned by CamScanner

सबने उसका जनाज़ा पढ़ा। और फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम से कहा के क़सतनतुनिया में फलाँ शख़्स जो काफिर है। उसे यहाँ ले आईये। चुनाँचे हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम उसी वक़्त उस काफिर को ले आए। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने उसे कलमा पढ़ा कर मुसलमान किया। और उसकी मूंछें पस्त कीं और अपनी एक ही नज़र से उसे फौरन मुक़ामे अब्दाल तक पहुँचा दिया और फिर सारे अब्दालों से फ़रमाया के विसाल पा जाने वाले अब्दाल की जगह मैं इसे मुक़र्रर करता हूँ। सब ने सर तसलीम खम कर दिया। (शरह मुस्लिम अलसबूत, सफ़ा 526, तमता)

सबक़:- हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की ये करामत है के पल भर में इराक़ से शाम पहुँच गए और फिर एक काफिर को क़सतनतुनिया से पल भर में वहाँ मंगवा लिया और फिर अपनी एक ही नज़र से उसे कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। इसी लिए शायर ने लिखा है के....

ना किताबों से ना कालिज के है दर से पैदा
दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा

हिकायत नम्बर(816) ग़ुलाम खलील

एक शख़्स ग़ुलाम खलील नामी बुज़ुर्गाने दीन का बड़ा मुखालिफ था। और बुज़ुर्गों के खिलाफ हर वक़्त बकता रहता था। उस ज़माने में बग़दाद शरीफ में हज़रत समनून रहमत-उल्लाह अलेह की विलायत का बड़ा चर्चा था। ग़ुलाम खलील हज़रत समनून के खिलाफ था और चाहता था के कोई ऐसी बात मिले, जिससे मैं उन्हें बदनाम कर सकूं। इत्तिफाक़न एक मालदार औरत हज़रत समनून के पास आई और उनसे दरख़्वास्त की के हज़रत समनून उससे निकाह कर लें। हज़रत समनून ने इस बात से इंकार कर दिया। वो औरत ग़ुलाम खलील के पास पहुँची। और इन्तिक़ाम लेने की ख़ातिर उसने हज़रत समनून पर इलज़ाम लगा दिया। ग़ुलाम खलील तो इस ताक में था ही। फौरन खलीफा-ए-वक़्त के पास पहुँचा और हज़रत समनून के खिलाफ बहुत कुछ कह कर खलीफा को भड़का दिया। यहाँ तक के खलीफा ने हज़रत समनून को बुलाकर हुक्म दिया के कल उन्हें क़त्ल कर दिया जाए। रात को जब वो सोया। तो ख़्वाब में देखा के कोई कह रहा है। खबरदार! अगर समनून को क़त्ल किया तो तेरा मुल्क बर्बाद हो जाएगा। खलीफा जब बैदार हुआ तो फौरन समनून की खिदमत में हाज़िर होकर माफी चाही। और बड़ी इज़्ज़त के साथ रिहा कर दिया। ग़ुलाम खलील ने ये बात देखी तो मारे

Scanned by CamScanner

हसद के और भी जलने लगा। और आख़िर उम्र में मर्ज़ कोढ़ में मुब्तला हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 522)

सबक़:- अल्लाह वालों के हासिद ख़्वाह म ख़्वाह हसद की आग में जलते रहते हैं। और अल्लाह वालों की शान को घटाने के दरपे रहते हैं। मगर ख़ुद ही जल जल कर और कोढ़ी होकर मर जाते हैं।

हिकायत नम्बर(817) बेटा

हज़रत अबु बक्र वराक़ का एक बेटा था। जो क़ुरआन पढ़ने मक्तब जाया करता था एक दफा वो सबक़ पढ़कर घर आया। तो रो रहा था। बाप ने पूछा, बेटा रोते क्यों हो। उसने जवाब दिया अब्बा जान! क़ुरआन पाक की ये आयत रूला रही है *यौमा यजअलुल विलदाना शीबा*, यानी एक रोज़ वो होगा। जिसकी हैबत से लड़के भी बूढ़े हो जायेंगे। पस वो लड़का इस आयत के ख़ौफ से बीमार हो गया और फौत हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 541)

सबक़:- अल्लाह वालों की सोहबत से उनकी औलाद भी खुदा तरस और आक़्बत अंदेश होती हैं और ये भी मालूम हुआ के क़ुरआने पाक में बड़ी तासीर और ज़ोर है। बशर्त ये के पढ़ने वाला उसे समझे भी।

हिकायत नम्बर(818) नसीहत

हज़रत अब्दुल्लाह हफीफ रहमत-उल्लाह अलेह से किसी ने आकर कहा के हुज़ूर! शहर मिस्र में एक बूढ़ा मुराक़्बे में बैठा है। जो अपना सर उठाता ही नहीं। हज़रत अब्दुल्लाह को शौक़ पैदा हुआ और वहाँ पहुँचे। उन्होंने बूढ़े को देखा जो रू बक़िबला होकर मुराक़्बे में था। हज़रत अब्दुल्लाह ने सलाम किया। उसने जवाब ना दिया। उन्होंने फिर सलाम किया फिर जवाब ना दिया। उन्होंने तीसरी मर्तबा सलाम किया और कहा। तुम्हें खुदा की क़सम के मेरे सलाम का जवाब दो, बूढ़े ने सर उठाया और कहा:

ऐ अब्दुल्लाह! दुनिया थोड़ी है और इस थोड़ी से थोड़ी ही बाक़ी रह गई है। इस थोड़ी से तुम हिस्सा बड़ा हासिल करने की कोशिश करो। पर शायद तुम बेफिक्र हो के इतनी दूर से मेरे सलाम को यहाँ आए हो।

ये कह फिर सर झुका लिया। हज़रत अब्दुल्लाह ने वहीं उसके साथ ज़ोहर व अस्र की नमाज़ पढ़ी और फिर अर्ज़ की के मुझे कुछ नसीहत कीजिए बूढ़े ने कहा ऐसे शख़्स की सोहबत इख़्तियार करो। जिसका दीदार तुझे खुदा की याद दिला दे। और हक़ तआला की शौकत दिल में पैदा कर दे। और

Scanned by CamScanner

फिर सर झुका लिया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 568)

सबक़:- अल्लाह वाले इस दुनिया को बहुत हक़ीर और थोड़ी समझते हैं। और कोशिश में लगे रहते हैं। के दम ग़नीमत है इस फ़ुर्सत में आक़बत के लिए कुछ बना लिया जाए और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की सोहबत बड़ी मुफ़ीद है और अल्लाह वाले वो हैं जिनके दीदार से खुदा याद आ जाता है।

हिकायत नम्बर(819) हज़रत शिबली अलेह अर्रहमा

हज़रत शिबली अलेह अर्रहमा के ज़माने के लोग आपको दीवाना व मजनूँ समझते थे। हालाँके आप अपने ज़माने के लोगों में आक़िल तर थे। एक रोज़ आप अबुबक्र मुजाहिद के पास जो इस ज़माने के जय्यद उल्मा में थे। तशरीफ़ लाए, अबुबक्र आपको देखते ही उठ खड़े हुए। और आपकी पैशानी पर दोनों आँखों के दरमियान बोसा दिया। और बड़ी ताज़ीम के साथ आपको अपने पास बिठा लिया। बहुत से उल्मा जो अबुबक्र के पास बैठे थे। उन्होंने कहा के आप शिबली के लिए उठे क्यों? और उनकी ताज़ीम क्यों की। जब के अहले बग़दाद उन्हें दीवाना और मजनूँ कहते हैं।

अबुबक्र ने जवाब दिया के मैंने खुद ब खुद ऐसा नहीं किया। बल्के मैंने वो किया है जो के रसूले करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को उनके साथ करते देखा है। यानी आज रात को मैंने ख़्वाब में देखा के शिबली हज़रत रसूले करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हुज़ूर में आए तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उन्हें देखकर खड़े हो गए। और उनकी आँखों के दरमियान में बोसा देकर अपने पहलू में बिठा लिया। मैंने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! आप शिबली के साथ ऐसा करते हैं। ये किस वजह से इस क़द्र ताज़ीम का मुसतहिक़ हो गया? हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के वो हर नमाज़ के बाद ये आयत पढ़ता है। *लक़द जाआकुम रसूलुन मिन अनफ़ुसीकुम अज़ीज़ुन अलेही मा अनित्तुम हरीसुन अलेकुम बिलमौमिनीना रऊफ़-उर-रहीम* और उसके बाद मुझ पर दुरूद पढ़ता है। हज़रत शाह अब्दुलहक़ मोहद्दिस देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह की किताब मुसतताब मर्ज-उल-बहरैन सफ़ा 45)

सबक़:- अल्लाह वालों की शाखें बड़ी बुलंद होती हैं और उन बुज़ुर्गों को बारहगाहे रिसालत मआब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम में रसाई हासिल हुई है। और ये भी मालूम हूआ के ये दुनियादार अफ़राद उन

Scanned by CamScanner

अल्लाह वालों को दीवाना व मजनूँ भी कह दिया करते हैं। मगर उनका ऐसा कहना उनकी अपनी नादानी का मुज़ाहेरा होता है। और ये भी मालूम हुआ के खुश अक़ीदा उल्मा इक्राम पर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपना करम फ़रमाते हैं और अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ फ़रमा कर उन्हें हक़ायक़ का इल्म भी अता फ़रमा देते हैं। और जो "उल्मा" उन अल्लाह वालों की अज़मत के क़ायल ना हों, वो ना खुश अक़ीदा हैं ना खुश क़िसमत और वो ताज़ीम व क़याम पर एत्राज़ करने लगते हैं और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के आमाल से आज भी बा ख़बर हैं। जो उनकी याद में रहे। और उन पर दुरूद पढ़े हुज़ूर उसकी इस याद व मोहब्बत की क़द्र फ़रमा कर उसकी पैशानी को चूम कर उसे बेपनाह सर बुलंदी अता फ़रमा देते हैं। और ये भी मालूम हुआ के ये सारी दौलत इर्फान आँख वालों को मिलती है और। अैन

दीदा-ए-कोर को क्या आए नज़र क्या देखे

हिकायत नम्बर(820) खुदा की ज़मानत

बनी इस्राईल में एक शख़्स को हज़ार अशर्फियों की ज़रूरत पड़ी। तो वो एक शख़्स के पास गया। और उससे एक हज़ार अशर्फियाँ बतौर क़र्ज़ माँगीं उसने कहा। के क़र्ज़ मैं देता हूँ। मगर कोई गवाह लाओ। उसने कहा के खुदा का गवाह होना काफी है।

क़र्ज़ देने वाले ने कहा। तू किसी ज़ामिन को ले आओ। उसने कहा। के ज़मानत भी खुदा ही की काफी है। क़र्ज़ देने वाला बोला। तूने सच कहा। ये लो मैं तुम्हें खुदा की ज़मानत पर एक हज़ार अशर्फियाँ क़र्ज़ देता हूँ। फलाँ मुद्दत तक मेरी ये रक़म अदा कर देना।

उस शख़्स ने एक मुद्दत मुतय्यन करके हज़ार अशर्फियाँ क़र्ज़ लीं। और फिर सौदागरी के लिए समुंद्र पार चला गया। और जब वो अपने काम से फारिग़ हुआ। तो मुद्दत मुक़र्रा को क़र्ज़ वापस करने के लिए जहाज़ की तलाश में साहिल पर आया। ताके वक़्त पर वापस पहुँच कर क़र्ज़ अदा कर सके। मगर उसे कोई जहाज़ ना मिला।

फिर उसने एक लकड़ी को लिया। और उसे क़ुरैद कर उसमें सूराख किया। और उसके अन्दर एक हज़ार अशर्फी भर एक ख़त क़र्ज़ देने वाले के नाम लिखा। और वो खत भी लकड़ी के अन्दर रखा। फिर उस लकड़ी को समुंद्र के किनारे लाया और कहा।

Scanned by CamScanner

ऐ अल्लाह! तू जानता है के मैंने फलाँ शख़्स से तेरी ज़मानत पर एक हज़ार अशर्फियाँ क़र्ज़ ली थीं। वो शख़्स तेरी ज़मानत पर राज़ी हो गया था। अब चूंके क़र्ज़ की मुद्दत ख़त्म हो रही है। और मुझे कोई जहाज़ नहीं मिला ताके मैं उसका क़र्ज़ वापस कर सकूं। अब मैं तुझ को ये अमानत सपुर्द करता हूँ। उसने क़र्ज़ तेरी ज़मानत पर दिया था। और मैं ये क़र्ज़ तेरी अमानत में देता हूँ। ये रक़म उस तक पहुँचा दे।

ये कहकर वो लकड़ी समुंद्र में बहा दी। और खुद वापस चला आया।

उधर क़र्ज़ देने वाला मुद्दत ख़त्म होने पर साहिल पर इस उम्मीद पर आया। के शायद वो सौदागर मेरा क़र्ज़ लेकर वापस आया हो। उसने समुंद्र में देखा तो एक लकड़ी बहती हुई किनारे आ लगी। उसने उस लकड़ी को निकाला। और जलाने की नीयत से घर ले आया। जब उसे चीरा तो अन्दर से एक हज़ार अशर्फियाँ और एक ख़त निकला।

एक मुद्दत के बाद वो सौदागर जब वापस आया। तो इस खयाल से के शायद वो लकड़ी उसे ना मिली हो। एक हज़ार अशर्फियाँ लेकर उसके पास आया। और कहा खुदा की क़सम मैं तुम्हारा क़र्ज़ अदा करने के लिए जहाज़ की तलाश में रहा। मगर अफसोस के मुझे जहाज़ ना मिल सका। ये लो एक हज़ार अशर्फियाँ।

क़र्ज़ देने वाले ने पूछा। मगर ये बताओ के क्या तुम ने मेरी तरफ़ कोई ख़त लिखकर मुझे कुछ भेजा था? उसने कहा। हाँ जब मैंने कोई जहाज़ ना पाया। तो एक लकड़ी को कुरैद कर उसमें हज़ार अशर्फियाँ भर कर और एक ख़त उसमें डाल कर अल्लाह की अमानत व हिफाज़त में वो लकड़ी तुझे मैंने भेजी थी। वो बोला।

तो सुन लो। मुझे वो लकड़ी पहुँच चुकी है। और मेरा सारा माल मुझे मिल चुका है। अब ये हज़ार अशर्फियाँ तुम वापस ले जाओ। (बुखारी शरीफ, जिल्द 1, सफ़ा 306)

सबक़:- रास्त बाज़ी और दयानत दारी बड़ी अच्छी चीज़ है। जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करे। और ईफाऐ अहद की पाबंदी करे। तो वो कभी घाटे में नहीं रहता। ये भी मालूम हुआ के जायज़ ज़रूरत पर किसी भाई से क़र्ज़ ले लेना जायज़ है। और क़र्ज़ के लिए एक मुद्दत मुक़र्रर करना चाहिए। और फिर जब मुद्दत ख़त्म हो तो क़र्ज़ अदा कर देना चाहिए। और अपने अहदो पैमान को पूरा करने की कोशिश करना चाहिए। ना ये के लेने वाले देने से बे फिक्र हो जायें। और देने वाला लेने से मायूस हो जाए। "क़र्ज़ हस्ना" इसी

Scanned by CamScanner

का नाम है। के जायज़ ज़रूरत पर लो और वक़्त मुक़र्रर पर वापस कर दो। मगर आज "क़र्ज़ हस्ना" का मानी लोग शायद ये करते हैं के देने वाला माँगे तो "हंसता।"

और ये भी मालूम हुआ के देने वाले की नीयत दुरूस्त हो। तो अल्लाह तआला कोई ना कोई सबब पैदा फ़रमा देता है। और क़र्ज़ अदा हो जाता है। और ये भी मालूम हुआ के पहले लोगों की अपने अल्लाह पर नज़र थी। और उनकी नीयतें बड़ी साफ और नेक थीं। आज हमें भी उनकी तरह बनना चाहिए।

हिकायत नम्बर(821) बेनियाज़ी

एक बार हारून अलरशीद कूफे में आया। और उसने वहाँ के क़ारियों की फेहरिस्त मुरत्तब की। ताके उन सबको दो दो हज़ार दरहम दिए जायें। ये अतिया तक़सीम करने के लिए फेहरिस्त पढ़ी जा रही थी।

हज़रत दाऊद बिन नसीर अबु सुलेमान का नाम भी पढ़ा गया। मगर ये ग़ैर हाज़िर थे। हारून अलरशीद ने जब उनकी ग़ैर हाज़री की वजह दरयाफ़्त की। तो मालूम हुआ के उनको इत्तिला नहीं दी गई। हारून अलरशीद ने हुक्म दिया के ये रक़म उनकी ख़िदमत में पहुँचा दी जाए।

हज़रत दाऊद बिन नसीर बड़े ज़ाहिद और क़नाअत पैशा बुज़ुर्ग थे। और वो कभी किसी रईस की मजलिस में ना गए थे। उनकी खिदमत में दो हज़ार दरहम की रक़म पहुँचाने पर इब्ने समाक और हम्माद को मामूर किया गया। ये साहब हज़रत दाऊद की बे ऐतनाई से वाक़िफ थे। उन्हें खदशा पैदा हुआ के शायद वो ये अतिया क़बूल ना करें। इसलिए दोनों ने सलाह की के नादार शख़्स पर ज़ोर व जवाहर की कसरत बड़ा असर करती है। लिहाज़ा ये रक़म थेली में पेश करने की बजाए उनके सामने बखैर दी जाए।

चुनाँचे इन हज़रात ने दाऊद की खिदमत में पहुँच कर थेली उलट दी। और उनके सामने दरहम बखैर दिए। ताके आँख से देखने का दिल पर भी असर पड़े और ये नादाद बुज़ुर्ग उनको क़बूल कर लें।

हज़रत दाऊद फ़ौरन समझ गए। और फ़रमाया।

"ये चालें तो बच्चों के साथ खेली जाती हैं। और मैं बच्चा नहीं हूँ। अफसोस के मैं ये रक़म लेने से मअज़ूर हूँ।"

ये कहकर वो रक़म वापस कर दी। (याद माज़ी, सफ़ा 57)

सबक़:- अल्लाह वाले दुनयवी माल से बड़े बेनियाज़ होते हैं। और दरहम व दीनार को देखकर खुश होना बच्चों का काम समझते हैं। और ये भी मालूम

Scanned by CamScanner

हुआ के पहले ज़माने के बादशाह उल्मा व सुलहा और बुज़र्गों से बड़ी अक़ीदत रखते थे। और अपना रुपया अच्छे लोगों में तक़सीम करने के आदी थे।

हिकायत नम्बर(822) क़सतात

गवरनर मिस्र हज़रत उमर बिन अलआस रज़ी अल्लाहो अन्ह को जब इसकंद्रिया की फतह की ख़बर पहुँची उन्होंने इसकंद्रिया जाने की तैयारी की। तो ज़रूरी सामान जमा करते हुए आपने अपना खैमा भी उखाड़ने का हुक्म दिया। सिपाही खैमा उखाड़ रहे थे के हज़रत उमरो बिन अलआस की नज़र ख़ैमे के अन्दर एक घोंसले पर पड़ी। जो एक कबूतर का आशयाना था। आपकी नज़र जब इस पर पड़ी तो आपने सिपाहियों को खैमा उखाड़ने से रोक दिया। और फ़रमाया के इस ख़ैमा को ना गिराओ। ताके हमारे मेहमान को तकलीफ ना हो।

चुनाँचे सिर्फ एक कबूतर के आराम व आसायश की ख़ातिर उसे बेघर ना करने के लिए इस ख़ैमे को वहीं छोड़ दिया गया। और फिर हज़रत उमरो बिन अलआस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने वापसी पर उसी जगह शहर तामीर करने का हुक्म दिया। जिस का नाम इस कबूतर के इस ख़ैमे की निसबत से "क़सतात" मश्हूर हो गया। क़सतात अरबी ज़बान में ख़ैमे को कहते हैं। ये शहर क़सतात आज तक मुसलमानों के हुस्ने अख़लाक़ की गवाही दे रहा है। (तारीख़े इस्लाम, सफ़ा 149)

सबक़:- मुसलमानों का हुस्ने अखलाक़ इतना बुलंद व बाला रहा है। के परिंदे भी उनके हाथों मामून थे। फिर अगर आज कल कोई मुसलमान अपने भाई पर ही ज़ुल्मो सितम करने पर आमादा होने लगे। तो कितनी बुरी बात है। पस हमें चाहिए के मुसलमान के हाथों कोई मुसलमान परेशान ना हो।

हिकायत नम्बर(823) तवाज़ौ

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाहो अन्ह एक रात रिजा बिन हयात से गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे। दफअतन चिराग़ झिलमिलाने लगा। उस वक़्त क़रीब ही एक मुलाज़िम सो रहा था। रिजा ने कहा। उसको जगा दें। आपने फ़रमाया। नहीं सोया रहने दो। मैं खुद उठकर चिराग़ ठीक करता हूँ। रिजा ने कहा। मैं ठीक कर दूंगा। आपने फ़रमाया। मेहमान से काम लेना मुरव्वत के खिलाफ़ है।

चुनाँचे आप चादर रखकर खुद ही उठे। बर्तन से ज़ैतून का तेल

Scanned by CamScanner

निकाला। और चिराग़ में डाला। उसे ठीक करके लौटे। तो फ़रमाया, भाई घर के काम काज से अगर कोई घबराए या अपनी बे इज़्ज़ती समझे तो समझो वो बहुत बुरा आदमी है। जब मैं उठा था। तब भी उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ था। जब लौटा हूँ। तब भी उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ही हूँ। (याद माज़ी, सफ़ा 93)

सबक़:- सच्चे मुसलमान चाहे कितने बड़े ओहदे पर फायज़ हो जायें। तवाज़ो का दामन नहीं छोड़ते। और अपने मातहत अफ़्राद को भी इंसान ही समझते हैं। और उन पर कभी ज़ियादती नहीं करते। और उनकी राहत व असायश का हर वक़्त खयाल रखते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अपना काम आप कर लेना हमारे बुज़ुर्गों का शीवा था। ये नहीं के हर काम के लिए अलग अलग नौकर रखे जायें। और अपने घर का काम खुद करने में ऐब समझा जाए। खुद हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपना काम आप कर लिया करते थे। और बुज़ुर्गों के पेशे नज़र यही असवा-ए-हस्ना है।

हिकायत नम्बर(824) रोना

सलीम बिन मनसूर रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैंने ख़्वाब में अपने मरहूम वालिद हज़रत मनसूर बिन अम्मार रहमत-उल्लाह अलेह को देखा। और पूछा।

अब्बा जान! आपके साथ अल्लाह तआला ने कैसा सलूक फ़रमाया? तो उन्होंने फ़रमाया। बेटा! खुदा ने मुझे अपने सामने बुला कर फ़रमाया। ऐ मनसूर! जानते हो, मैंने तुम्हारी मग़फिरत क्यों फ़रमाई? मैंने अर्ज़ किया। नहीं या अल्लाह! मैं नहीं जानता। फ़रमाया। एक रोज़ मजलिसे वअज़ में तुम ने ऐसा वअज़ सुनाया। के उस मजलिस में मेरा एक ऐसा गुनहगार बन्दा भी था। जो उम्र भर मेरे ख़ौफ से कभी ना रोया था। उस रोज़ तुम्हारा वअज़ सुनकर मेरे ख़ौफ से वो भी रोने लगा। पस उसके रोने से मेरी रहमत जोश में आई। और मैंने उसे और उसके सदक़े में सारी मजलिस को भी और तुझे भी बख़्श दिया। (शरह अलसदूर-उल-इमाम सयूती, सफ़ा 118)

सबक़:- अल्लाह के डर से रोना बड़ी अच्छी बात हैं उससे गुनाह माफ हो जाते हैं। और ये भी मालूम हुआ के बख़्शे हुओं के सदक़े में दूसरे गुनहगार भी बख़्शे जाते हैं। इसलिए अल्लाह वालों की मेहफिल में ज़रूर बैठना चाहिए। ताके किसी अल्लाह के मग़फ़ूर बन्दे के तुफैल हमारा काम भी बन जाए।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(825) असतग़फार

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमत-उल्लाह के साहबज़ादे ने ख़्वाब में अपने मरहूम वालिदे माजिद को देखा। और पूछा, अब्बा जान! आपने कौन सा अमल सब आमाल से अफ़ज़ल पाया? तो उन्होंने जवाब दिया। बेटा! अल्लाह से डर कर अपने गुनाहों की माफी चाहते रहना। (शरह अलसदूर, सफ़ा 120)

सबक़:- अल्लाह से डरते रहना और अपने गुनाहों की माफी माँगते रहना चाहिए।

हिकायत नम्बर(826) सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अलसालेह रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैंने एक मोहद्दिस को ख़्वाब में देखा। और उनसे पूछा। खुदा ने आपके साथ क्या सलूक किया है? तो उन्होंने फ़रमाया। खुदा ने मेरी मग़फिरत फ़रमा दी है। मैंने पूछा। किस बात के सदक़े में? तो फ़रमाया। मैं अपनी तहरीरों में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के नाम के साथ "सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम" लिखता रहा। उसके सदक़े में अल्लाह ने मेरी मग़फिरत फ़रमा दी है। (शरह अलसदूर, सफ़ा 120)

सबक़:- मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का नाम नामी सुनकर या लिखकर जो शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम पर दुरूद शरीफ पढ़े और लिखेगा वो अल्लाह तआला की मग़फिरत व रहमत का हक़दार होगा। और ये भी मालूम हुआ के जो शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का नाम नामी लिखकर "सल्लअम" या "स्वाद" लिखता है और पूरा दुरूद शरीफ नहीं लिखता। वो गोया अपनी मग़फिरत भी पूरी नहीं चाहता।

हिकायत नम्बर(827) मोहब्बत औलिया

हज़रत क़ासिम बिन मुनबह रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैंने ख़्वाब में हज़रत बशर हाफी अलेह अर्रहमा को देखा और पूछा। अल्लाह तआला ने आपसे क्या सलूक फ़रमाया? तो फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुझ से फ़रमाया। ऐ बशर! मैंने तुझे बख़्श दिया। और जो लोग तेरे जनाज़े में शरीक हुए। उन्हें भी बख़्श दिया। मैंने अर्ज़ किया। इलाही! और हर उस शख़्स को भी बख़्श दे जिसको मुझ से मोहब्बत है। खुदा ने फ़रमाया *वबिकुल्ली मिन अहब्बाका* और क़यामत तक के हर उस शख़्स को भी बख़्श दिया। जिसे तुम से मोहब्बत है। (शरह अलसदूर, सफ़ा 120)

Scanned by CamScanner

सबक़:- अल्लाह वालों की मोहब्बत से आदमी बख़्शा जाता है। इसलिए उन पाक लोगों से मोहब्बत रखना चाहिए। और उनके बुग्ज़ व हसद से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(828) ईसाले सवाब

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अलसालेह रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं, अबु नवास को ख़्वाब में देखा गया। और वो बहुत अच्छी हालत में था। उससे पूछा गया के अलह तआला ने तुम से क्या सलूक फ़रमाया? तो कहने लगा। के मैं था तो गुनहगार। मगर हमारे क़ब्रिस्तान में एक रात कोई अल्लाह का मक़्बूल आया। और उसने अपनी चादर बिछा कर दो रकअत नफिल पढ़े। और दोनों रकअत में "कुल हुवल्लाहू अहद" एक हज़ार मर्तबा पढ़कर उन दो नफिलों का सवाब क़ब्रिस्तान वालों को बख़्शा। पस उस अल्लाह के मक़्बूल के इस ईसाले सवाब से अल्लाह तआला ने सब क़ब्रिस्तान वालों को बख़्श दिया। और मैं भी बख़्शा गया। (शरह अलसदूर, सफ़ा 120)

सबक़:- मालूम हुआ के कुछ पढ़कर या कोई दूसरा नेक अमल करके मसलन कुछ पका कर मसाकीन को खिला के उसका सवाब मईयत को बख़्शा जाए। तो मईयत को उससे फायदा पहुँचता है। इसलिए अमवात के लिए ज़रूर कुछ पका कर या पढ़कर उसका ईसाले सवाब करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(829) अदाऐ क़र्ज़

हज़रत मैमून कुर्दी अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं। मैंने हज़रत उरवत बिन बज़ार रहमत-उल्लाह अलेह को उनके विसाल के बाद दूसरे दिन ख़्वाब में देखा। उन्होंने मुझ से फ़रमाया। के फलाँ शख़्स जो लोगों को पानी पिलाता है उसका एक दरहम मेरे ज़िम्मे है। मेरे घर के फलाँ ताक़ में मेरा एक दरहम रखा है। अज़राहे करम आप उस ताक़ से वो दरहम लेकर उस पानी पिलाने वाले को दे दें। ताके मैं क़र्ज़ से सबुकदोश हो जाऊँ। हज़रत मैमून फ़रमाते हैं। मैं जब ख़्वाब से बैदार हुआ। तो उस शख़्स को बुलाया। और उससे पूछा के हज़रत उरवत बिन बज़ार को क्या तुम्हारा कुछ देना था? उसने बताया। के हाँ एक दरहम मेरा उनके ज़िम्मे है।

फरमाते हैं। फिर मैं हज़रत उरवा के घर आया। और उनके बताऐ हुए ताक़ को देखा। तो वहाँ एक दरहम रखा था। चुनाँचे मैंने वो उठाया। और उस पानी पिलाने वाले को दे दिया। (शरह अलसदूर, सफ़ा 116)

Scanned by CamScanner

सबक़: अदाऐ क़र्ज़ बहुत ज़रूरी अम्र है। और अल्लाह वाले अपना क़र्ज़ विसाल के बाद अदा कर देते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले अपने विसाल के बाद बाख़बर रहते हैं। और इस दुनिया में रहने वालों को फायदा पहुँचाते हैं।

हिकायत नम्बर(830) सलाम

हज़रत अब्दुल आला रहमत-उल्लाह अलेह हज़रत इब्ने अबी बिलाल रहमत-उल्लाह अलेह की बीमारी का सुनकर उनकी अयादत को गए। और उनकी नाज़ुक़ हालत देखकर कहने लगे। ऐ इब्ने अबी बिलाल! हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से मेरा सलाम अर्ज़ करना और अगर मुमकिन हो तो मुझे मतला करना के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से मेरा सलाम अर्ज़ कर दिया है। या नहीं?

चुनाँचे हज़रत इब्ने अबी बिलाल का विसाल हो गया। और तीन दिन के बाद इब्ने अबी बिलाल अपनी बीवी को ख़्वाब में मिले। और फ़रमाया अब्दुल आला को जानती हो? वो बोलीं, नहीं! फ़रमाया। उनका पता लेकर मेरा पैग़ाम उन्हें पहुँचा दो। के मैंने आपके सलाम हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तक पहुँचा दिया है। और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने व अलेकुम अस्सलाम फ़रमाया है। (शरह अलसदूर, सफ़ा 115)

सबक़:- मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम आज भी अपनी उम्मत का सलाम क़बूल फ़रमाते हैं। और जवाब भी देते हैं।

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले विसाल के बाद भी ज़िन्दा होते हैं।

हिकायत नम्बर(831) चार बातें

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह से किसी ने पूछा। हुज़ूर! आपने सारी उम्र किस तरह बसर की? आपने फ़रमाया। चार बातों में।

1- एक तो ये के मैं ने यक़ीन के साथ जान लिया के अल्लाह तआला की नज़र से मैं एक लम्हा भी ग़ायब नहीं रह सकता। पस इस यक़ीन के बाद मुझे शर्म व हया आने लगी। के उसके सामने मैं उसकी कोई नाफरमानी करूं।

2- दूसरे ये के मैंने यक़ीन के साथ जान लिया के मेरी क़िस्मत में जो रिज़्क़ है उसका ज़िम्मा खुदा ने ले लिया है। और वो बहरहाल मुझे पहुँचकर रहेगा। पस मैं अपने रिज़्क़ की तरफ़ से बे फिक्र हो गया।

3- तीसरे ये के मैंने यक़ीन के साथ जान लिया के जो फ़रायज़ मेरे ज़िम्मे

Scanned by CamScanner

लगाए गए हैं वो बजुज़ मेरे दूसरा कोई और अदा नहीं कर सकता। पस मैं इन फ़रायज़ की अदायगी की तरफ़ हमा तन मशग़ूल हो गया।

4- चौथे ये के मैंने यक़ीन के साथ जान लिया। के एक रोज़ मुझे ज़रूर मरना है। और दूसरी दुनिया में बहरहाल जाना है। पस मैं दूसरी दुनिया को अपने लिए अच्छा बनाने की कोशिश में लग गया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 168)

सबक़:- हर शख़्स को ये चार बातें पेशे नज़र रखना चाहियें। ताके इंसान गुनाहों से बच कर और अपने फ़रायज़ अदा करके अपनी आक़बत को संवार सके।

हिकायत नम्बर(832) ख़्वाहिशे नफ़्स

हज़रत अबु त्राब नख़्शी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। के मैं एक रोज़ सफर में था। तो मेरे नफ़्स ने ये ख़्वाहिश की के आज अगर कहीं से रोटी के साथ तला हुआ अंडा मिले। तो लुत्फ आ जाए। फ़रमाते हैं। थोड़ी देर के बाद मैं एक गाँव में पहुँचा। तो एक शख़्स दौड़ता हुआ मेरे पास आया। और उसने मुझे पकड़ लिया। और शौर मचाने लगा। के ये भी चोरों के साथ था। लोग जमा हो गए और मुझे दुर्रे मारने लगे। सत्तर दुर्रे मार चुके तो एक शख़्स ने मुझे पहचान लिया। और उसने कहा। ऐ नादानो! ये तो हज़रत अबु त्राब नख़्शी हैं।

चुनाँचे वो सब बड़े शर्मिंदा हुए। और मुझ से माफी माँगने लगे। फिर एक शख़्स मुझे बड़ी इज़्ज़त के साथ अपने घर ले गया। और मेरे लिए खाना ले आया। मैंने देखा। के खाने में रोटी और तला हुआ अंडा भी है। मैंने अपने नफ़्स को मुखातिब करके कहा।

"ले सत्तर दुर्रे खा लेने के बाद अब रोटी और तला हुआ अंडा खा ले"
(रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 168)

सबक़:- नफ़्स इंसान का दुश्मन है। और उसकी ख़्वाहिश पर चलने से इंसान को ज़लील होना पड़ता है। जो लोग नफ़्स पर क़ाबू पाकर ख़्वाहिशाते नफ़्स से बाज़ रहते हैं। वो कामयाब रहते हैं।

हिकायत नम्बर(833) दोनों जहाँ

एक बुज़र्ग फ़रमाते हैं। मेरे सामने दुनिया अपनी ज़ाहिरी ज़ैब व ज़ीनत और अपनी शैहवात के साथ ज़ाहिर हुई। तो मैंने उससे मुंह फैर लिया। फिर मेरे सामने आख़िरत अपने हूरो क़सूर और ज़ीनत व बर्कत के साथ ज़ाहिर

Scanned by CamScanner

हुई। तो मैंने उससे भी मुंह फैर लिया।

इतने में हातिफ से निदा आई। तुम अगर दुनिया को क़बूल कर लेते तो हम तुम्हें बर्कात आख़िरत से महरूम कर देते। और अगर तुम आख़िरत को क़बूल कर लेते। तो हम तुम्हें अपनी ज़ात से महरूम कर देते। मगर अब सुनो! के हम तुम्हारे हैं। और दीन व दुनिया के दोनों जहाँ भी हम ने तुम्हारे कर दिए। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 168)

सबक़:- अल्लाह वालों के पेशे नज़र सिर्फ ज़ात हक़ होती है और उन्हें अपने ख़ालिक़े हक़ीक़ी से प्यार होता है। और उसके नतीजे में वो खुदा के हो जाते हैं तो सारी खुदाई उनकी हो जाती है। और उनके दोनों जहान संवर जाते हैं।

हिकायत नम्बर(834) "से" और "को"

हज़रत अहमद इब्ने ख़िज़्विया अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं मैंने ख़्वाब में रब्बे तआला का इर्शाद सुना। खुदा तआला ने फ़रमाया।

या अहमद कुल्लिन्नास यतलबूना मिनल बायज़ीद फइन्नहू यतलबनी

"ऐ अहमद! हर शख़्स मुझ "से" माँगता है। मगर बायज़ीद बसतामी मुझ "को" माँगता है।" (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 168)

सबक़:- अल्लाह वालों की नज़र में दुनिया की कोई हक़ीक़त नहीं। और वो दोनों जहानों की नअेमतों को ज़ाते हक़ के सामने कुछ नहीं समझते। और अपने मौला से सिर्फ अपने मौला ही के तालिब होते हैं।

हिकायत नम्बर(835) बदला

हज़रत इब्ने असअद याफई शाफई अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं मैं एक शहर में गया। तो पत चला के वहाँ एक बुज़ुर्ग का मज़ार है। जिसकी ज़ियारत के लिए लोग दूर दूर से आते हैं।

चुनाँचे मैं भी इस मज़ार पर गया। और फातिहा पढ़ी। और फिर लोगों से साहिबे मज़ार का हाल दरयाफ़्त किया। तो लोगों ने बताया के इस शहर में एक ग़रीब शख़्स रहता था। वो बमीार हो गया। और वफात पा गया। यहीं के एक शख़्स ने अपनी गिरह से उसके लिए कफ़न खरीदा। और उसे कफ़न पहनाया। रात को उस कफ़न पहनाने वाले ने ख़्वाब में देखा। के वही ग़रीब शख़्स अपनी क़ब्र से निकला। और एक बेहतरीन रेशमी हल्ला उसके हाथ में है। उसने वो रेशमी हल्ला उस शख़्स को दिया। और कहा। ये तुम्हारे कफ़न पहानाने का बदला है। ले लो। चुनाँचे जब वो जागा। तो वो रेशमी हल्ला

Scanned by CamScanner

उसके पास मौजूद था। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 169)

सबक़:- अल्लाह वाले बअज़ अवक़ात छुपे रहते हैं। और उनका पता नहीं चलता। इसलिए किसी को हिक़ारत की नज़र से नहीं देखना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के उन अल्लाह वालों और ग़रीबों की मदद करने वाला बड़ा अच्छा फल पाता है। और ये भी मालूम हुआ के बुज़र्गों के मज़ारात पर दुर दूर से आना इब्तदा ही से मुसलमानों का दस्तूर है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले विसाल पा जाने के बाद भी अहले दुनिया में रहने वालों की मदद फ़रमाते हैं।

हिकायत नम्बर(836) मुसाफिर मदीना

हज़रत अबु इमरान वास्ती रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। के मैं हज से फारिग़ होकर मदीना मुनव्वरह की तरफ़ रवाना हुआ। ताके सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की क़ब्र अनवर की ज़ियारत करूं। रास्ते में पानी ख़त्म हो गया। और शिद्दत प्यास से बेहद तंग हो गया। फिर चारों तरफ़ से मायूस होकर मैं एक दरख़्त के नीचे बैठ गया। अचानक मैंने देखा के एक सब्ज़ पोश घोड़े पर बैठा हुआ तशरीफ़ लाया। उसके हाथ में सब्ज़ ही रंग का पियाला था। और पियाला में पानी भी सब्ज़ ही रंग का था। उसने मुझे वो पियाला दिया। और मैंने जी भर के पानी पिया। मैंने देखा। के पियाले से पानी कुछ भी कम नहीं हुआ। सब्ज़ पोश ने मुझ से पूछा। कहाँ जा रहे हो। मैंने कहा। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम और सिद्दीक़े अक्बर और फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की बारगाह में सलाम अर्ज़ करने मदीना मुनव्वरह जा रहा हूँ। सब्ज़ पोश ने कहा। जब वहाँ पहुँचो और सलाम अर्ज़ करो। तो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम और सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्हुमा से अर्ज़ करना *रिज़वानुन युक़िरऊकुमुस्सलाम* रिज़वान जन्नत सलाम अर्ज़ करता है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 185)

सबक़:- मदीना मुनव्वरह का सफा बड़ा ही मुबारक है। और मुसाफिर मदीना के ख़ादिम रिज़वान जन्नत भी हैं। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर(स०अ०स०) के वज़ीरों सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की बहुत बड़ी शान है। और जन्नत वाले भी उन पर सलाम भेजते हैं। पस उनसे अनाद जन्नत व अहले जन्नत से अनाद है।

हिकायत नम्बर(837) अल्लाह के शेर

हज़रत सय्यदी इब्ने मसऊद रज़ी अल्लाहो अन्ह अकाबिर औलिया से हैं।

Scanned by CamScanner

आप जंगल में रहते थे। एक शख़्स ने एक बैल नज़्र माना जब वो खूब मोटा ताज़ा हो गया तो उसके लेकर हज़रत की ख़िदमत में चला। बैल ताज़ा बहुत था। रास्ते में छूट गया। हर चन्द तलाश किया मगर ना मिला। ख़ैर मायूस होकर लौट आया। एक और शख़्स के उसके पास एक बैल था। तमाम खेती बाड़ी का काम उसी से लेता था। निहायत नहीफ व लाग़िर हो गया था। लेकर हाज़िर हुआ। अर्ज़ किया। हुज़ूर! मेरे रिज़्क़ का ज़रिया यही बैल है। दुआ फ़रमाईये। ये बैल दुबला बहुत है। इसमें ताक़त आ जाए। आपके पास शेर बैठे थे। एक को इशारा फ़रमाया। वो गया। और उस बैल का शिकार किया। और कुछ खाया। वो बैल ख़त्म हो गया। ये शख़्स अपने दिल में कहने लगा। मैं अच्छी दुआ कराने आया था। के मेरा दुबला बैल भी हाथ से गया। थोड़ी देर में एक अच्छा मोटा ताज़ा बैल आया। जो उस आदमी से छूट गया था। और सामने आकर मौहिब खड़ा हो गया। फ़रमाया। उसके बदले में ये बैल ले ले। उसने ले तो लिया। लेकिन दिल में ये ख़तरा गुज़रा के ये शेर हज़रत की खिदमत में बैठे हैं। हज़रत के सामने तक तो कुछ नहीं बोलते। यहाँ से फिर मुझे और इस बैल को खा लेंगे। आपको उसके इस ख़तरे पर इत्तिला हो गई। और क्यों ना हो। जो अल्लाह को जानता है उससे कोई शै पौशीदा नहीं।

फरमाया। शेरों से डरते हो। अब उनके दिल में ये खयाल आया। के मालूम नहीं किस का बैल है। कोई पूछे तो क्या कहूंगा। खुद ही फ़रमाया तुम से कोई ना बोलेगा। और शेर को इशारा फ़रमाया। वो उनके साथ कुत्ते की तरह हो लिया। और उनकी और उनके बैल की हिफाज़त की। आबादी के क़रीब आकर वो शेर वापस चला गया। (मलफूज़ात अला हज़रत, जिल्द 4, सफ़ा 410)

सबक़:- अल्लाह वाले अल्लाह के शेर होते हैं। औरये जंगल के शेर उनके ग़ुलाम। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों पर दिलों के ख़तरात व खयालात मुनकशिफ हो जाते हैं। फिर जो उन अल्लाह वालों के भी सरदार हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ यूं लिखे और कहे के उन्हें पीठ पीछे की भी ख़बर ना थी। तो उसकी बेख़बरी और गुमराही में क्या शक हो सकता है।

हिकायत नम्बर(838) इल्म की बर्कत

एक रोज़ शैतान लईन इंसान की शक्ल बनकर एक ऐसे आबिद की राह में खड़ा हो गया जो आलिम ना था। आबिद साहब तहज्जुद की नमाज़

Scanned by CamScanner

के बाद फज्र की नमाज़ के लिए मस्जिद की तरफ़ तशरीफ़ लाए। तो रास्ते में इबलीस खड़ा था। सलाम अलेकुम व अलेकुम अस्सलाम। हज़रत! मुझे एक मसला पूछना है। आबिद साहब ने फ़रमाया। जल्द पूछो, मुझ नमाज़ को जाना है। शैतान ने अपनी जैब से एक छोटी सी शीशी निकाली। और पूछा। क्या अल्लाह तआला क़ादिर है के इन सारे आसमानों और ज़मीन को इस छोटी सी शीशी में दाख़िल कर दे। आबिद साहब ने सोचा और कहा। कहाँ आसमान और ज़मीन और कहाँ ये छोटी सी शीशी। शैतान ने कहा। बस इतना ही पूछना था। तशरीफ़ ले जाईये।

शैतान ने अपने लश्कर शयातीन से कहा। देखो इस जाहिल आबिद की मैंने राह मार दी। उसको अल्लाह की क़ुद्रत पर ही ईमान नहीं। इबादत किस काम की।

तुलू आफ़्ताब के क़रीब एक आलिम जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए। उसने कहा। अस्सलाम अलेकुम व अलेकुम अस्सलाम। मुझे एक मसला पूछना है। उन्होंने फ़रमाया। पूछो। जल्द पूछो। नमाज़ का वक़्त बहुत कम है। उसने वही सवाल किया। आलिम साहब ने फ़रमाया। मलऊन तू इबलीस मालूम होता है। अरे वो क़ादिर है के ये शीशी तो बहुत बड़ी है एक सूई के नाके के अन्दर अगर चाहे तो करोड़ों आसमान व ज़मीन दाखिल कर दे। *इन्नल्लाहू अला कुल्ली शैइन क़दीर।*

आलिम साहब की तशरीफ़ ले जाने के बाद शैतान ने अपने लश्कर से कहा। देखा ये इल्म की बर्कत है। (मलफूज़ात, जिल्द 3, सफ़ा 21)

सबक़:- इल्म बड़ी दौलत है। और बग़ैर इल्म के आबिद भी ख़तरे में रहता है। लिहाज़ा हासिल करना चाहिए। और आबिद खुद आलिम ना हो। उसे उल्मा की सोहबत व मोहब्बत पैदा करनी चाहिए। वरना जो आबिद खुद भी आलिम ना हो। और उल्मा से दूर भी रहता हो। वो शैतान के फंदे में फंस जाने के ख़तरे से दो चार समझिये। ये भी मालूम हुआ के शैतान अपना सब से बड़ा दुश्मन वाले यानी "मोलवी" को समझता है।

हिकायत नम्बर(839) दुआ में एक हाथ

हज़रत ज़ुलनून मिस्री रहमत-उल्लाह अलेह ने एक दफा दुआ में सर्दी के सबब सिर्फ एक हाथ बाहर निकाला था। इलहाम हुआ, एक हाथ उठाया। हमने इसमें रख दिया जो रखना था। दूसरा हाथ उठाता तो उसे भी भर देते। (मलफूज़ात, जिल्द 1, सफ़ा 84)

Scanned by CamScanner

सबक़:- अल्लाह से दुआ बड़े ख़लूस और एहतिमाम से माँगनी चाहिए। और इस उम्मीद पर के इस बारगाह में जो हाथ उठेगा कभी खाली ना लौटेगा।

हिकायत नम्बर(840) बुज़ुर्गों का फैज़

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह बीमार हुए तो आपका क़ारोरा एक नसरानी तबीब के पास गया। वो तबीब क़ारोरे को बग़ौर देखता रहा। फिर दफअतन कहा।

अशहदू अन लाइलाहा इल-लल्लाहू व अशहदू अन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

लोगों ने सबब पूछा। तो कहा। मैं देखता हूँ। ये क़ारोरा ऐसे शख़्स का है जिसका जिग्र इश्के इलाही ने कबाब कर दिया है।(मलफूज़ात, जिल्द, सफ़ा ७५)

सबक़:- अला हज़रत अलेह अर्रहमा ने ये हिकायत लिखकर उससे जो सबक़ हासिल होता है। उन लफ़्ज़ों में लिखा है। के अल्लाहू अक्बर! इन बुज़ुर्गों का बोल वो हिदायत करता है। जो दूसरों का क़ौल नहीं करता।"

हिकायत नम्बर(841) भेड़ और शेर

एक भेड़ बड़ी ऊँची छत पर खड़ी थी। नीचे एक शेर गुज़र रहा था। भेड़ ने उसे देखकर गालियाँ देनी शुरू कर दीं। शेर ने गालियाँ सुनीं। तो कहने लगा। तेरी क्या मजाल तू मुझे गालियाँ दे। ये तो छत मुझे गालियाँ दे रही है। यानी छत पर होने से तू बेबाक हो गई है। (मिरक़ात-उल-अदब)

सबक़:- किसी दुनयवी, ओहदे पर फायज़ होकर कोई शख़्स "मोलवी" को गालियाँ देता है। तो उसकी क्या मजाल। के वो ऐसा करे। वो तो उसका ओहदा उसे बेबाक कर देता है।

हिकायत नम्बर(842) एक नेक बीबी

एक शख़्स एक क़ब्रिस्तान में गया। और एक क़ब्र के पास बैठ गया। और थोड़ी देर में ग़ाफिल हो गया। ख़्वाब में देखता है के एक बी बी इस क़ब्र में से फ़रमाती हैं।

ऐ खुदा के बन्दे! इस बला को मेरे पास से दूर कर जो थोड़ी देर में आने वाली है। उसकी फौरन आँख खुल गई। देखा के एक क़ब्र वहीं खुद रही है। और सामने से एक जनाज़ा जो किसी रईस का था। चला आ रहा है। उसने सब को मना किया। के ये जगह ठीक नहीं है। खराब है। ऐसी है, वैसी है।

Scanned by CamScanner

ग़र्ज़ वो लोग बाज़ रहे और दूसरी जगह इस मईयत को ले गए। शब को उस शख़्स ने ख़्वाब में देखा के वो बी बी फ़रमाती हैं के खुदा तुझे जज़ाऐ ख़ैर दे। के तूने आग को मेरे पास से दूर किया। (मलफ़ूज़ात अला हज़रत, सफ़ा 83, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे इन्तिक़ाल के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं। और इइस आलम के हालात से बाख़बर और ये भी जानते हैं। के किसी मरने वाले से क़ब्र में क्या होने वाला है।

हिकायत नम्बर(843) एक बुज़ुर्ग

एक बुज़ुर्ग का इन्तिक़ाल हो गया। उनकी साहबज़ादी क़ब्र पर रोज़ाना हाज़िर होतीं। और तिलावत क़ुरआने अज़ीम किया करतीं। कुछ मुद्दत गुज़रने के बाद वो जोश जाता रहा। एक रोज़ हाज़िर ना हुईं। शब को ख़्वाब में तशरीफ़ लाए। फ़रमाया। ऐसा ना करो। आओ और मेरे मवाजहा में खड़ी हो जाओ। यहाँ तक क तुम्हें जी भर के देख लूं। फिर मेरे लिए दुआऐ रहमत करो और फिर चली जाओ। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 89, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह वाले अपने इन्तिक़ाल के बाद भी देखते और सुनते हैं और अपने मुतअल्लिक़ीन के हालात से बाख़बर रहते हैं और ये भी मालूम हुआ के क़ब्र पर फातिहा ख़्वानी के लिए जाना साहिबे क़ब्र के लिए मौजिब राहत होता है। और जो नहीं जाते। वो अपने मरने वाले के लिए मोजिब कल्फत बनते हैं।

हिकायत नम्बर(844) हक़ गो

एक साहब विलायत ने हज़रत मेहबूबे इलाही क़ुद्स अल्लाह सरह-उल-अज़ीज़ की बारगाह में हाज़री का मंज़िल दूरदराज़ से क़सद फ़रमाया। राह में जिससे हज़रत मेहबूबे इलाही साहब का हाल दरयाफ़्त फ़रमाते लोग तारीफ ही करते। उन्होंने अपने दिल में कहा। मेरी मेहनत ज़ाये हुई। के ये अगर हक़ गो होते लोग ज़रूर उनके बदगो भी होते। जब देहली क़रीब रही। उन्होंने लोगों से पूछा। अब मज़म्मते सुनीं। कोई कहता वो देहली का मक्कार है। कोई कुछ कहता। उन्होंने कहा। *अलहम्दू लिल्लाह* मेरी वसूल हुई। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 50, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे हक़ गो होते हैं और उनकी हक़ गोई की वजह से कई मुखालफीन हक़ उनकी बदगोई करने लगते हैं। पस कोई पीर या आलिम जिस सब अच्छा कहें और कोई भी उसके खिलाफ ना हो।

Scanned by CamScanner

समझ लीजिए के वो हक़ बो नहीं। बल्के उसका नानक शाही मसलक है जो ये कहता है के मेरे लिए सारे अच्छे हैं। मैं किसी को बुरा नहीं कहता।

हिकायत नम्बर(845) कुश्ती

हज़रत बहा-उल-हक़ वालदैन ख़्वाजा नक़्शबंदी रज़ी अल्लाहो अन्ह बुखारा में हज़रत अमीर कलाल रज़ी अल्लाह अन्ह का शौहरा सुनकर खिदमत में हाज़िर हुए। आपको देखा। के मकान के अन्दर ख़ास लोगों का मजमा है। अखाड़े में कुश्ती हो रही है। हज़रत भी तशरीफ़ फ़रमा हैं। और कुश्ती में शरीक हैं। हज़रत ख़्वाजा नक़्शबंद आलिम जलील पाबंद शरीअत। उनके क़ल्ब ने कुछ पसंद ना किया। हालाँके के कोई नाजायज़ बात ना थी। ख़तरा आते ही ग़नूदगी तारी हो गई। देखा के मारका-ए-हश्र बरपा है। उनके और जन्नत के दरमियान एक दलदल का दरया हायल है। ये उसके पास जाना च्याहते थे। दरया में उतरते ज़ोर करते। जितना ज़ोर करते धंसते जाते। यहां तक के बग़लों तक धंस गए। अब निहायत परेशान के क्या जाए। इतने में देखा के हज़रत अमीर कलाल तशरीफ़ लाए। और एक हाथ से दरया के उस पार कर दिया। आपकी आँख खुल गई। क़ब्ल उसके के ये कुछ अर्ज़ करें। हज़रत अमीर कलाल ने फ़रमाया। हम अगर कुश्ती ना लड़ें तो ये ताक़त कहाँ से आए। ये सुनकर फौरन क़दमों पर गिर पड़े। और बैत की। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 30,जिल्द 4)

सबक़:- अल्लाह वाले मुश्किल के वक़्त अपने ग़ुलामों के काम आते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के वली दिली ख़तरात पर आगाह हो जाते हैं। और ये भी मालूम हुआ के कुश्ती लड़ने के लिए शर्त ये है के सतर ना खुले। और नमाज़ की पाबंदी भी मलहूज़ रहे जैसा के आला हज़रत ने इस हिकायत की इब्तिदा में तशरीह फ़रमाई है।

हिकायत नम्बर(846) जेल खाना

हज़रत इमाम दाऊद ताई रहमत-उल्लाह तआला अलेह जो हज़रत इमाम अबु हनीफा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के शार्गिदों में से थे। बड़े ज़ाहिद और पारसा थे। उनका जब इन्तिक़ाल हुआ। तो बअज़ सालेहीन ने ख़्वाब में देखा के दाऊद ताई निहायत खुशी के साथ हश्शाश बश्शाश दौड़ते हुए जा रहे हैं। उन्होंने आपको कभी इस हाल में ना देखा था। पूछा कैसा है? क्यों दौड़े जा रहे हो। फ़रमाया। अभी जेलखाने से छूटा हूँ। ख़बर पाई के वही वक़्त

Scanned by CamScanner

इन्तिक़ाल का था। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 31, जिल्द 4)

सबक़:- ये दुनिया एक जेलखाना है। जैसा के हदीस में वारिद है के *अद्दुनिया सजनिल मोमिन व जन्नातिल काफिर।* दुनिया मोमिन के लिए जेखाना है। और काफिर के लिए बाग़। पस ये अल्लाह वाले दुयिा से रूख़्सत हो तो समझते हैं के जेलखाने से रिहाई पाई। इसीलिए शायर ने लिखा है....

कौन कहता है के मोमिन मर गए
क़ैद से छूटे वो अपने घर गए

हिकायत नम्बर(847) तलब सादिक़

एक साहब सब सज्जादों में घुमे हुए। मुजाहिदे रियाज़तें किए हुए। हज़रत शाह आले मोहम्मद रज़ी अल्लाहो अन्ह मारहिरा शरीफ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। और शिकायत की के इतने बरसों से तलब में फिरता हूँ। मक़सूद हासिल नहीं होता। फ़रमाया ठहरो। एक हुजरे में ठहराया। ख़ादिम को फ़रमाया। उन्हें मछली खाने को दी जाए। और पानी का एक क़तरा ना दिया जाए। और बाद खाना खाने के फौरन हुजरा बाहर से बन्द कर दिया जाए। ख़ादिम ने मछली दी। जब वो खा चुके, फौरन ज़ंजीर बन्द कर दी। अब ये अन्दर से चिल्लाते हैं। चीख़ते हैं के मुझे पानी दिया जाए। मगर कौन सुनता है। सुबह को हुज़ूर नमाज़ के वास्ते तशरीफ़ लाए। ख़ादिम ने हुजरा खोला। खोलते ही पानी पर जा गिरे। और जिस क़द्र पिया गया। खूब पिया। नमाज़ के बाद हज़रत ने फ़रमाया। ख़ैरियत है अर्ज़ किया। हुज़ूर रात तो ख़ादिमों ने मार ही डाला था के मुझे ऐसी गर्मी में अव्वल तो मछली खाने को दी। दूसरे एक क़तरा पानी का ना दिया। और प्यासा ही हुजरे में बन्द कर दिया। फ़रमया फिर रात कैसी गुज़री। अर्ज़ किया। जब तक जागता रहा। पानी का खयाल। जब सोया सिवाये पानी के और कुछ ना देखा। फ़रमाया तलब सादिक़ इसका नाम है। कभी ऐसी तलब भी की थी जिसकी शिकायत करते हो। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 34, जिल्द 4)

सबक़:- तलबे सादिक़ हो। तो आदमी कामयाब हो जाता है। वरना शिकायत करना के अजी हमें तो कोई रहबर मिला ही नहीं महेज़ नफ़्स का धोका है।

हिकायत नम्बर(848) नूरानी ख़्वाब

औलिया इक्राम में से अल्लाह के एक वली बीमार हो गए। वो खुद फ़रमाते हैं के मेरा मर्ज़ जब शिद्दत इख़्तियार कर गया और मरे मुतअल्लिक़ीन

Scanned by CamScanner

व मुतवस्सलीन मेरी सेहत से मायूस हो गए तो मैंने जुमअे की रात को ख़्वाब में देखा। के एक नूरानी वजूद मेरे पास तशरीफ़ लाया। और मेरे सिरहाने बैठ गया। और फिर उसके बाद और भी बहुत से लोग मेरे घर दाखिल हुए। वो लोग घर में दाखिल होते वक़्त परिंदो की मिस्ल थे। और जब बैठ गए तो इंसानों की शक्ल में हो गए इसी तरह कई लोग अन्दर आते रहे और मैं देखता रहा। जब सब लोग अन्दर आ गए तो इस नूरानी वजूद मसऊद ने अपना सर मुबारक उठाया। और फ़रमाया। मैं इस शहर में तीन आदमियों की अयादत के लिए आया हूँ। एक तो उसकी अयादत के लिए इशारा मेरी तरफ़ फ़रमाया। दूसरी "सालेह ख़लक़ानी" के लिए मैं हज़रत सालेह ख़लक़ानी के नाम से पहले वाकिफ ना था। और तीसरे एक औरत के लिए फ़रमाया। और इस औरत का नाम ना लिया। फिर अपना हाथ मुबारक मेरी पैशानी पर रखकर फ़रमाया।

"बिस्मिल्लाही रब्बिलाहु हसबियल्लाहु तवक्कल्तू अलल्लाही ईतसम्तू बिल्लाही ला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह"

और फिर मुझ से फ़रमाया। ये दुआ अक्सर पढ़ते रहा करो।

इसलिए के इसमें हर मर्ज़ की शिफा और हर मुश्किल का हल मौजूद है। खुदा तआला ने जब अपना अर्श उठाने का *हमलत-उल-अर्श* फरिश्तों को हुक्म दिया। तो सबसे पहले उन्हें फरिश्तों ने ये दुआ पढ़ी थी। और आज तक यही दुआ पढ़ रहे हैं। और क़यामत तक यही पढ़ते रहेंगे। फिर इस नूरानी वजूद मसऊद की दायें जानिब जो साहब बैठे थे। वो बोले।

"या रसूल अल्लाह! अगर ये दुआ दुश्मन के मुक़ाबले में पढ़ी जाए तो? उन्होंने जवाब दिया। तो दुश्मन पर फतह हासिल होगी।"

अब मैं समझा के ये तो खुद हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम हैं। और दायें जानिब वाले साहब जिन्होंने ये सवाल किया। मैंने समझा। शायद ये हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने मुझे फ़रमाया। ये मेरे चचा हज़रत हम्ज़ा हैं। फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने अपनी बायीं जानिब इशारा फ़रमा कर फ़रमाया। ये सब शौहदा हैं। और फिर अपने पीछे इशारा फ़रमा कर फ़रमाया। ये सब औलिया हैं। फिर आप तशरीफ़ ले गए। और जब मैं जागा तो बिलकुल तनदुरूस्त था। जैसे के कभी बीमार ही नहीं हुआ। (रोज़-उल-रियाहीन-उल-इमाम अब्दुल्लाह इब्ने असअद याफई मतबुआ मिस्र, सफ़ा 188)

सबक़:- औलिया इक्राम की बहुत बड़ी शान है। इतनी बड़ी के उनमें

Scanned by CamScanner

से कोई बीमार पड़ जाए तो उनकी अयादत के लिए खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाते हैं। और विसाल पा जाने के बाद ये खुश नसीब हज़रात सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह वसल्लम के साथ रहते हैं। और ये भी मालूम हुआ के ला इलाज मरीज़ पर भी अगर हुज़ूर का करम हो जाए तो उसे शिफा मिल जाती है। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के जुमला हालात से आज भी बाख़बर हैं। और ये भी मालूम हुआ के जो दुआ हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाई है। ये दुआ बड़ी मुफीद है। और मर्ज़ व मुश्किल में पढ़ने से मर्ज़ दूर और मुश्किल हल हो जाती है। और दुश्मन के मुक़ाबले में पढ़ने से दुश्मन पर फतह हासिल हो जाती है। लिहाज़ा ये दुआ मुसलमानों को याद कर लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर(849) खुदा का मेहमान

हज़रत अबु अलफतह रहमत-उल्लाह अलेह एक बार हज के लिए घर से निकले तो रास्ते में एक नो उम्र लड़का पा पियादा चलते देखा। हज़रत अबु अलफहत ने उससे पूछा। ऐ लड़के! कहाँ का इरादा है। उसने कहा। बैत-उल्लाह शरीफ का। अबु अलफतह ने फ़रमाया। तू कम उम्र है। और रास्ता बड़ा तवील है। क़दम तेरे छोटे और बैत-उल्लाह शरीफ यहाँ से बहुत दूर है। वो बोला। जनाब! क़दम उठाना मेरा काम और मंज़िल तक पहुँचाना उसका काम है। जिसने यूं फ़रमाया है।

वल्लज़ीना जाहिदू फीना लानहदीनाहुम सुबलना

हज़रत अबु अलफतह ने कहा। तुम्हारे पास खाने पीने का सामान भी नहीं है। वो बोला। या शेख! सच बताईये अगर कोई भाई आपको महमानी के तौर पर बुलाए तो क्या या लायक़ है के आप खाना अपने साथ ले जायें। वो बोले नहीं। उसने कहा। तो मेरे मौला जिल्ले शानाहू ने मुझे अपने घर बुलाया है। मेरे खाना पीना उसके ज़िम्मे है। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 140)

सबक:- जिनके दिलों में अल्लाह तआला की लगन है। वो हर फिक्रो अंदेशे से बेनियाज़ रह कर अपने मौला की याद में मगन रहते हैं और अल्लाह तआला अपने मेहबूबों की मदद फ़रमाता है। और उनके लिए असबाब पैदा फ़रमा देता है।

हिकायत नम्बर(850) तारीफ

मक्का मोअज़्ज़मा में एक शख़्स एक शेख की मजलिस में उनकी तारीफ कर रहे थे और वो शेख़ खुश हो रहे थे। रावी को शुबह हुआ के शेख होकर

Scanned by CamScanner

अपनी तारीफ से खुश होते हैं। उन्हें मकशूफ हुआ। और फी अलबदीहा फ़रमाया के भाई। अपने सानअे की तारीफ से खुश हो रहा हूँ। ये तारीफ बिलकुल ऐसी है जैसे कोई हर्फ की मदह करे। गो ज़ाहिर में वो हर्फ की मदह कर रहा है। लेकिन फी अलहक़ीक़त वो कातिब की मदह है। के क्या उम्दा कातिब है। जिसने ऐसा हर्फ बनाया। ऐसा ही ये शख़्स सानअे हक़ीक़ी की तारीफ कर रहा है। के क्या ही जामअे कमालात ज़ात है। जिसने ऐसे शख़्स को पैदा किया।

रावी कहते हैं के मुझ को फिर ये शुबह हुआ। के जब ख़ालिक़ हर शै का खुदा तआला है। तो मेरे दिल में जो ये वसवसा व ऐत्राज़ पैदा हुआ था। इस वसवसे को भी उसी ने पैदा किया है। फिर ये उसको क्यों दफे कर रहे हैं। उनको ये भी मुनकशिफ हो गया। फ़रमाया। शरवर को अल्लाह तआला की तरफ़ से मनसूब करना बे अदबी है। इसका नतीजा ये है के गोया हम बिलकुल बरी-उज़-ज़िम्मा हैं। हम से कुछ होता ही नहीं। मुज़तर हैं। फाईल मुख़्तार नहीं। शरवर को अपने नफ़्स की जानिब मनसूब करना चाहिए।

(देवबंदी हज़रात के हकीम-उल-उम्मत। मोलवी अशरफ़ अली साहब के मलफूज़ात हफ़्त अख़्तर, सफ़ा 39)

सबक़:- अल्लाह वाले दूसरों के दिल की बात भी जान लेते हैं। फिर अगर कोई शख़्स उन सब अल्लाह वालों के आक़ा व मौला सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ यूं लिख दे के हुज़ूर को तो दीवार के पीछे का भी इल्म ना था तो ऐसा लिखने वाला कितना बड़ा बे ख़बर और जाहिल है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के नेक बन्दों की जितनी भी तारीफ की जाए। ये ग़ैर-उल्लाह की तारीफ नहीं होती। बल्के ये अल्लाह ही की तारीफ होती है। क्योंके उन साहिबे कमाल मक़्बूल बन्दों का ख़ालिक़ वही अल्लाह तआला है।

हिकायत नम्बर(851) लाइलाहा इल-लल्लाह

हज़रत मही-उद्दीन इब्ने अरबी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मुझे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ये हदीसे पाक पहुँची के जो शख़्स सत्तर हज़ार दफा लाइलाहा इल-लल्लाह पढ़े। खुदा तआला उसके गुनाह माफ फ़रमा देता है। चुनाँचे मैंने ये कलमा इतनी बार पढ़ लिया। और एक रोज़ मैं एक दावत में गया जहाँ एक साहब कशफ जवान भी मौजूद था। उस नोजवान के मुकाशफात का बड़ा चर्चा था।

चुनाँचे खाना खाते हुए वही नोजवान रोने लगा। मैंने उससे रोने की वजह पूछी तो उसने बताया। के मैंने अपने माँ बाप को क़ब्र में देखा है। के उन्हें

Scanned by CamScanner

अज़ाब हो रहा है। उनको अज़ाब में देखकर रोने लगा हूँ। हज़रत मही-उद्दीन इब्ने अरबी फ़रमाते हैं के मैंने उसी वक़्त दिल ही दिल में अपने पढ़े हुए सत्तर हज़ार बार कलमा शरीफ को उसके माँ बाप को बख़्श दिया। मेरे बख़्शते ही वो नोजवान हंसने लगा। मैंने अब हंसने की वजह पूछी। तो कहने लगा के मेरे माँ बाप से अज़ाब टल गया है। और अब वो अज़ाब से मेहफूज़ हैं। हज़रत मही-उद्दीन इब्ने अरबी फ़रमाते हैं के हदीस की सेहत मुझे इस नोजवान के कशफ से मालूम हो गई। और नोजवान के कशफ की सेहत हदीस से मालूम हो गई। (शरह-उल-शिफा, सफ़ा 399, जिल्द 1)

सबक़:- कलमा शरीफ बड़ी बर्कत की चीज़ है। और उसे सिद्क़ दिल से पढ़ने वाला अज़ाब से बच जाता है। और ये भी मालूम हुआ के कुछ पका कर या पढ़ कर अगर उसका सवाब दूसरों को बख्शा जाए। तो उन्हें उससे फायदा पहुँचता है। इसलिए मईयत के खवैश व अहबाब को चाहिए के वो कुछ पढ़कर ज़रूर उसे बख़्शा करें। और ये भी मालूम हुआ के किसी मरने वाले की फातिहा पढ़ने के लिए जाकर बजाए इसके फिज़ूल बातें करके अपना नामा-ए-आमाल भी सियाह किया जाए। चुनूँ पे कलमा शरीफ पढ़ते रहना बेहतर है। ताके अपना दफ़्तर भी काला ना हो। और उसको भी कुछ नफा हासिल हो।

हिकायत नम्बर(852) बन्दगी

हज़रत अब्दुल्लाह हफीफ रहमत-उल्लाह अलेह के दो मुरीद थे आप उनमें से एक को बहुत चाहते थे। और फख्र करते थे के हक़ीक़त में मेरा मुरीद यही है। दोस्तों ने पूछा के हुज़ूर! बैत तो आपकी दोनों ही ने की है। फिर आप एक से ज़्यादा मोहब्बत क्यों रखते हैं? फ़रमाया! लो मैं इसकी वजह तुम्हें बताता हूँ। आपने अपने दूसरे मुरीद को बुलाकर फ़रमाया। भई! मेरा ये ऊँट आज कोठे पर चढ़ा दो। वो बोला। हुज़ूर ऊँट तो कोठे पर चढ़ ही नहीं सकता। ऐसी अनहोनी बात का आप हुक्म दे रहे हैं। बात ऐसी कीजिए जो हो भी सके। फिर आपने अपने पहले मुरीद को बुलाया। और फ़रमाया। भई! मेरा ये ऊँट कोठे पर चढ़ा दो। उसने झट अपनी कमर कसी। और ऊँट के पीठ के नीचे अपने दोनों हाथ डाल कर उसे उठाने की कोशिश करने लगा। हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया। बस! बस!! अब चले जाओ मुझे यही दिखाना था। के इरादात व ग़ुलामी और बात का नाम है के हुक्म की तामील में "हो सकने या ना हो सकने का फलसफा दरमियान में ना लाए।" (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 570)

Scanned by CamScanner

सबक़:- मालूम हुआ के बन्दे का काम ये है के अपने अल्लाह के हुकम के आगे सर तसलीमे खम कर दे। और जो लोग अपने फलसफा व साईंस को दरमियान लाकर सौ क़िस्म की हुज्जतें और चूँ व चरा करने लगते हैं। वो आदाब बन्दगी से ना आश्ना हैं। खुदा तआला ने बावजूद उसके कोई हुक्म ऐसा नहीं दिया। जो बन्दे से हो ना सकता हो। और फ़रमा दिया के *ला युकल्लीफुल्लाहू नफ़्सन इल्ला वुसअहा* फिर भी जो लोग गर्मियों के रोज़ों और अपनी दुनयवी मसरूफियात के बाइस पंज वक़्ता नमाज़ और *अला कलमत-उल-हक़* की ख़ातिर जिहाद वग़ैरा को मुश्किल समझें तो ऐसे लोग खुदा के बन्दे हर गिज़ नहीं हो सकते।

हिकायत नम्बर(853) मोहताज

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक अमीर शख़्स पाँच सौ दीनार लाया और नज़्र पेश की। हज़रत जुनैद ने फ़रमाया के इन पाँच सौ दीनारों के सिवा तुम्हारे पास कुछ और भी है? उसने कहा। बहुत कुछ। आपने फ़रमाया। "बहुत कुछ" के होते हुए तुझे "और कुछ" की भी हाजत है? उसने कहा। हाँ है। फ़रमाया। तू इन दीनारों को तू ही ले जा। क्योंके मुझ से ज़्यादा तू उनका ज़्यादा मुसतहिक़ है। इसलिए के मेरे पास कुछ भी नहीं। और कुछ भी हाजत नहीं। और तेरे पास सब कुछ है। और फिर भी और कुछ की हाजत है। गोया असल में मोहताज तुम हो ना के मैं। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 439)

सबक़:- अल्लाह वाले साबिर व शाकिर, क़ानअे और दिल के ग़नी होते हैं। और अपने पास कुछ ना कुछ ना रखकर भी सब कुछ रखते हैं। और दुनिया वाले फक़ीर व मुफ़्लिस और मोहताज होते हैं के अपने पास सब कुछ रखकर भी कुछ नहीं रखते। और यही कहते हैं। के अभी थोड़ा है कुछ और मिले। अभी थोड़ा है कुछ और मिले। और इसी हर्स व तमअे ही में सारी ज़िन्दगी गुज़ार देते हैं। इसीलिए कहा गया के:

को ज़ैह चश्म हरीसाँ पुर ना शुद
नीज़ ये के
तवंगरी बदिल अस्त ना के बमाल

हिकायत नम्बर(854) अल्लाह की मर्ज़ी

हज़रत अबु उमर रहमत-उल्लाह अलेह ने अहद कर रखा था। के

Scanned by CamScanner

मैं अल्लाह तआला की मर्ज़ी के खिलाफ कभी कोई चीज़ ना चाहूंगा। आपकी एक ही साहबज़ादी थी। आपने उसका निकाह अब्दुर्रहमान सलमी रहमत-उल्लाह अलेह से कर दिया था। इत्तिफाक़ से आपकी साहबज़ादी बड़ी बीमार हो गईं। तमाम तबीब उनके इलाज से आजिज़ रह गए। हज़रत अब्दुर्रहमान रहमत-उल्लाह अलेह ने कहा। के तुम्हारी बीमारी की सिर्फ एक ही इलाज है। और वो तुम्हारे वालिद के पास है। बीवी ने पूछा। वो क्या? फ़रमाया! के तुम्हारे वालिद अगर दुआ करें। तो तुम अच्छी हो सकती हो। चुनाँचे वो उसी वक़्त अपने वालिद हज़रत अबु उमर के पास पहुँचीं। और दुआ के लिए अर्ज़ की। हज़रत अबु उमर ने फ़रमाया। बेटी! मेरा अपने अल्लाह से अहद हो चुका है। के मैं उसकी रज़ामंदी के खिलाफ कभी कोई चीज़ ना चाहूंगा। और उसकी मर्ज़ी यही है के तुम अच्छी ना हो तो मुझ से बद अहदी क्यों कराती हो। बेटा! मरना तो एक दिन है ही। मेरी दुआ से अगर आज ना मरोगी। तो कल मर जाओगी। पस जो मरने वाला है। उसका मरना ही बेहतर है। "मेरी प्यारी बेटी! जाओ! और मुझे गुनहगार ना बनाओ। आपकी बेटी वापस आ गई। और समझी के अब मैं ना बचूंगी। मगर अल्लाह तआला ने अपना फज़्ल फ़रमाया और वो रूबसेहत होने लगीं। और चन्द ही दिनो में मुकम्मल सेहतयाब हो गईं।" (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 609)

सबक:- अल्लाह वाले अल्लाह की मर्ज़ी पर राज़ी रहते हैं और अपनी मर्ज़ी को उसके सामने फना कर देते हैं। अल्लाह तआला उनकी इस अदा पर खुश होकर फिर उनकी मर्ज़ी पूरी फ़रमा देता है। और दुनिया वाले हर हाल में अपनी ही मर्ज़ी को सामने रखते हैं। और अल्लाह की मर्ज़ी पसंद नहीं करते। तो अल्लाह तआला अपनी ही मर्ज़ी करता है। और दुनिया वाले परेशान होकर मरने लगते हैं जिन्होंने अल्लाह तआला की मर्ज़ी को अपना लिया। उनके लिए खुदा ने फ़रमा दिया। *लाख़ौफुन अलेहिम वला हुम यहज़ानून।*

हिकायत नम्बर(855) गधे

हज़रत उस्मान हैरी रहमत-उल्लाह अलेह बहुत बड़े अमीर घराने में से थे बचपन में आप बड़े क़ीमती लिबास में मलबूस जा रहे थे। नोकर चाकर आपके साथे। रास्ते में आप ने एक ज़ख्मी गधा देखा जिसकी पीठ ज़ख्मी थी और कव्वे उसकी पीठ से गोश्त नोच रहे थे। और बेचारा मजबूर था और

Scanned by CamScanner

उनको उड़ा नहीं सकता था। हज़रत उस्मान को उस पर तरस आ गया। और अपने नौकरों को अपनी रेशमी क़बा उतार कर दी। और हुक्म दिया के ये इस गधे की पीठ पर उढ़ा दो। फिर आपने अपनी दसतार उतार कर उसके ज़ख़्म की जगज पर बांध दी। और चल दिए। गधे ने ज़बान हाल से बारगाहे हक़ में दुआ की। तो हज़रत की तबीयत में कुछ एसा इंक़िलाब आया के आप तलब मारफ़त में हज़रत याहिया बिन मआज़ रहमत-उल्लाह अलेह की मजलिस में पहुँच गए और उनकी नज़र से आरिफ़ कामिल बन गए। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 488)

सबक़:- जो लोग इंसानों के अलावा मजबूर व आजिज़ गधों पर भी लुत्फ़ो करम फ़रमाते थे। असल में वही इंसानियत के पैकर हैं और जो लोग जानवर तो बरतरफ़ इंसानों पर भी ज़ुल्म करते हैं। वो बराये नाम इंसान हैं असल में गधे हैं।

हिकायत नम्बर(856) खुदा का ख़ौफ

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत-उल्लाह अलेह रमज़ान शरीफ में दिन को घास लाकर बेचते और जो क़ीमत मिलती वो दुरवैशों में ख़ैरात कर देते और खुद तमाम रात सुबह तक नमाज़ पढ़ते रहते। लोगों ने पूछा के ये तो बताईये के इसकी क्या वजह है के आपको कभी नींद नहीं आती। आपने फ़रमाया के वजह यही है के दम भर आँखों का रोना बन्द नहीं होता है। अब तुम ही बताओ के जिनकी ये हालत हो। उनमें नींद का गुज़र कैसे हो सकता है और जब आप नमाज़ पढ़ चुकते तो अपने मुंह को हाथों से ढाँप लेते और फ़रमाते के मैं डरता हूँ के ऐसा ना हो के नमाज़ उल्टा कर मेरे मुंह पर मार दी जाए। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 115)

सबक़:- अल्लाह वालों के दिलो में अल्लाह का ख़ौफ रहता है और वो हर वक़्त खुदा की याद में लगे रहते हैं और वो लोग खुदा की इबादत करके अपनी इबादत पर नाज़ नहीं करते। बल्के अजज़ो नियाज़ ही इख़्तियार करते हैं।

हिकायत नम्बर(857) फिक्र इख़्तियारी

हज़रत इब्राहीम अदहम रहमत-उल्लाह अलेह को एक रोज़ खाने को कुछ ना मिला। आपने उसके शुक्राने में चार रकआत नफिल अदा किए। दूसरे रोज़ खाने को फिर कुछ ना पाया आपने फिर शुक्राने के चार नफिल

Scanned by CamScanner

पढ़े। इसी तरह तीसरे रोज़ भी हुआ। और आप बहुत कमज़ोर हो गए। आपने अर्ज़ की। इलाही इबादत करने की ताक़त बाक़ी रहने के लिए कुछ अता हो जाए। तो खूब है। उसी वक़्त एक जवान आया और कहा के आपकी दावत है चलिए! आप उसके घर गए मेज़बान ने जब आपको बग़ौर देखा। तो चीख मार कर कहने लगा के मैं तो आपका ग़ुलाम हूँ। (हज़रत इब्राहीम बिन अदहम इससे पहले बड़े बादशाह थे) और जो कुछ मेरे पास है। सब कुछ आपकी ही का है। आपने फ़रमाया मैंने तुझे आज़ाद कर दिया और जो कुछ तुम्हारे पास है। तुझे बख्श दिया अब तू मुझे इजाज़त दे के मैं वापस जाऊँ। उसके बाद आपने अर्ज़ की। इलाही! मैंने तुझ से रोटी का एक टुकड़ा माँगा था। मगर तूने मेरे सामने इतनी दुनिया पेश फ़रमा दी। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 116)

सबक:- अल्लाह वाले अगर चाहें तो जिस क़द्र चाहें माल दुनिया जमा कर लें। मगर माल दुनिया उन्हें मरग़ूब नहीं होता और उनका फिक्र फिक्र इख़्तियारी होता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह ताअला अपने मक़्बूल बन्दों की दुआ फौरन सुनता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले मुश्किल व आज़माईश के वक़्त भी इबादत में कमी नहीं करते। बल्के और भी ज़ियादती इख़्तियार करते हैं।

हिकायत नम्बर(858) चार सवारियाँ

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम अलेह अर्रहमा फ़रमाया करते थे मेरे पास चार सवारियाँ हैं। जब कोई नअेमत मिलती है तो शुक्र की सवारी पर सवार होकर खुदा के सामने जाता हूँ जब बन्दगी व इबादत का वक़्त आए। तो ख़लूस की सवारी पर सवार हो जाता हूँ। और जब कोई मुसीबत व बला नाज़िल होती है तो सब्र की सवारी पर सवार हो जाता हूँ। और जब कोई गुनाह हो जाता है तो तौबा व असतग़फार की सवारी पर सवार होकर उसके हुज़ूर पेश हो जाता हूँ।" (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 122)

सबक:- अल्लाह वाले हमेशा सब्रो शुक्र, ईसार व खलूस और तौबा व असतग़फार को अपनाए रखते हैं। हमें भी इर चीज़ों को अपनाना चाहिए।

हिकायत नम्बर(859) बन्द को खोल

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत-उल्लाह अलेह से एक शख़्स ने अर्ज़ की के कुछ नसीहत फ़रमाईये आपने फ़रमाया: बन्द को खोल और खुले को बन्द कर। वो बोला हुज़ूर! मैं इसका मतलब नहीं समझा वज़ाहत फ़रमाईये

Scanned by CamScanner

तो फ़रमाया के थेली का मुंह खोल दे और ज़बान को खुली से बन्द कर।"
(तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 121)

सबक:- बुख्ल बहुत बुरी चीज़ है, और ज़बान को बे क़ाबू करके बे हूदा बातें इख़्तियार कर लेना भी बेहद बुरी चीज़ है। हमें अल्लाह वालों के नक़्शे क़दम पर चल कर सखावत पैशा बनना चाहिए और ज़बान को क़ाबू में रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर(860) ग़ीबत

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत-उल्लाह अलेह एक दावत में गए। लोग एक शख़्स का इन्तिज़ार कर रहे थे। एक ने उनसे कहा। के वो बड़ा बद मिज़ाज आदमी है। हज़रत इब्राहीम बिन अदहम सुनकर फ़रमाने लगे। के ऐ लोगो! दस्तूर तो ये है के पहले रोटी खाते हैं। फिर गोश्त लेकिन तुम ने पहले गोश्त खाना शुरू कर दिया है। यानी ग़ीबत करने लगे हो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 122)

सबक:- ग़ीबत करना मुरदार का गोश्त खाने के बराबर है।

हिकायत नम्बर(861) अजज़ो बेचारगी

हज़रत बायज़ीद बस्तामी अलेह अर्रहमा ने एक मर्तबा फ़रमाया के खुदा के हुज़ूर ऐसी चीज़ पेश करो। जो उसके ख़ज़ाने में ना हो। मुरीदों ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! भला वो कौन सी ऐसी चीज़ है। जो खुदा के खज़ाने में ना हो। फ़रमाया बे चारगी, अज्ज़ और ख़्वारी व शिकस्तगी है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 189)

सबक: अल्लाह तआला के सामने अजज़ो ख़्वारी इख़्तियार करने से अल्लाह की रहमत जोश में आ जाती है और तकब्बुर व ग़ुरूर से हमेशा अल्लाह का जलाल व अज़ाब नाज़िल होता है।

हिकायत नम्बर(862) अनानियत

हज़रत बायज़ीद बस्तामी अलेह अर्रहमा के दरवाज़े पर आकर एक शख़्स ने आवाज़ दी तो आपने पूछा किस को बुलाते हो? उसने कहा बायज़ीद को आपने फ़रमाया मैं बेचारे बायज़ीद को तीस बरस से ढूंड रहा हूँ। और पता नहीं लगता, हज़रत ज़ुलनून मिस्री अलेह अर्रहमा ने ये बात सुनी। तो फ़रमाया बा यज़ीद बस्तामी ख़ासाने खुदा की तरह हक़ तआला में ऐसे महू हो गए थे के उसमें गुम हो गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 190)

Scanned by CamScanner

सबक:- अल्लाह वाले अपने आपको बिलकुल मिटा और भुला देते हैं। और अनानियत का नामो निशान भी बाक़ी नहीं रहने देते। इसी लिए एक शायर ने भी लिखा है के:

तू को इतना मिटा के तू ना रहे
झूटी बातों की गुफ़्तगू ना रहे
आरज़ू-ए-विसाल है पर्दा
आरज़ू है के आरज़ू ना रहे

हिकायत नम्बर(863) पंदो निसाऐह

हज़रत उमर बिन अबदुल अज़ीज़ जब तख़्ते खिलाफत पर मुतमकिन हुए तो ख़्वाजा हसन बसरी को एक ख़त भेजा। जिसका मज़मून ये था मेरे दोस्त! तू जानता है के मैं एक बहुत बड़े काम में मुब्तला हुआ हूँ। मुझ को कुछ नसीहत कीजिए और अपने हम नशीनाने खुदा दोस्त में से एक को मेरे पास भेज दीजिए ताके उसकी मुसाहेबत से मुझे आसायश हासिल हो सके। जवाब में हज़रत हसन बसरी ने लिखा। अमीर-उल-मोमिनीन का नामा मुतालअे से गुज़रा और जो इशारा के इसमें किया गया था। वो समझ लिया। आपने जो फ़रमाया के इसकी मुसाहेबत से आसायश हासिल करूं। तो समझ ले जैसे शख़्स के तुझ को चाहिए वो तेरे नज़दीक ना आएगा और तुझ से फारिग़ होगा और जो शख़्स के तेरे पास आएगा ऐसे की तुझे ज़रूरत नहीं है। इसकी मुसाहेबत से तुझे कुछ आसायश व नफा हासिल ना होगा और जो के नसीहत के वास्ते लिखा है तो जान ले के जो कोई खुदा से डरता है। तमाम लोग उससे डरते हैं। और जो कोई खुदा से शर्म रखता है। लोग भी उससे शर्म रखते हैं। और जो कोई खुदा के हुज़ूर में गुनाहों पर दिलैरी का इज़हार करा है, तमाम लोग उस पर दिलैर हो जाते हें और जो कोई आज ऐमन है। कल को मख़्दूश होगा और जो आज मख़्दूश है कल को मामून होगा ओर जो कोई अपने आप पर मग़रूर होगा वो दुनिया और आख़िरत में माज़ूल होगा। दुनिया की तमाम नेकियों का निचोड़ सब्र करना है और सब्र का सवाब सब से ज़्यादा है। अपने तमाम कामों में खुदाऐ अज़्ज़ो जल की पनाह और मदद तलब कर, ताके तुझ को मदद मिले। और इस पर तवक्कत रख ताके कामों में तुझे किफायत करे। जो कोई आँख को आज़ाद करत। है के जो कुछ चाहे सौ देखे उसका अंदवा, दराज़ हो जाता है और जो कोई ज़बान को रिहा कर देता है के जो कोई चाहे सौ कहे वो गोया अपने आपको हलाक करता है।

Scanned by CamScanner

ग़ालिबन ये मुख़्तसिर कलमात तेरी रहनुमाई और अमल करने के लिए काफी हैं। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 423)

सबक़:- बुज़रगाने दीन के इर्शादात पर अमल करना दीन व दुनिया की कामयाब के लिए ज़रूरी है। ये भी मालूम हुआ के जिनका ताल्लुक़ हाकिमे हक़ीक़ी से हो चुका है। वो कभी दुनयवी हाकिमों की एहतियाज नहीं रखते और जो खुदा तरस हाकिम हैं वो अल्लाह वालों की हिदायत के तालिब रहते हैं।

हिकायत नम्बर(864) दुआ

याक़ूब बिन लीस अमीर खरासान को एक बीमारी लाहक़ हाल हुई। तमाम तबीब उसका इलाज करने से क़ासिर व आजिज़ हो गए। किसी ने इस याक़ूब बिन लीस को कह दिया के आपकी विलायत में एक खुदा का नेक बन्दा मौजूद है, जिनका इस्मे ग्रामी सहल बिन अब्दुल्लाह है। और अगर आप उनको अपने पास बुलायें तो आपके लिए दुआ करेंगे। मुझे उम्मीद वासिक़ है के आपको सेहत कामिल अता होगी। पस अमीर खरासान ने उनको तलब करके कहा। मेरे लिए दुआ करो। हज़रह सहल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया। मेरी दुआ तेरे हक़ में किस तरह क़बूल हो सकती है। हालाँके तू हमेशा ज़ुल्म करता रहता है ये सुनकर याक़ूब (अमीर खरासान) ने तौबा की नीयत की ज़ुल्म को तर्क करने का अहद किया। रूईय्यत के साथ हुस्ने सलूक का अहद किया। और क़ैदखाने से तमाम मज़लूमों को आज़ाद कर दिया। फिर हज़रत सहल रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हाथ उठा कर दुआ माँगी।

"ऐ मुनइमे हक़ीक़ी जिस तरह तूने उसको गुनाहों की वजह से ज़िल्लत दिखाई थी। अब उसको ताअत की वजह से इज़्ज़त दिखा और उसकी मुश्किल को दूर कर।"

पस वो उसी वक़्त शिफायाब हुआ और उसी तरह बश्शाश नज़र आता था। जैसे के किसी के ग़मों का उक़्दा खुल जाता है फिर हज़रत सहल की खिदमत में बहुत सा माल बतौर नज़राना पेश किया। लेकिन उन्होंने क़बूल ना किया। जब आप वापस आए तो रास्ते में किसी ने अर्ज़ किया के काश आप वो पेश कर्दा माल लेकर फक़ीरों में तक़सीम कर देते। फिर आपने उस मैदान कंकरों की तरफ़ नज़र की तो वो तमाम जवाहरात बन गए फिर फ़रमाया जो माल तुम चाहते हो तुम्हारे सामने मौजूद है। जितना चाहो ले लो फिर फ़रमाया जिसको अल्लाह तआला अपनी बारगाह से एसे ख़ज़ाने बख़्श दे वो अमीर खरासान याक़ूब बिन लीस का मोहताज कब हो सकता

Scanned by CamScanner

है। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 430)

सबक़:- ज़ेर दस्तों और ग़रीबों पर ज़ुल्मो सितम करने से दीन व दुनिया की हलाकत का सामना होता है और ज़ुल्मो सितम से तौबा कर लेने से अल्लाह तआला खुश होता है और आफ़ियत व आसायश की ज़िन्दगी अता फ़रमाता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की नज़र पड़ जाने से एक बे क़ीमत कंकर भी ग्राँ क़द्र सोना बन जाता है। और ये के उन पाक लोगों का फिक्र फिक्र इख़्तियारी होता है।

हिकायत नम्बर(865) पत्थर में आदमी

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम का एक रोज़ एक पहाड़ पर गुज़र हुआ। आपने उस पहाड़ पर एक सफेद पत्थर देखा। जिसे आपने ग़ौर से देखा और उसकी खूबसूरती पर ताज्जुब का इज़हार फ़रमाया खुदा तआला ने फ़रमाया ऐ ईसा क्या तुम चाहते हो के मैं उससे भी ज़्यादा ताज्जुब अंगेज़ एक चीज़ तुम पर ज़ाहिर करूं ईसा अलेहिस्सलाम ने अर्ज़ किया हाँ इलाही मैं चाहता हूँ चुनाँचे खुदा के हुक्म से वो पत्थर फट पड़ा और उसमें से एक मुबारक शख़्स निकला जिसके हाथ में एक सरसब्ज़ शाख थी जिसके साथ अंगूर लगे हुए थे। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम से उस शख़्स ने कहा ऐ अल्लाह के पैग़म्बर ये अंगूर मेरी हर दिन की रोज़ी है और मैं इस पत्थर में हर वक़्त अल्लाह की इबादत में लगा रहता हूँ। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने पूछा के तुम इस पत्थर में कितनी मुद्दत से मसरूफ इबादत हो। वो बोला के चार सौ बरस से इस पर ईसा अलेहिस्सलाम ने जनाब इलाही में गुज़ारिश की के इलाही ये शख़्स तो बड़ा ही खुश नसीब है मेरे खयाल में इससे बढ़कर और तो कोई शख़्स खुश नसीब और अफ़ज़ल ना होगा। खुदा तआला ने जवाब दिया। मेरे आख़री पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उम्मत में से जो शख़्स भी शअबान की पंद्रहवीं शब को दो रकअत नमाज़ पढ़ेगा। वो उस शख़्स की चार सौ बरस की इबादत से भी ज़्यादा अज्र पाएगा। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 292, जिल्द:1)

अल्लाह तआला ने शअबान शरीफ की पंद्रहवीं शब को बड़ी फज़ीलत दी है और वो लोग बड़े ही खुश नसीब हैं जो इस रात जाग कर अल्लाह की इबादत करके अपने अल्लाह को राज़ी कर लेते हैं। और बहुत से दर्जे पा लेते हैं ओरये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला बड़ी क़ुद्रतों का मालिक है वो चाहे तो आदमी को माँ के पेट में भी और पत्थर के अन्दर भी ज़िन्दा रख सकता है

Scanned by CamScanner

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला बड़ी क़ुद्रतों का मालिक है वो चाहे तो आदमी को माँ के पेट में भी और पत्थर के अन्दर भी ज़िन्दा रख सकता है। और ये भी मालूम हुआ के जो खुदा एक आदमी को पत्थर के अन्दर चार सौ बरस ज़िन्दा रख सकता है। वही क़ादिर व तवाना खुदा अपने पैग़म्बर हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम को आसमानों पर बुला कर सेंकड़ों बरस ज़िन्दा रख सकता है और इन सब बातों का इंकार अल्लाह तआला की वसी क़ुद्रतों का इंकार है। जो मुसलमान का काम नहीं।

हिकायत नम्बर(866) नेक नीयती

पुराने ज़माने में एक बूढ़ा और एक जवान दोनों ने मिलकर एक ज़मीन खरीदी और उसमें गंदम बोई। खेती जब पक कर तैयार हुई और कटाई हो चुकी और दोनों अपना अपना हिस्सा तक़सीम करने लगे। तो बूढ़ा अपना हिस्सा लेता और चुपके से जवान की तरफ़ सरका देता। और कहता के शायद उसकी उम्र में बर्कत हो और उसे ज़्यादा गंदम की हाजत हो। मैं तो बूढ़ा हो चुका हूँ। मुझे ज़्यादा गंदम की क्या हाजत? और जवान अपना हिस्सा लेता तो चुपके से वो भी बूढ़े की तरफ़ सरका देता। और कहता के बूढ़ा अयाल दार है उसे ज़्यादा गंदम दरकार होगी। जूं जूं ये दोनों आपस में ये मामला करते रहे। गंदम बढ़ती गई। और ख़त्म होने में ना आती थी। जब ये दोनों तक़सीम करते करते थक गए तो दोनों ने एक दूसरे को अपनी नीयत बयान की तो पता चला के बर्कत हमारी ने नीयत के बाइस है। बादशाहे वक़्त को उन दोनों के इस मामले का पता चला तो उसने उनको इस ज़ख़ीरे गंदम से एक दाना मंगवा कर अपने ख़ज़ाने में रखा। उसकी बर्कत से उसके ख़ज़ाने में भी बर्कत पैदा हो गई। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 390, जिल्द:1)

सबक़:- नेक नीयती से रिज़्क में बर्कत पैदा होती है। और बदनीयती से क़ैहत पैदा होता है। पहले लोग एक दूसरे के खैर ख़्वाह और ईसार पैशा थे। इसी वजह से वो लोग मआशी तंगी मं मुब्तला ना थे। और आज कल दुनिया भर में बद नीयती और ज़ुल्मो सितम आम है। इसीलिए सारी दुनिया मआशी तंगी में मुब्तला है पस हमें चाहिए के अपने भाईयों की हक़ तलफी ना किया करें बल्के हत्ता-उल-इमकान दूसरों पर एहसान करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(867) बुज़र्गों का हसद

एक मर्तबा शैतान ने हज़रत नूह अलेहिस्सलाम से कहा के मैं आपके

Scanned by CamScanner

एक एहसान का बदला चुकाना चाहता हूँ। हज़रत नूह अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मलऊन! मैंने तो तुझे अपने पास फटकने तक नहीं दिया। फिर तुम पर मेरा कोई एहसान कैसा? शैतान बोला आपने अपनी दुआ से अपनी सरकश क़ौम को डुबो कर आए दिन की मुसीबत से मुझे बचा लिया। हर रोज़ की कशमकश और अग़वा की तरकीबों से मुझे निजात मिल गई है। इसके अवज़ में ये नसीहत करता हूँ के बुज़ुर्गों के हसद से बचना चाहिए। मैं आदम के हसद से ही मारा गया हूँ और अबदी जहन्नुमी बन गया हूँ उनकी बड़ाई व अज़मत मुझे ना भाई। और उनके आगे ना झुका। और हमेशा के लिए मलऊन बन गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 402, जिल्द:1)

सबक़:- अल्लाह वालों की अज़मत का इंकार और उनके सामने अपने आपको भी कुछ समझना बल्के उनकी मिस्ल बनना बहुत बुरी बात है। इस बात से आदमी की आक़बत बर्बाद हो जाती है। इसलिए इस ख्याल से भी बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(868) सद्क़ा

एक आराबी ने हज़रत अबु हुरैरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से अर्ज़ की हुज़ूर मेरा बेटा दरयाई सफर कर रहा है। आप उसकी सलामती के लिए दुआ करें। हज़रत अबु हुरैरा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया उसकी तरफ़ से कुछ सद्क़ा कर दे। क्योंके इस वक़्त दरया में तूफान आ रहा है। चुनाँचे बाप ने उसी वक़्त सदक़ा दिया और इधर कश्ती वालों ने ग़ैब से ये निदा सुनी के कश्ती वालो! खुदा का शुक्र करो, तुम डूबने से बच गए। और अल्लाह ने इस आराबी की सदक़ा क़बूल फ़रमाया लिया। चन्द रोज़ के बाद आराबी का बेटा सही सलामत वापस आ गया। और बाप को उस निदाऐ ग़ैबी की ख़बर सुनाई। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 421, जिल्द:1)

सबक़:- सद्क़ा व ख़ैरात देने से सेंकड़ों बलायें टल जाती हैं। ग्यारहवीं शरीफ, तीजा, दसवाँ, चालीसवाँ, वग़ैरा सदक़ा व ख़ैरात ही की चीज़ें हैं। इन्हें बन्द करने का मतलब ये है के बलायें बन्द ना हों। इसलिए इन अच्छी बातों को बन्द हर गिज़ ना करना चाहिए। ताके बलाओं के दरवाज़े ना खुल जायें। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों को दूर दराज़ की बतों का भी इल्म हो जाता है। जैसे के हज़रत अबु हुरैरा रज़ी अल्लाह तआला अन्ह को हो गया और अल्लाह वाले इन अल्लाह वालों के इल्म को मान लेते हैं। जैसे के इस आराबी ने मान लिया।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(869) साँप

एक बुज़ुर्ग ने एक साँप को ये कहते सुना के जो इस वक़्त मुझे पनाह दे खुदा उसे दोज़ख़ से पनाह में रखेगा। उन्होंने अपना मुंह खोल दिया। साँप सीधा पेट में जा उतरा। इतने में एक शख़्स साँप को ढूंडता आया। मगर जब कहीं निशान ना मिला। तो वापस चला गया थोड़ी देर के बाद साँप ने उस बुज़ुर्ग से कहा फ़रमाईये अब मैं आपके दिल को डसूं या कलेजे को? पूछा ये क्यों? साँप ने कहा नाअहलों के साथ नेकी करने की यही सज़ा है। बुज़ुर्ग ने कहा अच्छा पहले मुझे अपनी क़ब्र तो खोद लेने दे इतने में एक फरिश्ता उतरा और उन्हें एक ऐसी चीज़ खिलाई के साँप टुकड़े टुकड़े होकर क़ै के रास्ते निकल गया। उन्होंने पूछा आप कौन हैं? जवाब मिला। मैं तुम्हारी वो नेकी हूँ जो अभी तुम ने साँप के साथ की। (नुज़हत-उल-मजातलिस, सफ़ा 423, जिल्द:1)

सबक़:- किसी नाअहल से अच्छा सलूक बअज़ अवक़ात मुसीबत का बाइस बन जाता है। इसलिए अहल व ना अहल का इम्तियाज़ हर वक़्त पेशे नज़र चाहिए और ये भी मालूम हुआ के नेकी बहर हाल नेकी ही है और उसका अच्छा बदला मिल कर ही रहता है।

हिकायत नम्बर(870) बुज़ुर्गों की शर्म

एक रोज़ हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआलाअन्ह बैठे हुए थे। आपने अपने ग़ुलामों से फ़रमाया के आओ ताके हम आपस में अहद करें के क़यामत के रोज़ जो हम में से निजात पा जाए। वो सबकी शफाअत करे। उन्होंने अर्ज़ की ऐ इब्ने रसूल अल्लाह! आपको हमारी शफाअत की क्या हाजत है? जब के आपके दादा जान तमाम मख़लूक़ के शफीअ हैं। हज़रत इमाम जाफर सादिक़ फ़रमाने लगे ये ठीक है मगर मुझे अपने अफआल के पेशे नज़र अपने दादा जान सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सामने होते शर्म आती है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 16)

सबक़:- अल्लाह वाले अल्लाह के जिस क़द्र मुक़र्रिब होते हैं उसी क़द्र उनके दिलों में ख़ौफ व खशीयते इलाही ज़्यादा होती है और इसी क़द्र उनकी शर्मो हया भी बढ़ती है और वो सब कुछ होकर भी अपने आपको कुछ नहीं समझते और ये भी मालूम हुआ के इमाम जाफर सादिक़(र०अ०) जैसे सादिक़ इमाम बावजूद अलू मतरतबत और नेकों के सरदार होने के अपने आमाल को हैच समझते हैं। फिर हम कौन हैं? जो कुछ भी ना करें

Scanned by CamScanner

अपनी बड़ाई के मुद्दई बन जायें और जब हज़रत इमाम जाफर सादिक़ जैसे पाकबाज़ इंसान हुज़ूर(स०अ०स०) के सामने होते हुए शर्माते हैं। फिर किस क़द्र जुर्रात है के हम हज़ार गुनाहों के बावजूद भी नहीं शर्माते।

हिकायत नम्बर(871) बुज़ुर्गों का तक़वा

हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह एक रात घर में रो रहे थे। ग़ुलामों ने अर्ज़ किया के आप क्यों रो रहे हैं। आप तो अल्लाह के फज़्ल से मुत्तक़ी और परहैज़गार और अल्लाह के मक़्बूल हैं। फिर इस रोने का सबब क्या है? फ़रमाया मैं इस खयाल से रो रहा हूँ के मेरी नादानस्तगी और भूल से कोई ऐसा काम मुझ से ना हो गया हो। जो मरे अल्लाह को पसंद नहीं या मैं ग़लती से अपना क़दम किसी ऐसी जगह पर ना रख बैठा हूँ। जिस जगह जाना मेरे अल्लाह को पसंद नहीं। अगर मुझ से कभी ऐसा हो गया है तो ऐसा ना हो के अल्लाह की दरगाह से मैं रौंदा जाऊँ और खुदा तआला मेरी कोई इबादत क़बूल ना फ़रमाए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 35)

सबक़:- अल्लाह वाले बड़े तक़वा शआर होते हैं और सब कुछ अदा कर के भी डरते रहते हैं के शायद हम से कोई कोताही हो गई हो और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले तो ग़ैर पसंदीदा काम भूल कर भी नहीं करना चाहते और हम जान बूझ कर भी सेंकड़ों गुनाह कर डालते हैं फिर अगर कोई शख़्स इन अल्लाह वालों से हमसरी का दावा करने लगे। तो उसकी गुमराही में क्या शक हो सकता है।

हिकायत नम्बर(872) क़ब्र

हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह एक बार जनाज़े की नमाज़ पढ़ने लगे। तो जब लोग दफ़्न से फारिग़ हो गए और क़ब्र दुरूस्त कर चुके तो आप इस क़ब्र पर बैठ कर बहुत रोये। फिर आपने हाज़रीन से फ़रमाया के ऐ लोगो! सुनो! अव्वल और आख़िर क़ब्र है। दुनिया के आख़िर क़ब्र है। और आख़िरत के अव्वल क़ब्र है। फिर तुम ऐसे आलम से क्यों नहीं डरते। जिसके अव्वल क़ब्र है और जब अव्वल व आख़िर तुम्हारा ये है तो ऐ ग़ाफिलो! अव्वल व आख़िर को दुरूस्त कर लो। आपके इस वाज़ से लोग बहुत मुतास्सिर हुए। और सब रोने लगे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 35)

सबक़:- इंसान को चाहिए के मंज़िल क़ब्र को हर वक़्त याद रखे और

Scanned by CamScanner

ऐसे काम करे, जिनकी बदौलत इसे क़ब्र में आराम मिले। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले क़ब्रिस्तान में जाते हैं। तो इब्रत हासिल करते हैं। वहाँ पहुँच कर दुनिया की बातें नहीं शुरू कर देते। जैसे के आज कल का हाल है के जनाज़ा पढ़ने गए। तो क़ब्रिस्तान में पहुँचकर भी मंडियों के भाव पूछे जा रहे हैं।

हिकायत नम्बर(873) पेट में

हज़रत सफ़यान सूरी रहमत-उल्लाह अलेह जब अपनी माँ के पेट में थे। एक रोज़ आपकी वालिदा कोठे पर तशरीफ़ ले गईं। और पड़ोसी की तुर्शी से एक उंगली भर कर चाटी। आप पेट में बेचैन हो गए और इतनी बेचैनी का इज़हार करने लगे के आपकी वालिदा समझ गईं। और उसी वक़्त जाकर पड़ोसी से माफी माँगी तब जाकर आप मुतमईन हुए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 230)

सबक़:- अल्लाह वाले पराई चीज़ को बग़ैर इजाज़त के हाथ भी नहीं लगाते और अगर वो माँ के पेट में भी हों तो भी ऐसी बात गवारा नहीं फ़रमाते। पस हमें भी उनके नक़्शे क़दम पर चलना चाहिए। और पराई चीज़ को हर गिज़ अपनाना चाहिए। ये भी मालूम हुआ के आज कल का दौर बड़ा ही पुर फतन दौर है। क्योंके पहले लोग तो पेट में भी पराय माल से बचते थे और आज कल के पेट ही पराय माल के लिए वक़्फ हो चुके हैं।

हिकायत नम्बर(874) खुदा पर नज़र

हज़रत शक़ीक़ रहमत-उल्लाह ताअला अलेह से एक रईस ने कहा के मैं चाहता हूँ के आपको बहुत सा माल दे दूं ताके आप बे फिक्र हो जायें। आपने फ़रमाया मैं तो बेफिक्र ही हूं और अपने खुदा पर नज़र रखता हूँ। हाँ अगर तुम से कुछ लेना शुरू कर दिया तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी और मैं तुम से कुछ इसलिए लेना नहीं चाहता। के पाँच ऐब तुम में से ऐसे हैं जो मुझे डराते हैं अगर वो ऐब तुम में ना होते तो शायद ले लेता।

एक तो ये के तेरा ख़ज़ाना कम हो जाएगा।

दूसरे ये के मुमकिन है उसे चोर चुरा कर ले जायें।

तीसरे ये के मुमकिन है तू देकर फिर पछताए।

चौथे ये के तुम शायद मेरा कोई ऐब देखकर मुझ से कहने लगो के मेरा माल लौटा दो।

Scanned by CamScanner

पाँचवें ये के मुमकिन है के तुम मर जाओ और मैं तुम्हारे बाद मुफलिस हो जाऊँ।

लेकिन हाँ अलबत्ता मेरा जो खुदा है। वो इन सब ऐबों से पाक है और बे ऐब है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 241)

सबक़:- अल्लाह वालों की अल्लाह पर नज़र रहती है और अल्लाह अपने मक़्बूलों के सब काम पूरे फ़रमा देता है और उन्हें माल दुनिया और अहले दुनिया की परवा नहीं होती। मालूम हुआ के यही अल्लाह वाले दरअसल ग़नी व अमीर हैं। और जिन्हें माल दुनिया ही की धुन और फिक्र लगी रहती है। और हर वक़्त उसके ग़म में रहते हैं। दरअसल वही मोहताज व फक़ीर हैं और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले दुनिया व अहले दुनिया से रूख मोड़ कर अल्लाह की तरफ़ दौड़ते हैं और दुनिया व अहले दुनिया उनकी तरफ़ दौड़ते हैं गोया जो रब का हो जाए रब उसका हो जाता है। और जिसका रब हो जाए सब उसका है।

हिकायत नम्बर(875) बहुत जल्द

एक बूढ़ा शख़्स हज़रत शक़ीक़ रहमत-उल्लाह तआला अलेह के पास हाज़िर हुआ। और कहने लगा। या हज़रत! मैं ने गुनाह बहुत किए हैं। अब चाहता हूँ के तौबा करूं हज़रत शक़ीक़ ने फ़रमाया बड़े मियाँ तुम बहुत देर से आए बूढ़े ने कहा। मैं तो खयाल करता हूँ के मैं बहुत जल्द आया हूँ। क्योंके जो शख़्स मौत से पहले तौबा करने को आमादा हो जाए। उसको ऐसा समझना चाहिए के वो बहुत जल्द आया है। हज़रत शक़ीक़ ने फ़रमाया। वाक़ई तुम ने सच कहा और तुम बहुत ठीक वक़्त पर आए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 243)

सबक़:- इंसान को चाहिए के मरने से पहले पहले अपने गुनाहों से बहुत जल्द सच्ची तौबा करे और मरने के वक़्त का कोई इल्म नहीं। इसलिए तौबा बहुत जल्द कर लेनी चाहिए।

हिकायत नम्बर(876) नंगे सर

हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की आदत मुबारका थी के आप कभी नंगे सर ना रहते थे। चुनाँचे दाऊद ताई अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं। मैं बीस बरस तक हज़रत इमाम अबु हनीफा की खिदमत में रहा। मैंने कभी इस अर्से में आपको तनहाई में और ना जमात में देखा के आप नंगे सर बैठे हों या पाँव फैलाऐ हों।

हज़रत दाऊद ताई ने एक रोजज़ हज़रत इमाम से पूछा के ऐ इमाम दीन अगर आप तनहाई की हालत में सर नंगा कर लें या पाँव फैला लें। तो इसमें

Scanned by CamScanner

क्या बुराई है? हज़रत इमाम आज़म ने फ़रमाया के तनहाई की हालत में खुदा तआला के साथ अदब रखना और उसकी ज़ाते पाक का लिहाज़ रखना बहुत अच्छी बात है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 250)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म अलेह अर्रहमा हदीस व फिक़ह के भी और वरअ व तक़वा के भी इमाम थे। और अहनाफ इक्राम को इस बात पर बजा नाज़ है के वो एक जलील-उल-शान और खुदा के मक़्बूल इमाम के मुक़ल्लिद हैं। और ये भी मालूम हुआ के आज कल जो दिन रात घर में भी और बाज़ारों में नंगे सर रहने और फिरने के आदी हैं वो अगर हमारे इमाम पाक पर कोई तान करें तो ये उनकी उरयानी ही का सबूत होगा।

हिकायत नम्बर(877) रिहाई

हज़रत मोहम्मद बिन असलम तूसा रहमत-उल्लाह अलेह बीमार हुए आप के हमसाया ने एक रात ख़्वाब में देखा के आप फ़रमा रहे हैं के अलहम्दू लिल्लाह! मैंने इस रंज से रिहाई पाई। ये शख़्स जागा तो उठा ताके आपकी ख़बर ले आए। तो पता चला के आपका विसाल हो गया है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 191)

सबक़:- ये दुनिया एक क़ैदखाना है और अल्लाह वाले यहाँ से इन्तिक़ाल को गोया क़ैद से रिहाई समझते हैं और दुनिया दार इसी दुनिया के सब कुछ समझते हैं। इसीलिए मरना उनके लिए मुश्किल है मगर अल्लाह वाले इस दुनिया से जाते हुए खुश हो जाते हैं के क़ैद से रिहाई पाई और साअत विसाल आई।

हिकायत नम्बर(878) तासीर कलाम

बग़दाद शरीफ में एक बदमाश ने एक शरीफ औरत को घेर लिया और उस पर दस्त दराज़ी करने लगा। औरत चीखी और लोगों को इम्दाद के लिए बुलाया। लोग उसे छुड़ाने के लिए आए तो इस बदमाश ने छुरी निकाल ली। चुनाँचे डर के मारे कोई आगे ना जा सका। इतने में हज़रत बशर बिन हरस रहमत-उल्लाह अलेह का वहाँ से गुज़र हुआ। आप आगे बढ़े और इस बदमाश के कंधे को अपने कंधे से ठोकर लगाई और वो बदमाश ज़मीन पर गिर गया और कांपने लगा इतने में वो औरत भाग गई और हज़रत बशर भी तशरीफ़ ले गए। लोग इस बदमाश के क़रीब गए और उठाया और कहा तुम्हारे साथ ये क्या मामला हुआ। तो वो बोला मैं और कुछ नहीं जानता सिर्फ इतनी ख़बर है के हज़रत बशर ने मेरे कंधे को ठोकर लगाते वक़्त इतना

Scanned by CamScanner

फ़रमाया था के ख़बरदार! तेरे इस बुरे फैल को खुदा देख रहा है। ये सुनते ही मेरे बदन पर लर्ज़ा तारी हो गया और मैं गिर गया। और अब सच्चे दिल से तायब हो चुका हूँ (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 171)

सबक़:- अल्लाह वालों की ज़बान में इंक़िलाब आमेज़ तासीर होती है और उनका एक जुमला भी किसी तवील वअज़ से ज़्यादा मौस्सर होता है। और ये पाक लोग अपनी निगाहों ही से काया पलट देते हैं।

हिकायत नम्बर(879) इस्मे आज़म

एक बुज़ुर्ग इस्मे आज़म जानते थे। एक शख़्स उनके पास इस्मे आज़म सीखने के लिए आया और अर्ज़ करने लगा के मुझे इस्मे आज़म सिखाईये। उन्होंने फ़रमाया। तुम में इसकी अहलियत भी है। उसने कहा। हाँ है। फ़रमाया अच्छा शहर के फलाँ दरवाज़े पर जाकर बैठो। और वहाँ जो कोई हादसा गुज़रे मुझे आकर उसकी इत्तिला दे देना। चुनाँचे वो शख़्स हस्बे हिदायत उस दरवाज़े पर जा बैठा। थोड़ी देर के बाद उसने देखा के एक बूढ़ा शख़्स अपने गधे पर लकड़ियाँ लाद कर शहर ला रहा है और जग वो दरवाज़े पर पहुँचा तो एक सिपाही ने उसे पकड़ लिया। लकड़ियाँ छीन लीं और उस बूढ़े को मारा भी। ये शख़्स ये सारा वाक़ेया देखकर वापस आया और उस बुज़ुर्ग को सुनाया। वो फ़रमाने लगे। अच्छा ये बताओ अगर तुम्हें इस्मे आज़म का इल्म होता तो तुम उस सिपाही के साथ क्या सलूक करते वो बोला। मैं उस ज़ालिम के हलाक हो जाने की दुआ करता। उन्होंने फ़रमाया सुनो! वो लकड़ियों वाला बूढ़ा ही मेरा मुर्शिद है और मैंने उसी से इस्मे आज़म सीखा है अब खुद ही सोचो के जब खुद ही उसने सिपाही की हलाकत नहीं चाही तो तुम कौन थे। जो उसकी हलाकत चाहते। जाओ इस्मे आज़म की अहलियत तुम में नहीं है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 174)

सबक़:- अल्लाह वालों का ज़र्फ़ बड़ा आली व वसी होता है और वो सब्र, हिलम और मख़लूक़ के लिए रहमत का मख़ज़न होते हैं। अल्लाह के ख़ास ईनामात के अहल वही लोग हैं रहमत-उल्लाह अलेहिम अजमईन।

हिकायत नम्बर(880) अब्दाल

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं के मैं एक कश्ती में सवार हुआ तो असना सफर में हवा बन्द हो गई। हम ने कश्ती को एक किनारे लगा कर खड़ा कर दिया। हमारी कश्ती में एक नूरानी शक्ल का नोजवान भी सवार था। वो साहिल पर

Scanned by CamScanner

उतर गया और साहिल के दरख़्तों में दाखिल हुआ। फिर वापस आया और जब सूरज ग़रूब हुआ। तो हम से कहने लगा के मेरा थोड़ी देर क बाद इन्तिक़ाल हो जाऐगा। जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो मेरी इस गठरी को खोल कर उसमें से जो निकले उसका मुझे कफ़न पहनाना। और ये मेरे बदन के कपड़े उतार कर अपने पास रखना। फिर जब तुम शहर सबूर में दाखिल होगे। तो सबसे पहले जो शख़्स पहले मिलेगा। वो तुम से कहेगा के लाओ मेरी अमानत, तो ये मेरे बदन के कपड़े उसे दे देना चुनाँचे हम ने नमाज़ मग़रिब की और नमाज़ पढ़ लेने के बाद हम ने उस नोजवान को देखा, तो वाक़ई उसका इन्तिक़ाल हो चुका था। हमने साहिल के किनारे उसे ग़स्ल दिया और फिर उस गठरी को खोला तो उसमें से दो सब्ज़ चादरें निकलीं और एक सफेद कपड़ा जिसमें एक थेली बंधी हुई थी। थेली खोली तो उसमें से एक काफूर की सी चीज़ निकली। जिससे कस्तूरी की खुश्बू आ रही थी हम ने उसे ये कफ़न पहनाया और वही खुश्बू लगाई। और नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफ़्न कर दिया। फिर जब हम शहर सबूर पहुँचे। तो हमें एक निहायत वजीहा नोजवान मिला। जो अपने सर पर रूमाल बांधे हुए था। उसने हमें अस्सलाम अलेकुम कहा और फिर कहा: लाओ मेरी अमानत। हम ने कहा। हाँ आपकी अमानत हमारे पास ही है। मगर ज़रा इस मस्जिद में चलिए। हमें आपसे कुछ पूछना है। चुनाँचे वो हमारे साथ मस्जिद में दाखिल हुआ तो हम ने पूछा अज़राहे करम ये तो फ़रमाईये के वो कश्ती वाला नोजवान कौन था। और आप कौन हैं। और वो सब्ज़ कफ़न कहाँ से आया था। उसने फ़रमाया वो कश्ती का आपका रफ़ीक़ सफर चालीस अब्दालों में से एक अब्दाल था और अब उसकी जगह में मुक़र्रर हुआ हूं। और वो कफ़न हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम लेकर उसके पास पहुँचे थे। और वो ही उसे बता गए थे के मग़रिब के बाद उसका इन्तिक़ाल होने वाला है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 183)

सबक़:- औलिया इक्राम की बहुत बड़ी शान है और उन्हें इन बातों का भी इल्म होता है। जिनका दूसरों को कोई इल्म नहीं होता। हत्ता के वो अपने इन्तिक़ाल की ख़बर भी रखते हैं। के कब होगा और कहाँ होगा फिर खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिनके सद्क़े में औलिया व अब्दाल को ऐसे इलूम हासिल हुए। *मा काना वमा यकून* के आलम और दानाऐ ग़यूब क्यों ना होंगे। और जो शख़्स औलिया इक्राम के भी आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्मे पाक का मुनकिर हो। उससे बढ़कर जाहिल और कौन होगा।

Scanned by CamScanner

फसल-लल्लाहो अलेह व सल्लम व
रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन

हिकायत नम्बर(891) हज़रत सईद बिन जबीर रज़ी अल्लाहो अन्ह व हज्जाज बिन युसूफ का मकालमा

ग़ुलामाने मोहम्मद में किसी से कम ना था कोई
नहीफ व भूके प्यासे थे मगर बेदम ना था कोई
समा सकती है क्यों कर जब दुनिया की हवा दिल में
बसा हो जब के नक़्श जब मेहबूबे खुदा दिल में

हज्जाज बिन युसूफ सक़्फी जो रूस्तम का पुतला जिदाल व क़िताल का दिलदादा तशहुद व शिक़ावत का मुजस्समा कूफा व बसरा और बाबलिस्तान जिसकी खून रेज़ी से लरज़ाँ है। तक़रीबन सत्तर हज़ार नाहक़ व बे क़सूर मक़्तूलों के खून का मुरतकिब हो चुका है। आलिम उसकी बेदाद गिरी से हरासाँ मुल्क का हर खुर्द व कलाँ उसके ज़ुल्म से गुरेज़ाँ है एक रोज़ पाया तख़्त इराक़ में हमराह चन्द रूफक़ा हमनवा किसी कलाम ख़ास में मशग़ूल है। 95हि॰ उसकी ज़ीस्त का आख़री साल है। लेकिन सितमगर गिरफ़्त खुदा से बेख़बर महू क़ताल है दफअतन उसके दरबार खूनबार में हज़रत सय्यदना सईद बिन जबीर-उल-असदी अलकूफ़ी (ताबई) पेकर रज़ा मुल्क फिक्र के शहनशाह को लाया गया। सय्यद बिन जबीर दरख़्शंदा रूफरखंदा खू पर ना हज्जाज का रौब ना हैबते दरबार कारगर थी। और ना ख़तरा जान ना ख़ौफ नुक़्सान ये कामिल ईमान बे गुमान *वलम यखश इलल्लाह* का निशान बन कर पेश हज्जाज हुआ। सय्यदना सईद को देखते ही चश्मे सुर्ख की निगाह तुंद चहरा ज़र्द गर्दन फलाई और कड़क कर कहा।

हज्जाज:- सईद क़त्ल के लिए तैयार हो जाओ।

इब्ने जबीर:- *वमंय यक़्तुल मोमिनन मुताअम्मिदन फजज़ाहू जहन्नम:-* हज्जा! जिस तरह तू आज मुझे क़त्ल करेगा उसी तरह आखिरत में मैं तुझे क़त्ल करूंगा। *कमा तुदीना तुदाना* मैं तैयार हूँ तू भी तैयार...

कब मौत से डरते हैं ग़ुलामाने मोहम्मद
ये अपने ग़ुलामों पे है एहसान मोहम्मद
हो जाए अगर सर मेरा दो टुकड़े ऐ हज्जाज
पर हाथ से छूटेगा ना दामाने मोहम्मद

Scanned by CamScanner

हज्जाज:- अगर तू चाहे तो तुझे माफ कर दूं वरना क़त्ल कर दूं।

इब्ने जबीर:- मेरी माफी और क़त्ल तेरे हाथ में नहीं अगर क़त्ल हो गया तो मनशा रहमान, अगर बच गया तो अल्लाह का एहसान होगा *नअेम मा क़ील....*

होंटों में वही इश्क़ का पैग़ाम रहेगा
जो काम था वो काम है वो काम रहेगा
अल्लाह की क़सम मर के भी हम ज़िन्दा रहेंगे
क़ातिल तेरे सर पे मगर इलज़ाम रहेगा

हज्जाज:- (आग बगूला होकर) इसे ले जाओ क़त्ल करो.....(जल्लादों से)

जल्लाद सय्यदना इब्ने जबीर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को तख़्त हज्जाज से क़त्ल गाह की तरफ़ ले जा रहे हैं। और हज़रत सय्यदना सईद बिन जबीर दरवाज़ा-ए-दरबार उबूर करते वक़्त तबस्सुम कनाँ हैं। हज्जाज ने ये हालत फ़रहत हुक्म क़त्ल के बाद देखकर ताज्जुब किया। और मस्ती अशकबार में मुसतग़रिक़ होते हुए वापस लाने का हुक्म दिया। वापस लाए गए।

हज्जाज:- (दबदबा दिखाते हुए) सईद! इस बे मौक़े का क्या मतलब?

इब्ने जबीर:-...

हमे ख़ंदम अज़ लुत्फ यज़दान पाक
के मज़लूम रफ़तम ना ज़ालिम बखाक

अल्लाह तआला की इनायत व एहसान पर हंस रहा हूँ के दुनिया से मैं मज़लूम होकर जा रहा हूँ। ज़ालिम होकर नहीं।

हज्जाज:- आख़िर कौन सी चीज़ है के तुझे हंसा रही है।

इब्ने जबीर:- तुझ जैसे मुतकब्बिर की जुर्रात और फिर अल्लाह तआला का हिलम इस ताज्जुब और तहिय्यर ने मुझे हंसाया है।

हज्जाज:- (जल्लादों से) उसे यहाँ मेरे सामने लिटा कर क़त्ल करो। चन्द बे रहम जल्लादों ने निहायत बेरहमी से हज़रत इब्ने जबीर को लिटाया।

इब्ने जबीर:- (ज़मीन पर गिरते ही मंह क़िबला रू करते हुए *वज्जहतू वजहिया लिल्लज़ी फतरस्समावाती वलअर्ज़ा हनीफंव व मा अना मिनल मुशरिकीना।*

हज्जाज:- उसको जकड़ लो ताके मुंह बसुऐ क़िबला ना कर सके।

आप जकड़े गए। और क़िबला से मुंह फिरा कर गिराए गए।

इब्ने जबीर:- (नीचे आते ही)

हज्जाज:- उसे ओंधा करके खंजर चलाना। मुंह के बल किए गए।

Scanned by CamScanner

इब्ने जबीरः- (मुंह के बल होते हुए)

मिनहा ख़लक़नाकुम व फीहा नुईदूकुम व मिनहा नुख़रिजुकुम तारातन उखरा

हज्जाजः- (निहायत बे दर्दी के साथ) क़त्ल कर दो।

इब्ने जबीरः- *इन्नी अशहदूअन्न लाइलाहा इल-लल्लाहू वहदाहू ला शरीका लहू वअन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू*

हज्जाजः- मेरी बात का गवाह रह बरोज़ क़यामत इंशा अल्लाह तुझे मिलूंगा।

गर्दन पर खंजर रखा गया।

इब्ने जबीरः- (दुआ कुनाँ हुए) *अल्लाहुम्मा ला तुसल्लित अला अहादिन यक़्तुलुहू बअदी* ऐ अल्लाह इस ज़ालिम हज्जाज को मेरे क़त्ल करने के बाद और किसी पर क़त्ल करने की ताक़त ना देना। ये दुआ ज़ेरे लब थी के खंजर चलाया गया और रूह क़सर अनसरी से परवाज़ कर गई।

कशतगान खंजर तसलीम रा!
हर ज़मान अज़ ग़ैब जाए दीगर अस्त

इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन

बाद क़त्ल सय्यदना इब्ने जबीर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हज्जाज अपने बाक़ी मांदा दिन हमेशा यही पुकारता रहता *माली वलसईद बिन जबीर*

इब्ने जबीर ने 29 शअबान 95 हि॰ में विसाल फ़रमाया। उनकी शहादत के 15 यौम बाद ऐन उसी दिन हज्जाज को दर्द पेट ने दीवाना किया। मख़्तूत-उल-हवास होकर चिल्लाने लगा। तबीब बुलाया गया। उसने हज्जाज के जिस्म खूब टटोला। मगर मर्ज़ का पता ना लगा आख़िर उसने एक ग़लीज़ बदबूदार गोश्त का टुकड़ा बज़रिया धागा उस ज़ालिम के पेट में लटकाया ताके मर्ज़ की तफ़्तीश करे। चन्द मिनट बाद उसे पेट से बाहर निकाला। तो वो खून आलूदा था। तबीब ने कहा ये दुनियावी मर्ज़ों का मरीज़ नहीं। आसमानी बलाओं का मुब्तला है। शिफा ना मुमकिन है। फी अलजुमला इस मर्ज़ दर्दे शिकम में हज्जाज बिन युसूफ निहायत बुरी मौत के घाट उतरा। (माह तय्यबा अक्तूबर 1961 ई॰)

सबक़:- अल्लाह वालों ने हमेशा हक़ पर इसतक़लाल का मुज़ाहेरा फ़रमाया। और कभी किसी ताग़ौती ताक़त से नहीं डरे और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की दुश्मनी मौजिब हलाक़त है।

हिकायत नम्बर(882) मोतियों का हार

क़ाज़ी अबु बक्र बिन अब्दुल बाक़ी अनसारी पाँचवीं सदी हिजरी के

Scanned by CamScanner

औलिया-ए-उम्मत में से हैं। उन्होंने अपना ये अजीबो ग़रीब वाक़या खुद ही बयान फ़रमाया है। जिसको युसूफ बिन खलील हाफिज़ ने अपने मौज्जम में सनद के साथ नक़्ल किया है और इन्हीं के हवाले से इब्ने रजब ने तबक़ात हनाबला में भी उसको मज़कूर किया है।

बयान फ़रमाते हैं के मैं एक ज़माने में मक्का मौअज़्ज़मा में मुक़ीम था। और फिक्रो तही दस्ती की वजह से फाक़ों पर फाके आते थे। एक दिन जब मैं भूक से बहुत ही बे ताब था और भूक की तकलीफ से निजात हासिल करने के लिए मेरे पास कुछ नहीं था। मुझे एक रेशम की थेली पड़ी हुई मिली। जो रेशमी धागे ही से बंधे हुई थी। मैंने उसको उठा लिया और अपने घर ले आया। खोल के देखा तो उसमें ऐसे नफीस और बैश क़ीमत मोतियों का हार था। जो मेरी चश्म तसव्वुर ने भी कभी नहीं देखे थे मैं उसको घर में रख के बाहर निकला तो देखा के एक साहब वजाहत बुज़ुर्ग अपने गुमशुदा हार के बारे में ऐलान कर रहे हैं। उनके हाथ में रूमाल में बंधी पाँच सौ अशर्फियाँ हैं और वो पुकार के कह रहे हैं के ये अशर्फियाँ मैं अल्लाह के उस बंदे की खिदमत में पेश करूंगा जो मेरा हार कहीं से पा के मुझ तक पहुँचा दे। मुझे बड़ी खुशी हुई और मैंने सोचा के ग़ालिबन वो हार इन्हीं बुज़ुर्ग का है। मैं उनको दे दूं और चूंके मैं उस वक़्त बहुत भूका और सख़्त हाजतमंद हूँ। इसलिए ये रक़म उनसे ले लूं। और अपनी ज़रूरतें उससे पूरी करूं। चुनाँचे मैंने उनसे कहा। आप ज़रा मेरे साथ आईये! वो मेरे साथ मेरे घर आए फिर मेरे दरयाफ़्त करने पर उन्होंने अपनी गुमशुदा थेली और उसके तसमे की ख़ास अलामत बताईं। और बतलाया के हार में कितने मोती हैं और उन मोतियों में क्या खास निशानात हैं? और धागे की क्या ख़ास पहचान है? उन्होंने जो कुछ बताया। उससे मुझे यक़ीन हो गया के ये थेली उन्हीं की है तो मैंने निकाल कर उनकी खिदमत में पेश कर दी। उन्होंने अपने ऐलान के मुताबिक़ पाँच सौ अशर्फियाँ मुझे देनी चाहीं लेकिन अब मेरे दिन ने कहा के इनका लेना ठीक नहीं। चुनाँचे मैंने उनसे अर्ज़ किया के ये आपकी चीज़ और आपकी अमानत थी। मेरा फर्ज़ था के मैं आपको पहुँचाऊँ। अल्लाह तआला ने मेरे लिए इस फर्ज़ की अदायगी आसान फ़रमा दी। मैं उसका कोई मुआवज़ा और बदला नहीं ले सकता। उन्होंने इसरार किया और सख़्त इसरार किया लेकिन मेरा ज़मीर क़बूल करने पर आमादा नहीं हुआ। और अपनी सख़्त भूक और हाजतमंदी के बावजूद मैंने उसको क़बूल ना किया आगे अल्लाह की क़ुद्रत का तमाशा देखिये!

एक मुद्दत के बाद मक्का मौअज़्ज़मा से चला और एक कश्ती पर सवार

Scanned by CamScanner

हुआ जिस पर और भी बहुत से मुसाफिर सवार थे। अल्लाह की शान कश्ती बीच समुंद्र में टूट गई और उसके सारे मुसाफिर एक एक करके समुंद्र में डूब गए मुझ अल्लाह तआला ने बचा लिया और कश्ती के एक टुकड़े पर किसी तरह बैठा रहा। समुंद्र की मौजें कश्ती के टुकड़े या तख़्ते को चलाती और बढ़ाती रहीं एक मुद्दत तक मैं समुंद्र में इस तख़्ते पर रहा और मुझे कुछ ख़बर नहीं थी के मैं कहाँ जा रहा हूँ यहाँ तक के कश्ती के इस तख़्ते ने मुझे एक जज़ीरे में पहुँचा दिया। इस जज़ीरे में मुसलमानों की आबादी थी और मस्जिदें थीं मैं एक मस्जिद में जाकर बैठ गया और क़ुरआन मजीद की तिलावत करने लगा। वहाँ के लोगों ने जब मुझे क़ुरआन मजीद पढ़ते हुए सुना तो उसका चर्चा हुआ तो जज़ीरे के बाशिन्दे एक एक करके मेरे पास आए और सब ने मुझ से इसतदआ की के हम को भी क़ुरआने पाक सिखाओ। मैं उनको क़ुरआन मजीद पढ़ाने और सिखाने लगा। अहले जज़ीरे ने मेरा बड़ा इक्राम किया और तरह तरह की हिदाया और अताया मुझे दिए।

एक दिन इसी मस्जिद में मुझे निहायत खुश खत लिखे हुए क़ुरआन मजीद के कुछ अवराक़ मिले वहाँ के लोगों ने मेरे पास जब अवराक़ देखे तो उन्होंने कहा के मालूम होता है के आप लिखना भी बहुत अच्छा जानते हैं। मैंने कहा के हाँ अल्लाह तआला ने मुझे ये चीज़ भी नसीब फ़रमाई है और मैं ख़त्तात भी हूँ। उन लोगों ने कहा के आप हम को लिखना भी सिखा दीजिए। चुनाँचे जवान और नो उम्र बच्चे खत्ताती सिखने के लिए मेरे पास आने लगे और मेरा और ज़्यादा इक्राम होने लगा और हिदाया और तहायफ से उन्होंने मुझे माला माल कर दिया। कुछ दिनों के बाद वहाँ के लोगों ने मुझ से कहा के हमारे हाँ एक बड़े मौअज़्ज़ज़ और बा सरवत घराने की एक यतीम लड़की है। हम चाहते हैं के उसका निकाह आपसे हो जाए। मैंने इब्तिदा उज़्र किया लेकिन उन्होंने अज़राहे इक्रामो मोहब्बत इसरार किया। यहाँ तक के मैं आमादा हो गया। और बिलआख़िर निकाह हो गया। जब निकाह के बाद लड़की मेरे पास पहुँचाई गई तो मेरी निगाह उसके गले की तरफ़ गई। मैंने देखा के उसके गले में निहायत बैश क़ीमत मोतियों का गोया बऐनही वही हार है जो मक्का मोअज़्ज़मा में मुझे पड़ा हुआ मिला था। और मैंने वो उसके मालिक के हवाले कर दिया था। मैं हैरत और ताज्जुब और ग़ौर के साथ उस हार को देखने लगा, मेरी ये हरकत बड़ी ना मुनासिब समझी गई। के नई बीवी को देखने और उसकी तरफ़ मुतवज्जह होने की बजाए उसके गले में पड़े हुए हार को देख रहा हूँ आखिर मैंने बताया के मैं हार को इसलिए देख

Scanned by CamScanner

रहा हूँ के बिलकुल ऐसा ही बल्के गोया यही हार मैंने मक्का मौअज़्ज़मा में पाया था। और फिर उसके मालिक को वापस दे दिया था। फिर मैंने मक्का मौअज़्ज़मा का वो पूरा क़िस्सा बयान किया। लोगों ने जब वो क़िस्सा मुझ से सुना तो सुबहान अल्लाह और लाइलाहा इल-लल्लाह और अल्लाहू अक्बर उनकी ज़बानों पर जारी हो गया और एक शौर मच गया और फिर उन लोगों ने बताया के बेशक ये वही हार है जो मक्का मौअज़्ज़मा में गुम हो गया था। और तुम ने पाया था और वो साहब वजाहत बुज़ुर्ग जिनको तुम ने वो हार वापस किया था। इस लड़की के वालिद थे। जो हमारे जज़ीरे के बड़े सालेह बुज़ुर्ग थे। उनका अब से कुछ अर्से पहले ही इन्तिक़ाल हुआ है, वो कहा करते थे के मैंने दुनिया में बस एक ही सच्चा मुसलमान मर्द देखा है। जिसने मक्का मौअज़्ज़मा में मेरा हार पाकर मुझे वापस किया था और मैं इसरार से उसको पाँच सौ अशर्फियाँ देना चाहता था। मगर वो क़बूल करने पर आमादा नहीं हुआ। लोगों ने बताया के वो बुज़ुर्ग बराबर ये दुआ किया करते थे के ऐ अल्लाह! किसी तरह अपने उस बन्दे को मेरे पास पहुँचा दे और ऐसी सूरत पैदा फ़रमा दे के मैं अपनी बेटी की उससे शादी करूं और आज हम देख रहे हैं के अल्लाह तआला ने अपने उस सालेह बन्दे की दुआ किस तरह क़बूल फ़रमाई। (माह तय्यबा अगस्त 1965 ई०)

सबक़:- इस वाक़ेये में दो मोमिनाना किरदार उभर कर सामने आते हैं। और उनकी खसूसियत ऐसी हैं के हमें उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा अपने अन्दर पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए। पहला किरदार उस मर्द मोमिन का है। जिसने हार पाया और उसे बिला किसी मुआवज़े के वापस कर दिया। अगर मोमिन अपनी नेकी अमानत और दयानत का कोई बदला किसी बन्दे से लेने पर राज़ी ना हो। तो अल्लाह तआला उसके लिए ग़ैब से आसानियाँ फ़राहम करता है। अल्लाह तआला की ना फ़रमानी से बचते हुए महेज़ उसकी खुशनूदी के लिए बन्दा जब अपने को किसी सख़्ती में मुब्तला कर देता है। और उस पर भरोसा करते हुए परेशानियाँ झेलने के लिए हंसी खुशी तैयार हो जाता हे। तो अल्ला तआला उसके लिए ऐसी ऐसी सूरतों से आसानियाँ फ़राहम करता है के जिन्हें वो कभी सोच भी नहीं सकता। अल्लाह तआला का इर्शाद है के *वमंय यत्ताक़िल्लाहा यजअल्-लहू मख़रजन। व यरज़ुक़ुहू मिन हैसु ला यहतसीबु वमंय यतावक्कलु अलल्लाही फहुवा हस्बुहू* (सूरह-ए-तलाक़) और जो कोई अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करेगा। तो अल्लाह उसके लिए (मुसीबतों से बच निकलने की सूरत पैदा कर देगा। और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देगा। जहाँ

Scanned by CamScanner

से उसे कोई गुमान तक ना होगा। और जो कोई अल्लाह पर भरोसा रखेगा। तो अल्लाह के लिए काफी है।"

दूसरा किरदार उस मोमिन का है। जिसका हार गुम हुआ। अगरचै एक खुशहाल और दौलतमंद शख़्स था। लेकिन अपनी लड़की के रिश्ते के लिए उसने आरज़ू की तो एक खुदा से डरने वाले नेक और मुत्तक़ी शख़्स के लिए आरज़ू की। जिस शख़्स के दिल में जितना ईमान होता है उतना ही उसके दिल में उन लोगों की क़द्र व मंज़िलत होती है। जो सच्चे मोमिन हों। मोमिन की नज़र में इज़्ज़त और बड़ाई का मैयार सिर्फ ईमान और अल्लाह से ताल्लुक़ ही हो सकता है माल व दौलत और नस्ल और खानदान सब उसके बाद की चीज़ें हैं। अगर आपको ये अंदाज़ा करना हो के किसी शख़्स के दिल में असल इज़्ज़त और क़द्र किस चीज़ की है, तो आप ये देखें के वो किस क़िस्म के लोगों को पसंद करता है। और खुद किन की इज़्ज़त और एहत्राम करता है। दौलत का पुजारी हमेशा दौलतमंद को बड़ा समझेगा। और उन ही की इज़्ज़त करेगा। और उनकी क़द्र करेगा। खेलों के शौक़ीन की नज़र में मश्हूर खिलाड़ियों क मुक़ाम बुलंद होगा। और वो उनकी क़द्र करेगा। किसी के दिल में गाने और शैरो शायरी की क़द्र होगी। तो आाप हमेशा उसे गवय्यों और शायरों का तज़करह और उनकी तारीफ करता पायेंगे। इसी तरह जिस शख़्स के दिल में ईमान और अमल सालेह की क़द्रो मंज़िलत होगी। वो हमेशा सच्चे अहले ईमान और अल्लाह के नेक बन्दों का एहत्राम करेगा और उनसे ही उसे दिल लग. ो और मोहब्बत होगी।

हिकायत नम्बर(883) अद्लो इंसाफ

एक दिन सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी हस्बे मामूल दरबार में बैठे हुए थे। वुज़रा और अमरा दस्त बस्ता हाज़िर थे। आम लोग अपनी अपनी अर्ज़ियाँ पेश कर रहे थे। और सुलतान उन पर मुनासिब एहकाम सादिर कर रहे थे के एक शख़्स ने आकर अर्ज़ की मेरी शिकायत निहायत संगीन है। और कुछ इस क़िस्म की है के मैं उसे बरसर दरबार अर्ज़ नहीं कर सकता।

सुलतान मेहमूद ये सुनकर फौरन उठ खड़े हुए और सायल को अपने हमराह खलवत में ले जाकर पूछा के तुम्हें क्या शिकायत है।

सायल ने अर्ज़ किया के एक अर्से से बन्दगान आली के भांजे ने ये तरीक़ा इख़्तियार कर रखा है के वो मुसल्लह होकर मेरे मकान पर आता है और मुझे मार पीट कर बाहर निकाल देता है और खुद जबरन मेरे घर में शब भर दादे ऐश देता है। ग़ज़नी की कोई अदालत ऐसी नहीं। जिसमें मैंने इस ज़ुल्मो तअदी की फ़रयाद ना की हो। लेकिन किसी को इंसाफ करने

Scanned by CamScanner

की जुर्रात नहीं हुई। जब मैं हर तरफ़ से मायूस हो गया। तो आज मजबूरन जहाँ पनाह की बारगाह आलिया में इंसाफ के लिए हाज़िर हुआ हूँ। और शहनशाह आली के बेलाग इंसाफ। परवरी व फ़रयाद रसी और रिआया से बे पनाह शफ़्क़त पर भरोसा करके मैंने अपना हाल अर्ज़ कर दिया है, ख़ालिके हक़ीक़ी ने आपको अपनी मख़लूक़ का मुहाफिज़ और निगहबान बनाया है। क़यामत में रिआया और कमज़ोरों पर मुज़ालिम के आप खुदाऐ क़हार के रूबरू जवाबदह होंगे अगर आपने मेरे हाल पर रहम फ़रमा कर इंसाफ किया तो बेहतर है वरना मैं इस मामले को मुनतक़िम हक़ीक़ी के सपुर्द करके उसके बे रू व रिवायत फैसला तक इन्तिज़ार करूंगा।

सुलतान पर इस वाक़ेये का इतना असर हुआ के वो बे इख़्तियार आबदीदा हो गए और सायल से कहा। तुम अब से पहले मेरे पास क्यों ना आए? तुम ने ना हक़ अब तक ये ज़ुल्म बर्दाश्त किया।"

सायल ने अर्ज़ किया। मैं अर्से से इस कोशिश में लगा हुआ था के किसी तरह बारगाहे सुलतानी तक पहुँच जाऊँ। मगर दरबानों और चौबदारों की क़दग़न ने कामयाब ना होने दिया। खुदा ही जानता है के आज भी मैं किस तदबीर से यहाँ तक पहुँचा हूँ। मुझ से ग़रीबों और मज़लूमों को ये बात कहाँ नसीब है के जब चाहें बेधड़क दरबार सुलतानी में हाज़िर हो जायें और सुलतान को अपने दर्दे दिल की दास्तान सुना सकें।

सुलतान ने सायल को इतमिनान और दिलासा देकर ताकीद की के मुलाक़ात और गुफ़्तगू का किसी से ज़िक्र ना करना और जिस वक़्त भी वो शख़्स तुम्हारे घर आए उसी वक़्त मुझे उसकी इत्तिला कर देना। मैं उसको ऐसी इब्रतनाक सज़ा दूंगा के आईंदा दूसरों को ऐसे मज़ालिम की जुर्रात ना हो सकेगी।

सायल ने अर्ज़ किया के मुझे ऐसे बेकस और बेयारो मददगार के लिए ये क्यों कर मुमकिन हो सकेगा के जब चाहूं बिला किसी मज़ाहेमत के ख़िदमते सुलतानी में हाज़िर हो जाऊँ और आपको मतलअ करूं।"

सुलतान ने ये सुनकर दरबानों को तलब किया और सायल को उनसे रोशनास कराकर हुक्म दिया। के ये शख़्स जिस वक़्त भी आए हमारे पास पहुँचा दिया जाए और किसी तरह की मुज़ाहेमत ना करें।

दो रातें गुज़र गईं। मगर सायल ना आया। सुलतान को तशवीश हुई के ना मालूम ग़रीब मज़लूम को क्या हादसा पेश आया वो इसी फिक्र में ग़लतान था के तीसरी रात को सायल दौड़ता हुआ आस्ताना शाहही पर पहुँचा।

Scanned by CamScanner

इत्तिला मिलते ही सुलतान फीअलफोर बाहर निकला और सायल के हमरा उसके घर पहुँच कर अपनी आँखों से वो सब कुछ देख लिया। जो सायल ने उसे बतलाया था। पलंग के सिरहाने शमा जल रही थी। सुलतान ने शमा गुल करा दी और खुद खंजर निकाल कर उसका सर उड़ा दिया। उसके बाद शमा रोशन कराई। मक़्तूल का चहरा देखकर बेसाख़्ता सुलतान की ज़बान से अलहम्दू लिल्लाह निकला। और फिर बेताबी के साथ उसने सायल से पीने के लिए पानी माँगा। पानी पी कर सुलतान ने सायल से कहा के तुम इतमिनान के साथ अपने घर में आराम करो। अब इंशा अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ ना पहुँचेगी। मेरी वजह से अब तक तुम पर जो मज़ालिम हुए खुदा के लिए उन्हें माफ कर दो। ये कह कर सुलतान रूख़्सत होना चाहता था के सायल ने दामन पकड़ कर अर्ज़ किया के "बंदगान आली ने जिस तरह मज़लूम के साथ इंसाफ फ़रमाया। हत्ता के अपनी क़राबत और खून का भी मत्लक़न ख़याल ना किया। अल्लाह तआला आपको इसकी जज़ाऐ ख़ैर और अज्रे अज़ीम अता फ़रमाए। अगर इजाज़त मरहेमत फ़रमाई जाए तो एक बात मालूम करना चाहता हूँ। वो ये के आपने पहले शमा गुल कराई और फिर रोशन करा कर मक़्तूल का सर देखकर अलहम्दू लिल्लाह फ़रमाया और उसके फौरन बाद पानी तलब फ़रमाया। इसका क्या सबब था?"

सुलतान ने हर चन्द टालना चाहा। मगर सायल के इसरार पर उसे बतलाना पड़ा के शमा गुल कराने का मक़्सद ये था के मुबादा रोशनी में उस शख़्स का चहरा देखकर बहन के खून की मोहब्बत मुझे सज़ा देने से बाज़ रखे और अलहम्दू लिल्लाह कहने का सबब ये था के मक़्तूल ने अपने आप को मेरा भांजा बता कर तुम्हें शाही ताल्लक़ से मरऊब कर के अपने ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को पूरा करने के लिए रास्ता साफ रखना चाहता था। खुदा का हज़ार हज़ार शुक्र है के मेहमूद के मुतअल्लिक़ीन का सफ़ा शर्मनाक बेहूदगी से कोई ताल्लुक़ नहीं है और पानी माँगने की वजह ये थी के जब से तुम ने अपना वाक़ेया सुनाया था मैंने अहद कर लिया था के जब तक तुम्हारा इंसाफ ना कर लूंगा। आबो दाना मुझ पर हराम है। अब चूंके मैंने अपने फर्ज़ से सुबकदोश हो चुका था। और तशंगी का शदीद ग़ल्बा था। इसलिए मैं पानी माँगने पर मजबूर हो गया। (तारीख फरिश्ता बहवाला तारीख़ अंबाऐ गैती)

सबक़:- इस्लाम अद्लो इंसाफ का इल्म बरदार है और जो हाकिम सच्चे मुसलमान होते हैं, वो अपने किसी क़रीबी का भी लिहाज़ नहीं करते और हर हाल में अद्लो इंसाफ ही से काम लेते हैं। और ये भी मालूम हुआ के

Scanned by CamScanner

मुसलमान चाहे कितने बड़े ओहदे पर कयों ना पहुँच जाए। वो जुल्मो सितम के कभी क़रीब नहीं जाता।

हिकायत नम्बर(884) नसीहत

हज़रत शफीक़ बलख़ी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा हारून रशीद से मिले। तो बादशाह ने अर्ज़ की। हुज़ूर! मुझे कुछ नसीहत फ़रमाईये हज़रत शफीक़ ने फ़रमाया।

(1) खुदा तआला ने तुझे सिद्दीक़े अक्बर के मुक़ाम पर बिठाया है। और वो चाहता है के तुम सिद्क़ विरासती से काम लो और

(2) उसने तुझे फारूक़े आज़म के मुक़ाम पर बिठाया है और वो चाहता है क तुम हक़ व बातिल में फर्क़ करो और

(3) उसने तुझे उस्माने ग़नी के मुक़ाम पर बिठाया है और वो चाहता है के तुम शर्मो हया को अपनाओ और

(4) उसने तुझे अली अलमुर्तज़ा के मुक़ाम पर बिठाया है और वो चाहता है के तुम अद्लो इल्म से काम लो और हारून रशीद ने अर्ज़ की कुछ और भी फ़रमाईये तो। फ़रमाया।

अल्लाह तआला ने एक घर बनाया है जिसका नाम जहन्नुम है और तुझे उसने उसके दरवाज़े पर बिठाया है इसलिए ताके तुम लोगों को जहन्नुम से दूर रखो। और उससे दूर रखने के लिए खुदा ने तुझे तीन चीज़ें दी हैं। माल दुर्रा और तलवार और तुझे हुक्म दिया है के ऐ मेरे बन्दे! लोगों को उस घर से उन तीन चीज़ों से दूर रख जो मोहताज आए। उसे माल दे और जो शरीयत की इत्तिबा ना करे उसे दुर्रे के साथ मतीअ बना, और जो ना हक़ क़त्ल करे उसका तलवार के साथ फैसला कर।

हारून रशीद ने कहा। हुज़ूर! कुछ और भी फ़रमाईये फ़रमाया: ऐ बादशाह! तुम दरया हो। और तुम्हारे अमाल नहरें हैं। तुम अगर साफ रहोगे तो नहरें भी साफ रहेंगी और दरया ही अगर गंदा हो गया तो नहरें भी गंदी हो जायेंगी। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 52, जिल्द:2)

सबक़:- साहबे इक्तिदार की ज़िम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं और उसे क़दम क़दम पर मोहतात रहना पड़ता है और अपने बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चलना पड़ता है और ये भी मालूम हुआ के बड़ों के अख़लाक़ व अतवार का छोटों पर असर पड़ता है। इसलिए बड़ों को अच्छा और नेक बनना चाहिए।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(885) रहम दिली

हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने एक शख़्स को एक इलाक़े का हाकिम मुक़र्रर फ़रमाने के लिए कातिब से फ़रमाया के उसकी इमारत के लिए काग़ज़ लिखो। कातिब लिख ही रहा था के एक छोटा बच्चा आया। और हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला की गोद में आ बैठा और हज़रत फारूक़ उससे प्यार करने लगे। वही नामज़द शख़्स जिसकी इमारत के लिए काग़ज़ लिखा जा रहा था। कहने लगा। उसे अमीर-उल-मोमिनीन! मेरे दस बच्चे हैं। मगर मैंने आज तक किसी बच्चे को क़रीब नहीं फटकने दिया और आपने उस बच्चे को गोद में बिठा लिया है। हज़रत फारूक़ ने ये सुनते ही हुक्म दिया के काग़ज़ फाड़ दिया जाए और उसके तक़र्रूर को मनसूख समझा जाए। वो हाकिम बनने का अहल नहीं। उसने पूछा के मेरा क़सूर? तो फ़रमाया: जो शख़्स अपनी औलाद पर रहम नहीं करता। वो रूईय्यत पर कब रहम करेगा। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 58, जिल्द:2)

सबक़:- हाकिम के दिल में रूईय्यत के लिए रहम व शफ़्क़त का होना ज़रूरी है, और संग दिल इस क़ाबिल नहीं के वो हाकिम बने और ये भी मालूम हुआ के हज़रत फारूक़ बड़े रहम दिल थे और रिआया का उन्हें बड़ा ख़याल था। और रिआया का खयाल वही रखता है जिसके दिल में खुदा का ख़ौफ हो। फिर ऐसी मुबारक हस्ती का दुश्मन वही हो सकता है जिसके दिल में खुदा का ख़ौफ ना हो।

हिकायत नम्बर(886) नमाज़ और बालों की आराईश

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के वालिद अब्दुल अज़ीज़ मिस्र के गवरनर थे। उन्होंने अपने लड़के उमर को आला तलीम दिलाने के लिए मदीना में हज़रत सालेह तबिन कीसान की निगरानी में दे दिया। ये सालेह बिन कीसान का फैज़ाने तरबीयत था के बनी उमय्या के खानवादे में वो "फारूक़े सानी" पैदा हुए। जिसने खिलाफत राशिदा को अज़सरे नो ज़िन्दा कर दिया। सालेह बिन कीसन ने किस एहतिमाम से उनकी तरबीयत की। उसका अंदाज़ा इससे हो सकता है के एक मर्तबा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने नमाज़ में देर कर दी।

"तुमने आज नमाज़ में देर क्यों कर दी?" खुदा परस्त उस्ताद ने बाज़ पुर्स करते हुए पूछा।

"बाल संवार रहा था। इसलिए ज़रा देर हो गई।" शागिंद ने अदब से जवाब दिया।

Scanned by CamScanner

"अच्छा, अब बालों की आराईश में इतना शग़फ हो गया के उसको नमाज़ पर तरजीह दी जाती है" शफीक उस्ताद ने डांटते हुए कहा।

उसके बाद उनके वालिद को उस्ताद ने ये वाक़ेया लिख भेजा अब्दुल अज़ीज़ को ये मालूम हुआ। तो उसी वक़्त एक आदमी को मिस्र से मदीना रवाना किया। जिसने आकर सबसे पहले उनके सर के बाल मुंडे, उसके बाद किसी से बात चीज की। उम्र के वालिद का यही हुक्म था।

हुस्ने तरबीयत का यही एहतिमाम था जिसने अम्वी खानदान के एक नाज़ परवर्दा शहज़ादे को "हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह, बना दिया। जिनके मुतअल्लिक़ इमाम अहमद बिन हंबल की राय है के वो पहली सदी के मुजद्दिद थे। (यादें माज़ी, सफ़ा 25)"

सबक़:- शफीक़ उस्ताद वही है, जो शार्गिर्द का दीन भी संवारे सिर्फ दुनिया ही ना बनाए।

हिकायत नम्बर(887) मच्छर का खून

यज़ीद बिन अबी हबीब, जो मिस्र के एक मुमताज़ हाफिज़ हदीस थे। एक मर्तबा बीमार पड़े। अयादत के लिए अमीरे मिस्र होसरह बिन सुहैल हाज़िरे ख़िदमत हुआ और कहने लगा। हज़रत एक मसला तो बताईये जिस कपड़े में मच्छर का खून लगा हो। उसमें नमाज़ अदा हो जाती है या नहीं?" हज़रत यज़ीद बिन अबी हबीब ने ये सुनकर मुंह फैर लिया और गुफ़्तगू बन्द कर दी। उनकी नागवारी-ए-ख़ातिर को महसूस करके होसरह उठ गया। उसको उठते देखकर यज़ीद ने फ़रमाया "रोज़ाना ख़ल्क़े खुदा का खून करते हो और मुझ से मच्छर के खून के मुतअल्लिक़ मसला पूछते हो।" (यादे माज़ी, सफ़ा 25)

सबक़:- अल्लाह वाले हक़ बात जाबित बादशाह के सामने भी कह देते हैं।

हिकायत नम्बर(888) मसावात

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने मामूल के मुताबिक़ अय्यामे खिलाफत में छोटी आस्तीन और ऊँचे दामन का कुर्ता पहने और मामूली कपड़े का तहबन्द बांधे बाज़ार में जा रहे थे। अमीर-उल-मोमिनीन को देखकर एक शख़्स रूक गया और फिर ताज़ीम के तौर पर उनके पीछे पीछे हो लिया। हज़रत अली ने उससे कहा।

"मेरे बराबर बराबर चलो।"

"अमीर-उल-मोमिनीन, मैं एहत्राम व ताज़ीम के तौर पर आपके पीछे

Scanned by CamScanner

चल रहा हूँ।" उस शख़्स ने उज़्र करते हुए अर्ज़ किया।

"एहत्राम व ताज़ीम का ये तरीक़ा दुरूस्त नहीं। इसमें हुकमुरान के लिए फितना और मोमिन के लिए ज़िल्लत है।" अमीर-उल-मोमिनीन ने फ़रमाया और उस शख़्स को अपने बराबर चलने पर मजबूर कर दिया। (यादे माज़ी, 26)

सबक़:- जिन्हें अल्लाह बड़ाई देता है। वो तवाज़ौ इख़्तियार करते हैं।

हिकायत नम्बर(889) माज़रत

यज़ीद बिन मोहलिब वाली-ए-खरासान को एक जामअे अलसिफात शख़्श की ज़रूरत थी। उसने लोगों से ऐसे आदमी को दरयाफ़्त किया। लोगों ने अबु बर्दा का नाम लिया। जो हज़रत अबु मूसा अशअरी के बेटे। और बड़े साहबे कमाल बुज़ुर्ग थे। यज़ीद ने उनको बुलाया। बातें की। और फी अलवाक़ै ख़सायले हस्ना का मजमुआ पाया और कहा। "मैं आपको चन्द ओहदों पर मामूर करना चाहता हूँ।" और इन ओहदों की तफसील बताई।

"मैं इस खिदमत से माज़रत चाहता हूँ" अबु हुरैरा ने जवाब दिया।

"नहीं" आपको वो खिदमत क़बूल करने होगी। यज़ीद ने इसरार से कहा।

"मेरे वालिद अबु मूसा अशअरी ने मुझ से बयान किया था के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम फ़रमाते थे के जिस शख़्स रे कोई ऐसा अहद क़बूल किया जिसके मुतअल्लिक़ वो खुद जानता है के वो इसका अहल नहीं तो उसको चाहिए के वो दोज़ख़ को अपना ठिकाना बना ले।" ये सुन कर यज़ीद मजबूर हो गया और उनकी माज़रत क़बूल कर ली। (यादे माज़ी, सफ़ा 26)

सबक़:- अल्लाह वाले दुनयवी ओहदों के पीछे नहीं पड़ते।

हिकायत नम्बर(890) ज़हरीला फौड़ा

हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर, अब्दुल मलिक के पास गए हुए थे। एक रोज़ वो अपने लड़के को हमराह लेकर शाही असतबल देखने गए। ये लड़का एक घोड़े पर सवार हुआ। जिसने उसे पटख दिया। और उसके सदमे से वो जाँ बहक़ हो गया। उसके बाद ही उरवा के पाँव में एक निहायत ज़ेहरीला फोड़ा हो गया। अत्तिबा ने कहा "पाँव काट देना चाहिए। वरना ज़हर सारे जिस्म में फैल कर हलाकत का बाइस होगा।"

हज़रत उरवा ने अपना पाँव कटवाने के लिए बढ़ा दिया। तबीब ने कहा "थोड़ी सी शराब पी लीजिए ताके तकलीफ का अहसास कम हो।"

Scanned by CamScanner

"जिस मर्ज़ में मुझ को सेहत की उम्मीद भी हो। मैं उसमें भी हराम शै से मदद नहीं लूंगा।" हज़रत उरवा ने जवाब दिया।

तबीब ने औज़ारों से पाँव काट दिया। हज़रत उरवा निहायत इसतक़लाल से बैठे रहे और ज़बान तस्बीह व तहलील में मशग़ूल रही। जब खून बन्द करने के लिए ज़ख़्म को दाग़ा गया तो दर्द की शिद्दत से बेहोश हो गए। जब होश में आए तो कटा हुआ पाँव मंगा कर देखा और उलट पलट कर उससे फ़रमाया।

"इस ज़ात की क़सम जिसने तुझ से मेरा बोझ उठवाया। उसको खूब मालूम है के मैं तेरे साथ किसी हराम रास्ते पर गामज़न नहीं हुआ।" बेटे के इन्तिक़ाल और पाँव कटने की मुसीबत पर भी अल्लाह का शुक्र करते और कहते।

"अल्लाह तेरा शुक्र है के मेरे चार हाथ पाँव में से तूने एक ही लिया और तीन बाक़ी रखे अगर तूने कुछ लिया है तो बहुत कुछ बाक़ी रखा है। अगर कुछ मुसीबत में मुब्तला किया है। तो बहुत दिनों आफियत में भी रख चुका है।"(यादे माज़ी, सफ़ा 27)

सबक़:- अल्लाह वाले हर हाल में खुश और राज़ी बरज़ाऐ हक़ रहते हैं। और हराम चीज़ से हर हाल में बचते हैं।

हिकायत नम्बर(891) बुराई का बदला

सुलतान-उल-मशायख़ मेहबूबे इलाही हज़रत निज़ाम-उद्दीद औलिया रहमत-उल्लाह अलेह ने एक रोज़ अपने एक मुरीद से इर्शाद फ़रमाया के अगर किसी ने तेरी ईज़ा के लिए रास्ते में कांटे रखे हों। तो तू उसे रास्ते से हटा दे और अगर तूने भी उसके जवाब में उसके रास्ते कांटे बिछाये तो फिर तमाम दुनिया कांटे ही कांटे हो जायेंगे....

हर के मारा यार ना शदायफ्द औरा यार बाद
हर के मारा रंज बदहद राहतश बसयार बाद
हर के ओखारे नहद दरराहे मा अज़दुश्मनी
या इलाही गुलशन ओ दायमा। बे खार बाद

(मुग़नी-उल-वअज़ैन, सफ़ा 21)

सबक़:- बुराई का बदला हत्ता-उल-इमकान अफ़्वो करम और नेकी से दुनिया चाहिए।

हिकायत नम्बर(892) दुनिया की हैसियत

एक बादशाह ने किसी अल्लाह वाले को अपने महल के साये में बैठा

Scanned by CamScanner

देखा। जिसने सूखा टुकड़ा पानी में डाल कर खाया। और फिर सो गया। जब उठा तो बादशाह ने उसे बुलवाया और पूछा। जब तूने पानी के साथ सूखा टुकड़ा खाया। और फिर सो गया था। क्या तू अपने परवरदिगार से खुश था। उसने कहा। हाँ! लेकिन मैं तुझे वो शख़्स बतलाता हूँ, जो उससे भी कम पर खुश हो गया! बादशाह ने कहा, वो कौन है? उसने कहा जो आख़िरत के बदले दुनिया पर खुश हो गया। ये अलफाज़ बादशाह पर कारगर हो गए। और रोने लगा। (मुग़नी-उल-वअज़ैन, सफ़ा 20)

सबक़:- ये दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में रोटी के एक सूखे टुकड़े से भी कम हैसियत रखती है। फिर जो लोग आखिरत को भूल कर इस दुनिया के पीछे पड़े हुए हैं। किस क़द्र बेख़बर और नादान हैं।

हिकायत नम्बर(893) ग़ाफिल इंसान की हक़ीक़त

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से किसी ने पूछा। ये क्या बात है के जब हम बैत-उल-खला जाते हैं। तो पाखाने की तरफ़ से आँखों को रोक नहीं सकते और उसको देखते हैं। गोया ये बताया जाता है के देखा जिस चीज़ में तू बुख़्ल करता था। अब क्या हो गई? और तेरी असलीयत ये ग़लाज़त व नजासत है। जिस पर तो नाज़ाँ है। इस मामले में हैवानात तुझ से बदर्जहा अफ़्ज़ल हैं। जिनका गोबर भी कार आमद व कम नजिस है। (मुग़नी-उल-वअज़ैन, सफ़ा 20)

सबक़:- मालो मताअ दुनिया की हक़ीक़त ग़लाज़त ही है के फिर इस ग़लाज़त से दिल लगा लेना और हक़ूक़ उल्लाह व हक़ूक़-उल-इबाद अदा ना करना क्यों ना आक़बत अंदेशी और नादानी ना हो।

हिकायत नम्बर(894) सहाबा इक्राम

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से किसी ने पूछा। हज़रत अलक़मा सहाबी अफ़्ज़ल हैं। या हज़रत असवद रज़ी अल्लाहो अन्हुमा। हज़रत इमाम आज़म ने फ़रमाया। खुदा की क़सम हम तो इस लायक़ नहीं के उनका ज़िक्र भी करें। फिर उनमें मवाज़ना कैसे कर सकते हैं? (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 20)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान सभी हमारे लिए वाजिब-उल-ताज़ीम हैं। और हम जैसों का मुंह इस क़ाबिल नहीं के उनका नामे पाक भी लें। फिर अगर उन पाक लोगों

Scanned by CamScanner

की बज़अम खवैश बुराईयाँ बयान की जाने लगीं तो किस क़द्र ज़ुल्म है।

हिकायत नम्बर(895) नेक काम में खर्च

हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाह तआला का लंगर खाना हर आम व खास के लिए खुला रहता था। जिसमें बड़े बड़े नफीस व लज़ीज़ खाने पकाए जाते थे। जिसकी वजह से लंगर का खर्च बहुत बढ़ गया था। इन इखराजात कसीर को देखकर किसी ने आपसे कहा

ला ख़ैरा फिल इसराफ

यानी फिज़ूल खर्ची में कोई नेकी नहीं है।

आपने फिल बदीहा जवाब दिया।

ला इसराफा फिल ख़ैर

यानी नेकी में कोई फिज़ूल खर्ची नहीं है। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 21)

सबक़:- नेक कामों मसलन महफिल मीलाद, जलूस मीलाद वग़ैरा में जिस क़द्र भी खर्च किया जाए, ये फिज़ूल खर्ची हर गिज़ नहीं है।

हिकायत नम्बर(896) दुनिया का घर

मिर्ज़ा मज़हर जान जानाँ देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह तमाम उम्र किराया के मकान में रहे। एक दफा किसी ने कहा। आप अपना घर क्यों नहीं बना लेते। फ़रमाया। छोड़ जाने को अपना और ग़ैर का घर दोनों बराबर हैं। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 21)

सबक़:- दुनिया फानी में कितना मज़बूत और बुलंद मकान भी बनवा लो आख़िर एक दिन उसे खाली करना ही पड़ेगा।

हिकायत नम्बर(897) बुज़ुर्गों की नज़र

हज़रत जुनैद रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक रोज़ एक शख़्स आया। और कहा। हज़रत आपका वअज़ शहर ही काम करता है। या जंगल में भी कुछ तासीर बख़्शता है? आपने हाल पूछा, तो उसने बताया के चन्द अश्खास फलाँ मुक़ाम पर जंगल के अन्दर मसरूफे रक़्स व सरवर हैं और शराब के नशे में भी मख़मूर हैं। आपने उसी वक़्त मुंह लपेट कर जंगल की राह ली। जब वो क़रीब पहुँचे। तो वो लोग भागने लगे। फ़रमाया भोगो नहीं। मैं भी तुम्हारा हम मुशरिब हूँ। हमारे लिए भी लाओ। वो बोले अब तो ख़त्म हो गई है। फ़रमाया। तो आओ मैं तैयार करके दिखा दूं। एक काम तुम्हें सिखा जाता

Scanned by CamScanner

हूँ। उससे शराब खुद ब खुद आ जाया करगी और वो होगी भी बहुत अच्छी। वो लोग शायक़ हुए और आपने फ़रमाया। पहले तुम सब अपने कपड़े बदलो। सबने ग़ुस्ल किया और कपड़े धोऐ और पाक व साफ होकर आ गए। तब फ़रमाया के सब दो दो रकअत नमाज़ पढ़ो वो नमाज़ में मशग़ूल हुए। तो आपने दुआ माँगी के बारे खुदाया मेरा तो इतना ही काम था के तेरे हुज़ूर उनको खड़ा कर दिया। अब तू चाहे उनको गुमराह रख, चाहे हिदायत बख़्श। चुनाँचे आपकी दुआ क़बूल हुई। और वो सब हिदायत कामिल से बेहरावर हो गए। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 21)

सबक़:-

ना किताबों से ना कालिज के है दर से पैदा
दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा

हिकायत नम्बर(898) क़ब्रिस्तान

हज़रत बहलूल रहमत-उल्लाह अलेह क़बिस्तान में रहते थे एक दिन हज़रत सरी सक़्ता अलेह अर्रहमा ने उनसे कहा। आप शहर में क्यों क़याम नहीं करते? जवाब दिया के मैं ऐसे लोगों के पास रहता हूँ के अगर उनके पास बैठता हूँ तो मुझे तकलीफ नहीं पहुँचाते। और अगर उनसे ग़ायब होता हूँ तो ग़ीबत नहीं करते। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 21)

सबक़:- किसी को दुख देने और किसी की ग़ीबत करने से बेहतर है के आदमी मर जाये।

हिकायत नम्बर(899) माहान अरमनी

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह सौ आदमियों को अपने साथ लेकर माहान अरमनी के दरबान में तशरीफ़ ले गए। माहान अरमनी के पास दस लाख फौज थी उसने दरबार में रेशम का फर्श बिछाया हुआ था। हज़रत ख़ालिद वहाँ पहुँचे। तो आपने उसके फर्श को उठा दिया। माहान ने पूछा। ऐ ख़ालिद! मैंने तो तुम्हारी इज़्ज़त के लिए ये फर्श बिछाया था। मगर तुम ने उठा दिया? हज़रत ख़ालिद ने जवाब दिया। खुदा तआला का बिछाया हुआ फर्श तेरे फर्श से बहुत अच्छा है। माहान ने कहा। ऐ ख़ालिद! मैं चाहता हूँ के तुझे अपना भाई बना लूं। हज़रत ख़ालिद ने फ़रमाया बड़ी खुशी की बात है *ला इलाहा इल-लल्लाह मोहम्मदुर रसूल अल्लाह* पढ़ लो। ताके मेरे भाई बन जाओ। माहान ने कहा। ये बात नहीं हो सकती। हज़रत खालिद ने फ़रमाया। यही

Scanned by CamScanner

कलमा ना पढ़ने की वजह से तो हम ने अपनी हक़ीक़ी भाईयों को भी छोड़ दिया है। फिर तुम्हें कैसे भाई बना लूं।

फिर हज़रत ख़ालिद ने फ़रमाया: माहान! तू मुसलमान हो जा। वरना वो दिल क़रीब है के तू अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर के सामने इस तरह हाज़िर किया जाएगा के तेरे गले में रस्सी होगी। और तुझ को एक शख़्स घसीटता होगा। माहान ने ये बात सुनी। तो ग़ुस्से से आग बगूला हो गया। और हुक्म दिया के पकड़ लो इन लोगों को। हज़रत ख़ालिद फौरन खड़े हो गए और अपने साथियों से फ़रमाने लगें ख़बरदार! अब एक दूसरे को मत देखना। अब इंशा अल्लाह होज़े कोसर पर मुलाक़ात होगी और फौरन तलवारें खींच लीं। ये सूरत देखकर माहान डर गया और कहने लगा के ख़ालिद! मैं तो मज़ाक़ कर रहा था। हज़रत ख़ालिद वहीं बैठ गए (तारीख़े इस्लाम, सफ़ा 77)

सबक़:- मुसलमान अपने अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरता और कुफ़्फार की कसरत उसकी नज़र में कोई चीज़ नहीं और अल्लाह की राह में कट मरने को ये हर वक़्त तैयार रहता है। और ये भी मालूम हुआ के दुनयवी शानो शौकत और दुनयवी ऐशो इशरत से मुसलमान बे नियाज़ रहता है और हर हाल में उसकी नज़र अपने अल्लाह पर रहती है।

हिकायत नम्बर(900) गवाही

हज़रत युसूफ अलेहिस्सलाम मिस्र के बादशाह बने। तो उस वक़्त आपको अपने लिए एक वज़ीर की ज़रूरत पड़ी। जिब्राईले अमीन ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया के खुदा तआला फ़रमाता है के कल सुबह शहर से बाहर आप तशरीफ़ ले जायें जिस शख़्स को सबसे पहले शहर में दाखिल होता देखें उसे अपना वज़ीर बना लें। चुनाँचे हज़रत युसूफ अलेहिस्सलाम दूसरे रोज़ सुबह बाहर तशरीफ़ ले गए। तो देखा के एक खूबसूरत नोजवान सर पर लकड़ियों का गठ्ठा उठाए शहर में दाखिल हो रहा है। सब से पहले वही नोजवान नज़र आया। जो शहर में दाखिल हो रहा था। हज़रत युसूफ अलेहिस्सलाम बड़े हैरान हुए और सोचने लगे के क्या यही शख़्स मेरा वज़ीर बनेगा? इतने में जिब्राईले अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया।

हुज़ूर! ये वही बच्चा है जिसने पंघूड़े में आपकी असमत की गवाही दी थी। अल्लाह तआला ने उसकी इसी खिदमत के सिले में उसे आपकी विज़ारत के लिए मुंतख़िब फ़रमाया है। चुनाँचे हज़रत युसूफ अलेहिस्सलाम ने उस नोजवान को अपना वज़ीर बना लिया। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 138)

Scanned by CamScanner

सबक़:- जिस बच्चे ने हज़रत युसूफ अलेहिस्सलाम की असमत की गवाही दी, वो इतनी इज्ज़त व शराफत से नवाज़ा गया। तो जो शख़्स अल्लाह तआला की तौहीद और उसके मेहबूब की रिसालत की गवाही देगा। वो क्यों ना कल क़यामत के रोज़ उससे भी ज़्यादा इज्ज़त व शराफत का मुसतहिक़ होगा।

हिकायत नम्बर(901) मसमरीज़म

एक बादशाह अफ़लातून के पास आया। और कहने लगा के आप इस तरह सबसे अलग रहते हैं। आप हमारे हाँ तशरीफ़ ले चलिए। हम आपकी खलवत के लिए उम्दा इन्तिज़ाम कर देंगे। अफलातून ने इंकार कर दिया। बादशाह ने इसरार किया। अफलातून ने कहा। अच्छा पहले आपकी दावत है, बादशाह ने अपने जी में कहा के उसके दिमाग़ में खलल है। ये दावत करेंगे? ख़ैर क़बूल किया। उसके बाद अफलातून ने कहा के दावत मअे आपके लश्कर के है बादशाह को बड़ा ही ताज्जुब हुआ। और अब तो क़रीब यक़ीन हो गया के ये मजनूँ है ख़ैर ये भी मंज़ूर किया। पूछा किस दिन है। कहा फलाँ दिन! जब वो दिन हुआ, बादशाह मअे अपने लश्कर के उस पहाड़ की तरफ़ चला। देखा कई मील से बड़े सामान हैं। नक़ीब और चौबदार भी कुछ हैं। ख़ैर यहाँ पहुँचा। तो ऐसा सामान देखा जो कभी उससे पहले ना देखा था। खुद्दाम निहायत इक्राम से बादशाह को मअे लश्कर के ले गए। खाना खिलाया गया। उसके बाद हर शख़्स को एक एक कमरा उसके मर्तबे के मुताबिक़ आरास्ता और एक एक औरत शब बाशी के लिए दी गई। बादशाह को ये सब देखकर ताज्जुब बढ़ता गया...

ऐं चै मे बेनम बैदारी अस्त या रब या बख़्वाब

सुबह को आँख खुली तो ना वो कमरे है ना वो औरत कपड़े गंदे, घास का पोला बग़ल में दबा हुआ। भूक के मारे उठा नहीं जाता। तो क्या था? अफलातून ने फक़्त खयाल किया था के उनके दिमाग़ में ये सूरतें समा गईं। मसमरीज़म की क़ुव्वत थी। लाखों आदमियों के दिमाग़ में एक दम से इतना बड़ा तसर्रूफ कर दिया।

(मोलवी अशरफ़ अली साहब की किताब रूह-उल-जवार, सफ़ा 21)

सबक़:- मोलवी अशरफ़ अली साहब की लिखी हुई इस हिकायत से मालूम हुआ के इंसान में बड़ी बड़ी ताक़तें पौशीदा हैं। अहले फन अफ्राद जब अपनी ताक़तों को बरवऐ कार लाते हैं, तो देखने वाले दंग रह जाते हैं। ये तो अफलातून का तसर्रूफ था। जो उसे मसमरीज़म की बदौलत हासिल था। फिर वो पाक जिनका ताल्लुक़ खुदाऐ ज़ुलजलाल से है और जिनके पास दौलत

Scanned by CamScanner

इर्फान है। उनके तसर्रूफात का इंकार क्यों गुमराही ना होगी? और उन अल्लाह वालों के आक़ा मौला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिनकी ज़ाते ग्रामी मुनब्बै जुमला कमालात है। अगर कोई शख़्स उनके मुतअल्लिक़ यूं कहने लगे के "नबी के चाहने से कुछ नहीं होता।" तो अंदाज़ा कर लीजिए के ऐसा शख़्स कितना बड़ा जाहिल व गुमराह है। और ये भी मालूम हुआ के इस दुनिया के जुमला मनाज़िर ऐश व इशरत महेज एक वाहिमा और फानी मनाज़िर हैं। कल क़यामत के रोज़ जब आँख खुलेगी तो इस दुनिया की कोई चीज़ साथ ना होगी। ना ये मकान होंगे ना ये सामान बल्के आयत *लक़द जिऐतुमुना फुरादी कमा खलक़नाकुम अव्वल मर्रातीं* के मुताबिक़ कुछ भी साथ ना रहेगा। इसलिए शायर ने लिखा है के...

कितना ऊँचा क़स्र दुनिया को बना ले जाओगे
कितनी गहरी उसकी बुनियादें खुदा ले जाओगे
कितना अर्ज़ व तूल में उसको बढ़ा ले जाओगे
खींच कर उसका कहाँ तक सिलसिला ले जाओगे
उसको क्या चलती दफा सर पर उठाते ले जाओगे
आए थे क्या लाए थे जाओगे क्या ले जाओगे

हिकायत नम्बर(902) एक बुज़ुर्ग

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं के हम चन्द अफ़्राद क़ाहिरा जा रहे थे। रास्ते में हमारे एक बुज़ुर्ग साथी जिनका नाम शेख अमीन-उद्दीन था। उनका विसाल हो गया। क़ाहिरा नज़दीक ही था के हम ने उनकी मईयत को उठाया और शहर में दाखिल होने के लिए एक दरवाज़े के पास पहुँचे तो पेहरेदारों ने रोका। और कहा मईयत अन्दर नहीं जा सकती।

फरफ़अश्शेखू इसबआहू वयदाहू क़ददा खलना

हज़रत शेख अमीन-उद्दीन ने अपनी उंगली और हाथ उठा दिया तो हम शहर में दाखिल हो गए।(शरह अलसदूर-उल-इमाम सयूती रहमत-उल्लाह अलेह, सफ़ा 86)

सबक़:- अल्लाह वाले विसाल के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं। और ये भी मालूम हुआ के जो बातें हम करें, वो इन बातों को भी सुनते हैं।

हिकायत नम्बर(903) एक शहीद

हज़रत ज़ैन-उद्दीद बोशी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मनसूरह की लड़ाई में इसाईयों ने कुछ मुसलमान पकड़ लिए और उन्हें क़ैदी बना लिया। इन क़ैदियों में हज़रत अब्दुर्रहमान फक़ीह भी थे। वो क़ुरआन की

Scanned by CamScanner

तिलावत कर रहे थे, और आपने ये आयत भी पढ़ी।

वला तहसाबन्नल्लज़ीना क़ुतीलू फी सबीलिल्लाही अमवातन बल अहयाउन इंदा रब्बीहिम युरज़क़ूना

यानी जो अल्लाह की राह में क़त्ल कर दिए जायें उन्हें मुर्दा मत समझो, बल्के वो अपने अल्लाह के नज़दीक ज़िन्दा हैं और रिज़्क़ दिए जाते हैं।

उसके बाद इसाईयों ने जब हज़रत अब्दुर्रहमान फक़ीह को भी क़त्ल कर दिया तो एक इसाई सरदार उनकी नअश के पास आकर कहने लगा। "ऐ मुसलमानों के बुज़ुर्ग! तुम कहा करते थे।"

वला तहसाबन्नल्लज़ीना क़ुतीलु फी सबीलिल्लाही अमवातन बल अहयाउन इंदा रब्बीहिम अल्लाह की राह में क़त्ल होने वाले ज़िन्दा हैं बताओ ज़िन्दगी कहाँ गई?

फरफ़ाअल फक़ीहू राअसाहू क़ाला हय्यू व रब्बिल काबती हज़रत फक़ीह ने अपना सर उठाया और फ़रमाया: ज़िन्दा हूँ रब्बे कअबा की क़सम!

इसाई ये सुनकर हैरान रह गया और घोड़े से उतर कर आपका मुंह चूमने लगा और अपने सिपाहियों से उठवा कर आपको अपने शहर में ले गया। (शरह-अल-सदूर, सफ़ा 86)

सबक़:- शौहदा इक्राम ज़िन्दा होते हैं। उन्हें मुर्दा समझना भी ममनू है और मुसलमानों का उनके ज़िन्दा होने पर ईमान है और ये भी मालूम हुआ के इन्तिक़ाल फ़रमाने के बाद भी ये अल्लाह वाले सुनते हैं। और बअज़ अवक़ात जवाब भी दे देते हैं।

हिकायत नम्बर(904) ज़िन्दा ज़िन्दा ही हैं

हज़रत अबु सईद ख़राज़ा रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैं मक्का मोअज़्ज़मा में था। एक रोज़ बाब बनी शीबा में मैंने एक नोजवान की मईयत को देखा, मैंने जब उसकी तरफ़ नज़र की तो नोजवान मईयत ने तबस्सुम फ़रमा कर मुझ से खिताब फ़रमाया। और कहा:

या अबा सईदिन अमा सलीमुत इन्ना इल्ला हया अहयाउन व इन मातू व इन्नामा यनक़ुलुना मिन वादिन इला वादिन

ऐ अबु सईद! क्या आप नहीं जानते के ज़िन्दा ज़िन्दा ही हैं। अगरचै मर जायें वो तो सिर्फ एक घर से दूसरे घर में मुंतक़िल होते हैं। (शरह-अल-सदूर, सफ़ा 86)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह वाले मरने के बाद भी ज़िन्दा ही हैं इसलिए वो ज़िन्दा ज़िन्दा ही हैं, और जो मुर्दा हैं वो जीते ही भी मुर्दा ही हैं। इसलिए के मुर्दा ही हैं पस उन अल्लाह वालों का मरना सिर्फ इसी क़द्र है के एक घर से दूसरे घर चले गए..

Scanned by CamScanner

कौन कहता है के मोमिन मर गए
क़ैद से छूटे वो अपने घर गए

हिकायत नम्बर(905) दायाँ हाथ

हज़रत इब्राहीम बिन शीबान फ़रमाते हैं। मेरे पास एक बड़ा मुखलिस नोजवान रहता था। जो बड़ा खुदा याद और नेक नीयत इंसान था। उसका इन्तिक़ाल हो गया। तो मैंने कहा मैं उसे ग़ुस्ल आप दूंगा चुनाँचे जब उसे ग़ुस्ल देने लगा। तो परेशानी के बाइस ग़लती से उसका बायाँ हाथ पकड़ के बायें तरफ़ से ग़ुस्ल शुरू करने लगा। अचानक उस नोजवान ने अपना बायाँ हाथ खींच लिया। और दायाँ हाथ आगे कर दिया। मैंने कहा बेशक! ऐ बेटा! तू सच्चा है। और ग़लती मेरी है। (शर-उल-सदूर, सफ़ा 86)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दे मरने के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं। और जो उन्हें मुर्दा समझते हैं ये उनकी ग़लती है। ऐसे लोग खुद ही मुर्दा होते हैं।

हिकायत नम्बर(906) कल की बात

हज़रत अबु याक़ूब सूसी अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं के मेरा एक मुरीद मक्का मोअज़्ज़मा में मेरे पास आया और कहने लगा: ऐ मेरे उस्ताद! मैं कल ज़ौहर की वक़्त मर जाऊँगा। ये एक दीनार लीजिए, आधे दीनार से मेरे कफन का इन्तिज़ाम करना और आधे से क़ब्र खुदवाने का। दूसरा दिन हुआ तो ज़ौहर के वक़्त मेरे उस मुरीद ने कअबा का तवाफ किया और फिर दूर जाकर लेट गया और फौत हो गया। फिर मैं जब उसे लहद में उतारने लगा। तो मैंने देखा के उसने आँखें खोल दी हैं। मैंने कहा मरने के बाद ज़िन्दगी? तो उसने जवाब दिया।

अना मुहिब्बुन व कुल्लु मुहिब्बुल्लाही हय्युन

मैंमुहिब्ब हूँऔर अल्लाह का हर मुहिब्ब ज़िन्दा है।(शरह-अल-सदूर, सफ़ा 86)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह की मोहब्बत रखने वाले मरते नहीं। मरते वो हैं जो अल्लाह वालों के बुग्ज़ व अनाद में जीते हैं और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ग़ुलामों के ग़ुलामों को भी ये इल्म हो जाता है के कल क्या होना है। फिर खुद आक़ा मौला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए यूं कहना के उन्हें कल की ख़बर ना थी। कितनी बड़ी बे इल्मी और जहालत की दलील है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(907) हज़रत उमैर की कहानी

हज़रत उमैर अपने चन्द साथियों समेत इसाईयों की गिरफ़्त में आ गए और शाहे रोम के दरबार में पेश किए गए। शाहे रोम ने हुक्म दिया के सब को क़त्ल कर दिया जाए। चुनाँचे एक एक करके मुसलमानों को क़त्ल कर दिया गया हज़रत उमैर की बारी आई। तो एक पादरी उठा और उसने शाहे रोम के हाथ चूम कर अर्ज़ की के इसे क़त्ल ना कीजिए। बल्के मेरे हवाले कर दीजिए। मैं इसे अपने दीन में ले आऊँगा। चुनाँचे शाहे रोम के हुक्म से उमैर इस पादरी के हवाले कर दिए गए। पादरी हज़रत उमैर को घर लाया और अपनी जवान लड़की को उनके सामने बिठा कर कहने लगा:

"ममलिकत में मेरी बहुत बड़ी इज़्ज़त है मैं तुझे बहुत सा माल भी दूंगा और अपनी ये लड़की भी तुम्हारे निकाह में दे दूंगा। तुम इसाई हो जाओ।"

हज़रत उमैर ने फ़रमाया। मैं दुनिया की ख़ातिर दीन हर गिज़ ना छोड़ूंगा। कुछ रोज़ वो पादरी यही लालच दे देकर हज़रत उमैर को बहकाता रहा। और कोशिश करता रहा के उमैर अपना दीन छोड़ दें मगर हज़रत उमैर का यही जवाब था के....

ये वो नशा नहीं जिसे तुर्शी उतार दे

एक रात पादरी की लड़की ने हज़रत उमैर को एक बाग़ में बुलाया। और कहने लगी। तुम इसाई क्यों नहीं हो जाते हज़रत उमैर बोले। मैं माले दुनिया और औरत की ख़ातिर अपनी आक़बत को हर गिज़ बर्बाद नहीं करना च ुता। लड़की ने कहा। तो अपना दो टोक फैसला सुना दो। क्या हमारे पास रहना चाहते हो। या अपने वतन वापस जाना चाहते हो। उमैर बोले! मैं अपने वतन जाना चाहता हूँ। लड़की बोली तो अच्छा मैं तुम्हें आज़ाद करती हूँ। ऊपर देखो वो सितारा जो सामने नज़र आ रहा है, उसकी सीध में निकल जाओ। रात भर सफर करो। और दिन भर कहीं छुपे रहना, बस वतन पहुँच जाओगे। चुनाँचे उसने कुछ ज़ादे राह भी दिया और हज़रत उमैर को आज़ाद कर दिया। हज़रत उमैर ने तीन रात अपना सफर जारी रखा और चौथे रोज़ आपने देखा के चन्द घोड़े सवार उन्ही की तरफ़ आ रहे हैं। जब वो क़रीब पहुँचे तो देखा के ये वही उनके साथी हैं जो कुछ रोज़ पहले शाहे रोम के हुक्म से शहीद कर दिए गए थे। वो कहने लगे। तुम उमैर हो? ये बोले हाँ उमैर हूँ। उमैर ने पूछा क्या तुम्हें क़त्ल नहीं कर दिया गया था। वो बोले हाँ हमें क़त्ल कर दिया गया था। और हम शहीदों के गिरोह में दाखिल हो गए थे। आज अल्लाह तआला ने शौहदा को इजाज़त दी है के वो हज़रत उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ के जनाज़े में शिरकत करें। चुनाँचे हम वहाँ जा रहे हैं। फिर एक सवार ने उमैर का हाथ पकड़ कर उठाया और आगे घोड़े पर बिठा लिया। और पल भर में उन्हें उनकी मंज़िल पर पहुँचा दिया।

Scanned by CamScanner

(शरह-अल-सदूर, सफ़ा 89)

सबक़:- अल्लाह की राह में मरने वाले ज़िन्दा होते हैं और ये भी मालूम हुआ के सच्चे मुसलमान किसी दुनयवी लालच या किसी औरत की ख़ातिर अपना दीन हाथ से नहीं छोड़ देते। और हज़ार लालच के बादजूद वो अपने मसलक पर डटे रहते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उमर बिन अल अज़ीज़ की बहुत बड़ी शान है के उनके जनाज़े में शौहदा भी शामिल हुए।

हिकायत नम्बर(908) नसीहत

हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा अपने शार्गिदों के साथ कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे रास्ते में आपने एक रईस को देखा। जो बड़े करूफर और शानो शौकत के साथ अपने ग़ुलामों के जलू में घोड़े पर बैठा हुआ जा रहा था। हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा ने उससे पूछा। कहाँ जा रहे हो। रईस बोला। दरबार बादशाह में जा रहा हूँ। हज़रत ने फ़रमाया। तुमने लिबास फाखरा पहना और लिबास को इत्रियात से मौअत्तर किया है ताके तू दरबारे शाही में शर्मिंदा ना हो। हालाँके दरबारे शाही वाले भी तेरी ही मानिंद बशर हैं। अब तू सोच के कल क़यामत के रोज़ खुदा तआला के दरबारे शाही में जहाँ बड़े बड़े अंबिया औलिया मौजूद होंगे। अपने गुनाहों के मैल से क्या तू शर्मिंदा ना होगा?

रईस के दिल पर इस बात का असर हुआ। फिर आपने पूछा, तूने अपने घोड़े पर कभी उसकी हिम्मत से ज़्यादा बोझ लादा है? रईस ने कहा नहीं। आपने फ़रमाया के घोड़े पर तो तुम रहम करते हो। मगर अपने नफ़्स पर रहम नहीं करते। जिस पर गुनाहों का बोझ लाद रहे हो। सोचो तो सही इसका अंजाम क्या होगा? रईस ये नसीहत सुनकर घोड़े से उतर आया। और हज़रत हसन के हाथ पर बैत करके खुदा वाला बन गया। (दुर्रत-उन-नासिहीन, सफ़ा 234)

सबक़:- अल्लाह वाले अपनी निगाह और अपने इर्शादात से इंसान की काया पलट देते हैं। और ये भी मालूम हुआ के इंसान को गुनाहों से बचना चाहिए। और कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए। जिससे कल क़यामत को शर्मिंदा होना पड़े।

हिकायत नम्बर(909) बे नमाज़

एक शख़्स जंगल में गुज़र रहा था के उसके साथ शैतान हो लिया। उस शख़्स ने ना तो नमाज़ फज्र पढ़ी, ना ज़ौहर ना अस्र की और ना ही मग़रिब व ईशा की। रात को जब सोने का वक़्त हुआ। तो शैतान ने उससे कहा के मैं तुम से दूर रहना चाहता हूँ। उसने कहा क्यों? तो शैतान बोला। इसलिए के मैंने

Scanned by CamScanner

सिर्फ एक सज्दा ना किया था। और वो भी आदम(अलेहिस्सलाम) को और तूने तो दिन भर में कई सज्दे खुदा ही को नहीं किए। तो मुझे डर लगता है के जब एक सज्दे के ना करने से मुझ पर लानत का अज़ाब भेज दिया गया है। तो तुझ पर इतने सज्दे छोड़ने से खुदा जाने क्या दर्दनाक अज़ाब नाज़िल हो। जिसमें कहीं मैं भी मारा ना जाऊँ। (दुर्रत-उन-नासिहीन, सफ़ा 289)

सबक़:- नमाज़ का छोड़ना बहुत बड़ा गुनाह है और बेनियाज़ी को शैतान अपने आपसे भी ज़्यादा बुरा समझता है।

हिकायत नम्बर(910) गुदड़ी में लअल

एक दफा मक्का मोअज़्ज़मा में सख़्त क़हेत पड़ा। लोग नमाज़ इसतसक़ा के लिए तीन रोज़ तक निकलते रहे मगर मीना ना बरसा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैंने जी में सोचा के मैं इन लोगों से अलेहदा होकर खुदा तआला की जनाब में दुआ माँगूं। शायद खुदा तआला मेरी ही सुन ले। और रहम फ़रमा कर मीना बरसा दे। चुनाँचे मैं शहर से बाहर निकला। और एक ग़ार में चला गया। थोड़ी देर हुई। तो देखा के वहाँ एक हबशी ग़ुलाम आया और उसने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और ज़मीन पर सर रखकर अल्लाह तआला से दुआ माँगने लगा के ऐ खुदा! तेरे इन नातवाँ बन्दों ने तीन रोज़ तक नमाज़ पढ़ी और दुआ माँगी। लेकिन पानी ना बरसा। पस मुझे क़सम है तेरी इज़्ज़त की के मैं अपना सर ना उठाऊँगा। जब तक तू हम लोगों को बाराने रहमत से सैराब ना करेगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक फ़रमाते हैं के इस ग़ुलाम ने अभी सर ना उठाया था के बारिश होने लगे। और खूब मीना बरसा। फिर उसने अपना सर ज़मीन से उठाया और चला गया। मैं भी उसके पीछे पीछे चला गया। यहाँ तक के वो ग़ुलाम शहर में पहुँचा और एक मकान के अन्दर चला गया। मैं इस मकान के दरवाज़े पर ठहर गया। थोड़ी देर के बाद एक शख़्स मकान से बाहर निकला। तो मैंने उससे पूछा के ये मकान किस का है? उसने बताया के फलाँ आदमी का। फिर मैं मकान के अन्दर गया और साहिबे मकान से कहा के मैं एक ग़ुलाम मोल लेना चाहता हूँ। मालिक मकान ने एक ग़ुलाम मुझे दिखाया। मैंने कहा अगर कोई और हो तो दिखाईये। उसने कहा। हाँ एक और ग़ुलाम भी है मगर वो तुम्हारे काम का नहीं। मैंने कहा के क्यों? तो वो बोला के वो काहिल और सुस्त है। मैंने कहा ख़ैर आप ले आईये। चुनाँचे वो इस ग़ुलाम को ले आए। जिसके पीछे पीछे मैं यहाँ पहुँचा था मैंने कहा के हाँ मैं उसी को खरीदना चाहता हूँ। आप कितने दामों पर बेचेंगे वो बोला के मैंने तो उसे बीस दीनार को खरीदा है मगर तुम दस दीनार दे दो। मैंने

Scanned by CamScanner

कहा मैं उसके बीस दीनार ही देता हूँ चुनाँचे मैंने बीस दीनार निकाल कर दे दिए और ग़ुलाम को साथ ले आया। ग़ुलाम ने मुझ से कहा: ऐ अब्दुल्लाह बिन मुबारक! तुँम ने मुझे क्यों खरीदा? मैं तुँम्हारी खिदमत ना कर सकूंगा। मैंने कहा तुम ने मेरा नाम कैसे जान लिया। तो वो बोला के दोस्त दोस्त को पहचानता है। फिर मैं उसे घर ले आया। तो उसने कहा मैं वज़ू करना चाहता हूँ। मैंने लौटा पानी का दिया। उसने वज़ू किया और नमाज़ पढ़ी और सज्दा किया मैंने क़रीब होकर सुना तो वो सज्दे में कह रहा था.....

या साहिबस सिर्रानिस सिर्रा क़द ज़हरा
वला उरीदू हयाती बअदा माश्तहर

खुदाया तिरी ज़ात है राज़ दार
मिरा राज़ जब हो चुका आशकार
मुझे ज़िन्दगी से नहीं और काम
तू जल्दी से मेरा कर अब इखतिताम

फिर वो चुपका हो गया। मैंने जो उसे हिलाया। तो देखा के वो विसाल पा चुका है। पस मैंने उसकी तजहीज़ व तकफीन की और दफ़्न कर दिया। रात को ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा। आपने फ़रमाया जज़ा कल्लाह! तुम ने मेरे चाहने वाले के हक़ में एहसान किया। (रोनक़-उल-मजालिस, सफ़ा 370)

सबक़:- बहुत से अल्लाह के मक़्बूल बन्दे इस हाल में रहते हैं के लोग उन्हें अपनी कम फहमी के बाइस पहचान नहीं सकते। और उन्हें क़ाबिले एतना नहीं जानते। हालाँके वो खुदा के मक़्बूल और ऐसे मुसतहाब-उद्दुआ होते हैं के सज्दे में सर डाल कर जो चाहें। अपने अल्लाह से मनवा लें और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला अपने मक़्बूल बन्दों के तुफैल अवाम को अपनी रहमत से नवाज़ता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों से कोई बात छुपी नहीं रहती। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की ख़िदमत करने से रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम खुश होते हैं।

हिकायत नम्बर(911) बूढ़ा यहूदी

हज़रत अब्दुल्लाह तसतरस रहमत-उल्लाह अलेह का विसाल हो गया। तो लोग बड़ी कसरत के साथ उनके जनाज़े में शरीक हुए। शहर में एक बुढ़ा यहूदी था। उसने शौरो ग़ुल सुना तो बाहर निकला ताके देखे के ये शौर कैसा

Scanned by CamScanner

है। जब बाहर निकला तो उसने एक अजीब मंज़र देखा और फिर लोगों से पुकार कर कहने लगा। ऐ हाज़रीन! ज़रा ऊपर भी देखो के क्या नज़्ज़ारा है। लोगों ने कहा के ऊपर क्या है। वो बोला के मैं देख रहा हूँ के आसमान पर से भी एक क़ौम उतर रही है। और इस जनाज़े से बर्कत हासिल कर रही है। फिर बोला। लोगो! गवाह रहो। मैं मुसलमान होता हूँ। फिर वो कलमा पढ़कर मुसलमान हो गया। (दुर्रत-उन-नासिहीन, सफ़ा 494)

सबक़:- अल्लाह वालों की मौत भी लोगों के लिए रहमत होती है और एक ऐसे भी होते हैं जिनकी ज़िन्दगी भी लोगों के लिए मुसीबत होती है। फिर उन अल्लाह वालों की मिस्ल कोई कैसे हो सकता है?

हिकायत नम्बर(912) दुआ क़बूल क्यों नहीं होती

हज़रत शफीक़ बलखी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के एक रोज़ हज़रत इब्राहीम बिन अदहम बसरे के बाज़ार से गुज़र रहे थे। तो लोगों ने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की के हुज़ूर! क़ुरआन में खुदा तआला ने फ़रमाया है के "तुम मुझ से दुआ माँगो मैं क़बूल करूँगा।" और हम एक मुद्दत तक दुआ माँगते रहे हैं। मगर क़बूल नहीं होती। इसकी क्या वजह है? हज़रत इब्राहीम बिन अदहम ने जवा दिया के ऐ लोगो! तुम्हारे दिल दस चीज़ों से मुर्दा हो गए हैं। फिर तुम्हारी दुआ कैसे क़बूल हो। तफसील सुनो!

(1) तुम ने खुदा को पहचाना मगर उसकी मारफ़त का हक़ अदा ना किया।
(2) तुम ने क़ुरआन पढ़ा मगर उस पर अमल ना किया।
(3) तुम ने मोहब्बत रसूल का दावा किया। मगर उनकी सुन्नत पर अमल ना किया।
(4) तुम ने अदावते शैतान का दावा किया। मगर की मुखालफत ना की।
(5) तुम ने जन्नत को चाहा मगर उसमें दखूल के लिए अमल ना किया।
(6) तुम ने जहन्नुम से पनाह माँगी मगर खुद ही अपने नफ़्स को उसमें डाल दिया।
(7) तुम ने मौत को हक़ जाना मगर उसके लिए तैयार ना की।
(8) तुम ने भाईयों की ऐब जोई की। मगर अपने ऐब ना देखे।
(9) तुम ने अल्लाह की नअेमतें खायीं। मगर उसका शुक्र अदा ना किया।
(10) तुम ने मुर्दों को दफ़्न किया मगर इब्रत हासिल ना की।
(दुर्रत-उन-नासिहीन, सफ़ा 5133)

सबक़:- अपने ज़ाहिर व बातिन को पाक और साफ सुथरा करके और ज़बान को अल्लाह की याद से मौत्तर करके जो दुआ भी माँगी जाए। क़बूल होती है और अगर कोई हमारी दुआ क़बूल ना हो तो ये हमारा क़सूर है।

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(913) अबु अल्फा

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं के मैं मक्का मौअज़्ज़मा में मुक़ीम था के एक यमनी हाजी अपने एक रफ़ीक़ के साथ मेरे पास आया और कुछ हदया पेश करके कहने लगा के मेरे इस रफ़ीक़ से एक अजीब क़िस्सा सुनिये। फिर उसने अपने साथी से कहा के "पूरा वाक़ेया सुनाओ, तो उसने बताया के मैं सनआ से एक क़ाफले के साथ हज के लिए निकला तो एक शख़्स ने मुझ से कहा के जब तुम मदीना मुनव्वरह पहुँचो। और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बारगाह आलिया में हाज़री दो। तो हुज़ूर की बारगाह में मेरा भी सलाम अर्ज़ करना और हुज़ूर के साथियों अबुबक्र सिद्दीक़ व उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा की ख़िदमत में भी मेरा सलाम अर्ज़ करना। फिर जब मैं मदीना मुनव्वरह पहुँचा और बारगाहे रिसालत मआब की हाज़री से मुशर्रफ हुआ तो उस शख़्स का सलाम अर्ज़ करना भूल गया। हत्ता के हमारा क़ाफला मक्का मौअज़्ज़मा के इरादे से रवाना हुआ। और हम ज़ुलहलीफा पहुँच गए। ताके एहराम बाँध लें। उस वक़्त मुझे याद आया के उस शख़्स का सलाम तो मैंने अर्ज़ किया ही नहीं। चुनाँचे मैंने अपने साथियों से कहा। मैं वापस मदीना मुनव्वरह जा रहा हूँ। मेरी वापसी तक मेरे सामान का खयाल रखना। साथियों ने कहा के क़ाफला तो चलने वाला है। हमें डर है के तुम वक़्त पर वापस ना आ सकोगे, मैंने कहा तो अच्छा मेरा सामान तुम लेते जाना। मैं आ जाऊँगा। ये कह कर मैं वापस मदीना मुनव्वरह आया और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बारगाहे आलिया में हाज़िर होकर हुज़ूर अलेह अर्रहमा और हज़रत सिद्दीक़ व हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की बारगाह में उस शख़्स का सलाम अर्ज़ किया। इतने में रात हो गई। और मैंने अपने साथियों के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया। तो पता चला के वो चले गए हैं। मैं वापस मस्जिदे नबव्वी शरीफ में आ गया और दिल में कहा के किसी दूसरे क़ाफले के साथ चला जाऊँगा शब को सोया। तो आख़िर शब को ख़्वाब में देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम, सिद्दीक़े अक्बर और फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा की मईयत में तशरीफ़ लाए हैं। सिद्दीक़ व फारूक़ दोनों ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कहा। या रसूल अल्लाह! ये है वो शख़्स, हुज़ूर मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए और मुझ से फ़रमाया "अबु अलवफा" मैंने अर्ज़ किया। हुज़ूर! मेरी कनीयत अबु अलवफा नहीं। अबु अलअब्बास है। फ़रमाया नहीं तुम अबु अलवफा हो। और फिर मेरा हाथ पकड़कर मुझे उठा के मक्का

Scanned by CamScanner

मौअज़्ज़मा की मस्जिद हराम मैं बिठा दिया। मैं जागा तो मक्का मौअज़्ज़मा की मस्जिद में था। फिर मैं आठ दिन ठहरा रहा। तो आठ दिन के बाद मेरे क़ाफले वाले मक्का मौअज़्ज़मा पहुँचे।" (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 181)

सबक़:- एक मुसलमान के लिए सब से बड़ी सआदत ये है के उसे सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बारगाहे आलिया में हाज़री का शरफ़ हासिल हो। और अगर खुद हाज़िर ना हो सके तो किसी खुश नसीब हाज़िर होने वाले के ज़रिये से अपना सलाम ही पहुँच जाए और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उम्मत के आमाल और अफआल से आज भी बाख़बर और जो मुसलमान अपने मुसलमान भाई से किया हो वादा पूरा करता है। हुज़ूर उस पर बहुत खुश होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर जिसकी दस्तगीरी फ़रमायें उसे एक पल में मंज़िले मक़्सूद तक पहुँचा देते हैं और ये भी मालूम हुआ के जो ज़ात ग्रामी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने एक ग़ुलाम का हाथ पकड़कर पल भर में उसे मदीना मुनव्वरह से मक्का मौअज़्ज़मा पहुँचा सकती है। वो ज़ात पाक खुद क्यों पल भर में फर्श से अर्श तक नहीं जा सकती? और ये भी मालूम हुआ के सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा दरबारे रिसालत के दो बड़े वज़ीर हैं, जो हर वक़्त सुलतान दो आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ रहते हैं।

हिकायत नम्बर(914) तीन दुआएँ

हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से मरवी है के बनी इस्राईल में एक शख़्स था जिसका नाम सनवस था। उसे हुक्म हुआ के तीन दुआएँ तेरी क़बूल होंगी जो माँगना हो माँग लो। उसने अपनी औरत के लिए दुआ की के वो खूबसूरत हो जाए। दुआ क़बूल हो गई और उसकी औरत तमाम बनी इस्राईल की औरत से खूबसूरत हो गई। औरत ने अपना हुस्नो जमाल देखा तो ग़ुरूर में आ गई और शौहर को सताने लगी, शौहर ने तंग आकर एक दिन ख़फा होकर उसे कहा। खुदा तुझे कुतिया बना दे। औरत उसी वक़्त कुतिया बन गई। बेटों ने माँ का कुतिया बन जाना देखा तो उन्होंने अपने बाप से सिफारिश की तो उसने तीसरी दुआ की के इलाही! उसे अपनी असल सूरत पर कर दे। चुनाँचे औरत फिर अपनी असली सूरत पर जो के उसकी थी। हो गई और शौहर की तीनों दुआएँ मुफ़्त ज़ाए हो गईं। (अहसन-उल-दुआ-उल-अला हज़रत, सफ़ा 45)

Scanned by CamScanner

सबक:- खुदा तआला जिस हाल में रखे , उस पर साबिर व शाकिर रहना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के इस दुनिया का हुस्नो जमाल इंसान के लिए वजह वबाल भी बन जाता है इसलिए ज़्यादा तर फिक्र अपनी आक़बत की करनी चाहिए।

हिकायत नम्बर(915) खुश्बू वाला

बसरा में एक बुज़ुर्ग थे। जो मस्की के नाम से मशहूर थे मस्क खुश्बू को कहते हैं और मस्की का मानी है, "खुश्बू वाला" ये बुज़ुर्ग इस क़द्र खुश्बू रखते थे के रास्ते से गुज़र जाते। रास्ते मेहक उठते और जब मस्जिद में तशरीफ़ लाते तो उनकी खुश्बू से सब को पता चल जाता के हज़रत मस्की तशरीफ़ ले आए हैं। रावी फ़रमाते हैं के मैं उनकी खुश्बू का राज़ मालूम करने के लिए एक रात उनके हाँ ठहरा और उनसे कहा के आपके बदन से जो इस क़द्र खुश्बू आती है। मालूम होता है के आप रोज़ाना काफी खर्च करके खुश्बू खरीदते हैं और अपने बदन और कपड़ों पर मल लेते हैं। उन्होंने जवाब दिया। नहीं ये बात नहीं। मैंने आज तक ना कभी खुश्बू खरीदी है और ना ही बदन या कपड़ों पर मली है। मैंने कहा तो फिर इस खुश्बू का राज़ क्या है? तो बोले: लो मैं बता देता हूँ। मुमकिन है मेरे मरने के बाद तुम मुझे दुआऐ ख़ैर से याद करो।

बात ये है के मैं बग़दाद का रहने वाला हूँ मेरे वालिद ने मेरी बड़ी अच्छी तरबीयत फ़रमाई। मैं बड़ा खूबसूरत था। और साहिबे शर्मो हया भी मेरे वालिद ने मुझे एक बज़ाज़ की दुकान पर बिठा दिया। उस दुकान पर मैं दिन भर बैठा रहता। और दुकान का काम करता था एक रोज़ एक बुढ़िया दुकान पर आई। और कुछ क़ीमती कपड़े निकलवाये और फिर साहिबे दुकान से कहने लगी के इन कपड़ों को मैं अपने साथ घर ले जाती हूँ। उस लड़के को मेरे साथ भेज दीजिए जो कपड़े पसंद आ गए। रख लिए जायेंगे और उनकी क़ीमत इस लड़के के हाथ भेज दीजिए चुनाँचे मालिके दुकान के कहने से मैं इस बुढ़िया के साथ चल दिया। बुढ़िया मुझे एक अज़ीम-उश्शान मकान में ले गई। जिसमें बहुत से मर्द और औरतें मुलाज़िम थीं। फिर उसने मकान के अन्दर एक खूबसूरत कमरे में मुझे बिठा दिया। ये कमरा बड़ा मुज़य्यन और आरास्ता था। थोड़ी देर के बाद एक नोजवान औरत इस कमरे में आ गई जो मेरे पास बैठ गई और मुझ से लिपट गई मैं डर गया। और पीछे हट कर उससे कहा के खुदा से डरो, उसने कहा देखो मेरी बात मानो और जो चाहो मुझ से लो। मैं तुम्हें हर गिज़ जाने ना दूंगी। मैंने कहा: मुझे बैत-उल-ख़ला जाने की हाजत है। पहले वहाँ से हो आऊँ। उसने अपनी बांदी को बुलाया। और कहा: इन्हें बैत-उल-खला ले जाओ। चुनाँचे मुझे वहाँ ले जाया गया। मैंने अपनी रिहाई के लिए ये सूरत इख़्तियार

Scanned by CamScanner

की के जितनी निजासत थी अपने मुंह, हाथ और सारे बदन और कपड़ों पर मल ली। और जब बाहर निकला तो इस बांदी ने मुझे इस हाल में देखा। तो पागल पागल कह कर वहाँ से भागी और फिर जब इस मेरी आशिक़ ने मुझे देखा तो वो भी भागी और मैं उसी हाल में वहाँ से निकला और एक बाग़ में पहुँच कर अपना बदन और कपड़े साफ किए और घर वापस आ गया। और जब रात को सोया तो ख़्वाब में देखा के कोई आया है जिसने अपना हाथ मेरे चेहरे और बदन पर फैरा और कहा। जानते हो मैं कौन हूँ? मैं जिब्राईल हूँ। मेरी आँख खुली तो मेरे सारे बदन और कपड़ों से खुश्बू आ रही थी। जो आज तक क़ायम है और ये सब हज़रत जिब्राईल अलेहिस्सलाम के हाथ की बर्कत है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 189)

सबक़:- अल्लाह तआला से डर कर गुनाहों से बचना बहुत बड़ी हिम्मत का काम है और इस दुनिया की ज़िल्लत अच्छा नतीजा निकलता है। और जो अल्लाह वाले हैं वो अखरवी ज़िल्लत व रूसवाई से बचने के लिए इस दुनिया की ज़िल्लत व रूसवाई की कुछ परवाह नहीं करते और ये भी मालूम हुआ के गुनाहों की मैल व निजासत से बचने वाले की रूह भी पाक व साफ हो जाती है। और उसका जिस्म व लिबास भी पाकीज़ा व साफ रहता है। और ये भी मालूम हुआ के जिस तरह गुनाह से बचने के लिए अपने जिस्म को थोड़ी देर के लिए ग़लाज़त में मुलव्विस करके उम्र भर के लिए खुश्बू हासिल कर ली गई। इसी तरह इस दुनियाऐ फानी में थोड़ी देर की लज़्ज़त पाने के लिए अपने आपको ऐशो इशरत में डाल कर क़यामत की लम्बी मुसीबत मोल ले ली जाती है। जो बहुत बड़ी हिमाक़त है। और ये भी मालूम हुआ के जिब्राईल जो हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का ख़ादिम है। उसके हाथ ख़्वाब में भी लग जाने से खुश्बू पैदा हो गई, तो खुद हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बदन अनवर और लिबास अतहर की लताफत व नज़ाफत और मेहक का क्या आलम होगा? और क्यों ना आला हज़रत के इस शैर के मुताबिक़ ये समाँ बंधता होगा....

उनकी मेहक ने दिल के ग़ुंचे खिला दिए हैं
जिस राह चल दिए हैं कूचे बसा दिए हैं

हिकायत नम्बर(916) मक़्बूल लकड़हारा

हज़रत अब्दुल वाहिद इब्ने ज़ैद रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं, मैं और हज़रत अय्युब सख़्तियानी दोनों कहीं जा रहे थे के शाम के रास्ते में एक लकड़हारा देखा। जो लकड़ियों का गट्ठा उठाए आ रहा था। मैंने इस लकड़हारे से कहा। मियाँ लकड़हारे! *मन रब्बुका* तुम्हारा रब कौन है? हम

Scanned by CamScanner

ने उसे एक आम आदमी समझा था। मगर मेरे इस सवाल पर वो बोला। आप मुझ से ये बात पूछ रहे हैं? लो मैं बताता हूँ। मेरा रब कौन है? उसने अपना सर आसमान की तरफ़ उठा कर कहा:

इलाही! होला हाज़ल हत्बा ज़हाबन

इलाही! इन लकड़ियों के गठ्ठे को सोना बना दे

हमने देखा के उसकी तमाम लकड़ियाँ सोना बन चुकी हैं। फिर उसने हमारी तरफ़ देखकर कहा। तुम ने ये बात देख ली? हम ने कहा हाँ देख ली। उसने फिर कहा:

अल्लाहुम्मा रद्दिद हत्बन

इलाही! इन्हें लकड़ियाँ बना दे

हम ने देखा। वो फिर लकड़ियाँ बन गईं

उसने कहा। मेरा रब वो है जिसने ये काम कर दिखाया। (रोज़-उल-रियाहीन, 194)

सबक़:- अल्लाह वाले बड़ी शान के मालिक हैं वो अल्लाह की मानते हैं अल्लाहह उनकी मानता है और ये भी मालूम हुआ के कई अल्लाह वाले "गूदड़ी में लअल" के मुताबिक़ मसाकीन के लिबास में भी होते हैं। इसलिए किसी को हिक़ारत से नहीं देखना चाहिए...

तूचै दानी के दरीं गर्द सवारे बाशिद

हिकायत नम्बर(917) कमाल तक़वा

हज़रत शिबली रहमत-उल्लाह अलेह एक आलिम नहू के पास इल्मे नहू सिखने के लिए गए। उस्ताद ने कहा कहिये: "*ज़रब ज़ैदु उमरोवन* ज़ैद ने उमर को मारा"। हज़रत शिबली बोले क्या दर हक़ीक़त ज़ैद ने उमर को मारा है? उस्ताद ने कहा। दरअसल ऐसा तो नहीं है। हाँ एक मिसाल के तौर पर जुमला बयान किया जाता है शिबली फ़रमाने लगे के जिस इल्म की बिस्मिल्लाह झूट पर मुबनी हो। मैं उस इल्म को सिखना नहीं चाहता। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 268)

सबक़:- अल्लाह वाले बड़े मुत्तक़ी और मोहतात होते हैं और कोई ऐसी बात नहीं करते जो झूट के मुशाबह भी हो। और ये उनका कमाल तक़वा होता है।

हिकायत नम्बर(918) बड़ा दरवाज़ा

एक सायल ने किसी अमीर आदमी के दरवाज़े पर सवाल किया। दरवाज़ा बहुत बड़ा था मगर अमीर आदमी ने थोड़ी सी भीक देकर सायल को रूख़सत कर दिया। अगले रोज़ सायल एक कुलहाड़ी लेकर वारिद हुआ। और दरवाज़े के गिराने का इरादा करने लगा। लोगों ने उसका सबब पूछा तो

Scanned by CamScanner

बोला के या दरवाज़ा अतिये के मवाफिक़ होना चाहिए या अतिया दरवाज़े के मवाफिक़। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 390)

सबक़:- अल्लाह तआला का दरवाज़ा रहमत सब दरवाज़ों से बड़ा दरवाज़ा है इसलिए हम गुनाहगारों को इस अम्र की उम्मीद है के खुदा तआला अपने इस दरवाज़ा-ए-रहमत से हम गुनाहगारों को मायूस ना लौटाएगा। और अपनी रहमत के मवाफिक़ हमें भीक देगा।

हिकायत नम्बर(919) दिल और ज़बान

हज़रत लुक़मान से एक रोज़ उनके आक़ा ने कहा। के आज एक बकरी ज़िबह करो। और जो चीज़ उसकी सबसे ज़्यादा बुरी हो। वो मेरे पास लाओ। हज़रत लुक़मान ने बकरी ज़िबह की। और उसके दिल और ज़बान को आक़ा के सामनें पेश कर दिया।

दूसरी रोज़ उनके आक़ा ने फिर कहा। के आ भी एक बकरी ज़िबह करो और जो चीज़ उसकी सबसे ज़्यादा अच्छी हो। वो ले आओ। हज़रत लुक़मान ने एक बकरी ज़िबह की। और आक़ा के सामने फिर भी दिल और ज़बान ही पेश को पेश कर दिया। आक़ा ने वजह दरयाफ़्त की। तो बोले।

"ये दोनों चीज़ें बदतरीन भी हैं और बेहतरीन भी अगर ये बिगड़ जायें। तो उनसे ज़्यादा बुरी चीज़ और कोई नहीं और गअर ये संवर जायें। तो उनसे ज़्यादा अच्छी चीज़ और कोई नहीं।" (मुग़नी-उल-वाज़ैन सफ़ा 118)

सबक़:- दिल और ज़बान। इन दोनों को अपने क़ाबू में रखना चाहिए। क्योंके बुराई के मुनब्बै यही हैं। अगर ये बिगड़ गए तो हलाकत है। और अगर ये संवर गए तो बर्कत ही बर्कत है। हज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का दिल के मुतअल्लिक़ इर्शाद ह के बदन का ये टुकड़ा बड़ी अहमियत रखता है। अगर ये बिगड़ जाए तो सारा बदन ही बिगड़ जाता है और अगर ये संवर जाए तो सारा बदन ही संवर जाता है और ज़बान के मुतअल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया। के जो उसकी मुझे ज़मानत दे यानी उसे क़ाबू में रखने की और ग़ैर शरई गुफ़्तगू से उसे बाज़ रखने की मुझे ज़मानत दे तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ।" पस हमें दिल और ज़बान की तरफ़ निगाह रखनी चाहिए। और इन्हें अच्छा बनाना चाहिए।

हिकायत नम्बर(920) फैसला

एक सौदागर की थेली जिसमें चार सौ दीनार थे। गुम हो गई। उसने ढोल पिटवा कर एलान किया के इस तरह की थेली गुम हो गई है जिस शख़्स को मिल जाए वो ले आए तो उसे दो सौ दीनार ईनाम दिया जाएगा। इत्तिफाक़न ये थेली

Scanned by CamScanner

एक ग़रीब शख़्स को मिल गई और उसे लेकर मालिक के पास ईनाम की उम्मीद में पहुँच गया। लेकिन सौदागर अपनी थेली को देखकर बद नीयत हो गया और उस ग़रीब आदमी से कहने लगा। "इस थेली में निहायत क़ीमती मोती भी थे। क्या वो भी इसके अन्दर हैं?" वो आदमी बड़ा घबराया और समझ गया। अब धोका कर रहा है। और ईनाम ने देने के लिए झूट बोलने लगा है। अब उन दोनों में झगड़ा शुरू हो गया। आख़िर ये दोनों लड़ते हुए फैसले के लिए क़ाज़ी के पास पहुँचे।

क़ाज़ी ने उस ग़रीब से मोतियों के बारे पूछा। तो वो क़सम खाकर कहने लगा। के थेली में मुझे दीनारों के सिवा और कोई चीज़ नहीं मिली।

अब क़ाज़ी ने सौदागर से पूछा। के बताओ मोती कैसे थे? तो सौदागर ने उल्टी सीधी बातें कीं कुछ सही ना बता सका। क़ाज़ी ने समझ लिया। के ये झूट बोल रहा है। और झूट से मक़सद उसका ये है के अपने एलान के मुताबिक़ उसे ईनाम ना देना पड़े।

क़ाज़ी ने कहा। के मेरा फैसला सुनो!

"ऐ सौदागर! तुम्हारा दावा है के मेरी थेली गुम हो गई। जिसमें दीनार थे और मोती भी थे और वो मोती ऐसे थे और ये आदमी जो थेली लाया है उसमें कोई मोती नहीं है लिहाज़ा मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ के ये थेली तुम्हारी ही नहीं। लिहाज़ा तुम अपनी गुमशुदा थेली के लिए फिर से एलान कराओ मुमकिन है। तुम्हारी गुमशुदा थेली तुम्हें फिर मिल जाए। और तुम कामरान व बामुराद बन जाओ। बहरहाल ये थेली तुम्हारी नहीं है फिर क़ाज़ी ने उस ग़रीब आदमी से मुख़ातिब होकर कहा।"

"ये थेली चालीस रोज़ तक एहतियात से रखो। अगर उसका कोई दूसरा सच्चा दावेदार ना पैदा हो तो ये तुम्हारी है।" (रिवायात व हिकायत सफ़ा 121)

सबक़:- जो शख़्स दुनिया के लालच में बद अहदी व बेईमानी और बदनीयती पर आमादा हो जाए वो कभी कामयाब नहीं होता। और ये भी मालूम हुआ। के आदिल और इंसाफ परवर हाकिम अपनी फिरासत ही से मामला की तेह तक पहुँच जाते हैं और उनका फैसला सही मअनून में फैसला होता है।

हिकायत नम्बर(921) सबसे ज़्यादा मौअज़्ज़ज़

हज़रत हारून रशीद के बेटे अमीन और मामून दोनों हज़रत इमाम कसाई से पढ़ते थे एक रोज़ इमाम कसाई उन दोनों शहज़ादों को पढ़ा कर उठने लगे। तो दोनों भाई लपके के जल्दी से जूता उठा कर उस्ताद के सामने रख दें। इस पर दोनों में झगड़ा शुरू हो गया के कौन उस्ताद के समाने उसका जूता रखे इमाम कसाई ने ये देखकर यूं सुलह कराई.....यूं करो के तुम में से हर एक.....एक एक जूता उठा कर लाए" चुनाँचे ऐसा ही हुआ। ये ख़बर खलीफा हारून रशीद को पहुँची

Scanned by CamScanner

तो इमाम कसाई को बुलाया। जब वो आ गए तो पूछा।

सबसे ज्यादा मौअज़्ज़िज़ कौन शख़्स है?

कसाई ने जवाब दिया के

अमीर-उल-मोमिनीन से ज्यादा मौअज़्ज़िज़ कौन शख़्स है?

कसाई ने जवाब दिया के

अमीर-उल-मोमिनीन से ज्यादा मौअज़्ज़िज़ कौन हो सकता है?

खलीफा ने कहा

नहीं सबसे ज्यादा मौअज़्ज़िज़ है जिसके लिए वली अहद सलतनत और उसका भाई इस पर झगड़ें के कौन जूता पहले उठाए।

इमाम कसाई घबरा गए। समझे के शायद खलीफा इसी बात पर बिरहम है। हारून रशीद समझ गया और कहने लगा।

"अगर आप मेरे लड़कों को उससे मना करते तो मैं ख़फा होता। मगर अब मैं खुश हूँ के इस फैल से मेरे लड़कों की इज़्ज़त और शरफ़ में कमी नहीं हुई। बल्के उनका जोहर और नुमायाँ हो गया और उनके किरदार का शरफ़ ज़ाहिर हो गया। फिर खलीफा ने इस हुस्न तादीब पर कसाई को दस हज़ार दरहम ईनाम के अता किए।" (रिवायात व हिकायात, सफ़ा 155)

सबक़:- इल्म की दौलत सबसे बड़ी दौलत है, जो इज़्ज़त व अज़मत इल्म से हासिल होती है, वो माले दुनिया या किसी दुनियवी ओहदे से नहीं मिलती। और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने के मुसलमान हाकिम बड़े इल्म नवाज़ और उल्मा के क़द्रदान थे और उनके बच्चों के दिलों में भी अहले इल्म की क़द्रो मंज़िलत और उनका अदबो एहत्राम मौजूद था।

हिकायत नम्बर(922) फक़ीर

एक फक़ीर मिस्र की जामअे मस्जिद के दरवाज़े पर बैठा भीक माँग रहा था कुछ दौलतमंद लोग इधर से गुज़रे उसने सवाल किया मगर कुछ ना मिला।

उन लोगों में से एक की जैब से एक थेली गिर पड़ी। जिसमें पाँच सौ दीनार थे, उनके जाने के बाद फक़ीर की नज़र पड़ी। उसने उठाकर रख ली। इतने में थेली का मालिक आया और फक़ीर से पूछने लगा "यहाँ मेरी एक थेली रह गई है, उसमें पाँच सौ दीनार थे, तुझे तो नहीं मिली?"

"फक़ीर ने कहा मिली है" और फिर उसने वो पेश कर दी।

वो शख़्स बहुत खुश हुआ और कहने लगा "मैं पंद्रह दीनार तुझे ईनाम देता हूँ।"

फक़ीर ने कहा "मैं हर गिज़ ना लूंगा क्योंके मैंने आपसे एक चीज़ बतौर एहसान के माँगी थी। लेकिन अब अगर कुछ क़बूल कर लूं। तो उसके ये

Scanned by CamScanner

मानी हुए के दीन दे के दुनिया ले लूं।" (रिवायात व हिकायात, सफ़ा 328)

सबक़:- पहले ज़माने के मुसलमान फक़ीर भी दियानतदार थे। और दीन को दुनिया पर हर हाल में मुक़द्दम रखते थे। और आज कल के अक्सर अमीर भी इस वस्फ से खाली हैं।

हिकायत नम्बर(923) शराब

एक बादशाह बैठा हुआ शराब पी रहा था। उसी दौरान में एक ज़ाहिद व मुत्तक़ी शख़्स भी आ गया। जो बड़ा खुदा तरस और परहैज़गार आदमी था। बादशाह ने शराब का एक जाम उस ज़ाहिद के सामने भी रखा। और कहा तुम भी पियो। उस शख़्स ने जाम शराब क़बूल करने से इंकार कर दिया। बादशाह ने कहा क्या मेरी नाफरमानी करके तुम मेरे ग़ुस्से को उभारना चाहते हो?

उस शख़्स ने जवाब दिया।

और ऐ बादशाह! क्या तुम चाहते हो के मैं खुदा की नाफरमानी करके उसके ग़ुस्से को दावत दूं? खुदा की क़सम! ऐसा कभी नहीं हो सकता। अगरचै बादशहा की तलवार मेरी गर्दन उड़ा दे क्या बादशाह के कानों में ये आवाज़ नहीं गई *इन्नामल ख़मरू वलमैसिरू वलअनज़ाबु वलअज़लामु रिजसुंम मिन अमालिश शैतानी फजतनीबुहू* बादशाह पर इस जवाब का गहरा असर हुआ। और खुश होकर उसको बहुत सा ईनाम देकर रूख़्सत किया। (रिवायात, सफ़ा 374)

सबक़:- अल्लाह वाले अपने अल्लाह ही से डरते हैं और ज़ालिम व जाबिर बादशाह के सामने भी हक़ बात कहने से नहीं डरते और उनकी बात बड़ी मौस्सर होती है।

हिकायत नम्बर(924) आटे में मिलावट करने वाले का अंजाम

बैहक़ी ने इब्ने मेहमूद से रिवायत की के मैं इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास बैठा था के एक शख़्स आया और कहा के हम हज के लिए आए हैं और रास्ते में हमारा एक साथी मर गया हम ने उसके लिए क़ब्र खोदी तो लहद में एक मुहीब काला सांप बैठा नज़र आया। हम ने वो जगह छोड़ दी। और दूसरी जगह दूसरी क़ब्र खोदी। क्या देखा के इस क़ब्र में भी वही सांप बैठा है। फिर हम ने तीसरी क़ब्र खोदी। तो उसमें भी वही सांप नज़र आया। हम हैरान रह गए और अब आपके पास आए हैं के क्या करें। इब्ने अब्बास ने फ़रमाया तुम सांप के पास ही उसे दफ़्न कर दो। खुदा की क़सम अगर तुम सारी ज़मीन भी उसके लिए खोदोगे तो ये सांप तुम्हें ज़रूर नज़र आएगा। चुनाँचे हम ने उसके लिए एक क़ब्र खोदकर सांप के पास ही उसे

Scanned by CamScanner

दफ़्न कर दिया। और फिर वापसी पर उसकी बीवी से उसके हालात दरयाफ़्त किए तो पता चला के वो आटे का सौदागर था और आटे में लकड़ी का बुरादा डाल कर बेचा करता था। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 22, जिल्द:1)

सबक़:- हमारे मुल्क में भी सफ़ा क़िस्म के सौदागर पाए जाते हैं उन्हें अपने अंजाम की फिक्र करनी चाहिए।

हिकायत नम्बर(925) ज़हीन लड़का

एक ज़ाहिद एक बादशह का मेहमान हुआ। जब खाने का वक़्त आया तो उसने ज़रूरत से बहुत कम खाया और नमाज़ पढ़ने में जल्दी की ताके लोग उसके मुतअल्लिक़ बहुत ज्यादा हुस्ने ज़न में मुब्तला हो जायें। लेकिन जब घर लौटा तो दोबारा खाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। ज़ाहिद के ज़हीन लड़के ने बाप से पूछा के आपने बादशाह के हाँ पेट भर कर खाना नहीं खाया? बाप ने जवाब दिया।

"दर नज़रे ईशाँ चीज़े नखूरदम के बकार आयद"

मैंने उनके सामने कुछ नहीं खाया ताके ये बात काम आए

लडके ने कहा: अब्बा जान!

नमाज़ रा हम क़ज़ा किन के चीज़े ना कर दी के बकार आयद

नमाज़ भी फिर पढ़िये के आपने कुछ नहीं किया ताके ये बात काम आए। (गुलिस्ताँ सअदी)

सबक़:- इबादत में खलूस ज़रूरी है वरना दिखावे की इबादत किसी काम की नहीं।

हिकायत नम्बर(926) खुशहाल मस्त

सअदी अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं के कूफ़े जाते हुए एक सरोपा बिरहना शख़्स हमारे क़ाफले में हमसे आ मिला। दौराने सफर में वो बड़ा खुश रहता और मस्ती के आलम में ज़िन्दा दिल के साथ यूं गोया रहता...

ना बा अश्तर सवारम ना चवाश्तर ज़ेर बारम
ना खुदावंद रूईय्यत ना ग़ुलाम शहर यारम
ग़म ज़मौजूद व परेशानी मअदूम ना दारम
नफ़्से मै ज़नम आसूदा-ए-वअमरे मै गुज़ारम

ना मैं ऊँट पर सवार हूँ ना ऊँट की तरह ज़ेर बार हूँ। ना किसी रूईय्यत का हाकिम हूँ। और ना किसी हाकिम का ग़ुलाम हूँ। ना मुझे किसी मौजूद का ग़म है। ना किसी मअदूम की परेशानी आराम और इतमिनान के साथ

Scanned by CamScanner

अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूँ।

एक शुत्र सवार ने उससे कहा, भाई! क्यों अपनी जान हलाक करने पर तुले हो। रास्ते पुर कठिन है, वापस चले जाओ। लेकिन उसने एक ना मानी और लक़ोदिक़ सहरा में सफर करता रहा। जब क़ाफला नखलिस्तान मेहमूद पहुँचा। तो क़ाफले के अमीर को पियामे अजल आ गया। और वो मर गया। दुरवैश पा पियादे ने जब सुना तो मरहूम के सिरहाने आकर कहने लगा।

मा बा सख़्ती मर दयम व तू ब बख़्ती बमरदी

हम सख़्ती में भी ना मरे और तुम खुश बख़्ती में भी मर गए। (गुलिस्ताँ सअदी)

सबक़:- खुदा जिस हाल में रखे उसी हाल में खुश रहना सबसे बड़ी दौलत है पा पियादा आदमी अगर किसी को ऊँट पर सवार देखे तो खुदा का शुक्र करे के अगर वो सवार नहीं है तो उस सवार को पीठ पर उठा कर चलने वाला ऊँट भी तो नहीं है।

हिकायत नम्बर(927) हिम्मत व मेहनत

एक सौदागर बग़र्ज़ तिजारत घर से निकला। रास्ते में एक जंगल पड़ा। उसने देखा के एक अपाहज लोमड़ी है। जिसके हाथ पैर बिलकुल नहीं हैं। और वैसे ही अच्छी ख़ासी मोटी ताज़ी, सौदागर ने खयाल किया के ये तो चलने फिरने से मअज़ूर है। फिर ये खाती कहाँ से है। इतने में उसने देखा के एक शेर एक जंगली गाय को शिकार करके उसी तरफ़ आ रहा है ये डर के मारे एक दरख़्त पर चढ़ गया। शेर लोमड़ी के क़रीब ही बैठ कर वो गाय खाने लगा और खा पी कर बाक़ी मांदा गाय वहीं छोड़ कर चला गया लोमड़ी ने अपनी जगह से खिसकना शुरू किया और आहिस्ता आहिस्ता उस गाय की तरफ़ बढ़ी और शेर की पस खूर्दा गाय से अपना पेट भर लिया। सौदागर ने ये माजरा देखकर सोचा के खुदा तआला जब इस क़िस्म की अपाहज लोमड़ी को भी बैठे बिठाए रिज़्क देता है तो फिर मुझ घर से निकल कर दूरदराज़ इस रिज़्क़ के लिए भटकने की क्या हाजत है। मैं भी घर बैठता हूँ। ये सोच कर फिर वापस घर चला आया और बेकार घर बैठ गया। कई दिन गुज़र गए मगर आमदनी की कोई सूरत नज़र ना आई एक दिन घबरा कर बोला। इलाही! अपाहज लोमड़ी को तो रिज़्क़ दे और मुझ कुछ ना दे। ये क्या बात? उसे एक ग़ैबी आवाज़ आई के नादान! तुझे हम ने दो चीज़ें दिखाई थीं। एक मोहताज लोमड़ी जो दूसरों के पस खूर्दा पर नज़र रखती है। और एक शेर जो शिकार करता है। और खुद भी खाता है और दूसरे मोहताजों को भी खिलाता है। ऐ बेवक़ूफ! तूने मोहताज लोमड़ी बनने की तो कोशिश की मगर बहादुर शेर

Scanned by CamScanner

बनने की कोशिश ना की तुम अपाहज लोमड़ी बन कर घर में आ बैठे हो, शेर क्यों नहीं बनते। ताके खुद भी कमा कर खाओ। और मोहताजों को भी खिलाओ ये सुनकर सौदागर फिर सौदागरी को चल पड़ा। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- इंसान को कभी बेकार ना बैठना चाहिए। बल्के उसे चाहिए के जायज़ तौर पर कमा कर अपना गुज़ारा भी करे और मोहताज़ों पर भी खर्च करे।

हिकायत नम्बर(928) इत्तिफाक़

एक बाग़ में तीन आदमी घुसकर फल तोड़ कर खाने लगे। बाग़बान को पता चला तो वो आया। उसने इन तीनों को ग़ौर से देखा तो एक हाकिम शहर का लड़का था। एक क़ाज़ी शहर का लड़का और तीसरा एक कारीगर मिस्त्री का लड़का था बाग़बान ने सोचा के मैं अकेला हूँ और ये तीन हैं। उनसे मुक़ाबला किसी हिकमत से चाहिए चुनाँचे पहले तो मिस्त्री के लड़के से कहा। मरहबा! मरहबा! मेरे नसीब जाग उठे जो आप मेरे बाग़ में तशरीफ़ लाए। जाईये इस कमरे से कुर्सी ले आईये और आराम से बैठ कर फल खाईये मिस्त्री का लड़का कुर्सी लेने के लिए गया तो बाग़बान ने उन दोनों से कहा, जनाब आप दोनों का तो हक़ है के मेरे बाग़ का फल खायें। एक हाकिम दूसरा क़ाज़ी, मगर ये दुनियादार मिस्त्री ये कौन होता है जो आपसे बराबरी करे आप शौक़ से महीना भर यहीं रहिये मगर उसकी तो मैं मरम्मत करके रहूंगा। इस तरह उन दोनों की तारीफ करके मिस्त्री साहब के पीछे गया और कमरे में जाकर उसे खूब मारा और बेहोश कर दिया फिर बाग़ में आया। और क़ाज़ी साहब से कहने लगा। बेवक़ूफ ये तो भला हाकिम शहर का दिल बन्द है। हमारा सब कुछ उन्हीं का है मगर तू कौन! जो उनसे बराबरी का दम भरे। फिर उसे मारा और गिरा लिया। अब हाकिम साहब अकेले रह गए। फिर उनकी तरफ़ हुआ और बोला क्यों जनाब जब आप ही यूं डाके मारने लगे तो फिर हमारा अल्लाह ही हाफिज़ है। ये कहकर उसे भी खूब मारा और इस तरह एक एक करके सबसे अपना इन्तिक़ाम ले लिया। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- दुश्मन हमेशा तुम्हारे अन्दर फूट डालने की कोशिश करता है, उसकी चाल से ख़बरदार रहो और इत्तिफाक़ को हाथ से ना जाने दो।

हिकायत नम्बर(929) भैंगा

किसी उस्ताद ने अपने एक भैंगे शार्गिर्द से कहा के यहाँ आ। जब वो शार्गिद सामने आया। तो उस्ताद ने कहा के घर से वो आईना उठा ला। भैंगा उसे कहते हैं जिसकी नज़र टेढ़ी हो और जिस एक चीज़ दो नज़र आती हों।

चूं दरून खाना अहवल रफ़्त ज़ोद
शीशा पेश चश्म ओ दोमी नमूद

Scanned by CamScanner

जब भैंगा घर के अन्दर जल्दी से गया तो उसे एक आईना की बजाए दो आईना मालूम हुए।

गुफ़्त अहववल ज़ाँ दो शीशा बीन कदाम पेश तो आरम बगोशर हश तमाम

तब भैंगे ने उस्ताद से कहा साफ साफ बताईये के उन दोनों में से कौन सा आईना मैं आपके पास लाऊँ?

गुफ़्त उस्ताद आँ दो शीशा रू
अहवली बगज़ारो अफ़्ज़ूँ बीं मशू

उस्ताद ने कहा के वो दो आईने नहीं हैं। भेंगा पन छोड़ दे और एक को दो मत देखो।

गुफ़्त ऐ उस्ताद मिरा तअना मज़न
गुफ़्त उस्ताज़ आँ दो यक राबिर शिकन

भैंगे शार्गिद ने कहा ऐ उस्ताज़! आप मुझे ताना ना दीजिए। आईना हक़ीक़त में दो ही हैं। मेरे भैंगे पर का क़सूर नहीं है। तो उस्ताद ने का दोनों में से एक को तोड़ डाल। चुनाँचे उसने जाकर तोड़ दिया।

चूं यके ब शिकस्त हर दो शद ज़चश्म
मर्द व अहवल गर्दो अज़ मीलान व चश्म

जब उसने एक आईने को तोड़ दिया तो दोनों उसकी नज़रों से ग़ायब हो गए। उसी तरह आदमी अगरचै बज़ाहिर भैंगा ना हो। लेकिन ख़्वाहिश नफ़्स और ग़ुस्सा उसे भैंगा बना देता है। यहाँ तक के उसे हक़ नज़र नहीं आता।

शीशा यक बोद ब चशमश दो नमूद
चूं शिकस्त आँ शीशा रा दीगर नबूद

आईना एक था मगर उसकी आँख में दो दिखाई दिए जब उसने एक को तो तोड़ दिया, तो दूसरा भी टूट गया। अब भैंगा बहुत डरा और उस्ताद से आकर कहा मैंने आपके फ़रमाने के मुताबिक़ आईना तो एक ही तोड़ा था। मगर दूसरा खुद बखुद टूट गया। उस्ताद ने कहा। कमबख़्त भैंगे! आईने दो नहीं थे लेकिन तेरे भैंगे पन की बदौलत तुझे दो नज़र आए। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- जिनकी बातिनी आँख में फतूर और ईमान की आँख में क़सूर और भैंगा पन है। वो हुक्मे खुदा से हुक्मे रसूल को जुदा समझते हैं और जिनको इताअते खुदा और इताअते मुसतफा में अपने भैंगे पन की वजह से तफरीक़ नज़र आती है। उनके हाथ से ना सिर्फ दामने रिसालत ही छूट जाता है बल्के तौहीद भी रूख़सत हो जाती है। चुनाँचे हक़ तआला ने फ़रमाया है *मंय युतीअर्रसूला फक़द अताअल्लाहा* और ये भी मालूम यूं होता है। जैसे वो हमें देख रहा है। हालाँके वो किसी दूसरी तरफ़ देख रहा होता है। इसी

Scanned by CamScanner

तरह ईमान के भेंगे बज़ाहिर रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखते हैं हालाँके उनकी नज़र किसी और ही तरफ़ होती है। खुदा फ़रमाता है: *तराहुम युनज़ुरूना इलेका वहुम ला युबसिरूना।*

हिकायत नम्बर(930) अगर मगर

एक शख़्स को एक अच्छे से मकान की तलाश थी मकान की तलाश में फिर रहा था के एक उसका दोस्त मिल गया। दोस्त ने पूछा क्यों हैरान फिर रहे हो? वो बोला यार एक अच्छे से हवादार मकान की ज़रूरत है वो दोस्त बोला....

के मिरे हमसाये में है इक मकाँ
वस्फ जिसका कर नहीं सकती ज़बाँ!
गरचै वीरान हो गया है और खराब
शहर में उसका नहीं अब भी जवाब
अर्ज़ में और तूल में है बे बदल
और हवादारी में भी है बे मिस्ल!
छत अगर होती बड़े दालान पर
मतबख व दहलीज़ भी होते अगर
होता साबित उसका मर्दाना अगर
गिर ना पड़ता उसका तहखाना अगर
पुश्त की दीवार गिर पड़ती ना गर
गुस्ल खाना शिक़ ना हो जाता अगर
लहलहाते उसमें गुल और यासमीन
खुश्क हो जाता ना गर उसका चमन
उससे बेहतर मेरी राय में मकाँ
कोई हर गिज़ दे ना सकता फिर निशाँ
सुन के सब ये गुफ़्तगू बोला वो यूं
आपकी तकलीफ का ममनून हूँ!
मुशफ़्फ़िक़ मन चाहिए मुझ को मकाँ
अगर मगर से काम चलता है कहाँ

(दरे मंज़ूम तर्जुमा मसनवी)

सबक़:- *अगर मगर कहना नहीं मर्दों का काम!*
काम हैं शर्तों से रहते ना तमाम!
है ये क़ौल ख़ातिम पैग़म्बराँ
लफ़्ज़ ये कम हिम्मत के हैं निशाँ

Scanned by CamScanner

हिकायत नम्बर(931) सुलतान मेहमूद और अयाज़

एक दिन मेहमूद शाह ग़ज़नवी
कर रहे थे दोस्तों से दिल लगी
पा के मौक़ा इक मसाहिब ने कहा
ग़र्ज़ है इक गर इजाज़त हो शहा
शह ने फ़रमाया के हाँ बेशक कहो
बेहतरी-ए-ममलिकत गर उसमें हो
ग़र्ज़ है मेरी मसाहिब ने कहा
क्या सबब है ये के शाहे बासफा
हैं अयाज़ खुश लक़ा पर इस क़द्र
मेहरबाँ हैं कौन से उसमें हुनर
बादशाह ने ये कहा उसका जवाब
बरसरे दरबार दूंगा बासवाब
ये कहा इक दिन भरे दरबार में
इम्तिहाँ दो ख़ैर ख़्वाही का हमें
एक मोती बे बहा था शहे के पास
होते हैराँ देख जिसको दूर शनास
लाके डिबिया सामने शहे ने रखी
इक हथोड़ा भी मंगाया आहिनी
सदर-ए-आज़म को बुला के सामने
ये कहा सुलतान फर्रूख नाम ने
इस दर यक्ता की तू क़ीमत लगा!
है ज़्यादा लाख से उसने कहा!
फिर कहा शहे ने ना कर कुछ भी खयाल
इक हथोड़ा मार उसको तोड़ डाल!
सुन के ये फ़रमाने सुलतान जहाँ
रह गया साकित वज़ीर नुक्ता दाँ
गिर पड़ा क़दमों पे फौरन शाह के
और लगा कहने निहायत अज्ज़ से
दिल मेरा देता इजाज़त ये नहीं!
तोड़ डालूं मैं जो ये दुर्रे समीं
ख़ैर ख़्वाही और नमक ख़्वारी कहाँ!
माल को शहे के जो पहुँचाऊँ ज़ियाँ

Scanned by CamScanner

शाह ने उसकी बहुत तारीफ की
एक खुलअत बैश क़ीमत उसको दी
सामने आता गया इक इक अमीर
सबने की बे खोज़ तक़लीद वज़ीर
फिर कहा सुलतान खुश अंजाम ने
ऐ अयाज़ आ तू हमारे सामने!
दस्त बस्ता आके वो हाज़िर हुआ!
दुर्रे यक्ता हाथ में उसके दिया
और पूछा तेरी राय में बता
क़ीमत इस मोती की क्या होगी भला
बोला ये मोती बहुत अनमोल है
ढूंढने से भी नहीं मिलती ये शै
गर कहूं दस लाख वो भी है क़लील
इसके आगे गंज क़ारों है ज़लील
बोला शहे इस पर हथोड़ा इक लगा!
तोड़ कर तू रेज़ा रेज़ा दे बना
हुक्म पाते ही अयाज़ नेक ने!
चूरा मोती का किया इक ज़र्ब से
एक सन्नाटा हुआ दरबार में!
खलबली सी पड़ गई हज़्ज़ारन में!
हर कोई कहने लगा ये क्या क्या!
हक़ किया शहे के नमक का खूब अदा
ये जवाब उसने दिया तुम सब के सब
मुसतहिक़ हो तुम पे हो शहे का ग़ज़ब
शाह को शायाँ है क्या? फ़रमानदही
है हमारा काम क्या? फ़रमाँ बरी
एक मोती के लिए ज़ैबा ना था
मैं ना हुक्म आक़ा का अपने मानता
हीफ तुम ने एक गोहर के लिए
सब वफादारी के जोहर खो दिए
इक मोती क्या अगर हूँ दस हज़ार
शाह के सर पर करूं सब को निसार
हो गए क़ायल जवाब आया ना बन!
यूं लगे कहने वै शहे ज़मन

Scanned by CamScanner

लुत्फ शहे इस पर जो है बेजा नहीं
ख़ैरख़्वाह उस सा कोई इसला नहीं

सबक़:-

दोस्त होते हैं जहाँ में ऐ अज़ीज़
दो तरह के उनमें दायम कर तमीज़!
एक तो होते हैं दौलत के लिए
गिर्द हैं तेरे वो सरवर के लिए
मक्खियाँ हैं चाहे जितना तू हटा!
पीछा वा हर गिज़ ना छोड़ेंगे तिरा!
माल है जब तक ना जायेंगे कभी
जब गई दौलत ना आयेंगे कभी
दूसरे हैं दोस्त तेरी जान के
प्यार करते हैं तुझे तेरे लिए!
जोहर उनमें हैं मोहब्बत के भरे
खूं पसीना पर गिरायें वो तिरे!

हिकायत नम्बर(932) तवक्कल

थे मदीने में यमन के चन्द मर्द
था तवक्कल में हर एक उनमें से फर्द
सब गए फारूक़ को करने सलाम
आपने पूछा के क्या करते हो काम
बोले वो करते नहीं हम कोई कार
है तवक्कल पर हमारा तो मदार!
सुन के ये फारूक़ ने उनसे कहा
ये भी कोई काम है तारीफ का!
मुफ़्त खोरे क्यों नहीं कहते के हो
बोझ अपना डालते ओरों पे हो
जाँ खपाता है कोई खाते हो तुम
और तवक्कल उसको बतलाते हो तुम!
मैं बताता हूँ तवक्कल क्या है चीज़
कौन करता है तवक्कल ऐ अज़ीज़
है तवक्कल असल में दहक़ान का

Scanned by CamScanner

है तवक्कल पेशा वो मर्दे खुदा
डाल कर दाना फक़्त उम्मीद पर!
रब पे रखता है नज़र जो साल भर
या तवक्कल है तो उस ताजिर का है!
जो खुदा को सोंप कर लाखों की शै
मोज दरिया पे है कश्ती छोड़ता
बीम तूफाँ से नहीं मुंह मोड़ता!
सबक़:- कार कर मत कर भरोसा कार पर!
कर भरोसा क़िस्मत जब्बार पर! (दरमंज़ूम)

हिकायत नम्बर(933) आदमी की तलाश

हाथ में लकर दिया इक बा सफा
देखता फिरता था मुंह हर एक का
काम था उसका यही बस रारत दिन
दीन व दुनिया की तरफ़ से मुतमईन
कोई भी छोड़ा ना बाज़ार व गली!
जिसमें फिर के जुस्तजू उसने ना की
उसने ये पूछा के ऐ मर्दे खुदा
जुस्तजू करता है किस की तू बता!
बोला मुझ को आदमी की है तलाश!
एक मिल जाए मुझे इंसान काश
ये कहा कायल ने तो आँखें तो मल!
देख है तेरी नज़र में कुछ खलल
पुर है इंसानों से बाज़ार और सरा
गर नहीं इंसान तो फिर हैं ये क्या!
ये कहा उसने के हैं इंसाँ वही
नाम के इंसान तो हैं यूं सभी
खश्मो शहवत बन गए जिसके ग़ुलाम
हाथ में रखता है जो उनकी लगाम
वो जो रखता है उन्हें जूती की मार
उसको समझो तुम बड़ा ही शहशवार!
हर किसी का काम ये हर गिज़ नहीं!

Scanned by CamScanner

शेर नर की पुश्त पर रखे जो ज़ीन
सबक़:- जिंस इंसाँ की अजब है ख़ासियत
है बहुत भी और कम भी है बहुत
है नबी आदम से पुर सारी ज़मीन
आदमी ढूंडो तो कोई भी नहीं!
यूं तो कहलाते हैं इंसाँ ये सभी
पर नहीं इंसान उनमें एक भी!
यूं तो सब इंसान हैं थोड़े बहुत
वाक़ई इंसान हैं थोड़े बहुत

(दरमंज़ूम)

हिकायत नम्बर(934) गुमराह राहबर

सुबह का था वक़्त और फस्ल बहार
तोड़ ली इक ऊँट ने अपनी मुहार
हल्के हल्के एक जानिब को चला!
बाग को अपनी ज़मीन पर खींचता!
एक चूहा देखकर उसका ये हाल
दिल में यूं करने लगा अपने मक़ाल
तुझ को जाने देता हूँ अब मैं कहाँ
थाम लेता हूँ अभी तेरी अनाँ
और लपक कर बाग मुंह में ले शरीर
ऊँट को जब ले चला करके असीर
ऊँट ने भी ये मज़ाक़ उससे किया
बे तकल्लुफ उसके पीछे हो लिया!
चलते चलते राह में वो नागहाँ!
देखते क्या हैं के पानी है रवाँ
देखकर पानी गंया चूहा ठिठक
ऊँट का तकता रहा मुंह देर तक
ऊँट ने पूछा बता ऐ राहबर
क्या हुआ क्यों डर गया तू इस क़द्र
ऊँट बोला तू ना डर जाता हूँ मैं
किस क़द्र पानी है बतलाता हूँ मैं

Scanned by CamScanner

अलग़र्ज़ वो ऊँट पानी में घुसा!
और कहा थोड़ा है पानी आ भी जा!
देख ज़ानो तक मिरे डूबे नहीं
ग़र्क़ हो तो ऐसा मुमकिन है कहीं
बोला चूहा फ़रमाया जनाब
चाहते हो मुझ को करना ग़र्क़ आब
ताबज़ानो आपके पानी जो हो!
मुझ से लाखों को ना देगा क्यों डुबो
ऊँट ये कहने लगा फिर तंज़ से
बस इसी बिरते पे थे रहबर बने!
सबक़:- खुद तो गुमराह हों करें फिर रहबरी
हैं डुबोते ऐसे ही नावें भरी

हिकायत नम्बर(९३) फारूक़े आज़म(र०अ०) और एक चोर

चोरी करते एक दज़्दे बे हया!
अहद में फारूक़ के पकड़ा गया
लाए जब उसको हुज़ूर दीं पनाह
और साबित हो गया उसका गुनाह
इस मुजस्सिम अदल ने फतवा दिया!
हाथ काटो है यही इसकी सज़ा
सुन के ये चिल्ला उठा वो बे शऊर
रहम कीजिए है मिरा पहला क़सूर!
पास वालों ने सिफारिश की बहुत
अफ़्व व रहमत की सताईश की बहुत!
इक ना मानी और कहा फारूक़ ने
हद करो जारी हमारे सामने!
झूट बकता है ये मुझ को है यक़ीं
उसकी ये पहली खता हर गिज़ नहीं
है मिरे रब की ये सत्तारी से दूर
इस ग़नी की है ये ग़फ़्फारी से दूर!
यूं फज़ीहत अपने बन्दे को करे
और तौबा की ना दे मोहलत उसे
सबक़:- देखता है बन्दा टल जाएगा अब

Scanned by CamScanner

चश्म पोशी बारहा करता है रब!
बाज़ आता ही नहीं जब बे हया!
रूसवा करता है उसे फिर बरमला!

(दरमंज़ूम)

हिकायत नम्बर(936) सांप का चोर

इक सपेरा चौक में बैठा हुआ!
था तमाशा सांप का दिखला रहा!
सांप का बच्चा बहुत था खूबरू
शोख चिकना नर्म नाज़ुक फितना खू!
इक सपेरा दूसरा जो चोर था
फिक्र में उसके उड़ाने की लगा!
चोर बन कर रात को वो आ गया
ले गया झोली वो जिसमें सांप था
सुबह को देखा सपेरे ने जो घर
सांप की झोली ना दाल आई नज़र!
रिज्क़ का अपने ज़रिये पा के गुम!
ढूंड डाले उसने बंदूक़ और खम
जब ना पाया कुछ पता ज़ंबील का!
अज्ज़ से करने लगा रब से दुआ!
या इलाही कुछ नहीं मुश्किल तुझे!
मेरी जो शै है वो मिल जाए मुझे
इत्तिफाक़न सांप वो खूंख़्वार था
आदमी की शक्ल से बे ज़ार था
मस्त हर हफ़्ते में होता था ज़रूर
काटने में फिर ना करता था क़सूर!
हाथ डाला चोर ने जब सांप पर
ताके देखे अपनी चोर का समर!
इत्तिफाक़न ज़ोर वो मस्ती का था
हाथ काले ने चटक उसका लिया!
काटते ही गिर पड़ा वो मुंह के बल
और तन से जाँ गई फौरन निकल!
जब सपेरे ने सुना दुश्मन का हाल!
ये कहा उसने खुशी से होनिहाल
किस तरह हो शुक्र हक़ मुझ से अदा

Scanned by CamScanner

नीश मूज़ी से लिया मुझ को बचा!
सबक़:- क्यों नहीं होती दुआ मेरी क़बूल
है तिरा ये ऐत्राज़ अज़ बस फ़िज़ूल!
तुझ को अपनी अक़्ल पर बे जा है नाज़
वो हकीम मतलक़ व दानाऐ राज़!
बख़्शता है शै वही जो हो मुफीद!
चाहे कुछ ही क्यों ना हो अपनी उम्मीद
फर्ज़ है अपना उसी से माँगना!
चाहे दे चाहे ना दे उसकी रज़ा
(दरमंज़ूर)

हिकायत नम्बर(९३७) चार जाहिल

चार जाहिल एक मस्जिद में गए!
अस्र का था वक़्त दी बांग एक ने
बन गया उन चार में से एक इमाम!
हो गए क़ायम जमात पर तमाम!
इतने में मस्जिद का मुल्ला आ गया!
वक़्त की तंगी से घबराया हुआ!
आके फौरन वो लगा देने अज़ाँ
मुक़्तदी इक बोल उठा ओ भाई जाँ
बाँग हो ली अब ना तू तकलीफ कर!
आ जमात में हो शामिल बे खत्र
दूसरे ने सुन के ये उससे कहा
क्या नहीं मालूम तुझ को मसला!
बोलने से जाती रहती है नमाज़
चाहिए इसमें ना कुछ ग़ैर अज़ नमाज़!
तीसरे ने सुन के उनकी गुफ़्तगू
यूं कहा ऐ यार क्या जाहिल है तू
तू अजब नादाँ है ऐ खुद पंसद
खुद फज़ीहत और को करता है पंद
उन बुज़र्गों के जो थे पेश नमाज़
वो लगे कहने बस्द अज्ज़ो नियाज़
शुक्र हक़ के मैं नहीं बोला ज़रा!
ऐ खुदा! तूने मुझे साबित रखा
सबक़:- और को करनी नसीहत ला कलाम!

Scanned by CamScanner

उससे आसाँ तर नहीं दुनिया में काम
ऐब अपना देखना आसाँ नहीं
देखते हैं अपने ऐब अहले यक़ीन
(दरमंज़ूम)

हिकायत नम्बर(938) जानवरों की बोलियाँ

इक जवाँ था नेक बख़्त और नेक काम
खिदमत मूसा में रहता था मदाम
देखकर हज़रत को इक दिन खुश बहुत
अर्ज़ की यूं ऐ शफीअ आख़िरत
एक अर्सा से तमन्ना है कमाल!
मैं भी हैवानों की सीखूं बोल चाल
हज़रत मूसा ने टाला बारहा
और क़ायल भी दलाल से किया!
जिस क़द्र इंकार होता था यहाँ
इस क़द्र इसरार बढ़ता था वहाँ
रब से मूसा ने जो पूछा तो कहा!
रद्द नहीं करते किसी की हम दुआ
अक़्ल उसको हम ने दी और इख़्तियार
अपने फैलों का ये खुद है ज़िम्मेदार
आख़िर मूसा ने ले अल्लाह का नाम
उसको हैवानों के बताऐ कलाम
दूसरे दिन खा के खाना शाम का
सहन में मैदान के फिरने लगा!
एक कुत्ता और मुर्ग खांगी!
सहन में थे, खादिमा भी आ गई
खादिमा ने आके दस्तरख़्वान जब
उस जगह झाड़ा तो मुर्ग़ बे अदब
गोश्त की बोटी उठा कर ले गया!
रह गया मुंह उसका कुत्ता देखता!
बोला कुत्ता, ज़ुल्म तूने क्यों किया!
गोश्त की बोटी मेरा क्या हक़ ना था
दाना दिंके हैं तिरा हक़ ला कलाम
हड्डी और बोटी से क्या है तुझ को काम
सब्र कर तू मुर्ग बोला एक रात
मारना कल बैल के लाश पर हात

Scanned by CamScanner

कल मरेगा बैल आक़ा का ज़रूर
था मैं भूका हो गया मुझ से क़सूर
मुर्ग से सुनकर खर अय्यार ने
बैल उसी दम बेच के पैसे लिए
दूसरे दिन फिर ये कुत्ते ने कहा
यार है कुछ झूट में भी फायदा
मुर्ग़ बोला झूट की आदत मुझे
है नहीं यू खूब रोशन है तुझे
दी बला आक़ा ने सर से अपने टाल
ग़ैर पे डाला जो था अपना वबाल!
याद रखना ये मगर कल बिलयक़ीं
ख़ैर बिलकुल उसके घोड़े की नहीं
खोला घोड़े को सुनी जब ये ख़बर
वापस आया फौरन उसको बेच कर!
कुत्ता बोला अब ना दीजिए दम हमें
शक नहीं बिलकुल तुम्हारे झूट में
मुर्ग़ बोला, अहमक़ी आक़ा ने की!
आई अपनी ग़ैर के सर डाल दी!
जाके घोड़ा मुश्तरी के घर मरा
ये मगर उसने ना कुछ अच्छा किया!
बैल और घोड़ा अगर मरते यहाँ
फिदया होते उसकी जाँ के बे गुमाँ
जान का अब है ज़ियाँ ऐ पुर हुनर
कर यक़ीं कल आक़ा खुद जाएगा मर
नान व हलवा जाएगा मईयत के साथ
मेरे और तेरे लगे गा खूब हाथ
अक़्ल ये सुन के जवाँ की उड़ गई!
गिड़गिड़ा के अर्ज़ यूं मूसा से की!
आप फ़रमाने लगे ऐ रम्ज़ बीं
याद रख आई क़ज़ा टलती नहीं
अब तुझे जो सूझता है सामने
देखता था मैं पस दीवार से!
दूसरे दिन मर गया खुद वो जवाँ
मौत ने पीछा ना छोड़ा बे गुमाँ

सबक़:- हो मुसीबत तुझ पर नाज़िल कोई गर!
माल का नुक़्सान हो कुछ ग़म ना कर!

Scanned by CamScanner

फिदया उसको जान अपनी जान का!
आप तूने हाथ से गोया दिया
(दरमंज़ूम)

हिकायत नम्बर(939) चालाक औरत

था मजर्रिद और बूढ़ा एक मर्द
आज़मूदा था जहाँ के गर्म सर्द
चैन से रहता था वो सुबह व मसा!
आई कम बख़्ती निकाह इक जा किया!
बीवी जो आई बड़ी चालाक थी
बद रवय्या बे हया बे बाक थी
चाटने खाने से उसको काम था
और यही काम उसका सुबह व शाम था
एक दिन मेहमान आया उनके घर
उसकी ख़ातिर गोश्त आया सैर भर
भूनती जाती थी जब के देगची!
बोटी इक इक चुन के औरत खा गई
देखकर हांडी को खाली ये किया!
लाई बाहर से मियाँ को वो बुला!
और कहा तुम को ना आएगा यक़ीं!
है मगर सच झूट ज़र्रा भर नहीं
इस निगोड़ी बिल्ली को तुम देखना!
बैठी है क्या भोला भाला मुंह बना
भूनती थी मैं मसाला गोश्त का
गोश्त था इक तास में रखा हुआ
मैं लगी चखने मसाले का नमक!
गोश्त सारा कर गई चट बे धड़क
कुछ ना बोला मर्दे साहिबे दिल मगर!
जाके ले आया तराज़ दोड़ कर!
पलड़ा में बिल्ली को रखा की ना देर
वज़न में वो पूरी निकली एक सैर
मर्द बोला अब बता ऐ बे हया
वज़न है बिल्ली का ये या गोश्त का!
गोश्त है गर ये तो बिल्ली है कहाँ
है जो बिल्ली गोश्त का फिर दे निशाँ

Scanned by CamScanner

सबक़:- नाव काग़ज़ की कभी बहती नहीं
काट कर हंडिया सदा रहती नहीं
झूट में नुक़्साँ है सच में फायदा
याद रख है आम ये इक क़ायदा
मसलेहत का क़ौल है बिलकुल ग़लत
अहले दुनिया की बनावट है ग़लत
(दरमंज़ूम)

हिकायत नम्बर(940) हसद व रश्क़

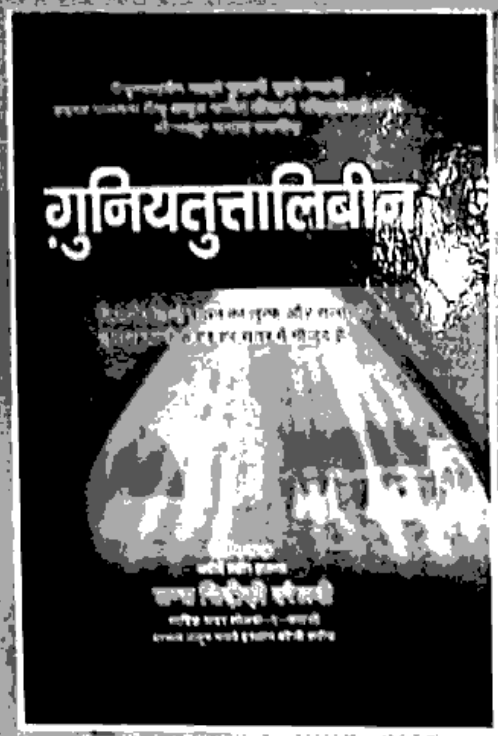
एक हासिद ने कहीं मेहमूद पास
जाके चुग़ली की के ये तेरा अयास
बावफा हर गिज़ नहीं मक्कार है
उससे रहना बा ख़बर ग़द्दार है
ज़ाहिरन करता है जाँ तुझ पर फिदा
बातिनन उसको नहीं उल्फत ज़रा!
है उसी धुन में वो हर शाम व सहर
किस तरह हासिल करूं मैं सीम व ज़र
सिम्त शिर्क़ी में जो हुजरा है फलाँ
शब को जाता है बिला नाग़ा वहाँ
हुजरा देखोगे ना इक दम भी खुला
उसको रखता है मुक़फ़्फ़िल ये सदा
हो प्यारा उसका कैसा ही कोई!
उसको ले जाता नहीं अन्दर कभी
दिल को है मेरे यक़ीं ये नासिपास
जमा रखता है ख़ज़ाना बे क़यास
बादशाह ये सुनकर हैराँ रह गया!
हुक्म इक सरदार को फौरन दिया!
जा अभी और क़ुफ़्ल हुजरा तोड़ के
माल उठा ला जो वहाँ तुझ को मिले!
वो गया और हुक्म की तामील की!
शाह के आगे लाके गठरी वो रखी
इतने में दरबार के अरकार सब

Scanned by CamScanner

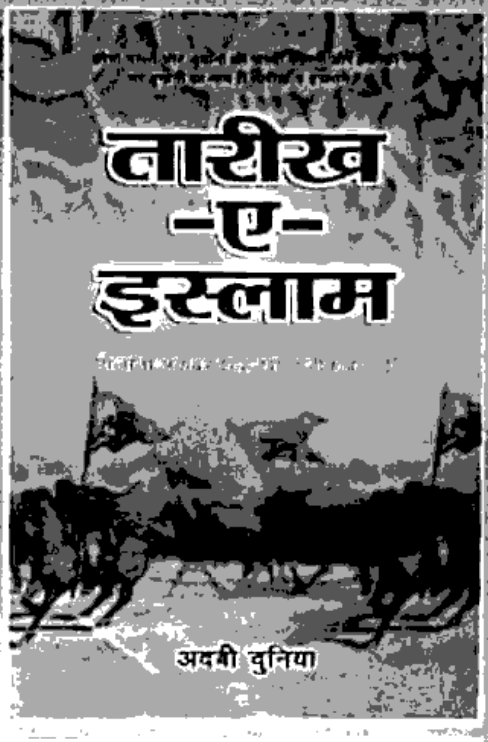
आ गए थे मुल्क के अयान सब
बादशाह ने क़िस्सा कुल करके बयाँ
ये कहा खोलो जो है इसमें निहाँ
खोली गठरी देखते हैं उसमें क्या
घास की पापोश कम्बल की क़ुबा!
थीं पुरानी जूतियाँ टूटी हुई
और क़ुबा पर तेह चढ़ी थी मैल की
शाह ने फ़रमया के ऐ महर जहाँ
हैं ये चीज़ें क्या तू कर उनका बयाँ
दस्त बस्ता अर्ज़ की उसने श्हा
थी यही पोशाक जब घर से चला!
देखता हूँ उसको हर रोज़ एक बार
ता ना भूलूं अपना मैं असल व तबार
मेहरबानी शाह की उनको देखकर!
सौ गुनी आती है आँखों में नज़र!
रह गए जितने थे हासिद सुन के सुन!
चुप हुए मुंह से ना निकला कुछ सुख्न

सबक़:- जा व इज़्ज़त दूसरे की देखकर
दिल में आए कुछ तिरे ग़ैरत अगर
तू भी उसको देखकर कोशिश करे
ताके उस सा साहिबे इज़्ज़त बने
रश्क है ये ये नहीं आदत बुरी
रश्क करने में ना कर हर गिज़ कमी!
गर तू चाहे उसकी नअेमत का ज़वाल
ये हसद है उसको तो दिल से निकाल
ये बुरी आदत है उसको तर्क कर
कर दिए बर्बाद उसने घर के घर!
मर्तबा महसूद का होगा फ़ज़ूँ
बेशक अंजाम हसद होगा ज़बूं
कुछ ना उसमें हाथ तेरे आएगा!
नेकियाँ तेरी हसद खा जाएगा

Scanned by CamScanner

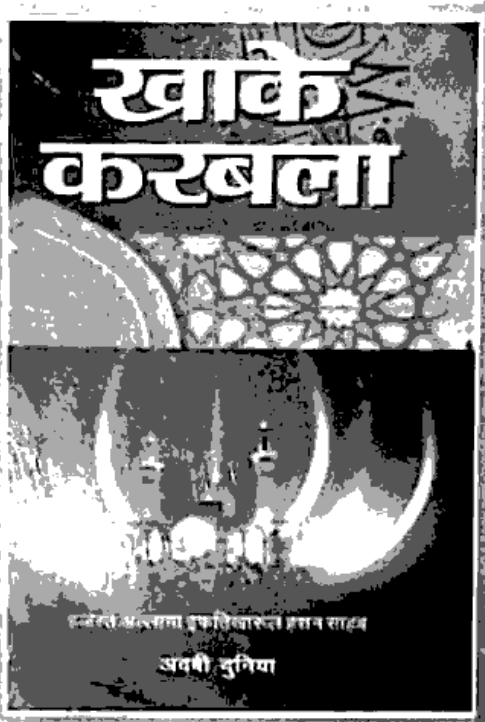


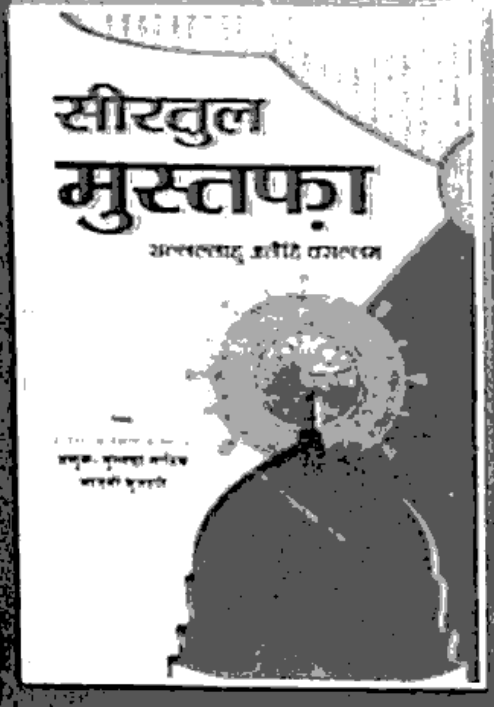




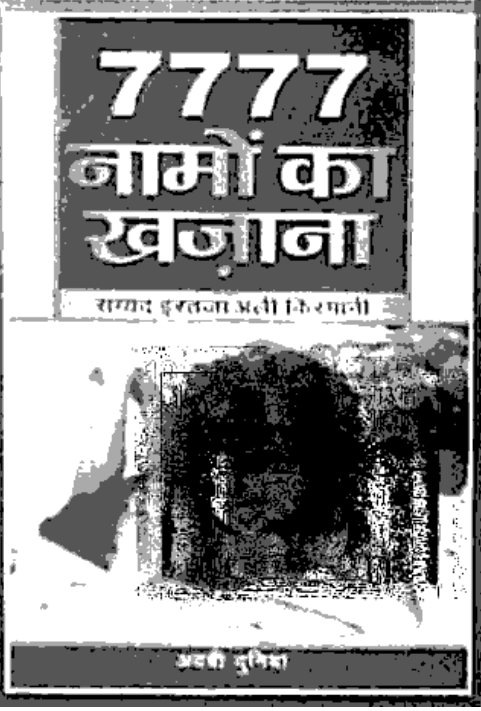












Scanned by CamScanner